रामघाट में कोरोना

(उपन्यास)

(कोरोनाकालीन महागाथा)

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। समीक्षा तथा शोध-निबंधादि में आंशिक उद्धरण के अलावा, प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

ISO 9001 : 2015
किताबघर प्रकाशन
नयी दिल्ली

रामघाट में कोरोना

दीर्घ नारायण

प्रकाशक
किताबघर प्रकाशन
4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन : 011–23266207, 41584421
E-mail : kitabgharprakashan@gmail.com
website : www.bookshindi.com

© दीर्घ नारायण

प्रथम पेपरबैक संस्करण : 2023

आवरण : के. जी. पी.

मूल्य : एक हजार दो सौ पंचानबे रुपये

मुद्रक : आर. के. ऑफसेट
शाहदरा, दिल्ली-95

RAMGHAT MEIN CORONA
by Dirgha Narayan
Price : ₹ 1295 (Paperback Edition)

ISBN—978-93-93486-39-4

समर्पित

उन सभी भाई-बहनों, खासकर डॉक्टर्स, नर्स, पुलिस बल व अन्य सामाजिक कार्यकर्ता जिन्होंने साहसिक सेवक के रूप में अपनी जान की परवाह ना करते हुए कोरोना की लड़ाई में राष्ट्र व नागरिक-कर्तव्य का निर्वहन किया और उन्हें भी जिन्होंने कोरोना के प्रसार को रोकने के लिए अपनी बुद्धिमत्ता और कौशल का समुचित उपयोग किया, उनको समर्पित।

लेखकीय

अंत में कहीं जाने वाली बात मैं आरंभ में रख देना चाहता हूं। उपन्यास लिखने के लिए मुझे प्रेरित करते रहने वालों में मेरे पुत्र अमित कुमार (बौद्ध दर्शन में पीएचडी स्कॉलर लखनऊ विश्वविद्यालय) विशेष रूप से उल्लिखित किये जाने के अधिकारी हैं। मेरी रचनाधर्मिता के प्रति उनका लगाव-सुझाव शुरू से ही रहा है; स्वभाविक ही मेरे लिए एक नई अवधारणा बन गई है कि सिर्फ पिता ही नहीं अब पुत्र भी इस अपरिभाषित संसार में गुरु तुल्य होने की काबिलियत रखते हैं। इसी क्रम में वरिष्ठ लेखक डॉ. रामधारी सिंह दिवाकर और वरिष्ठ लेखिका डॉ. रजनी गुप्त के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूं। वस्तुतः दोनों सम्मानित साहित्यकारों ने पिछले कुछ वर्षों से पत्रिकाओं में मेरी कहानियाँ पढ़ते रहने के दौरान मुझे उपन्यास लिखने के लिए प्रेरित ही नहीं उद्वेलित करते रहे हैं। इसी क्रम में मित्रवर अरुण राजऋषि एवं पूर्णिया के वरिष्ठ साहित्यविद विजय नंदन प्रसाद जी को दिल से याद करना चाहता हूं जिन्होंने उपन्यास के प्रथम खंड की पांडुलिपि का गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया और मुझे कतिपय जरूरी सलाह प्राप्त हुए जिससे इस उपन्यास को वर्तमान स्वरूप में लाने में सहयोग मिला। अपने प्रिय मित्र संजय सनातन के लिए शब्द का अभाव महसूस कर रहा हूं जिन्होंने उपन्यास लेखन अवधि में लगातार मुझसे उपन्यास केंद्रित चर्चा करते रहे। अपनी धर्मपत्नी जुगनू और सुपुत्री स्वर्ण को पुनः पुनः हृदय पटल पर लेना चाहूंगा जिनके दैनंदिनी सहयोग व समन्वय के फलस्वरूप उपन्यास के कथानक, स्वभाविक प्रवाह और निरंतरता में कोई बाधा नहीं आई। अंततः प्रदीप शुक्ला जी को धन्यवाद देना चाहता हूं जो महीनों तक धैर्यपूर्वक इस उपन्यास को संपादित करते रहे; और मेरे व्याकरणिक व शाब्दिक दोष को दुरुस्त करने में जिन्हें मैराथन संघर्ष करना पड़ा। लेकिन प्रमुखतः किताबघर प्रकाशन का आभार प्रकट करता हूं जिन्होंने 'रामघाट में कोरोना' की पांडुलिपि पढ़ते ही इसे प्रकाशित करने की स्वीकृति दी।

उपन्यास लिखना लेखकीय यात्रा की एक जवां हसरत होती है, अमूमन हर लेखक की; युवा लेखनी से लेकर थमती कलम तक। मैं भी इससे अछूता नहीं था; पर साफगोई से कहूं तो उपन्यास लिखने को लेकर मैं आशवस्त नहीं था, यही सोच कर कि यह बड़े लेखकों की दुनिया की उपज-उत्पाद है। हकीकत में उपन्यास लेखन स्वतंत्र समय की मांग करती है; विभिन्न प्रांतों के सैनिक छावनियों में पदस्थापन काल में समय की संभावना तलाशना अपने शासकीय दायित्वों के प्रति सौतेला व्यवहार करने जैसा होता। हां, उपन्यास लेखन के पक्ष में मानसिक अवधारणा अंदर-ही-अंदर जरूर पनपती रही। जून 2019 में मध्य कमान मुख्यालय लखनऊ में पदस्थापन के बाद उपन्यास लेखन के पक्ष में साहस का अंकुरण तो हुआ, परंतु वो सारे अंकुरण-अकुलाहट मौसमी पतझड़ के शिकार होते रहे। बात जनवरी-फरवरी 2020 की है, चीन का वुहान शहर कोरोना की जंग में झोंका जा चुका था; कोविड-19 वायरस दुनिया के कई देशों में अपना पंजा फैला चुका था, 30 जनवरी को भारत में भी। उन्हीं दिनों कोरोना वायरस को लेकर मेरे अंदर एक सतत और सजग चिंतन शृंखला का जन्म होता गया था। बाद के महीनों-वर्षों में कोरोना ने मानवीय संसार में कितनी तबाही मचाई और कितने कष्ट-कंटक दिए यह सर्वविदित है। तभी तो मानव जाति व मानव सभ्यता के लिए मेरे अंदर स्कूल काल से पनप रहा सार्वभौमिक संसार बृहद रूप में सामने प्रकट होता गया!

खैर; 25 मार्च 2020 की सुबह मेरी कलम ने एक अनाम उपन्यास की अनजान राह पकड़ ही ली। यह किसी भी तरह से हठात उपन्यास लेखन का आरंभ नहीं था; वस्तुतः सजग व दायित्वबोधि भारतीयों की प्रखर चिंतन प्रक्रिया और संघर्षपूर्ण परिस्थिति के दौरान उनकी मनःस्थिति तथा अन्तः व बाह्य क्रिया-प्रतिक्रिया की एक निश्चित छवि व रूपरेखा चलचित्र भांति मेरी अन्तः चेतना में संचित होती रही है, छात्र जीवन से ही। पुनश्च अन्यतम दुशवारियों का साहसपूर्ण सामना करने की दीर्घ कालीन जिजीविषा रही है भारतीय जनमानस में; स्वभावनुकूल भारतीय जनमानस का एक वृहद-विहंगम स्वरूप बनता गया है मेरे अंदर, मेरे बोध काल से ही। विकट चुनौतियों से सफल संघर्ष के लंबे अंतराल में भारतीय जनमानस में प्रस्फुटित होती जीवन-जन्य मनःस्थिति और उनके समानांतर दूरगामी दृष्टि संपन्न युवा पीढ़ी के चिंतन और क्रिया-प्रतिक्रिया की सहज उपज है उपन्यास रामघाट में कोरोना। हकीकत में यह उपन्यास कोरोना कालीन भारतीय जनजीवन की महागाथा है।

उपन्यास में रामघाट मझोले आकार का एक हिंदुस्तानी शहर है; बल्कि अपने आप में हिंदुस्तान ही हैं, तभी तो इसे उपन्यास में वाजिब ही मिनी इंडिया कहा गया है। दिल्ली-मुंबई-कोलकाता-चौन्नई-लखनऊ-पटना-भोपाल-वाराणसी-प्रयागराज आदि शहरों के बजाय मैंने उपन्यास में इस जाने-पहचाने शहर को रामघाट नाम दिया है। सच में रामघाट भारतीय जनजीवन की बहुरंगी छटा है, उपन्यास के आरंभ से अंत तक।

इस उपन्यास के सभी पात्र गांधी हाई स्कूल के प्रबुद्ध शिक्षक जेड सर के तपे-तपाये विद्यार्थी रहे हैं; उन विद्यार्थियों के पास अपने स्कूल के बाल संसद में कला-करामात दिखाने का अनुभव भी रहा है। उनमें से कुछ प्रतिभा संपन्न-साधन संपन्न-सुविधा संपन्न छात्र-छात्राएं रामघाट विश्वविद्यालय में बीते वर्षों में अध्यापन संपन्न कर चुके हैं या कर रहे हैं। अपने अपने विषय ही नहीं, विषयवस्तु में भी उनकी व्यवहारिक पकड़ है।

उपन्यास का आरंभ वर्ष 2020 के जनवरी महीने के सहज व स्वभाविक जनजीवन से होता है; जैसाकि इस देश में, और पूरी दुनिया में भी, हर मानव संपूर्णानंद समाहित जीवन जीते हैं या जीने की चाहत रखते हैं। स्वाभाविक ही वे भी स्वरूचिपूर्ण कार्यों-गतिविधियों में रमे हैं। फरवरी-मार्च में देश की जमीं-हवा में कोरोना की आहट जोर पकड़ने लगती है। इन युवाओं की अंत:चेतना स्पंदित होने लगती है, देश को कोरोना के अंधकारमय सुरंग की तरफ जाने से बचाने खातिर। अंत:चेतना जब तब बाह्य रूप में प्रकट हो उठती है; कल्पनाशील व व्यवहारिक क्रिया-प्रतिक्रिया मांग-सुझाव आदि रूपों में, रामघाट से लेकर दिल्ली की दौड़ तक। मार्च के अंत तक लगभग सभी बड़े-मझौले शहर कोरोना वायरस की जद में आ चुके होते हैं; रामघाट से कोरोना चंद कदम की दूरी पर ही है। देश को कोरोना जद में जाने से नहीं बचा पाने की पीड़ा झेल रहे वे युवगण अब रामघाट को कोरोना के लपेटे में जाने से बचाने की मुहिम में भिड़ जाते हैं। पर कोरोना की सवारी भला कहां रुकने वाली है! 6 अप्रैल को रामघाट में कोरोना प्रकट हो उठता है; शहर शंकराचार्य और मस्जिद मुताल्वी जैसे दो संक्रमितों के रूप में। कोरोना रोकने खातिर उद्दिग्न अवस्था में दिल्ली पहुंचा रामू रामघाट के लिए पैदल ही निकल पड़ता है, पैदल प्रवासियों के समूह 47 की अगुवाई करते हुए, अनगिनत दुशवारियां झेलते हुए; पर हर पल-पड़ाव में जीवन के रंग में जीते-डूबते। रामघाट के कोविड अस्पताल में ऐसे कुछ युवा युवती स्वैच्छिक

सेवा देकर अपनी चेतना को शांति-संपूर्णता भी प्रदान करते हैं। बाद के महीनों में कोरोना और कोरोना की छाया-प्रतिछाया खलनायक है, तो जीवन के रंग सर्वकालिक नायक जो कोरोना के संग आंख मिचौली में रत हैं! संकट से सतत जूझते रहने के साथ ही इन युवगण को देश के प्रभुत्वशाली शक्ति-सामंतों से भी जूझना पड़ता है, जब-तब। शक्ति-सामंतों के सख्त संकेत के बावजूद वे ऊर्जावान युवगण अपने अस्तित्ववादी अवधारणा के वशीभूत राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मुद्दों के साथ कदमताल करते हुए भारत एवं संपूर्ण विश्व के भविष्य का रंगमंच गढ़ते चलते हैं। परिणामत: पांच युवाओं को सलाखों के पीछे जाना पड़ता है। दूसरी लहर के दौरान मौत के तांडव के बीच भी उनके साथियों की जीवटता जगी रहती है। जीवन के रंग में रमे इन युवाओं के विजन बंद नहीं पड़ते; जीवन पथ प्रकाशमान दिख रहा है इन्हें, दूर तक...

अंत में यह उद्घोषित करना अपना कर्तव्य समझता हूं कि इस उपन्यास के पात्रों, दृष्टांतों और घटनाओं का संबंध किसी व्यक्ति विशेष गांव या शहर से नहीं है; और यह भी कि उपन्यास की कथानक और उल्लिखित संदर्भ व पात्रों की आपसी वार्तालाप किसी भी व्यक्ति, धर्म, जाति, लिंग, प्रांत और पार्टी विशेष के खिलाफ नहीं है।

दीर्घ नारायण

खंड-एक

अध्याय एक

1

26 जनवरी, 2020: आज एयरपोर्ट की ड्यूटी से वह जल्दी मुक्त हो गई थी। छूटते ही सीधे यहीं का रुख कर लिया। गाय-गोहाल में पानी-सानी करके वह भी उड़ता चला आया, यहां विशाल बेर के नीचे; अम्बेडकर चौराहे के पीछे अपनी प्रियतमा को चुपके से बाइक में बिठाते हुए। यह जगह है तो रामघाट तीरे से थोड़ी ही दूर, पर हवा की दिशा विपरीत होने पर रामागमन कुटीर के कानफोड़ू भोंपू का शोर इस तरफ थोड़ा सुस्त पड़ जाता था। सामने वाली लघु जलधारा के पार यदा-कदा लाशें जलती हों तो जलती रहें; यह बेरी निरापद मिलन-स्थली बन पड़ी थी दोनों के लिए, दो-ढाई साल से। न भूलने वाली बात; पिछले 'वैलेंटाइन डे' में दोनों प्रथम संसर्ग-सुख भी तो प्राप्त करने में कामयाब रहे थे, यहीं सटे झुरमुट तले। आज महीनों बाद दोनों इधर का रुख कर पाने में तालमेल बिठा पाए थे; बातों-यादों का दरिया बहा देने, फुर्सत के साथ।

"सच यार, यह जगह हमारे लिए तो बड़ी यादगार बन गई है!" वह बोली, झुरमुट की ओर देखते हुए; खो जाने वाली मन:स्थिति में।

"मुझे लग रहा है झुरमुट आज हमें फिर से पुकार रहा है!" वह बोला, उसकी आंखों की भाषा भांपकर।

"नहीं, 'वैलेंटाइन डे' में दिन ही कितने बचे हैं!" वह बोली, शर्माती हुई।

"क्यों? 'वो' सब सिर्फ 'वैलेंटाइन डे' के लिए ही आरक्षित होती है क्या!" लड़के की बेताबी बाहर झांकने लगी।

"तुम मुझे कोठेवाली में बदल डालना चाहते हो क्या!" बोलकर वह उसकी आंखों में गड़ गई, लड़के की असली परख कर लेने के लिए। वह

निरुत्तर; चुप्पी छाई रही।

"अदरवाइज पिछले 'वैलेंटाइन' में तुम कितनी तो उतावली थी! बाद में फिर कभी वैसी दिखी नहीं?" वह हैरान था, यौन मनोविज्ञान के प्रथम पाठ में ही उलझा हुआ।

"तुम लड़के लोग सच में बंदर जाति की असली प्रजाति हो; गहराई में जाने की अक्ल तुम लोगों को ऊपर वाले ने तो दी नहीं," कोई नया पाठ पढ़ाने-जैसी वह बोलती जा रही थी, "देखो बाबा, पहली बार फिजिकल होने के लिए लड़कियों में एक रोमाँच होता है, जुनून की हद तक; समझो बाढ़ जैसा, दुनिया के बड़े से बड़े बांध-बंधन को तोड़ते हुए! लेकिन बाद में वैसा कुछ करना, न करना उसकी अस्मिता से जुड़ जाता है," फिर उसकी ठुड्डी हिलाती हुई बोली, "स्वविवेक, स्वाभिमान, सम्मान, स्वरुचि कई चीजें आती हैं बीच में बाबा! तुम बुद्धू बैल समझोगे नहीं।"

"चलो आज एक नई बात सीखने को तो मिली; अब मैं तुम पर कभी दबाव नहीं बनाऊंगा।" वह सच में भोला था।

"इसलिए कहती हूं तुम बुद्धू हो, बुद्धू बैल! मेरे कहने का मतलब तुम समझ नहीं पा रहे हो," वह झुंझला उठी। क्षणिक चुप्पी के बाद मधुर आवाज में बोली, "दुनिया में झुरमुट ही एक जगह है क्या लड़का-लड़की के एक होने के लिए?"

"सहज की तरह मेरी भी कई-कई फैक्ट्रियां होतीं, तो मैं भी अपनी शायनी को लेकर अच्छे-अच्छे होटल में जाता!" उसने आह भरते हुए कहा।

"अच्छा! तो तुमने कोई खबरिया चैनल भी खोल रखा है!" वह विस्मित होकर बोली।

"सहज और शायनी आज की तारीख में रामघाट की हिट जोड़ी है; यह तो सबको पता है? इसमें खबरिया चैनल की क्या जरूरत है।" उसने लड़की का ज्ञानकोश कमजोर होना दर्शाने वाली भाव-भाषा में कहा।

"वे दोनों तो मैट्रिक से यूनिवर्सिटी तक टॉपर रहे हैं, तब से ही रामघाट के चहेते चेहरे हैं दोनों! आगे आई.ए.एस. वगैरह करके ऐश करते रहेंगे दोनों।" आंखों में दोनों के प्रति अगाध सम्मान लाते हुए वह बोली।

अब तक उसके अंदर कौतूहल ताप चढ़ चुका था, साथियों के बारे में हालिया गुप्त खबर पाने; उसके करीब आकर उतावली होकर पूछने लगी, शहर की ओर चेहरा किए, "और किन-किन साथियों की पक्की खबर है

तुम्हारे पास! एयरपोर्ट की ड्यूटी ज्वॉइन करने के बाद शहर की हलचल पता नहीं चल पा रही है मुझे; मियां जी की कोई गर्लफ्रेंड बन पाई कि नहीं?"

"मियां मुंहफट को तो अभी भी अपने सब्जेक्ट से फुर्सत नहीं है, दिन-रात देश की दुर्दशा पर आग उगलता रहता है; लगता है जैसे संविधान बदलकर ही दम लेगा!" वह सामान्य सूचना ही दे पाया।

"किसी बुर्के वाली को पटा भी रखा होगा, तो किसी को थोड़े न पता चलने देगा!" वह बोली, जैसे सामान्य सूचना स्वीकार्य न हो उसे; फिर तपाक से पूछा, "और अहम भैया?"

"उसे अपनी फिलॉसफी झाड़ने से फुर्सत मिले तब तो गर्लफ्रेंड बना पाए।" उसने तरस खाने जैसी भंगिमा बनाते हुए कहा।

"मनोज को तो हम सभी देख ही रहे हैं; मीडिया में रहकर मरियल-सा हो चला है, दिनभर खबरों के पीछे पागलों-जैसा दौड़ता फिरता है।" तारीफ करने जैसी भाव-भाषा में वह बोली।

"वैसे मनोज की कोई गर्लफ्रेंड तो है, मीडिया से ही; पर किसी को बताता नहीं है वह!" रहस्य पर आवरण चढ़ाते हुए वह बोला।

"मनजीत मग्गू ने तो स्कूल से निकलते ही गैराज डाल दिया था, रामघाट आउटर के एनएच पर; दो साल से तो उधर गई भी नहीं हूं।" स्मृति पर जोर देते हुए वह बोली।

"अरे, वो मग्गू का बच्चा! उसका गैराज तो अच्छा पिकअप पकड़ लिया है! सरदार लोग तो पैदाइशी मेहनती होते हैं," खुशी जाहिर करते हुए वह बोलता गया, "ये लोग होते भी हैं बड़े मिलनसार, जब भी इधर आता है सब से मिलकर ही लौटता है!" मग्गू की बात छिड़ते ही उसकी आंखों में स्मृति जाग्रत होने की चमक आ गई, "और उस अरशद की औलाद का कुछ समझ में नहीं आ रहा है, स्कूल में पढ़ाई में धुन का कितना तो पक्का था! घर से भी मजबूत था, पर कॉलेज छोड़कर मस्जिदों में फिरता रहता है! न जाने क्या करता है?" उसने अफसोस जताते हुए कहा।

"अरे नहीं यार, अपने गांधी स्कूल वाले लगभग सभी साथी नेक काम ही करते हैं; इक्के-दुक्के को छोड़कर सभी सही रास्ते पर हैं।" अरशद का बचाव करते हुए वह बोली।

"पर मिलना-जुलना कम होता गया है उसका!" उसने संशय व्यक्त किया।

"और वो राम अवतार काफी उड़ रहा है आजकल रामनरेश भैया के

साथ?" बोलकर उसने आंखें सिकोड़ लीं।

"आई हेट पॉलिटिक्स; वो गधा राम अवतार नेता लोगों की चमचागिरी करता फिरता है, हम लोगों का सीनियर रामनरेश तो खैर पार्टी में पैठ बना चुका है, पर राम अवतार उसके पीछे दुम हिलाता फिरता है।" बोलकर उसने होंठ भींच लिए; फिर बस्ती की दिशा में उंगली से इशारा करके बोला, "मनोज को आगाह करना पड़ेगा उस राम अवतार के बच्चे को अपने पास फटकने न दे!"

"रामनरेश की गर्लफ्रेंड के तो काफी चर्चे हैं?"

"गर्लफ्रेंड नहीं बाबा, गर्ल फौज बोलो! शराब और शबाब न हो तो देश में नेता लोगों का अकाल पड़ जाएगा!" रामनरेश की बात आते ही वह उखड़ गया; बातों का सिलसिला थम-सा गया। रामघाट तीरे से आ रहा मानस पाठ एकाएक तेज हो चला था...'करम लिखा जौं बाऊर नाहू, तौ कत दोसु लगाइअ काहू...'

मानस पाठ से ध्यान हटाकर वह आज के फुर्सतभरे लम्हे का लुत्फ उठाना चाहती थी; होंठों में मुस्कान लाती हुई बोली, "दिनेश का कुछ तो चल रहा है बस्ती के बगल वाले एरिया की किसी के साथ!"

"दिनेश की गर्लफ्रेंड चाहे जो भी हो, वह जल्दी ही उसे छोड़कर भागेगी।" वह खिन्न होकर बोला, फिर अपनापन दिखाते हुए कहा, "गरीब होने का मतलब यह थोड़ी न है कि अपनी देह-दशा पर ध्यान ही ना दो; उसकी बॉडी को देखकर लगता है हम में से वही बुजुर्ग की पदवी हासिल करेगा सबसे पहले!"

"ऐसा मत बोल यार, वह तुम्हारा लंगोटिया यार है; बचपन से ही तो गरीबी झेल रहा है बेचारा, खैर अब छोटा-सा ही सही, किराना स्टोर डाल तो दिया है, आगे ठीक-ठाक चल ही जाएगा।" वह द्रवित हो उठी।

"किसने गरीबी नहीं झेली है? मैं कौन-सा धन्ना सेठ हूं! गाय-भैंस से क्या होता जाता है!" आंखें ऊपर आसमान की ओर उठाए वह बोला; जैसे ईश्वर की भेदभाव वाली नीति का प्रतिकार करना चाह रहा हो।

"देखो डार्लिंग, काम चाहे जो भी हो, मन बड़ा होना चाहिए; मेरे भैया की छोटी-सी स्टेशनरी दुकान से क्या होता जाता है भला, फिर भी समय निकालकर संगठन से जुड़े रहते हैं, लोगों की भलाई के लिए जान हाजिर कर देते हैं!" आगे आत्मविश्वास के साथ बोली, "अब तो चिंता की बात

नहीं है, एयरपोर्ट वाली ड्यूटी पकड़ लेने से मुझे सुकून मिल रहा है; अपने लिए और घर के लिए कुछ तो करने लगी हूं!"

"यार कुछ लोगों में तो बड़ा जुनून-सा होता है लोगों के काम आने के लिए!" विस्मयपूर्ण मुद्रा में वह बोलता गया, "इस रॉबर्ट को ही ले लो, केरल से यहां रामघाट आकर दिन-रात एनजीओ के साथ गली-गली, गांव-गांव घूमता फिरता है!"

"उसकी सिस्टर यहां जिला अस्पताल में नर्स है न, उसे क्या दिक्कत है भला; जीवन में आत्म-संतुष्टि के लिए भी तो मानव को कुछ अच्छा करते रहना चाहिए।"

"हां डार्लिंग, मुझे भी लग रहा है यदि किसी पोजीशन पर होता तो कोई बड़ा काम करता देश-दुनिया के लिए, रामघाट के लिए; कितना तो प्यारा शहर है अपना रामघाट!" कहीं दूर खोते हुए वह बोला।

"तुम तो स्कूल के दिनों में देश के लिए जान छिड़कने की बात करते थे, अब सरककर रामघाट पर आ गए?" व्यंग्य-वाण की धार अंदर रोकते हुए वह बोली।

"अरे यार, रामघाट के लिए मर मिटने का मतलब देश के लिए जान छिड़कना ही तो है।"

"तुम रामघाट के लिए मर मिटोगे देश के लिए जान छिड़क दोगे, फिर तो जाहिर है मुझ पर दिन-रात फिदा होने की झूठी कहानी गढ़ते रहते हो।"

"अपने शहर और देश के लिए जान देने की बारी बार-बार नहीं आती है न, बाकी तीन सौ चौंसठ दिन तुम्हारी शरण में ही तो हूं जानम!" बोलते-बोलते वह उसके और करीब आ गया।

"अरे यार मैं तो यूं ही मजाक कर रही थी।" वह गंभीर होकर बोलने लगी, "सच में धरती में सबसे प्यारी जगह है रामघाट! अपने कई साथी लोग बचपन से ही कितना तो मस्त-मतंग फिरा करते हैं इस शहर में, अपन तो जीना-मरना है इसी मिट्टी-पानी में।"

"अपने देश, अपनी मिट्टी के लिए सभी मनुष्यों के मन में चाहत होती है, पर मुझे लगता है मेरे मन में इस माटी के लिए सच्ची वफादारी पनप रही है; कभी-कभी माइंड में आता है इस जीवन में देश-दुनिया के लिए कोई सच्चा कर्म तो करूं।"

"देश हित मानव हित में कोई बड़ा काम पूर्व नियोजित नहीं होता;

कृष्णजी बचपन में जब गाय चराते थे, तो क्या वह तभी से प्लानिंग करने लगे थे कि कौरवों का संहार करना है! जैसा समय आता गया वह करते गए।" बोलकर उसने पत्थर का एक टुकड़ा उठाकर जलधारा में फेंक दिया; उत्पन्न लहरों में वह मुग्ध हो गई।

"तो तुम यही कहना चाहती हो कि मेरी भी गायें हैं तो मैं भी एक दिन बड़े काम में लग जाऊंगा, एकाएक!" वह उसे गौर से देखने लगा।

"हां, शादी करना भी तो बड़ा काम है जिंदगी में! शादी करके मुझे भी मस्ती करनी है, घर-बार, बच्चे-सच्चे करने-देखने हैं; आखिर ये भी तो मनुष्य के जीवन का मकसद है!" आंखें मटकाती हुई वह बोली।

"हां यार, हमारे जिन साथियों के पास मेरिट है, जिसने बड़ी पढ़ाई करी है, घर से मजबूत हैं, वे लोग बड़े काम के बारे में आसानी से सोच सकते हैं; हम जैसे के लिए तो जिंदगी की गाड़ी ढंग से खींचना ही पहला बड़ा काम है, इससे आगे समय जो कराता है इंसान वही करता है।" आत्म-संतोष की पराकाष्ठा छूते हुए-सा उसने कहा, फिर चिंतामग्न होकर बोला, "पर; मेरे घर की हालत देखकर तुम मुझसे शादी के लिए तैयार हो जाओगी!" उसके अंदर का कौतूहल हिलोरें मारने लगा।

"क्यों? सिर्फ धन्ना सेठ वाले शादी करते हैं क्या!" उसके कान मरोड़ते हुए बोली, जैसे कह रही हो तुम सच में बुद्धू हो; फिर गंभीर होकर बोली, "तुम चिंता मत करो, मेरी छोटी-सी नौकरी और तुम्हारे गाय-भैंस से हम दोनों अपना छोटा परिवार मजे से चला लेंगे!'

"अरे वाह, हम दोनों के विचार कितने तो मिलते हैं! मेरा भी यही ख्याल है मैरिज और फैमिली ही तो जिंदगी की असली मंजिल होती है!" उसे अपनी बाँहों के घेरे में लेकर वह भावुक हो उठा। अगले ही पल चेहरे में चिंता की लकीरें उग आईं, एकाएक, "एक इंपोर्टेंट प्वॉइंट बार-बार मेरे मन में आकर चला जाता है; तुम्हारे पापा और भैया को दूसरी जाति में शादी से कोई अटूट आपत्ति तो नहीं है?" बोलकर उसके दोनों हाथ अपने हाथों में थाम लिए उसने; जैसे सच में किसी भी कीमत पर उसका हाथ नहीं छोड़ने का संकल्प ले रहा हो।

"ग्वाला ही क्यों, किसी भी जाति के मनपसंद लड़के से शादी करने में आजकल की लड़कियों को आपत्ति नहीं होनी चाहिए," वह बोली तो उसकी आंखों में बौद्धिक तेज झलकने लगा, आगे आत्मविश्वास के साथ बोलती

गई, "ऑफकोर्स मेरे भैया को तो कोई आपत्ति नहीं होगी, बात रही पापा की तो मेरी खुशी ही उनकी खुशी रही है, शुरू से ही!"

"जाति की बात खुल ही गई है तो सच बता देना सही रहेगा; गौ पालन मेरा पेशा जरूर है पर ग्वाला मेरी जाति नहीं है, मेरी जाति है..." वह बोल ही रहा था कि उसके होंठों पर हाथ रखते हुए वह तपाक से बोल पड़ी, "मैं हरिजन टोली में रहती हूं, पर क्या तुम्हें पता है मैं किस जाति से हूं?" बोलकर वह उसके चेहरे पर गड़ गई। सिर हिलाकर नकारते हुए वह उसकी आंखों में गड़ गया; मुस्कुराकर बोली, "यह अच्छा है हम दोनों जाति से अनजान ही रहें; फेरे लेते वक्त जब पंडित-पादरी गोत्र-सोत्र पूछेंगे तब देखी जाएगी, यदि पंडित-पादरी से बच निकलेंगे फिर तो यदि हमारे बच्चे जानना चाहेंगे तब सोचेंगे!"

"जाति-धरम को मारो गोली, शादी का प्लान बनाते हैं; इस बार शादी करके ही होली मनाएंगे," उसके गालों को सहलाते हुए उसने कहा; फिर आंखों की गहराई में झांकते हुए कहा, "आज की बातचीत से तो लग रहा है 'वो' सब अब शादी के बाद ही होगा?" उसने अपनी दीवानगी प्रकट कर दी।

"अरे तुम भी न!" बोलकर उसके होंठों को उसने अपने होंठों के कब्जे में ले लिया। मिनटभर बाद मुक्त होकर बोली, "कम ही दिन तो रह गए हैं 'वैलेंटाइन डे' में; फिर इधर ही आएंगे और तब मन को मुक्त कर देंगे! अब चलना चाहिए, अन्यथा..." बोलते-बोलते वह उठ खड़ी हुई।

"हां, रामघाट भी इंडिया से कम नहीं है!" दोनों बाइक की ओर बढ़ चले।

बस्ती के एक मामूली नौजवान रामू के गाय-गोशाल में पानी-सानी का वक्त हो चला था; बस्ती के हरिजन टोला वाली मंजरी को एयरपोर्ट से छूटने के बाद काफी देर तक घर न पहुंचने से परहेज करना था, घर में पिताजी और भैया भी तो होते हैं।

2

रामघाट को वाजिब ही 'मिनी इंडिया' कहा जाता है। जो लोग रामघाट से बाहर कभी गए नहीं या जा नहीं पाते, वे कहते हैं उनके लिए रामघाट ही 'इंडिया' है; कलेक्टर यहां के प्रधानमंत्री, एसपी गृह मंत्री तो कलेक्टेरिएट ही इसकी राजधानी! शहर है भी तो सदाबहार; और बहुरंगी भी! कितने तो पहचान चिह्नों को अपने आलिंगन में समेटे बैठा है यह शहर; इतने कि

एक तरह से होड़-सी मची है उनमें असली पहचान की पदवी हथियाने की! शहर के युवा जोड़ों की जो मर्जी कर लें, चिपटें-लिपटें-लिथड़ें यहां के होटलों में या बगल वाले जंगलों में, शहर ने अब युवा-जन्य ऐसी नैसर्गिक क्रिया-प्रतिक्रिया को पचा लिया है। किसी गांव या कस्बे की पहचान हो सकती हैं इस प्रकार की करतूत या कहानियां, रामघाट तो कोसों आगे निकल चुका है ऐसे प्रस्थान बिंदु से। प्रणय और यौन-लिप्सा तो प्रकृतिप्रदत्त है, सदियों से बदस्तूर जारी है, कदाचित आगे और भी जोर पकड़ ले। इसके समानांतर पटरी पर दौड़ती रामघाट के युवा-जीवन की एक अदृश्य सच्चाई भी है; सार्वजनिक जीवन के विविध आयामों को लेकर यहां के युवाओं में विजन और कल्पनाशीलता की उड़ान दिलचस्प होती है, चूंकि विजन अपने आप में अदृश्य प्रकृति का होता है, स्वाभाविक ही यह संज्ञा, रूप विशेषण रामघाट की पहचान के रूप में स्थापित नहीं हो पा रही है। सामुदायिक जीवन के चिंताजनक प्रसंग पर यहां के युवा मन-मस्तिष्क अति संवेदनशील हो उठते हैं; इसे यहां की मिट्टी का विशेष प्रभाव ही कह सकते हैं। ऐसी दुर्लभ संवेदनशीलता रामघाट की पहचान नहीं मानी जाती; बल्कि 'पता है' कहकर मजाक में उड़ा दिया जाता है, इस इक्कीसवीं सदी में भी।

ए, बी, सी, डी, ई, एफ...इस शहर के स्कूल-कॉलेज-यूनिवर्सिटी में पढ़े-पढ़ रहे स्टूडेंट्स मात्र हैं, वे शहर की पहचान नहीं हो सकते न! 'एक्स' 'वाई' शहर के जिले के टॉपर रहे होंगे तो रहें, हर साल कोई-न-कोई टॉपर तो होता ही है शहर में। 'एक्स' की अर्थशास्त्र में विद्वता है तो आंकड़ों से खेलते रहे, अपनी मर्जी से; विज्ञान में 'वाई' का कोई जोड़ नहीं तो रहे बेजोड़ अपनी किताबों में। 'सी' की राजनीति शास्त्र में विशेषज्ञता है तो पागलों जैसा शोर मचाता रहे अपने घर-मोहल्ले में, मंत्री-प्रधानमंत्री बनने की कोई वैकेंसी नहीं आने वाली है कभी। होगा 'डी' दर्शनशास्त्र में तीसमारखां, कहते होंगे साथी लोग उसे फ्रांसीसी दार्शनिक सार्त्र का पोता-पड़पोता, किसे फुर्सत है यहां रामघाट में उसके नव-अस्तित्ववाद को सुनने-समझने-परखने की। एफ की बेजोड़ बातों से मोहल्लेवाले रीझते रहते हों तो रमे रहें अपनी दुनिया में, 'ई' शांत-गंभीर बनी रहती है तो पड़ी रहे अपने टोले में। चुनाव में अपनी गली का वोट एकमुश्त डलवाने की कला में महारत हासिल हो गई है 'जेड' को, तो डलवाते रहें ऐसे सैकड़ों-हजारों-लाखों वोट, संसद की एक ईंट तक नहीं हिलनेवाली उसकी इस कलाबाजी से। दिन-रात रहस्यमयी मूर्तियों में

प्राण फूंकने में रमा रहता है मूर्तिकार 'एस', तो अपने को खपाते-मिटाते रहें दिन-रात। अभी तक वह या उसकी मूर्तियां इस शहर की पहचान की सामान्य पदवी के किनारे तक भी नहीं पहुंच पाई हैं; किसे फुर्सत है उसके विश्वास पर ध्यान धरने की, कि भारत भूमि के लिए सर्व-स्वीकार्य श्रेष्ठ पुरुष का अवतरण उसी की किसी मूर्ति में होना है! दिमाग फिर गए लोगों की संख्या रामघाट में अन्य शहरों के मुकाबले ज्यादा ही होगी, पर अधिकांश रहते हैं अदृश्य अवस्था में ही। इनमें से कुछ भले ही पते की बात करते रहते हों दिन-रात, पर वे रामघाट की पहचान नहीं हैं; पागलों की भी कोई पहचान होती है भला!

किसी शहर की पहचान तो वो होती है जो शहर और शहर के बाहर भी जानी जाती हो। मसलन कोई मंदिर, कोई राष्ट्रीय या प्रांतीय स्तर का कद्दावर नेता, स्थानीय पर स्थापित कोई परिचलन-परिपाटी, सोने का अंडा देने वाली कोई खान-खदान-फैक्ट्री, कोई हीरो-हीरोइन-सिंगर-क्रिकेटर या फिर ऐसा ही कोई स्टार-आइकॉन! कॉलेज-यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स में भला क्या रखा है जो वह शहर की पहचान कहलाए, भले ही उनके मन में कितनी ही उच्च भावनाएं क्यों न हिलोरें मारती रहें दिन-रात। गांधी हाई स्कूल में अपने जमाने में धूम मचाती रहती बाल-संसद भी अब विस्मृति की गहराई में पड़ी होगी कहीं; बाल-मन को मुरझाने वाले न जाने कितने ही विषाणुओं का विस्तार जब जारी हो चारों तरफ, तो बाल-संसद या उसके बालक भला किस काम के।

इसमें कोई शक नहीं, 'रामघाट तीरे' तीन सौ पैंसठ गुणा चौबीस घंटे चलते रहते अखंड मानस पाठ इस शहर की सर्वोपरि पहचान हैं। घनघोर भक्तों के दावे कि मानस पाठ लाखों सालों से चले आ रहे हैं, को छोड़ दें तो दशकों से तो जरूर जारी है यह पाठ...'आकर चारि लाख चौरासी, जाति जीव जल थल नभ वासी। सीय राममय सब जग जानी, करऊं प्रनाम जोरि जुग पानी...' पांच-सात किलोमीटर दूर हो रहे मानस पाठ की आवाज अब शहर तक आते-आते धीमी पड़ जाती है। पहले शहर की आबादी कम थी, गाड़ियों की चिल्ल-पों तो बहुत ही कम थी, तब रामघाट तीरे वाले लाउडस्पीकर से चौपाइयां ठीक-ठीक सुनी जा सकती थीं; समझवालों द्वारा समझी भी जाती थीं। पर अब शहर तक पहुंचते-पहुंचते पाठ-ध्वनि धीमी पड़ जाती है; अर्थ भी धूमिल होते जा रहे हैं, यूं कहिए अर्थ बदले जा रहे हैं!

वैसे तो रामघाट तट पर घास-फूस के रामागमन कुटीर में मानस पाठ का वार्षिक आयोजन पीढ़ियों से होता चला आ रहा था, दस-पंद्रह साल पहले जब शहर का नवाबघाट नाम बदलने की माँग जोर पकड़ने लगी तब से वार्षिक पाठ अखंड मानस पाठ में बदल गया है। कोई पांच साल पहले नवाबघाट का नाम रामघाट हो जाने के बाद भी अखंड पाठ को जारी रखा गया है, जन-आकांक्षा को देखते हुए। पिछली पीढ़ी मय वर्तमान पीढ़ी रामघाट नामकरण होने मात्र से ही संतुष्ट होती नहीं दिख रही है; शहर में बनी नई-नई राम मंडलियों ने सदियों से चले आ रहे घास-फूस के रामागमन कुटीर को भव्य मंदिर में बदल डालने की भी ठान ली है! उनका मत है मनभावन मंदिर ही मानव जीवन का श्रेष्ठ लक्ष्य है। मानस पाठ की परंपरा में कोई छेड़-छाड़ किए बगैर मंडलियों ने अब रामधुन का भी आगाज कर दिया है; जल-थल-नभ व्यापी रामधुन...'हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे...!' रामघाट तट पर पिछले साल दसियों चोंगे लग गए हैं; रामधुन की चिंघाड़ से मानस पाठ को तो भौतिक विज्ञान के हिसाब से समर्पण करना ही था! हां, शेष बचे भले लोगों के मन में जब तब टीस जरूर उठती रहती है, कितना तो मनोहारी हुआ करता था मानस पाठ...'चरन कमल बंदहु तिन्ह केरे, पुरवहूं सकल मनोरथ मेरे!' हालांकि रामधुन वाले चोंगे से बीच-बीच में मानस के चौपाए भी लहलहा उठते हैं...'बिबिध मृगन्ह कर आमिष रांधा, तेहि महूं बिप्र माँसु खल सांधा...!' पर इसमें वो बात कहां जो वर्षों से मधुर आवाज में सुनते आ रहे सुमधुर चौपाए में हुआ करती थी...'कलि के कबीन्ह करऊं परनामा, जिन बरने रघुपति गुन ग्रामा...सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ही रघुनाथ...भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी...!'

असली तस्वीर पर आए बिना रामघाट-कथा अधूरी रह जाएगी। रामघाट के उत्तर में कभी जीवित पर दशकों से मृतप्राय धारा अब तो आस्था का एक बड़ा धाम-सा बन पड़ा है; सिर्फ रामघाट ही नहीं, सैकड़ों किलोमीटर तक के जनमानस के लिए भी। इस मुद्दे पर अब तर्क-वितर्क की कोई गुंजाइश नहीं बची है कि भगवान रामचंद्र के वन-प्रस्थान का तीसरा रात्रि विश्राम यहीं बगल की गुफा में बीता था, और इसी घाट पर उन्होंने जल-ग्रहण किया था; तभी तो यहां पर घास-फूस वाला 'रमागमन कुटीर' साल दर साल बनता चला आ रहा है, सदियों से! भले ही यहां अब कोई जीवित नदी या नदी का मुकम्मल किनारा न हो, लेकिन रामघाटवासी इसे श्रद्धापूर्वक 'रामघाट

तीरे' ही कहते आ रहे हैं। एक बार ढंग से प्रचारित क्या हो गया कि भगवान रामचंद्र जी ने सीता और लक्ष्मण के संग वनगमन के रास्ते में यहां पर जल ग्रहण किया था, तो किया था! किस इतिहासकार की शामत आई है दोबारा लिखने-बोलने की, कि हकीकत में 18वीं 19वीं सदी में यहां के नवाब उस घाट पर चिड़ियों का शिकार करने जाते थे, और तब से यह जगह नवाबघाट नाम से दर्ज है। नवाबों-बादशाहों-सुल्तानों से पूर्व की सदियों में इस स्थल का मूल नाम शायद इतिहास के गर्त में पड़ा हो कहीं; पर 'रामोद्दयानम' जैसा कोई मूल नाम होने की संभावना के इतिहास-अन्वेषण की मेधा और धैर्य आज भला किन विद्वानों में बचा है!

रामघाट को मंदिरों का शहर भी कहा जाने लगा है। यहां एक पुराना शिव मंदिर है। सनातन धर्म मंडली वाले इसे पूरे देश में आदि शिव के रूप में स्थापित कराने में कई सालों से भिड़े हैं ही, अब तो सीधे रामघाट को ही विश्व के आदि धर्मस्थल के रूप में प्रचारित कराने की योजना पर मंथन चल रहा है। एक ही मंदिर चाहे वहां साक्षात देव क्यों न विराजमान हों, के दम पर कोई शहर मंदिरों का शहर कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता। दरअसल पिछले दो-तीन दशकों में यहां दसियों छोटे-बड़े मंदिर प्रकट हुए हैं; चौराहे वाले कई-कई हनुमान मंदिर से लेकर चौक पर स्थापित शनिचरा देव, बावड़ी तोड़कर बनाए गए शीतला मंदिर, सूखे तालाब पाटकर आकाश तक उठते जा रहे चंडी मंदिर, इमली बगीचा साफ कर बिराजे बांके बिहारी से होते हुए आगे और भी अनाम-अज्ञात देवी-देवता के अवतरण-स्मरण तक। इन मंदिरों में जिन देवी-देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई है वे कोई ऐसी-वैसी मूर्ति नहीं हैं! स्व प्रकट देवी-देवता हैं, अर्थात विष्णुलोक से उतरकर सीधे यहां के मंदिरों में प्रकट हुए हैं; ऐसा यहां के पंडे-पुजारी-मंडली आमजन को बताते हैं।

मंदिरों का शहर का मतलब यह नहीं है कि यहां और किसी धर्म के लोग हैं ही नहीं, या बसने की हिम्मत नहीं करते। यदि ऐसा होता तो रामघाट की 'मिनी इंडिया' वाली पदवी पर प्रश्नचिह्न खड़ा हो जाता। कोई ठीक से आंख खोलकर शहर घूम ले तो दो गुरुद्वारे और एक चर्च आसानी से दिख जाएगा। बीते वर्षों में घास-फूस से बनी मस्जिदों को छोड़ दें तो पांचेक पक्की-पुरानी मस्जिद तो यहां होंगी ही होंगी। अपनी आबादी भले ही मनमाफिक न हो, वे भी पूरी दुनिया फतह करने का अरमान लेकर सोते-जागते हैं। तभी तो जब

जुम्मे की नमाज के लिए जमावड़ा बनाते हैं तब कोई अज्ञात जंग जीतने की खातिर उनकी भुजाएं फड़फड़ा उठती हैं! रही बात विविध धर्मों के बीच रिश्ते की, तो मधुर हुए हैं या कटु इसे मापने के सभी यंत्र या तंत्र अब अमान्य कर दिए गए हैं। यूं तो रामघाट की फिजां में धर्म की शक्ति से संचालित कोई हथियार कभी चला नहीं, पर पिछले कुछ वर्षों से चुनावों में पड़े वोटों का ट्रेंड बता रहा है इस शहर ने भी अब एकतरफा मतदान का अमोघ अस्त्र हासिल कर लिया है, एक लंबी तपस्या के बाद। इसी के पुरस्कारस्वरूप यह शहर अब रामघाट कहलाता है। इसका पुराना नाम नवाबघाट पांच साल के अंदर ही लोगों की स्मृति से उतर चुका है; अब सिर्फ राजस्व रिकॉर्ड की पुरानी पंजी में ही जीवित है, किसी सुसुप्त आर.एन.ए.-डी.एन.ए. की भांति।

रामघाट बड़ा शहर है। दर्ज आबादी बाईस लाख छप्पन हजार दो सौ इक्यावन; दर्ज यानी 2011 की जनगणना पंजी। नई-नई कॉलोनियां बनती-बसती जा रही हैं यहां, चारों दिशाओं में; साल दर साल। कॉलोनियां ही नहीं बस रही हैं और झोंपड़पट्टी भी बढ़ रही है, लिहाजा वर्तमान जनसंख्या 25 लाख से ऊपर ही दौड़ लगा रही होगी। 25 लाख की आबादी वाले पचासों शहर हैं भारतवर्ष में; रामघाट आबादी के हिसाब से बड़ा शहर है ही 'हरा' भी है। हरा कहें तो, शहर में अभी भी बचे कुछ पुराने पीपल-बरगद नीम-जामुन-आम के बड़े-पुराने पेड़ नहीं, पिछले कुछ सालों में लगे छोटे कद वाले हजारों पौध भी नहीं, शहर में दिन-रात चलती रहती गतिविधियों वाली हरियाली है। देश की ऐसी कौन-सी चीज-चमक है जो रामघाट में ना दिखे! किसी चीज के यहां होने ना होने की बहस में रामघाट के लोग कान कटवाने तक की बाजी लगा सकते हैं। हर प्रकार की समझदारी, उससे ज्यादा सही समय पर उसका सफल प्रयोग, के मामले में इस शहर की कोई सानी नहीं। बात यहीं समाप्त करने की गरज से कहें तो भारत की हर भंगिमा इस शहर में भी कामयाबी के झंडे गाड़ रही है। तभी तो इस शहर को गर्व है अपने को 'मिनी इंडिया' कहलाने में!

रामघाट पर कोई शोध करना चाहे तो दर्ज करने लायक काफी चीजें हैं; दर्ज हो जाने के बाद सोचने के लिए तो सारा आकाश खुलता जाएगा! देश में ऐसे शहर उंगली पर गिनने लायक ही होंगे जो सदियों पहले भी शहर रहा हो। रामघाट, उंगली में गिने जाने वाले उन शहरों में नहीं है। वैदिक कालीन इतिहास में भारतीय भूखंड के स्थलों का स्पष्ट उल्लेख विरले ही

है; मौर्य काल, गुप्त काल, हर्षवर्धन काल से लेकर सल्तनत समय में भी रामघाट का जिक्र नहीं दिखता। हां, मुगल काल में यह भूखंड पहली बार अपनी मुंडी थोड़ी उठाता दिख रहा है, इतिहास गर्त से गर्दन सीधी कर। तब यहां पर नईम को बिठाया गया था, एक हजारी ओहदे वाला एक मामूली मनसबदार। इतिहास के पन्नों में रामघाट की गुमनामी जाए भाड़ में, जिला प्रशासन द्वारा हर वर्ष जिला स्थापना दिवस पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका में इसके नित-नए इतिहास देखने को मिलते हैं। स्थानीय लेखकों का ज्ञान भंडार इतना वृहद कि ज्ञात ऐतिहासिक काल से परे रामायण और महाभारत कालीन लड़ाइयों के तीर-भालों के मलबे से जिला स्मारिका कांप उठती है।

वैसे बंग-भंग के बाद 1905 में लाल-बाल-पाल के नेतृत्व में चले 'स्वदेशी आंदोलन' और 1920-21 में बापू द्वारा संचालित 'असहयोग आंदोलन' में इस कस्बे की भागीदारी जरूर रही थी, पर इतिहास के पन्नों में जगह कम पड़ने के कारण स्थान नहीं बना पाई। हां, 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में यहां के अंग्रेज कप्तान ने तो माथा पकड़ लिया था, स्थानीय नवयुवकों के विचित्र और रोमाँचकारी पर अदमनीय कारनामों से तंग आकार। कप्तान का अंग्रेज होने का गुमान उल्टी करने लगा था; फिर तो उनमें से कई को बिना सबूत ही जेल भेजकर संतोष के साथ भारत छोड़ पाया था वह। अंग्रेज भगाओ की आग सारे देश में धधक रही थी; लाजिमी है रामघाट में भी 15 अगस्त, 1947 तक उसकी लपटें दिखती रहीं, तभी तो पेंशन पाते रहे दो-तीन स्वतंत्रता सेनानी हाल के वर्षों तक इस शहर की शोभा बढ़ाते रहे, भले ही साल में दो दिन ही सही।

सत्ता में आते ही इंदिरा गांधी को रामघाट की शक्ति का एहसास हुआ; सिर्फ आर्थिक संपन्नता की संभावना वाले क्षेत्र के तौर पर ही नहीं, राजनीतिक रूप से प्रखर भूमि के तौर पर भी। रामघाट दिल्ली से भले ही आठ-नौ सौ किलोमीटर दूर हो, पर लखनऊ-पटना-रांची-भोपाल से पांच-सात सौ किलोमीटर की रेंज में इसकी अवस्थिति को कोई भी बुद्धिमान राजनीतिज्ञ नकारता नहीं! यूं तो आजादी से पहले ही रामघाट में सब डिविजनल मजिस्ट्रेट बैठने लगा था, अंततः सन् 1971 की लड़ाई के बाद यह पूर्ण जिला बन पाया था। कलेक्टर-एसपी वगैरह के बैठने के अगले ही दिन इंदिरा जी ने रामघाट और इसके सौ किलोमीटर की परिधि वाले संपूर्ण क्षेत्र को विशेष औद्योगिक क्षेत्र का दर्जा दे दिया था। आशा अनुरूप एक-दो दशकों तक

शहर में छोटे-छोटे कल-कारखाने बढ़ते गए थे; शहर के बाहरी क्षेत्रों में मझोले उद्योग-फैक्ट्रियां सजती-फैलती गईं। स्वाभाविक ही राजस्व संग्रहण का केंद्र बनने की राह पर चल पड़ा था रामघाट। वो कहते हैं न, लक्ष्मी की चमक पर नजर गड़ जाए तो वह चल पड़ती है कहीं और। जब कद्दावर नेताओं की गिद्ध-दृष्टि और अधिकारियों की ललचाई नजर अपलक उठने लगी रामघाट की तरफ, पूंजी आगमन के बजाय पलायन की गति तेज हो गई। फिर तो अर्थशास्त्र की कटु भाषा में दशकों से रामघाट का औद्योगिक विकास सूचकांक उसी स्थिर बिंदु पर घरघरा-थरथरा रहा है।

पिछले तीस-चालीस सालों में प्रदेश के राजनीतिक-प्रशासनिक महकमे में रामघाट की महत्ता बढ़ती ही गई है। एसपी-कलेक्टर-जिला जज से शुरू हुआ यह जिला आज दो-तीन सांसदों से सुशोभित, मंडलीय आयुक्त, आईजी से शक्ति-संपन्न, मुख्य आयुक्त आयकर, आयुक्त जीएसटी, राष्ट्रीय राजमार्ग एवं प्रांतीय राजमार्ग के अलग-अलग अधीक्षण अभियंता से पल्लवित, तो विश्वविद्यालय एवं कई प्रकार के अनुसंधान संस्थान से पुष्पित है। यहां के वकीलों द्वारा रामघाट में हाई कोर्ट की बेंच बिठाने का चिर आंदोलन अभी तो खैर युवा ही है। देश में प्रचलित भ्रष्टाचार के आम मापदंड के अनुरूप हर विभाग के अधिकारी-कर्मचारी रामघाट में पोस्टिंग पाने के लिए सामान्य से ज्यादा लालायित रहते हैं। यहां के लोग रामघाट को इसी कारण से 'मिनी इंडिया' कहते हैं, ऐसा नहीं है; उपनाम तो यहां होते जा रहे हैं चहुंमुखी विकास और देश-दुनिया की हर सुविधाओं-गतिविधियों के 'प्रजेंस' पर हासिल हैं!

कल-कारखानों की संख्या घटे या बढ़े पूंजी वालों की मर्जी, भ्रष्टाचार फलता-फूलता रहे नेताओं-अफसरों की खुदगर्जी; जनता की मनमर्जी से रामघाट नगर का विस्तार चारों दिशाओं में होता गया है। बेरोकटोक वृद्धि के पीछे शहरों में घर बसाने की बढ़ती लालसा जगजाहिर कारक तो है ही, गर्मी के दिनों में भी इस क्षेत्र में चल रही होती शीतल पुरवइया भी एक अतिरिक्त आकर्षण है रामघाट में बसने के लिए। बरसात के बाद शरद ऋतु के स्वच्छ दिनों में रामघाट की उत्तर दिशा में हिमालय के एक-दो उत्तुंग शिखर दिखने लगते हैं, कभी-कभी। कहते हैं इस शहर में अपने प्रवास की सुबह इंदिरा जी की नजर हिमालय के एक ऐसे ही दूरस्थ धुंधले-से धवल शिखर पर पड़ गई थी, तब यहां के इंजीनियरों को सुझाव देते गई थी वह, शहर में

सौ मीटर ऊंचा आरसीसी फ्रेम्ड टावर का प्रोजेक्ट बनाइए जहां से लोग भारत-पुरुष हिमालय के दर्शन कर पाएं। लोग बताते हैं, तब के इंजीनियरों ने इसे काल्पनिक प्रोजेक्ट बताकर खारिज कर दिया था। वह न तो दोबारा इस शहर में आई, न उसे टावर की बात याद आई; वैसे भी भारत के प्रधानमंत्री को बहुत सारे काम होते हैं करने के लिए।

रामघाट एवं आसपास के जिलों के सैकड़ों गांवों के लोगों से यहां मोहल्ले दर मोहल्ले बनते-बसते गए हैं। निम्न मध्यमवर्गीय मोहल्ले के रूप में भिन्न-भिन्न नामों से तत्समय इनका नामकरण होता गया है, मसलन मधुबन, आनंद कॉलोनी, महावीर विहार, जगत जननी, गुरु कृपा, हाशिम टोला, सखा संतराम, साईं कृपा, परमहंस, आनंदलोक और भी बहुतेरे। ऐसा नहीं है कि रामघाट सिर्फ निम्न मध्यमवर्गीय जनों का शहर है। हकीकत में रामघाट तो मध्यमवर्गीय और उच्च मध्यमवर्गीय दोनों की जान और प्राण है। इनकी पॉश कॉलोनियां बजाप्ता सुनियोजित रूप से विन्यासित तो वास्तु के अनुरूप निर्मित-सज्जित हैं। यदि किसी को यहां के अमीरों की कॉलोनियां घूमने का जी करे तो एक दिन कम पड़ जाएगा। हिमालयन वैली, सतपुड़ा रेंज, गंगेटिक डेल्टा, पेसिफिक आइलैंड, कृष्णा एनक्लेव, इंडियाना ड्राइव जैसी पॉश कॉलोनियों में कोई ढंग से हो आए तो पहली प्रतिक्रिया के तौर पर मुंह से निकलेगा—बेंगलुरु-पुणे तो पासंग भी नहीं है इनके सामने!

ऐसा नहीं है कि रामघाट में गरीब नहीं बसते हैं, बल्कि रामघाट तो शहर ही है गरीबों का और गरीबनवाजों का! निम्न मध्यमवर्गीय कॉलोनियां शहर के मध्य, मध्य-पश्चिम और पश्चिम में हैं तो उच्च व मध्यमवर्गीय पॉश कॉलोनियां दक्षिण व दक्षिण-पूर्व में फैली हैं। पूरा उत्तरी और उत्तरी-पूर्वी हिस्सा साधारण एवं गरीब तबके से पटा है जिसे एकमुश्त बस्ती के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है। दरअसल रामघाट और उसके आसपास के कई जिलों से जुड़ी एक ऐसी आर्थिक सच्चाई है जो दूर से, यूं कहिए दिल्ली से दिखती नहीं है। इस क्षेत्र के दसियों जिलों के लाखों मजदूर दशकों से राज्यों की सीमा की पाबंदी से परे हिंदुस्तान के कोने-कोने में छितराए पड़े हैं। वे भागते तो हैं पेट की आग की आंच से, पर पड़े रहते हैं धुंधले भविष्य का पीछा करते हुए। ऐसे प्रवासी मजदूरों के विशाल जनसमूह का पहला-दूसरा घर हुआ करता है यह विशाल बस्ती; जैसे दूर देश में रहते हुए भी मन में टिमटिमाते तारे, तृप्ति के तारे! इसके समानांतर ही चल रहा है एक बड़ा विरोधाभास;

यहां के लाखों मजदूर देश के दूरदराज के शहरों में प्रवासी पक्षी जैसे उड़ते रहते हैं, तो दूसरे राज्यों से काफी संख्या में कुशल-अकुशल श्रमिक यहां की चालू फैक्ट्रियों में खपे-छिपे हैं। इस अर्धसत्य की व्याख्या कोई नेता या अफसर नहीं कर पाया है आज तक। उन प्रवासी मजदूरों के मन का भी सहारा हुआ करती है यह विशाल बस्ती। इन त्रिस्तरीय बसाहट के अलावा चौथा स्तर भी है; शहर के पूर्वी-उत्तरी छोर पर सौ-सवा सौ एकड़ सरकारी जमीन पर स्वयंभू स्लम सफलतापूर्वक चौथे स्तर के तौर पर स्थापित है। रामघाट में स्लम और बस्ती के बाशिंदों की उपस्थिति, बल्कि धमक इतनी है कि यहां जन्मी नई पीढ़ी ने इसे 'इंडिया' नाम दे रखा है और देश का पांचवां स्तंभ मानने लगे हैं अपने को! इस इंडिया में विभिन्न नागरिक सुविधाओं की स्थिति जाननी हो तो वहां जाने के बजाय नगर निगम कार्यालय जाना उचित रहेगा। रामघाट पच्चीस साल पहले ही नगर निगम बन गया था; तब से आज तक इंडिया का नाम सुनते ही मेयर और कमिश्नर क्या पूरा निगम कार्यालय माथा पकड़ लेता है!

शहर से पंद्रह किलोमीटर दूर के जंगलों में गुफाओं की शृंखला-सी फैली है; इन गुफाओं में अंकित प्रागैतिहासिककालीन भित्ति चित्र मानवीय विकास की दृष्टि से बहुत बड़ी देन है। यह गुफा विश्व धरोहर का दर्जा हासिल करने के अंतिम पायदान पर कब से पड़ी है। इसी भित्ति चित्रकला की बदौलत रामघाट एक बड़े टूरिस्ट डेस्टिनेशन के तौर पर उभरा है। शहर को फंक्शनल एयरपोर्ट का तोहफा भी इसी की बदौलत मिला है। सनातन धर्म मंडली अब इस गुफा को भगवान राम की आश्रय स्थली के तौर पर प्रचारित करने में जी-जान से जुटी है। दुर्लभ प्रागैतिहासिककालीन भित्ति चित्रकारी देखने की जिज्ञासा लिए यहां आनेवाले विदेशी पर्यटकों में इससे भ्रम की स्थिति पैदा तो होती है, पर इस मुद्दे पर अपना मुंह खोलकर बाघ-बकरी वाली कोई कहावत भला कौन अपने ऊपर चरितार्थ करना चाहेगा?

औद्योगिक विकास और शहरी विकास के संदर्भ में प्रदेश भर में रामघाट किस पायदान पर है, यह आंकड़ा आज तक किसी ने न देखा, न सुना है। शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के मामले में यह प्रदेशभर में बेशक अव्वल है; यह सच्चाई रामघाट ही नहीं प्रदेशभर की जुबान पर है। भले ही सारे सरकारी स्कूल, एक जमाने से मशहूर गांधी उच्च विद्यालय भी, अब फिसड्डी हो चले हों और जिला अस्पताल अस्त-व्यस्त रहता हो, पर निजी शिक्षण संस्थानों एवं

निजी अस्पतालों ने तो परचम लहरा ही रखा है। अब यहां के लोगों ने पुरानी बहसबाजी से तौबा-सी कर ली है, कि आखिर सरकारी स्कूल और अस्पताल इतने बदतर क्यों हैं? वैसे भी ऐसी बहस करने वाले अब निठल्ले कहे जाते हैं; यदि बहस करने वाला किसी कद का निकला, तो राष्ट्र विरोधी का तमगा स्टॉक में हमेशा भरे रहते हैं, ऐसे लोगों को अलंकृत करने के लिए। बीते कई सालों से इस शहर में कई नए-नए चौक-चौराहे चमक उठे हैं। यूं तो शहर के कई चौराहों पर महात्मा गांधी-सुभाष बोस-भीमराव अंबेडकर-सरदार पटेल-जवाहरलाल नेहरू-भगत सिंह की मूर्तियां विराजमान हैं, भले ही अब धूल-गर्त में डूबी हों; अब नए-नए चौराहों पर नई चमकीली धातु की बनी कई मूर्तियां प्रिज्म जैसी छटा बिखेर रही हैं। इन मूर्तियों को पहचानने के लिए जनता को नजदीक जाकर खुदाई से लिखे नाम पढ़ने पड़ते हैं; इनके काम पढ़ने के लिए तो इतिहास की न जाने कितनी असली-नकली किताबें पढ़नी पड़ेंगी।

रामघाट में राजनीतिक दलों की सक्रियता हिंदुस्तान के किसी भी शहर के मुकाबले बीस ही है; इस पर कोई चाहे तो कितनी भी बड़ी बाजी लगा दे, नहीं हारने की पूरी गारंटी है। शहर में नए-पुराने, छोटे-बड़े हर राजनीतिक दलों के कार्यालय हैं, कार्यकर्ता हैं, कार्यवाही है, और उनसे आगे करतब-कलाकारी है! पार्टी कार्यकर्ताओं में राजनीतिक जागरूकता इतनी कि जैसे मन का मालिक भगवान है, पार्टी के मुखिया तन के मालिक हैं; आलाकमान की कही बातों को सच साबित करने के लिए वाक् कला से काम ना चले तो कार्यकर्ता अपना तन तान देने में भी गुरेज नहीं करते!

यहां के दो-तीन बेहतरीन स्कूलों की बदौलत यहां के बच्चे हर दूसरे-तीसरे साल 10वीं बोर्ड व 12वीं बोर्ड में प्रदेशभर में प्रथम-द्वितीय-तृतीय स्थान झटक ही लेते हैं। 15 साल पहले स्थापित यहां के विश्वविद्यालय की गिनती अब प्रदेश ही नहीं, देश के विश्वविद्यालयों में होने लगी है। तीन साल पहले उद्घाटित राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय के बारे में कुछ बताना जल्दबाजी होगी। शहर के सैकड़ों बच्चे हर साल बैंकिंग, रेलवे, एसएससी आदि में निकलते ही रहते हैं; दस-पंद्रह बच्चे हर साल पीसीएस, एनडीए, सीडीएस, सिविल सर्विस की फाइनल लिस्ट में होते ही होते हैं, बल्कि हर दूसरे-तीसरे साल प्रॉपर आईएएस, आईएफएस, आईपीएस में भी एकाध बच्चे बाजी मार जाते हैं! सच कहें तो अपने ब्रिलिएंट स्टूडेंट्स पर शहर की नजर गड़ी रहती है, कि आनेवाले दिनों में वे शहर का परचम लहराएंगे ही लहराएंगे। अपने

उच्च शैक्षणिक वातावरण के बल पर ही इस शहर से निकले बच्चे देश-प्रदेश में उच्च पदों पर आसीन हैं; जहां कमाए-खाए-रहे, आखिर नाम तो शहर का ही ऊंचा हो रहा है न! रामघाट के शिक्षा स्तर को मुकाम तक लाने में यहां के कई समर्पित शिक्षकों व विद्वान व्याख्याताओं का बड़ा योगदान रहा है। आज भी इस शहर को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित एकमात्र शिक्षक पर गर्व है। वे सेवानिवृत्त होकर जरूर घर बैठ गए हैं, पर किसी भी मुश्किल घड़ी में शहर के सज्जन उनके पास ही दौड़ लगाते हैं!

घर-बार, झोंपड़ा-झोंपड़ी, धन-दौलत, शिक्षा-दीक्षा, सब कुछ होने के बावजूद रामघाट और आसपास के जिलों के लोगों का स्वास्थ्य स्तर निम्न कोटि का नहीं तो शोकग्रस्त-शंकाग्रस्त श्रेणी का जरूर है। इसके फलितार्थ हैं यहां कुकुरमुत्ते की भांति बढ़ते जाते निजी अस्पतालों का जाल। डागदर चौराहे से चारों ओर तीन किलोमीटर के दायरे में सैकड़ों निजी क्लीनिक और हजार से भी ऊपर केमिस्ट की दुकान लहलहा रही हैं। रामघाट का ग्रामीण क्षेत्र हर किस्म की उपज देने में प्रदेश ही नहीं, देश में भी सम्मानजनक स्थान रखता है; पर चिकित्सा सेवा की खेती जिस गति से डागदर चौराहे की परिधि में झूम उठी है, यहां की परंपरागत खेती तो पूरी सदी में भी वो रफ्तार न पकड़ पाए! यहां के लोगों को किसी चीज से सबसे ज्यादा डर और घबराहट होती है तो वह है किसी बिन बुलाई बीमारी की जद में आ जाने का शक। इसके पीछे एक बड़ा मनोविज्ञान जुड़ा है; शहर में चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञ कहते हैं, प्लेग-जैसी महामारी की चर्चा तो कभी हुई नहीं इस शहर में, पर आजादी से पहले भूकंप और रोंगटे खड़े कर देने वाले अकाल से हुई मौतें और आजादी के बाद जब-तब फैले चेचक और हैजा में लाखों लोगों के काल-कवलित होने की कहानी अभी भी लोगों की जुबानी है। स्वाभाविक ही किसी भी महामारी के फैलने की आशंका मात्र से रामघाट के लोग सिहर उठते हैं!

ऐसा नहीं है कि रामघाट की पौराणिक छवि और धार्मिक जड़ता चंद्रगुप्त मौर्य के लौह स्तंभ भांति अटल है। पिछले कुछ दशकों से रामघाट की धर्म परायण छवि बनाने में जुटे जत्थों को भले ही लगे उनकी मेहनत और लगन से तैयार जमीन अजर-अमर है, पर हकीकत में रामघाट में पनप रही नई वैचारिक पौध से धार्मिक जड़ता वाली भूमि में दोलन-दरार पैदा होती दिख रही है; भूगर्भीय तरंग-सी, अदृश्य। दरअसल किसी भी मानव समूह में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आर्थिक संपन्नता और सुविधाओं व अवसरों की उपलब्धता का

त्वरित परिणाम होता है विचारों एवं व्यवहारों में आजादी व खुलापन। पिछले दो दशकों में रामघाट के सामाजिक जीवन में विपरीत लिंगधारी के बीच विकासोन्मुख संपर्क बढ़ा है तो सार्वजनिक तौर पर विभिन्न वर्गों के पारस्परिक रिश्ते व आचरण में समयानुकूल बदलाव आता गया है। आधुनिकता के शिखर की ओर बढ़ रहे भारत के किसी भी शहर के समकक्ष रामघाट को रखकर बेशक परखा जा सकता है। विशेषकर स्कूल-कॉलेज-यूनिवर्सिटी में लड़के और लड़कियों के बीच विश्वासपूर्ण खुलेपन को इस शहर ने पचाना सीख लिया है। हालांकि यह भी एक सच्चाई है, गाहे-बगाहे घटते रहते यौनिक उच्छृंखलता से पूरा शहर मर्माहत भी होता रहा है। वैसे भी अब स्वतंत्र यौनाचार को वर्तमान सदी की कोई दीवार रोक लेगी, ऐसा नहीं दिखता। युवाओं के बीच आए खुलेपन का प्रभाव इस शहर में भी देखा जा रहा है; योग्यतानुसार करियर के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर स्वतंत्र रूप से जीवन साथी चुनने का आनंद ले पा रही है यहां की युवा पीढ़ी। समेकित रूप में यह शहर है सदाबहार, यहां के लोगों के जीने का अंदाज है जुदा; अपनी राग से जगते हैं, अपनी लय में आलाप-क्रियाकलाप करते हैं और अपनी ताल में सोते हैं! एक बड़ी सच्चाई अदृश्य भी है; ऐसे उन्मुक्त वातावरण की सहज उपज कला, विज्ञान, दर्शन, अर्थशास्त्र आदि के क्षेत्र में सार्वदेशिक व सार्वकालिक सिद्धांतों, अवदानों से रामघाट अभी तक वंचित है। इसके पीछे मुख्य कारकों में सर्वोपरि है यहां की पृष्ठभूमि में कुंडली मारकर बैठा देश-प्रदेश का राजनीतिक रसायन; जनमानस, विशेषकर युवा-मस्तिष्क और उसमें उपजती सोच में दृश्य-अदृश्य हस्तक्षेप-सा!

इस शहर के अनगिनत रंग हैं; रंगों के रूप-स्वरूप तो इतने गहरे कि शायद भवसागर की लहरें और कयामत के जलजले भी इन रंगों को बेरंग न कर पाएं! यहां स्कूल-कॉलेज-विश्वविद्यालय के स्टूडेंट्स में तरह-तरह की धुन और सनक सवार रहती है; चाहे अपने जोड़ीदार के संग जिंदगी के हर तजुर्बे को हासिल करने की तमन्ना हो या समय के अनुकूल कुछ नया करते रहने की उमंग में तैरते रहना हो या फिर बेहतर देश-दुनिया बनाने-संवारने में हाथ बंटाना हो। सामुदायिक जीवन के रंग में अनायास खलल पड़ते ही यहां के जनमानस, खासकर युवा पीढ़ी अपनी जगह से उठ खड़ी होती है। यहां के नवयुवकों के दिलो-दिमाग में इस शहर की सतरंगी छटा जीवंत रहती है, मन-मस्तिष्क में दूर तक की दुनिया बसती है; तभी तो देश की किसी भी सरकार की लापरवाही या अतर्कसंगत कार्यकलापों से जिंदगी में आसन्न

उथल-पुथल यहां के चिंतनशील युवाओं को कतई बर्दाश्त नहीं होती! अन्य बड़े शहरों के बनिस्पत यहां की युवा पीढ़ी में मानवतावादी विचारधारा और समाज-उन्नयन की सोच ज्यादा ही प्रखर है। स्वाभाविक ही समय की चाकरी और उसकी निष्पत्ति को वे अपनी सोच में खारिज करते चलते हैं। तभी तो किसी नए मुद्दे या आसन्न चुनौती के समय कॉलेज-यूनिवर्सिटी के नौजवानों के समूह सांसारिक अवचेतन वाले आवरण से बाहर आकर चेतन अवस्था में मुखर हो उठते हैं! यहां की नई वैचारिक हवा इस शहर की एक बड़े पहचान चिह्न के रूप में उभरी है, कदाचित धर्म-आरूढ़ कई पुराने पद-चिह्नों को पछाड़ते हुए, मंद गति से ही सही। विश्वविद्यालय के विवेकशील विद्यार्थियों के समूह में पक्की अवधारणा पनपने लगी है कि देश की तकदीर की रेखाएं हुक्मरानों-पंडों-पादरियों-मौलवियों के हाथों की लकीर तले दबी पड़ी हैं, तभी तो पुनर्जागरणकालीन अदृश्य और अप्रकट सच्चाई इस शहर में धीरे-धीरे प्रकट हो रही है; धर्म और राजनीति के मंच पर मंचासीनों की अनर्गल-अनावश्यक वचन-वाणी भाव-भंगिमा पर प्रश्न चिह्न का आवरण पहनाने से नहीं चूकती यहां की युवा-चेतना! ये पीढ़ी जिंदा-जीव मात्र के खोल से बाहर आकर जीवंत दृष्टि के साथ गतिशील रहना चाहती है; तभी तो वे समय और सिस्टम का मूल्यांकन किसी स्थापित परिपाटी-प्रक्रिया के बजाय किसी भी चुनौती के समाधानमूलक पद्धति-पैमाने से करने लगे हैं। ऐसी चेतना का स्रोत रही है स्थानीय गांधी हाई स्कूल में बनती रहती बाल-संसद की सुदीर्घ परंपरा। बाल-कैबिनेट में तपे-रमे विद्यार्थियों में स्व-बोध रहा है, कि वे देश के किसी भी मंत्री-प्रधानमंत्री से आगे बेहतर सोच सकते हैं, समझ सकते हैं और कर सकते हैं! रामघाट में स्व-बोध की उसी ऊर्वर भूमि का ही परिणाम है कि देश-दुनिया में आसन्न किसी भी बड़ी घटना की स्वत: स्फूर्त प्रतिक्रिया जाग्रत हो उठती है, यहां के युवा-मस्तिष्क में।

3

'इतनी देर हो गई? सो कहां चली गई थी कंपकंपाती ठंड में!' शायनी के लिए थाली लगाती हुई माँ बोली, उसकी ओर देखे बिना।

'माँ, तुम सब जानती हो, फिर भी पूछती हो; एमए फाइनल ईयर में हूं, भले-बुरे की समझ अब है मुझे।' माँ की ओर पूरी नजर उठाकर शायनी ने जवाब दिया; क्षणभर वैसी ही खड़ी रही, फिर बोलते हुए अंदर चली गई,

'चेंज कर आती हूं, आराम से खाऊंगी।'

कपड़े बदलते हुए वह व्यस्त हो गई, मन के साथ मौन-वार्तालाप में...माँ को पता है सहज के साथ जाती हूं, उससे फ्रेंडशिप है मेरी; एक ही प्रश्न कितनी बार रिपीट करेगी माँ। दो-तीन महीने पहले भी तो घुमा-फिराकर कुछ ऐसे ही टोकी थी। आखिर माँ लोग समझती क्यों नहीं हैं; कॉलेज-यूनिवर्सिटी में फ्रेंडशिप ना करें तो स्टूडेंट्स लोग पागल हो जाएं! समझ में नहीं आता, आखिर पिछली पीढ़ी हमारे समय को अपने जमाने के चश्मे से क्यों देखती है? इसलिए कभी-कभी मन खीझ उठता है माँ पर। ...बब्बा री बब्बा! मेरे होंठ सच में इतने लाल हैं! आईने में यह तो मुझे ही अपील करने लगे हैं! तभी तो सहज की दीवानगी जाग उठती है, क्या तो बोलता है...मधु से भी बढ़कर मधुरस रिसता रहता है इसके अंदर से...माय गॉड! आईने में ये दोनों उभार कैसे आंखें फाड़ कर मुझे ही देखे जा रहे हैं, तभी तो चेंज के समय हर दिन यह मुझे अंदर तक सिहरन दे जाते हैं। क्लास की लड़कियां कितनी तो जलती हैं; तभी तो कहती हैं अपने भारी हथोड़े से शायनी ना जाने कितने मजनुंओं को बेहोश कर चुकी होगी। ...अरे बाबा! मेरे ये होंठ, सीने से जड़े जोड़ीदार, नाभि और उससे नीचे...क्या इसीलिए कवियों ने स्त्री को दुनिया की सुंदरतम सृष्टि कहा है? आईने में ये चारों मुझे मोहित किए रखते हैं फिर तो लड़के क्यों नहीं मदहोश होंगे! तो सहज के साथ दोस्ती को मुकाम तक क्यों न पहुंचाऊं मैं? क्या सच में नारी शरीर एक बड़ा रहस्य रहा है पुरुषों के लिए? आदिकाल से ही; पर खोज शायद पूरी नहीं हुई है अभी तक! ग्यारहवीं से अभी तक मेल-फीमेल के बॉडी ऑर्गन्स पढ़-पढ़कर बूढ़ी हो चुकी हूं, पर यहां आईने के सामने सब कुछ नग्न देखते ही हर दिन क्यों लगता है जैसे ये सारे उपहार अभी-अभी मुझे मिले हों! चेंज करते वक्त हमेशा तो अपनी बॉडी को देखती हूं, फिर भी प्रतिदिन नया-सा दिखता है, दिन-ब-दिन देखते जाने की ललक बढ़ती जाती है; सच ही तो लड़कों की आंखें भला कैसे तृप्त हो जाएंगी। दुनिया को जो कहना है कह ले, सहज को अपने में समाए रखूंगी...

...अरे पगली! खाना ठंडा हुआ जा रहा है...

आई माँ...शिट! सच में पागल हूं, आखिर अपनी ही बॉडी इतना घूरकर देखने की चीज है भला! ओह नो, हाउ क्रुएल आईएम! हर चीज अपने हिसाब से क्यों सोचती हूं; मुझे माँ की पोजीशन में बैठकर भी सोचना चाहिए। अकेली लेडीज, घर में बाईस साल की जवान बेटी! जंगली जमाने में सुकून

से भला कैसे जी पाएगी माँ; जवान बेटी की माँ!

"बेटा, आजकल तुम्हारा खाना क्यों कम होता जा रहा है," शायनी के छोटे-छोटे कौर पर कब से गौर कर रही माँ ने टोका।

"जब मैं खा रही होती हूं, तुम सामने तराजू लेकर बैठी रहती हो क्या?" एक कौर रोककर बोली शायनी, फिर मुंह में लेते हुए बोली, "मेरी चिंता कब तक करती रहेगी माँ।"

"अपनी होशियार बेटी की चिंता मैं क्यों करूं, चिंता करें मिस्टर-मिसेज गुप्ता।" कुर्सी छोड़कर कमरे की तरफ जाते हुए बोलती गई माँ।

"क्यों, क्या हुआ उन दोनों को!" थाली से ध्यान हटाकर कमरे की तरफ आंख उठाते हुए वह बोली।

"आजकल तो लोग अपने में मगन हैं, पड़ोसी के बारे में भी कुछ नहीं पता रहता है," इतना बोलकर माँ ने आवाज धीमी कर ली, "गुप्ता भाभी की बेटी का कल डॉक्टर मंजूश्री के क्लीनिक में..."

"समझ गई, समझ गई!" शायनी बोली तो थी धीरे से पर बचा खाना छोड़कर उठ जाने से जाहिर था 'डॉक्टर मंजूश्री' वाली बात पर रुष्ट हो गई है; शहर में सबको पता है, अबॉर्शन के लिए 'मंजूश्री गायनी क्लीनिक' एक कुख्यात नाम है।

"अरे बेटा, बुरा मान गई!" माँ की आवाज कुछ-कुछ भरपाई करती-सी निकल रही थी, "तुम्हारे बाहर जाने वाली बात पर तुम्हें टोका जरूर था, पर इसका गुप्ता की बेटी से कोई लेना-देना नहीं है, डोंट लिंक इट" फिर शायनी के कमरे तक जाती हुई बोली, "आजकल एक नए किस्म के वायरस से देश-दुनिया में इंफेक्शन फैलने की बात चल रही है, इसलिए मुझे तुम्हारे बाहर जाने पर चिंता लगी रहती है।"

आज माँ पर शायनी फिर खिन्न हो उठी, मन-ही-मन...आलू का इंफेक्शन फैला है देश-दुनिया में; सीधे-सीधे क्यों नहीं बोलती, सहज से संभलकर नहीं रहेगी तो 'मंजूश्री गायनी क्लीनिक' के ओटी में जाना पड़ेगा।

4

सहज; नाम में भला क्या रखा है, मन में जो टारगेट तय हो गया हो उस तक पहुंचने के लिए सटीक लीक पर चल पड़ता है। मैट्रिक बोर्ड में पूरे रामघाट कमिश्नरी में टॉप रहा तो यूनिवर्सिटी तक में अपना पायदान खिसकने तो

क्या हिलने-डुलने तक नहीं दिया। अर्थशास्त्र में पकड़ ऐसी कि फ्रेंड्स लोग कहते, यदि यह बंदा अमेरिका चले जाए तो दुनिया का अर्थशास्त्र ही बदल दे। डैड के फैलते जा रहे कारोबार से भली-भांति रूबरू है, स्कूल जमाने से ही। रामघाट ही क्यों, पूरे प्रदेश के उद्यमियों में शुमार है पिता हंसामल लोढ़ा। स्वाभाविक ही अर्थशास्त्र में बेटे की पकड़ जन्मजात रही है। बाकी टॉपर बनते होंगे डॉक्टर-इंजीनियर-आईएएस, वह तो अर्थशास्त्र स्ट्रीम में रमता गया है। हंसामल भी तो बेफिक्री की जिंदगी जीने लगे थे, अर्थशास्त्री पुत्तर उसकी कुर्सी पर बैठेगा तो नेट वेल्थ को डबल होने में चंद साल ही लगेंगे।

इस सदी में युवाओं, खासकर प्रखर मेधा वाले युवा की दिशा बदलते देर नहीं लगती। आज भी वह अपनी आलीशान बालकनी में बैठकर वैसा ही कुछ सोचे जा रहा था; एक साल पहले की बात है, बिजली-सी कड़क उठी थी, दिमाग में नहीं, दिल में...प्रदेशभर में डैड का जलवा है, रामघाट में कितने तो पूंजीपति आते हैं लापता हो जाते हैं; मंदी-नारेबाजी-नेतागिरी के चक्रव्यूह से कितने कारोबारी बाहर निकल पाते हैं? तभी तो हंसामल को कारोबार जगत के लोग अभिमन्यु से आगे का बताते हैं। पर...पर क्या डैड असली विजेता हैं? क्वेश्चन इज सो सिंपल! व्यवस्था का विजेता कौन है? वही ना जिसके हाथ में सिस्टम का रिमोट कंट्रोल है। डैड के वृहद् अर्थ-जगत के आय-व्यय को बचपन में तो वह दूर से कुछ-कुछ देख-समझ पाता था, पर यह सब कुछ अब तो उसे एयरपोर्ट के आगमन-प्रस्थान जैसा लगता है; रामघाट के किस एमपी-एमएलए को डैड ने चुनाव-चंदा के नाम पर भारी-भरकम थैली नहीं थमाई है! रामघाट में ऐसा कौन-सा एसपी, कलेक्टर आया जिसकी कोठी में डैड ने दीवाली से पहले मोटी दीवाली ना भिजवाई हो। कुछ वर्षों से उसे घिन्न-सी आने लगी है; आंखों के सामने यह सब होते देखना, देखने से ज्यादा कुछ ना बोल पाना। तभी तो सालभर पहले उसके अंदर बिजली-सी कड़क उठी थी, जब सिस्टम को बदलना मुश्किल हो तो सिस्टम की सवारी ही कर लेनी चाहिए...शिट! सोचते रहने का सिलसिला शुरू हो जाता है तो रुकता ही नहीं। डैड सच ही कहते हैं, ज्यादा सोचना एक तरह की बीमारी है; डिनर पर कब से इंतजार कर रहे होंगे ममा और डैड...

"हाय डैड! आज आप जल्दी घर आ गए!" पिताजी की ओर मुस्कुराकर बोला सहज, फिर कुर्सी खींचते हुए कहा, "मुझे लगा घर पर शायद कोई पेंडिंग वर्क होगा, तभी आज इतनी जल्दी आ गए हैं; आपने अभी तक प्लेट

भी नहीं लिया है!"

"नो सर! टुडे आई वांट टू गिव यू कंपनी, सोचा युवा शक्ति के साथ शुरू करने का लुत्फ तो उठाऊं कभी-कभी।" अपने स्वभाव के अनुरूप हंसामल ने डिनर टाइम को 'ओपन' बनाने के ख्याल से कहा।

"थैंक यू सर! इट्स माय प्लेजर," सहज फॉरमल टोन में इस तरह बोला जैसे पिताजी को नहीं, शहर के बड़े पूंजीपति के स्वागत में कहा हो; फिर माँ को आते देखकर कहा, "ममा, जॉइन अस प्लीज।"

"स्योर-स्योर, थैंक्यू बेटा।" खाने के समय सहज को घर पर पाकर माँ खुशी से सराबोर हो उठी; उसकी ओर नजर उठाकर खैर-खबर लेनी चाही, "दिनभर कहां-कहां पागल बना फिरता रहा।"

"माय डियर, फ्रेंडशिप का जमाना है," आज के फैमिली टाइम को हंसामल लाइट रखना चाहते थे, सो रुके नहीं, "शहर में आजकल बच्चे जोड़े में घूमते हैं, जैसा समय वैसी रफ्तार।"

"सहज का हाल-चाल पहले मैं जान तो लूं, फिर तुम अपनी फिलॉसफी बीच में लाना," माँ-बेटे के बीच में पति का 'ज्ञान' पत्नी को स्वीकार्य नहीं होता, जमाने से स्थापित सत्य सा।

"बस कुछ नहीं ममा, सीएस का मटेरियल ही सेलेक्ट कर रहा हूं आजकल।"

"अब जब इसने अर्थ छोड़कर एडमिनिस्ट्रेशन की ओर मन बना ही लिया है, फिर तो राजमाता को नए माहौल के लिए तैयार रहना होगा!" हंसामल ने पत्नी से कहा; लगा सचमुच वह आज के डिनर को लाजवाब बनाना चाहते थे बेटे सहज के साथ, वैसे भी सप्ताह में ऐसा मौका एक-दो बार ही आ पाता है।

"शासन-प्रशासन में जाकर सबकी हांक नहीं लगाएगा तो पढ़कर टॉपर बनने का मतलब ही क्या है!" खाना परोसती हुई माँ बोली, फिर मन में कब से दबा पड़ा गुबार बाहर निकाल दिया, पति को छौंक-सा लगाते हुए कहा, "आपके जैसा सुबह से रात तक फैक्ट्री का पहिया थामे रहेगा क्या!" पारिवारिक जीवन का एक बड़ा यथार्थ है, पति का पेशा चाहे जैसा हो पत्नी को अपनी निजी जिंदगी में खलल देता जान पड़ता है।

"अरी भाग्यवान! मैंने कब मना किया?" पत्नी के सामने कभी-कभी परास्त दिखने में आनंद मिलता है हंसामल को; स्वभावतः एक कदम आगे दिखने के लिए बोले, "तुम खुद पूछ लो सहज से, एक साल पहले इसने

जब मुझे बताया था कि यूएसए से इंडस्ट्रियल इकोनॉमिक्स में मैनेजमेंट करने का प्लान ड्रॉप कर रहा है, सिविल सर्विस में जाने का मन बना रहा है, तब मेरे होंठों में मुस्कान आने में सेकंड भी नहीं लगे थे।"

"मुस्कान क्यों नहीं आवेगो, किसी का बच्चा एसपी-कलेक्टर बन जाए तो पेरेंट्स रोवोगो क्या!" माँ के मन की बात बाहर आई।

"इशू हँसने-रोने का नहीं है, बच्चे को अपने चॉइस के करियर में जाने के लिए मोटिवेट करना ही जेनवीन सपोर्ट है!" परिपक्व पिता की तरह बोले हंसामल।

"तुम्हारा प्रिपरेशन कहां तक पहुंचा है," सहज की प्लेट में दोबारा सब्जी डालती हुई माँ बोली; चेहरे में संतोष की रेखाएं उभर आईं थीं, पुत्र के संकल्प का साथ देना माँ की बड़ी साध होती है।

"इको तो मेरा सब्जेक्ट है ही, एक साल से जेनेरल स्टडीज में फोकस कर रहा हूं," बोलते हुए सहज सच में अपने पथ पर बढ़ता हुआ दिखने लगा, आगे अध्ययन प्रकृति को स्पष्ट किया, "कुछ और फ्रेंड्स हैं जो पहले से ही सीएस के लिए फोकस्ड हैं, उनके साथ भी तैयारी को लेकर चर्चा होती है।"

"दैट्स नाइस डियर," डैड ने तैयारी के तरीके पर हर्ष व्यक्त किया, आगे अपना मंतव्य जोड़ा, "आई बिलीव, स्टूडेंट्स जो भी टारगेट फिक्स करें वहां तक पहुंचने के लिए बेस्ट पाथ अडॉप्ट करना चाहिए।"

"फुल्ली एग्रीड डैड, हमारे सभी फ्रेंड्स फोकस्ड हैं।"

"वो लड़की भी तो तुम्हारे सर्किल में है शायद, टॉपर-वॉपर भी रही है?" हंसामल की आंखें बेटे की तरफ उठीं, फिर पलकें अपने-आप नीचे झुक गईं; समाज में चाहे जितना भी खुलापन आ गया हो, परिवार कितना भी प्रगतिशील क्यों ना हो, बच्चों से गर्लफ्रेंड-बॉयफ्रेंड की चर्चा करते हुए पेरेंट्स को हिचक होती ही है।

"अच्छी बात है, दोस्ती करने की उम्र में दोस्ती नहीं करेंगे तो कब करेंगे बुढ़ापे में!" माँ ने प्रसन्नता व्यक्त की; स्त्री प्रकृति अनुरूप जरूरी टोह भी लेनी चाहिए, "उस लड़की की चर्चा तो पहले भी हो चुकी है एक-दो बार, तुम्हारी तो कब की दोस्ती है उससे! अदरवाइज कौन है वह?"

"ममा, शी इज शायनी; तुमसे तो मिल भी चुकी है? शायद ध्यान में न होगा।" माँ और पिताजी की तरफ बारी-बारी से पलकें उठाकर सहज ने कहा, आगे सफाई देने जैसा बोला, "वह तो हमारे स्कूल की ही स्टूडेंट रही

है, मुझसे एक साल जूनियर; वैसे वह तो सिविल सर्विस के लिए पहले से ही डिटरमाइंड है।"

"उनके पैरंट्स?" माँ की जिज्ञासा तो जागती ही है ऐसे मामलों में।

"उस बेचारी के पिता नहीं हैं, माँ स्कूल में टीचर हैं।" बोलकर जल्दी-जल्दी खाना समाप्त करने लगा; अंदर से असहज होने लगा था वह।

"उसी ने तुम्हें सीएस के लिए मोटिवेट तो नहीं किया है!" बोलकर पिता ने पुत्र की ओर तिरछी नजर से देखा; डाइनिंग टेबल छोड़ते हुए चेहरा घुमाकर बोले, "तुम्हारी मम्मी के कहने का आशय है, साधारण घर की लड़की है, जैसी दोस्ती चाहे कर लो, वो नौबत ना आए कि...।" पिता की बात पूरी होने से पहले ही सहज छोटे वाले लॉन की तरफ खुलते दरवाजे की ओर बढ़ चुका था।

"तुम तो सच में बेशर्म हो।" पति के करीब जाकर वह धीमे से बोली; आगे पति को समझाने के लहजे में बोली, "आजकल के लड़के-लड़की को दोस्ती करने से पेरेंट्स रोक सकते हैं क्या? अरे मैं तो कहती हूं दोस्ती से मन भर जाएगा तो जल्दी ब्रेक अप भी हो जाएगा, यदि दिल भरने लगेगा फिर तो हमारे-तुम्हारे सर पीटने से भी साथ न छूटेगा!"

"इस घर में टीचर की बेटी सूट करेगी तुम्हें? यदि वह आईएएस वगैरह कर जाती हो तब तो ठीक है; अदरवाइज कारोबारियों की दुनिया में हमारी इज्जत का..." बोलते-बोलते रुक गए हंसामल; आगे की बात उसके चेहरे की बदली रंगत पूरी कर रही थी।

"तो तुम सीधे-सीधे सहज को क्यों नहीं बता देते हो? सामने तो ऐसी बातें करते हो जैसे तुम उस लड़की को बहू स्वीकार कर चुके हो!" पत्नी झुंझला उठी।

"तुम्हारे हिसाब से बेटे के सामने कैसी बातें करनी चाहिए, गाली-गलौज वाली? यू नो डार्लिंग इस मुद्दे पर पिछले साल भी सहज से तर्क-वितर्क हो चुका है, दुबारा छेड़ना बच्चे के प्रति अपराध जैसा लग रहा है मुझे।" उसने लंबी सांस लेकर कहा।

"फिर तो मुंह बंद करके समय के फैसले का इंतजार करो।" बोलकर पत्नी ने किचन की ओर उंगली से संकेत किया।

"समय के फैसले का इंतजार नहीं, कारोबार के हित में समय रहते ही सही निर्णय लेने का साहस करना पड़ेगा हमें!" बोलकर हंसामल भी छोटे

लॉन की तरफ बढ़ चले, बेटे के साथ बातों की नई पारी शुरू करने। पीछे से पत्नी बोलने से न रोक पाई अपने को, "और बेटे के हित में भी।"

मैडम के संकेत पर हरेराम और महाराज जी आकर डाइनिंग टेबल समेटने में जुट गए।

5

रामघाट का उजड़ा महल; शहर की सीमा से कोई चार-पांच किलोमीटर बाहर। डेढ़ सौ वर्षों तक नवाबशाही रही है यहां, नवाबघाट के नवाबों की। कहते हैं मनुष्य की बनाई हर चीज का अंत होना ही होना है। बेखौफ ताकत, बेशुमार दौलत और बेपनाह मोहब्बत की पलकों में जीने वाले नवाबशाही, साथ ही उसके नवाबवाड़े का भी समय के साथ पतन होता गया! यह खंडहर शहर को अपनी पुरानी राजधानी याद दिलाते हैं; उजड़े महल के नाम से लोगों की जुबां पर जिंदा होकर। आसमान से गुफ्तगू करता बिना छत वाला खंडहर। यूं तो शायनी और सहज की मुलाकातें यहां-वहां होती रही हैं; पहली बार एकांत में यहीं मिले थे, कोई सालभर पहले। वैसे तो दोनों पहली कक्षा से ही गांधी हाईस्कूल के स्टूडेंट रहे हैं; स्कूल के दिनों में भी शायद एक-दूजे के लिए दो दिल धड़के होंगे। जब भी स्कूल के उन विस्मृत क्षणों को दोनों याद करते हैं, दोनों के मुंह में हँसी के गुब्बारे भर आते हैं; गुब्बारे जो उजड़े महल में ही कैद होते जाते हैं, आलिंगनबद्ध देह के पोर-पोर में घुलते हुए।

सहज, अर्थशास्त्र से एमए कर चुका है पिछले साल, अब सिविल सर्विस के लिए जी-जान से जुड़ा है। शायनी भी बारहवीं के बाद अपना पसंदीदा सब्जेक्ट प्राणी विज्ञान छोड़ ना पाई; अभी एमएससी फाइनल ईयर के एग्जाम के लिए डटी है दिन-रात। बावजूद इसके घंटे-आधे घंटे का साप्ताहिक एकांतवास यहां बंद नहीं हुआ है, बल्कि मिलने की बेताबी बढ़ती ही गई है। किशोरवय से युवावस्था के शिखर की ओर बढ़ते शरीर के हर अंग और अवयव भी तो मजबूती से मन का साथ निभाने लगते हैं!

उन दिनों को याद कर शायनी के अंग-अंग आज भी जाग उठते हैं। तब वह ग्यारहवीं में हुआ करती थी; स्कूल के बंद कैंपस में भी दुनिया के द्वार खुले हुए महसूस करने लगी थी वह, धीरे-धीरे। ग्यारहवीं में क्लास के बाद उतना प्रतिबंध नहीं होता था जितना दसवीं तक हुआ करता था! स्कूल

के प्रतिबंध और आजादी तो अपनी जगह बदस्तूर जारी रही है वर्षों-वर्षों से, असली आजादी तो शरीर के अंदर आती महसूस करने लगी थी वह। तब उस आजादी को कैद करने की वह जितनी कोशिश करती वो उतनी ही बेकाबू होती जाती थी; सोते-जागते उसे महसूस होता उसका तन-मन तो किसी अदृश्य रस में भीगा जा रहा है। दो महीने बाद आए ग्यारहवीं के नतीजे उसे हल्का-सा झटका दे गए थे; शहरभर में यह चर्चा आम हो चुकी थी, जिले भर में दसवीं की टॉपर शायनी ग्यारहवीं में पांचवें स्थान पर खिसक गई! यह बात दीगर है कि आगे बारहवीं हो या बीएससी उसका प्रथम स्थान बरकरार रहा। अब इस उजड़े महल में सहज के आगोश में वह उन दिनों के तूफान को महसूस करती है, लेकिन बड़े फर्क के साथ; अब अंदर का तूफान सिर्फ उफनता नहीं है उसकी रफ्तार नियंत्रित भी होती जाती है, जब वह अपने जलते होंठों को सहज के गीले होंठों के हवाले हो जाने देती है।

जब दो दिलों का बंधन अटूट-सा हो तो एक तसल्ली-सी होती है; सबकुछ अपनी हथेली में बंद कर लेने की तसल्ली। कोई आपाधापी नहीं, कोई हड़बड़ी नहीं; जिंदगी के सफर में जब-जहां घनी छांव मिलेगी दो बदन एक मन होना भर तो है! चार-पांच महीने पहले की बात है, शायनी एमएससी फर्स्ट ईयर के एग्जाम से मुक्त होकर उन्मुक्त अनुभव कर रही थी। तब इसी उजड़े महल में समंदर की लहरें-सी कुछ-कुछ उसकी अक्षुण्ण काया से बार-बार टकरा रही थीं; सहज के आगोश में उसकी आंखों से उठती लहरें, कामाग्नि भड़का देनेवाली शाश्वत लहरें! फिर तो खंडहर के बेगम महल को दोनों के प्रथम अनुभव का गवाह बनने की क्षणिक देरी भर रह गई थी।

"नो-नो, मुझे कुछ अजीब-सा लग रहा है।" उठकर खड़ी हो गई थी वह। उस मुकाम की ओर पग बढ़ा चुकी शायनी सकपका गई थी; आज भी।

"व्हॉट इज रॉन्ग विद यू शानी?" जमीन की ओर गड़े शायनी के चेहरे को ऊपर उठाते हुए कहा था सहज ने, अपने अंदर बेकाबू हो उठा ज्वार छिपाते हुए; सहज के होंठों पर वह 'शानी' बनकर ही बैठी होती हमेशा, प्रणय की अमापित दुनिया बसाए हुए।

"खंडहर के पेड़ों से कितनी तो चिड़िया देख रही हैं हमें?" पलकें ऊपर उठाते ही वह शर्मशार हो सिकुड़ी जा रही थी।

"तुम तो ऐसे बोल रही हो जैसे ये चिड़िया नहीं, तुम्हारे पड़ोसी हों!"

सहज की नाराजगी बाहर आने लगी।

"ओपन में लड़कियां कितनी असहज महसूस करती हैं यह तुम लड़के लोग नहीं समझ पाओगे," बोलते हुए शायनी का शरीर सिहर उठा, "ऊपर खुला आसमान है; अब देखो वो फ्लाइट लैंड कर रहा है!" अब तो वह और भी शरमा उठी; हया की मौन भाषा बता रही थी, 21वीं सदी में भी नारी वर्ग में पुरुषों के बराबर उच्छृंखलता नहीं आने वाली।

"तुम्हें क्या लग रहा है पायलट लैंडिंग पॉइंट को छोड़कर तुम्हें देख रहा है!" सहज अब खिन्न होने लगा।

"ठीक है, अब आज की बात यहीं खत्म करो; आज तीस जनवरी है, यूनिवर्सिटी में शाम को गांधी बलिदान वाले फंक्शन में जाना होगा हमें।" सहज की ओर एक नजर देखकर आंखें चुराते हुए बोली, चेहरे में याचना-भाव के पर्दे गिराते हुए जैसा।

"सच में लड़कियां बात बनाने में माहिर होती हैं, फ्लाइट वाली बात छोड़कर अब गांधी बलिदान पर आ गई!" बोलते हुए सहज के होंठों पर फिर से उसकी स्वाभाविक हँसी तैर गई; प्रणयपूर्ण, निष्कपट।

"आज के लिए दोनों बातें सही हैं; आज तीस जनवरी है तो समझ लो इस फ्लाइट से कोई हत्यारा उतर रहा होगा," बोलकर वह रहस्यमयी ढंग से ऊपर आसमान में देखने लगी।

"हत्यारा! कौन? गोडसे!" अब सहज भी अंदर से सिहर उठा, प्रथम संसर्ग-सुख पाने का दृश्य क्षणभर में ही हत्यारे के परिदृश्य में बदलता देखकर।

"समझो गोडसे की फौज; सिर्फ एक जन को नहीं मारेगी, समझो देश के ऊपर दशकों लंबी काली छाया डालकर निकल पड़ेगी!" वह बोल तो गई, पर ये बातें उसे कंठ से नहीं अंदर किसी अदृश्य स्थल से निकली जान पड़ीं।

"तुम जूलॉजी पढ़कर भी दर्शन की बातें बघार रही हो; असली मुकाम से ध्यान हटाकर यहां-वहां हांक रही हो?" सहज के अंदर उठा तूफान थम नहीं रहा था।

"ट्राय टू अंडरस्टैंड मी! अपने आपको यहां रेडी नहीं कर पा रही हूं; दुनिया आज ही खत्म हो रही है क्या?"

"दैन?" बोलते हुए अंदर का ज्वार तब भाटा बनकर नीचे की ओर जाते महसूस किया था सहज ने।

"हम दोनों लंबे समय से एक-दूसरे से बंधे हैं सहज, आई वांट टू एंजॉय लाइफ अप टू एनि एक्स्टेंट! तुम्हें क्या लगता है, मैं किसी और से फिजिकल हो जाऊंगी!" बोलते हुए उसकी आंखों में नमी तैरने लगी थी।

"माय डियर शानी, मैं वैसा कोई काम नहीं करूंगा जो हमारे बीच हवा जाने लायक भी दरार बना जाए; अभी आगे सात जन्म का सफर भी तो शुरू करना है हम दोनों को!" बोलने के दरमियान ही उसने शायनी को अपने आगोश में छुपा लिया था। तब उसने महसूस किया था, यह सिर्फ उसकी शानी नहीं पूरे धरती में नारी का मूल स्वरूप है। फिर उसकी आंखों में डूबते हुए बोला, "आई विल वेट फॉर वैलेंटाइन डे!"

"श्योर, आई विल कीप मायसेल्फ मेंटली रेडी!" बोलते हुए शायनी ने महसूस किया, सहज से ज्यादा तो वह खुद बेकरार हुई जा रही है प्रथम संसर्ग सुख पाने के लिए।

उस दिन उजड़े महल से लौटते हुए शायनी आसमान में उड़ी जा रही थी। बाइक में पीछे से सहज को कसकर थामे उसे यह यकीन हो चला था, दुनिया की किसी भी प्रेम कहानी से उन दोनों की कहानी कमतर नहीं; आखिर आजकल के 'बहती हवा चलता पानी' वाले समय में ऐसा कोई पेयर है जो इतने लंबे समय तक साथ रहने के बाद भी उस 'मुकाम' से दूर रह पाया हो! साठ की स्पीड से बाइक उड़ाते रहने के बावजूद सहज से रहा न गया, "शानी, तब तुम्हारे मुंह से यह क्या निकल रहा था, गोडसे की फौज...देश में लंबी काली छाया...!"

"अरे छोड़ो भी, ऐसे ही निकल गया होगा।" वह खुद भी तो मंथन कर रही थी कब से, मन-ही-मन; उसे खुद भी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा था, आखिर यह सब बातें बिना उसके कुछ सोचे अंदर से अपने आप कैसे और क्यों निकल गईं?

"नहीं यार, नारी वचन सत्य वचन! कुछ तो है या होने वाला है..."

"..."

"..."

बातों-बातों में बाइक शायनी के मोहल्ले वाले पटेल चौराहे पर पहुंच चुकी थी। बिना देर किए वह उतर गई; घर की तरफ बढ़ते हुए पीछे मुड़कर देखती भी जा रही थी।

6

14 फरवरी, 2020; शहर के युवाओं में 'वैलेंटाइन डे' की खुमारी छाई हुई थी, दृश्य और अदृश्य दोनों ही रूप में। खुलेआम पाए जाने पर लविंग बर्ड्स अब कार्यकर्ताओं द्वारा कतई नहीं बख्शे जाते! दोनों को पता है, उजड़ा महल वे ही जाते हैं जिनका कलेजा मजबूत हो; इतने बड़े शहर में मजबूत कलेजे वाले भी तो विरले ही थे। दोनों दिल के बादशाह तो थे ही, तार्किक और बौद्धिक रूप से भी संपन्न थे; तभी तो उजड़े महल की अंतहीन किंवदंती भी उन्हें उस रास्ते से विरक्त नहीं कर पाई कभी। इस 'वैलेंटाइन डे' में भी दोनों चल पड़े थे उजड़े महल की ओर। अपनी स्पोर्ट्स बाइक पर पचास-साठ की स्पीड में सहज! आयरिश स्टाइल के बाल हवा में लहराता हुआ, आंखों में गोल्डन गॉगल्स। सच ही शहर के खूबसूरत लड़कों में शुमार रहा है वह। पीछे बैठी शायनी; बिल्कुल बेफिक्र, सहज की कमर को अपने हाथों के घेरे में लिए हुए। बाइक में चलते हुए दोनों ऐसे लगते जैसे 21वीं सदी में प्रेमी युगल के प्रतिनिधि हों। आज के एकांतवास के लिए दोनों ने फिर से बेगम महल वाले खंडहर को ही चुना था। रास्ते के बगीचे में आम के बौर की महक ने दोनों को उद्विग्न कर दिया था। पूरे खंडहर में चिड़ियों के कलरव ने तो 'वैलेंटाइन डे' को जीवंत बना रखा था। महल की झाड़ियों में मंडरा रही तितलियां और भौंरे उनके अंत: स्वरूप को आकार देने लगे थे। शायनी ने आंखें बंद कर लीं, फिजां में फैले रंगों के एहसास में खो जाने के लिए... पर ये क्या! ये पक्षी तो आज उसे ही पुकार लगा रहे हैं; सारे बंधन तोड़कर उन्मुक्त उड़ान के लिए?

"क्या सहज तुम्हें नहीं लगता, नई सदी में अपने साथ वालों में सिर्फ हम दो ही बुद्धू रह गए हैं!" शायनी गड़-सी गई थी सहज की आंखों में।

"वह कैसे?" बुद्धू वाली बात सहज के पल्ले नहीं पड़ी।

"श्रीमान संत!" सहज की ठुड्डी हौले से हिलाते हुए वह बोली; उसकी आवाज में एक नया आत्मविश्वास-सा था, "हमारे साथ वाली कोई भी अब तक संन्यासिनी बनकर नहीं बैठी है!"

"इट इज योर डिसीजन ओनली, तुम्हारा हुक्म है कि सुहागरात तक संन्यासी व्रत का पालन करना है, तो करना है।" आंखों को गोलाई में घुमाते हुए सहज ने कहा, व्यंग्य वाण में काम-वाण की सान चढ़ाकर।

"क्या सच में तुम आज तक किसी लड़की या औरत के साथ फिजिकल

नहीं हुए हो!" बोलते हुए उसकी आंखें सहज पर केंद्रित हो गईं थीं।

"तुम भी क्या अजीब लड़की हो यार! तुम्हें कभी एहसास नहीं हुआ मैं तो नौवीं-दसवीं से ही तुम्हारे चक्कर काटता रहा हूं, जैसे तुम खूंटी हो और मैं कोई बछड़ा; ऐसा बछड़ा जो बिना बंधे ही खूंटी के चक्कर काटता रहता है! तुम्हें लगता है बछड़ा मौका पाकर भी खूंटी से तनिक भी अलग हुआ है?" उदाहरण देकर समझाते हुए सहज समर्पित दिख रहा था।

"वो तो मैं अपने मन की आंखों से भी देख रही हूं," सहज की आंखों में गड़ते हुए बोलती गई वह, "और मेरे बारे में क्या ख्याल है जनाब का!" शायनी के बोलने की भाव-भंगिमा से लगा जैसे वह तो आज सप्रमाण उपस्थित थी।

"धर्म के कहे अनुसार यदि सच में जन्म के बाद भी जन्म होता है तो समझो जन्म-जन्मांँतर के लिए मेरा तुम पर विश्वास है।" दोनों हाथों से शायनी के दोनों गालों पर चिकोटी काटते हुए कहा सहज ने; उसे लगा यह पारदर्शी परी तो बनी ही है उसी के लिए।

"अच्छा बाबा, इतना विश्वास है मुझ पर!" उसने आंखें बंद कर लीं, "तभी तो आज सुबह से ही मन बेचैन-सा है!"

"हाउ कैन आई हेल्प यू!" तर्जनी से शायनी के निचले होंठ को सहलाते हुए उसने कहा तो उसे महसूस हुआ यह होंठ तो आज होंठ मात्र से संतुष्ट होता नहीं लग रहा।

"तुम जैसे लड़कों पर शोध करके ही तो लेटेस्ट स्टडी में यह निष्कर्ष आया है कि इस सदी में लड़के तो बीती सदियों वाली लड़कियों जैसे हो गए हैं," बोलते-बोलते वह बेगम महल के बड़े चबूतरे पर बैठ गई, "सच कहूं, आई डोंट वांट टू मिस दिस वैलेंटाइन अगेन।"

"डू यू वांट टू टेस्ट माय मैनशिप?" बोलते हुए वह उसके बगल में बैठ गया।

"यस, व्हाई नॉट! डू आई नॉट डिजर्व इट?" उसने अपने शरीर का आंशिक भार सहज पर संचारित कर दिया।

"तो अभी? यहीं पर!" सहज ने उसे अपने आलिंगन में ले लिया।

"नो-नो! मैं अपने स्टैंड से पीछे नहीं हट सकती, आई वोंट लाइक ऑल दिज इन ओपन स्काई," बोलते हुए शायनी की आंखों में सयानापन झलकने लगा, "वैसे भी अब हम लोग टेंथ-इलेवंथ में पढ़ने वाले बच्चे नहीं रहे!"

बोलकर वह छोटी बच्ची जैसी मचल उठी; सहज ने अपना कसाव ढीला हो जाने दिया।

"फिर?" वह शायनी को सिर से पैर तक गौर से देखने लगा; सालों से दिखती आ रही काया उसे आज उफनती नदी जैसी दिखने लगी।

"सच में तुम बुद्धू बैल हो! हमारे कॉलेज के स्टूडेंट्स ने तो ना जाने कहां-कहां ठिकाने खोज रखे हैं; शहर में इतने सारे होटल्स क्या सिर्फ बाहर वालों के लिए हैं?" उसके होंठों और आंखों की भाषा-भंगिमा सहज को दुत्कारने जैसी थी।

"आई एम ऑलवेज..." कहकर वह शायनी की आंखों में गड़ गया; उसकी हथेली को अपनी हथेली में लेकर बोला, "ऑल राइट! बोलो कौन-सा होटल?"

"मूनलाइट, मेघदूत, पैराडाइज, मिलन, रॉयल कोई भी!" वह सच में इस वैलेंटाइन को मिस नहीं करना चाह रही थी।

बाइक में दोनों शहर का चक्कर काटते रहे। बालों को विचित्र रूप से आगे कर बाइक चलाता सहज; दुपट्टे में आधी छिपी बैठी शायनी। किसी भी होटल के काउंटर तक जाना तो दिल्ली दूर जैसा था, होटल के सामने उतरने का भी साहस नहीं कर पा रहा था दोनों में से कोई। ढाई बज चुके थे, दोनों को जोर की भूख लग रही थी। भूख भले ही कामाग्नि के तूफान को बुझा नहीं सकती, काम-भाव पर बरसात की फुहार जैसी टपकती ही है। अंततः दोनों शिव मंदिर के सामने शंभूनाथ कॉफी हाउस में समा गए। कॉफी के साथ कॉन्टिनेंटल लेते हुए दोनों की आंखें पारदर्शी शीशे से बाहर टिक गईं। मंदिर की ओर लोगों का रेला बढ़ा जा रहा था; जब भी नवविवाहित जोड़ों पर उनकी नजर जाती वे चुपके से एक-दूसरे को देख लेते।

"मुझे एक बात समझ में नहीं आ रही सहज।" लंबी चुप्पी तोड़ते हुए शायनी गंभीर होकर बोली, "जो काम आजकल के लड़के-लड़कियां चुटकी बजाकर कर लेते हैं, हम लोग महीनों से उसकी पहली सीढ़ी के नीचे ही बैठे हैं।" मंदिर के बाहरी चबूतरे पर एक किशोरवय जोड़े पर देर तक गौर करते-करते शायनी वंचित महसूस करने लगी।

"हां यार, कभी-कभी मुझे लगता है कि कहीं महात्मा बुद्ध की आत्मा तो हमारे अंदर नहीं समाई हुई है!" भूख की तड़प कम होने के बाद सहज चुहलबाजी में उतर आया।

"महात्मा बुद्ध तो कोई आज क्या होगा भला, महात्मा गांधी बोलो!" बायीं कोहनी गाल पर टिकाकर वह सहज के चेहरे पर गड़ते हुए बोली।

"महात्मा गांधी पर बड़ी फिदा हो तुम आजकल!" सहज ने चुटकी लेते हुए कहा, "मुझे तो लग रहा है या तो इस शहर की मिट्टी का असर है या फिर ऊपरवाले ने हम दोनों को बनाया ही है अलग मिट्टी से!" कॉफी मग बगल में सरकाते हुए वह बोला, बची हुए कॉफी से बेपरवाह।

"नो-नो, वी हैव टू गेट द पॉइंट करेक्टली," सहज की आंखों में गड़ते हुए बोली, "पहली बात, इस शहर की मिट्टी वैसी नहीं है जैसा तुम्हें अंदेशा है, यहां की मिट्टी तो ठीक-ठाक जवां है; सारे पेयर आज के दिन कहीं-ना-कहीं अपनी दुनिया में पहुंच चुके होंगे; दूसरी बात हम दोनों को भी ऊपरवाले ने उसी मिट्टी से बनाया है जिससे बाकी लड़के-लड़कियों को बनाया है।" बोलकर शायनी शिव मंदिर के शिखर पर गड़ गई, फिर बोलती गई, "मेरे हिसाब से हम दोनों बड़े काम के लिए ही बने हैं; एक बार अपनी मंजिल की राह पर निकल पड़ेंगे तो एक-दूसरे की बांहों में ऊर्जावान भी होते रहेंगे!"

"हां यार, हमें उसी मंजिल पर फोकस करना चाहिए।" बोलते हुए सहज के चेहरे में गंभीरता दिखने लगी, "अब तो तुम्हारे फाइनल एग्जाम में दो महीने ही रह गए हैं, फिर तो हम दोनों एक साथ सीएस के लिए फोकस्ड हो जाएंगे; पर दोनों को यह भी याद रखना पड़ेगा प्रेमी जोड़े एक-दूसरे की बांहों में ऊर्जावान अनुभव करते हैं तो ऊर्जाहीन भी हो सकते हैं!"

"इसका मतलब...!" शायनी की आवाज में शिकायत का भारीपन था, "हमें फिर से अगले साल 'वैलेंटाइन डे' तक इंतजार करना पड़ेगा? ये तो रामघाट के बिंदास माहौल में पलने-रहने-घूमने का अपमान-सा होगा!"

"तुम जैसी सुंदर लड़की का बॉयफ्रेंड इतना लंबा इंतजार नहीं कर सकता; वो भी रामघाट में, जहां जिंदगी का दूसरा नाम ही है उन्मुक्त आकाश!" बोलते हुए सहज कुर्सी से उठ खड़ा हुआ; फिर शायनी के सीने पर तिरछी नजर डालकर अपने मन को सामने रख दिया, "फिनिश योर एग्जाम फर्स्ट दैन वी विल फिनिश दैट टू!" शालीन विचार-व्यवहार वाले सहज ने बोलते-बोलते शायनी को आंख मारी, लघुत्तम स्वरूप में; शायनी की आंखों ने भले ही इसे न पकड़ पाया हो पर मन की आंखों ने कैद कर ही लिया था।

दोनों कॉफी हाउस से बाहर निकले; सामने मंदिर की मीनार हवा से

टक्कर लेती जान पड़ रही थी। उतरती सीढ़ी पर दोनों नपे-तुले अंदाज में पैर रख रहे थे, जैसे किसी बड़े मुकाम की चढ़ती सीढ़ी पर कदम बढ़ा रहे हों। रामघाट तीरे से मानस पाठ की आवाज आज थोड़ी तेज आ रही थी...देखी बिपुल बिकल बैदेहि, निमिष बिहात कलप सम तेही...

7

घर में सहज का सामना पिता हंसामल से कम ही होता। रविवार हो तो मुलाकात-मुठभेड़ तय-सी होती; मुठभेड़, यानी सहज के मनोनुकूल सामयिक व सार्थक वार्ता। जरूरी हुआ तो किसी ऑनगोइंग या पेंडिंग इश्यू पर विचार-विमर्श भी। तेईस-चौबीस साल कोई बड़ी उम्र नहीं है, तो छोटी भी नहीं। इतना जान पाया है वह अपने पिता को कि ऐसे पिता सबकी तकदीर में नहीं होते। पिताजी कभी पर्दा नहीं करते उनसे बातचीत में; मन में कोई बात छुपाए बिना खुलते चले जाते हैं। जॉली किस्म के तो हैं ही; उससे भी कभी-कभी मजाक में उतर आते हैं, जैसे बेटा ना होकर कोई मित्र हो! उनकी पुरानी पर कामयाब स्टील फैक्ट्री शहर से तीस किलोमीटर उत्तर में है, तो पांच साल पहले शुरू की गई डिस्टलरी की फैक्ट्री शहर के पश्चिमी छोर पर। फोर व्हीलर शोरूम तो खैर कोई खास दूरी पर नहीं है। खाटू श्यामजी की कृपा से सभी कारोबार शुरू से ही ठीक-ठाक रफ्तार में हैं। चूंकि वह अपने कारोबार के सिलसिले में घर पर कम ही दिखते हैं, जब भी घर पर होते हैं बेटा-पत्नी को अपना भरपूर समय देते है; ससुराल चली गई बेटी को तो जब जी में आए कभी भी, फोन में ही सही। स्वाभाविक ही उन्हें प्रतिदिन हर साइट पर जाना ही जाना है। बस रविवार ही तो एक ऐसा दिन होता है जब वह हर प्रकार से तरोताजा और 'अपडेट' हो जाना चाहते हैं।

"हाय स्वामी सहज कुमार" हंसामल ने लॉन से आवाज दी, जब उसकी नजर बालकनी पर खड़े सहज पर पड़ी; इस सीजन वाले धूप की गुलाबी रंगत में पुत्र-सान्निध्य की चाह जगी उसके अंदर।

"यस डैड! कमिंग," वह समझ चुका था, ब्रेकफास्ट के बाद पिताजी का फ्री टाइम स्टार्ट हो चुका है, उसके साथ साप्ताहिक वार्ता शुरू करना चाहते हैं; "पापा मैं तो अभी तक सहज ही हूं, अचानक स्वामी कैसे हो गया?" रोज गार्डन की तरफ रखी कुर्सी पर बैठते हुए कहा उसने।

"तुम्हारी स्पोर्ट्स बाइक की सूरत बता रही है कल 'वैलेंटाइन डे' में

दिनभर किसी संत-महात्मा जैसा यहां-वहां घुमक्कड़ी किया होगा।" पिताजी क्षणभर के लिए तिरछी नजर उसकी तरफ फेंकते हुए बोले, "अदरवाइज हाथ तो कुछ आया न होगा!" बोलकर स्मित मुस्कान के साथ उसने अखबार में नजरें गड़ा दीं।

"एक अनुमान तो सही है आपका, कल तो सच में हाथ कुछ नहीं आया, बल्कि हाथ में आए हुए को भी मुक्त कर दिया।" पिताजी के साथ वर्षों से धीरे-धीरे खुलता गया था वह, सो बेहिचक बोलता गया, "बाकी बात रही स्वामी की वह तो बनने से मैं रहा, समय आने पर योगी नहीं परफेक्ट भोगी ही बनना है मुझे!"

"मुझ पर तो कम, ममा पर बड़ी कृपा करोगे तुम।" अखबार से हटकर पिता ने उसकी ओर मुखातिब होकर कहा, फिर उसके अगले कदम की टोह लेने के लिए तीर छोड़ दिया, "रिधि की शादी के बाद अब तो बहू के बिना यह घर उसे काटने को दौड़ता है।"

"यस-यस, ममा को लंबा इंतजार नहीं कराऊंगा।" लंबी सांस अंदर लेते हुए उसने कहा, "पहले अपना जुगाड़-जंतर तो कर लूं।"

"जुगाड़-जंतर के बारे में क्या सोचना है, तुम चाहो तो कोई एक साइट अपने कंट्रोल में ले लो!" पिताजी की भाव-भाषा उनके वाणिज्य कौशल के तारतम्य में थी, "बाद में जरूरत पड़ी तो बाकी दोनों अपने अंडर में ले लेना, फिर तुम चाहोगे तो हम चौथी साइट के बारे में भी प्लानिंग कर सकते हैं।"

"नो डैड, नॉट एट दिस पॉइंट, मैं अभी तो अपने पुराने टारगेट पर ही चल रहा हूं।" बोलकर उसने अपने दोनों होंठों को आपस में अधिकतम भिड़ा दिया था; व्यक्ति के अंदर का आत्मविश्वास उसके होंठों की भिड़ंत में ही प्रकट होता है।

"आई नो बेटा, यू कैन क्लियर सिविल सर्विस, बट आर यू ऑब्जर्विंग..." उसने अब अखबार साइड टेबल पर रख दिया, लगभग फेंकते हुए, "आजकल डीएम-एसपी, सत्ताधारी पार्टी के पपेट से ज्यादा कुछ नहीं रह गया है!"

"देखो डैड! देसी भाषा में बोलूं तो स्टूडेंट्स यदि पैसा बनाने के ख्याल से सिविल सर्विस में जाता है फिर तो उसे कुत्ता बनकर जीना ही पड़ेगा; आई एम रियली प्राउड ऑफ यू डैड," बोलते-बोलते उसने पिताजी पर नजरें टिका दीं, "आपने इतना कुछ कर लिया है फैमिली के लिए, फिर तो मैं सिविल सर्विस में पैसों के लिए नहीं रूल ऑफ लॉ का डंडा थामने ही तो जाऊंगा

ना! बाय दि वे, बहुत सारे बड़े घर वाले सिविल सर्वेंट भी दिन-रात पैसे के पीछे नाक रगड़ते रहते हैं, आई नो मायसेल्फ, आई एम नॉट ऑफ दैट टाइप!"

"मारुति शोरूम वाले मेरे मित्र दो दिन पहले मिले थे, कह रहे थे इस शहर से तो हर साल एक-दो बच्चे निकाल ही लेते हैं सिविल सेवा; तुम्हारे बारे में उनका ख्याल है यहां के टॉपर बच्चे आगे चलकर आईएएस, आईपीएस में चले ही जाते हैं।" अब वह आईएएस में खासी दिलचस्पी दिखाने लगे थे, "ब्रजेश ब्रह्मा इसी शहर के तो हैं, उन्नीस सौ सतानबे बैच के आईएएस हैं; प्रदेश में हर सरकार के साथ उनकी अच्छी पटरी रही है, आजकल गृह मंत्रालय में चर्चित जॉइंट सेक्रेटरी हैं!"

"हां डैड, उनके बारे में सुना है, हमारे स्कूल के ही एलुमनी तो हैं! हमारे समय में स्कूल के फंक्शन में पधारे भी हैं एक-दो बार।" बोलते-बोलते रुक गया वह; दोबारा बोलते हुए चेहरे पर असमंजस की रेखाएं उभर आईं थीं, "यू नो डैड, सिविल सर्विसेज इज सो अनप्रिडिक्टेबल! बट उस डायरेक्शन में चल पड़ा हूं तो पीछे मुड़कर देखने का सवाल कहां है?"

"तो क्या चल रहा है आजकल?" पिताजी भी गंभीर हो चले।

"एमए फाइनल एग्जाम के बाद से ही जीएस के पीछे पड़ा हूं, इकोनॉमिक्स तो अपना सब्जेक्ट है ही," बोलते हुए उसका चेहरा आत्मविश्वास से दीप्त होता गया, "नेक्स्ट ईयर से अटेंप्ट लेना शुरू करूंगा; आई हैव नॉट एनी अदर टारगेट टू चेंज।"

"मेरी तरफ से बस एक ही बात याद रखना, खाटू महाराज की कृपा से यदि निकल गए तो..." बोलते हुए पिताजी के होंठ तिरस्कारपूर्ण ढंग से फैलने लगे, "वैसा डीएम, एसपी मत बनना जैसे प्रायः इस शहर में आते रहते हैं!"

"नॉट एट ऑल डैड!"

"तुम्हारी फ्रेंड शायनी कहां है आजकल?" शायनी का नाम होंठों पर आते ही पिता के अंदर जैसे किसी उत्साह का संचार होने लगा, "वह भी तो जिला टॉपर रही है!"

"ओ, यू स्टिल रिमेंबर हअ!" पिताजी के मुंह से शायनी के लिए निकला सम्मानजनक भाव-भाषा सहज के लिए सुखद आश्चर्य था; आगे बोलते हुए उसके चेहरे में कोई अज्ञात आत्मविश्वास झलकने लगा, "दो महीने बाद उसके एमएससी फाइनल के पेपर हैं; पर सिविल सर्विस की तैयारी तो कर ही रही है; वैसे घर से थोड़ी साधारण है, बट शी इज वेरी कॉन्फिडेंट!"

"तो तुम्हारी जिम्मेदारी बढ़ जानी चाहिए उसके प्रति," हंसामल भी हमदर्द दिखने लगे थे शायनी के प्रति।

"आई एम टेकिंग केयर ऑफ दैट..." आगे की बात में विराम देते हुए वह उठ खड़ा हुआ; ममा ने अंदर से आवाज दी थी, कॉफी के लिए।

8

शायनी के पिता का सात साल पहले ही देहांत हो गया था। मृत शिक्षक की जगह पत्नी सानजो को सरकारी विद्यालय में शिक्षिका की ही नौकरी मिल गई, कोई पांच साल पहले। इसी नौकरी की बदौलत वह घर-बाहर संभाल लेती है। माँ को वो लम्हे अभी भी कचोटते हैं; दसवीं बोर्ड में बेटी टॉप आई थी जिले भर में, उनके पिता तीन दिन भी जश्न नहीं मना पाए थे कि चल बसे, अचानक आए अनजान हृदयाघात से। बोर्ड रिजल्ट के दूसरे दिन उसने अनायास अपने मन को प्रकट हो जाने दिया था, एक टीचर की बेटी कलक्टर बनकर घर लौटे तो समझो उसका स्वर्ग धरती में ही हुआ न! पिता की मनोकामना का सम्मान करें या अपनी रुचि का अनुसरण। बारहवीं के बाद एमबीबीएस में एडमिशन के बजाय वह सिविल सर्विस की तरफ सोचना शुरू कर चुकी थी। सिर्फ सोच ही नहीं रही थी, पेपर्स की डिमांड के हिसाब से लंबी अवधि वाली तैयारी में जुट भी गई थी, बीए सेकंड ईयर के बाद से ही। यूं तो शहर वाले, विशेषकर बैचमेट्स जिला टॉपर से अपेक्षा रखते ही हैं, सिविल सर्विस या कम-से-कम प्रांतीय पीसीएस क्लियर करने के लिए, लेकिन उसने अपने ऊपर ऐसी किसी अपेक्षा का भार महसूस होने नहीं दिया कभी। भविष्य की योजना तो मस्तिष्क में अंत: क्रियाशील रहती है; तन और मन का साथ लेकर वह वर्तमान का हमसफर बनी फिरती है।

उसके जीवन के खाते में जमा सबसे बड़ी पूंजी है मम्मी; उसकी सबसे करीबी सहेली भी, बारहमासी हमसफर!

"शिनी बेटा, दस बज रहे हैं, उठकर नाश्ता तो कर ले।" मम्मी सुबह से ही छोड़ रखी है उसे; विज्ञान शिक्षिका है, जानती है न्यूनतम कितने घंटे की नींद कितनी जरूरी है।

"प्लीज मम्मी, और थोड़ी देर।" मध्य फरवरी की विदाई बेला वाली ठंड में भी देह सिकोड़ती हुई वह बोली।

"कल कुछ ज्यादा थक गई थी क्या! कल 'वैलेंटाइन डे' में...कहीं..."

मम्मी के इतना बोलते ही वह झट से उठ बैठी; बिफरते हुए बोली, "सुबह-सुबह यह क्या अनाप-शनाप बोली जा रही हो मम्मी, तुम्हें क्या लगता है कल ऐसा-वैसा कुछ करके आई हूं?"

"अरे पगली, मजाक कर रही थी, तुम्हें जगाने के लिए," मम्मी उसके माथे को सहलाते हुए बोलती गई, "बाय द वे आज के जमाने में यदि कोई जवान लड़की कुछ ऐसा-वैसा कर भी ले, तो क्या एक माँ अपनी बेटी का गला घोंट देगी!"

"यदि ऐसा कुछ करूंगी तो तुमसे छुपाऊंगी भी नहीं!" शायनी के मुंह से निकला हर शब्द शीशे जैसा पारदर्शी था।

"अच्छे बच्चे! जल्दी से फ्रेश हो लो, पहले नाश्ता करते हैं," बोलकर उसके बाएं गाल में उसने प्यारी-सी चपत लगा दी, फिर उसकी झुंझलाहट दूर करने की गरज से बोली, "फिर छत में बैठकर संडे सेलिब्रेट करेंगे।"

"शिनी बेटा, मुझे तो लग रहा है तुम एग्जाम का स्ट्रेस पालने लगी हो," बेटी की प्लेट में ब्रेड डालते हुए मम्मी की मधुर आवाज थी।

"मम्मी, दो महीने ही रह गए हैं; ग्यारहवीं वाले दिन मैं दोबारा नहीं देखना चाहती!" ब्रेड में बटर लगाना छोड़कर वह बोली; सच में एग्जाम हावी था उस पर।

"सिविल सर्विस का मटेरियल भी अभी से ही जमा कर डाला है तुमने?" मम्मी डांटने लगी लाड़ से, "यह क्या चल रहा है!"

"सिविल सर्विस की सोच लिया है फिर तो सीरियसली लेना पड़ेगा ना; तुम्हें भी पता होगा मम्मी सीएस का पैटर्न ऐसा नहीं है कि साल-आधा साल पढ़कर निकाल लो," ब्रेड का टुकड़ा हाथ में लिए हुए ही वह बोलती रही, "मैं तो सेकंड ईयर से ही सीएस का सिलेबस परस्यु करती आ रही हूं।" अब जाकर ब्रेड का टुकड़ा मुंह के अंदर रख पाई।

"देखो बेटा, सिविल सर्विस क्लियर करना कठिन तो है ही, लेकिन उसके पीछे अपनी जान नहीं गंवानी!" मम्मी की बातों से स्पष्ट था, माँ की तरफ से कोई दबाव या अपेक्षा नहीं है शायनी पर।

"वन कैन ट्राय हिज बेस्ट ओनली।" भारी होते जा रहे माहौल को शायनी ने हल्का कर दिया।

"अच्छा है, यदि आईएएस, आईपीएस पिक अप कर लोगी तो..." बोलते हुए माँ की आंखों में चमक आ गई, "भविष्य में हम लोग दिल्ली के आसपास कहीं शिफ्ट करने का प्लान कर सकते हैं!"

"मैं तो नहीं जाती कहीं अपने प्यारे शहर को छोड़कर!" शायनी के शब्दों के दबाव से जान पड़ा वह तो सच में इस शहर की सच्ची उपज है।

"हां, तुम ठीक ही कह रही हो बेटा, इस शहर में कमी ही क्या है!" घर की इकलौती बेटी की हां में हां मिलाना माँ के लिए मजबूरी नहीं, मजेदार होता है।

"एक कमी है, यहां सीएस के लिए कोई ढंग का कोचिंग नहीं है!" तर्क में किसी से पीछे रहना कभी मंजूर नहीं रहा है शायनी को।

"फिर तो अपने फ्रेंड सर्किल में प्रिपरेशन का माहौल बनाना पड़ेगा।" साधारण शिक्षिका होकर भी सिविल सेवा परीक्षा की जटिलता से वाकिफ थी वह।

"सहज के साथ टॉपिक वाइज डिस्कशन होता रहता है, तीन-चार और भी एस्पायरेंट हैं सीएस के।" सहज का जिक्र करने में कोई संकोच नहीं होता है उसे अब; मम्मी को पता है दोनों में अच्छी बनती है।

"वह तो बड़ा मस्तमौला बना फिरता है, सीएस के लिए इतना सीरियस हो पाएगा भला!" मम्मी ने शायद बोलने के लिए बोल दिया।

"हि इज वेरी सीरियस फॉर सीएस," नाश्ता खत्म करते हुए बोली; प्लेट को नजाकत से किनारे हटाती हुई उठ खड़ी हुई, "वह भी तो जिला टॉपर रहा है!" बोलकर माँ से आंख न मिला पाई; सिर से पैर तक हया हावी हो गई।

9

शिव मंदिर में ही मिलने की बात पर सहमति बन गई थी। दोनों शिव मंदिर के बाहरी चबूतरे में बैठे थे; कल 'वैलेंटाइन डे' में यहां बैठते-उठते नवविवाहित जोड़े रोमाँचकारी लग रहे थे। दोपहर को ही सहज का फोन आया था, कहीं मिलने के लिए। उसे तो उजड़ा महल ही सूट करता था, पर शायनी मोबाइल में ही शुरू हो गई थी, "कल बेगम महल में लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में किस किंग बनने का तुम्हारा सपना पूरा नहीं हो पाया था क्या," आगे जोड़ती गई थी, "कभी-कभी मंदिर में भी मिल लिया करो, रामजी बेड़ा पार करेंगे!" हामी भरते हुए सहज ने बात समाप्त की थी, "बेड़ा पार करने पर ही तो बात करनी है बैठकर!" इससे पहले कि बेड़ा पार करने वाली बात पर शायनी का संशय पंख फैलाए सहज ने डिस्कनेक्ट कर दिया था।

"कुछ बोलोगी भी या गूंगी गुड़िया बनी रहोगी; बिना बोले बैठी रहोगी

तो 'चालू चीज' के नजरिए से देखने लगेंगे लोग!" मंदिर में आकर शायनी के साथ बैठते ही सहज शुरू हो गया; पलभर की चुप्पी भी सहज को सहन नहीं होती थी, अधीर होकर बोलता ही गया, "बात करते हुए देर तक भी बैठी रहेगी तो भक्तजन नवविवाहिता समझकर तुझे आशीर्वाद देंगे!"

"सो मैं कौन-सा शॉर्ट पहनकर, लिपस्टिक लगाकर आई हूं जिससे लोग मुझे कॉल गर्ल टाइप समझ लेंगे," बोलकर शायनी ने होंठों को एक ओर खींच लिया जैसे सहज की फालतू बातों को हवा में उड़ा दिया हो, फिर शुरू हो गई, "वाय दि वे, डेली मिलना क्यों जरूरी होता जा रहा है? तुम भूल तो नहीं गए दस अप्रैल से मेरे फाइनल पेपर हैं!"

"पार्वती डार्लिंग, यहां आने का मकसद..." सहज बताने ही जा रहा था कि चेहरे पर आश्चर्य की आड़ी-तिरछी रेखाएं लाते हुए शायनी चौंक पड़ी, "पार्वती डार्लिंग? क्या बके जा रहे हो!"

"माय डियर, शिव मंदिर में बैठे हैं हम दोनों, फिर तुम्हें पार्वती नहीं तो क्या बहन शूर्पणखा कहूं," शायनी के कान के पास मुंह ले जाते हुए उसे छेड़ने की गरज से वह फुसफुसाया।

"प्लीज यार, शूर्पणखा नहीं बनना मुझे, भले ही सीता-पार्वती का रोल करना पड़े किसी नाटक में!" बोलते हुए शायनी ने अपने कान पकड़ लिए।

"पार्वती बनाने के प्रोसेस पर डिस्कस करने के लिए ही तो बुलाया है तुझे!" सहज की आवाज में अब गंभीरता आने लगी।

"अच्छा!" वह अभी भी निस्पृह दिख रही थी, आज की किसी भी संभावित विषयवस्तु के प्रति।

"एग्जाम के बाद क्या प्लान है?" बोलते हुए सहज की निगाहें सामने चौराहे पर कब से लगे ट्रैफिक जाम पर जम गईं।

"तो क्या प्री-मैरिज हनीमून प्लान बना लूं!" वह बोल तो गई पर उसे भी नहीं पता यह व्यंग-वाण था या एग्जाम फोबिया में जी रही लड़की का कैजुअल वर्जन।

"मंदिर में बैठकर प्री-मैरिज हनीमून प्लान!"

"मंदिर में आने वाले हर आदमी दूध के धुले हैं क्या!" भड़कने से बस एक डिग्री नीचे वाला अंदाज था शायनी का, "मुझे तो लग रहा है यदि तुम आईएएस में आ गए तो मंदिर भक्तों को उत्तम चरित्र का प्रमाण-पत्र तो न बांटने लगोगे?"

"मंदिर आने वाले अंध-भक्त तो अज्ञानी हैं ही, उसे अपनी जगह पर रहने दो," उसने तटस्थ तरीके से कहा, फिर अर्थशास्त्रीय अंदाज में बोलते हुए आंखें गोलाई में सिकुड़ती गईं, "मंदिर के पीछे देश के संसाधनों-संभवनाओं को नष्ट-भ्रष्ट करने वालों की चरित्र-कुंडली जरूर खोल दूंगा!"

"तो अयोध्या में राम मंदिर बनाने वालों के बारे में क्या ख्याल है जनाब का?" शायनी की आंखें छोटी होती गईं।

"उसका फैसला मुझे नहीं समय को करना है," मंदिर की तरफ से मुंह फेरकर फिर से चौराहे पर नजर टांग दी सहज ने।

"इकोनॉमिक्स की सारी फिलॉसफी यहीं बघार दोगे तो मेंस में क्या लिखोगे; बाय दि वे कौन सा बेड़ा पार करने पर बात होनी है आज?" बोलकर क्षणभर के लिए नाक फैलाकर सिकोड़ ली उसने; लफ्फाजी को बाहर फेंक काम की बात पर केंद्रित होना चाहती थी वह।

"अब सुनो काम की बात; अपना एग्जाम खत्म कर मैं नौ महीने से घर पर ही प्रिपरेशन कर रहा हूं, जानती हो क्यों?" कोहनी को घुटने पर टिकाकर बोलने लगा वह, "इसलिए कि तुम्हारा फाइनल पेपर्स खत्म हो जाए तो कोई अच्छा कोचिंग ज्वॉइन कर लें, मुझे लगने लगा है बिना कोचिंग के टॉपिक्स कैच करना मुश्किल है।"

"तुम्हें अब जाकर यह अक्ल आई है, मैं तो कब से सोच रही हूं," सहज की आंखों में झांकते हुए वह बोलती गई, सहमति में सिर हिलाते हुए, "अनलक्किली इतने बड़े शहर में ढंग का कोई कोचिंग भी नहीं है सीएस के लिए!"

"यदि ऐसा ही है तो क्यों न चार-छह महीने दिल्ली में रहकर ढंग का कोचिंग कर लिया जाए।" बोलकर वह शायनी के चेहरे पर उगने वाली प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करने लगा।

"इट इज इजी टू शे डेल्ही बट..." बोलते-बोलते वह रुक गई; ऊपर की तरफ आंखें उठाकर फिर बोलने लगी, जैसे ऊपर आसमान में किसी मृत-आत्मा से वार्ता कर रही हो, "मुझे मम्मी का कंडीशन भी तो देखना पड़ेगा!"

"सॉरी यार, दैट आई नो।" सहज को आंखें नीचे कर लेनी पड़ी थीं।

"पिछले एक साल से सीएस का सिलेबस फॉलो कर रही हूं, मुझे तो लगता है यहीं रहकर देती हूं एक-दो चांस," बोलते हुए अपने होंठों को दांतों से दबा लिया, फिर बोली, "इसी शहर में रहकर अटैम्प्ट लेना रिस्की तो है;

बट एनी हाऊ आई हैव टू क्लियर इट यार!"

"माय शानी डार्लिंग, वी शुड बी शो फ्रैंक," शायनी के कंधे को थपथपाते हुए वह बोलता गया, "यदि दिल्ली जाने की जरूरत समझती हो तो डोंट बी शाय, आई कुड मैनेज।"

"नो-नो, इट वोंट बी फेयर फॉर मी!" सिर झटककर नकारते हुए वह बोली।

"अच्छा ऐसा करेंगे, कमरे-समरे मैं हायर कर लूंगा, बदले में तुम किचन में हाथ बंटा दिया करना; थ्योरी ऑफ सिंबायोसिस!" बोलने के दरमियान उसने दो बार चुटकी बजाई, जैसे जिंदगी के चौराहे पर गाड़ी जाम नहीं होनी चाहिए।

"यू मीन टू शे...लिव इन रिलेशनशिप!" सहज के चेहरे पर गड़ गई वह, हल्की मुस्कान के साथ।

"नो-नो, नॉट अट ऑल! कमरे तो अलग-अलग होंगे न!" बोलते हुए वह ऐसे लड़खड़ाया जैसे कुछ ब्लंडर बोल गया हो।

"अदरवाइज आई एम नॉट अफ्रेड ऑफ दैट सॉर्ट ऑफ लिविंग, आई एम आल्सो शो मैच्योर एंड बोल्ड, बट..." उसने फिर चुप्पी ओढ़ ली।

"क्या तुम्हें लगता है शानी," वह संकल्प लेने जैसा बोलने लगा, "अलग-अलग कमरे तो क्या, यदि दोनों को कभी एक ही कमरे में रहना पड़े तो क्या मैं तुम्हें कभी फोर्स करूंगा वैसा कुछ के लिए!"

"तुम तो बुद्धू से भी बुद्धू हो," वह सहज को ऐसे देखने लगी जैसे उस पर दया आ रही हो, "यदि दो यंग ब्वॉय और गर्ल एक ही कमरे में या एक ही फ्लैट में दो अलग-अलग कमरे में रहेंगे तो क्या स्वामी विवेकानंद बनकर रहेंगे! प्रैक्टिकली एंड मोरओवर बायलॉजीकली इट इज नॉट अवॉयडबल टू बी फिजिकल!"

"ओह! इन दैट केस इट मेय क्रिएट इश्यू ऐट माय होम्स अलसो!"

"मुझे पाखंडपंथी से सख्त नफरत है," बोलते हुए उसका चेहरा सख्त हो उठा, "आई एम टेलिंग यू फ्रेंकली, मैं किसी इश्यू-विस्यू से नहीं डरती, जब जो करूंगी मम्मी को भी मुंह खोलकर बता दूंगी; कितनों को तो जानती हूं जो प्रीप्रेशन और नौकरी के सिलसिले में लिव-इन में रहते हैं, यह आज का फैशन ही नहीं, जीने के लिए भी जरूरी होता जा रहा है," फिर गला साफ करते हुए बोलती गई, "आई हैव फैथ अपन यू सहज; लिव-इन में रहने

में कोई हिच नहीं है मुझे, लेकिन..." उसने लंबी चुप्पी ओढ़ ली; सहज ने वार्ता-क्रम बहाल किया, "मम्मी घर पर अकेली हो जाएगी?"

"नहीं यार, मेरी मम्मी एक सेल्फ सस्टेंड लेडी है," बोलते-बोलते उसकी आंखें सजल हो उठीं, "वह बेचारी तो अभी से ही मानसिक रूप से तैयार है, जब भी मुझे जॉब में जाना पड़ेगा या ससुराल ही जाना पड़ जाए।"

"ओह!" सहज को कोई शब्द नहीं सूझ रहा था, जैसे किसी बंद गली के आखिर में पहुंच गया हो।

"देखो सहज," वह गंभीर हो उठी; वार्तालाप को तार्किक अंत देने की मुद्रा में, "दिल्ली जाना, एक ही कमरे में रहना, कोचिंग करना, इतना बड़ा इशू नहीं है कि अभी से ही माथापच्ची की जाए," फिर दोनों हाथों को सीने के नीचे आपस में फंसाते हुए बोलती गई, संकल्प लेने वाली मुद्रा में, "सीएस क्लियर करने के लिए जो भी बेस्ट वे आउट होगा मैं पीछे नहीं हट सकती; एग्जाम के बाद तुम जैसा कहोगे वैसा ही करूंगी, ओके बाबा अब जाने भी दो, मुझे मंजरी के घर जाना है।"

"आज तो एयरपोर्ट पर ड्यूटी होगी उसकी?" चबूतरे के नीचे पैर रखते हुए सहज ने कहा।

"एयरपोर्ट पर छोटी-मोटी नौकरी थी बेचारी की; सुना है तीन-चार दिन पहले कंपनी वालों से कोई पंगा-वंगा हो गया है; आज शायद घर पर ही हो!"

"चलो मैं तुम्हें वहां तक छोड़ देता हूं।"

"नॉट रिक्वायर्ड, वैसे भी उन छोटी गलियों में इस वक्त भारी बाइक भट-भटाना अजीब लगेगा!"

चबूतरे की आड़ में एकांत होने के बावजूद आज ना तो सहज ने किस लेने की पोजीशन बनाई, ना ही शायनी ने अपने चेहरे को सहज की ओर आधा इंच ऊपर उठाया; बौद्धिक रूप से परिपक्व युवाओं में भगवान के प्रति आस्था हो ना हो परंपरा से जरूर प्रभावित होते हैं, इस सदी में भी। वैसे भी रामघाट तीरे से...हरे राम हरे राम...की तेज धुन दूर से आकर यहां मंदिर से सीधे टकरा रही थी। स्वाभाविक ही मानस पाठ के शब्द कट-कट कर कान में पड़ रहे थे...अंग-अंग...वारिअहिं कोटि...सत...अस कहि...चितए तेहि...भये बिलोचन...अचंचल...

बाइक पर सहज की कमर को कसकर पकड़े बैठी शायनी साझे भविष्य

में खोई थी। बस्ती एरिया में बाइक पहुंचते ही चौंक पड़ी, "अरे ये क्या? भीमरवा आज अम्बेडकर चबूतरे पर चढ़कर अलाप दे रहा है! ब्रेक तो लगाओ जरा।" सहज ने बाइक किनारे रोक दिया।

"ड्रामा-ड्रामा नाटक-नाटक, जम्बूरी नाटक! ड्रामेबाज नाटकबाज तिकड़मबाज!" भीमरवा ऊंची आवाज में शोर किए जा रहा था, चेहरे में अजीब-सी मुस्कान को विस्तार दिए हुए।

"ये तो पहले पैसा-पैसा की पुकार लगाता रहता था, अब ये क्या अल-बल बके जा रहा है?" बाइक खड़ी करते हुए सहज ने कहा, फिर शायनी के कान में गुप्त-मंत्रणा के स्वर में बोला, "कहीं हम दोनों की बढ़ती दोस्ती पर तंज तो नहीं कस रहे?"

"अरे नहीं यार, ये बेचारा गांधी स्कूल में हम सभी का कितना अच्छा फ्रेंड हुआ करता था; हमारी दोस्ती पर भला क्यों हँसेगा?" माजरा समझने का प्रयास करती हुई शायनी बोली।

"इसके दिमाग में जरूर कोई नई सनक सवार हो गई होगी।" कोई ओर-छोर पकड़ में न आता देख सहज ने कहा।

"वैसे कहा जाता है जीनियस लोगों को किसी आसन्न घटना का आभास पहले हो जाता है।" कोई क्लू पकड़ने का प्रयास करती हुई शायनी बोली।

"जो भी हो हमारे यहां रुकने से भीमरवा और भड़क सकता है; इसकी किस्मत में अल-बल बकना लिखा है तो बक रहा है, हम लोग अपनी किस्मत लेकर आगे बढ़ें।" बोलकर उसने बाइक स्टार्ट कर दी। शायनी के बैठते ही उसने बाइक तेजी से बढ़ा ली। पीछे बैठी शायनी भीमरवा पर ही अटकी रही...कितना हाई आईक्यू वाला स्टूडेंट था भीम राव, शायद बाबा साहेब भीम राव की सोचकर ही नाम रखा होगा माँ-पिताजी ने; आठवीं तक तो वही टॉपर हुआ करता था, बड़ा आदमी बनकर बस्ती का उद्धार करने का संकल्प लिए फिरता था! कर्ज के मारे इसके पिताजी ने आत्महत्या ही कर ली थी, बेचारा टेंथ से आगे पढ़ भी नहीं पाया; नहीं पढ़ पाने का सदमा बर्दाश्त न कर पाया, कैसे एकाएक विक्षिप्त हो गया था, पैसा-पैसा-पैसा का शोर मचाए फिरता आ रहा है बस्ती में, वर्षों से; नाम भी लुढ़ककर भीमरवा हो गया!

अध्याय दो

1

रेलवे के साउथ केबिन से हरिजन टोला शुरू हो जाता है। मंजरी वहीं रहती है। उसकी त्वचा का रंग भले ही गाढ़ा हो, त्वचा के अंदर सब कुछ सामान्य मापदंड से भी आगे है; सबसे बढ़कर उसकी बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य व व्यवहार की सानी नहीं! नौवीं में थी तभी माँ चल बसी थी। पिताजी भी घर में आठ-दस साल से अपाहिज बैठे हैं। वे तो परिवार, कुल-खानदान के साथ गांव में ही रहते थे। टेनरी का अच्छा काम था। न जाने जीवित या मृत किस जानवर से पैर में कौन सा कीड़ा-वायरस चिपक गया, बायां पैर घुटने तक काटना पड़ा। वैसे टेनरी का कारोबार अब ठप्प ही होने लगा था गांव-घर में। मंजरी से पांच साल बड़े भैया उदय ने गांव-गांव जाकर जूते की सिलाई से तो बचपन में ही तौबा कर लिया था। किशोरवय की बात है; जूते सिलने के काम में उसने पिता का हाथ बंटाना शुरू किया था, एक दिन सुई हथेली में अंदर तक चुभ गई। पुश्तैनी कारोबार से तौबा करने की वजह शायद यही थी। पिताजी के पैर कटने के बाद उसने समझदारी दिखाई; अपने गांव जहानपुर को अस्सी किलोमीटर पीछे छोड़कर शहर आ गया। रामघाट शहर में गरीब हरिजनों के लिए कुल मिलाकर एक ही तो ठिकाना है, हरिजन टोला! रेलवे की जमीन पर बसते-बढ़ते जाते हरिजन टोला में झोपड़ा डालने में कामयाब रहा था वह, दो-एक स्वयंभू मालिकों से शुरुआती भिड़ंत के बाद। चार-पांच साल प्राइवेट में यहां-वहां हाथ-पैर मारता रहा, पर तीन जनों का परिवार चलाना दुर्भर होता गया था। अब तीन साल पहले शुरू की गई किताब-कॉपी-स्टेशनरी की दुकान से परिवार चलने लायक निकल आता है। कुछ सालों से दलित उत्थान का झंडा भी उठाए फिरता है; अजीब रंग का

यह झंडा किस पार्टी या संगठन का है, किसी ने पूछा नहीं है उनसे।

मंजरी सच में अपने को भाग्यवान समझती थी, अपने माथे पर उदय-जैसा भैया का साया पाकर। वह खुद चाहता था उसकी बहना खूब पढ़े, अफसर बने। दुकान से घर के लिए आटा-दाल भर ही निकल पाता है; मैट्रिक और बारहवीं के बाद आगे कॉलेज में पढ़ना-पढ़ाना परिवार के वश में नहीं रहा। वैसे घर में अकेले रहते-रहते अवसाद में जी रहे पिताजी की सांसें फूलने लगीं थीं, बेटी को कॉलेज भेजने के नाम पर। दुनियादारी भी आड़े आ रही थी; हरिजन टोली से लड़की के कॉलेज जाने का मतलब था छोटी-मोटी कयामत आ जाना! मैट्रिक तक आते-आते ही वह चौकस और प्रखर होती गई थी। यथास्थिति को कबूल करना जैसे उसकी फितरत में था ही नहीं। बारहवीं के बाद घर तो बैठ गई, पर घर को बेपटरी पर घिसटते देखना उसे मंजूर नहीं हुआ; कोई भी काम कर लेने की जिद कर बैठी। अब तक खड़े किए गए अपने संपर्क के सहारे उदय ने मंजरी को शहर में चालू हुए नए-नए एयरपोर्ट पर लगवा दिया। कंपनी ने तो कहा था एमटीएस के तौर पर अराइवल एरिया में चौकसी करेगी, पर हकीकत में जन सुविधा में ड्यूटी लगा दी थी। दुनियादारी के प्रति मंजरी का नजरिया स्वस्थपरक ढंग से विकसित हुआ था; किसी भी काम को अपने निमित्त कर्म मानकर करने में गुरेज नहीं था उसे। वैसे भी एयरपोर्ट में जन सुविधा फाइव स्टार टाइप के होते थे। आठ घंटे की ड्यूटी में दो-तीन कलर के द्रव्य तीन-चार बार डालकर स्वचालित मशीन चला देने में उसे अपना कद छोटा होता नहीं दिखा; अच्छे अंक से बारहवीं पास गुड लुकिंग लड़की वाला कद! एक-दो महीने में ही उसने एयरपोर्ट में अपनी छाप छोड़ दी थी, अपने संवर्ग के सहकर्मियों-सुपरवाइजर के बीच। चार दिन पहले बीती चौदह फरवरी को घटित घटना ने उसे एयरपोर्ट से बाहर का रास्ता दिखा दिया।

स्कूल के दिनों में मंजरी के सान्निध्य में शायनी का मनोबल बना रहता था। मंजरी थी भी तो यूनिक गर्ल, शीशे जैसी साफ और काम की बात! कितनी तो निर्भीक रहती थी स्कूल में; सही बात के लिए स्टैंड ले लिया तो ले लिया, रत्तीभर भी पीछे नहीं हटने का! अब पहली बार उसे पीछे हटना पड़ा था; सही बात कहने के लिए एयरपोर्ट की नौकरी से हाथ धोकर घर बैठना पड़ा। उसने सुन रखा था, खासकर सिनेमा में कोई डायलॉग कि कानून के हाथ लंबे होते हैं। एक छोटी जान वह भी लड़की, कर भी क्या

सकती थी एयरपोर्ट पर; दैत्याकार एयरपोर्ट! वह तो क्या, उसका भाई भी क्या बिगाड़ लेगा एयरपोर्ट वालों का; कौन-सा एमएलए-एमपी-मंत्री बन गया है उदय अभी! स्कूल के दिनों में शायनी उसकी बेस्ट फ्रेंड हुआ करती थी; छोटी-छोटी बातों में हँसी के गोल-गप्पे उड़ाना, तो देश-दुनिया की छोटी-बड़ी बातों में अपनी बौद्धिकता बखान करना! बारहवीं के बाद स्कूल छूट जाने के बाद भी उसका शायनी के घर आना-जाना रुका नहीं था। उसकी माँ में उसे अपनी माँ की छवि जो दिखती थी! एयरपोर्ट की नौकरी छूटना उसके लिए किसी आघात से कम न था। ऐसे सूने-सहमे समय में उसने शायनी को याद किया; खुद उसके घर आना चाह भी रही थी। उसकी बातों से शायनी को लगा था जरूर कोई बात हुई है, उसके दिल पर चोट पहुंची है; कहीं उज्जड ग्वाले ने कोई उल्टी-सीधी हरकत तो नहीं कर दी! मंदिर से चलकर शायनी सीधे उसके घर ही आ गई।

"चाचू पाव लागी," घर के बाहर सड़क किनारे खटिया पर मंजरी के पिता बैठे मिल गए तो शायनी चहक उठी, फिर बोलते हुए झोपड़े के दरवाजे की ओर बढ़ गई, "मंजरी घर पर तो है न चाचू!" पीछे से पिता के मुंह से आशीर्वाद झरता सुनाई पड़ा, "हां बेटा! अंदर चली जा, जुग-जुग जियो हमार बचीया, एसपी-कलेक्टर बनो हमें भी पक्का घर मिले!"

शायनी की सुरीली आवाज पहचान कर मंजरी टीवी छोड़कर दरवाजे की ओर लपकी। आमने-सामने की लगभग हो चुकी टक्कर को दोनों ने जोरदार आलिंगन में बदल दिया। महीनों बाद शायनी के मधुर आलिंगन में मंजरी पिघल-सी गई; आंखों में तरल बनकर कुछ तैर गया।

"अरे यार! मेरी तो जान ही निकल गई थी," आलिंगन से अलग होकर उसकी आंखों में गड़ते हुए शायनी बोली; आगे उसके कंधों को थामकर बोली, आंख मारते हुए, "तेरे साथ कुछ अनर्थ तो नहीं हो गया है!"

"हां, इसे तुम टाइम बींग छोटा अनर्थ कह सकते हो, भगवान न करे आगे कोई अनिष्ट होता जाए!" शायनी को बिस्तर लगे तख्त पर बिठाते हुए वह बोली।

"मेरे आते ही दर्शन की गठरी खोल दी तूने," उसकी ठुड्डी पकड़कर शायनी बोलती गई, "आओ पहले थोड़ा चिल करते हैं; नौकरी कैसी चल रही है तेरी! रामू तक कब की पहुंच चुकी तुम्हारी नैरोगेज वाली पटरी ब्रॉडगेज में बदल रही है कि नहीं!"

"रामू वाली बात तो अभी रहने ही दो," वह हँसकर बोली, फिर गंभीर हो चली, "उसका जॉलीपन स्कूल वगैरह में तो ठीक था, पर अब तो सीरियस होना चाहिए; सीरियस तो वह होता है, पर कभी-कभी इतना जैसे पूरी दुनिया की दुष्टता की फिक्र उनके जिम्मे ही है!"

"तू इसलिए चिंता में पड़ी है?"

"अरे नहीं यार, प्रेम कहानी में कभी ऊपर, कभी नीचे तो चलता रहता है; दरअसल अभी 'वैलेंटाइन डे' को कंपनी वालों ने मुझे एयरपोर्ट वाले काम से हटा दिया है।" जग से पानी भरकर गिलास शायनी के सामने बढ़ाते हुए वह बोली।

"ओह!" हाथ में ले चुके गिलास को फिर से टेबल पर रखते हुए बोली शायनी, "ग्रॉस इनजस्टिस! यह तो सचमुच अनर्थ है यार?"

"नो शायनी नो, मेरा काम छिन गया है यह अनर्थ नहीं है," बोलते हुए उसने सिर ऐसे झटक दिया जैसे किसी गैर जरूरी चीज को माथे से बाहर फेंक रही हो।

"फिर क्या अनर्थ हुआ है?" शायनी ने सिर को अंदर की ओर झटक लिया, जैसे अबूझ ताल में डूब रही हो।

"जिस बात पर मुझे काम से हटाया गया है उस बात पर ध्यान नहीं दिया गया तो आगे अनर्थ हो सकता है," बोलकर वह दीवार पर टंगे बाबा साहेब की तस्वीर पर गड़ गई, फिर धीरे से बोली, "इस अनर्थ से आगे कहीं देश का सत्यानाश न हो जाए," फिर शायनी की तरफ आश्चर्य से देखते हुए बोली, "तुम तो जूलॉजी की स्टूडेंट्स हो! तुम्हें तो पता होगा चीन के वुहान शहर में एक नए वायरस ने कोहराम मचा रखा है, हर दिन लोग मर रहे हैं?" बोलकर अखबार ढूंढ़ने लगी वह।

"आजकल अखबार देख नहीं पा रही हूं, फाइनल पेपर आने वाले हैं न," मंजरी के हाथ से अखबार लेते हुए शायनी बोलती गई, "सहज भी तो किसी नए वायरस के बारे में ऐसा ही कुछ बता रहा था, पर मैंने ज्यादा पूछताछ नहीं की।"

"उस दिन की घटना थोड़ा-सा बताती हूं; मेरी ड्यूटी अराइवल के जन सुविधा में थी, लंदन का कनेक्टिंग फ्लाइट का अराइवल हुआ था, पैसेंजर सामान के इंतजार में बेल्ट नंबर दो पर खड़े थे," बोलकर उसने अपनी आंखें छोटी कर लीं जैसे माइक्रोस्कोप में दृष्टि जमी हो, फिर बोली, "एक

लंबा-चौड़ा-गोरा फॉरेनर आधे घंटे के दरमियान तीन-चार दफा वॉशबेसिन में आया और बार-बार शॉप से हाथ धोए जा रहा था!"

"अच्छा!" बीच में शायनी बोल पड़ी, उसे कोई क्लु नहीं दिख रहा था।

"मैंने तो अखबार में पढ़ रखा था उस वायरस से बचने के लिए हाथ धोते रहना चाहिए!" बोलकर दांत से होंठ दबाकर मंजरी चुप हो गई।

"फिर?"

"मुझे डर लगने लगा कहीं इस फ्लाइट से वही वायरस तो नहीं आ गया है हमारे जन सुविधा में!" बोलते हुए मंजरी की आंखें बड़ी होती गईं।

"तुझे डर लगा या शक हुआ?" शायनी ने तर्क किया।

"तुम तो सच में तर्क वाली गर्ल रही हो शुरू से ही, बल्कि कहना चाहिए तर्क वाली टॉपर!" मंजरी उलाहनाभरे अंदाज में बोलती गई, "जाहिर-सी बात है पहले शक हुआ फिर डर लगा।"

"दैन?"

"तुम तो जानती हो मुझे शुरू से, अपने गांव-शहर के लिए कितनी जज्बाती बन जाती हूं मैं," मंजरी ने लंबी सांस ली, फिर गौरवान्वित मुद्रा में बोलने लगी, "मैं सीधे पहुंच गई सीआईएसएफ वाले साहब के पास; पहले से सोचकर नहीं गई थी कि कैसे बोलना है, सो सीधे-सपाट तरीके से बोल गई, 'साहब ये जो फॉरेनर लोग पधार रहे हैं हमारे लिए मुसीबत ला रहे हैं', इतना सुनते ही वह नामुराद भड़क उठा, 'तुम किस हैसियत से बोल रही हो, इज इट योर ड्यूटी?' उसको बमकता हुआ देखकर मैंने हाथ जोड़कर कहा, 'कोई बड़ी मुसीबत न आ जाए, इसलिए अपना फर्ज समझकर बताने आ गई।' इस पर वो चिल्ला उठा, 'अपना काम तो करती नहीं है ढंग से, चली है फॉरेन पॉलिसी डील करने'; तुम तो जानती हो शायनी मुझे किसी का गलत आक्षेप बर्दाश्त नहीं होता है।" आगे शायनी की आंखों में गड़कर बोलती गई, "मैंने पोलाइटली कहा, 'सर आप मेरा इंसल्ट कर रहे हैं', इतना सुनते ही उसने मेरे पीछे वर्दी में मुस्तैद लेडी सिपाही से बोला, 'टेक दिस मिशचिफ फ्रॉम हेयर'; अपने लिए 'मिशचिफ' का तमगा पाकर मुझसे रहा न गया, सो बोल दिया, 'मैं मिशचिफ नहीं हूं, यह इंटरनेशनल फ्लाइट हम लोगों को मुसीबत में डालेगा।' चेताने वाले स्वर में बोलते हुए मैं निकल पड़ी, चौड़ी कुर्सी में किसी खंभे जैसे तने उस चमकते वर्दी वाले आदमी की तरफ बिना देखे।"

"तो इतनी-सी बात पर तुम्हें काम से निकाल दिया है?" शायनी को सब

कुछ अटपटा-सा लगा।

"नहीं रे बाबा, सेकंड सीन तो अभी बाकी है," शायनी के सामने नमकीन रखते हुए मंजरी बोलती गई, "एक घंटे के बाद मुझे अथॉरिटी के ऑफिस में हाजिर होने का फरमान आया; मैं गई, सोच लिया था सही बात में डरना क्या है!"

"वहां क्या हुआ?" बिस्कुट उठाते हुए शायनी ने कहानी आगे बढ़ाई।

"वहां एयरपोर्ट के डायरेक्टर साहब ने इतना सुनाया कि समझो मेरे कान पक गए, आरोपों की झड़ी लगा दी उसने।" बोलकर हँस पड़ी मंजरी, डायरेक्टर की बेढंग बातों को फिर से याद कर, "वह मुस्टंडा बकने लगा–'तुम इंडिया में विदेशियों के प्रवेश के खिलाफ हो–अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के खिलाफ मोर्चा निकालेगी–यह इश्यू विदेश मंत्रालय पहुंचेगा तो देश में हंगामा मच जाएगा' फिर मेरी ओर अजीब ढंग से हाथ जोड़ते हुए रो पड़ने का ढोंग किया, 'नो बाबा नो; मैं यह रिस्क नहीं ले सकता! अभी जाइए प्लीज' फिर तो उस आदमी को बिना सलाम-नमस्ते किए ही मैं उसके महल जैसे चैंबर से बाहर आ गई।"

"फिर काम से कैसे निकाल दिया!" शायनी जल्दी प्रकरण की परिणति सुनने के लिए बेताब हो उठी।

"मेरी नानी, काम से बाहर करने के लिए कोई कमीशन थोड़ी न बैठाना पड़ता है! चार बजे ड्यूटी खत्म होने के बाद मैंटेनेंस कंपनी के मैनेजर ने अपने डेस्क में बुलाया मुझे, एक लिफाफा मेरी ओर बढ़ाते हुए बोला 'अथॉरिटी वालों का मैसेज आया है, आपको एयरपोर्ट पर रखने से मामला बढ़ सकता है; कल से आप कहीं और काम देख लीजिए, इसमें एक महीने का एडवांस वेजेज है', फिर सचमुच दुखी होकर बोला, 'आई एम रियली सॉरी, आप जैसे अच्छे वर्कर को जाते हुए देखकर मैं खुद अपसेट हो रहा हूं', आगे बोलते हुए उसकी आंखें अचानक डबडबा गईं थीं; वहां से निकलते हुए मेरे अंदर से आवाज आई, चलो किसी एक ने मुझे दिल से फेयरवेल तो दिया।"

"इतनी-सी बात पर काम से निकाल दिया!" शायनी को अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था कि मंजरी का काम छिन गया है।

"देखो शायनी, आजकल कंपनी वाले हर जगह कांट्रेक्चुअल वर्कर से ही बड़े-बड़े ठेके चलाते हैं सालभर, उसकी मर्जी जब चाहे निकाल दें; सवाल काम छूटने का नहीं है, काम तो कहीं भी पकड़ लूंगी, कल को तू कलेक्टर बनेगी ही, चिंता काहे का!" बोलकर वह शायनी की ओर मुस्कुराई, जैसे

मस्का लगा रही हो, फिर लंबी सांस छोड़ते हुए बोली, "सौ टके का सवाल यह है कि मुझे अपनी कही बातों पर अब और यकीन होने लगा है; मैं सच कह रही हूं शायनी, मेरा मन कह रहा है आगे कुछ बुरा होने वाला है, मुझे तो अपनी बस्ती की चिंता सताने लगी है।" बोलकर वह दरवाजे से बाहर झांक ली, पिताजी ने दुकान से चाय भिजवाई थी; चाय रखकर वह डरावने अंदाज में बोलने लगी, "मेरा मन कह रहा है अपना देश, खासकर देश-नियंता अपनी-अपनी धुन में रमे हुए हैं जिसकी बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है।"

"चीन में पैदा हुए वायरस के बारे में मुझे थोड़ा स्टडी करने दो, फिर किसी एक्सपर्ट से कंफर्म करते हैं," चाय की चुस्की के साथ बोलती गई शायनी, "लेकिन आगे क्या करने की सोच रही हो," बोलकर मंजरी में उसकी निगाहें अटक गईं; उसे इस घर की माली हालत की चिंता होने लगी थी।

"कुछ तो कर ही लूंगी।"

"रामचंद्र भगवान को यह सब पता चला है कि नहीं," बोलकर वह टोह लेना चाह रही थी, अपने प्रेमी के नाम पर मंजरी के मन में क्या चल रहा है।

"पता नहीं!" रामचंद्र के नाम पर उसके चेहरे में लालिमा उगने लगी।

"सबसे पहले सहज से शेयर करती हूं," अब शायनी सतर्क होकर बोल रही थी, "रामचंद्र अभी भी उसके टच में है, सहज तो उसे बताएगा ही, बल्कि काउंसेल भी करेगा; देखें रामचंद्र की क्या प्रतिक्रिया होती है, अदरवाइज सहज तो हर तरह से सक्षम है ही।"

"उसके रिएक्शन तक के लिए मैं निठल्ली होकर नहीं बैठ सकती; अपना करियर मैनेज करने के दसियों उपाय दिख रहे हैं मुझे।" बोलते हुए बेफिक्री से लबालब हँसी बाहर आई उसके अंदर से।

"प्लीज, इसका गलत अर्थ मत लेना," आदत में नहीं रहने के बावजूद शायनी ने दांत से अपनी जीभ काट ली, फिर बोल पड़ी, "मैं यह थोड़ी न कह रही हूं उसके साथ जाकर गाय-गोशाल देख।"

"अरे मेरी हीरोइन!" हँसी वाली तरंग मंजरी के नाक से बाहर आई, फिर उसी से तरंगित होकर बोलती गई, "दलित होंगे मेरे पिताजी-भैया-पूरा टोला, मैं तो इक्कीसवीं सदी की बिंदास लड़की हूं; वह कल ही अपना रंग-ढंग-बोलना-वाचना पटरी पर ले आए, तो मैं खुद ही ढोल-बाजा करके उसके संग उड़ लूंगी, फिर तो उसके गाय-भैंस को पूरी मॉडर्न डेयरी में बदल डालूंगी! वैसे भी जिंदगी की नई पारी हम लोगों को सही समय पर

शुरू कर देनी चाहिए।"

"सच यार, हमारे स्कूल की असली हीरोइन बनकर तू ही निकलेगी! तू फेरे ले ले, तभी तो हम भी अपने फेरे के दिन गिनेंगे," खुद एक लड़की होने के बावजूद उसकी नजरें मंजरी के दोनों उभारों पर चढ़ बैठीं।

"अब रहने भी दे, नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज करने; तुम दोनों के रोमाँस के चर्चे तो हर जुबान पर हैं!" शायनी की तरफ आंख मारते हुए बेलाग बोलती गई वह, आगे आवाज धीमी करके पूछा, "सच बता यार! अब तक कितनी...!" आगे के शब्द मंजरी के मुंह में ही कैद रहे; उसके होंठों को जोर से दबाते हुए शायनी बोली, "शिट यार! शट अप; अदरवाईज कौन लड़की जी भरकर जीना नहीं चाहती है!" मंजरी को आंख मारते हुए वह बोली, बेलौस! बोलकर वह चलने को हुई, जैसे बातों से मन लबालब भर गया हो। मंजरी रूआंसा हो उठी, "बस अपना मन हल्का करने के लिए ही तुझे याद किया था यार, और एक तू है कि दौड़ी चली आई!"

"इट्स माय प्लीजर डार्लिंग!" शायनी दरवाजे से बाहर आती हुई बोली।

गली में आते ही शायनी को हवा का स्पर्श कुछ कांटेदार-सा लगा; क्या एयरपोर्ट में उतरे विदेशी मेहमानों ने हिंदुस्तानी हवा में सचमुच कुछ डंक-सा छोड़ दिया होगा? सहज के साथ उस दिन हुई अन्यमनस्क-सी बातचीत आज शायनी को सायास याद आने लगी; गांधी-गोडसे-हत्यारे...न जाने क्यों उसे डर सा लगने लगा! अब तो उसके अंदर एमएससी फाइनल ईयर-सिविल सर्विस-वायरस-गांधी-गोडसे सबकुछ गड्डमड्ड-सा होने लगा। सामने दूर में कलाबाजी-करतब-सा दिखाता कुछ अजीब-सा दृश्य चलायमान महसूस हुआ उसे, लगा जैसे बड़े-बड़े नाखून वाले कई-कई गोडसे हों, शांति के समंदर में कोई कोलाहल पैदा करने! अम्बेडकर चौक के नजदीक पहुंची; भिमरवा बदले सुर में शोर मचाए जा रहा था...भाइयों-बहनों! तमाशा-तमाशा...हिंदुस्तान में अब तक का सबसे बड़ा तमाशा...शायनी झेंप गई, कहीं उसी के लिए तो नहीं बोल रहा है भिमरवा? रुकी नहीं, सोचते हुए आगे बढ़ गई...जीनियस ब्रेन की थाह लेना मुश्किल है।

2

बस्ती में पुरानी पुलिया के पास रहता है रामचंद्र, माँ के साथ; दो गाय, एक भैंस और मौनधारी मामा, यानी मौनी मामा सहित। स्कूल तक में उसका नाम

रामचंद्र ही था; प्यार और मजाक में साथीगण रामचंद्र भगवान भी पुकार लेते थे। अब उसका पुकारू नाम है रामू ग्वाला। स्कूल तक में वह भगवान राम को दिल की गहराई में लिए फिरता था; भक्ति-भाव ऐसा कि सन् 1992 से पहले जन्म न लेने का बड़ा अफसोस होता था उसे। रामायण की कहानी जितनी उसने पढ़ी-देखी होगी उसके साथ के बच्चों ने शायद सुनी भी न हो। जब वह रामू ग्वाला बन गया तो श्रीकृष्ण उसे दुनिया का सर्वश्रेष्ठ पुरुष नजर आने लगा। महाभारत के दौरान कृष्णजी के एक-एक वाक् को वह मानव उद्धार का फॉर्मूला मानता रहा। रामघाट 'मिनी इंडिया' है, जाहिर है जाति यहां भी जोरों पर है। पर रामू है किस जाति से? ठीक-ठीक किसी को नहीं पता। अब दूध बेचने का कारोबार करने लगा है, स्वाभाविक ही रामचंद्र के आसन से च्युत होकर रामू ग्वाला की उपाधि पर अटका है। नगर निगम वाले हर दो-तीन साल में उसका टीन शेड उजाड़ देते हैं, यानी वह जमीन उसकी तो है नहीं। स्वाभाविक ही जीवन में उसकी अपेक्षाएं भी कम हैं। गाय-भैंस से तीन जनों के गुजारे लायक दूध निकल आता है। रगड़-झगड़कर बारहवीं कर ही ली थी उसने। पढ़ाई को यहां तक लंबा खींचने में स्कूल सहपाठी सहज ने बड़ी मदद की थी उसकी। उसका एहसान वह नहीं भूला है आज तक। सहज तो उसकी निर्भीकता का कायल था स्कूली दिनों में, इतना कि वह आज भी उसकी बहादुरी के किस्से सुनाता है, जब भी, जहां भी शौर्य-प्रसंग छिड़ जाता है; कुएं में गिरे बच्चे को निकालने की बात हो या फिर बंदर द्वारा पेड़ की फुनगी पर लटके किसी बच्चे का लंच बॉक्स वापस लाने का मामला हो। यहां तक कि स्कूल में किसी लड़की को नटखट की सजा मिलने की संभावना सन्निकट होती तो इल्जाम अपने ऊपर लेने में देर नहीं लगता उसे। मंजरी को भी तो उसने उसके किशोरी-करतूत से कितनी ही बार बचाया था; तब से मंजरी ने उसे अपने दिल में ऐसा बसा लिया कि दिन-ब-दिन प्रेम परवान चढ़ता गया है।

जब वह आठवीं में था, ट्रक के नीचे आने से पिताजी चल बसे थे। पिताजी सेठजी के स्टोर में चौकीदारी करते थे; रात को साइकिल से ड्यूटी जाते वक्त नजदीक आ चुके ट्रक का अल्ट्रा लाइट उसे दूर होने का भ्रम हो गया था। बारहवीं के बाद पढ़ाई जारी रखने की कोई गुंजाइश नहीं दिख रही थी उसे। कॉलेज न जाकर स्वाभाविक ही उसने घर की किल्लत कम कर दी। आजकल उसकी दिनचर्या अपने-आप में आनंदपूर्ण बनी रहती है। शहर की

सीमा से सटे जंगलात में गाय-भैंस को सुबह छोड़ आता है, दोपहर ढलते ले आता है। बीच के समय में शहर की सीमा पर बसे गांवों से प्रतिदिन बाइक से चालीस-पचास लीटर तक दूध इकट्ठा करता है; वहीं से सीधे शहर में दो-तीन मुहल्लों के चिह्नित घरों में पहुंचा आता है। इससे उसकी और माँ की जिंदगी मजे से कट रही है; मामा की भी। लंच के बाद ठीक से सुस्ताकर निकल जाता है मंदिर की तरफ। शहर की सीमा पर बस्ती के उत्तरी किनारे स्थित प्राचीन अघौड़नाथ मंदिर! वहां जमे मित्र-मंडली के हँसी-ठहाकों में तो जैसे पूरी दुनिया की हँसी-खुशी खिंची आती है। हँसी-मजाक में ही कभी-कभी वह बड़ी बात बोल जाता है। मित्र-मंडली तो सुनकर तत्क्षण हँस देती है, पर 'बातों में दम' महसूस होते ही चिंतन करने भी लग जाते हैं। मसला भारत देश का हो या रामघाट का या फिर अपनी बस्ती का, उसके अंदर जज्बातों का दरिया फूट पड़ता है; उमंग-उत्साह-चिंता इतनी कि तत्क्षण ही लड़ने-भिड़ने को तैयार हो उठता है। हो भी क्यों नहीं, बचपन से ही माँ के मुंह से माटी के मोल चुकाने वाली कितनी तो कथाएं सुनता आया है वह। शाम को वह घर ऐसे लौटता है जैसे दुनिया की सारी खुशी की गठरी लेकर लौट रहा हो! बस, ऐसी सहजीविता में ही है उसके जीवन की संपूर्णता।

आज भी मंदिर में मित्र-मंडली आ जमी थी। विदाई की राह पर चल पड़ी शीत लहर की चर्चा जल्दी बंद हो गई; रामनरेश ने शहर की गौशाला की सुधरती दशा को चर्चा के केंद्र में ला खड़ा कर दिया था। तभी ऊपर से पांच बजे वाला विमान एयरपोर्ट पर लैंडिंग करने निर्धारित नीचे तक आ गया। गगनभेदी फिर कर्णभेदी आवाज में सभी ने कान में उंगली डाल ली, हर दिन की भांति। पांच सेकंड के बाद विमान की गर्जना दूर चली गई तो रामू गरज उठा, "मैं सरकार होता तो सर्जिकल स्ट्राइक कर इन जहाजों को नीचे ले आता!" बस्ती की पहली गली में रहने वाले पार्टी-प्रकोष्ठ वाले रामनरेश से रहा न गया; रामू के प्रतिदिन की बक-बकी पर लगाम कसने की गरज से बोल पड़ा, "अपने एयरपोर्ट में दिनभर में कई जहाज उड़ते-उतरते रहते हैं, इस समय यह वाला जहाज तो उतरता ही है; आज गाय छोड़कर अचानक फ्लाइट पर भाषण देने का मूड चढ़ रहा है, क्यों रामू!"

रामू ने कान खुजाते हुए कहा, हल्के अंदाज में, "अरे तुम्हें नहीं पता! कीड़ा व्यापारी इन जहाजों में भर-भर कर हिंदुस्तान आ रहे हैं आजकल; अपने देश में भी चीन जैसा सांप-कीड़े वाली बीमारी फैलाएगा।"

"तुझसे किसने कहा यह सब?" मियां टोली में रहने वाले अरशद ने यूं ही पूछ लिया, पान मसाला मसलते हुए; लंबे अरसे बाद वह आज दिखा था मित्र-मंडली में।

"कल मंजरी मिली थी, मार्केट में; वही बता रही थी।" उसने धीमी आवाज में कहा, लगभग बुदबुदाते हुए।

"अरे साल्ला, अब समझा! माशूका का नशा चढ़ रहा है!" अरशद ने उसकी गठीली बांह को अपनी हथेलियों से दबाते हुए कहा।

"तुम भी क्या सड़ी बातें कर रहे हो अरशद, अबे दुनिया में सच्चा आशिक तो नशे के समंदर में ही तैरता रहता है!" अपने चौड़े सीने को फुलाते हुए वह ऊपर देखने लगा, जैसे कोई विमान दिखे तो अभी ही गिरा देगा।

"इश्क इतनी ही तारी है तो शादी क्यों नहीं कर लेता!" पूर्वी टोला वाले मनोज रिपोर्टर ने चुटकी ली।

"मैं कोई रावण हूं क्या जो अभी गया और मंजरी को उठा ले आया!" बोलते हुए रामू के चेहरे पर मायूसी की परत दिखने लगी।

"बे, सही बात तू क्यों नहीं बोलता; तुम ठहरा दूधवाला और वह दलित; तेरी माई को यह शादी कभी मंजूर नहीं होगी!" रामू का सबसे करीबी मित्र दिनेश खिन्न होकर बोलता गया, "और तू प्रेम दीवाना जैसा जिंदगीभर भाषण पेलता रहेगा, इसी मंदिर में।"

"देख भाई लोग, अपुन गाय-बैल के संग रहता, श्रीकृष्ण की बातों पर चलता; हमारे लिए सारी दुनिया बराबर है, तुममें से किसी में दम है क्या उसके भाई को तैयार कर दो शादी के लिए!" इस बार रामू ने गंभीर होकर कहा, सच में।

"मैं भविष्यवाणी करे देता हूं," अपनी तर्जनी हवा में लहराते हुए कहा रामनरेश ने, "मंजरी का भाई यह शादी कभी नहीं होने देगा!"

"सो क्यों?" बोलते हुए मनोज की आवाज ऐसे निकली जैसे संघर्ष संकेत हो।

"क्योंकि मंजरी के भाई उदय पर दलित पार्टी का दखल है," मध्यमा और तर्जनी को आपस में रगड़ते हुए रामनरेश ने कहा; अदृश्य मुस्कान में लिपटे संकेत के साथ कि राजनीति का दांव-पेंच उसे भी पता है!

"रामनरेश भैया! आप अपनी बस्ती के हैं, इसलिए मुंह नहीं खोलता हूं आपके खिलाफ," अब रामनरेश पर चढ़ाई करने के मूड में आकर

बोलने लगा रामू, सिर को रहस्यमयी तरीके से हिलाते हुए, "मुझे पता है आजकल पदाधिकारी बन गए हैं पार्टी कार्यालय में, लेकिन अपनी मंडली को पार्टी-पॉलिटिक्स से दूर ही रखो तो अच्छा रहेगा हम सभी मित्रों के लिए!"

"देख रामू, तू अपनी गाय-भैंस करता है शांति से कर, मेरा मुंह मत खुलवा, पार्टी कार्यालय में हर बात पहुंचती है; हकीकत बताऊं," रामनरेश सभी मित्रों की तरफ आंखें घुमाकर बोलने लगा, चेहरे में रौब लाते हुए, "इसकी चहेती ने दो दिन पहले 'वैलेंटाइन डे' को एयरपोर्ट पर बड़ा हंगामा खड़ा कर दिया था, समझो बात फॉरेन एंबेसी तक पहुंचते-पहुंचते रुक गई; देश की इतनी बदनामी होती कि पूछो मत, बदनामी से बचने के लिए एयरपोर्ट अथॉरिटी वालों ने उसे निकाल बाहर किया।" अब वह अचानक शांत होकर बोलने लगा, "पार्टी कार्यालय हर घटना पर नजर रखता है, देश की नंबर एक पार्टी है, यहां हर बात खुलकर होती है, चोरी-छिपे नहीं; उदय के कहने पर अथॉरिटी वालों ने उसकी सिस्टर को कांट्रैक्ट में रखा था, लेकिन उस लड़की ने परसों को कांड ही ऐसा किया है कि अब उदय का भी मुंह नहीं रह गया है कुछ बोलने का!" रामनरेश जब नेता जैसा बोलने लगता है तो सभी उसके मुंह की तरफ देखने लगते हैं देर तक; सभी उसकी तरफ मुंह किए रहे, वह मित्र-मंडली की दुनिया में वापस आते हुए बोला, "देख रामू, हम सभी तेरा दर्द समझते हैं, मंजरी को काम से निकाल दिया इसलिए आज की बैठक में तू विमान पर सीधे सर्जिकल स्ट्राइक करने लगा! यह बात पार्टी कार्यालय पहुंचेगी तो तेरे को प्रॉब्लम हो सकता है; हमारी पार्टी के खिलाफ हमारा आलाकमान कुछ भी बर्दाश्त नहीं करता है! तुम, हम सभी का मजेदार मित्र है, इसीलिए इतना बता रहा हूं।"

"देख रामनरेश भाई, मुझे तेरे जैसा भाषण देना नहीं आता; मंजरी को अथॉरिटी वालों ने अपने कायदे-कानून के तहत हटा दिया है तो हटा दिया, माशूका के लिए भिड़ने में भला क्या मर्दानगी है! इसके लिए वह अकेली काफी है; हां, देश-दुनिया के हित में मैं जरूर बात करता हूं खरी-खोटी।" दोनों हथेलियों को नरेश की तरफ फैलाकर रामू सपाट बोलने लगा, जैसे वह नहीं उसका आत्मविश्वास बोल रहा हो, "मंजरी गरीबी के कारण इंटर से आगे पढ़ नहीं पाई पर वह है तो अंदर से इंटेलिजेंट; ऊपर आसमान में ये जो फ्लाइट उड़ रहा है न, इससे आजकल कीड़ा-कीटाणु आने लगा है, कल शंभू हलवाई की दुकान में भी कुछ लोग ऐसी ही चर्चा कर रहे थे" अब वह

रामनरेश की ओर दो कदम बढ़ाते हुए बोला, "आप कहते हो पार्टी कार्यालय में हर घटना की जानकारी रहती है, इस कीड़े-कीटाणु की जानकारी है कि नहीं पार्टी वाले को? सच-सच बताइए?"

"रामू, तू चुप रह, तेरे लिए यही अच्छा है; उस गई-गुजरी पार्टी के लोगों के पास अफवाह फैलाने के सिवाय कोई काम है क्या! देश में अभी कई ऐतिहासिक कार्य हो रहे हैं, उन कामों से जनता का ध्यान भटकाने के लिए विपक्ष के लोग रोज नया-नया शिगूफा छोड़ते रहते हैं, ये कीड़े-कर्कट वाली बात लेटेस्ट शिगूफा ही तो है! मुझे तो शुरू से ही अफसोस रहा है कि तू सिर्फ नाम का रामचंद्र है, ईश्वरीय शक्ति पर विश्वास तो है नहीं!" बोलते-बोलते उसकी आंखें बड़ी होने लगीं, जैसे यहां बैठे-बैठे वायु तरंग से शक्ति प्राप्त कर रहा हो, "अरे भई, जरा सोचो रामघाट तीरे सदियों से मानस पाठ क्यों चला आ रहा है? रामघाट को और पूरे देश को बचाने खातिर ही तो! अब तो एक-डेढ़ साल से रामधुन भी शुरू करवा दिया है, अब किसका मजाल है जो रामघाट क्या देश की तरफ आंख भी उठा ले!" अब सिर टेढ़ा करके बोला, "एक मिनट के लिए मान भी लो फ्लाइट से कोई ऐसी-वैसी चीज आ ही रही है तो जो करना है सीआईएसएफ वालों को करना है, तू क्यों नया-नया देशभक्त बनने चला है?"

"देशभक्ति होगी तेरे मुंह में, मेरे तो खून में है! देश-दुनिया के लिए जान की बाजी लगाने से पीछे नहीं हटता मैं," बोलते-बोलते रामू की ग्रीवा तन गई।

"देश की चिंता करने वाले अपनी पार्टी के बहुतेरे बैठे हैं ऊपर, तू क्यों मरा जा रहा है मुफत में?" रामू की देशभक्ति को गुब्बार समझ उसमें गुलेल मारने-सा बोला रामनरेश ने।

"देश की चिंता करने वाले या कहो चिता सजाने वाले होंगे बहुतेरे, पर दुनिया तो जन-जन की चिंता से ही आगे बढ़ती है न!" अपने गांधी स्कूल के सीनियर अहम भैया को याद कर रामू दार्शनिक अंदाज में बोलता गया, "जिस मिट्टी का नमक खाया है जिसका पानी पिया है, यदि उसका कर्ज ना उतारो तो राम भक्त के नाम पर कलंक होंगे हम सब!"

"चलो मान लिया जहाज से कीड़े आ रहे हैं, तो क्या कर लेगा तू?"

"मैं क्या कर लूंगा!" रामू कुछ बोलना ही चाह रहा था कि नरेश उखड़ गया, "हां-हां बोल, क्या उखाड़ लेगा तू!"

"जहाज में कीड़े भर-भर कर आते रहेंगे तो क्या जनता चुपचाप बैठी

रहेगी? एयरपोर्ट जाकर सारे जहाजों की चाबी खींच लाएगी!"

"अरे! इसीलिए तो सभी तुम्हें स्कूल टाइम से ही कहता आया है रामचंद्र बावला और अब पदवी बढ़कर हो गया है रामू ग्वाला, ऐसे ही क्रेक माइंड जैसी बातें करता रहेगा तो समझो हो गई तेरी शादी मंजरी से!" बोलते हुए नरेश जाने के लिए उठ खड़ा हुआ, बायीं कनपटी में दो उंगली से ठोकते हुए, कि यह तो पगला का पगला ही रह गया!

"तू भी एक बात सुनता जा नरेश भाई, सभी जहाज अगर जमीन पर जीप जैसा नहीं सड़ने लगा तो मेरा नाम रामू ग्वाला नहीं," बोलते-बोलते उसने अपनी भुजा फड़काई, "और बात रही मंजरी की, यदि मैं उसे ब्याह कर घर नहीं लाया तो मेरे नाम पर किसी मंदिर में जूते टांग देना!" रामू के इस आह्वान के बाद मित्र-मंडली के पास कुछ नहीं बचा था आज की सभा के लिए। मंदिर के चबूतरे से उतरते ही रामू को लगा जैसे हवा में कुछ सनसनी-सी फैल रही है; सनसनी जिससे कुछ भी सामान्य नहीं रह पाएगा। उसे अचानक परवेज याद आया; उसी के बारे में सोचता हुआ घर की ओर बढ़ चला।

पीछे वाली गली में भीमरवा शोर मचाता जान पड़ रहा था; उसकी आवाज में आज उपहास-तरंग तीव्र हो चली थी...कलाकार! अदाकार! खूनकार! रामू ने उसकी ओर सम्मान में सिर झुका दिया, दूर से ही।

3

यूं तो परवेज का घर रामघाट की पॉश कॉलोनी में शुमार इंडियाना एन्क्लेव में है, हर दूसरे-तीसरे दिन जरूर दिख जाता है बस्ती में; उसके अजीज दोस्तों में से कई तो बस्ती में ही रहते हैं। हाल में बस्ती के स्लम एरिया के भी कुछ नवयुवकों में उसकी दिलचस्पी जगी है; उसकी नजर में बस्ती की किस्मत बदले बगैर हिंदुस्तान की तरक्की टिकाऊ नहीं हो सकती। इंडियाना एन्क्लेव का बाशिंदा है, जाहिर है घर की माली हालत दुरुस्त है। अब्बा, अम्मी, दीदी, भैया-भाभी और एक साल की भतीजी सहित भरा-पूरा परिवार है। अब्बा रामघाट विश्वविद्यालय में हैं, तीस साल पहले लेक्चरर से शुरू हुई नौकरी अब रिटायरमेंट के करीब प्रोफेसर के ओहदे तक पहुंच ही गई है। तो हर तरह से कामयाब और खुशहाल फैमिली। वह बचपन से ही सुनता आया था परवेज मायने खुशकिस्मत, तभी तो बचपन से ही अपने को सबसे

खुशनसीब इनसान मानता चला आ रहा था। राजनीतिक विज्ञान पढ़ते-पढ़ते जैसे-जैसे उसकी ज्ञान की पोटली खुलती गई, खुद को बदनसीब मानने लगा; विकृत होते जा रहे लोकतंत्र में पैदा हुए एक बदनसीब इनसान के तौर पर!

स्कूल के जमाने से ही परवेज बातूनी और बहसबाज किस्म का रहा है। रामचंद्र के साथ उसकी जुगलबंदी खूब जमती थी। पढ़ने में भी होशियार; मैट्रिक बोर्ड में सहज टॉपर था तो इस जनाब ने भी पांचवीं-छठी रैंक हासिल कर ली थी। अंक-पत्र को देखें तो विज्ञान में विशिष्टता प्राप्त है, जाहिर है अब्बाजान चाहते थे साइंस स्ट्रीम में ही कंटिन्यू करें। हकीकत में इस औलाद को शफिक साहब आईआईटी से पास आउट इंजीनियर बनाने का ख्वाब कब से पाले आ रहे थे। लेकिन छोकरे ने किसी की नहीं सुनी; ग्यारहवीं में आर्ट स्ट्रीम में दाखिला ले लिया तो पिछले साल पॉलिटिकल साइंस में एमए करके ही दम लिया है। बारहवीं के बाद रामचंदर (रामचंद्र के बजाय उसे रामचंदर के उच्चारण में सहूलियत रहती है) के साथ सुबह-शाम वाली यारी छूटी तो सहज का सहचर बन बैठा, ऐसा कि जिस दिन उससे न मिल पाए तो जैसे उसका सूरज उगा ही न हो! बारहवीं के बाद कॉलेज नहीं जाने के बावजूद रामचंद्र उर्फ रामू ग्वाला आज भी उसका करीबी फ्रेंड है; दिल के कोने में बसा दिलदार सा!

उसे लगने लगा है एमए करते-करते उसने राजनीतिक विज्ञान, खासकर 'भारत का संविधान' में विशेषज्ञता हासिल कर ली है। अपने सर्किल में देश के भविष्य पर होते रहने वाले डिबेट में 'सौ करोड़ का संविधान' की बात जरूर करता है वह; उसके अंदर एक दृष्टि बनती जा रही है कि हिंदुस्तान के सौ करोड़ साधारण लोगों के लिए एक अलग संविधान की जरूरत पड़ेगी भविष्य में! वह जब भी अकेला होता है राजनीतिक विज्ञान की कोई-न-कोई थ्योरी या बर्निंग टॉपिक उस पर हावी होने लगता है। आज भी वह घर में अलहदा सा था, अपने छोटे कैंपस के इकलौते आम के पेड़ के नीचे; आम में निकल आए अमिया पर गौर फरमाते हुए...बेचारे कैसे बचेंगे भला, हमने तो कभी ख्याल ही न करा इनका, ना चूना, ना स्प्रे! आगे न जाने कितनी आंधी-पानी झेलना लिखा है इनकी किस्मत में; हम सब अपने-अपने कोठरे में चैन की नींद में होंगे और बाहर ये मियां एक-एक झटके से अपनी दुनिया से छिटककर जमीन पर ऐसे गिरेंगे जैसे सीधे कब्र में...

ओह, हद कमीना है यह तिपाया! ...अभी लाकर रखे तिपाए को सही

जगह पर रखना चाहा तो अपने-आप चिढ़ उठा वह। उसे याद है, तीन साल पहले लकड़फाटा वाले पंचू बढ़ई ने बनाया था; इसके तीनों पैर एकदम दुरुस्त थे, रत्ती भर का भी हिल-डुल नहीं। एक दिन कोठी के पिछवाड़े वाले कोर्टयार्ड में बैठे अब्बा-अम्मी चाय पी रहे थे। शाम के वक्त अंधेरे की आमद के साथ तिपाए का संतुलन बिगड़ने से जरा सी चाय क्या गिर गई, अब्बा बिगड़ उठे, '...साले इसके एक पैर बड़े लग रहे हैं!' उन पर इंजीनियराना सनक सवार रहती है हरदम; बिना देर किए छोटी आरी से शक के घेरे में दिखे पैर को छोटा कर डाला, भूल यह हुई कि सनक में थोड़ी ज्यादा कट गई! परवेज की नजर जब भी इस पर पड़ती है उसे संविधान की नींव के तीन अंडरग्राउंड पिलर याद आते हैं; स्वतंत्रता समानता बंधुता...वाह! क्या खूब ग्रहण किया है हमने फ्रांस से। अरे भई, ग्रहण करने-कराने से कुछ नहीं होता, ईमानदारी से जड़ें जमानी पड़ती हैं! हमें स्वतंत्रता मिल गई, सभी भारतवासी बंधुता बनाकर चलते आ रहे हैं अब तक, लेकिन कसम खा रखी है कि समानता नहीं आने देनी है देश में! देश के धन्नामलों, बड़े नेताओं देश की जड़ का रस पिये जाओ, आपकी सेहत बनी रहेगी! अरे मेरे मुल्क के मालिक, समानता के टारगेट से दूर छिटकते जाओगे तो सबसे पहले बंधुता गायब होगी! फिर स्वतंत्रता डफली बजाती रहेगी; पागलों जैसी अकेली! अरे, संविधान के तीन स्तंभ के बीच कहां फंस गया मैं! इस तिपाए पर चाय-पानी भला कैसे कराऊंगा दोस्तों को? अंदर से कोई हल्का टेबल ले आना ठीक रहेगा...अरे, घंटी बजी! लगता है गौदेव अपनी देवी के साथ और अर्थव्यवस्था अपनी विज्ञान के सहारे आ पहुंचे हैं...

"अरे वाह! तो आज शहंशाह का दरबार खुले में लगा है!" आम के पेड़ के नीचे कुर्सी-टेबल लगा देखकर रामू ने दिल खोलकर कहा।

"स्वतंत्रता-समानता-बंधुता छोड़कर अब फल-फूल-सब्जी पर संविधान लिखने लगे क्या!" कुर्सी सरकाते हुए सहज ने मजाकिया अंदाज में कहा।

"हां यार, आजकल सारे पॉलिटिशियन ऐतिहासिक उपलब्धियां ही गिना रहे हैं, फिर तो मेरे लिए यही सब बचेगा न!" बोलकर परवेज ने जोर का ठहाका लगाया; अंदर से भाभी बाहर झांकने लगी।

"इतना लंबा-चौड़ा ठहाका मत लगाया करो परवेज, भाभी भी घबराकर बाहर झांकने लगी हैं," बोलते हुए शायनी ने एक हथेली से मुंह ढक लिया, "बिचारी डर तो नहीं गईं, कि कहीं शहजादे बिना बताए बेगम तो नहीं ले आए!"

"उन्हें पता है मेरी होने वाली बेगम उसी के कब्जे में है," बोलकर परवेज ने घर की ओर एक हाथ उठाया, सलाम करता हुआ; रामू ने कहा 'आमीन'। चेहरे में घरेलूपन जैसा हाव-भाव लाते हुए परवेज बोला, "वह तुम सभी को बखूबी जानती हैं, कितनी बार तो मिले हो सभी!"

"जरा हमें भी तो पता चले कौन है वह हसीना!" बेगम वाली बात पर सहज की बेताबी बढ़ गई।

"अरे मेरे खुदा, वह मुझे पता होता तो आपके जैसा बाइक में लेकर न घूमते!" बोलकर परवेज ने सहज पर रहस्यमयी आंखें गड़ा दीं; शायनी की मौजूदगी का ख्याल कर आगे धीरे से कहा, "वैसे एक बात माननी पड़ेगी यार, अब तो पूरे शहर को तुम दोनों के बारे में पता है, जब निकलते हो तो लोगबाग मन से फूल बरसाते हैं दोनों पर।"

"असली बात तो पूछ नहीं रहे हो इनसे," बोलते हुए रामू ने एक हाथ से शायनी की तरफ से अपना चेहरा छुपा लिया, "इन दोनों का ठिकाना कहां है, कितना सफर हो चुका है और कितना बाकी है!"

"तुम्हें जलन क्यों हो रही है मियां," इससे आगे परवेज मंद लय, पर लंबी तान में बोलने लगा, "तुम और मंजरी रेगिस्तान में लैला-मजनूं जैसा अलग-अलग भटकते फिरो तो तुम्हारी मर्जी, ये दोनों मियां-बीवी-सा जंगल में मंगल करते रहें इनकी मर्जी!"

"अरे अब बाजा बंद भी करो, अगर यही बात करने आए हो तो तुम लोग मेंढक जैसा टर-टर करते रहो," नाराजगी में बोलती जा रही शायनी ने आगे अपने शब्दों में वजन बढ़ाया, "मैं जाती हूं अंदर भाभी के पास।" बोलकर कुर्सी से उठ खड़ी हुई वह।

"मेरे प्यारे सहज की दिलरुबा," शायनी के सामने दोनों हथेली दुआ माफिक जोड़ते हुए परवेज ने कहा, फिर माफीनामे के अंदाज में बोला, "पहले काम की बात कर ही लेते हैं, भाभीजान कहां भागी जा रही हैं, जाने से पहले मिलकर जाना," लंबी सांस लेकर छोड़ी, फिर रामू की ओर देखकर गंभीर होकर बोलने लगा, "रामू, तुमने फोन में बताया कि कुरौना के बारे में कुछ सोचना पड़ेगा; मैं तो कई दिनों से अखबारों में इसके बढ़ते खतरे के बारे में पढ़ ही रहा हूं, दरअसल यह कोरोना वायरस है; कल अंबेडकर चौक पर उदय भाईजान मिल गए थे, वह भी कह रहे थे यह कोरोना तो गरीबों पर कहर बनकर टूटने वाला है," परवेज बिना रुके बोले जा रहा था तो शायनी

ग्रुप-डिस्कशन की ओर बढ़ने की गरज से बोली, "लिस्ण टु मी, वुहान में क्या हो रहा है किसी से छिपा नहीं है," बोलने के दरमियान उसके दोनों होंठ आगे की ओर निकल आए, आगे बोली, "हम लोगों को थोड़ा-सा समय निकालकर देश और समाज के बारे में भी सोचना चाहिए, अगर यह वायरस इंडिया में अपना पंजा फैला दिया तो समझो बेड़ा गर्क हो जाएगा देश का!"

"मेरे हिसाब से इस खतरनाक वायरस के बारे में हमें एक डिबेट का माहौल तैयार करना चाहिए!" बोलकर मंजरी ने आंखें बंद कर लीं, जैसे अंदर कोई संभावना तलाश रही हो।

"शहर-समाज का माहौल देखकर ही तो डिबेट का माहौल तैयार करोगे! आज की डेट में अपने करियर-कारोबार से किसे फुर्सत है एक्स्ट्रा कुछ करने की?" सहज ने सीमा बताई।

"कहां तैयार करोगे डिबेट का माहौल? देश में!" इतना बोलकर परवेज ने तिरस्कारपूर्ण भाव-भंगिमा बनाकर नाक से 'हुंह' ध्वनि निकाली, फिर स्वर में गंभीरता लाते हुए बोलने लगा, "जानते हो डिबेट का माहौल किस देश में बनता है? जहां का इंटेलेक्ट लेवल अलाइव हो; बीते दशकों को रहने भी दो, पिछले दो-तीन महीने पर ही गौर फरमाएं तो शीशे जैसा साफ दिखेगा हमारा इंटेलेक्ट लेवल ऊपर जा रहा है या नीचे? जरा सोचो, हम मानवतावाद के वैश्विक लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं या उससे विमुख हो रहे हैं?"

"यू आर राइट परवेज; मैं भी महसूस कर रहा हूं दीर्घकालीन आर्थिक सुदृढ़ता और समावेशी जनकल्याण के सार्वकालिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तर्क, विज्ञान और व्यवहारवाद का अनुकरण करने के बजाय हम मान्यता और धारणा के आधार पर बड़े-बड़े फैसले ले रहे हैं," सहज का अर्थशास्त्रीय दर्शन जागने लगा तो शायनी बोल पड़ी, "ठीक है परवेज, हम देश के स्तर पर डिबेट शुरू नहीं कर सकते, पहले रामघाट के स्तर पर पब्लिक डिबेट तो शुरू कर सकते हैं।"

"न्यूज के मुताबिक तो इस वायरस ने वुहान से बाहर दुनिया के कई मुल्कों को अपनी जद में लेना शुरू कर दिया है," परवेज बोलने लगा तो उसकी आंखों की पुतली अपनी जगह पर जड़ सी हो गई, "इंडिया की बाउंड्री भी तो क्रॉस कर चुका है यह शैतान वायरस, खबरों की मानें तो अभी तक तीन लोग इससे संक्रमित हैं इंडिया में, यह तीन बढ़कर चार न हों इसका उपाय सरकार को नहीं पता तो हमें भला कैसे पता होगा!" बोलकर

सिर को नकारने जैसा हिलाया, फिर व्यंग्यपूर्वक मुस्कुराते हुए कहा, "दरबार को जब अपने खास-खास कामों से फुर्सत मिलेगी तभी तो कोरोना की बारी आएगी; वैसे यह एक स्थापित सत्य है, प्रजातंत्र में सरकारों के लिए चुनाव मायने रखते हैं चुनौती नहीं, जब देश में दूरदृष्टि के बजाय क्षुद्र दृष्टि हावी हो तो..." परवेज की लंबी होती बात को मंजरी ने रोक दिया, "शायनी की बात पर गौर नहीं किया तुमने? रामघाट के स्तर पर चर्चा शुरू करेंगे तो बात दिल्ली तक पहुंचेगी ही!"

"अरे मेरी बहना!" दोनों हाथ जोड़कर कपाल पर धरते हुए परवेज बोला, "यदि मैं पब्लिकली बोलने लगूंगा तो कहीं ये लोग सीधे मेरा जिबह ना कर दें!"

"परवेज की पकड़ बिल्कुल सही है," रामू एकाएक उत्तेजित हो उठा, कुर्सी पर पीठ सीधी करते हुए बोला, "पार्टी के कार्यकर्ता लोग तो आजकल जैसे आसमान में ही मूतने लगे हैं; मेरे मोहल्ले का है न वो नरेशबा! परसों कोरोना की बात पर बेवजह मुझसे भिड़ गया! कहने लगा कोरोना से कुछ नहीं होना है, यह तो विरोधी पार्टी वाले हैं जो अफवाह का वायरस फैला रहे हैं!" रामू को उंगली के इशारे से रोकते हुए परवेज राजनीतिवेत्ता भांति बोलने लगा, "पोलिटीसिज्म में इसको कहा जाता है पावर मीनिया; आजकल इनके कार्यकर्ता ऐसे एक्ट कर रहे हैं जैसे वह खुद पीएम हों!"

"तो तुम्हारे विचार से हमें कोरोना वायरस को भूलकर सो जाना चाहिए, चादर तानकर...?" शायनी बोल रही थी तो रामू ने जोड़ा, "जैसे दिल्ली वाले सो रहे हैं!"

"अरे नहीं मेरे रामचंद्र भगवान," रामू की तरफ दंडवत करने जैसा सिर झुकाकर परवेज बोला, फिर शायनी की ओर देखकर कहा, "मैं यह नहीं कह रहा हूं कोरोना वायरस पर चर्चा बिल्कुल बंद कर दो, मॉडर्न पॉलिटी कहता है किसी भी बर्निंग टॉपिक पर एक्सपर्ट की राय लेकर हेल्दी डिस्कशन कंटिन्यू करना चाहिए!"

"भैय्या लोग! डिबेट-डिस्कशन पर तो मेरा विश्वास ही नहीं है; कुरौना वाली बात बहुत आसान है तो बहुत खतरनाक भी!" रामू अपनी दोनों तर्जनी को अलग-अलग एंगल से दूर-पास आड़े-तिरछे करते हुए बोला, आवाज में चढ़ते क्रोध को संभालते हुए, "यह साला कुरौना जब तक इंडिया में घुसपैठ कर बाल-बच्चे पैदा नहीं करता है तब तक तो मामला आसान है, जब

यह लाखों-करोड़ों बाल-बच्चे पैदा कर चुके होंगे यहां पर फिर तो मामला खतरनाक ही नहीं खतरनाक के बाप जैसा हो जाएगा, तब जाकर हम जागेंगे, फिर सरकार जागेगी!"

"तो तुम्हारे हिसाब से क्या करना चाहिए!" शायनी चिंतामग्न होकर बोली।

"मेरा तो डायरेक्ट एक्शन पर विश्वास है," कुर्सी से उठकर रामू बोला, "कल से ही एयरपोर्ट पर सारे फ्लाइट की चाभी खींच लो तभी बच पाएगा यह देश और अपना रामघाट!"

"अरे, ऐसे थोड़े न होता है!" सहज कहीं गुम हो जाने जैसा बोला।

"सुनो, ऐसा करते हैं हम लोग जेड सर के पास चलते हैं।" आंखें लगभग बंद करती हुई शायनी बोली।

"यह आइडिया अच्छा है, लेकिन जेड सर के पास जाने से पहले अहम को भी साथ लेना ठीक रहेगा; वह तो आज भी सर का पकिया चेला है, सुबह-शाम वाला।" परवेज ने बात समाप्त की। सभी सहमति में सिर हिलाते हुए चलने को हुए; सभी के कदम सधे हुए जान पड़ रहे थे, जैसे सच में कोई बड़ा दुश्मन सामने आने ही वाला हो। परवेज को महसूस हुआ जैसे हवा में अब वो सुकून न रहा। अंदर पनप रही बेचैनी से बचने को उसने घर के अंदर की ओर उंगली दिखाते हुए शायनी को याद दिलाया, भाभी से मिलकर ही जाना है।

4

स्कूल की क्यारियों में गेंदा, गुलदावरी और डाहलिया अपनी मुस्कान समेटने में लगे थे, वसंत की अवसान बेला में। स्कूल गार्डेन में चहलकदमी करने से मर्त्य-जीवन वाली सच्चाई से मन और उचाट हो सकता था। आठवीं और नौवीं कक्षा का एक-एक पीरियड लेकर अहम शिक्षक कक्ष में बैठा था; अकेला, एकांत। नाम भी तो अहम है उसका, दूसरा कौन होगा उसके साथ! दूसरे पीरियड के बाद तीसरे पीरियड के बारे में सोचने लगा था; यही तो कमजोरी है उसकी, एक काम खत्म होते ही मस्तिष्क-मंथन शुरू हो जाता है अगले काम के लिए। स्व-चिंतन में लीन हो गया वह...लोग सच ही कहते हैं, इसे तो सुकरात-प्लेटो-अरस्तू के तुरंत बाद पैदा होना था; स्वतंत्र भारत के लिए तो सर्वथा अनफिट बंदा है वह! सुकरात के बाद जन्म नहीं ले पाया था तो भारत में आजादी के पचासवें साल में जन्म लेने की भूल नहीं करनी

चाहिए थी। यदि जन्म लेने की छटपटाहट ही थी तो एक-दो सदी और रुक जाता, तब तक सारा दर्शन एक डायरी में लिखकर स्वर्ग से धरती में भेज देता; देश-दुनिया उसके मतानुकूल जगह पर आ जाती, तब किसी यशोधरा मैया के गर्भ से बाल बुद्ध सा जन्म लेता...माय गॉड, यह माइंड है कि माउंट लावा; निकलना शुरू होता है तो बंद होने का नाम ही नहीं लेता है! अब दस मिनट ही तो बचे हैं, दसवीं में समाज विज्ञान का दूसरा चैप्टर पढ़ाना है उसे; 'महात्मा गांधी का भारतीय जीवन में प्रभाव'। उसे तो समझ में नहीं आ रहा, जब प्रभाव ही नहीं बचा है तो पढ़ाना क्या है बच्चों को! पाखंड! पाखंड!! बच्चों के साथ दगाबाजी! युवावस्था पार करने तक महापुरुषों की सीख दे-देकर भ्रम में डाले रहो; तभी तो यहां क्रांति की आग सुलगाने के लिए बुझे कोयले ही बचे हैं चारों तरफ, चाहे जितना फूंक मारो सुलगते-दहकते ही फुस्स! ...धत्त तरे की! कनपटी में तलहथी ठोक ली उसने; घर चलाने के लिए ही तो वह निजी स्कूल में पढ़ा रहा है। दीदी घर में न होती तो वह कदाचित अपने मन के गंतव्य की ओर चल पड़ता, एक नई सृष्टि की भूमिका तैयार करने। माय गॉड! तीसरे पीरियड के बाद तो शायनी लोग भी आने वाले हैं; आखिर एक लंबे समय बाद वे सब झुंड बनाकर मिलने क्यों आ रहे हैं?

"अरे यार, तुम चारों एक साथ ऐसे आए हो जैसे मुझे किसी कोर्ट में पेश होना है!" सभी को स्कूल के एक खाली कक्ष में बैठाते हुए अहम ने कहा।

"मेरी भी क्या किस्मत है यार! कहते हैं न एक से भले दो," रामू दोनों हथेलियां लहराते हुए बोला, "अभी तक मैं अकेला कटघरे में खड़े होने की सोच रहा था, पर यहां तो दूसरा पहले से ही मन बनाकर बैठा है!"

"तुम्हें भला कौन कोर्ट में हाजिर करेगा रामचंद्र भगवान जी!" रामू का हाथ पकड़कर ऊपर उठाते हुए अहम बोला, इंकलाबी अंदाज में, "शहर की पुलिस को पता है तुम बस्ती का उलट-खोपड़ी वाला ग्वाला है!"

"सबसे पहले तो यह बताओ अहम," बोलने के लिए शायनी ने ऐसे मुंह खोला, लगा जैसे कोई चूक याद आ गई हो, "अंतरा दीदी कैसी हैं, उनसे मिले तो साल से ऊपर हो गए!"

"बस ठीक है; बस्ती में मजदूरों के बच्चों के लिए नि:शुल्क बाल शाला को सीने से चिपकाए रहती है सोते-जागते।" अहम के बोलने का अंदाज भले ही व्यंग्यभरा हो, चेहरे में गौरवपूर्ण दीप्ति दिख रही थी; दीदी के कार्य को वह मानव जीवन की सार्थकता से जोड़कर देखता रहा है।

"मेरे घर से थोड़ी ही दूरी पर तो है शाला," बोलकर रामू ने आगे जोड़ा,

"बस्ती का तो उद्धार कर रही है दीदी, पूरी बस्ती गद्‌गद है उनके नि:शुल्क शिक्षा दान से!"

"और..." शायनी बोलना ही चाह रही थी कि अहम समझ गया, "शादी? दीदी ने तो ठान लिया है, शादी नहीं करनी है तो नहीं करनी!" फिर छत की ओर आंखें उठाकर बोलता गया, "यदि मैं कभी शादी की बात करता हूं तो कहती है, 'तुम्हें लोग कहते होंगे ना कि माँ-बाप नहीं रहे तो भाई ही तो अब माँ-बाप है', फिर तो मेरी हिम्मत जवाब दे जाती है।"

"मैं तो अभी भी कह रहा हूं, जब तुमने फिलॉसफी से एमए कर ही लिया है तो लगे हाथ पीएचडी कर ही लेते," काफी देर से चुप सहज शब्दमय हुआ, फिर अर्थशास्त्रीय अप्रोच के साथ बोला, "पीएचडी के बाद तुम्हें कहीं भी लेक्चररशिप मिल जाएगा; आखिर जिंदगी का सफर कहीं न कहीं तो शुरू करना पड़ेगा न!"

"सहज इज व्हेरी राइट; लेक्चररशिप मिल जाता और फिर अपने क्रांतिकारी दर्शन से हिंदुस्तान को हिलाते रहता, क्यों!" परवेज से भी न रहा गया।

"जनाब परवेज, अहम भैया तो ऐसा वीर है," बोलते हुए रामू का सिर रहस्यमयी तरीके से हिलने लगा, "जो बिना रथ के भी मारक वाण छोड़ सकते हैं!"

"देखो डियर सही बात बताऊं, पीएचडी का सिनॉप्सिस तो अप्रूव हो रखा है मेरा पर..." बोलकर रुक गया अहम; क्षणभर की चुप्पी के बाद बोल ही दिया, "मुझे लग रहा है कहीं मैं खुद के दर्शन में दफन तो नहीं होता जा रहा हूं?"

"मेरे हिसाब से तो वही आदमी दुनिया को नई राह दिखाता है, जो जिंदा ही दफन होकर नए रास्ते की बुनियाद रखता है और दफन होने के बाद भी जिंदा जीव-सा बोलता है!" रामू के मुंह से गूढ़ बातें सुनकर सभी को लगा यह तो ज्ञानी बनता गया है, बगैर कॉलेज के भी!

"तुम लोग तभी से मेरी पोटली खंगाले जा रहे हो," अहम को लगा चर्चा उसी पर केंद्रित होने से माहौल बोझिल होता जा रहा है; सहज पर आंखें केंद्रित कर बोला, "तुम दोनों की हिट जोड़ी तो अब शहर में पहले पायदान पर चल रही है, वैसे दोनों चाहो तो रामघाट के लिए एक अच्छा एग्जामपल सेट कर सकते हो।"

"रामघाट के लिए एग्जामपल सेट करेंगे या नहीं यह तो रामजी जानें,"

बोलकर परवेज ने पंजे से मुंह बंद कर लिया, कहीं हंसी का फव्वारा ना छूट पड़े, उंगली के पोरों से छनकर बात निकली, "फिलहाल दोनों हर दिन सेट हो रहे हैं," इतना सुनते ही बच्चों का कक्ष बड़ों की किलकारी से तरंगित हो उठा। सुनकर शायनी ने लगाम अपने हाथ में ले ली, "अच्छा भई, हम दोनों का क्या होना है यह बात छुपी नहीं रहेगी; अब काम की बात करें?" फिर अहम की ओर देखकर पूछा, "यह कमरा बातचीत के लिए सुरक्षित है न अहम?"

माहौल में अचानक आई गंभीरता के भार से अहम के चेहरे पर संशय की परत चढ़ती दिखी, अधीर होकर बोला, "आज हाफ डे है, यह पांचवीं का क्लास रूम है, अब खाली है; आज दो पीरियड पढ़ाने के बाद कायदे से मुझे तीसरा पीरियड भी लेना था, पर शायद प्रिंसिपल सर किसी को लगा दिए होंगे, अतिथि-आगमन का सम्मान करते हुए; समझो मैं भी फ्री हो चुका हूं।"

"कोरोना वायरस का मामला डरावना होता जा रहा है, हम सभी इसके फैलते जाने से चिंतित हैं।" सहज ने शुरुआत की।

"तुम लोगों को किसकी चिंता हो रही है!" अहम के प्रश्न पूछने का अंदाज जवाब देने जैसा था; उसके होंठों में व्यंग्यघुली मुस्कान उग आई।

"रामघाट के लिए" रामू ने कहा, "हिंदुस्तान के लिए" परवेज ने जोड़ा, "दरअसल पूरी दुनिया के लिए" शायनी ने स्पष्ट किया।

"हूंह; रामघाट, हिंदुस्तान और दुनिया की चिंता करने चले हो तुम लोग! कोविड नाइनटीन यानी सार्स टू, यही न?" शब्दों पर जोर देते हुए अहम ने कहा, शब्द ऐसे निकल रहे थे जैसे कोरोना से मुठभेड़ का गवाह बनने वाला हो; आगे दार्शनिक अंदाज में बोलता गया, "न्यू कोराना वायरस के बारे में आरंभिक बात को रहने दो, मेरे से अंतिम परिणाम सुन लो; मानव सभ्यता को सबसे गहरा जख्म दे जाएगा न्यू कोरोना वायरस! समझे श्रीमान लोग!"

"इसलिए तो विचार-विमर्श करने आए हैं।" मंजरी के मुंह से मंद ध्वनि निकली, लगा जैसे किसी बंद मेनहोल से बोल रही हो।

"जब विजन ही न बचा हो तो विमर्श करना व्यर्थ है!" बोलकर अहम ने लंबी सांस ली, छोड़ दी।

"मतलब?" शायनी अबूझ-सी हो चली।

"मतलब यह कि आज एक मार्च है, देश में कोरोना संक्रमितों की संख्या पचास से ऊपर पहुंचने वाली है," बोलते हुए अहम की आंखों की पुतली

किसी गहरी घाटी में झांकती दिखने लगी, "पर क्या देश में किसी भी व्यक्ति को इसकी गंभीरता का एहसास है! देश को रहने दो, रामघाट में इसको लेकर कोई फिक्रमंद दिख रहा है तुझे आज की तारीख में! कुछ लोगों के मास्क लगाने और हाथ ठीक से धोने की बात करने के सिवाय?"

"अहम सच कह रहा है," रामू आंखें छोटी करके बोलने लगा, उसकी आवाज में घृणा सवार होती गई, "आज के डेट में भी देश में कोई जिम्मेदार व्यक्ति नहीं दिख रहा है जो अपना एजेंडा छोड़कर कुरौना के एजेंडे पर फोकस कर रहा हो?"

"तो तुमने कोरोना को लोकल नाम भी दे दिया है! कुरौना?" कुरौना नाम पर अहम रीझता दिखा।

"विदेशज शब्द के देशज नाम मुझे ज्यादा अर्थपूर्ण लगते हैं; कुरौना उच्चारित करते लगता है वह सच में कपटी होगा!" रामू ने कुरौना के पक्ष में तर्क दिया।

"रामू ने बारहवीं के बाद हम लोगों का साथ जरूर छोड़ दिया था, पर मुद्दे की तह तक जाने में वह आज भी फायर ब्रांड है," रामू की ओर मुस्कुराकर अहम बोलता गया, "इसकी कही बातों के आगे का फैक्ट यह है कि जब समाज और राष्ट्र का विजन अनरिजनेबल एंड अनसाइंटिफिक हो जाए तो हम समय के आर-पार नहीं देख पाते हैं, फिर हमारी भविष्य दृष्टि लकवाग्रस्त हो जाती है!"

"क्या अहम भैया, आपको ऐसा लगता है हमारी भविष्य दृष्टि लकवाग्रस्त हो चुकी है?" शायनी की बेचैनी बढ़ गई।

"बिल्कुल!" अहम ने शपथपूर्वक कहने के अंदाज में कहा, "आज से नहीं दशकों से; आजादी के बाद हमारे देश की जमीं और आसमाँ में दूर तक दृष्टिपात कर सकने वाले विजन के नन्हें पौधे जरूर उग रहे थे, लेकिन..." नकार में सिर हिलाते हुए दोनों होंठों को उसने कसकर दबाया, फिर अलग करते हुए गुबार को बाहर आने दिया, "बाद के वर्षों में हमारी विजन की औकात या आयु जो मर्जी कह लो, रह गई मात्र पांच साल! उससे आगे दिल्ली की दृष्टि अपने-आप अपंग हो जाती है!"

"तो क्या हम लोगों को अपनी-अपनी कब्र खोदकर जिंदा दफन हो जाना चाहिए!" रामू बेचैन होकर बोला; लगा दलदल में फंसा इनसान निकलने के लिए छटपटा रहा हो।

"नहीं-नहीं, ऐसा नहीं कह रहा हूं," बोलते हुए अहम के चेहरे में उम्मीद की चादर-सी बिछने लगी, "चिंतन ही तो जीवन है, जो चिंतनशील होते हैं वे अपनी नहीं देश और मानव के भविष्य की बेहतरी के लिए रमे रहते हैं।" बोलते-बोलते उसने साथियों के सामने ड्राय फ्रूट के डिब्बे बढ़ा दिए; आंखें छोटी करते हुए पूछा, "अपने साथियों में से किसी को पता है हमारा वो मूर्तिकार साथी क्या कर रहा है आजकल?" बोलने के बाद अहम के चेहरे में विश्वासपूर्ण मुस्कान तैर गई; स्वतः।

"अरे हां, वो मूर्तिकार अंकुर! क्या नया कर रहा है आजकल?" शायनी को सहसा याद आ गया।

"हम-तुम अपने-अपने भविष्य के पीछे दौड़ लगा रहे हैं, और एक वो है सबसे जुदा! बीए करने के बाद से ही मनपसंद मूर्तियों को माँजने में लगा रहता है, दिन-रात!"

"हां, मुझे पता है स्लम के पीछे नाले के किनारे वह मूर्तियों को जीवंत करने में भिड़ा रहता है।" खुशी का इजहार करते हुए परवेज ने कहा।

"दो साल पहले तो वह भगतसिंह की मूर्ति में ही प्राण फूंकना चाह रहा था; बाद में इरादा बदल लिया कि एक नहीं कई भगतसिंह की जान एक ही मूर्ति में डालनी है!" रामू ऐसे बोला जैसे अंकुर के हर रहस्य का राजदार हो।

"भविष्य के भारत के लिए एक श्रेष्ठ पुरुष के प्रकटीकरण का सपना तो वह वर्षों से संजोए है।" अहम ने इत्मीनान से कहा, जैसे उस श्रेष्ठ पुरुष का एक छोर उसके दिमाग से निकलता हो।

"कैसा श्रेष्ठ पुरुष!" मंजरी तरंगित हो उठी, जैसे एक नई दुनिया की कल्पना में उड़ान भरने के लिए मचल रही हो।

"दरअसल अंकुर के अंदर एक बड़े सत्य का प्रस्फुटन हो रखा है, कि देश को इसकी असली मंजिल तक ले जाने वाले मस्तिष्क का जन्म अभी तक भारत भूमि में हुआ ही नहीं है!" अहम ने छत की ओर देखते हुए कहा, जैसे आसमान से किसी विराट पुरुष के अवतरण की राह ताक रहा हो।

"कैसा मस्तिष्क?" शायनी की आंखों में चमक आ गई, जैसे सच में किसी चिर-प्रतीक्षित पुरुष का अवतरण तो अब होना ही होना है।

"देश के लिए समर्पित एक ऐसा मस्तिष्क जिसमें कोई कलुषता न हो कोई पक्षता न हो, जिसे एक ही नजर में कश्मीर से कन्याकुमारी तक शीशे जैसा साफ दिखता हो!" बोलकर अहम ने आंखें बंद कर लीं, जैसे उस विराट

पुरुष के दर्शन हो गए हों।

"पर मूर्ति मात्र गढ़ने से ऐसे परम पुरुष की उत्पत्ति हो पाएगी? वो भी नाले के किनारे!" अब तक चुप बैठा सहज विस्मय से बाहर नहीं आ पा रहा था।

"विश्वास में बड़ी शक्ति होती है सहज! एक बड़े विश्वास के साथ वह मूर्तियां गढ़ता रहता है, रोज थोड़ा-थोड़ा," अंगूठे और तर्जनी को मिलाकर अहम ने कहा, जैसे वह भी उसकी श्रेष्ठ कृति में छेनी चलाना चाह रहा हो; आगे परम निरंकारी भांति बोलता गया, "उसे तो पक्का यकीन है हिंदुस्तान जैसे विशाल देश के लिए सर्वथा सार्थक पुरुष का सपना एक-न-एक दिन वह जरूर साकार कर लेगा; रही बात नाले के किनारे गढ़ने की तो उसकी धारणा बिल्कुल स्पष्ट है कि ऐसी महान आत्मा का जन्म महल में नहीं खुले मैदान में ही हो सकता है!"

"अरे हां! महल और मैदान वाली बात से याद आया, गांधी स्कूल में बाल-संसद में कितनी तो सटीक बातें करता था अंकुर!" बोलकर शायनी ने आंखें बंद कर लीं, लगा स्कूल के दिनों में खो गई हो।

"मैं तो उसकी श्रेष्ठ सोच को आज भी सलाम करता हूं," स्लम की तरफ हाथ से सलामी देते हुए परवेज बोलने लगा, "तब स्कूल में लगने वाले बाल-संसद के कैबिनेट में शामिल होने से वह हमेशा इनकार करता था; उसका तर्क होता कि सत्ता ही शैतान को जन्म देती है!"

"तब संसद में वह रामू का जोड़ीदार हुआ करता था, रामू भी तो कभी कैबिनेट में शामिल नहीं होता था!"

"मैं बिल्कुल शामिल नहीं होता था; हिंदुस्तान के कैबिनेट में शामिल होने का मतलब होता कथनी-करनी में फासला बढ़ाते चलना!" रामू बिना समय लिए बोला।

"पर उस बाल-संसद में रामू द्वारा खड़े किए जाते हंगामे का सीन तो यादगार हुआ करता था!"

"संसद था तो हंगामा होना ही था, पर रामू का वो भाषण याद करो जब उसने प्रधानमंत्री को ही फांसी पर लटकाने की माँग कर डाली थी!" परवेज ने कहा तो आज भी उसके रोंगटे खड़े हो गए।

"तब अंतिम उपाय के तौर पर ही मुझे वो माँग करनी पड़ी थी, क्योंकि उस सत्र वाला कैबिनेट और उसका वो अक्खड़ प्रधानमंत्री, क्या नाम था उस

छोकरे का?" स्मृति पर जोर देते हुए रामू ने कहा, "अरे हां, राम धानुका! मेरी जायज और जरूरी बात पर गौर फरमाने के बजाय वे सभी अपना भाषण पेले जा रहे थे।"

"वैसे भविष्य में कभी-न-कभी ऐसा होकर रहेगा; मुझे तो पूरा यकीन है इस देश की सबसे बड़ी क्रांति की परिणति उसी घटना में होगी!" खुले मैदान में आ धमके विद्यार्थियों को आशाभरी नजरों से देखते हुए अहम ने कहा।

"रियली ईट इज प्लीजेंट टू रिमेम्बर आवर स्कूल पॉर्लियामेंट!" सहज ने कहा; लगा उसके अंदर भी कुछ बीजारोपण-सा होने लगा है। क्रांति पर चर्चा से सभी क्षणभर के लिए मौन हो गए, जैसे अपने अंदर भी क्रांति की जड़ खोज रहे हों।

"अभी तो हम लोग आसन्न दुश्मन के बाबत आए हैं; इस विषय में आगे क्या करना चाहिए!" चुप्पी तोड़ती हुई शायनी बोली, तत्काल समाधान की दिशा में उम्मीद की किरण तलाशने की सोचकर।

"ये देश-दुनिया भी बड़ी अजीब है यार; सुख-शांति लंबे समय तक कायम रह नहीं पाती है, रामघाट में और देश-प्रदेश में भी कुछ-न-कुछ घटता रहता है!" सहज ने खिन्न होकर कहा, जैसे उसके माथे पर कोई बोझ बढ़ता जा रहा हो; आगे सर पीट लेने जैसा बोला, "आजकल हम सभी अपने-अपने काम में मनोयोग से लगे हैं, तो ये वायरस का लफड़ा न जाने कैसे टपक गया है; अभी तो रामघाट पहुंचा भी नहीं है कि हमारा रूटीन खराब कर दिया है, जब सच में आ जाएगा फिर तो जिंदगी की गाड़ी न जाने कितनी बेपटरी होगी!"

"सहज, ट्राय टू अंडरस्टैंड यार! अपने रूटीन से हटकर भी तो कुछ सोचना चाहिए; उस पर अमल करने या आगे बढ़ने की स्थिति जब आएगी तब सोचना अपना रूटीन खराब करना है या नहीं," सहज को समझाते हुए शायनी ने कहा, फिर अहम की ओर देखकर बोली, "मुझे तो लग रहा है हमें इसकी गहराई में जाना चाहिए।"

"गहराई में जाओ या ऊंचाई में, मुझे तो इस वायरस को रामघाट आने से रोकना है," बोलकर रामू ने हाथ जोड़ लिए, अपने स्वभाव के विपरीत।

"बाहर के देशों से इंडिया में कोरोना का आना दिन-रात जारी है, पहले उसे तो रोको! रामघाट में आना अपने-आप रुक जाएगा," चारों की ओर देखकर अहम ने कहा; आगे के लिए थाह लेनी चाही, "तुम चारों तो पहले

से ही प्रजातंत्र में बहुमत जैसे आए हो, कुछ तो क्लू दो।"

"हम लोगों को लग रहा है हमें जेड सर के पास चलना चाहिए।" शायनी की आवाज में सम्मान टपक रहा था जेड सर के लिए।

"और तुम्हारी तो सर से अभी भी अच्छी ट्यूनिंग है!" सहज ने उत्साहित होकर कहा; जेड सर की बात आते ही उसे लगा, सर तो सच ही बोलते हैं हमेशा।

"सिर्फ ट्यूनिंग ही नहीं डियर, मेरे थॉट की नाल तो आजीवन उनसे जुड़ी है! ऑफ कोर्स उनके सभी शिष्य उनके लिए आज भी बराबर हैं!" बोलकर क्लास रूम की दीवार पर बच्चों द्वारा बनाई गई अकाल-भुखमरी वाली पेंटिंग में खो गया अहम। स्कूल में अंतिम पीरियड समाप्ति की छुट्टीनुमा घंटी बजने लगी; उसने सत्र का समापन किया, "सर से बात करता हूं, जब भी आने को बोलेंगे सभी इकट्ठे चलेंगे।"

कमरे से निकलकर चारों बाहर की ओर चल पड़े। आज से धूप में तेजी दिखने लगी थी; क्यारियों में बचे-खुचे फूलों में शाम को भी मुस्कान वापस लौटने की कोई गुंजाइश नहीं बची थी। एकांत के आदी सहज को सदी का कोई बड़ा सन्नाटा नजदीक आता महसूस होने लगा; बड़ी रिक्ति वाला सन्नाटा!

5

वे एक साधारण शिक्षक रहे हैं; प्रतिभा के असाधारण! पूरा रामघाट उन्हें 'जेड सर' के नाम से जानता है। उनका असली नाम क्या है शायद ही किसी को पता हो, उनके पढ़ाए बच्चों को भी नहीं; गांधी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में तब के क्लर्क और साथी शिक्षकों को कदाचित पता हो। जब व्यक्ति के कर्म उनके नाम से आगे निकल जाएं तो कर्म-नाम ही रह जाते हैं सबकी जुबां पर। सम्राट अशोक-महात्मा बुद्ध-बादशाह अकबर-महात्मा गांधी के असली नाम बोलने के लिए दिमाग के पिछले हिस्से में खुजलाना पड़ता है; फिर वे तो एक शिक्षक मात्र थे। विज्ञान में उनके ज्ञान भंडार और उससे बढ़कर बच्चों को पढ़ाने की अनोखी शैली की दाद देते हैं रामघाटवासी! सन् 1981 में उन्होंने गांधी उच्च विद्यालय में योगदान दिया था, विज्ञान शिक्षक के रूप में। विद्यालय परिसर में पैर धरते ही उनके द्रैदीप्यमान ललाट और आंखों की भाषा से सम्मोहित हुए बिना कोई नहीं रह सका था। कुछ ही महीनों में शिक्षक-विद्यार्थी-अभिभावक, सभी स्कूल परिसर में नई तरंग व

ऊर्जा महसूस करने लगे थे। सिर से लेकर पैर तक मानव शरीर के हर अंग को वह ब्लैक बोर्ड में जीवंत उतार देते थे; प्रवाहपूर्ण व्याख्यान से अंग-प्रत्यंग में जान डाल देते थे! फिर तो वे गांधी उच्च विद्यालय के जेड सर बनते चले गए; धीरे-धीरे पूरे रामघाट के भी। 'जेड सर' मायने दुनिया की सारी जानकारी जिनके अंदर समाई हुई है, ए से लेकर जेड तक; उससे आगे, जो हर तरह से एक संपूर्ण मानव हैं!

रामघाट के जेड सर वे सिर्फ अपनी जीव विज्ञानी ख्याति के कारण नहीं हुए हैं; राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित इकलौते शिक्षक हैं वे रामघाट में! विज्ञान में विशद् अध्यापन के लिए, अध्यापन से बाहर जाकर अपने स्टूडेंट्स को एक जिम्मेदार नागरिक बनाने की जिम्मेदारी के निरंतर निर्वहन के कारण महामहिम ने उन्हें सम्मानित किया था; सन् 1989 में। गांधी उच्च विद्यालय में लगातार 30 साल तक सहायक शिक्षक रहते ही पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी उन्होंने। सन् 2010 में वहीं पर प्रधानाध्यापक के पद पर प्रोन्नत हुए, और सन् 2015 में सेवानिवृत्त; बदस्तूर सदाबहार एवं ऊर्जावान मन-मस्तिष्क के साथ। शिक्षण काल में और उसके बाद भी मानव जीवन के हर पहलू पर उनकी प्रखरता और समाज के हर क्षेत्र में उनके सुझाव की स्वीकार्यता रामघाट में फैलती ही चली गई है। हर मसले पर उनके अनुभव और उससे उपजे अंतिम निष्कर्ष सभी को नि:शंक ग्रहणीय होते हैं। दरअसल अब वे रामघाट में गांधी स्कूल वाले जेड सर के तौर पर नहीं, अपनी प्रखर बुद्धिजीविता के कारण रामघाट के जेड मैन के नाम से मशहूर हैं। रामघाट में ऐसा कोई मंच नहीं जो उनका अध्यक्षीय भाषण कराने के लिए लालायित ना रहता हो। किसी भी मंच पर उनके साथ उपस्थित एमपी-एमएलए, मंत्री भी, उनके सम्मान में नमन मुद्रा में ही रहते हैं; प्रिज्म-प्रकाश के सामने कांच-किरण विलुप्त ही तो रहती है! वे आजीवन विज्ञान की व्याख्या करते रहे, तभी तो तर्क और विज्ञान की कसौटी पर उनके वाक् खरे होते हैं।

प्रशासन भी उनकी बेबाक राय का सम्मान करता है। जिला स्तर पर होने वाली नागरिक शांति-समिति की बैठक में शांति-सौहार्द्र और मानव कल्याण के बारे में उनके सुझावों को देखकर युवा धड़ा भी दंग रह जाता है, आखिर यह बुजुर्ग विचारों से इतना युवा कैसे हैं! बस, आजीवन एक ही बात का उन्हें अफसोस रहा है; राष्ट्रपति पुरस्कार के बाद उन्होंने सामान्य स्वास्थ्य पर सरकार के पास सुझाव भेजा था। बुकलेट की शक्ल में उस सुझाव-पत्र में

मूलत: यह कहा गया था कि प्राइमरी से बारहवीं तक में मानव शरीर पर एक अनिवार्य विषय रखा जाए जिससे बच्चों को शरीर की कार्यप्रणाली की मूलभूत जानकारी मिल पाती। निष्कर्षत: यह भी सिद्ध किया गया था कि मानव शरीर पर पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषय आने से देश में रोगग्रस्तता की संभावना पचास प्रतिशत तक कम हो जाएगी, फिर तो सामुदायिक प्रतिरोधक क्षमता अपने-आप बढ़ती जाएगी। पर आज तक वे पता नहीं कर पाए, सुझाव-पत्र पर किसी ने गौर किया भी या नहीं।

जेड सर के बारे में एक बड़ा रहस्य भी है; कोई आज तक यह नहीं जान पाया कि वह हिंदू हैं या मुसलमान, सिख हैं या ईसाई? उनके जन्म स्थान के बारे में भी किसी को कुछ नहीं पता! अपने सेवा काल के शुरुआती दस-बारह सालों में हर वर्ष एक दफा छुट्टी लेकर कहीं तो जाते रहते थे, पर कहां, किसी को नहीं पता। अकेले आए थे रामघाट और आज तक अकेले हैं! भगवान राम, ईसा मसीह, मोहम्मद पैगंबर, गुरु नानक और भी कई धर्म संस्थापकों के बताए विचारों का बखान तो जरूर करते हैं, पर आज तक किसी ने उन्हें मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारा-गिरजाघर में पूजा-इबादत करते नहीं देखा। शायद यह भी एक वजह है, वह रामघाट में एक बड़ी आकृति के रूप में खड़े नजर आते हैं; किसी भी धर्म के श्रेष्ठ पुरुष की छवि के बराबर में बैठा एक दिव्य पुरुष; भिन्न रूप में।

घर के बगल में विकसित भगतसिंह पार्क में सुबह-शाम एक घंटा टहलना-बैठना उनकी दिनचर्या का अटूट हिस्सा रहा है। आज घर के बरामदे में ही बैठे थे; अंत:लीन मनोस्थिति में '...उनके पुराने स्टूडेंट्स उनसे मिलने आ रहे हैं; समूह में आ रहे हैं, जैसे यहां कोई कोचिंग चल रहा हो!' यह तो पंद्रह-बीस साल पहले का चलन हुआ करता था, जब उनकी कक्षा के बच्चे विज्ञान की डोर पकड़कर उनके घर तक खिंचे आते थे। जब से शैक्षणिक वातावरण में सड़ांध आती गई, ज्ञान पाने की ललक और बांटने की चाहत दोनों क्षीण होती गई हैं। हां, चिंतनशील प्रकृति के कुछ पूर्व छात्र अभी भी अपनी जिज्ञासा शमन करने यदा-कदा आ जाते हैं। बैठे-बैठे उनकी बेचैनी बढ़ती गई, मानव की रचनात्मकता समाप्त करने वाले कारकों की सक्रियता महसूस कर '...सांसारिक आकर्षण अब तो संपूर्ण मानव समूह को अपनी गिरफ्त में ले चुका है; मानव सभ्यता की अटूट शृंखला में अपूरणीय दरार सा। कुछ रचनात्मक मस्तिष्क तो ऐसे होने चाहिएं जो मानव सभ्यता

के वर्तमान और आगामी सदियों के बारे में सोच सकें; सोचकर कुछ विशिष्ट कर करें। आखिर हर मेधावी छात्र डॉक्टर-इंजीनियर-वकील-बड़े से बड़ा बिजनेसमैन-ठेकेदार-नेता-पुलिस ऑफीसर-जज ही बनता जा रहा है! अर्थ-आकर्षण तो ऐसी मनोहारी दृश्य-दुनिया रचता जा रहा है कि कोई भी प्रतिभा वैज्ञानिक आविष्कार या कला-साहित्य-दर्शन की ओर उन्मुख नहीं हो पा रही है। ओह! मानव सभ्यता कहीं प्राणी सभ्यता बनकर ना रह जाए...उफ! कहां अनर्गल चिंतन में डूबता गया! लगता है एक-दो बार कॉलबेल बज चुकी है; हां, वे ही तो लग रहे हैं...'

"तो तुम पंच-गण हो!" ग्रिलनुमा दरवाजे से पांचों के अंदर आते ही जेड सर गद्‌गद हो उठे। "सर हम सिर्फ पांच नहीं, आगे छठा-सातवां-आठवां और उससे भी आगे हैं, पर सभी के सभी आज आ नहीं पाए," उनके बीच में से रामू की आवाज थी। पहले से लगे मचिया और कुर्सी पर सभी को बैठने का संकेत किया। खुद कठ-कुर्सी पर बैठ गए; सबको जी भरकर देखा, पल भर आंखें बंद कर मुस्कुराए।

"तो तुम शायनी हो!" साथ आई एकमात्र लड़की की ओर सबसे पहले ध्यान दिया, शिष्टाचारपूर्वक; फिर आंखें कहीं भूतकाल की तरफ दौड़ाते हुए बोले, "अगर मुझे अपनी याददाश्त पर भरोसा हो, तो तुम मैट्रिक बोर्ड में दो हजार तेरह की टॉपर और पंद्रह में बारहवीं की भी टॉपर रही हो! आगे मेरे ही स्ट्रीम में चली गई थी; कॉलेज फंक्शन में एक-दो बार तुमने मेरे पैर भी छुए थे, क्यों!"

"जी सर...!" सबसे चहेते सर को दो साल बाद देखकर शायनी इतना ही बोल पाई; खुशी के मारे उसकी आंखें छलछला आईं।

"केरियर का सफर कहां तक पहुंचा है!" सर शिक्षक की भूमिका में आते दिखे।

"अभी दो महीने के बाद एमएससी जूलॉजी के फाइनल पेपर हैं, साथ में सिविल सर्विसेज की तैयारी भी रफ्तार पकड़ रही है।" बोलते हुए शायनी के चेहरे में चमक आ गई थी, जैसे एक अच्छा बच्चा सर को रिपोर्ट कार्ड दिखा रहा हो।

"तुम तो क्लास में तर्क-वितर्क करने वालों का सरदार हुआ करता था!" रामू की ओर देखकर सर की मुस्कान बड़ी होती गई, फिर बोले, "मुद्दे को जड़ से ही पकड़ लेने में तुम्हारा तो कोई जोड़ नहीं था, अब क्या कर रहे

हो?" सर की सरदार वाली बात से रामू ने मुंह छुपा लिया, फिर तुरंत ही हाथ हटाकर जवाब दिया, "सर बारहवीं के बाद पढ़ नहीं पाया, पिताजी चल बसे तो गांव छोड़कर माँ को लेकर यहीं बस्ती में एक झोपड़ा खड़ा कर लिया है," आगे बोलते हुए उसे झेंप सी हुई, नजरें चुराते हुए कहा, "गांव से दूध लाकर शहर में बेचता हूं, दो-तीन गाय-भैंस भी रख लिया है।"

"सर, अब तो लोग इसे रामू ग्वाला के नाम से जानते हैं।" शायनी सम्मान सूचक लहजे में बोली।

"हां याद आया, तुम्हारा नाम तो रामचंद्र है न!" सर के चेहरे में याददाश्त खुलने जैसी चमक थी, आगे मंचीय शैली में बोलने लगे, "गौ पालन मानव सभ्यता की प्रथम वृत्ति रही है और सभ्यता के अंत तक कायम रहेगी; इतनी निष्पक्ष आजीविका तो कोई दूसरी हो नहीं सकती! तभी तो वेदव्यास जैसे लेखक ने गौ-पालन से ही जोड़कर कृष्णजी जैसे चरित्र को विकसित कर अमर कर दिया है।" रामू की हौसला अफजाई के बाद उसने परवेज पर नजरें जमा दीं, "क्यों मियां परवेज! हाल ए फिजा में भी जी लेते हो!" इतना बोलते ही गले में अटका सा कुछ बाहर आया, अनचाही हँसी के रूप में; फिर उकसाने वाले अंदाज में बोलने लगे, "और! नया संविधान लिखने का तुम्हारा आईडिया कहां तक पहुंचा है?"

"सॉरी सर," उसने मुंह छुपाने जैसा करके बोला, "अब तो रोजगार-पानी का जुगाड़ हो जाए वही काफी है, पिछले साल पोल साइंस में एमए कर लिया है, पीएचडी करने के लिए सिनॉप्सिस अप्रूव होने के लिए दिया है।"

"तुम पर भरोसा है मियां, दुनिया के लिए कुछ नया ही करोगे!" सर ने आशीर्वचन की मुद्रा में परवेज से कहा। फिर अंत में बैठे सहज की तरफ मुड़कर बोले, "हाउ इज योर पापा, कैसा चल रहा है उनका एंपायर!"

"सर हि इज अब्सोल्युटली फाइन," अपनी बारी आते ही कब से बैठे सहज के शरीर में अचानक स्फूर्ति उग आई, फिर उत्साहित होकर बोला, "पुराने प्लांट की जगह मॉडर्न टेक्नोलॉजी बेस्ड प्लांट लगवा रहे हैं।"

"एंड यू? अर्थशास्त्र में कुछ बड़ा करने की सोच रहे हो न!" सर ने संदेहास्पद नजरें डाल दीं सहज पर।

"यस सर, पहले तो वैसा ही कुछ प्लान था," बोलते हुए सहज की आंखें सिकुड़ गईं, "बट अब सिविल सर्विस की तैयारी में जुटा हूं।"

"सिविल सर्विस इज नॉट अ बैड आइडिया; बट, कितने बच्चे स्कूल-कॉलेज

के दिनों में पनपे राष्ट्रभक्ति के जुनून को कलेक्टर-एसपी बनने के बाद कायम रख पाए हैं!" बोलकर उसने अपने दोनों होठों को चिपकाते हुए आगे निकाल दिया; आपस में सटे होंठ बड़ी मुश्किल से खुले, "मुझे काफी खुशी होती थी जब हमारे स्टूडेंट्स साल दर साल सिविल सर्विसेज क्लियर करते जाते थे, पर उनमें से कितने ऑफिसर पाक-साफ रह पाए! तुम और शायनी दोनों अपने-अपने बैच के टॉपर हो, मुझे खुशी होगी यदि तुम दोनों आईएएस-आईपीएस बनने के बाद काले कौवे की जमात में शामिल नहीं होगे।" क्षणभर की चुप्पी के बाद अहम के बारे में बोलने लगे, बिना उसकी ओर देखे, "तुम्हारे बारे में भला क्या कहने श्रीमान अहम! तुम तो कदाचित आ भी जाते हो," अब नजरें उसकी ओर उठीं, "वह इसलिए कि खुद भी गुरुजी बन गए हो; अब तो तुम्हारा सारा मानव-दर्शन क्लास के पीरियड के बीच पेंडुलम जैसा झूलता रहेगा।" इतने में सर के सदैव के सहायक सादा ने एक प्लेट टेबल पर रख दी; ताजे फल के कटे टुकड़े से भरी प्लेट। सर ने सभी की ओर देखकर मुख-मुद्रा बनाई, कि यहां तो बस यही इंतजाम है।

फल खाते रहने तक पांचों चुप ही रहे; वे उनके जेड सर थे न! खाने के समय बोलना हानिकारक होता है, अब वे भी जानते हैं। प्लेट खाली होने के बाद के सन्नाटे को सर ने ही तोड़ा, "तो कहिए पंचगण! कौन सी शुभ यात्रा में निकले हैं आप लोग!"

"सर हम लोग तो अभी रामघाट में ही हैं, यात्रा में तो कोरोना निकला है चीन से, भारत की ओर अशुभ यात्रा में!" जवाब रामू ने दिया; सर को याद आया, क्लास में पूछे गए प्रश्न का कभी-कभी ऐसा ही अजीब उत्तर देता था रामचंद्र; पर बात पते की होती थी।

"पूरी दुनिया को पता है चीन के वुहान शहर में कोरोना वायरस का संक्रमण महामारी का रूप ले चुका है, दिन-रात लोग मर रहे हैं; अब तो यह वायरस पूरी दुनिया में फैलने लगा है," सर ने सरल ढंग से कहा, जैसे पाठ्यक्रम का कोई टॉपिक पढ़ा रहे हों; फिर शायनी की परख करने के ख्याल से पूछा, "तुम तो जूलॉजी की स्टूडेंट हो शायनी, तुम्हारा नॉलेज क्या कहता है?"

"सर, काफी दिनों से मैं अखबार नहीं पढ़ पा रही थी, मेरे एग्जाम नजदीक हैं," वह झेंपते हुए बोली, फिर आत्मविश्वास के साथ बोलती गई, "लेकिन दस-पंद्रह दिनों से कोरोना के बारे में सुन रही हूं तो अखबार भी

पढ़ रही हूं, और नेट भी सर्च करती रहती हूं; वैसे मोबाइल ग्रुप में ढेर सारे मैसेज, साइंस अपडेट आते रहते हैं," शायनी बोलती ही जा रही थी कि रामू ने टोका, "जूलॉजी मैडम! आप तो आंसर शीट भरती जा रही हैं, दुनिया को बताइए भी आखिर कोरोना है क्या बला! सर भी यही पूछ रहे हैं।"

"यस-यस," शायनी रामू की ओर देखकर बोली, फिर सर से मुखातिब हुई, "इनफैक्ट यह न्यू कोरोना वायरस है जो सार्स वायरस फैमिली का ही है यानी सार्स-टू, इसे कोविड-नाइनटीन नाम दिया है साइंटिस्ट ने।"

"बायोलॉजिकल डिस्क्रिप्शन?" पूछते हुए सर ने आंखें बंद कर लीं।

"इट इज यूनिसेल्यूलर माइक्रोऑर्गेनाइज्म विद् प्रोटीन इन्वलप एंड स्पाइक प्रोटीन, इट गेट्स इनटू द होस्ट सेल्स दैट इज ह्यूमन बॉडी थ्रू एंजियोटेंशिन कन्वर्टिंग एंजाइम-टू दैट इज एसीई-टू व्हिच आर फाउंड एवीडेंटली इन लंग सेल्स!"

"फर्दर?" बिना मुद्रा बदले सर ने कहा।

"ह्यूमन बॉडी के इम्यूनिटी सिस्टम को डिफीट करने के बाद यह वायरस हमारे रेस्पिरेटरी सिस्टम को चोक कर देता है और फिर डेथ की स्थिति बन आती है," बताते हुए शायनी को अपने रोंगटे खड़े होते महसूस हुए।

"तुम पांचों मुझे काफी रिस्पांसिबल सिटिजन नजर आ रहे हो; कोरोना वायरस पर मैं दिसंबर माह से ही लगातार नजर रखे हुए हूं, इस महामारी की चपेट में आने से वुहान में तो जीवन का पहिया पूरी तरह से थम चुका है, बीते दो महीने से लोगों को घरों में कैद कर दिया गया था, सड़कें वीरान पड़ी थीं!" इतना बोलकर लंबी सांस लेकर सर दम साधे रहे, सांस छोड़कर फिर बोलने लगे, "अब यह वायरस वहां से बाहर दुनिया के बड़े हिस्से में तेजी से फैलने लगा है, अब तो यह वैश्विक महामारी का रूप धारण कर चुका है; व्यक्तिगत तौर पर मैं काफी बेचैन हूं, यदि वुहान वाली स्थिति अपने देश में आती है, तो क्या हम इस महामारी का सामना कर पाएंगे! क्या हमारे पास इतने संसाधन हैं?" आगे सभी की ओर चेहरा घुमाते हुए बोलने लगे, "तुम लोगों ने भी अखबार में देखा होगा चाइना ने तो दस हजार बेड वाला अस्पताल रेडीमेड मटेरियल से दस दिन में तैयार कर डाला! क्या हम वैसा कुछ कर पाने की स्थिति में हैं? हमें इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि जो हालात वुहान में पैदा हुए हैं हमारे यहां वैसी स्थिति नहीं आएगी। इसकी मार से तो विश्व के कई देश पिस रहे हैं!" अब दोनों हथेली सामने फैलाते हुए कहा, जैसे कुछ समर्पित कर रहे हों, "बट आई एम वेरी सॉरी टू शे,"

दायीं तर्जनी दिल्ली की दिशा में दिखाते हुए उनकी आवाज ऊंची होती गई, "आज के दिन, यानी एक मार्च तक कोरोना वायरस से पचास से ऊपर व्यक्ति संक्रमित हो चुके हैं, परंतु अफसोस! इसको लेकर हमारे यहां टॉप टू बॉटम अभी तक कोई कंसर्न तो मुझे नहीं दिख रहा; सबसे महत्वपूर्ण बात, चीन की सरकार को चुनाव का डर नहीं सताता कभी और शायद इसीलिए वुहान में मानवीय-अमानवीय तरीके से इस महामारी को कुचल रहा है, पर हमारे यहां की सरकारों के लिए तो चुनाव जैसे गर्दन में लटकी तलवार होती है; यू कुड जस्ट गेस, अगर यह महामारी हमारे देश में पसर गई फिर तो यहां की सरकारों को महामारी की चिंता तो रहेगी ही रहेगी, चुनाव की भी चिंता सताती रहेगी," बोलकर सर ने सिर नीचे की ओर झुकाकर झटका, जैसे किसी खौफनाक मंजर को दिमाग से बाहर निकालना चाह रहे हों, फिर पलकें उठाकर बोलने लगे, "अब समझा रे बाबू, अगर कोरोना वायरस हमारे देश में जोरदार एंट्री मार लिया तो इसका अंजाम क्या-क्या हो सकता है! शायनी ने तो कोरोना वायरस का ब्रीफ डिस्क्रिप्शन बता दिया है, अब आगे बताओ तुम लोग क्या डिस्कस करने आए हो!" सर ने बारी-बारी से चारों को देखते हुए पूछा; सभी के चेहरे में खौफ की परछाई साफ नजर आने लगी।

"सर, इस वायरस को इंडिया में आने से रोकने का उपाय होना चाहिए!" खौफ से बाहर आकर रामू सजग हो उठा।

"वैसे तो वायरस ने इंडिया में दस्तक दे दी है, लेकिन अभी भी वक्त है आगे इसकी एंट्री बिलकुल न हो, अन्यथा हम इसे कंट्रोल नहीं कर पाएंगे," हौले-हौले सिर हिलाते हुए सर बोल रहे थे, "तुम्हारी सोच को सलाम करता हूं; हर नागरिक की ऐसी ही दूरगामी सोच होनी चाहिए, लेकिन तुम लोगों के पास कोई तो आइडिया होगा, आखिर इसकी एंट्री कैसे बंद हो सकती है?"

"सबसे कारगर उपाय तो यही होगा विदेश से आने वाले सभी हवाई जहाजों के पायलट का हड़ताल करा देना चाहिए," रामू उत्साहित होकर बोला, कुर्सी में तनकर।

"अरे मूरख! तुम्हारे कहने से पायलट हड़ताल कर देगा क्या!" सहज ने रामू को दोस्ताना फटकार लगाई।

"मेरे ख्याल से बेहतर यही होगा कि हम लोग फॉरेन मिनिस्ट्री को जॉइंट मेल भेजें कि इंटरनेशनल फ्लाइट्स को अविलंब बंद कर दें महीने-दो महीने के लिए।" परवेज ने विधिसम्मत रास्ता सुझाया।

"मेरे हिसाब से..." छत की ओर देखकर सर बोलने लगे, "सरकारी विभाग सुझाव वाले ऐसे रिप्रेजेंटेशन पर ध्यान कम ही देता है, फिर भी मेल भेजने में बुराई क्या है!" बोलकर उन्होंने अपने होंठों को चिपकाकर आगे की ओर निकाल दिया, जैसे प्रश्न-पत्र देखकर उन्हें पता चल जाता था परिणाम कैसा रहेगा।

"मैं तो बंद आंखों से यह कल्पना करने लगा हूं, मान लो जैसे कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से असम तक कोरोना महामारी फैल चुकी है!" कब से आंखें बंद कर बैठा अहम बीच में बोल पड़ा।

"सर, भगवान ना करे ऐसा दिन आए, लेकिन अगर ऐसी स्थिति आती है तो इसके क्या-क्या परिणाम हो सकते हैं?" बोलते हुए सहज की आंखें अंदर दबी हुई दिखने लगी थीं, जैसे भविष्य का वजन आ पड़ा हो।

"यदि कोरोना पूरे देश को अपनी जद में ले लेगा तब उसका तात्कालिक परिणाम त्रासदीपूर्ण तो होगा ही, लेकिन तीन सौ साठ डिग्री वाले दूरगामी परिणाम कई गुना अपूरणीय होंगे!" बोलते हुए सर की आंखें छोटी होती गईं; भौंह के बढ़े हुए बालों से आंखें ढक सी गईं, जैसे दूर देखने से मना कर रहे हों।

"सर, हम लोग आज आपके पास इसलिए आए हैं कि आप हमारा मार्गदर्शन करें कि हम कैसे आगे बढ़ें।" बोलते-बोलते शायनी के चेहरे में संकल्प की आभा दिखने लगी।

"सुनो पंच-गण!" मुस्कुराकर सभी की ओर देखते हुए सर ने कहा, फिर बोले, "तुम लोगों के मन में जो संकल्प आया है वह भारत के भविष्य को बचाने के लिए बेहद जरूरी है; अपने सुझाव को सरकार तक पहुंचाने के लिए व्यावहारिक मार्ग भी आजमाना चाहिए," बोलकर सर के दोनों पैर हिलने लगे, फिर बोलते रहे, "तुम लोगों को शायद पता होगा, रामघाट का एक आईएएस अफसर ब्रजेश ब्रह्मा भारत सरकार में ज्वॉइंट सेक्रेटरी है आजकल, जेएस दमखम का पद होता है दिल्ली में; उनके साथ यदि तुम लोग अपने सुझाव शेयर करो तो बात सरकार तक पहुंच सकती है!"

"लेकिन वे तो दिल्ली में होंगे!" परवेज के दिमाग में देर से कोई बात आई थी।

"हां जी, दिल्ली ही तो रहेंगे न और कहां रहेंगे! लेकिन वह हर साल होली में रामघाट अपने पैतृक घर जरूर आते हैं, उनकी बुजुर्ग माताजी यहीं रहती हैं; होली तो आने ही वाली है, तुम लोग पता करके समय लेकर मिल

सकते हो, वैसे वे भी हमारे स्कूल के ही स्टूडेंट रहे हैं, मिलने से मना नहीं करेंगे, जरूरत पड़ी तो मैं भी बता दूंगा।"

"येस सर, हम लोग जानते हैं ब्रह्मा सर को! एक-दो बार अपने स्कूल फंक्शन में भी आए थे, तब यूपी में कहीं के कमिश्नर हुआ करते थे?"

"यस-यस!" बोलकर सर कुर्सी से उठ गए; सभी को विदा करते हुए बोले, "माय लास्ट वर्ड! आई एम रियली प्राऊड ऑफ ऑल ऑफ यू, कई दिनों से बेचैन था कि इस कोरोना कहर से इंडिया बच पाएगा या नहीं; तुम सभी सच में इस धरती के कर्म-पुरुष हो; तुमने बताया आगे छठा-सातवां-आठवां भी हैं; आई होप उनमें से एक अंकुर भी होगा, वह कल्पनाशील मूर्तिकार! मुझे लग रहा है वह कभी-न-कभी अपने मास्टरपीस को दुनिया के सामने अवश्य लाएगा!"

"हां सर, वह तो नाले के किनारे कितनी ही बेहतरीन मूर्ति को जन्म दे चुका है; तीस जनवरी से उसने किसी परम पुरुष की मूर्ति गढ़ना शुरू कर दिया है, इस उम्मीद में कि भारत के लिए एक महान आत्मा का अवतरण होगा," रामू ने कहा; उनकी आंखों में उम्मीद की फसल लहलहा उठी।

"दिखने को तो वह झक्खी मूर्तिकार दिखता है, पर हमें उसकी कल्पनाशीलता का सम्मान करना चाहिए; वह सिर्फ कल्पनाशील नहीं है, अपने विश्वास के अनुरूप क्रियाशील भी है!" सर की आंखों में अपने पूर्व छात्र के लिए गर्व की पतली परत उग आई।

"यस सर, हम लोग अभी उससे मिलने वाले हैं," देश में पसरी निष्क्रियता से खफा अहम ने सक्रियता दिखाई।

"मस्ट! वह भले ही कम बोले पर भविष्य का संकेत जरूर दे सकता है; समझो वह तो भविष्य का मशाल वाहक होगा," बोलकर सर कुछ याद करने लगे, पूछा, "और उस बच्चे की क्या हालत है अब? अरे वो भीम राव जिसके मस्तिष्क में उफान सा आ गया था?"

"हां सर, वह तो वैसे ही है, रोज नया-नया शब्द सामने लाता है, पर बात किसी की पकड़ में आ नहीं पाती है कि असल में कहना क्या चाहता है।" भीमरवा के लिए भावुक होकर कहा रामू ने।

"डोंट टेक हिज वर्डस सो सिंपलि, उसकी अंतर्दृष्टि समय की पूर्व परख करती रहती होगी! एनी हाउ, तुम सभी अपने गंतव्य की ओर बढ़ते रहो; ऑल दी बेस्ट!"

सर के घर से निकलकर पांचों सड़क पर आ जमे। सभी एक-दूसरे को देखने लगे, जैसे अभी अंदर सर के साथ हुई बात भूल गए हों।

"सर के सामने तो 'एस सर एस सर' की आदत पड़ी हुई है हम लोगों को; अब पते की बात बताओ, कोरोना का पीछा करने से कोरोना पकड़ में आनी है? या फिर मुफ्त में अपना समय क्यों खराब करना है!" सड़क पर आकर सहज ने शून्य से शुरू करते हुए कहा।

"अरे, गीता में कहा गया है न–कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन!" आसमान की ओर हाथ फैलाकर अल्लाह को याद करते हुए परवेज ने कहा, फिर भीड़ भरे बाजार की ओर देखकर बोलने लगा, "अपने दिन-सप्ताह-महीने से कुछ समय निकालकर देश-समाज के लिए भी तो कुछ समय निकाल लें हम लोग; इससे क्या कुछ हासिल होगा ये तो वक्त बताएगा, पर दिल को सुकून तो मिलेगा कि हमने अपने अलावा दूसरे की खातिर भी कोशिश की।"

"देखो भाई लोग, सर से मिलने के बाद मेरी अक्ल तो और खुल गई है; सर के सामने हम लोग तो आगे बढ़ने का संकल्प-सा भी जाहिर कर चुके हैं, अब तो हम भोंदू बनकर घर नहीं बैठ सकते!" रामू ने जोश दिखाते हुए कहा।

"रामू की बात से मैं भी सहमत हूं; मैं पूछती हूं यदि मेरी पीठ पर कोई कीड़ा रेंग रहा हो और प्रयास के बाद भी हाथ वहां न जाए तो क्या हम कीड़ा भगाने का प्रयास छोड़ देंगे!" सभी को जगाने के स्वर में शायनी बोली।

"मेरे हिसाब से हमें अकर्मण्य-सा नहीं बैठना चाहिए।" अहम ने अंतिम निर्णय जैसा कहा।

"फिर तो एक बार अंकुर से अवश्य मिलना चाहिए, शायद कुछ नया आइडिया मिल जाए!" रामू को अपने जिगरी दोस्त अंकुर की बड़ी याद आई।

"तो आज ही दोपहर बाद नाले पर रंग जमाया जाए?" परवेज पीछे नहीं रहना चाहता था।

बात करते-करते शायनी ने मंजरी, मनोज, दिनेश और अरशद को मोबाइल से मैसेज भेज दिया, अंकुर के अखाड़े में कूद पड़ने के लिए। चौराहे पर खड़े-खड़े सभी की नजरें दूर तक तृप्त होती गईं; चारों ओर जीवन के रंग ही रंग दिख रहे थे। बायीं ओर दूर तक फैले अल्पना मार्केट में दुकानदार-खरीददार आने-जाने वाले सभी के चेहरों में मुस्कान का फैलाव दिख रहा था, सामने सुपर प्लाजा के अंदर जाते, बाहर आते लोगों के शरीर की भाव-भाषा से रौनक टपक रही थी, सड़क किनारे ठेला लगाए गोलगप्पे

बेचने वाले और जमीन पर बैठी सब्जी बेचने वाली की आंखों से खुशी टपक रही थी। चारों ओर की दुनिया तृप्ति-सागर में समाई नजर आ रही थी। पांचों को अंदर से सुकून महसूस हुआ, कोरोना के कारण वे जीवन की गति व गंतव्य में कोई भी विघ्न नहीं उत्पन्न होने देंगे।

6

अंकुर की अंतिम मूर्ति ने सभी पर जादू-सा असर कर रखा है, वो रहस्यमयी आखिरी मूर्ति! स्लम एरिया यानी 'इंडिया' में पैर धरते ही सभी साथियों के कदमों में स्प्रिंग जैसी फुर्ती आ गई; बेताबी इतनी कि टूटी नालियों और उखड़े खड़ंजे वाली गलियों को वे कूद-फांद कर पार करने लगे। नाले के ऊपर, विशाल बरगद के नीचे; मूर्ति चबूतरा, कूड़ा मैदान से बीने गए किसी लंबे प्लास्टिक के फटे टुकड़े से ढका हुआ। मार्च के प्रथम सप्ताह में चलने वाली शांत-शीतल हवा में ऊपर इठलाते बरगद के हरे-चौड़े पत्ते, नीचे प्लास्टिक कवर में छिपा अजूबा मूर्ति-मानव! अंकुर को ना पाकर वे सभी एक-दूसरे को देखने लगे, कहीं अंकुर ने रहस्यमयी मूर्ति के निर्माण से पैर पीछे तो नहीं खींच लिए? इतने सारे परम मित्रों के आने की आहट भला अंकुर को ना हो! उसने अंदर से ही आवाज दी, "मुझे पता है तुम लोग किस खतरे की चिंता मन-मस्तिष्क में ढोए जा रहे हो!"

"तुम तो दिन-रात अपनी मूर्ति के साथ मौन हो, तुम्हें भला क्या पता दुनिया में कितना बड़ा संकट आने वाला है?" प्लास्टिक के छेद से अंकुर की एक झलक पाने का प्रयास करते हुए रामू ने कहा।

"यहां बहती बेखौफ हवाएं मुझे देश-दुनिया की पल-पल की खबरें देती रहती हैं; मुझे पता है उत्तर दिशा में वुहान शहर से खतरे का डरावना तरंग चल पड़ा है चारों तरफ।" अंकुर ने सर्वज्ञ स्वर में कहा।

"हम लोगों को पता चला है तुमने एक नई मूर्ति गढ़ना-तराशना शुरू कर दिया है; किसी विराट पुरुष की कल्पना को साकार करने?" परवेज अधीर हो उठा।

"हां मियां, गांधी जी के बलिदान दिवस के दिन से मैंने एक विराट मानव-मस्तिष्क का निर्माण शुरू कर दिया है। यह मूर्ति आसन्न खतरे के समाधान मात्र के निमित्त नहीं है! अभी वाले वायरस से बचने के उपाय तो अपना पुराना बाल कैबिनेट भी बता देगा; विराट मानव के इस प्रतिरूप के

पास तो समझो भारत देश की हर समस्याओं के समाधान की कुंजी होगी!" बिना बाहर आए अंकुर ने कहा।

"तुमने अब तक कितने तो महापुरुषों की बोलती-सी मूर्तियां तराशी हैं, देश के निमित्त एक नया मानव-मस्तिष्क गढ़ने का फितूर कैसे आ गया तुम्हारे मन में? अचानक!" मूर्तिकारी की कला से अनजान परवेज का कौतूहल बाहर छलक आया।

"तुम सब खुद भी देख रहे हो कोरोना का खतरा किस कदर मंडरा रहा है कुछ महीनों से, लेकिन देश के पुरुषगण स्व-रुचिपूर्ण कार्यों में खपाए हैं अपने को," अंकुर की आवाज में निराशा लदी लग रही थी, "इसमें कोई शक नहीं, देश के नीति-नियंता के पास जितनी दूरगामी दृष्टि होनी चाहिए वो इस देश में अध-जन्मा-सा ही अटका रह जाता है; वैसे पुरुषगण भला देश को क्या दे पाएंगे जिनकी दृष्टि नजदीक में ही भटकती रहती है, स्वार्थ-स्तंभ के इर्द-गिर्द," अब अंकुर की आवाज निश्चयपूर्ण हो चली, "इसलिए मेरी कल्पना ने मुझे आवाज दी एक विराट-मस्तिष्क की रचना करने की; जो रचना मैं कर रहा हूं वस्तुतः वह सिर्फ मूर्ति नहीं, जीवंत मस्तिष्क भी है!"

"देश के कर्ता-धर्ता के पास जो मस्तिष्क हैं क्या उससे यह अलग होगा?" बोलते हुए परवेज ने आंखें छोटी कर लीं, जैसे मूर्ति के मस्तिष्क के अंदर झांकना चाह रहा हो।

"वर्तमान में देश के किन्हीं भी राजनेताओं के मस्तिष्क से बिल्कुल अलग होगा यह श्रेष्ठ मस्तिष्क, हर प्रकार के दुर्गुण और राग-द्वेष से मुक्त!" तेजमय स्वर में अंकुर बोले जा रहा था—"इस मस्तिष्क के निर्माण में विशेष प्रकार की मृदा और मृदा-धातु का प्रयोग हो रहा है, कल्पना के मूर्त रूप लेने तक इसे मानव दृष्टि से दूर रखना अनिवार्य है!"

"आम जन इस श्रेष्ठ मस्तिष्क वाली मूर्ति के दर्शन कब कर पाएंगे?" अहम की शाश्वत गंभीरता आज अधीरता में बदलने लगी।

"ईश्वरीय मस्तिष्क तुल्य यह विराट पुरुष कब सार्वजनिक होगा वह खुद तय करेगा; शायद किसी नाजुक मुकाम पर वह खुद-ब-खुद कोई बड़ा समाधान लेकर आएगा!" अंकुर की आवाज धरती से आकाश की ओर उठती प्रतीत हो रही थी, जैसे किसी आकाशीय शक्ति से वार्ता हो रही हो।

"पर एक बेजान मूर्ति देश की सारी समस्याओं का समाधान भला कैसे कर सकती है?" मूर्ति महिमा से अनजान अरशद की उत्सुकता जाग पड़ी।

"तुम सही बोल रहे हो अरशद भाई, मूर्ति तो बेजान होती है, पर मेरी कल्पना इसके मस्तिष्क में प्राण डालेगी और तब यह मूर्ति ईश्वर-अल्लाह के करीब के विराट पुरुष के रूप में प्रकट हो उठेगी!" छेनी की ठक-ठक आवाज के साथ अंकुर बोले जा रहा था, "हम सब जान रहे हैं आजादी के सत्तर-पचहत्तर साल बाद हिंदुस्तान के कुछ प्रतिशत लोगों की धन-दौलत बेशुमार बढ़ी है, पर आमजन की अभावग्रस्तता तो अमिट रेखा-सी बन पड़ी है।"

"तो यह रहस्यमयी मूर्ति आम जनों के हर अभाव-कठिनाइयों का समाधान लेकर आएगी!" मंजरी भी रोमांचित हो उठी।

"हां मंजरी बहना, इस मूर्ति में एक परम पुरुष की कल्पना जीवंत हो उठेगी; एक ऐसा पुरुष हिंदुस्तान के सामने प्रकट होने वाला है जो हर प्रकार के सांसारिक दोषों से मुक्त होगा! जिसे लोभ-लिप्सा लेशमात्र भी स्पर्श नहीं कर पाएगी।" क्षणिक विराम के बाद अंकुर ने भविष्यवाणी के अंदाज में आगे कहा। "रात्रि समाधि में मेरे अंदर एक बड़ा सत्य प्रकट हुआ है, भारत देश में उस परम पुरुष का अवतरण होना है जो अभी तक शेष है!"

"नाले के किनारे बन रही इस अद्‌भुत मूर्ति से देश की सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है, फिर तो देश में स्थापित होने वाली चर्चित मूर्ति से विश्व की सारी समस्याओं का समाधान अवश्य होगा?" अहम ने दाएं-बाएं, आगे-पीछे देखते हुए कहा, जैसे दुनिया की सारी समस्याओं का सही आकलन करके बोल रहा हो।

"यू आर अब्सोल्युटली रॉन्ग मिस्टर अहम! स्थापित होने वाली उस मूर्ति से दुनिया क्या, देश की भी किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता।" तत्क्षण ही अंकुर की प्रतिक्रिया निकल आई, जैसे वह सदियों के भविष्य का सर्वज्ञाता हो।

"ऐसा क्यों?"

"क्योंकि उस मूर्ति में कोई नई कल्पनाशीलता नहीं डाली जा सकती है; उस पुरुष को जितना करना था पिछले तीन हजार सालों में कर चुका, अब उनके वश में कुछ नहीं रह गया है!" अंकुर बेबाकी से बोल गया।

"तुम्हारी इस मूर्ति के जीवित हो उठने की डेडलाइन क्या है?" सहज की बेसब्री बाहर आई।

"ऐसे दुर्लभ जीव को नौ महीने में जन्म नहीं दिया जा सकता, और न

ही कोई डेडलाइन तय की जा सकती है!" अंकुर ने ऊंची आवाज में कहा, लगा जैसे बरगद के पेड़ के ऊपर से कोई आकाशवाणी हुई हो; आगे बोला, "इस विराट पुरुष को अपनी कल्पना के अनुसार मैं दिन-रात गढ़ता हूं फिर तराशता हूं; मेरी कल्पना की पवित्रता इसमें एक दिन जरूर प्राण डालेगी, पर कब, यह मैं भी नहीं जानता! हां विश्वास ही हमारी ताकत है।"

"हम सभी मित्रगण एक लंबे अरसे बाद तुमसे मिलने आए हैं, तुम बाहर क्यों नहीं आ रहे हो?" दिनेश ने नाराजगी जताते हुए कहा, फिर मजाकिया लहजे में बोला, "क्या उस परम पुरुष ने तुम्हें अंदर बंधक बना रखा है!"

"नहीं दिनेश, थोड़ी देर में अवश्य बाहर आऊंगा; इस विराट पुरुष ने मुझे बंधक नहीं बनाया है, बल्कि मुझे सही रास्ते का संकेत करता रहता है, समझो इस दुनिया का सार तत्व यहीं अंदर संरक्षित है।" छेनी चलाते हुए अंकुर ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा।

"तो तुम मानते हो कि वह विराट पुरुष ही असली जीव रूप है?" चबूतरे के करीब जाती हुई शायनी बोली।

"हां शायनी, असली जीव-रूप ही समझो, लोकतांत्रिक भारत के चक्रवर्ती पुरुष सा!" अंकुर का विश्वासपूर्ण विचार प्रवाह जारी था।

"और बाहर जो पुरुषगण अभी देश-दुनिया चला रहे हैं वह?" अहम का तुलनात्मक दर्शन जाग उठा।

"उन्हें तुम बर्बादी का बादशाह कह सकते हो," अंकुर ने ऐसे कहा जैसे कोई ऐतिहासिक कटु सत्य उद्घाटित कर रहा हो।

"तो यह जो वायरस चल पड़ा है चीन से उससे पार पाने में तुम्हारी कल्पना का वो विराट पुरुष कुछ नहीं करेगा?" समस्या को सामने लाते हुए मंजरी उतावली हो गई।

"इसके लिए तो सरकार है, कैबिनेट है; यदि सरकार कोरोना के बजाय कहीं अन्यत्र रमी है तो तुम लोग असली कैबिनेट को सामने लाओ!" चुटकी बजाते हुए अंकुर ने कोई बड़ा सूत्र देने जैसा कहा।

"असली कैबिनेट?" सहज की समझ में कुछ न आया।

"हां स्कूल के दिनों के बाल-संसद में एक कैबिनेट भी तो हुआ करता था! मैं भले ही उस कैबिनेट में नहीं रहा कभी पर मुझे उस कैबिनेट की काबिलियत पर आज भी विश्वास है।" प्लास्टिक कवर से बाहर आते हुए अंकुर ने कहा। उसके बाहर आते ही सभी ने महसूस किया जैसे हवा में

कोई नई तरंग फैल रही हो।

"अंकुर बिल्कुल सही कह रहा है, स्कूल वाले बाल-कैबिनेट को हम लोग कोरोना-कैबिनेट के रूप में जीवित करेंगे!" परवेज ने ऐलानिया अंदाज में कहा।

"इस कैबिनेट में रामू को अवश्य शामिल करना; यदि वह पहले जैसा कैबिनेट के बाहर रहेगा तो कहीं फिर से मंत्री-प्रधानमंत्री को फांसी पर चढ़ाने की जिद न पकड़ ले।" अंकुर ने कहा तो बरगद के नीचे की दुनिया ठहाकों से गूंज उठी, जैसे कोरोना-कैबिनेट की टंकार निकली हो।

"फिर तो यहां से चलकर कोरोना-कैबिनेट का गठन किया जाए?" परवेज का उत्साह बाहर छलक आया।

"बाल कैबिनेट का अस्तित्व कभी खत्म नहीं होता, अब इसे कोरोना-कैबिनेट के नाम से पुनर्जीवित करना वक्त की माँग है! आज का कोरम यहां पर पूरा है ही, यहां से चलकर नहीं, बल्कि यहीं पर अभी ही कोरोना-कैबिनेट की पहली बैठक कर ली जाए, अंदर ढके इसी विराट पुरुष को अपना नेता मानते हुए।" रामू ने देर करना उचित नहीं समझा। बरगद के पत्तों ने खड़खड़ाकर उसका समर्थन किया। कोरोना-कैबिनेट के सभी सदस्य बरगद की विस्तारित जड़ पर ही बैठ गए।

"देश-दुनिया को लेकर जब अंकुर इतना फिक्रमंद है, फिर तो कोरोना के मामले में अब हमें अवश्य आगे आना चाहिए।" सहज ने पूरे बदन में अंगड़ाई लेते हुए कहा, जैसे अपना पुराना केंचुल उतार फेंक रहा हो।

"थैंक यू सहज," सहज के समर्थन पर शायनी गद्‌गद हो उठी, फिर उत्साह से लबरेज हो उठी, "जैसा कि जेड सर के घर पर चर्चा हुई है भारत सरकार के नागरिक उड्डयन मंत्रालय और विदेश मंत्रालय को पत्र प्रेषित किया जाए, कि देश में कोरोना वायरस के प्रवेश को रोकने और देश को बर्बादी से बचाने के लिए इंटरनेशनल फ्लाइट तुरंत बंद कर दी जाए; इसे कोरोना-कैबिनेट में पेश पहला प्रस्ताव माना जा सकता है!" कोरोना-कैबिनेट में पहला प्रस्ताव पेश करने के अंदाज में शायनी बोली। ...हां-हां-हां-हां-हां-हां...प्रस्ताव के पक्ष में सभी सदस्यों के मुंह से एक सा स्वर निकला। सभी को महसूस हुआ जैसे किसी की विलक्षण हँसी बाहर आई; शायद रहस्यमयी मूर्ति ही न विहँस पड़ी हो! बरगद की शाखाओं में कब से शांत-गंभीर बैठी चिड़ियां चहचहा उठीं, जैसे कोरोना-कैबिनेट के पक्ष

में मतदान कर दिया हो।

"तुम अभी घर जाते ही भारत सरकार के विदेश और नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सचिव के नाम से एक रिप्रेजेंटेशन तैयार कर लेना, कल हम सभी अपने हस्ताक्षर से उसे मेल कर देंगे।" सहज ने परवेज से अनुरोधपूर्वक कहा। उसने फख्र से सिर हिलाया, हामी भरते हुए। सभी ने हाथ उठाकर अपने अदृश्य नेता को सलामी दी।

"मुझे मूर्ति में मूल्यों का लगातार आह्वान करते रहना पड़ेगा; कोरोना-कैबिनेट की बैठक में मेरी अनुपस्थिति को अन्यथा मत लेना।" दोनों हाथ जोड़कर अंकुर ने माफीनामे जैसा कहा।

सभी निकल पड़े अपनी-अपनी दिशाओं के लिए। उन सभी के न दिखने तक अंकुर बरगद के चबूतरे से उन्हें देखता रहा, जैसे साथियों पर अपने यकीन का आनंद ले रहा हो! वहां से वापस लौटते में सभी के चेहरे में संतुष्टि की खड़ी रेखाएं आ जमी थीं, दूर मंजिल के सफर के लिए ऊर्जा-स्तंभ की भांति। पीछे से स्लम एरिया के बच्चों का उमंगपूर्ण शोर आगे दूर तक फिजा में फैलता जा रहा था...मूर्ति वाला भगवान आएगा सबका कष्ट हर ले जाएगा...। दूर से भीमरवा की आवाज भी सुनाई पड़ने लगी थी ...भ्रष्ट-भ्रष्ट मस्त-मस्त नष्ट-नष्ट कष्ट-कष्ट पस्त-पस्त त्रस्त-त्रस्त... सिद्धहस्त-सिद्धहस्त...अलमस्त-अलमस्त...।

अध्याय तीन

1

...होओअ...होओअ...होओअ...होओअ...पूरी बस्ती बच्चों के शोर से गूंज उठी, एकाएक! मजा आ गया...अरे वाह...मजा आ गया...साले जहाज की औलाद...गिराओ साले को...भगाओ साले को...कुरौना हटाओ...कुरौना भगाओ ...भगाओ...चलो...चलो...बस्ती के बच्चों ने तो जैसे आसमान उठा लिया सर पर; सुबह-सबेरे आठ बजे ही। पांच बच्चों की पुकार, दस बच्चों की उमंग में बदल गई, देखते-ही-देखते सैकड़ों बच्चों के ऊधम में; पूरब से चल रही पुरवैया से होड़ लेते हुए। गली-गली से आती पुकार सुभाष मार्ग पर एकमुश्त उल्लास में तब्दील हो गई। बस्ती की मुख्य सड़क सुभाष मार्ग बच्चों की खुशी से तरंगित हो उठा। उमंग में उड़ते बच्चों में कमी रह गई थी तो बस आसमान में उड़ जाने के लिए पंख की! पूरी फिजा में कौतूहल-ताप चढ़ता चला गया, सूरज की चढ़ती सवारी को पीछे छोड़ते हुए। बच्चों के बीच प्रश्नों की झड़ी के साथ-साथ उत्तर भी झमाझम बरसने लगे; सौ बच्चे सौ प्रश्न; एक सौ एक उत्तर...

"क्या सच में रामू भैया सभी जहाज बंद करवा देंगे?"

"हां-हां! प्लानिंग हो गया है।"

"अरे, सुना है जहाजों में कुरौना भर-भर कर आ रहा है।"

"हां जी, कुरौना वाला बिच्छू आ रहा है; समझो एक ही डंक में सबका खेल खत्म!"

"मोबाइल में यह कीड़ा तो केकड़ा जैसा दिखता है!"

"अरे मारो गोली, केकड़ा-बिच्छू जैसा भी लगे, लेकिन इसके जहर का कोई काट नहीं है दुनिया में!"

"अखबार में लिखा है चीन में इस बीमारी से लोग मर रहे हैं, मछली जैसा पट-पट करके!"

"चीन में लोग मर भी रहे हैं और वहां की सरकार तो बीमार लोगों को खुद भी मारे दे रही है!"

"वैज्यानिक तो कह रहा है, चीन ने खुद बनाया है इस वायरस को अमेरिका को मजा चखाने के लिए।"

"अमेरिका को मजा चखाने के साथ-साथ इंडिया को तो मजा चखाएगा!"

"अरे मुझे तो लग रहा है, अपना देश खुद ही कुरौना का स्वाद चखने के लिए बेताब है!"

"कई दिनों से तो कुरौना आ रहा है चीन से, अमेरिका से, इंग्लैंड से, दुबई से, फ्लाइट में बिना किसी रोक-टोक के।"

"बात पकड़ में नहीं आ रही है यार! जब कई दिनों से कुरौना आ रहा है जहाज में बैठकर तो सरकार आने क्यों देती है उसे जहाज में?"

"अरे सुना है कुरौना वायरस तो चुपके से जहाज में चिपक जाता है, फिर दिल्ली-मुंबई में उतर जाता है!"

"फिर तो सरकार जहाज बंद क्यों नहीं कराई है अभी तक?"

"मूरख! जहाज बंद कर देगी तो सरकार के लोग कैसे आएंगे-जाएंगे इंग्लैंड-अमेरिका-मुंबई-बेंगलुरु।"

"अरे तुम लोग ठहरे निठल्ले बुढ़बक! सरकार तो हमेशा कंट्रोल रूम में बैठी रहती है, मीटिंग पर मीटिंग चलती रहती हैं, एक से बढ़कर एक एजेंडा की लाइन लगी है; रामू भैया लोग लेटर भेज रहे हैं सरकार को, अब जहाज बंद करने का एजेंडा आएगा दिल्ली की मीटिंग में।"

"नहीं-नहीं! मंदिर के पीछे वाले भैया कह रहे हैं थोड़ा-बहुत कुरौना आना जरूरी है!"

"क्यों, कुरौना से पैसा मिलेगा क्या!"

"नहीं यार उल्टे बहुत-सा पैसा खर्च होगा।"

"फिर किसी को क्या फायदा मिलेगा?"

"सभी को कुछ-न-कुछ फाइदा होगा; नेता लोगों को सबसे ज्यादा, तभी तो कुरौना की फिक्र नहीं है किसी को!"

"फिर तो सरकार ही जाने!"

...अरे देखो-देखो, वह जहाज उतरने वाला है...सब लोग ढेला मारो...

चिल्लाओ...नारा लगाओ...पायलट सुनेगा तो समझ जाएगा कि बस्ती के लोग कुरौना को बंद करने को बोल रहा है...हो-होओओ...लो-लोओओ... गो-गोओओ... बच्चों के ऊंचे होते जाते शोर से जहाज उतरने की चिर-परिचित आवाज बस्ती में अश्रव्य हो गई।

...भो-भोओओ...भौं-भौंऔऔ...भाओं-भाओंओंओं...भाऊउं-भाऊउंऊंऊं... अब तो बस्ती के सारे कुत्ते भी भौंकने लगे; कई-कई झुंड में, जहाज को निशाना बनाकर...भाओं...भाऊउं-भाऊउंऊं...ऊंऊंऊं...आवाज क्रमशः क्रंदन में बदलती गई, देश-दुनिया में कोई बड़ी विपत्ति टूट पड़ने के अपशकुन सा।

जहाज की लैंडिंग के बाद बच्चे लौटने लगे अपनी-अपनी गलियों की तरफ; चेहरे में विजयी-मुद्रा सी चमक लिए, कौतूहल वार्ता में तल्लीन '...अब तो जहाज देखकर कुत्ता भी भौंक ही रहा है! इसका मतलब है जहाज में कुरौना वायरस वाली बात सही है...'

'हां यार! कुत्ते के रोने जैसा भौंकने का मतलब होता ही है संकट का अंदेशा सच है...'

'बच्चु, लेकिन यह बात पच नहीं रही है, कुत्तों को पता चल गया है कि जहाज में कुरौना लदा है, लेकिन नेता लोगों को अभी तक पता नहीं चल पाया है कि जहाज में कुरौना है...'

'बात तो ठीक कह रहे हो यार! कुत्ता जात एक ही जैसा होता है, जब हमारे कुत्ते को पता चल गया है, तो फिर वहां वाले अभी तक सूंघ नहीं पाए हैं?...'

'अरे यार, इसका मतलब है हमारे कुत्ते से भी नीचे के हैं वहां वाले!'

'...'

'...'

बच्चों की वार्ता में निर्मलता थी, निश्छलता थी; और था जुनून! ऐसा कि सैकड़ों-हजारों मील दूर बैठे बहरे भी सुन लें। तब बस्ती में मार्च महीने की शुरुआत वाली ठंडी हवा इस वर्ष थोड़ा पहले ही गर्म होती महसूस होने लगी थी। आसमान को ललकारते बच्चों का शोर सुनकर भीमरवा ने भी अम्बेडकर चौराहे की तरफ दौड़ लगा दी, ऊंची पुकार लगाते हुए...मनमतंग...मतिभ्रम ...पतन...पतन...

2

परवेज शुरू से ही समय का पाबंद रहा है। स्कूल में होमवर्क समय से पूरा करता था; कॉलेज के सेमेस्टर कभी नहीं चूकता था। रमजान के महीने में रोजा कभी नहीं नागा करता; मंदिर के अंदर गए मित्र का इंतजार मुख्य द्वार पर करता रहता, श्रद्धापूर्वक; अब्बा-अम्मी की हिदायत की अदावत कभी न की है उसने; भाभीजान की फरमाइश भी चुटकी में पूरी करता वह। वाजिब ही तो दोस्तों द्वारा दी गई एक नायाब जिम्मेदारी में वह जरा भी देरी नहीं करना चाहता था; नागरिक उड्डयन सचिव और विदेश सचिव के नाम कोरोना-कैबिनेट की तरफ से एक प्रत्यावेदन उसने रात में ही तैयार कर लिया था। सुबह ग्यारह बजे बस्ती के इंडिया टी कॉर्नर पहुंचा तो कोरोना-कैबिनेट का कोरम वहां पूरा हो चुका था। टी कॉर्नर वाले भरत काका की नजर में वे सभी रामघाट के होनहार बच्चे हैं; पीछे वाले बरामदे में कुर्सियां लगवा दी थीं। तब सच में बरामदे का वह कोना कैबिनेट का गुप्त-मंत्रणा स्थल बन पड़ा। शांत संध्याबेला में वहां भी रामघाट तीरे से आ रही रामधुन...हरे राम हरे राम...कानों में जोर मार रही थी; मानस पाठ की धीमी तान भी कान में कट-कट कर पड़ रही थी...रटहिं कुभांति कूखेत करारा...

रामधुन के शोर से अहम खिन्न हो उठा, "अरे भई, राम-श्याम के बाद मानव-धाम का अवतरण कब होगा धरा पर; अब कोई नई धुन तो बनाओ!" परवेज ने टाइप किया हुआ पत्र निकालकर टेबल पर रख दिया, अहम के सदियों लंबे दीर्घ-दर्शन का पिटारा खुल जाने की आशंका भांपकर। पत्र के बजाय परवेज को देखकर सहज बोला, "पत्र में सरकार के खिलाफ जहर तो नहीं उगल दिया है तुमने!"

"वो तो पत्र ही बोलेगा।" परवेज ने सफाई दी, होंठों पर मुस्कान का टुकड़ा लाते हुए।

शायनी को पता था ये सभी बातूनी बच्चे रहे हैं, काम की बात को पीठ पर लटकाते फिरेंगे और गप्प की खेती लहलहाते रहेंगे! झटके से पत्र उठा लिया; अपनी सुरीली आवाज में पढ़ने लगी, स्पष्ट उच्चारण के साथ, ताकि बीच में या बाद में कोई मजाक-मसखरापन पर ना उतर आए, 'उस पंक्ति में क्या था वहां क्या जोड़ा है।'

सेवा में,

श्रीमान सचिव
विदेश मंत्रालय
नागरिक उड्डयन मंत्रालय
भारत सरकार, नई दिल्ली

विषयः दुनियाभर में कोविड नाइनटीन के फैलते संक्रमण के मद्देनजर सभी अंतरराष्ट्रीय उड़ानें तुरंत बंद करने के संबंध में प्रत्यावेदन।

महोदय,

हम निम्न हस्ताक्षरकर्ता रामघाट शहर के युवा निवासी हैं। बाल-संसद के दिनों से गठित कैबिनेट जो अब कोरोना-कैबिनेट में अपने-आप उच्चीकृत हो चुकी है, के माध्यम से आपका ध्यान कोविड-नाइनटीन के बढ़ते संक्रमण की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं। आप भी अवगत होंगे कि कोरोना वायरस, यानी कोविड-नाइनटीन व्यक्ति से व्यक्ति में पहुंचता है और चीन के वुहान शहर से बाहर निकलकर यह वायरस अब तक दुनिया के कई देशों में अपना खतरनाक खेल शुरू कर चुका है। आप तो भली-भांति अवगत होंगे कि भारत में भी इस लाइलाज वायरस ने दस्तक दे दी है। देश में संक्रमण फैलने का सबसे बड़ा माध्यम है विदेश से आने वाली फ्लाइट्स में संक्रमित व्यक्ति का लगातार अपने देश में आना। हमें पता है आपके मंत्रालय ने हर एयरपोर्ट पर संक्रमित व्यक्तियों की स्क्रीनिंग करने की व्यवस्था कर रखी है, बावजूद इसके विदेश से आने वाले संक्रमित व्यक्ति देश में दिन-ब-दिन सामने आ रहे हैं।

आप सहमत होंगे कि अपना देश वुहान जैसी स्थिति से निपटने में सक्षम नहीं है, जैसा कि देश के अंदर चिकित्सा सेवा उस स्तर तक विकसित नहीं है। यदि वुहान जैसा ही भारत के शहरों-कस्बों में पूर्ण तालाबंदी की नौबत आती है तो पूरे देश को एक बड़ी त्रासदी का सामना करना पड़ सकता है और हर प्रकार की गतिविधियां ठप्प होना देश को अप्रकट तौर पर दशकों पीछे धकेल देगा।

हम सभी रामघाट के गांधी हाई स्कूल के पढ़े हैं; हमारे अंदर देश के जिम्मेदार नागरिक की संवेदना जीवंत है। हमारा यह संयुक्त आकलन है कि देश के अंदर संक्रमित व्यक्तियों का आंकड़ा बढ़ने से रोकने के लिए विदेशों से आने वाली फ्लाइट्स का संचालन फौरी तौर पर बंद किया जाना अति आवश्यक है। हम पुनः दोहरा रहे हैं, यदि अंतरराष्ट्रीय उड़ानें तुरंत बंद

नहीं की गईं तो यह भारतीय इतिहास में एक बड़ी चूक के रूप में अमिट हो जाएगा तथा ऐसी चूक, बल्कि घोर लापरवाही की सजा देश की पीढ़ियों को सदियों तक भुगतनी पड़ सकती है। और तब निश्चित तौर पर तब के, यानी आज के जिम्मेदार लोग इतिहास में त्रुटि-पुरुष के नाम से जाने जाएंगे।

अत: यह कोरोना-कैबिनेट आपसे निवेदन करती है कि भारत भूमि में लैंड करने वाली सभी अंतरराष्ट्रीय उड़ानों का परिचालन तत्काल प्रभाव से रोका जाए। देशवासी इस पुनीत कार्य के लिए आपके मंत्रालय और भारत सरकार के प्रति आभारी रहेंगे, साथ ही आभारी रहेंगी सदियों की पीढ़ियां।

प्रेषक: कोरोना-कैबिनेट; दिनांक: दो मार्च, दो हजार बीस।

प्रतिलिपि: सचिव प्रधानमंत्री कार्यालय, नई दिल्ली-श्रीमान से प्रार्थना है कि बाकी मुद्दे को तत्काल विराम दें और इस गंभीर मसले को वरीयता पर लेते हुए आवश्यक कार्यवाही करने की कृपा करें।

शायनी, सहज, परवेज, रामचंद्र, अहम, मंजरी, अरशद, मनोज, दिनेश, रामू।

शायनी ने जैसे ही पत्र पढ़कर खत्म किया संयुक्त तालियां बज उठीं... थप-थप थक-थक थप-थक...रामू ने ताली पीटने में रुचि नहीं दिखाई; निर्विकार भाव, बल्कि संदेहास्पद दृष्टि से पत्र को देखता रहा। अपनी उंगलियों से ललाट के किनारे ताल देते हुए परवेज ने सामूहिक रूप से पूछा, अपनी मेहनत-मूल्यांकन के ख्याल से, "तुम लोगों को शक था न कि मैंने पत्र में सरकार के खिलाफ जहर उगला होगा; अब बताओ कितना जहर दिख रहा है पत्र में, और कैसा जहर है? मीठा या कड़वा!"

"मुझे तो मीठा जहर ही लग रहा है।" सहज के चेहरे में संशय के उभार दिखने लगे।

"मीठा जहर के बजाय मैं इसे मीठा एंटीबायोटिक कहूंगा!" अहम ने आंखें छोटी करते हुए कहा; बोलने के बाद होंठों की हरकत बता रही थी पत्र के कथ्य को लेकर उसके अंदर मंथन चल रहा था।

"देखो भाई, जब कोरोना वायरस के उपचार के लिए ना तो कोई दवा बन पाई है और ना ही किसी वैक्सीन की खोज हो पाई है अभी तक," बोलते हुए परवेज ने गंभीर व्यक्ति-सी मुद्रा बनाई, "ऐसे में उड़ान रुकवाने के लिए मर्यादित भाषा में कठोर बात तो रखनी ही पड़ेगी।"

"एक पॉइंट पर गौर करना चाहिए, सिर्फ धारणा के आधार पर त्रुटि-पुरुष कहना बड़ा आरोप लगाने जैसा लगता है..." सहज की बात पूरी नहीं हो

पाई कि अहम स्पंदित हो उठा, अपनी गुमसुम प्रकृति के विपरीत, "नो-नो, त्रुटि-पुरुष बिल्कुल सटीक शब्द है, मेरी दृष्टि कह रही है ऐसा ही कुछ होने वाला है!"

"पत्र पर मैं अपनी सहमति देती हूं," इतना कहकर शायनी रामू की ओर देखकर बोली, "पर रामू, तुम कुछ नहीं बोल रहे हो आज, बिल्कुल मौनी रामचंद्र बनकर आए हो क्या!"

"इस पत्र का अंजाम पता है मुझे; बस्ती के लोग अपनी समस्याओं के बारे में हर सप्ताह दसियों दरखास्त तो देते हैं एसपी-कलेक्टर-तहसीलदार को, कितने में सुनवाई होती है? जनता के लिए सब हरामखोर सोए हैं, पर निजी स्वार्थ के लिए पूर्ण रूप से जगे हुए!" हमेशा जीवंत-सा दिखने वाला रामू जैसे नौजवान का चेहरा बोलते हुए में निराशा की गहरी घाटी में खोया हुआ दिखने लगा, आगे सांस लेकर संकल्प-मुद्रा में बोलने लगा, "तुम लोगों को मेरे बारे में पता है, मैं सीधी कार्रवाई में विश्वास रखता हूं; तब से यही सोच रहा हूं यह फ्लाइट रुकेगा कैसे?"

"देखो भाई लोग, बट माइनस सहज," बोलकर शायनी ने सहज की ओर चुपके से पलकें उठाईं, फिर सभी की ओर देखते हुए बोलती गई, "यहां बैठे-बैठे हमें सरकार पर निठल्ला होने का आरोप नहीं मढ़ना चाहिए, सरकारी मशीनरी में कार्य निष्पादन की एक निर्धारित प्रक्रिया होती है; हमें यह पत्र तो तुरंत भेज ही देना चाहिए," बोलते हुए में शायनी का सुलझा हुआ व्यक्तित्व दिख रहा था, "मेरे हिसाब से इसको भेज देने में हर्ज ही क्या है, अपनी बात कहने से हमें फांसी तो नहीं होगी न! रही बात त्रुटि-पुरुष की तो किसी व्यक्ति विशेष पर आरोप तो नहीं लगाया गया है।" बोलकर शायनी ने अपने नाम के आगे हस्ताक्षर कर दिए, फिर आगे सरका दिया सभी के हस्ताक्षर के लिए। एक-एक करके सब ने हस्ताक्षर कर दिए।

"सिद्धांत से समझौता नहीं कर सकता मैं, इसलिए स्कूल वाले बाल-कैबिनेट में नहीं शामिल होता था; मेरी एक छोटी सी माँग है, इस कैबिनेट में शामिल होकर भी स्वतंत्र रूप से भी कार्य करते रहने की आजादी बनी रहनी चाहिए मेरी," रामू ने उद्घोषणा सी की, आगे स्पष्ट करते हुए कहा, "यह मेरी प्रतिज्ञा है इस कैबिनेट के बाहर भी मुस्तैद रहकर हर जरूरी काम को अंजाम देता जाऊंगा; कोई एक तो ऐसा होना चाहिए जो कभी भी जंग के लिए कूच कर सके, बिना किसी औपचारिक स्वीकृति के!"

"ओके" परवेज ने हामी भरी; पत्र को सहेजते हुए बोला, "मैं अभी स्कैन करके सभी ऐड्रेसी को मेल कर देता हूं।"

"उसके बाद क्या होगा?" बोलकर रामू अशांत-चित्त दिखने लगा।

"हमें कुछ दिन इंतजार तो करना चाहिए।" सहज की शांति स्थापना सी भाषा थी।

"फिर?" रामू के इस एक शब्द में दसियों शब्द के संयोजन से बनते व्यंग्य से भी बड़ा व्यंग्य था।

"देखो रामू, नियति ने हर चीज नियत कर रखी है; अधीरता इस देश में फलदायी नहीं है!" कहीं दूर नजर गड़ाए अहम बोले जा रहा था, "चार-पांच दिन इंतजार कर लो, इस बीच ब्रह्मा सर रामघाट आते हैं तो उनसे मिलेंगे।"

टी कॉर्नर से वे सभी सड़क पर आ गए; मार्च की जवां हो रही धूप में उम्मीद के अणु-परमाणु मजबूत होते प्रतीत हुए उन्हें। अंदर बस्ती में उठ रही भीमरवा की पुकार में उत्तरी छोर से आ रहे मानस पाठ की आवाज पस्त पड़ती जान पड़ रही थी...राजा-प्रजा, मालिक-नौकर, अमीर-गरीब, बड़ा-छोटा, मालामाल-कंगाल...

3

सरकार को पत्र भेजे जाने से रामू के अंदर संशय की शृंखला जाग पड़ी, रामघाट से दिल्ली पहुंचकर बिना हाथ-पैर वाला पत्र क्या कर पाएगा भला? अब तो पत्र के पीछे उसका मन पागल हुआ जा रहा था, किसी बड़ी उम्मीद के ख्वाब तले। टी कॉर्नर से निकलने के बाद उसे अपने अंदर एक नयापन अनुभव हो रहा था; साथी का साथ पाकर कौन भला अपने को बलवान महसूस नहीं करेगा। कोरोना-कैबिनेट! रामू को रामघाट में एक नई ताकत का बीजारोपण दिखने लगा। घर पहुंचकर उसके अंदर विश्वास की किरणें जगने लगीं। रात को सोते यकीन की रोशनी टिमटिमाने लगती। कमरे के अंधेरे में मन के पर्दे पर प्रकाश जैसा कुछ चमक उठा...संकट के समय सरकार हमारे द्वारा भेजे पत्र को फाइल में नहीं दबा पाएगी! नींद आने से पहले उसे मन के अंदर स्पष्ट दृश्य दिखा...पत्र पढ़ने वाला अधिकारी तो असली राष्ट्रभक्त निकला! उसने फ्लाइट्स बंद करने की बात सरकार के बड़े व्यक्तियों तक पहुंचा भी दी है, पत्र सहित; सरकार में बैठे बड़े-बड़े लोग तो हम सबसे ज्यादा अक्लमंद होंगे, फिर तो फ्लाइट समझो कल नहीं तो परसों

से बंद होनी ही होनी है...

3 मार्च, 2020; सुबह-सवेरे वाली शीतल बयार में रामू सोया पड़ा था, अलमस्त। पांच बजे वाली इंटरनेशनल फ्लाइट की लैंडिंग के शोर से उसकी नींद खुल गई। हर दिन पांच बजे वाला जहाज उतरता है; वह तो जी भरकर सोता रहता है, छह बजे तक; नींद में कभी खलल नहीं पड़ी। एक अदना जहाज की क्या औकात जो उसे जगा दे! आज पांच बजे नींद खुल जाने से भी वह क्षुब्ध या क्रोधित नहीं हुआ; अभी-अभी नींद से बाहर आए उसके चेहरे पर व्यंग्य की रेखा खिंच आई...बस एक-दो दिन का खेल और कर लो उड़ता पंछी! जल्द ही उड़ान बंद होने की जिज्ञासा लिए वह दिनभर प्रफुल्लित रहा, कभी-कभी तो रोमांचित भी। सवाल पर सवाल दागते बस्ती के बच्चों को अपने अनोखे अंदाज में आश्वस्त करता रहा, बस अब इंतजार की घड़ी खत्म ही समझो! जहाज देखकर कुत्तों के भौंकने का जो सिलसिला कल से शुरू हुआ था वह अब परवान चढ़ने लगा। अब तो बच्चे खुद ही भविष्यवक्ता बने फिरते थे, '...कुत्ते लगातार भौंक रहे हैं तो समझो जहाज बंद होना ही होना है, या फिर आफत आनी तय समझो...'

4 मार्च; सुबह बस्ती में कुत्तों का शोर आज बढ़ता गया, ब्रह्म-वेला से ही। पांच बजे वाली फ्लाइट की लैंडिंग से उसकी नींद तो खुली, पर आकाशीय शोर के प्रति वह अनमना ही रहा। चंद मिनट में दोबारा सो भी गया, उड़ान बंद होने, ना होने का ख्याल मन में लाए बगैर। उठने के बाद भी उसे जहाज का ख्याल न आया। दोपहर तक गाय-भैंस रवाना करने, दूध इकट्ठा करने-बांटने के दरमियान आसमान में जहाज उसका ध्यान नहीं खींच पाया। दोपहर बाद मंदिर-मंडली में भी जहाज बंद करने-कराने की बात नहीं उठी। एक प्रकार से उड़ान बंद करने के मुद्दे पर वह निरपेक्ष-बाबा ही बना रहा दिनभर; इस देश में दो दिन में ही फल पाने की अभिलाषा रखना उचित नहीं है, तीसरे-चौथे दिन तो परिणाम आ ही जाना है। सुबह से शाम तक उसकी मुख-मुद्रा में निस्पृहता की मोटी परत दूर से ही देखी जा सकती थी, इस कदर कि बस्ती के बच्चे भी सहमे रहे, कहीं सरकार ने रात में ही रामू भैया की उठक-बैठक तो नहीं करा दी?

5 मार्च को भी उसकी दिनचर्या अमूमन वैसी ही बनी रही, बल्कि अपने कामों में कुछ ज्यादा ही तल्लीन दिखा। बच्चे भी सांस थामे रहे कि रामू भैया काम में बिजी हैं, ऐसे में जहाज के बारे में टोकने-पूछने से वह भड़क सकते हैं।

6 मार्च की सुबह पांच बजे वह नींद से जैसे छिटककर बिस्तर पर बैठ गया; फ्लाइट की आवाज आज उसे अपने घर के ऊपर बम फटने जैसी लगी। थोड़ी देर बाद महसूस हुआ, वह तो बम फटने की नहीं बम रखने की आवाज जैसी थी; जहाज से कोरोना-बम घर-घर में धीरे से गिराने की आवाज सी! वह हड़बड़ाकर घर से बाहर सड़क पर आ गया, लपककर अपनी टिन शेड पर चढ़ गया; कोरोना बम या कांटेदार उंगली वाला कोरोना जैसा कुछ दिख तो नहीं रहा! उसने अपने माथे पर थपकी दी, लोग सच ही उसे बावला ग्वाला कहते हैं; हवाई जहाज की आवाज को ही वह कोरोना बम मान बैठा था! आज दिनभर वह निरपेक्ष बाबा से थोड़ा नीचे खिसका हुआ दिख रहा था, चेहरे में असमंजस का जहाज उतरता हुआ-सा। दिनभर अपना हर काम अनमने ढंग से करता रहा...उड़ानें बंद होंगी कि नहीं? ...यदि कोरोना-कैबिनेट के पत्र पर प्रतिक्रिया नहीं होगी तो आगे? ...बुझा-बुझा-सा चेहरा लिए बस्ती में घूमता रहा, मन में खीझ का वजन छिपाते-ढोते हुए। उसे लगने लगा, समय का इंतजार भी एक बड़ी बीमारी है इस देश-प्रदेश में। बच्चों से आंखें मिलाने की हिम्मत नहीं हो रही थी उसकी; वह तो बस्ती के बच्चों का सुपर हीरो है, उसकी निष्क्रियता से बच्चों के कोमल हृदय पर कितना तो आघात पहुंच रहा होगा...ऐसी ही बहुतेरी चिंतन-शृंखला में सवार रहते रात को कब सो गया उसे याद नहीं।

7 मार्च; कंटीली हवा पूरब दिशा से आ रहे उजाले को डरा रही थी। सुबह वाली फ्लाइट ने उसे सिर्फ उठा ही नहीं दिया, मुंह चिढ़ा भी दिया। कमरे से निकलकर सड़क पर से ऊपर नजर उठाई; अरे! आज तो यह जहाज कुछ ज्यादा ही नीचे उतरता जा रहा है, जैसे कोई राजा-महाराजा राजदरबार में पधार रहे हों! उसका कलेजा धक से हो उठा, लगा सच में जहाज में देश के राजे-महाराजे कोरोना लेकर बैठे हैं; हो न हो बस्ती के ऊपर छींट भी दिया हो? उसे महसूस होने लगा, उसके दिमाग में कोई ज्वर चढ़ा जा रहा है; यदि शांत ना किया गया तो कहीं उसका माथा ही न फट जाए! उसके अंदर से आवाज आई, यह तो करोना-ज्वार है। वह सोच में पड़ गया; कोरोना आने से पहले का ज्वार इतनी बेचैन करने वाली है, फिर तो कोरोना आ जाने के बाद असली ज्वार में तो सब कुछ बहता चला जाएगा! अचानक उसके अंदर से जैसे किसी अंत:पुरुष ने आवाज दी...धरती में हर मानव को अपना फर्ज

पूरा करना चाहिए, माटी का कर्ज उतारने का तुम्हारा समय आ गया है। वह काफी देर तक सड़क पर ही खड़ा रहा, चिंतामग्न; गाय-गौशाला से बेखबर तो बाइक-बाल्टी-कंटर से बेअदब। बस्ती के बच्चों में यह बात करंट जैसी फैल गई, '...रामू भैया जहाज को देखकर काफी देर से प्लानिंग कर रहे हैं!' कहते हैं न, साथी ही साथी का मर्म जानता है; बच्चों का झुंड रामू को घेरे में लेने लगा, चिल्लाते हुए, '...आज तो जहाज बंद होना ही होना है...!' रामू ने ऐलान करने में देरी नहीं की, "आज जहाज की चाबी अपने कब्जे में लेना है!" फिर तो बच्चों के शोर से आसमान गूंज उठा, इतना कि रामघाट तीरे से आ रही रामधुन...हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे...भी अश्रव्य हो गई बस्ती में; थोड़ी देर पहले आई मानस पाठ...कबहुं कि कांजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ...के बाद अगली चौपाई का तो कोई अता-पता ही नहीं था। भीमरवा भी कहीं अचानक भभक उठा था...बढ़ो-चढ़ो-लड़ो बढ़ो-चढ़ो-लड़ो...

4

एयरपोर्ट शहर से लगा हुआ ही है, मुख्य शहर से थोड़ा बाहर। रामू को उधर जाने की जरूरत नहीं पड़ी, फिर भी एक-दो बार चला ही गया था। हर साल पहली जनवरी और चौदह फरवरी को वह मंजरी के साथ होता है, जब से दोनों अदृश्य धागे से बंधे हैं। बीते एक जनवरी को पूछते-बुझते वह आ गया था अराइवल में; मंजरी के काम की जगह देखने की इच्छा भी काफी दिनों से दबी पड़ी थी उसके अंदर। तब चमकदार शीशे के अंदर से उसकी मंजरी चमकती-चहकती दिख रही थी, एयरपोर्ट वाली ड्रेस में।

आज बस्ती से निकलकर वह एयरपोर्ट रूट वाली बस में बैठ गया। साथ में प्रत्युत्पन्नमति वाले दस बच्चे भी, जैसे एक नहीं कई-कई हनुमान हों; मन में जहाज को बंद कराने का अरमान लिए उड़ते हुए। वह सीधे अराइवल में पहुंच गया। उसे याद था मंजरी अब यहां नहीं है, फिर भी वह अराइवल में ही आ गया; उसके लिए तो अराइवल ही एयरपोर्ट था! वैसे भी वहां से आगे-पीछे उसे कुछ नहीं पता। पिछली बार से इस बार का एयरपोर्ट बिल्कुल बदला-बदला लग रहा था, जैसे धरती से कहीं बाहर बसी कोई दुनिया; मंजरी के बगैर। बच्चों को टैक्सी कॉर्नर के पास ही खड़े रहने की हिदायत दी; खुद आगे बढ़ गया। निकास द्वार पर पांच मिनट तक खड़ा देखता रहा; बाहर आते जा रहे देसी-विदेशी लोग, अलग-अलग रंग-रूप-स्वरूप, रंग-बिरंगे परिधान!

बाहर आ रहे यात्रियों को वह गौर से देखे जा रहा था। उसने गले में गमछा लपेटा था। स्टेनगन धारी सिक्योरिटी गार्ड ने सोचा किसी को रिसीव करने आया ड्राइवर-नौकर होगा; जब देखा यह तो यात्रियों के शरीर पर नजरें गड़ाए देखे जा रहा है तो टोका, "बाहर निकलने वाले यात्रियों को इस तरह घूरना बुरी बात है, फॉरेनर बुरा मान जाएंगे! आप किसे रिसीव करने आए हैं?"

"कोई वायरस आ रहा है जहाज में; किसके साथ आया है, कैसा है, वही देख रहा हूं!" गार्ड की तरफ बिना देखे रामू ने कहा।

"तुम पनिशेबल रयूमर फैला रहे हो, जेल हो सकती है!" बोलकर उसने वॉकी-टॉकी में वॉइस मैसेज आगे बढ़ाया, "सम मिसक्रिएंट्स! अर्जेंट; ऑभर।" मिनट के अंदर ही चार-पांच तेज-तर्रार वर्दी वालों ने उसे घेर लिया, जैसे वह कोई मानव बम हो!

"कहां घर है! यहां क्यों आए हो?" ऑफिसर ने पूछा।

"सर अखबार में हर दिन आ रहा है जहाज से कोई वायरस आ रहा है; विदेश से, वुहान से! वही पता करने आया था।" रामू बस इतना ही बोल पाया; उसे अपने पर गुस्सा आया, आखिर वह जहाज की चाबी लेने की बात क्यों नहीं कर पा रहा है। तभी उसके अंदर से सांसों के फूलते जा रहे गुब्बारे फूट पड़े, "अरे साहब, रोड-घाट में पुलिस वाले जरूरत पड़ने पर कार-बाइक की चाबी खींच लेते हैं; आप लोग तो जहाज पुलिस हो, हमारी एक छोटी माँग है, सारे जहाज की चाबी खींचकर कुछ दिनों के लिए अपने पास रख लीजिए, नहीं तो यह कोरोना-कीड़ा हमारे शहर और फिर हमारी बस्ती में घुस जाएगा।"

"अटर नॉनसेंस!" सिक्योरिटी ऑफिसर ने हँसते हुए सिर झटकाया, फिर उसे समझाया, "यू मिन फ्लाइट बंद होनी चाहिए?" रामू ने हर्षित होकर सिर हिलाया, "जी-जी!"

"यह डिसीजन लेना गवर्मेंट का काम है हमारा नहीं, ओके!" ऑफिसर ने कहा, फिर उसे बाहर जाने का संकेत किया।

"सर, यहां शहर में गवर्मेंट का कौन आदमी है?" गमछा सहित हाथ जोड़कर रामू ने जानकारी चाही।

"जाइए पार्टी के लोगों से बात कीजिए।" ऑफिसर ने उसका कंधा पकड़कर उसे बाहर की तरफ मोड़ दिया।

टैक्सी कॉर्नर में कब से खड़े बच्चे उतावले हो रहे थे। अब तक एक

जहाज उतर चुका था और तुरंत ही दूसरा उड़ चुका था। बच्चों की बेचैनी बढ़ती गई। छोटू की छटपटाहट रुक न पाई, "कहीं जहाज की चाबी निकालने का तरीका न पता हो राजू भैया को!" मंटू तो घबरा उठा, "हो न हो रामू भैया ने अपना आईडिया ही बदल दिया हो!" मरखा ने माथे में हाथ पटकते हुए कहा, "जहाज की चाबी तो हाथ से खींचकर नहीं निकाली जाती है, वह तो रिमोट से निकलती होगी!" इस पर फट्टे झुंझला उठा, "यह बात तुमने रामू भैया को पहले ही क्यों नहीं बता दी थी?" तभी रामू भैया को वहां पहुंचा देखकर बच्चों के चेहरों की हवाइयां उड़ने लगीं, रामू भैया की आंखें पत्थर सी पाकर। बच्चों के होंठ हिल नहीं रहे थे; रामू ने बुझते स्वर में कहा, "इन लोगों ने चाबी देने से मना कर दिया।"

"हमें फिर तो दूसरा तरीका आजमाना चाहिए," छोटू बोला।

"कुछ तो करना ही पड़ेगा, नहीं तो कीड़ा फैल जाएगा चारों तरफ!" मंटू ने कहा।

"चौधरी के बगीचे की बाउंड्री कितनी तो ऊंची है, इस एयरपोर्ट की बाउंड्री तो उससे ऊंची नहीं है न!" शंकरा ने चहकते हुए कहा।

"अरे यहां की बाउंड्री तो हमारे लिए कुछ भी नहीं है," जहीर ने उछलकर अंदर की ओर झांकते हुए बोला।

"हम तो इसके घुंघराले कांटे वाले तार को छुए बगैर उस पार फांद सकते हैं!" फट्टे ने उंगली नचाते हुए कहा।

"हां-हां, क्यों नहीं; एंगिल पर दो उंगली धरकर बॉडी को बस एक चक्कर तो देना है," देवा ने कमर से छाती तक लहराते हुए कहा।

"अभी-अभी जो जहाज उतरा है, वो देखो सामने खड़ा है!" हरहर ने उचककर देखते हुए कहा।

"बस, उसी की चाबी तो खींच लेनी है!" रियाज ने फड़कते हुए कहा।

"एक जहाज की चाबी खींच लेंगे तो समझो देश में बाकी सारे जहाज एक-एक करके अपने-आप रुकते जाएंगे!" शंकरा ने जोड़ा।

"पर सरकार बुरा मान गई तो?" अबतक चुप नम्मो से रहा न गया।

"अरे यार! तुम भी दिनभर क्या सरकार-सरकार रट लगाए रहते हो; चाभी तो निकालना ही पड़ेगा, नहीं तो पूरा इंडिया समझो रसातल में चला जाएगा।" मुन्ना जोश में बोला।

"..."

"..."

सभी बच्चों के अपने-अपने मन का गुबार निकल जाने तक रामू चुप ही रहा। फिर मुरझाए मन को हरा करते हुए बोला, "नहीं-नहीं, इसमें बहुत रिस्क है, तुम लोग बच्चे हो वानर नहीं!"

"फिर?" सभी उतावले हो उठे।

"एयरपोर्ट की पुलिस कह रही है यह काम गवर्मेंट का है।"

"गवर्मेंट??" बोलते हुए सभी बच्चों के मुंह खुले के खुले रह गए। तब तक बस्ती जाने वाली बस दिख गई; रामू ने सभी को बैठने का इशारा किया।

बस में भी बैठे-बैठे वह सोचता रहा; बाहर बह रही तेज हवा को अपने अंदर और तेज हो उठी महसूस कर। घर आकर भी समझ में नहीं आ रहा था शहर में सरकार के किस आदमी से मिलना होगा? एयरपोर्ट पुलिस ने तो पार्टी के लोगों से मिलने के लिए कहा है? उसके जी में आया, पैंट के पॉकेट में सुबह से पड़े मोबाइल का इस्तेमाल किया जाए; मंजरी से पूछ लेने में क्या हर्ज है कि जहाज बंद कराने के लिए क्या करना पड़ेगा। फिर लगा, नाहक ही मंजरी उसे बुद्धू, भोले नाथ...ना जाने क्या-क्या कहेगी। किसी भी दुविधा में मंजरी को याद करते ही उसे आगे का कोई न कोई उपाय दिखने लगता था; अचानक उसे याद आया, शहर में सरकारी पार्टी का बड़ा-सा तो कार्यालय है! तब रामघाट तीरे से आ रही चौपाइयां उसे जले पर नमक छिड़कती लगीं...खर सिआर बोलहिं प्रतिकूला...

5

पार्टी का जिला कार्यालय अभी भी वहीं है; पहले यह इंकलाब मार्ग होता था, अब कोई नया पथ हो गया है, पर उच्चारण लोगों की जुबान पर अभी ठीक-ठीक नही आ पाया है। पहले छोटा था, अब काफी बड़ा हो गया है; तीन मंजिल तक ऊपर उठा हुआ, भव्य और सज्जित। तिरंगे लड़ियां-झालर पहले खास-खास दिनों में ही भुकभुकाते थे, अब तो तीन सौ पैंसठ दिन चौंधियाते रहते हैं। रिक्शा-टेंपो वालों के लिए यह तिरंगा भवन अब महत्वपूर्ण दिशा सूचक हो गया है। अहाते के अंदर फैले जंगल-झाड़ पहले गिने-चुने दिनों में ही साफ होते थे, अब हर दिन साफ ही रहते हैं। फूलों से सज्जित क्यारियां हर मौसम में मुस्कान बिखेरती रहती हैं फिजा में। उत्तर-पूर्वी कोने में दो साल पहले छोटे पौंड बनाए गए हैं, दिलों में जोश भर देने वाले फूल अब

इसमें भी खिल उठे हैं। पहले शाम हुई नहीं कि मेन गेट में पिद्दी-सा ताला लटक जाता था; कभी-कभी आपसी नोकझोंक में तो बेचारा गेट बे-ताला ही रातभर खड़ा रहता था, डर-डराकर। पार्टी के अंधकारमय दिनों में अंधेरा होते ही यह कैंपस भुतहा हो उठता था। उन दिनों पार्टी के लोग घर जाकर भी प्रभु की पुकार लगाते थे। प्रभु की कृपा से कुछ सालों से पार्टी की तकदीर में जबरदस्त उछाल आया है। अब तो देश के कोने-कोने में पार्टी की जय-जयकार है। पहले शहर के लोग इसे बेकार की पार्टी कहते थे, अब नई पार्टी कहते नहीं अघाते; बोलचाल में पार्टी का मतलब होता है यही पार्टी, जो चहुं दिशा में चमक रही है। अब बेकार पार्टी की उपाधि वर्षों से सत्ता में रही पार्टी को स्वत: हस्तांतरित हो गई है।

देश में नई पार्टी के सत्ता में आते ही इस भुतहा भवन के दिन फिरने शुरू हो गए हैं। सुबह आठ बजे मेन गेट का भारी ताला खुलता नहीं कि जनता से भरने लगता है कैंपस। पहले पांच बजे के बाद सनकौवा हांक देता था पीपल की डाली से, अब तो दस-ग्यारह बजे से पहले रात होती भी नहीं है यहां। बल्कि रात होती ही नहीं है; पार्टी कार्यकर्ताओं की टुकड़ी रात्रि विश्राम करती रहती है बरामदे में, बारह गुना तीस दिन। प्रदेश की सत्ता में आते ही पार्टी कार्यालय के पौ बारह हैं। पार्टी पदाधिकारी ही नहीं, मंत्रीगण का भी आना-जाना लगा रहता है। रामघाट जिले के हर टेंडर का कोड वर्ड यहीं से जारी होता है; स्वाभाविक ही संगठन से जुड़े लोगों के चेहरे अब खिले रहते हैं। सच ही आज के दिन में यह शहर का सबसे बड़ा तीर्थ स्थल है। यहां भी मानस पाठ के कुछ खास-खास चौपाए तैरते रहते हैं हवा में; कार्यालय में नए लगे साउंड सिस्टम से मंद आवाज में, बैकग्राउंड म्यूजिक भांति...अवध तहां जहं राम निवासू...।

रामू ग्वाला दनदनाते हुए पार्टी कार्यालय में दाखिल हो गया, वहां की हवा में भी अपना अधिकार-सा जताते हुए। बचपन से देखता आया है पार्टी कार्यालय को, आज पहली बार मजबूरी में आना पड़ा है; माथे पर कोरोना के बढ़ते बोझ की वजह से ही तो। वैसे उसने किसी भी पार्टी के कार्यालय में पहली बार पैर धरा है; किसी भी पार्टी के दफ्तर का चक्कर लगाने की जरूरत नहीं महसूस की उसने कभी। स्कूल के दिनों में नौवीं और ग्यारहवीं के बच्चों की अलग-अलग टुकड़ी को अवसर विशेष पर कभी इस पार्टी तो कभी उस पार्टी के दफ्तर में आमंत्रित किया जाता था, राष्ट्र निर्माण को नजदीक से समझने के लिए। गांव में उनके पिताजी की तीन-साढ़े तीन बीघे

की खेती जब-तब बाढ़-सुखाड़ से मार खाती रहती थी; वैसे दुर्दिन में राष्ट्र निर्माण वाली बात उसकी समझ में ना आ पाती थी। बच्चों की टुकड़ी अंदर जाती तो वह सड़क किनारे पेड़ की आड़ में पेशाब करने सा खड़ा हो जाता, जोर से साथियों को बताता 'आता हूं' पर अंदर गया हो ऐसा कभी नहीं हुआ।

"पार्टी का मालिक कौन है?" बरामदे में चढ़ते ही रामू ने कुर्सी पर बैठे एक सज्जन से पूछा, कंधे वाले गमछे से मुंह ढके हुए ही। कुर्सी में बैठे आदमी ने तुरंत जवाब देने के बजाय उसे सिर से पैर तक देखा, फिर तिरस्कृत लहजे में बोला, "सो तू कितना बड़ा गुंडा है जो इतनी अकड़ से बात करता है; तुम गेट से अंदर आया तो मुंह खुला था, मेरे सामने आते ही ढक क्यों लिया!" आगे बोलते हुए में उसके चेहरे में ही नहीं आंखों में भी उपेक्षा-भाव उतर आया था, "चोरी-चपाटी करके आया लगता है, तभी मुंह ढक लिया है क्या जी?"

"कुरौना का व्यापार चालू हो गया है देश में इसलिए ढक लिया है, और कोई बात नहीं है," फिर मुंह से गमछा हटाकर गर्दन में लटकाते हुए गर्व से बोला, "गमछा तो हमारी पहचान है; इससे मुंह ढक लिया तो गुंडा हो गया, फिर तो जो कंबल ओढ़कर घी पीता है उसे क्या कहेंगे आप!"

"कोई पेंच ढीला हो गया है क्या!" वह कुर्सी से उठकर तन गया, बंद मुट्ठी से कनपटी के पास गोल-गोल घुमाते हुए कहा।

"कौन है?" अंदर कमरे में ऊंची कुर्सी पर बैठा कुर्ता-पायजामा और रंगीन गमछा वाला बाहर आते हुए दहाड़ उठा, "मैं अंदर से देख रहा हूं, तू बतमीजी पर बतमीजी किए जा रहा है तभी से; पागल वाचाल है क्या!" पार्टी पदाधिकारीनुमा आदमी एक सुर में बोलता गया, "हिम्मत सिंह! इसे गरदनिया देकर बाहर निकालो; होली के बाद मुख्यमंत्री की रैली है शहर में, तीन दिन ही बचे हैं, आज दिनभर दम मारने की फुर्सत नहीं है," फिर भाषण के अंदाज में स्वर ऊंचा कर लिया, "विपक्षी पार्टी की साजिश है यह सब; अब कुछ तो बचा नहीं उसकी पार्टी में, पागलों को भेज रहे हैं हंगामा कराने, कोरोना के नाम पर!"

पदाधिकारी को चिल्लाते देखकर तीनों मंजिल में जमे-बैठे-छितरे लोग नीचे बरामदे में जमा होने लगे। हिम्मत सिंह की हिम्मत बढ़ी; रामू का गमछा पकड़ा ही था कि वह दहाड़ उठा, "खबरदार! मेरा गमछा छूने वाले का हाथ बेकाम कर देता हूं मैं!"

"अरे रामू! तू यहां क्या करने आया है!" पीछे से एक कुर्ता-बंडीधारी आगे

आकर बोला, फिर एक हाथ से उसकी पीठ सहलाते हुए कहा, जैसे किसी बेकाबू पालतू को शांत करा रहा हो, "शांत हो जा बेटा, शांति से काम ले।"

"कौन है यह जयसवाल जी!" पदाधिकारीनुमा व्यक्ति ने पूछा।

"सर हमारी कॉलोनी में दूध देने आता है; बहुत भला लड़का है, नाम भी रामू है, मुद्दे पर कभी-कभी भड़क जाता है।"

"हां तो बोलिए, किनसे मिलना है आपको?" रामू नाम पर पार्टी पदाधिकारी ने पारा नीचे करके पूछा।

"पार्टी के मालिक से मिलना है।" सपाट मुख-मुद्रा में ही बोल गया रामू।

"फिर वही पागलपन!" पदाधिकारी चिढ़ उठा, आवाज फिर ऊंची होने लगी, "अरे भई, यह लोकतांत्रिक पार्टी है, कोई परिवारवाद नहीं! कोई मालिक नहीं, समझे? पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिल्ली में बैठते हैं, यहां पर जिला अध्यक्ष बैठते हैं।"

"उनसे मिलाइए।" रामू के बोलने के अंदाज से सभी को लगा, सचमुच कोई बड़ी बात उगलने वाला है।

"जिला अध्यक्ष और जिला सचिव महोदय सीएम की रैली की तैयारी के सिलसिले में क्षेत्र-भ्रमण पर निकले हैं," बोलकर उसने रामू की तरफ हाथ जोड़ा, आगे नम्रता से बोला, "मैं जिला कोषाध्यक्ष हूं, मुझसे कहिए, क्या कहना चाहते हैं!"

"शहर में फॉरेन वाले हवाई जहाज का उड़ना-उतरना बंद कराइए," बोलते हुए रामू की आंखें खुलने-बंद होने लगीं; अब सिर कंपित होते दिखा, जैसे संकेत कर रहे हों कि विपत्ति का पहाड़ बस टूटने ही वाला है!

"वह भला क्यों!" रंगीन साफाधारी लोगों के मुंह से एक साथ निकला, जैसे अवसर विशेष वाला समवेत स्वर निकला हो।

"जहाज से चिपककर कुरौना चीन से यहां आ रहा है, फिर तो यहां भी घर-घर में फैलता जाएगा!" बोलने के दौरान रामू की आंखें फैलती गईं, जैसे सीधे चीन तक देख रहा हो!

"मैं तो बोलने के लिए तुम्हें पागल बोल दिया था, तुम तो सच में हो भी!" कोषाध्यक्ष महोदय झल्ला उठे, फिर पद की जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए बोले, "कहां तक पढ़े हो? तुम्हें पता है फ्लाइट से कितना राजस्व आता है भारत देश को! तुम्हें और तुम्हारे लोगों को भला कहां से पता होगा कि राष्ट्र निर्माण कैसे होता है," आगे प्रश्नात्मक मुद्रा में धीरे से कहा, "अंतरराष्ट्रीय उड़ानें बंद होने का अंजाम क्या होगा तुम लोगों की अक्ल तो वहां तक जाएगी

भी नहीं! विदेशों से हमारे संबंध किस कदर बिगड़ जाएंगे तुम्हें भला क्या पता?" आगे बड़ा पुरुष दिखने के अंदाज में बोलते गए, "वैसे भी समस्या के सामने दिखने के बाद ही समस्या से लड़ा जाता है और अक्लमंदी भी इसी में है; समस्या के नाम पर जनता को भयभीत करके रखना हमारी पार्टी की राजनीतिक संस्कृति नहीं है!"

"देखिए सर, अक्ल नहीं होने से भी हम जैसे लोगों का काम चल सकता है, लेकिन जिम्मेदारी वाली जगह पर बैठे लोगों की अक्ल मारी गई हो फिर तो दुनिया का बेड़ा गर्क ही समझिए; आंखों में पट्टी बांधकर रखने से देश-दुनिया तो नहीं दिखेगी न! हमारी बस्ती के कुत्तों को पता चल गया है जहाज में कुरौना है, फिर आप लोगों को क्यों नहीं पता चल पाया है अभी तक!" कोषाध्यक्ष की तरफ बोलकर उसने अब खड़े लोगों को देखकर कहा, "देश को राजस्व कहां से आता है यह पढ़ाई तो मैं नहीं पढ़ पाया, लेकिन इतना पता है कि इलेक्शन लड़ने के लिए पार्टी को पैसा कहां से आता है!"

"अरे मारो साले को! गरदनिया दो!" पीछे से कई लोग उबल पड़े। जायसवाल जी बीच-बचाव करते हुए रामू को मेन गेट की तरफ ले जाने लगे; वह मुंह घुमाकर ऐलान करता जा रहा था, "सभी जहाजों का इंजन तो बंद होगा ही होगा, आज करो या कल; यदि मेरी बात झूठ निकली तो मैं भी गौ पालक नहीं!"

पार्टी कार्यालय में हंगामे की सूचना थाने पर द्रुत गति से पहुंच चुकी थी। एसएचओ खुद जिप्सी उड़ाते हुए आ धमके। उसने देखा, गेट की तरफ आता बंदा कार्यालय की तरफ मुंह पीछे किए चिल्लाकर नेता बनता दिख रहा है! बगैर देर किए उसने रामू को हथेली से पकड़कर मरोड़ दिया; उसकी चीख गले के अंदर ही प्रतिध्वनित होती रही। एसएचओ ने पलक झपकते ही उसे धकियाते हुए अंदर डाला; जिप्सी चल पड़ी थाने की ओर। रामघाट तीरे से आ रही मानस पाठ की आवाज तेज हो चली, हवा की दिशा बदलने से...नहिं बिष बेलि अमिअ फल फरहीं...।

6

...समथिंग अर्जेंट...थाना मुफस्सिल में रामू के साथ बहुत बुरा हुआ है, नौ बजे वहीं पर मिलो परवेज भी आ रहा है, ओके? ...चाय पीती हुई शायनी व्हाट्सएप मैसेज भी चेक करती जा रही थी; उसकी आदत में नहीं है हर

पांच-दस मिनट पर मोबाइल-मशक्कत करते रहना। वह चौंक उठी, अरे! सहज का मैसेज तो सुबह साढ़े सात का ही आया हुआ है। ...थाना मुफस्सिल ...वह चिंता में पड़ गई। मैसेज पढ़ते-सोचते चाय ठंडी हो चुकी थी, सुड़क ली। नाइट गाउन फेंककर फटाफट जींस टी-शर्ट पहन ली। स्कूटी स्टार्ट होते ही माँ ने टोक दिया, "कहां चल दी? बिना नहाए-धोए!" शायनी को पता है, जमाने से कहीं आगे की समझदारी है माँ के पास, जानती है किसी जरूरी काम से ही तो हड़बड़ी में निकली है; आंगन का ग्रिल भिड़ाकर 'अभी आई माँ' बोलते हुए उड़-सी गई।

आज सुबह से ही बूंदा-बूंदी चालू थी आसमान से; ऐसा नहीं कि दिन शुरू ही न हो सके। परवेज को साथ लेते हुए सहज थाने पहुंच गया था, पौने नौ बजे ही। इतनी जल्दी थानेदार आते नहीं; मुंशी-सिपाही भी सोए-जागे से कमरे-बरामदे में थाने के आगे-पीछे हिल-डुल रहे थे। नजारा देखकर सहज बोल पड़ा, "ऐसे में थाना के बरामदे में भी पहुंचना उचित नहीं होगा।" वे दोनों थाने के गेट पर दीवार के सहारे खड़े हो गए; यह एक आम रवायत है थाना में, सुबह-सुबह की बोहनी के संकेत सा। खड़े-खड़े परवेज नोट करने लगा; टाउन थाना में सभी पुलिसकर्मी थोड़े चुस्त-दुरुस्त दिखते हैं, मुफस्सिल थाना यानी शहर का देहात थाना, जैसी मर्जी उठो-बैठो। ऐसे में समय काटना मुश्किल होता था सहज के लिए, "क्या सोच रहे हो परवेज!" संभावित लंबे इंतजार को टुकड़ों में आसान करने के ख्याल से पूछ लिया उसने।

"क्या बताऊं यार!" बोलकर मुफस्सिल थाना लिखे बोर्ड की तरफ देखा परवेज ने; सिर झटका, तीखे व्यंग्य की सान चढ़ी हुई हँसी बाहर आई, "पॉलिटिकल साइंस से एमए करने के बाद मुझे तो नफरत-सी होने लगी है सिस्टम से; संविधान में जो लिखा है, किताब में जो पढ़ा है वह हकीकत में है कहां!"

"यूनिवर्सिटी में तुम्हारे फैकल्टी वाले भी तो बोलते थे, पॉलीटिकल फिलॉसफी के थॉट पर परवेज की अच्छी पकड़ है!" सहज ने उसकी विचार-शृंखला को सहारा दिया।

"तुमने जब बात छेड़ ही दी है तो बताऊं मुझे क्या दिख रहा है," बोलकर सहज को वह ऐसे देखने लगा जैसे संविधान को सामने रखकर बोल रहा हो, फिर बोलता ही गया, "नीचे से ऊपर तक एग्जीक्यूटिव के अलग-अलग पायदान पर बैठे लोग समझो ड्रामे के किसी बड़े स्टेज पर बैठे

कलाकार जैसे हैं; एक ऐसा बड़ा स्टेज जिसके दाएं-बाएं छोटे-छोटे कई स्टेज पर कार्यपालिका के छोटे-बड़े कलाकार नृत्य कर रहे हैं, मेन स्टेज के सुपरस्टार के लय-ताल के साथ! बड़े स्टेज का मुख्य किरदार बीच-बीच में वही डायलॉग बोलता है जो संविधान में लिखा है, बाकी सभी कलाकार उसी को रिपीट करता रहता है!" इतना बोलकर मुंह में कब से जमा पड़ा थूक हिकारत के साथ फेंक दिया उसने, मुफस्सिल थाना लिखे बोर्ड के एंगल पर; दम भरकर फिर शुरू हो गया, "अब बताऊं स्टेज के पीछे की हकीकत! पर्दे के पीछे जाकर बोले गए डायलॉग के पर्चे को टॉयलेट में घुसेड़ डालते हैं सभी, फिर अपने बदन का मलबा निकालकर उसके साथ बहा देता है! मेरा अब तक का ऑब्जरवेशन यही कह रहा है, इंडिया के पॉलिटिकल सिस्टम में सिर्फ जादूगर लौंडे ही सफल हो सकते हैं, जो अपने रुमाल-गेंद-डिब्बा-कबूतर जैसे करतब से मूर्ख दर्शकों को अपनी ओर खींचे रहते हैं!"

"तुम्हें अपने ऑब्जर्वेशन पर इतना यकीन है! तो अपने अनुमान से बताओ हाजत में बंद रामू के साथ आगे क्या हो सकता है?" बोलते हुए सहज के चेहरे पर चिंता की रेखाएं उग आईं।

"देखो सहज, मेरे अंदर सिस्टम को इन जनरल पढ़ने की काबिलियत है; केस टू केस बात करने से क्या फायदा," इतना बोलकर परवेज थाने की इमारत को देखने लगा, फिर आंखों में दबाव बनाते हुए बोला, "यह पोलिस डिपार्टमेंट है न, आईपीसी इनकी पैतृक गाय है, अजर-अमर-अमिट! जितनी ही अधिक बूढ़ी होती जा रही है उतना ही दुहते जाते हैं ये मक्कार लोग!"

"ओ माय गॉड!" सहज की आवाज ऐसे निकली जैसे विधिसम्मत धनोपार्जन का उसका अर्थशास्त्रीय सिद्धांत चित्त हो गया हो।

"क्या तुम अंदाज लगा सकते हो," अब वह टहलते हुए बोलने लगा, "आजाद भारत में पुलिस महकमे ने बेगुनाहों को जेल जाने का भय दिखाकर और गुनाहगारों को जेल जाने से बचाकर कितने लाख करोड़ कमाए होंगे?"

"इतना बड़ा हिसाब-किताब लगाना मुश्किल है!" बोलते हुए सहज को लगा जैसे उसके सामने असीमित समंदर पसर आया हो, अचानक।

"समझो इंडिया के कई सालों के बजट के बराबर! इस महकमे की कमाई के आइडिया के लिए तुम्हें दूर जाने की जरूरत नहीं है; यह जो एसपी साहब है अपने शहर का, क्या नाम है कमीने का? निशांत कुमार! दो

साल में कितने बैग भरे होंगे इसने! इसका कुछ आइडिया तुम्हारे अब्बा दे सकते हैं, यदि वे तुमसे खुले हैं तो!" फिर सहज के कंधे का सहारा लेते हुए बोला, "बस एक बात बोलूंगा यार, यदि आईएएस, आईपीएस बनोगे तो कड़क ऑफिसर बनना डियर! मुझसे ज्यादा मेरी पॉलिटिकल साइंस के रूह को सुकून मिलेगा।"

"अभी तो सबसे पहले रामू को बाहर लाने पर विचार करो।" बोलकर लंबी सांस ली सहज ने; उसे सच में कुछ नहीं सूझ रहा था।

"कल से ही हाजत में है बेचारा! थानेदार आने ही वाला होगा; मैं जानता हूं क्या बोलेगा बास्टर्ड," इतना बोलकर परवेज ने थाने की ओर देखा, कि कहीं थानेदार आ तो नहीं गया है, फिर बोला, "आते ही वह मुर्गे की बांग देगा...'चौबीस घंटे से पहले चालान करना पड़ेगा'! तुम्हीं बताओ यह कोई मामला है भला, अरे भई पार्टी कार्यालय में कहा-सुनी तो होती रहती है! थानेदार को लगा पार्टी का आदमी तो है नहीं, अंदर डाल देते हैं; अपने आका को खुश करने के लिए, बस!"

"तुम सही कह रहे हो यार, यह तो बड़ी नाइंसाफी है।" सहज की आवाज में नाराजगी बढ़ती गई।

"मेरे हिसाब से तुम अपने अब्बा को बोलते तो किसी नेता-वेता या सीधे डीएसपी वगैरह को बोलकर उसको निकलवा सकते थे।" परवेज के कहने के ढंग से लगा जैसे वह कहना चाह रहा हो, बेचारे गरीब ग्वाला के पास न तो पुलिस को देने के लिए पैसे होंगे, न ही कोई कुछ करने वाला है इसके लिए।

"नहीं यार, ऐसे मामलों में डैड को डालना ठीक नहीं है," सिर नकारकर सहज बोलने लगा, "हालांकि वह रामू को जानते हैं, पर क्या सोचेंगे कि हम सब मिलकर नेतागिरी-गुंडागर्दी पर उतर आए हैं!"

"लो तुम्हें जिसका इंतजार था वह आ ही गई!" बोलते हुए परवेज ने शायनी की स्कूटी के हेड को ऐसे रोका जैसे उसमें ब्रेक न हो।

"कुछ गड़बड़ तो नहीं है!" स्कूटी खड़ी करती हुई शायनी बोली।

"तुम्हें पता नहीं है! मंजरी ने कुछ नहीं बताया?" सहज हैरान था शायनी की अनभिज्ञता पर।

"नहीं; किसी ने कुछ नहीं बताया!" अफसोसजनक अंदाज में बोली वह, अब तक असूचित रहने पर।

"रामू तो कल से ही लॉकअप में बंद है यार!"

"सो किस बात पर?" सहज के करीब आती हुई बोली।

"अरे वही कोरोना वाली बात पर कल पार्टी कार्यालय में इसकी बहसबाजी हो गई पार्टी वालों से," सहज के शब्दों में नाराजगी चढ़ती गई, "है भी तो अड़ियल न!"

"यहां सड़क किनारे खड़े रहने से रामू निकल आएगा क्या!" थाना के अंदर जाती हुई बोलने लगी, "आओ थानेदार से पूछते हैं, कैसे क्या होगा!"

"आपलोग इधर आ जाइए, कब से देख रहा हूं गेट पर जमे हैं, क्या बात है?" बीच वाली कुर्सी में सिविल ड्रेस में बैठा रौबीला व्यक्ति बोला।

"हम लोग काफी देर से एसएचओ का इंतजार कर रहे हैं।" सहज ने अभिवादन करते हुए कहा।

"अरे बच्चे, मैं ही हूं! चौबीस घंटे ड्यूटी पर हूं, यहीं थाने के पीछे वाले कमरे में रहता हूं," अपनी अनुपस्थिति के संकेत पर एतराज जताने के अंदाज में बोला थानेदार।

"सर हमें पता नहीं था।" शायनी शालीनतापूर्वक बोली।

"तुम तो युनीभरसिटी की स्टूडेंट्स लगती हो!"

"जी-जी, हम दोनों भी यूनिवर्सिटी से ही निकले हैं," जवाब परवेज ने दिया, "यह शायनी है मैट्रिक-इंटर में जिला टॉपर! बीएससी में जूलॉजी से यूनिवर्सिटी टॉपर, और एमएससी में भी टॉपर होंगे ही; ये सहज हैं, इकोनॉमिक्स में पूरी यूनिवर्सिटी में टॉपर रहा है, मैट्रिक-इंटर में भी टॉपर रहा था; दोनों आईएएस की तैयारी कर रहे हैं।" वह एक सुर में बोलता जा रहा था, थानेदार को हस्तक्षेप करना पड़ा, "वक्ता ने अपना परिचय नहीं दिया!" बोलकर थानेदार परवेज को सिर से पैर तक गौर से देखने लगा, जैसे किसी बड़े अपराध का उद्‌भेदन बस करने ही वाला हो।

"मुझ गरीब को लोग परवेज कहते हैं, सहज के साथ ही एमए किया है मैंने, पॉलिटिकल साइंस में।"

"ये दोनों आईएएस बनने की तैयारी कर रहे हैं, और आप अभी से ही नेता बनने की तैयारी में हो!" थानेदार का दूसरा वाक्य फीकी मुस्कान में गुंथकर ही बाहर आ पाया था।

"..." तीनों एक-दूसरे का मुंह देखने लगे; थानेदार की रौबदार प्रस्तुति से वे तीनों शब्दहीन हो चुके थे।

"बोलिए देश के होनहार नौजवान! आपकी क्या सेवा कर सकता हूं।"

रिवॉल्विंग चेयर में पीछे की ओर धंसते हुए कहा उसने; उसके हाव-भाव से लग रहा था जैसे विष्णु भगवान शेषनाग पर लेटे हों!

"सर हाजत में जो बंद है वह हमारा फ्रेंड है..." सहज बोल ही रहा था कि थानेदार ने हस्तक्षेप किया, "लेकिन यह तो यूनिवर्सिटी का पढ़ा नहीं जान पड़ता!"

"सर गरीबी का मारा है, इंटर से आगे पढ़ नहीं पाया।" बोलते-बोलते सहज विनम्रता के निचले पायदान पर आ गया था; आगे परवेज खुशामदी भरे अंदाज में बोला, "जेनविन मुद्दे पर अड़ जाता है, पर है दिल का साफ लड़का।"

"तुम इसे जनविन मुद्दा कहते हो!" थानेदार कुर्सी पर सीधा होकर भड़क उठा, "किसने देखा है कोरोना? वायरस के नाम पर पब्लिक प्लेस में हंगामा करने पर राष्ट्रद्रोह तक का दफा लग सकता है, हाईकोर्ट से नीचे बेल होगी नहीं! नौ महीना दाल-खिचड़ी खाएगा तो समझो मुद्दे पर अड़ने-लड़ने का नशा ही उतर जाएगा।" आगे बोलने के लिए तीनों में से किसी को कुछ नहीं सूझ रहा था। साहस बटोरकर परवेज बोला, "देखिए सर, सहज हंसामल अंकल के बेटे हैं, इनकी बात तो रख लीजिए।"

"आप हंसामल के बेटे हैं!" बाहर बैठे सब कुछ सुन रहे मुंशी जी ने आवभगत दिखाते हुए बोला, फिर हाथ से संकेत करते हुए कहा, "आप लोग आइए, यहां स्वागत-कक्ष में बैठिए।"

तीनों के स्वागत-कक्ष में जाते ही मुंशी जी थानेदार के पास आया; धीमे स्वर में बोला, "सर, हंसामल जी शहर में कायदे के आदमी हैं; बात फैलेगी तो समझिए किसी-न-किसी का फोन आ ही जाएगा दोपहर तक, झंझट मोल लेने से क्या फायदा!"

"लेकिन ऐसे कैसे छोड़ दें, स्टेशन डायरी में इंट्री हो रखी है!" बोलकर थानेदार कान खुजलाने लगा, शायद कोई उपाय दिख जाए।

"अरे सर हलफनामा लेकर छोड़ देते हैं, कि भविष्य में कोई उल्टी-सीधी बात नहीं करूंगा।" काबिलियत साबित कर देने की भाव-भंगिमा में मुंशी जी ने कहा, फिर चुटकी बजाते हुए बोला, "बस समझिए हमेशा के लिए बंध जाएगा कानून की गिरफ्त में; और सबसे बड़ी बात एक नेता कम हो जाएगा शहर में!"

"तो जाइए ले लीजिए हलफनामे में सिग्नेचर।" थानेदार के बोलने का लहजा बता रहा था आधे मन से बोला है।

मुंशी जी हलफनामे वाले फॉर्म में दस्तखत लेने हाजत में गया। रामू को हलफनामे की बाबत बताया तो वह हत्थे से उखड़ गया, "मैं कोई चोर-डकैत हूं क्या जो हलफनामा देता फिरूं!" रामू की ऊंची आवाज सुनकर स्वागत-कक्ष से तीनों लॉकआप की तरफ दौड़े। मुंशी ने तीनों को हलफनामे की औपचारिकता समझाई। सहज ने रामू को साइन के लिए राजी करना चाहा; वह हाजत के अंदर ही भड़क उठा, "मुझे किसी हलफनामे में साइन नहीं करना; मुझे जेल भेजने दो, कटघरे में भी चिल्लाऊंगा कि कुरौना वायरस आ रहा है, पर किसी को सोचने की फुर्सत क्यों नहीं है!" हाजत में बंदी चिल्लाए तो थानेदार की कुर्सी में कंपन होने लगती है; थानेदार हाजत के पास आकर आग-बबूला हो उठा, "कितना बड़ा नेता है तू रे! दूध ही तो बेचता है न?"

"सर कृपा करके आप मेरे दूध और गाय-भैंस पर मत जाइए," रामू अपने को संयमित कर बोला, "साहबजी, सिर्फ इतना बता दीजिए क्या हम किसी को थप्पड़ मारे हैं जो आप हमें मच्छर कटवाए हैं रातभर!"

"बहस नहीं, बहस नहीं! ज्यादा बहस करोगे तो अभीये चालान कर देंगे!" थानेदार की आवाज नीची थी; आंखें चढ़ी थीं।

"मैं जेल से नहीं डरता, भेजीए आप हमको जेल!" इतना बोलकर रामू अपनी बायीं हथेली लॉकअप से बाहर लाते हुए कहा, "कल आपने मेरी हथेली मरोड़कर फ्रैक्चर कर दिया है! हाथ मेरा टूटा है न, आपको भला कैसे पता होगा! जेल भेजने से पहले मेडिकल तो होगा ही होगा, कौन-सा कानून में है कि आप किसी की भी हड्डी-पसली तोड़ सकते हैं लॉकअप में!" फ्रैक्चर वाली बात सुनते ही थानेदार के चेहरे की रंगत बदलने लगी। छोटा दारोगा ने थानेदार को अंदर आने का संकेत किया। चेंबर में उसने थानेदार के कान में कहा, "यह ग्वाला सही बोल रहा है, मुझे तो कल ही शक हो गया था माइल्ड फ्रैक्चर का, लफड़ा मोल लेने से क्या फायदा; ऐसे-वैसे को दिनभर पकड़ते रहेंगे तो चला पाएंगे थाना!"

"सही कह रहे हो, मुफ्त में मीडिया-फीडिया भी पीछे पड़ जाएगी; दो बजे से सीएम रैली वाली मीटिंग भी है एसपी ऑफिस में।" फिर उंगली से उसे बाहर निकालने का संकेत किया, बिना एक शब्द बोले।

थाने से निकलने के बाद भी सभी के होंठ सिले लग रहे थे; आंखें नीचे झुकी हुईं, जैसे कोई बड़ा पाप हो गया हो उन लोगों से!

"तुम सब गूंगे क्यों बने पड़े हो, मैंने कोई गुनाह किया है क्या!" चुप्पी

रामू ने तोड़ी।

"चलो पहले तुम्हें घर छोड़ आते हैं, चाची परेशान हो रही होंगी," परवेज ने समझदारी वाली भाव-भाषा में कहा।

तीनों रामू के झोंपड़े पर पहुंचे; कोरोना-कैबिनेट का कोरम पहले से ही मौजूद था। रामू को कानून की गिरफ्त से छूटकर आया पाकर माँ की आंखें डबडबा आईं। आंचल से आंखें मलते हुए बोली, "सहज, इसकी शादी किसी भी लड़की से हो जाने दे, अब मुझे कोई ऐतराज नहीं है; नहीं तो दिनभर छुट्टा घूमता फिरेगा, सबसे लड़ता रहेगा।" क्षणभर रुककर फिर बिफर पड़ी, "अरे बे-अक्ल! सरकार से कोई पार पाया है आजतक? किस कीड़े-मकोड़े के पीछे पड़ा है तू, जब धरती है तो कीड़े पैदा होंगे ही न! सरकार के पास बड़ी-बड़ी आखें होती हैं, जब उन्हें मच्छर-मकोड़े नहीं दिख रहे हैं तो तुम्हें क्या पड़ी है ओखली में मुड़ी धरने?" मंजरी ने चाची का हाथ पकड़कर ढांढ़स बंधाया, फिर घर में उनकी खटिया तक पहुंचाया।

थाने से निकलकर रामू के शेड तक पहुंचने के दौरान सभी के चेहरे एकदम सपाट दिख रहे थे, दुनिया से बिल्कुल बेखबर! अब शेड में कोरोना-कैबिनेट के बैठते ही सभी की मनोदशा उनके चेहरे में उगने लगी। सबसे अधिक अकुलाहट शायनी के मन में थी, "मेरे हिसाब से रामू बिल्कुल जेनवीन इश्यू लेकर पार्टी कार्यालय में गया था।" शायनी का सहारा पाकर रामू उबल पड़ा, "जरा ठंडे दिमाग से सोचो, समय हाथ से निकलता जा रहा है; पत्र भेजे हुए एक सप्ताह तो होने चला है, सरकार मायने कुंभकर्ण! कब जागेगा पता नहीं। मुझे तो इस बस्ती की चिंता हो रही है, यहां तो लोग दिन में कमाते हैं तो रात को खाते हैं, कुरौना पहुंच गया तो दाना-पानी कहां से आएगा!" उसकी बात समाप्त होने के बाद भी सभी चुप थे; रामू अधैर्य हो उठा, "अरे भाई, आपको अपने शहर की चिंता नहीं है क्या?"

"देखो रामू, हम सभी को रामघाट ही नहीं पूरे देश की चिंता है; देश में कोरोना का आना रुकेगा तभी तो देश बचेगा और रामघाट भी।" बोलकर अहम सचमुच चिंतित हो उठा।

"संक्रमण का मामला दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है! अब आगे क्या करना चाहिए?" मनोज ने सिर झटकते हुए कहा।

"कल शाम के न्यूज में कुरौना संक्रमितों की संख्या सौ पार कर चुकी है," बोलकर रामू ने सिर को झटक दिया जैसे अपने माथे से किसी

कीड़े-मकोड़े को भगा रहा हो; फिर बोलता गया, "एक मार्च से ही हम लोग उड़ान बंद कराने के लिए दौड़ लगा रहे हैं, पर मामला जस का तस है; अब तो समझो रामघाट क्या, देश भी गया गर्त में," बोलकर वह बेचैन होकर टहलने लगा।

"एक बात तो तय है, उड़ान बंद होने का आदेश सरकार के स्तर से ही जारी हो सकता है; यहां लोकल में माथापच्ची करने से कोई फायदा नहीं है," दूरदर्शिता दिखाते हुए सहज बोला, फिर उत्साहित होकर कहा, "पापा बता रहे थे ब्रह्मा सर शायद दो दिन पहले ही आ गए हैं; अहम उनसे आज ही बात कर ले तो कल मिलने का प्लान करते हैं, यदि समय तय हो जाए तो हम सभी चलेंगे।"

"ब्रह्मा सर के जमाने में भी तो अपने स्कूल में बाल-कैबिनेट लगती होगी? हम लोग उनसे चर्चा करेंगे तो वो देश के कैबिनेट के सामने हमारे कैबिनेट की बात जरूर पहुंचाएंगे!" मंजरी उत्साहित होकर बोली।

"मैं ब्रह्मा सर से आज ही बात कर लेता हूं, जब भी समय देंगे पूरी कैबिनेट वहां मूव करेगी; बात पक्की?" अहम ने उद्घोषक वाली अदा से कहा।

"या-याआआअअ..." पूरी कैबिनेट का समवेत स्वर बाहर बस्ती की ओर फैलने लगा, जैसे कोई जयघोष हो रहा हो। न जाने किधर से भीमरवा सुभाष मार्ग में प्रकट हो आया, ऊंचे स्वर में चेतावनी-सी देते हुए ...सोचो-समझो-बुझो-जुझो सोचो-समझो-बुझो-जुझो...

शेड से बाहर आते हुए सभी के चेहरे पर आशा की किरण पुनर्जीवित हो उठी; ब्रजेश ब्रह्मा सर भारत सरकार में संयुक्त सचिव हैं, वह चाहेंगे तो सरकार की समझ में बात आ जाएगी कि फ्लाइट बंद होना ही कोरोना को रोकने का एकमात्र उपाय है। सभी सुभाष मार्ग पर आगे बढ़ते गए। बस्ती की जिंदगी जवां हो चुकी थी, वुहान-वायरस से बेखबर! सभी ने राहत की सांस ली, जिंदगी का बेखौफ कारवां बढ़ता ही रहेगा। उम्मीद और उल्लास में डूबते-उतराते वे अपने-अपने रास्ते पर बढ़ गए; रामघाट तीरे से कानों में पड़ रही रामधुन...हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे...से बेखटक, मानस पाठ ...काम कोह मद मान न मोहा...से बेखबर।

7

9 मार्च; सुबह सूरज की सुनहरी किरण रामघाट में होली के आगमन की दस्तक देती प्रतीत हो रही थी। कोरोना की आहट से आवेशित कोरोना-कैबिनेट के लिए होली के कोई मायने नहीं रह गए थे; सभी निकल पड़े ब्रह्मा सर से मिलने। आज मंजरी भी साथ हो ली थी। पच्चीस दिनों में वह न के बराबर घर से बाहर निकली थी। बैठे-बैठे उसकी मनोदशा पटरी से उतरने लगी थी; शायनी ने मोबाइल-वार्ता के दौरान ऐसा नोटिस किया था। उसने सलाह दी थी रामू के संग थोड़ा-बहुत यहां-वहां हो लेने के लिए, यदि संकोच या संकट दिखे तो बाकी साथी-संगी के साथ ही सही। सभी ब्रजेश ब्रह्मा के भव्य द्वार पर नि:संकोच खड़े थे। आज सुबह ग्यारह बजे मिलने की सहमति कल रात को ही उन सभी तक पहुंच गई थी। उन सभी ने राहत की सांस ली थी, अब कोरोना वायरस का खेल समझो खत्म! परिसर का मुख्य द्व ार मंडप सरीखा था। वृहद भवन का विन्यास बाहर से देखते ही बनता था। सामने विशाल बालकनी एवं दाएं-बाएं मध्यम बालकनी में सजे-खिले गमले जैसे आगंतुकों को हजार हाथ से अभिवादन कर रहे हों। उन सभी बालकनी के ऊपर गोलाकार-त्रिभुजाकार कटे-झुके छज्जे; जैसे पीसा की झुकी हुई मीनार के छोटे-छोटे बच्चे सामने अठखेलियां कर रहे हों! मुख्य द्वार के बाएं स्तंभ पर ब्लैक ग्रेनाइट में खुदे 'ब्रह्म लोक, रामघाट' पूरे भवन के प्रवक्ता जैसे दिख रहे थे। दाएं गेट पर ब्लैक ग्रेनाइट में ही खुदे 'मनीषा' और उसके नीचे 'ब्रजेश ब्रह्मा, आईएएस' की चमक भवन मालिक के शक्ति-संकेत-सा दे रहे थे। शायनी तो आईएएस शब्द पर गड़ गई, जैसे शब्द के अंदर विचरण करने लगी हो, मौन संकल्प के साथ, '...मैं तो अपने छोटे घर में ही इन तीनों शब्दों को टांगकर इसके मायने को चरितार्थ करूंगी!' सहज की नजर 'आईएएस' और पूरे भवन के बीच आंख-मिचौली करती रही, '...पापा का बनाया घर भले ही पुराने मॉडल का हो पर इससे कम तो नहीं है! अब तो हर हाल में आईएएस बनना ही पड़ेगा, लेकिन 'आईएएस' से टपकते पैसों से रामघाट के लिए कोई नया चमत्कार जरूर करना है।'

परवेज तो पूरे परिसर पर कब की एकमुश्त नजर डालकर बगल में थूक चुका था...! अहम पूरी इमारत के ऊपर अटका हुआ था, शायद कुछ सोचते हुए, '...भारत भूमि में मानव जाति की दो सबसे बड़ी संपदा मानवता और संवेदनशीलता की जड़ खोद डालने पर आमादा गिरोह की अग्रिम पंक्ति!' नौकरी छूटने, बल्कि छिन जाने के अपमानजनक रवैये से आहत मंजरी अभी

भी कुछ ज्यादा सोचने की स्थिति में नहीं थी, बस बाबा साहब अंबेडकर की तस्वीर मन में तैरने लगी थी, '...सभी 'बड़े' आपकी किताब में मनमाफिक छेद करते जा रहे हैं।' रामू की आंखें कभी आईएएस शब्द पर पड़तीं, तो कभी वहां से छिटककर धरती में कीड़े-मकोड़े को ढूंढ़ने लगतीं; उसके दिमाग में हर पल जहाज और कोरोना वायरस चलते रहते थे। यहां भव्य गेट के सामने भी उत्तेजित अवस्था में वह अस्थिर-सा था; गेट के सामने कभी आगे, तो कभी पीछे कदमताल करता हुआ, जैसे अंदर की आंधी से पूरा गेट अभी का अभी ढहा देगा। रॉबर्ट मोबाइल में ही एनजीओ एक्टिविटी का लोकेशन देखे जा रहा था। अरशद साथ लाए पाक कुरान शरीफ में खास-खास आयतों पर नजर फिराता जा रहा था। सभी बार-बार घड़ी भी देखे जा रहे थे; अब तो सवा ग्यारह हो चुके! अंदर से गेट की भारी कुंडी खिसकी, दोनों पल्ले अपने-आप पीछे हटने लगे; सामने अर्दली खड़ा दिखा, बाअदब। वह उन सभी को अपने पीछे ड्राविंग रूम में ले आया; वृहद अंडाकार, कुछ-कुछ डायनासोर के अंडे जैसा! सुसज्जित, अठखेलियां करती कलाकृतियां! दीवारों में टंगे प्रशस्ति-पत्र, अवॉर्ड, सर्टिफिकेट, चमकते हुए; जैसे मुस्कुराकर यशोगान कर रहे हों।

"हेलो डियर! गुड मॉर्निंग टू ऑल ऑफ यू," अंदर की ओर खुलने वाले दरवाजे के पर्दे को चीरते हुए ब्रह्मा सर प्रकट हुए; सभी को लगा जैसे सच में सामने किसी महापुरुष का अवतार हुआ हो! उसने खड़े-खड़े ही एक किनारे से एक-एक करके सभी पर आंखें उठाईं, वजनी मुस्कान के साथ। सभी को समझते देर नहीं लगी अपना-अपना परिचय देना है, "...शायनी... सहज...अहम... मंजरी...परवेज...रामू...मनोज...अरशद...दिनेश...रॉबर्ट।" सभी अपना-अपना नाम बताते गए, आंखें बारी-बारी से एक से दूसरे पर फिसलती गईं।

"आई एम एक्सट्रीमली सॉरी; एक बार स्टीम बाथ में बैठ जाता हूं तो दुनिया ही भूल बैठता हूं!" चेहरे पर क्षमा-याचना के बजाय 'चलता है' वाला भाव संप्रेषित करते हुए उसने कहा। अगले ही क्षण चेहरे में अदृश्य स्पंदन-सा हुआ, जैसे उसे कुछ याद आया हो, बोले, "आज तो रामघाट के लिए पन-होली है! और कल रंग-होली।" सभी के मुंह से समवेत स्वर निकला 'जी-जी'।

"परंपरा के निर्वाह में भी एक अलग आनंद है, तो चलो पन-होली की शुरुआत आज तुम लोगों से ही करता हूं।" उनका बोलना बंद हुआ नहीं

था कि एप्रन धारी कुक अंदर से पानी का जग लिए हाजिर हो गया। उसने शायनी से शुरू कर सभी के ऊपर जल छिड़काव किया, आशीर्वचन जैसे हस्त-संचालन से; चेहरे में मुस्कान-मस्ती-होली-हुलिया की नकल लाते हुए। पानी का जग पीछे खड़े कुक की ओर थमा दिया, बिना उसे देखे। अब नैनृत्य कोन में स्थापित ऊंची कुर्सी में बैठ गए, आरामदायक मुद्रा में।

"तो भई, आज और कल तो होली है रामघाट में; लगता है होली की परंपरा लुप्तप्राय होती जा रही है शहरों में!" बोलकर उसने सर्वे करने वाली नजरों से सभी को देखा, फिर बोलते गए, "तुम लोग भी तो होली से बिलकुल बेखबर लग रहे हो; जेड सर ने कल बताया कि शहर के कुछ होनहार बच्चे मिलना चाहते हैं, तभी मुझे लगा क्या बच्चों को याद नहीं कि होली शुरू हो चुकी है!" बोलकर उसकी नाक से हँसी वाली हवा निकली, जैसे कह रहे हों नई पीढ़ी तो संस्कृति का सत्यानाश ही कर देगी।

"सर कल तो हमें होली के रंग में डूबना ही डूबना है; आज तो हम लोग कुरौना में डूबे हुए हैं, समझिए हम सभी कुरौना का भव-सागर तैरकर आप तक पहुंचे हैं!" परिणाम पाने की नौका पर सवार रामू किनारा जैसा कुछ देखकर बोल पड़ा।

"कुरौना? ये किस चिड़िया का नाम है!" उसने लगभग चिढ़ते हुए कहा, चेहरे की लचीली त्वचा में अप्रत्याशित परिवर्तन लाते हुए।

"सर कुरौना मिंस कोरोना," वार्ता को सहज बनाने को खातिर अहम ने कहा।

"किसी चीज को उल्टे-सीधे नाम देना किसी का शगल हो सकता है, पर जरा ये भी तो सोचो, सामने वाले को असहज कर सकता है ऐसा अनर्गल नाम!" उसकी आवाज में नाराजगी आने लगी।

"सर, हमारी बस्ती में लोग बोलचाल में कोरोना को कुरौना ही बोलने लगे हैं, उनके साथ हमें वैसा ही बोलना पड़ता है, इसलिए।" रामू ने कहा, सफाई देने जैसा।

"अरे भई, शिष्टाचार तो निभाओ, जगह के हिसाब से वचन-वाणी का प्रयोग तो करना सीखो; जेड सर ने बताया था तुम लोग भी गांधी स्कूल के एल्यूमिनी हो, फिर इतना तो ख्याल रखो भाषा-भंगिमा बेपटरी न हो!" उसने मित्रवत् समझाते हुए कहा।

"सॉरी सर, अब मैं कुरौना नहीं बोलूंगा।" रामू ने भूल-चूक माफ वाली मुद्रा में कहा।

"ओके नो इस्यू, लिव इट; बट व्हाट यू पिपुल वांट टू टॉक अबाउट कोरोना?" बोलकर वे कुर्सी पर आगे-पीछे झूलने लगे, जैसे उन लोगों ने किसी मच्छर-मक्खी की बात छेड़ दी हो।

"सर, इन फैक्ट वुहान से कोरोना..." शायनी की सुरीली आवाज रबड़ जैसी खींची हुई निकल रही थी; ब्रह्मा सर ने टेक ऑवर कर लिया, सुडौल शरीर में लचक देते हुए, "आई नो डियर कोरोना वायरस दैट इज कोविड-नाइनटीन, वुहान से निकलकर इटली, इंग्लैंड, अमेरिका और भी बहुतेरे देशों में फैलता जा रहा है," अब लचक बंद करके बोलने लगे, "बट वी शुड नॉट बि टू मच वरीड अबाउट इट।"

"क्या यह हमारे देश में तबाही नहीं मचाएगा?" मंजरी के मन में कब से कैद डर जैसे पतले छिद्र से होकर निकला।

"जहां तक मुझे पता है तुम लोग रामघाट के होनहार बच्चे हो, एक-दो टॉपर भी हो; तुम्हें तो पता होना चाहिए यूरोपियन और अमेरिकन कंट्रीज का लॉन्गिट्यूड-लैटीट्यूड क्या है, वहां का वेदर कंडीशन कैसा है!" फिर कुर्सी में तनकर बोलने लगे जैसे किसी हाई लेवल मीटिंग की अध्यक्षता कर रहे हों, "वेदर इन दोऊज कंट्रीज आर प्रो-कोरोना टाइप, व्हेयरएज वेदर कंडीशन ऑफ इंडिया इज डिफरेंट; कुछ ही दिनों में इंडियन सबकॉन्टिनेंट में टेंपरेचर हाई होने लगेगा तो वैसे भी कोरोना का टिकना मुश्किल है।" अब सामने की ओर झुककर आत्मविश्वास की वेबसाइट खोलने जैसी भाव-भंगिमा बनाते हुए कहा, "सबसे बड़ा फैक्टर हम इंडियंस की इम्यूनिटी इतना वलनेरेबल नहीं है जितना वेस्टर्न कंट्रीज का है। अरे भई, हम तो कीचड़-कमल-कोयला-कीड़े-केकड़े के साथ खेलते-कूदते बड़े होते हैं! ...हअहअहअअ..." बोलते-बोलते वह अपने-आप ही हँसने लगे।

"आदमी भी तो कीड़े-मकोड़े के समान ही हैं इस देश में सर, तभी तो जनता के साथ भी खिलवाड़ होते रहता है दिन-रात; उससे भी तो इम्युनिटी बढ़ती है!" बोलने के बाद ही रामू को समझ में आया कि उसने क्या कहा है।

"तुमने अपना नाम रामू बताया न!" रामू की बात सुनकर ब्रह्मा सर की नजरें कड़ी हो गई थीं, बोलते हुए में भी आवाज में चढ़ाव आ गया।

"जी-जी, लोग मुझे रामू ग्वाला भी कहते हैं।"

"लगता है अंदर में कोई गुस्सा पाल कर चले हो क्या!" उसने आंखें छोटी करके रामू पर गड़ा दीं।

"सर हम लोग आपके पास इसलिए आए हैं कि कोरोना को और बढ़ने से रोकने के लिए सभी विदेशी फ्लाइट तुरंत बंद होनी चाहिए।" अब बोलने के दौरान रामू के चेहरे में याचक भाव उभर आया, इस कदर कि अभी-अभी धरती पकड़ लेगा।

"हम लोगों ने कोरोना इश्यू पर एक पत्र भी दिल्ली भेजा है, सचिव लोगों के नाम।" यहां आने के मकसद पर बात शुरू करने के ख्याल से सहज ने कहा।

"पत्र भेजा है? और भी कुछ किया है!" सहज की ओर केंद्रित होकर ब्रह्मा सर ने पूछा।

"कोरोना से निपटने के लिए हम लोगों ने कोरोना-मंडली भी खड़ा किया है।" अहम ने हर्षित होकर कहा।

"तुम लोग ब्रिलिएंट स्टूडेंट कहे जाते हो; मुझे तो तुम लोगों की समझ पर तरस आता है," ब्रह्मा सर ने सिर को नकारते हुए कहा, फिर चेहरे में गुस्से की परत लाकर बोलते गए, "फ्लाइट्स बंद करने का डिसीजन लेना इतना आसान है क्या? अरे भई देश-दुनिया में हंगामा मच जाएगा! इकोनॉमी का ग्रोथ रेट घट जाएगा!"

"सरकार के लोगों को आने-जाने में भी तो दिक्कत होगी! वे मुंबई-बेंगलुरु-भोपाल-जयपुर कैसे आएंगे-जाएंगे।" रामू बेधड़क बोल पड़ा, शब्दों में रहस्यपूर्ण वजन डालते हुए।

"तुम क्या करते हो जी?" उसने रामू को घूरते हुए पूछा।

"दूध बेचता हूं।"

"ऐसे ही लड़कों के साथ घूमते हो तुम लोग!" उसने सभी की तरफ नाराजगी जाहिर करते हुए कहा, फिर बोले, "लगता है इसी के कहने पर तुम लोगों ने पत्र लिखा होगा; शायद नागरिक उड्डयन सचिव को?" उनके चेहरे में ऊब पसरती गई, फिर खिन्न होकर बोले, "सरकार को फुर्सत है ऐसे लेटर्स पढ़ने की, एक से बढ़कर एक बड़ा-बड़ा काम हो रहा है अभी सरकार में; कोरोना को लेकर तुम लोग ऐसे पागल हुए जा रहे हो जैसे सबसे पहले तुम्हारा ही गला पकड़ने वाला है? अरे भई कोरोना से भी निपटा जाएगा। पहले, उसे ठीक से आने तो दो! उसके लिए अलग से रणनीति बनाई जाएगी, पर समय आने पर ही न!" ब्रह्मा सर के बोलने के बाद एकदम चुप्पी छा गई।

थोड़ी देर बाद कब से जगी जिज्ञासा को परवेज ने बाहर आने दिया,

"सर, बाय द वे कौन-कौन-सा बड़ा काम हो रहा है अभी सरकार द्वारा?"

"तुमने अपना नाम परवेज बताया न?" सर ने परवेज पर शंकालु नजर डालते हुए पूछा, फिर दोनों होंठों को दबाकर छोड़ते हुए बोले, "तुम्हें तो जरूर पता होगा कैसे-कैसे काम हो रहे हैं देश में अभी!"

"कौन-सा काम सर? वही पंजी वाला ना!" रामू चुप नहीं रह पाया।

"देखो रामू तुम्हें बोलने के कायदे सीखने पड़ेंगे," बोलकर वे रामू को एकटक देखने लगे, फिर स्मृति की खाई में छलांग लगाते हुए बोले, "आज के अखबार में भी किसी रामू ग्वाला की खबर छपी तो है, जो हवाई जहाज की उड़ान बाधित करने के लिए एयरपोर्ट से लेकर पार्टी कार्यालय और थाना तक हंगामा काटता रहा है दो दिन से, साथ में बच्चों का झुंड लेकर बाल-दुरुपयोग करते हुए! तुम वही तो नहीं हो?"

"जी सर, दूसरा रामू ग्वाला कौन है रामघाट में!" रामू ने बेफिक्री से कहा।

"फिर तो तुम्हारा क्रिमिनल रिकॉर्ड है जी, तुम मेरे घर में कैसे आ गए!" बोलते-बोलते वे सिर उठाकर बोलने लगे, "तुम्हारी यही हरकत रही तो तगड़ा झटका लग सकता है तुम्हें, राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के दायरे में आ सकते हो; समझो तुम्हारी बात दिल्ली कभी भी पहुंच सकती है!"

"सर ऐसा करता हूं, मेरी बात दिल्ली पहुंचने से पहले मैं खुद दिल्ली पहुंच जाता हूं?" बोलते हुए रामू को लगा शब्द खुद-ब-खुद उसके अंदर से निकले जा रहे हैं, "फ्लाइट बंद कराने के लिए मैं तो कहीं भी जाने के लिए तैयार हूं।"

"सर, मैं तो शुरू से ही चुप बैठी हूं," मंजरी शालीनता के साथ बोलती गई, "लेकिन हम लोग तो उसी काम के लिए यहां आए हैं जो रामू बोल रहा है; अपनी बात रखने के लिए वह सही शब्द का सही समय पर इस्तेमाल भले ना कर पाता हो, लेकिन वह अंदर से साफ दिल है, देश-दुनिया की तकलीफ से बेचैन रहता है हर पल।" वार्ता को पटरी पर लाने की गरज से मंजरी मृदु हो उठी।

"सॉरी, सही शब्द सही समय की बात रहने दो, ऐसे आदमी के साथ तो बात करना भी कष्ट साध्य है!" बोलकर उसने लंबी सांस ली, फिर वार्ता समापन के ख्याल से पूछा, "और क्या-क्या गतिविधि है तुम लोगों की आजकल?"

"कोरोना से निपटने के लिए हम लोगों ने अपने स्कूल वाले बाल-कैबिनेट को कोरोना-कैबिनेट के रूप में पुनर्गठित किया है।" सहज ने हर्षित होकर

सूचना दी।

"मुझे अफसोस है गांधी स्कूल में पढ़कर भी तुम लोगों को कानून की साधारण समझ भी नहीं है! अरे भई, देश में एक संवैधानिक कैबिनेट के रहते दूसरा कैबिनेट खड़ा करना देश-द्रोह की श्रेणी का अपराध माना जाएगा जी!"

"..." ड्राइविंग रूम में मरघट-सी शांति छा गई। निरुत्तर कर देने वाली चुप्पी मंजरी को खलने लगी, संयमित होकर बोलने लगी, "सर हम लोग गांधी स्कूल में पढ़े हैं, हमारा कर्तव्य-बोध कहता है अपनी माटी का कर्ज उतारने हमें देश और समाज के लिए आगे आना चाहिए, खासकर विपत्ति-काल में।"

"रामघाट के बच्चे ऐसी अफलातूनी हरकत करें इट इज व्हेरी पेनफुल; ऐसी दकियानूसी विचारधारा से मैं बिल्कुल सहमत नहीं हूं!" बोलकर वे सिर को नकारने लगे, आगे शब्दों में दंत-दाब देते हुए बोलते गए, "आई वुड लाइक टू एडवाइस यू पीपुल जस्ट फोकस ऑन योर करियर; अरे भई, देश चलाने के लिए सरकार बैठी है न! बि पर्टिकुलर अबाउट योरसेल्फ एंड कॉन्सेंट्रेट ऑन योर टॉर्गेट, प्लिज डोंट थिंक बीआंड योर लिमिट!"

"..." संकोच में वे एक-दूसरे को देखने लगे।

"अरे तभी से बात किए जा रहे हैं, चाय-पानी के लिए पूछा ही नहीं!"

"नहीं सर, आज रहने दीजिए।" सभी के मुंह से एक साथ निकला, कोरस जैसा।

"वैसे भी आज पन-होली है, घर ही निकलना चाहिए।" अहम ने कहा, वार्ता का अंत समझकर।

"स्योर-स्योर; कोरोना वायरस का फितूर दिमाग से निकाल दो, इससे घबराने की जरूरत नहीं है। कोरोना-कैबिनेट के नाम से अपना समय खराब करने से क्या फायदा? शांत रामघाट में बेवजह हलचल पैदा करने से सबकी जिंदगी खराब होगी सो अलग! सरकार तो चाहती है देशवासी अपने-अपने काम से मतलब रखें, बोलें कम, सुनें ज्यादा; तुम लोग भी आईएएस, पीसीएस, लेक्चरर, बड़े बिजनेसमैन बनने की सोचो भई!" ड्राइविंग रूम से बाहर आते हुए भी ब्रह्मा सर का बोलना जारी था, "वैसे प्रभु राम की कृपा हम लोगों पर चली आ रही है, अब तो चारों तरफ प्रभु राम पर भरोसा बढ़ता जा रहा है; अरे भाई अपने रामघाट तीरे तो प्रभु राम का अखंड भक्ति-भजन सालों से जारी है, फिर तो इस शहर के नौजवानों को डरने की जरूरत ही नहीं है! वैसे भी यह बहुत मजबूत सरकार है, कोरोना को भी पटकनी दे

देगी," दरवाजे के पास आकर उसने गर्व से कहा, छाती फुलाकर, "लेकिन लड़ाई का मजा तो लड़ने में ही है न जी!" सभी दरवाजे से बाहर निकलने लगे; वे हिदायत देना नहीं भूले, "एज सच कोरोना इज नॉट ए बिग इश्यू; अपना ख्याल रखना भर है, बस! टाइम टू टाइम बीस सेकंड तक हाथ धोते रहना है, पॉकेट में सैनिटाइजर रखकर चलना है, जब-जैसे जरूरत महसूस हो मास्क..." उनके बोलते रहने के बीच ही बरामदे से उन सभी के अनुशासित स्वर-शृंखला निकल पड़ी, '...नमस्ते सर...नमस्ते सर...नमस्ते सर...।'

सड़क पर आकर वे सभी पलभर मौन खड़े रहे; ब्रह्मा सर की फटकार से सभी की मनोदशा चित्त सी हो चली थी। फीकी हँसी के साथ अरशद के बोलने से पसरा तनाव छंट गया, "मेरे हिसाब से ब्रह्मा सर सच ही कह रहे हैं, हम लोगों को अपना-अपना काम छोड़कर ये सब करने की क्या जरूरत है? अभी तो मुझे इजाजत दो, मुझे अब्बू को लेकर हस्पताल जाना है; वैसे भी अब मैं इन चीजों में नहीं पड़ने वाला, वैसे भी आजकल हमारे अंसारी टोला में जब-तब पुलिस आ धमकती है, किसी को भी उठा ले जाती है।" बोलकर वह बाइक स्टार्ट कर चलते बना। रॉबर्ट भी बाइक में चाभी डालकर बोला, "मेरे को विलेज टू विलेज जाते रहने का, एनजीओ वेलफेयर स्कीम स्पीड पकड़ने का, कोविड नाइनटिन आ जाने का, देन पब्लिक को अवेयर करने का, इवेन देन जब टाईम मिलने का कोरोना-कैबिनेट में सर्विस देने का।" बोलकर वह बाय-बाय करते हुए चलते बना, क्षमा-याचना वाली मुद्रा लिए। कोरोना-कैबिनेट का किनारा टूटता देख सभी की आंखें मूक-वार्ता करती दिख रही थीं, '...हां रहने दो कैबिनेट को, और कोरोना को भी...'। उन सभी के चेहरे की भाव-भंगिमा बता रही थी जैसे सभी ने अंदर से मान लिया था, एक आईएएस की बात में दम तो होगा ही! बिना देर किए शायनी को लेकर सहज कार में जा बैठा। अवसर देखकर रामू ने भी मंजरी को अपनी बाइक में बैठने का इशारा किया। मंद मुस्कान छिपाए सभी अपनी-अपनी बाइक की तरफ बढ़ चले। सभी के प्रस्थान-पथ में कोरोना-कैबिनेट का ख्याल गुम हो गया जान पड़ रहा था, पीछे कहीं हवा में।

आज एक अरसे बाद सहज के हाथ से स्टीयरिंग पर कोई धुन उत्पन्न हो रही थी। शायनी की ओर तिरछी नजर फेंकते हुए उसने कहा, "कोरोना तो अपनी जगह है, पर हम दोनों की पर्सनल लाइफ भी तो कोई चीज है।" बोलकर उसने उजड़े महल की तरफ आंखें मिचकाईं। लज्जावश शायनी के

मुंह से बस इतना निकला, "जब भी कहो!" रामघाट तीरे से रामधुन...हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे...कानों में तेज पड़ने लगी थी; मानस पाठ क्षीण होकर सुनाई तो पड़ रहा था, पर अर्थ पकड़ में नहीं आ पा रहा था...कहि न सकहिं कछु मन सकुचनी...।

देश-दुनिया की बातें चाहे जितना कर ले रामू, मंजरी के सामने उसके होंठ जैसे सिले होते थे। पर मंजरी को रेलवे केबिन के पास छोड़ने तक में आज उसकी दीवानगी जाग उठी थी, शायद यही सोचकर कि जिंदगी के मजे भी तो कोई चीज है। उसने मंजरी से दिल खोलकर कहा, "आज शाम वहीं पर मिलते हैं, महीनों तो हो गए वो...!" रामू के बोलने के अंदाज और आंखों की दिशा से मंजरी समझ गई कहां मिलने की बात हो रही है। क्षणभर के लिए तो वह डर गई...अरे बाप रे, दुबारा वही सब! पर अंदर से रोमांचित भी हो गई। रेलवे केबिन से पहले ही वह बाइक से उतर गई; रामू अपने झोंपड़े के रास्ते बढ़ चला। अम्बेडकर चबूतरे की तरफ से आ रहा भीमरवा का अट्टहास सुनकर वह रुक गया; वह किसी अनजान के लिए विचित्र संबोधन करता जा रहा था...शेर-सियार बाघ-बकरी भालू-लोमड़ी घोड़ा-खच्चर गाय-गोबर अल्लम-बक्कड़...

8

विपरीत बल के प्रहार से मनोबल निष्क्रियता के आवरण में दुबक लेता है। कोरोना-कैबिनेट में ब्रह्मा सर के वाक्-प्रहार से सभी को अपने सामान्य जीवन में ही सार दिखने लगा। रामघाट में होली के रंग बीते सालों के बनिस्पत इस बार फीके लग रहे थे। मार्च के प्रथम पखवाड़े वाली मोहक शाम होली का अंदरूनी एहसास जरूर करा रही थी। कोई डेढ़ महीने बाद रामू और मंजरी आज यहां मिलने पहुंचे थे, एकांत में; अपने अंदर कुछ तलाशने। उन दिनों को याद करते हुए; कोई ढाई साल पहले एकांत में मिलने का अवसर ढूंढ़ ही लिया था दोनों ने, पहली बार। तब कॉलेज में पढ़ने की कोई गुंजाइश नहीं देखकर दोनों एक-दूसरे में सहारा ढूंढ़ रहे थे। अपने-अपने सामाजिक परिवेश के हिसाब से वे दोनों साहस संचय नहीं कर पाते थे, शहर में कहीं मिलने के लिए। नदी का यह किनारा गायों-चरवाहों का गोचर क्षेत्र हुआ करता है। शहर के लोग इधर भूले-भटके भी नहीं आते हैं। बेर के इस झुरमुट के पास तो कोई हिम्मत करके भी नहीं फटकता; ठीक सामने नदी के पार शवदाह

की अग्निशिखा उठती-बुझती रहती है, जब-तब। तब भी पहली बार मंजरी दुस्साहस करके यहां आ ही गई थी, बकरी चरवाहिन की पोशाक-सी फ्रॉक पहनकर; रामू द्वारा बताए प्रणय-पथ का अनुगमन करते हुए। रामू के लिए दिल में कब से जल रही प्रणय-ज्वाला तब यहां शव दाह की ज्वाला जैसी बुझ नहीं गई थी, और ज्वलनशील होकर स्थायी हो गई; आगे भी बुझ जाने का कोई कारक दोनों में से किसी के अंदर दिखता नहीं।

"वैलेंटाइन डे निकल जाने के बाद तुम्हें मिलने की फुर्सत मिली, वो भी कोरोना के साये में?" रामू आज फिर से बांका छैला बन उठा, मंजरी को यादगार स्थल पर बिठाते हुए।

"कोरोना क्या कयामत भी मुझे डरा नहीं सकती!" मंजरी गड़ गई रामू पर; जैसे असली-नकली का स्कैन कर रही हो, अंत: चक्षु से।

"कल होली है, समझो आज हमारे लिए विशेष दिन है।" प्रणय काल में भी रामू अपनी सामान्य शब्दावली पर ही रहता था, कृत्रिमता की कोई टेक लिए बिना।

"सच्चे दिल वाले मौकापरस्त नहीं होते, जब चाहत चरम पर हो तो कोई भी दिन खास हो जाता है; जमाने की बदरंग होली मुझे पसंद नहीं, और जीवन की असली होली हम लोग यहीं पर खेल चुके हैं, पहली बार में ही।" आम शहरी लड़की के विपरीत मंजरी शर्म से लाल हो चली, उस खास मुलाकात की धुंधली दृश्यावली को मानस-पटल पर चलायमान महसूस कर।

"बेकाम की जिंदगी किसी काम की नहीं होती; कुरौना के खिलाफ लड़ने का माहौल नहीं रहा, फिर तो बेहतर है हम दोनों हमेशा के लिए एक होकर जीवन की नई पारी शुरू करें?" अनिर्णय में पड़े होने की भाव-भाषा में रामू ने कहा, जैसे किसी खेल के आरंभ होने का टॉस उछाला हो मंजरी के सामने; क्षणिक चुप्पी के बाद बोला, "ब्रह्मा सर के वचन-प्रहार से कोरोना-कैबिनेट शायद ही उबर पाए; फिर तो दुनियादारी में लौटकर ही तो कुछ किया जाए अपने भविष्य के लिए?" रामू असमंजस के गर्त में डुबकी लगाता जान पड़ रहा था।

"यू मिन मैरेज! वो भी अभी? उदय भैया..." बोलते हुए में मंजरी के चेहरे में भय उतर आया दिखने लगा; आगे सामान्य होकर बोली, "तुम्हारी माँ भी तो विजातीय शादी के खिलाफ हैं?"

"मंजरी, जीवन में यदि मन के लायक कोई काम नहीं कर पाऊंगा तो

अपने जीवन में सिर्फ खालीपन दिखेगा मुझे," मंजरी की उंगली को अपनी उंगली के घेरे में लेते हुए रामू बोलता गया, "कोरोना को आने से रोकने का प्रयास करना मेरे मन का मानवीय पक्ष था, यदि वहां विराम लग गया है तो दिल में तुम्हारे लिए खिल रही चाहत को क्यों न मुस्कान में बदल दें! मुझे तो लग रहा था कोरोना के खिलाफ मेरी लड़ाई तुम्हें शायद नागवार गुजरे।" बोलकर लंबी सांस छोड़ी रामू ने, फिर सामने दूर देखते हुए बोला, "सच कहूं इसी शक में तुमसे दूर भागता रहा एक महीने से।"

"तुम जिस निर्भीकता से हर जगह सच्ची बातें उठा रहे हो, बड़े-से-बड़े कलेजे वाले को वैसा करने के लिए सोचना पड़ेगा।" बोलकर मंजरी रामू के चेहरे में नजर फिराने लगी जैसे उसके मुख-मंडल में उगे भाव-भाषा से उसका कलेजा पुख्ता होने की माप करना चाह रहा हो; फिर गले के उभार को छूते हुए बोली, "कसम बाबा अंबेडकर की! आज सुबह ब्रह्मा निवास में तुम्हारे सही बात बोलते जाने से मैं अंदर-ही-अंदर खिल उठी थी कि मैं किसी बुजदिल के संग नहीं हूं!"

"सच कहूं तो जब से तुमने कोरोना के बारे में मुझे बताया है, उसी दिन से मैं सोच रहा हूं आखिर किसी को तो देश और समाज के लिए कुर्बानी देनी पड़ेगी!" बोलकर वह मंजरी पर मोहित होता गया, जैसे उसकी धारणा को एक बड़ा अवलंबन मिल गया हो; फिर सांस रोकते हुए बोला, "मुझे तो लग रहा था एयरपोर्ट वाली घटना और उसके बाद थाने में बंद होने वाली बात से शायद हमारे बीच स्थायी दरार न बन जाए!"

"पिछले पंद्रह दिन से कोरोना को दूर रखने के लिए तुम जो प्रयास कर रहे हो यदि बाबा साहब अम्बेडकर आज जिंदा होते तो वे भी ऐसा ही करते; मानव प्राणी के प्रति जितनी संवेदना उनके अंदर थी क्या किसी के अंदर हो सकती है? सच कहूं तो तुम मुझे उसी रूप में दिखते हो और संघर्ष पथ में वैसे ही आगे बढ़ते रहना देखना चाहती हूं तुम्हें!"

"मंजरी, मुझे तो अभी तक कोरोना के कुचक्र के सिवाय कुछ नहीं दिख रहा था; हमारे सभी साथियों ने उसी अनुरूप कोरोना-कैबिनेट का गठन भी कर लिया था, पर कभी-कभी वह नहीं होता जिसकी दिल में तमन्ना होती है।" अब वह शहर की तरफ मुंह करके बोलने लगा, "जब से तुमने कोरोना के बारे में खुलासा किया है मैं हर दिन अखबार में कोरोना वाली खबर जरूर पढ़ता हूं; इस शैतान ने तो दुनिया के काफी बड़े भाग में छलांग लगा दी है,

इंडिया के पास दूर दृष्टि होती तो उसका यहां आना उसी दिन से बंद हो सकता था जिस दिन कोरोना के पांच-दस मामले ही यहां पहुंचे थे; खैर, मैंने तो अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया था, पर अब तो कोरोना-कैबिनेट के रूप में साथियों की संयुक्त शक्ति भी खत्म हो गई, आगे रास्ता धुंधला ही दिख रहा है।"

"यह तथ्य तो इतिहास सिद्ध है, दिल्ली वालों को दूर तक नहीं दिखता; ऐसे इक्के-दुक्के ही राजा-बादशाह या राजनेता हुए हैं जो दिल्ली में बैठकर कदाचित दूरगामी सोच को जन्म दे पाए हों।" मंजरी किसी किताब में खोती हुई दिखने लगी, फिर चेहरे में व्यंग्य-विन्यास के साथ बोली, "इस मायावी सिस्टम में पत्र से परिणाम कभी नहीं निकलता, इसकी छाती पर बैठकर शोर करने से ही यह सुनता है!"

"तो क्या फ्लाइट बंद कराने के लिए मुझे भी दिल्ली जाना चाहिए?" बोलते हुए लगा जैसे रामू के अंदर किसी बड़े निश्चय का उदय हो रहा हो।

"कोरोना-कैबिनेट आगे काम करेगा या नहीं मैं नहीं जानती, पर दिल्ली जाने की बात तो तुम ब्रह्मा सर के सामने कर ही चुके हो!" बोलकर मंजरी के मुंह से हँसी की धार छूट पड़ी, जैसे कहना चाह रही हो तुम तो बुद्धू बन ही गए हो।

"तुम्हें क्या लग रहा है मैं डरपोक हूं? कोरोना से मुठभेड़ के लिए दिल्ली तो क्या मैं जहन्नुम भी जाने के लिए तैयार हूं!" बोलने के दौरान रामू के चेहरे पर संकल्प की सीढ़ी चढ़ती दिखने लगी।

"तुम डरपोक होते तो इस भुतहा बेरी पर एक कुंवारी लड़की के साथ बैठने की हिम्मत नहीं करते!" मंजरी के मन में शरारत आने लगी।

"रियलि!" मंजरी के दोनों गालों को अपने हाथों में लेते हुए रामू रूमानी हो उठा; उसकी आंखों में गड़े-गड़े वह रोमांचित होने लगा, "मम्मी को मनाकर, उदय भैया को पटाकर हम दोनों आज न कल शादी तो कर ही लेंगे; पर अभी कोरोना का कठिन समय तुम्हारे बिना अकेले-अकेले कैसे निकलेगा?"

"तो!" रामू की आंखों में कुछ तैरता-सा महसूस कर मंजरी के रोंगटे अपनी जड़ छोड़कर जीवित होने लगे।

"शो क्यूट मंजरी! आज दूसरी बार उस झुरमुट का सहारा लेने का समय आ गया है न?" मंजरी की आंखों में कुछ ढूंढ़ते हुए-सा उसने कहा; उसकी

आंखों की भाव-भाषा समझकर वह उठ खड़ा हुआ। मंजरी की कमर में हाथ रखकर अंधकारनुमा झुरमुट की ओर चलते हुए उसकी बेताबी बढ़ती गई "मंजरी, अब तो सोचता हूं अपने कोरोना वाले उबलते भेजे में गोली मार लूं और फिर बाकी दुनिया जैसा ही घर बसा लूं।"

"हां रामू, हमारे साथ वाले सभी धीरे-धीरे अपनी जिंदगी शुरू करने लगे हैं; कोरोना तो अपनी जगह है, हम लोग भी अपनी जिंदगी क्यों न जियें।" झुरमुट की घनी छांव में बैठते-अधलेटे होते हुए मंजरी मुक्त सी हो गई।

अगले ही क्षण मोबाइल की 'ट्विंग' ध्वनि से वह सचेत होकर बैठ गई। मैसेज पढ़कर उसकी मुख-मुद्रा सजग हो उठी, कमर से रामू का घेरा हटाते हुए बोली, "अरे यार! अहम का मैसेज आया है; अभी-अभी रामघाट तीरे आने को कह रहा है सभी को?"

दोनों की आंखों में मौन संवाद-सा हुआ, 'आज रहने दो' वाली भाषा में। दोनों के कदम बाइक की तरफ बढ़ चले, अधूरा रह जाने का भार मन में ढोते हुए।

"आज मेरी बाइक में आते तुम्हें बुरा तो नहीं लग रहा, दूध की दुर्गंध से!" बाइक स्टार्ट करते हुए रामू ने कहा; शायद आज वाली असफल मुलाकात की झेंप मिटाने की खातिर।

"मुझे तो सुगंध-सी लगी; अपना काम और अपना नाम सबसे प्यारा होता है।" बाइक में मचलकर बैठती हुई मंजरी बोली। बाइक रामघाट तीरे की तरफ मुड़ चली; सामने से आ रही मानस-पाठ और स्पष्ट होती गई ...लिखा न बिधि बैदेही बिबाहू...

9

...हरषि राम भेटेउ हनुमाना...रामघाट तीरे में मानस पाठ की पंक्तियां परवेज की पकड़ में नहीं आ पा रही थीं, इतने नजदीक से भी। अहम ने सबको यहीं तो आने को कहा था? यहां तो अभी तक किसी का अता-पता ही नहीं! मानस पाठ के शोर से ध्यान हटाते वह खुद ही बोलने लगा और खुद ही सुनने लगा...मौजूदा रायशुमारी सिस्टम ही हिंदुस्तान में फसाद की जड़ है, नेताओं की सारी ताकत तो चुनाव जीतने की भूल-भुलैया में फंसी रहती है, पांचों साल! जाहिर-सी बात है मसलों को अपनी चुनावी जरूरत के हिसाब से तवज्जो मिलती है, इस घनचक्कर में कभी-कभी बड़ी चूक तक हो जाती

है। आज नौ मार्च है, देश में कोरोना वायरस की दर्ज संख्या सौ पार कर चुकी है, होली तो सादगी से मनाने की सलाह दी जा रही है, पर समस्या की जड़ नहीं पकड़ना चाह रहे हैं; विदेशों से कोरोना पॉजिटिव को कैसे रोका जाए, इतनी-सी अक्ल भी अगर गद्दीनशीन को नहीं है, फिर तो हिंदुस्तान को बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है! अक्ल में इतनी-सी बात नहीं आ रही है इंटरनेशनल फ्लाइट बंद कर देने से कोई कयामत नहीं आ जाएगी...

"हेलो मियां फिलॉसफी मैंने पढ़ी है और फिलॉस्फर बनकर तुम बके जा रहे हो, आगे-पीछे डोलते हुए!" आते ही अहम ने परवेज को रंगे हाथों पकड़ लिया।

"अगर मैंने सोच भी लिया तो कौन-सा तीर मार लूंगा?" परवेज ने आम हिंदुस्तानी की भाषा में कहा।

"यू आर रॉन्ग मिस्टर परवेज! मानव सभ्यता के इतिहास में जिस समूह या समुदाय, जिसे समुच्चय में राष्ट्र कहते हैं, ने यदि सोचना बंद कर दिया तो समझो आगे जाकर उसे विलुप्त हो जाना है।" बोलते-बोलते वह अंतरिक्ष में कहीं खो गया-सा बोलने लगा, "चाहे मानव शास्त्रीय विकास हो या फिर मानवीय सभ्यता का, विकासवाद का सिद्धांत दोनों जगह लागू होता है; यानी जो राष्ट्र और समुदाय समय अनुकूल और आवश्यकतानुकूल नहीं होगा उसे क्रमशः विलुप्त हो जाना है!"

"मुझे तो लग रहा है इक्कीसवीं सदी की शुरुआत ही शून्य चिंतन से हुई है, फिर तो पूरी सदी चिंतनविहीन ही निकल जाएगी!" परवेज की चिंतन शृंखला कायम थी। "तुम्हारा खुद का राजनीतिक दर्शन क्या कह रहा है भारत के भविष्य के बारे में?" अहम के बोलने के अंदाज से लगा वह परवेज की सोच को अपने दर्शन के समकक्ष रखकर कोई नई कड़ी जोड़ना चाह रहा है।

"देखो अहम, लोकतंत्र की असली मंजिल होती है स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व," बोलने के दरमियान परवेज सामने खड़े तीन बड़े पेड़ों की ओर देखने लगा, आगे कहा, "स्वतंत्रता तो हमें हासिल करा दी गई, देशवासी के विवेक के कारण बंधुता तो अभी तक कायम है, पर दोनों के बीच की कड़ी जुड़ने के बजाय टूट-सी गई है! समानता की मंजिल की ओर बढ़ने के बजाय हम उससे दूर होते जा रहे हैं, फिर तो आनेवाले दशकों में देश में, समाज में बड़ी दरार पड़नी तय है; आखिर बंधुता कब तक हाथ बांधे दंडवत मुद्रा में रहेगी, वो भी भूखे पेट! जरूरत की चीजों से बिल्कुल मरहूम!" परवेज के स्वर में

हताशा चढ़ने लगी। विचार-प्रवाह अटूट रखने की खातिर अहम ने पूछा, "तुम्हारी नजर में समानता की मंजिल से दूर चलते जाने के पीछे मुख्य वजह क्या है?"

"जहां तक मैं देख पा रहा हूं इसके पीछे मुख्य वजह है धनबल के बूते ही चुनाव जीत पाने का चलन और फिर धन मुहैया कराने वालों का पोषण! ऐसे में हाशिए पर खड़े बहुसंख्यक आम आदमी के हाथ में आती है सिर्फ सांस लेने की आजादी!" अपनी राजनीतिक दृष्टि सामने रखते हुए परवेज को लगा जैसे माथे पर बड़ा-सा वजन आ पड़ा हो।

"तुम्हारी राजनीतिक दृष्टि एक कड़वी हकीकत तो है ही, इसके पीछे एक बड़ा दर्शन भी छिपा हुआ है," बोलकर अहम की नजर रामघाट के गंदे जलजमाव पर टिक गई; अब वह वितृष्णापूर्ण मुद्रा में बोलने लगा, "भारत भूमि में मानवीय दर्शन की चिंतन शृंखला लगभग मृतप्राय हो चुकी है; विशेषत: उच्च पदासीनों की चिंतन दृष्टि तो सदियों लंबी होनी चाहिए, लेकिन यहां कुछ दशकों से उपजे वातावरण ने हमारी चिंतन शृंखला को कुंद कर डाला है, जैसे सड़े हुए पाइप में पानी का प्रवाह अवरुद्ध हो जाना या फिर गंदे पानी का प्रवाह धीरे-धीरे आगे बढ़ते जाना," बोलकर उसने उंगली से रामघाट तीरे का जल-जमाव दिखाते हुए कहा, "वह देखो सामने तथाकथित पौराणिक रामघाट की वर्तमान दुर्दशा! जानते हो ऐसा क्यों है?" अब वह परवेज की आंखों में गड़ गया, "क्योंकि इसकी धारा को कुछ लोगों ने यहां-वहां पाट दिया है, और जलजमाव का परिणाम होता है जलीय तत्वों का विनाश; ठीक इसी प्रकार भारत भूमि के मानव-दर्शन में प्रगति-प्रवाह की जगह सड़ांध आ गई है!" अब वह ऊपर साफ आसमान की ओर देखकर बोलने लगा, जैसे अंतरिक्ष में किसी से वार्ता हो रही हो, "क्या तुम्हें लगता है गौतम बुद्ध, सम्राट अशोक, महात्मा गांधी तथा इतिहास में दर्ज और भी बहुतेरे श्रेष्ठ पुरुषों की चरण धूलि के बराबर भी हम सोच पा रहे हैं? सोचने वाले लोग तो कदाचित हैं भी, पर क्या उन इतिहास पुरुषों के कृत्य के करीब भी पहुंचने का माद्दा बचा है हमारे रक्त में!"

"..."

"ऐसे महापुरुष का निर्माण तो किसी मौलिक जीवद्रव्य से ही तो होगा, जो अब हिंदुस्तान में पैदा होता दिखता नहीं; हमारे बीच से कोई विख्यात वैज्ञानिक भी निकलता तो कोरोना से बचाव का मौलिक सूत्र भारत में बनते देखते हम लोग," शायनी के साथ आकर पीछे खड़े होते ही सहज सीधे

अहम के तर्क-तार से जुड़ गया।

"जिस देश में हर दिन एक से एक राजनेता पैदा हो रहे हैं वहां वैज्ञानिक की जन्म-कुंडली भला कैसे बन सकती है?" राजनीति को मूलभूत समस्या मानते रहने के वशीभूत परवेज ने कहा।

"तुम्हारी अर्थशास्त्रीय दृष्टि क्या कह रही है सहज।" बोलते हुए अहम की आंखें सहज के चेहरे पर गड़ गईं, "यदि कोरोना पूरे हिंदुस्तान को अपनी गिरफ्त में ले लेता है और घर-घाट बंद करने की नौबत आ जाती है, जैसा कि वुहान, इटली, इंग्लैंड में हो रहा है, तो देश के जनजीवन में कितना असर पड़ेगा?"

"यदि कोरोना पैर पसार लेगा पूरे इंडिया में और कुछ देशों जैसा यहां भी लॉकडाउन करना पड़ गया तो समझो इकोनॉमी पर आफत आ जाएगी।" बोलते-बोलते वह कहीं खो-सा गया जैसे किसी भीड़ में भटक गया हो, फिर बोलता गया, "हर प्रकार की इकोनॉमिक एक्टिविटीज बंद होने से अर्थव्यवस्था के हर जॉइंट पर ठहराव और जंग आ जाएगा जिसका दूरगामी असर पड़ेगा जो हमें दिखेगा नहीं, पर अंदर-ही-अंदर बने शून्य को बड़ा करता जाएगा; सबसे बड़ी बात यहां की एक तिहाई आबादी हैंड टू माउथ वाली स्थिति में जी रही है, उनका क्या हाल होगा यह हर कोई अंदाजा लगा सकता है!"

"लेकिन सहज, सरकार में बैठे लोग भी तो बड़े सोच वाले हो सकते हैं, क्या उन्हें ऐसा कोई आभास नहीं हो रहा होगा?" शायनी किसी अदृश्य उम्मीद की डोर पकड़कर बोलती दिख रही थी।

"न्यूज पेपर देखने से तो लगता है एक विश्वास-सा बनता जा रहा है कि मध्य मार्च के बाद तापमान चढ़ेगा तो कोरोना मरेगा इंडिया में, और बात भी फैलाई जा रही है कि हमारी इम्यूनिटी स्ट्रांग है, वगैरह-वगैरह; इससे तो लग रहा है सरकार की सोच भी इसी लीक पर चल रही होगी," बोलकर सहज ने निचले होंठ के अंदरूनी लाल परत हवा में फैला दिए, जैसे किसी अनहोनी की भविष्यवाणी कर रहा हो।

"मजेदार बात तो यह है कि कल तक भी संसद सत्र चला है, आगे दस दिन सत्र अभी बाकी है।" परवेज बोलने लगा तो उसकी आंखें आश्चर्य से फैलती गईं, "अपनी मनमर्जी की बातें हो रही हैं पार्लियामेंट में, लेकिन कोरोना को लेकर कोई एक्शन प्लान पर कोई सार्थक चर्चा नहीं हो रही है! न सत्ता पक्ष की ओर से, न विपक्ष की ओर से।" अब उसके चेहरे में व्यंग्य

तैर गया। "सरकार से अच्छा तो हमारा मित्र रामू है! रामचंद्र नाम होकर भी राम-राम के बजाय इंटरनेशनल फ्लाइट रोकने की बात पंद्रह दिनों से करता आ रहा है।" अब उसने सहज की ओर देखकर पूछा, "यह बताओ, मान लो मध्य फरवरी या एक मार्च से फ्लाइट रोक दी गई होती या आज से भी रोकी जाती है तो देश में क्या-क्या समस्याएं आ सकती हैं?"

"फ्लाइट रोकने से आवागमन में असुविधा तो होती है, इकोनॉमी पर भी थोड़ा-बहुत असर डाल सकता है; पर पूरे देश में तालाबंदी की तुलना में वह तो मामूली असर ही डालेगा।" सहज ने अर्थशास्त्रीय शैली में बयां किया।

"मैं बताता हूं भारतीय सत्ता-दर्शन," अहम बोलने लगा तो उसकी आंखें रामघाट के जलजमाव पर टिक गईं, "सुविधासंपन्न लोगों की तकलीफों के प्रति सत्ता अधिक संवेदनशील होती है, जो स्वाभाविक भी है, क्योंकि सत्ता चारों ओर से उसी वर्ग की मोटी परत से घिरी होती है," अब वह पीछे वाले कृष्णपुरा गांव की ओर घूमकर बोलने लगा, "इसको साधारण तरीके से समझा जा सकता है, यदि किसी जहाज को लैंडिंग करते जरा खरोंच भी आती है तो सत्ता के लिए राष्ट्रीय आपदा-सी बन जाती है, पर यदि एक सवारी बस नदी में गिर जाए और कई आम जनों की मौत भी हो जाए तो वह मामूली घटना बनकर रह जाती है..."

अहम के बोलते जाने के दरमियान ही मनोज, दिनेश, रामू और मंजरी पीछे आकर खड़े हो गए थे; कुछ-कुछ सहमे हुए से जैसे दिग्गजों की मुठभेड़ के अंतिम परिणाम से सशंकित हों। सभी को आया देखकर तर्क-शृंखला थम गई।

"हमें सभी के आ जाने का ही इंतजार था; चलो अब काम की बात की जाए," तर्क-तरंग से बाहर आकर सामान्य होते हुए अहम ने कहा।

"कौन-सा काम? रामघाट तीरे मछली पकड़ने का!" रामू उखड़ा हुआ-सा लग रहा था।

"तुम इतने खिन्न क्यों हुए जा रहे हो रामू।" परवेज ने रामू के कंधे पर थपकी देते हुए कहा।

"कोरोना-कैबिनेट खत्म हो चुका है, अब तो मछली पकड़ना ही एक काम बचा है कोरोना काल में," रामू चुप नहीं हो पा रहा था।

"ब्रह्मा सर के घर जाने से कुछ हासिल हुआ हो या न हुआ हो, रामू का कोरोना उच्चारण जरूर जगह पर आ गया है!" मनोज ने चुटकी लेने-सा कहा।

"एस-एस, वो तो है," टॉपिक को यहीं खत्म कर देने की भाव-भाषा

में अहम बोला; आगे निश्चयात्मक स्वर में कहा, "एक नवजात मृत शिशु का भी हक बनता है विधिपूर्वक दफन होने का; कोरोना-कैबिनेट तो हमारे बाल-कैबिनेट की नई संतति-सा है, जाहिर-सी बात है आज के विमर्श-सत्र में सम्मान के साथ ही उसकी विदाई होनी चाहिए!" बोलकर अहम ने रामघाट तीरे वाली बड़ी चट्टान की ओर संकेत किया। सभी उधर ही बढ़ चले, अपने किसी जिगरी को अंतिम सलामी देने की धीमी चाल में।

10

"तो आज रामघाट तीरे संध्या-भजन में शामिल होने के लिए हमें बुलाया है अहम ने!" आज के जमावड़े के निहितार्थ को आंकने की गरज से मनोज ने कहा।

"कोरोना-कैबिनेट ही हमारा भजन-कीर्तन है।" बोलते हुए में अहम की मुख-मुद्रा बता रही थी कोरोना-कैबिनेट उसके गले में अटका पड़ा था, सुबह से ही।

"आज सुबह ब्रह्मा सर ने कोरोना-कैबिनेट को तो कब्र में डाल ही दिया।" सुबह के दृश्य को याद कर दिनेश ने कहा, भारी मन से।

"ब्रह्मा की बात दिल्ली की दुनिया के लिए ब्रह्म-लकीर होगी हमारे लिए नहीं; हम सभी के अंदर इतना तो विवेक-बुद्धि है कि अपना निर्णय खुद ले सकें।" अहम ने सभी की ओर उंगली दिखा-दिखाकर कहा, जैसे उसने जो कहा वह सामूहिक वक्तव्य हो।

"इसके लिए हम लोग शहर में ही किसी कॉफी हाउस या भरत काका के टी कॉर्नर में बैठ सकते थे?" रामघाट तीरे चल रहे 'हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे' की ओर वाले कान में उंगली डालते हुए सहज ने कहा।

"बिल्कुल नहीं सहज! कोरोना-कैबिनेट वाली बात यहां रामघाट तीरे होना बेहद अर्थपूर्ण है।" अहम ने यहां आने का कारण स्पष्ट करते हुए कहा।

"तो यह मान लें कि ब्रह्मा सर की सलाह को हम लोगों ने अमान्य कर दिया है!" रामू की आवाज में उमंग-सी आने लगी।

"आओ सबसे पहले हम लोग उस पत्थर पर कोरोना-कैबिनेट के रूप में बैठते हैं, तब मूल तत्व पकड़ में आएगा!" रामागमन कुटीर के विपरीत किनारे वाली चट्टान की ओर बढ़ते हुए अहम ने कहा।

"मूल तत्व?" दर्शन की बातें शायनी के पल्ले नहीं पड़ती थीं।

"ब्रह्मा सर की सलाह मानकर क्या हम लोग अपने नवजात कोरोना-कैबिनेट का गला घोंट दें? अभी यहां आने का सबसे विचारणीय बिंदु यही है।" बोलकर अहम ने सबके सामने किसी बड़े सुरंग का मुंह सा खोल दिया; फिर सभी की ओर आंखें घुमाते हुए कहा, "मैं पूछता हूं जीवन का मूल तत्व क्या है? जीवन की सार्थकता ही न! जीवन सार्थक कब दिखेगा? जब आप मानव समूह के लिए कुछ भी योगदान कर सको!"

"जिसे गीता में कृष्ण जी ने कर्म कहा है?" परवेज अपने गीता-ज्ञान भर बोला।

"हां कहा है, पर गीता में कृष्ण के कर्म सिद्धांत की व्याख्या करने मैं यहां नहीं आया हूं," बोलकर अहम के चेहरे की भाव-भाषा ऐसी बन आई जैसे सच में कोई बड़ी बात छिपी हो उसके अंदर; क्षणिक विराम के बाद कहा, "एक मानव के तौर पर हर व्यक्ति को सबसे पहले यह आकलन करना चाहिए, कि इस दुनिया में उसका स्वतंत्र अस्तित्व है या अवलंबित अस्तित्व है?"

"अवलंबित अस्तित्व?" सभी के मुंह से एक साथ निकला, जैसे उनके सामने कोई विराट प्रश्न उछल आया हो।

"हां अवलंबित अस्तित्व! उधर देखो भक्त-गण 'हरे राम हरे राम' गाते हुए कैसे उछल-उछल कर नृत्य-सा कर रहे हैं, और गाते हुए पागल हुए जा रहे हैं!" अब रामागमन वाले किनारे से विमुख होकर उसने कहा, "यह एक अप्रकट सच्चाई है, इन भक्तों का अपना कोई अस्तित्व नहीं है! थोपे गए मत के वशीभूत वे कृत्रिम स्प्रिंग जैसे उछल रहे हैं।" बोलकर अहम ने आंखें बंद कर लीं।

"और जिनका अपना खुद का अस्तित्व होता है उनकी क्या पहचान है?" अब शायनी को भी दर्शन में रुचि जगने लगी।

"हम लोगों ने हाई स्कूल में व्याकरण पढ़ा था, संज्ञा और सर्वनाम वाला, समझो पूरा मामला संज्ञा और सर्वनाम जैसा ही है; वर्तमान व्यवस्था में एक व्यक्ति का संज्ञा बनकर अस्तित्व के साथ सामने आना दुरूह होता जा रहा है, इसीलिए आम आबादी गुमनामी में जी लेती है, सर्वनाम की गुलामी में!" बोलने के बाद अहम के चेहरे में पश्चाताप की परछाई उतर आई।

"अहम भैया, बात मेरे भेजे से बाहर जा रही है; सरल शब्दों में हमें यह बताइए हमारा कोई अस्तित्व है या नहीं? यदि है तो मुझे अपना अस्तित्व

कायम रखना है, और नहीं है तो मुझे अपना अस्तित्व बनाना है।" रामू ने हाथ जोड़ लिए, जैसे अपने लिए सबसे बड़ी चीज की भीख माँग रहा हो।

"वाह रे मेरे गुरु!" खड़ा होकर ताली बजाते हुए अहम ने कहा, "जिसे समझाने के लिए मैं सैकड़ों शब्दों का सहारा लिए जा रहा हूं उसे तूने चंद शब्दों में सामने ला खड़ा किया!" "सीधे-सीधे बताइए हम लोगों का अस्तित्व है या नहीं?" रामू अब गंभीर हो उठा।

"किसी भी व्यक्ति का अपना अस्तित्व है या नहीं इसके परीक्षण का मापदंड आसान है, वो ये कि क्या वह व्यक्ति अपनी रुचि और विवेक से सोचे गए कार्य को स्वतंत्र रूप से कार्य रूप दे पाता है? या बाह्य बल या दबाव या प्रभाव से कार्य विमुख हो जाता है!" बोलते हुए अहम ने दोनों हाथ महत्तम फैला दिए, जैसे कोई बड़ा कार्य कर डालने का आह्वान कर रहा हो।

"यू मीन ब्रह्मा सर ने कोरोना-कैबिनेट खत्म करने की जो सलाह आज सुबह दी है उससे हमारे अस्तित्व पर खतरा उत्पन्न हो गया है!" तर्क मंजरी की पकड़ में आने लगा था। "अभी तक हमारा अस्तित्व बना ही कहां है? अस्तित्व के अस्तित्व में आने के बाद ही तो उस पर खतरा उत्पन्न होने का प्रश्न आएगा!" बोलकर रामू ने मंजरी की तरफ प्रश्नभरी नजर डाली।

"रामू इज एब्सोल्युटली राइट; यदि समाज के लिए, देश के लिए, हम सभी घर से बाहर आकर कुछ भी योगदान दे पाएंगे तो हम अपने अस्तित्व निर्माण की राह पर होंगे, यदि घर बैठे सिर्फ अपना पेट भरने भर की कवायद करेंगे या फिर दूसरों के कहे अनुसार कार्य-अकार्य को अंजाम देते रहेंगे तो समझो हम अस्तित्वविहीन ही बने रहेंगे!" अहम की बातें गंभीर होती गईं।

"यानी हमें फ्रांसीसी दार्शनिक सार्त्र के शब्दों में ऑब्जेक्ट बनकर नहीं रहना है?" किसी अखबार के कॉलम में पढ़े गए आलेख को याद करते हुए सहज ने कहा।

"हां! फिलॉसफी में सार्त्र की एक मशहूर थ्योरी भी तो है, अस्तित्ववाद के नाम से!" परवेज ने अपनी जानकारी को पुख्ता किया।

"हां, अस्तित्ववाद सार्त्र का विख्यात सिद्धांत है दर्शनशास्त्र में, उसके आगे नव-अस्तित्ववाद भी है; भारतीय संदर्भ और परिवेश को हम उस रूप में नहीं समझ सकते, बल्कि इंडिया में मामला तो काफी गंभीर है!" अहम आंखें छोटी करके बोल रहा था, जैसे मीलों दूर तक देख रहा हो, "उस पार रामधुन गा रहे झुंड को गौर से देखो; संकीर्तन भारतीय संस्कृति को चैतन्य

प्रभु की बहुत बड़ी देन है, इसमें रामधुन पर भक्तगण राम-प्रकृति में समाहित होकर नृत्य-ताल में लीन हो जाते हैं; परंतु पिछले कुछ दशकों से रामधुन टोलियों की भाग-भंगिमा ऐसी होती गई है जैसे कुछ धावक स्टेरॉयड खाकर अति प्रदर्शन कर रहे हों! ऐसा लग रहा है जैसे ये सभी अब कहीं दूर से रिमोट-राग पर मद-मग्न हों; वस्तुतः भारत के व्यक्ति-व्यक्ति में अस्तित्ववाद के पौध पनपने के लिए कब से छटपटा रहे हैं, अफसोस कि उन कोमल किसलय पौध को रौंदकर उनकी जगह सामूहिक अस्तित्ववाद की खतरनाक फसल उगाई जा रही है, विचारहीनता की बंजर भूमि में! और यह भारत के भविष्य के विनाश का कारण बन सकता है।"

"अब मुझे भी कुछ क्लू दिखने लगा है," अपनी जगह से उठकर मंजरी बोलने लगी, "यहां व्यक्तिगत अस्तित्व को हमेशा तंत्र की प्रताड़ना का शिकार होना पड़ा है और उसकी जगह मत आधारित सामूहिक अस्तित्व की अवधारणा को सिंचित किया जा रहा है!"

"और उसी सामूहिक अस्तित्व का परिणाम है कि पिछले कुछ महीनों से रामधुन को तेज कर दिया गया है, देश-दुनिया की सभी जरूरी चीजों से बेखबर!" अपनी जगह से लगभग उछलते हुए रामू ने कहा, जैसे रामधुन की तार काटने अभी-अभी रामागमन कुटीर की ओर दौड़ पड़ेगा।

"यहां रामघाट तीरे उस पार जो दृश्य देख रहे हो समझो वह पूरे देश का लघु प्रदर्शन भर है! और यहां कोरोना-कैबिनेट की बैठक रखने का मकसद है जड़ को समझना।" बोलकर अहम फिर से अपनी जगह पर बैठ गया। सभी ने अपनी जगह पर सांसें थाम लीं, कोरोना-कैबिनेट की बलि देने या इसे एक वरदान के रूप में प्रकट करने।

"हमें सामूहिक निर्णय लेना चाहिए; लेडीज फर्स्ट, सबसे पहले मंजरी का मंतव्य जानते हैं।" अहम ने मंजरी की ओर मुस्कुराकर पूछा।

"इसमें कोई शक नहीं, तंत्र के कोड़े से आदमी दिन-ब-दिन वस्तु में तब्दील होता जा रहा है; वस्तु, यानी जिसमें कोई स्पंदन नहीं होता है!" बोलते हुए मंजरी उम्र से आगे सयानी दिख रही थी।

"एंड यू मियां परवेज?" परवेज की ओर देखकर अहम ने लंबी सांस लेकर छोड़ते हुए कहा।

"जिंदगी के मायने निर्जीव वस्तु-सा जीना भर नहीं होता!" परवेज ने संक्षिप्त में मन की बात निकाल दी।

"मनोज, तुम तो मीडिया में हो, तुम्हारी क्या राय है?" रायशुमारी आगे बढ़ाते हुए अहम ने पूछा।

"संकट के समय यदि हम सामने आकर कुछ न कर सकें तो हमारा अस्तित्व शून्य हो जाएगा!" अस्तित्व वाली बात मनोज की पकड़ में आ चुकी थी।

"और सबके भगवान रामचंद्र जी?"

"कोरोना की खैर-खबर लेने के लिए किसी को आगे तो आना पड़ेगा! कोरोना-कैबिनेट ही तो हमारा सामूहिक शक्ति-स्रोत है; हमें देश के लिए आगे आना पड़ेगा, देश बचेगा तो रामघाट खिलेगा।" शब्दों में पड़ रहे वजन से लगा ब्रह्मा सर की सलाह को रामू पीछे छोड़ आया था।

"तुम्हारा लेटेस्ट स्टडी क्या कहता है कोरोना के बारे में? और उससे निपटने में हम क्या योगदान दे सकते हैं।" अब अहम ने शायनी से पूछा।

"मैंने खंगाल डाला है कोरोना वायरस के फीचर्स," लंबी सांस लेकर शायनी बोलने लगी, "एक बात तो तय है इंडियन सब-कंटिनेंट में कोरोना वर्षों-दशकों तक टिका रह सकता है अपने म्यूटेटेड फॉर्म में, भविष्य में यह कितना खतरनाक होगा यह डिपेंड करेगा इसका म्यूटेटेड वर्जन माइल्ड होगा या डेंजरस!" बोलते-बोलते शायनी की आवाज में डर-सी घुलने लगी "बट अभी भी वक्त है इंडिया के लिए, कोरोना पॉजिटिव केस को आगे ना बढ़ने दें; अदरवाइज सीन अनकंट्रोल्ड हो सकता है! यह सभी की मोरल रिस्पांसिबिलिटी बनती है इसे फैलने से रोकने के लिए आगे आएं।"

"एंड यू मिस्टर सहज, व्हाट इज रनिंग इन यॉर माइंड!"

"मेरा सेंस ऑफ रिस्पांसिबिलिटी कहता है, बढ़ते जा रहे संकट के समय हमें अपने वजूद के साथ सामने आना चाहिए, कोरोना-कैबिनेट के रूप में सामूहिक अस्तित्व के साथ!" सहज की बातों से लगा कोरोना-कैबिनेट में उसे युवा जीवन की सामूहिक सार्थकता दिखने लगी थी।

सभी के बोल लेने के बाद चुप्पी छाई रही। अहम रामागमन वाले किनारे की ओर देखता रहा। अहम के पास जाकर परवेज ने कहा, "कोरोना-कैबिनेट के अस्तित्व में रहने या दफन कर देने वाले इस सत्र का समापन तुम्हें ही करना है अहम।"

"ब्रह्मा निवास से निकलकर मैं सीधे जेड सर के पास चला गया था; सर को सारी बातें बताईं मैंने, सर की सलाह का सार यही था कि यदि नवयुवक

स्वतंत्र निर्णय लेने से डरेंगे, फिर तो वे मिट्टी की मूरत बनकर ही जिएंगे! कोरोना-कैबिनेट पर उसकी राय है कि एक विचारवान समूह के रूप में आगे बढ़ते जाने के लिए यह एक सार्थक समूह और फिर माध्यम हो सकता है।"

"फिर तो समझो सर ने आशीर्वाद दे दिया है, अब तो पीछे मुड़ने का सवाल ही नहीं है!" बोलते हुए रामू उठ खड़ा हुआ; दोनों मुट्ठी हवा में इंकलाबी अंदाज में लहराते हुए बोला, "अब तो मुझे दिल्ली जाकर उस पत्र पर एक्शन अमल में लाना ही पड़ेगा, पीएम न सही अपने एमपी साहब से मिलूंगा पार्लियामेंट में!"

"रामू को रोकना ठीक नहीं है, दिल्ली जाकर तसल्ली तो कर ले; कल का टिकट कंफर्म करवा दूंगा राजधानी में।" बोलते हुए बड़ी राहत महसूस की सहज ने।

"मेरा एक मित्र अनवर दिल्ली में ठेकेदारी करता है, कहीं बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन में; उन्हीं का पता तुम्हें सेंड करता हूं रामू, अनवर को फोन भी कर दूंगा कि हमारा जिगरी दोस्त आ रहा है।" परवेज ने रास्ता बनाने जैसा कहा।

"और हम सभी कोरोना-कैबिनेट तले कोरोना के खिलाफ जरूरी रणनीति जारी रखेंगे, यहां रामघाट में।" अहम ने कोरोना-कैबिनेट को पुनः प्रकट करते हुए-सा कहा।

...कोरोना-कैबिनेट 'जिंदाबाद-जिंदाबाद...' सभी के मुंह से समवेत स्वर निकला, आसमान में दूर तक तरंगित; रामधुन को अश्रव्य करते हुए, मानस पाठ को उस पार ही कहीं पछाड़ते हुए...कबहुं कि कांजी सीकरनि छीरसिंधु बिनसाइ...

अध्याय चार

1

ट्रेन में बड़ी सुखद यात्रा आरंभ हुई थी रामू की। स्टेशन में तेज हवा के साथ सबकुछ उड़ जाने जैसा लग रहा था; यहां एसी बोगी के अंदर हवा ही गायब जान पड़ रही थी। रामघाट के बाद आगे तीन और बड़े स्टेशन में रुकना था राजधानी ट्रेन को; अगली सुबह सीधे नई दिल्ली स्टेशन। सुखद यात्रा इसीलिए कि जिस राजधानी ट्रेन में एक अदना बर्थ के लिए महीनों पहले टिकट बुक कराना पड़ता है, उसमें सहज की कृपा से चंद घंटे में ही बर्थ कंफर्म हो गई थी; वीआईपी कोटे से। लोअर बर्थ में पहले से चादर-तकिया रखे थे; फैलाते हुए उसे काफी सुकून महसूस हुआ। थोड़ी ही देर में चाय-स्नैक्स सर्व होते ही वह सब कुछ भूल चुका था; कोरोना संकट भी। पिछले बीस दिन में ऐसा पहली बार हुआ था जब कोरोना उसे घंटा-दो घंटा परेशान ना किया हो! चाय समाप्ति के बाद मास्क लगाते ही वह कोरोना की गोद में फिर से आ गिरा, यकायक; जब सामने बैठे यात्री ने चुटकी लेने के अंदाज में छेड़ा, "माय डियर फ्रेंड! चाय-स्नैक्स होते ही मास्क लगा लिया? आप तो कोरोना का बचाव कम, अफवाह ज्यादा फैलाते दिख रहे हैं!"

"मेरे पास मास्क है तो लगा लिया।" बोलते-रुकते उसने बताया, शिष्टाचार प्रदर्शित करते हुए।

"आपको कोरोना के बारे में कुछ ज्यादा नहीं पता है, क्यों?" बोलकर सामने वाले सज्जन का मुंह आश्चर्य से खुला का खुला रह गया।

"नहीं, मुझे कोरोना के बारे में ज्यादा नहीं पता।" बिना ज्यादा सोच-विचार किए ही रामू के मुंह से जवाब निकल गया।

"अरे भई पढ़े-लिखे नौजवान लग रहे हो, कोरोना से इतना अनभिज्ञ हो!"

बोलते-बोलते सज्जन के चेहरे में खिन्नता पसरने लगी।

"मेरा कहने का मतलब है कोरोना वायरस का कोई केस मैंने नजदीक से देखा नहीं है।" अब रामू ने सोचकर तर्कपूर्ण जवाब दिया।

"जब कोरोना आपके पास आ ही जाएगा तो फिर जानने-देखने के लिए वक्त ही कहां बचेगा!" मजाक बनाने जैसा मुंह बनाकर सज्जन ने कहा, अब ज्ञान बांटने जैसा बोलने लगा, "वैसे पूरी ट्रेन में घूमकर खुद देख लीजिए, आपके जैसा कितने यात्री मास्क पहनकर चल रहे हैं? अभी तो उतना रिस्क है नहीं जितना आप दिखाना चाह रहे हैं!"

"हम यह जानना चाहते हैं मास्क पहन लेने से कोरोना का संक्रमण रुकेगा या फैलेगा?" रामू ने अज्ञानी बच्चे जैसा कहा; फिर नम्रतापूर्वक बोला, "मास्क पहनकर निकलना और टाइम टु टाइम बीस सेकंड तक साबुन से हाथ धोना यही तो उपाय है कोरोना से बचने का," आगे उसका ज्ञान वितरण निखरने लगा, "मेरे हिसाब से तो बचाव का उपाय यही होना चाहिए था कि कोरोना की इंट्री इंडिया में एक महीना पहले ही बंद होनी चाहिए थी, अभी भी वक्त है हम इंडिया में कोई और नया केस बाहर से न आने दें!" बोलते-बोलते रामू का तेवर चढ़ता हुआ दिखने लगा।

"वह भला कैसे संभव है?" ऊपर बैठा यात्री भी चुप न रह पाया।

"बहुत आसान है! बाहर से आने वाली सारी फ्लाइट्स को आप बंद कर देते!" बोलकर रामू ने चुटकी बजाई।

"कैसा लड़का है तुम जी! कहां घर है, बेअक्ली जैसी बातें कब से किए जा रहे हो!" ऊपरी बर्थ पर बैठा रौबदार यात्री नीचे आकर रामू पर बरस पड़ा।

"कौन-सी बात बेअक्ली वाली है सरजी!" तटस्थ भाव में दिखते हुए रामू ने कहा।

"फ्लाइट बंद करना कोई बच्चों का खेल है क्या!" रौबदार यात्री चढ़ बैठने को हुआ।

"क्यों? जान आफत पर आएगी तो ट्रेन भी बंद करनी पड़ सकती है!" रामू को लगा बात अपने-आप मुंह से निकल गई।

"अरे तुम पागल-वागल तो नहीं है!" साइड बर्थ वाले दोनों सज्जन धड़-धड़ाकर खड़े होते हुए रामू पर बिगड़ पड़े।

"शांति-शांति!" सामने ऊपरी बर्थ वाले सज्जन ने सभी यात्रियों से अपील की, फिर रामू की ओर मुखातिब होकर कहा, "तुमको मेरी यही सलाह है

कि मास्क और कोरोना वाली बात पर यहीं विराम दो।" फिर रुककर बोला, "अरे हां! ट्रेन में बैठने से पहले तुमने हैंडवॉश किया कि नहीं?"

"नहीं धोया है!" रामू को झूठ बोलने की आदत नहीं है; बिल्कुल झूठ न बोल पाना खुद उसे अपनी बुरी आदत लगती है।

"तो जाइए बाथरूम से हाथ धोकर आइए; गजब का आदमी है भई तुम, सबसे आसान काम तो करते हो नहीं!" दो-तीन सहयात्रियों ने फटकार लगाई रामू को, एकसाथ फटते हुए।

"कोरोना से बचाव का सबसे अच्छा उपाय तो यही होता कि फ्लाइट बंद कर दी जाती और भविष्य में ट्रेन बंद करने की घोषणा भी हो जाती!" बर्थ से उठते हुए रामू बोला तो साइड बर्थ वाले दोनों सज्जन हत्थे से उखड़ गए, "तुम प्रधानमंत्री है क्या जी!"

"पिछले महीने मात्र तीन-चार लोग ही कोरोना संक्रमित थे, मैं भी मंत्री होता तो चार लोगों के शरीर से वायरस खिंचवाकर मच्छर जैसा कब का मरवा दिया होता!" बोलते-बोलते रामू अगले बे में पहुंच चुका था, नहीं तो कदाचित संभव था रौबदार यात्री उसे पीट-पाट डालते। उसे पीछे से आवाज पीछा करती सुनाई पड़ी, "पार्टी को बदनाम करने वाले लोगों का मुंह अभी तक बंद नहीं हुआ है।"

ट्रेन में उसने पहले भी सफर किया था, पर बाथरूम के सामने एक-दो लोगों का ही क्यू देखा था अभी तक; शायद राजधानी ट्रेन में बाथरूम के लिए लंबी लाइन लगती हो! वह भी लाइन में खड़ा हो गया, पांचवें-छठे नंबर पर। पांच-सात मिनट बाद उसकी बारी आई। उसने वॉश बेसिन का टेप खोला; अरे एक बूंद पानी नहीं! अटेंडेंट से पूछा तो उसने व्यंग्यपूर्वक कहा "अरे छोटे भाई पता नहीं लोग क्यों लाइन में लगे जा रहे हैं, मैं कितने को बताऊं कि ट्रेन में पानी भरते ही खत्म हो जाता है; हर पैसेंजर आजकल आधे-आधे घंटे में हाथ धो रहा है, साले कोरोना के घनचक्कर में! लेकिन ताज्जुब तो यह है कि बाथरूम से निकले पैसेंजर लाइन में लगे पैसेंजरों को बताने का शिष्टाचार भी नहीं निभाते कि पानी नहीं है!"

"क्यों नहीं बताता है दूसरे को!" अटेंडेंट की बात सुनकर रामू को बड़ा आश्चर्य हुआ, आखिर बाथरूम से बिना हाथ धोए निकले पैसेंजर लाइन में खड़े यात्रियों को सच क्यों नहीं बताते?

"अरे भैया क्या बताऊं! पैसेंजर को लगता है बाथरूम के पास मुंह से

आवाज निकलते ही कोरोना उसके अंदर घुस जाएगा!"

"ऐसा सही में होता है क्या!" रामू के लिए यह सब नई-नई बातें थीं; आगे आश्चर्य से कहा, "फिर मास्क क्यों नहीं पहनते हैं ये लोग?"

"अरे छोटे भाई, यदि कोरोना वाला आदमी जहाज-ट्रेन से आना-जाना कर ही लेगा तो कोरोना को फैलने से भगवान ही रोक पाएगा!" अटेंडेंट ने बताया तो रामू के मुंह से अपने-आप निकल गया, "फिर तो कोई भगवान नहीं बचाएगा कोरोना से, भगवान राम भी नहीं!" बातों-बातों में रामू को लगा ये बड़े भाई तो उसके जैसे ही लगते हैं! वह उसके साथ बातों में मशगूल हो गया, लंबी गपशप तक। उसने खाना भी अटेंडेंट के माइक्रो-केबिन में साथ ही खाया। बर्थ पर सोने भर गया, उल्टी खोपड़ी वालों से फजीहत क्यों कराएं मुफ्त में! सोने से पहले उसने पैंट की जेब में हाथ डालकर तसल्ली कर ली, घर से लेकर चला मास्क सही-सलामत रखा था। तकिए में सिर रखते ही वह मन-ही-मन हँसा; वह तो नाहक ही सहयात्रियों का पारा नाप रहा था।

2

रामू की पिछली कुछ रेल यात्राओं के विपरीत ट्रेन बिल्कुल राइट टाइम नई दिल्ली पहुंच गई, प्लेटफॉर्म नंबर सोलह पर। बाहर आते ही उसे सभी झूमते नजर आ रहे थे, ग्यारह मार्च की सुहानी सुबह में। पहली नजर में उसे लगा कोरोना संकट खत्म हुआ जान पड़ता है, वह नाहक ही दिल्ली आ गया! ऑटो में बैठने से पहले उसने ऑटो वाले को अनवर का पता बताया, "ए बटा तीन भगत सिंह मार्ग; आपको तो पता होगा न!"

"मुझे नहीं पता जी!" ऑटो वाले ने शुष्क-सा जवाब दिया; गियर चढ़ाकर मिंटो मार्ग की ओर ऑटो दौड़ा दिया।

"फिर आप कैसे पहुंचेंगे वहां तक?" रामू को किंचित घबराहट हुई।

"बड़े भाई साहब! मेरी गड्डी में जीपीएस फिट है जी!" ऑटोवाले ने पीछे की ओर सिर तानकर कहा। रामू को तसल्ली तो हुई, चिढ़ भी होने लगी; उससे उम्र में बड़े ऑटो वाले उसे ही बड़े भाई साहब कह रहे हैं! चुप्पी लंबी होती गई। कनॉट सर्कस रोड पर ऑटो धीमी गति से चलने लगी; रामू ने चर्चा छेड़ दी, "भगत सिंह मार्ग तो शहीद भगत सिंह के नाम पर ही

रखा गया होगा न, उनके सम्मान में!" बातचीत आरंभ करते ही उसके अंदर भगत सिंह की वीरता उभरने लगी; उसके रोंगटे खड़े होते गए किताबों में पढ़े भगत सिंह के साहसिक कारनामे याद कर!

"मुझे नहीं पता जी।" ऑटो वाले ने बेतकल्लुफी से कहा।

"शहीद भगत सिंह का नाम तो सुना होगा।" रामू निश्चिंत होकर बोला।

"मुझे नहीं पता जी, भगत सिंह जी के बारे में!" ऑटो वाले ने आराम से स्टीयरिंग दाएं-बाएं करते हुए जवाब दिया। रामू को लगा, ऑटो वाले ने समझा होगा भगत सिंह कोई नेता-मंत्री रहे होंगे और नगर निगम वालों ने उन्हीं की स्मृति में नाम रख दिया होगा।

"मैं किसी नेता-मंत्री वाले भगत सिंह की बात नहीं कर रहा हूं, मैं तो क्रांतिवीर भगत सिंह की बात कर रहा हूं जिसे अंग्रेजों ने फांसी की सजा दी थी!" बोलकर रामू आश्वस्त हो गया, कि ऑटोवाले को याद आ गई होगी।

"मुझे नहीं पता किस भगत सिंह को फांसी हुई थी; वैसे फांसी किस बात के लिए हुई थी जी?" ऑटो वाले ने ऑटो धीमी करते हुए जिज्ञासा प्रकट की।

"सन् उन्नीस सौ उनतीस में सेंट्रल असेंबली में बम फेंके थे भगत सिंह और उनके साथियों ने! और पर्चे भी बांटे थे पब्लिक सेफ्टी बिल के खिलाफ, अंग्रेजों की बहरी सरकार को सुनाने के लिए!" रामू की आवाज में जोश बढ़ता गया, जैसे उसके अंदर भगत सिंह चढ़ गया हो, "इतना निडर और जांबाज वीर कोई दूसरा हुआ नहीं धरती पर! बम धमाका करने के बाद भी असेंबली से भागने के बजाय खुद को गिरफ्तार होने दिया, क्रांति का संदेश जन-जन तक पहुंचाने के लिए।" रामू के बोलते जाने के बीच ही ऑटोवाले ने ऑटो तेज करते हुए कहा, "फिर तो जबरदस्त वीर पुत्तर था जी वह!" रामू आगे बोला, "बाद में अंग्रेजी हुकूमत ने उनको और उनके दो साथी–राजगुरु और बटुकेश्वर दत्त को सैंडर्स की हत्या वाले मुकदमे में फांसी दे दी थी, जबरदस्ती एकतरफा दोष सिद्ध करके; तेईस मार्च उन्नीस सौ इकत्तीस को, लाहौर सेंट्रल जेल में! फिर उनकी लाश के टुकड़े-टुकड़े करके चिनाब नदी में बहा दिए, जिला फिरोजपुर के हुसैनीवाला गांव के पास! हमने सुना है वहां तीनों शहीदों के स्मारक भी बने हैं।" भगत सिंह की संक्षिप्त कथा संतोष के साथ खत्म की रामू ने।

"फिर तो वह बड़ा वीर पुरुष था जी!" अब ऑटो वाले के अंदर थोड़ी

उत्सुकता जगी।

"तभी तो उसे पूरी दुनिया 'शहीद-ए-आजम' कहती है! स्वतंत्रता आंदोलन के इतने बड़े शहीद के बारे में आपको क्यों नहीं पता है!" रामू ने घोर आश्चर्य में डूबते हुए कहा ।

"किसी ने बताया ही नहीं!"

"स्कूल की किताबों में तो शहीद भगत सिंह की जीवनी होती है!" रामू ने याद दिलाई।

"हमारे इस्टेट में स्कूल की किताबों में तो भगत सिंह वाला चैप्टर देखा नहीं, होगा भी तो अब मास्टर लोग किताब ठीक से पढ़ाते कहां हैं जी!" ऑटो वाले की आवाज में प्रायश्चित घुला हुआ था।

"अच्छा तो यह बात है! मुझे तो लगा शायद कोरोना के डर से आप इतिहास भी भूल गए हो।" बातचीत के क्रम में रामू को ऐसा लगा था, उसने कह दिया।

"अरे कोरोना से कौन डरता है जी! सबको अपनी-अपनी पेट की पड़ी है यहां।" ऑटो वाले ने कुछ घूंटते हुए-सा कहा; लगा जैसे उसने मन-ही-मन किसी के लिए थूक दिया हो।

"लेकिन सरकार को तो चिंता होनी चाहिए न!" रामू के अंदर की पीड़ा शब्दों में सवार हो गई।

"सरकार को भी अपने पेट की चिंता है जी!" भगत सिंह मार्ग पहुंचकर ऑटो धीमी करते हुए उसने कहा।

"सरकार का पेट! मतलब?" रामू अपना पेट सहलाते हुए बोला।

"हां जी, पार्टी का फंड ही सरकार का पेट होता है न जी! वैसे देखा जाए तो हर पार्टी का अपना-अपना पेट होता है जी; लो आ गया ए बटा तीन, वो रहा सामने!" ऑटो रोकते हुए कहा उसने।

ऑटो से उतरकर उसने किराया दिया; अनवर के किराए वाले कमरे की तरफ बढ़ गया। चलते हुए उसके पैर वजनी होने लगे थे, लगा दो बड़े-बड़े अदृश्य वजन माथे पर ढो रहा है; इतिहास के सबसे बड़े शहीद के बारे में लोगों को अनभिज्ञ तो रखा ही जा रहा है, उनके नाम पर मार्ग का नामकरण हुआ भी है तो किसी धूल-गर्द भीड़-भट्टा वाली सड़क का, जहां पहुंचना ही मुश्किल है। 'पार्टी का पेट' शब्दावली तो वजन नहीं हथौड़ा बरसा रहा था उस पर।

3

अनवर नाश्ते के दौरान रामू से उसके दिल्ली आने का मकसद पूछ चुका था; पाक दिल और साफ मन से रामू ने कोरोना को पछाड़ने का अपना प्लान सुना दिया था। अपनी कार निकालते हुए अनवर ने रामू से कहा, ऑफर-सा देते हुए, "मैं अपना वर्क साइट नोएडा की तरफ जा रहा हूं, तुम कहो तो तुम्हें एमपी साहब के आवास टवेल्व-ए फिरोजशाह मार्ग में ड्रॉप करता जाऊं, बस एक-दो कट मुझे एक्स्ट्रा लेना पड़ेगा।" रामू को बड़ा सुकून मिला, कार में जाने से मन में शांति रहेगी; एमपी साहब से सही भाषा-भंगिमा में बात हो जाएगी। कौन जाए ऑटो-फॉटो से, भगत सिंह की कथा में कोरोना का हार पहनाते हुए।

"तो तुम अपने पत्र का पीछा करते हुए दिल्ली तक आ धमके हो! तुम्हें लगता है एमपी साहब वो लेटर ट्रेस करा देंगे?" एफएम रेडियो की आवाज कम करते हुए अनवर ने कहा, कार की गति धीमी करते हुए; उसे भी लगने लगा था, बस्ती रामघाट के लोग सचमुच जज्बाती होते हैं।

"हमारे पत्र वाली फाइल निकलवाना एमपी साहब के लिए तो चुटकी बजाने जैसा काम होगा," रामू हमेशा आशावादी रहा है, आगे उसकी आवाज उम्मीदों की चाशनी में डूबी हुई लग रही थी, "मान लीजिए पत्र नहीं भी मिला, एमपी साहब तो अपने स्तर से प्रधानमंत्री को बोल सकते हैं फ्लाइट बंद कराने के लिए!"

"जनाब युवा तुर्क, अपने रामघाट में बस्ती वाले भले ही अपने को इंडिया कह लें पर असली इंडिया वैसा है नहीं!" भीड़-भाड़ वाले कनॉट सर्कस में कार चलाते हुए भी रामू की ओर क्षणभर देखकर अनवर बोलता रहा, "फ्लाइट बंद कराने के लिए सरकार को तैयार करना इतना आसान नहीं है मिस्टर श्रीराम!"

"पूरी दुनिया को पता है फ्लाइट से ही कोरोना संक्रमित लोग अलग-अलग देशों से इंडिया में टपक रहे हैं हर दिन, फिर फ्लाइट बंद होना तो बनता है!" रामघाट से रामू के साथ आई धारणा यथावत कायम थी।

"अरे बस्ती वाले भैया! फ्लाइट से सफर करने वाले पूंजीपतियों से और फ्लाइट के दौलतमंद मालिकों से भी मोटा चंदा मिलता है दिल्ली वालों को, मोटी रकम से देश में फिजा बनाई जाती है चुनाव के समय, तब जाकर सरकार बन पाती है! वैसे भी अभी सरकार अपने कामों में बुरी तरीके से

व्यस्त है!" बोलते-बोलते अनवर ने गाड़ी की गति बढ़ा दी, आउटर कनॉट सर्किल पर।

"लेकिन बात मेरे भेजे में नहीं आ रही है; कोरोना का खतरा बढ़ता जा रहा है देश में, आखिर सुबह से शाम तक सरकार किस जरूरी काम में अटकी पड़ी है जो कोरोना वायरस दिखाई नहीं पड़ रहा है!" रामू की आवाज से लगा जैसे वह किसी अजनबी घाटी में फंसा पड़ा हो।

"माय डियर बस्ती फ्रेंड, यहां सब अपने-आप में मस्त हैं, सरकार अपने एजेंडे में भिड़स्त है तो कोरोना जबरदस्त है!" फिरोजशाह मार्ग पर कार मोड़ते हुए भी अनवर बोलता रहा, "दिल्ली में एक-दो दिन में ही तुम्हें पता चल जाएगा दिल्ली की हवा; सरकार के दाएं-बाएं घूमकर-टहलकर-सुनकर भी पता कर लेना सरकार के माइंड में क्या चल रहा है आजकल!" धीरे से कार रोकते हुए कहा, "यह रहा टवेल्व-ए, इसी में रहते हैं अपने एमपी साहब, वो देखो लिखा है प्रेम शरण! मैं भी आया हूं एक-दो बार; मेरा काम तो नहीं किया उसने, पर अपने क्षेत्र के एमपी तो हैं भई! तो ठीक है रामू, शाम तक आ जाना, रात का डिनर कहीं बाहर चलकर करते हैं!" कार से उतरते ही रामू की नजर चमकते पीतल में लिखे 'प्रेम शरण' पर सम्मोहित हो गई; तब भी उसने बायां पंजा पीछे की ओर लहराकर अनवर को बाय-बाय किया।

4

घंटेभर बाद रामू की बारी आई थी; एमपी आवास की भव्यता में इंतजार का एहसास ही नहीं हुआ! अंदर की ओर जाते उसके पैर ऐसे बढ़ रहे थे जैसे कोरोना-उन्मूलन धाम की पहली सीढ़ी पर कदम रख रहा हो। अंदर उन पर नजर पड़ते ही रामू पहचान गया, चुनाव के समय कई दफा बस्ती में रोड शो करते हुए देखा था; वैसे भी यहां बीच वाली ऊंची कुर्सी में बैठा पुरुष ही तो एमपी होगा, कांतिमय मुखमंडल वाला! उनकी ओर शीश नवाते हुए उसने अभिवादन किया, दाहिना हाथ छाती से सटाते हुए, कि आपका रुख-रुतबा सब कुबूल है मुझे।

"बस्ती के रहने वाले हो! क्या नाम बताया?" पूछते हुए एमपी साहब के चेहरे पर परम कृपालु मुस्कान तैर गई।

"जी सर, रामू नाम है मेरा, रामू ग्वाला!" वह अंदर से गद्‌गद हो उठा ।

"हां-हां रामू ग्वाला! तुम्हारे नाम से अवगत हूं मैं!" भाषा के साथ-साथ चेहरे में भी अपनत्व लाते हुए कहा एमपी साहब ने। अपनेपन से रामू का चेहरा खिल उठा। एमपी साहब की भाषा-भंगिमा से वह अभिभूत हो उठा, लगा कोरोना-उन्मूलन धाम की दूसरी सीढ़ी पर कदम स्वतः पड़ गए हैं!

"तो बताइए गौ-पुरुष! दिल्ली कैसे आना हुआ, मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताओ?" एम पी साहब ने वरदान देने की मुद्रा बनाते हुए कहा, जैसे दया सागर में आसन लगाए बैठे हों; आगे बोलते हुए उनके चेहरे पर किसी अदृश्य तनाव का वजन बढ़ता हुआ दिखा, "परसों पार्लियामेंट में मेरे बोलने की बारी है, उसी में लगा हूं!"

"सर, उसी कोरोना मामले को लेकर आया था।" रामू इतना भर ही बोला, सोच कर कि आगे एमपी साहब तो जानते ही होंगे।

"वही तो मैं भी सोच रहा हूं, तुम इस वक्त कोरोना के खतरे को नजरअंदाज करते हुए दिल्ली कैसे आ गए, कोई बहुत जरूरी काम था क्या!" एमपी साहब ने आंखें सिकोड़ लीं।

"कोरोना रुकवाने ही तो दिल्ली आया हूं," उसने होंठों में मुस्कान लाते हुए कहा, आगे स्पष्ट करते हुए बोला, "मेरे साथ वाले रामघाट के कई लोगों ने एक पत्र दिल्ली भेजा है फ्लाइट बंद कराने के लिए, उसी सिलसिले में आया हूं।"

"फ्लाइट बंद होने से क्या होगा?" एमपी साहब की मुख-मुद्रा बदलने लगी, लगा अंदर से खिन्न हो उठे हैं।

"फ्लाइट से ही तो कोरोना संक्रमित आ रहे हैं अलग-अलग देशों से!" अब वह उंगली में जोड़-घटाव जैसा करते हुए बोलने लगा, "पंद्रह-बीस दिन पहले से ही फ्लाइट बंद हो गई होती तो इतने केस नहीं बढ़ते देश में; देर से ही सही, अभी भी वक्त है आज या कल से फ्लाइट बंद करा दीजिए।"

"देश के बारे में सोचने के लिए हम लोग हैं न यहां! तुम रामघाट का कुछ भला कर पाओ तो हमें भी खुशी होगी," एमपी साहब ने रामू को सामान्य मुलाकाती समझकर निबटाना चाहा।

"सर देश में कोरोना का फैलाव बंद होगा तभी तो रामघाट भी बचेगा!" उसने एमपी साहब का ज्ञानवर्धन करने-सा कहा।

"ठीक है एक मिनट के लिए तुम्हारी बात मान लेता हूं, पर मेरे-तुम्हारे कहने से फ्लाइट बंद हो जाएगी क्या! तुम्हें पता है फ्लाइट बंद होने से देश

का क्या हाल हो जाएगा?" एम पी साहब की आवाज में खीझ पैदा होने लगी।

"महामारी से बचाव के लिए तो हर उपाय करना चाहिए, अगर आप पीएम के पास बात रखेंगे तो कुछ हो सकता है," रामू ने सरल-सपाट भाषा में कह दिया; एमपी साहब के चेहरे में व्यंग्य-भरी मुस्कान तैर गई, कि यह छोकरा ऐसे बोल रहा है जैसे वह किसी साथी एमपी के साथ वार्तालाप कर रहा हो!

"अरे भई, बात तुम्हारी समझ में नहीं आएगी; हर काम का एक प्रोसेस होता है!" बोलकर एमपी साहब रामू के चेहरे पर क्षणभर के लिए गड़ गए; देश के करोड़ों लोगों को तो वे लोग अपनी वाली पटरी पर ले आए, पर अभी उन्हें समझ में नहीं आ रहा था इस पढ़े-लिखे नौजवान को कैसे समझाएं।

"सर फ्लाइट बंद कराने का चाहे जो भी प्रोसेस हो, लेकिन इस वक्त देश के सामने सबसे बड़ा संकट कोरोना ही तो है! अभी तो संसद सत्र भी चल रहा है, संसद में प्रस्ताव लाकर फ्लाइट बंद करवा दीजिए, राष्ट्रहित के इतने बड़े मुद्दे पर कौन विरोध करेगा भला!" रामू ने तर्कपूर्ण अंदाज में कहा, आवाज थोड़ी ऊंची करते हुए। रामू के चेहरे की भाव-भंगिमा पर गौर करते हुए एमपी साहब सिहर उठे; लगा जैसे करोड़ों जनता एकमुखी होकर बोल रही हो!

"देखो..." इतना भर बोलते ही एमपी साहब की आंखें बंद हो गईं, मुंह चलता ही रहा, "क्या नाम बताया तुमने, राजू ग्वाला? सॉरी रामू! तुम लोगों को अपनी बस्ती की चिंता करनी चाहिए; राष्ट्र की चिंता करने वाले यहां बैठे हैं, दिन-रात देश के लिए बड़े-बड़े काम कर रहे हैं।"

"कौन-कौन-सा काम सर?"

"तुम अखबार नहीं पढ़ते हो क्या! पिछले तीन-चार महीने का अखबार पढ़ो तो आंखें खुल जाएंगी!" एमपी साहब के बगल में बैठे व्यक्ति ने हस्तक्षेप किया, किंचित तुनककर।

"मैं तो कई दिनों से अखबार पढ़ रहा हूं, कोरोना रोकथाम के उपाय पर कोई कारगर डिसीजन होता तो दिख नहीं रहा है!" उसने तर्कपूर्ण ढंग से कहा, आगे उसकी आवाज में नाराजगी आने लगी, "कोरोना को इंडिया में नहीं आने देना है इस पर सोचने वाला कोई बड़ा दिमाग तो होना चाहिए न!" अब आवाज चेताने जैसी होती गई, "अभी भी वक्त है, यदि कोरोना को समय पर नहीं रोका गया तो बाद में यह कोरोना-कांड बन जाएगा!" उसके

बोलने के दौरान ही बगल में बैठे व्यक्ति ने आपत्ति उठाई, "क्या अलवल बके जा रहा है यह लड़का!" एमपी साहब ने हाथ के संकेत से उसे रोका और खुद बोलने लगे, "देखो रामू तुम बस्ती का बेटा हो! हम तुम्हारे जज्बे को समझते हैं।" एमपी साहब हाथ से शांति-शांति का संकेत करते हुए बोलते गए, "सरकार का काम करने का अपना तरीका होता है; कोरोना से भी लड़ा जाएगा, लेकिन उसका भी अपना टाइम होगा!" फिर बाएं तरफ वाले कमरे की ओर आवाज दी, "अरे मिसरा जी, रामू ग्वाला के नाम से एक पास बनवा दीजिए परसों का, इसे पता तो चले सरकार कितने बड़े-बड़े काम में लगी है पांच-सात महीनों से!" फिर रामू से कहा, "अच्छा है दिल्ली आए हो तो संसद सत्र भी देख लो, पहले शायद कभी ना देखा होगा; देखोगे तब पता चलेगा न हमारी सरकार कितने बड़े-बड़े ऐतिहासिक काम में लगी है! करने के लिए सिर्फ कोरोना ही नहीं है न जी, एक कोरोना पकड़कर ही बैठे रहे तो समझो हो गया राष्ट्र निर्माण!" फिर आवाज को अपनेपन से भिगोते हुए बोले, "मिसरा जी का कार्ड रख लो, जब जो जरूरत पड़े बात कर लेना!" बोलकर उन्होंने आंखों को बाहर की दिशा में घुमाया, रामू समझ गया; बिना देर किए बाहर आ गया।

5

पास दिखाकर बाहर वाले मुख्य द्वार से अंदर आते ही रामू अभिभूत हो गया, अंडाकार संसद भवन की आभा देखकर! जरूरी जांचोपरांत लोकसभा प्रवेश द्वार पर वह ठिठक गया, संसद भवन की भव्यता देखकर। अंदर कदम रखने से पहले उसने चमचमाते फर्श को हाथ से नमन किया, मन में सूत्र-सा पाठ करते हुए, 'हे संसद देवो! आजादी के सत्तर साल में भले ही तुम बस्ती की गरीबी दूर न कर पाए, पर अबकी बार करा दे कोरोना पार!'

दर्शक दीर्घा में निर्धारित स्थान पर बैठते ही वह संसद भवन की अंदरूनी विशालता में खो गया। उसकी तंद्रा टूटी, काफी लोगों के अपने-अपने स्थान पर खड़े होने की शब्दहीन आवाज पूरे संसद भवन में गौरवपूर्ण अनुभूति उत्पन्न करने लगी थी; माननीय अध्यक्ष महोदय आसन की ओर बढ़ रहे थे। अध्यक्ष महोदय के आसन ग्रहण करते ही रामू के मन में कब से कैद अभिलाषा भी ऊंचे सिंहासन पर जा बैठी; हमारे द्वारा भेजे पत्र पर शायद आज ही चर्चा हो, फिर तो कोरोना-कांड की उल्टी गिनती समझो शुरू होने

ही वाली है! मुनि के मौन सदृश्य अब तक जारी अभूतपूर्व शांति आगे चंद मिनटों की ही मेहमान रही। शुरू के आदरपूर्ण संबोधन के सिवाय कुछ भी उसकी समझ में न आ पाता। नजरें हमेशा नीचे की ओर गड़ी रहीं; कि पहली बार कब किस माननीय के मुंह से कोरोना वायरस शब्द निकलता है, फिर आज की कार्यवाही समाप्त होते ही वह उस माननीय का चरण-रज माथे पर लेकर बस्ती वापस लौट सके। उसने अपनी आंख और कान दोनों को महत्तम अलर्ट मोड में रखा, स्कूल के पीछे मंजरी को पहली बार छूने के समय से भी कहीं ज्यादा! पर नतीजा निराशाजनक ही रहा; जैसे ही कोई 'माननीय अध्यक्ष महोदय' के बाद आगे की पंक्ति शुरू करता पूरा भवन शोरगुल से भर उठता, जैसे कोई बम फट पड़ा हो। संसद की कार्यवाही शून्य-काल से पहले ही स्थगित हो गई।

भोजनावकाश के बाद कार्यवाही शुरू होते ही उसे भ्रम होने लगा; कहीं गलती से भोजनावकाश-पूर्व वाला रील तो नहीं रिप्ले हो गया है, बड़े सिनेमा हॉल में! दर्शक दीर्घा में शाम साढ़े छह बजे तक बैठे रहने वाले इक्के-दुक्के लोगों में वह भी एक था। अब तक उसे संसद की कार्यवाही का काफी ज्ञान हो चुका था; कोरोना शब्द यहां न सुन पाने से लगा, इतिहास में दर्ज होने जा रही ऐतिहासिक त्रुटि का गवाह बनना पड़ा है उसे!

6

अभी तक अनवर नहीं लौटा था। मध्य मार्च की बढ़ती गर्मी, बिना पंखे वाला बरामदा; देर तक बैठना मुश्किल था, किसी के लिए भी। सामने वाली सड़क को नापने लगा वह, इस किनारे से उस किनारे तक। घने पेड़ों के हिलते पत्तों के बीच से स्ट्रीट लाइट छन-छन कर जमीन पर गिरती दिख रही थी, कहीं प्रकाश, तो कहीं अंधकार; अंदर भी कभी आशा, तो कभी निराशा, मन प्रकाशित-तिरोहित-सा हो रहा था...'नेक काम करना क्या सच में कठिन होता जा रहा है इस देश में! लोगों का जीवन बचाना तो बेहद जरूरी काम है, उसी के लिए यहां तक आया है वह; उसका कोई निजी स्वार्थ तो है नहीं! पूरी दुनिया में यह संकट बढ़ता ही जा रहा है, कई देशों में तो जिंदगियां घरों में कैद हो गई हैं; हर गतिविधियां भी ठहर-सी गई हैं, चारों ओर हाहाकार बढ़ता जा रहा है; कहीं हमने भी उसी हाहाकार को आमंत्रण तो नहीं दे दिया है? आखिर वह कर भी क्या सकता है; सोचने और बोलने के सिवाय उसके

वश में कुछ रह भी गया है क्या! सोचने और बोलने की अगली कड़ी होती है आगे बढ़ना, पर आगे बढ़ने के हर मार्ग पर शक्तिशाली शासन-शक्ति ने अपने वजनी पंजे फैला रखे हैं! एयरपोर्ट, पार्टी कार्यालय, मुफस्सिल थाना, ब्रह्मा सर से लेकर दिल्ली में एमपी साहब और संसद तक हर दरबार में मत्था टेक चुका है वह, वचन-वाक् द्वारा टकरा भी चुका है, पर कोरोना को तो रत्ती-भर भी फर्क नहीं पड़ा है! कोरोना पॉजिटिव की संख्या तो दिन-ब-दिन नदी की बाढ़ जैसी बढ़ती जा रही है, शायद आगे जंगल की आग की तरह फैलती भी जाए...'

...भगत सिंह मार्ग...हवा के एक तेज झोंके से 'सरदार भगत सिंह मार्ग' लिखे बोर्ड के ऊपर की टहनियां दाएं-बाएं हिलने लगीं, भगत सिंह मार्ग लिखे शब्द उसकी आंखों से टकराए; हवा के झोंकों के साथ 'सरदार भगत सिंह मार्ग' कभी पठनीय होता, कभी अंधेरे में धुंधला-सा! उसके अंदर शहीद भगत सिंह...शहीद भगत सिंह...आलोकित हो उठा; उगते-बुझते-सा नहीं, चमचमाता हुआ! मन के अंदर बिजली की चमक-सी दिखने लगी, दूर तक ...सेंट्रल असेंबली...पब्लिक सेफ्टी बिल...बम धमाका...हां-हां, उसे भी ऐसा ही कुछ करना चाहिए; अपने मनमाफिक काम-काज में मदमस्त सरकार के सामने कोरोना-बम फेंके बगैर यह देश का एजेंडा नंबर वन बन नहीं सकता! पर, पर कैसे?' अंदर भगत सिंह जागते ही वह त्वरा की स्थिति में आ गया! भगत सिंह मार्ग के इस कोने से उस कोने तक पैदल मार्च करता रहा, मस्तिष्क-मंथन बढ़ता गया...'कैसे? कब!...नहीं, उसे मंजरी से तुरंत बात करनी चाहिए, अकेला सोचते-सोचते कहीं अंदर ही न फट पड़े वह!'

'...हाय रामू!...' उधर से कॉल रिसीव हो गई, मंजरी का नंबर डायल करते ही; रामू के होंठों पर मुस्कान तैर गई, नेटवर्क के अप्रत्याशित रूप से तीव्र होते जाने से नहीं, मंजरी की मधुर आवाज से अंतस तरल होता महसूस कर।

'...लोग सच ही तो कहते हैं, दिल्ली जाने के बाद मर्द घर की औरत को भूल जाते हैं...' मंजरी बोल गई थी।

"घर की औरत?" 'घर की औरत' वाली बात रामू के पल्ले नहीं पड़ी।

'...औरत यानी माँ-पत्नी जो कह लो, आज मैं लड़की हूं तो कल किसी की पत्नी भी बनूंगी और फिर आगे माँ भी!...'

"किसी की पत्नी! यह क्या बके जा रही हो, यहां मेरे अंदर भगत सिंह

का जन्म हो रहा है और तुम न जाने क्या-क्या बोले जा रही हो!" भगत सिंह-सेंट्रल असेम्बली-बम धमाका के स्मरण से रामू के अंदर ज्वालामुखी बन पड़ा था; मंजरी की 'किसी की पत्नी' वाली बात के शीतलक से वह विस्फोटक स्तर से ठंडा होकर कार्यशील स्तर पर आ गया। ...कह गए नृप किसोर मनु चिंता...रामघाट तीरे से बस्ती की ओर अचानक बह गई होगी हवा के साथ मानस पाठ श्रव्य हो उठा क्षणभर के लिए, मोबाइल में भी!

'...अरे बुद्धू! तुम्हें मजाक भी समझ में नहीं आता है क्या!...' ...हरे राम हरे राम...रामधुन की बढ़ गई तीव्रता से मंजरी की आवाज थोड़ी देर के लिए बाधित हो चली थी, '...अच्छा इस टॉपिक को अब यहीं विराम दो; हां तो तुम कह रहे थे तुम्हारे अंदर भगत सिंह का जन्म हो रहा है, तो बताओ माजरा है क्या? फ्लाइट बंद होने वाली बात कहां तक पहुंची है? ...मंजरी का मजाकिया अंदाज गंभीरता में तब्दील हो गया।

"मुझे लग रहा है दिल्ली में तो जैसे सभी अपने बनाए दलदल में ही मदमस्त हैं, किसी में यह दृष्टि है ही नहीं कि कितना बड़ा तूफान नजदीक आ चुका है! सभी किसी स्व-रुचिपूर्ण दिशाओं में दौड़े जा रहे हैं।" रामू बोले जा रहा था कि मंजरी की आवाज से मोबाइल कंपित हो उठा, '...मतलब ये कि दिल्ली मायने दिल फरेबी!...' मंजरी की आवाज निराशा की नली से निकलती अनुभव कर रामू के अंदर जनित ऊर्जा बाहर आने लगी, "लेकिन समझो अब मुझे एक ब्रह्मास्त्र मिल गया है!"

'...सो कौन-सा आइडिया तुम्हारे दिमाग में अचानक आ गया है!...' उसके बोलने के बीच ही मंजरी तरंगित हो उठी!

रामू ओजपूर्ण स्वर में बताने लगा, "अभी शहीद भगत सिंह मार्ग में काफी देर से टहल रहा हूं; भगत सिंह ने अंग्रेजी हुकूमत की आंखें खोलने के लिए सेंट्रल असेंबली में बम फेंका था, अब मैंने भी तय किया है तो मैं भी क्यों न कोरोना बम फेंक दूं पार्लियामेंट में; ऐसे आसन्न राष्ट्रीय-विपदा में अपने-अपने मन की करने में मदहोश माननीयों की आंखों में कोरोना का कहर जगाने के लिए! इसके लिए मुझे भगत सिंह जैसा गिरफ्तार भी होना पड़ेगा तो भी मेरे लिए कम है!"

'...कोरोना बम!...' मोबाइल के अंदर मंजरी सहम उठी जान पड़ी।

"कोरोना बम, मतलब मैं दर्शक दीर्घा से कोरोना के बढ़ते जा रहे खतरे बताने वाली पर्चियां नीचे माननीयों के बीच फेंक दूंगा, यदि यह देशद्रोह माना

जाएगा तो भी मैं यह करूंगा!" रामू ने स्पष्ट करते हुए कहा।

'...देशद्रोह क्यों माना जाएगा! मेरे हिसाब से तो यह सच्चा राष्ट्र प्रेम होगा...' उधर से मंजरी की निर्भीक आवाज थी। तब रामू भावनाओं के समंदर में डूबता गया, "राष्ट्रप्रेम हो या ना हो पर जनता के प्रति यह मेरा कर्तव्य है।" उधर से मंजरी का विद्रोही स्वर सुनाई पड़ा, '...देखो रामू, शहीदे आजम ने जो किया था गुलाम भारत के लिए किया था, मेरे नजरिये से तो भारत की आम जनता अभी भी गुलामी की स्थिति में जी रही है! गरीबी-संसाधनहीनता-साधनहीनता अवसरहीनता-अभावग्रस्तता की गुलामी!...' आगे उसकी आवाज जैसे किसी अदृश्य घाटी से आती मालूम पड़ी, '...यदि तंत्र की तंद्रा को अभी भी ना तोड़ा गया, तो गरीब और बेसहारा लोग ही कोरोना के पंजे की चपेट में आएंगे सबसे पहले! आगे तो खैर कोरोना का टट्टी-पेशाब ही वर्षों-दशकों तक देश के हर अंग-प्रत्यंग को दीमक की तरह खोखला करता रहेगा, इसे बड़े लोगों की आंखें शायद ही पकड़ पाएं; आने वाली पीढ़ियां हमें हमारी लापरवाही के लिए माफ नहीं करेंगी...', मंजरी को रोकते हुए रामू ने कहा, "संसद में पर्ची बम फेंकने के बारे में तुम्हारी अंतिम राय क्या है मेरे लिए?" उधर से मंजरी के जोशीले स्वर से मोबाइल भी कंपित होने लगा, '...आई विल शे जस्ट वन थिंग, बाबा साहब का नाम लेकर और शहीद-ए-आजम का सुमिरन कर आगे बढ़ो, फिर तो मुझे तुम पर फख्र होगा मेरे 'वो' का कलेजा इंच से नहीं हिमालय की ऊंचाई से ही मापा जा सकता है!...'

"दिशाहीनता के ऐसे घनघोर माहौल में रोशनी दिखाने के लिए लाख-लाख शुक्रिया डार्लिंग!" बोलते-बोलते रामू का गला भर आया, सोचकर कि पता नहीं मंजरी से फिर कब मुलाकात हो! क्षणभर बाद ही एक साथ दो प्रतिक्रिया घटित हो गईं, उधर से आ रही मंजरी की जोशभरी आवाज 'ऑल दी बेस्ट...' और रामू के मुंह से स्वत: निकल गए 'लव यू'। आगे रामू की उंगली स्क्रीन में अपने-आप टच हो गई, मोबाइल बंद होने वाले रेड सर्किल में।

7

14 और 15 मार्च वाले शनिवार और रविवार रामू के बड़े काम आए; लोकसभा में गिराए जाने वाले पर्ची-बम के शब्द और वाक्य पर भरपूर मंथन करने का समय मिल गया उसे। यह बात तो तुरंत समझ में आ गई थी, पूरा का पूरा वाक्य नहीं लिखना है; ट्वीटरधारी माननीयों को पूरा वाक्य सुनने का

सब्र नहीं होता है, पूरा वाक्य पढ़ने का कष्ट उठाते ही इन्हें नींद आ जाने का खतरा था! जड़ से बात पकड़ में आ जाने पर रामू ने शब्द, शब्द-संयोजन और पद-विन्यास पर केंद्रित किया अपने को। पर्ची का डिजाइन और आकार तय करने में उसे ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ी थी; पर्ची का बंडल पैंट की जेब में ही छिपाकर ले जाना था, जाहिर है हैंड-बिल टाइप का ही बनाना था। पूरा वाक्य हटाने से छोटे साइज की पर्ची में भी शब्द का आकार बढ़ाने के लिए पर्याप्त जगह बन पाई थी; यदि कोई माननीय चश्मा भूल भी गए हों तो शब्द पकड़ में आना ही आना था!

बंगाली मार्केट के टेक्नो कंप्यूटर्स कम ऑफसेट प्रेस से महज आधे घंटे में ही पर्ची छपकर उसके हाथ में थी। पर्ची के बंधे बंडल को खोलकर सड़क किनारे वह बार-बार पढ़े जा रहा था...'कोरोना करता सवारी फैलाएगा महामारी, जहाज में ताला वरना देश होगा काला...' एक-एक शब्द पर गौर करते हुए उसका सीना चौड़ा हुआ जा रहा था...'अब तो देश के लिए फांसी भी हो जाए तो कोई गम नहीं, सीने में भगत सिंह का नाम लिए हुए झूल जाऊंगा फंदे पर!'

16 मार्च को लोकसभा के बाहरी प्रवेश द्वार पर वह सुबह दस बजे ही पहुंच गया। मिसराजी पीए पर से उसका भरोसा टूटने से बचा रहा; जैसा कि कल ही उसने मैसेज भिजवा दिया था, एक आदमी रामचंद्र के नाम का पास लेकर ठीक साढ़े दस बजे प्रवेश द्वार पर हाजिर हो गया! तब रामू को प्रमाण मिल गया, पचास हजार वोटर वाली बस्ती और स्लम एरिया को जिसने भी इंडिया नाम दिया होगा सच ही दिया है! पास देने वाला तो चला गया अंदर की ओर, पर वह अंदर न जा पाया। व्होल बॉडी स्कैनिंग के बाद मूंछ वाले सिक्योरिटी गार्ड ने उसकी निचली जेब से प्लास्टिक में लिपटा पर्ची का बंडल निकालकर किनारे वाले टेबल पर रख दिया, वह बुत जैसा जांच केबिन में ही खड़ा रहा। सिक्योरिटी वालों ने जब उसे अंदर की ओर बढ़ने की हांक लगाई तो वह बाहर की तरफ ही आ गया; दर्शक दीर्घा में बैठकर देश का मूर्खदर्शक बनना उसे मंजूर नहीं था! ऑफिसर टाइप सिक्योरिटी वाले ने उससे ससम्मान पूछा, आप अंदर गए नहीं! तब उसे यही सूझ पाया, "मुझे अब याद आया हमारे एमपी साहब ने कहा था ग्यारह बजे तक मेरा इंतजार करना।" सुनकर सिक्योरिटी वाले ने सिर्फ पलकें झपकाईं थीं, बड़ी ही बेफिक्री से। उसकी तटस्थता देखकर रामू का मनोबल बढ़ा, विनम्रता से पूछा, "उस टेबुल

पर मेरे कुछ पेपर पड़े हैं।" सिक्योरिटी वाले के मुंह से परम निरपेक्ष भाव में निकला, "उस पेपर का जब्त होना कैमरे और रिकॉर्ड में आ गया है, वापस नहीं मिल सकता!" रामू के पूछने पर कि, फिर इस पेपर का क्या होगा, उसने बताया हमारे लोग इसे अपने हिसाब से निपटाएंगे।

रामू साढ़े दस बजे तक प्रवेश द्वार के आसपास मंडराता रहा, टेबल में पड़े बंडल पर नजर हटाए बिना; शायद सिक्योरिटी वाले यह बंडल अंदर पार्लियामेंट में भिजवाएं, तब हो न हो यह बंडल अपने भाग्य से माननीय अध्यक्ष महोदय के पास अपने आप पहुंच जाए! साढ़े ग्यारह बजे आए लाल वर्दी वाले स्टाफ ने पर्ची वाले बंडल को साथ लाए डस्टबिन में डाल दिया, बिना खोले ही। तब रामू को लगा, लगता है जनता के हित की बातें यहां तो ऐसे ही कूड़ेदान में डाली जाती हैं! प्रवेश द्वार के दाएं-बाएं बेवजह चलते रहना अब रामू को मूर्खतापूर्ण लगने लगा। चिंतामग्न हो मुख्य सड़क की तरफ बढ़ने लगा, ऑटो या बस पकड़ने के लिए; अनवर के बरामदे में ही सही पड़ा रहा जाए या फिर अंकित की खोज की जाए, शाहदरा की तरफ कहीं तो रहता है! बस्ती का शिष्टाचार कहता है, दिल्ली आया है तो बस्ती के बंदों से मिलकर ही रामघाट वापस जाना चाहिए।

ऑटो में बैठते ही उसका हाथ पैंट की जेब में रखे पर्स पर गया, अरे यह पास तो साथ में आ गया! दर्शक दीर्घा पास पर उसकी नजर गड़ती गई; अंदर से पुकार आती महसूस हुई, जब पास है तो उसका इस्तेमाल होना चाहिए। मन में प्रश्न भी बनने लगे, किधर से! कैसे? अचानक उसे पर्ची के बंडल याद आने लगे; कंप्यूटर वाले ने कहा था एक बंडल बनाओ या दो पैसे उतने ही लगेंगे! उसकी जेब में एक ही बंडल आ सकता था सो उसने एक ही लिया था; शायद दूसरा बंडल वहीं पड़ा हो! रामू के अंदर संकल्प जागृत होने लगा; अंतिम प्रयास करूंगा, शायद दूसरे प्रवेश द्वार से अंदर जाना आसान हो!

उसे एक घंटा ही लगा; बंगाली मार्केट के प्रेस से पर्ची का बंडल लेकर उत्तरी प्रवेश द्वार तक पहुंचने में। पास दिखाया; सिक्योरिटी वाले ने जेब में रखा बंडल टटोल लिया, उसने चालाकी से कहा, "यह तो अपनी पार्टी के प्रचार के लिए है! मुझे संसद के अंदर नहीं जाना है, अपने एमपी साहब से लंच टाइम में कैंटीन में मिलना है, बस लंच टाइम तो आ ही गया है!" रामू एक सुर में बोलता गया, तेजी से; सिक्योरिटी वालों ने उसे आधी सलामी देते हुए अंदर जाने दिया, सोचकर कि पार्टी की युवा शाखा का कोई ठीक-ठाक

कार्यकर्ता लग रहा है!

प्रवेश द्वार से अंदर आते ही वह सीधे कैंटीन तक आ गया; बेधड़क, बेरोकटोक! सभी कुर्सियां भरी हुईं थीं। एक सिंगल टेबल में माननीय-जैसा दिखने वाला महापुरुष-सा लगने वाला पुरुष बैठा था, बिल्कुल किनारे; सामने प्लेट में रखे दो-तीन किस्म के स्नैक्स और चाय में आनंदलीन। उनके सामने एक कुर्सी खाली थी। रामू ने अपनी हैसियत और हौसला बढ़ाते हुए कहा "कैन आई!" माननीय के जबड़े से मुश्किल से निकल पाया "स्योर!" बैठते ही उसने बंडल खोला ...कोरोना करता सवारी फैलाएगा महामारी, जहाज में ताला वरना देश होगा काला...शब्द दर शब्द नजर फेरते ही शब्द की ताकत उसे अपने अंदर महसूस होने लगी!

"यह कौन-सा पैंफलेट लेकर घूम रहे हो!" सामने बैठे महापुरुष ने पूछा; पर्ची में नजर गड़ाए रखते हुए ही।

"कोरोना के बढ़ते खतरे के बारे में संसद को सजग करने आया हूं!" गर्व से कहा उसने।

"मैं भी लोकसभा का एमपी हूं! तुम्हें क्या लगता है संसद में बैठने वाला शख्स बेवकूफ होता है?" बोलकर वे मुंह में रख चुके स्नेक्स तेजी से चबाने लगे।

"नमस्कार सर," अभिवादन के साथ ही ऊर्जा का प्रवाह भी आने लगा रामू के अंदर से, "कोरोना के केस देश में तेजी से बढ़ रहे हैं, यदि विदेशों से कोरोना की खेप रोकी नहीं गई तो वुहान और इटली जैसे हालात यहां भी आ सकते हैं, पूरे देश को बंद करना पड़ सकता है!" उसने नम्रतापूर्वक कहा।

"तुम कहां से आए हो!"

"रामघाट, रामघाट की बस्ती से!"

"हमने सुना है रामघाट के लोगों को सोचने की बीमारी लगी रहती है; तुम्हें देखने के बाद तो लगता है कहावत झूठी नहीं है! तुम्हारे एमपी साहब को भी वही लत लगी है, सोचने की; बिना सोचे उन्हें तो नींद ही नहीं आती है, कभी-कभी तो रात को एक बजे फोन कर डालते हैं!" बोलते हुए एमपी साहब ने दार्शनिक मुद्रा बना ली; जैसे देश को एक नए दर्शन का उपहार देने वाले हों, कि देश में जो भी संकट आता है वह रामघाट के लोगों के सोचने से ही टपकता है।

"सर, देश के लिए सोचना अपराध है क्या!" संकोच के बजाय साहसपूर्ण

स्वर था रामू का।

"अपराध कह रहे हो, संगीन अपराध है यह! देश में दहशत फैलाने के आरोप में अभी-अभी जेल भेजे जा सकते हो तुम!" पचपन-साठ की उम्र वाले माननीय तेईस वर्षीय शेर-सा नौजवान को भेड़ बनता देखना चाह रहे थे, आंखें तरेरकर।

"हम सभी को तो देश बचाना चाहिए; मैं तो जेल जाते-जाते भी कोरोना संकट का नारा लगाता जाऊंगा!" रामू की अल्हड़ता बढ़ती गई।

"देखो नौजवान, जो आदमी अटपटी हरकतें नहीं छोड़ता है जानते हो उसका क्या इलाज होता है?" बोलकर एमपी साहब रामू की आंखों में गड़ गए, उसकी प्रतिक्रिया पकड़ने के लिए। रामू निस्पृह बना रहा; फिर तो एमपी साहब को खुद ही खुलासा करना पड़ा, "ऐसे अजीब-अजीब हरकत करने वाले आगरा-बरेली-रांची के पागलखाने में भेजे जाते हैं!" बोलकर वे सिर ऊपर-नीचे हिलाने लगे, यह मापने के लिए कि इस बच्चू के होश ठिकाने आ गए हैं या नहीं।

"तो सर आपके हिसाब से कोरोना के आसन्न संकट के बारे में सरकार को आगाह करना पागलपन है!" बिना किसी डर के अब रामू भी एमपी साहब की आंखों में गड़ गया।

"तो जो लोग सरकार चला रहे हैं वे तुम्हें पागल लगते हैं क्या!" बोलकर एमपी साहब ने आगे अपनी वाणी में मधुरता आ जाने दी, "मुझे तो लग रहा है कोरोना का भय तुम्हारे अंदर का एक वहम मात्र है! चलो अभी तुम्हें पूरा पार्लियामेंट घुमाते हैं, सभी आराम से आ-जा रहे हैं, खा-पी रहे हैं! यही क्यों..." अब वे बायें पंजे से बाहर की तरफ संकेत करके बोलने लगे, "बाहर जाकर पूरे दिल से दिल्ली घूमो-देखो तो! है कोई तुम्हारे जैसा परेशान हाल!" बोलकर एमपी साहब रामू को गौर से देखने लगे, जैसे कोई बड़ी सलाह देकर बाप देखता है बेटे की तरफ। रामू को चुप देखकर उसने पर्ची का बंडल अपनी तरफ सरकाते हुए कहा, "अपना काम-धाम छोड़कर तुम जैसे लोग देश में बेरोजगारी बढ़ा रहे हो और उल्टे सरकार को बदनाम करते हो!"

हाथ में बंडल थामे वे उठ खड़े हुए; रामू का कंधा थपथपाते हुए बोलते गए, "वैसे तुम चिंता मत करो, कोरोना का प्रचार-प्रसार तो पहले से ही हो रखा है; हाथ धोएं, सैनिटाइजर इस्तेमाल करें, मास्क लगाकर चलें! वैसे आज का सत्र तो समाप्त ही समझो, सुंदर पंक्ति वाली यह पैंफलेट भी मैं

अपने साथी सांसदों में कल-परसों बंटवा दूंगा; इसे प्रचार-प्रसार में तुम अपना योगदान ही समझो!" फिर उसने बैरा को संकेत से बुलाकर कहा, "यह पार्टी का बच्चा है, इसे चाय-पकौड़े सर्व करो।" बोलकर वह भारी-भरकम माननीय संसद भवन के अंदरूनी द्वार की तरफ बढ़ चले, आजादी की लड़ाई वाले किसी महापुरुष की चाल की नकल करते हुए। अब तक रामू के सामने चाय और पकौड़े की प्लेटें रखी जा चुकी थीं; उसे वह मुहावरा याद आने लगा, चुल्लूभर पानी में डूब मरो!

वह सीधे संसद मार्ग पर आ गया; अपने चारों ओर भागती दुनिया को गौर से देखने लगा...कार, बस, ऑटो, दुपहिया, फर्राटे भरते हुए भागे जा रहे हैं! पैदल चलने वाले भी चले जा रहे हैं, अपनी धुन में सोचते-गाते हुए। इक्के-दुक्के लोग मास्क पहने हुए हैं। अधिकांश लोग संपूर्ण मुख-मंडल के साथ ही सजीव हैं; गोया मास्क लगाते ही उनकी दिवा-पहचान मिट जाएगी। रामू ने पीछे मुड़कर संसद भवन की ओर देखा; उसे जिंदगी में पहली बार अपने पर अविश्वास होने लगा, माननीय सही तो कह रहे थे सभी आराम से आ-जा रहे हैं, यह भी तो कह रहे थे यह तुम्हारे अंदर का वहम मात्र है! उसने धर्म संकट में पड़ा हुआ पाया अपने को। संसद मार्ग चौराहे पर ही खड़ा रहा काफी देर तक, संसद की ओर मुंह करके। संसद भवन को गौर से देखते रहने से उसे आभास हुआ, सच में संसद और इसके नेता बड़े दिमाग वाले होते होंगे; इनके रहते मुझे परेशान होने की भला क्या जरूरत है! धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए उसे ख्याल आया, जब दिल्ली आ ही गया है तो राष्ट्रपति भवन, विजय चौक, इंडिया गेट भी घूम ही लिया जाए। वह चलता रहा, और चलता रहा उसके अंदर कोरोना-संसद-माननीय-जनता-देश-रामघाट... घालमेल-सा। कुछ देर बाद उसने अपने को विजय चौक पर पाया। पश्चिम दिशा में दो बड़ी इमारतों को बीच से चीरती हुई उसकी आंखें राष्ट्रपति भवन के गुंबद से जा टकराईं; उसे महसूस हुआ जैसे उसकी आंखों की चमक से गुंबद के पत्थर को आघात लगी हो और कह रहा हो, 'मैं गणराज्य का पत्थर चुपचाप पड़ा हूं, तुम गण होकर क्यों मारा-मारा फिर रहे हो?' उसका मन उचाट हो गया। उसने पूरब दिशा की ओर मुंह फेर लिया। सामने इंडिया गेट नजर आया जैसे उसे आवाज देते हुए, कि सारा देश तो यहां उमड़ा है, आओ यहां आकर देश में समा जाओ! बिना देर किए वह इंडिया गेट की तरफ बढ़ चला। दिल्ली में 16 मार्च की गर्मी में भी उसके पैर इंडिया गेट

की तरफ जैसे उड़े जा रहे थे। पंद्रह मिनट के अंदर ही इंडिया गेट के जन समंदर में समाया पाया अपने को! कोरोना से डर-भय का कोई नामोनिशान तक नहीं! अब तो उसे भी विश्वास होने लगा, सच में कोरोना यहां आकर किसका क्या उखाड़ लेगा! इंडिया गेट की जलती मशाल के सामने वह सहज का नंबर डायल करने लगा; यदि आज या कल का टिकट कंफर्म हो जाए तो रामघाट लौट जाना ही बुद्धिमानी है; गाय-भैंस न जाने किस हाल में होंगे!

8

ना तो 17 मार्च और ना ही 18 मार्च के लिए उसका बर्थ कंफर्म हो पाया; सहज ने बताया दिल्ली के रेल भवन में दिन-रात मीटिंग पर मीटिंग चल रही हैं, जिस ऑफिसर को कहा गया था वह रेलवे में किसी बड़ी मुसीबत की बात कर रहा है! सहज ने उसे दिल्ली से रामघाट की डायरेक्ट फ्लाइट में टिकट बुक कर देने की पेशकश की। वह खुश हुआ, जीवन में पहली बार हवाई जहाज में बैठने का सपना पूरा कर ही लेना चाहिए! पर अगले ही क्षण याद आया, वह तो उड़ान बंद करने की बात करने आया है और खुद ही फ्लाइट में उड़ान भरेगा! यह उसे अपने उसूल के खिलाफ लगा; मन में मशविरा किया, दो-तीन दिन और रुककर ट्रेन में बर्थ कंफर्म होने का इंतजार करना चाहिए।

दिल्ली की हवा गर्म होने लगी थी, बदन में चुभन वाली छुअन देती हुई; मन को बेचैन करते रहने वाली घुटन-सी भी। उसे आज फिर से अंकित की याद आई। परसों सुबह उसका फोन भी आया था, शाहदरा आकर कुछ दिन उसके पास भी रुकने की जिद कर रहा था। स्कूल में दसवीं तक अंकित के साथ बिताए दिनों को याद कर वह भावुक होने लगा! उसके अंदर से आवाज आई...'उसके पास जाना ही चाहिए, नहीं तो उसके दिल को ठेस पहुंचेगी; गरीबी का मारा बस्ती छोड़कर दिल्ली में मजदूरी कर रहा है, उसकी भावना की कद्र करनी चाहिए। दिल्ली में किसी के घर मान न मान मैं तेरा मेहमान जैसा अधिक दिन नहीं रुकना चाहिए...' अनवर के घर से अपना छोटा बैग उठाकर वह सीधे पहुंच गया शाहदरा, अंकित का ठिकाना तलाशते हुए।

शाहदरा के किसी न मालूम मोहल्ले में रहता था अंकित; बीते कुछ सालों से बोलचाल में दशरथ नगर कहलाता था। दशरथ नगर से उसे भगवान राम की नगरी अयोध्या की याद आई; जान जाए पर प्रण न जाय जैसी

कोई पद-पंक्ति उसके मन में उमड़ने लगी, पर ठीक से रूप-आकार नहीं ले पाई! रात के अंधेरे में पहुंचने पर उसे महसूस हुआ, क्या इस सदी के शहरों में लोग ऐसे ही नरक में रहते हैं! रात नौ बजे भी सड़कें-गलियां ऑटो-रिक्शा-टेंपो-साइकिल से अटी पड़ी थीं। दुकानदार बंधु अपनी आधी दुकान सड़क पर ही संचालित कर रहे थे। चौराहे वाले मंदिर से मानस पाठ की तेज आवाज आ रही थी...अति अनूप जहं जनक निवासू, बिथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू...। रामू को मन में कोई स्वर-सा सुनाई पड़ा...'श्रीरामचंद्र जी के कारण ही संपूर्ण भारतवर्ष एक सूत्र में जुड़ा हुआ है, या हो न हो श्रीरामचंद्र ही वो मुख्य कारक हैं जिससे सारा हिंदुस्तान जहां का तहां पड़ा हुआ है!' शाहदरा मुख्य मार्ग से अंकित के ठिकाने तक मात्र एक किलोमीटर जाने में ही ऑटो को आध-पौने घंटे लग गए। खजूर के पेड़ जैसी ऊंची इमारत में रहता था वह, तीसरी मंजिल में। महज डेढ़ फीट चौड़ी आठ इंच खड़ी सीढ़ी में चढ़ते उसका युवा फेफड़ा भी फुफकार उठा था।

कमरे में सामान रखवाकर अंकित उसे सीधे छत पर ले गया। दस बाई ग्यारह की छत पर दस-बारह युवा-अधेड़ चर्चा में मशगूल थे, कोरोना और प्रधानमंत्री में मल्लयुद्ध कराते हुए। सभी उसी दड़बेनुमा मकान में एक साथ ही रहते थे; पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे तल में बने नौ बाई आठ के कुल चार कमरों में। उनमें से सबसे होशियार भुवन था! होशियार तो क्या होशियार बन गया था; शाहदरा पार्टी इकाई के अध्यक्ष के पास उठना-बैठना होता था उसका! उस मकान में रहने वाले कुछ साथी-संगी भुवन के इस नए शौक से इत्तफाक नहीं रखते थे; कौन दिन-रात यशोगान करता रहे, नेतागिरी करता फिरे। जो भी हो, उन सभी को अपने को 'भुवन ग्रुप' कहलाने में गर्व जैसा कुछ होता था। अंकित ने सभी से उसका परिचय कराया...'ये रामचंद्र है, रामघाट में हमारी बस्ती में ही रहता है।' फिर सभी ने अपना-अपना परिचय दिया...'भुवन-राजन-हनुमत-प्रकाश-मोहन-अभिषेक-इसरार-मुजीब-प्रणव-शनिचरा-गणेश-कृष्णा-शंकर-दुर्गाकांत-अजहर।' ग्यारह तो रामघाट बस्ती व इंडिया एरिया के ही थे, तीन रामघाट जिले के गांव औराही, धरमगंज और महेशपुर के तथा एक रामघाट से लगे जिले लक्ष्मणपुरा के किसी नामालूम से गांव के। वे दिल्ली के अलग-अलग ठिकानों पर मजदूरी-चौकीदारी करते थे। दो-तीन लोग भाड़े पर उठाकर ऑटो चलाते थे।

छत पर वे देश की अभूतपूर्व उन्नति और प्रधानमंत्री के काम को तौल रहे

थे, अपनी-अपनी तराजू से। आधे से ज्यादा की नफरी तो भारत को दुनिया का सर्वश्रेष्ठ देश बता रहा था; प्रधानमंत्री की सूझ-बूझ के कसीदे गढ़ते वक्त उसकी आवाज ऊंची होती जाती थी! बहस के बीच में जब भी कोरोना आ टपकता भुवन-ग्रुप उसे अपनी वाक्पटुता से बाहर का रास्ता दिखा दे रहा था। दो-तीन जन भारत की दुर्दशा और प्रधानमंत्री की मनमर्जी की बात भी बीच-बीच में घुसा दे रहे थे, पर वे कायदे से अपनी बात पूर्ण नहीं कर पाते थे; उनका वाक्य पूर्ण होने से पहले ही पिछले साल हासिल हुई बताई जा रही 'नव-कश्मीर' और उससे पहले पीओके में बमबारी वाली बात के गोले टपक पड़ते थे! रामू उनके बीच अभी-अभी पहुंचा अजनबी था, उसे उनकी बहसबाजी में पड़ना ठीक नहीं लगा। वह छत की चारों दिशाओं में लगी रेलिंग के किनारे-किनारे टहलने लगा, सोचते हुए कि यहां कितने दिन रुकना चाहिए, कौन-कौन-सी जगह घूम लेनी चाहिए। सोचने की क्रिया तो अपने-आप चलती रहती है, उस दौरान भी आंखें तो रंग-बिरंगी दुनिया में गड़ी जाती हैं; उसे छत से दिल्ली दूर तक दिख रही थी...गाड़ियों की हेडलाइट के साथ भागती-सरकती दिल्ली! जैसे भूत की कहानी में डरावनी लाइट वाले भूत ध्वनि की गति से दौड़ते हैं। सड़कों-गलियों में ठसा-ठस जन समंदर देखकर उसे पक्का यकीन हो गया, रामघाट में पार्टी के लोग और यहां दिल्ली में माननीय लोग सही फरमा रहे हैं, कोरोना एक डर के सिवाय और कुछ नहीं है! दूर-दूर तक दिखती दिल्ली बेखौफ जी रही है; आखिर लोगों के आत्मविश्वास के पीछे किसी का तो सहारा होगा! सरकार ही तो है जिससे लोगों को ताकत मिलती है; ताकत धारणा बनाने की, ताकत आगे सब कुछ देख लेने की!

छत पर भुवन-भिन्न खेमा धीरे-धीरे मौन धारण करता गया। तब यशोगान टोली जय-जयकार कर उठी...जय जनता कर्फ्यू...जय जनता कर्फ्यू...। जयकार के बीच ही भुवन उद्घोष-सा कर उठा, "अब भेजे में बात आई बच्चू! जनता कर्फ्यू को इस दुनिया का आठवां अजूबा से कम न समझो! यह आइडिया निकालना किसी ऐरे-गैरे ब्रेन के वश की बात नहीं है! विरोधी पार्टी का मुंह बंद करने के लिए इतना ही काफी है।" जनता कर्फ्यू शब्द सुनकर रामू को लगा देश में फसल की कोई नई किस्म होगी शायद; या फिर जनता की माली हालत ठीक करने वाली कोई नई स्कीम। उसने अंकित से पूछा "जनता कर्फ्यू धान-गेहूं की नई किस्म है या कोई नई दवाई है?" रामू की

अनभिज्ञता से अंकित अचंभित हो उठा, "अरे, बड़ा मूर्ख है! क्या तुम्हें नहीं पता रविवार को पूरे देश में कर्फ्यू रहेगा! सरकार द्वारा लगाया कर्फ्यू नहीं, जनता का जनता के लिए जनता द्वारा लगाया गया कर्फ्यू! इससे कोरोना जहां है वहीं ठहर जाएगा, फिर शाम पांच बजे थाली पीटना है।" छत के कोने में जा खिसके किसी ने व्यंग्यपूर्वक चिंगारी सुलगाने-सा कहा, "जनता कर्फ्यू से कोरोना वायरस रुक जाएगा क्या!" इस पर चार-पांच लोग ऊंची आवाज में हमलावर हो उठे; भुवन ने आगे बढ़ते हुए कहा, "अरे गधे तुमने सुना नहीं पीएम ने क्या कहा, जनता कर्फ्यू लगाने का मकसद ही है संक्रमण की कड़ी तोड़ना! रविवार को दिनभर जनता कर्फ्यू रहेगा तो रात तक संक्रमण की कड़ी टूट जाएगी और फिर कोरोना जहां है वहीं थम जाएगा, बात तुम्हारे भेजे में आई कि नहीं!" छत पर महाराजा जैसे अकड़कर भाषण दे रहे भुवन की घनघोर अज्ञानता पर रामू से रहा न गया; पहली बार छत की समूह-चर्चा में मुंह खोला, "मुझे बोलना तो नहीं चाहिए, पर यदि अनुमति हो तो बोलूं?... जब किसी ने कुछ नहीं कहा तो आगे बोला, "जिसे हम जनता कर्फ्यू कह रहे हैं वह दरअसल लॉकडाउन की रिहर्सल है; वुहान, इटली और भी कई जगह जैसा लॉकडाउन चल रहा है वैसे ही यहां भी लंबे लॉकडाउन की तैयारी लग रही है यह मुझे!" अब वह सिर हिलाकर बोलने लगा, गंभीर वक्ता जैसा हौले-हौले, "अन्यथा एक दिन के जनता कर्फ्यू से करोना वायरस का एक बाल भी बांका न होगा।" छत के दक्षिणी भाग में कब्जा जमाए यशोगान खेमे से रोषपूर्ण स्वर निकला, "तो आपको लग रहा है बाईस मार्च के बाद हमारे देश में भी तालाबंदी होगी, फ्लाइट-ट्रेन भी बंद करना पड़ेगा?" रोशनी से चौंधियाते दिल्ली के आसमान में तारे खोजने के प्रयास में लगे रामू ने कहा, "करोना अतिथि को हमने जिस प्रकार सम्मान सहित यहां बुलाया है उसका सम्मान समारोह तो करना ही पड़ेगा न!" रामू की बात से यशोगान खेमे में खलबली मच गई। रामू अभी-अभी आया एक अतिथि था, खेमे से सिर्फ भुनभुनाने की आवाज आई, "अरे क्या बके जा रहा है श्रीमान!" खेमे के एक समझदार प्रशंसक ने शांति स्थापना वाले अंदाज में कहा, "आपके विचार से कोरोना से लड़ने के लिए क्या होना चाहिए था!" रामू ने संक्षिप्त में बताया, "कुछ नहीं करना था, एक महीना पहले ही फ्लाइट बंद कर देना था, बस! करोना संक्रमण के मामले जो आज पांच सौ के पार पहुंच गए हैं वह मुश्किल से पचास पहुंचते! और तब हम बड़ी आसानी से उसे वहीं

दफन कर सकते थे!" उस शांति-सज्जन ने कहा, "तो आपको लगता है आप पीएम से ज्यादा अच्छा सोच सकते हैं!" रामू ने बिना देर किए कहा, "मैं तो अपने बारे में ऐसा ही सोचता हूं; वैसे भी इतने बड़े देश में पीएम से अच्छा सोचने वालों की कमी कभी नहीं रही है! बल्कि जो स्वतंत्र चिंतक होते हैं वह हमेशा बेहतर सोचने की स्थिति में होते हैं।" रामू के बोलते जाने के क्रम में ही यशोगान खेमा छत से अपने कमरे के लिए उतरने लगा, धीरे-धीरे।

9

तपन बढ़ाते दिन के मुकाबले शाहदरा की सुबह मनमोहक थी। अंकित के साथ रामू चौराहे तक चला आया था, चाय पीने। रास्तेभर में फैले उत्साह-उमंग का नजारा सात किला फतह कर लेने जैसा था! आते-जाते और टी स्टॉल पर जमे चेहरे विजयोल्लास में थिरकते दिख रहे थे। उसे लगा—हो न हो सरकार ने रातों-रात कोरोना से बचाव की कोई रामबाण औषधि पूरे देश की जनता में वितरित कर दी हो! आ-जा रहे लोगों के चेहरे में दमकते जोश को देखकर रामू से रहा न गया, उमंग-उल्लास की फिजा में चाय की चुस्की ले रहे बेंच पर बैठे सज्जन से शिष्टाचारपूर्वक पूछा, "करोना समस्या खत्म हो गई क्या!"

"खत्म ही समझो!" उस सज्जन ने कहा, लगा जैसे जवाब उसके मुंह से नहीं आंख से निकला हो। सज्जन के बोलने के विश्वसनीय अंदाज पर रामू को भी विश्वास हो चला; "कोई प्रमाणिक दवा या वैक्सीन की खोज पूरी हो गई है देश में!" रामू के अंदर सच्ची जिज्ञासा जगी थी।

"सनातन धर्म में रोग के उपचार के लिए हवन और आवाह्न को औषधि से ज्यादा महत्त्वपूर्ण माना गया है।" बोलकर उस सज्जन ने चाय का गिलास नीचे रख दिया, रामू का हाथ पकड़कर बगल में बिठाते हुए बोलने लगा, "कल रात को देश के नेता ने जनता को जगाने का अकल्पनीय सूत्र दिया है, देश का हौसला रातभर में आसमान से भी ऊंचा हो चला है; सच-सच बताइए अब आपको क्या लगता है, कोरोना जीतेगा या देश जीतेगा?"

"शास्त्र में चाहे जो लिखा हो, सरकार की मर्जी जो जी में आए गुड़ में लपेट-लपेट कर बोलें," रामू, सज्जन की आंखों में गड़कर बोलने लगा, जैसे सज्जन के अंदर की सारी अज्ञानता और भ्रम की उल्टी करवाना चाहता हो, "पर विज्ञान कहता है, बीमारी बातों से नहीं भागती है!"

"अदरवाइज आप रहते कहां हैं।"

"मैं रामघाट से आया हूं।" केतली में खौलती चाय की ओर देखते हुए रामू ने कहा। रामघाट का नाम सुनते ही सज्जन उठ खड़ा हुआ; दोनों हाथ माथे पर ले जाकर रामू की ओर जोड़ते हुए वहां से खिसक लिया।

चाय खत्म कर दोनों घर की ओर लौटने लगे। अंदर संचित खुशी अब अंकित ने बाहर आने दी, "तुम्हें तो बस्ती में लोग सच ही रामू ग्वाला कहते हैं यार; तीन-चार साल से तुमसे मुलाकात नहीं हुई थी न, मुझे तो लगा स्कूल वाला रामचंद्र अब कहां मिलने वाला," बोलकर अंकित आश्चर्य मुद्रा लिए रुक गया, फिर कहने लगा, "पर कल से ही तुम्हें देख रहा हूं, तुम सिर्फ रामचंद्र ही नहीं अब तो कृष्ण की वाणी भी बोलने लगे हो!"

"राम कहो या कृष्ण पर फ्लाइट बंद ना कर पाया न!" रामू की आवाज में पराजय का भारीपन था।

"फ्लाइट बंद! मतलब?"

"अरे फ्लाइट से ही तो करोना वायरस इंडिया आ रहा है न! इसलिए फ्लाइट बंद कराने के लिए दिल्ली तक दौड़ लगा दी मैंने, पर मैं भी हार गया।" अंकित के दोनों कंधों पर हाथ धरकर कहा रामू ने, जैसे अपने मन का भार बांट देना चाहता हो।

21 मार्च, दिन शनिवार; समय के सदुपयोग के ख्याल से रामू निकल पड़ा अक्षरधाम मंदिर की तरफ, अंकित को साथ लेकर। वहां भगवान है इसलिए नहीं, इस मंदिर की बनावट-बुनावट के बारे में उसने सुन रखा था। मंदिर के अंदर जाते-आते लोगों की भीड़ देखकर रामू सोचने लगा...'करोना तो अब मन-ही-मन खुश हो रहा होगा, कि चलो जिस देश की माटी में मेरा लालन-पालन होना मुश्किल था, वहां तो विशिष्ट पोषक तत्व मिलता दिख रहा है; भ्रम, वहम, अज्ञानता और उससे उपजे दर्प के सम्मिश्रण वाला पोषक तत्व!' मंदिर के अंदर स्थापित मूर्ति के पास पूजा-अर्चना या दर्शन की इच्छा लेशमात्र भी नहीं थी उसके अंदर। मंदिर की बनावट-वास्तु देखकर उसे जो खुशी अनुभव होनी थी वो भी काफूर हो गई, लोगों के चेहरे में भ्रमपूर्ण परम आनंद का भाव पसरा देखकर! उसे उदास देखकर अंकित ने पूछा, "तुम कोरोना को लेकर कुछ ज्यादा परेशान तो नहीं हो रहे हो?" सड़क की तरफ बढ़ते हुए रामू ने सिर्फ इतना कहा, "मैं करोना से ज्यादा उसकी जड़ यहां जम जाने की आशंका से सिहर उठता हूं; जनता में इतना जोश भर दिया गया

है जैसे हो-हल्ला-शोरगुल से डरकर ही करोना भाग जाएगा!" आगे घर आने तक दोनों चुप ही रहे; वैसे रामू को पता था वह अब अकेला पड़ गया है। चौराहे पर मंदिर में मानस पाठ की गति पहले से तीव्र हो चली थी.....निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई.....

10

जनता कर्फ्यू का दृश्य बड़ा ही अद्‌भुत था शाहदरा में। पिछले दो दिनों से जिस शाहदरा के शोर से उसके कान पक गए थे, जिसे और देखते रहने से उसकी आंखों ने इंकार कर दिया था, वह बिल्कुल नए अवतार में उसकी आंखों को लुभा रहा था तो कानों को मानव स्वर के लिए तरसा रहा था। सुबह सात बजे ही वह छत पर आ बैठा, अकेला। कल तक दिन में तेज चलने वाली हवाएं आज मंद-मंद चल रही थीं, जैसे जनता कर्फ्यू का संदेश घर-घर पहुंचा रही हों। चारों ओर दूर-दूर तक, जहां तक वह देख पा रहा था सड़कें-गलियां बिल्कुल निर्जन-भुतहा नजर आ रहीं थीं! लग रहा था जैसे सारी जनता को देश निकाला हो गया हो, और सभी वाहनों को सरकार ने अपने कब्जे में ले लिया हो। ऐसी सुनसान सड़कों से वह चाहकर भी नजरें नहीं हटा पा रहा था; जिन सड़कों-गलियों में वह दो दिन से पैदल भी नहीं चल पा रहा था मनमर्जी से, आज बाल श्रीकृष्ण के मुंह में प्रकट वृहद् संसार जैसी दिखने लगी थीं! रामू की आंखें तो जैसे चिपकी जा रही थीं शहर की सड़कों के मूल स्वरूप पर। काफी देर तक उसके कानों में कोई मानव स्वर नहीं पड़ा; एकाएक सहम उठा, कहीं इस दुनिया में वह अकेला जीवित मानव तो नहीं बचा है! तभी दो बच्चे नीचे की गली पर आकर फुदकने लगे, हाथ में टूथब्रश लिए। दोनों की खिलखिलाहट से उसे तसल्ली हुई; नहीं-नहीं, वह अब अकेला नहीं, दो बच्चे भी हैं इस दुनिया में! अब उसे शरीर के सारे अंग-अवयव उन्मुक्त होते लगने लगे। विविध सुर-स्वर के साथ चिड़ियों का फुदकना-उड़ना-चहचहाना चरम पर पहुंचा जा रहा था! चहचहाहट से कान ही नहीं, मन भी भरता गया, लबालब! ...'शाहदरा में इतनी चिड़ियां! रंग-विरंग!' पिछले दो दिनों में किसी चिड़िया पर नजर तो क्या किसी की चीं-चीं भी नहीं सुनाई पड़ी, आज तो लग रहा है जैसे पूरे देश में पक्षी ही प्रजा है! अब रामू ने आंख और कान दोनों को साथ कर लिया...दूर कहीं गुम होती जाती चौड़ी सड़कें...जलेबी जैसी आपस में गुंथती

जाती गलियां...सड़क किनारे बच गए पेड़ों में अपने कलरव से पूरी दुनिया को चुनौती देती चिड़ियां...सच में भुवन ने सही कहा था, जनता कर्फ्यू आठवां अजूबा है! उसने थोड़ी देर के लिए आंखें बंद कर लीं; दिल से देश के नेता को याद किया, नेता हो तो ऐसा जिनके आह्वान ईश्वरीय प्रभाव उत्पन्न करें; जिनके दिए दो शब्द 'जनता कर्फ्यू' को सर्वजन गीता-बाइबल-कुरान-गुरुग्रंथ के दो सबसे प्रभावोत्पादक शब्द-सा सीने से चिपका लिए हों! छत से दूर तक दिल्ली की दुबकी दुनिया को देखते हुए उसे लगा जैसे पूरा हिंदुस्तान देख पा रहा हो। उसे गर्व होने लगा अपने देश पर और देश के नेता पर! उसकी इच्छा हुई अपने मन-तरंग से अंकित को भी झंकृत कर दे! अगले ही क्षण याद आया, जनता कर्फ्यू के मसले पर कल भी छत पर देर रात तक तर्क-कुतर्क चलता रहा था, उसे अभी जगाना ठीक नहीं है; उसे भी लगा जनता जितना सोए उतना अच्छा!

उसे अंकित को बुलाने की जरूरत नहीं पड़ी; आठ बजे पूरा भुवन ग्रुप छत पर धड़धड़ाते हुए आ धमका, जैसे विजय पताका फहराने की होड़ मची हो! भुवन छत पर ऐसे चहलकदमी करने लगा जैसे आज शाम को उसे कैबिनेट मंत्री पद की शपथ लेने का निमंत्रण मिला हो! शाहदरा की सूनी सड़कें देखकर सभी पुलकित हुए जा रहे थे। चिड़ियों के कलरव से पेड़ों में मचे तूफान को वे सभी धरती में कोई अवतार जैसा देखने-महसूस करने में लीन हो गए। चारों ओर फैले अभूतपूर्व दृश्य पर सभी भुवन की पहली प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगे। भुवन भी तो अधिक देर तक चुप नहीं बैठ सकता था, आठवें अजूबे जैसे इस दुर्लभ अवसर पर! दक्षिणी-पश्चिमी दिशा में मुंह करके वह अचानक प्रकट हो उठा, "इसे कहते हैं देश की जीत! पिछले सत्तर साल में कभी किसी ने देखा होगा ऐसा स्वैच्छिक कर्फ्यू!" आंखों में बड़प्पन की आभा लाते हुए बोलता गया वह, "इसे कहते हैं देश के नेता! जब-जब आवाज दी, जनता सड़कों पर, जब-जब पुकार-गुहार लगाई पूरा देश घरों में!"

"अपने चारों ओर कोरोना फैला दिया है, फिर तो जान बचाने के लिए जनता कुछ भी करेगी!" उत्तर कोने में अकेले खिसक लिए इसरार की आवाज थी; रामू को लगा उसके करोना वाले स्टैंड में यहां दिल्ली में भी वह अकेला नहीं है।

"फैला दिया! मतलब!" बोलते-बोलते भुवन की आवाज में तल्खी चढ़ने

लगी, "ऐसी ही उल्टी-सीधी बात करते रहने के कारण ही तुम लोगों की ऐसी दशा हो चली है देश में!" अंकित ने दोनों का बीच-बचाव किया। रामू ने भी कहा, "छत पर इस तरह हो-हंगामा करके प्रधानमंत्री के जनता कर्फ्यू का मजाक नहीं बनाना चाहिए।" फिर सभी एक-एक करके अपने-अपने कमरों में, पिछले दो दिनों से जिसका साक्षात्कार रामू को कबूतर के दड़बे के रूप में हो चुका था, दुबक लिए।

पिछली दोनों रातों में रामू ठीक से सो नहीं पाया था। एक तो दड़बेनुमा कमरे में तीन-तीन लोगों का बिस्तर लगा होता, ऊपर से वह चौथा भी आ गया था। सबसे बड़ी बात, कोरोना अब कोरोना भर नहीं रह गया था, हर जुबां पर दिन तो दिन, रात को भी देर तक कल-कल करता रहता! सो जनता कर्फ्यू का संपूर्ण आनंद उठाने की सोचकर वह दोपहर को सो गया, दड़बे की भीड़ में ही; चावल-दाल और आलू का भर्ता खाकर, कर्फ्यू भोज्य-सा समझकर। नींद में जाते हुए उसने अपना मन-मस्तिष्क खाली हो जाने दिया, कि आगे सोचने-करने के लिए बचा ही क्या है!

11

उसकी नींद अचानक खुल गई, कुछ पीटने-बजाने-धूम-धड़ाका करने की तेज आवाज से। वह छत पर दौड़ा चला आया। भुवन-ग्रुप हाथों में थालियां लिए पीट रहे थे। गली के दूसरी ओर घरों की बालकनी-छतों पर भी लोग थाली-घंटा-घड़ियाल बजा रहे थे। चौक के मंदिरों से शंख की स्वर-लहरी चारों ओर वातावरण में जोश भर रही थी। रामू को याद आया, कोरोना संक्रमण की परवाह न कर दिन-रात ड्यूटी में मुस्तैद रहने वाले डॉक्टरों-नर्सों स्वास्थ्य-सफाई-पुलिस कर्मियों की हौसला अफजाई के लिए ऐसा किए जाने का ऐलान था। बिना देर किए उसने छत के कोने में पड़े स्टील के परित्यक्त गिलास और सरिया के छोटे टुकड़े से स्व-सुर निकलने दिया। ऐसा करते हुए उसने महसूस किया, सच में इस वक्त कोरोना के अग्रिम मोर्चे पर डटे जांबाज लोग ही तो असली देवदूत हैं; अन्यथा भाषणबाजों से कोरोना पीड़ितों का भला होने से रहा! पांच मिनट तक चले उत्साहवर्धन सत्र के दौरान छत पर संपूर्ण शांति बनी रही। भुवन और इसरार दोनों ही एक-दूसरे को देखकर संतुष्ट नजर आ रहे थे। तब रामू को भी लगा देश में एक मन होना कितना जरूरी है।

यह क्या! पांच मिनट का उत्साहवर्धन सत्र अभी ठीक से समाप्त भी नहीं हुआ था, कि सामने चौराहे पर ढोल-नगाड़े बजने लगे! गली-गली से लोगों का जत्था चौराहे की तरफ सरपट भागने लगा। शंख-घंटा-घड़ियाल की टंकार वहां ऐसा समाँ बांध रहे थे, जैसे किसी बड़े यज्ञ का समापन हुआ हो! रामू से रहा न गया, उसने अंकित से पूछा, "वहां चौराहे पर क्या चल रहा है? करोना को पकड़ लिया गया है क्या?" इतना सुनते ही भुवन भड़क उठा, "रामचंद्र नाम होकर भी आप श्रीराम जी के विरुद्ध सोच रखते हैं; मैं भी रामघाट का हूं, पर अब जान पाया हूं कि लोग सही कहते हैं रामघाट हमेशा देश की चाल से अलग डेढ़ चाल चलता है!"

"रामघाट हर मसले पर अपनी स्वतंत्र सोच को जन्म देता है।" रामू ने साधारण ढंग से कहा।

"रामघाट की सोच से शाहदरा वालों को क्या मतलब, वे अपनी सोच से उत्साहवर्धन कर रहे हैं।" भुवन भी किसी बड़े तर्क-वितर्क में नहीं पड़ना चाह रहा था।

"वे तो किसी अज्ञात खुशी में जश्न मनाते दिख रहे हैं, हो न हो करोना वायरस का संक्रमण शायद बढ़ना बंद हो गया हो!" बोलकर रामू के चेहरे में संकट-समाप्ति सी भाव-भंगिमा उभर आई।

"देखिए रामूजी, आज दिनभर जनता कर्फ्यू के दौरान कोरोना की कड़ी तो वैसे भी टूट गई है, अब आगे इसमें उतना दम नहीं रह जाएगा न!" बोलकर भुवन ने नाराजगी वाले लहजे में कहा, "हमें प्रधानमंत्रीजी की बातों में खोट नहीं खोजनी चाहिए।"

"देखिए भुवन भैया, देश के प्रधानमंत्री हम सभी के आदर्श होते हैं, उनकी बातों पर सभी गौर करते हैं; पर..." इतना बोलकर रामू इस तरह देखने लगा भुवन को, जैसे हर मसले की गहरी पकड़ है उसके अंदर, आगे कहा, "करोना का मामला एक दिवसीय नहीं है, आगे भी लंबे दिनों तक जीवन अवरुद्ध होना है; मैं कल ही किसी भी ट्रेन में लटक-झटक कर निकल लेता हूं।"

"अरे रामूजी हद कर दी आपने, जीवन अवरुद्ध होना इतना आसान है क्या! चीन, अमेरिका, इटली-जैसा यहां कुछ नहीं होना है!" बोलकर भुवन ने बेफिक्री से संसद भवन की तरफ हाथ लहरा दिया, जैसे वहां से किसी बेतार से जुड़ा हुआ हो।

"यदि इंडिया में भी लॉकडाउन जैसा कुछ हो गया फिर तो मैं यहीं फंस जाऊंगा!" बोलने के बाद रामू के चेहरे में चिंता की लकीरें दिखने लगीं।

"मेरे रहते आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है," भुवन सीना चौड़ा करके बोलने लगा, "शाहदरा में पार्टी इकाई के अध्यक्ष के साथ मेरा उठना-बैठना है, खान-पान भी हो चुका है एक-दो बार, वैसी कोई स्थिति आएगी तो पार्टी के लोग आपको रामघाट भेजने का इंतजाम करेंगे; अरे भई विदेशों से लोगों को जहाज में भरकर लाए हैं, फिर अपना रामघाट तो दिल्ली के सगे भाई जैसा है!"

"अरे रामू, ट्रेन से लौटने की बात भूल जाओ," अभी तक चौराहे पर नजर गड़ाए अंकित ने पीछे मुड़कर कहा, "अपने इंडिया एरिया का रहने वाला मिथिलेश कल रात से ही नई दिल्ली स्टेशन पर बैठा है, पूरब की तरफ जाने वाली हर ट्रेन इतनी ठसाठस भरी हुई है कि अंदर पैर भी नहीं रख पा रहा है!"

"तो क्या मुझे यहीं फंसकर रहना पड़ेगा!" रामू परेशान हो उठा।

"अरे जो होगा सबका होगा, साथ जिएंगे-साथ मरेंगे!" कम बोलने वाले मुजीब ने ऐलानिया अंदाज में कहा।

मंजरी ने टच स्क्रीन मोबाइल सेट खरीद लिया था, तो रामू ने भी खरीद ही लिया था। रामू व्हाट्सएप का कीड़ा नहीं रहा कभी, घंटे-दो घंटे में मैसेज बॉक्स चेक भर कर लिया करता था। आठ बजे तक जनता कर्फ्यू का दम घुटने लगा था, लोग-बाग अपनी रफ्तार पकड़ने लगे; अनायास उसे मोबाइल की याद आई। व्हाट्सएप मैसेज बॉक्स टच करते ही उसने माथा पकड़ लिया, अरे बाबा! मंजरी का मैसेज तो साढ़े छह बजे का ही आया हुआ है! '...रामघाट से जाकर किसी दिल्लीवाली को दिल दे बैठे क्या! मैं तो सुबह से ही तुम्हारे घर बैठी हूं...' मैसेज पढ़कर उसके होश उड़ गए। उसने तुरंत मंजरी का नंबर मिलाया।

'...देश में कर्फ्यू था तो तुम तपस्या में चले गए थे क्या...' रामू का कॉल रिसीव करने में मंजरी देर नहीं करती थी; एक-दो रिंग के बाद ही मंजरी के उलाहने वाले शब्दों से भरा मोबाइल थामे रामू का हाथ थरथराने लगा। उसे आज तक समझ में नहीं आया, हर जगह तर्क-वितर्क बात-बतंगड़ भिड़ंत-मरंत से वह पीछे नहीं हटता, पर मंजरी से बात करते वक्त उसे क्यों लगने लगता जैसे पसीने निकल आते हों।

"अरे नहीं रानीजी! यहां आज शाम वाला ड्रामा कुछ ऐसा था कि मोबाइल की तरफ ध्यान ही नहीं गया! लेकिन तुम मेरे घर में क्यों बैठी हो सुबह से? कुछ गड़बड़ तो नहीं हुआ ना, माँ ठीक है न?" बोलते हुए रामू को लगा लोग शायद सच ही कहते हैं, मर्द को औरत के सामने पहले सफाई देनी होती है तब बात आगे बढ़ पाती है।

'कुछ भी गड़बड़ नहीं है मजनूं महाराज, बस सब कुछ हड़बड़ हो रहा है; तुम्हारी शादी तय हो गई है, कोरोना के आने से पहले तुम लौट आओ तो चट मंगनी पट ब्याह हो जाए...' सुनकर रामू ठिठक गया, शायनी की आवाज!

'...ड्रामा तो अभी स्टार्ट ही हुआ है! बाय दि वे...' अरे अब मंजरी का मोबाइल परवेज के हाथ में आ गया!

'...गुरु जी, अभी तो कर्फ्यू के लंबे-लंबे दौर आने वाले हैं, इसलिए जल्दी लौट आओ; जरा मंजरी के बारे में सोच लिया कर यार, अब समझो उससे रहा ना जाएगा...' लगता था पूरा कोरोना-कैबिनेट वहीं अड्डा जमाए बैठा था।

'...अरे रामू रेल मंत्रालय में बड़ा उठापटक चल रहा है; एक-दो दिन में देश में कुछ बड़ा होने का संकेत मिल रहा है, समझो तूफान से पहले की शांति! फिर भी तुम्हारे आने का इंतजाम करता हूं मैं, कल से परसों तक...' अब मोबाइल से सहज की आवाज आने लगी; उसने उसके आने की स्थिति स्पष्ट की।

'...रामू तुम सोच-सोच कर निराश मत होना कि तुम्हारा दिल्ली जाना व्यर्थ गया; जब भी भारत में कोरोना वायरस का इतिहास लिखा जाएगा उसमें रामचंद्र का भी नाम आएगा, यानी भगवान रामचंद्र और रामू ग्वाला दोनों का; तुम तो उड़ान बंद कराने दिल्ली गए थे न! अब तो लग रहा है फ्लाइट सिर्फ बंद नहीं होने वाली है, बल्कि खुद-ब-खुद बैठने वाला है...' मोबाइल से अहम की गंभीर बातें आने लगीं, रामू ने हाथ में मोबाइल कसकर थामे रखा। अहम का पूर्ण विराम होते ही कब से बोलने के लिए उतावले हो रहे रामू ने कहा, "पर मंजरी यह क्यों नहीं बता रही है वह सुबह से मेरे घर में क्या कर रही है? मुझे घबराहट-सी हो रही है!" खुली छत पर होने के बावजूद उसके माथे पर पसीने की बूंदें बनने लगीं।

'...अरे बुद्धू, तुमने मुझे अभी ही तो रानीजी कहा है, समझो आज से मैंने तुम्हारा घर संभाल लिया है; आज दिनभर जनता कर्फ्यू लगा था तो तुम्हें जरा भी ख्याल आया माँ का! तुम्हें तो पता है मामू मौन रहते हैं, तुमने सोचा माँ का

क्या हाल होगा घर में अकेले-अकेले? ऊपर से गाय-भैंस भी, इसलिए सुबह सात बजे ही भैया छोड़ गए थे...' मंजरी बिना रुके बोले जा रही थी तो रामू ने टोका, "उदय भैया ने तुम्हें हमारे घर छोड़ा है! मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा है डियर," रामू की खुशी घुली हुई आवाज का वजन हल्का होता गया।

'...तुम मेरे भैया को करीब से नहीं जानते हो; अंदर से समझो बाबा साहब जैसे निर्मल हैं, सपने में भी मेरी भावना के विरुद्ध नहीं जा सकते! मुझे छोड़ने आए तो माँ के साथ चाय पीने बैठ गए, फिर तो डेढ़-दो घंटा बैठे रहे, उठे तो सीधे मुझे हुक्म-सा दिया, 'तुम दोनों की शादी तय हो गई है, रामू को जल्दी बुलाओ शादी निपटा दें।' मैंने कहा यह सब क्या हो रहा है, तो मुझे बोलने भी नहीं दिए! कहने लगे, 'जिन लोगों को दुनिया में बड़े-बड़े काम करने हों उन्हें शादी जैसा काम तो फटाफट ही कर लेना चाहिए'; माँ बरामदे में मुझे बुला रही है, शायद तुमसे बात करना चाहती है...' मंजरी जब मोबाइल में बोलने लगती है तो दूसरी तरफ वाले के जिम्मे सिर्फ मोबाइल थामने का काम रह जाता है।

'...कैसे हो बेटा, देश-दुनिया में तो तबाही आने जैसा दिख रहा है; दिल्ली किसी को आज तक कुछ दिया है क्या! तुम दिल्ली से लौट आओ बेटा; हमने और उदय ने आज हड़बड़ी में ही सही तुम्हारी और मंजरी की शादी तय कर दी है, मंजरी बिटिया तो सुबह से ही सारा घर अपने माथे ले रखी है, वैसे अभी उदय आने वाला है भेज दूंगी उसे...' मोबाइल से माँ के रूआंसा होते जा रहे स्वर आने लगे; रामू की उंगली खुद-ब-खुद स्क्रीन के रेड सर्किल पर पड़ गई। रामू मौन-मोबाइल को देखता रहा; पांच सेकंड में ही मंजरी वाला रिंग टोन बजने लगा, '...तुम परेशान मत होना यार, बात करते-करते माँ की आंखों में आंसू आने लगे थे, लगता है इसलिए तूने काट दिया होगा।'

"लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आ रही है, आज ही उदय भैया के मन में शादी तय करने की जिद कैसे आ गई!" रामू के अंदर उपज रही उलझन उसकी आवाज में सवार हो चली थी।

'...दुनिया और दुनिया की समस्याओं को लेकर तुम काफी संवेदनशील हो, फिर तो तुम्हें दूसरे की भावना भी महसूस करनी चाहिए; तुम तो जानते ही हो हमारी-तुम्हारी दोस्ती में भैया कभी आड़े नहीं आए, आज जब मैंने तुम्हारे घर में ही दिनभर रहने की जरूरत बताई भैया को, तो उसे जरा भी बुरा नहीं लगा, बल्कि उसके चेहरे में मैं पढ़ पाई मेरे स्वतंत्र विचारों पर उसे

गर्व है! जनता कर्फ्यू के दिन घर में अकेले पड़ी बुजुर्ग माँ की सहायता करने की मेरी भावना का उसने सम्मान किया, तभी तो बिना देर किए मुझे यहां छोड़ आए...' मंजरी बोलती जा रही थी, रामू ने टोका, "लग रहा है तुम मेरे कमरे से बात कर रही हो और वे लोग शेड में कब से बैठे होंगे, तभी तो परवेज का कॉल आ रहा है! मैं तुम्हारा कॉल डिस्कनेक्ट करके परवेज का कॉल लेता हूं।" बोलकर उसने मंजरी का कॉल काट दिया।

'...अरे गुरु! फोन में ही सब कुछ निपटा लोगे क्या, शादी की रात के लिए भी कुछ बचाकर रख लो! बिना दूल्हा के ही दुल्हन ससुराल आ गई तो क्या हुआ, डोंट वरी हम लोग इसे रामघाट का आदर्श विवाह के मॉड्यूल के रूप में प्रचारित करेंगे! लेकिन मानना पड़ेगा रामू, अल्लाह तला जो करता है अच्छा ही करता है; आज अगर उदय भैया शादी तय नहीं करते, तुम तो जिंदगीभर मुंह भी नहीं खोल पाते और बेचारी मंजरी कुंवारी रहना ही मंजूर कर लेती!...' परवेज के शब्दों में उलाहना बढ़ता जा रहा था; रामू ने टोका, "वह सब तो ठीक है मियां, लेकिन मुझे तो शक हो रहा है जनता कर्फ्यू के दिन शादी तय हुई है तो शादी की रात तक कहीं इमरजेंसी न लग जाए! अब यह तो बताओ तुम लोग जनता कर्फ्यू के समय यहां कैसे पहुंच गए? तुम लोगों को करोना का डर नहीं है क्या?" अब जाकर रामू के ध्यान में आया रामघाट में जनता कर्फ्यू का हालचाल जानने का।

"अरे रामू ये क्या माजरा है! कोरोना को तुम पहले कुरौना नाम से पुकारते रहे, ब्रह्मा सर के हस्तक्षेप से कोरोना बुलाने लगे और अब करोना कैसे हो गया?" अहम का कौतूहल जाग उठा, जब उसने गौर किया कि रामू कोरोना को करोना उच्चारित कर रहा है।

'तुम लोगों ने भी तो पढ़ा होगा कोरोना बहुरूपिया होता है! तो मैं भी इसे जगह और उसकी तासीर के हिसाब से पुकारता हूं; यहां दिल्ली में समझो कोरोना भगाने के लिए कुछ खास नहीं हो रहा है, इसलिए अब मैं इसे करोना कहने लगा हूं।' रामू ने उच्चारण भिन्नता का कारण स्पष्ट किया; फिर उतावला होकर पूछा, 'अरे अब तो रामघाट में जनता कर्फ्यू का हाल सुनाओ कोई।'

'...अरे भगवान राम के दूत रामू! जनता कर्फ्यू का आंखों देखा हाल तुम्हें सुनाता हूं', परवेज की आवाज थी, 'पांच बजे तक तो पूरे रामघाट में समझो मरघट-सा सन्नाटा पसरा रहा! सौ प्रतिशत जनता, चाहे किसी भी पार्टी या

मत के हों, ने पीएम के आह्वान का मान रखा; तुम तो रामघाट के जज्बे से वाकिफ हो ही, जब एक होने की बारी आती है तो एक हो उठता है पूरा रामघाट! परंतु पांच बजे सड़कों पर पार्टी के लोगों ने जो हुड़दंग मचाना शुरू कर दिया तो भला कौन घर के अंदर रहना पसंद करता...', आंखों देखा हाल बयां करती परवेज की भारी आवाज गुम हो गई, एकाएक शुरू हुए शायनी के मधुर स्वर के सामने, '...अरे रामचंदर उर्फ कृष्ण कन्हैया! मंजरी ने जैसे ही मुझे शादी की खुशखबरी सुनाई हम सभी शहनाई बजाना अपना फर्ज समझते हुए यहां आ गए! बाय दि वे माँ का हालचाल लेना भी जरूरी था; आखिर देश-समाज के लिए घर-बार छोड़ने वाले कितने नवयुवक पैदा हो रहे हैं देश में!...' मोबाइल से शायनी की मधुर आवाज आती जा रही थी; रामू को रामघाट की याद आने लगी, बैकग्राउंड में रामघाट तीरे वाले मानस पाठ के चौपाए...फरकहिं सुमद अंग सुनु भ्रात...उसे बिलकुल नहीं भा रहे थे; अंदर एक नया शून्य बनने लगा था, कोरोना से बचाव नहीं कर पाने का शून्य!

12

कल सफलतापूर्वक संपन्न हुए जनता कर्फ्यू के बाद शाहदरा का सवेरा बिल्कुल सामान्य था; जैसा हर दिन रहता है। कोरोना को लेकर कहीं कोई डर या संदेह दूर-दूर तक नहीं दिख रहा था। हवा भी कल जैसी ही सुस्त-शांत पड़ी थी; हवा के मौन से सूरज की तपन को मौका मिल गया था, दिल्ली को गरमाने का। चौराहे पर मानस पाठ उफान पर था...होम करन लागे मुनि झारी, आपु रहे मख कीं रखवारी...। गलियों में, दुकानों में, वाहनों में, कुछ लोग मास्क लगाकर जरूर नजर आ रहे थे। कई दिनों से प्रचारित-प्रसारित सोशल डिस्टेंसिंग और मास्क लगाने का पाठ जुबां पर राज कर रहा था, जाहिर है मुंह बंद नहीं किया जा सकता था। भुवन ग्रुप के किराए के दड़बेनुमा मकान में पानी की भारी किल्लत शुरू हो गई थी। नीचे गलियों में लोग बता रहे थे, जितना पानी सप्लाई होता है उसमें से आधा तो बार-बार हाथ धोने में ही खत्म हो जा रहा है! भुवन ग्रुप सुबह होते ही अपने-अपने धंधा-पानी के लिए निकल जाता। रामू को कभी अंधेरी कोठरी में, तो कभी धूप से लदी छत पर जाकर अपना समय काटना पड़ता। सीढ़ी में बैठकर आंखें बंद कर लेने पर उसे एहसास हुआ, दरअसल यह तो अंदर में जमा होती जा रही हताशा के लक्षण हैं! कैसी हताशा? उसने खुद से प्रश्न किया, उत्तर अंदर

से आया, '...हिंदुस्तान में अच्छा सोचना आसान काम है, अच्छा होते देखना दुर्लभ; अच्छा करना तो सबसे जटिल!' अब तो उसका अंतर्मन उससे संवाद करने लगता...'ठीक है एक महीना पहले से ही फ्लाइट बंद कर दी जाती तो भारत में करोना का कहर दिन-ब-दिन विकराल नहीं होता, पर ऐसा करना तुम्हारे हाथ में नहीं ठहरा न! तुम सिर्फ सोचकर क्या करोगे...।' दड़बे में अकेले-अकेले उसे कभी-कभी बेचैनी होने लगती; नीचे गली और उससे आगे चौराहे तक भी आ जाता। सारी दुनिया तो यथावत चलायमान दिखती; बढ़ते जा रहे संक्रमण का लोगों में कहीं कोई खौफ नहीं! फिर तो शायनी सही कह रही थी, कोरोना के मामले इंडिया में बढ़ते जाएंगे तो यहां भी वुहान, इटली, इंग्लैंड, अमेरिका-जैसा लॉकडाउन करना पड़ सकता है। रामू के मन में प्रश्नों-प्रति प्रश्नों की झड़ी लग गई...'लॉकडाउन करना ही पड़ेगा तो कब करेंगे? पूरे देश में करोना वायरस के एक समान प्रसार होने के बाद! उसे याद आया, परवेज भी तो देश में समानता की बात करता रहता है; तो क्या सबसे पहले करोना के मामले में समानता लागू करेगी सरकार! सारे देश में करोना को एक समान फैलाकर? यदि लॉकडाउन से ही करोना रुकना है तो देरी किस बात की हो रही है? इसका मतलब है उस दिन एमपी साहब के घर पर रामघाट के परिचित ज्ञानेश चाचा सही फुसफुसा रहे थे! पर भोपाल वाला मामला तो अब पूरा हो चुका है, अखबारों में खबरें तो कुछ ऐसी ही दिख रही थीं; उच्चतम न्यायालय ने विश्वास मत के लिए सत्र बुलाने का आदेश दिया है...हां-हां, लॉकडाउन तो समझो होने ही वाला है! तुम यहां नेतागिरी करते रहो और वहां तुम्हारे घर पर गाय-गोबर कौन करेगा? तुम्हारी बूढ़ी माताजी? मंजरी!...।' उसके अंदर से स्पष्ट आवाज आई थी, बिल्कुल श्रव्य। उसकी तो शादी भी तय हो गई है! एकाएक उसके सामने मंजरी आने-जाने लगी, चलचित्र भांति। अब वह अपराध बोध से घिरने लगा, '...देश में कोरोना की इंट्री नहीं होने देने का संकल्प लेकर यहां-वहां दौड़ता फिरता रहा, पर अंजाम क्या हुआ? आसमान में उड़ते पतंग के समान ही न! वह तो देश के लिए कुछ नहीं कर सका, अब मंजरी के लिए भी कुछ ना कर पाया तो फिर उसके होने का क्या मतलब रह जाएगा? ना देश के लिए, ना प्यार के लिए!' वह बेताब हो उठा; इससे पहले कि बस-ट्रेन बंद हो जाए उसे रामघाट पहुंच जाना चाहिए। उसने सहज का फोन मिलाया ही था कि उधर से सहज की आवाज आने लगी, '...अरे गुरु! मैं तुम्हारे आने के जुगाड़ में

लगा हूं, पापा बता रहे हैं रेलवे के सारे अधिकारी पागल से हुए जा रहे हैं, बता रहे हैं कोई नई घटना घटने वाली है; आज से कल तक तुम्हें किसी ट्रेन में बिठाता हूं; लॉकडाउन के तो जबरदस्त कयास लगाए जा रहे हैं, पर यहां पार्टी वाले तो कह रहे हैं यह सब विपक्षी दलों की साजिश है! जैसे ही बात बनती है मैं तुम्हें मैसेज करता हूं; आज कोरोना-कैबिनेट की अर्जेंट बैठक भी रखी है हम लोगों ने, लॉकडाउन के मसले पर...' सहज की आवाज से रामू को लगा यहां दिल्ली में तो सभी दम-खम से अपनी जगह पर डटे हैं और वहां रामघाट के लोग हैं जो पूरे देश की चिंता में पतले हुए जा रहे हैं! वह अब अंतिम और तार्किक निष्कर्ष पर पहुंच चुका था; बहुत हो गया करोना का झंडा-पर्ची, अब तो यह कोई खेल-सा बनता जा रहा है, बेकायदे का खेल! जिसने जन्म दिया है इस खेल को वह खेले यह खेल, खुद ही सीटी बजाए, खुद ही दर्शक बने, सब उसकी मर्जी! उसे तो बस मंजरी के पास पहुंच जाना है अब; कोई बुद्धू ही होगा जो अपनी गृहस्थी की बेपटरी गाड़ी को पटरी पर आता देखकर भी पटरी पर ना चला पाए! चलाना क्या, दौड़ाएगा वह अपनी जिंदगी की गाड़ी को मंजरी के संग! आखिर सबके जीवन का लक्ष्य यही तो होता है!

सोचते-भटकते तेईस मार्च निकल गया, चौबीस भी। भुवन ग्रुप देर रात को लौटते। आजकल कुछ ज्यादा थके-थके होने की बात करने लगे थे। शायद मजदूरों से हर जगह तेजी से काम लिया जा रहा था! ऐसे में दड़बे में आते ही बिस्तर पर निढाल हो जाते सभी; किसे फुर्सत थी भला रामू से बात करने की। मंजरी का नंबर स्क्रीन पर बार-बार निकालने के बावजूद वह डायल नहीं कर पा रहा था; वह खुद सोच नहीं पा रहा था, कि शर्म के मारे डायल नहीं करना चाह रहा था या दिल्ली-दौड़ की विफलता से मुंह चुरा रहा था! तभी सहज का मैसेज दिखा; बात करने के बजाय सहज ने मैसेज कर दिया?...लग रहा है देशभर में ट्रेनें रद्द हो रही हैं, रेल भवन से अभी-अभी एक सीनियर ऑफिसर ने कंफर्म किया है; हेल्थ मिनिस्ट्री की सभी ट्रेन रद्द करने की योजना पर यदि आलाकमान ने मुहर नहीं लगाई तो कल या परसों तुम्हारी सकुशल वापसी की गारंटी समझो...मैसेज पढ़कर उसे तसल्ली हुई, चलो एक-दो दिन और सांस रोककर यहां बैठे लो, फिर तो घर पहुंच ही जाएगा। पर सहज के मैसेज से भी उसके अंदर मचा तूफान शांत नहीं हो पा रहा था...आज चौबीस मार्च भी निकला जा रहा है, करोना बढ़ता जा रहा

है, चारों ओर असमंजस का वातावरण फैला जा रहा है; मास्क-सैनिटाइजर की खोज करने वालों की भीड़ बढ़ती जा रही है दुकानों में, लोगबाग समय निकालकर दिन में दस दफा हाथ धोने में भिड़े हैं! सुबह-सुबह काम पर जाते वक्त भुवन आज भी दोहराता गया है कि उसकी आज नेताजी से बात हुई है, नेताजी कह रहे थे देश का माहौल जान-बूझकर खराब किया जा रहा है, यह सब विपक्षी दलों की साजिश है...जिंदगी में रामू इतना कन्फ्यूज्ड कभी नहीं हुआ था जितना दिल्ली आकर हुआ है! आखिर वह भी तो किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पा रहा है, सिवाय इसके कि उसे मंजूरी के पास होना चाहिए। यह क्या मैसेज भेजा है सहज ने, शायद ट्रेन में टिकट का इंतजाम हो गया हो! ...आज अच्छी खबर है, शाम को पीएम देश को संबोधित करेंगे, रामघाट में पार्टी वाले कह रहे हैं और पापा भी अनुमान लगा रहे हैं देश को दुविधा से बाहर निकालेंगे पीएम; संदेश के बाद ही कोई निर्णय लेना ठीक रहेगा...सहज का मैसेज पढ़कर रामू ने लंबी सांस ली, राहत की सांस! पीएम का देश को संबोधित करने का मतलब है देश में आपाधापी-मारामारी-अफवाहबाजी की दुकानदारी बंद हो जाना। अच्छा है देर आए दुरुस्त आए, एकमुश्त, बिल्कुल स्पष्ट, चों-पों-हो-छो की कोई गुंजाइश नहीं। बचपन से ही भारत देश पर गर्व करता आ रहा रामू का गर्व तब सच में उफान पर आ गया था...झंडा ऊंचा रहे सदा हमारा! शायद इसलिए कल शाम से ही चौराहे के मंदिर में भी मानस पाठ की जगह रामधुन ने ले ली है; शत्रु-संहारक सदृश्य रामधुन...हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे...सोचते-सोचते ही उसे झपकी आने लगी; शाम को वायु-ताप नीचे लुढ़क आने से।

"रामू! मारे गए गुरु!" अंकित की घबराहटभरी आवाज थी; अफरा-तफरी में सीढ़ी चढ़ने की तेज आवाज में दबे होने के बावजूद रामू ने अंकित की आवाज पहचान ली। झपकी से बाहर निकलकर वह सीढ़ी की तरफ भागा; अंकित या उसके किसी साथी के साथ कोई दुर्घटना तो नहीं हो गई! अंकित का चेहरा सीढ़ी से ऊपर चौताल तक आ पहुंचा था; अर्ध-मुस्कान और अर्ध-बदहवासी में गुंथा हुआ! दो विपरीत भावों में सम्मिश्रित चेहरा उसने जीवन में इससे पहले शायद ही कभी देखा था; रासायनिक घोल में घोलक और घुल्य-सा, एक-दूसरे में अदृश्य! रामू को याद आया, आज पीएम का संदेश था देश के नाम; जरूर उन लोगों के कोरोना-कैबिनेट द्वारा भेजे पत्र पर सरकार का ध्यान गया होगा! उसने खुशी से पूछा, "फ्लाइट बंद हो गया

ना!" शांत गंभीर किस्म का अंकित झल्ला उठा, "अरे मारो गोली फ्लाइट को, कंप्लीट लॉकडाउन हो गया यार; सब कुछ बंद, ट्रेन-बस-गाड़ी-घोड़ा और आदमी के दो पैर भी!"

"मतलब?" रामू अचकचा गया।

"मतलब माने आलू! मोबाइल में समाचार नहीं देखते हो क्या!" बोलते हुए अंकित की आवाज में चिड़चिड़ापन घुलने लगा, "अरे यार अब घर से बाहर कदम नहीं रख पाओगे, चौदह अप्रैल तक; समझो हम लोगों की तो मौत आ जाएगी! फैक्ट्री मालिक मार्च का भुगतान पता नहीं कब करेगा, चौदह अप्रैल तक चलेगा कैसे पेट-पानी! तुम्हारे पास एकाध महीने का इंतजाम है कि नहीं?" अंकित को परेशान हाल देख रामू ने कहा, "मेरे पास तो कुछ दिनों का इंतजाम है, जरूरत पड़ेगी तो सहज मेरे अकाउंट में डाल देगा।"

"अरे नहीं यार, सहज के पिता हंसामल साहब को कौन नहीं जानते हैं; वह तुम्हारी मदद कर सकता है, हम लोग यहां कुल अठारह लोग हैं, तीन के तो पत्नी-बच्चे भी हैं, सभी की मदद वह नहीं करेंगे न!"

"फिर क्या सोचा है?" रामू ने शून्य में जाते हुए कहा।

"इक्कीस दिन तो हम लोग इस गुफा में भी तपस्या में बैठकर निकाल सकते हैं, लेकिन हम लोगों के जानने वाले रामघाट के गांवों के और अपनी बस्ती के भी सैकड़ों मजदूर तो कंपनी के शेड में खुले में रहते हैं, पता नहीं उनका क्या होगा! वे लोग तो डेली पेमेंट वाले हैं।" अंकित बोलकर बैल जैसा सिर हिलाने लगा।

"सरकार ने संपूर्ण लॉकडाउन किया है तो भरोसा रखो सब इंतजाम भी होगा, सरकार किसी को भूखे मरने के लिए नहीं छोड़ेगी न!" भविष्य को लेकर सरकार पर रामू का भरोसा जागने लगा।

"अरे नेताओं ने तो आफत ला दिया यार, साला कल से लॉकडाउन होना ही था तो पंद्रह दिन पहले जनता को बता देता; सरकार ने चुपचाप बम गिरा दिया, क्या हमें पाकिस्तानी आतंकवादी मान लिया है?" आते ही प्रणव गर्म हो उठा, अप्रत्याशित लॉकडाउन उसे अपने ऊपर हथौड़े के प्रहार जैसा लगा था।

"रामघाट में तो हम लोग एक महीने से रट लगा रहे थे इंटरनेशनल फ्लाइट्स बंद करवा दो, यदि फ्लाइट सही समय पर बंद कर देते तो फॉरेन से करोना आने का धंधा ही बंद हो जाता!" बोलते हुए रामू की आवाज में तल्खी चढ़ती गई, "फिर तो ट्रेन-बस और पूरे देश में दो पैर तक बंद करने

की नौबत नहीं आती न!..." रामू बोल ही रहा था कि सीढ़ी से ही हाथ जोड़ते हुए भुवन ने प्रवेश किया दड़बे में, किसी पदधारी नेता के अंदाज में बोलते हुए, "देखो भाई लोग, इक्कीस दिन हँस-बोलकर शांति से निकाल लो, तब तक कोरोना अपने आप किनारे चला जाएगा, फिर जो चाहे बोलते रहना।"

"अखबारों में तो आया है कई देशों में तो डेढ़-दो महीने तक चला है लॉकडाउन!" कभी नहीं बोलने वाला मोहन भी बोलने लगा।

"तुम्हारा नाम तो मोहन है, तुम्हें तो पता होना चाहिए उन देशों में राम और कृष्ण पैदा नहीं लिए थे न! हमारे यहां बड़ी से बड़ी त्रासदी टालने वाले भगवान श्रीराम हमारे साथ हैं और संकट मोचक हनुमान भी तो हैं!" अब वह सिर हिलाकर बोलने लगा, गर्दन ऊंची कर, "शाहदरा पार्टी अध्यक्ष से मोबाइल में इसी टॉपिक पर बात करता आ रहा था; उनके पास आलाकमान की पक्की सूचना रहती है, आगे लॉकडाउन बढ़ाने की जरूरत नहीं पड़ेगी! उन्होंने यह भी कहा है यदि दूसरी पार्टी के लोग लॉकडाउन के खिलाफ बोलें तो उसे जनता को गुमराह करने वाला बताकर नंगा करो!" भुवन के तेवर भांपकर रामू दड़बे से निकलकर छत की ओर बढ़ने लगा; उसे अपने ऊपर किसी भी पार्टी का ठप्पा लगने देने से सख्त नफरत रही है, स्कूल के दिनों से ही। उसके सरकते ही समूह के सात-आठ साथी भी वहां से अपने-अपने दड़बे की ओर बढ़ गए। छत पर पैर धरते ही रामू को मोबाइल में मैसेज रिसीव होने की 'टविंग' सी आवाज आई; मंजरी का मैसेज था '...मेरा शक सही निकला न! काफी देर हो चुकी है, समझो अब तो कोरोना वायरस इस देश में नंगा नाच करेगा; हां, तुम्हें यह बताना है कि अभी नौ बजे सहज के घर पर हम सभी मिल रहे हैं, तुम मेरी चिंता मत करना, मैं परवेज के साथ चली आऊंगी और आते हुए में भैया मुझे ले लेंगे; बाय, लव यू...' संपूर्ण मैसेज को भूलकर रामू 'लव यू' पर ही चिपक गया, बल्कि मर मिटा।

रामू ने छत पर ही रहना ठीक समझा; सहज के घर सभी जा रहे हैं तो उसे कॉल करेंगे ही। नीचे गली में और दूर चौराहे पर नजर दौड़ाते ही रामू के मन में किसी अनाम आदमी के लिए तरह-तरह की गालियां जन्म लेने लगीं, असंसदीय भाषा वाली गालियां! अंदर मन-मंथन चलता रहा, '...इतने बड़े मुल्क को दशकों से स्व-दृष्टि से चलाया जा रहा है, बल्कि नचाया जाता रहा है! फिर तो इस सदी में भी उसी 'स्व' संचालित रंगमंच पर मंचन होते रहना है!...' नीचे हर प्रकार की दुकानों में औरत-मर्द-बच्चों की कतारें लगी

थीं, जैसे आदमी नहीं चींटी की लाइन हो! जैसे किसी जादूगर ने जनता को कीड़े में बदल डाला है! एक-एक सामान जुटा लेने की जद्दोजहद, जैसे तेज बारिश में कीड़े-मकोड़े अपने-अपने बिल से निकलकर ऊंची जगह की खोज में भटकते फिर रहे हों! यह तो सदियों से भारत भूमि का दुर्भाग्य रहा है, जो भी दिल्ली की गद्दी पर बैठता है उसे अपनी कुर्सी भगवान के बराबर ऊंची लगने लगती है, भगवान जिससे गलती नहीं हो सकती है! चौराहे से चला आ रहा रामधुन अचानक नदारद था; मानस पाठ वालों का तो कल से ही वनवास हो चला था!

...ली...लू...ली...लू...सहज का कॉल आ ही गया; रामू ने जैसे ही हैलो कहा उधर से आती सहज की आवाज में मोबाइल डूबता महसूस हुआ उसे '...वेरी सॉरी रामू, अब समझ में आया रेलवे वाले इतना नौटंकी क्यों कर रहे थे कई दिनों से! दरअसल पूरा रेल भवन ट्रेन सेवा बंद करने के महामंथन में जुटा था; सच कह रहा हूं रामू मुझे आजीवन इस बात का अफसोस रहेगा यहां तुम्हारी शादी का सिग्नल ग्रीन हुआ तो उधर ट्रेन का सिग्नल रेड हो गया! मैं तुम्हें वापस नहीं बुला पाया यार...' रामू को भी मजाक सूझा, "क्यों, शादी से पहले सुहागरात मनाने की हड़बड़ी है मुझे क्या!"

'...आजकल तो यही चलन चल पड़ा है, खासकर बड़े शहरों में...' सहज की आवाज में यकीन की मुहर लगी जान पड़ रही थी। रामू ने शालीनतापूर्वक कहा, "बुरा मत मानना सहज, मैं इतना बड़ा आदमी नहीं हूं कि इतने लेटेस्ट फैशन का पीछा कर पाऊं!"

'...तुम्हारा और मंजरी वाला टॉपिक अब तुम दोनों का सीक्रेट है, अब आगे से अपने तक ही रखना पड़ेगा, मजाक के लिए माफी; असली अफसोस तो इस बात का हो रहा है मुझे, कि रामघाट में एक महीने से हम लोग कोरोना में मगजमारी करते फिरते थे, आखिर हुआ वही जो राम रचि राखा...' आगे सहज की आवाज पश्चाताप से भीगी लग रही थी, '...जहां तक मुझे भारतीय अर्थव्यवस्था की समझ है इक्कीस दिनी लॉकडाउन में करोड़ों लोगों का रोजगार छिन जाएगा, आधी आबादी दाना-पानी के लिए तरस जाएगी, इतने बड़े देश में ऐसी दुर्दशा देखना बड़ी तकलीफ देगा...'

'...दूल्हे राजा को नमस्ते...' सहज की आवाज में जैसे छलांग लगाते हुए शायनी की आवाज आने लगी, '...इस बीच रात-रात भर कोरोना वायरस और उससे अफेक्टेड कंट्रीज पर काफी स्टडी की है मैंने, इसे इक्कीस दिन का

लॉकडाउन मत समझो, दुनिया में जहां भी लॉकडाउन चल रहा है पचास-साठ दिन से ऊपर ही चल रहा है...'

'...मेरे नजरिए से तो यह लॉकडाउन नए हिंदुस्तान के निर्माण के लिए जरूरी था...' परवेज ने बोलना शुरू किया तो बीच में शायनी की आवाज फिर से आने लगी, '...सो कैसे?' '...वह ऐसे शायनी, आकाश छूती चमचमाती इमारतों के पीछे दशकों से दबी पड़ी झोपड़ियां हमें दिखाई नहीं पड़ रही थीं न! जब-जब दिखाने का प्रयास किया जाता था तो हमारे आका अंधा होने का नाटक करने लगते थे! किसके जैसा? एक वो होता है न महाभारत में?...' '...धृतराष्ट्र...' अहम की आवाज थी, कहीं पीछे बैठा होगा शायद; '...हां-हां धृतराष्ट्र! लॉकडाउन में सब कुछ नंगा होकर सामने आएगा; कितने करोड़ लोग गरीब हैं, कितने करोड़ की जेबों में जहर के भी पैसे नहीं हैं, कितने करोड़ के खाते वर्षों से जीरो बैलेंस पे अटके पड़े हैं, कितने करोड़ रोजगार-बेरोजगार हैं, हमारे अस्पतालों की हालत क्या है, रामू तुम सुन रहे हो न! जब तुम दिल्ली के सिंहासन के करीब बैठे हो तो हिंदुस्तान के नंगे सच को करीब से देखने का मौका है तुम्हारे लिए, मेरी राजनीतिक-दृष्टि देख पा रही है कि यहां से आगे हिंदुस्तान को नेता लोग अब वैसा नहीं चला पाएंगे जैसा आज तक चलाते आए हैं, इसलिए कह रहा हूं यह लॉकडाउन नहीं हमारा जरूरी चीरहरण है! इसके लिए मैं उन लोगों को शुक्रिया अदा करता हूं जिन्होंने कोरोना को देश में पसरने का मौका दिया...' परवेज की राजनीतिक चक्षु जब खुलती है तो अपने-आप बंद नहीं होती; रामू ने मोबाइल से मुंह सटाकर ऊंची आवाज में कहा, ताकि परवेज का बोलना बंद हो सके, "सुनो-सुनो, मेरी बात ध्यान से सुनो, दिल्ली में कोरोना से बचाव के बारे में जो उपाय किए जा रहे हैं उनमें यह भी है कि एक आदमी की छुई हुई चीज को दूसरा नहीं टच करेगा; अभी तो तुम सभी एक ही सेट से बात किए जा रहे हो!"

'...अरे नहीं रामू! हमने मोबाइल को साउंड सिस्टम से फिट कर रखा है; दिल्ली में बैठकर हमें इतना पिछड़ा मत समझो! और हां, जब तक लॉकडाउन है हम लोग सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करेंगे, अब अपना कोरोना-कैबिनेट फिजीकली नहीं बैठेगी, आगे से हम लोग वीडियो कांफ्रेंसिंग से विचार-विमर्श करेंगे! जिस दिन वीसी करना होगा एक घंटा पहले मैं पासवर्ड मैसेज करूंगा; तुम भी टाइम टू टाइम व्हाट्सएप चेक करने की आदत डालो, नहीं तो मंजरी

तुम्हें फिर से बुद्धू कहना शुरू कर देगी!...'

"मंजरी कुछ बोल क्यों नहीं रही है?" रामू के मुंह से अनायास निकल गया।

'...बस इतनी ही देर में बेचैन हो गए, तुम चिंता मत करो रामू, जब भी लौटोगे मैं मंजरी को तैयार करके रखूंगी!...' यूं तो शायनी मजाक बहुत कम करती थी, पर आज शायद चूकना नहीं चाहती थी।

'...डोंट वरी, मैं यहां शांति से बैठी हूं, सबकी बातें सुननी जरूरी हैं...' मंजरी की आवाज थी, रामू को आश्वस्त करने की खातिर।

"आगे का क्या प्लान है?" रामू ने गंभीर होकर पूछा।

'...शादी के बारे में?...' मंजरी प्लान का मतलब पकड़ नहीं पाई।

"अरे नहीं, करोना को लेकर क्या प्लान है?" मंजरी से बात करते हुए भी रामू के अंदर से कोरोना का भूत नहीं भागा था।

'...आज यहां पर यही तो डिसाइड करना है; वैसे मेरी व्यक्तिगत राय है हम लोग देश में कोरोना की इंट्री बंद नहीं कर पाए, पर आगे पार्टी और प्रशासन से संपर्क कर यह टारगेट तय करें कि रामघाट में कोरोना को इंट्री नहीं देनी है; तुम दिल्ली में अपना ख्याल रखना, कष्ट तो होगा पर कोई ऑप्शन भी तो नहीं है तुम्हारे पास! माताजी की चिंता मत करना मैं दोनों घर संभाल लूंगी, मास्क लगाकर अंदर वाली गली से निकलते हुए...' मंजरी की समझदारी भरी बातें सुनकर रामू को छत से पूरी दिल्ली दर्ददायी महसूस हुई; भावुक होकर भर्राए गले से कहा, "थैंक्यू मंजरी..." फिर नॉर्मल होते हुए बोलने लगा, "मैं जरा शायनी से जानना चाहता हूं, दिल्ली में कई दिनों से बिना नागा किए अखबार पढ़ रहा हूं, ऐसी खबरें आ रही हैं कि हो न हो करोना इंडिया में म्यूटेट होकर नए-नए रूप में तबाही न मचाने लगे!" रामू फिर से कोरोना से चिपक गया, "यदि ऐसा है फिर तो देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही होगी भविष्य की पीढ़ी को कैसे बचाएं!"

'...रामू तुम बिल्कुल सही कह रहे हो...' अब शायनी की आवाज मोबाइल से नहीं किसी पेड़ से चिड़िया की सुरीली चीं-चीं जैसी आने लगी, '...कोरोना वायरस पर अब तक का जितना रिसर्च और अपडेट है मैं गहराई से स्टडी करके एनालिसिस करती आ रही हूं; कोरोना के फीचर्स को देखकर लग रहा है इंडियन सब-कॉन्टिनेंट में वह अपना सुरक्षित ठिकाना बना सकता है; वह भी बिल्कुल अपग्रेडेड वर्जन में, जो मोस्ट डेंजरस साबित हो सकता है हमारी

पूरी आबादी के लिए!...' यह सुनकर रामू से रहा ना गया, "देश में चिकित्सा क्षेत्र का जो हाल है फिर तो आने वाले वर्षों में हम बेबस होकर लाखों-करोड़ों मौत देखने के लिए विवश होंगे, इसका उपाय क्या हो सकता है?"

'...इसका एकमात्र उपाय है कोरोना वायरस पर एक्सटेंसिव स्टडी, रिसर्च और साइंटिफिक इन्वेंशन, लेकिन देश में साइंस लैब की जो स्थिति है...' शायनी के बोलने के बीच ही अहम उखड़ गया, '...हमारे वैज्ञानिकों की मूल आविष्कार के क्षेत्र में अरुचि और उससे उपजी अक्षमता का जो रिकॉर्ड है उससे तो लगता है हमें भविष्य में कोरोना के निदान के लिए वेस्टर्न कंट्रीज पर निर्भर रहना पड़ेगा...' अहम ने वार्तालाप को गंभीर बना दिया था। तब शायनी ने कहा, '...तुम जो कह रहे हो वह सच है, हमारे देश में कोई भी मेधावी छात्र, वैज्ञानिक नहीं बनना चाह रहा है, पर कुछ लोग हैं जिन्होंने इस करियर को चुना है...' '...वैज्ञानिक अनुसंधान को जब तक करियर के नजरिए से देखा जाएगा तब तक इस मलबे वाली भूमि में कोई नया अविष्कार हो नहीं सकता!...' शायनी के बोलने के बीच ही परवेज टपक पड़ा था।

'...गांधी हाई स्कूल की ही मेरी एक सहेली है माँडवी, टेंथ के बाद यहां से चली गई थी, लेकिन मेरे टच में अभी भी है, उसने हैदराबाद से ही जूलॉजी में बीएससी ऑनर्स किया है, अब हैदराबाद की किसी बड़ी लैब में रिसर्च कर रही है, साइंटिस्ट बी लेवल पर, शायद बैक्टीरिया-वायरस ही उनका रिसर्च का टॉपिक है...' धीरे-धीरे वार्तालाप एक गंभीर चुप्पी में बदलता जा रहा था। वार्ता की गंभीरता टूटी मंजरी की जिज्ञासाभरी आवाज से, '...शायनी तो शोध भी कर सकती है...'

'...मुझे लग रहा है मैं इस बारे में सोचने लगी हूं...' शायनी की संकल्पपूर्ण आवाज थी। फिर से अहम के गंभीर स्वर आने लगे, '...मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है हिंदुस्तान को कोरोना की चपेट में आने से बचना चाहिए था, अब यह लॉकडाउन यदि फॉरेन के लॉकडाउन जैसा लंबा खिंचा तो हमारे सामाजिक-पारिवारिक मूल्यों और मानदंडों को कोरोना से नहीं लॉकडाउन सिंड्रोम से चोट पहुंचेगी, मानव का मानव के प्रति दृष्टिकोण में कई डिग्री का घुमाव आ सकता है, मुझे तो लग रहा है अब मुझे इसी दिशा में नए दर्शन पर रिसर्च की ओर बढ़ना चाहिए...' अहम का बोलना बंद हुआ तो परवेज की आवाज आने लगी, '...मुझे भी लग रहा है वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था, खासकर अगला चुनाव जीतने की हिमालय जैसी चुनौती

वाली चुनावी प्रक्रिया को तिलांजलि देकर इस देश को कोई क्रांतिकारी छलांग लगानी चाहिए; अब तो मैं कुछ इसी दिशा में सोचने लगा हूं...'

'...हां मुझे भी लग रहा है अर्थशास्त्र के थंब रूल से आगे निकलते हुए विकास के वर्तमान मॉडल को गलाकर इकोनॉमी का एक नया मॉडल बनाना पड़ेगा...' सहज बोल ही रहा था कि मंजरी की उलाहनाभरी आवाज किसी स्लो सॉन्ग जैसी बज उठी, '...तुम अर्थशास्त्री बन जाओगे, शायनी साइंटिस्ट बन जाएगी, फिर आईएएस-आईपीएस कौन बनेगा भैया, मैं!...' वार्तालाप मैत्रीपूर्ण गप्प-गल्प में बदलता जा रहा था। तभी अचानक बदले स्वर में रामू बोल पड़ा, "बाय मंजरी, अब छत पर रहना ठीक नहीं है, नीचे गलियों में पुलिस की सायरन वाली गाड़ी की गश्त शुरू हो चुकी है; तुम ठीक से घर पहुंच जाना, रामघाट में करोना रोकने के लिए क्या कुछ करोगे तुमलोग मुझे बताते रहना; बाय गुड नाइट!"

रामू के गुड नाइट बोलते ही उधर से गुड नाइट का कोरस गूंज उठा ...गुड नाइट...गुड नाइट...। मोबाइल के किसी अंदरूनी हिस्से में लयबद्ध मंद स्वर सुनाई पड़ रहा था...जानि कठिन सिवचाप बिसूरती...रामधुन वाला 'हरे राम हरे राम...' की आवाज गायब थी; रामू को लगा शायद राम-मंडलियों को अब जाकर कोरोना का ज्ञान हो गया हो! तब तक रामू मोबाइल में 'आईएलयू' टाइप कर मंजरी को सेंट कर चुका था; उसे खुलेआम 'लव यू' ना बोल पाने की कसक पूरी कर वह मुस्कुरा उठा, दिल की अतल गहराइयों तक!

अध्याय पांच

1

मध्यरात्रि में कुत्तों के समूह क्रंदन से जेड सर चौंक पड़े थे; तुरंत सो भी गए। आठ-साढ़े आठ बजे तक सो जाना और तड़के सुबह जाग जाना जीवनशैली रही है उनकी; इस दरम्यान किसी भी प्रकार के विघ्न से भरसक विरत ही रहते थे। जीव विज्ञान के अध्येता रहे हैं, जन-मान्यता में उन्हें भी विश्वास रहा है; पक्षियों और जानवरों, विशेषकर कुत्तों के स्वर का उतार-चढ़ाव खासकर क्रंदन किसी आसन्न घटना या अनहोनी का संकेत होता है। मध्य रात्रि में कुत्तों का रोना सुनकर उन्होंने अपने को नियंत्रित किया, अड़ोस-पड़ोस के किसी घर में कुछ घटी होगी तो सुबह देखी जाएगी।

सुबह की सामान्य दिनचर्या के तहत वे भगत सिंह पार्क की तरफ बढ़ चले। पूरे रास्ते उन्हें आवारा कुत्तों और पेड़ों पर पक्षियों में अद्‌भुत सजीवता दिखी। घर से पार्क के गेट तक एक भी आदमी का ना दिखना उन्हें नहीं खटका; पार्क के अंदर किसी के ना दिखने से माथा ठनका! रामघाट तीरे की तरफ से 'हरे राम हरे राम' की चूं तक नहीं आ रही थी। अब उनका शक यकीन में बदल गया; राममंडलियों के मैदान छोड़ देने का मतलब है अड़ोस-पड़ोस वाली नहीं दूर-देश तक फैली अनहोनी है! फिर तो उल्टे पांव घर की ओर लौट पड़े। घर से ठीक पहले वाले चौराहे पर शर्मा प्रोविजनल स्टोर पर मचे कोहराम से उनके पैर ठिठक गए; गांधी मार्ग पर खुलने वाले स्टोर का मेन शटर बंद था, पीछे वाले छोटे गेट के पास लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी थी! अपने मकान के पीछे वाले मकान में रहने वाले ठेकेदार रामयश राय स्टोर के पीछे वाली जगह से बाहर की तरफ आते दिखे, दोनों हाथों में दो बड़े-बड़े भरे हुए थैले थामे हुए! आश्चर्य और जिज्ञासा के फैलते मिश्रण को

काबू में रखना मुश्किल होता जा रहा था जेड सर के लिए, "आज स्टोर के पीछे यह जमघट क्यों लगा है, और सुबह-सुबह तुम इतने भारी थैले खुद ही क्यों ढोए जा रहे हो! अचानक कोई दावत पार्टी रख ली क्या?" सर की बात सुनकर रामयश उन्हें गौर से देखने लगा, जैसे जेड सर नहीं, आत्मा निकल चुकी उनके मृत शरीर को देख रहे हो! सर की अज्ञानता पर घोर आश्चर्य में डूबा रामयश इतना कहकर चलता बना, "आपको नहीं पता है सर! रात बारह बजे से ही पूरे देश में लॉकडाउन लग गया है, कल रात पीएम का भाषण नहीं सुने थे क्या?"

"लॉकडाउन!" सर के कानों में आश्चर्य से भारी हो चली आवाज पड़ी; वे खुद ही बुदबुदाए थे। रात को प्रधानमंत्री का भाषण ना सुन पाने का उन्हें कतई अफसोस नहीं था। पीएम क्या किसी भी नेता का भाषण-संदेश-साक्षात्कार वे टीवी-रेडियो-रैली में नहीं सुनते; अखबारों में भले ही कभी-कभी पढ़ लेते थे। घर की तरफ बढ़ते हुए भी उन्हें अफसोस था तो उस दृश्य का जो शर्मा स्टोर के बैकडोर में दिखा था; फिर तो रामघाट क्या पूरे देश में हर शहर-कस्बे में दिख रहा होगा ऐसा दृश्य!

"सादा" घर पहुंचते ही उन्होंने बरामदे से ही आवाज लगाई। किचन का पीछे वाला गेट रात को बाहर से बंद कर सादा घर चला जाता है; सुबह सर के सैर से लौटने से पहले ही किचन तैयार कर लेता है। हमेशा की भांति सादा का प्रतिउत्तर 'जी सर' नहीं सुनने पर वे खिन्न नहीं हुए। दोबारा आवाज लगाई, "सादाअअ, ओ सदाआआअअ"। 'ओ' संबोधन लगाकर सादा को पुकारते हुए उन्हें अफसोस भी हो रहा था; सादा को क्या किसी को भी उन्होंने ताउम्र 'ओ' जैसे फूहड़ संबोधन से संबोधित नहीं किया था। लॉकडाउन ने उन्हें पहला झटका दिया, कहीं यह सौम्य बेरुखी आगे चलकर तल्ख न हो जाए! डाइनिंग की तरफ से रात को अपने हाथ से बंद की जाने वाली किचन-कुंडी खोली; सोचकर कि चाय बनाना जानता हूं, एक दिन अपने से ही बना ली जाए। सस्पेन में पानी-चाय पत्ती-चीनी खौलता रहा, पर दूध कहीं न दिखा। याद आया, सादा बोलता गया था, 'दूध खत्म हो गया है सुबह को लेता आऊंगा।'

बिना दूध वाली चाय लिए वह बरामदे में बैठ गए, सामने टेबल में अखबार पूरा फैलाए ...25 मार्च, 2020...दोनों अखबारों के पहले-दूसरे-तीसरे पन्ने लॉकडाउन की खबरों से अप-डाउन हो रहे थे। पीएम के दृढ़ संकल्प मुद्रा

वाले कई फोटो पेज में ऊपर-नीचे पोजीशन लिए हुए, जैसे धरती-आसमान अकेले थामे हों! लाल चाय पीते हुए उन्हें याद आया, डॉक्टर भी तो ग्रीन टी पीने की सलाह देते हैं। वे मन-ही-मन मुस्कुरा उठे...'आज से एक अच्छी आदत डाल ही लेनी चाहिए।' वे पीएम के फोटो पर गड़ से गए...'अपनी आदत में बदलाव लाने के लिए आपको धन्यवाद!' अपनी हॉबी के अनुरूप पूरा अखबार देख चुके; पहला, दूसरा, आठवां, पंद्रहवां और सोलहवां पृष्ठ गंभीरतापूर्वक तो बाकी पृष्ठ सरसरी तौर पर। सामान्यतः पौने घंटे में पूरा अखबार निपटा डालते हैं, आज एक घंटा से ऊपर लग गया; लॉकडाउन की खबरों से शब्द दर शब्द भारी हो चला था। प्रधानमंत्री का कल शाम देश के नाम संदेश उन्हें पूरा पढ़ना पड़ा, कल रात टीवी में सीधा प्रसारण देखने-सुनने के सुख से वंचित जो रह गए थे। संदेश को एक बार पढ़कर उन्हें संतुष्टि मिलती नहीं दिखी, दोबारा पढ़ा। अपने आप दाएं-बाएं हिलने लगे जैसे अंतर्मन में कुछ अपच-सा हो गया हो! स्वतः बोल पड़े, "खैर कोई बात नहीं, जो हो गया सो हो गया, देश के नेता का हक बनता है जो उचित लगे निर्णय लेने का! अब आगे इसी पथ पर संभलकर बढ़ते रहना पड़ेगा।" अकेले में वे कभी बुदबुदाते नहीं, बड़बड़ाते तो खैर कभी नहीं, लेकिन सुबह से ही यह बीमारी उन्हें घर कर गई लगी! प्रतिदिन अखबार पढ़ने के दरमियान ही रायजी, वर्माजी, यादवजी, शेख साहब, भारतीजी-जैसे बुजुर्ग-अधेड़-युवा साथी-संगी पधार चुके होते थे; साढ़े सात बज चुके, अभी तक किसी की झलक भी नहीं दिख रही थी! किसी ने फोन तक भी नहीं किया। उनका जी घबराने लगा, अकेले-अकेले सोचना और अपने-आप बड़बड़ाना! यह नई बीमारी कहीं आजीवन उनके साथ न हो ले? उन्होंने मोबाइल चेक किया, किसी का मिस कॉल भी नहीं था। सिर्फ सादा का मैसेज था '...बस्ती में पुलिस की जबरदस्त पेट्रोलिंग हो रही है, सारे रास्ते में बैरियर लग गया है, घर से निकलने पर धुनाई हो रही है...' बस इतना ही लिखा था। यहां कब तक आएगा पता नहीं! लॉकडाउन शब्द का जिक्र तक नहीं किया था, जैसे कोई सर्व-व्याप्त सत्य हो! उन्होंने अपना सिर झटका, जैसे बेवजह ढोए जा रहे वजन को माथे से नीचे फेंक रहे हों; सोचकर कि कहीं वृद्ध काया में युवा चिंतन धावा न बोल दे! वे किचन की ओर बढ़ चले, सादा के नहीं आने का मतलब उपवास थोड़ी न है!

क्या खाया जाए? किचन में आकर वे किंकर्तव्यविमूढ़ हो गए। फिलहाल यही सूझा, नाश्ता तो नहाने के बाद करना है फिर सोचने का काम नहाने के दरमियान भी हो सकता है! बाथरूम गए, मन में अनाम-अनजान वजन ढोते हुए। दस मिनट में नहाकर आ भी गए। नहाने के दौरान भी लॉकडाउन शब्द उनकी चिंतन-शृंखला को छेड़ता रहा; नाश्ते के बारे में तय करना तो दूर नाश्ता शब्द ही भूल गए! किचेन में आने के बाद भी उन्हें लगा वह तो लॉकडाउन में ही डूबा है! अंडा तो दिखा पर ब्रेड नहीं था, ओट्स का पैकेट नजर आया पर दूध तो चाय के समय ही गायब दर्ज हो चुका था, पारदर्शी कांच के डिब्बे से चना तो जैसे चिढ़ा रहा था कि सादा ने भिगोया नहीं तो खाओगे कैसे! मन-ही-मन तय किया जब जोर की भूख लगेगी तब देखी जाएगी; पेट और हाथ अपने हिसाब से खुद ही फैसला कर लेंगे।

खाली समय ने उत्सुकता जगाई, छत पर जाकर चारों ओर दुनिया में लॉकडाउन का मंजर देखा जाए! तभी मोबाइल बज उठा, कलेक्टर साहब का नंबर दाएं से उगते हुए बाएं में डूबता जा रहा था; "नमस्कार साहब, धीरज रखिए, आप सब संभाल लेंगे," हरा टिक्का दबाकर उन्होंने कहा, आशीर्वचन वाली मुद्रा में।

"..." कलेक्टर साहब की आवाज के साथ और भी कई आवाज घुली-मिली थी, शायद अपने अधिकारियों या पार्टी वालों से घिरे होंगे। उधर से कहे गए अस्पष्ट स्वर में फंसे आग्रह पर भी सर ने हामी भरी, "हां-हां मैं आ जाऊंगा, वैसे अखबारों में आपका वक्तव्य और निर्देश भी पढ़ लिया है मैंने।"

"..." क्लेक्टर के प्रत्युत्तर में उन्होंने मुहर लगाई, "हां-हां ग्यारह बजे।" मोबाइल में टाइम देखा, सवा दस बज चुके थे; निकल पड़ने का समय हो ही चला था। खाली पेट घर से निकलना सेहत के लिए ठीक नहीं होता है, शुभ यात्रा के लिए भी नहीं। पुनः किचन में गए। गर्म पानी में ओट्स, नमक और हल्दी डाली। दस मिनट में तैयार हो गया, झटपट खाने बैठे। दूध में ही ओट्स खाने की वर्षों पुरानी आदत थी, पानी में भला कैसे खाया जाता! तब अखबार में पढ़े पीएम के संदेश का अचानक ख्याल आया... 'देशवासियों, हम सभी के लिए यह इक्कीस दिन कष्ट भरा समय होगा, आप सभी से प्रार्थना है संकट की इस घड़ी में सभी सहयोग करें,' फिर तो देश को याद कर उन्होंने ओट्स खा लिए। अगले ही पल बस्ती और इंडिया जेहन में आते

ही पेट भारी होता महसूस होने लगा! पेट और मन को धैर्य की थपकी दी। तब कहीं शांत चित्त से कलेक्ट्रेट की तरफ निकल पाए, बीस साल पुराने साथी स्कूटर पर सवार होकर।

2

अंग्रेजों के जमाने में बने कलेक्टर ऑफिस के विशाल बरामदे पर पैर धरते ही अंग्रेजों की बुद्धिमत्ता अनायास याद आ गई जेड सर को, शासन-प्रशासन में कितने पेशेवर होते थे यूरोपियंस! मौसम की तासीर पकड़ पाने में उनकी तो कोई सानी नहीं; मार्च के अंत में गर्मी की बढ़ती फुफकार का इस बरामदे में कोई असर नहीं है, फिर तो अंदर कमरों में इंग्लैंड जैसा वातानुकूलन होगा!

"चरण स्पर्श गुरुदेव!" नारंगी गमछेवाला एक नौजवान हठात सर के सामने झुकते हुए मुखर हो उठा, उनके घुटने के ऊपर हथेली लाते हुए। फिर बिजली-सी स्फूर्ति-सा तन भी गया। उसने नजरें गड़ा दीं नौजवान पर; पहचान में नहीं आ रहा था। सर का संशय भांपकर नौजवान ने कहा, "सर मैं रामनरेश! सन् दो हजार दस में मैट्रिक किया था आपके स्कूल से!"

"शाबाश बेटा, फलो-फूलो; यहां क्या कर रहे हो?" अपने से कम कद-काठी वाले नौजवान को अपनी बांहों के घेरे में लेते हुए सर बोले, आशीर्वाद देने की मुद्रा में मगन होते हुए।

"सर पिताजी तो बारह-तेरह साल पहले ही गांव से बस्ती में शिफ्ट कर चुके थे; दसवीं के बाद पढ़ नहीं पाया, यहां-वहां भागा फिरता था, पार्टी ने मेरी क्षमता पहचानकर मुझे छोटी-मोटी जिम्मेदारी देनी शुरू की," फिर दोनों हाथ जोड़कर ऊपर की ओर देखते हुए वह बोला, "प्रभु राम की कृपा से पार्टी में अच्छी पोजीशन में हूं; पिछले साल हुए संगठन चुनाव में उपाध्यक्ष युवा प्रकोष्ठ की कुर्सी तक पहुंच गया हूं," फिर घाघ राजनीतिज्ञ-सी मुद्रा बनाते हुए बोला, "पार्टी को तो शासन-प्रशासन से भी समन्वय रखनी होती है न; कलेक्टर ऑफिस में होने वाली पब्लिक मीटिंग को शांतिपूर्वक संपन्न कराने का प्रभार मेरे पास ही तो है!" बोलकर वह सर को ऐसे देखने लगा जैसे मन-ही-मन कह रहा हो कि, जेड सर होकर भी आपको कुछ नहीं पता! सिर हिलाकर सर सभागार की तरफ बढ़ चले, अंदर से किंचित सहमे हुए; प्रशासन पर पकड़ मजबूत करने के लिए पार्टी ने नई परिपाटी शुरू कर दी है! सभागार की तरफ जाते हुए भी उन्हें अपनी अंत:चक्षु से रामनरेश ही

दिख रहा था, पार्टी से जुड़ गया है तभी तो...चरण स्पर्श गुरुदेव! अन्यथा नए-पुराने किसी भी शिष्य की क्या मजाल जो आज भी उन्हें गुरुदेव बोल दे। सभागार में पैर रखते ही उन्हें लगा, आज पहली बार अपने किसी छात्र से भयभीत हुए थे वह!

"नागरिक शांति समिति की आज की बैठक में मैं आप सभी का स्वागत करता हूं," सधे कदमों से सभागार आकर बीच वाली भिन्न कुर्सी में बैठते ही कलेक्टर साहब बोल पड़े, सीधे विषय की ओर बढ़ते हुए। बोलने के मशीनी अंदाज और शब्दों के नीरस उच्चारण से लगा जैसे किसी नई बैठक को संबोधित नहीं कर रहे हैं, बल्कि देर से बोलते आ रहे हैं, "कल से आप सभी अवगत हैं, पूरे देश को खतरनाक चुनौती का सामना करना है..." बोलने के बीच ही महिला पंक्ति में बैठी एक नवयुवती ने टोक दिया, "नहीं सर हम लोग कल से नहीं चालीस दिन पहले से ही जान रहे हैं!" पंक्ति के मध्य में बैठे उदय ने उसकी ओर देखते हुए होंठों पर तर्जनी रखी; वह उसकी बहन मंजरी थी। जेड सर ने भी उसकी ओर देखा, याद आया स्कूल के दिनों में शायनी के दाएं-बाएं डोलती रहती थी; मन में आई बात को सीधे-सीधे मुंह पर कह देने वाली निडर लड़की! पराकाष्ठा पर पहुंच चुके उसके हौसले पर वे मन-मुदित हो उठे, होंठों पर तैरने को बेताब मुस्कान को उन्होंने रोक लिया; शांति समिति की भी मर्यादा होती है!

"मास्क प्लीज! सोशल डिस्टेंसिंग प्लीज।" डीएम के बगल में पुलिस वर्दी में बैठे अशोक लाटधारी ने कहा, कड़क आवाज में।

"हां तो मैं कह रहा था..." कलेक्टर के उच्चारण में आए बदलाव से लगा संबोधन के दौरान आए अल्प ठहराव को उसने विघ्न रूप में लिया था, "यह एक नए किस्म का सामूहिक संकट है, हम रामघाटवासी को मिलकर इस लॉकडाउन को सफल बनाना है, हम सभी के ऊपर यह एक तरह की राष्ट्रीय जिम्मेदारी है।" आगे उसने माफीनामे वाले अंदाज में कहा, "सच कहिए तो हम आज की मीटिंग भी नहीं बुला सकते थे, क्योंकि सभी को घरों में बंद ही रहना है, लेकिन लॉकडाउन को सफल बनाने के लिए सोशल डिस्टेंसिंग के साथ एक छोटी मीटिंग करनी भी जरूरी है, क्योंकि इसके बाद कोई मीटिंग नहीं हो पाएगी; इसलिए आप सभी देख रहे होंगे कि सोशल डिस्टेंसिंग की परंपरा की नींव डालने की खातिर ही आज यहां सभी कुर्सियां तीन-चार फीट की दूरी पर रखी गई हैं!"

"सर हमारा टारगेट क्या है? कोरोना से निजात पाना या सिर्फ लॉकडाउन को सफल बनाना!" पीछे की पंक्ति में बैठा एक नौजवान बोल पड़ा।

"दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं," कलेक्टर ने आंखें सिकोड़ते हुए कहा, फिर रहस्यमयी तरीके से सिर हिलाते हुए बोलने लगे, "बस समझ का फेर है! वैसे कई अवसरों पर आपको अच्छा बोलते सुना है मैंने, पर नाम भूल रहा हूं?"

"जी परवेज?" आवाज ऐसी आई जैसे एक नहीं कई की आवाज मिली हो।

"ओके! लेट्स गो अहेड।" चेहरे की भाव-भंगिमा में नाममात्र का भी परिवर्तन लाए बगैर कलेक्टर बोलने लगे, जैसे किसी का कहा कुछ सुना ही न हो, "हमें प्रधानमंत्रीजी की घोषणा को अक्षरशः अमल में लाना है; हम सभी की जिम्मेदारी है लॉकडाउन को लागू करने के मामले में रामघाट पूरे देश में एक मॉडल बने, इसलिए शहर के हर मोहल्ले-वार्ड से आए आप सभी सज्जनों से मेरी व्यक्तिगत विनती है," बोलकर उसने सामने की ओर सांकेतिक हाथ जोड़ा, फिर कहा, "आप सभी जन-जन में प्रधानमंत्री का संदेश फैलाएं कि सोशल डिस्टेंसिंग मेंटेन करना है, कम-से-कम तीन फीट की दूरी बनाए रखनी है, मास्क लगाना अनिवार्य है और सबसे बड़ी बात हर घंटे-दो घंटे में बीस सेकंड तक हाथ धोना जरूरी है! सेनेटाइजर साथ रखें, जब भी किसी चीज को छुएं तो तुरंत सेनेटाइजर लगा लें, अगर रामघाट के हर नागरिक इस प्रोटोकॉल का पालन करेंगे तो समझिए लॉकडाउन स्कीम सफल हो जाएगी।" अब जाकर उनके होंठों में बेशकीमती मुस्कान दिखी थी।

"लेकिन सर रामघाट में कोई केस ना आवे इस बारे में हमें सोचना पड़ेगा।" मंजरी के बगल में बैठी नवयुवती ने चिंता व्यक्त की, शालीनता से। कलेक्टर साहब ने शायनी को पहचान लिया था, उसकी ओर देखते हुए आंखें मूंद लीं उसने, जैसे कही गई बात को मौन चिंतन से ही पकड़ा जा सकता हो! जेड सर सिर हिलाकर संतुष्ट नजर आ रहे थे, '...तो शायनी भी आई है!'

"सर मेरे आकलन के हिसाब से लॉकडाउन के दौरान देश में क्या-क्या नई समस्याएं आ खड़ी हो सकती हैं उस पर भी विचार करना चाहिए!" परवेज के बगल वाला नौजवान बोला; सभागार में बैठे लगभग सभी ने पहचान लिया, हंसामल के सुपुत्र सहज हैं; रामघाट के हिट लवर-बॉय, और यहां भी अपनी गर्लफ्रेंड के साथ ही उपस्थित हैं!

"नई समस्याएं! मसलन?" सहज की ओर मुखातिब होते हुए कलेक्टर की

मित्रवत हँसी थी; स्वाभाविक ही प्रशासनिक महकमों को दुनिया की समस्याएं हमेशा कम ही नजर आती हैं!

"रामघाट में आधी से अधिक आबादी ऐसे लोगों की है जो हैंड टू माउथ हैं, दिन में कमाते हैं तो ही रात को खाते हैं!..." बोलते हुए सहज ने आगे और व्याख्या करने के लिए उंगली नचाई ही थी कि पार्टी के जिला अध्यक्ष हरेन्द्र ठाकुर ने हस्तक्षेप किया, "तुम हनसामलजी के सुपुत्र हो न? तुम्हें तो पता होना चाहिए तुम जो बता रहे हो वह पहले की सरकार के जमाने की बात है! हमारी पार्टी ने बीते सालों में सभी गरीब-किसान-मजदूर की माली हालत काफी दुरुस्त कर दी है!" बोलते हुए उसने गर्दन और चेहरा लगभग एक सीध में लाया, फिर फख्र के साथ कहा, "तुम तो पिछली पार्टी के समय की हालत बयां कर रहे हो, जब लोगों के घरों में ना फूटी कौड़ी होती थी ना दाना-पानी, अब तो सभी के हाथों में, खातों में इतने पैसे हैं कि लॉकडाउन में दूसरों के सामने हाथ नहीं फैलाना पड़ेगा।" आगे उसकी आवाज में व्यंग्य घुलता गया, "वैसे तुम चिंता मत करो; हमारा विदेशी मुद्रा भंडार अभी शिखर पर पहुंचा हुआ है, यदि गरीबों की मदद की जरूरत पड़ेगी तो सरकार खजाने का मुंह खोलने से पीछे नहीं हटेगी!"

"अभी साढ़े ग्यारह बज रहे हैं, अभी तक किसी ने मदद की गुहार तो नहीं लगाई है, यहां तक कि बस्ती एरिया में भी पूर्ण शांति है!" पार्टी कोषाध्यक्ष हरिराम गुप्ता ने सहज की ओर देखकर कहा, आगे चेहरे में असीम निश्चिंतता का भाव लाते हुए बोले, "ऐसे सुना है तुम तो ब्रिलिएंट स्टूडेंट रहे हो! तुम्हारी ऐसी धारणा बनने के पीछे कोई रिलायबल डाटा तो होगा!" बोलकर सहज पर केंद्रित होते हुए उसका मुंह पूरा खुला रह गया।

"मेरे पास डाटा भी है और सरकमस्टेंसस के हिसाब से उसका कंसीक्वेंसेस फोरकास्ट करने का मेथड भी!" सहज ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा।

"देखो सहज, मैं सीनियर होने के नाते तुमको सलाह दे रहा हूं," अब रामनरेश, सहज की ओर तर्जनी करते हुए बोलने लगा, चढ़ बैठने के अंदाज में, "तुम एग्जाम में अच्छा करने में माहिर हो तो अपना ध्यान उधर ही लगाए रखो, पब्लिक फोरम में होशियार बनने की जरूरत नहीं है!"

"अगर हम लोग कंसर्न्ड फील्ड के एक्सपर्ट को पब्लिकली ऐसे इंसल्ट करेंगे तो कोई भी अपना बेस्ट आइडिया शेयर करने से परहेज करेगा!" शालीनतापूर्वक बात करने वाली शायनी की आवाज में तल्खी आ गई।

"ऑल आर रिक्वेस्टेड नॉट टु टेक एनीथिंग पर्सनल; आगे किसी को और कोई सुझाव देने हैं?" कलेक्टर साहब ने दाएं-बाएं हाथ लहराकर 'बड़ा' दिखते हुए कहा।

"मास्क प्लीज! सोशल डिस्टेंसिंग प्लीज!" अशोक लाट धारी ने लगभग गरजते हुए कहा।

"सर संकटकाल में अपने समूह के साथ रहना मानव का मूल स्वभाव है..." पीछे की पंक्ति में बैठा नवयुवक कुर्सी से उठकर इतना भर बोला था कि एसपी साहब तुनक गए, "यू मीन टू शे वी सुड अलाउ सोशल गैदरिंग?"

"लेट हिम फिनिश।"

"स्योर-स्योर!" एसपी साहब की ओर हथेली से संकेत करते हुए कलेक्टर साहब बोले, चेहरे में तटस्थ दिखने की भंगिमा लाते हुए।

"पूरे रामघाट जिले के लगभग दो-तीन लाख मजदूर देश के अलग-अलग हिस्सों में मजदूरी करने जाते हैं," नवयुवक बोलने लगा तो उसकी आंखें ऐसी लग रही थीं जैसे सामने मरणासन्न लोगों को देख रही हों, "रामघाट कमिश्नरी के बाकी चारों जिलों को जोड़ दें तो यह आंकड़ा दस लाख तक जाएगा और इस बेल्ट के दस-पंद्रह जिलों को जोड़ दें तो बाहर गए मजदूरों का आंकड़ा पच्चीस-तीस लाख तक जा सकता है!"

"अरे भई अब आगे भी बताइए, हमें ज्यादा डाटा मत दिखाइए, हमने डाटा में मास्टरी कर रखी है!" एसपी साहब के बगल में बैठे जिला अध्यक्ष खिन्न होकर बोले, जैसे आगे कुछ भी सुनने का संयम नहीं बचा हो उनके पास।

"हां तो मैं कहना चाह रहा था घर छोड़कर दूर-दराज गए ऐसे मजदूर हर हाल में घर वापस आना चाहेंगे!" नवयुवक बोलता जा रहा था, जैसे उसके एक-एक शब्दों में एक-एक टन का वजन पड़ा हो, "चूंकि वे हमारे लोग हैं हमें तुरंत इस बिंदु पर ध्यान देना पड़ेगा, वे अभी जहां भी होंगे इस लॉकडाउन में वहां की शासन-सरकार के लिए अब उनकी औकात बूढ़ी गाय के बराबर भी न होगी! ऐसी हालत में वे कोरोना वायरस से नहीं करुणाहीनता के संक्रमण से बेमौत मारे जाएंगे! कठोर सत्य बोलने के लिए क्षमा चाहता हूं।" बोलकर सभी बैठे लोगों की तरफ हाथ जोड़ते हुए वह कुर्सी पर वापस बैठ गया। उसे देखते हुए जेड सर के चेहरे में विस्मयपूर्ण खुशी फैल गई।

"अरे अहम, स्कूल के दिनों से फिलॉसफी झाड़ने की तुम्हारी आदत अभी गई नहीं है; प्राइवेट में पढ़ाते हो फिर भी विद्वान बने फिरते हो!" राम नरेश

ने उसकी ओर देखते हुए खिल्ली उड़ाने के अंदाज में कहा। रामनरेश की भाषा-भंगिमा से सभागार में तो जैसे बिजली-सी गिर पड़ी। जिला अध्यक्ष ने उसकी ओर देखा, आंखें कड़ी करके; फिर कलेक्टर की ओर देखते हुए मुखर हो उठे, "हां तो कलेक्टर साहब, और क्या रह गया है मीटिंग में? चलिए कनक्लूड कीजिए।" बोलते हुए में उसकी नाक सिकुड़ती दिखने लगी, जैसे कोई उसके गर्दन की नस दबाने जा रहा हो।

"बस समझिए हो ही गया, थोड़ा एसएसपी साहब बोल लें, फिर मंत्रीजी के वक्तव्य के साथ मैं कनक्लूड कर दूंगा।" बोलकर कलेक्टर ने एसपी साहब की तरफ बिना देखे हाथ से संकेत किया, "एसएसपी साहब प्लीज।" कलेक्टर के मुंह से प्री-रिकॉर्डेड-सी आवाज निकली।

"सर आई वांट टू एड वन सिंपल थिंग," शायनी बोलने के लिए खड़ी होना चाह रही थी; उसका याचनापूर्ण चेहरा ऐसे जान पड़ा जैसे किसी को मौत के मुंह में जाते देख रही हो। एसपी आंखें तिरछी करके कलेक्टर की ओर देखने लगा; अव्यक्त वचन को आंखों से व्यक्त करते हुए कि शुड आई प्रोसीड! बिना देर किए प्रभारी मंत्रीजी ने फुसफुसाते हुए कहा, "लेडीज है बोलने दीजिए!"

"यस प्लीज!" कलेक्टर ने शायनी की ओर देखते हुए कहा, जैसे उसे उपकृत कर रहे हों!

"सर मेरा ऑब्जरवेशन कह रहा है यदि देश में कोरोना का संक्रमण फैलता जाएगा तो रामघाट भी अछूता नहीं रहेगा, ओके।" अपनी जगह पर उठकर शायनी बोलती जा रही थी; उसकी भाषा-भंगिमा महामारी एक्सपर्ट जैसी लग रही थी, "डब्ल्यूएचओ ने तो बारह मार्च को ही इसे पेंडेमिक घोषित कर दिया है! बिना समय गवाए हमें अपने अस्पतालों की दशा दुरुस्त कर लेनी चाहिए, यह मानकर चलने में कोई हर्ज नहीं है कि संक्रमित लोगों की संख्या हमारे अस्पतालों की क्षमता से आगे निकल सकती है! इसलिए अस्पतालों में बेड बढ़ाने का कार्य तेजी से होना चाहिए, वुहान जैसा ही रेडीमेड अस्पताल खड़ा करने का काम जितनी जल्दी शुरू हो जाए उतना अच्छा, मैक्सिमम टेस्टिंग कैपेसिटी का इंतजाम कर लेना चाहिए..."

"स्टॉप शायनी, स्टॉप!" उंगली के इशारे से शायनी को रोकते हुए रामनरेश बोलने लगा, "स्कूल में हम सुना करते थे कि तुम तो डॉक्टरनी बनने वाली हो, यदि सच में डॉक्टर बन गई होती तो आज यहां तुम्हें भाषण नहीं देना

पड़ता न!" फिर दो उंगली से कनपटी ठोकते हुए बोला, "साइंस गर्ल इतना तो सेंस लगा लिया होता जब लॉकडाउन हो ही गया है संक्रमण की कड़ी अपने आप टूटती जाएगी! फिर तो संक्रमण आगे फैलेगा ही नहीं," बोलकर उसने दोनों हथेली हवा में लहराईं, जैसे कहना चाह रहा हो कि क्या इतनी भी समझ नहीं है; फिर बोलता गया, "तुमने कल प्रधानमंत्रीजी का संदेश सुना नहीं था क्या! यदि नहीं सुनी हो फिर तो तुम गई गुजरी पुरानी पार्टी के बहकावे में हो!" रामनरेश की भाषा में कठोरता बढ़ती जा रही थी; कोई भी उसे रोकने के मूड में नहीं दिख रहा था। पंक्ति में अदृश्य से बैठे जेड सर को बोलना पड़ा, "रामनरेश बाबू! लेट हर एक्सप्लेन।" जेड सर ने शायद पहली बार अपने किसी पूर्व छात्र को बाबू कहकर संबोधित किया था। सर पहली बार कुछ बोले तब कलेक्टर, एसपी, प्रभारी मंत्री को पता चला कि जेड सर भी आए हुए हैं! सभी ने उनकी तरफ हाथ जोड़कर अभिवादन किया।

"शि मस्ट!" डीएम ने वाक्पटुता दिखाई।

"मास्क प्लीज! सोशल डिस्टेंसिंग प्लीज!" अशोक लाट धारी एसपी ने खिन्न होकर कहा।

"सर लास्ट बट इंपोर्टेंट पॉइंट; कोरोना संक्रमित लोगों को जीवन दान देने में हमारे डॉक्टरों-नर्सों को दिन-रात जुटे रहना है, एक ही टीम लगातार कई दिनों तक ड्यूटी नहीं कर सकती! वक्त रहते हमें रिजर्व मेडिकल टीम खड़ी करनी चाहिए। अगर जरूरी समझें तो बायो और केमिस्ट्री से बीएससी-एमएससी पासआउट स्टूडेंट्स को शॉर्ट ट्रेनिंग देकर अस्पतालों में लगाया जा सकता है, साल-दो साल के लिए ट्रायल बेसिस पर ही सही..." उंगली और हथेली के घुमाव-झुकाव से शायनी समझा रही थी कि प्रभारी मंत्री नाराज हो उठे, "अरे मैडम! खुद प्रधानमंत्री की अगुवाई में बाईस मार्च को पांच बजे पांच मिनट पूरे देश ने घंटा-घड़ियाल इसलिए बजाया था न कि हमारी मेडिकल टीम, पुलिस टीम का हौसला सातवें आसमान पर पहुंच जाए! प्रधानमंत्रीजी ने तो उन्हें कोरोना वारियर्स की उपाधि भी दे दिया है!" फिर शायनी को उंगली से बैठ जाने का संकेत करते हुए बोले, "आप बैठ जाइए, हमारे कोरोना वारियर्स की क्षमता का आपको अंदाजा नहीं है! एसपी साहब आप जल्दी-जल्दी बताइए, रामघाट में लॉकडाउन को सफल बनाने के लिए आप क्या करने जा रहे हैं।"

"लॉकडाउन को हमारे पुलिस विभाग ने एक चुनौती के रूप में लिया

है, रामघाट में इसे सफल बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे! आज इस पब्लिक मीटिंग के माध्यम से हम सभी से अनुरोध करते हैं कि वह हमारा सहयोग करें," एसपी के होंठों से विनम्र उद्‌गार के कोपलें निकले, आगे उसका चेहरा सख्त होता गया, "साथ ही मैं चेतावनी भी देना चाहता हूं! घरों से बाहर निकलने की होशियारी ना करें, इक्कीस दिन घर में बंद रहने से कोई मर नहीं जाएगा! मैं स्पष्ट शब्दों में कह रहा हूं जो लोग लॉकडाउन का उल्लंघन करते देखे जाएंगे वे डंडे भी खा सकते हैं, फाइन भी भरना पड़ सकता है; और जरूरी हुआ तो अंदर की हवा भी खानी पड़ सकती है!" बोलकर एसपी ने पूरे सभागार में नजर दौड़ाई, सभागार में इतनी शांति उसने पहले की किसी भी मीटिंग में नहीं देखी थी! वह अकेले मुस्कुराए, लॉकडाउन की आरंभिक सफलता पर।

"अब जिले के प्रभारी मंत्री माननीय रामजी राज सरकार की बात आपके सामने रखेंगे।" कलेक्टर बगल में बैठे मंत्रीजी की तरफ अदब से झुके; हाथ को कुछ परोसने की-सी स्थिति लाते हुए, जैसे सरकारी सौगात की झड़ी लगने वाली हो।

"अरे कलेक्टर साहब! यहां तो सीएमओ भी बैठे हैं; कोरोना से निपटने के लिए हेल्थ डिपार्टमेंट की क्या तैयारी है वही बताएंगे न।" कलेक्टर की तरफ बोलकर मंत्रीजी ने कब से मौन में लीन सीएमओ की तरफ आंखें उठायीं, जैसे उसे आंखों के चाबुक से जगा रहे हों! मंत्रीजी का सहारा पाकर सीएमओ डॉ. प्रकाश पारखी मंत्रीजी की कुर्सी तक आए; उनके कान में फुसफुसाकर बोले, इस प्रकार कि बगल में बैठे कलेक्टर साहब भी सुन लें, "सर जिला अस्पताल तो बरसों से बदहाली में है," आगे हाथों को आपस में मलते हुए बोले, "पब्लिक मीटिंग में मैं कुछ बोलूंगा तो पोल ही खुल जाएगी, अच्छा यही रहेगा इस वाली मीटिंग के बाद मैं कलेक्टर साहब को ब्रीफ कर दूंगा, और जो-जो उपाय किया जाना है उसकी सूची भी सौंप दूंगा।" सुनकर मंत्रीजी गद्‌गद हो उठे; सीएमओ के कंधे में थपकी देते हुए बोले, "वेरी इंटेलिजेंट डॉक्टर! तभी तो मैंने आपको रामघाट भेजा है; वेरी गुड आइडिया! आप कलेक्टर साहब से अकेले में डिस्कस कर लीजिएगा।" फिर जेड सर की तरफ हाथ जोड़ते हुए बोले, "जेड सर यहां कब से संयम के साथ बैठे हैं, उन्हें सुने बगैर मेरा कुछ भी बोलना व्यर्थ होगा; ऐतिहासिक लॉकडाउन के बारे में रामघाट आपका विचार सुनना पसंद करेगा।" बोलकर मंत्रीजी ने

गंभीर श्रोता की मुद्रा बना ली।

"बीते बृहस्पतिवार और फिर कल शाम को प्रधानमंत्रीजी पूरे देश को संबोधित कर चुके हैं, उनके आह्वान पर रविवार को पूरे देश में जनता कर्फ्यू रहा, कल वाली घोषणा के बाद से पूरे देश का पैर भी बंद है आज से। यहां तक कि रामधुन मंडली को भी गाजा-बाजा छोड़ना पड़ा है! मानस पाठ की सांस भी थम चुकी है।" आगे गहरी सांस लेकर बोलने लगे, "हम सभी को पता है अभी की परिस्थिति के हिसाब से लॉकडाउन अनिवार्य है, लेकिन अचानक लाए गए लॉकडाउन से आम जनों को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा हमने शायद उसका आकलन या पूर्वानुमान करने की जरूरत नहीं समझी!" अब वह मंत्रीजी पर केंद्रित होकर बोलने लगे, "यदि हमें आने वाली कठिनाइयों और दुश्वारियों का भान होता तो यह लॉकडाउन हमें यूं आपातकाल-जैसा नहीं लागू करना पड़ता।" उनकी बातों को काटते हुए मंत्रीजी ने विनम्र भाव से जानना चाहा, "फिर क्या करना चाहिए था!" अब जेड सर आंखों की गोलाई कम करते हुए बोलने लगे, "कदाचित यह अच्छा होता कि पच्चीस मार्च से लागू होने वाले लॉकडाउन की घोषणा पंद्रह दिन पहले कर दी जाती; इससे आमजन आने वाले इक्कीस दिन या उससे भी अधिक अवधि के लिए जीवन यापन हेतु आवश्यक इंतजाम कर लेते; और सबसे ज्यादा गौर करने वाली बात! देश में ऐसे करोड़ों लोग हैं अकेले या परिवार के साथ, जो अपने घरों में दो-चार दिन से ज्यादा राशन-पानी का इंतजाम जुटा पाने में सक्षम नहीं होते हैं," फिर वे चारों तरफ देखकर कहने लगे, "हम-आप तो इस लायक हैं कि महीने-दो महीने के लिए सामान का इंतजाम कर लेंगे, लेकिन उन दसियों करोड़ लोगों का क्या होगा जिनके घर में ना तो अनाज है और न खाते में पैसे हैं!

जेड सर की गंभीर होती जा रही वार्ता के बीच मंत्रीजी नाराजगी के साथ बोल पड़े, "जेड सर आप बुरा मत मानना प्लीज! आप किस धर्म को कितना मानते हैं हमें नहीं पता; आपकी जानकारी के लिए मानस पाठ किसी युग में बंद नहीं हो सकता! आज भी रामघाट तीरे पाठ जारी है, एक लाउडस्पीकर के साथ ही सही; यह बात अलग है कि कौन कितना सुन पा रहा है या सुनना चाह रहा है," फिर चेहरे में दर्प-दर्शन कराते हुए बोले, "हमारी सरकार सब इंतजाम करेगी, घर-घर अनाज देने और खाता दर खाता पैसा भेजने की योजना लाई जा रही है!"

"बस इसी बिंदु पर तो मैं आना चाह रहा था, जिस योजना को आप

अब लाएंगे यदि वह दस दिन पहले आ जाती तो अब तक हर गरीबों के घरों में महीनेभर का अनाज, हजार-दो हजार रुपये पहुंच जाते, फिर तो इस लॉकडाउन को जन-जन एक मौन उत्सव जैसा खुशी-खुशी निकाल लेते, पर अब तो यह लॉकडाउन जनता के लिए एक ऐतिहासिक त्रासदी साबित होने वाला है!" बोलकर सर अपनी जगह बैठ गए। पूरे सभागार में अभंग मौन-सी स्थिति बन पड़ी।

अपूर्व शांति में अहम ने हाथ उठाया, जैसे बच्चे कक्षा में उठाते हैं; सामने से रुकने का कोई संकेत न देख खड़ा होकर बोलता गया, "मैं तो दुनियादारी के हिसाब से बहुत छोटा हूं, पर मानव सभ्यता में पिछले पांच हजार साल में जो बड़े काम हुए हैं उनका गहन अध्ययन और विश्लेषण किया है मैंने," आगे बोलते हुए उसकी आंखें बड़ी हो गईं, "मैं यकीन के साथ कह सकता हूं देश में जनहित से जुड़ी किसी भी बड़ी योजना को रातों-रात आनन-फानन में लागू कर देने की खतरनाक परिपाटी का जन्म होता जा रहा है; इससे दो नुकसान हैं, एक तो आम चर्चा के बिना लागू होने से इसका क्रियान्वयन अव्यावहारिक हो जाता है; दूसरा, एक ऐसा माहौल बन जाता है जैसे जनता को आप दुश्मन मानकर चल रहे हों, तभी तो गुप्त रूप से योजना हठात लागू कर देते हो? इससे जनता को लगने लगता है जैसे वे किसी प्राचीन राजवंशों के शासन के अधीन हैं, जो अपनी मर्जी उन पर अचानक थोप देते हैं!" फिर वह दाएं-बाएं, हौले-हौले सिर हिलाकर बोलने लगा जैसे लॉकडाउन को ठेंगा दिखा रहा हो, "राज-काज का तो यह एक सामान्य सिद्धांत है जब दुश्मन के खिलाफ रणनीति अमल में लानी हो तो रातों-रात कर डालो, जब कोई योजना अपनी जनता पर लागू होनी हो तो पहले जन-मन को माप लो, भांप लो तद्नुरूप अमल में लाओ!" बोलकर अहम के बैठते ही मंजरी एकाएक खड़ी होकर बोलने लगी, जैसे कोई बेहद जरूरी बात याद आ गई हो, "मैं खुद का अनुभव बताना चाह रही हूं, चौदह फरवरी को ही एयरपोर्ट डायरेक्टर साहब से इंटरनेशनल फ्लाइट बंद कराने की रिक्वेस्ट करी थी मैंने, उस वक्त देश में कोरोना के मात्र चार लोग ही संक्रमित थे; यदि फ्लाइट बंद हो जाती तो यह आंकड़ा आज पांच सौ पचपन तक नहीं पहुंचता! फिर तो पूरे देश को लॉकडाउन की अंधेरी गुफा से होकर नहीं गुजरना पड़ता।" बोलकर मंजरी जैसे ही बैठी, मनोज उत्तेजित होकर बोलने लगा, "बिना किसी डर-भय के मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं, जनवरी-फरवरी-मार्च महीने में दिल्ली वाले

अपनी मनमर्जी के कामों में मदमस्त थी, कोरोना से बिलकुल बेखबर!" अब वह अंगूठे और तर्जनी को मिलाकर हथेली हिलाकर बोलने लगा, "मुझे तो लग रहा है देश में जान-बूझकर कोरोना फैलने दिया गया है, और अब उसे कंट्रोल करने के लिए लॉकडाउन को एक बड़े अवसर के रूप में देखा जा रहा है, कुछ ऐतिहासिक होने का सुअवसर जैसा कुछ सूंघकर।"

"मेरा अर्थशास्त्रीय दृष्टिकोण कह रहा है ये लॉकडाउन कहीं हमें ब्लैक एरा की तरफ न ले जाए! अभी किसी को इसका अंदाजा नहीं है इससे हम बर्बादी के बादशाह कहलाएंगे!" बिना उठे सहज ने धीमे से कहा। सहज के मुंह से ब्लैक एरा की बात निकलते ही रामनरेश तैश में आ गया, "यूनिवर्सिटी से निकले इन नौजवानों की भाषा से लग रहा है यह दलगत राजनीति के शिकार हो रहे हैं और किन्हीं बाहरी तत्वों से गाइडेड हो रहे हैं!" रामनरेश के मुंह से खुलेआम आरोप वाली भाषा निकलते ही अहम गंभीरता के साथ बोला, "रामनरेश आप अभी-अभी पॉलिटिक्स में आए हैं, हम सभी आपको स्कूल के जमाने से जान रहे हैं! अपनी धारणा की सच्चाई की परख किए बगैर ही आप हठी बन जाते हो, इससे आपकी राजनीति तो चमक सकती है, लेकिन जनता की चिंता दूर नहीं हो सकती।" फिर अपनी जगह छोड़कर बाहर की तरफ जाते हुए कहा, "पर्सनली आई हेट पार्टी-पॉलिटिक्स, अरे भाई हमें तो पॉलिटिक्स में मत घसीटो; माफी चाहता हूं डीएम साहब, इस प्रकार की मीटिंग में हमारी जरूरत ही क्या है!" अहम सभागार के निकास द्वार की तरफ बढ़ने लगा। पीछे से परवेज, सहज, शायनी और मंजरी भी कुर्सी से उठकर जाने को हुए। 'मास्क प्लीज! सोशल डिस्टेंसिंग प्लीज!' ...सभागार में एक चीख-सी आई। यह दृश्य देखकर जेड सर के चेहरे में तनाव की परत दिखने लगी। उन्होंने सहज को आवाज लगाते हुए कहा, "सुनो सहज, कलेक्टर साहब की मीटिंग बीच में छोड़कर तुम सभी का इस तरह निकल जाना अनुशासन के दायरे में नहीं है," फिर आवाज में जोश-सा लाते हुए बोले, "तुम सभी को मैं रामघाट का ब्रेन मानता हूं; बताओ तो सही तुम लोग चाहते क्या हो! और कोरोना से निपटने का क्या कोई प्लानिंग है तुम लोगों के पास?" बोलकर जेड सर की मुख-मुद्रा बड़े प्रश्न चिह्न-जैसी बन आई। सभागार में बंद गली-सी शांति छा गई। चुप्पी तोड़ते हुए मंजरी बोली, "सर देश में कोरोना वायरस को आने से हम लोग रोक नहीं पाए, अब हम लोगों का टारगेट होना चाहिए रामघाट में कोरोना का कोई केस ना आ पावे!"

"इसके लिए क्या तुम लोगों के पास कोई एक्शन प्लान है? और अगर वॉलिंटियर्स की जरूरत पड़ेगी तो कौन-कौन तैयार होगा आगे बढ़कर काम करने के लिए?" जेड सर गर्दन ऊंची कर बोले, जैसे स्कूल के दिनों में स्टूडेंट्स को श्रमदान हेतु मोटिवेट करते थे। बिना देर किए शायनी, परवेज, सहज, मंजरी, अहम, वहां पर उपस्थित और कुछ नवयुवकों ने हाथ ऊपर उठाया। देखकर जेड सर गद्‌गद हो उठे, "शाबाश, यह हुई न बात! अब आप लोग एक्शन प्लान बनाकर सीएमओ साहब से आज-कल में डिस्कस कर सकते हैं; वॉलिंटियर्स की जरूरत उसे ही ज्यादा पड़ेगी भविष्य में! जरूरत पड़े तो कलेक्टर साहब से भी मिल सकते हैं," फिर चेतावनी देते हुए बोले, "पर याद रखना सबसे पहले खुद को बचाए रखना है!" अब मंत्रीजी की तरफ हाथ जोड़ते हुए बोले, "सर कोरोना संकट पर आपकी बात सुनने के लिए हम सभी कब से बैठे हैं, प्लीज।"

"यस-यस; सर प्लीज!" कलेक्टर साहब की देह में भी स्वतः स्फूर्त दोलन हुआ।

"कलेक्टर साहब, एसएसपी साहब, जिला अध्यक्षजी, जेड सर और यहां बैठे सभी सज्जनों, माताओं एवं बहनों, क्षमा चाहता हूं माता जैसी कोई नहीं दिख रही है सभी बहनें ही हैं!" इतना बोलकर खुद ही खिलखिला पड़े मंत्रीजी, फिर बोलने लगे, "पूरे देश को पता है कोरोना वायरस हमारे सामने खड़ा है, घरे-घरे द्वारे-द्वारे!" इतना बोलते ही मंत्रीजी की आंखें बड़ी होकर आंखों के कटोरे में अटक गईं; सभागार में डरावना सन्नाटा पसरने लगा, आगे उद्धारकर्ता भांति बोलते गए, "बचाव का नायाब नुस्खा निकाला है देश के नेता ने; क्या है वो नुस्खा? लॉकडाउन!" 'वो नुस्खा' बोलते वक्त उसने अपना सिर ऊपर की तरफ खींचा और 'लॉकडाउन' बोलते हुए सिर को एक-डेढ़ फीट नीचे तक ले गए, जैसे धरती में कोई अमिट-अजेय स्तंभ गाड़ने के लिए जोर की ताकत लगाई हो! फिर बोलते गए, "प्रधानमंत्रीजी ने देश में जो जोश भर दिया है इससे आपको शक नहीं होना चाहिए, कि कोरोना भारतवर्ष में अपनी मौत खुद मरेगा! तो आप सभी से विनती है इस लॉकडाउन में हाथ बंटाएं, प्रधानमंत्रीजी के इस कार्यक्रम को सफल बनावें, और आइए नए भारत के निर्माण के लिए आगे बढ़ें, जय हिंद, जय भारत!" अपनी बात समाप्त कर हाथ जोड़कर सबकी तरफ घुमाते हुए सभागार से बाहर जाने लगे। उनके पीछे भागने को हुए कलेक्टर साहब बोलना ना भूले,

"आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद!" कलेक्टर साहब पीछे से दौड़ते हुए मंत्रीजी को गाड़ी तक छोड़ने आए। दो-तीन उंगलियों के संयोजन-संचालन से कुछ संकेत-सा करते हुए मंत्रीजी गाड़ी में जा बैठे।

दस मिनट के अंदर ही मंत्रीजी की गाड़ी कलेक्टर ऑफिस के रियर एंट्री पर आ लगी। वे सीधे कलेक्टर के मिनी कॉन्फ्रेंस रूम की तरफ बढ़ चले। कलेक्टर, एसएसपी, जिला अध्यक्ष, जिला कोषाध्यक्ष और रामनरेश वहां पहले पहुंच चुके थे। अंदर पहुंचते ही मंत्रीजी युवा-सी फुर्ती से बीच वाली कुर्सी पर आ धमके। शांत-चित्त दिख रहे मंत्रीजी एकाएक आपा खो बैठे, "बनी-बनाई पार्टी को आपलोग रसातल में धकेलने पर आमादा हो क्या!" उनका उग्र रूप देखकर किसी की हिम्मत नहीं हुई चूं तक करने की; तनी हुई मुद्रा में ही बोलते गए, "आखिर ये बकवासबाज लोग हैं कौन? क्यों डीएम साहब? 'नागरिक शांति समिति' में ऐसे फालतू लोग क्यों घुस आते हैं!" डीएम ने सफाई देने-सी सूरत बनाते हुए कहा, "वैसे तो यह मीटिंग सभी बुद्धिजीवियों के लिए ऑपेन है।" डीएम की बात को काटते हुए उसने नाराज होकर कहा, "ये छोकरा-छोकरी आपको बुद्धिजीवी दिखते हैं? अरे भई जब लॉकडाउन का आदेश हो चुका है तो हो चुका है! फिर हम सभी का दायित्व बनता है उसे धरातल पर उतारना, अब हमें कोई इफ एंड बट नहीं सुनना है; ये कल के छोकरे हमें पढ़ाएंगे यह ऐसा होना चाहिए, तो वो वैसा होना चाहिए था?" मंत्रीजी का बोलना चालू था कि रामनरेश फट पड़ा, "सर, और वह हेड मास्टर भी लगता है अब पॉलिटिक्स करने लगा है!" मंत्री अपनी लय तोड़े बिना बोलते रहे, "हां-हां वह भी तो! अरे भई पंद्रह दिन पहले जनता को बताकर लॉकडाउन करना संभव है भला हिंदुस्तान में! मैं व्यक्तिगत तौर पर मास्टर साहब का सम्मान करता हूं, पर यह क्या पागलपन वाला सुझाव है! अरे मैं तो रामघाट ग्रामीण का विधायक हूं, यहां के स्थानीय विधायक की जिम्मेदारी बनती है ऐसे लोगों की धारणा को अपनी पार्टी की तरफ बदलें।"

"दोनों विधायक रामप्रकाशजी और रामदरस मिशरजी के अंदर वह गट्स है ही नहीं कि पार्टी की विचारधारा से अधिक-से-अधिक लोगों को जोड़ें; आज की मीटिंग में तो आए भी नहीं!" जिला अध्यक्ष बोलने लगे तो उनकी आंखें आश्चर्य में फैलती गईं, "वे तो कोरोना से इतना डरे हुए हैं कि घर में दुबक लिए हैं! कोरोना से तो जनता भी इतनी नहीं डरी है..." अध्यक्ष

अपनी बात को खींचने लगे; मंत्रीजी उन्हें रोककर बोलने लगे, "हम अपनों से बाद में निपटेंगे, पहले इन नए-नए बुद्धिजीवियों की बाढ़ से तो निपट लें! कोरोना से रोकथाम में मुंह बंद रखकर योगदान देना चाहें तो स्वागत है, यदि हमें पढ़ाने का प्रयास करेंगे तो यह पार्टी को मंजूर नहीं है; मानस पाठ और रामधुन का मुद्दा उठाकर ये लोग तो एक तरह से चुनौती दे रहे हैं हमें?"

"सर सभी उसी हेड मास्टर के चट्टे-बच्चे हैं।" रामनरेश अकस्मात टपक पड़ा, लगा उसके अंदर उन सभी के लिए भरी पड़ी नफरत बाहर आने के लिए कब से कुलबुला रही थी।

"एक बात मैं बोलकर जा रहा हूं; पार्टी लाइन में ऊपर से नीचे मैसेज करवा दीजिए, ऐसे लोग यदि सरकार की किसी भी घोषणा या कार्यक्रम के विरुद्ध बोले तो उन्हें रामघाट का अतिवादी बताने-बनाने में हमें कोई कसर नहीं छोड़नी चाहिए!"

"सर आप बेफिक्र रहें," एसपी साहब सख्त लहजे में बोलने लगे, "यदि लॉकडाउन के दौरान ये लोग जरा भी तर्क-कुतर्क करते पकड़े जाएंगे तो मैं उन्हें किसी-न-किसी धारा में अंदर डाल दूंगा!"

"नो-नो, अभी वैसा कुछ करने की जरूरत नहीं है।" सिर झटकते हुए मंत्रीजी ने कहा, फिर नरम पड़ते हुए बोले, "यदि वैसा कुछ करना पड़ेगा तो पार्टी मुख्यालय से आपको संदेश आ जाएगा।"

"सर, मेरे पास एक आइडिया है," कलेक्टर साहब रहस्यमयी अंदाज में बोलने लगे, "यदि इस ग्रुप से रामघाट की सेहत पर कोई खतरा उत्पन्न होगा तो हम उन्हें सप्ताह-दो सप्ताह के लिए क्वारंटाइन कर देंगे; ऐसे समय में क्वारंटाइन करने के खिलाफ कोई भी कोर्ट कोई पिटिशन भी नहीं एंटरटेन करेगा।"

"यह सब आपके लेवल का काम है; जरूरत पड़ने पर ऐसा ही कुछ करना पड़ेगा, नहीं तो शहर में लॉकडाउन का मजाक बना डालेंगे ऐसे लोग! और हां, ये जो हेड्मैस्टर था उस पर करीबी नजर रखिए किनसे मिलता है, कहां जाता है।" बोलकर उन लोगों के लिए वातावरण में घृणा के फाहे छोड़ते हुए मंत्रीजी निकल पड़े; बाकी सभी के लिए अव्यक्त कार्य योजना की जिम्मेदारी थमाते हुए।

3

सुबह का समय तो सोचने में निकल गया था; दोपहर तक का सभागार की शांति-अशांति सहने में। शाम का सन्नाटा अकेले निकालना मुश्किल था जेड सर के लिए; रामघाट के साफ आसमान में कलाबाजी करती पतंगें उनके चरित्र की समाजोन्मुखी उड़ान को हवा देने लगीं। घर से बाहर निकलना लॉकडाउन की गाइडलाइन का उल्लंघन था; पर राय जी का घर था ही कितनी दूर, अपने पीछे वाले गेट से निकलते ही उसका पीछे वाला गेट बिल्कुल सामने! दोपहर को उन्होंने खिचड़ी खुद ही बना ली थी जैसे-तैसे। सादा ने मैसेज तो कर रखा था अंधेरे में छुपते-छुपाते आएगा, दो रोटी बनाकर खिसक लेगा, पर अभी शाम पांच बजे वाली चाय उन्हें बेचैन किए जा रही थी। महीने में पांच-सात दिन रायजी की चाय तो उन्हीं के घर होती है, सुबह नहीं तो फिर शाम; एक दिन उसी के घर पी ली जाए! उन्होंने रिंग कर दिया उसे कि आ रहे हैं। बिना देर किए पहुंच भी गए।

सामने रायजी बदहवासी की हालत में खड़े थे। उसे देखते ही सर अंदर से सहम उठे, कहीं इसके घर में किसी को...! क्षणभर के लिए रायजी उन्हें ऐसे देखने लगे जैसे सामने कोई मृत्यु-मुखी खड़ा हो। जल्द ही संभलते हुए उन्हें घर के अंदर ले आए, सामाजिक दूरी का भरसक पालन करते हुए। ड्राइंग रूम में बैठते ही वे अचंभित हो गए; राज्य सरकार में ए कैटेगरी वाले ठेकेदारों में शुमार रायजी का ड्राइंग रूम तो हमेशा सुसज्जित-पल्लवित रहता है, पर आज चारों तरफ घर-गृहस्थी की रूटीन चीजों से भरे पड़े हैं। सामने किचन की तरफ नजर दौड़ाई; अंदर से बाहर तक चावल-दाल-आटा-आलू-प्याज-लहसुन और खाने-पीने की दसियों चीजों से अटी पड़ी थी! उनकी आंखें फटी की फटी रह गईं। उन्हें खड़े-खड़े विस्मित देखकर रायजी ने सामान पड़े सोफे में ही बैठने का अनुरोध किया। खुद रेक्सीन कवर वाले सोफे के बजाय कठ-कुर्सी में बैठ गए, कल से मोबाइल में पढ़े गए कोरोना वायरस की विभिन्न सतह पर जीवन-अवधि के घंटे वाले मैसेज याद कर।

ऐसी अस्त-व्यस्त स्थिति के बारे में पूछने की जरूरत नहीं पड़ी जेड सर को; रायजी झेंप से गए थे, खुद ही बताने लगे, "इक्कीस दिन के लॉकडाउन में सामानों की भारी किल्लत होने वाली है, पूरा सप्लाई चेन धड़ाम होने वाला है!" डरावना-सा चेहरा लिए वह बोलता रहा, "सुबह से मैं कई दफा शर्मा स्टोर से सामान ढो चुका हूं, बेटा शहर की अलग-अलग मार्केट से दवाई-दूध पैकेट-मिनरल वाटर के कार्टून वगैरह जमा कर रहा है, बिटिया बेचारी सुबह

से ही ऑनलाइन कंपनियों से काफी कुछ मंगाने में हेल्प कर रही है।" स्टोर रूम में लगे पट्टी-पर्दे की आड़ से मिसेज राय शरमाते हुए, 'नमस्ते सर जी' बोली। पहले तो सामने आने से नहीं हिचकती थी मिसेज राय कभी? सर को समझते देर नहीं लगी, बेचारी सुबह से ही सामान सहेजने में अस्त-व्यस्त होगी। ऐसे में चाय की इच्छा व्यक्त करना उन्हें असंगत लगा; बिना देर किए जाने को हुए, "रायजी कल सुबह आराम से बैठकर रामघाट के वर्तमान हालात पर चर्चा करेंगे।" सर को जाते हुए देखकर रायजी ने क्षमा-याचना-सी मुद्रा बनाई, कि लॉकडाउन के कारण कितनी तो परेशानी बढ़ गई है घर में!

पीछे वाले गेट से निकलकर मात्र चार फिटिया लेन क्रॉस करते हुए उन्होंने महसूस किया, कातिल कोरोना ने रायजी का घर अब कितना तो दूर खिसका दिया है! चार फीट की लेन पार करने में उन्हें चार मिनट लग गए, यही सोचते हुए कि क्या कोरोना, व्यक्ति को आत्म-केंद्रित बना डालेगा? इतना कि संबंधों की डोर पुरानी रस्सी जैसी बन पड़ेगी, जिस पर भरोसे लायक बंधन देना मुश्किल होगा! उन्होंने अपने गेट की कुंडी हटाने के लिए हाथ बढ़ाया, मन लेन में ही खड़ा रहा; मानव विहीन दिखने वाले दृश्य में अपनों की खोज-खबर तो लेनी चाहिए। पॉकेट में रखा मास्क चेहरे में लगाया, पसरते जा रहे अंधेरे में निकल पड़े डॉक्टर साहब के घर की तरफ। डॉ रामाशीष चंद्रा का घर इस गली के समानांतर तीसरी गली में ही था; उसने मास्क भी तो धारण कर लिया था!

4

डॉक्टर चंद्रा शहर के नामी फिजिशियन हैं; जितने बड़े डॉक्टर उतने ही सज्जन! उनसे पहली मुलाकात उन्हें अच्छी तरह याद है; कितने अदब के साथ उनके स्कूल में आए थे, अपने पुत्र राजज्ञ का पांचवीं में एडमिशन कराने। बेटा तो बाप से भी ज्यादा शांत-गंभीर दिखता था; इस साल ग्यारहवीं-बारहवीं में पहुंच गया होगा, शायद। अब तो खैर क्या कहने, उनके खास शुभचिंतकों में जेड सर शामिल हैं; वे भी अपने पेशे की बदौलत जेड सर के सुख-दुख के साथी हैं। सप्ताह में एक-दो बार एक-दूसरे के घर चाय न पी लें तो बेचैन हो उठते हैं दोनों!

वे बालकनी से शांत-सहमे रामघाट की नब्ज टटोल रहे थे। सर को अपने गेट की ओर बढ़ते देख लिया था; अपने स्वभाव के विपरीत थोड़ी ऊंची

आवाज में बोल पड़े, "वेलकम सर!" जेड सर को कॉलबेल दबाने की जरूरत नहीं पड़ी; कोरोना संक्रमण की संभावना को मिनिमाइज करने के लिए डॉक्टर चंद्रा भी यही चाहते थे, कोई बेवजह कॉलबेल ना दबाएं। उन्हें अच्छा लगा, ऐसे डरावने समय में भी डॉक्टर चंद्रा की सम्मोहक मुस्कान होंठों से जुदा नहीं हुई थी। उन्हें पहली मंजिल में सिटी फेस वाली मिनी सेटिंग की तरफ ले गए; वहां बैठे-बैठे वीरान पड़ी दुनिया पर चर्चा कर सकते थे।

"वेरी डिफिकल्ट टाइम सर!" बोलकर डॉक्टर चंद्रा ने होंठों पर होंठ चढ़ जाने दिया।

"हां, इक्कीस दिन कैद-सी जिंदगी जीना कठिन तो होगा ही!" बोलकर सर ने लंबी सांस छोड़ी।

"इट इज नॉट इक्कीस दिन, इट विल कंटिन्यू फॉर मंथ्स!" डॉक्टर ने आंखें बंद करके कहा; आंखें खुलीं तो बहुत छोटी रह गई थीं।

"महीनों लंबा चलेगा! फिर तो मनुष्य के शरीर के साथ मानव जीवन में भी कई प्रकार के विकार पनपने लगेंगे!" बोलकर सर सामने सूनी सड़कों को देखने लगे, गंभीर होकर।

"एज ए डॉक्टर आई कुड फोरकास्ट देयर मेय इमर्ज वेरियस टाईप ऑफ डिसऑर्डर!"

"यस-यस, इट इज वेरि नेचुरल!" बोलते हुए सर की पलकें बंद हो गईं; अचानक पलकें खुलीं, "बेटा नहीं दिख रहा है! जब भी आता हूं तुरंत आकर चरण-स्पर्श करता है, लॉकडाउन में कहीं बाहर तो नहीं निकल गया!" उन्होंने विस्मित होकर कहा।

"आपसे क्या छुपाना सर; हम जिस डिसऑर्डर की बात कर रहे हैं वो तो हमारे घर में दिखने भी लगा है!" उसने परिहास वाले अंदाज में कहा।

"घर में दिखने लगा है! मतलब?" बात सर के पल्ले नहीं पड़ी।

"आप पहले जब भी आए हैं राजज्ञ दो मिनट में सेकेंड फ्लोर से नीचे आकर आपका पैर छूता था, आज तो शायद घंटेभर में भी ना निकले!" बोलकर वे चिंतित दिखने लगे।

"आप दोनों ने किसी बात पर नाराज कर दिया होगा?" सर कारण के किनारे पहुंचना चाह रहे थे।

"नहीं सर! हम लोग तो उसे कभी नाराज करते ही नहीं," उसने सफाई देने के अंदाज में कहा, फिर झेंपते हुए बोले, "दरअसल वह कोरोना वायरस

से बहुत ज्यादा डरा हुआ है, इसलिए कमरे में बंद कर रखा है अपने को!"

"मुझसे कह रहा था घर के दरवाजे-खिड़की बंद रखो, हवा में कई घंटे तक तैरता रहता है कोरोना वायरस!" किचन से निकलती हुई मिसेज चंद्रा बोली; सर ने गौर किया मिसेज चंद्रा ने तो अपने बाल और भी छोटे कर रखे हैं!

"फिर तो इसे डरना नहीं कहेंगे न, इसे तो कोरोना आतंक कहेंगे!" सर ने अपनी वाक् शैली को व्यंग्यात्मक होने से रोक लिया।

"क्या बतावें सर," फुर्तीली-सी रहने वाली मिसेज चंद्रा कपाल पर हाथ धरते हुए बोली, "खाना खाने भी नीचे नहीं आ रहा है! खाना कमरे के गेट पर रखने को बोलता है, अपने से अंदर लेता है।" बोलते हुए सिर ऐसे हिलाने लगी जैसे धड़ से विलग हो रहा हो, "इतना प्रिकॉशन ले रहा है कि पूछिए मत! अपने कमरे में एक माइक्रोवेव भी लगवा लिया है, मेरे हाथ से दिए खाने की पूरी प्लेट को माइक्रोवेव में मैक्सिमम टेंपरेचर तक गर्म करता है, तब जाकर खाता है!"

"कोई बात नहीं ग्रोइंग एज है, समस्या को देखने-परखने का अपना नजरिया होता है किशोरवय में।" सर के बोलने का लहजा सांत्वना देने जैसा था।

"यस-यस! एट दिस स्टेज आई एम नॉट वरी, एट आल," डॉक्टर चंद्रा बेफिक्री से बोल रहे थे, "आई विल बि कीपिंग वॉचिंग, यदि मुझे जरा भी संदेह होगा तो किसी से काउंसलिंग करा लूंगा।"

"मुझे तो लग रहा है इस कोरोना-काल में हर चीज के प्रति यंग जेनरेशन के अंदर एक नया परसेप्शन पैदा होगा।" बोलकर सर डॉक्टर चंद्रा की ओर देखकर सिर हिलाने लगे, फिर कहा, "युवा हो रही पीढ़ी क्रमशः आत्म-केंद्रित होती जाएगी!"

"सर, मुझे तो डर-सा लग रहा है, यदि राजज्ञ घर में ही कई दिनों तक कैद रखेगा अपने को तब तो और कई साइड इफेक्ट्स आने...।" धीरे-धीरे बोल रही मिसेज चंद्रा अब रूआंसा-सी होने लगी। सर को लगा सोसाइटी में जो महिला हर मामले में सर्वोपरि हो, यदि वही अंदर से टूटी हुई महसूस करे तो बाकी की क्या हालत होगी! बढ़ते जा रहे मौन को जेड सर ने कुर्सी से उठते हुए तोड़ा। उन्हें आश्चर्य हुआ आज तो डॉक्टर ने चाय के लिए भी नहीं पूछा? क्या कोरोना वायरस सभी की ऐसी गत बना देगा? डॉक्टर साहब

उन्हें गेट से बाहर सड़क तक छोड़ने आए। घर के लिए दाहिने मुड़ने के बजाय सर सामने वाली सड़क की तरफ चलने को हुए। डॉक्टर साहब के चेहरे में विस्मय वाली उभार दिखी; उन्होंने स्पष्ट किया, "सोचता हूं वर्माजी का जायजा लेता चलूं।"

डॉक्टर चंद्रा के घर जाते हुए में रास्ते सुनसान लग रहे थे, आते वक्त पसरने को आतुर अंधेरे में डरावना हो उठा था! सामने चौराहे पर हर दिन इस वक्त जमघट लगा रहता था, अब लॉकडाउन में कुत्तों ने कब्जा जमा लिया था। कल मध्यरात्रि वाले डरावने श्वान-क्रंदन का शोर अभी उमंगपूर्ण भाउउभाउउ भाओओऊऊउ में बदल गया था, विजेता दल की तुरही-सी! अब उन्हें याद आया, पिछले एक महीने से कुत्तों का रात्रि-क्रंदन नियमित रियाज-सा हो चला था; कहीं इसी अनहोनी की भविष्यवाणी तो नहीं थी? उन्हें तो विज्ञान पर विश्वास है, पर जिन्हें भगवान पर ज्यादा भरोसा है वे क्यों बेफिक्र बैठे रहे?

मोड़ पर इमली के पेड़ में चमगादड़ों की उड़ान आज जल्दी शुरू हो गई थी; पेड़ के नीचे आज मदरा मोची, राज गोलगप्पे वाले और उनकी भीड़ नहीं थी, शायद इसीलिए। 'ओ माय गॉड!' सर के मुंह से अपने-आप निकल आया, जैसे किसी ने पीछे से झन्नाटेदार थप्पड़ जड़ दिया हो; मदरा तो आए दिन बोलता रहता था, और राज भी एक-दो बार खुलासा कर चुका था, दिन की कमाई से ही उनके घरों में रात को उजाला हो पाता है। ये इक्कीस दिन कैसे कटेंगे उनके राम जाने? चौराहे से गांधी मार्ग जाने वाली सड़क की पटरी पर सब्जी बेचने वाली औरतें भी आज नदारद थीं! ये भी दो-चार दिन अपना चूल्हा भले खींच लें बचे पड़े आटा-चावल के बूते, पर आगे क्या होगा श्याम जाने! उनका मन विषाद से भर गया। वर्माजी के घर जाकर मन हल्का करने का विचार त्याग दिया। सीधे घर वाली गली में मुड़ गए, चौराहे पर जिप्सी पर देह टिकाए पुलिस वालों की नजर से बचते हुए। मास्क लगाकर निकले थे, दूर से देख भी लिया तो भी थोड़ी न पहचान पाएंगे कि जेड सर ही हैं! उनके पैर तेजी से बढ़ रहे थे, जैसे पीछे से कोई अनाम दुश्मन टूट पड़ने वाला हो। बिना ताला लगे घर में पैर धरते ही उन्हें लगा, बाहर दुनिया में अब बचा ही क्या है! कुंडी खिंचने की आवाज सुनकर किचन की तरफ से सादा प्रकट हुआ। सुबह से अटकी उनकी सांस चालू हुई जान पड़ी; चलो एक टाइम ठीक-ठाक भोजन तो मिला करेगा!

"अच्छा हुआ सर जो लॉकडाउन हो गया, नहीं तो दुनिया में कोई नहीं बचता!" लॉकडाउन पर सादा की परम-संतुष्टि वाली प्रतिक्रिया निकली। उन्हें आश्चर्य हुआ, एक ही छत के नीचे रहने वाले दो प्राणी के लिए लॉकडाउन के मायने में जमीन-आसमान-सा फर्क है!

5

सुबह-सवेरे गांधी मार्ग पार कर वे मानसरोवर पार्क की तरफ बढ़ चले; विधायक जी से मिलने। आम दिनों के विपरीत आज सुबह चौड़े गांधी मार्ग में मरघट-सा सन्नाटा पसरा था। उन्हें लगा बाहर निकलना तो लॉकडाउन के दिशा-निर्देश का उल्लंघन है! फिर स्वतः आश्वस्त भी हो लिए, आखिर दूध-पानी के लिए निकलने की छूट तो है ही। रात्रि-क्रंदन में जुटे रहने वाले श्वान दल का दूर-दूर तक अता-पता नहीं था! जिस गांधी मार्ग में चिड़ियों के दर्शन दुर्लभ होते हैं वहां उनकी स्वाधीन चीं-चीं सुकूनदायक लग रही थी। गांधी मार्ग क्रॉस करते ही उनके जेहन में गांधीजी जीवंत हो उठे; यदि गांधीजी आज जीवित होते तो? तो 30 जनवरी को देश में पधारे कोरोना के प्रथम मामले से लेकर मध्य मार्च तक मनमर्जी के एजेंडे में पिले रहने और फिर एकाएक बिजली गिरा देने पर कतई माफ नहीं करते हमें! उनके मन में एक हूक-सी उठी...चलो तीस जनवरी को गांधी की हत्या कर दी तो कर दी, तीस जनवरी की रात को पधारे कोरोना वायरस की पहले खेप की हत्या भी काश उसी दिन कर दिए होते; उसी प्रकार निर्ममतापूर्वक।

'रामदरश मिश्र, विधायक' लिखा बोर्ड उन्हें दूर से ही दिख गया; पूरे मानसरोवर लेन में आज सबसे ज्यादा प्रखर जो कुछ नजर आ रहा था, तो वह यही बोर्ड था! उसे आत्म-तुष्टि-सी हुई; दुनिया के लिए एमएलए साहब चाहे जैसे हों, बाकी मामलों में उनकी छवि चाहे जैसी रही हो, उसके साथ तो उनका सालों से निभता आया है, विधायक बनने से भी काफी पहले से! वे रामघाट आउटर के विधायक हैं; उच्चवर्गीय कॉलोनी में वृहदाकार 'मिश्र निवास' खड़ा किया है; अपने क्षेत्र से दूर अंदर आकर, शांतिपूर्ण जीवन यापन के लिए।

उन्होंने विशालकाय गेट के बाहर लगा कॉलबेल दबाया। सर को देखकर

भी दरबान ने द्वार नहीं खोला; ऐसा पहली बार हुआ था। वे कुछ देर तक खड़े रहे, ठिठके से। अटपटा-सा लगने लगा, दोबारा बेल दबाई। कमरों की खिड़कियों के खुलने-सरकने की आवाज आई; उसने सिर उठाकर देखा, कई जोड़ी सहमी आंखें उन पर गड़ी हुई थीं जैसे उन्होंने नहीं कोरोना के स्पाइक प्रोटीन ने कॉलबेल दबाई हो! ऊपरी मंजिल से प्राप्त संकेत पर किसी अनजान व्यक्ति ने खुल जा सिम-सिम भांति राज-द्वार सरकाया। उन्हें सीधे ऊपरी मंजिल पर बने बैठक-कक्ष में बिठाया गया। काफी देर बाद पीपीई किट में ढका व्यक्ति आकर बैठ गया, उनसे काफी दूर वाली कुर्सी में; दोनों हाथ जोड़कर उसने अभिवादन किया। उन्होंने भी जवाबी नमस्कार किया। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था आखिर यह आवरण-बद्ध मानव है कौन! इनसे क्या बात करूं? कोई नर्स-कंपाउंडर तो नहीं है? हो न हो एमएलए साहब के घर में किसी को कोरोना संक्रमण के लक्षण दिखे हों! चुप्पी बढ़ती गई तो आवरण के अंदर से आवाज आई, "हां जेड सर, बताइए कैसे आना हुआ? आपके तरफ कोरोना ने दस्तक तो नहीं दी है।" अरे, यह तो अपने माननीय विधायक रामदरश मिश्रा जी हैं! आवाज पहचानकर सर ने उठकर दोबारा नमस्कार-वंदन किया।

"यह फुल किट आपने क्यों धारण कर रखा है!" बोलते हुए सर के चेहरे में विस्मित मुस्कान तैर गई; अंदर उठ रहे कौतूहल को रोकना मुश्किल हो गया था उनके लिए।

"मेरी जानकारी में कोरोना वायरस से बचाव का एकमात्र उपाय है, वो है ऐसा वाला किट पहनकर ही किसी के सामने आना, समझिए फुल प्रूफ उपाय!" विधायक जी ने सिर हिलाते हुए कहा, लगा जैसे उसके अंदर रामबाण पा लेने का आत्मविश्वास भरा हो।

"ये किट तो कोरोना संक्रमितों के ट्रीटमेंट में लगी मेडिकल टीम के लिए जरूरी है, हमारे-आपके लिए जरूरी नहीं है," ना चाहते हुए भी सर के बोलने की शैली व्यंग्यात्मक हो चली थी; फिर भाषा में मधुरता का अंश बढ़ाते हुए बोले, "हमारे-आपके लिए तो जरूरी है सैनिटाइजर लगा लेना, घंटे-दो घंटे में साबुन से हाथ धोना, मास्क लगाकर ही बात करना या बाहर निकलना, तीन-चार फीट की सामाजिक दूरी का पालन करना," फिर आश्वस्त करने के अंदाज में बोले, "आप अभी मुझसे बारह फीट की दूरी पर हैं, चाहे तो और दूर खिसक लें! वैसे रामघाट में अभी कोरोना ने एंट्री नहीं मारी है।"

सर की बातों पर भला किसे यकीन नहीं होता है रामघाट में; विधायक जी ने बिना देर किए किट उतार दिया। चेहरे में उग आई झेंप को तत्क्षण मिटाते हुए बोले, "आप तो खुद संयमित व्यक्ति हैं, आपसे भला किसको खतरा हो सकता है! लीजिए मैंने मास्क भी उतार दिया।" उसने मास्क उतारते हुए कहा, जैसे सच में सर के लिए बड़ा सम्मान है उसके दिल में।

"यह किट आपने कहां से खरीदी है!" सर की उत्सुकता जाग उठी; किट की अच्छी बनावट-बुनावट देखकर।

"आपको तो पता ही है अपनी सरकार हर काम बड़ी मुस्तैदी से कर रही है," विधायक जी बोलने लगे तो उनकी आंखों में अतिरिक्त चमक आ गई, "सरकार ने हजारों पीपीई किट का ऑर्डर दिया है; सप्लायर ने सप्लाई से पहले परखने के लिए दस सैंपल भेजे थे जिला अस्पताल में," फिर बड़ी शान से बोलते गए, "कलेक्टर-एसपी-एमपी साहब-मंत्रीजी और शहर के तीनों विधायकों ने एक-एक सैंपल रख लिए!"

"अच्छा!" सर ने समर्थन वाले अंदाज में कहा।

"हां भई, सैंपल तो हमेशा एक नंबर का माल होता है न!" उसने गर्दन तानकर कहा, जैसे किसी बड़े आविष्कार के जनक हों। सर के पास बोलने के लिए कुछ खास नहीं था, विधायक जी ज्यादा बोलने के मूड में नहीं थे; बैठक-कक्ष में चुप्पी पसरती गई।

"मैं तो ऐसे ही हाल-चाल के लिए आ गया था विधायक जी।" आने की कोई खास वजह थी नहीं, सो सर ने वार्ता-क्रम जारी रखने की गरज से कहा।

"बस, मुझे भी तो घर में ही रहना है।" उसने बेरोजगार हो जाने जैसी भाव-भाषा में कहा।

"कहीं आना-जाना बिल्कुल नहीं?" बोलकर सर का मुंह खुला ही रह गया; वे अवाक् रह गए, विधायक को ऐसे संकट के समय में जनसेवा के कामों में लगना चाहिए।

"ऐसे बुरे वक्त में भला कौन घर से बाहर निकलना चाहेगा जेड सर! मैंने तो अपने कमरे में ही कैद कर लिया है अपने को," उसने कहा तो लगा उसकी आवाज में कोरोना की छाया पड़ी हो, "देखने में तो कोरोना वायरस बड़ा अच्छा लगता है, पीले-पीले रंग का; लेकिन सुना है उसका जो नुकीला उभार होता है कीलनुमा वह बड़ा तेज डंक मारता है! इसलिए मैं तो ऊपर से उतरकर अपने लॉन में भी नहीं आता हूं," इतना बोलकर आगे कोरोना

विशेषज्ञ की भांति बोलने लगे, "एक्सपर्ट लोग भले कहें कोरोना आदमी से आदमी में फैलता है, पर जरा सोचिए जो आदमी शुद्ध आचरण के हैं उनसे कोरोना भला कैसे फैलेगा? हवा से!" बोलने के बाद उनकी आंखें फटी की फटी रह गईं, जैसे कोरोना विशेषज्ञ मिले तो अभी का अभी कच्चा चबा जाएं।

"हवा से फैलने की बात भी आने वाले दिनों में वैज्ञानिकों की पकड़ में आ सकती है।" सर ने सिर हिलाकर कहा।

"अरे सर! आप तो खुद साइंस के टीचर रहे हैं, जो वायरस मुंह में-हाथ में-कुंडी में-गेट में चिपका रह सकता है वह क्या हवा में भी लटका रह सकता है? जो भी हो, है तो कीड़ा ही न!" आगे बोलते हुए चेहरे में भय की परछाई उगने लगी, "आज ही इस पर मेरा विमर्श हुआ है एमपी साहब से, प्रभारी मंत्री से और शहर के दोनों एमएलए से भी; सभी की राय है सबसे पहले अपनी जान देखनी है, जान नहीं बचेगी तो जनसेवा कैसे होगी।" विशेषज्ञता बघारने के बाद उसका स्व-समाधान जोर पकड़ने लगा।

गंभीर मुद्रा अख्तियार कर लेने के अलावा सर को कोई शब्द नहीं सूझ रहा था। इसी बीच बलिराम नौकर सामने चाय रख गया। पहली चुस्की में ही चाय बड़ी अच्छी जान पड़ी; कल शाम रायजी के घर और डॉक्टर चंद्रा के घर चाय ना मिल पाने की तड़प को वे आज पाट देना चाहते थे; बेवजह कुछ बोलकर चाय के आनंद में विघ्न से बचते हुए चुपचाप चाय पीते रहे।

"सर यू आर आल्सो सिक्सटी प्लस!" विधायक जी ने डरावने अंदाज में कहा, फिर शुभचिंतक भांति बोले, "आप भी घर से बाहर न निकला करें।"

"मैं घर से न निकलूं तो चल जाएगा, लेकिन आप ना निकलेंगे तो जनता का क्या होगा!" बोलकर सर बड़े फिक्रमंद दिखने लगे।

"जनता का क्या होगा! मतलब?" बोलकर उसने दोनों होंठों को नीचे की ओर खिंच जाने दिया, जैसे कहना चाह रहे हों कि गुरुजी होकर पब्लिक जैसी फालतू बातें मत किया करो।

"मतलब कि इस लॉकडाउन में आपके क्षेत्र में जनता परेशान हाल होगी, उनकी सुनना देखना करना; बस्ती एरिया तो आपके क्षेत्र में ही है, वहां तो लगभग लोग दिहाड़ी पर जीने-खाने वाले हैं, उनके घरों में चूल्हा जला कि नहीं यह सब देखना समाधान करना और क्या!" कहने के बाद सर ने और स्पष्ट किया, "और प्रधानमंत्रीजी की घोषणा को अमल में लाने में सहयोग करना...," सर बोल ही रहे थे कि उसने हस्तक्षेप किया, "अरे सर आप किस

दुनिया में रहते हैं; आप तो पिछली सरकार के जमाने की बातें कर रहे हैं!" उसने कहा तो चेहरे में घृणा की परत स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगी, फिर आंखें फैलाते हुए बोलते गए, "हमारी सरकार के समय सभी गरीब परिवारों की माली हालत टन टन हो चुकी है, सभी के घरों में अनाज के सुरक्षित भंडार पड़े हैं, सब के खातों में अब तो बचत ही बचत है!" फिर सर की तरफ देखकर ऐसे बोलने लगे जैसे शिष्य को दीक्षा देना चाह रहे हों, "मेरी कल ही माननीय मुख्यमंत्रीजी से बात हुई है, उनकी शायद परसों ही पीएम से बात हुई थी; सरकार ने कमर कस ली है यदि जरूरत पड़ी तो देश के सारे अनाज गोदामों के ताले खोल दिए जाएंगे! सभी गरीब परिवारों के खातों में डायरेक्ट पैसा ट्रांसफर किया जाएगा, आखिर डिजिटल इंडिया का कमाल दिखाने का इससे बेहतर मौका और क्या हो सकता है!" बोलकर विधायकजी के चेहरे में विजय-दर्प दीप्त हो उठा, जैसे कोरोना कोई वायरस नहीं इनके द्वारा छोड़ा गया अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा हो!

"मुझे तो लग रहा है बस्ती की हालत बिगड़ेगी, बस्ती के हजारों लोग दिल्ली-मुंबई-पंजाब में फंसे पड़े हैं।" सर कुछ ज्यादा ही चिंतनशील होकर बोलने लगे; विधायकजी तुनक उठे, "अरे मास्टर साहब आप काहे ला अपना सर खपाते हैं! आपको तो आराम से घर बैठना चाहिए; अब तो पुलिस की पेट्रोलिंग शुरू होने वाली होगी गांधी मार्ग में," इतना कहने के बाद थोड़ा ठहरकर, यूं कहें सोच-विचार कर बोल ही पड़े, "आपको तो पता ही होगा निशांत कुमार कितना टफ एसएसपी है, किसी को भी नहीं बख्शता है, समय से पहले घर में बंद हो जाने में ही भलाई है सभी की।" सर को काटो तो खून नहीं; प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से घर जाने की बात कह दी थी विधायक जी ने! यानी इनके घर से अभी का अभी निकल जाने का स्पष्ट संकेत! इतना पुराना मेलजोल है मिश्रा जी से, कम-से-कम इसका तो लिहाज कर लिए होते! इतना तो ठीक है, उसका घर है, उसका हक बनता है ऐसे संकट के समय में किसके साथ बैठे ना बैठे; आज तो इसने हद कर दी, जिंदगी में पहली बार 'सर' छोड़कर 'मास्टर साहब' कहा उन्हें! बिना देर किए उन्होंने हाथ जोड़ा, सीढ़ी की तरफ बढ़ चले। आज पहली बार गेट तो क्या सीढ़ी तक भी छोड़ने ना आए विधायकजी! जेड सर सोच में पड़ गए, तो क्या सत्ता का दर्प पराकाष्ठा पर पहुंच चुका है, या फिर मानव को निस्पंद बनाने वाले कोरोना की दीर्घकालीन मार पड़नी आरंभ हो चुकी है?

6

विधायकजी के घर से जेड सर बेआबरू-सा होकर निकले थे। अंदर उठ रहे अपमान के धुएं बाहर निकलने के लिए जोर मारने लगे; सीधे घर की तरफ निकल पड़े। अरे! घर तो गांधी मार्ग पार कर चंद मीटर की दूरी पर ही तो है; लगा सिर जैसे किसी दीवार से टकरा गया हो। इतनी कम दूरी चलने मात्र से अंदर भरे अपमान का धुआं शायद बाहर ना निकल पाए; अपमान के पदचिह्न घर तक खींच आएंगे! उन्हें लगा थोड़े लंबे रास्ते चल लेने पर अंदर उठे अपमान की आंधी शायद वापसी की राह पकड़ ले। गांधी मार्ग पर पुलिस की गश्ती दल भी आ डटी होगी। उनके अंदर विचार आया, क्यों न गांधी मार्ग के समानांतर चलने वाली मानसरोवर मुहल्ले के अंदर वाली गली से अंडरपास तक चला जाए, फिर अंडरपास से गांधी मार्ग का भूतल पार कर अपने मोहल्ले के लिए बाएं मुड़ लिया जाए? उत्तर पा लेने के बाद अंदर से प्रतिउत्तर भी आया, यह ठीक रहेगा, इससे सुनसान रास्ते पर एक-डेढ़ किलोमीटर का वॉक भी हो जाएगा।

चौड़े मानसरोवर लेन से दाहिना लेकर वे संकरे मानसरोवर सरनी पर सवार हो लिए। पूरी गली में खौफनाक मौन पसरा था, किसी भी घर के दरवाजे खुले नहीं थे। बस खिड़कियों से आंखों का डंक उन पर पड़ता जा रहा था, कि जेड सर ही हैं या फिर हो ना हो कोरोना से मर गए जेड सर की आत्मा प्रस्थान पथ पर चले चल रहे हैं! साल में एक-दो बार मानसरोवर सरनी से होकर गुजरना होता है उनका, कई मिलने-पूछने वाले हैं इस गली में; दसियों लोग तो नमस्कार-प्रणाम-आदाब-नमस्ते करने वाले हैं, आज इतना बेगानापन! तो कोरोना वायरस सभ्यता को घरों में कैद कर देगा? उन्हें लगा उनके पैर ही नहीं सोच भी सुन्न पड़ रहे हैं, 'यदि भविष्य में धरती में कोई ऐसी महामारी आ जाए जो महीनों-वर्षों तक जाने का नाम न ले तब? कहीं वर्तमान सभ्यता का रूप-स्वरूप ही न बदल जाए!' अंडरपास से गुजरते हुए उन्हें लगा, ऐसा भी हो सकता है कोरोना या भविष्य में ऐसी ही किसी महामारी के प्रकोप से नई सभ्यता विकसित हो, अभी वाली सैकड़ों बुराइयों से मुक्त सभ्यता! ऐसा सोचते ही उसने भारमुक्त-सा महसूस किया; लगा, मिश्रजी के घर घटित अपमानजनक वाकया अंडरपास के नीचे ही अटका रह गया! बाएं मुड़कर घर की तरफ वाली गली में तेजी से बढ़ चले, मन में पनपे सारे किंतु-परंतु-फटंतु को पछाड़ते हुए।

...ठक-ठक-ठक...थपा-थप-थप...अरे, वर्माजी के घर से कुछ कूटने-पिसने की आवाज आ रही है! वे चौकन्ने हो उठे; इस लॉकडाउन में करोड़पति के घर में भी आटा-चावल की कमी पड़ गई है जो अब घर में कूटना-पीसना हो रहा है? कौतूहल अब आशंका में बदलता जा रहा था। वर्माजी रामघाट के बिजनेस टायकून हैं; उनके कई-कई पेट्रोल पंप हैं, इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम का होलसेल भी संचालित कर रहे हैं। धन-दौलत की कोई कमी तो कभी रही नहीं। उनकी सब कितनी तो इज्जत करते हैं! अंदर से आवाज आई, कल शाम ही तो इधर आने वाले थे, जब इस रास्ते से निकल ही रहे हैं फिर इनका भी हाल-समाचार पूछ ही लेना चाहिए, कोई ऐसी-वैसी बात तो नहीं हो गई? उसने बेहिचक गेट ठकठकाया; उनके गेट के बाहर कॉलबेल नहीं होता न! गेट जल्द ही खुल गया। अरे! सामने वर्माजी खड़े थे। "तो आपने खुद गेट खोला! चौकीदार लोग नहीं दिख रहा है?" सर के लिए आश्चर्य को काबू में रखना मुश्किल हो गया।

"जेड सर, बस समझिए अब समय आ गया है जिसको जिंदा रहना है उसे आप जैसा ही गांधीवादी बनकर जीना पड़ेगा!" वर्माजी ने सम्मानपूर्वक कहा, फिर दबी-सहमी आवाज में बोले, "ऐसे अनर्थकारी समय में घर से लगभग सभी नौकर-चाकर हमने हटा ही दिए!"

"फिर यह कूट-पीस कौन कर रहा है! किस चीज की कुटाई-पिसाई चल रही है?"

"मैं खुद कूट रहा था अभी; अरे सर, शरीर मेरा है तो उपाय भी तो मुझे ही करना पड़ेगा न!" बोलकर उसने सर की टोह लेनी चाहिए, "आप भी तो खुद ही कूट-पीस रहे होंगे!"

"गेहूं-दाल का कूट-पीस?" बात सर के पल्ले नहीं पड़ रही थी।

"गेहूं-दाल नहीं सर, जड़ी-बूटी-भस्म! जिसकी अभी सख्त जरूरत है, कोरोना की काट के लिए।" वर्माजी ने सामान्य ढंग से कहा, जैसे वह जो करता है वैसा ही हर घर में होता होगा।

"कौन-सी जड़ी-बूटी?"

"आइए मैं आपको दिखाता हूं" कहकर वह सर को लेकर छत की ओर बढ़ चले, बखान करते हुए, "जड़ी-बूटी मंगाकर खुद ही चूर्ण बनाना बेहतर रहता है, बंद चूर्ण-भस्म पर विश्वास नहीं किया जा सकता; जड़ी-बूटी के अलावे भी ऐसी ढेर सारी चीजें हैं जिससे बॉडी की इम्युनिटी बढ़ती है" छत पर पैर

धरते ही आंखों को गौरवपूर्ण भाव-भंगिमा से नचाते हुए बोले, "अपने घर में सभी को मैंने सारी जरूरी दवाइयां और जड़ी-बूटी दिलाना शुरू कर दिया है, अब कोरोना की क्या मजाल जो परिवार की तरफ आंख उठाकर भी देख ले!"

"सुबह-शाम इनका सेवन करते होंगे?" सर ने सामान्य जानकारी रखने के तौर पर कहा।

"सुबह-शाम? आप भी क्या बात करते हैं सर! बुखार की दवाई है क्या जो सुबह-शाम लिया बुखार उतर गया," इतना कहकर वर्माजी आगे गहन अध्येता की भांति बोले, "कोरोना तो अंग्रेजी दवाई की डोज से मरने से रहा; हमारी जो आयुर्वेदिक पद्धति है वही बचाएगी हमें कोरोना वायरस से, हां इसमें थोड़ा धैर्य रखना पड़ता है, और समय भी देना पड़ता है; बस समझिए कल से मैं इसी में लगा हूं, सुबह से रात तक हर दो-दो घंटे पर अलग-अलग चूर्ण का सेवन करता हूं और मैडम को भी कराता हूं, बेटा-बहू तो सामने वाले विला में शिफ्ट कर गए हैं, वहां भी भिजवाता हूं।" बोलकर वह बड़े बेफिक्र जान पड़े।

"यहां छत पर तो रंग-बिरंगे जड़-गांठ-पत्ते-टहनियां सूख रही हैं; मैं तो जिंदगीभर वनस्पति विज्ञान पढ़ाते आया हूं, फिर भी इनमें से कुछ ही को पहचान पाऊंगा!" सर ने अपनी सीमा बताई।

"कोई बात नहीं, कोरोना-काल में मैं आपको पढ़ाता हूं!" बोलकर वे ठठाकर हँस पड़े, फिर कहा, "मैं तो सोचता हूं यदि पेट्रोल पंप का धंधा मंद पड़ा तो मैं आराम से आयुर्वेदिक उपचार केंद्र खोल सकता हूं, इतनी पूंजी लगा दूंगा कि प्रदेश भर में इस सेक्टर में किसी ने न लगाया होगा!"

"पिछले तीस-पैंतीस साल से वनस्पति विज्ञान के कई मंचों से आयुर्वेद पद्धति के संवर्धन की बात उठाता रहा हूं, पर काम उतना हुआ नहीं जितना होना चाहिए।" बोलकर सर छत पर फैली जड़ी-बूटी पर गौर करने लगे।

"अब मैं आपको ब्रीफ में बताता हूं; यहां जितनी भी गांठ-पत्ते-टहनियां सुखाए जा रहे हैं उनके एक-एक चूर्ण-भस्म का एक पखवाड़े का डोज तैयार हो चुका है," कहकर वह रूफ हट की तरफ बढ़ चले; एक-एक डिब्बे को उठाकर दिखाते हुए बोलने लगे, "यह गिलोय का चूर्ण है, सुबह-शाम मियां-बीवी एक-एक चम्मच लेते हैं; ये अश्वगंधा मंगा रखा है, इसे दूसरे कई चूर्ण में मिक्स करना पड़ता है; वो वाला एलोवेरा के रस को सुखाकर काढ़ा टाइप का बनाया है, रात को सोने से पहले बस बीस एमएल लेना होता है; यह देखिए क्या कमाल का चूर्ण बना है सौंठ का! इन चार डिब्बों

में अजवाइन-इलायची-धनिया और जीरा का पाउडर है, इसे टेस्ट बदलने और हाजमा ठीक रखने की गरज से बीच-बीच में पानी के साथ लेते रहते हैं।" बोलते-बोलते रूफ हट में सजाए बिना गद्दे वाले लकड़ी के सोफे में बैठ गए, पीठ एकदम सीधी रखते हुए; फिर बोले, "मैचिंग भी कोई चीज होती है, अब बिना गद्दे वाले इस कठ-सोफे को लीजिए, इसमें बैठकर जड़ी-बूटी का सेवन करता हूं तो असर और दिखने लगता है।" बोलकर उसने दोनों बाजू लंबे सोफे के किनारे तक फैला दिए; उसके चेहरे से परम-ब्रह्म पा लेने की तृप्ति टपकती दिखने लगी।

"एक तरह से आपने तो जड़ी-बूटी को अपनी जीवनशैली में आत्मसात-सा कर लिया है!" सर ने कहा तो वर्माजी पकड़ नहीं पाए कि, सर तारीफ कर रहे हैं या उपहास की पतली फुहार छोड़ रहे हैं।

"मैं कोई पोंगा-पंडित नहीं हूं जो सिर्फ जड़ी-बूटी के भरोसे पड़ा रहूं," वर्माजी ने अपना दर्जा ऊपर उठाते हुए कहा, फिर बेंत वाली रैक की तरफ इशारा करके बोले, "उधर तो देखिए, एलोपैथिक दवाओं का कितना तो स्टॉक कर रखा है हमने! इम्यूनिटी बढ़ाने की सारी दवाइयां हैं, नेट से खंगाल-खंगाल कर मंगाया है हमने; किसी डॉक्टर से पूछते तो आपको एक-दो विटामिन वगैरह दे देते, लेकिन कोरोना वायरस के खतरे से पुख्ता इंतजाम के लिए हमने सारी जरूरी दवाइयां लेनी शुरू कर दी हैं।" बोलकर रैक पर रखी दवाइयों के ढेर सारे पत्ते उठाते हुए बोले, "यह वाला लीफ विटामिन सी का है, यह वाला कैल्शियम का, यह विटामिन बी कॉम्प्लेक्स वाला है, यह रहा विटामिन डी बूस्टर डोज और वो उपर रैक पर रखा है जिंक-फास्फेट-पोटैशियम वगैरह का लेवल मेंटेन करने वाला कैप्सूल!" बोलकर चुप हुए तो होंठों के ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं विशेषज्ञताधारी वाली मुस्कान फैली हुई थी।

"आयुर्वेदिक और एलोपैथिक दवाइयां साथ-साथ खाने से हेल्थ पर साइड इफेक्ट भी आ सकता है।" सर ने आशंका जाहिर की।

"नहीं, बिल्कुल नहीं! दोनों का सेवन बॉडी को स्ट्रांग बनाता है; जो काम जड़ी-बूटी से नहीं हो पाएगा वह अंग्रेजी कर देगी!" फिर हाथों को विशेषज्ञता प्रदर्शन भांति लहराते हुए बोले, "यही तो असली ट्रिक है! कब जड़ी-बूटी लेनी है, कब अंग्रेजी, यह समझना ही तो काबिलियत है! हम लोग सुबह भूखे पेट हर घंटे चूर्ण-भस्म लेना शुरू करते हैं तो नाश्ते के बाद टेबलेट, फिर एक-एक घंटे में आयुर्वेदिक पाउडर, दोपहर खाने के बाद कैप्सूल, दो

घंटे बाद फिर चूरण की शृंखला शुरू होती है तो रात तक चलती रहती है।" बोलकर वह सर को ऐसे देखने लगे जैसे किसी असहाय प्राणी को देख रहे हों।

"अभी तक इसका कितना प्रभाव महसूस कर रहे हैं आप!" अब सर की भी रुचि जागने लगी; वर्माजी की वैदिक तपस्या पर।

"मुझे तो काफी असर दिख रहा है, शरीर के सभी जोड़ों में मजबूती महसूस हो ही रही है, माँसपेशी और नसों में हमेशा ताकत का एहसास भी होने लगा है; और सबसे बड़ी बात मन की बेचैनी भाग गई है, अदरवाइज कोरोना तो जीना हराम कर रखा था," वर्माजी बोलते जा रहे थे, "हमने बड़ी बुद्धिमानी दिखाई जो लॉकडाउन से दस दिन पहले ही कोरोना से बचाव के लिए युद्धस्तर पर तैयारी शुरू कर दी; दस-बारह दिनों में तो हम लोगों का बॉडी समझिए कोविड को पटकनी दे मारेगा!" उसने बड़प्पन के साथ बात समाप्त की; चेहरे में दुर्लभ लक्ष्य हासिल कर लेने की शांति दिख रही थी।

"वर्माजी, यदि खुदा न खास्ता कोरोना का प्रकोप बढ़ता जाएगा फिर तो गरीबों का भगवान ही मालिक है; यहां रामघाट में बस्ती तो बर्बाद हो जाएगी!" सर विस्मित होकर बोले।

"आप तो विज्ञान के विद्वान सर हैं! आपको भला क्या बताना; वह था न एक वैज्ञानिक, डारविन-चारविन क्या तो नाम था, उसी ने तो यह नियम बनाया था कि धरती में वही जी पाएगा आगे बढ़ पाएगा जो सबसे सक्षम होगा," अपने को सौभाग्यशाली मानने की भाव-भाषा में वर्माजी बोले जा रहे थे, "आने वाले समय में इंडिया में गरीबों का कोई नामोनिशान नहीं बचेगा, सभी भूख से या फिर नई-नई बीमारी से मर-खप जाएंगे!"

"यदि गरीब नहीं बचेंगे तो अर्थव्यवस्था का चक्र चलेगा कैसे वर्माजी!" सर ने एक बड़ा सवाल रख दिया उसके सामने।

"गरीब इस धरती से गायब हो भला! इसे तो ब्रह्मा का वरदान समझिए, अजर-अमर होने का वरदान।" इतना कहकर वर्माजी ने घड़ी पर नजर डाली, रैक से एक टेबलेट उठाकर चूसने लगे, फिर बोले, "सॉरी आधे घंटे बाद हमें ब्रेकफास्ट लेना है, अब ऐपेटाइजर चूसने का समय हो चला है," कुछ याद करते हुए क्षणभर रुके, फिर बोले, "हां तो मैं कह रहा था, गरीबी तो एक शाश्वत सत्य-सा है सिस्टम में! कोरोना-काल में जितने गरीब मर-मरा जाएंगे उतने ही अमीर, गरीबों की पांत में बैठे मिलेंगे!"

"वो भला कैसे?" इस नई थ्योरी से सर अचंभित थे।

"लाखों अमीरों का धंधा-पानी बैठ जाने से, और कैसे! इसलिए कह रहा हूं अर्थव्यवस्था का पहिया घुमाते रहने वाले गरीबों की कमी हो जाने की चिंता हमें नहीं करनी चाहिए।" वर्माजी किसी गूढ़ अर्थशास्त्री भांति बोले। उसकी बात सुनकर सर सन्न रह गए, मिनटों तक।

"तो एक प्रकार से आपने कोरोना को लाल झंडा दिखाने का पूरा इंतजाम कर लिया है।" अपनी ओर से लाई चुप्पी सर ने खुद ही भंग की।

"कोरोना तो अब कोई ईसु ही नहीं रहा हमारे लिए," इतना बोलते ही वर्माजी के होंठों पर अद्‌भुत मुस्कान छा गई, फिर बोले, "मुझे तो लगने लगा है इतना कुछ करने के बाद कहीं मैं अमर्त्य न हो जाऊं!" बोलने के बाद उसकी आंखें सचमुच अमिट-सी दिखने लगीं।

"यदि कोई सस्ती जड़ी-बूटी मिले तो बस्ती वालों की भी सुध लेनी चाहिए हमें," सर ने याचना भाव में कहा, फिर उठते हुए बोले, "अब चलता हूं, मुझे भी नहाना-धोना है।"

"स्योर-सोर! बस्ती के लिए तो हर किसी को सोचना पड़ेगा।" बोलकर वर्माजी सर को सीढ़ी तक छोड़ने के लिए बढ़े; उन्हें कुछ याद आया तो पीछे मुड़ते हुए बोले, "मैं आपको यह वाली सूखी टहनी दे रहा हूं, नाश्ते से पहले गर्म पानी और चाय पत्ती के साथ खौलाकर पी लें, चाय जैसा।"

सीढ़ी से नीचे उतरते हुए सूखी टहनियों को देखकर वर्माजी के दैनिक कार्य-कलाप पर सर अचंभित थे। घर आकर उसने टहनियों को बरामदे के छज्जे पर पड़े रहने दिया; बॉडी की इम्युनिटी पर उनकी पकड़ तो तभी से रही है जब से जीव विज्ञान को गले लगा रखा था।

7

घंटाघर वाले केडिया जनरल स्टोर, राजधाम मेडिको, साहू किराना मार्ट, मोदी मिल्क प्रॉडक्ट जैसे होलसेल वालों के लिए लॉकडाउन तो 'खुल जा सिमसिम' बनकर आया था। रामघाट में घंटाघर थोक व्यापार का बड़ा केंद्र माना जाता है। दुनिया में ऐसी कौन-सी चीज है जिसके थोक कारोबारी यहां ना हों! यहां से होलसेल सप्लाई रामघाट और आसपास के जिलों में ही नहीं प्रदेशभर में होती है। प्रदेश की सीमा से लगे दूसरे प्रदेशों के सीमावर्ती जिलों में भी यहां से आपूर्ति का संजाल फैला हुआ है। लॉकडाउन के शुरुआती दो-तीन दिनों का दृश्य बड़ा ही अजीब-सा था; इस वक्त के लिए जरूरी सभी आवश्यक

वस्तुएं तो जैसे भाप बनकर उड़ गई थीं, रातों-रात! आम दिनों में आम जनता का सैनिटाइजर से भले ही दूर-दूर तक वास्ता न रहा हो, लॉकडाउन की घोषणा की रात से ही वह अचानक कस्तूरी बन गया था! मास्क को तो जैसे माफिया लोगों ने अपहरण कर लिया था! मल्टीविटामिंस और कैल्शियम की गोलियां ऐसे गायब हुईं जैसे चरस-गांजा रातों-रात उड़ गया हो! 24 मार्च की रात से ही रामघाट के होलसेलर और हर गली के रिटेलर की दुकानों में लोगों की भीड़ बढ़ती गई। मास्क, सैनिटाइजर, डिसइनफेक्टर, इम्यूनिटी बूस्टर, रंग-बिरंगी टेबलेट जैसी चीजें एकाएक जान-सी प्यारी दिखने लगीं, जान जो अपने शरीर से निकलकर दूसरों की दुकानों में सजी हो! इन्हें पाने के लिए हजारों लोग सड़कों में, गलियों में पागलों जैसे भागे फिर रहे थे, जैसे इनमें से कोई भी चीज यदि चूक गई फिर जिंदगी तो बस चंद घंटों की मेहमान है!

ऐसा नहीं है मैराथन दौड़ के बाद सभी खाली हाथ ही लौट रहे थे; काफी लोग पचास रुपये का मास्क पांच सौ में और बीस रुपये का सैनिटाइजर सौ रुपये में खरीदकर विश्व विजेता वाले अंदाज में घर लौट रहे थे। चाहे मास्क हो, सैनिटाइजर हो, डिसइनफेक्टर हो या फिर कोरोना काल के लिए स्वघोषित जरूरी दवाइयां सभी-के-सभी शतरंज की गोटियां हो चली थीं; लॉकडाउन के पहले दो-तीन दिनों में किसी भी ग्राहक को ठीक से छकाने के बाद ही दी जाती थी रिटेलर द्वारा। होलसेल वाले तो फुटकर ग्राहकों से सीधे मुंह बात ही नहीं करते थे। चार-पांच दिनों तक रामघाट का नजारा ऐसा था जैसे प्रधानमंत्री के अलावा देश में न तो कोई नेता-मंत्री-मुख्यमंत्री हैं और ना ही खुलेआम जारी मुनाफाखोरी पर लगाम लगाने वाला कोई शासन-प्रशासन! जमाखोरी पर लगाम लगाने की खातिर राजनीतिक दलों के नेताओं और स्वयंसेवी संस्थाओं के पदधारकों द्वारा प्रशासन से जब-तब गुहार लगाई जाती थी; कुल मिलाकर जवाब यही मिलता कि इस वक्त लॉकडाउन को सख्ती से लागू कराना ही पहला टारगेट है। पार्टी के भी कुछ कार्यकर्ताओं द्वारा इस अकल्पनीय मुनाफाखोरी की बात एमपी और एमएलए तक पहुंचाई गई। एमपी साहब ने तो पहले हाथ ही खड़े कर दिए, 'ऐसे वक्त में भगवान ही सबका मालिक है।' जब उन्हें जनमत का वास्ता दिया गया तो उसने ऊपर बात करने की बात कहकर पिंड छुड़ाया।

चार-पांच दिनों तक रामघाट का नजारा ऐसा रहा जैसे सरकार-शासन को कोरोना ने देश निकाला दे दिया हो। सभी जरूरी वस्तुओं की कालाबाजारी

और फिर धीरे-धीरे उनकी सीमित आपूर्ति से मुनाफाखोरी का राजपाट चलता रहा पूरे शहर में! आखिर हर चीज की इंतहा होती है। कोई एक सप्ताह के बाद कहीं बाहर से कोई करंट-सा आया, अचानक! घंटाघर में वक्त की जरूरी वस्तुओं के सभी थोक विक्रेताओं के गोदामों में ताबड़तोड़ छापे पड़े। खुले बाजार में मास्क, सैनिटाइजर, डिसइनफेक्टर, जरूरी दवाइयां, मिल्क प्रॉडक्ट, मिनरल वाटर की भले ही किल्लत दिख रही थी और चार-पांच गुना ज्यादा कीमत पर मिल रही थी, पर इनके गोदाम भरे पड़े थे! देखते-ही-देखते कई गोदामों को सील कर दिया गया। कुछ लोगों को तो मौके पर से ही गिरफ्तार किया गया। कल तक जो शासन-सत्ता कहीं भीगी बिल्ली-जैसी छिपी बैठी थी, एकाएक शेर जैसा दहाड़ रही थी। घरों में कैद लोगों ने सरकार और कानून की जय-जयकार करना शुरू कर दिया। फिर तो फिजा बदलनी शुरू हो गई, एकाएक; लगने लगा कोरोना भला किस चिड़िया का नाम है!

थोक विक्रेताओं की धरपकड़-छापेमारी, कुल मिलाकर दो दिनी खेल ही रहा। प्रकट तौर पर तो कुछ नहीं दिख रहा था, अंदर की खबर में दम था। थोक विक्रेता व्यापार मंडल भी कोई ऐरे-गैरे चीज नहीं होते; उनकी पहुंच पार्टी मुख्यालय तक होती है! पार्टी मुख्यालय के पास थोक विक्रेता मंडल के दबाव का कोई काट नहीं था। मंडल ने दाएं-बाएं के बजाय बात सीधे-सीधे उठाकर रख दी, 'आखिर पार्टी फंड में हर साल वे लोग ठीक-ठाक चंदा क्यों देते हैं! इसीलिए न कि मौके-बेमौके ठीक-ठाक बिक्री-बट्टा में सत्ता-शासन से कोई अड़ंगा नहीं लगाया जाएगा।' उनकी तरफ से यह भी दलील दी गई, 'जब सबकुछ तीन-चार दिनों तक शांतिपूर्वक चल ही रहा था, तो और दो-चार दिन आंखें किसी दूसरी दिशा में फिराए रहते!' भला किसे नहीं पता कि पार्टी पैसे के दम पर ही तो चलती है! अंततः ऊपर के हस्तक्षेप से छापेमारी-धरपकड़ बंद करा दी गई, इस हिदायत के साथ कि कोरोना के समय कालाबाजारी से तौबा कर लिया जाए। अप्रत्यक्ष रूप से संकेत दिया गया कि, अब तक जो कानूनी कार्यवाही शुरू हो चुकी है उसका जिला स्तर पर निपटारा कर लें, अधिकारियों को अपने स्तर से मैनेज करके। फिर तो प्रशासन और पुलिस महकमे ने ले-देकर सारा मामला निस्तारित दिखा दिया। हां, इस प्रकरण में गांधी मार्ग वाले शर्मा स्टोर और उन जैसे दसेक होलसेल कम रिटेलर को कानूनी फंदे से बचने के लिए पुलिस और प्रशासन स्तर पर बड़ी रकम खर्च करनी पड़ी थी। बताते हैं चंदा देने वालों की जो सूची पार्टी

मुख्यालय से भेजी गई थी उसमें इन गिने-चुने का नाम नहीं था! हकीकत भी यही थी; काफी हिला-हुज्जत के बाद भी ये लोग पार्टी फंड में चंदा देने की परंपरा में शामिल नहीं होना चाहते थे।

लॉकडाउन के तीसरे दिन तक बस्ती के सिर्फ तीन घरों में ही सैनिटाइजर आ पाया था; एक पप्पू टीवी मिस्त्री, दूसरा असगर नाई और तीसरा रामनरेश नेता के घर में। पप्पू का हंसामल जी के घर सालों से आना-जाना है; कई तरह के रिपेयरिंग वर्क वह देख लेता है। सहज भैया से उसने सैनिटाइजर माँगा तो मिल भी गया, इस्तेमाल करने के तरीके की हिदायत के साथ। असगर नाई शफीक साहब का शागिर्द रहा है; परवेज से उसका रिश्ता सगे भतीजे-सा चल पड़ा था। लॉकडाउन की सुबह परवेज के टेबल पर पड़े सैनिटाइजर पर उसने गौर फरमाया ही किया था कि परवेज ने बिना देर किए उसे दे भी दिया, बड़ा दिल दिखाते हुए, 'हमने कई शीशी का जुगाड़ दस दिन पहले ही कर लिया था, आप एक शीशी रख लीजिए, वैसे शेविंग के बाद आप जो आफ्टर शेव लोशन यूज करते हो वह भी यही काम करता है।' कुर्ते की जेब में सैनिटाइजर रखते हुए असगर गद्‌गद हो उठा था; परवेज ने भले ही कहा हो शेविंग लोशन भी यही काम करता है, पर सैनिटाइजर तो आखिर सैनिटाइजर है! बस्ती में रामनरेश नेता का घर तो समझिए कोरोना के वरदान से भरा था! परिवार के सदस्य मास्क भी पहनने लगे थे कभी-कभी, सैनिटाइजर भी लगा लेते थे जब-तब। इतना सब कुछ वह पार्टी कार्यालय की बदौलत ही हासिल कर पाया था; बतौर उपाध्यक्ष, युवा प्रकोष्ठ रामघाट शहर।

लॉकडाउन लगते ही शहर में मास्क, सैनिटाइजर, डिसइनफेक्टर-जैसी चीजों की भारी किल्लत हो गई थी। पैसे वाले कई गुना ज्यादा कीमत देकर भी इन चीजों को हासिल नहीं कर पा रहे थे, फिर बस्ती के लोगों की भला क्या औकात! हां, जब से इस बात का पर्दाफाश हो गया था कि डिसइनफेक्टर दारू से बनता है, कुछ घरों में इसका ट्रायल स्प्रे शुरू हो गया। पर बस्ती वालों के लिए इन चीजों, खासकर सैनिटाइजर हासिल करना अमृत पाने के समान हो गया था। लॉकडाउन के तीसरे-चौथे दिन तक बस्ती की फिजा ऐसी हो चली थी कि सैनिटाइजर नहीं तो खैर नहीं! अभी तक बस्ती के लोगबाग खासकर औरतें साबुन के सहारे ही कोरोना भगा रही थीं। अब जल्द ही यह बात पूरी बस्ती में तैर गई, कि जिस घर में सैनिटाइजर की शीशी हो कोरोना घर के अंदर आने की हिम्मत नहीं कर सकता!

सैनिटाइजर के प्रति सम्मोहन की कसर रामनरेश ने पूरी कर दी। दो-तीन सालों से कड़ी मेहनत के बावजूद वह बस्ती में पार्टी का संगठन मजबूत नहीं कर पा रहा था। कोरोना ने उसके दिमाग में एक बेहतरीन आइडिया जगा दिया; सैनिटाइजर की बूंदें टपकाकर वह बच्चों से अपने लिए नारा तो लगवा सकता है! लॉकडाउन के तीसरे दिन उसने बस्ती में ऐलान करवा दिया, संध्या पांच बजे औघड़नाथ मंदिर में सैनिटाइजर की सौगात दी जाएगी बच्चों को। उसने अपना वचन निभाया भी। चार बजते-बजते मंदिर परिसर में बच्चे अट नहीं रहे थे। सबसे पहले उसने बच्चों को सोशल डिस्टेंसिंग का मतलब समझाया, फिर सभी को तीन-तीन फीट की दूरी पर लाइन में खड़ा करवाया; बस्ती के मेन रोड के चौराहे तक! तब उसने सैनिटाइजर का कमाल दिखाना शुरू किया; एक किनारे से प्रत्येक बच्चे के हाथ में दो-दो बूंद टपकाया गया, मधुर हिदायत के साथ, "तुरंत दोनों हथेली-पंजे में ऊपर-नीचे मलो!" आठ बजे तक मंदिर में सैनिटाइजर-विधान चलता रहा। सच में घर जाते बच्चों के शोर से बस्ती गूंजती रही...रामनरेश भैया की जय...रामनरेश भैया की जय...

कल शाम हथेली में पड़े दो बूंद सैनिटाइजर ने बच्चों में गजब का असर किया था। घर आते-आते बच्चे दसियों बार हाथ सूंघ चुके थे। सैनिटाइजर की गंध नसों में इस कदर घुस गई थी कि सोने के समय तक भी हाथ सूंघना ना भूले थे! सुबह होते ही बच्चों के लिए साबुन का कोई मतलब नहीं रह गया था। दस बजते-बजते दुस्साहसी कारनामों के लिए अपंजीकृत बच्चों का झुंड औघड़नाथ मंदिर में जुट गया। गुप्त मंत्रणा-कानाफूसी के बाद बच्चों ने ऐलान कर दिया, '...सैनिटाइजर हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, हम इसे लेकर रहेंगे...' फिर तो बच्चों की पांच टुकड़ियां शहर की अलग-अलग दिशाओं में कूच कर गईं। हर टुकड़ी में तीन-तीन बच्चे थे। चांदमारी में विशेषज्ञता प्राप्त बच्चों की दो टुकड़ी घंटाघर इलाके के होलसेल डिपो के इर्द-गिर्द लग गईं। सभी को अपना काम पता था। एक बच्चा काउंटर के पास चालू कारोबार पर गौर से नजर रखता था, कि दुकान में कितने लोग कहां व्यस्त हैं। दूसरा बच्चा दुकान के किनारे नकली दौड़ के लिए तैयार रहता था; नकली दौड़, जब तीसरा बच्चा सैनिटाइजर लेकर धीरे से खिसक रहा हो तब उसे असली दौड़ लगाकर पीछा करने वाले को भ्रमित कर देना था कि वही असली चोर है! सच ही नकली दौड़ वाले के हाथ में कुछ भी न देखकर दुकानदार लोग समझते चोरी का अंदेशा भर हो गया था।

दोपहर तक बच्चों की सिर्फ दो टुकड़ियां ही सैनिटाइजर की पांच शीशी उड़ा पाई थीं। दो टुकड़ी एक घंटे तक नजर रखने के बावजूद सैनिटाइजर तक पहुंच बनाने का सुराग पा नहीं सकीं। गांधी चौक वाली टुकड़ी का निशाना तो सही लगा था, पर दुर्भाग्यवश दुकानवालों के हत्थे चढ़ गए! हकीकत में वह टुकड़ी भी कामयाब हो गई थी, पर कामयाबी को पचा नहीं पाई। हुआ कुछ यूं कि काउंटर के कोने में रखे सैनिटाइजर की तीन शीशी चुपके से उठाकर वह गांधी चौक की तरफ खिसक लिया था, गांधीजी की प्रतिमा के चबूतरे पर आकर बैठा ही था कि उसका जासूस साथी धरा गया! लोगों ने उसकी धुनाई शुरू कर दी। साथी को पिटता देखकर वह कभी निक्कर के नीचे लिंग के आसपास छिपाई शीशियों को देखता तो कभी बापू की मूर्ति को! यह द्वंद्व उसके अंदर अधिक देर तक नहीं चल पाया; शीशियां दिखाते हुए चिल्लाकर कहा, "अंकल सैनिटाइजर मैंने चुराया है रहमान ने नहीं! उसे छोड़ दीजिए।" लोगों ने रहमान को पीटना बंद कर दिया। असली चोर की ईमानदारी पर उसे पीटा तो नहीं पर 'बस्ती के बच्चे' वाली बात पर कुछ लोगों ने सामने की पुलिस चौकी से दरोगा जी को बुला लिया। दरोगा भला बच्चों को कहां छोड़ने वाला था!

शाम छह बजे तक पांचों टुकड़ियों के सभी सत्रह बच्चे मय आठ शीशी सैनिटाइजर की आमद कोतवाली थाने में हो चुकी थी। एसपी साहब को सूचना दी गई, 'शहर में बच्चों के एक शातिर गिरोह का पर्दाफाश किया गया है जो लॉकडाउन के दिनों में शहर के लिए बड़ी मुसीबत का कारण बन सकता था; इनमें से कुछ बच्चे तो भविष्य में देश में आतंकवादी गतिविधियों का सरगना बनने की भी काबिलियत रखते हैं!' नाबालिग होने के कारण किसी को पुलिसवालों ने डंडों से पीटा तो नहीं, पर रात आठ बजे तक लगभग सभी सिपाही-दरोगा ने उनके कान और विशेष रूप से गाल को मरोड़-मरोड़ कर लाल कर डाला था। एसपी ने सख्त हिदायत दे रखी थी, चूंकि ये बच्चे शातिर अपराधी बनने की क्षमता रखते हैं उन्हें बाल-सुधार गृह भेजने की प्रक्रिया आरंभ करें। हालांकि प्रकरण को उसने एसपी सिटी के विवेकाधीन छोड़ दिया था। दूर-दूर तक बच्चों को बचाने वाला कोई नहीं था! रामनरेश को खबर भिजवाई गई थी, पर उसने यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि उसने सैनिटाइजर तो चखवा ही दिया था सभी बच्चों को, तो उन सत्रह को तीसमार खां बनने का शौक क्योंकर चर्राया था।

आखिरकार मंजरी ने मोबाइल में रामू से सलाह-मशवरा किया। उसने मंजरी पर भरोसा जताया कि शायनी को साथ लेकर कोतवाली जाकर अपनी सूझ-बूझ से इंस्पेक्टर को समझाएं और जरूरत पड़े तो शपथ-पत्र भी दे दें, भविष्य में ये बच्चे देश के लिए कोई खतरा नहीं पैदा करेंगे। रामू ने इशारों में यह भी बता दिया था कि उसके बॉक्स की तली में बीस हजार रुपये बुरे दिनों के लिए रखे हुए हैं; फिर जोर देकर कहा था, बस्ती के लिए इससे बुरा दिन भला और क्या हो सकता है! सच ही मंजरी और शायनी मिलकर रात नौ बजे तक बच्चों को उनके घरों में वापस पहुंचा चुकी थीं, सकुशल।

बस्ती में देर रात तक भीमरवा गाली देने के अंदाज में बड़बड़ाता रहा ...कायर-कापुरुष-कपटी-कुत्ता...

8

पुरानी पार्टी का दफ्तर यानी 'गोखले आश्रम' का मेन गेट आज पूरा खुला था। अन्यथा प्रायः बंद ही रहता है; या खोलने वाला कोई नहीं होता! यह कहना अति होगा कि पुरानी पार्टी का कोई नामलेवा नहीं था। पार्टी के ऐसे अंधकारमय युग में भी इक्के-दुक्के लोगों का आना-जाना होता रहता है पार्टी दफ्तर में, बगल वाले चार फिटिया गेट से। महीनों बाद आज गोखले आश्रम में चहल-पहल थी। अहाते के बुजुर्ग गुलमोहर में इस सीजन वाले लाल फूलों के गुच्छे निकल आए थे, इसका भान आज ही हो रहा था। अगल-बगल वाले भी अवाक थे, पुरानी पार्टी के दफ्तर में अचानक खद्दरधारियों का जमावड़ा देखकर। लोगों ने दिमाग में जोर लगाया, न तो प्रदेश और न ही देश में अभी चुनाव का कोई शेड्यूल पेंडिंग है! फिर?

पुरानी पार्टी को लोग गई-गुजरी पार्टी मानने लगे थे, बल्कि सत्ताधारी पार्टी ने उसे मृत पार्टी तक कहना शुरू कर दिया था। प्रजातंत्र में यह एक रिवाज-सा हो चला है, विजयी पार्टी पराजित पार्टी को दफन हो गया मानने लगती है। पर हकीकत में राजनीतिक पार्टी कब्र में कभी दफन होती नहीं! सामान्य पराजय की बात छोड़िए, चुनाव में बुरी तरह पिट चुकी पार्टी भी प्रजातंत्र में दूब-दूर्वा के समान होती है; हां दूब-दूर्वा! भीषण गर्मी के दिनों में भी जमीन के नीचे अपना वजूद बचाए रखती है और बरसात की पहली बौछार के साथ ही उनकी नन्हीं कोपलें दिखने लगती हैं! कोरोना वायरस खासकर चालू लॉकडाउन उनके लिए बरसात की बौछार नहीं झमाझम बारिश

के समान थी। तो समझिए गोखले आश्रम में आज की हलचल नन्हीं कोपलों से आगे खिली कोपलों जैसी थीं! जाहिर है पुरानी पार्टी के चेहरे ही नहीं सिर से पैर तक एकाएक स्पंदित हो उठे थे। पार्टी जिला अध्यक्ष जयपाल मंडल को महीनों बाद पार्टी की याद आई थी। वरना चुनाव में पार्टी की करारी हार के बाद तो मुंह छुपाने के लिए वह किसी मुकम्मल ठिकाने की खोज में भटकता रहा था। पार्टी जिला अध्यक्ष ने याद किया था; स्वाभाविक ही पार्टी के हर सेल के पदाधिकारी आए थे। शहर प्रकोष्ठ से लेकर पंचायत सेवादल तक, चिंतक मंडली से लेकर यूथ बिंग तक। दफ्तर परिसर में जमते जा रहे पार्टी पदाधिकारियों के मन में बढ़ता उत्साह-उमंग बाहर शरीर में प्रकट दिखता था। अंदर जिज्ञासा जोर मारने लगी थी; कोरोना-काल में आज कार्यकारिणी क्यों बुलाई गई है? सभी एक-दूसरे की मुस्कान का जवाब मुस्कान से ही दे रहे थे; कोरोना का भय तो था ही, सोशल डिस्टेंसिंग का जमाना भी था।

अध्यक्ष को अचानक याद आया, कोरोना के समय में पार्टी दफ्तर में बीस-पच्चीस लोगों को बुलाना मुसीबत बुलाने जैसा साबित हो सकता है! उसने सभी अठारह लोगों को दफ्तर के पीछे वाली गली में अपने घर पर ही बुला लिया। बिना देर किए डीएम और एसएसपी को एक छोटा मैसेज भी डाल दिया था, '...हमारी बिटिया तो अमेरिका रहती है; उसके जन्मदिन का साधारण मंगल-कामना घर पर रखा है, बस आधे घंटे के लिए; कृपया सहयोग बनाए रखें, हमारी पार्टी की तरफ से पूरा सहयोग तो है ही हमेशा के लिए...' मैसेज सेंट करने के बाद वह खुद निश्चिंत हो लिए थे, अभी प्रजातंत्र के इतने बुरे दिन नहीं आए हैं कि विपक्षी पार्टी के जिला अध्यक्ष की इतनी भी न चले।

"चुनाव पश्चात आवश्यक विराम के बाद आप सभी का पार्टी दफ्तर में फिर से स्वागत है," बीच वाली कुर्सी में विराजते ही अध्यक्ष महोदय ने कहा; पार्टी पस्त पड़ चुकी थी और महीनों बाद मिल रहे थे, स्वाभाविक ही स्वर संकोचमय था। दफ्तर के बजाय घर पर बैठे थे, सो मुस्कान के साथ आंखें मिचकाते हुए कहा, "लॉकडाउन में बैठक करने की मनाही तो है, पर सत्ताधारी पार्टी वाले प्रचार का मौका नहीं गवां रहे हैं तो सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए हम मन भी हल्का न करें?" अध्यक्ष ने खफा रहने जैसा कहा, लगा पिछले चुनाव की करारी हार के घाव पार्टी अभी तक सहला रही थी; आगे आवाज में नरमी लाते हुए बोले, "मेरा निवास दफ्तर के बगल में

है, इसे भी दफ्तर ही समझिए।" फिर रुककर कुछ सोचकर बोले, "आज की बैठक का कोई एजेंडा नहीं भेजा गया था, इसलिए आप लोग भी संशय में होंगे ऐसे डरावने समय में बैठक का क्या मतलब है!" लंबे-चौड़े ड्राइंग रूम में माहौल को वार्ता के अनुकूल पाकर आगे बोलते गए, "अभी पूरा देश कोरोना का दंश झेल रहा है, घोर संकट की इस घड़ी में अपनी पार्टी का क्या रुख होना चाहिए यही आज की बैठक का विचारणीय बिंदु है।" बोलकर सामने बैठे एक-एक पदाधिकारियों की तरफ नजर फिराने लगे। सभी निशब्द! जैसे किसी वज्रपात ने प्राण हर लिए हों। अध्यक्ष ने आज और करीब से महसूस किया, चुनाव में करारी हार पार्टी को मूर्छित तो करती ही है वर्कर्स को भी शब्दहीन कर देती है! सामने बैठे विभिन्न प्रकोष्ठ के पदाधि कारियों में जान फूंकने की खातिर बिना देरी किए उसने पूछा, "सबसे पहले तो 'करो-ना' के बारे में अपने-अपने मंतव्य दीजिए; पहली जरूरी बात इस संकट के प्रति हमारा रुख क्या होना चाहिए?" बोलकर उसने तेजी से सभी की ओर नजर घुमाई।

"महोदय, पहली बात लॉकडाउन में इस प्रकार इकट्ठा होना गलत है; दूसरी बात, ऐसे समय में सभी को सरकार का सहयोग करना चाहिए।" पीछे बैठे प्रशांत धीर, महासचिव, युवा प्रकोष्ठ ने कहा।

"एक-एक कुर्सी के बजाय सभी दो-दो कुर्सी छोड़कर बैठें।" अध्यक्ष ने झेंपते हुए कहा, गलती का एहसास होने जैसी भंगिमा बनाकर; आगे बोले, "रही बात सहयोग की, वो तो हमारे आलाकमान ने कह ही दिया है!" उसने अरुचिपूर्ण ढंग से कहा, जैसे कहना चाह रहे हों सहयोग करना विपक्षी पार्टी का धर्म नहीं होता; आगे उसने उत्तरमय प्रश्न छोड़ा, "जनता के बीच इस सिचुएशन को हमें किस रूप में प्रस्तुत करना चाहिए!"

"ऐसे संकट की घड़ी में अपने सेवा दल को जनता की सेवा में उतार देना चाहिए।" किनारे बैठे जमील अहमद, अध्यक्ष, ग्रामीण प्रकोष्ठ ने कहा।

"इस विषय में भी पार्टी आलाकमान ने कल शाम ही स्पष्ट कर दिया है कि हमारे कार्यकर्ता जनता की सेवा में जुटे रहेंगे।"

"फिर तो आगे आलाकमान और आपका जैसा दिशा-निर्देश होगा हम सभी उसी दिशा में चलेंगे।" चिंतक मंडली के वरिष्ठ पुरुष मंडन ओझा ने कहा।

"तो चलें आगे बढ़ते हैं, असली मुद्दे पर।" उसने जोशीले स्वर में कहा; फिर कुर्सी में तनते हुए बोले, "इस कोरोनावायरस ने पूरे देश के लिए संकट

तो खड़ा किया ही है, अपनी पार्टी के लिए परीक्षा की घड़ी भी ला दी है; यदि इस परीक्षा में हम पास हो गए तो समझिए सत्ताधारी बड़बोले पार्टी के दिखावे के महल में हम छेद करने में सफल होंगे!" 'होंगे' शब्द में उसने दबाव बनाया, लगा जैसे पार्टी की बड़ी जीत के बाद की बैठक ले रहे हों; फिर स्वर को रहस्यमयी तान देकर बोले, "कोरोना से निपटने में इस बड़बोले पार्टी को हमें अक्षम साबित करना है, इसके लिए हमें इसके हर एक्शन प्लान में होल ढूंढ़ निकालना होगा!"

"जब सरकार एक्शन लेगी तभी तो हम उसमें छेद खोज पाएंगे, जब एक्शन ना लिया हो तब?" चिंतक मंडली के आत्मा प्रसाद ने कहा।

"सरकार ने एक्शन तो ले लिया है, लॉकडाउन तो बड़ा एक्शन है!" शहर अध्यक्ष नरोत्तम हरि ने कहा; सभी को लगा कहीं गुपचुप तरीके से सत्ताधारी पार्टी तो नहीं ज्वॉइन कर ली है!

"लॉकडाउन तो अभी लगाया गया न, हवाई जहाज उड़ना अभी बंद हुआ है ना! मैं पूछता हूं सरकार ने होली से पहले ही हवाई जहाज क्यों नहीं बंद कराया?" चिंतक आत्मा प्रसाद ने कहा; सभी के चेहरे में खुशनुमा विस्मय पसरने लगा, सच में यह तो बहुत बड़ा मुद्दा हो सकता है!

"आखिर हम आज इस बात को उठा रहे हैं! एक महीना पहले बस्ती का रामू ग्वाला नाम का एक बंदा हवाई जहाज बंद कराने के मुद्दे पर अकेले लड़ रहा था, हम में से कोई भी उसके सपोर्ट में नहीं आया?" पार्टी के स्लम प्रकोष्ठ वाले दुर्गेश जाटव बोलते-बोलते आवेश में आ गया।

"वह जब पार्टी में है ही नहीं तो उसे हम सपोर्ट करते तो कैसे करते!" नरोत्तम हरि ने सफाई दी।

"वह भले ही पार्टी में ना हो पर मुद्दा तो हम हथिया सकते थे न!" दुर्गेश ने धीरे से कहा, भरपूर नाराजगी व्यक्त करते हुए।

"आपस में तकरार नहीं, बिल्कुल नहीं; आत्मा बाबू की बात ब्रेक हो गई थी।" अध्यक्ष ने अध्यक्षीय हस्तक्षेप किया।

"दरअसल मैं कहना चाह रहा था, यह जो लॉकडाउन परसों पच्चीस मार्च से लागू हुआ है उसे तो हकीकत में पंद्रह मार्च से ही करना चाहिए था।" फिर छत की ओर तिरछी नजर फेंकते हुए बोले, "बल्कि हवाई जहाज को तो पांच मार्च से ही बंद करना चाहिए था!" आत्मा प्रसाद तर्कमय होकर बोल रहे थे; अपनी आदत के मुताबिक वाक्य के पूर्ण विराम के बाद श्वास-विराम

लंबा हो गया था, तो प्रशांत धीर का युवापन भड़क उठा, "यह सरकार ऐसा नहीं कर सकती थी न, क्योंकि कर्मकांड तो इस पार्टी का जीवन-दर्शन है! दो जोड़ पांच बराबर सात की गणना करके इसने पच्चीस मार्च से लॉकडाउन किया है!"

"फिर तो वे सोलह मार्च से भी लॉकडाउन कर सकते थे, तब भी गणना सात की आती!" दुर्गेश ने विचार रखा।

"नहीं, तब नहीं कर सकते थे, क्योंकि उस वक्त वे भोपाल में व्यस्त थे; इसी बिंदु पर तो मैं आना चाहता था!" आत्मा प्रसाद ने कुर्सी के हत्थे पर ताली पीटते हुए कहा। सत्तर साल की देह में जोश-खरोश देखकर, खासकर उनके द्वारा पकड़ में लाए गए सनसनीखेज मुद्दे को महसूस कर पूरे ड्राइंग रूम में जैसे ऊर्जा-तरंग फैल गई।

"नो-नो! भोपाल-कांड पर लोकल में बहस नहीं!" अध्यक्ष दाएं हाथ की तर्जनी उठाकर बोले; फिर स्पष्ट करते हुए कहा, "पार्टी मुख्यालय द्वारा पूरे देश में पार्टी इकाइयों को क्लियर कट मैसेज दिया गया है, भोपाल कांड पर पार्टी के वरिष्ठ नेता संसद में जोरदार बहस करेंगे; कोरोना-काल में इस मुद्दे को जनता के बीच ले जाने से पार्टी पर महामारी के समय भी राजनीति करने का आरोप लग सकता है।"

"फिर तो हमें आने वाले डेवलपमेंट पर करीबी नजर रखनी है; लॉकडाउन का अंतिम परिणाम चाहे जो भी हो, इतना तो तय है देश की अर्थव्यवस्था रसातल में जानी ही जानी है!" प्रखर चिंतक मंडन ओझा ने कहा, फिर सावधान करने के अंदाज में बोले, "लेकिन हमें जनता के बीच लॉकडाउन के पक्ष-विपक्ष में बोलने में होशियार रहना पड़ेगा, क्योंकि यह हजारों-लाखों लोगों की जिंदगी का सवाल है!"

"ओझा साहब ने सही कहा; इसीलिए लॉकडाउन और अर्थव्यवस्था के पक्ष-विपक्ष में बोलने के बजाय पार्टी मुख्यालय ने आज से ट्वीटर के माध्यम से लगातार सरकार को सुझाव देना शुरू कर दिया है।" अध्यक्ष ने मुद्दे को और अस्पष्ट कर दिया।

"पर रामघाट तीरे पर इन लोगों ने गजब की नौटंकी पसार दी है! दुनिया-जहान के सारे मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर-गुरुद्वारा में पूजा-प्रसाद बंद है, पर रामघाट तीरे अभी भी मानस पाठ कोरोना से टक्कर ले रहा है? अगर भगवान ही सब कष्ट हर लेंगे फिर इतने सारे डॉक्टर-कंपौनडर की क्या जरूरत है! इस पर हमें कुछ तो बोलना चाहिए।"

"देखो भाई, मानस पाठ आस्था का सवाल है, हमें बात का बतंगड़ नहीं बनाना चाहिए; यदि सरकार को लगता है रामजी की वंदना से कोरोना भाग जाएगा फिर तो प्रभु राम की कृपा का इंतेजार करने में क्या बुराई है?"

"फिर ग्राउंड लेवल में हम वर्कर्स का क्या रोल रहेगा? जनता के बीच हम लोग पार्टी को किस रूप में प्रस्तुत करें!" जमील अहमद स्पष्टवादी नेता हैं ग्रामीण क्षेत्र में, सो असंतोष व्यक्त करने के अंदाज में पूछा।

"जाहिर-सी बात है हम लोग लॉकडाउन की लाभ-हानि का अपने हिसाब से साप्ताहिक आकलन करते रहेंगे; और उसी हिसाब से जनता के बीच सरकार को कटघरे में खड़ा करते रहेंगे! इसके लिए हम अपने गांधी व्हाट्सएप ग्रुप में आप सभी के लिए मैसेज छोड़ते रहेंगे।" फिर अराजकतापूर्ण हँसी के साथ फुलझड़ी-सा छोड़ते हुए बोलते गए, "हमारी पार्टी भी उसी रास्ते पर चलेगी! जैसे को तैसा! लॉकडाउन से फायदा दिखेगा तो लॉकडाउन के समर्थन में बोलेंगे; और यदि फायदा कम, नुकसान ज्यादा महसूस होगा तो! तो सरकार की नाकामी की डुगडुगी बजाने के लिए तैयार रहिए..." अध्यक्ष अंतिम बात रख ही रहे थे कि नौकर ने अंदर आकर बताया, "सर, इंस्पेक्टर कोतवाली आए हुए हैं; कह रहे हैं एक घंटे से ऊपर हो गए, इतने सारे लोग अभी तक जमे हैं।" अध्यक्ष ने आसन छोड़ते हुए कहा, "यह वाला इंस्पेक्टर तो अपना आदमी है, शुभचिंतक है; असल में खछड़ा तो निशांत कुमार है!"

"तो आज की वार्ता खत्म समझी जाए?" शहर अध्यक्ष ने व्यंगभरे अंदाज में कहा, जिला अध्यक्ष से अपनी पुरानी प्रतिद्वंद्विता का आभास देते हुए।

"हां-हां, आज के लिए इतना ही काफी है; जरूरत पड़ी तो पंद्रह दिन में ऐसे ही बैठ लिया करेंगे।" कहकर उसने सभी को पीछे वाले रास्ते से निकलने का संकेत किया, जैसा कि अभी तक आदत में नहीं आने के कारण काफी लोग बगैर मास्क के ही आ गए थे।

"शहर में इतनी सख्ती चल रही है, यदि आप फिर से पंद्रह दिन में बैठक बुलाएंगे आना तो बड़ा मुश्किल होगा।" जमील अहमद ने स्पष्ट कर दिया।

"अरे जनाब जमील! एक बात बताओ, शहर में सख्ती है पर लोगबाग किस चौक-चौराहे-गली में नहीं दिख रहे हैं?" अध्यक्ष ने खिन्नता जाहिर की; फिर सुलहनामा वाले अंदाज में बोलते हुए बाहर की ओर बढ़ गए, "पुलिस तो चौक-चौराहे पर लाठी फटकारकर अपनी मुस्तैदी दिखा भर रही है, जनता तो दूध-पानी-दवाई, मरनी-हरनी के नाम पर निकल ही लेती है!"

9

पार्टी के जिला अध्यक्ष हरेन्द्र ठाकुर को कोई शक नहीं रह गया था, जनता कर्फ्यू और अब लॉकडाउन से जनता के बीच पार्टी का ग्राफ और ऊपर चढ़ा है। राष्ट्र के नाम प्रधानमंत्री के दो-दो संबोधन के बाद पार्टी काडर का उत्साह सातवें आसमान पर था। पार्टी के राष्ट्रीय नेताओं द्वारा लगातार न्यूज चैनलों में कोरोना को पछाड़ने हेतु उठाए गए कदमों की जानकारी दी जा रही थी। पार्टी मुख्यालय द्वारा देशभर में पार्टी पदाधिकारियों को हिदायत दी गई थी, कोरोना सिर्फ महामारी नहीं पार्टी के लिए एक बड़ा अवसर भी है! संकेत भी किया गया था, कोरोना से पार तो पा ही लिया जाएगा, इसे एक अभूतपूर्व उपलब्धि के तौर पर प्रचारित करने की रूपरेखा बना ली जाए। परसों कलेक्टर की अध्यक्षता में शांति समिति की बैठक में भी कोरोना पर सरकार की कारगर रणनीति को मंत्रीजी ने सभी के सामने रख ही दिया था। ऐसे में सोशल डिस्टेंसिंग के दिनों में जिला कार्यकारिणी की बैठक बुलाना वे जरूरी नहीं समझते थे; वह भी कोरोना के सिंगल एजेंडे पर।

अभी-अभी मिली सूचना से उसका माथा ठनका; पुरानी पार्टी की गुप्त बैठक वाली बात ने उसे परेशान कर दिया। वह तो भला हो नरोत्तम हरि का जो अपनी पार्टी के अध्यक्ष से बैर पालते रहते हैं; उसी की बदौलत तो पुरानी पार्टी की अंदरूनी रणनीति की जानकारी उसके पास पहुंचती रहती है। जिला से लेकर मुख्यालय तक सभी को पता है, पिछले विधानसभा चुनाव में जिले की नौ में से सहयोगियों समेत छह विधानसभा सीटों पर जीत हासिल करने में अध्यक्ष की रणनीति और मेहनत की मुख्य भूमिका थी। सब कुछ ऐसे ही पटरी पर दौड़ता रहा तो अगले लोकसभा चुनाव में उसका संसद-प्रवेश असंदिग्ध है। ऐसे में वह कहीं चूकना नहीं चाहते थे। तुरंत ही पार्टी जिला कार्यकारिणी ग्रुप में मैसेज सेंट कर दिया... 'अपराह्न चार बजे कोरोना और सोशल डिस्टेंसिंग मामले में पार्टी कार्यालय में चर्चा रखी गई है...' 'पार्टी कार्यालय' टाइप करते वक्त उसका सीना चौड़ा हो गया था, हम कोई मुंह-छिपा पार्टी हैं क्या, जो घर के तहखाने में बैठक करेंगे, चोर जैसा! उसने कलेक्टर और एसपी को भी वही मैसेज फॉरवर्ड कर दिया; साथ में छोटा-सा टैग लगाकर...पार्टी के पदाधिकारीगण भी जिले में कोरोना वारियर्स जैसा हैं...

"अल्प सूचना पर बैठक आहूत करने और कोरोना-काल में आप सभी को कष्ट देने के लिए क्षमा चाहता हूं।" सभागार के बीच वाली कुर्सी में

विराजते ही पार्टी अध्यक्ष ने कहा, कार्यकारिणी सदस्यों पर सरसरी निगाह डालते हुए। बाईस लोगों की बैठक के लिए ऊपर वाला मिनी कांफ्रेंस उपयुक्त था, बावजूद उसने नीचे के वृहद 'मंथन' सभागार में ही बैठना पसंद किया था; विचारों का प्रवाह फिर प्रभाव बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है! गोलमेज के दोनों तरफ बैठे पार्टी पदाधिकारियों पर नजर डालने के बाद आगे कहना शुरू किया, "कोरोना के इस धैर्यपूर्ण समय में आप सभी का स्वागत है मंथन सभागार में; लॉकडाउन में बैठक करने से हमें बचना चाहिए, पर चूंकि लॉकडाउन को लागू कराने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर भी है, इसलिए सोशल डिस्टेंसिंग के साथ छोटी-मोटी बैठक करना हमारा दायित्व बनता है।" सफाई देने की मुद्रा में शुरू हुई बात शान से खत्म की; आगे अपनी सहज शैली में बोलते गए, "आप सभी असमंजस में होंगे कि अचानक इस बैठक की क्या जरूरत पड़ी! तो मैं संक्षेप में बताना चाहता हूं, पार्टी प्रेसिडेंट वाले ग्रुप में पार्टी मुख्यालय से मुझे दिन में दो बार मैसेज मिलता रहता है; हर जिला अध्यक्ष को निर्देश है प्रतिदिन शाम को जिले में जनता की मनोदशा का आकलन कर चार लाइन की रिपोर्ट सेंट करें, सो तो मैं कर ही रहा हूं; पार्टी मुख्यालय से जो जरूरी निर्देश मिलते हैं वह भी आप सभी को बताना जरूरी है, ताकि हम सभी जनता में कोरोना की चर्चा को पार्टी लाइन में ही रखें!" इतना बोलकर उसने लंबी सांस ली, फिर सभी की ओर देखकर पूछा, "सरकार द्वारा कोरोना से निपटने के लिए अब तक किए गए उपायों के बारे में जनता का क्या मिजाज है? आपलोगों का आकलन क्या कह रहा है?" बोलकर उसकी आंखें जैसे सभागार के बीच में टंग गईं।

"मेरा सर्वे कह रहा है बाईस मार्च वाले जनता कर्फ्यू और अब लॉकडाउन से जनता में अपनी सरकार का सिक्का जम गया समझिए।"

"राष्ट्र के नेता द्वारा दो-दो बार राष्ट्र के नाम संदेश से जनता तो अब और जबरदस्त फैन हो गई है कोरोना की; कोरोना तो अब कोई समस्या रह नहीं गई है!"

"जनता कर्फ्यू के दिन पांच मिनट तक ताली-थाली-घंटा-घड़ियाल से पूरे देश ने एकजुट होकर कोरोना की ऐसी आरती उतारी है कि कोरोना अब तो ढूंढ़ने से भी ना मिले शायद!"

"कोरोना संक्रमण का चेन तो उसी जनता कर्फ्यू में छिन्न-भिन्न हो चुका है!"

"परसों रात से जितनी सख्ती से लॉकडाउन पूरे देश में लागू हुआ है उसका आनंद ही अलग है! ये कोरोना तो समझिए देश के लिए कोरोना फेस्टिवल साबित होने वाला है!"

"दुनिया माने या न माने ये सबकुछ प्रभु राम की कृपा का प्रसाद है! हम लोगों का रामघाट तीरे पाठ जारी रखने का निर्णय सटीक रहा, तभी तो कोरोना भी किनारा हो जाने में ही अपनी भलाई समझा!"

"लेकिन देश-परदेश में कारोबार बंद होने से कुछ परेशानी हो सकती है जनता को, जो बाद में पार्टी के लिए समस्याएं खड़ी कर सकती है।"

"..."

"..."

एक-एक करके सभी गद्‌गद होकर अपने मन की उमंग बाहर आने दे रहे थे। लॉकडाउन के दिनों में मीटिंग को लंबा खींचना विवाद पैदा कर सकता था शहर में; अध्यक्ष ने हथेली उठाकर 'हो गया, हो गया, समझ गया, समझ गया' का संकेत किया। सभागार में शांति छा गई। कुर्सी में दोबारा बैठने-सा शरीर-संयोजन करते हुए अध्यक्ष बोले, ऊंची उड़ान देते आत्मविश्वास को भरसक नियंत्रित करते हुए, "मैं सीधे पते की बात बताता हूं; इस कोरोना-कथा को हमें अमर बना देना है! कथा को ऐसा बना देना है कि देश के अंदर की बाकी सारी कथाएं-उपकथाएं गौन हो जाएं!" बोलने के बाद अध्यक्ष के होंठों पर मुस्कान चिपक गई, फिर कहा, "बच्चा-बच्चा को पता है कोरोना एक भयंकर बीमारी है, लेकिन सरकार ने अपनी सूझ-बूझ और ताबड़तोड़ फैसले से इसे फैलने नहीं दिया!"

"यह तो सच्चाई है।"

"बस, सच्चाई ही तो प्रचारित करना है हमें जनता में!" अध्यक्ष ने सबको ललकारते हुए कहा, फिर आगे बोले, "अब हमें ज्यादा भाषण देने की जरूरत नहीं है, ज्यादा गुड़ गोबर बन सकता है!"

"तो हमारा सूत्र-वाक्य क्या होना चाहिए?"

"यही कि लॉकडाउन जैसा ब्रह्मास्त्र सही समय पर इस्तेमाल करके हमारी सरकार ने लाखों लोगों को मरने से बचा लिया है!" बोलने के बाद अध्यक्ष के होंठों में शांतिदायिनी मुस्कान थी, चेहरे में कुछ अजूबा हो जाने का विस्मय। मुस्कान और विस्मय में किसका पलड़ा भारी था, अलग-अलग बताना मुश्किल था।

...जय माँ भारती...जय माँ भारती...वंदे मातरम-वंदे मातरम...पूरा सभागार नारों से गूंज उठा।

"शांत, शांत! लॉकडाउन है! आप सभी से विनम्र निवेदन है सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए जैसे आए थे वैसे ही एक-एक करके निकल लें, सीधे घर के लिए! अदरवाइज कोरोना खतरनाक वायरस है, भूलिए मत!" कहकर वह खुद ही ठठाकर हँस पड़े। जाते हुए पदाधिकारियों ने भी पीछे की तरफ हाथ हिलाकर संकेत-सा करते गए, कि आप भी अपना ख्याल रखें।

10

राम झाला के गोदाम के आगे भीड़ बढ़ती ही जा रही थी; जैसे लॉकडाउन की अर्थी निकल रही हो! फटेहाल लोगों की भीड़; शोरगुल के बीच-बीच में नारेबाजी करते हुए...भूखे को गेहूं दो गेहूं दो! ...चावल दो चावल दो! ...चना दो चना दो! धीमी पुकार में शुरू हुई नारेबाजी धीरे-धीरे गगनभेदी नारों में बदलती गई। भीड़ की रंगत देखकर लगा जैसे गोदाम का दरवाजा अब टूटा कि तब टूटा! आसपास के लोग सकते में आ गए, राम झाला जैसे प्रभुत्वपूर्ण पुरुष के कारोबार पर हमला करने की हिम्मत कोई कैसे कर सकता है! वे तो एसपी साहब के खासम-खास हैं; बस एक कॉल जाने की देरी भर है, पुलिस वाले इन भिखमंगों की ऐसी की तैसी कर दें! आखिर वह पार्टी के करीबी आदमी किस दिन के लिए हैं; मोटा चंदा क्या इसी दिन के लिए दे रहे हैं कि उपद्रवी किस्म के लोग धावा बोलकर उसका गोदाम लूट लें!

राम झाला जी का गोदाम था, पुलिस को पहुंचते देर नहीं लगी। बस्ती एरिया की भीड़ थी, पुलिस को पहचानते देर नहीं लगी। भीड़ को चीरते हुए पुलिस वाले गोदाम के बरामदे पर चढ़ गए; "कृपया शांति बनाए रखिए!" दो स्टार वाले दरोगा की ऊंची आवाज थी। भीड़ में भुनभुनाहट के साथ शांति की चादर-सी बिछने लगी, ऊपर से नीचे जमीन की तरफ पसरती हुई।

"आज लॉकडाउन का पांचवां दिन है, चौदह अप्रैल तक घरों में ही रहना है; आप लोगों का यहां इकट्ठा होना महामारी एक्ट के खिलाफ है, यदि बात ऊपर पहुंच गई तो आप पर, हम सभी पर, आफत आ जाएगी!" दरोगा ने हाथ जोड़ने जैसा करते हुए कहा।

"...हमारे घरों में रोटी-पानी का अब कोई जुगाड़ नहीं बचा है, ...हम चाहते हैं बात ऊपर पहुंचे!"

"...मैं तो ठहरा मजदूर, दिन का कमाता हूं तो रात को खाता हूं; पांच दिन काट लिया जैसे-तैसे, अब एक दाना नहीं है घर में!"

"...मैं रिक्शा चलाकर परिवार चलाता हूं, दो दिन से घर में चूल्हा नहीं जला है..."

"...मैं पटेल मार्केट में भाजी का ठेला लगाता हूं, अब तो भूखे मरने की नौबत आ गई है..." "आप लोगों को राशन की दुकानों से चावल-गेहूं तो मिल रहा होगा!" दरोगा ने समझाने का सिलसिला शुरू किया।

"महीने का पांच-पांच किलो मिलता है, वह तो पहले ही खत्म हो चुका है!"

"आप लोग घबराइए मत, सरकार जल्द ही आप सभी के खाते में एक-एक हजार डालेगी, इसकी तो घोषणा भी हो चुकी है! आप लोग रेडियो-टीवी में समाचार नहीं देखते हो क्या?" भीड़ को शांत करने का भरसक प्रयास किया दरोगा ने।

"लोकढान का छठा दिन है आज, किसी के खाते में एक धेला तक नहीं आया है?" "अगला पांच किलो चावल-गेहूं दस दिनों के बाद ही आएगा, तब तक हमारा बाल-बच्चा भूखा मरेगा क्या?" भीड़ के बीच से आवाज आई।

"सेठजी के गोदाम में चावल-दाल-गेहूं-बाजरा सब कुछ भरे पड़े हैं; हमारे परिवार को भूखे मरने से बचाने का एक ही उपाय है इस गोदाम के द्वार हमारे लिए खोल दिए जाएं!" भीड़ से कई आवाज एक साथ आईं।

"...नहीं तो हम लोग खुद ही गोदाम के द्वार खोल लेंगेएए..." भीड़ से भड़कदार नारेबाजी उठने लगी।

"कृपया मुझे थोड़ा वक्त दीजिए, मैं एसपी साहब और डीएम साहब तक बात पहुंचाता हूं; साहेब लोग सेठजी तक बात पहुंचाएंगे, मेरा विश्वास है कुछ तो बात बनेगी।" दरोगा ने फिर हाथ जोड़ लिए; काफी देर तक जोड़े रहे।

दस बजते-बजते बात प्रेम शरण, माननीय एमपी तक पहुंच चुकी थी। बिना समय लिए उसने एसपी को हड़काया, "आप जैसा तेज-तर्रार आईपीएस के रहते रामघाट में अंधेरगर्दी मची है?" जवाब में एसपी ने उसे उकसाया, "सर आप कहें तो उन सभी को अभी हवालात में डाल देता हूं, और यदि डीएम साहब की सहमति हो तो लाठी चार्ज भी करवा सकता हूं! कोरोना को देखते हुए आंसू गैस छोड़ने या हवाई फायरिंग की तो मैं सहमति-सलाह नहीं देना चाहूंगा।" एसपी की बातों में एमपी को झोल नजर आया। सोच-विचार

कर उसने डीएम को फोन मिलाया; शुरुआत में ही नाराजगी जताई। डीएम नम्रतापूर्वक पेश आए, सच सामने रखा, "सही में आम लोगों के घरों में खाने की किल्लत होने लगी होगी," फिर समयानुकूल सलाह दी, "इस मुद्दे पर एक बार ऊपर बात कर ली जाए।" एमपी साहब असमंजस में पड़ गए; एक तरफ चुनाव के असली महारथी जनता जनार्दन थी, तो दूसरी तरफ चुनावी समर के सारथी राम झाला? उसके दिमाग में बिजली-सी कौंध गई '...बस्ती जैसे हालात सिर्फ रामघाट में ही नहीं देश के हर कोने में होंगे?' मन में स्व-वार्ता-सी हुई, '...फिर तो पार्टी फोरम में चर्चा करके हाईकमान तक बात पहुंचाना समय की माँग है।' ऐसी बिगड़ती स्थिति पर उसने जिला अध्यक्ष और मंथन-मंच प्रमुख काशीनाथजी से विचार-विमर्श कर लेना जरूरी समझा।

"हेलो! नमस्कार अध्यक्ष महोदय; आपके एरिया में कोरोना की क्या खबर है?" कॉल रिसीव होते ही एमपी साहब ने कहा; सबसे पहले अध्यक्ष का हाल-समाचार पूछ लेना जरूरी समझा।

'...भगवान राम की कृपा से अपना रामघाट अभी तक कोरोना से बचा हुआ है; और बताइए सर, ऐसे विकट समय में कैसे याद किया!' अध्यक्ष ने नम्रतापूर्वक कहा।

"अध्यक्षजी, बात आप तक भी पहुंच गई होगी; इस लॉकडाउन में गरीबों के घरों में खाने-पीने की किल्लत पड़ने लगी है, यदि जल्दी ही जरूरी उपाय नहीं किया गया तो हवा पार्टी के खिलाफ जाते देर नहीं लगेगी!" एमपी साहब की चेतावनी जैसी आवाज थी।

'...उस दिन डीएम की मीटिंग में भी यह बात उठी थी, हम लोगों को गंभीरतापूर्वक सोचना पड़ेगा', अध्यक्ष भी गंभीर हो उठे।

"तो ऐसा करता हूं गुरुजी को भी लाइन में लेता हूं, फिर जैसी सहमति होगी बात दिल्ली तक पहुंचाता हूं..."

"प्रणाम सर," कॉन्फ्रेंस कॉल में मंथन-मंच के प्रखर पुरुष काशीनाथजी के हैलो करते ही एमपी साहब ने अभिवादन किया, आदरपूर्वक बोलने लगे, "आप कैसे हैं! कोरोना का सीन काफी खतरनाक होता जा रहा है, अपनी उम्र को देखते हुए कृपया पूरी सतर्कता बरतें।"

"हां, कोरोना तो सबके लिए जानलेवा है, सब संभलकर रहें।" उसने सहमति जताते हुए कहा।

"गुरुदेव, बात ऐसी है गरीबों के घरों में चूल्हे जलने बंद होते जा रहे हैं,

इसी मसले पर आपसे विमर्श करना है; अध्यक्षजी भी लाइन में हैं।" एमपी साहब सीधे विषय पर आना चाहते थे।

"प्रणाम सर!," अध्यक्ष की कृतज्ञतापूर्ण आवाज थी।

"राष्ट्रीय संकट की इस घड़ी में सभी को राष्ट्र के लिए खड़ा होना पड़ेगा," मंथन पुरुष ने अपनी शैली में कहा।

"सर, मेरा अनुभव कह रहा है गरीबों पर लॉकडाउन की जबरदस्त मार पड़ रही है।" एमपी साहब समाधान की ओर बढ़ना चाहते थे।

"इसका उपाय?" मंथन पुरुष संक्षिप्त ही रहे।

"सरकार के गोदाम में पड़े चावल-गेहूं-चना गरीबों में मुक्त-हस्त बंटने चाहिए।" एमपी साहब दयावान हो उठे।

"वह तो सालों से बंट रही है।" मंथन पुरुष कम ही बोला करते थे।

"अभी तक तो महीने में प्रति परिवार पांच-पांच दस-दस किलो ही बंटता आ रहा है; पर अब तो सभी जनता घरों में कैद है, दिहाड़ी मजदूरी, रोजगार, कारोबार सब बंद हैं! ऐसे हालात में महीनेभर का अनाज मुफ्त मिलना चाहिए जरूरतमंदों को?" एमपी ने जनता की बात रखी।

"और सभी परिवारों को कुछ नगदी भी मिलनी चाहिए?" गरीब परिवारों की जरूरत समझते हुए अध्यक्ष ने जोड़ा।

"आप दोनों का सुझाव स्वागत योग्य है; लेकिन महीनेभर का मुफ्त अनाज देने से देश का अनाज भंडार खाली होगा और नगदी बंटने से मुद्रा भंडार खत्म!" मंथन पुरुष काशीनाथजी ने असहमति के स्वर में कहा।

"मेरी राय में देश का विशाल अनाज भंडार और मजबूत मुद्रा कोष है; आखिर है किस दिन के लिए?" अध्यक्ष ने असंतोष जताते हुए कहा।

"विशाल अनाज भंडार और मजबूत मुद्रा कोष से ही तो देश शक्तिशाली दिखता है; और सरकार सीना ताने खड़ी रहती है! इन दोनों के खाली होने से देश और सरकार की छवि पर बुरा प्रभाव पड़ेगा, देश में भी और विदेश में भी।" विचार पुरुष अपनी धारणा से डिगे नहीं।

"लेकिन सर, यदि इस वक्त गरीबों को मुफ्त अनाज नहीं दिया गया तो सरकारी और निजी दोनों प्रकार के गोदामों में भूखी-नंगी जनता हमला कर सकती है!" एमपी साहब ने हकीकत से रूबरू कराया।

"और गरीब परिवारों की जेब में यदि इस वक्त हजार-पांच सौ नहीं होगा तो उनके परिवार के लोग क्रांति के नाम पर कभी भी सड़कों पर आ

जाएंगे!" अध्यक्ष ने अंदेशा जताया।

"सार्वकालिक रूप से मेरी धारणा सही है और समय के अनुरूप आप दोनों भी सही हैं!" प्रखर पुरुष शिखर से नीचे आते दिखे।

"तो फिर हमें क्या करना चाहिए?" दोनों ने एक साथ पूछा।

"समय के अनुकूल चलने में ही बुद्धिमानी है, अन्यथा समय हमें सत्ता से बाहर कर देगा।" मन-मंथन करने में देर नहीं की काशीनाथजी ने।

"तो गुरुदेव आप मुख्यालय के विचार पुरुषों को जमीनी वास्तविकता से अवगत करा दें।" एमपी साहब ने अनुरोध किया।

"हां मैं अभी ही बात कर लेता हूं, आप भी संसदीय दल के माध्यम से शीर्ष स्तर पर बात पहुंचा दें, और अध्यक्षजी आप अपने स्तर से पार्टी मुख्यालय से वार्ता कर लें; जय भारती! कृपया संपर्क में रहेंगे, क्योंकि कोरोना का कुछ कहा नहीं जा सकता है, कब कहां किस पर झपट्टा मार दे!" काशीनाथजी ने सबकुछ झटपट निपटा डाला।

रामझाला के लिए डीएम की पहल और एसपी की मशक्कत रंग लाई; ग्यारह बजते-बजते भीड़ अपने-अपने दड़बे में समा चुकी थी। बच गया था तो सिर्फ भिमरवा, अकेला; हाथ में सौ ग्राम का कटोरा लेकर बस्ती की ओर मुंह करके गुहार-सी लगाते हुए...प्रजा-पथिक-पंछी-पेट-पागल-पंगु...

11

कोरोना से पहले कोरोना-कथा अपना पंजा फैलाती जा रही थी; मोबाइल-मुख से निकलकर यह घरों के दरवाजों-खिड़कियों-कुर्सियों-कपड़ों-रसोई के हरेक बर्तनों पर जा चिपकी थी। बाहर से आते दूध-सब्जी पर तो यह इस कदर चिपका होता कि लोगबाग खुली आंखों से ही खोजने लगते। अलग-अलग सतह पर कोरोना की अलग-अलग कालावधि वाली आयु के क्लिप की मोबाइल में बहार आ गई थी। तद्नुसार अलग-अलग चीजों को देखने-परखने के दौरान आंखों की गोलाई स्वत: घटने-बढ़ने लगी थी। संक्षेप में कहें तो लोगों की आंखों का कार्यभार बढ़ गया था, एकाएक। कथा यहीं आकर नहीं रुकी थी; पश्चिमी देशों से आ रही खबरों-खोजों से, कि कोरोना हवा में भी तैर सकता है, लोगों ने कम सांस से काम चलाने का अभ्यास आरंभ कर दिया था।

अटकलबाजी भरे ऐसे समय में करने को कुछ न सूझ रहा था सहज

को। 25 मार्च वाली कलेक्टर की मीटिंग से लौटते ही उसे अटपटा लगा था; लॉकडाउन के समय हॉल में बैठकर इस तरह मीटिंग करना उसे कोरोना प्रोटोकॉल के खिलाफ जान पड़ा। उसके मन में आइडिया आया, क्यों न वर्चुअल मीटिंग आजमाई जाए! विचार आते ही उसी दिन पहला वीडियो कॉन्फ्रेंस कर भी डाला। शायनी, मंजरी, परवेज, दिनेश, मनोज, अहम, सुरेश फटाफट जुड़ भी गए थे वीसी में, बाद में रॉबर्ट भी। दिन-रात साथ रहने वाले साथियों को मोबाइल स्क्रीन में एक साथ सजीव देखकर कोई भी अपनी हँसी रोक ना पाया था तब। बाहर तेज हवा के साथ ओले गिर रहे थे; वीसी में दिख रहे सभी के चेहरों से श्वेत ओले के साम्य हँसी झरती रही। सहज को रामू के बिना हास-परिहास वाली वीसी अधूरी लगी। रामू को पासवर्ड भेजा गया, पर वह कनेक्ट नहीं हो पा रहा था। उसने मैसेज किया दिल्ली में अफरा-तफरी का माहौल है, जहां वह रहता है अब वहां रहने लायक नहीं है। पहली वीसी में ही शायनी के प्रस्ताव पर सबने उमंगपूर्ण सहमति दी, रामघाट को कोरोना से मुक्त रखने के लिए कोरोना-कैबिनेट के रूप में सभी सदस्य जमीनी कार्य करेंगे। सभी ने अफसोस भी जताया, देश में कोरोना के तीव्र प्रवेश को रोकने का उन सभी का सपना स्वप्न बनकर ही टूट गया। सभी ने हमेशा अग्रसोची बने रहने का संकल्प लिया। तय हुआ, अब रामघाट में कोरोना ना फैल पाए इस पर जमीनी स्तर पर कार्य किया जाए। कार्य योजना कुछ यूं तय की गई; कोरोना-कैबिनेट का कार्यकारी स्वरूप कोरोना-मंडली के रूप में शहर की गली-गली में बचाव के बारे में लोगों के बीच जन जागरूकता फैलाएगी, जिला अस्पताल को जरूरत के हिसाब से वॉलिंटियर्स उपलब्ध कराया जाएगा, पुलिस विभाग द्वारा लॉकडाउन लागू कराने के लिए चौक-चौराहों पर भी वॉलिंटियर्स उपलब्ध रहेगा; और आगे कलेक्टर साहब जब भी जरूरत समझें मंडली को आदेश दे सकते हैं।

तय एजेंडे के हिसाब से सहज और शायनी ने कलेक्टर साहब से समय माँगा विचार-विमर्श के लिए। कोरोना-मंडली की पूरी रूपरेखा मोबाइल में सुनने के बाद कलेक्टर ने कहा, 'इसके लिए यहां आने की जरूरत नहीं है।' यह भी कहा–मंडली की बेरोकटोक आवाजाही के लिए वे पचास पास भिजवा देंगे। कल शाम तक पच्चीस पास हंसामल जी के सर्वज्ञात बंगला 'हिंद लोक' पर पहुंच भी गए थे। नाम के आगे खाली जगह में सहज ने फटाफट ज्ञात बारह साथियों के नाम डाल दिए। बिना देर किए गले में

लटकाने जैसा बना डाला। आज वाली दूसरी वीसी में तय हुआ गांधी मार्ग के पूर्व वाले मोहल्लों में स्पीकर बैनर के साथ जन-जागरण अभियान चलाया जाए, हर पांच घर के बाद एक घर में एक-दो मिनट का समय दिया जाए! आगे रास्ते में पड़ने वाले जिला अस्पताल में सीएमओ साहब को वॉलिंटियर्स का ऑफर दे दिया जाए। फिर लौटते में घंटाघर पर थाना कोतवाली के इंस्पेक्टर साहब से भी मिलकर अपनी कार्ययोजना साझा कर ली जाए।

सुबह नौ बजे कोरोना-मंडली गांधी चौक पर जमा हुई। रामू के दूरभाषी निर्देश पर कई नवयुवक साथीगण गांधी चौक पर आ धमके, दिनेश-सुरेश-मनोज की अगुवाई में। सहज ने तुरंत पास में नाम लिखकर उनके गले में डालकर उन सभी को मंडली में शामिल कर लिया। गांधी चौक से मंडली ने सबसे पहले रामबाग मोहल्ले में प्रवेश किया। मार्च की दोस्ताना धूप में भी गलियां वीरान पड़ी थीं जैसे सदियों का सन्नाटा पसरा हो! इक्के-दुक्के घरों की बालकनी में लोग साहस जुटाकर खड़े नजर आ रहे थे।

...बचाव ही कोरोना का उपचार है...लाउडस्पीकर में मंजरी की आवाज गूंज उठी। उद्घोषणा का विद्युत गति से असर होता दिखा; गलियों में सुबह का दाना चुग रही चिड़ियां फरफराकर उड़ गईं। घरों के दरवाजे खुलने लगे। पुरुष लोग दरवाजे के बाहर खड़े होने लगे, औरत-बच्चे पर्दे की आड़ से उम्मीदभरी नजरों से झांकने लगे; चलो अब चिंता की बात नहीं है, म्युनिसपैलिटी की कोरोना मारने वाली टीम आ गई है!

...हर वक्त सामाजिक दूरी का पालन करें, एक-दूसरे से तीन फीट की दूरी बनाए रखें...मंजरी की असरदार आवाज पूरी गली में तैर गई। सामने दो मंजिले पर दस दिन पहले ब्याह कर आई सिन्हा साहब की बहू अपने पतिदेव की तरफ देखकर उसकी प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगी।

...जब भी बाहर से आवें अपने हाथों को बीस सेकंड तक साबुन से धोएं...अब शायनी की मधुर आवाज तरंग जैसी फैलती गई! गली के कॉर्नर में रहने वाले मेहताजी बुदबुदाए, 'हाथ धोने के इंतजार में कब से दरवाजे पर खड़े हैं भई, पहले तो दो दिन में टंकी खाली होता था, अब तो हर दिन, रात को ही खाली; म्युनिसपलिटी सप्लाई आए तब तो!'

...घर में या घर से बाहर कोई भी नई चीज छुएं तो तुरंत पूरी हथेली-पंजे में सैनिटाइजर मलें...शायनी की आवाज में गंभीर किस्म की अपील थी। बाईं गली में चौथे घर के चबूतरे पर बैठे बुजुर्ग शर्मा जी बोले, 'अरे भई, बच्चे

लोगों को बोलो बाहर जाते ही क्यों हो?' पर उनकी आवाज स्पीकर के शोर में दब गई।

...घर के दरवाजे-कुंडी को दिन में दो-तीन बार डिसइनफेक्ट करते रहें... कबाड़ी वाले के बुलावे जैसी परवेज की आवाज थी; पूरी गली में टकराकर दाएं-बाएं की गलियों में भी फैलती गई। गली के छोर में रहने वाले हकीम कुर्बान अली से रहा न गया, 'बाकी लोग तो डिसइनफेक्ट कर लेंगे बेटा, लेकिन हम गरीबों का क्या होगा।' मंडली ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी; अहम ने पहले ही निर्देश दे रखा था, पब्लिक के किसी भी सुझाव या उकसावे पर फौरन प्रतिक्रिया नहीं देनी।

...बिना मास्क लगाए घर से बाहर ना निकलें...परवेज ने आवाज में डर जैसी थरथराहट डाल दी थी। साईं मंदिर के किनारे वाले घर से मंडल जी बड़बड़ा उठे, 'सब मास्क लगाने लगेंगे तो कोई किसी को पहचानेगा कैसे? गुंडागर्दी-आवारागर्दी बढ़ेगी नहीं क्या!'

...सर्दी-जुकाम-बुखार होने पर जिला हेल्पलाइन नंबर 18000180 पर तुरंत सूचना दें...अहम ने 'सूचना' शब्द पर कुछ ज्यादा ही जोर दिया, ताकि लोगों को लगे कि सरकार ने उन्हें मरने के लिए छोड़ नहीं दिया है। पांचवीं गली में रहनेवाले झा जी झल्ला उठे, 'बुड़बक कहीं का! दो दिन से हेल्पलाइन नंबर डायल कर रहा हूं, सिर्फ कंप्यूटर वाली लड़की बोलती रहती है एक दबाएं, दो दबाएं, तीन दबाएं! तेरी माँ की...' झा जी की झल्लाहट देखकर मंडली की रफ्तार थोड़ी तेज हो गई।

...कोरोना से मरने का नहीं उसे मारने का... भागने का नहीं, कोरोना को भगाने का ...अचानक रॉबर्ट की आवाज गूंज उठी; हमेशा की तरह सामूहिक कार्यक्रम में वह कहीं से हांफते हुए आ धमका था, उसका प्यारा-सा उच्चारण सुनकर सभी के चेहरे खिल उठे।

बारी-बारी से सहज, सुरेश, मनोज, दिनेश की आवाज में उद्घोषणा होती गई; अलग-अलग प्रभाव उत्पन्न करनेवाली आवाज! कोरोना-मंडली का कारवां बढ़ता गया। हां, बीच-बीच में रामघाट तीरे से आती मानस पाठ वाली आवाज...खल बध रत सुरमुनि सुखदाता...कोरोना उद्घोषणा की आवाज से टकराकर लौट जाने-सी प्रतीत होती थी। दूर की आवाज में भौतिक विज्ञान के नियम लागू होते हैं, भगवान के नहीं; शायद इसलिए।

जिला अस्पताल चौराहे पर आकर मंडली के उद्घोषणा कार्यक्रम ने विराम

पाया। सभी के चेहरे में उगीं थकान की रेखाएं अनुभूत प्रसन्नता की मुस्कान से दबी पड़ी थीं। अस्पताल चौराहे पर रहने वाले हंसामल जी के मित्र कामता काले के घर से पानी और गर्म चाय के साथ ही मंडली का जोश फिर से पुनर्जीवित हो उठा। तय कार्यक्रम के अनुसार मंडली अब जिला अस्पताल की ओर बढ़ चली।

जिला अस्पताल के अंदर का दृश्य देखकर कोरोना-मंडली तो जैसे सकपका गई। पहली नजर में ही उन लोगों को लगा मंडली का अब औचित्य ही क्या है! रिसेप्शन, ओपीडी से लेकर अंदर वार्ड तक नर्सिंग स्टाफ अपनी-अपनी ड्यूटी में मुस्तैद थे; चेहरे में मास्क लगाए, हाथों में ग्लव्स फंसाए तो बालों में हेड कवर सजाए। वार्ड में पीपीई किट के अंदर समाए वार्ड बॉय लग रहे थे जैसे कोई रोबोट हों; तनकर खड़े, कोरोना के प्रथम आक्रमण को असफल करने के लिए बिल्कुल हाई अलर्ट पर!

अंदर आते ही शायनी ने मंडली के आने की खबर सीएमओ के चेंबर में भिजवा दी। बिना देरी के ही मंडली को सोशल डिस्टेंसिंग के साथ अंदर जाने का संकेत हुआ। डॉ. प्रकाश पारखी, एमडी नेम प्लेट लगे चेंबर के अंदर वे एक-एक करके दाखिल होते गए। अंदर बड़े टेबल के बीच वाली कुर्सी में हाई क्वालिटी का मास्क लगाकर बैठे सज्जन ही सीएमओ होंगे; सोचकर मंडली के सदस्यों ने उनका सम्मानपूर्वक अभिवादन किया। आंखों की भाषा में उसने सभी को दूर-दूर लगी कुर्सियों में बैठने का संकेत किया। उसके द्वारा आंखों के संचालन के तरीके से शायनी को याद आया, हां यही तो सीएमओ साहब हैं; उस दिन कलेक्टर की मीटिंग में मंत्रीजी के कान में फुसफुसा रहे थे!

"तो करोना-मंडली कितना कारगर रहा है अभी तक!" मास्क के अंदर से भी सीएमओ की सम्मोहक आवाज निकली थी।

"आज पहला दिन था; रामबाग, शेखो वाली, हिंद कॉलोनी और रामा हाता में जन-जागरूकता का कार्य संपन्न हुआ है।" परवेज ने संक्षिप्त में बताया; फिर मास्क ठीक करते हुए बोलना चाह रहा था कि डॉक्टर पारखी ने टोक दिया, "प्लीज डोंट टच योर मास्क, नेवर!"

"सो सॉरी!" बोलते हुए परवेज के होंठों पर झेंप वाली मुस्कान फैल गई; फिर बोलता गया, "कल दुर्गाबाड़ी, पठान चौक, गजनी चौक, लूई बाजार वाला एरिया कवर करना है।"

"और फिर आगे हर दिन चार-पांच मुहल्लों को टेकअप करते रहेंगे।" सहज ने परवेज की मंद गति को रफ्तार दी।

"ओके! दैट्स नाइस!" शाबाशी देने के अंदाज में बोलते हुए सीएमओ ने सिर हिलाया, फिर कहा, "कोरोना का रियल सॉल्यूसन तो अवेयरनेस है, हॉस्पिटल या डॉक्टर क्या करेगा? गांधीजी के तीन बंदर जैसे ही मेरे तीन बिंदु हैं, सोशल डिस्टेंसिंग, सैनिटाइजिंग एंड इंप्रूविंग यॉर बॉडी इम्यूनिटी!"

"सर हमारी टीम इसी फॉर्मेट में जन जागरूकता अभियान चला रही है।" वार्ता के खुशनुमा माहौल को आगे बढ़ाने के लिए मंजरी बोली।

"हमारी कोरोना-मंडली आपकी सेवा में हाजिर है सर; हमें बता दीजिए हम कहां, किस प्रकार से आपकी सहायता कर सकते हैं।" सहज काम की बात पर आना चाह रहा था।

"थैंक्स फॉर योर कोऑपरेशन; अदरवाइज हमारी पूरी मेडिकल टीम बिल्कुल रेडी है वायरस से निपटने के लिए," फिर उसने बाहर की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा, "आपने रिसेप्शन से लेकर वार्ड तक देखा होगा, हर कोई कोरोना प्रोटोकॉल के हिसाब से ड्यूटीफुल है!"

"हां सर, सभी स्टाफ इस तरह डटे हैं कि कोरोना को भारी पड़ेगा रामघाट आना!" अहम ने कहा तो डॉक्टर पारखी समझ नहीं पाए, कहने का आखिर आशय क्या है! पलभर की चुप्पी के बाद अहम ने कहा, "वार्ड में नर्सिंग स्टाफ को पीपीई किट पहनाकर हाई अलर्ट पर रखा गया है!"

"यस माय डियर, वायरस इंफेक्टेड पेसेंट समय बताकर तो आएगा नहीं! जब भी कोई केस आएगा फर्स्ट हैंड वाले को तो पीपीई किट में ही होना पड़ेगा न!" तेजी से कहा उसने, फिर मुद्दे पर लौटते हुए धीरे-धीरे बोलना शुरू किया, "एज षच हमें अभी वॉलिंटियर्स की जरूरत है नहीं, हमारे पास सफिशिएंट नर्सिंग स्टाफ है जो पूरे रामघाट को संभालने के लिए काफी है! वैसे जिला अस्पताल के अलावा शहर में और ग्रामीण क्षेत्रों में हमारे कुल पंद्रह पब्लिक हेल्थ सेंटर और दो रेफरल अस्पताल भी हैं; कुल मिलाकर आज की डेट में हम कोरोना पर भारी हैं!" बात समाप्त करते हुए सीएमओ की गर्दन तन गई।

"लेकिन सर! परसों कलेक्टर की मीटिंग में आप तो मंत्रीजी को..." शायनी की बात समाप्त होने से पहले ही उसने अपने होंठों पर उंगली रख दी, फिर खुद बोलने लगे, "माय डियर यंगस्टर्स! एपिडेमिक-पेंडेमिक से

निपटने का फर्स्ट प्रोटोकॉल क्या होता है? पब्लिक में अपने-आपको कम्पीटेंट बताना! और दिखाना भी, वो तो आप देख ही रहे हैं।" बोलकर वे चारों तरफ नजर डालकर निश्चिंत हो लिए, अगल-बगल अस्पताल का कोई स्टाफ है तो नहीं! फिर गुप्त-मंत्रणा भांति बोलने लगे, "चूंकि तुम सभी बच्चे भी कोरोना कार्य में ही लगे हो, तुमसे क्या छुपाना! इनफेक्ट दिस हॉस्पिटल रिक्वायर्स इमीडिएट सप्लाई ऑफ वेंटीलेटर फॉर एनी इमरजेंसी इफ अकर्ड शो फॉर क्रिटिकल कोरोना पेशेंट; डु यू अंडरस्टैंड! रामघाट की क्या बिसात, पूरे प्रदेश में इस वक्त मात्र दस वेंटिलेटर हैं! मैं पूछता हूं व्हाट विल बि आवर मेन चेलेंज? यही न जब कोई कोरोना पेशेंट क्रिटिकल कंडीसन में चला जाएगा उसे वेंटिलेटर सपोर्ट देना, शो दैट हि कुड गेट रिकवर्ड!" देर तक बोलते रहने से उसकी आंखें बुत की पत्थर-आंखें जैसी दिखने लगीं।

"हां सर, हमारे भैया भी बता रहे थे उनमें से दो वेंटिलेटर तो सीएम हाउस में शिफ्ट हो गया है!" मंजरी बोली तो उसकी आवाज में डर समाया हुआ था, जैसे कहीं अभी उसे ही न वेंटिलेटर की जरूरत पड़ जाए।

"आई कांट शे एनीथिंग अबाउट इट, वही हाल पीपीई किट का है! सप्लायर ने दस सैंपल एडवांस में भिजवाए थे, आठ ऊपर ही अटक गए! हमारे पास मात्र दो ही आ पाए; चलो मान लिया दो शिफ्ट वाले पहन लेंगे, पर तीसरे शिफ्ट वाले को क्या कहूंगा? जा बेटा चढ़ जा सूली पर!" उनके बोलते-बोलते चेंबर का दृश्य रोंगटे खड़े कर देने जैसा हो गया। डरावनी चुप्पी को सीएमओ ने ही पुचकारा, "वेंटिलेटर तो दूर की कौड़ी है, आप अदना आईसीयू की ही बात कीजिए! क्या हालत बनी पड़ी है आईसीयू की? सालों से सरकार ने सुध ली है! और हमें उपाधि दे डाली है कोरोना वॉरियर्स की! बिना हथियार का लड़ाकू? वाह भई वाह!" इतना कहकर डॉक्टर पारखी उपहासात्मक हँसी में विलीन हो गए।

"वेंटिलेटर, आईसीयू ये सब तो सरकार के लेवल की बात है, हम लोग तो जरूरत पड़ने पर यहां रिसेप्शन में ओपीडी काउंटर में हेल्प डेस्क में हेल्प कर सकते हैं!" मंजरी ने मंडली का मकसद एक बार फिर सामने रख दिया।

"नो-नो, आवर टीम इज क्वाइट कंपीटेंट फोर सच ड्यूटीज एंड थैंक्स टू ऑल ऑफ यू!" बोलकर सीएमओ उठ खड़े हुए। संतुष्ट-असंतुष्ट कोरोना-मंडली सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए चेंबर से बाहर निकलते गए, अपने जिले में श्रेष्ठ सीएमओ होने का आत्मविश्वास लिए हुए।

अस्पताल चौक पर आकर मंडली ने आज के बचे कार्यक्रम पर विचार-विमर्श किया। तय हुआ आज ही कोतवाली थाना जाकर इंस्पेक्टर साहब को सहयोग का ऑफर दे दिया जाए। पूरे शहर में लॉकडाउन को कड़ाई से पालन कराना एक बड़ी समस्या बनकर उभरी है; हर चौक-चौराहों-मार्गों पर जगह-जगह बैरियर लगे हैं, हो न हो पुलिस विभाग को वॉलंटियर की जरूरत पड़े! बिना समय गवांए मंडली चल पड़ी घंटाघर की ओर।

आज सुबह से कोरोना-मंडली द्वारा चलाए गए अभियान की चर्चा लोकल मीडिया में दोपहर तक आने लगी थी। रामघाट का लोकल न्यूज चैनल 'रामघाट बोलता है' तो बजाप्ता उद्घोषणा करती मंडली का आधे मिनट का फुटेज भी दिखा रहा था, हर घंटे में। दोपहर को निकलने वाला चार पृष्ठीय अखबार 'दिवा रामघाट' ने तो आज के मुखपृष्ठ में पहली बार प्रधानमंत्री की जगह कोरोना-मंडली का फोटो छापा था। खबर के टाइटल से हंसामल जी की भी तारीफ होती दिख रही थी। प्रदेश के न्यूज चैनल 'हलचल हंड्रेड' ने भी आज के हाइलाइट्स में कोरोना-मंडली के सराहनीय एवं साहसिक अभियान को जगह दी थी, तभी तो गले में खूबसूरत प्लास्टिक कवर पास वाली कोरोना-मंडली जैसे ही घंटाघर चौराहे पहुंची इंस्पेक्टर कोतवाली ने मंडली की अगवानी की, खुद थाने से निकलकर। मीडिया की खबरों से बेखबर मंडली के सदस्य अचंभित थे; बड़े-बड़ों की हेकड़ी निकाल देने वाले इंस्पेक्टर दिग्गज सिंह आज उन जैसे छोकरों को रिसीव कर रहे हैं!

"कोरोना के खिलाफ लड़ाई में आप सबों का प्रयास रामघाट हमेशा याद रखेगा!" कोतवाली के छोटे लॉन में बेंच पर सभी के बैठ जाने के बाद इंस्पेक्टर ने उन सभी की दिल से प्रशंसा की।

"हम लोग अभी तक कुछ खास नहीं कर पाए हैं, बहरहाल हमारे कुछ साथियों में वह काम करने की क्षमता है जो पूरे हिंदुस्तान में याद करने जैसा होगा।" बहुत कम बोलनेवाले अहम का दर्शन यहां थाने में अचानक जाग उठा। इंस्पेक्टर की आंखें छोटी होने लगीं; वह पकड़ नहीं पा रहा था कोरोना के समय में ऐसा कौन-सा काम हो सकता है जो पूरे देश में जाना जाएगा! अहम की गंभीर चर्चा के बाद इंस्पेक्टर सजग हो उठा; सीधे मुख्य विषय पर आते हुए कहा, "तो बताइए आप लोगों के शुभ अभियान में हम क्या सहयोग कर सकते हैं?"

"आपने हमारी बात अपनी तरफ से रख दी," मंजरी मुस्कुराते हुए

मुखर हो चली, "दरअसल यही बात हम लोग आपके समक्ष रखने आए हैं। इस लॉकडाउन के समय पुलिस विभाग को हर जगह काफी मेहनत करनी पड़ रही है, अब तो हर चौक-चौराहों-सड़कों-एनएच वगैरह में पूरी सख्ती करनी पड़ रही है आपलोगों को।" फिर आवाज में और ज्यादा आत्मीयता लाते हुए बोली, "इसलिए हमारी मंडली ने तय किया है हर थाना क्षेत्र में हमारे पांच-सात साथी वॉलिंटियर्स बनकर पुलिस को सहयोग करने के लिए तैयार रहेंगे।"

"आपलोग तो पंद्रह-बीस ही दिख रहे हैं? रामघाट शहर में ही सात थाना क्षेत्र हैं!" बोलते हुए इंस्पेक्टर की आंखें विस्मयबोधक चिह्न जैसी हो चली थीं।

"अभी कलेक्टर साहब ने हमें पच्चीस पास दिया है, कल-परसों तक पचास और मिल जाएंगे; आज कोतवाली आए हैं, कल से सदर थाना, खजांची थाना, कचहरी थाना, मुफस्सिल थाना और बाकी थाने में भी जाएंगे।" सहज ने तय कार्यक्रम के अनुरूप बताया।

"आप लोग अपना कार्यक्रम चलाते रहिएगा," बोलकर इंस्पेक्टर ने होंठों को दब जाने दिया, फिर बोले, "इस प्रकार की राष्ट्रीय आपदा के समय जनता के बीच सहयोग की भावना दिखनी चाहिए, अन्यथा निराशा का माहौल बन जाता है।" आगे आंखें कटोरे में समेटे हुए बोलने लगे, "बात रही पुलिस को सहयोग करने की, तो फिलहाल हमारी टीम अभी कहीं कमजोर पड़ती नहीं दिख रही है, बाकी थानों की भी कमोबेश स्थिति अच्छी ही होगी, वैसे यदि कप्तान साहब का हुक्म होगा कि वॉलिंटियर्स को रखना है तो रखेंगे! फिलहाल ऐसा कोई प्रोटोकॉल है नहीं।"

"लेकिन सर परसों मीटिंग में कलेक्टर साहब और कप्तान साहब के सामने ही तो पब्लिक कोऑपरेशन की बात पर सहमति बनी थी।" शायनी के दिमाग में बातों का लिंक बना रहता था।

"लेकिन मैडम, वॉलिंटियर्स के लिए हमें ऊपर से कोई आदेश नहीं मिला है, न ही कप्तान साहब से और न ही पार्टी कार्यालय से।" फिर कुर्सी से उठते हुए बोले, "अब मुझे भी एक राउंड मारना होगा; होलसेल एरिया में कुछ खास सूचना मिली है! वहां से हमें रामघाट तीरे भी जाना है, रामागमन कुटीर की असुरों से रक्षा की जिम्मेदारी भी कोतवाली थाने के जिम्मे है।" बोलते-बोलते इंस्पेक्टर दिन में ही नीली-लाल बत्ती भुकभुका रही जिप्सी में जा बैठे।

"गुड आफ्टरनून सर!" सामने से तेज चाल में आते हुए रॉबर्ट ने जिप्सी के आगे खड़े होकर कहा; अभिवादन के लिए लगभग आधे झुकते हुए, सीने पर हाथ रखे।

"और क्या बात रह गई?" प्रयास के बावजूद इंस्पेक्टर का स्वर संयमित नहीं रह पाया।

"मिलकर काम करने का सर जी!" हँसमुखी रॉबर्ट ने हाथ जोड़कर कहा।

"अपन तेरे को अच्छी तरह जान लेने का जी," इंस्पेक्टर ने भी रॉबर्ट जैसा ही बोलने की नकल करते हुए कहा, साउथ इंडियन हिंदी में; आगे एकाएक गरम होकर बोला, "एणजीओ चलाना ठीक है जी बट इसकी आड़ में गड़बड़ी नहीं चलने का, अदरवाईज सेडिसन एक्ट में अंदर जाने का!" बोलते-बोलते जिप्सी आगे बढ़ चुकी थी; इंस्पेक्टर की उंगली अभी भी पीछे संकेत कर रही थी। मंडली को इंस्पेक्टर की यह बेरुखी बिल्कुल समझ में नहीं आई; कितने मित्रवत ढंग से आवभगत की और जल्दी ही चलते बने, वो भी अक्खड़पन के साथ! सभी के अंदर एक बड़ा प्रश्न मथने लगा; क्या कोरोना हमारे सिस्टम को चिड़चिड़ा बना डालेगा! डाकघर चौराहे तक आते-आते उन सभी के ख्यालों से इंस्पेक्टर की भाषा-भंगिमा उड़ चुकी थी, हवा में कहीं; दूर तक दृष्टिपात करनेवालों की नजर नजदीक में नहीं अटकती-भटकती!

दिन के आखिरी पहर में दिनभर की गतिविधियों का सभी ने आकलन किया, चौराहे पर खड़े-खड़े ही। अपने शहरवासी से नजदीक से जुड़कर सभी नौजवान अंदर से ऊर्जावान अनुभव करने लगे; खासकर सरकारी महकमों को करीब से परखने का अवसर पाकर। सबने फिर से संकल्प लिया, ऐसे चुनौतीभरे समय में वे लोग रामघाट के लिए, समाज के लिए, और इस प्रकार पूरे देश के लिए जो कुछ कर सकते हैं, करते रहेंगे, किसी भी प्रकार के स्थानीय असहयोग या हताशापूर्ण प्रतिक्रिया से विचलित हुए बगैर! अंत में आगामी एक सप्ताह के शहर भ्रमण के लिए सहज द्वारा तैयार रूट चार्ट पर सभी ने गौर किया; अपनी जानकारी के हिसाब से मंत्रणा कर अंतिम रूप दिया। परवेज के सुझाव को भी स्वीकार किया गया; प्रतिदिन नौ बजे घर से निकलने से पहले वीसी पर 'सत्यमेव जयते' बोलकर संकेत करना है, यानी सब कुछ ओके है।

12

मंडली के साथ दिनभर थक जाने के बावजूद शायनी की रात्रि-चर्या बदली नहीं थी। हर दिन रात्रि के ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे तक अपने पीसी पर कोरोना वायरस पर स्टडी करती रहती थी। कोरोना वायरस से जुड़े लेटेस्ट अपडेट पर मंथन करती, फिर उसकी पूंछ पकड़कर सिर की सवारी का सपना पालने लगती। दुनिया के सभी नामी वायरोलॉजीकल रिसर्च सेंटर के लिंक से खुद को जोड़ रखी थी; इस कदर जैसे अपनी गर्भ-नाल वायरस से जोड़ रखी हो। जोड़ ही नहीं रखी थी, कोरोना की अब तक की सारी हरकतों को मस्तिष्क में स्पंदित भी महसूस करती थी। कभी-कभी तो उसे लगता जैसे वह कोरोना वायरस के सामने बैठकर उसका साक्षात्कार ले रही हो! कोविड-19 वायरस के आरएनए और उसके प्रोटीन एनवेलप के बीच मैसेजिंग एंड ट्रांसमिशन सिस्टम को लेकर उसके मस्तिष्क में कुछ फैक्ट्स क्लिक कर गए थे। अपने वैज्ञानिक बोध की अदृश्य आंखों से उसे प्रोटीन एनवेलप के अंदर-बाहर असंगत एक्टिविटीज दिखने लगी थी; खासकर प्रोटीन एनवेलप के बाहर से कब और कैसे अंदर यूनिसेल्यूलर आरएनए में मैसेजिंग हो रहा है!

रामघाट के लोगों की आंखों में दिख रहा कोरोना का आतंक अब उसे झकझोरने लगा था। पीसी में बैठे-बैठे अपने को कोरोना के भय से आक्रांत लोगों के बीच खड़ा महसूस करती, किसी वैश्विक विवाद के पंच भांति। आज रात को पीसी के सामने कोविड से वार्ता के दौरान उसे यूनिवर्सिटी में अपने फैकल्टी लैब की याद आ गई; यूनिसेल्यूलर मॉड्यूल आरएनए पर रिसर्च ऐसे एवरेज फैसिलिटी वाले लैब में भी हो सकती है? दुनिया में ऐसे सैकड़ों-हजारों सिमप्ली फेसीलेटेड लैब में इन दिनों कोरोना वायरस पर रिसर्च तो चल रहा है! इंडिया में भी दसियों यूनिवर्सिटी में फैकल्टी वाले रिसर्च कर रहे हैं! वह मन-ही-मन खिल उठी...अपनी यूनिवर्सिटी लैब में तो हर बेसिक फैसिलिटी उपलब्ध हैं, आसानी से वायरस के प्रोटीन मॉड्यूल का प्रोटोटाइप बनाया जा सकता है; फिर तो दुनिया में कोविड-19 वायरस के अब तक मिले स्ट्रेन के साथ सुपर इम्पोज करके काफी इनीसियल फाइंडिंग्स कलेक्ट की जा सकती हैं! यदि उनके फाइंडिंग्स दुनिया के कुछ साइंस जर्नल में छप जाएं तो? उसके होंठों पर मुस्कान तैर गई; तब तो सरकार भी यूनिवर्सिटी लैब

में ही रिसर्च के लिए उसे जरूरी रिसोर्सेज उपलब्ध करा देगी!

उसने घड़ी देखी, अभी रात्रि के दस ही बजे थे। अपने फैकल्टी हेड डॉक्टर संजय धीर का नंबर डायल कर दिया।

'...अरे भई, इतनी देर गए कौन सज्जन बोल रहे हैं! कोरोना वायरस से परेशान हो गए हो क्या?...' तीन-चार रिंग के बाद शायनी का कॉल रिसीव हो गया, जूलॉजी हेड की जॉली आवाज मोबाइल से छनकर आने लगी। बोलने के अंदाज से लगा शायद अनजान नंबर को भी किसी करीबी का कॉल मानकर वे मसखरेपन पर उतर आए थे।

"गुड इवनिंग सर, मैं सज्जन नहीं शायनी बोल रही हूं; और सच में मैं कोरोना से परेशान हूं!" शायनी ने हेड सर के मजाकिया लहजे का जवाब उसी शैली में दिया।

'...अरी शायनी! ये तू क्या बोल रही है बेटा! क्या सच में रामघाट में कोरोना आ चुका है?...' आवाज से लगा–'कोरोना से परेशान हूं' सुनते ही डॉक्टर धीर की छटपटाहट बढ़ गई होगी।

"नहीं सर, रामघाट में अभी तक तो कोरोना इंट्री की खबर नहीं है, लेकिन मैं पूरी दुनिया में फैले कोरोना वायरस के दसियों स्ट्रेन से घिरती जा रही हूं।" इतनी रात गए शायनी मुख्य विषय पर आना चाहती थी।

'...जस्ट एक्सप्लेन मी फ्रेंकली...' अब वे गंभीर लग रहे थे।

"सर पिछले बीस-पच्चीस दिन से अब तक अलग-अलग देशों में ट्रेस किए गए कोरोना वायरस के वेरियस स्ट्रेन पर स्टडी करती आ रही हूं; इंडियन सबकॉन्टिनेंट में एक्टिव स्ट्रेन के आरएनए के बिहेवियर पर मैं कुछ प्राइमरी फाइंडिंग्स ट्रेस करना चाहती हूं।" शायनी ने अपने ऑब्सेर्वशन को हेड के सामने तर्कपूर्ण ढंग से रखा।

'...आई नो शायनी यू आर शो टैलेंटेड स्टूडेंट्स, आवर यूनिवर्सिटी इज रियली प्राउड ऑफ यू! गो आहेड एन्ड एक्सप्लोर न्यू फैक्ट्स अबाउट कोरोनावायरस विच कुड गिव लीड टू इंडिया ऑभर चाइना एंड अदर कंट्रीज...' बातों को अंग्रेजी में चबा-चबाकर बोलने के बाद अब वह हिंदी में धीरे-धीरे बोलने लगे, '...अगर तुम कोरोना वायरस पर कोई न्यू इन्वेंशन कर लोगी, तब तो समझो अपनी यूनिवर्सिटी की भी बल्ले-बल्ले हो जाएगी, सालाना रैंकिंग में पच्चीस-पचास की छलांग तो लग ही जाएगी!'

"सर देन प्लीज एलाव मी टू यूज ऑवर लैब फॉर रिसर्च वर्क इन कोरोना वायरस जस्ट फोर टू-थ्री मंथ्स, आई विल सर्टेनली गिव यू अमेजिंग रिजल्ट्स!" बोलते-बोलते शायनी की आवाज भीख मांगने जैसी हो चली थी।

'...' उधर से साइलेंट हो चला।

"हेलो सर, हेलो...हैलो..." शायनी को लगा कहीं कॉल कट तो नहीं हो गया।

'...जस्ट वाण मिनट प्लीज; तुम्हारे रिसर्च वाली बात पर मैं अपनी भी कुछ राय देना चाहता हूं शायनी...' बोलने के बाद लंबी सांस लेने की आवाज आई, फिर बोले, '...देखो बेटा, रिसर्च का फील्ड बड़ा अनसर्टेन है, करियर तो समझो जीरो है! हजारों साइंटिस्ट में एक-दो ही कुछ नया कर पाते हैं, और तभी उनकी जिंदगी कुछ बन पाती है; अदरवाइज सौ में से नब्बे साइंटिस्ट तो लेवल ए से लटक-लटककर लेवल एफ तक पहुंच जाने में ही मस्त रहते हैं...' आगे उसका अपनत्व घुला स्वर सुनाई पड़ने लगा, '...आई नो शायनी यू हैव बीन द टॉपर ऑफ डिस्ट्रिक्ट एन्ड आल्सो इन...'

"ऑल योर ब्लेसिंग सर!" हेड सर के लंबे वार्तालाप के बीच शायनी बोली।

'...और पूरा रामघाट जानता है तुम आने वाले एक-दो साल में आईएएस-आईपीएस की लिस्ट में होगी; मेरे हिसाब से आईएएस तो तुम्हारे लिए सर्टेन दिख रहा है, उसे छोड़कर तुम अनासर्टेन फील्ड में आंख मूंदकर कूदने की बेवकूफी मत करना! यदि रिसर्च ही करना होता, फिर तो तुम बारहवीं के बाद ही चली जाती...'

"नहीं सर, मैं तो आईएएस दो साल बाद भी कर सकती हूं।" इतना बोलने के बाद शायनी अब जिद्दी लड़की-सी बोलने लगी, "देश-दुनिया में कोरोना वायरस के डेंजर को देखते हुए मेरे अंदर का साइंस कह रहा है मुझे भी ह्यूमन बीइंग के लिए कुछ कंट्रीब्यूट करना चाहिए।" शायनी की जिदभरी बातों को काटते हुए हेड सर की नाराजगीभरी आवाज आने लगी, '...तुम्हें यहां का सिस्टम नहीं पता, यूनिवर्सिटी लैब में कोरोना वायरस पर रिसर्च अलॉव करने के लिए हमें ऊपर से परमिशन लेना होगा; ओके! आई विल टॉक यू लेटर...' इतना कहकर डॉक्टर धीर ने कॉल काट दिया। नीरव रात्रि में दूर बस्ती में भीमरवा क्रंदन करता प्रतीत हो रहा था...चीत्कार-दुत्कार-अंधकार-हाहाकार...

रात्रि कैसे बीत गई, शायनी को पता ही नहीं चला। सुबह उठी तो अपने को कंप्यूटर टेबल में ही सोए पाया। उसे सिर्फ इतना याद आया, जब उसे नींद-जैसी महसूस हो रही थी, तब वह रंग-बिरंगे स्पाइक वाले वायरस के साथ खेल रही थी।

अध्याय छह

1

टीवी से चिपके रहने की आदत नहीं थी जेड सर की; न्यूज अपडेट के लिए दिन में दो-तीन दफा समाचार चैनल जरूर खुले रखते थे, एक-आध घंटे के लिए। तब भी टीवी का वॉल्यूम नीचे ही रखते; घर की चारों दिशाओं से आती प्रकृति की विविध ध्वनि सुनते रहना उन्हें ज्यादा रुचिकर लगता। टीवी में न्यूज चैनल खुले होते, अंदर-बाहर आते-जाते हेडलाइंस पर नजर फिराते रहते। इस उम्र में भी उनके कान युवा से थे, घर में कहीं भी हों समाचार की मंद आवाज कानों में स्पष्ट पड़ती रहती।

...तबलीगी जमात...कोरोना संक्रमित...निजामुद्दीन मरकज...कोरोना वाहक ...जमाती...कोरोना आतंकी...मरकज...मरकज...मरकज...ऐसे शब्द पिछले दस-पंद्रह मिनट में दसियों दफा उनके कानों में पड़ चुके थे। उन्हें अंदेशा-सा होने लगा; जरूर देश पर कोई बड़ा संकट आ खड़ा हुआ है! तभी तो नए-नए शब्द टीवी में बार-बार दोहराए जा रहे हैं। मानसिक अकुलाहट शांत करने की खातिर वे टीवी के सामने बेंत वाली कुर्सी में जम गए, बाहर चल रही धूलभरी आंधी से ध्यान हटाते हुए।

'...मैं पूछती हूं आखिर मरकज के मौलवी लोग इतने गैर जिम्मेदार क्यों हैं? क्या भारतवर्ष की सेहत की उन्हें कतई फिक्र नहीं है! तो आप बताइए जफर महमूद साहब, इस्लामिक कायदे क्या कहते हैं कि इस्लाम देश-दुनिया के लिए मुसीबतों का सबब बने? मौजूं दौर में आप तो इस्लामिक स्टडीज की नामचीन हस्ती हैं! आपका नजरिया क्या है निजामुद्दीन मरकज की इस नापाक हरकत पर...' एंकर ने मुंह ऐसे बना लिया जैसे दुनिया के सभी मसलों के जवाब उसे पहले से पता हैं।

'...देखिए मैडम, कोरोना एक खतरनाक महामारी है, यह जाति-धर्म-देस पूछकर नहीं आया है, हम सभी को इसके फैलाव को मिलकर रोकना होगा...'

'...लेकिन आप लोग तो रोक नहीं रहे हैं, बल्कि अंधाधुंध बढ़ाने में मशगूल हो चले हैं!...' एंकर अपने-आप भड़क उठी थी।

'...देखिए मैडम, जब आपने हमारी कौम के बारे में अपनी सेल्फ-ओपिनियन बना ही ली हैं तो फिर हमें क्यों बुलाते हैं ऐसे डिबेट में जलील करने के लिए! शुक्रिया...' सर ने पाया हाथ उठाकर शुक्रिया अदा करते ही जफर महमूद का फोटो टीवी स्क्रीन से गायब हो गया, ऊपरी दाएं कोने से।

'...जिनके पास जवाब ना हो उनके लिए सरक लेने के अलावा और कोई चारा ही नहीं है! अब मैं मुख्य विपक्षी पार्टी के प्रवक्ता आनंद पटेल से पूछना चाहती हूं, निजामुद्दीन मरकज की इस घिनौनी हरकत की निंदा करने में भी आपकी पार्टी ने घंटों लगा दिए! आखिर क्यों? इसका सीधा-सीधा मतलब तो यही होता है न कि इस साजिश को अंजाम देने में आपकी पार्टी ने भी मदद की होगी!...' आवाज को चबा-चबा कर बाहर लाते हुए एंकर की नाक गुस्से में फैलती नजर आने लगी थी, लगा अब विपक्षी पार्टी के प्रवक्ता की ही गर्दन दबा देगी।

'...हमारी पार्टी बेवजह किसी मुद्दे पर कुतर्क नहीं करती; हम लोग समस्या के समाधान पर फोकस करते हैं, बात का बतंगड़ नहीं बनाते...' प्रवक्ता धैर्यपूर्वक बताने लगा, उनकी बात बीच में काटती हुई एंकर उछल पड़ी, '...तो आपको क्या लगता है चैनल वाले बात का बतंगड़ बनाते हैं! आपको क्या लगता है मरकज वाले की करतूत से कोरोना की समस्या खत्म हो जाएगी? बोलिए, जवाब दीजिए, मुंह का टैप खोलिए! जनता के सामने आप भी जवाबदेह हैं...' सर ने देखा, बोलने के बाद एंकर के गले में हरकत-सी हुई थी, शायद गुस्से वाली थूक अंदर गटक ली होगी।

'...मुझे ज्यादा बोलने की बीमारी नहीं है, बस पते की बात बता देता हूं; तबलीगी जमात की आड़ में सरकार कोरोना के प्रति अपनी बेख्याली को छुपा नहीं सकती, जब विदेशों से हवाई जहाज में कोरोना भारत देश में आ रहा था, तब सरकार क्या कर रही थी? मैं कभी नहीं कहूंगा कि सोई थी, बेशक सरकार जगी हुई थी, सौ प्रतिशत! लेकिन कहां? कुश्ती प्रतियोगिता में! तभी तो जो हवाई जहाज दस मार्च से पहले ही बंद होना चाहिए था सतपुड़ा-ट्रॉफी जीतने के बाद ही बंद की गई; तो पूरे देश में कोरोना का कहर बरपा देने

का दाग अब जमाती मार्का साबुन से नहीं धुल सकता!...' विपक्षी पार्टी के प्रवक्ता बोल ही रहे थे कि कब से भगवान बुद्ध जैसा शांत-गंभीर बैठे सत्ताधारी पार्टी के मीडिया प्रभारी महेश मयंक एकाएक बम जैसा फट पड़े '...देश को रसातल में पहुंचाने वाली नालायकओं की पार्टी...' मीडिया प्रभारी को आग-बबूला होता देख एंकर पंच भांति हाथ लहराते हुए बोली, '...शांति मयंक साहब, शांति; मैं तो अब खुद आपके पास आने ही वाली थी, प्लीज पटेल जी को अपनी बात पूरी कर लेने दीजिए...' सर ने नोट किया, एंकर को याचक मुद्रा अख्तियार कर लेनी पड़ी थी; महेश मयंक एंकर की एक ना सुनते हुए अब और गरजने लगे, '...विपक्षी पार्टी का पक्ष काफी सुन लिया देश ने, अब उसके बोलने का कोई मतलब नहीं रह गया है; सरकार हम चलाते हैं! सभी को हमारी बात सुननी चाहिए, हां तो मैं क्या कह रहा था? हां, तबलीगी जमात! ये लोग जो भी हैं हमारे महान विपक्षी पार्टी की पैदाइश हैं हिंदुस्तान में, इसकी सजा हम सदियों से भुगत रहे हैं; अरे भई, आज इकतीस मार्च है, आज वित्तीय वर्ष की समाप्ति के साथ ही हमारी सरकार ने बाईस मार्च वाले जनता कर्फ्यू और पच्चीस मार्च से लागू लॉकडाउन की बदौलत कोरोना पर काबू पा लिया था! लेकिन इन जमातियों, सच कहिए तो कोरोना आतंकियों ने हमारे किए-कराए पर पानी फेर दिया! हम इसे हरगिज माफ नहीं करेंगे, साथ ही विपक्षी पार्टी को भी जनता के सामने और नंगा करेंगे!...' महेश मयंक किसी देवदूत भांति बेरोकटोक बोलते जा रहे थे।

सर ने टीवी बंद कर दिया। सोचने लगे, यह कौन-सी नई बला आ गई देश में! उन्हें चिंता सताने लगी मौलवी मजहर की; उग्रपंथी कहीं उसकी दुर्गति न कर दें। उसने घड़ी की तरफ देखा, साढ़े आठ बज रहे थे; मन में तय किया नाश्ते के बाद तुरंत निकल ही लें। कलेक्टर साहब ने परसों ही लॉकडाउन पास भिजवा दिया था; पास के प्रभावी-निष्प्रभावी होने की परख भी हो जाएगी।

नाश्ता करके वे सीधे शफीक साहब के घर की तरफ निकल पड़े; उन्हें पता था ऐसे हालात पर मौलवी मजहर सिर पर पैर लिए शफीक प्रोफेसर के घर का रुख करते हैं। शफीक साहब को वे काफी पहले से ही जानते थे, बेटे परवेज की सातवीं में एडमिशन से भी काफी पहले। उन दिनों शफीक की कॉलेज वाली नौकरी भी नहीं लगी थी, एमए-पीएचडी करने के बाद वापस घर लौट आया था, रामघाट। अपनी कौम को जाहिली से निकालने

की खातिर अजब जुनून पैदा हो चला था उसके अंदर; प्रगतिशील और विज्ञानसम्मत तालीम की रोशनी दिखाने का जुनून! पूरी कौम को पिछड़ेपन से निकालकर तरक्की के रास्ते पर बढ़ाने का बेमिसाल ख्याल! उन्हीं दिनों सर की शोहरत सुनकर शफीक ने एक सेमिनार में उन्हें भी आमंत्रित किया था। खैर, धीरे-धीरे वह जुनून पीछे छूटता गया, जैसा कि कुछ नया और बड़ा करने का माहौल यहां की हवा में एक नन्हा पौध सा जल्दी ही मुरझा जाता है।

वे शफीक साहब के घर की तरफ निकल पड़े। पांचेक मिनट में करीब पहुंचे तो उसके गेट की तरफ बढ़ने की हिम्मत नहीं कर पाए; घर के चारों तरफ पुलिस का भारी बंदोबस्त था! उन्हें समझते देर नहीं लगी, मौलवी मजहर का पीछा करते-करते पुलिस यहां तक आई होगी; इसी शक में कि मौलवी मजहर के लिए शफीक का घर मतलब मियां की दौड़ मस्जिद तक, और यह भी कि यह तो मौलवी के पास ही रिकॉर्ड होगा किन-किन मस्जिदों में जमाती लोग छुपे बैठे हैं। वे सोच ही रहे थे कि एसपी सिटी उनकी तरफ बढ़ आए, शायद उसने दूर से ही सर को पहचान लिया था; "नमस्कार सर, आप इस वक्त यहां?" एसपी सिटी आलोक चौहान, सर की काफी इज्जत करते थे, सो अदब से पेश आए।

"कुछ नहीं, बस शफीक मियां से मिलने घर से निकला था, यहां आकर देख रहा हूं मजमा जमा है; मौलवी मजहर इधर फटक लिया है क्या!" सर ने मन की बात बता दी। "हां सर, यहीं छुपा बैठा है; इसलिए तो हमें आना पड़ा! आपको कैसे पता?" एसपी सिटी के आश्चर्य का ठिकाना न था; जेड सर जैसे प्रखर बुद्धिजीवी को मौलवी मजहर की आवाजाही के बारे में कैसे पता!

"यह तो सभी को पता है मौलवीजी का शफीक मियां के घर आना-जाना लगा रहता है; तो तबलीगी जमात वाली खबर के बाद जाहिर है वह पहले यहीं तो भागा-भागा आएगा!" सर ने तर्कसम्मत ढंग से कहा।

"यदि अंदर जाना चाहते हैं तो आपको हम एलाऊ कर सकते हैं, वरना एसएसपी साहब का आदेश है जब तक मौलवी खुद ही सरेंडर नहीं करता है, न तो किसी को अंदर जाने देना है और न ही किसी को बाहर आने देना है!" उसने सपाट चेहरा लिए कहा, आगे मुख-मुद्रा में कोमलता उगाते हुए बोले, "वैसे आपके अंदर जाने से हमारा काम आसान हो सकता है, आपके समझाने पर शायद मौलवी पुलिस लाइन जाने के लिए तैयार हो जाए!"

"लेट मि डिस्कस फर्स्ट विद देम।" सर ने संयमित स्वर में कहा।

"यस-यस, प्लीज टेक योर टाइम!" एसपी सिटी उन्हें 'शफीक सज्जन' लिखे गेट तक छोड़ आए।

अंदर कदम रखते ही सर ने देखा पहली मंजिल से कोई हाथ उन्हें संकेत कर रहा है, सीढ़ी होकर ऊपर आने के लिए; पहले जब भी शफीक साहब के घर आए हैं भूतल वाले ड्राइंग रूम में ही तशरीफ रखना हुआ है। परवेज उन्हें लेने नीचे आ गया था। सीढ़ी ऊपर जाकर एक मिनी सीटिंग में खुलती थी; इसमें दायें-बायें दो रूम खुलते थे। शफीक साहब और मौलवी साहब सोफे में आमने-सामने बैठे थे, गमजदा हालत में। मौलवी के पीछे बढ़ी हुई दाढ़ी वाला एक छोकरा-सा बैठा था। सर को देखते ही सभी के मुंह से एक साथ निकला 'आदाबअर्ज'। प्रत्युत्तर में सर के मुंह से 'आदाबर्ज' निकलते ही मौलवी मजहर फफककर रो पड़े; शफीक साहब भी रूआंसा हो चले। सर का दिल पसीज गया, समय के कालचक्र ने भयाक्रांत कर दिया है इन्हें! भावना का ज्वार बह जाने का इंतजार करने लगे। खिड़की से बाहर नजर दौड़ाई, बाहर सड़क पर पुलिस साफ-साफ नजर आ रही थी; किसी अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी को घेर कर खड़े रहने की मुस्तैदी दिखाते हुए। अब बात उनकी समझ में आई, नीचे वाले सीटिंग के बजाय ऊपर वाले छोटे सीटिंग में क्यों बैठे हैं अभी! लंबी होती जा रही चुप्पी को शफीक साहब ने तोड़ा, "अल्लाह का शुक्र है सर कि आप यहां आ गए वरना हम लोगों का दमाग काम नहीं कर रहा था।" बोलकर वह सर की तरफ आशाभरी नजरों से देखने लगे।

"आखिर माजरा है क्या! मैं तो अभी तक ठीक से पकड़ नहीं पा रहा हूं।" सर के बोलने की भाव-भंगिमा से लगा मामला तो वह समझ पा रहे थे, उससे आगे की गुत्थी सुलझाना चाह रहे हैं।

"क्या बताऊं सर! निजामुद्दीन मरकज में जमातियों के कोरोना पॉजिटिव की खबर दो दिनों से न्यूज चैनल में उछाल मार रही है," बोलते-बोलते मौलवी साहब की आंखें सजल हो उठीं, "आज सुबह-सुबह थाना कोतवाली से पुलिस टीम पहुंच गई हमारी अकबरी मस्जिद में, मैं तो वहीं रहता हूं न; दरोगा जी कहने लगे सभी जमाती को बाहर निकालो," फिर माथे में हाथ पटकते हुए बोले, "भला वहां कोई जमाती हो तो निकालूं!"

"तो आपने स्पष्ट रूप से बताया नहीं यहां कोई जमाती नहीं है?" सर को मामला आसान लग रहा था।

"मैंने ईमानदारीपूर्वक कहा यहां रामघाट के पांचों में से किसी भी मस्जिद

में फिलवक्त कोई जमाती नहीं है; पुलिस वाले मानने के लिए तैयार नहीं थे," अब वह बेचारगी जैसा सिर हिलाते हुए बोलने लगा, "मैं गिड़गिड़ाया, अल्लाह की कसम खाई, पर पुलिस वाले टस से मस न हुए।"

"फिर?"

"कोई सूरत निकलता न देख मैंने कहा, एक बार अंदर चलकर देख लेता हूं कहीं रात को कोई चुपके से तो नहीं आ पहुंचा है," अब उसके चेहरे में मुस्कान की कोपलें फूटने लगीं, "बोलकर मैं अंदर गया और पीछे वाले दरवाजे से भागकर शफीक साहब के घर आ पहुंचा! ऐसे बुरे वक्त में और किनसे सलाह-मशवरा करता!"

"जैसे ही मौलवी साहब आए, चंद मिनटों में ही पुलिस की जिप्सी हमारे घर के सामने सजती गई, जैसे हमारे घर में शहर काजी नहीं कोई दहशतगर्द घुस आया हो!" बोलने के बाद शफीक साहब के नथुने घृणा से फैलने लगे।

"पूरा शहर जानता है, रामघाट में अमन-चैन के लिए हम लोग हमेशा अगुवा रहे हैं," बोलकर मौलवी साहब आगे तैश में बोलने लगे, "सरकार ने तो अभी पांच दिन पहले लॉकडाउन किया है, हमने तो मस्जिदों में पंद्रह दिनों से नमाज पर पाबंदी लगा रखी है!"

"सर, मुझे तो यहां के एडमिनिस्ट्रेशन की नासमझी पर तरस आता है," परवेज आंखों की गोलाई छोटी करके बोलने लगा, "अभी दो-तीन दिन पहले ही निजामुद्दीन मरकज खाली कराया गया है, पच्चीस मार्च से हवाई जहाज-रेल-बस-ट्रक सब कुछ बंद है तो दिल्ली से जमाती रातों-रात रामघाट कैसे पहुंच जाएगा भला!"

"अरे साहब कोरोना तो देश में पहले ही फैल चुका है, वुहान से, दुबई से, यूरोप से; इसे जब कंट्रोल करना चाहिए था उस वक्त आप...खैर छोड़िए।" शफीक साहब कड़वी बात बोलने में शुरू से ही परहेज करते रहे हैं।

"अरे अब्बा, आपको चुप रहना पसंद है तो आप चुप रहें अपनी बला से।" परवेज गर्दन तानकर बोलने लगा, "हम तो डंके की चोट पर बोलेंगे, बड़े लोग अपनी नाकामी जमातियों के मत्थे मढ़ना चाह रहे हैं!"

"जेड सर, मुझे तो लग रहा है नई पीढ़ी किसी भी प्रकार की नाइंसाफी बर्दाश्त नहीं करेगी!" बोलकर शफीक साहब नकार में सिर हिलाने लगे, होंठों को पास में चिपकाकर।

"पता नहीं क्यों हम सब अपने ही देश में बेगाने से होते जा रहे हैं!"

मौलवी साहब फर्श पर नजर टिकाए बोले।

"जनाब मुझे तो लग रहा है यह कोरोना कोई बीमारी नहीं है, बल्कि इस्लाम को खत्म करने की साजिश लग रही है मुझे!" मौलवी मजहर के पीछे बैठा छोकरा बोला, फिर एकाएक उबल पड़ा, "तभी तो कोरोना के नाम पर हमें मस्जिदों में नमाज पढ़ने से रोका जा रहा है, नमाजियों को देशभर में मस्जिदों से घसीट-घसीट कर बाहर निकाला जा रहा है! मैं तो कहता हूं यदि सच में कोरोना वायरस है भी, तो हमें इसे जरूर फैलाना चाहिए, ताकि इससे इतने लोग मर जाएं, इतने लोग मर जाएं कि बाकी कौम की आबादी हमारी आबादी के बराबरी पर आ जाए...!" वह छोकरा बोलता ही जा रहा था; बोलने का रौ ऐसा कि किसी के टोकने का सुराग नहीं।

उस छोकरे की आग उगलती बातें सुनकर सिर से पैर तक जेड सर स्पंदित हो उठे। सर को अचंभित देख शफीक साहब ने उस छोकरे को लताड़ लगाई, "तुम जैसे नालायकों के कारण ही इस देश में मुसलमानों का जीना हराम हो रखा है! अरे भई, जब सही तालीम नहीं हासिल करोगे, हालात की सही जानकारी नहीं होगी तो ऐसे ही अनाप-शनाप बकते रहोगे, और पूरे काम के लिए मुसीबत खड़ी करते रहोगे!" शफीक साहब का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था, जेड सर ने शफीक साहब को शांत रहने की गुजारिश करते हुए कहा, "इस बच्चे पर उबलने से कोई फायदा नहीं, इन्हें जितना रटाया गया है वे उतना ही उगलते फिरते हैं," फिर मौलवी साहब के कंधे पर हाथ धरते हुए बोले, "हिम्मत हारने से काम नहीं चलेगा मौलवी साहब! ऐसे वक्त पर हालात का सामना करना ही बेहतर है।"

"आपके मुताबिक इन्हें अभी क्या करना चाहिए!" सर की तरफ झुकते हुए शफीक साहब ने बिल्कुल धीमी आवाज में पूछा, फरियादी वाले अंदाज में।

"मेरी तो यही सलाह होगी इस वक्त आप खुद ही एसपी सिटी के साथ हो लें," कहकर सर आगे आंखें बंद करके बोलने लगे, जैसे भविष्य को देखकर बोल रहे हों, "और उनसे कहें, साहब आप अभी का अभी सभी पांचों मस्जिदों की तलाशी ले लें!"

"यह तो बहुत बुरा होगा!" मौलवी साहब भड़क उठे।

"इससे क्या हल निकलेगा?" परवेज कहीं कुछ ढूंढ़ने के अंदाज में बोला।

"याल्लाह, परवरदिगार! आपने भी वही बात कर दी सर!" जेड सर पर शफीक साहब का पुराना यकीन डिगने को हुआ।

"मुझे पक्का यकीन है मौलवी साहब द्वारा तलाशी का ऑफर देते ही पूरा पुलिस प्रशासन अपनी दुम सुटक लेगा!" बोलने के बाद सर के चेहरे में कूटनीतिक मुस्कान छाने लगी।

"ऐसा क्यों!"

"क्योंकि तब पुलिस वालों को लगेगा सच में मस्जिद में कोई जमाती नहीं होगा; फिर तलाशी लेकर कौन नया बखेड़ा खड़ा करना चाहेगा!" सर ने कहा तो उन तीनों के चेहरे में जीवनदायी मुस्कान तैर गई।

मौलवी मजहर सीढ़ी से नीचे उतरने लगे। वे तीनों, बल्कि चारों वहीं बैठे रहे, अंजाम के इंतजार में। लंबी चुप्पी परवेज के लिए तकलीफदेह होने लगी, वह उबल पड़ा, "मुझे तो तबलीगी जमात वाले इशू में बहुत बड़ी साजिश की बू आ रही है!"

"कैसी साजिश?" बेटे की ओर देखकर बोलते हुए शफीक साहब सहम उठे।

"सरकार को पता था चीन से, मलेशिया से, इंडोनेशिया से, मिड्ल ईस्ट से, कोरोना संक्रमित आ रहे हैं, फिर इन जमातियों को वीजा क्यों दिया?" बोलकर परवेज ने आँखें बड़ी कर लीं, जैसे उसकी आँखों से बिना उत्तर वाला कोई प्रश्न लेजर की तरह निकल रहा हो।

"फिर?" सर ने आगे की थाह लेनी चाही।

"यदि अल्लाह तला मुझे ताकत देगा तो इस मुद्दे को मैं आम मुद्दा बनाने के लिए जान लड़ा दूंगा, यही कि देश में कोरोना के खतरे को भांप कर ही उन लोगों ने जमातियों को वीजा देने से इनकार नहीं किया, ताकि सरकार अपनी नाकामी जमातियों के मत्थे मढ़ सके!" बोलते-बोलते परवेज का अंदाज इंकलाबी जैसा होता गया। जेड सर और शफीक साहब एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। पीछे बैठे छोकरे की आँखों में एक अलग किस्म की चिंगारी छूटने लगी थी! उस दिन रामघाट तीरे एकमात्र लाउडस्पीकर से भी मानस पाठ के शब्द और अर्थ सभी के कानों में सीधे-सीधे पड़ रहे थे ...तैं निसिचर पति गर्ब बहूता...

2

सुबह से ही शहर में चर्चा चल पड़ी थी, परसों 5 अप्रैल को रात के नौ बजे नौ मिनट तक दीए-मोमबत्ती-टॉर्च से रोशनी की जानी है, पूरे देश में। सच ही

ऐसे भयावह दौर से उबरने की खातिर जन-जन की नजरें हमेशा प्रधानमंत्री पर टिकी रहतीं। प्रधानमंत्रीजी देशवासियों की उम्मीदों पर खरे उतर भी रहे थे; वे सच में दिन-रात कोरोना की जंग लड़ते नजर आते थे; अकेले, निडर-निहत्थे! कभी-कभी तो ऐसा लगता जैसे जंग में अन्य रथियों-महारथियों ने हथियार डाल दिए हैं या किसी बड़ी रणनीति के वशीभूत उनके हथियार डलवा लिए गए हैं।

आज के अखबारों से जेड सर को जान पड़ा 5 अप्रैल को पूरे रामघाट को सिर्फ दिये से जगमगाना है; कई संगठनों ने सिर्फ दीये जलाने का सामूहिक निर्णय लिया है। दीये जलाने वाली बात अखबार में पढ़ते ही सर के अंदर कोई बच्चा चंचल हो उठा। उस दिन शहर का क्या नजारा होगा! दिलचस्प होगा दीये की रोशनी में नहाए शहर को निहारना। उन्हें याद आया, इस प्रकार के सामूहिक कार्य शिव मंदिर के बड़े पंडित रामाधार रामास्वामी के दिशा-निर्देश में सुचारू रूप से संपन्न होते रहते हैं। कितनी तो कन्या कलश यात्रा शांतिपूर्वक संपन्न करा चुके हैं पंडित रामाधार! कोई पांच वर्ष पहले की बात है; कई मानवतावादी संगठन घोर विरोध दर्ज करते हुए सड़क पर उतर आए थे, बावजूद इसके सौ अक्षत कौमार्य बाला के हाथों अखंड-हवन पूर्ण करा लेने का उनका हठ जीत ही गया था! तब से उनके भक्तों ने उन्हें 'श्री श्री 108 शहर शंकराचार्य' की पदवी से विभूषित कर रखा है।

अभी उनकी याद आते ही जेड सर मन-ही-मन खुश हुए; धर्म-कर्म के मामले में पंडित रामाधार के कार्यकलाप चाहे जैसे भी रहे हों, सर की बातों-सुझावों का तो वे मान रखते हैं। उनके मन में बिजली-सी चमक उठी; शहर शंकराचार्य के पास तो स्वयंसेवकों की बड़ी तादाद है, कोरोना संकट के समय रामघाट को अक्षत रखने में उनके विशाल संगठन बड़ा योगदान दे सकते हैं। घर के लोग सुबह भूखे पेट जाते हैं शिवालय, भगवान शिव को जलाभिषेक करने; वे भी बिना नाश्ता किए निकल पड़े शिवालय की तरफ, मन में शांति और उम्मीद लिए, कि शहर शंकराचार्य भी खुश होंगे, शहर को संभावित खतरों से बचाने हेतु उनके बताए प्रारूप पर विचार करके।

वे मंदिर के विशाल परिसर में दाखिल हो गए, मुख्य द्वार के बगल वाले छोटे प्रवेश से। पूरी दुनिया में कोरोना संकट चल रहा था; कोरोना से रोकथाम के लिए जारी सरकारी दिशा-निर्देश के तहत शिवालय के कपाट भी बंद थे; स्वाभाविक ही मंदिर परिसर में सदी का सबसे बड़ा सन्नाटा पसरा था।

सांय-सांय करती हवा जैसे संकेत-सा कर रही थी; तुम्हारा सोचा-किया कुछ भी अमिट नहीं है, मैं और मेरे पितर प्रकृति ही शाश्वत हैं! उनकी रग-रग में विज्ञान रचा-बसा था, सिर्फ अंतरिक्ष को ही सर्वोपरि शक्ति मानते आए थे। कभी मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारे-गिरजाघर जाते नहीं, पर जब भी इनके सामने से गुजरते, सिर अपने-आप झुक जाते थे, इन जगहों को अंतरिक्ष की शक्ति संकेत समझकर! बंद शिवालय की तरफ शीश नवाना वे न भूले। क्षणभर के लिए उन्हें भी लगा, क्या देवी-देवता भी कोरोना से डरते होंगे? परिसर के मध्य से वे शंकराचार्य कुटीर के लिए बायें मुड़ गए। शंकराचार्य-कुटीर में भी घोर शांति! उन्हें लगा, तो क्या यह कोरोना धरती से धर्म और कर्मकांड की विदाई का कारण होगा? तत्क्षण ही उनके अंदर से आवाज-सी आई, यदि ऐसा हो जाए तो समझो धरती का बड़ा भला हो जाएगा; कोरोना को शत-शत नमन करेगा वह! उस अपूर्व शांति के बीच से ही एक गेरुआधारी प्रकट हुए, जैसे महाभारत में पर्दे पर स्वर्गीय दूत धरती पर प्रकट होते दिखते हैं।

"श्री श्री एक सौ आठ शहर शंकराचार्यजी ने ससम्मान आप तक संदेश प्रेषित करने की आज्ञा दी है मुझे; अंत:कक्ष में एक आकस्मिक विमर्श इति पर अटका है; क्षमाप्रार्थी हूं, आप अल्प अंतराल के लिए इस बाह्य कक्ष में विश्राम पावें।" बोलकर दूत दाहिने हाथ के संकेत से सर को लेकर बढ़ चला, बाह्य कक्ष की ओर। सर को याद आया, कुछ महीने पहले अखबारों में खबर छपी थी, रामघाट के ऐतिहासिक शिव मंदिर में अदृश्य सीसीटीवी कैमरे लगेंगे। तभी तो कहीं कोई कैमरा नजर नहीं आ रहा था, पर अंदर बैठे ही शंकराचार्य की आंखों ने उन्हें मंदिर परिसर में पैर धरते ही देख लिया था; और बाह्य कक्ष में कैद भी कर दिया!

...हर-हर महादेव...हर-हर महाअदेएएएव...अचानक हर-हर महादेव की ऊंची लहरी, फिर और भी ऊंची प्रति लहरी से सर हड़बड़ा उठे; कुर्सी से गिरते-गिरते बचे, लगा जैसे भूकंप आया हो! अपने को संभाला, तब जाना बाह्य कक्ष से लगे अंत:कक्ष में चल रहे विमर्श में काफी लोग शामिल हैं।

...तो महाराजजी, अपने संगठन के माध्यम से यही प्रचारित करते रहना सटीक रणनीति है...अब अंदर की आवाज सर के पीछे वाली अधखुली खिड़की से छनकर बाहर तक आने लगी थी।

...हां-हां, निशंक! प्रभु राम ने यह संजोग समझो हमें वरदानस्वरूप दिया है, अन्यथा कोरोना पर कई सप्ताह तक निष्क्रिय रहने का कलंक धोना

मुश्किल होता...सर ने पहचान लिया, यह शहर शंकराचार्य पंडित रामाधार की आवाज है।

...मेरी कल ही दिल्ली बात हुई थी, सभी न्यूज चैनलवालों को साम-दाम-दंड-भेद से एक लाइन पर खड़ा कर दिया गया है, तभी तो यह वाली खबर तीन-चार दिनों से अपने मीडिया सेल के संकेत के हिसाब से चलती आ रही है...सर खिड़की की ओर खिसक लिए, आवाज किसी रौबदार व्यक्ति की लग रही थी।

'...हर-हर महाअदेएएव...' फिर से कर्णभेदी जयकारा गूंज उठा; नारों में सम्मिलित ध्वनियों के भौतिकीय परीक्षण से लगा अंदर बहुत बड़ा जमावड़ा होगा!

...पार्टी के मीडिया सेल में बैठे सभी बड़े थिंक टैंक ने अपनी सारी मेधा इस प्रकरण पर समर्पित कर रखी है; व्हाट्सएप-फेसबुक-ट्विटर हर प्लेटफॉर्म पर जोर-शोर से चलाया जा रहा है कि जनता कर्फ्यू और लॉकडाउन से कोरोना तो खत्म हो ही जाता, लेकिन बीच में जमाती लोगों ने पूरे देश में कोरोना की खेती कर डाली है...रोबीला स्वर अब गर्वीला हो चला था।

...बस यही बात अपने सभी संगठनों के माध्यम से जनता में प्रचारित करते रहिए, कि जमातियों ने साजिश करके कोरोना फैला दिया है देश में... शंकराचार्य की सभा समाप्ति-संकेत वाली आवाज थी।

...और कोई आदेश महाराज...रोबीले व्यक्ति की संकल्पबद्ध आवाज थी।

...बस, महादेव के अधिवास से पूरे उमंग-उत्साह के साथ विदा लो वत्स! महादेव भक्तों, आप इस ग्लानि को यहीं पर अर्पित करके जाएं कि कोरोना हमारी प्राथमिकता में देर से आया...विदा लेते भक्तों को शंकराचार्य जी द्वारा आशीर्वाद दिए जाने जैसी आवाज आई।

...तब भी हमारी सरकार किसी भोग-विलास में नहीं डूबी थी ना! कितने तो ऐतिहासिक कार्य-प्रतिकार हुए हैं, धरती में कोरोना के उत्पत्ति-काल में; कश्मीर को भारत में सफलतापूर्वक मिला देने के बाद उपजी परिस्थितियों पर काबू पाने हेतु दिन-रात एक किया गया, नागरिकता अधिनियम के विरोध में उठे देशव्यापी प्रतिरोध पर नकेल कसी गई...रोबीले व्यक्ति की गौरवपूर्ण अभिव्यक्ति थी!

...दंगा-फसाद को भी हमने अपने पक्ष में निपटाया...सर को यह आवाज तो पहचान में आ रही थी; उस दिन कलेक्टर की मीटिंग में जो बीच-बीच

में कठोर शब्दों के प्रयोग से उग्र हो उठता था, और जो बतौर चरण-स्पर्श उसका घुटना स्पर्श करना चाहता था!

...और सबसे बड़ी उपलब्धि मध्यभारत-विजय गाथा पूरी करने के बाद अब हम कोरोना-कांड भी लिखेंगे...किसी शातिर की आवाज थी।

...आयुष्मान भवअ यशस्वी भवअअ सनातन धर्म चिरंजीवी भवाआआआ! ...शंकराचार्य जी ने अंतिम आशीर्वाद दे दिया था।

...हर-हर महाआदेएएव...नारा इतना जोरदार था कि सर को लगा शायद खिड़की ही न उड़ जाए! तत्काल खिड़की से दूर हटकर कुटीर उद्यान की तरफ बढ़ चले।

उद्यान में टहलते हुए उन्हें पीछे जनसमूह का आभास हुआ; मुड़कर देखा, अंत:कक्ष से सभी प्रतिभागी खुलते दरवाजे से बाहर आ रहे थे, उद्यान की तरफ ही।

'...नमस्कार सर...नमस्कार सर...' जनसमूह के मुंह से कोरस पदबंध जैसा निकला। सर गद्‌गद हो उठे, 'जेड सर' नाम का शब्द अभी भी रामघाट में जीवंत है! उसने शहर शंकराचार्य पंडित रामाधार को हाथ जोड़कर प्रणाम किया; उसने हथेली को सर की ओर आशीर्वाद-कोण से उठाया।

"आपको यहां देखकर अच्छा लग रहा है जेड सर, इस विकट समय में भी आप ऊर्जावान हैं!" पंडित रामाधार ने मोहक मुस्कान के साथ कहा।

"क्रिएट इन मी अ क्लीन हार्ट ओ गॉड! एंड रिन्यू मी अ स्टीडफास्ट स्पिरिट विदिन मी!" सर ने आसमान की ओर देखते हुए कहा।

"ये किसने कहा है?" शंकराचार्य पूछ बैठे; उसने पहली बार ये पंक्तियां सुनी थीं।

"शंकराचार्यजी, ये तो बाइबल की पंक्तियां हैं! स्वामी विवेकानंदजी को ये पंक्तियां काफी पसंद थीं।" सर ने सामान्य ढंग से कहा।

"रामघाट शहर को नहीं पता आप किस धर्म को बिलांग करते हैं, पर आज तो खुलासा हो ही गया कि आप मन से क्रिश्चियन ही तो हैं!" पार्टी अध्यक्ष ने 'देख लेने' के अंदाज में सिर हिलाया।

"नहीं, बिलकुल नहीं!" कहते हुए सर की ग्रीवा तन गई।

"यदि ऐसा नहीं है फिर तो आपको दूसरे धर्म-ग्रंथों की भी पंक्तियां याद होनी चाहिएं; तो बताइए ये श्लोक किस ग्रंथ के हैं और इसके क्या अर्थ हैं...'सरस्वती देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसयस्य मायिन:, उत

क्षितिम्योवनीरविन्दो विषमेभ्यो अर्स्वो वाजिनीवती'?" शहर शंकराचार्य ने जेड सर को भली-भांति घेर लेने वाली भंगिमा से कहा।

"ये ऋग्वेद की ऋचा है; इसका अर्थ है–'देवताओं की निंदा करने वाली, कपटी और दुष्टों को नष्ट करने वाली हे देवी सरस्वती, तूने मानव के लाभार्थ उन्हें पृथ्वी जैसा सुरक्षित स्थान दिया; हे वाजिनीवते, तूने ही मनुष्यों के लिए जल बहाया!' तो शंकराचार्य जी, कहने का अर्थ है सरस्वती को देव निंदक कहा गया है, यानी धूर्तता और कपट के बजाय हमें तर्क और विज्ञानसम्मत अवधारणा विकसित करनी चाहिए। वैसे पाक कुरान शरीफ के आयत 16 में भी कहा गया है...कुल इन्ना सलातो व नुसुकी व महयाया व ममाती लोल्लाही रब्बील आलमीन, जिसके मायने हैं...तुम फरमाओ बेशक मेरी नमाज और कुरबानियां और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो रब सारे जहान का। हर धर्मग्रंथ समरसता और कर्म की ही बात करता है, गुरुवाणी को भी देख लीजिए...सब रोज गस्तम दर हवा करदेम बदी खियाल, गाहे न नेकी काट करदम ममई चिनी अहवाल! जिसका अर्थ है पुरुष रात-दिन बुरे विकारों में घूमता रहता है, नेकी का काम कभी नहीं करता..." बोलते-बोलते सर की आंखें क्षणभर के लिए बंद हो गईं, परमज्ञानी भांति। शहर शंकराचार्य पलभर के लिए सिहर उठे, ये मास्टर कहीं उनके शिष्यों की नजर में असली शंकराचार्य न नजर आने लगे! बिना समय गंवाए मित्रवत अंदाज में बोले, "और जेड सर, आजकल क्या कुछ नया सोच रहे हैं?"

"फिलहाल तो रामघाट को ऊर्जावान बनाए रखने की सोच रहा हूं, ताकि कोरोना रामघाट को हिला न पाए।" सर ने योजनामुखी भाव-भाषा में कहा।

"हां-हां, क्यों नहीं! हम सब मिलकर लड़ेंगे कोरोना से; सुना है आपके पढ़ाए कुछ बच्चों ने रामघाट को कोरोना से लड़ने का एक समूह तैयार किया है?" शंकराचार्य जी ने विस्मित होकर कहा, फिर मुख-मंडल में दुर्लभ हँसी रोपित कर बोले, "ऐसी सकारात्मक पहल का हम सच्चे हृदय से स्वागत करते हैं; आप बताइए कोरोना-नियंत्रण जैसे पुनीत कार्य में हम क्या सहयोग कर सकते हैं! हमारे पास हजारों संख्या बल है।" बोलकर शंकराचार्यजी में विस्फारित होती आभा दिखी, जैसे भगवान का विराट स्वरूप प्रकट हो रहा हो।

"दो-तीन दिन पहले सर ने तो शहर काजी को भी औकात बता दी थी; सर के समझाने पर ही वह बदमाश मस्जिद की तलाशी के लिए तैयार हुआ

था।" हरेन्द्र ठाकुर, पार्टी जिला अध्यक्ष भीड़ के बीच से आगे निकलते हुए बोले; अब आवाज से सर ने पहचाना अंत:कक्ष में रोबीला स्वर इन्हीं का था!

"अब पुलिस कंफर्म हो लिया है शहर में कोई जमाती नहीं आया है; प्रभु राम की माया से रामघाट अब समझिए कोरोना मुक्त हो गया है।" एक तगड़े नौजवान ने कहा, दूर से ही सर के घुटने को स्पर्श करने-सा दिखता हुआ; सर को याद आया, यह तो रामनरेश है!

"तो बताइए सर क्या कोई कार्य-योजना है आपके पास?"

"मेरी दृष्टि कह रही है, शहर में सभी धर्मों के जो सक्रिय भक्त हैं, कार्यकर्ता हैं, वॉलिंटियर्स हैं उनको मिलाकर नौजवानों की कोरोना-मंडली को स्थायी स्वरूप दिया जाए, फिर तो ये मजबूत टीम कोरोना फैलने की दशा में मेडिकल टीम, पुलिस टीम की मदद करेगी।" सर बोलने लगे तो उनकी आवाज में आशा और उत्साह का महत्तम संयोजन दिखने लगा।

"..." भक्तों की भीड़ नि:शब्द हो चली; सर को समझते देर नहीं लगी उनकी कार्ययोजना धर्मावलंबियों को रास नहीं आई। पर वे यह नहीं पकड़ पा रहे थे कि सभी धर्मों के समर्पित भक्तों की संयुक्त-मंडली बनाने से इन्हें परहेज था या कोरोना-काल में जान जाने के भय से चुप्पी मार गए थे! इससे पहले कि लंबी चुप्पी अपमानजनक लगे शहर शंकराचार्य सजग हो उठे, "नौजवानों की कोरोना-मंडली को विस्तार देने वाले सुझाव पर विमर्श किया जाएगा।" बोलने के बाद आगे उसकी भाषा धारदार हो गई, "वैसे आपके शिष्यों ने तो ग्रुप तैयार कर लिया है; फिलहाल आप उसे ही आशीर्वाद देते रहिए," फिर उन्हें निरुत्तर कर देने के ख्याल से बोले, "आपकी कोई और कार्य-योजना हो तो उसे भी साझा कर सकते हैं!" सर सोच में पड़ गए; कोरोना-मंडली को कार्यशील बनाने के अलावा उन जैसे व्यक्ति के पास दूसरा सुझाव और क्या हो सकता है? जेड सर जैसे प्रखर बुद्धिजीवी के लिए किसी समूह के सामने निरुत्तर हो जाना आत्मग्लानि को जन्म दे सकता था; बिना किसी चिंतन के ही उनके मुंह से निकल गया, "तत्काल एक आसान-सा धर्म-अनुष्ठान कर सकते हैं।"

"हां-हां, क्यों नहीं! किसी भी प्रकार के धार्मिक कार्य का हम सभी स्वागत करेंगे, बताइए तो!" जिला अध्यक्ष ने उत्साहित होकर कहा।

"भगवान राम के सभी भक्तगण अपने-अपने घरों में एक दिन नौ घंटे तक श्री रामचंद्रजी का आवाह्न करें, फिर..." सर आगे बोल ही रहे थे कि

शहर शंकराचार्य पंडित रामाधार की भौंहें तन गईं, "इससे क्या होगा?" बिना देर किए आंखें बंद कर सर ने निरंकारी भांति कहा, गर्दन ऊपर आसमान की ओर तानकर जैसे भगवान राम से वार्ता हो रही हो, "इससे भगवान रामचंद्र जी निश्चित रूप से खुश होंगे और भारत भूमि में फैल रहे कोरोना वायरस का विध्वंस कर डालेंगे!"

"सर आपको पता नहीं क्या, पूरे देश में पूजा-पाठ-इबादत पर पूर्ण पाबंदी होने के बावजूद हम लोगों ने रामघाट तीरे मानस पाठ चालू रखा है! इसलिए न कि कोरोना इस देश में फटकने न पाए," बोलकर जिलाध्यक्ष ने रामघाट तीरे की तरफ हाथ जोड़ लिए।

"मैं तो उससे भी आगे का अनुष्ठान बता रहा हूं, सभी घरों में लगातार नौ घंटे का अनुष्ठान!" भरसक कोशिश के बावजूद बोलने के दौरान सर के 'नौ घंटे' वाले शब्द में व्यंग्य तैर गया था।

"हम लोग तो यही जान रहे हैं सर कि आप किसी भी धर्म को मानने वालों में नहीं हैं; क्या आपको हमारे भगवान राम पर इतना विश्वास है!" जिला अध्यक्ष ने कहा, फिर संदेहयुक्त स्वर में पूछा, "और क्या आपको पूरा विश्वास है भगवान राम हमें कोरोना का भवसागर पार करा देंगे?"

"मुझे ही क्यों, पूरी दुनिया को भगवान राम पर आस्था है; हम भारतवासी को श्री रामचंद्रजी पर अटूट भरोसा है," इतना बोलकर सर ने शिवालय की ओर शीश नवाया, फिर बोलना जारी रखा, "और सबसे बड़ी बात, पिछले साल हम लोगों ने भगवान राम को उनकी जन्मस्थली का तोहफा भी दिया है, ऐसे में तो भगवान हम भक्तों को कोरोना से जरूर उबारेंगे!"

"हेडमास्टर सर! आपकी भाषा से लग रहा है आप भगवान राम की आस्था पर चोट कर रहे हैं!" रामनरेश ने कहा तो सामान्य ढंग से, पर उसकी आवाज क्रोध-वात से गुजरती जान पड़ी।

"मास्टर साहब! आपकी उम्र भी पैंसठ-सत्तर हो रही होगी, एक उम्र के बाद वचन-वाणी संयमित नहीं रह पाती है," शहर शंकराचार्य बोलने लगे तो जिला अध्यक्ष ने गौर किया, वहां खड़े भक्तजनों की आंखों में गुस्सा उतरने लगा है, उसने बिना देर किए सर से कहा, "जेड सर, आपकी सलाह पर हम लोग विचार करेंगे; अभी लॉकडाउन चल रहा है, आपका घर में ही रहना ठीक है।" बोलकर उसने सर को मुख्य द्वार की ओर संकेत किया। सर वहां से निकल चले, मन में मंथन करते हुए कि विज्ञानसम्मत और तर्कसम्मत युग

का आगमन भारत में कभी हो पाएगा क्या?

रामघाट तीरे के इकलौते लाउडस्पीकर की आवाज शिवालय की मीनार से टकरा रही थी...असगुन भयउ भयंकर भारी...

3

"मनोज भैया!" कोई बच्चा मनोज के घर की ओर दौड़ा चला आ रहा था, चिल्लाता हुआ। बरामदे में बैठे मनोज ने गौर से देखा, अरशद का छोटा भाई सिराज था; नजदीक आकर हांफते हुए बोला, घबराया चेहरा लिए, "अरशद भाईजान मस्जिद की सीढ़ी पर लुढ़क पड़े हैं!"

"अचानक ये क्या हो गया?" मनोज विस्मित था, हृष्ट-पुष्ट अरशद को भला क्या हो सकता है।

"सभी हैरान हैं, आखिर नमाज पढ़कर नीचे उतरते ही ऐसा क्यों हुआ?" बोलते हुए सिराज के चेहरे की रंगत उड़ती गई थी, "भाईजान को तो कोई बीमारी भी नहीं थी, फिर क्यों बेहोश से पड़े हैं? आप जल्दी चलो मनोज भैया।" बोलते-बोलते सिराज रुआंसा हो उठा।

"उसे तो फौरन किसी डॉक्टर के पास ले जाना पड़ेगा! इस लॉकडाउन में मरीज को एंबुलेंस के अलावा किसी और सवारी से ले जाना भी मुश्किल होगा?" सोच-विचार करने-सा चेहरा लिए मनोज ने कहा, फिर बोला, "मैं जिला अस्पताल में एंबुलेंस के लिए रिक्वेस्ट करता हूं; तुम अरशद के पास पहुंचो, मैं तुरंत आता हूं।" बोलकर वह कमरे के अंदर गया, झटपट तैयार होने।

एंबुलेंस के जिला अस्पताल पहुंचते ही वहां अफरा-तफरी मच गई। जो जहां बैठे-खड़े थे वहां से खिसकने-भागने लगे। अस्पताल कैंपस में लगा सायरन बज उठा। चारों ओर डरावना सन्नाटा पसर गया। एक पीपीई किटधारी अति सावधान मुद्रा में अंदर से आकर बरामदे में खड़ा हो गया, तनकर; रामघाट के प्रथम कोरोना का सामना-स्वागत करने। अरशद को एंबुलेंस से उठाकर मनोज और सिराज बरामदे की ओर बढ़ने लगे।

"इधर नहीं, प्लीज! इसे बायीं ओर वाले कोरोना वार्ड में ले जाइए!" किट के अंदर से आवाज छनकर आई, लगा बोलने में पूरे जन्म की ताकत लगी होगी।

"लेकिन यह कोरोना पेशेंट नहीं है, किसी अज्ञात बीमारी से होश खो बैठा

है!" मनोज ने किट धारी को विश्वास में लेने की कोशिश की।

"अज्ञात-अनजान बीमारी का मतलब कोरोना ही होता है!" किट धारी ने नम्रतापूर्वक कहा।

"मैं दिवा रामघाट का रिपोर्टर हूं, मनोज; यह पेशेंट हम लोगों का जिगरी दोस्त है, अरशद।" अपना परिचय देते हुए मनोज बोलता गया, "कोविड नाइनटीन के सिम्टम्स के बारे में मैंने काफी स्टडी किया है, कई अखबारों के लिए काफी कुछ लिखा भी है; अभी तो रामघाट में कोरोना का कोई केस आया भी नहीं है?" मनोज ने तर्कपूर्ण ढंग से समझाना चाहा।

"पत्रकार महोदय! किस दुनिया में रहते हैं आप!" पीछे आ खड़े हुए एक किट धारी ने चुटकी लेने जैसा कहा, आगे विश्वासपूर्ण स्वर में बोला "रामघाट में कोरोना के कुछ केस तो कई दिनों से फल-फूल रहे हैं! हां रिपोर्टेड नहीं हैं, तो नहीं हैं! इसलिए कह रहा हूं आपके वाले केस में कोरोना की संभावना से इनकार नहीं कर सकते!" पीछे वाले किट धारी ने संदेह व्यक्त करते हुए कहा, अधिकारी होने के स्वर में।

"वैसे आपकी नॉलेज का हम भी सम्मान करते हैं; आप ही बताइए यह बेहोश क्यों हो गया है?" सामने खड़े किट धारी ने शालीनतापूर्वक कहा।

"मुझे तो लग रहा है इसे हार्ट अटैक-सा कुछ पड़ा है।" अरशद के चेहरे पर गड़ते हुए मनोज ने कहा।

"यदि आपको मेरी सलाह उचित लगे फिर तो आपको फौरन किसी प्राइवेट अस्पताल जाना चाहिए," पेशेंट की ओर दो कदम बढ़ते हुए किट धारी बोलने लगा, "जिला अस्पताल को पूरी तरह कोरोना पेशेंट के लिए तैयार रखा गया है; यहां के सभी ओपीडी लगभग बंद हैं, सिर्फ इमरजेंसी चालू है, वहां भी कोई हार्ट स्पेशलिस्ट है नहीं!" अंतिम वाक्य तक आते-आते किट धारी की आवाज काफी मित्रवत हो गई थी। अब वहां पलभर भी रुकना व्यर्थ लगा मनोज को। एंबुलेंस ड्राइवर को उसने किसी और अस्पताल या प्राइवेट डॉक्टर के पास चलने की विनती की, अरशद की जिंदगी का वास्ता देकर।

"छोटे भाई, रामघाट में कोरोना भले अभी न आया हो, पर कोरोना की आंधी तो आ चुकी है न!" अस्पताल से बाहर निकलते ही एंबुलेंस ड्राइवर ने कहा, सिर पीछे की ओर तिरछा करके; फिर स्वर में अपनापन लाते हुए बोला, "जिला अस्पताल में ड्राइवरी करते हुए मुझे पंद्रह साल हो गए हैं; अभी शायद ही किसी अस्पताल का ओपीडी फुल टाइम वर्क करता हो, इमरजेंसी

और ओटी तो लगभग हर जगह बंद है!"

"फिर क्या करें ड्राइवर साहब, अभी तक भी इसकी आंखें नहीं खुली हैं!" मनोज घबरा उठा।

"किसी प्राइवेट क्लीनिक में ही चलना पड़ेगा; आप कहें तो इसी रोड पर एक-दो डॉक्टर के होम क्लीनिक में ट्राई करते हुए आगे बढ़ते हैं?" ड्राइवर ने पूछा, एंबुलेंस की गति धीमी करते हुए।

"श्योर-श्योर; बड़े दिमाग वाला बंदा है यह हमारा जिगरी दोस्त, इसकी जान बहुत कीमती है!" आवाज से लगा मनोज की घबराहट बढ़ती जा रही थी। मिनटभर आगे ही एंबुलेंस एक हवेलीनुमा अस्पताल के आगे रुकी। बड़ा और छोटा दोनों गेट बंद थे। उसने दो-तीन दफा प्रेशर हॉर्न दबाया।

"अरे ड्राइवर साहब? ऐसे समय में यहां कैसे आ गए!" पोर्च से बाहर झांकते हुए एक व्यक्ति ने ड्राइवर से कहा, चेहरे में आश्चर्य-आवरण फैलाए हुए जैसे वहां आना किसी कयामत से कम न हो।

"अरे क्या बताएं रामसेवक जी! एक पेशेंट बड़ा सीरियस है।" ड्राइवर ने विनती भाव से कहा।

"आपको तो पता ही है इस कोरोना में भला कौन डॉक्टर मरीज देखेगा, सभी तो अपने-अपने घरों में बंद हैं!" उस आदमी ने धीमी आवाज में कहा, जैसे कोरोना उसकी आवाज सुनकर भी दौड़ा आ जाएगा।

"अरे कंपाउंडर साहब, सारे डॉक्टर घर में ही दुबक लेंगे, तो दुनिया कैसे बचेगी!" ड्राइवर ने मनुहार करते हुए कहा।

"किसी परिचित डॉक्टर से फोन में सलाह ले सकते हैं; आजकल इलाज ऐसे ही हो रहा है, टेलीमेडिसिन से।" उसने पिंड छुड़ाने की गरज से कहा।

"यहां पेशेंट बेहोश पड़ा है, टेलीमेडिसिन क्या करेगा?" एंबुलेंस की खिड़की से मनोज खिन्न होकर बोला, फिर ड्राइवर से कहा, "चलिए किसी और डॉक्टर के पास चलते हैं।" ड्राइवर ने एंबुलेंस को स्पीड बढ़ा दी, गियर पर गियर चढ़ाते हुए।

पांच मिनट के अंदर ही ड्राइवर ने एंबुलेंस एक बड़ी कोठी के सामने लगा दी। एंबुलेंस आई देखकर अंदर से दो आदमी छोटे गेट से बाहर झांकने लगे; बॉडी कवर में भी सड़क की हवा में कोरोना का डंक लग जाने-सा सहमते हुए।

"प्रताप काका, आप? इस वक्त!" वह आदमी ड्राइवर के करीब आकर

अवाक था; उसने ड्राइवर को बॉडी कवर के अंदर भी पहचान लिया था।

"अरे रामप्रवेश, एक इमरजेंसी है!" एंबुलेंस से बाहर आते हुए ड्राइवर ने कहा, घरेलू अंदाज में; शायद रामप्रवेश नाम का आदमी उसका परिचित था।

"लेकिन अपना डॉक्टर साहब तो कोरोना काल में पेशेंट देखना बंद ही कर दिया है!" रामप्रवेश ने अफसोस जताते हुए कहा।

"डॉक्टर रामाकृष्णा के क्लीनिक में गया था, उसका कंपाउंडर भी यही कह रहा था!" ड्राइवर, जिसका नाम प्रताप के रूप में प्रकट हो चुका था, ने खीझते हुए कहा, नाक से घृणा वायु निकालते हुए।

"ऐसे डरावने समय में हर डॉक्टर अपना क्लीनिक छोड़कर घर पकड़ लिया है; मेरी ड्यूटी रिसेप्शन में होती है, मुझे तो आना ही पड़ता है!" रामप्रवेश ने अपना रोना रोते हुए कहा।

"इन प्राइवेट डॉक्टर लोगों में कोई नैतिकता होती है या नहीं!" एंबुलेंस से नीचे आकर मनोज बिफर पड़ा।

'अरे भाई साहब, यहां पर नैतिकता की बात ना ही करें तो अच्छा! आजकल किन लोगों में नैतिकता बची है! अफसरों में? मंत्री-संत्री में? ठेकेदारों में? बिजनेस मेन में?" रामप्रवेश ने अपनी हद में खड़े होकर कहा।

"रामप्रवेश, जरा अपने वाले डॉक्टर साहब को बोलो न इस सीरियस पेशेंट को तो देख लें।" ड्राइवर ने रामप्रवेश के पास जाकर घरेलू भाव-भाषा में कहा।

"काका, सच बताऊं," ड्राइवर के नजदीक आते हुए रामप्रवेश बुदबुदाने लगा। "हमारे डॉक्टर साहब तो हरगिज नहीं देखेंगे! इन्होंने तो सात साल की प्रैक्टिस में ही सात पीढ़ी के बराबर पैसा कमा लिया है!" रामप्रवेश ने चेहरे में घृणा भाव लाते हुए कहा, फिर कोठी की ओर देखकर बोला, "हमारे वाले साहब तो कोरोना से बहुत डरे हुए हैं, इन्हें लगता है यदि मर-मरा गए तो यह पैसा कौन भोगेगा!" फिर स्पष्ट आवाज में कहा, "मेरी जानकारी में सुपर सेवन वाले का इमरजेंसी चालू था कल तक, आज का कह नहीं सकता।" बिना देर किए प्रताप ने गाड़ी को बैक किया; आगे वाले चौराहे से बाएं ले लिया, सुपर सेवन की तरफ।

सुपर सेवन के इमरजेंसी में ड्राइवर और मनोज को कोई मशक्कत नहीं करनी पड़ी। दोनों के मुंह से कोई आवाज निकले बगैर ही स्ट्रेचर सीधे एंबुलेंस के पास आ गई थी। हां, 'पेशेंट का गार्जियन कौन है', की पुकार

होने पर सिराज को जरूर जाना पड़ा था बिलिंग काउंटर तक, दौड़कर। अल्लाह का शुक्र था, अब्बू के बाहर होने पर भी वह अम्मी से पचीस हजार रुपये साथ में लेकर ही निकला था। पैसा जमा करने भर की परेशानी उठानी पड़ी थी, बस। मनोज ने प्रताप ड्राइवर की ओर धन्यवाद के लिए हाथ जोड़ा; वॉलेट निकालकर नकदी पर नजर टिकाई। बिना देर किए प्रताप ने भी हाथ जोड़ दिए; एंबुलेंस स्टार्ट कर चल पड़ा सदर अस्पताल की ओर, चेहरे पर संतुष्टि-भाव लिए। नि:शुल्क एंबुलेंस सेवा होने के बावजूद प्रताप की हथेली में कागज के छोटे-बड़े नोट आ जाते थे, मरीज को यहां-वहां प्रेमपूर्वक लाने-छोड़ने के एवज में; आज संतुष्टि शुल्क लेने या मांगने से उसने परहेज किया था।

कोई आधे घंटे बाद मनोज और सिराज को अंदर बुलाया गया।

"आई थिंक यू आर इन दीवा रामघाट?" टेबल के दूसरी ओर फुल बॉडी कवर में बैठे डॉक्टर ने कहा, मनोज को पहचान लेने के सम्मान भाव से।

"यस सर, आई एम मनोज।" मनोज ने हाथ जोड़ते हुए खुशी जाहिर की।

"मिस्टर अरशद इज ऑलमोस्ट सेंसलेस! वी वांट टू नो एक्जेक्टली व्हाट हैपेंड टू हिम?" डॉक्टर ने आंखें छोटी करके पूछा।

"अभी सुबह वाली नमाज के बाद वह मस्जिद की सीढ़ी पर अचानक बेहोश हो गया।" मनोज ने इतना जानने भर के स्वर में कहा।

"आई थिंक इसके माइंड में कुछ दिनों से कोई उथल-पुथल चल रहा है, जिसने इसके हार्ट को इफेक्ट किया है!" डॉक्टर ने सिर हिलाकर कहा, किसी गहरे संशय में गोता लगाने के हाव-भाव से।

"हां सर एक बात मैं नोट कर रहा हूं; पिछले कुछ दिनों से वह कोरोना को लेकर काफी परेशान रहने लगा था, जब भी मिलता था वायरस के साथ-साथ सरकार-सरकार की रट लगाए रहता था!" स्मृति पर जोर देने की मुद्रा बनाते हुए मनोज ने कहा।

"हां डाकटर साहब!" अब सिराज ने मुंह खोला, किसी वाचक जैसा बोलता गया, "भाईजान तो कई सालों से देश-दुनिया के कई-कई मस्जिदों-मरकजों में जाते रहते हैं; इधर एक-डेढ़ महीने से घर पर ही थे, लेकिन एक सप्ताह से अब्बू-अम्मी से कोरोना-सरकार-पुलिस यही सब बातें किया करते थे, सुबह-शाम!"

"यस-यस फैमिली मेंबर कुड गिव एग्जैक्ट फीडबैक!" अब डॉक्टर

सिराज पर केंद्रित हो पूछने लगे, "और क्या-क्या बातें करता था तुम्हारा भाईजान?"

"सर, पांच-सात दिनों से भाईजान काफी डरे-डरे रहते थे!"

"वजह?"

"भाईजान को लगता था सरकार इनको जीने नहीं देगी, जल्दी ही जेल में डाल देगी!" धीमे से बोलकर सिराज ने दाएं-बाएं देखा, जैसे तस्दीक करना चाहता हो कहीं सरकार पीछे तो नहीं खड़ी है।

"यस मिस्टर मनोज, आई गॉट द पॉइंट! इट इज अ केस ऑफ ग्रीवियस साइकोलॉजिकल इंपैक्ट!" बोलकर डॉक्टर ने लंबी सांस छोड़ी, फिर कहा "मन-मस्तिष्क में डर-भय-आशंका या घृणा का वजन बढ़ते जाने से हार्ट में तेजी से एडवर्स इफेक्ट पड़ता रहता है; वि मे शे इट न्यूरोसिस, इससे बाहर आने में काफी समय लग सकता है, शायद वर्षों!" फिर उसने सिराज के कंधे पर थपकी देते हुए कहा, "अपने अब्बू-अम्मी को बोलना फिक्र ना करें, हम लोग हर कोशिश करेंगे कि अरशद साइकोलॉजिकल कोमा से जल्दी उबर जाए।"

चेंबर से निकलकर मनोज ने अरशद के एक-दो नजदीकी मित्रों को मैसेज भेज दिया; सिराज के साथ लाउंज में आकर बैठ गया, किसी और तीमारदार के आने की इंतजार में।

"मनोज भैया, भाईजान की क्या बीमारी बताया डॉक्टर साहब ने! साइकोलॉजिकल और न्यूरोसिस कौन-सी बीमारी होती हैं?" बैठते ही सिराज की बेचैनी बढ़ गई।

"साइकोलॉजिकल इंपैक्ट का मतलब होता है जब किसी के मन में किसी चीज के प्रति बहुत ज्यादा डर या घृणा समा जाती है तो ब्रेन में और हार्ट में काफी बुरा असर होने लगता है, ऐसा सोचते रहने वाला कभी-कभी बेहोशी में चला जाता है; या फिर हिंसक भी हो सकता है कभी, न्यूरोसिस के बारे में पूछना पड़ेगा!" मनोज ने सिराज को इत्मीनान से समझाया; अपने अनुभव से हिंसक वाला पहलू जोड़ दिया।

"फिर तो अब्बू-अम्मी, हमारे मोहल्लेवाले और हमारी जमात के बहुत सारे लोग इस बीमारी की जद में आ जाएंगे?" सिराज के मासूम चेहरे से एक निष्कपट बाल-प्रश्न निकला। मनोज उस प्रश्न का सिर-धड़-पूंछ खोजने लगा, मन-ही-मन। तत्काल कोई उत्तर देना मुश्किल हो गया था मनोज के

लिए; बस सिराज की तसल्ली के लिए इतना भर कहा, "किसी खास इंसान या इंसानों की जमात के मन में अनर्गल डर या भय पैदा करनेवाले मतिभ्रष्ट होते हैं, और मन में बेवजह डर और भय पालने वाले मतिहीन!" अरशद के बेहोश होने की खबर पाते ही रॉबर्ट सुपर सेवन पहुंच गया था, फटाफट। कुछ लोगों को हवा सूंघकर ही दिशा का भान हो जाता है। सिराज और मनोज की भाव-भंगिमा भांपकर ही रॉबर्ट माजरा समझ गया; सिराज के कंधे पर हाथ धरकर बोला, यकीन दिलाने-सा, "कौवे का काम कांव-कांव करने का, अपन नहीं डरने का; हिंदू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, हिंदुस्तान में सभी को बरोबर रहने का!" लाउंज में उसकी आवाज गूंज उठी, जैसे हिंदुस्तान के भविष्य का अहम दस्तावेज ऐलानिया अंदाज में पढ़ रहा हो।

4

गंगेटिक बेल्ट में दो दिनों से चल रही चक्रवाती हवा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। हंसामल की विशाल हवेली उस अंध-हवा से बेपरवाह थी। पर आज सुबह से ही वे बेचैनी में जी रहे थे। स्वराज रुंगटा जी ने लंबे लॉकडाउन के बारे में संभावना क्या जता दी उसकी तो जैसे नींद ही उड़ गई! रुंगटा जी उनके घनिष्ठ मित्र हैं उनसे भला मजाक क्यों करेंगे? वह मुंबई के उद्योगपतियों में शुमार हैं, शेयर कारोबार से भी करीब से जुड़े हैं। पूरे देश की अर्थव्यवस्था की नब्ज की पहचान है उन्हें, उनके अनुमान को यूं ही खारिज नहीं कर सकते। इसका मतलब है सरकार सच नहीं बता रही है! फिर तो इक्कीस दिन का लॉकडाउन रोगी को दी जाने वाली दवाई की पहली मीठी डोज है, उसके बाद कड़वी डोज आनी है!

हंसामल पर इस लॉकडाउन की दोहरी मार पड़ रही थी। तीनों फैक्ट्री और शोरूम तो 25 मार्च से ही बंद थे; नो प्रॉडक्शन, नो सप्लाई, नो ट्रांजैक्शन! पर; दो हजार के करीब बंगाली मजदूर अभी भी अंदर ही कैद पड़े थे। रामघाट और आसपास के जिले के सभी तीन-चार सौ मजदूर जैसे-तैसे घर की ओर निकल ही पड़े थे। लॉकडाउन ने पूरी दुनिया की तो जैसे किलेबंदी कर रखी थी, बिहारी-बंगाली मजदूर भला जाएं तो कहां जाएं! ये मजदूर कच्चे माल जैसे पड़े रहते तो कोई बात नहीं थी, थे तो सभी जीवित प्राणी! सरकार के निर्देशानुसार सभी मजदूरों के रहने-खाने का इंतजाम एंपलॉयर को ही करना था। सो तो वह करते ही आ रहे थे, बल्कि पूरे इक्कीस दिन का जुगाड़-पानी

का हिसाब मन में रखकर चल रहे थे। पर अब तो लॉकडाउन आगे और बढ़ते जाने का संकेत दे गए रुंगटा जी! सरकार की नीति के मामले में रुंगटा जी के संकेत सिर्फ संकेत भर नहीं होते, सच की लकीर होते हैं। हों भी क्यों नहीं, सरकार चला रहे मंत्रियों, आला अधिकारियों से करीबी कारोबार रहता है उनका। रुंगटा जी ठहरे उनके मित्र, सो संकेत दे दिया; पर संकेत से संसार नहीं चलता है न! लॉकडाउन और आगे बढ़ेगा तो? तो दो हजार मजदूरों को मुफ्त में खिलाते रहना आसान है क्या! खिलाना आसान नहीं है, भगाना भी तो टेढ़ा काम है; बस-ट्रेन बंद हैं तो उन्हें घर कैसे भेजें? यदि अपने बूते उन्हें उनके घर भेज भी दिया तो लॉकडाउन खत्म होने के बाद मजदूरों के बिना प्रॉडक्शन दोबारा शुरू कैसे होगा? यह सब बातें अपनी जगह पर हैं, लेकिन अब तो काफी मजदूरों ने घर जाने की जिद पकड़ ली है।

एक घंटे से हंसामल इसी चिंता में डूबे थे; बालकनी से कमरे, कमरे से बालकनी कदमचाल करते हुए। अचानक उन्हें एहसास हुआ बगल वाली बालकनी में सहज कब से अंदर-बाहर किए जा रहा है! उसने आवाज दी, "सहज तुम किस सोच में डूबे हो?" उत्तर देने की बजाय वह पीछे के बरामदे से होकर पापा के कमरे में आ गया; पापा को निरुत्तर करते हुए बोला, "हां डैड, आप भी तो किसी गहरी खाई में खोए हो।"

"पहले तुम अपनी तो सुनाओ, बताओ तो सही मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं!" सुबह से हंसामल के होंठों पर अब मुस्कान के त्रिभुज बनते दिखे थे।

"आप वाली प्रॉब्लम तो मैं दूर नहीं कर सकता, लेकिन आप मुझसे शेयर करके थोड़ा हल्का महसूस कर सकते हैं," फिर उसने सिर झटकते हुए कहा, "मेरी फिक्र तो समय की बात है, आप वाली के बाद उस पर चर्चा कर लेंगे।"

"लोग सही कहते हैं, आज के जमाने में बेटा गुरु बनता जा रहा है बाप का!" कहकर उसने सहज की तरफ रहस्यमयी आंखें तरेरीं, फिर बोले, "दरअसल संकेत मिल रहे हैं कि लॉकडाउन आगे और बढ़ेगा..." उनके बोलने के बीच सहज टपक पड़ा, "आगे सिर्फ बढ़ेगा नहीं, बल्कि काफी लंबा खिंचेगा!" बोलने के बाद भी सहज की आंखें डैड पर टिकी रहीं, जैसे कह रहा हो आपको हवा की दिशा और देश की दुर्दशा की पहचान नहीं है।

"ऐसे में दिक्कत आ रही है लेबर वाले ईसु पर; अभी प्रतिदिन लाख से

ऊपर का खर्च आ रहा है इनके रहने-खाने पर, वो भी विदआउट ऐनी वर्क," फिर लंबी सांस लेकर बोले, "यदि सभी निकल गए तो फैक्ट्री दोबारा चालू होगी कैसे!" बोलकर हंसामल पुत्र की ओर उत्तरापेक्षी ढंग से देखने लगे।

"यदि लेबर निकलना चाह रहा है तो आप जबरदस्ती रोकेंगे कैसे!" उत्तर देने के बजाय सहज ने और जटिल प्रश्न सामने रख दिया।

"तुम रोकने की बात कर रहे हो! एक जत्था तो आज सुबह निकल भी लिया बंगाल के लिए, चुपके से!" बोलकर हंसामल सिर हिलाने लगे, सिर पटकने के अंदाज में।

"घनघोर लॉकडाउन में किस सवारी से निकल गया!" किसी का शहर से बाहर निकलना घोर आश्चर्य से कम न था सहज के लिए।

"पैदल ही।" हंसामल ने सामान्य ढंग से कहा।

"पैदल! बंगाल में उन सबों का घर तो यहां से सात सौ किलोमीटर से कम न होगा!" 'पैदल' शब्द पर जोर पड़ते ही सहज सोफे पर से उछल पड़ा, जैसे अचानक सामने कोई काली गुफा दिख रही हो। पिता-पुत्र एक-दूसरे की तरफ एकटक देखने लगे, जैसे किसी बंद गली में आकर अटक गए हों। पुत्र की आंखें कहीं दूर गड़ी हुई दिखीं, उसने पूछ ही लिया "भविष्य की अर्थव्यवस्था के बारे में तुम्हारी दृष्टि क्या कुछ कहती है?"

"लॉकडाउन के बाद इकोनॉमी के हर सेक्टर का डाटा कलेक्ट कर रहा हूं, एक महीने के डाटा का माइक्रो एनालिसिस कर इकोनॉमिक विजन के फॉर्मेट में एक थीसिस तैयार करने में लगा हूं," उसने अपनी कार्य योजना बताई, फिर वजन देकर बोला, "सिर्फ लगा ही नहीं हूं फाइनडिंग्स का गंभीरतापूर्वक एनालिसिस कर रहा हूं; आनेवाले कई डिकेड्स में इंडियन इकॉनमी के लिए छोटे-छोटे मिरर जैसे हो सकते हैं ऐसे फाइनडिंग्स।" सहज की बातें काफी गंभीर होती जा रही थीं। हंसामल ने पुत्र को कभी इतना गंभीर होते नहीं देखा था; उन्हें अब पुत्र की चिंता होने लगी, तुरंत मुद्दा परिवर्तन करना चाहा, "दैट्स नाईस! आइ विल बि वेटिंग फोर द रिसर्च वर्क; अब अपनी सुनाओ।" सहज के कंधे पर हल्का धौल जमाते हुए उन्होंने कहा, "सुबह से ही किस गम में डूबे जा रहे हो, गर्लफ्रेंड को लेकर कोई परेशानी तो नहीं आ गई!"

"गर्लफ्रेंड नहीं डैड, बॉयफ्रेंड!" उसने बिना मुस्कुराए कहा।

"ब्वॉयफ्रेंड! व्हाट?" पिता को करंट का झटका-सा लगा।

"यस डैड, बॉयफ्रेंड।" सहज ने कहा, फिर लंबी सांस लेकर बोला, "रामू ग्वाला अभी तक दिल्ली में ही अटका पड़ा है, इधर बस्ती में उसकी माँ बेहाल है, उसकी माँ ही क्यों अब तो पूरी बस्ती ही पस्त है।"

"बस्ती में तो सभी गरीब टाइप के ही लोग रहते हैं, लॉकडाउन में उन्हें परेशानी हो रही होगी!" हंसामल जी का बस्ती की तरफ जाना कम होता है, सो अपनी जानकारी के हिसाब से कहा।

"सिर्फ परेशानी मत कहिए डैड, बस्ती की हालत पतली होती जा रही है!" बोलते हुए सहज के ललाट पर कई तिरछी रेखाएं उभरती गईं, "वहां रहने वाले सभी दिहाड़ी वाले, रिक्शा-ठेले वाले, भाजी वाले टाइप के हैं; आज लॉकडाउन का दसवां दिन है, अब तो सभी के चूल्हे बुझते जा रहे हैं..." सहज ब्यौरा दिए जा रहा था, तो पिता ने टोका, "पर सरकार ने तो पैसे-अनाज देने की बात कही है!"

"हां सरकार की घोषणा हुई है, कल से शायद अमल भी हो रहा है,"बोलकर सहज ने हाथ लहराते हुए कहा, "जिंदगी सिर्फ हजार-हजार रुपये और पांच-दस किलो आटा-चावल भर नहीं है न डैड!"

"मैंने सुना है पीएम केयर्स फंड में काफी डोनेशन मिल रहे हैं देशभर में, उससे शायद इनका कुछ भला करे सरकार।" हंसामल ने उम्मीद जताई।

"वो फंड कहां-कैसे खर्च करेंगे यह तो सरकार तय करेगी।" बोलकर सहज सामने सुनसान सड़क को देखने लगा, आगे कहा, "होना यह चाहिए, एक या कई जिलों से मिलने वाले डोनेशन को खर्च करने की ऑथरिटी वहां की किसी लोकल कमेटी को दे दी जाती।"

"तुम्हारा सुझाव तर्कसंगत और व्यावहारिक है," कहकर कुछ याद करते हुए बोले, "मैंने अखबारों में पढ़ा था पीएम केयर्स फंड में डोनेशन के लिए लोगों को मॉटिवेट करने के लिए सेमि ऑफिशियल टाइप की एक कमेटी बनाई गई है रामघाट में, यहां के चीफ कमिश्नर ऑफ इनकम टैक्स उस कमेटी के ऑर्गेनाइजर हैं, उसमें जेड सर का भी नाम देखा है मैंने!"

"अच्छा!" सहज की आंखों में उम्मीद के अनगिनत बल्ब जल उठे, "फिर तो मैं सर के पास चलता हूं अभी!" बोलकर वह निकलने को हुआ। हंसामल को लगा इस कोरोना-काल में सहज कहीं खांटी जनसेवक न बन जाए! उसे रात में पत्नी द्वारा कही बात याद आई, पीछे से आवाज दी सहज को, "सर से मिलने के बाद जरा मम्मी की बात के समाधान पर भी सोचना।"

"कौन-सी बात!" सहज फिर से नजदीक आते हुए बोला।

"कह रही है लॉकडाउन में घर सूना-सूना लग रहा है; और यह भी कह रही है शायनी के साथ बाहर-वाहर घूमता ही है तो बहू बनाकर..."

"आप लोग भी न डैड!" सिर खुजलाते हुए वह बाहर की ओर निकल गया।

5

मंदिर प्रकरण सर के लिए खासा अपमानजनक था; बावजूद इसके दीये जलाने वाली बात पर उनकी रुचि में कमी नहीं आई थी। अखबारों में इसे दीये जलाना कहा जा रहा था। सर को यह सिर्फ दीये जलाना भर नहीं लग रहा था, इसका प्रभाव अनुभव करते हुए अंत:प्रज्ज्वलन-सी होने लगी उनके अंदर '...सच है कि रामघाट में कोरोना नहीं है, देश में तो है! जहां कोरोना के मरीज हैं वहां पर मेडिकल टीम अपनी जान की परवाह किए बगैर कोरोना से लोहा ले रही है। पूरे देश में इस वक्त पुलिस की टीम चौक-चौराहों-गलियों में लॉकडाउन लागू करवाने के लिए दिन-रात मुस्तैद है, कोरोना से बेखौफ होकर-जैसे दुर्दांत अपराधी के सामने बगैर किसी हथियार के डटे हों! उन कोरोना वॉरियर्स के लिए एक आम नागरिक घर बैठे-बैठे और क्या सहयोग कर सकता है भला? हौसला अफजाई के लिए नौ मिनट दीपक प्रज्ज्वलन से पूरे देश में जुझारूपन का एक सकारात्मक वातावरण तो बनेगा..., सोचते-सोचते उन्होंने आंखें बंद कर लीं; कल्पना करने लगे दीये के प्रकाश में नहाते रामघाट को निहारना कितना रोमांचकारी होगा! '...विशाल अंधेरा?' बंद आंखों में उन्हें रामघाट के उत्तर-पूर्वी भूभाग में अंधकारमय विशाल भूभाग दिखा; '...अरे यह तो बस्ती वाला इलाका है! बंद आंखों में इस पूरे क्षेत्र में घनघोर अंधकार का क्यों आभास हो रहा है?...'

गेट में बाइक आकर रुकने की आहट से उनकी चिंतन-शृंखला टूटी। महंगी बाइक वाला यह कौन हो सकता है? ओ! पीछे बैठी लड़की तो शायनी है, फिर तो यह हेलमेट धारी सहज ही होगा! अंदर आते ही दोनों ने सर के पैर छुए। "गॉड ब्लेस बोथ ऑफ यू!" उनके आशीर्वाद देने के इन पांच शब्दों में समाए भाव से लगा जैसे पूरा कलेजा निकालकर उन दोनों को देना चाह रहे हों। दोनों को जी भर देख लेने के बाद बोले, खुशी से सराबोर होकर "इस लॉकडाउन में पुलिस ने तुम दोनों को आगे बढ़ने कैसे दिया?"

"हमारी कोरोना-मंडली को कलेक्टर ऑफिस ने पास इशु किया है।" सहज ने गले में लटका पास दिखाते हुए कहा।

"कोरोना-मंडली पास से सिर्फ आ-जा रहे हो या कुछ हो भी रहा है?" मंडली द्वारा अब तक किए गए कार्यों की जानकारी के ख्याल से सर ने पूछा।

"इसी सिलसिले में आपके पास आए हैं सर," शायनी बोलने लगी तो उसके अंदर की ऊर्जा से मुख-मंडल दीप्त हो उठा, "भले ही अभी तक रामघाट कोरोना से अछूता है, लेकिन हमारी मंडली गली-गली में बचाव के उपाय हेतु जन-जागरूकता अभियान जोर-शोर से चला रही है; अब हम लोगों को लग रहा है बस्ती की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है।"

"अब तो बस्ती के घरों में अनाज का स्टॉक खत्म हो गया है, उनके बचे-बचाए हजार-पांच सौ भी खर्च हो चुके हैं," आगे बोलते हुए सहज की आंखें निराशा में डूबती गईं, "आगे तो परिवार की गाड़ी खींचना मुश्किल हो जाएगा बस्तीवालों के लिए!"

"क्यों! अनाज और पैसे तो दे रही है सरकार।" सर ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"हां, कल से जन वितरण प्रणाली वाले डीलरों ने अनाज बांटना शुरू तो किया है, पर उन अनाजों की काफी शिकायतें मिल रही हैं; खाने लायक नहीं बता रहे हैं बस्ती के लोग!" शायनी ने कहा, फिर सिर नकारते हुए बोली, "खुद कई घरों में जाकर देख आई हूं, गेहूं और चावल काफी पुराने स्टॉक के लग रहे हैं।"

"कल से लोगों के खाते में हजार-हजार रुपये आना शुरू तो हुआ है, पर पैसा निकालना पहाड़ लांघने जैसा हो रहा है।" सहज ने कहा, फिर उंगलियों के घुमाव से घोर अराजकता का संकेत करते हुए बोला, "बहुत सारे ब्रांच को तो पता ही नहीं है कि बैंक खुला है कि बंद है!"

"फिर क्या सोचा है तुम लोगों ने आगे के लिए?" उपाय तलाशने की खातिर सर ने पूछा।

"हमारी मंडली ने तय किया है रामघाट के सक्षम लोगों से कंट्रीब्यूशन लेकर बस्ती की सहायता करेंगे," सहज ने कहा, आगे बोलता गया, "हम लोगों ने इस पर काम शुरू भी कर दिया है; काफी लोग दलील दे रहे हैं, वे तो पीएम केयर फंड में दान दे चुके हैं! अब हम उनसे प्रूफ तो नहीं मांग सकते हैं न कि पीएम केयर फंड में डोनेशन की रसीद दिखाओ!" सहज

ने कहा तो सर ने जोर का ठहाका लगाया; उसने महसूस किया बरसों बाद ठठाकर हँस पाए हैं। दोनों गंभीर बने रहे। सर को ग्लानि हुई, उनके शिष्य जनहित के जरूरी काम में समर्पित हैं और एक वो हैं कि निठल्ले जैसे हँसे जा रहे हैं! अपने को संभालते हुए बोले, "फिर आगे कैसे बढ़ा जाए?"

"हम लोगों को पता चला है पीएम केयर फंड में डोनेशन दिलाने के लिए रामघाट में एक एडहॉक कमेटी बनी है," शायनी बोलती गई, "इनकम टैक्स के चीफ कमिश्नर इसके ऑर्गेनाइजर हैं, और आप भी इस कमेटी में हैं सर!" बोलकर वह सर की तरफ आशाभरी नजरों से देखने लगी।

"हां, मैंने तो अखबारों में ही पढ़ा है, कोई कमेटी रामघाट के लिए बनी तो है; और मेरा भी उसमें नाम है," अनजान जैसा पंजा घुमाते हुए सर ने आगे कहा, "पर किसी ने अभी तक मुझे बताया नहीं है, न ही किसी का फोन आया है अभी तक!"

"हम लोगों का मंतव्य है, बल्कि मांग है पीएम केयर फंड में रामघाट से जितना डोनेशन जाता है उसका बड़ा भाग रामघाट जिले के गरीबों के लिए खर्च हो," सहज ने कहा, फिर बड़ी राहत मिलने जैसा सांस लेकर बोला "इससे बस्ती का बड़ा भला हो जाएगा ऐसे दुर्काल में।"

"ऐसा करते हैं हम तीनों अभी का अभी चलते हैं, चीफ कमिश्नर के घर पर," सर ने कहा तो उनके तन-मन में उत्साह का संचार होता दिखा, आगे बोले, "उनका आवास तो गांधी मार्ग के टी पर है; चीफ कमिश्नर साहब को मैं अच्छी तरह जानता हूं, कई मंच हम लोगों ने साथ-साथ साझा किए हैं; पहले मैं उनसे बात कर लेता हूं, अभी मिलने के लिए कंफर्टेबल हैं कि नहीं," बोलकर उन्होंने मोबाइल में नंबर खोजकर डायल कर दिया; मोबाइल स्पीकर मोड में रख दिया।

'...हेलो मिस्टर जेड! हाउ आर यू इन दिस हिस्टोरिकल लॉकडाउन...' उधर से कड़क आवाज आई थी, जैसे मुंबई के किसी म्यूजिक स्टूडियो में रिकॉर्ड की हुई आवाज हो!

"आई एम फाइन, थैंक यू।" सर ने जवाब दिया।

'...एंड व्हाट आई कुड डू फॉर यू प्लीज टेल मी फ्रेंकलि...' चीफ कमिश्नर की विनम्र आवाज थी; सहज और शायनी अंदर से प्रफुल्लित हो उठे, अब तो बस्ती की किस्मत बदल जाएगी!

"पीएम केयर फंड के बारे में आपसे कुछ डिस्कस करना है, आना

चाहता हूं।" सर ने और भी विनम्रता से कहा।

'...नो ईसू, मोस्ट वेलकम; जब भी आना चाहें आ जाइए, यदि अभी फ्री हैं तो अभी...' चीफ की आवाज सुनकर सहज और शायनी की इच्छा हुई अभी गले मिल लें! सर की उपस्थिति ने दोनों को रोक लिया।

"बस, अभी पहुंचा, पांच मिनट में!" चीफ से बोलकर सर ने दोनों को आंखों से चलने का इशारा किया। दोनों उठकर गेट की तरफ बढ़ चले। पीछे से सर ने अपनी स्कूटी निकाल ली।

पीतल के चमचमाते बड़े बोर्ड में जड़े सुनहरे शब्द 'पंकज अग्रवाल, मुख्य आयुक्त, आयकर, भारत सरकार'; पढ़कर सहज को लगा इतना लंबा-चौड़ा बोर्ड तो जैसे उत्तर से दक्षिण पूरे रामघाट को अपनी गिरफ्त में लिया हुआ है! उसे याद भी आ गया, एनुअल रिटर्न भरने के दरमियान बिजनेस फर्म के सीए जब पूरे खर्च का हिसाब समझाते हैं पापा को तब कोड वर्ड में चीफ कमिश्नर का भी नाम लेते हैं।

"आपका स्वागत...स्वागत।" उन्हें गेट के अंदर आते देख चीफ साहब ने ऊपर की भव्य बालकनी से कहा, अपने दोनों हाथ उतनी ही भव्यता से हिलाते हुए। बंगले की बाहरी सज्जा-छज्जा, पुष्प वाटिका, मखमली लॉन देखकर तीनों दंग रह गए! तभी पोर्टिको में प्रकट आवाज से तीनों चौक पड़े; "तो साथ में यंग पेयर भी है, वेलकम न्यू जनरेशन ऑफ इंडिया!" पचास-पचपन उम्र, लंबे-छरहरे बदन और काले घुंघराले बाल वाले व्यक्ति ने चहकते हुए कहा, जैसे कोई तीस साल का नौजवान हो! उसे देखकर शायनी को लगा डार्विन अपनी थ्योरी में यह जोड़ना शायद भूल गए होंगे कि सरवाइवल ऑफ द फिटेस्ट की दौड़ में अकूत धन-दौलत वाले ही हमेशा आगे रहेंगे।

"ये लोग हमारे स्कूल के प्रॉडक्ट हैं; इन लोगों ने कोरोना वायरस की चुनौती से निपटने के लिए कोरोना-मंडली का गठन किया है।" वार्तालाप की सौम्य शुरुआत करते हुए सर ने कहा।

"पर अभी तो कोरोना वायरस है नहीं रामघाट में! फिर कैसी चुनौती?" चीफ ने कहा तो सामान्य शब्दों में, पर उसके हर शब्द में व्यंग्य की सान चढ़ी हुई थी।

"अभी हम लोगों ने गली-गली में जनजागृति अभियान चला रखा है सर।" शायनी उत्साहित होकर बोली।

"और अब प्लानिंग है रामघाट शहर और गांव के गरीब तबकों की मदद की जाए, खासकर बस्ती एरिया में इस वक्त मदद की बहुत जरूरत है।" सहज सीधे विषय पर आना चाहता था।

"आई विल गिव हंड्रेड पॉइन्ट टू सच अ फंटास्टिक आइडिया; तो रामघाट के धन्नासेठों के पीछे लगिए ढंग से सप्ताह-दस दिन, इतना माल..." 'माल' शब्द मुंह में आते ही चीफ साहब की जीभ दांतों तले स्वत: दब गई, फिर बिना किसी झेंप के बोलते गए, "मेरा कहने का मतलब है इतना डोनेशन तो इकट्ठा कर ही लोगे कि यहां के गरीबों का कोरोना-यज्ञ निकल जाएगा।" बोलने के बाद उसके चेहरे में असीम बेफिक्री दिखने लगी, जैसे कोरोना संकट अब खत्म हो चुका हो।

"चीफ साहब, तो आपने इसे कोरोना-यज्ञ नाम दिया हुआ है!" सर ने होंठों पर असहमति की मुस्कान लाते हुए कहा।

"हां-हां, समझिए सरकार ने एक तरह से इसे यज्ञ-हवन फॉर्म में ही ढाल दिया है! मैं तो सरकारी मुलाजिम हूं, मुंह ज्यादा खोल नहीं सकता" इतना कहने के बाद आगे चीफ की आवाज धीमी हो गई, "राष्ट्र के नाम आत्मविश्वासपूर्ण संबोधन दर संबोधन, बाईस मार्च को जनता कर्फ्यू, आज रात नौ बजे नौ मिनट तक दीप-प्रकाश के साथ शक्ति की उपासना! आखिर यह सब यज्ञ जैसा ही तो है!" बोलकर बड़ी हो चुकी उसकी आंखें तीनों पर बारी-बारी से गड़ गईं; फिर पलक झपकाकर, सिर झटकाकर बोले, "हां तो बोलो कोरोना-मंडली मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं; क्या किसी करोड़पति-अरबपति को फोन-फान कराना है?" बोलकर वह दया निधान जैसे दिखने लगे।

"सर हम लोगों ने कई बड़े घरानों को टच किया था, सभी कह रहे हैं वे तो पीएम केयर फंड में भेज चुके हैं।" शायनी संभलकर बात रख रही थी।

"अरे हां! पीएमसीएफ भी तो बना है!" चीफ साहब ऐसे बोले जैसे नींद से जागकर बोल रहे हों, फिर जेड सर की तरफ आंखें मिचकाईं, "आप भी तो उस कमेटी में हो मिस्टर जेड।"

"मैंने अखबार में ही पढ़ा है; आपको ज्यादा पता होगा, क्योंकि आप तो ऑर्गेनाइजर हैं!" सर ने चीफ साहब के अंदर का हनुमान जगाना चाहा।

"अरे भई, मुझे तो इसका एबीसीडी तक नहीं पता अभी तक!" चीफ साहब ने दोनों हाथों की दसों उंगलियां घुमाते हुए ऐसे मुंह बनाया जैसे यहां

से कहीं दूर किसी दुनिया में उसका बसेरा हो; फिर रहस्य से पर्दा उठाने के अंदाज में बोलते गए, "मुझे तो लगता है पार्टी वालों की पहल पर अर्ध सरकारी किस्म की कमेटी को खड़ा किया गया है, ताकि रामघाट के वेल ऑफ लोगों को मॉटिवेट किया जा सके, ज्यादा-से-ज्यादा डोनेशन के लिए।" बोलकर वे निस्पृह दिखने लगे।

"हमारे शहर से जितना अधिक कंट्रीब्यूशन जाएगा रामघाट के इमेज के लिए अच्छा ही होगा।" शायनी बोली, वार्तालाप की कड़ी जोड़ती हुई; उसके चेहरे में अपने शहर के लिए गौरव-भाव की झलक दिखने लगी।

"अरे बच्चे! ट्रूथ ऑफ द टाइम से अभी तुम लोग काफी दूर हो; मैं पूछता हूं ऐसे समय में कौन डोनेशन देना चाहेगा केयर फंड में! टाटा-बिरला भले दे दें, वरना नौकरी-पेशा वाले और आमलोग कहां से देगा?" होंठों को गोल-गोल-सा बनाते हुए चीफ साहब ने कहा; आगे बोलते हुए उसकी आंखें उसके चेहरे में उग आए नैराश्य भाव के साथ ताल देने लगीं, "भई, आपने सरकारी कर्मचारियों का डीए तक रोक लिया एक साल के लिए, एक-एक दिन का सैलरी काट रहे हो, कारोबारियों का कारोबार ठप है, ऐसे में कौन देगा आपको डोनेशन? किसान? मजदूर? भिखमंगे?" फिर सहज की तरफ देखते हुए फट पड़े, "आप जैसे नौजवानों को तो सीधे पार्टी वालों से मिलकर बात करनी चाहिए; पीएम केयर्स फंड में आया डोनेशन तो रामघाट में खर्च होना ही चाहिए!" किसी पर चढ़ाई करने की भाव-भंगिमा में उसने बात समाप्त की, जैसे सरकार के खुले मुंह को प्रश्ननुमा कॉर्क से बंद कर दिया हो।

"मेरा भी नाम इस कमेटी में दिख रहा है, पर मैं यह पूछने की धृष्टता नहीं कर सकता कि आपने डोनेशन दिया कि नहीं?" सर ने मित्रवत मुद्रा बनाकर कहा।

"आपको पूछने की जरूरत नहीं पड़ेगी; आई एम स्ट्रेट फॉरवर्ड परसन, मैंने कोई डोनेशन नहीं दिया है, और ना ही दूंगा।" आगे बोलते हुए उसने आंखें बंद कर लीं, "अरे भई, आपके रामघाट में प्रभु राम की सदैव असीम कृपा रही है, वो तो हर कष्टों को हरने वाले हैं!" बोलकर उसकी आँखें खुलीं और सामने कहीं शून्य में अटक गईं।

"प्रभु राम की कृपा खास-खास लोगों को ही मिल पाती है, नीचे के तबके के लोगों को तो बिल्कुल नहीं, उन्हें तो बाहरी सपोर्ट की दरकार होगी,

इसके लिए डोनेशन का माहौल बनाना जरूरी है।" सर अपने आशावादी रुख पर कायम थे।

"देखो मिस्टर जेड, आप यहां के पॉपुलर फेस हो," सर पर नजर गड़ाकर चीफ साहब ऐसे बोलने लगे जैसे अपने मातहतों को मॉटिवेट कर रहे हों, "हनसामल जैसे दस-बीस लोगों को अप्रोच करेंगे तो बस्ती एरिया में कुछ बांटने भर इकट्ठा हो ही जाएगा।"

"सर मैं तो पापा को तैयार कर लूंगा कि पूरी बस्ती में पांच दिनों तक खाने के पैकेट बंटवा दें।" सहज ने आत्मविश्वास के साथ कहा, सीने में हाथ रखते हुए।

"पापा! कौन?" बोलकर चीफ ऐसे देखने लगे सहज को जैसे चंदा मांगने के लिए निकले बेटे का बाप तो भिखमंगा टाइप का ही होगा।

"जी हंसामल लोढ़ा, मेरे पापा।" सहज ने हाथ जोड़ने-सा करते हुए कहा।

हंसामल का नाम सुनते ही चीफ की पलकें जमीन की ओर झुक गईं; और उसके चेहरे की रंगत बदलती दिखने लगी। आगे के लिए तीनों को कोई शब्द नहीं सूझ रहा था, लगा जैसे यहां आना व्यर्थ ही गया। चुप्पी से चीफ के माथे पर वजन बढ़ने लगा। अयाचित वार्तालाप से बाहर निकलने की गरज से कहा, "ऐसा करो बेटा जिस दिन बस्ती में तुम्हारी मंडली राहत सामग्री बंटवाएगी मेरे दफ्तर से भी आटा-चावल के कुछ पॉकेट उठवा लेना।"

"दफ्तर से?" सर किंकर्तव्यविमूढ़ दिखे।

"अरे मास्टर जी! आपने भी तो स्कूलों में पूजा, प्रभात फेरी वगैरह के लिए चंदा इकट्ठा कराया होगा, वैसे ही हम लोग अपने ऑफिस में कनिष्ठ अधिकारियों से इंतजाम करवाते हैं," उसने अधिकारपूर्ण ढंग से कहा। पलभर की चुप्पी के बाद बोले, "मिस्टर जेड माफी चाहता हूं, अभी तक मैं आप लोगों को चाय भी नहीं ऑफर कर पाया हूं, दरअसल कोरोना संक्रमण को देखते हुए हमने घर से सारे सरकारी कर्मचारी हटा दिए हैं! सिर्फ एक कांट्रेक्चुअल स्टाफ को रखा है, मैडमजी हर घंटे उसका हाथ धुलवाती रहती हैं, सैनिटाइजर लगाने के लिए भी मैं बोलता रहता हूं जब-तब।" फिर माथे पर हथेली पटकते हुए बोले, "डेली नौ बजे तक आ जाता है; पर आज ग्यारह बजने वाला है पता नहीं कहां मर गया!"

"थैंक यू सर, हम लोग घर से नाश्ता करके निकले हैं; यह सोचकर आए थे कि पीएम केयर फंड में रामघाट से जो डोनेशन मिल रहा होगा उसका शेयर यहां रामघाट में ही खर्च करवाने का तरीका निकाला जाए।"

आशा-निराशा के बीच डोलती हुई शायनी बोली।

"अरे बेटा, जब मैंने खुद नहीं दिया है डोनेशन अभी तक, तो मैं किस मुंह से बात करूं किसी से!" चीफ ने कहा; उसके चेहरे में ग्लानि की शिकन तक नहीं थी।

नौकर टाइप का एक अधेड़ व्यक्ति गेट के अंदर दाखिल हुआ, सहमा हुआ शरीर लेकर। तीनों की नजर उधर उठ गई।

"अरे कामचोर! सुबह से ही कहां गायब था, किचन कौन संभालेगा? दरवाजे पर भले लोग एक घंटे से बैठे हैं, इन्हें चाय-पानी कौन कराएगा; तुम्हारे घर की कंगाली पर तरस खाकर मैंने तुम्हें कांट्रेक्चुअल में लगवा दिया है, पर अब तो तुम धन्नासेठ बने फिर रहे हो!" लॉन से ही चीफ बाघ जैसा दहाड़ उठा, जैसे उस बेचारे को हिरण भांति झपट्टा मारकर अभी खा जाएगा।

"..." उस बेचारे की घिग्घी-सी बंध गई; पर नीचे देखने के बजाय दूर सड़क की तरफ देखने लगा। उसकी चुप्पी देखकर चीफ का पारा और चढ़ता गया, "उधर देश-दुनिया की तरफ क्या देख रहा है! मेरी तरफ देखकर बता सुबह से कहां नेतागिरी में लगा हुआ था?"

"नहीं सर, कोई नेतागिरी नहीं कर रहा था; किसी से मिला भी नहीं।" उसने चीफ की आंखों में आंखें डालकर कहा। चीफ ने गौर किया दो टके का नौकर तो पहली बार आंखों में आंखें डालकर बात कर रहा है, वह भी आगंतुकों की उपस्थिति में! वह अंदर से थोड़ा हिल-सा गया; आवाज में बिना कोई झुकाव लाए प्रश्न का हथोड़ा फिर से चला दिया, "फिर कहां गया था?" बोलकर चीफ आश्वस्त हो गया, अब वह बिना कोई जवाब दिए सीधे किचन की तरफ भागेगा!

"सर, मैं दस बजे ही बैंक पहुंच गया था; पीएम केयर फंड में दो सौ पचास रुपये जमा करके आ रहा हूं।" उसने कहा तो लगा जैसे लॉन में कोई उल्का पिंड आ गिरा हो! लॉन में बैठे सभी सज्जनों पर सरसरी निगाह डालते हुए वह अंदर की ओर बढ़ चला, सीना ताने। चीफ को काटो तो खून नहीं! वह कुर्सी से उठकर अंदर की ओर जाने को हुए; तीनों से बिना आंखें मिलाए, सिर्फ इतना कहते हुए, "आगे हमें अवगत कराते रहिएगा।" तीनों एक-दूसरे का मुंह देखने लगे; 'अवगत कराते रहिएगा' मतलब? तीनों चुपचाप गेट से बाहर आए। बाइक के पास आकर खड़े हो गए, जैसे दुनिया में किसी ओर कोई रास्ता न निकलता हो।

"मैं इस डेली वेजेज वाले नौकर को नमन करता हूं, क्या तमाचा मारा है चीफ कमिश्नर को!" सर ने दाएं हाथ से बंगले के किचन की तरफ सैल्यूट मारने जैसा करके कहा।

"सर, इनकम टैक्स के असिस्टेंट कमिश्नर से लेकर चीफ कमिश्नर तक सभी की औकात पता है मुझे!" आगे सहज ने नथुने से घृणा-घुलित वायु निकालते हुए कहा, "डैड तो हर साल इन लोगों..." आगे बिना कुछ बोले सब कुछ बोल देने की मुद्रा बनाई सहज ने। बाइक में बैठ चुके सहज को सर ने कहा, "वैसे चीफ कमिश्नर ने पार्टी वालों से मिलने की बात कहकर एक आइडिया तो दे ही दिया है! आज तो दीपक-प्रज्ज्वलन है, कल पार्टी वालों से मिलकर बस्ती के बारे में चर्चा कर सकते हो तुम लोग।"

6

कल वाली धूलभरी हवा भी आधी रात से लंबी नींद में गई हुई जान पड़ रही थी, पर एक उदय था कि ठीक से न सो पाया था; दरअसल वह कल से ही अपने को नियंत्रित करने में लगा हुआ था। समय सामान्य होता तो अभी तक पूरे शहर को अपने संगठन के झंडे से पाट दिया होता; आखिर वंचितों के हक में इससे बड़ा जनहित का मुद्दा और क्या हो सकता था! लेकिन कोरोना तो जैसे उसके पैरों में बेड़ी बनकर पड़ा था। उसके वर्कर्स तो हमेशा उसके आदेश के भूखे रहते हैं, जरा भी आह्वान कर दें तो अभी का अभी प्रशासन की नाक में दम कर दें! लेकिन कोरोना संक्रमण के समय में जनाक्रोश रैली, यहां तक कि शांतिपूर्ण मार्च को भी प्रशासन कुचल देगा, सोशल डिस्टेंसिंग का भरपूर पालन करने के बावजूद भी। निशांत एसपी इतना ढीठ है कि कोविड नाइनटीन की धारा में सबको अंदर कर देगा, बेवजह।

मन को लाख समझाने के बावजूद उसके अंदर विद्रोह-ज्वार जोर मारता रहा आज सुबह तक; अब विरोध-ज्वर पर आकर अटक गया था। कोरोना हो या प्रशासन की सख्ती, गरीबों के साथ हो रहे क्रूर मजाक को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था न! यदि इस नाइंसाफी के खिलाफ कुछ भी नहीं किया गया तो शोषितों-वंचितों-दलितों-पिछड़ों के लिए उसके संगठन द्वारा लड़ी जा रही लड़ाई का क्या अर्थ रह जाएगा! दो दिन में उसने कलेक्टर से दो बार, डीएसओ से तीन बार, नगर तहसीलदार से तो न जाने कितनी दफा और एमपी साहब से भी एक बार बात कर चुका; पर नतीजा क्या निकला! सभी

के मुंह से सिर्फ आश्वासन की धार ही तो फूटी, 'अभी कोरोना के समय में कई तरह की समस्याएं हैं, अगले वितरण में गेहूं-चावल की क्वालिटी सुधर जाएगी।' उसके मन में फिर से विद्रोह की भट्ठी जल उठी, '...अरे भई अगले वितरण तक गरीब लोग पेट को टांग दें घर की छत पर! सब सालों तक पैसा पहुंचता है, तभी तो किसी ने भी कार्रवाई की बात नहीं करी; जन वितरण प्रणाली के डीलरों द्वारा बांटे गए गेहूं-चावल-चना को उसने खुद अपनी बस्ती के घरों में देखा है, जानवर भी ना खा पाए ऐसे सड़े अनाज को! एक तो प्राइम मिनिस्टर की घोषणा के सप्ताहभर बाद मिला है अनाज, ऊपर से खाने लायक भी नहीं! सभी की रोजी-रोटी बारह-पंद्रह दिनों से बंद है, एक रुपया भी नहीं है लोगों के हाथों में। हजार-हजार पाने की आस में सभी शांत पड़े रहे अपने-अपने घरों में, अब कल से पैसा आया है तो बैंक ही बेगाना हो चला है। नहीं, एक साथ इतनी सारी धांधलियां तो बिल्कुल बर्दाश्त करने लायक नहीं हैं...' सुबह से अभी दोपहर तक घर से रेलवे केबिन के बीच वह दस बार चक्कर काट चुका था; अभी तक आक्रोश व्यक्त करने का कोई माकूल तरीका उसे सूझ नहीं रहा था।

"अरे मामू! आप कब से एक ही रास्ते में घूमे जा रहे हो, घूमे जा रहे हो?" साहू जी की दुकान से दीया लेकर लौट रही रिंकी ने उदय का मजाक उड़ाते हुए कहा, फिर दीया दिखाते हुए बोली, "मंजरी मौसी ने भी तो दीया खरीद ली होगी; देखना तो, रात को नौ मिनट तक अपना मोहल्ला कितना जगमग हो उठेगा!" नौ वर्षीय नन्हीं-सी रिंकी आंखें चमकाते हुए अपने घर की तरफ दौड़ पड़ी। कितनी प्यारी बच्ची है रिंकी! बिचारी के सर से पिता का साया उठ गया है; छत ढलाई के समय नौ मंजिल से गिर पड़ा था, मुंबई में। अब अभागिन मालती अपने भाई के घर ही रहती है बस्ती में। पूरे मोहल्ले के लड़के रिंकी के लिए तो जैसे मामा ही हैं; सौ मामा वाली लड़की! वह रिंकी में खोया ही था कि उसकी याददाश्त में एकाएक बिजली-सी कड़क उठी...अरे वह तो भूल ही गया था, आज तो रात नौ बजे नौ मिनट तक पूरे देश में दीये से रोशनी होनी है! उसके अंदर से उमंग-भरा प्रतिउत्तर छलक आया...हां-हां, रोशनी तो होनी ही है! उसकी आंखें सिकुड़ती गईं; जिनके घर खाना-खजाना भरा हो वे जलाएं दीये, जिनके घर का चूल्हा ही बुझ गया है वह क्यों और भला कैसे जलाएं दीये? अकेले में भी उदय विहँस पड़ा; सुबह से जिस फॉर्मूले की खोज में था वह हाथ लग गया! बिना देर किए उसकी

उंगलियां मोबाइल में मशक्कत करने लगीं।

शाम पांच बजे पूरा रामघाट पुलिस गाड़ियों के सायरन से सिहर उठा। जन-जन के रोंगटे खड़े हो गए, कहीं रामघाट के बाहर रास्तों पर लगे बैरियर को तोड़कर कोरोना का जत्था शहर में तो नहीं घुस आया! पुलिस की गाड़ियां बस्ती की दिशा में मुड़ती गईं; तो क्या कोरोना ने सबसे पहले गरीबों पर ही हमला बोला है? शहर के चिंतनशील जन सोच में पड़ गए, ये कैसा हमला है? धन-संपदा वाले घरों को छोड़कर झोंपड़ियों में धावा बोला है!

थोड़ी ही देर में पूरा सरकारी अमला बस्ती में आ धमका, आगे-आगे कलेक्टर की गाड़ी, पीछे-पीछे एसपी की। उनके पीछे पार्टी वर्कर्स का जत्था; बस्ती एरिया में पार्टी के उज्ज्वल भविष्य रामनरेश के नेतृत्व में। आना तो जिलाध्यक्ष भी चाह रहे थे, पर इससे नई समस्याएं खड़ी हो सकती थीं; पूरे रामघाट के पार्टी वर्कर्स टूट पड़ते बस्ती की तरफ! और फिर वाद-विवाद में बस्ती की स्थिति बिगड़ सकती थी, तब पार्टी मुख्यालय को संतुष्ट करना मुश्किल होता। रामनरेश ने जिला अध्यक्ष को आश्वस्त किया, बस्ती का मामला उसे संभालने दिया जाए। अध्यक्ष मान तो गए थे, पर बस्ती के बाहर लाला हरदयाल के चौथे मंजिल की छत से स्थिति पर नजर रखे हुए थे; बीच-बीच में साथ लाए दूरबीन से पल-पल के बदलते दृश्य को देखते हुए।

"हां तो बताइए आपका क्या प्रॉब्लम है!" अपनी झोंपड़ी के आगे खड़े महल भारती से पूछा कलेक्टर साहब ने।

"..." वह चुप; झोंपड़ी की ओर मुंह फेरकर अंदर झांकता रहा। कलेक्टर साहब की समझ में कुछ नहीं आ पाया। उसने खिन्न होकर एसपी की तरफ देखा; एसपी ने महल को हड़काते हुए कहा, "झोपड़ा के अंदर कोई लाश-वास छिपा रखा है क्या!" महल फिर भी निस्पृह बना रहा; मुड़कर अपनी झोंपड़ी में गुम हो गया। लंबे-लंबे कलेक्टर और लंबे-छरहरे एसपी भी झुकते हुए झोंपड़ी के अंदर दाखिल हुए। आठ गुना नौ का एक कमरा और उससे लगा एक खुला किचन। पत्नी चूल्हे के पास सिर पकड़कर बैठी थी, सूप में पड़े चावल से कुछ बीनते हुए। दोनों बच्चे माँ के आंचल को बार-बार अपने मुंह में लिए सिसक रहे थे। हंडी-भगोने को देखने से लगता था कल से घर में कुछ पका नहीं है। चूल्हे का दृश्य बता रहा था कुछ दिनों से जला भी नहीं था। पिलपिले बच्चों को देखकर एसपी से रहा न गया, महल पर बरस पड़ा, "बच्चों को भोजन क्यों नहीं खिला रहे हो,

यदि बच्चों को कुछ हो गया तो तुम पर बाल-अपराध का मुकदमा दर्ज हो जाएगा!" बेवजह पति का अपमान देखकर पत्नी सुनीला से रहा न गया; सूप का सारा चावल एसपी-कलेक्टर के सामने उड़ेल दिया। एसपी भड़क उठा, "यह क्या बदतमीजी है, अनाज बर्बाद करने का धारा लग सकता है आप लोगों के खिलाफ!" सुनीला ने बिना देर किए दोनों हथेलियों में चावल के दाने भर लिए, दोनों के सामने एक-एक हथेली बढ़ा दी, लगभग आंख के पास ले जाती हुई! शुरू से ही चुप बैठा महल को लगा बड़े अधिकारियों के पूछने पर चुप रहना गुस्ताखी है, कुछ तो बोलना चाहिए; उसने पत्नी से कहा, "चावल को साहब लोगों के आंखों के इतने नजदीक भी मत लाओ कि कुछ दिखाई ही न दें।" मामला अब कलेक्टर की समझ में आ चुका था। आंखें नीचे किए झोपड़े से बाहर निकल लिए; एसपी अचरजभरी निगाहों से कलेक्टर की तरफ देखने लगा, आखिर मामला है क्या?

गली में आकर कलेक्टर साहब अगली झोंपड़ी के पास खड़े हो गए। अब तक पूरी बस्ती गली में उमड़ आई। भीड़ के बीच से मेघ गर्जन-सी आवाज आई, "कितने झोंपड़े में आप झांककर देख पाएंगे कलेक्टर साहब! हर झोंपड़ी की यही दुर्दशा है।" आवाज के साथ ही ध्वनि गति से उदय भी कलेक्टर के सामने आ खड़ा हुआ, गर्दन ताने हुए जैसे पूरी बस्ती उसकी दृष्टि पटल पर हो। अब तक मौन भीड़ से गगनभेदी नारे लगने लगे। "...पेट में दाना नहीं तो बस्ती में दीया नहीं..."

"सोशल डिस्टेंसिंग प्लीज, साइलेंस प्लीज," एसपी की ठसकदार आवाज भीड़ के ऊपर तैर गई। भीड़ में फिर से सन्नाटा छा गया! उसे अपने पर गर्व हुआ, उसकी आवाज ही काफी है ऐसे-वैसे से निपटने के लिए। एसपी अब पुलिस जिप्सी के हुड पर खड़ा होकर बोलने लगा, "बस्ती के सभी राष्ट्र भक्तों से अनुरोध है किसी के बहकावे में न आएं; बस्ती में दीया बहिष्कार वाली खबर दिल्ली तक पहुंच चुकी है, दीया बहिष्कार राष्ट्र का घोर अपमान होगा और यह रामघाट की उज्ज्वल छवि के खिलाफ भी जाएगा।" वाक्पटुता के साथ बात खत्म कर एसपी ने भीड़ में नजर दौड़ाई, कि देखते हैं कौन हिमाकत करता है दीया बहिष्कार करने की। उदय की मुट्ठी हवा में उठी; भीड़ से, '...दाना नहीं तो दीया नहीं...' का नारा और जोरदार ढंग से आसमान की ओर उठने लगा! कलेक्टर साहब सहम उठे, कहीं यह आग आज रात नौ बजे तक पूरे रामघाट में न पहुंच जाए! यदि पार्टी वाले दीया समर्थन में

सड़क पर उतर आए तो स्थिति और विकट हो सकती है! उसने समझदारी दिखाते हुए उदय से आग्रहस्वरूप कहा, "ऐसे खुले में देर तक तर्क-वितर्क करना ठीक नहीं है, हम लोग कहीं बैठ लें।" कलेक्टर के पीछे खड़े रामनरेश ने सुझाव दिया, "औघड़नाथ मंदिर का प्रांगण ठीक रहेगा।" बिना देर किए उदय ने प्रतिकार कर दिया, "हम मंदिर-मस्जिद वाले नहीं हैं, हम तो कहीं जन-मंदिर में ही बैठकर वार्ता कर सकते हैं!"

'...यहीं पीछे रामू भैया का शेड ठीक रहेगा...' भीड़ के बीच से किसी का सुझाव था। बिना देर किए कलेक्टर साहब ने कहा, "हां-हां! कहीं भी बैठ लें, मेरे लिए सब जगह एक जैसी हैं।"

"यह तो खूबसूरत शेड है, पूरब दिशा से खुला हुआ हवादार भी!" रामू के शेड में बने मचान पर बैठते ही कलेक्टर को राहत महसूस हुई, अब तो कोई सम्मानजनक समाधान निकल ही आएगा।

"इसमें तो मवेशी की गंध आ रही है।" 'निशांत कुमार, आईपीएस' बैच धारी ने नथुनों से हवा अंदर-बाहर करते हुए कहा, ड्रग्स विशेषज्ञ भांति।

"है तो यह मवेशी शाला ही, लेकिन इतना साफ-सुथरा शेड तो किसी गौरक्षक वालों के गौशाला की भी नहीं होगी!" कलेक्टर और एसपी के सामने नारियल पानी के गिलास रखती हुई मंजरी बोली; शेड की बात करते हुए उसके अंदर रामू की याद जीवंत हो गई। मंजरी को देखते ही कलेक्टर साहब को याद आया, 25 मार्च को सभागार में शांति समिति की बैठक में इस लड़की ने भी तो कुछ मुद्दे रखे थे; वो क्या मुद्दे थे? उसे अब याद नहीं आ रहे थे। वक्त के तकाजे को समझते हुए वे तारीफ करने से चूकना नहीं चाहते थे; उसने मंजरी की बात में जोड़ा, "बिल्कुल सही बोल रही हैं आप युवा शक्ति," फिर बांस की पेंचदार बुनावट से बने शेड की तीनों दीवारों पर नजर फिराते हुए बोले, "वैसे इतना स्वच्छ शेड है किस शौकिया आदमी का!"

"सर ये रामू ग्वाला का है, है तो वह मेरे साथ का ही लड़का, लेकिन खुराफाती दिमाग का है," रामनरेश ने कहा, फिर एसपी के कान के पास धीमे से बोला, "अच्छा है वह दिल्ली में ही अटका है, नहीं तो यहां का हंगामा शांत होने के बजाय विकराल हो जाता!" एसपी ने स्मरण में जोर डालते हुए कहा, "अरे हां! वही न जिसने होली से पहले हवाई जहाज बंद कराने के लिए एयरपोर्ट से लेकर पार्टी कार्यालय और थाने तक हंगामा काटा था!"

"हम सभी तो आज भी उस बात पर कायम हैं, यदि फरवरी-मार्च में

ही हवाई जहाज की लगाम अपने हाथ में ले ली जाती तो आज दीये जलाने के दिन नहीं देखने पड़ते!" दिनेश ने कहा; मंजरी को लगा रामू की कमी पूरी हो रही है।

"रामनरेश भैया, सबके अंदर असली जिगर...खैर रहने दो।" आगे कुछ बोलते हुए रुक गई मंजरी।

"अब रहने भी दो, घर की बातें काफी हो गईं; अब काम की बात करें।" उदय मुख्य मामले पर आना चाहता था; कलेक्टर से मुखातिब होकर बोला, "बस्ती में आज दीया नहीं जलेगा, यह बहिष्कार नहीं, बल्कि हमारे स्वाभिमान, सम्मान और विचारधारा का मुद्दा है।"

"कैसी विचारधारा?" एसपी की भृकुटी तन गई।

"हां-हां, जरा मैं भी तो सुनूं किस विचारधारा की बात हो रही है!" शेड के अंदर पैर रखते ही जेड सर बोले। उनके अचानक आने से सभी विस्मित थे। वे ताड़ गए, बिना देर किए बोले, "मुझे पता चला है कि बस्ती ने दीप प्रज्ज्वलन का बहिष्कार कर दिया है!" फिर चारों तरफ बैठे-खड़े लोगों पर नजर फिराते हुए बोले, "उस दिन कलेक्टर साहब की मीटिंग में सभी ने सहमति जताई थी कोरोना के समय सहयोग-सद्भाव बनाए रखेंगे; मेरी तबीयत सुबह से ही थोड़ी ढीली है, फिर भी जैसे ही खबर मिली मैंने परवेज को बुलाया और भागा-भागा यहां आया हूं; हां तो उदय तुम किसी विचारधारा की बात कर रहे थे?"

"सर, हम लोगों को प्रधानमंत्रीजी की किसी घोषणा से विरोध नहीं है, हमारी पीड़ा तो बस इतनी है कि दस दिन से बस्ती बेहाल है; दो-तीन दिन से कई घरों में चूल्हे नहीं जले हैं, बच्चे बिलबिला रहे हैं," बोलते-बोलते उदय की आंखों में आंसू झिलमिलाने लगे; मंजरी भी उसकी ओर खिसक कर रुआंसा हो उठी; उदय ने संभाला अपने को, फिर बोलने लगा, "कल से गेहूं-चावल मिलना शुरू हुआ है, लेकिन वह तो मवेशी को भी खिलाने लायक नहीं है; न जाने कितने सालों बाद गोदाम से निकाला गया है, या हो सकता है डीलर लोगों ने अनाजों में हेराफेरी कर ली है; मैं कहता हूं जब दस दिनों से बस्ती का हाल जानने वाला कोई नहीं था इस दुनिया में, तो आज हमें कृपा करके दीया-बाती का मतलब मत सिखाइए!" शेड में खामोशी छा गई, जैसे सभी किसी नेक इनसान की लाश को श्रद्धांजलि देने आए हों!

"रिमोट विलेज का कंडिसन मोस्ट क्रिटिकल होने का, मार्जिनल फार्मर

एंड लेबर के किचन में खाने को अब कुछ नहीं बचने का; पीडीसी फूड ग्रेन लो क्वालिटी में आने का," रॉबर्ट की आवाज दूर से ही पहचान में आ गई; बाइक से उतरकर वह रोड से बोलता हुआ ही शेड की ओर बढ़ने लगा। शेड के बाहर दो स्टार वाले ने उसे रोका।

"अरे! ये तो वही है जो विमेंस टाईप एनजीओ के साथ घूमता रहता है गांव-गांव में!" डीएम के बगल में खड़े तहसीलदार ने उसे पहचानते हुए कहा, ऊंची आवाज में; फिर डीएम साहब से बोले, "सर! ये लोग हमारे गांवों की बदहाल तस्वीर पेश करता है देश-विदेश में!"

"तो जनता को भड़काने की दफा में दे मारिए इनके खिलाफ एक एफआईआर, आज ही!" सपाट चेहरे में लड़कपन की आड़ी-तिरछी रेखाएं उगाते हुए एसपी ने कहा; फिर रॉबर्ट पर खौफनाक नजर डालते हुए पूछा, "तुम्हारा यहां बस्ती में क्या काम है जी? तेरे को इधर नेतागीरी नहीं करने का।" बोलकर एसपी ने उंगली से बाहर जाने का संकेत किया।

"हरगिज नहीं, रॉबर्ट हम लोगों का असली हनुमान है! यहां के गांवों के लिए ये लोग जितना कर रहे हैं उतना तो कोई सरकार भी नहीं कर पाई है।" उदय ने रॉबर्ट की ओर देखते हुए कहा। अब एसपी साहब की ओर देखकर बोलने लगा, अपनी हुंकारवाली शैली में ही, "यह बात अब किसी से छिपी नहीं है, शासन-सरकार जनता के लिए कम, अपने लिए ज्यादा करती आई है, आजादी के पहले भी और आजादी के बाद भी!" शेड से सड़क तक सन्नाटा पसर गया, मिनट-दो मिनट के लिए।

सन्नाटे को उदय ने ही तोड़ा, "कलेक्टेर साहब मैं तो शुरू से ही भ्रष्टाचार-कदाचार-अनाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ता आया हूं, मैं पूछता हूं क्या कोरोना संकट में भी आपके मातहत भ्रष्टाचार से तौबा नहीं करेंगे? फिर स्वच्छ सरकार का नारा..." आगे उदय की बात को रामनरेश की ऊंची आवाज ने रोक दिया, "उदय भैया हम लोग आपके विचारों की कद्र करते हैं, लेकिन हमारी सरकार पर उंगली उठाने से पहले आप यह तो बता देते कि पहले की सरकारों में भ्रष्टाचार आसमान पर था कि नहीं!" रामनरेश की ऊंची आवाज का जवाब उदय ने धीमी आवाज से दिया, "अनुज रामनरेश! तुम मेरा मुंह खुलवाना ही चाहते हो तो ध्यान से सुनो, डीएम, एसपी साहब से माफी चाहता हूं; शासन-प्रशासन में भ्रष्टाचार कहीं कम नहीं हुआ है, मैं तो जन-जन से जुड़ा रहता हूं, मुझे दिल्ली का ज्यादा नहीं पता, पर इतना

पता है पार्टी चंदे के नाम पर इतने पैसे इकट्ठा हुए हैं जितना पहले कभी नहीं हुआ! दूर की छोड़ो यहां थाने में, तहसील में लेन-देन पहले से घटा है या बढ़ा है? बताने की जरूरत नहीं है! पीडब्ल्यूडी और नगर निगम की स्कीम में इंजीनियरों-अफसरों-नेताओं का कट कितना बढ़ गया है सबको पता है!" उदय को हथेली से संकेत करते हुए सर ने कहा, "अभी कोरोना के समय में इन मुद्दों का समाधान नहीं हो सकता।" सर की बात को भी काटते हुए उदय तार्किक हो उठा, "सर, आप कोरोना का तर्क दे रहे हैं? तो बताइए क्या कोरोना के समय भ्रष्टाचार को सातवें आसमान पर पहुंचने देना चाहिए! रामघाट में दुकानदार लोग मास्क-सैनिटाइजर-दवाई-जरूरी काम वाली हर चीजों की मनमानी कीमत वसूल रहे हैं, सब-के-सब कोरोना को कोरोना-कांड बना डालने पर पिले हैं।" फिर सर की तरफ एक कदम बढ़ते हुए बोले, "आपके बगल वाले शर्मा स्टोर ने तो दस दिनों में ही इतना कमा लिया जितना सालभर में कमाता है! आपको तो पता है पकड़े जाने पर क्या-क्या हुआ! दूर की छोड़िए बस्ती की ही बात कीजिए, परसों को यहां का बच्चा अग्रवाल मेडिको से सैनिटाइजर लेकर भाग रहा था तो थाने में क्या गत बना दी पुलिस ने उन बच्चों की! यहां के लोगों ने कैसे-कैसे इंतजाम कर छुड़ाया है हम सब जानते हैं।" उदय की बातों की दिशा भांपते हुए एसपी उठकर जाने को हुए; कलेक्टर से बोले, "आज रात नौ बजे तो पूरे रामघाट में पुलिस पेट्रोलिंग का पुख्ता इंतजाम करना है, पांच बजे एक मीटिंग बुला रखी है, मुझे आज्ञा दें; मेरे साथ आया छह गुना दो बल यहीं तैनात रहेगा, इंस्पेक्टर कोतवाली सहित।" कलेक्टर ने घड़ी देखी, अभी तो चार बीस ही हुए हैं! पर ताड़ गए, एसपी यहां जनता के बीच हो रहे तर्क-वितर्क की दिशा को सूंघ चुके हैं; उसने सिर और आंखों के मिलान से उसे चले जाने का संकेत किया।

एसपी के चले जाने से कलेक्टर को लगा, हो न हो बस्ती का माहौल अब और अनियंत्रित हो जाए। उसने जेड सर से अनुरोध किया, "जेड साहब, आप ही कोई रास्ता निकालिए।"

"देखो उदय, प्रधानमंत्रीजी के नौ बजे नौ मिनट तक दीप प्रज्ज्वलन वाले आइडिया पर देश के अंदर खासी बहस छिड़ी हुई है, कि यह शक्ति या ऊर्जा देवी का आवाह्न है या कोरोना से लड़ने के लिए एकजुटता?" फिर तर्जनी सीधी करते हुए बोले, "लेकिन एक बात तो सत्य है, पूरे देश में

कोरोना वॉरियर्स इस वक्त अस्पतालों में चौक-चौराहों में निडर होकर कोरोना का सामना कर रहे हैं।" आगे दार्शनिक मुद्रा में उन्होंने कहा, "ऐसे में दीप प्रज्ज्वलन की मंशा तो पवित्र जान पड़ती है; हां, यदि पार्टी के लोग इसे एक बड़ी पॉलिटिकल माइलेज के रूप में ले रहे हैं, फिर तो यह अपवित्र मंशा है! फिर भी मैं कहूंगा हम सभी को दीये जलाने चाहिए, इससे पूरे देश में कोरोना वॉरियर्स का मनोबल बढ़ेगा।" सर की तर्कपूर्ण बातों की बाड़ से उदय का निकलना असंभव हो गया। उसने मंजरी और महल की तरफ देखा; फिर परवेज पर नजर टिका दी। परवेज के कुछ बोलने से पहले ही रामनरेश ने दोस्ताना हमला कर दिया, "अरे ये लोग तो सात जन्म में भी दीये ना जलाएं! यदि ये लोग दीये जला दें तो मैं गारंटी देता हूं प्रभु राम आज रात ही कोरोना को समूल नष्ट कर देंगे!" देह में आग लगने वाली बातें सुनकर भी परवेज ने संयमित स्वर में जवाब दिया, "हमारे घरों में तो दीये जलाने की तैयारी हो रखी है!"

खुलेआम धार्मिक विभेद वाली बातें सुनकर उदय का पारा चढ़ने लगा, "पार्टी वालों के घरों में दीया और तेल का इंतजाम है तो वह जलावें दीये, यहां तो जेब ही खाली है तो दीया कहां से खरीदें, और चूल्हा ही बंद है तो तेल भला कहां से लाएं!" इतना बोलकर उदय ने विमर्श-वार्ता का एक तरह से अंत ही कर डाला। कलेक्टर साहब ने आस नहीं छोड़ी, "ऐसा करते हैं तहसीलदार को बोलता हूं एक घंटे के अंदर बस्ती के हर घर में दीया, बाती और तेल बंटवा दें।" कलेक्टर की बात सुनकर उदय के अंदर एक टीस-सी उठी, "कलक्टर साहब! आपके मुंह से ऐसी बात सुनने की उम्मीद नहीं थी! ऐसा लग रहा है आप लोग पार्टी के सरकारी नेता बन गए हैं! यह तो बस्ती के लिए जले पर नमक छिड़कने जैसा है!" फिर चारों ओर उंगली फिराते हुए बोले, "हमारे घरों में खाने को दाने नहीं हैं और आप दीया-बाती बंटवा रहे हैं! ढंग का अनाज तो आप बंटवा नहीं पाए, तो क्या आपको लग रहा है हम दीया-बाती की खैरात स्वीकार कर लेंगे!" बोलते-बोलते उदय की आंखों में लालिमा उतरने लगी; कलेक्टर साहब को अपनी भूल का अहसास हुआ, "मैं अपनी बात वापस लेता हूं, और यह भी प्रॉमिस करता हूं अनाज की अगली खेप वैसी होगी जैसी खुले मार्केट में होती है; बात रही आज दीया जलाने की, इस पर अब मैं कुछ नहीं कहूंगा।" कलेक्टर उठने को हुए; तभी मंजरी नींबू-पानी बनाकर ले आई।

घोर असहमति पर सर कब से मंथन कर रहे थे; उनके दिमाग में सहमति का संकरा रास्ता दिखा, "तुम सच कह रहे हो उदय, बस्ती के लोग दीया-बाती कहां से लाएंगे भला!" फिर उदय पर नजर गड़ाकर बोले, "एक काम तो कर सकते हैं, दीये के बजाय मोबाइल से भी रोशनी दिखा सकते हैं नौ मिनट! प्रधानमंत्रीजी के आह्वान में दीया-मोमबत्ती-टॉर्च-मोबाइल की रोशनी सब शामिल हैं।" जेड सर के अभेद्य तर्क से निकलना मुश्किल था उदय के लिए। उसने सहमति देते हुए कहा, "चलिए, मोबाइल से रोशनी कर देते हैं! आजकल बस्ती में बिजली भी पहले जैसी घंटों-घंटों नहीं कटती है, अब तो मोबाइल चार्ज ही रहता है, फिर तो नौ मिनट क्या कलक्टर साहब कहें तो नौ घंटा रोशनी दिखा सकते हैं!" उदय के इतना कहते ही गली में नारा लगना शुरू हो गया, '...बस्ती जिंदाबाद...' 'मिनी इंडिया जिंदाबाद...' 'असली भारत जिंदाबाद...'

जेड सर और उदय की तरफ हाथ जोड़ते हुए कलेक्टर साहब ने विदा ली। तब उसे अनायास मसूरी के वो दिन याद आ गए, जब उनके इंस्ट्रक्टर पब्लिक डेडलॉक को सुलझाने की बारीकियां समझाते थे! परवेज की बाइक में बैठते हुए सर खुश नजर आ रहे थे; यह बात दीगर है कि संपूर्ण रामघाट को दीये से जगमग देखने की कल्पना में कमी आने लगी थी। बच्चों के जिंदाबाद नारे के बाद बस्ती में अब भीमरवा का नारा चालू हो गया था, पीछे से आ रही उसकी आवाज को वे बखूबी पहचान पा रहे थे...तब नहीं-जब नहीं-अब नहीं-कभी नहीं-कुछ नहीं-हरगिज नहीं...

7

5 अप्रैल; दिन का पारा भले ही एकाएक चढ़ गया था, शाम शांतिमय दिख रही थी। रात्रि नौ बजकर नौ मिनट पर 'दीप प्रज्ज्वलन-कार्यक्रम' संपन्न हो गया, आनंद-उत्सव की समां बांधते हुए। शहर शंकराचार्य द्वारा निर्धारित लक्ष्य, यानी कि पूरे रामघाट में सिर्फ दीये की रोशनी होना शत-प्रतिशत पूरा नहीं हो पाया था। इक्के-दुक्के मोहल्ले में मोमबत्ती से और कुछ जगहों पर टॉर्च से भी रोशनी किए जाने की सूचना थी। बस्ती एरिया में मोबाइल से ही रोशनी दिखाने की पूर्व शर्त मंजूर कर ली गई थी। कुछ मोहल्लों में छोड़े गए पटाखे शांतिपूर्ण सभागार में उचक्के द्वारा खांसने-खखारने-जैसे थे। कुल मिलाकर रामघाट के लिए यह एक अभूतपूर्व आयोजन था। नौ मिनट के वे लम्हे!

जैसे रामघाट कोई शहर नहीं, बल्कि आत्माधारी एक बड़ा जीव हो! लोगों ने राहत की सांस ली, अब तो रामघाट को कोरोना के खतरे से मुक्ति मिल गई है। सभी ने देश के प्रधानमंत्री के लिए दिल से सम्मान व्यक्त किया; विकट घड़ी में ऐसा बेजोड़ आइडिया!

जेड सर तो छत पर साढ़े आठ बजे से ही जम गए थे। वह अद्‌भुत दृश्य उनकी आंखों में कैद होता गया था! पौने नौ के बाद शहर के घरों की रोशनियां फटाफट बुझती जा रही थीं, जैसे नौ साल का बच्चा अपने बर्थडे केक में लगी नौ मोमबत्तियों को फूंक मारकर बुझा रहा हो। नौ मिनट तक लगभग पूरे शहर को दीये की रोशनी में झिलमिलाते देखकर सर को लगा जैसे कोई विशाल आकाशीय पिंड हो; और धरती के इस भूखंड में घटित हो रहे अभूतपूर्व नजारे को देखने की खातिर ही धरती के निकट तक चला आया है! नौ मिनट बाद जब दीये के प्रकाश का अवसान होने लगा, सर की आंखों में आंसू आ गए, अपनी कर्मभूमि पर गर्व करने के आंसू! उस गर्व वेला में वे खो गए; दस बजे तक छत पर ही रहे, अनुभूति के आनंद में डूबे हुए...भारतवर्ष की एकता कितनी तो बेमिसाल है!

कोरोना-मंडली के सदस्यों ने भी महसूस किया उनके छोटे जीवनकाल का वह अद्‌भुत नजारा था, जैसे पृथ्वी ग्रह पर घटित कोई आकस्मिक भौगोलिक घटना! उन्हें महसूस हुआ पूरा भारतवर्ष कश्मीर से कन्याकुमारी और कोहिमा से कच्छ तक एक दीप-माला सा है; कोई भेद नहीं, मतभेद नहीं! सभी को साक्षात दिखने लगा, पूरे देश की इस चट्‌टानी एकता के सामने कोरोना का कद अब एक चींटी के बराबर भी नहीं रह गया है! सभी का मन गद्‌गद हो उठा; इस एकजुटता के बल पर देश तो अब कोरोना ही क्यों किसी भी बड़े-से-बड़े शत्रु को पराजित कर देगा! उन सभी के मन में देश के नेता के लिए मौन सम्मान एकाएक विराट हो उठा। उनके अंदर से अंतर्वाणी-सी आने लगी, सच में भारत-जैसे चुनौतीभरे देश के नेता के अंदर ऐसी क्षमता और कला होनी जरूरी है जब जरूरत पड़े पूरे देश को एक कर सकें! उन्हें अब कोई संदेह नहीं रहा कि 14 अप्रैल को लॉकडाउन खत्म होते ही कोरोना अपने प्रस्थान पथ पर रोता-गिड़गिड़ाता मिलेगा! फिर पूरा देश मिलकर ऐसे ही किसी आयोजन द्वारा उसका विदाई गीत गाएगा। मंडली के सामने बस एक छोटी-सी चिंता रह गई थी, 14 अप्रैल तक बस्ती के और रामघाट जिले के गांवों के गरीब लोगों का पार-घाट लग जाए, किसी तरह।

अब एक नया विश्वास भी पनपा उनके अंदर, इस भव्य दीपोत्सव के बाद गरीबों के चूल्हे के लिए अब तो कोई भी सेठ या संगठन मना नहीं करेगा।

परवेज तो सच में सबसे ज्यादा भावुक हो उठा था। उन्हें स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगा अब तो देश के राजनीतिक दलों के मतभेद मिट गए से दिख रहे हैं! उसके अंदर एक नया यकीन पैदा हुआ, गरीबों के हक के लिए अब तो सभी राजनीतिक दलों से सहयोग मिल सकता है। उसने बिना देर किए अहम से चर्चा की। अहम की भी यही राय थी; कोरोना-मंडली अपनी निष्पक्ष-निरपेक्ष छवि बरकरार रखने की खातिर पहले किसी भी राजनीतिक दल के पास जाने से परहेज करती थी, अब तो सभी दल देश सेवा के लिए एक हो चले हैं, फिर तो इस एका का फलाफल गरीबों के चूल्हे-चौके पर जरूर दिखना चाहिए। सहज से संपर्क करने की देर भर थी; उसने तुरंत मंडली की वीसी बुला ली। नौ मिनट तक जले दीपक की लौ अभी दस बजे तक भी सभी के चेहरे में प्रदीप्त दिख रही थी। सभी ने अपने मन की बात साझा की, बिल्कुल सही समय में जन्म लिया है धरती में! अब तो आगे भारतवर्ष में कहीं कोई भी विभेद नहीं दिखेगा, और किसी भी संकट को अपनी सामूहिकता के प्रदर्शन से ही अधमरा कर देगा!

बातचीत के क्रम में ही सहज ने चीफ कमिश्नर के साथ हुई मुलाकात का जिक्र किया। यह भी बताया कि उसने भी सलाह दी है पार्टी वालों से संपर्क कर बस्ती की मदद की जाए। मंडली के सभी सदस्यों में पूर्ण मतैक्य था, कल 6 अप्रैल से ही विभिन्न राजनीतिक दलों से सहयोग मांगने का कार्यक्रम आरंभ किया जाए। यह भी तय हुआ कि पहले चरण में नई पार्टी और पुरानी पार्टी से मिलने का कार्यक्रम रखा जाए। सहज ने सूचना साझा की, उनके डैड बता रहे हैं कल पार्टी कार्यालय में ग्यारह बजे एक संक्षिप्त बैठक भी रखी गई है; फिर तो यह एक शुभ अवसर है पार्टी से सहयोग मांगने का।

भोजन के बाद सभी की आंखों से नींद कोसों दूर थी; वे समझ नहीं पा रहे थे, आखिर नींद क्यों नहीं आ रही है? बंद आंखों में अभी भी जब-तब चौंधिया उठते जगमग रामघाट के कारण या देश की सारी समस्याओं का अंत हो जाने की जोरदार आहट के कारण! या फिर गरीबों के घरों के चूल्हे ठीक से जमने तक की बेचैनी के कारण?

रात को रामू की बहुत याद आ रही थी मनोज को। अम्बेडकर चौक की ओर से आ रही भीमरवा की ललकार से रामू की याद स्वतः कम होती गई

...जादूगर-बाजीगर-अजगर...अगर...मगर...कठिन डगर...

8

बस्ती के बच्चों के लिए कोरोना कोई बड़ा उत्सव-सा होता गया था, जनता कर्फ्यू के दिन से ही। धीरे-धीरे वे भी लॉकडाउन का सम्मान करना सीख गए थे, थोड़ा-थोड़ा। अपने मनपसंद काम को अब छोटी-छोटी टुकड़ियां बनाकर अंजाम देते, अपनी-अपनी गली में ही; पहले जैसे बड़े झुंड को बनाने से बचते हुए। शाम को चबूतरे पर दादी की कहानी सुनने के लिए बैठने तक दिनभर में वे न जाने कितनी ही नई-नई कहानियां बना डालते! सुभाष चौक की तरफ से थैला लेकर आ रहे लोगों के पीछे पड़ जाते, पुष्टि करने कि सैनिटाइजर है कि नहीं। हाथ धोने की सलाह को अनसुना कर बड़े तालाब में सीधे डुबकी ही लगाते, दिन में तीन-चार दफा; जोरदार तर्क के साथ कि हाथ ही क्यों पूरे शरीर से कोरोना की सफाई करना जरूरी है। चौधरी के बगीचे में आम की टिकोले आंखों में खटकने लगे थे; मौका पाते ही बच्चों की छलांग बगीचे के बाउंड्री की ऊंचाई को चुनौती देती रहती।

कल शाम दीप उत्सव से पहले जीतू ने अपने नए टच स्क्रीन मोबाइल में कोरोना के कई-कई फोटो बच्चों को क्या दिखा दिए, सबने कोरोना को देख लेने की ठान ली थी; प्रधानमंत्री के सुर में सुर मिलाते हुए। सुबह-सुबह ही बच्चे अम्बेडकर चबूतरे के पास आ जमे थे; एक-दूसरे को सोशल डिस्टेंसिंग का पाठ पढ़ाते हुए।

"इतना बड़ा-बड़ा होता है कुरौना!" स्क्रीन में उगते-बुझते कोरोना के फोटो देखकर देवा के रोंगटे खड़े हो गए।

"लेकिन साला देखने में कितना हैंडसम लगता है यार!" फट्टे के चेहरे में आश्चर्य वाली चमक आ गई।

"हां यार! कितना सुंदर कलर है साले का पीला-पीला!" हरहर की आंखें बड़ी होती गईं।

"कहीं-कहीं ब्लू भी?" कोरोना के रंग-बिरंगे फोटो आते-जाते देखकर जहीर का कौतूहल जाग उठा।

"यह देखने में इतना सुंदर है! तभी तो नेता लोग भी एकबारगी इसका सफाया नहीं करना चाहती है।" हर माजरा समझने में अपने को माहिर मानते आ रहे शंकरा से रहा न गया।

"अरे नहीं रे, सरकार को इतनी तो फिक्र है कोरोना की, तभी तो लोकढान करना पड़ा है ना।" नम्मो के मन में सरकार के लिए सम्मान कायम था।

"..."

"..."

बच्चों की वार्ता के बीच ही बस्ती की लाइटें बुझ गई थीं। मोबाइल की रोशनी चमकने लगी थी चारों तरफ। जीतू ने मोबाइल में समय देखा, नौ बजकर दो मिनट हो चुके थे; वह भी मोबाइल की टॉर्च ऑन कर जमीन-आसमान दाएं-बाएं लहराने लगा। सारे बच्चे ताली पीटने लगे। बस्ती में खुशी का खजाना मिलने-जैसा माहौल बन पड़ा।

कल शाम संपन्न दीपोत्सव के बाद बच्चों का कौतूहल ताप चढ़ता गया ...अब तो रातभर में कोरोना के सारे कांटे टूटकर गिर ही जाएंगे, जलते दीये में जान गंवाने वाले कीट-पतंगा जैसा! सुबह होते-होते बच्चे बेचैन हो उठे, जीतू के मोबाइल में बिना डंक वाले कोरोना देखने के लिए। रात को खुशी का खजाना बटोरकर सोया जीतू अभी तक जगा नहीं था। झोंपड़ी के आगे शोर सुनकर उसका कुंभकर्ण बने रहना संभव ना था; आंख मलते हुए बाहर आया। सामने खड़े बच्चों के चेहरे में कौतूहल की लपटें देखकर समझ गया, सभी टच स्क्रीन में कोरोना देखने आए हैं। आज सुबह तक आए मैसेज खोलकर वह कोरोना का अपडेट स्क्रीन पर ले आया। सभी की आंखें स्क्रीन पर गड़ गईं।

"रे बाप रे! यह तो कल वाला ही कुरौना है! रातभर में एक भी सिंग नहीं टूटा है साले का?" बच्चों की डरावनी चीख निकल पड़ी। सयाना बनते हुए जीतू ने हाथों से सभी को शांत रहने का संकेत किया।

"जानवर के तो दो सिंग ही होते हैं, इस साले को तो देखो कितने ही सिंग हैं!" कोरोना की कांटेनुमा आकृति पर नजर गड़ाते ही रियाज सहम उठा।

"इसका सिंग तोड़ने की मशीन सरकार क्यों नहीं बांटती है!" छोटू के अंदर प्रश्नवाचक जिज्ञासा जाग उठी।

"इसलिए नहीं बांटती है कि कुरौना की चाबी सरकार अपने पास रखना चाहती है।" मरखा ने जतलाया वह सरकार को समझता है।

"सरकार को सिंग तोड़ने की मशीन ना भेजना है तो मत भेजें; हम लोग तो मर्द की औलाद हैं, हम लोग तोड़ेंगे कुरौना का सिंग!" जहीर की भुजाएं फड़कने लगीं।

"हां-हां! हम लोग जरूर तोड़ेंगे कुरौना के सिंग।" बच्चे एक साथ उमंग में उछल पड़े।

"लेकिन कैसे!" जीतू में भी कौतूहल तरंग फैल गई; उसने मोबाइल बंद कर दिया।

'बहुत आसान काम है, हम लोग घर और गली में पुराने टूटे-फूटे लोहा-पत्थर-लक्कड़ जमा करके रखेंगे; और जिस दिन कुरौना बस्ती की तरफ पैर बढ़ाएगा हम लोग सबसे पहले उसका सिंग तोड़ डालेंगे, सुभाष मार्ग में ही!" फट्टे का जोश संभले नहीं संभल रहा था।

"फिर तो सिंग टूटने के बाद कुरौना का खेल खत्म, साला किसी को डंक मार ही नहीं पाएगा!" देवा की खुशी का ठिकाना न था।

"लेकिन मेरे पापा के झोपड़े में तो लोहे का कोई टुकड़ा है नहीं?" रियाज को अपने झोपड़े की याद आई।

"हां यार, मेरे झोपड़े में भी लोहे का टुकड़ा कभी दिखा नहीं मुझे?" मरखा कुछ याद-सा करते हुए बोला।

"मेरे घर में भी शायद लोहा-सरिया का टुकड़ा न हो?" असमंजस में पड़ा-पड़ा अमन बोला।

"अरे छोटू, अपने घर में कहां से आएगा लोहे का टुकड़ा, अपना घर तो कच्ची ईंट का बना है।" अमन के बड़े भाई सुमन ने सच्चाई सामने रख दी।

"अरे बुद्धू! प्रधानमंत्री आवास वाला घर बनता तब तो घर में लोहे-सरिये के टुकड़े पड़े रहते।" मरखा की आवाज से लगा जैसे सरकार पर थूकना चाह रहा हो।

"हां यार, बस्ती में कितने ही नेता लोग कई सालों से प्रधानमंत्री आवास वाला भाषण देकर गए हैं?" मंटू कहीं खो गया-सा बोला।

"प्रधानमंत्री आवास को मारो गोली, सरकार से हम लोगों को अभी के लिए सरिया का टुकड़ा ही मिल जाए तो कोरोना के सिंग तोड़ने के काम आ जाएंगे।" चिंटू ने सुझाव रखा।

"रामू भैया तो दिल्ली में ही हैं! उनको लगाओ फोन, सरकार से वहीं पर बात कर लेंगे सरिया के लिए," हरहर के मन में आइडिया आया।

"अरे नहीं, सरकार उनकी नहीं सुनती है; उनके कहने पर जहाज थोड़े न बंद किया सरकार ने, सरकार ने जहाज बंद किया भी तो अपनी मर्जी से।" शंकरा असमंजस में पड़ गया।

"अरे हां! रामनरेश भैया ही तो सरकार है, वही सही रहेगा इस काम के लिए।" नम्मो के माथे में अचानक कुछ चमक-सा उठा।

"लेकिन अब तो वह बड़ा नेता बन गया है।"

"तो?"

"बड़ा नेता किसी काम का नहीं होता न!" मरखा ने मुंह बिचका दिया।

"..."

"..."

बच्चों की अंतहीन वार्ता के बीच ही पुलिस जिप्सी सायरन बजाती सुभाष मार्ग पर चढ़ आई।

"लोकढाआआण...सोशल डस्टिईईइइंग...आटा-चावअअल..." कोरस स्वर में चिल्लाते हुए सारे बच्चे गलियों में विलीन हो लिए; थोड़ी देर बाद कोरोना का कोई नया ककहरा फिर से शुरू करने के लिए। बस्ती में पुलिस के पहुंचने पर भी अम्बेडकर चौक पर भीमरवा के शोर में कमी नहीं आई थी ...आम-अचार-आलू-अफीम-अंधा...

आधे घंटे बाद बच्चों की मंडली फिर इकट्ठी होने लगी।

"अरे देखो कुरौना बीमारी मेरी पकड़ में आ गई, इसको रोकने का उपाय भी मिल गया!" अपना मोबाइल लहराता हुआ आते ही जितू बोला; उसके पूरे बदन में उमंग उफान पर थी, कोई बड़ा खजाना हाथ लग जाने-सा।

"कुरौना का कीड़ा मारने की दवाई का नाम जारी कर दिया है सरकार ने क्या!" हांफकर आया शंकरा हांफता हुआ ही बोला; उसने मोबाइल में आंखें गड़ा दीं, जैसे सच में कोई अजूबा चीज हाथ आने वाली हो।

"अरे नहीं रे झंडुबाम, कुरौना मारने की दवाई नहीं, कुरौना मारने वाले का पता चल गया है!" मुट्ठी में कुछ बंद कर लेने-सा करते हुए जितू ने कहा, फिर स्क्रीन में गड़े रहते ही बोला, "इसमें लिखा है डब्ल्यूएचओ कोई बड़ा ऑफिस है जनेवा में, हमने आगे सर्च किया तो अपने रामघाट में भी इसके एक छोटे ऑफिस का लोकेशन दिखा रहा है!"

"अपनी बस्ती में कुरौना आने से रोकना है तो हमें आज ही वहां चलना चाहिए।" मुन्ना उत्साहित होकर बोला।

"हां-हां चलो! डब्ल्यूएचओ के मालिक के सामने हाथ जोड़ेंगे, पैर पकड़ेंगे, फिर तो कुरौना को मारने-भगाने के लिए किसी को वे जरूर भेजेंगे बस्ती में!" फट्टे के लिए अपना उत्साह काबू में रखना मुश्किल हो गया।

"अरे सरकार का लोकढाण चल रहा है, बस्ती से बाहर जाने पर पुलिस पकड़ लेगी!" डरावने अंदाज में आंखें नचाते हुए नम्मो ने कहा।

"अरे सरकार की औलाद, लोकढाण में जरूरी काम पड़ने पर निकलने की छूट मिली हुई है तो।"

"बस्ती के बच्चों को कोई नहीं रोकेगा यार!"

"हम लोग चोर-उचक्के जैसा नहीं न जाएंगे, सशल डस्टिंग का लाइन बनाकर चलेंगे तो।"

"अरे बुद्धू, एक बात पर तो ध्यान दिया ही नहीं!" जितू कहीं गुम हो जाने जैसा बोला।

"क्या?"

"हम बच्चों की बात तो डब्ल्यूएचओ के लोग ठीक से सुनेंगे नहीं!" बोलते हुए जितू के चेहरे में बड़ा-सा शून्य पसर आया।

"इसमें चिंता की कौन-सी बात है, हम लोग मंजरी दीदी और दिनेश भैया को पकड़ लेते हैं; मंजरी दीदी से बोलेंगे रॉबर्ट भैया को भी मैसेज भेज दें आने के लिए।"

"तो अभिये चलते हैं मंजरी दीदी और दिनेश भैया के पास?"

...हां...हां...हां...हां....बच्चों की ललकार बस्ती के ऊपर आसमान में तैरने लगी।

9

मंजरी को शहर के बारे में सब कुछ पता होता है; खासकर कौन-सा ऑफिस कहां है। बच्चों के झुंड के साथ वह डब्ल्यूएचओ वाले ऑफिस की ओर बढ़ चली; विक्टोरिया मार्ग पार कर तिलक लेन में। विक्टोरिया मार्ग और तिलक लेन के टी जंक्शन पर मंजरी के मन में आवाज उठी...'सड़कों-गलियों का नामकरण करने वालों की अक्ल के क्या कहने, विक्टोरिया नाम वाले रास्ते को मार्ग कह गए और बाल गंगाधर तिलक के नाम वाले को लेन!' तिलक लेन के आखिर में डब्ल्यूएचओ का ऑफिस हुआ करता है, प्रथम तल में। बच्चों के साथ वह जीने पर चढ़ गई; दिनेश को संकेत से समझा दिया कि वह सारे बच्चों के पीछे ही चले, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराते हुए।

"डब्ल्यूएचओ का कौन ऑफिसर है यहां?" कमरे के अंदर पैर धरते ही मंजरी पूछ बैठी, सामने कंप्यूटर पर बैठे नवयुवक से।

"यहां डब्ल्यूएचओ का कोई ऑफिसर नहीं बैठता है दीदी!" नवयुवक ने शिष्टतापूर्वक जवाब दिया।

"ऑफिसर नहीं बैठता है! फिर यह डब्ल्यूएचओ का ऑफिस कैसे हो गया?" दिनेश ने तुनककर कहा।

"भैया, यह तो डब्ल्यूएचओ का रीजनल सैंप्लिंग डेस्क भर है; पंद्रह सालों से!" नवयुवक ने छोटी मुस्कान के साथ कहा; अब कंप्यूटर चेयर से उठकर बोलने लगा, "नई-पुरानी बीमारी से जुड़े बैक्टीरिया वायरस का सैंपल इकट्ठा किया जाता है यहां, बस; फिर हम लोग उसे दिल्ली भेज देते हैं, फिर जांच-रिपोर्ट वगैरह वहां से आगे जेनेवा भेजा जाता है।" बोलकर उसने मंजरी और दिनेश की ओर दो कुर्सी बढ़ा दीं; बच्चों की ओर मुस्कान मात्र फेंक दी, कि आप तो खड़े ही अच्छे लगते हो।

"हमने सुना है वुहान में भी आपका बड़ा-सा ऑफिस है!" कुर्सी पर बैठती हुई मंजूरी बोली।

"मैडम, आप लोग यहां क्या जानकारी लेने आए हैं?" अंदर केबिन से निकलकर एक अधेड़ वय व्यक्ति ने शालीनता से पूछा।

"इन बच्चों को पता चला है कि दुनिया में महामारी रोकने का काम डब्ल्यूएचओ के जिम्मे है।" बच्चों के बीच से दिनेश ने कहा।

"बिल्कुल सही फरमा रहे हैं आप; तो फिर?" उस व्यक्ति ने प्रश्नमय मुख-मुद्रा लिए कहा।

"तो बच्चे चाह रहे हैं कि कोरोना को बस्ती में आने से रोकिए आप लोग।" दिनेश सीधे काम की बात पर आ गया।

"हम लोग यह जानने यहां दौड़े आए हैं कि आखिर यह बीमारी रुक क्यों नहीं रही है आप लोगों से? दिन ब दिन बढ़ती ही क्यों जा रही है हिंदुस्तान में!" अब मंजरी तर्कपूर्ण हो उठी।

"डब्ल्यूएचओ पूरी दुनिया में अपने स्तर से प्रयास तो कर ही रहा है।" नवयुवक ने कहा; अपने सीनियर लग रहे उस व्यक्ति की तरफ देखकर सांकेतिक सहमति लेते हुए।

"परंतु हमें यह बात पच नहीं रही है, जब दिसंबर महीने में वुहान में इस बीमारी का विस्फोट हो चुका था, उसी समय पूरी दुनिया को क्यों नहीं बताया आपके डब्ल्यूएचओ वालों ने?" बोलते हुए मंजरी के चेहरे में खीज आने लगी।

"देखो मैडम, हम लोग यहां पर कोरोना वायरस की सैंप्लिंग की तैयारी में बैठे हैं, वुहान के बारे में हमें ज्यादा जानकारी नहीं है; हां, इतना जरूर कह सकते हैं कि वुहान में जो कुछ दिखा उसका प्रॉपर स्टडी के बाद ही तो बाकी दुनिया को सच बताया जाता!" वह व्यक्ति भी तर्कपूर्ण हो उठा।

"सच को समझने और फिर दुनिया को बताने में इतना समय लेता है डब्ल्यूएचओ!" दिनेश ने नाराजगीभरे स्वर में कहा।

"हम लोगों को पता चला है जैसे हमारे शहर में अफसर-नेता लोग पैसा खाकर गड़बड़ करता रहता है, वैसे ही डब्ल्यूएचओ वालों ने चीन सरकार से खा-पीकर कुरौना वाली फाइल दबा दी थी!" बच्चों में सबसे आगे खड़ा शंकरा बोल पड़ा, एकाएक उत्तेजित होते हुए। सभी बच्चों की देह में सनसनी-सी लहराती दिखने लगी।

"शांत, शांत! सोशल डिस्टेंसिंग प्लीज," हथेली लहराते हुए मंजरी बच्चों को शांत रहने को बोली, दूरी बनाए रखने का संकेत करते हुए भी; फिर पूछा, "तुम्हें यह सब किसने बताया?"

"मेरे बड़े वाले मोबाइल में यह सब खबरें आती रहती हैं!" जीतू ने अपना चौड़ा स्क्रीन वाला मोबाइल हवा में लहराते हुए कहा।

"शोरे वा शुबेटू उशोडे" पीछे वाले चेंबर से बाहर आते हुए नाटे कद के एक झक गोरे विदेशी ने कहा, नाक को अजीब ढंग से सिकोड़ते हुए। उनके कथन में प्रयुक्त शब्दों के प्रथम अक्षर के बाद के अक्षर किसी की समझ-पकड़ में न आए। "व्हाट हि इज सेइंग?" नवयुवक से मंजरी ने विस्मित होकर पूछा; विदेशी मेहमान की तरफ मुस्कुराकर अभिवादन करते हुए।

"वह कह रहे हैं ...यह सब झूठ है।" नवयुवक ने विदेशी मेहमान की कही बात का मतलब बताया।

"अरे यह तो चीन का रहने वाला आदमी है, उल्टे हमें ही झूठा बोल रहा है; साला चारों तरफ कुरौना फैलाकर खुद झूठ पर झूठ बोले जा रहा है!" छोटू ने आगे आते हुए कहा; पहन रखे बनियान में आस्तीन नहीं होने के बावजूद आस्तीन चढ़ाने जैसा करते हुए।

"अरे ये लोग तो होते ही हैं एक नंबर का झूठा! मारो साले को!" शंकरा ने ऊंची आवाज में बच्चों को ललकारा।

"नो-नो, प्लीज!" विदेशी ने हाथ जोड़ लिए; शायद वह हिंदुस्तानी बोलचाल की भाषा, खासकर 'मारो-काटो' कुछ-कुछ समझने लगा था; यहां

हिंदुस्तान में काम करते-करते।

"अरे बहनजी, काहे ला बच्चों को लेकर यहां आ गए हैं हंगामा कराने!" अधेड़ व्यक्ति ने हाथ जोड़ते हुए कहा, सर पीट लेने जैसी भाव-भाषा में।

"दीदी, ये वाले सर चीन के नहीं, जापान के रहने वाले हैं! हमारे जैसे ही डब्ल्यूएचओ में काम करते हैं; रामघाट रीजन के सैंप्लिंग एडवाइजर हैं।" बोलकर नवयुवक बच्चों की ओर देखकर सिर हिलाने लगा; उन्हें बताने की गरज से कि कितनी दूर देश से यहां आकर जरूरी काम कर रहा है यह बेचारा।

"सभी शांत हो जाओ।" कुर्सी से उठकर मंजरी ने बच्चों को डांट लगाई, आंखें दिखाते हुए; अब उस व्यक्ति पर नजरें जमाकर बोलने लगी, आंखें छोटी करती हुई, "लेकिन इन बच्चों की असली जिज्ञासा या बेचैनी, जो कह लें, शांत करना पड़ेगा न!"

"वह क्या?" उस व्यक्ति ने चौंकते हुए कहा।

"वुहान से उड़कर यह वायरस दुनिया की चारों दिशाओं में फैलता ही जा रहा है! फ्लाइट वाले यात्रियों के माध्यम से, और भी कई माध्यमों से; कई देशों में लॉकडाउन लग चुका है...' मंजरी बोलती जा रही थी तो उस व्यक्ति ने टोका, "यह सब तो सभी जान ही रहे हैं, आप कहना क्या चाहती हैं?"

"यही कि अब तो इंडिया में भी कोरोना वायरस तेजी से पैर पसारता जा रहा है, देशी-विदेशी फ्लाइट भी मजे से उड़ रही थीं; बीस-बाईस मार्च तक, शहरों-हाटों-बाजारों में जमकर भीड़ गर्दी जारी थी पच्चीस मार्च तक!" डरावनी मुख-मुद्रा में मंजरी बोली, फिर तैश में आते हुए उबल पड़ी, "ऐसे में आपका यह डब्ल्यूएचओ करता क्या था? कहां सोया पड़ा था, वुहान में!"

"ये डब्ल्यूएचओ वाले यहां फालतू का बैठा है, निकम्मा जैसा!" दिनेश ने खिन्न होकर कहा, फिर उत्तेजित होकर बोला, "जब इंडिया में कोरोना रोकने के लिए डब्ल्यूएचओ ने कुछ किया ही नहीं, फिर तो उसे यहां से धक्का मारकर निकाल देना चाहिए!"

"दिनेश भैया, यह डब्ल्यूएचओ चीन का एक नंबर का चमचा लगता है! धक्का मार कर भगाइए इसे!" स्क्रीन में कोई न्यूज कटिंग दिखाते हुए जीतू उबल पड़ा।

जीतू के इतना बोलते ही सभी बच्चे उस बड़े से कमरे के टेबल-कुर्सी-परदे पर हाथ-पैर आजमाने लगे।

"सॉरी, सो सॉरी!" विदेशी मेहमान की ओर हाथ जोड़ते हुए मंजरी ने क्षमा याचना-सी की, फिर अधेड़ व्यक्ति से बोली, "हमारे बस्ती एरिया के बच्चे जब बिगड़ उठते हैं तो उन्हें रोकना मुश्किल हो जाता है!"

"अच्छा, तो ये बस्ती के बच्चे हैं!" अधेड़ व्यक्ति के मुंह से चीत्कार-सी निकली; जैसे आसमान से जमीन पर गिर पड़े हों, वो भी बस्ती एरिया में। विदेशी एडवाइजर और नौजवान को फौरन नीचे भागने का संकेत करते हुए वह जीने पर से उतरने लगा। सामने सड़क पर आकर उसने ऊंची आवाज में कहा, "मैडम, आप तो समझदार लगती हो; यह डब्ल्यूएचओ महामारी को समय पर रोक पाए या न रोक पाए, पर समय पर सभी को चेताता जरूर है!" फिर दाएं-बाएं, आगे-पीछे किसी के न सुन लेने की तसल्ली करके बोला, "जनवरी-फरवरी-मार्च में डब्ल्यूएचओ हेडक्वार्टर ने कोरोना पर रेगुलर एडवाइजरी भेजा है गवमेंट ऑफ इंडिया को! आप वह सब निकलवा लें, सच्चाई सामने आ जाएगी!"

"रुकने का, इसे नहीं भगाने का, डब्ल्यूएचओ हेल्थ सेक्टर में जरूरी काम करने का।" तिलक लेन के टर्मिनल पर बाइक का जोरदार ब्रेक और रॉबर्ट की गुहार, एक साथ सुनाई पड़ीं। हमेशा की तरह वह आज भी यहां देर से पहुंचा था; यहां मची आपाधापी से वह हतप्रभ था। मंजरी को समझते देर नहीं लगी; उसने बच्चों से हंगामा रोकने को कहा, मन-ही-मन भुनभुनाते हुए, '...अरे ये हमारे बस्ती के बच्चे भी न! न जाने किस-किस से लड़ते-भिड़ते रहेंगे।"

अध्याय सात

1

5 अप्रैल, 2020, रात के नौ बजने में चंद मिनटों का फासला रह गया था; उमंग-ताल में गोता लगाते हुए ही रामू छत पर आ गया। देश के एक सौ तीस-पैंतीस करोड़ लोग इसी घड़ी का इंतजार तो कर रहे थे, पिछले दो-तीन दिनों से; रात्रि के नौ बजे से नौ मिनट का दीप प्रज्ज्वलन! प्रधानमंत्रीजी ने आह्वान किया था नौ मिनट तक दीप प्रज्ज्वलन के लिए; संपूर्ण देश में उम्मीदों का दरिया बह निकला था।

नौ गुना आठ के दड़बेनुमा कमरे से छत पर आ जाना रामू को सुकून देता था। वैसे भी संकरे कमरे में सबके साथ बैठे रहने से उसके अंदर टीस-सी उभर आती थी, आखिर वह कब तक इन लोगों के सिर पर बोझ जैसा पड़ा रहेगा? वह पौने नौ बजे ही छत पर आ गया, दिल्ली में दीये का नजारा देखने। ठीक है विदेशों से देश में कोरोना की इंट्री रोकने की खातिर ही वह बारह मार्च को दिल्ली आ धमका था, कोरोना नियंत्रण के मामले में सरकार के अधकचरे रवैये के प्रति उसके मन में रोष भी भरता गया था, लेकिन कोरोना वॉरियर्स की हौसला अफजाई हेतु दीप प्रज्ज्वलन के लिए प्रधानमंत्री की उद्घोषणा से वह भी खासा उत्साहित था। उसे प्रधानमंत्री की बात में तर्क नजर आया कि ऐसी विकट घड़ी में पूरे देश को एकजुट होना जरूरी है।

छत पर से दिल्ली दूर-दूर तक दिख रही थी। घरों की बत्तियां बुझनी शुरू हो गईं। दड़बे में रहनेवाले सभी सत्रह-अठारह साथीगण एक-एक करके छत पर आते गए। नौ बजते-बजते दूर तक दिखने वाले सभी घरों की बत्तियां पूरी तरह बुझ चुकी थीं। सड़कों पर लगे हाई मास्ट लाइट के प्रकाश में दूर-दूर तक मोहल्लों के आकार-प्रकार स्पष्ट नजर आने लगे। जब घरों में

बिजली-बत्ती जल रही होती तब घरों-मोहल्लों का रूप-स्वरूप दृष्टिगोचर होना भौतिक विज्ञान के सिद्धांत से संभव नहीं होता। नौ बजते ही चारों ओर सभी घरों की बालकनी, छत, दीये-मोमबत्तियों से जगमगा उठे। कहीं-कहीं टॉर्च की रोशनी भी चौंधिया उठी। चारों तरफ दीपमाला लहराती नजर आने लगी। अद्‌भुत नजारा! भारतवासी पहले शायद ही समय का इतना पाबंद रहा हो! अभूतपूर्व दृश्य देखकर वह अंदर से खिल उठा; प्रधानमंत्रीजी के प्रति श्रद्धा से उसका मस्तक स्वत: झुक गया। उसने गौर किया, चारों ओर घरों में छतों पर रोशनियां झिलमिला रही हैं, पर उस छत पर खड़े सभी साथी रोशनी का तमाशा देखने में मशगूल थे; बिल्कुल निष्क्रिय-निस्पृह-निरुत्साहित अवस्था में! उसे आश्चर्य हुआ जो भुवन ग्रुप पिछले पंद्रह दिनों से प्रधानमंत्री के पीछे पागल हुआ जा रहा था वह आज प्रधानमंत्रीजी द्वारा उद्‌घोषित इस महापर्व में छत पर मनहूस-सा खड़ा है! रामू का ध्यान चारों तरफ पसरे प्रकाश महापर्व से हटकर 'भुवन ग्रुप' के मौन पर केंद्रित हो गया; आखिर जनता कर्फ्यू और लॉकडाउन की तुरही बजाने वाला ग्रुप इतना गुमसुम क्यों होता गया है, दो-तीन दिनों से? वह अपने-आप स्व-वार्ता में लीन हो गया, बीते पंद्रह-बीस दिनों पर अंत:चक्षु से दृष्टिपात करते हुए...

...पिछले पंद्रह दिनों से वह इस दड़बेनुमा घर में बोरे-जैसा पड़ा हुआ है, अनाज से भरे नहीं, बालू भरे बोरे-जैसा; बिना बुलाया मेहमान ही तो है वह! वह तो बस यूं ही आ गया था शाहदरा कि अंकित से मिलकर ही दिल्ली से रामघाट वापस जाना चाहिए; कौन जानता था वह इक्कीस दिनी लॉकडाउन के तूफान में घिर जाएगा। उसे अभी इस बात का अफसोस नहीं हो रहा था कि कहां तो वह दिल्ली आया था कोरोना वायरस ढोने वाले हवाई जहाजों को बंद कराने और कहां दूसरे के दड़बे में आकर खुद बंद हो जाना पड़ा है यहां। अफसोस तो इस बात का था कि वह मुफ्त में अंकित के मत्थे टपका पड़ा था! उसकी जेब तो लॉकडाउन के चौथे-पांचवें दिन जवाब देने लगी थी। अंकित, भुवन और उसके सभी साथियों की जमा-पूंजी पहले सप्ताह में ही कपूर जैसा उड़ चली थी। यदि पॉकेट में पैसा होता भी तो कौन-सा सात व्यंजन का भोग पा लेते वे लोग; शाहदरा क्या, सारी दिल्ली और पूरे देश में बाजारों में ताले पड़ गए थे, इस कदर जैसे अब धरती से पेट की विदाई हो गई हो और साग-सामान की जरूरत ही खत्म हो गई हो! जरूरी सामान की कुछ दुकानों को घंटे-दो घंटे खोलने की अनुमति दे रखी थी प्रशासन ने,

पर कोरोना से बचकर लंबी लाइन से आगे निकलकर वहां से ब्रेड का एक अदना पैकेट खरीद पाना बड़ी जंग जीतने जैसा था! सो उन लोगों के बीच खिचड़ी-रोटी जब जो बन पाता, उसमें से उसके सामने जब जितना भी रख दिया जाता वह खा लेता; किसी की तरफ देखे बगैर! स्वाभाविक है मौन रहना ही उसके बस में रह गया था।

...लंबे मौन व्रत में मंजरी उसके मन की साथी बनी रहती तो रामघाट की अपनी मित्र-मंडली मस्तिष्क की। मौन रहने वाली मंजरी इस लॉकडाउन में मुखर हो चली थी। दिल्ली से सैकड़ों किलोमीटर दूर भी वह व्हाट्सएप में रामू के सामने जब-तब जीवित हो उठती। सहज, शायनी, परवेज, अहम, सुरेश, दिनेश, मनोज और भी कुछ साथी-संगी से तो खैर आमना-सामना हो ही जाता था, संध्याकालीन वीडियो कॉन्फ्रेंस के दौरान। तो मौन में भी उसका मन गद्‌गद था कि उसके साथीगण रामघाट को कोरोनामुक्त रखने के लिए जी जान से जुड़े हैं। बस अफसोस था तो सिर्फ इसी बात का, कि जिस कोरोना से लड़ने-भिड़ने का उसने बीड़ा उठाया था अब उसी के पंजे के प्रहार से उसे दड़बे में मुंह छुपा लेना पड़ा था!

...मौन रहना भले ही उसकी मजबूरी बन गया हो, पर 'भुवन ग्रुप' की नजर में वही मौन सच्चाई का मुखौटा बनता दिख रहा था। 'भुवन ग्रुप' उन्नीस मार्च को राष्ट्र के नाम प्रधानमंत्री के संबोधन से लेकर कल तक कोरोना के मामले में सरकार के पक्ष में उछल रहा था, उन्हें अब महसूस होने लगा था रामू की संक्षिप्त, पर गूढ़ बातों में दम था! फिर तो सरकार की पैरोकारी करने वालों में भुवन पहला आदमी बन गया था जल-भुन उठने वालों में, भले ही मन-ही-मन। बाकी साथी लोगों जैसी भले ही उसकी आस्था न टूटी हो सरकार-शासन से, मन के कोने में असंतोष का बीजारोपण तो हो ही चुका था। 22 मार्च वाले जनता कर्फ्यू और 25 मार्च से चालू लॉकडाउन की जमकर तरफदारी की थी उसने। दीप प्रज्ज्वलन की घोषणा होने के बाद खुशी से कितना तो उछल पड़ा था वह; महसूस करके कि यदि डॉक्टर-नर्स लोग जान जोखिम में डालकर अस्पतालों में ना डटे रहें और पुलिस वाले अपनी जान बचाने की खातिर चौक-चौराहों की नाकेबंदी छोड़ दें, फिर तो देश का सत्यानाश ही हो जाएगा! पर अब दो दिनों से भुवन को छोड़कर सभी के मुंह में गालियां आने लगी थीं; आखिर तकलीफ सहने की भी एक सीमा होती है! सभी की सहनशक्ति धीरे-धीरे जवाब देती जा रही थी; रहने-खाने का

इंतजाम बनाए रखना सभी के वश से बाहर होता गया था। देश में, दिल्ली में कोरोना संक्रमितों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही थी; यह सिर्फ संख्या बढ़ना भर नहीं था, सभी के पस्त शरीर और थके मन पर हथौड़े का सतत प्रहार था!

...आठ गुना नौ के चार दड़बेनुमा कमरों में सतरह-अठारह लोगों का चौबीस घंटे पड़े रहना, कक्षा आठ में पढ़े गए सेल्यूलर जेल में सजा काटने जैसा ही तो था! सभी मन मसोसकर रह जाते, इससे अच्छा अपने गांव-घर में होते, घर के आगे-पीछे अपने खेत-खलिहान में घूम तो लेते। गली में कदम रखना किसी आफत से कम न था; मुंह से दूध-दवा-आटा वाली बात निकलने से पहले ही पुलिस की लाठी अपना काम कर चुकती थी! अब भले ही इक्के-दुक्के लोग गलियों में आते-जाते दिख जाते, पर शुरू के चार-पांच दिनों तक यदि गली में कोई दिख जाता, तो सभी घरों की खिड़कियां बड़ी-बड़ी आंखें बन पड़ती थीं। ऐसे हालात में घर से बाहर गली में कदम रखा आदमी डर और ग्लानि के मिश्रित दाब तले घर में कैद रहने में ही भलाई समझता।

...शाहदरा की गलियों में भले ही हिम्मतबाज लोग आंख-मिचौली खेल लें, किसी की क्या मजाल जो मुख्य मार्ग की तरफ फटक ले! पिछले शनिवार की ही तो बात है; पांच दिनों से दड़बे में कैद हनुमत की अकुलाहट बढ़ती गई थी, शाम को सात बजे चुपचाप निकल लिया था शाहदरा-दिलशाद गार्डन मुख्य मार्ग की तरफ। सड़कों पर काफी गाड़ियां फर्राटे भर रही थीं, उसका भी हौसला जाग उठा; हवाखोरी में बेलगाम मस्त हो गया। कब किधर से आकर सिपाही ने उस पर एकाएक अपने डंडे की क्रियाशीलता आजमा ली उसे भनक तक न लगी! बेचारे को एक इंच भी हिलने का मौका ना मिल पाया। नाम उसका हनुमत है; लोग उसे भले ही हनु पुकारते हों पर चूतड़ में चार डंडे पड़ने के बाद उसने धरती पकड़ ली थी। वह तो भला हो अभिषेक और इसरार का कि मैसेज देखकर दौड़ा चला गया पट्टी-सट्टी का सामान लेकर, तब कहीं मेडिकल इमरजेंसी के नाम पर पुलिस के हत्थे चढ़ने से बचकर हनु का रेस्क्यू किया जा सका था! ऐसे में सभी अठारह लोगों के पास मार्च-अप्रैल की चढ़ती गर्मी में दड़बेनुमा कमरों में सांस थामकर पड़े रहने के सिवाय दूसरा कोई उपाय न था। भला हो बेचारे दस गुना ग्यारह फीट की छत का, जो ऐसे दुर्दिन में अंधेरा होते ही सभी का आसरा बन जाता; भरपूर

सांस लेने का बसेरा तो मन की बेचैनी भगाने की सैरगाह! ऐसे समय में रामू को रामघाट में अपने झोपड़े की बरबस याद आ जाती, बेबसी जाग उठती; तब उसे यह कहावत अपूर्ण जान पड़ती कि सिर पर छत होनी चाहिए, बल्कि पैर के नीचे भी छत जरूरी है, मन-मस्तिष्क को ताकत देने को।

...दशरथ नगर के दड़बे में 'भुवन ग्रुप' की परेशानी दिन-ब-दिन बढ़ती ही गई थी। पिछले महीने की मजदूरी से दो महीने का गुजारा भला कैसे चल सकता था! ठेकेदारों ने मार्च महीने का भुगतान अभी तक किया नहीं था, यहां-वहां पेमेंट लटक जाने का हवाला दिया जा रहा था। ठेकेदारों के नंबर पर, अपने-अपने कंपनी ऑफिस में भी, दिन में दो-तीन दफा रिंग मारने के सिवाय और कोई उपाय नहीं रह गया था किसी के पास। रिंग करने पर हर तरफ से सिर्फ दो ही शब्द सुनाई पड़ते–'लॉकडाउन है', लगता जैसे लॉकडाउन कोई कार्ययोजना न होकर इस सदी में जन्मा कोई डायनासोर हो! परसों से दड़बे के अंदर का सेंसेक्स परहेड पांच रोटी से नीचे लुढ़ककर तीन रोटी पर आ गया था। पीछे वाली गली के गोयल गल्ला वालों से वर्षों से नगदी-उधारी निभती आ रही थी 'भुवन ग्रुप' की। कल सुबह भुवन साहस करके पहुंच गया था गोयल साहब की गद्दी पर; उसका मुंह खुलने से पहले ही गोयल साहब ने लंबे हाथ जोड़ लिए थे, 'और किसी काम से आए हो तो बोलो, ऐसे बुरे वक्त में उधारी के लिए मत कहना!' पीछे खड़े अभिषेक ने तीर छोड़ दिया, 'सही फरमा रहे हैं चच्चा इस वक्त किसी को उधारी देना भी मत, कोरोना से कौन कब मर जाएं किसे पता!' ठीक-ठाक पूंजी लगाकर कारोबार करने वाले लोग बहुतेरे मामले में भले ही कंजूस हों, वचन-वाणी के धनी होते हैं; गोयल गल्ला वाले ताड़ गए लॉकडाउन के कारण सभी के अंदर चिड़चिड़ापन लहलहा उठा है, सो सत्पुरुष भांति उद्गार व्यक्त किया, 'बाबूसाहब लोग जरा मेरी जगह पर बैठकर सोचो, होलसेल वाले इस वक्त हमें एक दिन के लिए भी माल उधार नहीं दे रहे हैं तो आगे अपने ग्राहकों को कैसे उधार दे सकते हैं!'

...'भुवन ग्रुप' की परेशानी अब सिर्फ दड़बे तक ही सीमित नहीं थी, दिन-ब-दिन दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में फैलकर असीमित होती जा रही थी। दरअसल रामघाट और आसपास के कई छोटे-बड़े शहरों-कस्बों-गांवों के हजारों लोग ओखला, यमुनापार, लक्ष्मीनगर, आनंद विहार, पश्चिम विहार, दिलशाद गार्डन, वजीरपुर, जहांगीरपुरी, गांधी विहार, नरेला, कापसहेड़ा बॉर्डर

के कई कारखानों-फैक्ट्रियों में लगे थे, सालों से। रिक्शा-ठेला करने वाले सैकड़ों जानने वाले भी नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली स्टेशन के आसपास झुग्गियों में, पुल-पुलिया के नीचे पलते-खपते-घिसते-हांफते चले आ रहे थे वर्षों से। रामघाट वालों के गुण-अवगुण की सूची भले ही किसी रिकॉर्ड में न हो पर परदेश में एक-दूसरे का हाल-ख्याल जरूर रखते हैं! ओखला के माइल्ड स्टील प्लांट में काम करने वाले अयूब की दो दिन पहले मोहन से जो बातचीत हुई थी उससे पूरा 'भुवन ग्रुप' सिहर उठा था। उसने बताया—स्टील प्लांट के कैंपस में सैकड़ों मजदूर खुले शेड में रहते-सोते आ रहे थे वर्षों से; लॉकडाउन के बाद प्लांट बंद करना पड़ा; कंपनी वाले कैंपस खाली कराने पर अड़े थे कई दिनों से, लेकिन मजदूर लोग भी डटे रहे कि बस-ट्रेन बंद है तो ऐसे वक्त में जाएं तो कहां जाएं? मजदूर लोगों ने नारेबाजी तक कर दी थी, कि सरकार को क्या जरूरत पड़ी थी एकदम से ट्रेन बंद करने की? सभी को घर-बार भेजकर बंद कर देते! कल रात में कंपनी के बाउंसर ने बिजली-पानी बंद करके सारे मजदूरों को सड़क पर खदेड़कर कारखाने के मेन गेट को सील कर दिया था। अब वे आश्रम रोड मोड़ से लेकर डीएनडी फ्लाईओवर तक जहां-तहां खड़े-पड़े हैं। बस-ट्रेन बंद हैं, किसी को सूझ नहीं रहा है किधर जाएं, क्या खाएं?

...कल सुबह नरेला से भूषण का कॉल आया था; उसकी बात सुनकर सभी का दिल बैठा जा रहा था। हौजरी में भूषण के साथ काम करने वाले सैकड़ों लोग धीरे-धीरे परिवार लेकर नरेला के आसपास जैसे-तैसे टिक से गए थे, कई सालों से। उन इलाकों की दुकानों में आटा-चावल की भारी किल्लत हो गई थी; जिनके पास पैसे बचे थे वह भी आटा-चावल के लिए मारे-मारे फिर रहे थे। जान-पहचान के सभी लोगों का कल तक भुवन की बातों से पेट भरता रहा था, अब तो बातों का खजाना भी खाली-खाली लगने लगा था!

"...कहां खो गए गुरु रामचंद्र जी!" भुवन ने रामू के कंधे पर हाथ धरते हुए कहा, तो बीते पंद्रह-बीस दिनों में गोता लगा रहा रामू अचकचा गया, "अउऊं..." जैसे गहरी नींद से हड़बड़ाकर उठा हो।

"अब छत पर क्या बचा है! चलिए, नीचे चलकर बचे-सचे आटे से रोटी-सोटी का इंतजाम किया जाए।" इसरार ने कहा।

"कहां खोए थे नौ मिनट तक? अपनी रामघाटवाली पर!" मोहन ने रामू की दशा-दिशा भांप ली थी।

"अरे हम लोगों ने कोई प्रकाश दिखाया ही नहीं!" रामू ने कहा तो दीया-प्रकाश नहीं करने की ग्लानि महसूस होने लगी उसे अपनी आवाज में।

"अरे जिसके घर में तेल है वह जलाए दीये; दुनिया ने दीये जला लिए तो समझो हमने भी जला लिया, बस!" शनिचरा ने उखड़े-उखड़े अंदाज में कहा; रामू को लगा सच में धरती में पेट का मामला ही सारे सवालों का अंतिम सवाल है। लेकिन उसका मन नहीं माना, उसने कहा, "अभी भी एक मिनट बाकी है, हम सभी के पास दीया-बाती-तेल-मोमबत्ती भले न हो, मोबाइल तो है! उसी से हम सभी को रोशनी करनी चाहिए।" बोलकर उसने अपने मोबाइल को टॉर्च मोड में कर दिया। मोबाइल की हल्की रोशनी से ही अंधकारमय छत में मद्धिम प्रकाश फैल गया। भुवन रोशनी की रेखाएं जरूर बनाने लगा अपने मोबाइल की टॉर्च ऑन कर, उसके किसी साथी ने मोबाइल से भी रोशनी करने की जरूरत नहीं समझी।

सब एक-एक करके सीढ़ी से नीचे उतरने लगे। जाते-जाते अभिषेक बोलता गया, "रामू, तुम तो दिल्ली आए ही हो दुनिया देखने! तो छत पर बैठकर दुनिया देखो जी भर कर; हमें तो रोटी-पानी का भी इंतजाम करना होता है न!" अभिषेक बोलकर नीचे की ओर बढ़ चला; उसके बोल तीर-जैसे रामू के कलेजे में आ धंसे! ...हां, वह तो सचमुच पंद्रह दिनों से यहां मुफ्त में रोटी तोड़ रहा है! अभिषेक की बातें उसके कलेजे से आर-पार होने लगीं, बार-बार। तब उस एकांत छत में भी उसे लगने लगा जैसे वह लाखों-करोड़ों लोगों द्वारा झकझोरा जा रहा हो! बेचैनी में उसे मंजरी का ही आसरा दिखता था; मानस-पटल में मंजरी की छवि उगते-उगते उसकी उंगली मंजरी के नंबर का हरा गोला टच कर चुकी थी।

'...हाय रामज्ञ...' मंजरी की आवाज से लगा रामू का कॉल देखकर वह अचंभित थी।

'...तुम इतनी घबराई हुई क्यों हो? मेरा कॉल देखकर तुम तो हमेशा चहक उठती थी; कहीं तु...' रामू को रुक जाना पड़ा।

'...चहकने-महकने की बात भूल जाओ, रामघाट के बगल में कोरोना के दो केस एक साथ टपक पड़े हैं; बिल्कूल आगे-पीछे, समझो जुड़वां बच्चे का जन्म हुआ है! हम लोगों का सारा प्रयास अब तो व्यर्थ ही समझो, आखिरकार कोरोना हर शहर-कस्बे को अपनी गिरफ्त में लेता ही जा रहा है', मंजरी की आवाज में कंपन तैर गया।

'...रामघाट के बगल में! कहां?' रामू की आवाज आसमान से आती जान पड़ी।

'...लक्ष्मनपुरा!'

'...लेकिन रामघाट तो अभी तक अछूता है, अब भी समय है हम लोग रामघाट में कोरोना के प्रवेश को रोक सकते हैं', मोबाइल से आ रही रामू की आवाज से लगा जैसे वह बस्ती में खड़ा होकर पुकार लगा रहा हो।

'...यह असंभव-सा नहीं है?' वह संशय के सागर में डूबी जान पड़ रही थी।

'...असंभव को संभव बनाना ही तो कर्म है; कुर्सीधारी की सोच तो साधारण काम तक ही सिमट जाती है, असाधारण काम तो साधारण लोग ही कर दिखाते हैं', उसने लंबी सांस लेकर कहा; लगा उसके अंदर कोई नया संकल्प जन्म ले रहा है।

'...पर कैसे?'

'...अभी भी वक्त है प्रशासन के पीछे पड़कर रामघाट की सीमा को सौ प्रतिशत सील करना होगा; साथ ही घर-घर जन-जागरण चलाते रहना पड़ेगा, मास्क लगाकर कोरोना-मंडली के दो-दो नवयुवक अलग-अलग मोहल्ले में मोर्चा संभालेंगे, हाथ जोड़े हुए ही कि खुदा के वास्ते कुछ दिन और घरों में ही कैद रहें।'

"तुम सही कह रहे हो रामू, अदरवाइज हमें आजीवन कचोटता रहेगा कि अंतिम प्रयास से हम पीछे हट गए थे," उसकी आवाज के साथ अंदर का उत्साह बाहर आने को बेताब जान पड़ा।

"पर एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही, स्कूल के दिनों में मैं तो रामचंद्र हुआ करता था, गाय-गोबर के धंधे में आ गया तो रामू ग्वाला कहलाने लगा, अब अचानक रामज्ञ कैसे हो गया?" उसे अचानक याद आया, बातचीत की शुरुआत में मंजरी के मुंह से उसके लिए रामज्ञ नाम-उपनाम निकला था।

'वो ऐसे कि आज के दीप प्रज्ज्वलन के महा आयोजन के बाद देश के भगवानों के वास्तविक चरित्र को तुम उजागर कर पाओगे...' चहकती आवाज वाली मंजरी अचानक गंभीर लगने लगी।

"भगवानों के वास्तविक चरित्र! मतलब? मैं कुछ समझा नहीं।" कोरोना काल! दीप प्रज्ज्वलन! भगवान? सब कुछ गड्डमड्ड होने लगा रामू के

मस्तिष्क में।

'...तुम्हें बैकग्राउंड में कोई आवाज सुनाई पड़ रही है! इस भयानक दौर में भी रामघाट तीरे वाला मानस पाठ चालू है!...'

"तो?" सूत्र अभी भी रामू की पकड़ में नहीं आ पा रहा था।

'...जब नौ मिनट तक दीप प्रज्ज्वलन चल रहा था तो तुमने अपने चारों तरफ दिल्ली को गौर से देखा था?...'

"देखा तो था!" बोलते हुए रामू ने फिर से चारों तरफ देख लिया।

'...जब चारों ओर दीये-मोमबत्तियां जल रही थीं तो दिल्ली कैसी लग रही थी...' मंजरी तार्किक हो चली।

"बिल्कुल जगमग, जैसे करोड़ों तारे लोगों की छतों पर उतर आए हों!" रामू स्कूली बच्चों जैसा जवाब दिए जा रहा था।

'...वो तो ठीक है, तब दिल्ली के घर-मोहल्ले कैसे दिख रहे थे नौ मिनट तक...' मंजरी की आवाज दार्शनिक होती लगने लगी।

"तब घर-मोहल्ले तो नहीं दिख रहे थे।" बोलते हुए रामू के रोंगटे खड़े होने लगे।

'...क्यों मिस्टर रामचंद्र भगवान?...' लगा जैसे मंजरी ने उसके कान ऐंठ दिए हों, '...क्योंकि दीये-मोमबत्ती की मंद रोशनी के पीछे अंधेरा छा गया था!...' नौवीं-दसवीं में पढ़े भौतिकी का सहज ज्ञान रामू की स्मृति में जाग उठा; मंजरी बोले जा रही थी, '...तो यूं समझ लो आज पांच अप्रैल तक कोरोना भारत भूमि में श्वेत कोरोना बनकर उत्सव मना रहा था, अब आगे श्याम कोरोना बनकर हम सब पर टूट पड़ने वाला है!'

"हां मंजरी, मुझे भी लग रहा है मंद प्रकाश के पीछे मीलों तक फैला अंधकार करोड़ों आम जनों पर कहर बनकर टूटने वाला है।"

'...तुम्हारा आकलन बिल्कुल सही है, श्वेत कोरोना का लाइफ मात्र पंद्रह दिनों का था, श्याम कोरोना वर्षों तक तबाही मचाता रहेगा...' लगा मंजरी की आवाज मोबाइल से निकलकर चारों तरफ आसमान में फैलती जा रही है, किसी सटीक भविष्यवाणी-जैसी।

'...अरे मंजरी हमने रामघाट में जन्म लिया है, पले-बढ़े हैं, देश को तो हम कोरोना के कांटे से बचा न पाए, रामघाट को बचाने का वक्त है अभी अपने पास; वैसे भी अब मैं एक दिन भी यहां इन लोगों के माथे पर बोझ बनकर नहीं रह सकता...'

'...अदरवाइज अब श्याम कोरोना का लंबा दौर शुरू होने वाला है, ऐसे में तुम्हें कहां होना चाहिए!...' मंजरी की आवाज से लगा अब उसके अंदर कुछ पिघल-सा रहा है।

"ऐसे समय में मुझे तुम्हारी बांहों में होना चाहिए!" रामू के अंदर का रामू एकाएक जाग पड़ा।

'...अभी तो सगाई भी नहीं हुई है ठीक से और तुम बांहों में पहुंचने की बात करने लगे हो!...' मंजरी उलाहना देने लगी, फिर आवाज सुरीली हो चली, मिसरी घुली हुई-सी, '...साथ होने का मतलब तो तुम पहले ही समझा चुके हो; सच में तुम जुल्मी हो यार!...' अब उसकी आवाज भारी हो चली। '...पर जब बस-ट्रेन बंद है तो आओगे कैसे?...' मंजरी की बेकरारी बढ़ती महसूस की रामू ने।

'...सुना है सामान लदे ट्रक चल रहे हैं, किसी ट्रक वाले को हाथ जोड़कर बैठ लूंगा...' रामू दृढ़ संकल्प हो चला।

'...ट्रक में बैठकर ही सही, तुम आ जाओ रामू; लक्ष्मणपुरा में कोरोना ने एंट्री मार ली है, अब तो सबकी जान हलक पर अटकी है, न जाने कब रामघाट में धावा बोल दे!...' उसकी आवाज में डर तैर गया जान पड़ा; आगे आवाज में उत्साह की धार चढ़ी थी, '...कोरोना-कैबिनेट भी सुस्त पड़ता जा रहा है, तुम लौट आओ तो फिर नए सिरे से कुछ हो...' मंजरी की आवाज में फ्लाइंग किस की तरंग महसूस की रामू ने; वह समझ गया आज की वार्ता खत्म हो चुकी है, उसने भी बिना देर किए कहा, "गुड नाइट, सी यू सून, लव यू!..."

'...गुड नाइट!...लव यू टू...' मोबाइल से निकली मधु सनी आवाज रामू के कानों से होते हुए दिल की अतल गहराई में उतर चुकी थी।

2

6 अप्रैल; कल का चमकता सूरज आज श्याम बदरी की ओट लेकर छिप जाने का प्रयास करता लग रहा था, बीच-बीच में मंद मुस्कान बिखेरता हुआ। विगत रात्रि वाले दीप-उत्सव की खुशी आज सुबह से ही सावरकर पथ पर बरस रही थी, मुस्कान की फुलझड़ियों के रूप में। कल वाले महा आयोजन की सफलता के आकलन की खातिर पार्टी अध्यक्ष ने आज पार्टी कार्यालय में चुनिंदे पदाधिकारियों की बैठक बुला ली थी; गुप्त बैठक! सच

में दीप-प्रज्ज्वलन की बदौलत सरकार का डंका बज रहा था; उस खुशी को अकेले पचा पाना अध्यक्ष के बूते से बाहर होता जा रहा था! उसे तो कल ही यकीन हो चला था कोरोना की दवा-वैक्सीन जब आना हो आए अपनी बला से, पूरे देश में कल जलाए गए करोड़ों दीयों ने कोरोना पर करारा प्रहार कर ही दिया है। यह सोचकर उसकी आंखें सचमुच छलछला आई थीं, अब तो कोरोना भी फैलने से पहले दस बार सोचेगा कि किस युगपुरुष से पाला पड़ा है! रात में शयन-शय्या पर हँसते-विहँसते ही उसे नींद आ गई थी... कहीं सच में विष्णु भगवान का दसवां-ग्यारहवां अवतार तो नहीं होने वाला है भारत भूमि में!

अध्यक्ष की गाड़ी दनदनाते हुए पार्टी कार्यालय पहुंची। परिसर का दृश्य देखकर वे दंग रह गए; उसने तो गिने-चुने पदाधिकारियों की बैठक बुलाई थी, यहां तो हुजूम उमड़ पड़ा है? सोशल डिस्टेंसिंग का कोई मायना नहीं रह गया है! अंदर ही अंदर उन्हें गुस्सा आया, सामाजिक दूरी की अनदेखी हो रही है! शीघ्र ही गुस्सा स्व-मुस्कान में बदल गया; पूरे देश में पार्टी के लिए आज एक बड़ा दिन है, ऐसे में सभी का हक बनता है इठलाने-इतराने का! परिसर में उसके पैर धरते ही...मां भारती जिंदाबाद...जिंदाबाद...कोरोना मुर्दाबाद...मुर्दाबाद...के नारों से जैसे आसमान भी सहम उठा। पूरे परिसर का वातावरण तरंगित हुआ जा रहा था; लगने लगा जैसे कोरोना ही क्यों, किसी भी समस्या की अब क्या औकात जो हमसे टकरा ले! पार्टी पदाधिकारियों-कार्यकर्ताओं के चेहरे में विजयी-दर्प दमक रहे थे, जैसे उन सभी ने आखिरकार पार्टी को भारत भूमि में अजर-अमर कर ही दिया है!

"लॉकडाउन में इस तरह इकट्ठा होने के लिए व्यक्तिगत रूप से क्षमा प्रार्थी हूं," सभागार के वृहद अंडाकार मेज की ऊंची कुर्सी में बैठ चुके अध्यक्ष ने कहा, आंखें नीची करते हुए; आगे उसके चेहरे में मुस्कान खिलने लगी, जैसे सभागार से बाहर जाकर ऊपर आसमान तक फैलती जाएगी। "कल संपन्न हुए अद्‌भुत आयोजन की अकल्पनीय सफलता के अवसर पर मंथन सभागार में आप सभी योद्धाओं का पार्टी की तरफ से स्वागत है" मुस्कान समेटते हुए बोलते गए, "समझिए अब तो यह सिद्ध हो गया है हमारी सरकार असली भरत पुत्र बनकर जनसेवा के लिए सत्ता में आई है! कोरोना के इस भयावह वातावरण में सचमुच हमने एक सौ तीस करोड़ भारतवासियों को डर के गर्त से खींचकर बाहर निकाल लिया है। कोरोना वॉरियर्स के उत्साहवर्धन

के लिए दीप प्रज्ज्वलन से हमने डॉक्टरों-नर्सों-पुलिस भाइयों की नस-नस में ऊर्जा तो भर ही दी है, साथ ही एक स्पष्ट संदेश भी जा चुका है कि अब पूरे देश में दूर-दूर तक हमारे सामने कोई नहीं टिक सकता!" बोलकर अध्यक्ष का सिर रहस्यमयी ढंग से दाएं-बाएं हिलने लगा; फिर ललकारने वाली आवाज में गरज उठे, "पिछले पंद्रह दिन से हमारे विरोधियों ने कोरोना की आड़ में हमारी सरकार को घेरने के लिए क्या-क्या हथकंडे नहीं अपनाए; लॉकडाउन को लेकर जो लोग जनता को लगातार दिग्भ्रमित करते आ रहे थे और प्रधानमंत्री को बेशर्मी के साथ कटघरे में खड़ा करना चाह रहे थे, उन्हें आज मुंह छिपाने के लिए न तो कोई जगह मिल पा रही है और न ही चुल्लूभर पानी!"

"अध्यक्ष महोदय, मुझे तो लग रहा है अब इस देश में विपक्ष की कोई जरूरत ही नहीं रह गई है!" सामने बैठे पार्टी के शहर अध्यक्ष हरदेव शाह ने कहा।

"मेरे हिसाब से कोरोना के बाद हमें तुरंत एकदलीय पद्धति के लिए संविधान संशोधन प्रस्ताव लाना चाहिए।" जिला युवा संगठन सचिव कुंवर महाराणा ने कुर्सी से उठकर कहा, हवा में दो उंगली वाला सजीव 'वी' लहराते हुए।

"एकदलीय पद्धति संविधान के खिलाफ बताकर हमारी पार्टी पर भीमराव अम्बेडकर का अपमान करने का मुद्दा जोर पकड़ सकता है; एक बेहतर विकल्प यह हो सकता है, देश में ऐसा माहौल बना दिया जाए कि हमारे उम्मीदवार के खिलाफ ढंग का कोई आदमी चुनाव लड़ने की हिम्मत ही न कर पाए! कुत्ता-बिल्ली-गधा टाइप के उम्मीदवार मैदान में सिर्फ दिखावे के लिए रहेंगे!" पार्टी मंथन मंच के विचारक काशीनाथ ने कहा। आगे और भी कई पदाधिकारी बोलने के लिए हाथ उठाते जा रहे थे; अध्यक्ष ने हस्तक्षेप किया, "मुझे लग रहा है आपके सुझाव पर हमें कुछ सोचने, मेहनत करने की जरूरत नहीं पड़ेगी; आनेवाले समय में प्रभु की कृपा से सब कुछ वैसा ही होता जाएगा, वैसे भी इन बिंदुओं पर पार्टी मुख्यालय में विचार-मंथन शुरू हो चुका है" बोलकर उसने गंभीर बनने की मुद्रा बनाई, फिर बोले, "आज हमें काम की भी चर्चा करनी चाहिए; पार्टी मुख्यालय का अनुमान है लॉकडाउन से देश की अर्थव्यवस्था को गहरी चोट पहुंचेगी, इसकी तुरंत प्रतिक्रिया होगी, विरोधी लोग सरकार के पीछे सियार जैसे हुआं-हुआं करने लगेंगे, लेकिन

मुख्यालय ने कहा है सियार के हुआने का जवाब खोज लिया गया है।"

"वह क्या?" सभागार से किसी की अधीरता जवाब दे गई।

"यही कि हमें जनता को बताते रहना है कि लॉकडाउन लगाकर हमारी सरकार ने लाखों-करोड़ों लोगों को मौत के मुंह से निकाल लिया है! जनता को जब सच में यकीन हो जाएगा लॉकडाउन के कारण ही वह जिंदा है, तो समझिए हुआने वाले सियार की हालत पागल कुत्ते जैसी होती जाएगी!" इतना बोलकर अध्यक्ष सभी की तरफ ऐसे देखने लगे जैसे जादूगर ने अपना सबसे अजूबा जादू दिखा दिया हो! सभी पदाधिकारी आश्चर्यचकित मुद्रा लिए एक-दूसरे को देखने लगे; सभी के होंठों में अलौकिक हँसी प्रकट हो उठी। अध्यक्ष को लगा अब आगे बैठक जारी रखने का कोई मतलब नहीं है। दरवाजे के किनारे खड़े सेवादार को उसने बाएं हाथ से चाय-सेवा शुरू करने का संकेत किया, तभी रिसेप्शनिस्ट ने आकर सूचना दी, कोरोना-मंडली वाले आए हैं, मिलना चाहते हैं। अध्यक्ष ने कहा, "इस मंगल अवसर पर मंडली के नौजवानों को भी चाय पर आमंत्रित कर डालो!"

"आओ मंडलियों! विजय की इस महाबेला में आप होनहार नौजवानों का भी स्वागत है!" अध्यक्ष जग जीत लेने के अंदाज में सम्मुख हुए। मास्क लगाए मंडली सदस्य सभागार के किनारे वाली खुली जगह में एक-एक करके आते गए, सामाजिक दूरी का पूर्ण पालन करते हुए। अंदर के आनंदपूर्ण वातावरण से वे भी गद्‌गद हो उठे ...वे भी देश के ऐसे कर्ता-धर्ता के साथ हैं जिन्होंने अपने सुकर्मों से सभी देशवासियों को देश पर गौरव करने का सुनहरा अवसर दिया है! हाथ में चाय का प्याला लिए अध्यक्ष स्मित हँसी के साथ परवेज और सहज के बीच आए। हँसी को अचानक गायब कर चेहरे में स्वत: प्रकट गंभीरता के साथ बोले, "तुम लोगों ने इतिहास में विश्व विजय के बारे में पढ़ा होगा न! सिकंदर का विश्व विजय नकली था, समझो भारतवर्ष अब असली विश्व विजय के लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।" बोलकर अध्यक्ष ने छत की ओर सिर उठाकर आंखें बंद कर लीं, जैसे अपने आराध्य देव से विश्व विजय का रूट चार्ट देने की कामना कर रहे हों! बीस सेकंड के बाद उसने आंखें खोलीं। देर तक आंखें बंद रखने पर शायनी के कान में मंजरी बोली, "इतनी देर में तो एक बार साबुन से हाथ धो आते!" तब तक मंडली के सदस्य अध्यक्ष के चारों तरफ गोल घेरा बनाकर खड़े हो चुके थे। अपने चारों तरफ नौजवानों का घेरा देखकर अध्यक्ष गद्‌गद हो उठे। उसने

मन-ही-मन कहा, 'यह है दीये की शक्ति और सम्मोहन!' मुख-मंडल में कृतज्ञता प्रकट करने-सा भाव लाते हुए उसने कहा, "आप नौजवानों ने शहर में कोरोना से बचाव की जो जन-जागृति फैलाई है, सच कहूं तो उसकी प्रशंसा के लिए शब्द नहीं हैं मेरे पास!" कृतज्ञता अभिव्यक्ति वाली मुद्रा अगले ही क्षण नाटकीय ढंग से तिरोहित हो गई; वरदान देने वाली भाव-भंगिमा बनाकर बोले, "आज आपलोग पार्टी कार्यालय में किसी लक्ष्य से ही तो आए होंगे? जनता कर्फ्यू के दिन से लेकर कल वाले प्रकाशमय भारत दिखने के बाद तो करोड़ों लोग पार्टी सदस्यता का इंतजार कर रहे हैं! अदरवाइज कोरोना काल में पार्टी की सदस्यता तो बंद कर रखी है पार्टी मुख्यालय ने।"

"सभी लोग आपकी पार्टी की सदस्यता ले लेंगे, फिर तो दूसरी पार्टियों के लिए कोई भी सदस्य नहीं बचेगा!" अहम ने निरपेक्ष भाव से कहा।

"समझिए अब तो धीरे-धीरे बिल्कुल वही स्थिति आने वाली है!" बोलने के दौरान अध्यक्ष के चेहरे में उगी मिश्रित रेखाओं से पता करना मुश्किल था, उसने खिन्न होकर कहा था या आत्मविश्वास के साथ।

"लेकिन सर हम लोग आज यहां कोई पॉलिटिकल इशू लेकर नहीं आए हैं।" शायनी वार्ता को मंडली के मुद्दे पर लाना चाहती थी।

"वही तो मैं भी निवेदन कर रहा हूं, आप लोग जिस निमित्त भी आए हों उसमें हमारी पार्टी क्या मदद कर सकती है?" अध्यक्ष ने दोषारोपण करने के लहजे में कहा। फिर बगल में खड़े पार्टी युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष रवि मोहन से कहा, "आगे का वार्तालाप आप संभालो, मैं जरा पदाधिकारी लोगों से भी चाय पर चर्चा कर लूं!"

"सर, कोरोना ने कल लक्ष्मनपुरा को भी अपने कब्जे में ले लिया है, रामघाट की सीमा की पूर्ण बंदी ही एकमात्र उपाय है कोरोना को आगे बढ़ने से रोकने का! हमारी मंडली आपसी सहयोग से सीमा पर पूर्ण सीलबंदी में सहयोग करना चाहती है, साथ ही शहर और गांवों में गरीब परिवारों के लिए भोजन-पानी की व्यवस्था भी; लॉकडाउन में गरीबों को अकल्पनीय कष्ट उठाने पड़ रहे हैं, उन्हें खाना उपलब्ध कराना बेहद जरूरी है।" सहज ने समस्याओं को रवि मोहन के सामने बड़े ही सजीव ढंग से रखा; उन्हें अच्छा लगा यूनिवर्सिटी में उनके सीनियर रहे रवि भैया इतनी जल्दी पार्टी में किसी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष बन गए हैं।

"अब तो रामघाट के आउटर वाले एनएच से हजारों लोग अपने-अपने

घरों की तरफ बढ़े जा रहे हैं; पैदल ही, दिन-रात! उन लोगों को भी भोजन के पैकेट देना जरूरी है।" हालात को करीब से महसूस करने वाले परवेज ने कहा।

"अब तो पूरा देश जाति-धर्म-राजनीति से ऊपर उठकर एक दिख रहा है, कोरोना के कारण कष्ट में पड़े जन-जन को अब हमें उबार लेना चाहिए।" अहम ने दीन-भाव से कहा।

"अरे यह तो बड़ा पुण्य कार्य है! इससे तो शासन-प्रशासन का ही भार हल्का होगा! तो बोलो इसमें हमारी क्या मदद चाहिए?" रवि मोहन ने कहा; सभी को लगा बस अब तो खजाना खोल ही देगी पार्टी।

"सर हम लोगों ने विचार किया है आपकी पार्टी के कार्यकर्ता, और दूसरे दलों के भी कार्यकर्ता सभी मिलकर सीमा-बंदी को मजबूती से लागू करें; और शहर से चंदा-चावल इकट्ठा कर जरूरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य भी शुरू किया जाए।" मंजरी बोली; उन्हें पता नहीं चला वह हाथ मलते हुए बोल रही थी।

"अतिउत्तम, अति प्रशंसनीय!" रवि मोहन ने कहा; गोल घेरे में खड़े सभी के अंदर की खुशियां होंठों में छलक आईं, जैसे अचानक पुष्प-माला प्रकट हो आई हो। युवा अध्यक्ष के कहते ही, 'एक बार अपने पदाधिकारियों को भी विश्वास में ले लूं,' सभी निश्चय-अनिश्चय के भंवर में गोता लगाने लगे।

"सर, कोरोना-मंडली वाले एक प्रस्ताव लेकर आए हैं!" युवा अध्यक्ष रवि मोहन ने अध्यक्ष से कहा।

"क्या प्रस्ताव है?" उनके साथ चाय पर चर्चा में शामिल मंथन मंच के विचारक काशीनाथ ने आंखें छोटी करके पूछा।

"नवयुवक मंडली का विचार है कि पूरे देश में अब पूर्ण एकावाला युग आ चुका है, इसलिए सभी पार्टियों के कार्यकर्ताओं की संयुक्त टीम बनाई जाए..." रवि मोहन के बोलते रहने के दौरान ही काशीनाथजी ने टोका, "हां तो?" रवि मोहन ने आगे की बात रखी, "संयुक्त टीम सीमा-बंदी को सख्ती से लागू करवाने में हाथ बंटाएगी, आगे शहर से चंदा इकट्ठा कर गरीबों को, जरूरतमंदों को अनाज या खाने के पैकेट वितरण करेगी।" युवा अध्यक्ष ने मंडली का संवाद संक्षिप्त में पार्टी पदाधिकारियों के समक्ष रखा। वह उतावला हो उठा, कब अध्यक्ष महोदय के मुंह से 'ओके' निकले और वह जाकर मंडली को खुशखबरी दे! वह मन-ही-मन मंथन भी करने लगा, युवा प्रकोष्ठ

का अध्यक्ष होने के नाते वह किस रणनीति से गरीबों की भरपूर मदद करेगा, शहर के नवयुवकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर!

अध्यक्ष महोदय, काशीनाथ बाबू के साथ सभागार के बिल्कुल किनारे चले गए; दोनों के बीच कानाफूसी जैसे स्वर में गुप्त-मंत्रणा शुरू हुई।

'...आइडिया तो ठीक है, बट...'

'...मुझे भी आइडिया ठीक से डाइजेस्ट नहीं हो रहा है...'

'...हमारी पार्टी के लिए आज के डेट में सबसे बड़ा हथियार है कोरोना संकट के समय सरकार दिन-रात जनता के साथ खड़ी है...'

'...इसका प्रमाण भी है; लॉकडाउन लागू कराने के लिए हर चौक-चौराहे पर पुलिस बल तैनात है, सभी को मुफ्त अनाज दिया जा रहा है, सभी के खाते में हजार-हजार रुपये भी डाले गए हैं; फिर समस्या कहां है!'

'...यदि जन सहयोग से नि:शुल्क भोजन वितरण कार्यक्रम चलाया जाता है फिर तो सरकार के बारे में गलत मैसेज जाएगा!...'

'...हां, बिल्कुल यही मैसेज जाएगा कि सरकारी योजनाओं से समस्या का समाधान नहीं हो पाया, तभी तो स्वयंसेवी संगठनों को मैदान में उतरना पड़ा है?...'

'...युवकों की मंडली को तो सीधे-सीधे मना नहीं कर सकते न!...'

'...हां तो यही कहलवा दो पार्टी फोरम में चर्चा होगी तब बताएंगे...'

'...उन्हें यह भी भान कराना जरूरी है कि लॉकडाउन पूरी तरह सफल है, ये भी सुझाव दें कि फिलहाल रामघाट तीरे मानस-मंडली के साथ हाथ बंटावें और अपने अंदर भगवान भक्ति जगावें, प्रभु की कृपा होगी तो कोरोना खुद ही काल के ग्रास में समा जाएगा...'

'...हां, यह भी ठीक रहेगा! वैसे शहर शंकराचार्यजी प्रसाद और भोग के पैकेट बनाकर वितरण की योजना बना ही रहे हैं; हमें क्या जरूरत है बिना हाथ-पैर वाले मंडली में शामिल होने की!...'

रवि मोहन को बुलाकर अध्यक्ष ने संकेत में सब कुछ समझा दिया। युवकगण अभी तक गोल घेरा बनाए खड़े थे, जैसे आरती के बाद प्रसाद पाने के लिए धैर्यवान बच्चे! रवि मोहन उनके बीच गया, बुझा हुआ चेहरा लिए। संवाद संक्षिप्त में प्रेषित किया, "विचार हुआ है कि मंडली के प्रस्ताव पर पार्टी फोरम में चर्चा होगी, फिर बताएंगे।" बोलकर रवि मोहन वहां से बाहर निकल लिया, किसी से भी आंख मिलाए बगैर। उसे ग्लानि हो रही थी, साथी नौजवान

क्या सोचेंगे कि अपने युवा विचारों को परतंत्र कर रखा है रवि भैया ने! मंडली के सदस्य भी बाहर निकलने लगे; एक-दूसरे से आंखें मिलाए बगैर।

3

पार्टी कार्यालय से बाहर निकलकर मंडली सामने वाले तिराहे पर आ खड़ी हुई; नि:शब्द! ऊपर आसमान में बदरी छंट चुकी थी; अप्रैल का सूरज हवा और जमीन पर कब्जा जमाने को बेताब दिख रहा था। सभी की नजरें तीनों सड़कों पर फिसलने लगीं, बारी-बारी से। एक रास्ते से तो वे पार्टी कार्यालय से वापस लौटे ही थे, दूसरी सड़क शहर को जाती थी, यानी सभी अपने-अपने घरों को वापस जाने के लिए स्वतंत्र थे; तीसरी सड़क थोड़ा आगे जाकर पुरानी पार्टी के दफ्तर की तरफ मुड़ती थी। चुप्पी परवेज ने तोड़ी, "सामुदायिक हित में कार्य करने का प्राथमिक सिद्धांत कहता है पिक एंड चूज वाली थ्योरी पर नहीं चलना; यदि हमने पार्टी कार्यालय आकर प्रयास कर लिया है, भले ही कुछ हासिल ना हुआ हो, हमें दूसरी पार्टी के भी कार्यालय जाकर सहयोग मांगना चाहिए, चाहे लोग उसे गई-गुजरी पार्टी क्यों न कहते हों! इससे कोरोना-कैबिनेट की कार्यप्रणाली निष्पक्ष और निरपेक्ष दिखेगी।"

अहम ने मोबाइल में किसी ग्रुप का मैसेज देखकर बताया, पुरानी पार्टी के अध्यक्ष जयपाल मंडलजी ने भी पार्टी दफ्तर में जिला कार्यकारिणी की सीमित बैठक बुला रखी है, कोरोना प्रोटोकॉल के दायरे में रहकर। सभी ने एक-दूसरे को देखा; सबकी आंखें पुरानी पार्टी के दफ्तर वाली सड़क की तरफ उठ गईं। सहज की कार पंचशील मार्ग की तरफ चल पड़ी, सभी बाइक के साथ।

सभी पुरानी पार्टी के अहाते में प्रवेश कर गए, सांस थामकर। वहां का नजारा देखकर चकित रह गए; पार्टी कार्यालय के उमंग-उल्लास-हलचल के विपरीत पुरानी पार्टी के दफ्तर में मुर्दाघाट-सा सन्नाटा पसरा था! सभी ने प्रश्न-भरी नजरों से अहम की तरफ देखा। उसने फिर से उस ग्रुप का मैसेज पढ़कर बोला, "दफ्तर में मीटिंग का मैसेज तो दिख रहा है!" बोलकर वह दफ्तर के कॉरिडोर की तरफ बढ़ चला। 'अध्यक्ष' लिखे बोर्ड वाले कमरे के दरवाजे के अंदर झांका, लटकते मायूस पर्दे को सरकाकर; एक व्यक्ति आंख-बंद विचारमग्न अवस्था में दिखा, दोनों गालों को दोनों हथेलियों के हवाले किए हुए। उसकी आंखें खुलवाने की खातिर उसे दरवाजा नॉक करना पड़ा। वह हड़बड़ाकर कुर्सी में सीधे हो गए। अहम को देखे बगैर उत्साहित

होकर बोले, "आइए, आइए! कार्यकारिणी की बैठक में स्वागत है!" अगले ही क्षण अहम पर नजर पड़ते ही झेंप गए, ये तो पार्टी के लोग हैं नहीं! उसकी ग्लानि को ताड़कर अहम ने कहा, "हमारी कोरोना-मंडली आपके दफ्तर में आई हुई है; लॉकडाउन के दिनों में गरीबों के घरों में दाना-पानी वितरण व्यवस्था के इंतजाम पर निकली हुई है हमारी मंडली..." अहम के बोलने के दौरान ही अध्यक्ष कमरे से निकलकर लॉन में खड़े युवा-मंडली तक बढ़ आए, लंबा चेहरा लिए। आते ही सभी को हाथ जोड़कर अभिवादन किया, फिर बोले, "इस घनघोर संकट में आपकी मंडली की पूरे शहर में चर्चा है; जन सहभागिता के बगैर इतनी बड़ी चुनौती से पार नहीं पा सकते हैं न!"

"इसलिए आपसे सहयोग मांगने आए हैं।" जल्दी परिणाम तक पहुंचने की खातिर परवेज ने कहा।

"हमारी पार्टी अब किसी को सहयोग देने लायक कहां रही! आप लोग खुद ही देख लो, कार्यकारिणी की बैठक में पदाधिकारी तक नहीं आते हैं; सेवा दल के सदस्य तो विलुप्त प्रजाति के पंजीकृत प्राणी मात्र रह गए हैं! फिर हम जन सहयोग किसके भरोसे करें?"

"अभी हम लोग सरकारी पार्टी के कार्यालय से लौट रहे हैं; उन लोगों से सहयोग मांगा तो 'चर्चा करेंगे' कहकर टाल दिया।" सहज ने लाचारी व्यक्त करते हुए कहा।

"अब सरकारी पार्टी के बारे में मैं बोलूं तो क्या बोलूं! भगवान राम तो पूरे के पूरे उन्हीं के साथ हो लिए हैं, हमें हनुमान का भी सहारा मिल जाता तो कुछ सोच पाते; सत्ताधारी पार्टी का आत्मविश्वास तो अब सातवें आसमान पर जा पहुंचा है, ऐसे में उन्हें भला क्या जरूरत है जनसेवा की? न तो खुद करेंगे और न ही दूसरे को करने देंगे!" बोलकर अध्यक्ष ने मरणासन्न-सी सूरत बनाई; जैसे किसी बड़े जहाज की जल समाधि का दृश्य देख रहे हों।

"फिर आपकी पार्टी कोरोना संकट के समय में अब जनता के लिए क्या करेगी!" अहम ने निचोड़ ही पूछ लेना बेहतर समझा।

"दिल्ली में पार्टी मुख्यालय के चार-पांच बड़े नेताओं ने मोर्चा संभाल रखा है, सरकार की झूठ को पकड़ते रहने के लिए!" बोलकर अध्यक्ष के चेहरे में अब चमक आ गई थी।

"इससे जनता को कैसे फायदा पहुंचेगा?" शायनी की उत्सुकता जाग उठी।

"पार्टी के बड़े नेता प्रतिदिन ट्वीट करके जनता तक अपनी बात पहुंचाते

रहते हैं; इसके अलावा हमारी पार्टी के पास करने का कोई काम तो इस सरकार ने छोड़ा ही नहीं!" इतना बोलकर कानाफूसी के अंदाज में कहने लगे, "अरे बाबू, सरकार ने तो हमारी पार्टी के सक्षम लोगों को इस तरह फंसाकर उलझा रखा है समझो वे ज्यादा मुंह नहीं खोल सकते!" कुछ क्षण तक वहां सन्नाटा पसरा रहा। अध्यक्ष ने अचानक कोई अज्ञात हड़बड़ी दिखाते हुए कहा, "लॉकडाउन चल रहा है, प्रशासन काफी सख्त है; हम सभी की भलाई घरों में रहने में ही है!" बोलकर वे सभी के लिए एकमुश्त हाथ जोड़ते हुए बढ़ चले, दफ्तर के पीछे अपने निवास की तरफ।

मंडली के सदस्य अर्ध-बेहोशी वाला चेहरा लिए पंचशील मार्ग पर आकर खड़े हो गए, किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में। मौन के भारीपन को अहम ने तोड़ा, "यह तो मानव सभ्यता में होता आया है; आप सर्वजन हित में कोई नया काम करना चाहोगे तो प्रेरणा और सहयोग के बजाय हर तरफ से हतोत्साहित ही किए जाओगे!"

"फिर कोरोना वायरस की चुनौती से निपटने के लिए कोरोना-कैबिनेट के पास क्या विकल्प बचा है?" शायनी बोली तो अंदर से टूटती हुई जान पड़ी।

"अब तो कोई विकल्प दिख नहीं रहा है! फिलहाल अपने-अपने करियर में वापस जाओ, निजी जिंदगी की फिक्र करो।" मंजरी बोली; लगा जैसे युवा वर्ग की सामूहिक अभिव्यक्ति प्रकट हुई हो।

"कोई विकल्प नहीं बचा है ऐसा मैं नहीं मानता; हां, फिलहाल कोई विकल्प नहीं दिख रहा है।" पंचशील मार्ग से निकलने वाले सभी रास्तों पर नजर दौड़ाते हुए परवेज ने कहा।

"सिंसियर्लि डिस्कस करने से हमारी क्रियाशीलता के लिए कोई-न-कोई विकल्प निकल ही आएगा," अहम ने सुझाव दिया।

"और यह तो आप पहले ही एक्सप्लेन कर चुके हैं स्वतंत्र क्रियाशीलता के बगैर व्यक्ति वस्तु मात्र है," अहम की बात पर सहमति देते हुए मंजरी बोली।

"फिर तो हमें कोरोना-कैबिनेट की बैठक बुलानी चाहिए; अभी, यहीं पर!" अहम का अस्तित्व जाग पड़ा।

...हां-हां-हां-हां-हां...सामूहिक अस्तित्व सामने आया।

"एस-एस..." सड़क किनारे बाइक में स्टैंड लगाते हुए रॉबर्ट नारा लगाते हुए-सा बोला, उन लोगों के 'हां-हां' को आगे बढ़ाते हुए-सा; उनके बीच आकर बोला, "कांग्रेच्युलेशन फोर गेटिंग हेल्प फ्रॉम पॉलिटिकल पार्टीज।"

"आलू का हेल्प, फालतू का कांग्रॅच्युलेशन," मनोज ने खिन्न होकर कहा।

"समय पर तो आते नहीं हो कभी, जब आते हो तो सिर-पूंछ एक किए देते हो!" रॉबर्ट की खबर लेने की भाव-भाषा में परवेज ने कहा।

"माफ करना बाबा, अपन आज फिर अर्जेंट टास्क में लगे रहने का।" रॉबर्ट ने कहा, माफी मांगने की भाव-भंगिमा में।

"इस लॉकडाउन में कौन-सा अर्जेंट टास्क पूरा कर रहे हो, रामघाट में तुमने भी गर्लफ्रेंड तो नहीं ढूंढ़ लिया!" दिनेश ने चुटकी लेते हुए कहा।

"क्यों, रामघाट की लड़कियों पर सिर्फ यहीं के लड़कों का अधिकार है क्या?" सहज ने सहारा देना चाहा रॉबर्ट को; मंजरी और शायनी की ओर क्षमा-याचना वाली मुख-मुद्रा बनाते हुए।

"अरे बाबा, जोक का टाइम नहीं होने का," रॉबर्ट काफी गंभीर होकर बोलने लगा, "अपन एनजीओ आज एसपी और सीएमओ से मिलकर आने का; सिटी में सड़क-चौराहे पर पुलिस मैन कंटिन्यू एटीन-ट्वेंटी आवर ड्यूटी देने का, पैरामेडिकल स्टाफ भी डबल शिफ्ट करते रहने का! रियली यार पुलिस मैन और मेडिकल वाले कोरोना के डेंजर से नहीं डरने का! आइ सेल्यूट देम..." उसके बोलने के बीच ही मनोज की पत्रकारिता जाग गई "देन?" रॉबर्ट ने बोलना जारी रखा, "दे आर आल्सो ह्यूमन बीइंग, दे आल्सो नीड प्रॉपर रेस्ट; अपन पूरा ग्रुप आज एसपी एंड सीएमओ से मिलकर आने का, ऑल्टरनेट टीम के अरेंज्मेंट पर बात करने का..."

"ये सुझाव तो मैंने कलेक्टर वाली मीटिंग में भी दिया था।" शायनी बोली तो उसकी आवाज में गहरी निराशा घुली थी।

"एसपी एंड सीएमओ क्या उपाय करने का?" अहम की उत्सुकता बाहर आई, रॉबर्ट की वाक्-शैली में ही।

"इधर गवमेंट के लोग कम समझने का; अब मुझे नॉर्थ इंडिया वाला फ्रेज 'गधे की अक्ल' समझ में आने का।" बोलते-बोलते रॉबर्ट ने सिर पकड़ लिया।

"नेक्स्ट?"

"अपन कोरोना-मंडली मेंबर का वॉलंटरी सर्विस का ऑफर देने का।" बोलकर रॉबर्ट ने सभी की ओर देखा, कि साथियों से बिना पूछे ऑफर देकर वह कोई ब्लंडर तो नहीं कर आया है।

"यू हैव डन अ फेंटास्टिक जॉब, लेट अस डिस्क्स इन आवर कैबिनेट।"

अहम ने आगे बढ़ते हुए कहा।

"अपना कैबिनेट आज इस गुलमोहर के नीचे बैठेगा, जनता की भलाई वाला असली कैबिनेट की भांति!" सड़क किनारे छायादार पेड़ की तरफ संकेत करते हुए परवेज ने कहा। खिलने को बेताब लालवर्णी फूलों के गुच्छों से लदे गुलमोहर के नीचे सभी बैठते गए; जीवन को जगत से जुड़ा अनुभव करते हुए।

"हमें रामू को भी इस बैठक से जोड़ना चाहिए, गेस्ट पार्टिसिपेंट के रूप में?" सभी की ओर देखते हुए शायनी बोली, सहमति के लिए।

"एस-एस!" भूल का एहसास होने जैसे स्वर में सहज ने कहा, बाएं हाथ से मोबाइल में लिंक भेजते हुए।

"सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव, यदि सीएमओ द्वारा वॉलंटियर्स मांगा जाएगा तो अपनी मंडली के मेंबर स्वेच्छा से सेवा दे सकते हैं; कोरोना-मंडली के फंड से कुछ प्रोत्साहन मानदेय दिया जा सकता है..." कोरोना-कैबिनेट की बैठक की शुरुआत करते हुए सहज बोलने लगा; तभी उसके मोबाइल में आकाशीय आवाज आई, '...हाय! मेरे सभी जिगर के टुकड़े!...' फिर मोबाइल स्क्रीन में रामू का चहकता चेहरा चमक उठा।

"डोंट वरी, तुम्हारे जिगर का असली टुकड़ा भी यहीं है," कातिल कोरोना से ध्यान हटाते हुए मनोज मजाकिया मूड में आ गया।

"ये बिचारी तो सर पटक रही है, गए थे तुम जहाज बंद कराने और खुद वहां बंदी बन गए!" शायनी भी मुखर हो उठी।

'...मंजरी अकेली नहीं है सर पटकने वाले, लक्ष्मनपुरा करोना के कब्जे में आ जाने के बाद पूरा रामघाट सर पकड़ लिया होगा; अभी भी वक्त है हम करोना को रामघाट की सीमा के अंदर बढ़ने न दें, अब तो हर हालात में मुझे रामघाट लौटना ही होगा...' रामू की आवाज मोबाइल में कहीं दूर से आती लग रही थी।

"अरे तुम पागल तो नहीं हो गए हो! बस-ट्रेन सब बंद हैं फिर तुम आओगे कैसे?"

'...कोई-न-कोई उपाय निकल ही आएगा', अब उसकी आवाज वार्ता की दिशा बदलने जैसी ही गई, '...असली बात तो बताओ शायनी, कोरोना बंदी पर तुम्हारा स्टडी चल रहा है कि बंद हो गया?...' लगा कोरोना अभी भी रामू की सोच का केंद्र बिंदु बना हुआ है।

"अब तक काफी स्टडी कर ली है मैंने, आगे पार्ट टाइम रिसर्च के बारे में सोच रही हूं; वैसे कोरोना एक जटिल जंतु जान पड़ता है मुझे।" शायनी के बोलने से गुलमोहर के नीचे हास-परिहास के माहौल में गंभीरता आ टपकी।

'...मुझे विज्ञान की ज्यादा समझ नहीं है शायनी, पर एक छोटी-सी बात बताऊं?' रामू की आवाज से लगा वह कोई नई बात बताने जा रहा है, आगे कहा, '...दुनिया में जो भी आविष्कार होते हैं आविष्कारकर्ता को उसके परिणाम की परछाई लेबोर्टरी से पहले मन में, दिमाग में दिखने लगती है!"

"शायनी को यदि परछाई नहीं दिख रही है तो तुम दिखा दो," परवेज ने विषय की कड़ी को बनाए रखने की गरज से कहा।

'...विज्ञान मेरा विषय नहीं रहा है; परछाई तो नहीं दिखा सकता, पर 'पर-छल' जरूर बता सकता हूं...' रामू की बातें गूढ़ हो चलीं; लगा सच में कोई खुलासा करने वाला है।

"पर-छल?" बिल्कुल ही नया शब्द सुनकर शायनी अचंभित थी।

'...हां शायनी, यह कोरोना नेचुरल वायरस नहीं है, बल्कि यह हाथ का बना हुआ है; इसे चीन ने जन्म दिया है, अपनी लेबोर्टरी में!...' रामू की आवाज यकीन के पेंच-पुर्जे से कसी हुई थी।

"तुम इतने यकीन के साथ कैसे कह सकते हो?" अब अहम को कोई नई कड़ी दिखने लगी।

'...कोरोना वायरस हाथ धोने से मर जाता है, जाहिर-सी बात है वह हाथ का ही बना होगा!...' कोई जटिल ताला हाथ घुमा देने मात्र से खोल देने के अंदाज में रामू ने कहा।

"तब तो कोरोना-कैबिनेट की आज की बैठक में ही इस मसले पर विचार होना मांगता है!" सहज ने प्रस्ताव रखने जैसा कहा।

'...हां भई! चीन को चाबुक लगाने के मसले पर असली कैबिनेट चुप है अब तक है, फिर तो हमारी कैबिनेट की जिम्मेदारी बनती है इस पर कुछ करने की...' मोबाइल में रामू की आवाज आ ही रही थी कि चौराहे की तरफ से पुलिस जिप्सी आती दिखी। सभी के गले में पास होने के बावजूद वे एक-दूसरे की ओर देखने लगे। पुलिस से मुफ्त में कौन पंगा ले; सहज ने वीसी का लिंक ऑफ कर दिया। बिना किसी संवाद-संकेत के ही सभी अपनी-अपनी बाइक की तरफ बढ़ चले। वे सभी किसी भी रास्ते पर चल पड़े, जैसे सब कुछ पथविहीन हो गया हो! शायनी के साथ कार में

बैठते-बैठते सहज ने सभी से कहा, "पर वीसी में मिलते रहेंगे!" बाइक स्टार्ट कर परवेज भी ऐलानिया अंदाज में बोलता गया, "हां-हां, चीन को वायरस बनाने की सजा भी तो देनी है!"

रामघाट तीरे से आने वाली आवाज और प्रखर हो उठी थी...जगदंबा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान...

4

7 अप्रैल, 2020; लक्ष्मणपुरा में कोरोनापात की खबर से रामघाटवासियों के रोंगटे खड़े होने लगे थे। लक्ष्मणपुरा जिले से लगती रामघाट जिले की सीमा-सीलबंदी अब और टाइट कर दी गई। सीमा के हालात की रिपोर्टिंग की खातिर मनोज रामघाट जिले की पूर्वी सीमा की ओर चल पड़ा; बस्ती के सुभाष मार्ग वाले टी से बाईं ओर लक्ष्मणपुरा रोड पर। साउथ केबिन रेलवे क्रॉसिंग पर बाइक पर बैठा इंतजार कर रहा था, बंद क्रॉसिंग खुलने का; मेन लाइन पर शायद कोई मालगाड़ी आ रही थी। दूध लेकर आ रही मंजरी मनोज की बाइक पहचान गई, पीछे से ही। मनोज द्वारा लक्ष्मणपुरा जाने की बात सुनकर वह रोक ना पाई अपने को; रिंकी के हाथ दूध भिजवाकर बाइक में बैठ ली। रामू के रामघाट में नहीं होने से मंजरी उसके बारे में ज्यादा सोचती रहने लगी थी; उसे महसूस हुआ लक्ष्मणपुरा में कोरोना आने वाली खबर से रामू लक्ष्मणपुरा सीमा पर जरूर कोई-न-कोई मल्ल-मशक्कत करता, कोरोना को रामघाट की ओर बढ़ने से रोकने की खातिर। रामू के किस्से-कारनामे याद कर वह स्व-मुस्कान से खिलने लगी, बाइक में बैठे-बैठे ही।

लक्ष्मणपुरा रोड पुराना रास्ता हुआ करता है, लक्ष्मणपुरा जाने के लिए; घनी आबादी लांघते हुए, गांव-गोबर से गुजरते हुए। इस रास्ते मंजरी पहले भी दो-तीन बार जा चुकी थी, अपनी एक प्रिय सहेली के घर। वह सच में स्पंदित होने लगी...आज पूरी सड़क सुनसान पड़ी थी; बच्चे भी घर की देहरी पर खड़े दिख रहे थे, सावधान मुद्रा में; लोगों ने अपने मवेशी तक को सड़कों पर छोड़ रखने के बजाय शायद अंदर बाड़े में बांध रखा था। कोई बीस-पच्चीस मिनट में ही बाइक सीमा पर पहुंच गई। वहां का नजारा देखकर दोनों की आंखें फटी रह गईं...गांववालों ने सीमा को बांस-बल्ली से पूर्णतः सील कर रखा था; पांच-सात फीट नहीं, पंद्रह-बीस फीट ऊंची दीवारनुमा बांस-खपच्ची से, जैसे लक्ष्मणपुरा से मनुष्य तो मनुष्य किसी जंतु-जानवर

के भी सड़क पार करने के संशय को समाप्त कर दिया हो। दोनों के वहां पहुंचते ही लाठी-डंडे से लैस दस-बारह नवयुवक सड़क पर आ धमके, अंदर कहीं से त्वरित गति से चलते हुए। दोनों सहम गए, कहीं उन पर डंडे न बरसने लगें; तेजी से बाइक में बैठने लगे। डंडाधारियों में से एक नवयुवक ने आवाज दी, "मनोज भैया, हम लोग सरकार का सहयोग कर रहे हैं, हमारा फोटो जरूर छापिएगा अखबार में।" मनोज को तसल्ली हुई; जेब से निकली चाभी को जेब में ही रहने दिया; मुस्कुराकर बोला, "आप लोगों ने तो बड़ा तगड़ा बंदोबस्त कर रखा है, कोरोना-कंट्रोल के लिए!"

"पर आप लोग लाठी-डंडे से क्यों लैस हैं?" मंजरी की उत्सुकता जाग पड़ी।

"यदि कोई नासमझ ना समझे तो उसे सबक सिखाने के लिए," भीड़ से आवाज आई।

"यदि कोरोना खुद ही अपना कांटेदार सींग बैरियर से भिड़ाने लगे तो उसकी सींग तोड़ने के लिए भी," किसी जोशीले नौजवान की आवाज थी। मंजरी और मनोज एक-दूसरे को देखने लगे, मुस्कान को छिपाने का भरसक प्रयास करते हुए। तभी तीर-धनुष-गुलेल सज्जित चार-पांच किशोरवय युवक बैरियर के पास आ डटे, आंखों में किसी के लिए खौफ लिए।

"वायरस रोकने में तीर-धनुष भला क्या काम आएगा!" मनोज ने पूछा, होंठों में आ चुकी व्यंग्यात्मक मुस्कान को नियंत्रित करते हुए।

"अरे भैया, आपने सुना नहीं है क्या? चीन कितना कमीना चीज है! पक्षी-पखेरू उड़ाकर वायरस फैलाते रहना उसकी पुरानी आदत है!" गंभीर किस्म के एक नौजवान ने चीन-वेत्ता भांति बोला।

"और यदि कोई अनजान पक्षी ऊपर से उड़कर रामघाट की तरफ आता दिखाई दिया तो हमारे निशानेबाज उसे सीमा पर ही परलोक का रास्ता दिखा देंगे!" गांव की तरफ से आ चुके जत्थे में से एक अधेड़ ने कहा; पंचायत का पंच-प्रधान जैसा कुछ होने का हाव-भाव बनाते हुए।

"और यह गुलेल?" मंजरी किंकर्तव्यविमूढ़ थी।

"लक्ष्मणपुरा की तरफ से मुर्गी-बत्तख भी तो रामघाट में इल्लीगल इंट्री ले सकता है न!" जत्थे के पीछे से आवाज आई। मनोज और मंजरी ने होंठों पर हाथ धर लिए; अंदर से आ रही हँसी रोकने, या फिर अपना विस्मय प्रकट करने से बचने के लिए।

"बहुत खूब! शानदार रिपोर्ट लगाता हूं," विजय संकेतक अंगूठा ऊपर की ओर दिखाते हुए मनोज बाइक की ओर बढ़ चला। गांववालों की ओर मुस्कुराकर हाथ जोड़ते हुए मंजरी भी पीछे जा बैठी।

रामघाट को लक्ष्मणपुरा से जोड़ने वाले तीन-चार मार्ग हैं। इनमें से एनएच बाईपास को छोड़कर बाकी रास्ते गांवों, घनी बस्तियों से होकर गुजरते हैं। ग्रामीण क्षेत्र के एक मार्ग का जायजा लेने के बाद दूसरे मार्ग पर जाना जरूरी नहीं समझा मनोज ने; सीधे रामघाट बाईपास की ओर बाइक की रफ्तार बढ़ा दी, मंजरी को मजबूती से बैठे रहने की हिदायत देकर। बीस-पच्चीस किलोमीटर चलने के बाद उसे अंदाजा होने लगा, लक्ष्मणपुरा की सीमा यहीं कहीं शुरू होती है। उसकी नजर अचानक झुरमुट में छिपे बोर्ड पर पड़ी... लक्ष्मणपुरा जिले में आपका स्वागत है, अध्यक्ष जिला पंचायत लक्ष्मणपुरा...। उसने बाइक रोक दी। दोनों ने चारों तरफ नजर दौड़ाई; सरकारी महकमे की मौजूदगी के कोई चिह्न नहीं दिख रहे थे, सिवाय एक पुलिस केबिन के। उन्हें ताज्जुब हुआ, यहां तो लक्ष्मणपुरा और रामघाट में कोई भेद-विभेद नहीं है!... फोरलेन एनएच पर बाईं लेन में गाड़ियां लक्ष्मणपुरा की ओर सरपट भागी जा रही हैं, तो दाईं लेन में लक्ष्मणपुरा की तरफ से तेज रफ्तार गाड़ियां रामघाट की सीमा में बेरोकटोक घुसी जा रही हैं? दोनों लेन में गाड़ियों की रेस देखकर उनके होश उड़ गए...क्या राष्ट्रीय राजमार्ग पर लॉकडाउन के नियम लागू नहीं होते? मनोज ने अपने एयरबैग से चैनल वाला माइक निकाल लिया, वहां के अबाधित यातायात को कवरेज करने की खातिर। केबिन में दुबके डंडाधारी दो सिपाही निकलकर केबिन के पीछे की ओर सरकने लगे। मंजरी उनके पास जाकर विनम्रतापूर्वक बोली, "इसमें डरने-छिपने की भला क्या बात है, सामने आइए स्थिति बताइए।"

"देखिए सर, हम होमगार्ड वाले हैं! इसमें हमारा कोई दोष नहीं है, सारे राइफलधारी शहर में ही लगे हैं," एक सिपाही हाथ जोड़ने-सा करता हुआ बोला।

"अरे बुड़बक बड़े भैया, राइफलधारी की ड्यूटी यहां लग ही जाती तो कौन-सा तीर मार लेता!" दूसरा सिपाही तेज-तर्रार निकला।

"हां सर, हमारे छोटे भाई सही कह रहे हैं!" पहले वाले ने समर्थन किया; हाथ को जांघ के किनारे ले जाते हुए, सिपाहीनुमा जैसा।

"सही नहीं तो का झूठ कह रहे हैं हम?" दूसरेवाले ने पहलेवाले की ओर

देखकर कहा, आंख से चुप रहने का संकेत-संप्रेषण देते हुए; आगे सफाईनामे जैसा बोलता गया, "आप तो मीडिया वाले हैं सर, हम तो हकीकत ही बयान करेंगे; जिस भी गाड़ी को रोकते-टोकते हैं वह या तो नेता निकल आता है या अफसर बन जाता है, मरीज बनकर रोने लगता है, या फिर कोरोना ड्यूटी बताने लगता है, कभी-कभी तो मीडिया वाला बनकर चढ़ने लगता है: कितने तो पास होल्डर बनकर तन जाते हैं, फिर तो कोई बचा ही नहीं! अब आप ही बताइए रोकें तो किसको रोकें?" उसकी गर्दन तन गई, सामने खड़े मीडिया बाबू को चित्त कर देने की भाव-भंगिमा बनाकर।

"तो इसका मतलब है रामघाट में कोरोना को आने से अब तो प्रभु राम भी नहीं रोक सकते हैं?" मंजरी बोल पड़ी, एक कदम आगे बढ़कर; गूंगी गर्ल या मीडिया बाबू का गर्लफ्रेंड-सा दिखना उसे असहज करने लगा था।

"प्रभु राम की बात यहां पर ना कीजिए तो वही ठीक रहेगा; बात रही ट्रैफिक को रोकने की, तो रुक सकता है अगर आप लोग ट्रैफिक को जीरो करवा पाएं तो!" पहले वाले ने गंभीर बनते हुए कहा।

"इसके लिए क्या करना पड़ेगा?" मंजरी समाधान की ओर बढ़ना चाह रही थी।

"यह सिर्फ सरकारी आदमी से नहीं हो सकता," पहलेवाला दोनों पंजों को हवा में लहराकर बोलने लगा, "जन सहयोग से ही हो सकता है!"

"कैसा जन सहयोग?" बाइट लेते हुए मनोज ने पूछा।

"यदि स्थानीय नौजवानों के वॉलंटियर्स तैनात किए जाएं, तो कार दौड़ाने वाले को टट्टी-पेशाब होने लगेगा!" दूसरेवाले ने बोलकर मंजरी की ओर क्षमा-याचना-सी दृष्टि डाली।

"कलेक्टर साहब की मीटिंग में हमारी कोरोना-मंडली ने वॉलिंटियर्स का ऑफर दिया था एसएसपी साहब को; फिर एक दिन कोतवाली जाकर इंस्पेक्टर साहब को भी सहयोग-समन्वय का खुला ऑफर देकर आए थे।" मंजरी बेधड़क बोलती गई, सहयोगी मीडियाकर्मी की भूमिका में आते हुए।

"अच्छा आप लोग करना-मंडली से हैं!" पहलेवाले ने प्रसन्नता जाहिर की।

"जी-जी, रिपोर्टर तो हूं ही, मंडली में भी हैं हम लोग।" भरपूर मित्रवत स्थिति में आते हुए मनोज ने कहा।

"भाई साहब आप थोड़ी देर के लिए अपना कैमरा और माइक बंद कर

दें, तो सच्चाई बताऊं," पहले वाले ने गुजारिश की। मनोज ने मोबाइल पॉकेट में रख लिया, कैमरा कमर के नीचे की ओर।

"अपनी बारह साल की ड्यूटी में हमने एक से एक अच्छे-बुरे एसपी और कोतवाल देखे हैं," पहले वाले ने आंखें बंद करते हुए कहा, जैसे स्मृति-वन में विचरण करने लगा हो; अब अधखुली आंखों के साथ बोला "आप किस एसपी की बात कर रहे हैं? निशांत कुमार! कौन-सा कोतवाल? दिग्गज सिंह!" उसकी मुख-मुद्रा प्रश्ननुमा हो चली; अब नाक से घृणा-वायु की धार-सी निकली...हूंअंएं...। घृणा-वायु को भरपूर बाहर निकालकर वह केबिन की ओर मुड़ चला; पीछे से दूसरावाला भी, सीनियर के पाठ का मर्म-मंथन करते हुए।

लक्ष्मणपुरा की तरफ से सायरन बजाती गाड़ियों का शोर सुनाई पड़ने लगा, आसमान को चीरते हुए; लगा जैसे कोरोना ने हवाई हमला कर दिया हो। फटाफट बाइक में बैठकर दोनों निकल पड़े; रामघाट की सलामती की दुआ करते हुए। पीछे बैठी मंजरी मैसेज भेजती रही रामू को, '...रामघाट का बचना मुश्किल लग रहा है...।'

5

7 अप्रैल, 2020; कोरोना के घातक कांटों के चंगुल से छुटकारा पाते ही रामू जग पड़ा; सुबह वाले डरावने स्वप्न का चरम एकाएक भरभराने से। दड़बे में सभी मृतवत पड़े थे; उनकी सांसें चल मात्र रही थीं, सुबह वाली सुखद नींद में। जगते ही उसका जोश जोर मारने लगा; रामघाट पहुंचकर लक्ष्मणपुरा की तरफ से आनेवाले कोरोना से भिड़ पड़ने के लिए। यहां दिल्ली में पड़े रहने का अर्थ है लाश जैसा निस्पंद हो जाना; पर उसे तो कोरोना के खिलाफ लड़ते रहना है! अहम तो सच ही कहता है ऑब्जेक्ट जैसा पड़े रहने से मनुष्य तो अस्तित्वविहीन ही बना रहेगा! उसकी नजरें छत-दरवाजे-खिड़की-टेबल से टकराती रहीं, बारी-बारी से; हां, निर्जीव पदार्थ जैसा निष्क्रिय-निस्पंद होकर कतई नहीं पड़ा रहेगा वह, इस दिल्ली में। उसे तो सदा सक्रिय बने रहना है, अपने अस्तित्व को अर्थ देते हुए; अन्यथा अहम जैसे विद्वान वरिष्ठ साथी के साथ होने का मतलब ही क्या रह जाएगा!

वह दरवाजे के बाहर आकर खड़ा हो गया। शाहदरा का सवेरा जमीन पर उतर रहा था, थका-थका-सा। दिल्ली का आसमान बेजान दिख रहा था।

अब उसका सिर्फ शरीर दिल्ली में रह गया था; मन तो कल रात ही रामघाट पहुंच चुका था, मंजरी की मीठी मुस्कान की डोर से खिंचते हुए। अंधेरा रहते वह आनंद विहार बस अड्डे की तरफ जाने वाले पैदल रास्ते पर चढ़ जाना चाहता था; शायद कहीं कोई बस-ट्रक मिल जाए। दड़बे से निकलकर वह छत पर जा पहुंचा; वहां से चारों दिशा को परख लेना जरूरी था, कितना अंधेरा बचा है! छत पर सोमवार की सुहावनी सुबह अपने सफर पर निकलती दिखी। एकमात्र बैग यानी हैंडबैग वह रात में ही पैक कर चुका था। आखिर सामान ही कितना था; वह दिल्ली बसने थोड़े न आया था! किसी को बताए बिना ही वह निकल लेना चाहता था; अंकित के आंसू, या किसी और का रुआंसापन कहीं उसे रोक ना ले! ठीक है वह सतरह दिनों से उन सभी के माथे पर बोझ-सा पड़ा था, कुछेक साथी-संगी उसे हिकारतभरी नजरों से देखने भी लगे थे, पर ऐसे हालात में वे उसे अकेले जाने ना देते। कंधे पर बैग लटकाए पहली सीढ़ी पर कदम रखा, आत्मग्लानि-सी हुई; जिनके साथ इतने दिनों तक रहा, दिन-रात आत्मीयतापूर्वक उठना-बैठना, खाना-सोना होता रहा उन्हें बिना बताए जाना? उसकी स्थिति सांप-छुछुंदर वाली हो गई। अचानक ध्यान पॉकेट में रखे मोबाइल पर गया; मोबाइल में उसकी उंगली स्वचालित टाइपराइटर भांति चलने लगी...डियर अंकित मुझे माफ करना, तुम लोगों को बिना बताए जा रहा हूं; तुमने मुझे इतने दिनों तक पनाह दी, तुम लोगों को, और खासकर तुम्हें भला कैसे भूल पाऊंगा; ऐसे समय में जैसे-तैसे रामघाट पहुंचकर अपने शहर के काम आ सकूं तो जन्म कृतार्थ हो, भुवन भैया को और सभी को मेरा नमस्ते बोलना, सभी का शुक्रगुजार हूं...मैसेज सेंट करते ही वह सामने वाली गली में उतर चुका था। किसी को प्रयाण या पलायन जो भी हो, की भनक तक नहीं लगी।

कई दिनों बाद दिल्ली में पुरवैय्या के पैर पड़े थे। शीतल-सुखद स्पर्श से उसकी उम्मीदों को पंख लग गए, अब तो बस-ट्रक मिलना ही मिलना है! आगे हर सड़क-चौराहे पर पुलिस की जबरदस्त नाकेबंदी थी; दिल्ली आखिर राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन का मस्तक भी तो था! शाहदरा-दिलशाद गार्डन मुख्य मार्ग क्रॉस कर वह सड़क के नीचे उतर लिया। उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं; सड़कें तो सुनसान थीं पर नीचे-नीचे लोगों का हुजूम! लड़के-मर्द कंधे पर बैग लटकाए, औरतें माथे पर गठरी उठाए, तो बच्चे बोतल थामे हुए! अभी-अभी उगे सूरज की दिशा में चारों ओर बढ़ता हुआ कारवां! शांत-गंभीर;

जैसे किसी बड़े यज्ञ में व्यर्थ की आहुति देकर ठगा हुआ-सा लौट रहे हों। दड़बे से निकलकर सुनसान रास्ते में चुपचाप बढ़ते हुए उसने क्या तो प्लान कर रखा था, पूर्व की तरफ जा रहे किसी ट्रक ड्राइवर को पटाकर लद लेगा; यहां तो सड़क से परे चारों ओर छोटे-बड़े कई झुंड में लोगों का कारवां बढ़ता जा रहा है! कोरोना से बेखबर, तो सोशल डिस्टेंसिंग से बेपरवाह। रामघाट के बगल वाले जिले में गंगा किनारे लगने वाले माघी मेला की याद ताजी हो गई उसकी स्मृति में; पर वहां तो लोगों का रेला माघी पूर्णिमा में गंगा में डुबकी लगाने बढ़ता चला जाता है, यहां हजारों-हजार लोग आखिर किस मंजिल की तरफ, किस उम्मीद में बढ़े चले जा रहे हैं? खुद उसे भी तो पता नहीं ट्रक कहां दिखेगा? उसकी पलकें अपने आप खुलने-बंद होने लगीं। माथे के केंद्र-बिंदु में कोई सनसनाहट-सरसराहट-सी महसूस हुई। अगले ही पल उसने अपने को नई दुनिया में खड़ा पाया; हां, चलायमान दुनिया जो चलती ही चली जा रही है! वह चाहकर भी एक जगह खड़ा नहीं रह सकता था। उसे ध्यान आया, वह भी भीड़ में गुम होकर स्वत: बढ़ता चला जा रहा है।

आधे घंटे बाद कारवां की रफ्तार धीमी पड़ती गई। उचक-उचक कर देखने पर लगा वह तो अणु से परमाणु बनने की मशीन में घुस गया है; अलग-अलग दिशाओं से आने वाले झुंड के झुंड एक बड़ी भीड़ का भाग बनते जा रहे हैं! उसने अपनी बेशकीमती संपत्ति, यानी 'कुछ भी हो जाय मन से खुश रहना' को याद किया; तत्क्षण लगा, हो न हो सरकार ने कोरोना मुक्ति केंद्र खोल रखा हो, इस जनसमंदर के अंतिम छोर में! बगल में खड़े चाचा-सा लगने वाले अधेड़ व्यक्ति से उसने पूछ ही लिया, "चच्चू, यहां इतनी भीड़ क्यों जुटी है! करोना बूटी बंट रही है क्या?"

"बूटी का तो नहीं पता, कोरोना जरूर बढ़ रहा है।" बोलकर उस आदमी ने गले वाले गमछे से मुंह फिर से ढक लिया।

"तो इतनी बड़ी भीड़ यहां क्यों आ गई है!" रामू ने विस्मित स्वर में कहा; उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

"आप कष्ट करके क्यों आए हैं यहां तक!" उसने रामू से पूछा, ऊपर से नीचे तक गौर से देखते हुए।

"मैं रामघाट के लिए किसी बस या ट्रक में बैठ जाने की जुगाड़ में आया हूं।" रामू ने भोलेपन से कहा।

"अच्छा! तो आप रामघाट के हैं? तभी तो! जैसे आप बड़ी उम्मीद लेकर

आए हैं, वैसे ही हजारों बेसहारा लोग घर पहुंचने की आस लेकर आए हैं।" फिर उसने मुख्य सड़क के ऊपर उंगली से संकेत करते हुए कहा, "वह देखिए दूर में कुछ लिखा है? जरा पढ़िए, मैं तो नहीं पढ़ पा रहा हूं।" रामू ने देखा कोई सौ मीटर दूर सड़क के ऊपर वाले बोर्ड में लिखा था 'आनंद विहार बस अड्डा' और तीर से दाएं जाने का संकेत बना हुआ था। उसके आश्चर्य का ठिकाना ना रहा, "चच्चू, यह तो आनंद विहार बस अड्डा है! समझिए हम लोग अपना घर आधा तो पहुंच ही गए!"

"तो तुम क्या सोच रहे थे अब तक? किस्मत के मारे हजारों लोग यहां खेती-बाड़ी करने आए हैं! आज सुबह बात फैली कि सीएम साहब बस भेज रहे हैं, कोरोना बस सेवा का बैनर लगाकर; आगे का तमाशा तुम्हारे सामने है; हमें भी बिहार जाना है अपना घर, पुरनिया जिला।" चच्चूनुमा आदमी में अपनापन जाग आया था।

"तो चलिए आगे बढ़ा जाए किसी तरह।" रामू उतावला हो उठा, बस वाली बात सुनकर।

"आगे बढ़ना इतना आसान है क्या! वहां बस अड्डे के गेट पर दिल्ली पुलिस ने नाकेबंदी कर रखी है, उधर पीछे यूपी पुलिस ने तो सीमा ही सील कर दी है! अब तो यहां से हिलना तक मुश्किल है।" उसने सामने भीड़ पर नजर फेंकते हुए कहा। रामू भीड़ में दूर-दूर तक नजर फिराने लगा...कंधे में बैग, माथे पर पोटली, हाथ में थैला थामे लोग एक-दूसरे से गुत्थम-गुत्थी हो रहे थे; बीच-बीच में औरत और बच्चे पिसे-फंसे पड़े थे। आगे बढ़ने के लिए एक फीट क्या, एक इंच का भी सुराग ढूंढ़ निकालना संभव न था। उसने मुड़कर पीछे देखा; अरे यह क्या! जिधर से वह आया था वह रास्ता-सड़क भीड़ से पट चुकी है! उसकी बेचैनी बढ़ती गई, यहां तो यूं ही खड़े-खड़े दिन निकल जाएगा! उसने चच्चू से कहा, "आखिर कोई पुलिस से पूछे भी तो यहां भीड़ क्यों बढ़ा रखी है, पुलिस को पता नहीं है क्या ऐसे में तो करोना और फैलेगा!"

"लेकिन पुलिस से सवाल-जवाब करे कौन? उसे तो डंडा चलाने में भी देर नहीं लगती है न!" चच्चू ने डर-डराकर कहा। उसकी आवाज में छिपे डर से रामू को परवेज का ख्याल आ गया; उनके द्वारा कई मौकों पर दिए गए भाषण-प्रतियोगिता की पंक्तियां याद आने लगीं, '...वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में सरकारों के कार्यकलापों से जनता एक भयातुर प्रजाति वाले प्राणी

में तब्दील होती जा रही है...।' रामू को अपने अंदर कुछ जागता हुआ-सा महसूस हुआ, बोल पड़ा, "इसमें डरने वाली क्या बात है, मैं चलता हूं न!" बोलकर वह फ्लाईओवर के पिलर में बने खांचे के सहारे स्वत:स्फूर्त बल से चढ़ने लगा, बंदर भांति; स्कूली दिनों में पेड़ में चढ़ते रहने के करिश्मे दोहराते हुए। एक मिनट के अंदर ही वह फ्लाईओवर पर उतर चुका था। वहां की कम भीड़ में आगे निकलता गया। वहां जा पहुंचा जहां पुलिस ने जबरदस्त नाकेबंदी कर रखी थी। फ्लाईओवर के अंत से यू टर्न लेकर वह पीछे से होकर पुलिस टीम के सामने जा खड़ा हुआ, बिना किसी डर-भय के!

"प्लीज आप इधर मत रुकिए, भीड़ की तरफ ही रहिए।" कई दिनों से ना चमकाया हुआ एक स्टार वाला पुलिस अधिकारी गजब की फुर्ती से बोला, रामू की तरफ याचक भाव में हाथ जोड़ते हुए। पुलिस वाले को किसी आमजन के सामने हाथ जोड़ते हुए रामू पहली बार देख रहा था। उसने मन-ही-मन प्रधानमंत्रीजी का धन्यवाद किया; किसी ने पहली बार संपूर्ण पुलिस महकमे के सेवा-समर्पण की प्रशंसा की थी, राष्ट्रीय स्तर पर।

"..." रामू खड़ा रहा, नि:शब्द; सामने खड़े पुलिस के दैवीय रूप में खोते हुए। पुलिस वालों के व्यवहार में कायापलट होते जाने से उसकी सारी तकलीफ जैसे जाती रही।

"कृपया बताइए हम लोग आपकी क्या सहायता कर सकते हैं!" दो स्टारवाले अधिकारी ने हाथ जोड़ते हुए आगे आकर कहा, पहलेवाले अधिकारी के बगल में परेड लाइन में खड़े होने जैसा रुकते हुए।

"सर यहां पर इतनी भीड़ क्यों इकट्ठी हो गई है?" उसके मुंह से अपने-आप निकल आया; पुलिसवालों में आए अप्रत्याशित बदलाव से वह भूल चुका था कि वह यहां क्यों आया है?

"पहले आप बताइए सज्जन! आप यहां आनंद विहार क्यों आए हैं!" अभी वहां आकर खड़े हुए अशोक लाटधारी ऑफिसर ने कहा, पूर्व से जारी वार्तालाप की पूंछ पकड़कर धड़ सहित सिर तक समझते हुए।

"हां सर याद आ गया! रामघाट जाने के लिए किसी बस-ट्रक में लदने आया हूं मैं!" अपनी बात याद आने पर उसकी जान में जान आई।

"मुझे तो तुम जन्मजात खुराफाती लग रहे हो; जान जोखिम में डालकर घर जाने को निकला कोई आदमी बीच रास्ते में यही बात भूल जाए, ऐसा संभव है!" अशोक लाटधारी बोला, रामू को सिर से पैर तक घूरते हुए ।

"मुझे तो लग रहा है सर यह अपोजिशन का भेदिया है! भीड़ में हंगामा कराने आया है।" दो स्टारवाले ने अशोक लाटधारी के कान में फुसफुसाते हुए कहा।

"मुझे भी ऐसा ही कुछ लग रहा है!" एक स्टारवाला आवाज में रहस्य घोलते हुए बोला।

"तभी तो पूरी भीड़ बैरिकेडिंग के उस पार सांस थामे खड़ी है और इसकी नेतागिरी तो देखिए दाहिने साइड से यू टर्न लेकर हम लोगों तक पहुंच आया है, जैसे कैबिनेट मंत्री निकला हो मौका-मुआयना करने! इसकी असलियत लाश जैसा पानी के ऊपर लाता हूं अभी," अशोक लाटधारी के होंठों पर विजयी मुस्कान तैर गई, रामू की तरफ नजर तिरछी करते हुए पूछा, "हम लोगों की समझ में यह नहीं आ रहा है इतनी बड़ी भीड़ यहां क्यों जमी है? आप तो बड़ा स्मार्ट नौजवान दिख रहे हो, आपको तो पता होगा?"

"अरे सर आपको नहीं पता! सरकार ने करोना फैला दिया है!" फिर संभलकर बोला, "आई मीन करोना तेजी से फैलता जा रहा है।" उसकी बात को काटते हुए अशोक-पुत्र बोल पड़ा, "अच्छा तो कोरोना से बचने के लिए सभी यहां खड़े हैं!" बिना देर किए अधिकारी का ज्ञानवर्धन करने की भाव भाषा में उसने कहा, "नहीं सर यह बेचारे तो अपने-अपने घर जाने के लिए छटपटा रहे हैं, कोई बस-ट्रक मिल जाने की उम्मीद में यहां तक पैदल ही आए हैं।"

"घर जाने पर कोरोना से मुक्ति मिल जाएगी?" दो स्टारवाले ने कहा।

"मजदूर-मटियार लोग घर नहीं जाएंगे तो यहां क्या खाएंगे।" बोलते हुए उसे अंदर कुछ जागृत होता दिखा।

"क्या खाएगा? सरकार बांट तो रही है दस-दस किलो आटा-चावल।" एक स्टारवाले ने कहा।

"हां हमने भी सुना है।" उसके अंदर से संशयपूर्ण आवाज निकली।

"सुना है मत कहो, यह तो जगजाहिर है! हमारा-तुम्हारा फर्ज बनता है जनता को समझाना, तुम्हें भी भीड़ के बीच जाकर जनता को सही बात बतानी चाहिए।" अशोक पुत्र खिन्न होने लगा।

"सर मैं मानता हूं यह सच है, लेकिन सच हमेशा देर से क्यों सामने आता है!" रामू रहस्यपूर्ण हो गया।

"देर! मतलब?"

"मतलब ये कि पहले अनाज बांट देते गरीबों-मजदूरों के घरों में, तब लॉकडाउन लागू करते।" रामू ने सिर हिलाते हुए कहा, जैसे बलि से पहले का बकरा हो।

"यह तो बड़ा अच्छा सुझाव है! और क्या-क्या सुझाव हैं आपके पास?"

"मेरे पास तो ऐसा सुझाव था कि करोना को सौ पर ही कील ठोक देते!" रामू ने उंगलियों में लहर देते हुए कहा।

"जरा हम भी तो सुनें कौन-सा आविष्कार-अनुसंधान है जो भूल से आपकी जेब में ही रह गया!"

"जेब में नहीं रह गया, जेब में ही सड़ गया!" रामू की वाक्पटुता जागने लगी; उसके चारों ओर पुलिसवाले गोल घेरे में जमने लगे, हँसी का खजाना हाथ आया देखकर।

"सड़ी-गली चीजों को सामने लाना ही तो हमारा काम है, तुम बताओ तो सही।" अशोक पुत्र ने प्रोत्साहित किया उसे।

"सर, सरकार अगर फरवरी या मार्च के शुरू में ही फ्लाइट बंद कर देती तो ऐसे झपट्टामार लॉकडाउन की नौबत नहीं आती; इसी काम के पीछे मैं और रामघाट में हमारे साथी लोग एक महीने से लगे हुए थे," आगे निराश होकर बोला, "यहां तक कि मैं होली के दिन ही दिल्ली के लिए निकल गया था सरकार को समझाने...।" पुलिस टीम से हँसी के फव्वारे छूट पड़े; रामू बोलता ही जा रहा था, "सर लोग, यह कोई हँसने वाली बात नहीं है; यदि सरकार हमारा सुझाव मान लेती तो करोड़ों लोगों को बेछत नहीं होना पड़ता..." रामू रौ में बोलता जा रहा था।

"और क्या-क्या लाजवाब सुझाव था आपके पास!"

"बुद्धिमानी तो इसी में होती कि लॉकडाउन से पंद्रह दिन पहले इसकी घोषणा कर दी जाती; जो लोग घर जाना चाहते उन्हें बस-ट्रेन से घर पहुंच जाने देते!" वह आत्मविश्वास के साथ बोले जा रहा था।

"अर्रे! तुम्हें तो सरकार में रेल या जहाज मंत्री होना चाहिए था जी!"

"अरे सर, मंत्री छोड़िए, मैं सरकार में चपरासी होता या सरकार के गली का कुत्ता भी होता..." अब वह चारों तरफ देखकर बोलने लगा, जैसे आसपास किसी कुत्ते को ढूंढ़ रहा हो, "तो बोल-भूंख कर होली से पहले ही लॉकडाउन करवा देता!"

"तो तुम्हारे हिसाब से सरकार के लोगों में ज्ञान-विवेक की कमी है!"

"कमी नहीं है सर, जरूरत से थोड़ा ज्यादा हो गया है!" रामू बोल गया। उसके चेहरे में उगते क्रोध की लालिमा दिखने लगी मानव-मुद्रा विशेषज्ञ अशोक लाटधारी को; अंदर से आ रहे उबाल को कंठ में रोकते हुए बोला, "सो कौन-सा थर्मामीटर से सरकार के ज्ञान को तुरंत नाप लिया; और कौन-सा यंत्र से उसके विवेक को पकड़ भी लिया तुमने!"

"जो नाप में ना आए उसे नापना क्या है! जो दिख रहा है उसे पकड़ना क्या है?" रामू दार्शनिक हो उठा।

"तुम तो बड़े गुड़-पुरुष लग रहे हो जी!" अशोक पुत्र ने कहा तो उसके चेहरे में उपहास के गुब्बारे से उड़ने लगे।

"तो तुम्हारे हिसाब से सरकार कोरोना वाली बात भूलकर किसी और काम में लग गई थी!" दो स्टार वाले की आवाज में तल्खी आ गई।

"काम नहीं सर कारनामा कहिए!" वह और तर्कमय हो उठा, "मसलन... मसलन भोपाल और उससे पहले..." रामू के इतना बोलते ही दो-तीन सिपाहियों ने पीछे से रामू को डंडे के निशाने पर ले लिया, चीखते हुए "साल्लाआआआ...!"

"सरकार का खाता है और सरकार के खिलाफ ही हवा फैलाता है! हम लोग कोरोना से जंग लड़ रहे हैं और तुम लोग दिन-रात जोक तैयार करके फॉरवर्ड करते फिरते हो!" स्टारधारी ने आंखें तरेरते हुए कहा। अशोक पुत्र से भी रहा न गया, भीड़ की ओर देखकर रामू पर गर्म हो उठा, "एक सप्ताह से भीड़ ने हम लोगों का जीना हराम कर रखा है! ऐसे ही लोगों के उकसाने से, अफवाह फैलाने से ही तो हर दिन भीड़ जमती है।"

रामू के अंदर संघर्ष-सत्याग्रह का जज्बा जरूर था, पर लाठी-डंडा खाने का तजुर्बा नहीं था; पीठ सहलाते हुए भी ऊंचा बैरिकेडिंग लांघ मारा, स्कूल के दिनों में लंबी कूद में बनाए अपने ही रिकॉर्ड को तोड़ते हुए।

रामू-पुलिस वार्ता को जनसमूह अब तक रामायण के अंगद-रावण संवाद भांति देखे जा रहा था। अचानक रामू के पीटे जाने-भागने जैसा असंगत दृश्य उत्पन्न होते ही भीड़ में भगदड़ मच गई। औरत-मर्द-बच्चे एक-दूसरे को रौंदते-फांदते चारों दिशाओं में छितराने-भागने लगे। अधिक-से-अधिक सामान संभालकर घर पहुंचने का अरमान 'कम-से-कम सामान लेकर चलना मुनासिब होता है', वाली कहावत में स्वतः बदलता गया। बिना बल प्रयोग के ही दिल्ली-यूपी बॉर्डर पर तैनात पुलिस टीम को मन की मुराद मिल गई। मूंछवाले सिपाही अपनी मूंछें ऐंठने लगे, बिना मूंछवाले अधिकारी अपना दर्प।

सूरज के माथे पर चढ़ते-चढ़ते आनंद विहार का पूरा इलाका हिंदुस्तान विहीन हो चुका था। बस अड्डे में कोई बस कभी नहीं थी; जाहिर था, शाम तक भीड़ तो वैसे भी जानवर भांति किसी और दिशा की ओर चल दी होती।

भागते रामू को दिशा ज्ञान बिल्कुल न रहा। वह इस दुनिया में मात्र तीन जगहों से परिचित था; रामघाट, शाहदरा और संसद भवन। भागते हुए में उसका मुंह किधर को है उसे ना तो ज्ञान था, ना भान! इस सड़क से दूसरे सड़क के किनारे-किनारे दौड़ते-भागते पंद्रह-बीस मिनट हो चुके थे, एक बार पीछे मुड़कर देखना जरूरी समझा; पीछे पलटकर देखा तो अवाक रह गया, वह अकेला दौड़ा जा रहा है! तो क्या भीड़ किसी दूसरे रास्ते में भाग ली? भीड़ तो भीड़ उसके पीछे तो एक भी आदमी नजर नहीं आ रहा था, जिससे कुछ पूछ-पाछ सके! उसे इतना तो पता था जनता पुलिस से बहुत डरती है और दूर रहना ही पसंद करती है; यह नहीं पता था हिंदुस्तान में पुलिस के निशाने पर आ गए आदमी के पीछे कोई नहीं होता! उसके साथ कोई था तो अपना प्यारा रामघाट पहुंचकर कोरोना से लड़ने का जुनून!

6

किसी बड़ी कॉलोनी के पीछे वाली जगह थी वह। सूरज दिल्ली में चढ़ाई करता दिख रहा था। सांस की गति सामान्य करने और मन को काबू में रखने के ख्याल से वह कितनी देर तक वहां खड़ा-बैठा रहा, पता ही न चला। जब किसी को पूरी दुनिया गोल दिखने लगती हो, सूरज माथे पर हो और उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम का कोई संकेत नहीं हो, तो एक ही बिंदु को पकड़े रहने के सिवाय कर भी क्या सकता है! उसे अपने नथुने में कब से कचरे की गंध समाते रहने का एहसास हुआ, तब भान हुआ वह तो यहां कब से अटका पड़ा है! चारों ओर नजर दौड़ाई; सिर के पीछे दीवार-बाड़ से घिरे शेड में, 'कचरा पृथक्करण केंद्र' लिखा बोर्ड हवा में झूल रहा था। उसे अपने आप पर गुस्सा आया, मंजरी तो सच ही उसे बुद्धू बैल कहती है! अब तो उसे तीव्र गंध महसूस होने लगी; परिस्थिति और पारिस्थितिकी दो ऐसी चीजें हैं दुनिया में, जिनकी चेतना तभी अनुभव होती है व्यक्ति को, जब सामने आ पड़ती हैं। ऊपर सूरज थोड़ा ढलता हुआ प्रतीत हुआ उसे। सूरज के विपरीत दिशा में चलने की सोचकर ही उसे अपनी छाया से अंधेरे का भान होने लगा; बिना देर किए वह चल पड़ा ढलते सूरज की दिशा में, अंधेरे

के डर से भयमुक्त होकर।

बीच में आए फ्लाईओवर से उसे दूर में किसी मंदिर का गुंबद दिखाई पड़ा; दिखाई ही नहीं पड़ा, बल्कि पहले भी दिखा हुआ लगा। स्कूल वाली माँ सरस्वती को याद करते ही वह चौंक उठा, यह तो अक्षरधाम मंदिर है! यहां तो अंकित के साथ इक्कीस मार्च को आया था! उसकी जान में जान आई, भगवान के वास्ते वह दिल्ली से दूर नहीं गया है अभी! अब जाकर उसे महसूस हुआ नेता हो या अफसर दिल्ली आखिर क्यों सबकी दिलरुबा बनी रहती है! मंदिर की दिशा ने उसे बड़ा सहारा दिया, मस्तक मंदिर शिखर को लक्ष्य करके स्वत: झुक गया। ख्याल आया, हजारों वर्ष पूर्व प्रतिकूल परिस्थिति-प्रकृति से दिन-रात जूझते रहने के दौरान उसके पूर्वजों के मन में ऐसी ही किसी दशा-दिशा के वक्त ईश्वरीय शक्ति का जन्म हुआ होगा। बिना देर किए वह चल पड़ा मंदिर के शिखर की दिशा में, धीरे-धीरे; मंजरी को मन में याद करते हुए। ज्यों-ज्यों वह मंदिर के नजदीक पहुंचता गया उसे अपने अंदर मंदिर के लिए वितृष्णा पैदा होती महसूस हुई। अकेला पथिक के पास करने को मन-मंथन ही तो बचता है; उसे लगने लगा, हजारों-लाखों मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर-गुरुद्वारा और उनसे गर्भनाल भांति जुड़े करोड़ों पंच-प्रपंच ही तो इस देश में गरीबी की जड़ और अनगिनत समस्याओं की जननी हैं! उसे अपने कानों में खुद के बुदबुदाने की आवाज पड़ी...साल्ला, मंदिर-मस्जिद लड़ता रहा करोना बढ़ता रहा! उसने मंदिर की तरफ बढ़ते जाने का विचार त्याग दिया। वैसे भी लॉकडाउन में मंदिर बंद ही होगा; और मंदिर के सामने पुलिस तो होगी ही होगी! मंदिर के लिए दाएं मुड़ने का विचार त्यागकर नाक की दिशा में चलता रहा; फ्लाईओवर के नीचे पंद्रह-बीस मिनट तक ठिठकी ठंडक का भरपूर सेवन करते हुए। आगे धूप में पंद्रह-बीस मिनट तक चलते रहने के बाद उसके पैर अचानक ठिठक गए; फिर से शुरू हो चुके फ्लाईओवर के नीचे से लोगों की ऊंची आवाज आ रही थी, भरपूर हँसी-ठहाके के साथ, '...साला सरकार, सब के सब झूठे कौवे! कहां हैं हजार-हजार रुपये, दस किलो अनाज...' उसे आश्चर्य हुआ, कोरोना के जमाने में भी कोई इतना खुश हो सकता है क्या! सुनसान रास्तों में हर कोई किसी न किसी के साथ की आस में रहता है; दिमाग में ज्यादा जोर दिए बिना वह नीचे उतर गया।

फ्लाईओवर के नीचे की दुनिया देखकर रामू की पलकें झपकनी बंद हो

गईं; दूर तक फैली दुनिया देखकर लगा दिल्ली तो बड़ा बहुरूपिया है, अपनी कोख से न जाने कितनी ही दिल्ली को जन्म दे रखा है! अभी चंद घंटे पहले आनंद विहार में एक दुनिया खड़ी देखी थी उसने; एक दुनिया यहां भी दूर तलक पड़ी दिख रही है? पेट-पीठ एक किए औरत-बच्चे फ्लाईओवर की छांव में धरती पकड़े हुए, मर्दों के झुंड कई टुकड़ियों में; कहीं गंभीर वार्ता, तो कहीं हास-परिहास-उपवास में रत। बात रामू की सोच से बाहर हुई जा रही थी, जो दिल्ली अपने आंचल में एक माँ भांति लाखों को अपने बच्चे समान समाए-छिपाए थी उसका आंचल यकायक कैसे सिकुड़ गया? फ्लाईओवर के नीचे एक किलोमीटर तक मुरझाए मानव-मुंड को वह देखता रहा; उसे शक होने लगा, दिल्ली में जरूर कोई बड़ा जादूगर लौंडा है जिसने अपनी जादू की छड़ी से दिल्ली के बच्चों को सड़क में हांक दिया है, पिल्ले के समान दुत्कारकर।

वह आधे घंटे तक यहां-वहां टहलता-भटकता रहा। हर चेहरे को पहचानने की कोशिश करता रहा; रामघाट में परिचितों के चेहरे से मिलान करता हुआ। दूर तक फैली भीड़ में अपनी बस्ती का कोई बंदा उसे नजर न आया। तब उसे लगा स्कूल में सच ही पढ़ाई जाती है भारत एक विशाल देश है! तकलीफों की गठरी थामे रहने के बावजूद भीड़ बिना कोई उत्पात मचाए टिकी हुई थी, जैसे ऊपर से गुजर रहे फ्लाईओवर की असली नींव हो। तब उसे याद आया आखिर अपने देश के बारे में क्यों कहा जाता है विविधता में एकता! इस छोर से उस छोर तक कोरोना को लेकर कोई शिकन भीड़ में न दिख रही थी। उसके अंदर कौतूहल जन्म लेने लगा, कोरोना का डर नहीं है फिर तो जरूर कोई खुशखबरी है! इतनी देर तक यहां से वहां टहलते-घूमते रहने के बावजूद कोई उससे बात भी तो नहीं कर रहा; आखिर वह पूछे तो किससे पूछे?

आखिरकार वह पिलर नंबर छप्पन के पास आ खड़ा हुआ; चेहरे में सज्जनता की चादर ओढ़े। वहां दस-बारह हमउम्र नौजवान निर्भीक आवाज में गप्पबाजी में मशगूल थे।

"सद्गुरु सेवा-मंडल वाले का आज अभी तक पता नहीं है?" एक नौजवान ने फ्लाईओवर के ऊपर की ओर तिरछा होकर झांकते हुए कहा।

"भोलेनाथ कोरोना सेवा समिति वाले की तो दो दिन में ही हवा निकल गई; पांच सौ पैकेट लेकर आते थे और यहां ठहरे हजार-दो हजार भुक्खड़!" दूसरे ने जोड़ा।

"वे बेचारे लोग तो तीन दिनों से भोजन के पैकेट बांट रहे हैं, आखिर कब तक मुफ्त में इतने कोरोना पीड़ितों को खिलाते रहेंगे।" तीसरे ने सेवा मंडल के प्रति कृतज्ञता भाव प्रदर्शित करते हुए कहा।

"मुझे अपनी भतीजी के लिए कुछ तो करना पड़ेगा, कल रात से ही बिस्कुट देकर फुसला रहा हूं।" चौथे ने अपनी व्यथा सुनाई।

"मेरे पास पैसे भी तो कम होते जा रहे हैं, थोड़ा-बहुत बचाकर रखा है, बस-ट्रक वालों को भाड़ा देने के लिए।" पांचवें ने विवशता बताई।

वे सभी आपस में बातें करते हुए रामू की ओर कई बार घूर चुके थे। रामू को लगा अब यहां से खिसक लेना चाहिए या फिर कब से बंद पड़ी अपनी वचन-वाणी का नियमित परीक्षण कर लेना चाहिए। इतना भर सोचते ही उसके मुंह से निकला, "सरकार बस-ट्रक का इंतजाम करे तभी तो जा पाएंगे हम लोग।"

"आपको कहां जाना है?" अब तक पिलर के सहारे चुप बैठे नौजवान ने कहा, रामू की ओर तिरछी नजरों से देखते हुए।

"रामघाट," रामू की आवाज मित्रवत थी।

"रामघाट भी तो ठीक-ठाक दूर ठहरा यहां से!" जमीन पर पालथी मारे नौजवान ने सिर हिलाते हुए कहा, रामघाट की दूरी बैठे-बैठे आंखों से नापते हुए।

"नजदीक वाले तो कल परसों से पैदल ही निकलते जा रहे हैं।"

"यूपी बॉर्डर में पुलिस तो बढ़ने नहीं दे रही है।"

"लेकिन कल रात को कानपुर-लखनऊ-प्रतापगढ़ के सैकड़ों लोग यहां से पैदल निकल लिए।"

"वह कैसे निकल पाए?" आनंद विहार के चश्मदीद गवाह रामू की उत्सुकता जगी।

"यहां से जमुना किनारे-किनारे तिलपत रेंज में हरियाणा का इलाका पड़ता है, वहां हरियाणा पुलिस की गश्त न के बराबर है, फिर वहां से सीधे चलते जाने से जेवर के पास देहाती इलाका पकड़कर जीटी रोड में चढ़ बैठे!" जमीन पर नंगे बदन चित्त लेटे नौजवान ने दृश्यमान-सा दृष्टांत बयां किया, जैसे किसी फिल्म की पटकथा सुना रहा हो।

"इतने लोग अपने झोपड़ा-झोंपड़ी-खोली से निकलकर सड़क पर आ गए हैं, पर सरकार तो अभी तक सोई है, उसे भी तो कुछ करना चाहिए कि

नहीं?" जमीन पर लेटा एक नौजवान खड़ा होते हुए बोला, जैसे सरकार को जगाने जा रहा हो।

"स्साला मैंने तो आज तक सरकार को देखा ही नहीं कि कैसा होता है; औरत है कि मर्द, गोरा है कि काला, ठिगना है कि लंबा?"

"अरे! मैंने एक बार देखा है, वही न जो कभी नहीं हँसता है?"

"हां-हां वही ना जो रेडियो में बोलता है, टीवी में दिखता है!"

"मुझे तो लगता है वह तो कागज-कपड़ा का बना पुतला जैसा है, टीभी-रेडियो में बैटरी से बकता है।" एक बार रामघाट बोलकर काफी देर से चुप रामू ने जोड़ा; उसे लगने लगा था लंबे समय तक चुप रहकर वह रामघाट की बदनामी करा रहा है।

"देखो भाई साहब, हम किसी पार्टी-वाटी के नहीं हैं!" एक युवक ने रामू पर नाराज होते हुए कहा।

"अभी तो हम लोग पेट के मारे हैं, पॉलिटिक्स से पेट भरेगा नहीं।" हैरान-परेशान मोटा-थुलथुला युवक बोला। रामू समझ गया उसका यहां खड़ा रहना इन लोगों को बिल्कुल पसंद नहीं है। वह धीरे से खिसक लिया; सोचते हुए कि यह कोरोना आदमी के शरीर में तो बाद में, लेकिन सब्र पर पहले हमला कर चुका है!

फटेहाल आदमी के पैर कहीं आसानी से नहीं टिकते; तब तो और भी नहीं जब वह दूसरे परेशानहाल द्वारा दुत्कार दिया गया हो। फ्लाईओवर की छांव को ही आज का राष्ट्रीय राजपथ मानकर वह धीरे-धीरे टहलता चलता रहा, अन्यमनस्क स्थिति में।...अरे, यह तो कोई छोटी-मोटी नदी है!...सामने नदी दिखते ही वह अचकचा गया। अचानक स्मृति में चमक उठी...दिल्ली में तो जमुना जी ही बहती हैं? किनारे आकर वह ठिठक गया। लोग नदी तैरकर उस पार से इस पार आते जा रहे थे; लगा दिल्ली में करोना है, तैरकर जमुनाजी पार करने पर शायद करोना से मुक्ति मिलती हो! उसे याद आया, लोग कहा करते हैं वेद-पुराण में यमुनाजी की महिमा का बखान है। परिवार के लोगों के नदी पार करने के इंतजार में व्याकुल खड़े लोगों से पूछे बिना रामू से रहा न गया, "चाचाजी, यमुना जी पार करने से करोना से पार पाने का वरदान मिलता है क्या?"

"ऐसे आफत के समय क्यों मजाक करते हो बेटा।" यमुना तैरते लोगों की तरफ से नजर हटाकर उस आदमी ने कहा, रामू की ओर याचनाभरी

नजरों से देखते हुए।

"तो फिर जान जोखिम में डालकर इतने काले पानी में लोग क्यों तैर रहे हैं?" मसला रामू की पकड़ में नहीं आ पा रहा था।

"जब दिल्ली में जन मजूरी बंद हो गया अचानक, रहने-खाने का ठिकाना बिला गया रातोरात तो आदमी पेट की खातिर कहीं तो जाएगा भाई साहब!" वहां खड़ा एक किशोर रामू की तरफ सम्मान प्रकट करते हुए बोला।

"इसके लिए नदी तैरने की क्या जरूरत है? नदी के ऊपर इतना बड़ा पुल क्यों बना रखा है सरकार ने, खुद के चलने के लिए क्या!" रामू उत्तेजित हो उठा।

"शांति बेटा, शांति! सरकार सुन लेगी तो अपने किले में बैठे-बैठे ही तुम्हें फिर से उस पार खींच लेगी!" पास में ही पस्त पड़े एक बुजुर्ग कराहते हुए बोलने लगा, "रही बात पुल की तो वहां पुलिस की जबरदस्त तैनाती है; औरत-बच्चे तो रो-बिलखकर पुल से आ जाते हैं इस पार, लेकिन मर्दों को देखते ही डंडा लेकर छूट पड़ते हैं!"

रामू के सामने एक नौजवान और एक बुजुर्ग एक साथ भवसागर-सा यमुना पार कर किनारे आकर हांफने लगा। सैकड़ों लोग उसे घेरकर ताली बजाने लगे; रामू को लगा इन दोनों को तो कोरोना तैराकी प्रतियोगिता में स्वर्ण और रजत पदक विजेता घोषित होना चाहिए। सभी लोग यमुना पार कर रहे अगले जोड़े की ओर ताली बजाकर, हाथ हिलाकर उत्साहवर्धन करने लगे। थोड़ी देर में एक लंबू बच्चे को थामे एक अधेड़ किनारे लगते ही बरस पड़ा, खांसते हुए, "साला सरकार तेरी माँ की...बिना बताए लाउडऑन कर दिया!" हंफनी नियंत्रित करते हुए बोलता रहा, "हरामजादे ठेकेदार ने शेड में ताला मार दिया, चार दिन से रैन-बसेरा में बेटा-बेटी-कनिया को लेकर पड़े थे; तीन दिन में तीन पुरी ही बांट पाई है हमारा देश महान?" उसकी हंफनी फिर शुरू हो गई; ऊपर आसमान की ओर मुंह करके छोटी-छोटी सांस लेने लगा, जैसे ऊपर आसमान में नया भारत खोजने का मंत्र पढ़ रहा हो। सांस सामान्य हुई तो गुस्सा फट पड़ा, "साले पुलिसवाले अंधे की औलाद! बच्चे को पुल से होकर जाने देते थे, भला बताइए मेरा यह छोकरा लंबा हो गया तो जवान मर्द हो गया क्या! जो इसके घुटने के नीचे डंडा दे मारा; समझिए मैं इसे अपनी पीठ पर लादकर जमुनापार किया हूं, इतना कष्ट तो वसुदेवजी को भी ना हुआ होगा कृष्ण भगवान को जमुना पार कराते!"

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं; अंत भला तो सब भला!" गोल घेरे में खड़े कई लोग एक साथ बोल पड़े। उसका मन कुछ हल्का हुआ, बिना बोले रहा न गया, "लेकिन जमुनाजी का पानी कितना तो काला है!"

"अरे छोटे भाई, तुमने भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीला कलियादमन के बारे में नहीं पढ़ा है क्या? कलिया नाग के कारण ही तो जमुना का पानी श्याम रंग का हो गया था!" यमुना पार कर आए पहले वाले बुजुर्ग ने कहा, यमुना का काला पानी तैरकर आने पर धन्य-धन्य होने-सी मुद्रा बनाते हुए।

"पापा, आपको दिल्ली आए हुए अभी एक महीने ही हुए हैं; कृष्णजी के जमाने में यमुना श्याम-स्वच्छ रही होगी, इस जमाने में तो काजल-कोयले से होकर निकलती है।" उसको वैतरणी पार कराने वाले पुत्र ने कहा, खीझ प्रकट करते हुए।

"तो अभी इतना काला कैसे पड़ गया?"

"कृष्णजी ने कलिया नाग का फन कुचला था, वध नहीं किया था न!" काफी देर से चुप रामू को लंबा मौन कष्ट देने लगा था; कंठ खुलता गया, "देश आजाद होने के बाद वह कलिया नाग कुल खानदान सहित वृंदावन से निकलकर अपने सैकड़ों बाल-बच्चों के साथ दिल्ली में भी वास करने लगे हैं, यमुना नदी में नहीं यहां के बड़े-बड़े बंगलों में," आगे बोलते हुए उसकी आंखें बड़ी होती गईं, "उनके काले करतूत से यमुना क्या सारा देश काला पड़ता जा रहा है!"

"यह भैया बिल्कुल सही कह रहे हैं; देश तो काला पड़ेगा अब! साले कोरोना को सरकार ने रोका क्यों नहीं बॉर्डर पर?" पिताजी को थामे यमुना तैरकर आया नौजवान तैश में आ गया।

"काला? अरे महाकाला बोलो, महाकाला! जरा उत्तर से दक्षिण तक घूम तो आओ यमुना किनारे, ऐसा कोई पेड़-झाड़ नहीं है जिसके नीचे भूखे लोगों ने आसरा ना ले रखा हो।" गोल घेरे के पीछे से किसी ने आवाज दी।

"अरे कितनी तो उम्मीद से हम लोग वोट देते हैं; जब कोरोना सबके जान के पीछे पड़ी है तो ऐसे समय में सरकार के दिमाग का फ्यूज उड़ गया है क्या जो उसने बस-ट्रेन भी बंद करा रखी है? अरे जब कोरोना से ही मरना है तो घर जाकर मरें, यहां जमुना घाट में कौन किसका दाह-संस्कार करेगा भला!" यमुना तैराक नौजवान गर्म होने लगा। रामू को तसल्ली हुई, ऐसा सोचते रहनेवाला वह अकेला नहीं है! उसके अंदर से तरंग-सा निकलने

लगा, "अरे माय डियर, करोना से लोग मरेंगे या नहीं यह तो बाद की बात है, अभी तो बिना करोना के ही लोग भूखे-नंगे मर-मुरा जाएंगे!"

"भैया क्या नाम है आपका! बड़ी सटीक बात कही है आपने।" रामू की ओर मित्रवत होकर कहा नौजवान ने।

"मेरा नाम रामू है, रामघाट बस्ती का रहनेवाला हूं; और तुम?" रामू ने मुस्कुराकर कहा; लगा जैसे उस नौजवान को गले लगा रहा हो।

"मेरा नाम रामना है; घर पूर्णिया बिहार में है, बंगाल नेपाल की तरफ।" नौजवान ने गर्व से कहा।

"हां-हां! पूर्णिया के बारे में सुना हूं ब्रदर, दसवीं कक्षा में एक कहानी पढ़ी थी—ठेस, उसके लेखक फणीश्वरनाथ रेणु उधर के ही रहने वाले थे न!" नौजवान पर स्नेहपूर्वक गौर करते हुए रामू ने कहा।

"जी-जी भैया, उन्हीं के गांव के पास ही मेरा गांव, बकैनियाँ है! आपने बड़े पते की बात कही है, सच में कोरोना आने से पहले करोड़ों लोग भूखे-प्यासे तड़पते रहेंगे," आगे बोलते हुए रामना गंभीर हो उठा, "मैं तो दसवीं ही पास हूं भैया, लेकिन मुझे भी पॉलिटिक्स का थोड़ा-बहुत ज्ञान आने लगा है; मुझे तो लगता है कुर्सी में बैठे को धृतराष्ट्र जैसा ही दिखता नहीं है!"

"मेरे हिसाब से तो भारत-जैसे विशाल देश को चलाने के लिए बड़ी खोपड़ी और बहुत दूर तक देख सकने वाली दृष्टि की जरूरत है!" दिल्ली की ओर देखते हुए रामू ने कहा, धिक्कारने वाली मुद्रा बनाते हुए। उसके बोलने के अंदाज से लोग उसके पास गोल घेरे में खड़े होने लगे; वह आगे बोलता गया, "मुझे तो लगता है दिल्ली से शासन करनेवालों को दूर तक दिखता नहीं है, इसीलिए देश की तकदीर बदलनी हो, तो भविष्य में राजधानी यहां से हटाकर किसी अच्छी मिट्टी में प्लांट करनी पड़ेगी!"

"बिल्कुल सही बोल रहा है..." भीड़ से बुदबुदाने-फुसफुसाने की आवाज आने लगी। यमुना तैराक अधेड़ आदमी रामू के सामने आते हुए प्रश्नवाचक हो उठा, "तुम्हारे पास तो सच में बड़ा-बड़ा आइडिया है, लेकिन फिलहाल हमारे काम का भी कोई आइडिया हो तो बताओ!"

"किस काम का आइडिया?" रामू को लगा जैसे किसी ने उसे रंगे हाथ पकड़ लिया हो।

"अरे भई हद हो गई! लोगबाग यहां कई-कई दिनों से भटक रहे हैं, ना तो घर जाने का रास्ता दिख रहा है, ना रास्ते पर चलने-चलाने का साधन!

और तुम कह रहे हो किस काम का आइडिया!" यमुना तैराक बुजुर्ग ने कहा, फिर मजाकिया अंदाज में लघु मुस्कान के साथ बोला, "इसलिए तो रामघाट का कोई एमपी, मंत्री नहीं बन पाया है आजतक! समझा रे बाबू!"

"अरे चाचा कैसी बात कर रहे हैं! घर की तरफ जाने का भी आइडिया बन आएगा..." बोलते-बोलते रामू रुक गया, उसकी आंखें पनीली हो उठीं। यमुना तैराक बुजुर्ग को लगा शायद रामघाट में इंतजार कर रहे बीवी-बच्चे की याद आ गई होगी; उसने ढांढ़स बंधाया, "चिंता मत करो, आज न कल घर पहुंच जाओगे, घर-परिवार को याद कर मन छोटा मत करो।"

"अरे नहीं चाचा, घर पर सिर्फ माँ है, मुझे उसकी चिंता नहीं है; इस वक्त चिंता हो रही है अपने पंद्रह-बीस साथियों की, वे शाहदरा में जेल-सेल जैसे कमरे में बंद पड़े हैं।" बोलकर रामू ने लंबी सांस लेकर दम साध लिया, जैसे भुवन समूह का आवाहन कर रहा हो।

"अरे बचवा, तो उनसे बात कर लो, मन हल्का हो जाएगा!" बुजुर्ग ने उसकी पीठ थपथपाई। रामू की मुख-मुद्रा अचानक बदल गई, जैसे मस्तिष्क में कम वोल्ट का करंट छू गया हो! याद आया, दड़बे से निकलने के बाद से उसने मोबाइल छुआ ही नहीं है अब तक! जेब से मोबाइल निकालकर चेक किया; ...अरे बाप रे अंकित के सात और भुवन के बारह मिस कॉल हैं! उसे शक होने लगा, कोई नई घटना तो नहीं घट गई? मैसेज बॉक्स चेक किया; ...अरे श्रीरामजी हम लोग सुबह से ही रिंग किए जा रहे हैं; हम लोगों से इतने नाराज हो कि चुपके से निकल लिए और अब फोन-फान से भी गए...अंकित का मैसेज पढ़कर उसे बड़ी ग्लानि हुई, वे लोग क्या सोच रहे होंगे, जिसे पंद्रह दिन तक मेहमान बनाकर रखा उसने संकट के समय मुंह मोड़ लिया! उसे लगा, हो सकता है भीड़-भाड़, शोर-शराबे में रिंग नहीं सुन पाया होगा। तसल्ली के लिए मोबाइल चेक किया, "अरे तुर्री केएए" उसके मुंह से अपने आप निकल आया; उसका मोबाइल साइलेंट मोड में चला गया था, न जाने कैसे! वह मन-ही-मन बुदबुदाया, 'साला करोना के समय में ही साइलेंट मोड में चला गया है, सरकार जैसा ही!'

वह लोगों के घेरे से दूर पिलर के पास हो लिया; अंकित से बात करते-करते कहीं फिर से न भावुक हो उठे। वहां मौजूद लोगों का विश्वास बढ़ता ही जा रहा था रामू पर; उन्हें लगने लगा विकट समय में किसी सूझ-बूझ वाले नौजवान को थामे रहना जरूरी है, नहीं तो इस बेगानी दिल्ली

में कौन अपना है! वे सभी दूर से ही मोबाइल वार्ता में लीन रामू पर नजर गड़ाए रहे; बात खत्म होने के बाद हो न हो घर जाने का कोई नया आइडिया निकल आए दिमाग में!

'...अरे प्रभु रामचंद्रजी! हमें भवसागर में छोड़कर कहां चले गए...' मोबाइल से भुवन की आवाज निकली; एक-दो रिंग जाते ही रामू का कॉल रिसीव हो गया था।

"चुपके से निकल जाने के लिए माफी चाहता हूं भुवन भैया," बोलते-बोलते वह रुआंसा हो उठा।

'...नो-नो, प्लीज! हम लोगों ने रामू के रूप में एक लाजवाब मित्र पाया है, तुम अगर निकल लिए तो कौन-सा गुनाह हो गया है; अब तो सभी को दिल्ली से भागना ही पड़ेगा!...' अंकित की शीतलदायी आवाज थी।

'...पर मैं तो सभी को समझा रहा हूं जो जहां हैं वहीं रहे, सरकार पर भरोसा रखें, सब सही हो जाएगा...' भुवन की नाराजगीभरी आवाज थी।

"सभी को भागना पड़ेगा! मतलब?" रामू की समझ में कुछ ना आया।

'...तुम्हारे निकल जाने के बाद हम लोगों की हिम्मत भी जवाब दे गई...' इसरार बोलने लगा तो भुवन की तेज आवाज आने लगी, '...मतलब कि हम लोग भी आठ-नौ बजे निकल गए हैं, मैं तो बिल्कुल नहीं निकलना चाह रहा था, कल रात भी मेरी पार्टी इकाई से बात हुई थी, पार्टी मुख्यालय ने तो मैसेज भी दिया है दिल्ली से बाहर जाने वाले को हर हाल में रोको; लेकिन तुम्हें तो पता है रामू यहां खाने-पीने की किल्लत हो गई थी, इसीलिए सभी जाने पर अड़ गए, तभी तो मुझे भी इनके साथ आना पड़ रहा है, मजबूरी में; वैसे मैं तो हमेशा सरकार के साथ हूं...' बोलते-बोलते भुवन की सांसें तेज होती लगने लगीं।

'...पहले तो हम सभी आनंद विहार की तरफ गए थे, वहां तो पुलिस वाले किसी को टिकने नहीं दे रहे हैं; जनता यहां-वहां से बॉर्डर क्रॉस करके भाग रही है...' अंकित की हांफती हुई आवाज थी; लग रहा था वे सभी तेजी से आगे बढ़ते जा रहे थे कहीं।

"लेकिन तुम लोग किधर जा रहे हो?" बोलते हुए रामू गिरने को हुआ; लगा पहले तो वह धरती से हिलगा हुआ पेड़ था, अब जड़ से उखड़ा जा रहा है!

'...अरे भाई मेरे, हम लोग आनंद विहार से भागकर डीएनडी की तरफ

जा रहे हैं, सुना है उधर से कुछ टरक-वरक चल रही है; बड़ी लंबी कहानी है मिलेंगे तो बताऊंगा क्यों निकलना पड़ा...' अयूब की दर्द भरी आवाज थी।

'...वैसे तुम किधर को जा रहे हो...' अंकित की आवाज में इतनी लाचारी उसने पहले कभी नहीं देखी थी।

"मैं अक्षरधाम के बगल वाले पुल के नीचे यमुना किनारे हूं, पिलर नंबर छप्पन के पास," अपना ठिकाना बताते हुए रामू को राहत महसूस हुई, कि वह अभी बेपता नहीं है!

'...अच्छा! तुम्हारे कहने का मतलब है निजामुद्दीन ब्रिज के नीचे? फिर तो हम लोग तुमसे ज्यादा दूर नहीं हैं; यमुना किनारा पकड़कर तुम्हारे पास चले आते हैं, फिर वहीं यमुना तीरे आगे का प्लान तैयार करेंगे कि कैसे दिल्ली में ही टिका जाए या फिर...'

"प्लीज यार, जरा जल्दी आओ," रामू इतना ही बोल पाया; प्राण जैसे गले में आकर अटक गए थे।

मन की बेचैनी दूर करने के लिए मंजरी ही उसका अंतिम सहारा होता था; मैसेज बॉक्स खोलते ही पढ़कर चौंक पड़ा, '...रामघाट का बचना मुश्किल लग रहा है, कोरोना के पैर-पंजे को रोकनेवाला कोई नहीं दिख रहा है....।' उसकी उंगलियां मोबाइल में खुद ब खुद चलने लगीं, '...बस-ट्रक की उम्मीद में आनंद विहार गया था, वहां पर पुलिस तो सभी को खदेड़ रही है; अभी यमुनाजी के किनारे आवारा जैसा घूम रहा हूं, रामघाट के बाकी साथी लोग भी कुछ देर में पहुंचनेवाले हैं, हर हाल में रामघाट पहुंचना ही पड़ेगा...' मैसेज सेंट करते ही अंदर की बेचैनी स्क्रीन पर ही टिकी रही। सच ही मिनट भर में ही मंजरी का मैसेज स्क्रीन पर जगमगा उठा, '...अधिक परेशान होने की जरूरत नहीं है; यदि आसानी से कोई सवारी मिल जाती है तो धीरे-धीरे चलते चलना, नहीं तो वहीं किसी ठिकाने में रुक जाना बेहतर है; बात ये है कि मैं आज मनोज के साथ लक्ष्मणपुरा बॉर्डर गई थी, समझो कोरोना को रामघाट पहुंचाने के लिए रेड कारपेट बिछी पड़ी है...'

'...इसलिए तो जल्दी से रामघाट आना चाहता हूं; हम सभी को मिलकर वहां काफी कुछ करना पड़ेगा...' रामू ने टाइप कर सेंट कर दिया; रामघाट के लिए उसकी बेकरारी और बढ़ने लगी।

'...लेकिन रामघाट में कोरोना के लिए कुछ करने का माहौल बन नहीं पा रहा है; हमारी कोरोना-मंडली कल दोनों पार्टी के कार्यालय गई थी; बड़ी

उम्मीद लेकर गए थे कि सभी पार्टियों के युवा कार्यकर्ताओं की एक बड़ी कोरोना-मंडली बनाकर रामघाट को कोरोना से बचाए रखने की मुहिम चलाते, परंतु बड़ी निराशा हुई; कोई भी राजनीतिक पार्टी दूसरी पार्टी के साथ संयुक्त रूप से कोई भी अभियान चलाने में रुचि नहीं रखते हैं...'

'...कोई बात नहीं, मुझे रामघाट तो आने दो; हम लोग पंद्रह-बीस साथी ही काफी हैं रामघाट को बचाने के लिए...'

'...अरे भगवान रामचंद्रजी के पहलवान, अब रामघाट को बचाने के लिए बचा ही क्या है, खाक! लक्ष्मनपुरा में कल तीन और आज पांच केस आने से रामघाट में भी अफरा-तफरी का माहौल बन पड़ा है; जिला अस्पताल में तो भगदड़-सी मच गई है, एडभांस में! एनएच से सीधे तुम्हारे घर आई हूं, माँ अपने कमरे से पुकार लगा रही है, बाद में बात करती हूं...' मंजरी के मैसेज-संवाद ने रामू की बेचैनी में मरहम लगाने की बजाय उसे छटपटाहट दे गई...'रामघाट में कोरोना'!

'भुवन ग्रुप' सही समय पर निजामुद्दीन ब्रिज के नीचे पहुंच गया, पिलर नंबर छप्पन के पास। भुवन का सीना भले ही छत्तीस इंच का न था, पिलर में लिखे छप्पन नंबर पर नजर पड़ते ही वह अपनी छाती फुलाने लगा, जैसे पूरे माहौल में अपनी धाक बनाने की तैयारी करके आया हो। अब तक रामू वहां की छोटी भीड़ का सर्वमान्य चेहरा बन चुका था; उसके मित्रों को आया देख सभी ने उन्हें सद्गुरु सेवा समिति के भोजन वितरण बिंदु तक पहुंचने के लिए सुलभ गलियारा-सा बना दिया। वितरण-व्यवस्था बंद होते-होते उन सभी के हाथों में बचे-टूटे पैकेट आ ही गए थे। कल की ही बनी पूड़ी-सूखी सब्जी को भी वे सभी तेजी से अमृत प्रकृति में बदलने लगे, अपने जबड़ों के नीचे; वे भी तो सुबह से ही लंबे सफर पर थे।

पैकेट खत्म होते-होते उन सभी के अशांत चित्त में परम शांति उतर आई दिख रही थी। बढ़ती चुप्पी सभी को खटकने लगी; बातचीत आरंभ करने के ख्याल से रामू ने पूछा, "तो भुवन भैया आप लोग क्यों निकल आए? आप लोगों के पास तो रहने का ठिकाना था!"

"अरे पूछो मत, भुवन भैया तो हमें वहीं सड़ा डालते!" पैकेट खत्म कर प्रकाश ने मुंह खोला, "बात ये है कि पार्टी हेड क्वार्टर में एक आदमी है अपने रामघाट का, जब से पार्टी कार्यालय में हम लोगों का आना-जाना होने लगा था, उनसे भी संपर्क हो गया था; आज सुबह उसने हाल-चाल के लिए

फोन किया था।" आगे डरावने अंदाज में बोलने लगा, "मैंने जब उनसे पूछा चौदह अप्रैल के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा न, तो जानते हो उसने क्या बताया? उसने कहा किसी को बताना मत यह लॉकडाउन लंबा चलने वाला है! समझ लो एकबारगी कड़ा डोज देने से जनता बेहोश हो जाती, इसीलिए डोज धीरे-धीरे चलेगा! मेरा तो अब किसी पार्टी-फारटी में विश्वास ही नहीं रहा।" बोलकर वह चुप हुआ तो उसके चेहरे में किसी दुश्मन देश से बचकर निकलने की खुशी खिलती दिखने लगी।

"हम लोगों ने तुमको नहीं बताया रामू, दरअसल मकान मालिक ने मार्च के किराए के लिए हमें परेशान कर रखा था तीन-चार दिन से," बोलकर अंकित आंखें मिचकाने लगा, जैसे माथे पर सच में कोई हथौड़ा मार रहा हो, आगे कहा, "हम लोगों ने मकान मालिक से विनती की कि सरकार की तो घोषणा है किराया नहीं वसूलने के लिए, तो कहने लगा दिखाओ कहां है सरकार का लेटर!" बोलते-बोलते अंकित की आंखें बड़ी होकर खुली रह गईं, जैसे सरकार को ढूंढ़ रही हों साइन कराने के लिए; फिर बोला, "और कल तो वह दो-तीन लोगों के साथ आया था, पैसे की तलाशी की मंशा से; साला हमारे पास तो घर भागने भर का पैसा बचा है, कल तो मकान मालिक को टरका दिया था एक-दो दिन के लिए, फिर आता तो साले का सामना करना मुश्किल हो जाता; आज तुम्हारे अचानक निकल जाने के बाद तो समझो हम लोगों की बची-खुची हिम्मत भी जवाब दे गई!" बोलकर अंकित रुआंसा हो उठा।

"भुवन भैया ने हम लोगों को काफी रोका, भरोसा दिया लॉकडाउन में सरकार सभी की मदद करेगी, पार्टी का भी वास्ता दिया कि इस पार्टी में बड़ी ताकत है।" अभिषेक बोलने लगा; भुवन को आगे-पीछे देखकर बेफिक्र हो लिया कि वह पिलर छप्पन के सहारे मोबाइल में चिपका हुआ है, फिर बोलता गया, "पर ज्यादा सोच-विचार न कर हम सभी चुपके से निकल लिए, वहां रुकना जान को आफत में डालने के समान होता; जो सामान साथ ला सकते थे ले लिया, बाकी छोड़ दिया मकान मालिक चाहे तो कबाड़ में बेच कर अपने किराए में एडजस्ट कर ले!" बोलकर अभिषेक ने सुख-सांस छोड़ी, जैसे कहना चाहता हो किसी का बाकी-बकाया पचाकर तो नहीं भागे हैं।

"बस हम लोगों को थोड़ी चिंता हो रही है तो नंदी भाभी और मुन्नी की।" पिलर नंबर छप्पन का सहारा लिए अधलेटी भाभी और सब दुखों से

पार खेलने में मशगूल मुन्नी को देखकर इसरार ने कहा।

"जब आपका मोबाइल नहीं उठ रहा था तो हम लोग बस-ट्रक की खोज में पहले आनंद विहार पहुंचे, वहां अफरा-तफरी का माहौल देखकर डीएनडी की ओर बढ़े चले।" कंधे में लटकाए बैग को जमीन पर पटकते हुए मुजीब ने कहा।

"हुअंह...बस-ट्रक!" किसी पर थूकने के अंदाज में रामू बोला, "बस-ट्रक चल रही होती तो इतने लोग यहां यमुना कात में क्यों इकट्ठे हुए हैं? सरकार की बेटी की बारात आई है क्या! सरकार का दाह-संस्कार होना है क्या?" रामू के इतना बोलते ही चारों ओर खड़ी भीड़ से हँसी का फव्वारा फूट पड़ा; अट्टहास इतना ऊंचा कि ऊपर पुल पर तैनात पुलिसवाले नीचे की ओर झांकने लगे। पुलिसवालों की तरफ हाथ हिलाते हुए रामू ने ऊंची आवाज में कहा, "सर हम लोगों ने करोना को पकड़ लिया है, हुक्म दें तो सरकार के हवाले कर दें! सरकार अगर करोना को कैद में नहीं रख सकती फिर आप कहें तो करोना का मर्डर कर यहीं जमुनाजी में फेंक दें?" सुनकर भीड़ की हँसी ऐसी छूटी कि बंद होने का नाम नहीं ले रही थी। नीचे की ओर झांक रहे पुलिसवालों को अपनी पोजीशन बदल लेनी पड़ी। तब जमुना किनारे फट रहे हँसी के बमगोले से लग रहा था सुख-संपदा को सदियों से भले ही माया कहा जा रहा हो, पर दुख का अस्तित्व भी एक भ्रम के सिवाय कुछ नहीं है; सच में दुख के आवरण को चीरकर मनुष्य जैसे ही बाहर निकलता है, दुख भी माया के सिवाय कुछ नहीं लगता!

हँसी का फव्वारा थम गया; हँसी से खाली हुई जगह में असली मुद्दे को रखते हुए रामना ने कहा, "हां तो रामू भैया, हँसी-ठहाका तो चलता रहेगा, घर की तरफ निकलने का आइडिया कहीं अटक न जाए!"

"सरकार के गाइडलाइन बिल्कुल स्पष्ट हैं; जो जहां हैं वहीं धैर्य धारण कर रहें, यदि कोई अपनी मर्जी से आदेश का उल्लंघन करेगा तो कानून अपना काम करेगा!" पिलर के सहारे अभी तक टिके भुवन ने चेताने के अंदाज में कहा।

"तो क्या हम लोग यहीं यमुनाजी का बालू-पानी खा-पीकर जिंदा रहें?" रामना उखड़-सा गया।

"पिलर छप्पन के सहारे मोबाइल में मैं तभी से कोई गेम-सेम नहीं खेल रहा मेरे भाई! पार्टी वालों से लगातार संपर्क कर रहा हूं, पार्टी में बड़ी ताकत

होती है छोटू!" आत्मविश्वास से सिर में लघु-लहर देते हुए भुवन ने कहा।

"अरे पूर्णियावाले छोटे सुभाष बोस! चिंता काहे का, अभी तो बिछुड़े मित्र-मंडली सदियों जैसे लंबे दस घंटे के बाद मिले हैं; दो दिन से तो हजारों लोग यहां-वहां अटके पड़े हैं, एक रात और सही।" तर्क-वितर्क बंद करने की गरज से रामू ने कहा; चारों ओर नजर घुमाकर वहां खड़े उत्सुक जनों की ओर देखते हुए बोला, आज की सभा समापन के अंदाज में, "कल सुबह तक कोई-ना-कोई आइडिया निकल ही आएगा।"

यमुनाजी में डूबते सूरज के जीवित रहते-रहते लोग निजामुद्दीन ब्रिज के नीचे रात की दुनिया सजाने-संवारने में भिड़ गए। रामू ने रामना को अपने पास ही बिस्तर लगाने को कह दिया।

निजामुद्दीन ब्रिज के नीचे लेटा जनसमूह, अपने साथ लाए कथरी-चटाई-गमछे पर! जैसे अब तक किसी कठोर आवरण के अंदर दबाकर रखा गया हिंदुस्तान अचानक फटकर बाहर आ गया हो; दस दिन से अंदर-ही-अंदर उमड़ते-घुमड़ते किसी बड़े ज्वालामुखी के विस्फोट-सा। समूह की महिलाएं-बच्चे पिलर नंबर छप्पन के इर्द-गिर्द आपस में सटकर ही लेटे थे; भिन्न-भिन्न प्रदेशों-जगहों के समूह में भी महिलाओं-बच्चों को एक ही स्थान पर विश्राम कराने की स्वाभाविक मौन सहमति-सी बनती गई थी। अपनी माताओं से चिपके बच्चे! जैसे धरती माता अपने गर्भ में विविध रत्नों को समेटे हो। अधलेटे की कौन कहे, लेटे हुए लोगों की आंखों से भी नींद कोसों दूर थी। नवयुवकों की आंखें मोबाइल में कोरोना ढूंढ़ने में व्यस्त थीं, अधेड़ और बुजुर्गों की निगाहें अंधेरे में कहीं दूर कुछ ढूंढ़ने में परेशान! कोरोना संक्रमितों की प्रतिदिन बढ़ती जा रही खबरों से सभी के मन का भय आंखों में जीवंत दिख रहा था; जैसे सन्नाटे की पालकी में सवार होकर कोरोना उन सबों तक बस पहुंचने ही वाला हो! जिन्हें कदाचित नींद आ गई थी वे स्वप्न में ट्रेन में चलायमान हो गए थे; जैसे सरकार ने भगवान राम सदृश्य उनके मन की बात सुनकर ट्रेन चालू कर दी हो! जो जगे थे वे खुली पलकों में ही सुखद कल्पना में खोए थे; काश कल सुबह सरकार उन्हें हेलीकॉप्टर से उनके गांव भेज दे, जमुना किनारे से ही! ऊपर निजामुद्दीन ब्रिज पर सरकारी गाड़ियां सरपट भागती जाती थीं, नीचे जनगण खामोश पड़ा था, अपने-अपने सपने में खोए हुए; लग रहा था जैसे अंधेरे में सदी भर के सन्नाटे ने दस्तक दे दी हो।

"रामू भैया आपका क्या अनुमान है, इस कोरोना से कितने लोग मरेंगे देश में?" रामू की तरफ करवट बदलते हुए रामना बोला।

"कोरोना ने तो जबरदस्त एंट्री मार दी है देश में, अब तो हजारों लोग मरेंगे या लाखों में, कह नहीं सकते।" रामू ने रामना के प्रश्न का सरल-सा उत्तर दे दिया, गुणा-भाग में ज्यादा दिमाग लगाए बिना ही।

"फिर तो काफी लोग अपने घर और घरवालों का मुंह देखे बगैर ही मर जाएंगे!" आवेश में बोलते हुए अधलेटा रामना सीधा तन गया।

"तभी तो लाखों लोग अपने-अपने खोल-खोलिए-दड़बे से निकल पड़े हैं, घर पहुंचने की जीवट लालसा में; मुझे भी तो अपने रामघाट को बचाना है।" नाक से हवा की लंबी धार-सी आवाज में रामू बोला।

"ऐसे डरावने समय में हर कोई घर पहुंचकर घरवालों के साथ ही रहना चाहेगा।" पास ही बैठे अंकित ने करवट बदलते हुए कहा, बेचैन-वार्ता को आगे सरकाते हुए।

"घर ना जाने का विकल्प भी तो नहीं है गुरु! यदि सरकार सभी मजदूरों, रिक्शा-ठेला वालों के लिए दिन में एक बार भी खाने की व्यवस्था कर देती तो आज इतनी भीड़ दिल्ली के बॉर्डर पर नहीं दिखती।" लेटकर सोने का प्रयास कर रहे प्रकाश को भी चुप रहना नागवार गुजरा।

"सरकार को चाहिए था कि लॉकडाउन से पंद्रह दिन पहले ही लॉकडाउन की घोषणा कर देते; जो लोग घर जाना चाहते उन्हें घर जाने देते, हर जरूरतमंदों के घर में अनाज और थोड़े पैसे भिजवा देते; फिर तो पूरा लॉकडाउन एक नए किस्म के उत्सव के समान होता, चाहे तो विश्राम-उत्सव कह लेते!" अफसोस जताते हुए रामू एक सांस में बोल गया।

"अरे मैं पूछता हूं चलो अनाज-पैसा ना बांटते, क्योंकि सरकार हमेशा कंगाल ही रहती है, पर अभी ट्रेन से हमें घर तो जाने देते; रातोरात ट्रेन-बस बंद करने का आखिर क्या तुक था?" अंधेरे में ठीक से ना दिखने के बावजूद रामना की आवाज से लगा उसका पारा चढ़ रहा है।

"रामघाट में हम लोगों का एक मित्र है अहम, उसके अंदर सारी दुनिया की फिलॉसफी भरी पड़ी है; वह तो कहता है भारत-जैसे विशाल देश को ढंग से चलाने के लिए दृष्टिवान व्यक्ति समूह की जरूरत पड़ेगी जिनकी दृष्टि दशकों-सदियों तक लंबी हो।" बोलकर रामू की नजरें निजामुद्दीन ब्रिज की छत पर टंग गईं, जैसे उसकी आंखें ब्रिज के आर-पार देख रही हों।

"तो तुम्हारे कहने का मतलब है हिंदुस्तान की सरकारों में दृष्टि नहीं होती है?" तकलीफ भूलकर इसरार भी बहस में शरीक हो लिया।

"दृष्टि होती है; अपनी मनमर्जी के कामों में उलझी रहने की दृष्टि वाली सरकारें रही हैं देश में।" बिना किसी गंभीर सोच-विचार के ही रामू ने कह दिया।

"सरकारों में दूरदृष्टि का अभाव रहता है, फिर तो जनता को जीने के लिए अपनी दृष्टि खुद ही विकसित करनी चाहिए।" रामना ने कहा तो लगा उसके अंदर की पीड़ा अकेली नहीं है, आगे ध्यानमुद्रा में आते हुए कहा, "मेरी दृष्टि तो काफी लंबी है, मुझे तो अब सीधे अपना प्यारा शहर पूर्णिया दिखने लगा है।"

"फिर देरी किस बात की है? अब तो प्रभु राम का नाम लो और हाथ फैलाकर अभी का अभी उड़ चलो!" रामू ने रामना को छेड़ा।

"राम का नाम लेकर वे लोग उड़ें जो राम नाम की सवारी करते हैं; मैं तो पूर्णिया चल दूंगा पैदल! बशर्ते छप्पन इंच के कुछ कलेजे वाले साथ हो जाएं!" रामना को अपने अंदर कुछ जागने-सा अनुभव हुआ।

"तुम कहना क्या चाहते हो रामना? कलेजे वाले सिर्फ पूर्णिया में होते हैं! रामघाट में नहीं? मैं चलता हूं तुम्हारे साथ पैदल पूर्णिया तक!" दोनों हाथ 'इंकलाब जिंदाबाद' की तरह उठाते हुए रामू बोला।

"अरे रामू भैया, तुम्हें रामघाट से पूर्णिया तक सात सौ किलोमीटर फालतू जाने की जरूरत नहीं है; आप अगर रामघाट तक हमारा साथ दें तो आगे की दूरी हम खुद ही तय कर लेंगे! फिर तो हमें प्रभु राम का आसरा नहीं, भैया रामू का सहारा चाहिए, बस।" रामू पर विश्वास जताते हुए रामना ने संभावना तलाशने की गरज से कहा।

"पक्का?" रामू ने ललकारा।

"सौ प्रतिशत!" रामना ने स्वीकारा।

"बाकी साथियों का क्या विचार है!" रामू चारों ओर देखते हुए जन जागरण फैलाने की भांति पुकार लगाने लगा।

...हम सब चलेंगे साथ में, सरकार जाए भाड़ में...यमुना किनारे अर्धरात्रि में जन-स्वर गूंज उठा, इतना ऊंचा कि लगा जैसे लालकिले की प्राचीर से अब तक निकलते रहे एकल कंठ के स्वर को ठेंगा दिखा रहा हो!

"जज्बा तो ठीक है, पर पैदल चलते-चलते पैरों की क्या दशा होगी?"

गहरी नींद से बमुश्किल बाहर आते हुए भुवन के जबड़े से आवाज बाहर आई; भीड़-भूख से बेखबर उसके अंदर अब जाकर कोई चिंता जागी थी।

"बड़े भैया! भारत माँ की मिट्टी से जन्मे ये कंधे इतने मजबूत हैं कि गोवर्धन को भी उठा लें!" रामना की ललकार बढ़ती गई।

"तो अंधेरा रहते-रहते ही हम सबों को जीटी रोड पर होना चाहिए; हमारे ग्रुप में कितने लोग हैं?" रामू ने एक किनारे से गिनती आरंभ करते हुए कहा। रामू के आह्वान को सर-आंखों पर लेते हुए रामना ने दूसरे छोर से गिनती शुरू कर दी, त्वरित गति से..."रामू भैया, अंकिता दीदी तक पच्चीस।" अपनी चचेरी दीदी पर गिनती रोकते हुए उसने कहा; सामने से रामू की गिनती आ टकराई थी।

"मेरी गिनती हुई बीस, मेरा और तुम्हारा जोड़कर कुल सैंतालिस; तो अपने समूह का नाम होगा समूह सैंतालिस!" रामू ने टीम लीडर भांति एक सुरक्षित कोड दिया, रास्ते में भटक जाने या पीछे रह जानेवालों के लिए।

"अरे वाह, क्या संजोग है, औरत-मर्द-बच्चे सहित कुल सैंतालिस! सन् सैंतालिस में देश आजाद हुआ था, आज हमारी संख्या भी ठीक सैंतालिस है; ठीक ही तो है हमें भी कल सुबह होते-होते आजाद हो जाना चाहिए!" रामना ने सच में जोश भर दिया पूरे समूह में। अब तक रामू कोरोना-कैबिनेट वाले ग्रुप में मैसेज सेंट कर चुका था...'साथियों को सलाम; मैं रामघाट की ओर पैदल कूच कर रहा हूं, सैंतालिस लोगों के कारवां के साथ; रामघाट में कोरोना के प्रवेश को रोकना हमारा प्रथम दायित्व है...'

ऊपर से चाहे जैसा दिखे भुवन के अंदर पार्टी की सनक चढ़ी रहती थी; भूखे-लुटे लोगों को पैदल चलने से रोकने की खातिर उसने अंतिम उपाय भी आजमा लेना चाहा। तत्क्षण ही अपनी पार्टी के रंग वाला गमछा पुलिस की तरफ लहरा दिया, पिलर नंबर छप्पन के माथे पर चमकते दूधिया प्रकाश के सहारे। उसके गमछे का रंग देखकर पुलिस की समझ बढ़ गई; बिना देर किए रस्सी के सहारे उसे ब्रिज के ऊपर चढ़ जाने दिया।

"इस लॉकडाउन में सरकार का सख्त आदेश है जो आदमी जहां है वहीं रहें; ब्रिज के नीचे एक बड़ी भीड़ ने सुबह-सुबह अंधेरे में पैदल निकल जाने का प्लान बना लिया है; यह तो पार्टी और आलाकमान का अपमान होगा, उन्हें रोकना होगा!"

"अरे सर जी, हम लोग किन-किन लोगों को कहां-कहां रोकें! यहां तो

चारों तरफ लोग पैदल ही भागे जा रहे हैं!"

"अरे! जब सरकार का आदेश है तो सख्ती तो करनी पड़ेगी।" भुवन के अंदर पार्टी का रंग चढ़ा था।

"सरकार का आदेश है, हमारे हेडक्वार्टर से भी आदेश है; लेकिन पैदल चलते लोगों को हम लोग जबरदस्ती कैसे रोक लें! अगर रोक भी लें तो उनके ठहराने-खाने का इंतजाम कहां-कैसे करवाएं?" पुलिस जिप्सी में बैठा दो स्टार वाला अधिकारी बाहर आते हुए बोलने लगा, "यह बात तो आप लोगों को सोचनी चाहिए; सारी जिम्मेदारी पुलिस पर डालकर आप सिर्फ घोषणा करते रहिए, ऐसा भला कैसे चलेगा!"

भुवन निरुत्तर हो गया। वह नीचे उतरने लगा; पुलिसवालों ने सहारा देना जरूरी नहीं समझा। नीचे उतरते में भी उसकी सांस फूलने लगी; उसे महसूस हुआ...ऊपर से नीचे ऐसे ही सरकते हुए क्या सत्ता और शख्सियत की सांसें भी एक दिन दफन हो जाती हैं?

7

रामू के दिल्ली में फंसे होने से मंजरी को घर सूना-सूना लगने लगा था; कोरोना-कैबिनेट की गतिविधि भी मंद पड़ जाने से रामघाट खाली-खाली-सा लगने लगा। उसकी बेचैनी बढ़ती गई; न जाने रामू को कब-कैसा ट्रक मिलेगा, किस दिन पहुंचेगा? अकेलापन अब उसे काटने को दौड़ता। आज सात अप्रैल की शाम उसके लिए बोझिल हो उठी; मंडली के साथ कल दिनभर की निष्फल रस्साकसी और आज सीमा की स्थिति तो जैसे हथौड़े बरसा रही थीं, अंदर अरसे से संचित उम्मीदों-अरमानों पर।

उसे अभी पता चला आज दादी कोरोना की कहानी सुनानेवाली है। वह अपने को रोक न पाई; बचपन में वह भी दादी की कहानी सुना करती थी। बस्ती की दादी ना जाने कब से बच्चों को कहानियां सुनाती आ रही है; नाना प्रकार की रंग-बिरंगी कहानियां, राजा-रानी से लेकर राजकुमार-राजकुमारी तक, उनके उड़नखटोले सहित! जब से देश में कोरोना का कोहराम मचा था बच्चे तो जैसे दादी की जान के पीछे पड़ से गए थे, कोरोना की कहानी सुनाने के लिए। दादी भला कोरोना की कहानी कहां से लाती, उस बेचारी को तो कोरोना का ओर-छोर तक पता न था।

लक्ष्मणपुरा में आज तो कोरोना के पांच केस टपक पड़े थे; लग रहा था

जैसे आततायी गिरोह आगे इस शहर का भी सफाया कर डालेगा। रामघाट में तो अविश्वसनीय शांति छा गई, हथियार डाल देने-सा! लॉकडाउन लागू होने के दिन कोरोना काल्पनिक कथा-सा था, रामघाट के लिए; दूर देश से बढ़ रहे किसी अदृश्य-अनजान दुश्मन के आगमन-सा! अब पड़ोस में कोरोना के केस निकलते जाने से हलकान होने की स्थिति आ गई थी। बच्चे भला कहां माननेवाले थे; कल ही तो दादी ने कहा था आज के लिए, कि कुरौना की कहानी सुनाऊंगी। कोरोना काल में भी बस्ती के लोगों ने दादी को मना नहीं किया था शाम को कहानी सुनाते रहने के लिए; लॉकडाउन के दिनों में बच्चे शाम को भी अम्बेडकर चौराहे पर ऊधम मचाते फिरते थे, इससे बेहतर था वह चबूतरे पर दूर-दूर बैठकर दादी की कहानी ही सुनें। बस्ती में भले ही सदी का सन्नाटा पसरा हो, दादी की कहानी तो सुननी ही सुननी थी बच्चों को।

शाम की शीतल हवा में मंजरी निकल पड़ी चबूतरे की तरफ; मन में रामू की याद को विराम देकर। वहां पहुंची तो दादी की कहानी शुरू हो चुकी थी...एक बलशाली राजा था; दिन-रात काम में लगा रहता, हर काम मन से करता, अपने मन की सुनता, अपने मन की मानता और अपने मन की ही करता!...

सामने सूनी सड़क पर भीमरवा खुलकर गाली देने जैसा शोर करता जा रहा था...मन का राजा-करता मनमर्जी-पहनता मुखौटा-बनता मनमोहिनी-सबसे बड़ा मसखरा-माई का लाल-बड़ा टकसाल...

मुन्ना का मन कतई नहीं था आज राजा की कहानी सुनने का। दादी की वही कहानियां, पुरानी-पुरानी! आज क्यों, तीन साल से तो कहानी सुनता आ रहा था वह; पर बीते सात दिनों से अनमना-सा हो चला था वह। आठ दिन तो हो गए थे, उनके पापा अपने चारों साथियों के साथ निकल पड़े थे दिल्ली से। दो को तो ऊपरवाले ने बुला लिया, एक न जाने कहां लापता हो गया और एक अधमरा-सा घिसटता आ रहा था, पापा के कंधे के सहारे। बस्ती से दिल्ली इतनी दूर है क्या! यदि वह एक-दो साल पढ़ लेता तो जरूर जान पाता कि दिल्ली कितनी दूर है बस्ती से। दस साल के बच्चे को भला क्या पता आधा हिंदुस्तान नापकर अपनी बस्ती पहुंचना आसान नहीं है!

आठ दिन पहले की बात है, जब दादी उड़नखटोला वाली कहानी शुरू करने जा रही थी, तो मुन्ना ने टोक दिया था, "दादी दिल्ली में कुरौना आया है! पापा और दीपू चा और जुगेश चा और मुनेष चा और मंजूर चाजान को

आज कुरौना ने भगा दिया दिल्ली से!" मुन्ना का मुंह पहली बार खुला था, वह भी कहानी शुरू होते ही; कहानी सुनने तीन साल से बैठ रहा है वह, लेकिन दादी की कहानी के बीच में वह कभी नहीं टपकता।

"कुरौना?" दादी ने तब आंखें सिकोड़ ली थीं।

"हमको आज कुरौना की कहानी सुनाओ दादी," मुन्ना ने जैसे जिद ही पकड़ ली थी; फिर बाकी बच्चों ने भी।

"वह कहानी किसी और दिन सुनाऊंगी, आज उड़नखटोला वाली राजकुमारी आ चुकी है हमारे पास," दादी ने बोल दिया तो बोल दिया; उड़नखटोला वाली राजकुमारी की कहानी शुरू हो गई। अंदर से असहज हो चली थी दादी; राजकुमारी की शादी जल्दी निपटा दी। घर आकर पड़ गई उलझन में, आखिर यह कुरौना है क्या बला! वह जानती तभी तो बच्चों को सुनाती?

परमेश्वर के बेटे मुन्ना की 'कुरौना कहानी' से दादी को याद आया—सात दिन पहले ही तो जनता करफू लगा था; रविवार को। असलियत उसे पता नहीं थी, तब यही लगा था कि दिन-रात की दौड़-धूप, उठा-पटक, भागम-भाग, चिक-चिक, बढ़ते कोहराम को लगाम देने के लिए ही सरकार ने एक दिन का जनता करफू लगाया है। उसने तो मन-ही-मन सरकार को पहले शाबाशी दी थी, फिर अंदर-ही-अंदर फटकार भी; ऐसा करफू तो शुरू से ही लगते रहना चाहिए था, महीने में एक बार, इससे शरीर को ढंग का आराम तो मिलता; शरीर से ज्यादा दिमाग की चकरघिन्नी तो रुकती एक दिन के लिए। जनता करफू के दो-तीन दिन बाद लोकढाण आया तो उसे लगा था, शायद बाहर का कोई राजा हमला करनेवाला हो यहां, कई कहानियों में भी तो ऐसा हुआ है। अब मुन्ना बोल रहा है कुरौना है दिल्ली में, फिर तो जरूर-जरूर कोई नई बात होगी। वह पूछे तो किससे पूछे, बच्चों के अलावा ना तो कोई ढंग से उसकी सुनता, ना सुनाता; सब तो कहते फिरते...इस बुढ़िया को कहानी कहते रहने दो, यह खत्म हो जाएगी, इनकी कहानी खत्म नहीं होगी! उसे तो यह बात वर्षों से कचोटती आ रही थी, जब भी वह किसी से कोई जरूरी बात भी पूछती, सभी उसे मजाक में टरका देते—दादी तुम्हारे पास तो कहानियों का खजाना है, तुम्हें दूसरों से कुछ जानने की भला क्या जरूरत!

मुन्ना की बात सुनकर उसका मन बेचैन हो उठा था कुरौना की कहानी जानने के लिए, फिर कथा बुनकर सुनाने के लिए। मन-ही-मन ठान भी लिया, कोई उसे बताए या न बताए वह यहां-वहां बैठकर, खड़ी रहकर जरूर

सुनेगी, आखिर कुरौना किस कहानी की कौन-सी चिड़िया है! बच्चे उनसे सुनते हैं कहानियां, वह लोगों की जुबान से सुनेगी कहानी, भले ही उसकी कड़ी जुड़ी हो या टूटी-फूटी।

दूसरे दिन दोपहर बाद दादी भी चबूतरे के किनारे आ बैठी।

"साल्ला, यह कुरौना तो जीना हराम कर देगा हमारी बस्ती का!" चबूतरे पर चर्चा चल पड़ी तो हरिजन टोली के रंजन बाल्मीकि का डर जाग उठा।

"एक दिन का जनता कर्फ्यू तो ठीक था, इक्कीस दिन तो अंतड़ी सुखा डालेगा।" मल्लाह टोली के रामदेव निषाद की भी बेचैनी बाहर आने लगी।

"आज तो लाखदान का तीसरा दिन ही है, सांस थामकर चलना सीखो।" बस्ती कहार टोली के सुखदेव कहार ने आंखें घुमाईं गोल-गोल, अपने सदाबहार अंदाज में बोलते हुए।

"लाखदान नहीं रे सुखदेवा, लोकढाण।" रामदेव निषाद गंभीर किस्म के थे, सुधार करना चाहा।

"अरे पाद कहो या पदनी चीज तो वही है न!" सुखदेव के घर राशन भले ही थोड़ा बचा हो, बातों का भंडार भरा रहता।

"सुना है सभी पैदल ही चल पड़ा है दिल्ली से!"

"अरे बुड़बक! जब ट्रेन-बस-ट्रक सब बंद है तो पैदल नहीं आएगा तो कैसे आएगा, मंत्री की पालकी में?" काफी देर से चबूतरे पर बैठी दादी ने टोका। सुखदेव ने हँसी-ठिठोली वाले अंदाज में पूछा "अरे दादी! तुम इतनी देर से यहां चबूतरे पर बैठकर क्या सुन रही हो।"

"न-न, तुम लोगों की बात सुनकर हम क्या करेंगे भला, थक गई तो थोड़ा सुस्ताने बैठ गई, बस।" दादी अपना पल्लू ठीक करते हुए चलती बनी।

लॉकडाउन का आठवां दिन था। दिल्लीवाले कुरौना से काफी दूर यहां चबूतरे पर चर्चा जारी थी।

"बस्ती के लिए तो बहुत बुरी खबर है!" सदानंद मंडल ने भारी मन से कहा।

"हां, दीपू ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया, कल रात!" रामदेव निषाद की आंखें पनीली हो उठी थीं।

"पप्पू के टीभी में भी बताया है अब तक बत्तीस लोगों का गला घोंटा चुका है कुरौना!" बोलते हुए सुखदेव सहज नहीं था; उसका मजाकिया अंदाज मंद पड़ चुका था।

"आखिर दीपू का भी गला घोंट ही दिया इस जानवर ने!" रंजन बाल्मीकि

की आवाज में डर तैर गया था।

"अरे भई, गायनंद उस बत्तीस में नहीं है; वे लोग तीन दिन से लगातार पैदल चल रहे थे दिल्ली से, गायनंद ठहरा डायबिटीज का पेशेंट, कल रात को कानपुर से पहले दम तोड़ दिया।" सदानंद ने मामला थोड़ा साफ करके बताया।

"और कितना चलना पड़ेगा बाकी चारों को?" राजेश ग्वाला परेशान दिखने लगा।

"तुम तो सावन में कई बार देवघर गए हो, बाबा बैजनाथ को जल चढ़ाने; दिल्ली से अपनी बस्ती पहुंचना दस बार बोलबम जाने के बराबर समझ लो!" सदानंद ने अनपढ़ राजेश को अंदाज-विधि से दिल्ली से बस्ती तक की दूरी समझाना चाहा।

लॉकडाउन का दसवां दिन था। बस्ती की औरतें कुएं वाले इमली के पेड़ के पास जमी थीं; फरहा खातून रोए जा रही थी, लगता था कुछ तो अनहोनी घटी थी।

"अरे चाची! फरहा भाभी क्यों रोए जा रही है दोपहर से ही?" मंजू ने अपनी बूढ़ी चाची से पूछा, अपनी मुंहबोली भाभी को छाती पीटते देखकर।

"ठीक से कुछ बोले तभी तो पता चले; ये तो रोए जा रही है?"

"अरे इसका शौहर मंजूरवा दिल्ली से पैदल ही चला आ रहा था, परमेसरा के संग; रास्ते में पुलिसवालों से कहासुनी हो गई, तब से गायब है!"

"एक सप्ताह से लोगबाग बस्ती पकड़कर बैठे हैं, अब तो सभी घरों का दाना-पानी फुस्स हो चुका है, एक टाइम भी चूल्हा नहीं जल पा रहा है; यह कुरौना ना जाने कहां से आ टपका है, भगवान जाने क्या-क्या मुसीबत लाएगा!" इमली पेड़ की जड़ पर कब से बैठी दादी को भी बिना बोले रहा ना गया।

"दादी अम्मा, तुम्हारी कहानियों में राजकुमारी उड़नखटोला में आती है, यह कुरौना तो विदेश से आया है महारानी बनकर, उड़नखटोला में नहीं हवाई जहाज में! सुनो दादी, पंद्रह साल से तुम्हारी वाली राजकुमारी उड़नखटोला में ही आती है, अब तो तुम भी अपनी कहानी बदल दो, अब तो जहाज वाली कहानी बताओ ना बच्चों को! समझो यह कुरौना सब दिन के लिए बैठ गया इंडिया में!" सिलाई-कढ़ाई करके भी बारहवीं तक की पढ़ाई जारी रखने वाली रागिनी अपनी भड़ास हल्के अंदाज में निकालने लगी। दादी के कान

सतर्क होकर सुन रहे थे।

लॉकडाउन का बारहवां दिन था। बस्ती के युवा मजदूरों की भीड़ थी पुराने स्कूल पर; सभी गप्पें मार रहे थे अपने-अपने ग्रुप में। किसी के बोलने पर कोई भी बोल पड़ता था, कोरोना-काल में मन में उपजी मनोदशा के हिसाब से; उपहास-उल्लास-हताशा-निराशा सब कुछ गड्डमड्ड थी फिजा में...

"सुना है मंजूरवा का भी कोई पता नहीं है?"

"जमाती लोग कुरौना लेकर फरार है तो सरकार ढूंढ़ेगी ही दिन-रात, साला लगता भी तो है मक्का का मौलवी!"

"अब बच गया परमेसर और लंगड़ा मुनेशर, देखो कब तक पहुंचता है रामघाट।"

"शहर पहुंच जाए तो हम लोग खींच-खाचकर बस्ती ले ही आएंगे न!"

"अरे दादी! तुम तो कभी इधर आती नहीं थी! आज कैसे?"

"अरे बेटा, भुतहा सन्नाटा से डर लग रहा है बस्ती में।"

"दादी, अब कुरौना से डरने का नहीं, मरने का समय है, खुद को संभाल कर रख नहीं तो बच्चों को कुरौना की कहानी कौन सुनाएगा!"

"अरे रहने दे बेटवा, कुरौना में कोई कहानी हो तब तो सुनाऊं!"

"कहानी नहीं है! क्या कहती हो दादी, बहुत बड़ी कहानी है कुरौना की, दूर देश से उड़-उड़कर आया है इंडिया में!"

"जब कुरौना उड़कर आ रहा था, तो हम क्या कर रहे थे उस वक्त?" दादी गुस्से में बोली, लगा कोरोना लाने वाले को शापित ही कर देगी।

"हम क्या कर रहे थे...? अरे तुम बताओ राकेश!"

"हम तो सो रहे थे!" इस पर सभी के मुंह से हँसी के फव्वारे फूट पड़े। स्कूल की छत पर कई दिनों से राजपाट चला रही हजारों चिड़ियां युवा मजदूरों की हँसी से फरफराकर उड़ गईं। दादी गौर से चिड़ियों को देखने लगी थी...चिड़िया चंचल उड़ती फिरती है दिन में और हम दिन में भी सो रहे थे! लोग कहते हैं हवाई जहाज की चाबी सरकार के पास थी, थी तो जहाज बंद क्यों नहीं किया! उनमें कुरौना उड़-उड़ कर आ रहा था तो मालिक क्या कर रहा था?...

सच में लॉकडाउन के बारहवें दिन बस्ती में वीरानगी छाई थी; दिल्ली के रास्ते काल-कवलित हुए दिपू और जुगेश के दाह-संस्कार की कोई हलचल नहीं थी बस्ती में। बच्चे तालाब में जमे थे। राजा तालाब! बस्ती के बच्चे हर

दिन आते हैं, उछल-कूद करने, नहाने, पानी में पीछा-पिछी खेलने। लॉकडाउन के दिनों में यह तालाब तो किसी बड़े तीर्थ स्थल से कम नहीं था बच्चों के लिए! घर-आंगन में भूख तो पेट को जगाती थी जोर से, यहां तालाब में भूख दुबक लेती थी पानी की ठंडक में। अब इस जमावड़े में भी परिवर्तन आ गया था। लॉकडाउन तो बच्चों के लिए हैडमास्टर के आदेश के समान था; पहले के बड़े झुंड के बजाय बच्चे तीन-चार की टुकड़ी में ही बैठते, दूर-दूर। कुछ टुकड़ियां बरगद के नीचे गप्पबाजी के अड्डे जमाए थीं, कुछ पानी में धमाचौकड़ी में मशगूल। हर बच्चे अपनी-अपनी जानकारी भर से बोले जा रहे थे, कभी ये बच्चा तो कभी वो बच्चा...

"राज! तू मेरे इतने पास क्यों बैठा है, मुझे भी कुरौना से मारेगा क्या?"

"कुरौना तो शहरों में फैला है, इस बस्ती में कहां से आएगा?"

"अरे तुम्हें पता नहीं है! जानते हो, चीन-अमेरिका-इटली कितना तो दूर है, वहां से इंडिया भी तो आ गया; यह बस्ती शहर से सटकर ही तो है!"

"हां यार, तू ठीक बोलता है!"

"अपनी बस्ती के भी तो कई लोग मर गए हैं कोलोना से!"

"हुम्म! पहले निखिल के पापा मरे, फिर ज्ञान के पापा भी!"

"अरे, वे लोग कुरौना से थोड़े न मरे हैं!"

"तो कैसे मरे हैं?"

"कुरौना उनका पीछा कर रही थी और वे लोग भागे जा रहे थे, बस कुरौना के डंक से मर गए!"

"किसी की लाश भी तो नहीं आ पाई है अभी तक।"

"अरे मूरख! बस-ट्रक-ट्रेन सब बंद हैं तो लाश कैसे आएगी!"

"सरकार का मन होगा तो हवाई जहाज से भेज सकती है।"

"अरे सफाचट, जहाज तो बंद है!"

"अरे छोटे मियां, जब सरकार जहाज से कुरौना ला सकती है चीन-जापान-इटली से, तो लाश क्यों नहीं ला सकती है?"

"ये जहाज क्यों उड़ते थे, कौन जाता था इन जहाजों में?"

"अरे मूरख! बड़े दुकानदार जाते हैं, जैसे चौक वाले धरम साहू पटना-लखनऊ जाते हैं सामान भरने, वैसे ही दिल्ली-मुंबई के बड़े-बड़े बनिया जाते हैं विदेश।"

"अपनी बस्ती के मस्जिद में आते हैं न वो थैले वाले जमाती, वो भी तो

आते हैं विदेश से!"

"एक बात मेरे भेजे में नहीं आ रही है यार, जब सभी को पता था यह बनिए और जमाती कुरौना लेकर आ रहे हैं विदेश से तो जहाज को उड़ने क्यों दिया?"

"बनिये से नेता लोगों को फायदा होता होगा यार।"

"और जमाती से...!"

"उससे भी फायदा निकल आएगा...!"

"अपने फायदे के लिए कितने तो लोगों को मरवा दिया नेता लोगों ने, पप्पू चाचा के टीवी में बताया है आज तक अस्सी लोग मर चुके हैं।"

"फिर कितने ही तो लोग भूखे हैं बस्ती में!"

"मेरे भैया बता रहे हैं कुरौना बम फट गया तो लाखों मरेंगे!"

"मैं सीना ठोककर बोलता हूं, मैं दिल्ली में मंत्री होता तो शुरू में ही सभी जहाज की चाबी खींचकर अपने पास रख लेता, कुरौना को दिल्ली से ही बाय-बाय कर देता!"

"ठीक-ठीक, बिल्कुल सही बात!" पुराने पीपल के खोह में कब से बैठी दादी ने ताली बजाई; बच्चों की टुकड़ियां उठ खड़ी हुईं।

"अरे दादी आप! यहां कैसे आ गईं? आप इधर कभी तो आती नहीं!"

"अरे बुतरवा, बस्ती में मरघट पसरा है; तुम लोगों का उछल-कूद देखकर अच्छा लगता है, इसलिए चली आई, वैसे तुम लोग अच्छी-अच्छी बातें कर लेते हो कुरौना पर!"

"लेकिन दादी आप हम लोगों को कुरौना वाली कहानी नहीं सुनाती हो, सब दिन आज-कल का बहाना बनाती हो!"

"कुरौना की कहानी भूल गई थी मैं, अब याद आने लगी है धीरे-धीरे; आज शाम को सुनाती हूं!"

...हें-हें-हें-हें-हे...फिर तो बरगद के नीचे बैठी टुकड़ियां और पानी में कब से जमे नंग-धड़ंग बच्चों ने दादी को घेर लिया, चारों ओर से ताली बजाते हुए। बच्चों को बुरे वक्त में संभालकर रखने की जिम्मेदारी भी तो दादी की थी; तभी तो वह बस्ती की दादी कहलाती थी!

दादी आज शाम बच्चों को राजा की कहानी सुनाने बैठी थी। जब मंजरी पहुंची तो कहानी चल पड़ी थी...वह बड़ा बलशाली राजा था। दिन-रात काम में लगा रहता, हर काम मन से करता। अपने मन की सुनता, अपने मन की

मानता और अपने मन की ही करता...। अब लंबी सांस के साथ कहानी रफ्तार पकड़ती गई...एक समय की बात है, कई पड़ोसी राज में भयंकर महामारी फैल गई, देखते-देखते वहां की प्रजा पट-पट कर मरती जा रही थी! राजा का दरबार लगा हुआ था, राजवैद्य ने सुझाव दिया, "महाराज! सारे पड़ोसी राज में यह बीमारी फैल चुकी है; यह बीमारी आदमी से आदमी में बढ़ती है, बुद्धिमानी इसी में है कि अपने राज की सीमाओं पर सभी प्रवेश द्वार बंद कर दिए जाएं..."

श्रेष्ठ दरबारियों ने टोका–"परंतु महाराज! अभी तो..."

"दादी, कुरौना की कहानी कब आएगी," मुन्ना अधैर्य हो उठा, दादी के राजा-प्रजा की कहानी सुनकर।

"कुरौना की कहानी तो लंबी है, अभी सुनाती हूं, सांस थामकर सुनो बेटा; ध्यान से सुनोगे-समझोगे तो समझदार बनोगे," बोलते हुए दादी ने आंखें बंद कर लीं, जैसे अंत:चक्षु से भविष्य को देख रही हो।

मुन्ना की सिसकी छूट पड़ी, "नहीं दादी, इस राजा की कहानी सुनने का मन नहीं करता; मेरे पापा सात दिन में भी घर नहीं पहुंच पाए हैं, डर लग रहा है कहीं उनके पैर कमर तक घिस तो नहीं गए होंगे!"

दादी सोच में पड़ गई; खुद भी तो नहीं जान रही थी, आगे कहानी में प्रजा को कैसे-कैसे दिन देखने बाकी हैं! दादी की कहानी आगे बढ़ती गई...सभी नवरत्न दरबारी एक साथ उठ खड़े हुए; प्रभुत्वपूर्ण दरबारियों ने समझाया राजा को–"अभी तो हम सभी बड़े-बड़े कामों में व्यस्त हैं; आप स्वयं भी देख रहे हैं उन कामों से प्रजागण कैसे अपने राजा के पीछे पागल हुए जा रहे हैं..."

बच्चे कहानी सुनते रहे, कहानी के आदि-अंत का अनुमान भर लगाते हुए। कहानी मंजरी की समझ में आने लगी; जब देश में कोरोना का प्रवेश जारी था तब हमारे नीति नियंतागण भी तो अपनी-अपनी रामकहानी में व्यस्त थे, कोरोना को कीड़ा मानकर! मंजरी घर की तरफ बढ़ चली, धीरे-धीरे। रात्रिकालीन शीतल हवा में उसके रोंगटे जागने लगे; मन में सुप्त पड़ा संकल्प फिर से जाग उठा...जहां पर दादी की कहानी खत्म होगी वहां से कहानी आगे बढ़ानी पड़ेगी, तभी तो उसे और उसके साथियों को तसल्ली मिलेगी; देश और समाज के प्रति आखिर उनकी भी तो जिम्मेदारी है! दो-चार दिन में ही रामू के रामघाट पहुंच जाने की उम्मीद लिए वह घर में दाखिल हो गई।

8

अप्रैल की चढ़ती गर्मी में शायनी दिनभर पंखे की सहचरी बनी रहती थी। बीच-बीच में कोरोना-कैबिनेट की सफलता-असफलता का जोड़-घटाव करती रहती; अपनी वैचारिक क्रियाशीलता को भी आजमाने की खातिर, अब तक के परिणाम से उपजे खालीपन से दो-चार होते हुए। उसे जिंदगी की सीमाएं साफ-साफ नजर आने लगीं; अपने प्यारे शहर रामघाट के बगल वाले लक्ष्मणपुरा में कोरोना के आ धमकने से। अपने अंदर खालीपन की खाई और बढ़ती महसूस हुई; जी भरकर जिंदगी न जी पाने का खालीपन! चिंतन-शृंखला से उसके अंदर बेचैनी जाग उठी। आज सात अप्रैल को चार बजते-बजते उसके अंदर से प्रतिध्वनि-सी आने लगी, '...कोरोना-जंग जल्दी समाप्त नहीं होनेवाली, जिंदगी को जड़ होने से बचा!...' उसका मन सहज का साथ पाने के लिए तड़प उठा। सोचते-सोचते ही उसने सहज को मैसेज फॉरवर्ड कर दिया, '...आज मुझे घर से बाहर जाना है, घंटेभर के लिए ही सही; कहीं भी!'

पंचशील मार्ग के टी पर गांधी मार्ग जाने के लिए सहज कार को दाएं मोड़ रहा था; शायनी ने हड़बड़ाकर स्टीयरिंग पर हाथ रख दिया, जैसे गहरी नींद से अचानक जग पड़ी हो! बोली, "प्लीज जरा बाएं की तरफ चलना!" कोरोना-कैबिनेट के असफल अभियान की प्रतिछाया से सहज अभी तक मुक्त नहीं हो पाया था, खासकर मंडली द्वारा गरीबों को राशन-पानी देने की असफलता से; उसने लगभग झल्लाकर कहा, "उस रास्ते से जहन्नुम जाना है क्या!"

"जहन्नुम नहीं, जन्नत बोलो!" ड्राइविंग सीट पर बैठे सहज को कनखियों से देखते हुए शायनी बोली।

"जन्नत?" हौले से यू-टर्न लेते हुए सहज शायनी की बॉडी लैंग्वेज भांपने लगा।

"हां सहज, कोरोना एपिसोड ने मुझे अंदर से बेहद निराश कर दिया है," आगे आह भरते हुए बोली, "मुझे तो घुटन-सी होने लगी है इस सिस्टम से; एक सप्ताह से शहरभर में माइक पर चिल्लाती जा रही हूं, लोगों पर कितना असर पड़ रहा है खुदा जाने; जिला अस्पताल में हेल्प करने जाओ तो कहते हैं सब ठीक है! पुलिसवालों के साथ चौराहे पर लॉकडाउन लागू करवाने के लिए कोऑपरेट करने की बात कहो तो पुलिस के सींग निकल आते हैं!

गरीबों की मदद के लिए पार्टी वालों के पास जाओ तो उनकी नानी मरने लगती है!" बोलकर शायनी ने कार का शीशा गिराकर बाहर थूक दिया; बेचैनी कम तो हुई, चित्त शांत न हुआ।

"तुम बता तो रही थी कोरोना वायरस पर लोकली ही रिसर्च कर सकती हो, इस लॉकडाउन में वही कर लो।" उसे निराशा के जाल से निकालने के लिए सहज ने कहा।

"अरे! हमारे हेड की तो हिम्मत ही जवाब दे गई, अपने बूते लैब परमिट करने में; इन सब झंझट से तो अच्छा है कि..." बोलते-बोलते शायनी की पलकें झुक गईं।

"हां, तो इससे अच्छा क्या है?" बात की कड़ी को आगे बढ़ाने की खातिर सहज ने दोहराया; वह समझ नहीं पाया आखिर बोलते-बोलते शायनी बीच में ही क्यों रुक गई।

"आगे से गाड़ी दाएं मोड़ना।" शायनी बोली तो उसकी छाती में अनियंत्रित उभार दिखने लगा।

"क्या!" कार दाएं मोड़ने की बात पर सहज अचकचा गया; उसने महसूस किया शायनी की हिरनी-सी आंखों में एक नई चंचलता तैरने लगी है।

"हां! हम लोग आज उजड़ा महल जा रहे हैं; कोरोना का मतलब यह नहीं होता कि मैं जीते जी मर जाऊं!" बोलकर वह सहज पर गड़ गई; उलाहना भरे अंदाज में कहने लगी, "कोरोना क्या आया हम दोनों भाई-बहन हो गए! अरे कभी मेरा भी ख्याल कर लिया होता कि मैं तुम्हारी गर्लफ्रेंड हूं, वो भी बिल्कुल बिंदास, बेदाग!" अब उसने अपना चेहरा सहज की तरफ से हटाकर खेत-खलिहान की तरफ कर लिया।

"देखो शायनी..." सहज ने सफाई देनी चाही।

"चुपचाप गाड़ी ड्राइव करते रहो, लाइक अ गुड बॉय; बाकी बातें बेगम महल में करेंगे!" शायनी की बातों से लगा आज की कमान उसने अपने हाथों में ले ली है।

उजड़ा महल में पहुंचकर भी दोनों चुप थे। शायनी की नजरें दूर-दूर तक गेहूं से खाली हुए खेतों में गड़ गईं। सहज बिल्कुल नहीं सोच पा रहा था, आखिर इस कोरोना काल में प्रेम की भाषा किस पेड़ से तोड़कर लाऊं! दूर आम बगीचे में नजर आ रहे आम पर उसने नजरें टिका दीं; ...पिछली दफा जब यहां आए थे बौर से आम के दाने निकलते दिख रहे थे, अब यहां से

भी नजर आ रहा है; इस एक महीने में ही इतना बड़ा हो गया!

"बगीचे में कोई चिड़िया ढूंढ़ रहे हो क्या?" एकटक दूर नजर गड़ाए सहज को घूरते हुए शायनी बोली।

"चिड़िया तो नहीं, वहां देखो बगीचे के आम को; पिछली बार जब हम लोग लौट रहे थे, तो आम के छोटे-छोटे दाने ही थे, खेत गेहूं की बालियों से लदे थे।" सहज ने शुष्क दर्शन बघारते हुए कहा।

"तुम्हें सब कुछ दिख रहा है पर चिड़िया क्यों नहीं दिख रही, वो देखो उस जोड़े को!" शायनी ने कहा, पाकर के पेड़ पर घोसला बनाते चिड़ियों को उंगली से दिखाती हुई; आगे किसी अदृश्य खुशी में खोती हुई बोलती गई, "जीवन के प्रति संवेदनाएं कितनी प्रखर हैं इन पक्षियों में, मानव से सदियों आगे! सच कहूं तो इन्हें निहारते हुए मेरे अंदर भी जीवन को जी भरकर जी लेने की चाहत जाग रही है।"

"तुम सच कह रही हो शायनी, चिड़ियों के जीवन से मानव को सीख लेनी चाहिए; आम के बढ़ते इन दानों को देखकर भी जीवन की गतिशीलता की झलक मिलती है...," सहज के बोलने के बीच ही शायनी उसका मजाक बनाते हुए बोली, "आम के दाने नहीं उसे टिकोले कहते हैं माय डियर बुद्धू! आम भी बड़े हो गए, लोगों के घर गेहूं से भर गए होंगे, पर तुम्हारे अंदर का प्यार छोटा पड़ता गया! क्यों?" महल में टूटी खिड़की के खंडहर पर बैठते हुए शायनी बोली। उसके चेहरे में रूमानियत की भंगिमाएं उगने लगीं; अंग-प्रत्यंग स्वरमय दिखने लगे।

"आज यह तुम्हें क्या हो गया है शायनी! क्या इतनी आसानी से तुमने अपने को वर्तमान परिदृश्य से अलग कर लिया है?" सहज आज की शायनी का ओर-छोर पकड़ना चाह रहा था।

"मैट्रिक के बाद मैंने इतिहास की पढ़ाई तो नहीं करी है," निर्जन जंगल की तरफ देखकर शायनी बोलती जा रही थी, "मानव इतिहास में इतने सारे उतार-चढ़ाव, उथल-पुथल आए, क्या नर-नारी ने प्रेम-पथ छोड़ दिया होगा!" आज के संघर्षभरे दिन में शायनी ने एक जटिल प्रश्न छोड़ दिया सहज के पौरुष के लिए।

"शायद नहीं; यदि ऐसा होता तो प्रेम, जो मनुष्य जाति को प्रकृति-प्रदत्त सबसे बड़ा उपहार है, अब तक धरती से विलुप्त हो गया होता!" अब प्रेम रस सहज के अंदर से भी रिसने लगा।

"लेकिन तुम्हारे अंदर का प्रेम तो एक महीने में ही, मृतप्राय तो नहीं कहूंगी, विलुप्तप्राय जरूर नजर आने लगा है!" सहज के चेहरे के नजदीक अपना चेहरा लाते हुए वह कहती गई, "वही प्रेम अमर होता है डियर जो मरुस्थल की यात्रा में भी जीने की ताकत दे!" अब वह सहज के कंधों को आजमाते हुए बोलने लगी, "क्या यह कोरोना इतनी बड़ी बला है कि हमारी-तुम्हारी जिंदगी का प्रेम-रस भी छीन ले! यदि ऐसा हो गया तो समझो कोरोना को हराकर भी हम हार जाएंगे! इतनी बड़ी कुर्बानी देकर ही हम कोरोना को हरा पाएंगे, फिर तो मानव जाति की मानवोचित धरोहर का खाता समझो शून्य हो जाएगा! इस कोरोना ने नर-नारी के जीवन-ताल में न जाने कितनी तो दीवारें खड़ी कर दी हैं!" अब सहज की ठुड्डी पकड़कर बोली, "और इस सौतन कोरोना ने पहला शिकार किया है मिस्टर सहज का?"

"यदि मैं सच कहूंगा तो तुम मुझे लंपट कहोगी," शायनी की कमर को हाथों के घेरे में लेकर सहज ने कहा।

"अच्छा! तो ऐसा कौन सा प्रेम-जाल तैयार कर डाला है तुमने?" शायनी उतावली हो उठी।

"बीते 'वैलेंटाइन डे' के बाद ऐसी एक भी रात नहीं बीती होगी, जब मैं तुम्हें पूर्ण रूप से पाने की चाहत के बिना सोया होऊंगा!" वह शायनी को जी भर कर देखे जा रहा था; उसे आज शायनी का प्रेयसी-रूप पंखधारी प्रतीत हो रहा था।

"फिर तुम्हें किसने रोक रखा था! यदि कोरोना महीनों-सालों लंबा खिंचता जाएगा तो मानव जाति प्रेम-ताल में डूबना भूल जाएगा?" बोलने के दरमियान शायनी की सांसें अनियंत्रित होने लगीं, "अभी की बेरंग दुनिया में प्रेम-पथ के उस अंतिम रूप-रस को जी भरकर जीना चाहती हूं सहज! उस पल को जीए बगैर मैं अब एक कदम भी नहीं बढ़ सकती इस नीरस जिंदगी में!"

"यह एक बड़ा सत्य है शायनी, मेरे डैड की शहर के धनवान व्यक्तियों में गिनती होती है; यदि मैं तुमसे ऐसा-वैसा कुछ कहता-करता तो शायद तुम्हें लगता बड़े घर का लड़का..." आगे वह बोल न पाया, उसकी आंखें स्वतः झुक गईं। शायनी ने उसकी ठुड्डी ऊपर उठा दी; उसके होंठ धीरे से खुले, "इतनी आजादी तो मैंने तुम्हें पहले से ही सुपुर्द कर रखी है सहज, तुम्हारी मर्जी उस आजादी को जब चाहो जी लो।"

"क्या! इस वक्त..." सहज आगे बोल न पाया; शायनी ने उसके होंठों

को अपने होंठों की गिरफ्त में ले लिया! होंठों के अल्प-विश्राम में सांसों में सवार सहज ने शायनी की आंखों से कहा, "मैं तो इस इंप्रेशन में था, तुम्हें यहां खुले में यह सब पसंद नहीं है।" शायनी के होंठों ने श्वास के लिए सुराग बनाया, कंपित स्वर बाहर आया, "बेगम महल के नीचे उस झुके छत के नीचे तुम्हारी नजर आज तक क्यों नहीं गई सहज!"

महल के नीचे ढलान पर आधे गिरे छत के नीचे गुफानुमा जगह, तिकोन बनाते हुए; एक-दूसरे को थामे एक मुकम्मल जहान! दोनों की आंखों से दुनिया तिरोहित होने लगी, तेजी से...

रामघाट का आसमान एकाएक कई एंबुलेंस के तेज सायरन से कांप उठा। दोनों ने तेज झटके महसूस किए, जैसे प्रेम के किसी बड़े शत्रु ने धावा बोल दिया हो! शहर की दिशा से एंबुलेंस का सायरन बढ़ता ही जा रहा था। शायनी के मोबाइल में ट्विंग की आवाज आई। उसने देखा, मंजरी का मैसेज था '...शायनी घर में ही बंद रहना, रामघाट में कोरोना का पहला केस आ गया है...!' मैसेज पर नजर गड़ाए ही दोनों कार की अगली सीट पर बैठ चुके थे। गाड़ी स्टार्ट होते ही सहज के मोबाइल में ब्रेकिंग न्यूज उगने लगा...रामघाट में कोरोना संक्रमण का पहला मामला सामने आया! शहर शंकराचार्य रामाधार जी महाराज के धर्म शास्त्रज्ञ पंडित सारस्वत कोरोना संक्रमण की चपेट में! 21 मार्च को इटली के पर्यटक को रामघाट तट पर भगवान रामचंद्रजी के यहां पधारने की कथा बांचने के दरमियान संक्रमण की चपेट में आए; पर्यटक एंटोलो मार्को दिल्ली लौटते ही 25 मार्च को कोरोना संक्रमित पाए गए थे, सारस्वतजी में 31 मार्च से ही कोरोना के सिम्टम्स देखे गए थे, पर अपनी कुटीर में ही कैद रहे...

अभी दोनों शहर के आउटर रोड पर ही पहुंचे थे; रामघाट के आसमान का दूसरा छोर एंबुलेंस और पुलिस गाड़ियों के सायरन से सिहर उठा। पहले वाले ब्रेकिंग न्यूज की जगह दूसरा ब्रेकिंग न्यूज मोबाइल स्क्रीन पर उगने लगा...रामघाट में कोरोना संक्रमण का दूसरा केस सामने आया! अकबरी मस्जिद के मुताल्वी अरमान अली कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं, दस दिन पहले निजामुद्दीन मरकज से लौटे थे; ...जिला अस्पताल में कोरोना संक्रमण के एक साथ दो-दो केस आ जाने से अफरा-तफरी! सारी व्यवस्था चरमराई, पुख्ता इंतजाम की पोल खुली...

गाड़ी आगे बढ़ाते हुए आज सहज के हाथ स्टीयरिंग पर कांप रहे थे;

पहली बार! शायनी की अतृप्त लिप्सा अंदर ही कहीं दुबक ली। सहज की पीठ पर हाथ धरकर उसने साहस बढ़ाया, "घर पहुंचने के रास्ते में कोई कोरोना नहीं है!" सहज के मुंह से अपने-आप निकला, "शायनी, मुझे लग रहा है यह कोरोना कहीं हमारी जिंदगी में न जम जाए?" फिर उसका हाथ थामकर कहा, "तुम्हें तो कोरोना पर जरूर रिसर्च करना चाहिए; इस वक्त कहीं बाहर जाना मुश्किल हो तो सर से बात कर फिलहाल गांधी इंटर कॉलेज की लैब में ही शुरुआत कर सकती हो।"

"आई विल!" बोलकर शायनी ने उसके हाथ मजबूती से थाम लिए; बोली, "मुझे भी तुम पर भरोसा है सहज, धनहीन लोगों के हित में किसी नई इकोनॉमिक थ्योरी पर काम करोगे; ऐसे संकट में गरीब परिवारों में पैसे-पानी के लाले पड़ना धिक्कारता है हमें!"

गांधी मार्ग मोड़ पर पहुंचते ही शायनी के मोबाइल में अहम का मैसेज चमक उठा, फिर अगले ही क्षण सहज के मोबाइल में भी '...रामघाट में कोरोना आ गया! प्रभु का प्रसाद समझकर स्वीकार कर लो, बस्ती में भोजन के पैकेट बंटवाने का इंतजाम भले न हो पाया हो, पर आगे कुछ लोग प्रभु-नाम की पुड़िया जरूर बांटेंगे!...ऑफकोर्स हमारी दृष्टि-क्षीणता की पोल तो खुल ही रही है दिन-ब-दिन; परंतु हमें अपनी गतिशीलता कतई नहीं छोड़नी चाहिए, वरना हमारा नव-अंकुरित अस्तित्व भी काल कवलित हो जाएगा! मेरे जेहन में एक बात रह-रह कर आ रही है, इंडिया सहित दुनिया के कुछ देशों को टारगेट करके ही चीन ने कोरोना को फैलाया है, आनेवाले वर्षों में चीन हमेशा कोई-न-कोई खेल खेलता ही रहेगा! अब तो चीन का कुछ...।' अहम का लंबा मैसेज पढ़ना छोड़कर सहज ने कार की गति बढ़ा दी। रामघाट तीरे से आ रही आवाज...सुर दुंदुभिं बजावहिं हरषहिं, अस्तुति करहिं सुमन बहु बरषहिं...अचानक बंद हो गई।

अम्बेडकर चौक पर तेजी से टर्न लेते हुए में भी शायनी के कानों में भीमरवा का ऐलानिया शोर पड़ रहा था...सम्राटों का सम्राट-बादशाहों का बादशाह...बर्बादी का बादशाह!...देख तमाशा!

बस्ती से बाहर निकलते ही स्लम एरिया से कोई पुकार-सी सुनाई पड़ रही थी...ओ मेरे मूर्ति महान! अब तो आ जा तुझमें प्राण, भारत को दे नव-जीवन का दान...

खंड–दो

अध्याय एक

1

8 अप्रैल, 2020; आज तड़के सुबह कोरोना-कैबिनेट की वर्चुअल बैठक रखनी पड़ी थी, अचानक। रामू के दिल्ली से रामघाट पैदल-प्रयाण के मुद्दे पर। इस कैबिनेट में कोई प्रधानमंत्री नहीं होता है; परवेज को ही अध्यक्षता करनी थी। सहज की पहल पर सभी साथियों ने 'ओके' मैसेज सेंड कर दिया था, ब्रह्म-वेला में ही; रामू ने भी। लिंक मिलते ही सभी फटाफट कनेक्ट होते गए थे; निर्धारित समय सुबह साढ़े पाँच बजे से पूर्व ही।

'...सभी साथियों को राम-राम, आदाब-अर्ज, सत श्री अकाल, गुड मॉर्निंग! यूं तो आज की मीटिंग चेयर करने की जिम्मेदारी सहज ने मुझे दी है, चूंकि पहल सहज ने की है, पटल पर बात वे खुद रखें', ठीक साढ़े पाँच बजे परवेज की आवाज सभी की स्क्रीन पर तैरने लगी।

"...हम सभी को पता है..." सहज बोलने लगा, अपने स्वभाव के विपरीत गंभीर स्वर में, "कोरोना वायरस को देश में आने से रोकने को हम सभी शुरू से ही हाथ-पैर मारते रहे हैं, इस अभियान में रामू ने तो फरवरी से ही एड़ी-चोटी एक कर दी थी..." आगे उसकी आवाज भर्राने लगी, "इंडिया में कोरोना को पच्चीस के आंकड़े पर ही पटकनी देने की खातिर उसने दिल्ली की दौड़ लगा दी, अब..." आगे वह बोल ना पाया।

"...सहज आप कृपया इतना भावुक ना होवें, हम सभी रामू के जज्बे को सलाम करते हैं।" वार्ता-विमर्श को अखंडित रखते हुए परवेज बोलता गया, "देश में कोरोना संक्रमण को सीज कराने की खातिर रामू ने रामघाट में, फिर दिल्ली में क्या-क्या पापड़ नहीं बेले हैं! पर संक्रमण तो पूरे देश में फैलता ही जा रहा है, रुकने का नाम ही नहीं ले रहा! कोरोना से रामघाट

अब तक अछूता था, तो रामघाट में कोरोना की एंट्री रोकने की खातिर वह परसों दिल्ली से निकल पड़ा, पैदल ही!!" 'पैदल' शब्द पर आकर परवेज का भी गला भर आया।

"...इसलिए वर्चुअल बैठक रखने का सुझाव दिया था मैंने, हड़बड़ी में ही," आगे बोलने के लिए सहज संयमित कर चुका था अपने को, "अब जब कल से रामघाट भी कोरोना वायरस की जद में आ गया है, तो मेरे अंदर से आवाज उठ रही है कि रामू को रोको, सैकड़ों मील पैदल चलकर रामघाट आना आसान है क्या!..." उसकी आवाज में कंपन सवार होने लगी।

"...बीच में बोलने के लिए माफी चाहती हूं..." शायनी की मधुर आवाज की धार से गमगीन माहौल का भारीपन छंटने लगा, "परवेज और सहज की बातों से सभी सहमत हैं, रामू के जज्बात की हम सभी कद्र करते हैं; रामघाट को कोरोना वायरस की चपेट में आने से बचाने की खातिर ही वह दिल्ली से पैदल कूच कर गया था, पर जब रामघाट में भी कोरोना ने इंट्री मार ही ली है, फिर तो इतनी लंबी और कष्टसाध्य यात्रा को तुरंत रोक देना चाहिए।"

"...हां राम भाई आप सुन रहे हैं न, सभी साथियों का मत है कि आप अपनी पैदल यात्रा पर आगे ना बढ़ें।" अब परवेज की स्वर-ग्रंथि साफ हो चली; अपने अजीज मित्र के लिए याचनापूर्ण आवाज निकालने की खातिर।

"...सुन रहा हूं; और समझ भी रहा हूं।" लंबी सांस लेते हुए रामू की आवाज थी, "मैं सचमुच भाग्यशाली हूं, मित्रगणों को मेरी इतनी फिक्र है; नेक ख्याली के लिए आप सभी का तहे दिल से शुक्रिया," आगे आवाज सीधी चढ़ाई चढ़ती-सी आई, "लेकिन यह यात्रा अब नहीं रुक सकती।"

"...सो क्यों..." ब्वॉयफ्रेंड की दशा पर अपनी बेचैनी बमुश्किल काबू में रख पाई थी मंजरी।

"...रामघाट में कोरोना के पंजे फैलते जाने से रामघाट को हमारी सेवा की सख्त जरूरत है।" रामू का स्वर संकल्पपूर्ण हो चला।

"...पर इसके लिए हम सब तो हैं यहां रामघाट में!" स्क्रीन पर शुरू से ही मनोज का शांत चेहरा एकाएक मुखर हो उठा।

"...लेकिन रामघाट को सेवा देने के मौके से मैं पीछे नहीं रहना चाहता।" वह अडिग था।

"...प्लीज रामू! मित्रों की बात कभी-कभी मान लिया करो न!" मंजरी द्रवित हो उठी।

"...तुम्हें मंजरी की इच्छा का सम्मान करना चाहिए।" दिनेश ने अपने लंगोटिया यार की नस दबानी चाही।

"...मंजरी डार्लिंग! तुम्हारा कहना सही है, पर मेरे कारवां में सैंतालीस लोग साथ चल रहे हैं, मैं उन्हें मंझधार में नहीं छोड़ सकता," उसने समूह-निष्ठा का तीर चला दिया। स्क्रीन पर सन्नाटा पसर गया। स्क्रीन के सभी चेहरे एक-दूसरे को देखते नजर आने लगे। अहम ने चुप्पी तोड़ी, "...लगता है मेरे अस्तित्ववाद वाले पाठ को रामू ने अपने कतरे-कतरे में समा लिया है; पर तुम्हारी यह जिद कुछ ज्यादा नहीं है रामू?" रामू को रोकने का अंतिम प्रयास था; अहम के दर्शन-दंड से।

"...अहम भैया, इसे आप अस्तित्ववाद के पाठ का असर कहें या रामघाट की मिट्टी का जुनून, यह सच है कि मैं इस धरती में एक निर्जीव वस्तु, जिसे आपकी थ्योरी 'ऑब्जेक्ट' कहती है, बनकर नहीं जी सकता।" रामू की आवाज से लगा कोरोना-काल में वह रामघाट में कुछ करने के लिए उतावला है। अब किसी के पास बोलने-समझाने के लिए कुछ नहीं बचा था। परवेज ने आज की वीसी का समापन किया, "...राम भाई, कोरोना-कैबिनेट की यह बैठक हम लोगों ने तुम्हारी सलामती के लिए रखी थी; तुम अपने फैसले पर अडिग हो, तो अपना और साथ चल रहे प्रवासियों का ख्याल रखना, रुक-रुक कर चलना, यदि रास्ते में किसी बस-ट्रक का जुगाड़ हो जाए तो चूकना मत, हम लोग ऑनलाइन पेमेंट कर देंगे।"

"...शुक्रिया दोस्तों।" रामू के बोलते ही उसका चेहरा उगते सूरज की लालिमा से दमक उठा था।

2

गठरी-कथरी उठाए लोगों का कारवां दस दिनों से दिल्ली से भागा जा रहा था, बे-नाप गंतव्य की दिशा में; पैदल ही! लग रहा था जैसे देश की जनता ने दिल्ली को दिल से निकाल दिया हो। कांटेदार-कोरोना से डरी-सहमी जनता का दम दिल्ली में घुटने लगा था; राजा और प्रजा का भेद-विभेद चरम पर पहुँचने लगा था। हर दिल में होड़ मची थी, अपने मुकम्मल ठिकाने पर रोटी-पानी पाने की। कोरोना-मृत्यु को अवश्यंभावी मानकर अपनी देहरी पर ही दम तोड़ने की उमंग-ऊर्जा से आवेशित मन-मस्तिष्क; कच्चे-पक्के रास्तों पर बेलगाम भागते पैर!

8 अप्रैल, 2020; पूरब दिशा में भोरकावो तारा उगते-उगते निजामुद्दीन ब्रिज की तलहटी आज भी खाली हो गई; सैंतालिस प्रवासियों का कारवां लालवर्णी आकाश की दिशा में कूच कर गया। एनएच चौबीस के हर मोड़ पर पुलिस का पहरा था, लॉकडाउन के पहरुए की तरह। समूह सैंतालिस सड़क के नीचे-नीचे ही बढ़ता गया, ऊबड़-खाबड़ रास्तों को ही जीवन मार्ग मानकर। छंटते जा रहे अंधेरे में उन्हें सुकूनदायक दृश्य दिखा; दाएं-बाएं काफी लोग गठरी-पोटली उठाए पूरब की ओर बढ़े जा रहे थे! फिर तो उनके उत्साह-स्नायु पैरों से आ जुड़े। तनकर खड़ी खाली सड़कों के बजाय नीचे पैदल मार्च कर रही मानव-शृंखला! जैसे मनमर्जी की किलेबंदी को ढहाकर जन-जन निकल पड़ी हो स्वाधीन सभ्यता के निर्माण पथ पर! हापुड़ मोड़ पर पुलिसवालों ने छंटते अंधेरे में ही डंडा फटकारना शुरू कर दिया था; पैदल पथिकों ने गेहूं-चने से खाली हुए खेतों को ही राजमार्ग मान लिया। संस्कार का लिहाज इतना कि सामने आते गांव-मोहल्ले को नमस्कार-प्रणाम करना ना भूलते। समूह सैंतालिस की खुशी का ठिकाना न रहा, जब जीटी रोड़ पर पैर पड़ते ही पूरब के आसमान में सूरज का बड़ा गोला मुस्कुराता दिखा; जैसे दूर कहीं उनके घरों के ऊपर से सभी का अभिनंदन कर रहा हो! सुदूर पूर्व में सूरज का लाल गोला देखकर उनका उत्साह दुगुना हो उठा; उनके घर की छत पर से सूरज उन्हें रास्ता जो दिखा रहा था! जीटी रोड़ पर ही रामू ने कोरोना-कैबिनेट की बैठक में साथियों को समझा लिया था, खड़े-खड़े।

जीटी रोड़ पर इकट्ठा होते ही समूह सैंतालिस के चेहरे खिल उठे, जैसे मंजिल की सीढ़ी पर पैर धर दिए हों। चारों ओर फसलों से खाली हुए खेत-खलिहान उन्हें अपने गाँव-घर-बस्ती जैसे दिखने लगे। रामना ने फिर से समूह की गिनती पूरी की...एक-दो-तीन-चार-पांच...सैंतालिस! सभी को ऊंची आवाज में सुनाया, "सैंतालिस! पूरे हैं।" शब्द 'सैंतालिस' ने रामू को फिर से तरंगित कर दिया, "यदि हमारे रामघाटवाले दार्शनिक बाबू यहां होते तो कहते, सन् सैंतालिस में देश अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ था, हम सैंतालिस आज अपने दम पर अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहे हैं, आजाद भारत की एकांगी व्यवस्था से आजाद होकर।"

एक जरूरी जानकारी जुटाने की खातिर रामना ने कहा, "इन सैंतालिस लोगों में कितने लोग किस शहर के हैं यह जान लेना भी जरूरी है; रामघाट के जितने लोग हैं एक हाथ उठावें; दो हाथ नहीं, नहीं तो गिनती सैंतालिस

से आगे भाग जाएगी!" बोलकर रामना ने उठे हाथों की गिनती की, "तो रामघाट के कुल उन्नीस लोग हैं; अब पूर्णिया-दरभंगा और आसपास के जिलों के लोग एक-एक हाथ उठा लें...कुल पंद्रह; पटना-गया और उसके अगल-बगल के जिलों के लोग हाथ उठावें...कुल नौ; बाकी चार लोग कहां से हैं?" '...हमनीं क दोनो जनीं देवरिया के होंई..., ...हम द्वे जने प्रतापगढ़ जाईक हे...' समूह के पीछे से आवाज आई। समय सीमित और संसाधन संकुचित आंककर रामू ने अपना दायां हाथ उठाकर कहा, "अब यहां ज्यादा देर रुकना ठीक नहीं है," फिर हौसला बढ़ाते हुए बोला, "सूरज और धरती के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए हम बढ़ते चलेंगे, हमारे पहले दिन का टारगेट है तीस-पैंतीस किलोमीटर पार कर लेना।" तब समूह सैंतालिस हाथों से धरती को स्पर्श कर ललाट में अमिट लकीर-सी बनाता गया। '...जय भवानी...या परवरदिगार... शोर के साथ सभी के कदम जीटी रोड़ को नापने लगे!

रामू के अंदर जोश संभले नहीं संभल रहा था; उसने आज शायराना अंदाज में मैसेज भेजा मंजरी को...रामघाट को कोरोना से बचाना है, तुमको पाना है, फिर तो पैदल ही आना है...

सभी ने कदम बढ़ा दिए; उनके कदम बढ़ते गए। पूरी तरह से खाली सड़क कुछ ज्यादा ही चौड़ी दिख रही थी। ऐसी सड़कें कभी दिखी न थीं; सामने दूर क्षितिज में विलीन होती डरावनी सड़क! उनके अंदर सिहरन-सी उठने लगी, जैसे किसी दैत्य के मुंह पर पैर धर रहे हों। हां, विशाल दैत्य! सामने दूर तक लेटा हुआ, मीलों तक पूँछ-पैर पसारे! दूर तक सड़क में कोई मोड़ नहीं था; दसवीं-बारहवीं पास अंकिता, प्रणव, मुजीब-जैसों को लग रहा था जैसे सड़क किसी ब्लैक होल में समा रही हो!

"गे माय! नय जै सकब!" पूर्णिया वाले सत्तन की माँ की चीख निकल पड़ी; उन्हें लगा यह सड़क कोई बड़ा राक्षस है और वह इसके पेट में खुद-ब-खुद समाने जा रही है। कारवां से बिदककर वह किनारे हो ली, पतझड़ की मार झेल रहे नंगे पेड़ के नीचे। उनकी चीत्कार से पूरा कारवां ठिठक गया।

"माँ, तुम हिम्मत मत हारो, इतने लोग तो साथ जा रहे हैं!" सत्तन ने समझाया। माँ के होंठ ना खुले; सिर्फ सर हिला, हिम्मत हार देने के संकेत के साथ।

"तुम्हारे कारण इतने लोगों को यहां चढ़ती धूप में रुकना पड़ेगा माँ; जरा

सोचो तो, यह भले आदमी वाली बात नहीं हुई न!" सत्तन ने संगी-साथी का वास्ता दिया, माँ का मन जगाने की खातिर।

"रे बबुआ, हअम एएक दिन से जियादा नै चैल सकब!" माँ ने मुंडी उठाई।

"अच्छा माँजी, आप एक दिन ही चलिए, कल से कोई इंतजाम हो जाएगा आपके लिए।" आगे बढ़कर माँ के कंधे पर हाथ धरते हुए रामू ने कहा।

"रे बेटा, सवारी का इंतजाम हो जाएगा?" रामू की ओर अपेक्षामुखी माँ की कातर आवाज थी।

"हां माँजी, हो जाएगा।" रामू के बोलने का लय सांत्वना-संपुष्टि-जैसा था।

"पक्का ना रे बेटा?"

"हां माँजी, पक्का।" रामू ने जोर देकर कहा; उसे लगा उसकी आवाज तो किसी नेता जैसी हुई जा रही है। उसने सत्तन की ओर संकेत किया; सत्तन के सहारे माँ सड़क पर आ गई। सभी के कदम दोबारा बढ़ते ही रामना ने रामू के कान में बुदबुदाया, "आपने तो किसी मंत्री-मुख्यमंत्री की तरह बिचारी बड़की माँ को विश्वास में ले लिया; नेतानगरी की तरह कहीं यह भी आश्वासन की गोली तो नहीं है?"

"अरे रामना, शाम तक हम लोग बुलंदशहर के आसपास पहुंच जाएंगे; भुवन की बदौलत वहां किसी पार्टी वालों को पकड़ेंगे! कहीं कोई चलती बस-ट्रक दिख जाए तो पार्टी वाले बैठा देंगे।" रामू ने बेफिक्री से कहा, भुवन की पार्टी के भरोसे। वह फिर से सबसे आगे हो लिया; उसे पता था उसी की ललकार पर समूह सैंतालिस दुनिया लांघने निकल पड़ा है।

समूह के अधेड़, युवा-युवतियों, किशोर-किशोरियों की निगाहें मोबाइल पर पड़ी रहती थीं, चलने के दौरान भी; शायद कोरोना के भय से या फिर कोरोना की खोज में। स्वाभाविक ही सभी को चारों तरफ कोरोना ही कोरोना नजर आने लगे थे। मोबाइल-मशक्कत का प्रभाव कारवां की चाल पर भी पड़ता दिख रहा था। कोरोना के ऐसे भयंकर दौर में किसी मोबाइलधारी को कुछ कहते तो नहीं बना रामू को, खुद अपने मोबाइल की याद आई; सुबह मंजरी को मैसेज भेजने के बाद उसका ध्यान मोबाइल की तरफ गया ही नहीं था! मंजरी के मैसेज पर नजर पड़ते ही उसने अपनी कनपटी ठोक ली, '...मैसेज आए हुए तो दो घंटे से ऊपर हो चुके हैं!' वह मन-ही-मन झुंझला उठा, आखिर हर पांच-दस मिनट पर मैसेज चेक करते रहने की आदत क्यों नहीं बन पा रही है उसकी?

'...तुम अपने साथियों के साथ पैदल आने की सोच रहे हो! पागल हो गए हो क्या? तुम्हें कुछ पता भी है दिल्ली से रामघाट आने में कितने दिन लगेंगे! तुम्हें तो शायद यह भी ठीक से पता नहीं होगा दिल्ली से रामघाट की दूरी क्या है? मुझे लग रहा है दुनियादारी से तुम दूर ही सोचते हो; मैं भी तुम्हारी सोच और सच्चाई की कायल हूँ, लेकिन तुम अपनी धारणा के प्रति जल्दी ही जुनूनी हो जाते हो। प्रधानमंत्रीजी ने सोच-समझकर ही तो सभी को अपने-अपने घरों-ठौर-ठिकानों पर रुकने की सलाह दी होगी। वैसे समाचारों में लगातार आ रहा है लाखों लोग दिल्ली, मुंबई और बड़े-बड़े शहरों से अपने-अपने घरों के लिए पैदल ही निकल पड़े हैं; मेरे हिसाब से पैदल चल रहे लोगों का यह जनसैलाब सरकार के सामने परेशानी ही खड़ी करेगा। बेहतर होगा तुम अपने साथियों के साथ ठंडे दिमाग से सलाह-मशवरा कर लो, उसके बाद ही वहीं कहीं कुछ दिनों के लिए रुक जाने या फिर साधन-सवारी मिलने पर आगे बढ़ने का विवेकपूर्ण निर्णय लेना...' मंजरी का यह मैसेज आठ बजकर दो मिनट पर आया था। आठ पांच पर आया उसका मैसेज काफी लंबा था '...और हां, असली बात तो बताना भूल ही गई! आज रामघाट में पूरा सन्नाटा पसरा हुआ है। परसों दो, कल तीन कोरोना संक्रमित आने के बाद पुलिस ने जिला अस्पताल की जबरदस्त घेराबंदी कर दी है; समझो रामघाट में असली लॉकडाउन तो अब लागू हुआ है! सभी लोग अपने-अपने घरों में दुबक लिए हैं, शायद ही किसी घर के दरवाजे-खिड़कियां खुली मिलें! सड़कों-गलियों पर कुत्तों ने अपना राजपाट खड़ा कर लिया है, रात में कुत्तों के अनिष्टकारी ढब-ढर्रे वाली रुलाई से शहर का माहौल डरावना होता जा रहा है! कल से एंबुलेंस और पुलिस की गाड़ियों के सायरन से पूरा शहर जब-तब दहल उठता है। हां, एक बात जरूर नोट कर रही हूं, अपनी बस्ती में पहली बार चिड़ियों की इतनी सुरीली चहचहाहट सुनाई पड़ रही है; तब तुम्हारी याद मुझे परेशान कर डालती है। यदि बात करना संभव ना हो तो बीच-बीच में मैसेज ही डाल दिया करना, प्लीज; हां, पैदल चलने पर फिर से विचार कर लेना! गुड डे...'

जवाबी मैसेज लिखने के लिए रामू के दिमाग में जल्दी में शब्द नहीं बन पा रहे थे; चलते-चलते ही उसने इतना भर सेंट कर दिया '...गुड डे, लव यू।'

दोपहर बाद रामू ने समूह सैंतालिस को अंधेरे के खौफ से आगाह कराया। विमुखी सूरज का सहारा पाकर कारवां की रफ्तार बढ़ती गई, अधोगामी सूरज

की गति से होड़ लेते हुए। सत्तन की माँ द्वारा दिए शुरुआती झटकों से उबरते हुए समूह में एक किस्म का जुनून तैरने लगा; शाम तक बुलंदशहर के आसपास पहुंचने का जुनून! अंधेरा होते-होते कारवां तो बुलंदशहर की सीमा पार कर चुका था! पहले दिन की पैदल यात्रा की कामयाबी पर रामू खुद हतप्रभ था; उसके अंदर मन-मंथन होने लगा...जन-जन में तो नीति-नियंता से एक कदम आगे चलने की ताकत होती है! बुलंदशहर जिले की सीमा पर भी पुलिस थी, पर दिल्ली-यूपी बॉर्डर की तरह ना तो बेरिकेडिंग और ना ही रोक-टोक। जिले की सीमा पर सामाजिक सेवादल सड़क पर चलते लोगों को भोजन के पैकेट थमा रहे थे। शाम के लिए भोजन की व्यवस्था उनकी असली मुसीबत थी, हाथों में भोजन के पैकेट आते ही समूह की जान में जान आई।

"यहां पार्टी के जिला अध्यक्ष या संगठन मंत्री का मोबाइल नंबर देने का कष्ट करेंगे आप, प्लीज।" सीमा पर पार्टी कार्यकर्ता-सा दिखने वाले एक व्यक्ति से भुवन ने आग्रह किया।

"आप अपना परिचय देने का कष्ट करेंगे!" सामने वाले ने सज्जनता की मूर्ति बनते हुए कहा।

"जी, मैं दिल्ली शाहदरा में पार्टी के युवा प्रकोष्ठ से जुड़ा हूं; हमारे साथ चल रही इस माताजी को पार्टी के हेल्प की जरूरत आ पड़ी है, इसी संबंध में बात करनी है।" भुवन ने विनयपूर्वक कहा।

"नंबर लेने के लिए आप ले लीजिए पर कोरोना संकट के समय शायद ही कोई फोन उठाएं, वैसे मेरे लायक कोई काम हो तो बताइए।" सज्जन ने साफगोई से कहा।

"यह माताजी आगे पैदल नहीं चल पाएंगी, यदि कृपा करके किसी ट्रक या बस में बिठा देते, बिहार में पूर्णिया जाना है।" माताजी के लिए भुवन भावुक हो उठा; पार्टी के भरोसे।

"पूर्णियायाआअअ!" पूर्णिया पैदल जाने का नाम सुनते ही सज्जन के विस्मय का ओर-छोर न रहा, आगे बोले, "अरे भाई साहब, नक्शे में पूर्णिया इतना तो दूर दिखता है, जैसे देश से काफी दूर हो; वहां तक पैदल जाना बच्चों का खेल थोड़ी न है!" भुवन के पास खिसकते हुए कहा सज्जन ने।

"हम रामघाटवाले तो सप्ताह-दस दिन में पार-घाट पा लेंगे, लेकिन पूर्णिया वालों को किसी सवारी में बिठाना जरूरी है।" रामू ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

"सुनो छोटे भाई साहब!" रामू की तरफ एक नजर देखकर सज्जन ने भुवन से कहा, "आप पार्टी से जुड़े हो, आपको तो पता होना चाहिए पार्टी मुख्यालय ने क्या निर्देश दिए हैं! हर गांव-शहर में जो आदमी जहां है उसे वहीं रोके रखना है, नहीं तो पार्टी की साख गिरेगी।"

"तो पार्टी की साख बढ़ाने के लिए आप हमें रोक रहे हैं!" रामू ने छूटते हुए कहा; सज्जन की भौंहें चढ़ गईं, कि यह किस पार्टी का है! भुवन ने समझदारी दिखाई, "यह भी रामघाट का है, बस्ती एरिया से; ये अभी किसी पार्टी से नहीं जुड़ा है।"

"हां श्रीमान, हम बुलंदशहर पार्टी इकाई वाले आप लोगों को नहीं रोक रहे हैं, पर कल की शुभ यात्रा पर निकलते ही आपको मालूम पड़ जाएगा क्या कारण है!" आगे की यात्रा की ओर दूर तलक आंखें उठाते हुए सज्जन ने रामू से कहा। उसकी आंखों की भाषा संकेत कर रही थी आगे की यात्रा निरापद नहीं रहने वाली है। समूह सौ मीटर आगे जाकर झुंड के रूप में सिमटकर थम-सा गया था; भुवन और रामू ने चाल तेज कर दी, सज्जन की ओर हाथ से सलामी देते हुए।

सूरज में लालिमा चढ़ते ही उन सभी की आंखें एक मुकम्मल आशियाना खोजती फिर रही थीं। बुलंदशहर सीमा से कोई आधा घंटा चलने के बाद सभी की आंखों में खुशी की लहर तैर गई; बाएं हाथ में उन्हें अचानक एक भवन दिख गया! सभी ने एक-दूसरे को देखा; सभी आंखों में सब कुछ पा लेने जैसी खुशी उतर आई। उस इमारत की तरफ बढ़ते हुए उनके कदमों की चाल बता रही थी जैसे उन्हें एकदिनी इंद्रमहल मिल गया हो! भवन के छज्जे के ऊपर राजकीय प्राथमिक विद्यालय...मारपुर लिखा था; मार के आगे के दो या तीन अक्षर तारकोल से पुते हुए थे। जिनकी भी नजर मारपुर शब्द पर पड़ी वे सहम गए, कहीं रात में ही न वे सभी लुट-पिट जाएं! वह दो मंजिला भवन था, चार कमरे नीचे, चार ऊपर। दूर से भले ही इंद्रमहल-सा दिखता हो पर सभी कमरे जर्जर स्थिति में थे; दो कमरे बिना दरवाजे-खिड़की के थे, एक में ताले पड़े थे। समूह के सामूहिक अंदेशे को भांपते हुए रामू ने कहा, "डरने की कोई बात नहीं है, हौसला सबसे बड़ी संपत्ति होती है!" तब कमरों में बिस्तर-बिछावन फैलाने-पसारने की होड़ मच गई। बरामदे-कमरे-कैंपस पर गौर करने से दिखता था जैसे प्रधानमंत्री के वर्तमान लॉकडाउन से महीनों-वर्षों पहले से ही विद्यालय में लॉकडाउन चला आ रहा था।

जगह पर जमने का कोलाहल थमते ही रामू की नजर बरामदे की दीवार पर विद्यालय भवन के लोकार्पण पत्थर पर गड़ गई; भवन का उद्घाटन तीन-चार साल पहले ही हुआ था! पत्थर में शिक्षा मंत्री-एमएलए-एमपी के नाम सही-सलामत मौजूद थे, अपना शक्ति-संदेश देते हुए। रामू की नजर जर्जर भवन पर फिसल गई; पत्थर में खुदे नामों को उच्चारण के साथ पढ़ना रामू को अपराध-सा लगा। उद्घाटन पत्थर पर नजर गड़ाए रामू पर भुवन की नजर पड़ी; पीछे से चुहलबाजी के अंदाज में कहा, "अच्छा! तभी तो तुम्हें भी नेता बनने का नशा चढ़ने लगा है!" उससे विमुख होते हुए रामू बोलता गया, "मैं नेता बनूंगा तो आजकल के जैसा नहीं, भले ही एक जन्म इंतजार करना पड़े!"

भोजन का इंतजाम, यानी गरीबों-मजदूरों की जीवन के सबसे बड़े झंझट से मुक्ति! सीमा पर मिले पॉकेट-भोज्य का उपभोग कर सभी ने पेट से पार पा लिया था, आज भर के लिए। ऐसी खुली जगह में कोई भी निडर होकर सो नहीं सकता। विद्यालय परिसर में पसरे डरावने सन्नाटे ने भुवन-रामू-अंकित-रामना-इसरार और उनके साथियों की धड़कनें बढ़ा दीं; सबसे नजदीक का गांव एक-डेढ़ किलोमीटर दूर प्रतीत हो रहा था, अंधेरे में एक-दो बिजली बत्ती के सहारे सांसें गिनते हुए। भुवन पार्टी से जुड़ा था, स्वयं को नेता जैसा अनुभव करता था; स्वाभाविक ही उसके अंदर भय कुछ ज्यादा ही समाया रहता! रामू से चर्चा कर चारों दिशाओं में तीन-तीन लड़कों की टोली लगा दी गई। बारह नौजवानों की मजबूत पहरेदारी देख पूरा समूह जल्दी ही खर्राटे भरने लगा, खुली हवादार जगह पाकर।

"भुवन भैया, आज तो माताजी थककर सो गई हैं, कल क्या होगा? सुबह जागते ही पूछेगी बस-ट्रक कहां है!" कमरे के बाहर बरामदे में अधलेटे रामू ने स्पष्ट कर लेना जरूरी समझा।

"अरे यार बोलने के लिए मैंने बोल दिया था, पर पूरे जीटी रोड़ पर कोई बस-ट्रक दिखा क्या दिनभर में! मुझे तो बुलंदशहर पार्टी इकाई पर भरोसा था; तुमने खुद सुना न, सब-के-सब लाट साहब बने बैठे हैं घर पर; आखिर अकेले प्रधानमंत्री के वश में है क्या पूरे देश में सब कुछ खुद ही देखना?..." भुवन सफाई देने के अंदाज में बोलता जा रहा था। ऐसे विकट समय में रामू ने अपने को तर्क-वितर्क से दूर रखा।

"फिर?" रामू ने लंबी सांस लेकर कहा; डरावनी होती जा रही रात में

एक शब्द ही हथौड़ा पड़ने जैसा था।

"आगे जिला अलीगढ़ हाथरस है, कोई पार्टी वाला टकराएगा तो अनुनय-विनय करूंगा सहयोग के लिए।" संशयपूर्ण सन्नाटे में भुवन आशावान बना रहना चाहता था।

"अभी माताजी का मामला सुलझा भी नहीं है एक और नई मुसीबत आ गई!" बरामदे के किनारे पहरेदारी पर बैठे रामना ने रात्रि को रहस्यपूर्ण बना दिया।

"कौन-सी मुसीबत?" रामू की अधीरता बढ़ती गई; सब को सही-सलामत लेकर बढ़ते रहने की जिम्मेदारी जागती रहती थी उसके अंदर।

"पूर्णिया का हमारा एक साथी पंकज डायबिटीज का पुराना पेशेंट है; कई सालों से पूर्णिया में इलाज कराते-कराते थक गया, वहां के सभी डॉक्टरों ने तो समझिए इसे लूट लिया! पंद्रह दिन पहले दिल्ली आया था एमपी साहब के सहारे एम्स में दिखाने के लिए, लेकिन एमपी साहब ने ही धोखा दे दिया! बेचारा दिखा भी नहीं पाया और उल्टे फंस गया लॉकडाउन में! अभी शाम को बोल रहा था, दो दिन से ज्यादा पैदल नहीं चल पाएगा।" रामना ने सामान्य ढंग से बात सामने रख दी।

"अरे, फिर तो बड़ी मुसीबत आ जाएगी!" रामू ने चौंकते हुए कहा।

"तुम्हारे ललकारने पर ही तो सबने दिल्ली त्याग किया है; दिल्ली भला त्यागने की चीज है!" नाराजगी भरे अंदाज में भुवन ने कहा।

"इसमें ललकारने वाली क्या बात है; घर जाने के लिए व्याकुल हजारों-लाखों लोग निकल तो पड़े हैं दिल्ली से! वहां जमुना किनारे लोगों के लिए सरकार ने कोई टेंट-फेंट का इंतजाम कर रखा था क्या!" रामू ने खिन्न होकर कहा।

"अरे यार! हर बात में तुम सरकार को बीच में घसीट लाते हो, आखिर जनता के भी खुद के कुछ कर्तव्य हैं कि नहीं?" हाई स्कूल में पढ़े नागरिक कर्तव्य की एक धुंधली किरण कौंध गई भुवन की स्मृति में।

"चारों तरफ जनता खुद ही पैदल चल तो रही है अपने पैरों से, सरकार ने कोई पैर मशीन बांट रखी है क्या गरीबों-मजदूरों के लिए!" बोलते-बोलते रामू की आवाज ऊंची होने लगी; कमरे में सोए साथियों का भान होने पर वह बरामदे से नीचे आ गया, भुवन को सुनाकर संयमित स्वर में बोलने लगा, "मैं पूछता हूं सरकार ने चौदह अप्रैल तक लॉकडाउन कर दिया है, तो क्या

अब बीच में ट्रेन-बस चालू करवा सकती है! नहीं न? ठीक वैसे ही, हम लोग दिल्ली छोड़कर घर की दिशा में निकल पड़े हैं तो क्या दिल्ली वापस जा सकते हैं? या इसी भुतहा जगह पर चौदह अप्रैल तक भूत-बुत बनकर पड़े रह सकते है? हां, यदि यहां के पंच-प्रधान सात दिन का भोजन-पानी का इंतजाम कर दें सैंतालिस लोगों के लिए तो रुक जाएंगे; बोलो क्या ख्याल है आपका?"

"अभी इन बातों को रहने दीजिए भैया, कल सुबह सोचा जाएगा; अभी आप लोग भी बारी-बारी से सो जाइए।" रामना ने समझदारी दिखाते हुए कहा।

ऐसे डरावने सन्नाटे में रामू अंदर से और भी अशांत हो उठा; मंजरी से मंद आवाज में बात कर लेना उसे उचित जान पड़ा। दो-तीन रिंग जाते ही मंजरी का मंद स्वर मोबाइल में गूंज उठा, "...सुबह वाली बैठक के बाद तुमने दोबारा बात ही नहीं की? और मैसेज करना भी भूल गए! यहां पूरा शहर डरकर सो गया जान पड़ रहा है। प्रशासन काफी सख्ती दिखा रहा है। शहर के कुछ मोहल्लों को कंटेनमेंट जोन घोषित कर दिया है, पता चला है कल से पूरे शहर को रेड, ऑरेंज और ग्रीन जोन में बाँटा जाएगा; अफवाह तो यह भी है कहीं पूरे रामघाट को ही न कंटेनमेंट जोन घोषित कर दिया जाए! आज तो मैं तुम्हारे घर पर ही रुक गई हूं, माँ को ऐसे खतरनाक समय में अकेली नहीं छोड़ सकती थी। प्रशासन ने सबसे ज्यादा सख्ती बस्ती में ही कर रखी है, यहां पुलिस की नाकेबंदी है; यहां के बच्चे-बड़े सभी दिनभर सड़क पर अंदर-बाहर करते दिखते हैं शायद इसलिए..." मंजरी की आवाज रामघाट का आंखों देखा हाल बताने जैसी होने लगी; रामू ने दबी आवाज में टोका, "आज की बैठक में इस मुद्दे पर चर्चा ही नहीं हुई, आगे अपनी कोरोना-मंडली की क्या गतिविधि होनी है? कोरोना से बचाव के लिए काम करने का सही वक्त तो अभी ही है।"

"...प्रशासन दूध-पानी के लिए भी बड़ी मुश्किल से निकलने दे रहा है, पूरा शहर सहमा हुआ है; ऐसे में कोरोना-मंडली को कुछ तो करना ही पड़ेगा, अगली वीसी में ही कुछ करने का निर्णय हो सकेगा! आज रात कहां रुके हो? सोने-खाने का क्या इंतजाम है!..." मंजरी की आवाज में वजन जान पड़ रहा था, रामू के लिए वाजिब चिंता का वजन।

"बुलंदशहर जिले की सीमा पर एक विद्यालय भवन में रुका हूं, ...पुर करके कोई विद्यालय है; लगता है मेरे बगल में कोई जाग गया है, ऐसे में

ज्यादा बात करना ठीक नहीं होगा; बाय! गुड नाईट, लव यू..."

"...लव यू! गुड नाईट..."

आधी रात होते-होते अंधकारपूर्ण नीरव रात्रि पहरेदारी कर रही थी समूह सैंतालिस की, अकेली।

3

9 अप्रैल; सवेरा आज आसमान से जमीन की तरफ धीरे-धीरे बढ़ता लग रहा था, जैसे देशव्यापी लॉकडाउन में उसे भी धरती में आने की मनाही थी। स्कूल के पीछे दूर तक फैली झाड़ियां; उजाले के दस्तक देने तक पूरे समूह को सुकून देती रहीं, सड़क किनारे बने गड्ढों में जमे-बचे पानी के सहारे। साथ लाए भूंजा-मुढ़ी-दालमोठ थोड़ा खाकर, ज्यादा बचाकर पूरा समूह आगे की यात्रा का इंतजार करता रहा; माताजी और पंकज के लिए देर तक उम्मीद में बैठे रहे, शायद कोई ट्रक-फरक आ रही हो कहीं से। भुवन और रामू की नजरें दूर-दूर तक रास्ते में चलते किसी आदमी को ढूंढ़ने लगीं, सलाह तो कर लें कि यहां पर किससे क्या हेल्प मिल सकती है। जीटी रोड़ के नीचे बाय लेन पर चल रहे एक साइकिल सवार पर नजर पड़ी, दोनों ने एक-दूसरे को मुस्कुराकर देखा; मरुस्थल में हरियाली देखकर जानवर भी पहले जम्हाई लेता है दूसरे जानवरों को देखकर, खाता बाद में है। रामू दौड़कर साइकिल सवार के पास गया; हाथ जोड़कर पूछा, जैसे वह आदमी इस वक्त उनका प्रधानमंत्री हो-'बड़े भाई साहब हम लोग दिल्ली से पैदल ही चल पड़े हैं, आगे रामघाट जाना है; कुछ लोगों को बिहार की तरफ बढ़ना है, जीटी रोड़ में कोई ट्रक या बस...' तभी पीछे से आया भुवन भी बोल पड़ा, 'या फिर यहां के पंच-प्रधान यहीं रुकने का हमारा इंतजाम कर दें।'

'अभी तो चारों तरफ कोरोना का ही जोर है; प्रधानजी शायद ही घर से निकलें, उसका गांव भी तो यहां से तीन-चार किलोमीटर दूर है!' साइकिल सवार ने तरस खाते हुए कहा।

'यहां आसपास एमएलए-मंत्री या फिर डीएम-एसपी तो होगा।' भुवन उत्साहित होकर बोला, जैसे सभी शक्तिधारियों का रिमोट उसी के हाथ में हो।

'अरे वह सब चीज तो शहर में होता है, यहां से पचास किलोमीटर दूर; इस वक्त वे भी तो देह से कोरोना झाड़ रहे होंगे, आप लोगों के लिए इस सुनसान जगह में हेल्प करने कौन आएगा भला!' साइकिल सवार ने अफसोस

जताते हुए कहा; साइकिल में पैडल मारते हुए बोलता गया, 'जत्था तो जा रहा है रोज-रोज पैदल, जब दिल्ली को दिल से निकाल आए हो फिर तो जय सियाराम बोलकर चलते रहो।' भुवन और रामू ने एक-दूसरे को देखा, पूरब दिशा में चढ़ते सूरज की ओर आंखें उठाईं। दस मिनट के अंदर समूह सैंतालिस आज फिर जीटी रोड़ पर आ गया; उसकी लंबाई से भिड़ने!

आज का बृहस्पतिवार कल बुधवार की अपेक्षा थोड़ा राहत भरा था। ऊपर आसमान में छितरे बादल की टुकड़ियां कारवां के ऊपर छतरी बनकर तैर जाती थीं, जब-तब। शायद इसी वजह से न तो माताजी और न ही पंकज ने अपनी लाचारी बयां की अभी तक। एकाएक पूरब से परवान चढ़ी पुरवैय्या आ पहुंची, हिलोरें मारती हुई। पुरवैय्या में जोर कम मुस्कान ज्यादा थी; पूरा कारवां झूम उठा। पुरवैय्या की शीतल मुस्कान पूर्णिया के लोगों में संगीत लहरी भला पैदा न करे! देखते ही देखते जीटी रोड़ मैथिली निर्गुण के तरंग में नहा उठा; तीन-चार बुजुर्गों के कंठ से निकलती स्वर लहरी से-

हेए हरि माआधव होओओओ
कतेएक दिइइन रहअब विईईदेएसे,
जबअ छलअ धअनअअ सखी हेऐऐऐए
नीइतूउउ गृहअ पाआहुउनअ
हितअ बन्धु लागअल दुआरेए।
घटी गेलअ धनअ हटी गेलअ पाआहुन
हितअ बन्धु छोड़अल दुआरेए,
ऊँची रे अटारीईइ भांगी गेलअ चारो टाटीइ
नितु दिनअ बरसे जलअ ढारेऐए।
हेए हरि माआधव होओओओ
कतेएक दिइइन रहअब विईईदेएसे...।

फिर तो सभी पूर्णिया वालों का कोरस ...सखी हेऐऐऐऐएए... दूर-दूर तक सजीव-निर्जीव को तरंगित करता चला गया! आधे घंटे तक चले निर्गुण की धुनों में सभी के पैरों में स्फूर्ति आ गई; मन में उमंग-उफान! आगे लगनी की लंबी तान! जैसे सारी दुनिया की ऊर्जस्विता जीटी रोड़ में समाती जा रही हो...

पाँचअ रे सखिये मिलि पनिया ले गेअल
वही रे जमुना के धार हे,
एकअ सखी केरी गागरी फुटलअ

ताही बीच रहअल लजायेए।
सुनु सखी अगअली सुनु सखी पिछअली
सुनु सखी मझअली संवाद हे
कहि दिहअ सासुजी से
गागरी फुटअल गागरी छोड़ी नैहर गेअल हे...।

निर्गुण फिर लगनी के दर्शनमय लंबे तान में पैदल चलते रहने का एहसास जाता रहा! अपनी मिट्टी का मनोहारी समाँ बंधता देख माताजी भी सुध-बुध खो बैठीं; अब उसे भला क्या याद रहता कि वह चलने में अशक्त है! पंकज भी भूल गया कि उसका शुगर लेवल चढ़ा रहता है! कारवां के कदम ऐसे बढ़ते जा रहे थे जैसे जीटी रोड़ को ललकार रहे हों...बस-ट्रक तुम्हारी लंबाई नापते-जोखते थक-फट जाते हैं, अब हम तुम्हे नापेंगे; आज तक तू जीतता आया है, अब हम जीतेंगे!

माथे पर खड़े सूरज को ढोते हुए भी कारवां बढ़ता रहा; बीच-बीच में टकराते पेड़ों की छाया से चंद मिनटों के आलिंगन के साथ, गांव-कस्बे में दिखते गए हैंडपंप के ठंडे पानी के सहारे। अलीगढ़ जिले से गुजरते हुए खिदमतगारों का छोटा जत्था सामने आ पड़ा, थैले में खाने के पैकेट और पानी की बोतल लिए। खिदमतगारों पर नजर पड़ते ही उनके कब से धंसे पेट की भूख जाग उठी; कंठ की प्यास तीव्र हो उठी। गौर करने पर कारवां के पैर ठिठक गए; कुछ खिदमतगार सप्ताह दिन पहले टीवी में दिखाए गए कोरोना वाले जमातियों जैसे दिख रहे थे। भुवन ने आगे बढ़कर कारवां को रुक जाने का संकेत किया; आंखों की भ्रमण-भाषा से संदेश देते हुए, कि हो न हो ये लोग मरकज वाले जमाती हों। रामू के पास जाकर बुदबुदाया, "टीवी वाले का न्यूज झूठ तो नहीं हो सकता न! बात में दम है कि जमाती वाले पूरे भारतवर्ष में फैलकर कोरोना के बीज बोते जा रहे हैं।" धर्म-संकट की इस घड़ी में रामू ने निःशब्द रहना ही बेहतर समझा; खिदमतगारों की तरफ संकेत संप्रेषण-सी नजर जरूर दौड़ा दी। खिदमतगारों ने एक-दूसरे की तरफ देखा; एक लंबी दाढ़ी वाले ने आगे बढ़कर दोनों हथेलियां आसमान की तरफ फैला दीं, फिर मुस्कुराकर बोला, 'हम लोग इसी गांव के बाशिंदे हैं और ऊपर वाले के पाक-साफ बंदे हैं; मन में बगैर कोई छल-कपट के राहगीरों की मदद में जुटे हैं।'

'हमारे गांववालों का कोरोना-कथा से कोई लेना-देना नही है।' दूसरा खिदमतगार आगे आकर बोला।

'पूरा शाकाहारी भोजन पूरी साफ-सफाई से बनाया गया है; यकीन के साथ भोजन कर लें तो हमारा और हमारे भोजन का मान रह जाएगा।' तीसरे ने पीछे से ही कहा। अच्छी वचन-वाणी सुनते ही समूह की सभी सातों महिलाएं और नौ बच्चे-किशोर भोज्य-पॉकेट पाने के लिए बढ़ चले; बड़ों की परवाह किए बगैर। सच ही तो, बच्चों में जात-धर्म के बैर का अंश नहीं होता, स्त्रियों में उसका दंश नहीं होता! भूखे पेट के लिए तो खैर धर्म और धारणा कभी दीवार बनकर आड़े नहीं आती; स्वाभाविक ही सद्पुरुषगण भी धीरे-धीरे पैकेट-पानी ले रहे बच्चों के पीछे लगने लगे। फिर तो धर्म और जमात की सवारी करने वालों की नौका को डगमगाना ही था; वे भी पंक्ति में पीछे दिखने लगे, कमर-पीठ आड़े-तिरछे कर सकपकाते हुए ही सही।

'भुवन भैया, पंक्ति में ये जो सबसे आगे हैं वे सिर्फ बच्चे और महिलाएं मात्र नहीं हैं, देश के भविष्य के प्रवक्ता हैं।' भुवन के कान में उद्घोष-सा करते हुए रामू बोलने लगा, 'देश की पॉलिटिकल पार्टियों के प्रवक्ताओं जैसे सड़े-गले पेड़-पौधे के बीज नहीं हिंदुस्तान की जमीन से निकले असली पौध समझिए इन्हें!'

'भविष्य को किसने देखा है!' भुवन तर्क के मूड में नहीं था।

'मुझे तो दिख रहा है!' रामू ने प्रतिवाद किया।

'फिलहाल रामघाट के रास्ते के बारे में ठीक से सोचा करो तो सबका भला होगा।' रामू को असली मुद्दे की तरफ मोड़कर भुवन ने तर्क-वितर्क से पल्ला झाड़ लिया।

आगे थोड़ी ही दूर उन्हें एक परित्यक्त टोल प्लाजा दिखा; तपती सड़क पर चले जा रहे कारवां के लिए उस उजड़े शेड की उपेक्षा करना संभव न था। बच्चों और कुछ पुरुषों ने भी, चलते-चलते ही पॉकेट चट कर दिया था; महिलाएं एक मुफीद जगह की आस में पॉकेट ढोए जा रही थीं। एक घंटे की विश्राम वेला में महिलाओं के मुंह से उन खिदमतगारों के लिए आशीष झरते रहे। कल वाली थकावट आज कब की भूल चुकी माताजी शुभ वचन बोलने से न रोक पाई अपने को, 'अहा, केहिन निक भाजी बनैने रहै! भगवान हुनके सुख संपदा जरूर देएत।'

'माताजी हमारे मंदिर-मूर्ति वाले भगवान के भक्त नहीं हैं वे लोग; मस्जिद में जमीन पर माथा टेकने वाले थे वे सभी!' भुवन के साथ साए जैसे चिपके रहनेवाले प्रकाश ने कहा, खिदमतगारों का उपहास उड़ाने के अंदाज में।

'रे बौ, हमहु त मूर्तिक अगाँ सिर झुकबै छियै!' माताजी ने उंगलियों से प्रकाश के गाल में चिकोटी काटते हुए कहा, जैसे कहना चाह रही हो कि भगवान के असली रूप को तुम लोगों ने पहचाना ही कहां है!

'हमको तो नहीं बुझाया वे हमसे अलग मिट्टी के लोग हैं।' रामना की भाभी भाव-विह्वल हो बोलीं।

'अरे भाभीजी आप लोगों ने अभी पूरी दुनिया देखी नहीं है, इसलिए जमातियों को पहचान नहीं पाएंगे; यदि आप लगातार टीवी देखे होते तो उन्हें पहचान लेते!' प्रकाश ने अपना ज्ञान बघारने-सा कहा।

'मरदूत टीवी वाले! अपना पेट-पॉकेट भरने के लिए दिन-रात कांव-कांव करते रहते हैं; कौवा किसी को चैन से बैठने देता है भला!' भाभी ने असलियत का तड़का लगाते हुए कहा।

'यदि बात खुल ही गई है तो मैं भी कुछ बोलूं,' भुवन की तरफ डर-डराकर देखते हुए इसरार ने कहा।

'हां-हां बोलो, आजाद हिंदुस्तान है; किसी को कोई रोक सकता है भला बोलने से!' भुवन ने कहा, बड़ा बनते हुए।

'हिंदुस्तान के मरकजों में जमाती लोग इस साल पहली बार नहीं आए हैं! सदियों से दुनिया के अलग-अलग मुल्कों से जमाती लोग लंबे सफर पर हिंदुस्तान आते रहे हैं, मजहब के बारे में हकीकत बयां करने।' इसरार की बात के बीच ही भुवन टपक पड़ा, 'अरे भाई साहब, किसने रोका है उन्हें?'

'लेकिन बेवजह इल्जाम तो लगाया; पूरे देश में कोरोना फैलाने का बेशर्मी भरा इल्जाम!' इसरार सांस की धार छोड़ते हुए बोलने लगा, जैसे किसी थिंक टैंक का खोखलापन उजागर कर रहा हो।

'यह तो सच है विदेशी जमाती फॉरेन से ही कोरोना पॉजिटिव होकर आए थे!' भुवन ने अपना तर्क-तीर छोड़ दिया।

'यदि वे कोरोना पॉजिटिव थे तो सरकार ने उन्हें आने का वीजा क्यों दिया? मैं पूछता हूं उन देशों से जहाज को हिंदुस्तान आने ही क्यों दिया!'

'तुम्हारे हिसाब से सरकार ने कोरोना वाले जमातियों को विदेशों से जान-बूझकर बुलाया था?' भुवन उत्तेजित होने लगा।

'मुझे तो ऐसा ही लग रहा है,' इसरार ने रहस्यपूर्ण ढंग से कहा।

'लेकिन इससे सरकार को क्या फायदा होगा भला?' बोलकर भुवन ने सांस रोक ली।

'फायदा होने की सोचकर ही जमातियों को ऐसे वक्त में आने दिया होगा!' इसरार के चेहरे में घृणा की परत उभरने लगी।

'वो क्या!' अब भुवन ने रुकी सांस को निकलने दिया।

"यदि सरकार के बड़े लोगों के बीच की गुफ्तगू की रिकॉर्डिंग सुना पाओ तब असलियत समझ में आने लगेगी!" इसरार ने चुनौती दे डाली।

'....' भुवन ने लालवर्णी होता मुँह बोलने के लिए खोला ही था कि रामू ने सीटी-सी बजा दी; हाथों से कारवां के बढ़ने का संकेत करते हुए। सैंतालिस गुना दो कुल चौरानबे पैरों का जीटी रोड़ के साथ दोस्ताना संघर्ष फिर आरंभ हो गया।

शाम होती गई; जमीन से आसमान की ओर बढ़ते अंधेरे में जीटी रोड़ सुस्त पड़ने लगा। कोसों तक दुनिया का बेगानापन दूर होता दिख नहीं रहा था; ऐसे में पैरों की गति भला कैसे मंद हो पाती! नए जमाने की चौड़ी होती सड़कों ने गांव-घर के किनारे से होकर जाने से मना कर दिया है; गांव के इर्द-गिर्द अर्धवृत्त आकार-सा बनाते हुए निकलना पसंद करती हैं, जैसे मनुष्य को देखकर सांप कुंडली बनाकर बैठा हो! स्वाभाविक ही किसी गांव के साए में रुक जाने की कारवां की ख्वाहिश अंधेरे की दस्तक तक भी पूरी नहीं हो पाई थी। जीटी रोड़ के किनारे छोटी-छोटी कुछ दुकानें कई जगह तो दिखीं, पर सभी की सभी बंद; जैसे धरती के सबसे बड़े महापुरुष कोरोना के सम्मान में शटर गिरा दिए हों! टिटहिया पक्षी के आवाज लगाते ही माताजी के मन की खुशी पूरे कारवां में तैर गई, 'लगता है आगे रुकने का कोई ठिकाना है?' सबने चौंककर देखा, दूर-दूर तक कोई गांव-घर-स्कूल तो कतई नहीं दिख रहा? तभी रामना चहक उठा, 'अरे वो देखो! आगे एक फ्लाईओवर शुरू हो रहा है, उसके नीचे एक रात तो काटी जा सकती है, जैसे दिल्ली में काट कर आए हैं!' बिना देर किए कारवां ने फ्लाईओवर के नीचे पड़ाव डाल दिया।

अचानक मोबाइल से ट्विंग-सी ध्वनि निकली, रामू की चिंतन-मुद्रा भंग हुई; मंजरी का मैसेज था, '...आज रात आठ बजे भीसी है, सहज ने लिंक भेज दिया है, प्लीज खुशमिजाज रहना...' रामू ने घड़ी देखी, पौने आठ ही बज रहे थे। पंद्रह मिनट इंतजार करना महीनों लंबा बीता रामू के लिए। आठ बजे से पहले ही सहज मुस्कुरा उठा, '...हाय डियर, ऑल आर मोस्ट वेलकम; प्रभु रामचंद्र यानी हमारे प्यारे रामू! आजादी के बाद पहले व्यक्ति जो हिंदुस्तान नापने निकल पड़े हैं, सैंतालिस लोगों को साथ लेकर; पैदल! मैं तुमसे क्षमा

माँगता हूं रामू, तुम्हें ट्रेन से वापस नहीं बुला पाने के लिए...' सहज की ओर से क्षमा-याचना को नकारते हुए रामू ने हस्तक्षेप किया, '...अरे काहे को क्षमा-वमा, नहीं आ पाया तभी तो सैंतालिस लोग, यानी समझो हिंदुस्तान को इंडिया से आजाद करके चला आ रहा हूं...'

'...लेकिन रामू, इतना लंबा रास्ता पैदल तय करना मुमकिन है क्या!...' बोलकर शायनी ने आंखें बंद कर लीं, जैसे अचानक कोई लाश दिख गई हो।

'...स्वामी विवेकानंद ने कहा है—गतिशीलता ही जीवन है; सच में मंजिल की ओर चलते रहने में ही सबकी भलाई है, अब अपनी मंजिल है रामघाट में करोना के दंश को कम करना; यहां सभी का यही मत है यदि करोना से ही मरना है तो घर जाकर मरें! वैसे भी जो हालात दिख रहे हैं उसमें गरीब-गुरबा करोना से पहले भूख से ही मर जाएंगे!...' रामू ने आंखें छोटी करते हुए कहा।

'...सहज मैं तुमसे जानना चाहता हूं, कोरोना और लॉकडाउन को एक साथ मिलाकर विश्लेषण करने से तुम्हारी क्या धारणा बनती है?...' अहम ने वीसी को अचानक गंभीर बना दिया।

'...अगर सपाट शब्दों में कहूं तो भारत को आर्थिक महाशक्ति कहा जाने लगा है, इसका परीक्षण इसी कोरोना काल में हो जाएगा; मैं जिस शोध पर काम कर रहा हूं उसमें यह भी ऐड होना है कि लॉकडाउन में देश की कितने प्रतिशत आबादी में अपने दम पर कितने दिन चूल्हा खींचने का दम है...' सहज बोला, तो लगा जैसे किसी कराहती हुई नग्न बुढ़िया पर नजर पड़ गई हो।

'...और भाई परवेज, सत्ता पक्ष और विपक्ष के रोज-रोज आ रहे दिलचस्प बयानों को लेकर तुम्हारा क्या ख्याल है?' परवेज से पूछते हुए अहम ने नजर तिरछी कर ली, जैसे सच में परवेज उसके बगल में बैठा हो।

'...अभी अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचना जल्दबाजी होगी; वैसे लग तो यही रहा है दोनों बड़ी पार्टियों का असली उद्देश्य जनता नहीं है...' परवेज बोला तो लगा कश्मीर से कन्याकुमारी तक एक पल में ही देख लिया हो।

'...बस्ती में पुलिस गाड़ियों के सायरण बज रहे हैं, लग रहा है कहीं कुछ हुआ है!' स्क्रीन में मंजरी उठकर जाती हुई दिखी। सहज ने आज की वीसी खत्म करने में देर नहीं की, '...शायनी, तुम मंजरी के संपर्क में रहना, यदि हेल्प की जरूरत पड़े तो मुझे पता चलना चाहिए; आगे फिर वीसी में मिलेंगे; बाय, गुड नाइट...'

दिन में मिले दीर्घ अवलंबी भोजन ने सभी को बड़ा सहारा दिया था; संध्या को भी राहत महसूस होती रही। साथ लाए चिउरा-मुढ़ी-भूंजा-दालमोठ आगे और दिन के लिए स्वत: संरक्षित हो गई थीं। उन भले लोगों से मिली पानी की बोतलें भी उस रात सभी के लिए बड़ी मददगार बनीं; फ्लाईओवर के नीचे भला कौन बेवकूफ सरकार हैंडपंप लगाकर रखेगी कि कोरोना आएगा, लॉकडाउन होगा और पैदल जाती जनता को फ्लाईओवर के नीचे रुकना पड़ेगा! सभी के लेट जाने के बाद पंकज ने अपनी पोटली खोली, मुढ़ी की पोटली! अभी होली के बाद ही तो घर से आया था महानंदा एक्सप्रेस से, चावल-आटा-मुढ़ी के बोरे-गठरी बांधे हुए। अहा, इतना कुरकुरा मुढ़ी! पोटली से निकालकर हथेली में हल्का-सा दबाते ही कड़कड़ा उठा। मुढ़ी के कड़कड़ाने से किसी अधजगे के खखारने की आवाज आई। पंकज को ग्लानि महसूस हुई; सभी तो सोए हैं बिना कुछ फांके, एक वही भुक्खड़ है क्या जो बिन पेट-पूजा सो ना पाए! उसने खाने का इरादा टाल दिया।

सभी ठीक से अभी सो नहीं पाए थे; सत्तन की माँ को कुछ बेमेल-सी हरकत महसूस हुई। उठ बैठीं, चारों तरफ नजर दौड़ाई। फ्लाईओवर के अंतिम पिलर तक पारदर्शी अंधेरा था; जमीन की ओर झुकी छत के नीचे दो साए नजर आ रहे थे, एक-दूसरे को थामे। बगल में झांकते ही उसकी धड़कनें कूद-फाँद करने लगीं; उसकी जवान भतीजी अंकिता अपनी जगह से विस्थापित थी! अपने काम-मुक्त इंद्रिय संसार से भी माताजी जान गई, यदि तनिक भी देरी होगी तो फ्लाईओवर के नीचे एक नए बीज का अंकुरण तक हो सकता है। उसका अपनी देवरानी से महीनों से मुंह-फुलाव चल रहा था। उसने रामना के कान में बात डाल दी; अपने तई वह तो फुसफुसाकर बोली थी, पर ऐसे सनसनीभरे समय में स्वर और सांसों की गति ही काफी होती है दूसरों की चेतना जगाने के लिए! मिनट के अंदर ही कई लोग मुस्तैद हो उठे, जिज्ञासा प्रकट करते हुए ...क्या हुआ! ...किधर ...कहां...? शांतिपूर्ण कोलाहल के बाद सभी की आशा के विपरीत दोनों साए बेझिझक दिखे; सभी के जाग जाने के बाद भागना-छिपना व्यर्थ समझकर या फिर आपसी सहमति की कानूनी सीमा कब का पार हो जाने का संज्ञान लेकर साहस जुटाते हुए, यह तो दोनों बालिग ही जानें। अब दोनों झुकी छत के नीचे से हटकर फ्लाईओवर के स्तंभ पर पीठ किए टिक गए, स्तंभ-सा स्तंभित! मिनटभर सभी अखंडनीय चुप्पी में समाए रहे। रामू की चेतना तत्क्षण सजग हो उठी, यह चुप्पी तो

तूफान से पहले की शांति है! बिना देर किए वह रात्रिकालीन-सा उद्‌गार लाते हुए बोल पड़ा, बड़े-बुजुर्ग-सा स्वर-दाब बनाते हुए, 'दुनिया में हर बात का फैसला होकर रहता है, इसका भी होगा; कल हम लोगों को फिरोजाबाद से इटावा तक का लंबा सफर तय करना है, अभी रात खराब करना ठीक नहीं होगा, कृपया सभी सो जाइए।' बोलते-बोलते उसकी आवाज रेलवे प्लेटफॉर्म की उद्‌घोषणा-जैसी हो चली थी। युवा वय-वर्ग के किशोरों-पुरुषों-महिलाओं के अंदर कौतूहल हिलोरें मारने लगा, कल कुछ नया तो होगा! अधेड़ों-बुजुर्गों को स्वाभाविक संदेह होने लगा; रामू तो खुद काम-वय का है, देखें ऐसे मामले को वह कैसे निपटाता है! अपनी-अपनी जिज्ञासा और संदेह की सवारी करते-करते पूरा कारवां भोर तक के लिए भूल गया; गोया शरीर की थकावट कभी-कभी चेतना पर भारी पड़ती है।

कारवां में रामू ही था जिसका उत्तरदायित्व बोध थकावट पर भी हावी हो चला था; आखिर युवा जोड़ी के प्रेम-प्रसंग का तर्कसंगत समाधान इतना आसान भी तो नहीं था, वह भी जीटी रोड़ पर चलते-चलते। अभी घंटेभर पहले वीसी में दिखी मंजरी मानस-पटल पर सहसा उग आई। तब उसे भी भान या ज्ञान ना था इस वक्त अचानक मंजरी की याद क्यों आ गई; अभी वाले दोनों युवा दिलों की बेकरारी से प्रतिबिंबित होकर या फिर मंजरी से इस मसले पर सलाह-मशवरा करने की खातिर। वह मन मसोसकर रह गया; बड़ी चतुराई से पूरे कारवां को निंदिया रानी की गोद में पटक आया हूं, मंजरी के साथ मंद स्वर वाली प्रेम-वार्ता भी फिर से यहां खलबली मचा सकती है। अन्यमनस्क अवस्था में ही उसने मैसेज बॉक्स क्लिक कर दिया, '...वीसी में तुमसे खुलकर बात न कर पाई; आज दिनभर की यात्रा कैसी रही, मैं जानती हूं बढ़ती जा रही गर्मी में पैदल चलना आसान नहीं है, वह भी एक बड़े कुनबे की जिम्मेदारी ढोते हुए; कल वाले भुतहा स्कूल वाली बात कल रात मुझे देर तक हांट करती रही, आज कहां सोए हो, कोई ठीक-ठाक जगह होगी?...' मंजरी उसके मन को मथने लगी, कितनी तो फिक्र करती है उसकी! बिना देर किए उसने मैसेज लिखना शुरू कर दिया, '...आज का पड़ाव एक फ्लाईओवर के नीचे है, सभी जन सो गए हैं, चिंता वाली कोई बात नहीं है; बस रंगमंच पर एक नया प्रसंग उतावला दिख रहा है...' मैसेज सेंट करके उसकी नजरें स्क्रीन पर गड़ी रहीं; मिनट अंदर ही ट्विन की मधुर ध्वनि के साथ मंजरी का मैसेज उग आया, '...नया प्रसंग? प्रस्तुति!...' उसे

लगा मंजरी की जिज्ञासा उसे रातभर जगाए रखेगी, उसने मैसेज सेंट कर दिया, '...दरअसल पूर्णिया वाली लड़की अंकिता और अपने रामघाट का नौजवान प्रणव एक-दूसरे पर फिदा हो गए लगते हैं; अभी आधे घंटे पहले दोनों धुंधले अंधेरे में अर्ध-रंगे हाथ पकड़े गए हैं, समझो एक बड़ा बवाल होते-होते बचा है...' मैसेज सेंट होते ही जिज्ञासा प्रदर्शित करते कार्टून के साथ मंजरी का मैसेज हाजिर था स्क्रीन पर '...अर्ध-रंगे मतलब?...'

'...मैं भला वहां पहरेदारी कर रहा था जो फोटो खींचकर तुम्हें भेज देता...'

'...फिर भी एक अनुमान? पहली बार हम दोनों का सुनसान जगह पर बेरी के पेड़ के नीचे जैसा कुछ तो नहीं!...'

'...माय स्वीट डार्लिंग, अपनी निजी बातें मोबाइल पर नहीं शेयर करनी चाहिए...'

'...ध्यान रखना कहीं फ्लाईओवर ही न हिलने लगे, उन दोनों जवां दिलों के जोर से! बाय, गुड नाइट, लव यू!...'

'...गुड नाइट, लव यू...' मैसेज सेंट करते ही रामू भी नींद के खुले आंगन में पसर गया; मंजरी से मन की बात करने के बाद दिनभर की थकावट अब उसकी भी आंखों को दबोचने लगी थी।

सुबह नींद से बाहर आते ही सभी की आंखों में रात वाली प्रेम-कहानी की परछाईं हिलोरें मारने लगी थी, दिन के उजाले में और चमकते हुए। कल भोर में हवा-पानी से निस्तार पाने की खातिर सभी झटपट जंगल की तरफ भागते दिखे थे, आज इक्के-दुक्के को ही दाएं-बाएं जाने की जरूरत महसूस हुई। रामू ने आंखों से सामूहिक संकेत किया, सुबह-सुबह फारिग हो जाने के लिए; बैठे-खड़े लोगों के बीच से शिकायत-स्वर आने लगे, '...कल जैसा जंगल तो आज दिख नहीं रहा है...' '...जब रात में खाए ही नहीं हैं तो हगने-मूतने की नकल करने से क्या फायदा!...' बात-बतंगड़ रोकने की खातिर रामू ने कहा, 'आज रात का पड़ाव इटावा के इलाके में कहीं सुरक्षित जगह पर रखना पड़ेगा, बीच का रास्ता काफी सुनसान है; सुबह के सूरज को आसमान चढ़ते देर नहीं लगेगी, सुबह के दो-तीन घंटे में रास्ता जितना पीछे छोड़ दें उतना अच्छा।' ऊंचे स्वर वाले फरमान का असर इतना भर हुआ कि सभी एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। समूह की मौन भाषा बूझकर रामू को समझते देर नहीं लगी, रात वाली घटना जिज्ञासुओं की जीभ पर अटकी है तो समझदारों की नाक पर आ पड़ी है। किसी को मुंह खोलने का मौका

दिए बगैर उसने कह डाला, 'रात वाली घटना को लेकर कोई भी अपने मन में शंका ना पाले, वो बात अब रफा-दफा नहीं हो सकती!'

'तो क्या हम लोग रास्तेभर रासलीला देखते चलें!' भीड़ के बीच से किसी की दबी-सी आवाज आई।

'यमुना किनारे से ही अंकिता और प्रणव में हँसना-बोलना चालू था, तब किसी के मन में कुछ क्यों नहीं खटका था? अब एकाएक बवंडर उठाने का क्या मतलब है!' रामू ने भद्रतापूर्वक कहा।

'लेकिन रामू हमें यह तो मानना पड़ेगा अलग-अलग शहरों-गांवों के लोगों का यह कारवां अब सिर्फ मानव झुंड भर नहीं है, मंजिल तक के लिए हमारा समूह-समाज सा है,' भुवन भी तर्क प्रस्तुत करने लगा, 'परिवार-समाज में यदि ऐसी घटना घटती है तो सजा-समाधान की बात भी उठती है।'

'मैं आपकी बात से सहमत हूं भुवन भैया, पर मैं तो कहता हूं सजा-समाधान के लिए तो पूरा रास्ता अभी पड़ा है; अभी आगे बढ़ते जाने के बजाय दिनभर यहीं पर लड़का-लड़की वाली पंचायत करने में बुद्धिमानी है क्या?' रामू ने तर्क-प्रहार से भुवन को निरुत्तर कर दिया। फिर तो फ्लाईओवर के नीचे से ध्वनि तो छत से प्रतिध्वनि आने लगी, '...हां-हां! आगे बढ़ते जाना ही मुनासिब है...' '...हां हां...' '...ठीक-ठीक...'

4

भक्तों को पता होता है तीर्थ यात्रा में कितने दिन की पैदल यात्रा होगी... एक दिन, दो दिन, तीन दिन; दिल्ली से रामघाट और पूर्णिया के लिए पैदल निकले प्रवासियों के लिए यह किसी धार्मिक स्थल की यात्रा न थी, पता न था कितने दिन या सप्ताह लगेंगे! दोनों यात्राओं में समानता थी, तो विषमता भी; धार्मिक स्थलों की यात्रा में भगवान तक पहुंचना लक्ष्य होता है, यहां अपना घर ही उनका लक्ष्य था, भगवान से भी बड़ा भगवान-सा! तीर्थ यात्रा में पग-पग शासन-सरकार साथ सरकती चलती है, तीर्थयात्रियों के कंधे से कंधा मिलाकर; यह यात्रा तो किसी राजाविहीन राज जैसी प्रतीत हो रही थी। आज तीसरे दिन की यात्रा में तेज धूप बिन माँगे सौगात जैसी साथ-साथ चल रही थी; हवा तो अभी तक नींद से जागी ही नहीं थी। आज सूरज भी उतावला जान पड़ रहा था; जल्दी ही माथे पर सवार होने का संकेत देने लगा। आज वाली अब तक की नौ किलोमीटर यात्रा के दौरान चालू तो क्या किसी खराब

पड़े हैंडपंप के दर्शन तक नहीं हुए थे। कब के घर पहुंच चुके मन और अब पसीने से लथपथ शरीर ढोते हुए उन्हें आज अपनी सरकार की बड़ी याद आ रही थी; और याद आ रही थी हर दूसरे-तीसरे साल मतदान केंद्र में ईवीएम से निकलने वाली पीईइप की मनमोहक आवाज! पैदल चलता कारवां बुद्ध और गांधी के ही तो वंशज थे; उन्हें शीघ्र ही सहज ज्ञान हो गया, किनारों में रेलिंग लगे किलाबंद-सी चमचमाती सड़कें सरकार ने तीव्रगामी वाहनों के लिए ही तो बनाई हैं, कारवां के पैदल चलने के लिए नहीं न! भोजन-पानी का थैला थामे किसी समाजसेवी संगठन के अस्तित्व का कोई चिह्न तो क्या पदचिह्न तक नहीं दिख रहा था आज, दूर-दूर तक!

"अब नय गेय माआय!" अंकिता अचानक दहाड़ मारकर पालथी मार ली, किसी अनाम पेड़ के लघु छांव को आज का घरौंदा समझकर।

"अंकीईइई!" कारवां के पीछे-पीछे चल रहे प्रणव की चीख निकल गई; वेदनाभरी चीख, ऐसी कि चारों ओर फैली धूप भी खामोश होती दिखने लगी। वह विद्युत गति से अंकिता के पास आ पहुंचा, "अब क्या होगा! कोई कुछ तो करो?" बोलते-बोलते वह खुद बदहवास-सा होने लगा। चारों ओर खड़ी भीड़ में मिश्रित स्वर वाली भुनभुनाहट तैरती गई ...नहीं भैया, अब तो आगे चलना मुश्किल होगा, ...इतनी धूप में तो जान ही निकल जाएगी, ...रामघाट पैदल जाना पागलपन ही तो होगा! ...जब रामघाट वाले नहीं जा पाएंगे तो हम पूर्णिया वाले पागल हैं क्या जो जान हथेली पर लेकर चलते रहें!... रामना ने रामू की तरफ आंखें उठाईं, अब क्या करना है? जैसे प्रश्न वाली आंखें; कारवां के मन में हताशा पनपने से पहले ही रामू बोल पड़ा, "आगे कोई छायादार जैसी जगह दिख रही है, वहीं चलकर धूप मंद पड़ने का इंतजार किया जाए; भोजन-पानी के बारे में भी पता करना पड़ेगा," फिर रामना को हाथों से संकेत करके कहा, "अंकिता को सहारा देकर अपने साथ ले चलो।"

"खाली दिमाआग शैतानअक घर!" अंकिता की भाभी, माताजी यानी चचेरी सास के कान में फुसफुसाई।

"बात तनटा बुझाबियोओक त," दुनिया की रंग-रंगत से वाकिफ माताजी का चेहरा शायद पहली बार अबूझ जैसा भारी हो चला।

"मतलब ई किइ हमअर जेए ननदिया याअ रास्ता भर मोबाइईल में टिप-टिप करैत रहै छै!"

"आपनेएक कहैक मतलअब?" बोलकर माताजी ने त्रिभुज सा मुंह बनाया,

जैसे दिन के उजाले में भी कुछ ढूंढ़ते मिल न रहा हो।

"मतलब ईइ कि उमहर रामघाट वाला छौड़ा भी टिपटिप करैत रहै छै; माँजी, समझियौक मामला बिल्कुल डायरेक्ट भ गेल य्या!"

"अअ, अब बुझलौ! जे छौड़ी मोबाइईल में चिट्ठी-पत्री करैत रहतै दिनभअर वू भला पैदल चल सकै याअ!" बोलने के बाद माताजी का मुंह कुछ ज्यादा ही खुल गया; हथेली रख लेनी पड़ी उसे मुंह में।

सच में सड़क किनारे वहां छांव थी, बबूल के पेड़ों की छांव। बबूल के पेड़ काफी पुराने थे; अपने प्रजातीय कद से थोड़े ऊंचे भी। माथे पर बैठे सूरज के कारण छांव छोटी हो पड़ी थी, बेतरतीब ढंग से कटी-फटी। कटी-फटी छांव ने भी बड़ा सहारा दिया कारवां को। धूप से थोड़ी राहत मिल गई। पर जमीन का सहारा लेने के बावजूद कल से खाली पेट का एहसास कम ना हो पा रहा था। रामना को हाई स्कूल में समाज विज्ञान की पुस्तकों में पढ़े गए सम्राट अशोक के साम्राज्य और शासन-व्यवस्था की याद आ गई; वणिकों का कारवां और मुसाफिरों का जत्था दूरस्थ प्रदेशों की यात्रा पर निकलते थे, सम्राट की तरफ से लंबे-सुनसान रास्तों में भी उनकी सुरक्षा, ठहराव और भोजन की उपलब्धता की व्यवस्था की जाती थी। "...पर वे सभी वनिक तो हैं नहीं, मजदूर हैं..." रामना ने मन-ही-मन उच्चारित किया। आंखों से रामू को खोजते हुए उसने ऊंची आवाज लगाई, "रामू भैया, आज का सफर तो मुश्किलभरा लग रहा है; रास्तेभर में ना तो कोई पुण्यात्मा दिख रहे हैं और ना ही भुवन भैया की पार्टी का कहीं अता-पता!"

"पुण्यात्मा वाले पुण्य के फल का एडवांस भगवान से माँगने में लगे होंगे, और रामजी बिना हिसाब-किताब के देने के लिए तैयार होंगे नहीं अभी; पार्टी वाले तो खैर शून्य के घेरे में सन्न पड़े होंगे।" रामू ने सहज भाव से कहा।

"सरकार सही बोलती-करती है; सभी को जैसे-तैसे अपनी जगह पर डटे रहना था।" गर्मी से बेहाल भुवन भी बोलने से न रोक पाया अपने को।

"भुवन भैया, आप लोगों को भारतीय मानव समूह के असली मनोविज्ञान की पूरी जानकारी नहीं है, यहां की जनता का मूल मनोविज्ञान मंदिर से आगे उनकी असली दुनिया, यानी घर-बार से जुड़ा होता है!" रामू ने किसी सिद्ध पुरुष भांति कहा; सारा कारवां टकटकी लगाए उसकी ओर देखने लगा, कि रामघाट पहुँचकर न जाने वह क्या बवाल करेगा।

"आजकल का छौड़ा लोग स्कूल-कॉलेज करके सिर्फ भाषण झाड़ना

सिखता है," माताजी झुंझला उठीं, फिर प्यार से बोलीं, "अरे बाबू लोग! कल से ही किसी के पेट में एक दाना तक नहीं गया है, इस पर तो बात करो।"

"माताजी, खाद्य मंत्री तो यहां आएंगे नहीं न!" भुवन ने उपहासात्मक लहजे में कहा।

"अरे खाद मंतरी जाय पाद में; जिनके-जिनके पोटली में मुढ़ी-भूंजा बचा है वह सब एक जगह इकट्ठा करो, मैं सबको बराबर बांट दूंगी।" माताजी को मायके से ससुराल तक घरेलू वितरण की विशेषज्ञता हासिल थी।

"जो थोड़ा बचा है वह अभी ही साफ कर देंगे तो रात में पानी पीकर सोना पड़ेगा?" रामना को आगे की चिंता दिखने लगी।

"रे बेटवा, रास्ते में सब के प्राण निकल जाएंगे फिर तो मुढ़ी-भूंजा धरले रह जाएगा!" आसमान की ओर सिर हिलाते हुए माताजी बोली, जैसे भगवान से याचना कर रही हो कि रास्ते में किसी के प्राण मत हरना। मात्र नौ परिवारों की पोटली में मुढ़ी-भूंजा-चिउरा शेष बचे थे। सब ने सामने बिछे तौलिए पर रख दिए। रामना ने भूंजा-भंडार का आंखों से आकलन किया; पूरे समूह पर निगाह डालते हुए कहा, "इतने भर भूंजा-भंडार से सैंतालिस लोगों के परिवार का एक दिन कटना तो दूर सिर्फ नौ लोगों का नौ घंटा भी निकालना मुश्किल होगा!"

"जो सामने दिखता हो वही दुनिया है; चलो सभी अपनी-अपनी थाली लेकर यहां आओ, एक-एक करके।" माताजी का हुक्म सभी गिले-शिकवे पर भारी पड़ा।

भूंजा-भोग के बाद किसी के आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी; माथे का सूरज तिरछा होकर दाहिनी कनपटी और पीठ पर प्रहार के लिए तैयार बैठा था। सभी अर्ध-निद्रा में जकड़े दिख रहे थे, बबूल के छिद्र-छाँव में ही।

"आगे दूर तक गांव-शहर नहीं दिख रहा है! हिम्मत करके हमें चल देना चाहिए, आखिर रात का ठिकाना भी तो चाहिए।" रामू चिंतित हो उठा।

"लेकिन अंकिता ने अपनी जो हालत बना ली है, ऐसे में..." पीछे से किसी ने आवाज उठाई।

"खुलकर कहूं तो..." बोलते हुए भुवन ने अंकिता की तरफ नजर चुराकर देखा, चुप भी हो गया; आगे धीमे स्वर में बोला, "राह चलते इन दोनों की हरकतें हम लोगों की यात्रा पर भारी पड़ रही हैं; कोई भले ही मुंह न खोले

पर इन दोनों की पैदल प्रेम-कहानी से सबका मन दुखी है।"

"अरे भुवन भैया, सरकार तो खरी-खोटी सुनाने वालों की आवाज पर प्रतिबंध लगाती है, आप तो दो दिलों के मौन-संवाद को भी मिटा देना चाहते हो!" रामू ने स्मित हँसी के साथ कहा; उसे लगा उसके रोम-रोम में मंजरी जाग उठी है।

"तो क्या रामघाट-पूर्णिया तक दोनों के प्रेम प्रदर्शन को सभी ढोते-धोते चलें?" भुवन चिढ़ उठा।

"तो चलो आज रात जहां रुकेंगे हम सब मिलकर इस मामले का निपटारा कर ही देंगे!" रामू ने दोनों हथेलियों को आपस में रगड़ते-झाड़ते हुए कहा। इतना सुनते ही पूरे समूह में खुशी की लहर दौड़ गई; अगले मिनट ही पूरा कारवां जीटी रोड़ पर लंबे-लंबे डग भर रहा था, कुछ नया देखने के उत्साह में।

5

सामने अचानक एक गांव आया देखकर पूरा कारवां खुशी से चौंक पड़ा। लालवर्णी होते सूरज से उनकी अटकी पड़ी सांसें फिर चालू हो गईं। सभी के मुख-मंडल पर खुशी के उजाले उग आए; पसरने को आतुर अंधकार भी ठिठक गया जान पड़ा, थोड़ी देर के लिए। सभी चौरानबे पैर स्वतः गांव की ओर चल पड़े; रामू-रामना-भुवन या किसी से भी गांव की तरफ बढ़ने का कोई संकेत-सलाह पाए बिना ही! कोई आधे किलोमीटर दूर दिख रहे गांव की ओर सभी इस तरह बढ़ रहे थे जैसे सरकार ने यह गांव उनके लिए ही बसा रखा हो! थोड़ी दूर चलने पर एक छोटी बहती नदी देखकर बच्चे-किशोर मचल पड़े, बड़े-वयस्क ने शीतलता महसूस की; पूरा कारवां तीन-चार दिन से नहाया भी न था। गांव से बाहर कारवां को रुक जाना पड़ा; गांव के अंदर जाने वाली सड़क बांस-बल्ली से बंद की हुई थी। गांव के बाहर भीड़ देखकर गांव के अंदर से सैकड़ों लोग दौड़ पड़े, लाठी-डंडा लेकर शोर-पुकार मचाते हुए...'कोरोना भगाओ कोरोना हटाओ...' अपनी ओर बढ़ते आक्रमण देखकर कारवां के पैर ठिठक गए, कहीं कोई नई मुसीबत न खड़ी हो जाए! गांव वालों के नजदीक आ जाने पर रामू के मुंह से अपने-आप निकल गया, "हम दिल्ली के मारे हुए हैं, हमें शरण दीजिए!"

"दिल्ली के मारे हुए! मतलब?" पोशाक से ग्राम प्रधान-सा दिखने वाले

व्यक्ति ने कहा।

"मतलब ये कि हम लोग दिल्ली से भागे हुए हैं।" रामना ने बात को संभाला।

"इसका मतलब है आप लोग साथ में कोरोना भी ढो रहे हैं!" प्रधान के पीछे पगड़ी वाले ने आपत्ति उठाने के अंदाज में कहा; अपनी पैनी दृष्टि से वह पंचायत का पंच जान पड़ रहा था।

"नहीं-नहीं, हम लोगों में से किसी की गठरी में कोरना नहीं है।" आगे बढ़कर माताजी ने हाथ जोड़ लिए।

"माताजी कोरोना गठरी में नहीं, अँतड़ी के ऊपर फेफड़ी में होता है।" पंच के पीछे तापमापक लेकर खड़े व्यक्ति ने कहा; वह ग्राम स्वास्थ्य केंद्र का कर्मी जान पड़ रहा था।

"फेफड़े में क्या हमारे मन में भी कोई वायरस नहीं है, करोना तो लफड़े के कारण बढ़ रहा है!" रामू ने सफाई देनी चाही; उसके व्यंग-वाण से गांव वाले उत्तेजित होते दिखे, "आपको क्या पता आप लोग कोरोना संक्रमित नहीं हैं? आप भगवान राम हैं क्या!" प्रधान जी तुनक गए; भुवन को समझते देर नहीं लगी, उसने हाथ जोड़ लिए, "श्रीमान मैं शहादरा पार्टी इकाई से जुड़ा हूं! हम सभी थककर चूर हैं, आज रात के लिए शरण दे दीजिए।"

"चलिए आपकी बात हम मान लेते हैं; पर आप लोगों को हम गांव में जगह नहीं दे सकते, हमने कोरोना के खिलाफ पूर्ण मोर्चाबंदी कर रखा है।" प्रधान ने नरम पड़ते हुए कहा, फिर उत्तर दिशा की ओर संकेत करते हुए बोले, "उधर नदी किनारे फॉरेस्ट चौकी खाली पड़ी है, आप लोग वहां शरण ले लीजिए, मात्र रातभर के लिए।"

"आउर बेटा तनिक भोजन-पानी की...!" माताजी भीख माँगने-जैसी मुद्रा बनाते हुए बोली।

"हमारे घर के लोग डर से बाहर नहीं निकल रहे हैं; आप लोग चालीस-पचास लग रहे हैं, दस किलो चावल और पांच किलो आलू भिजवा देते हैं; ईंट-चूल्हा जोड़कर लकड़ी इकट्ठा कर वहीं पर खाना बना लीजिए।" पंच ने पंचायत का निर्णय सुनाने में देरी नहीं की। गांववालों की ओर हाथ जोड़कर सभी ने शुक्रिया अदा किया, सिर झुकाकर। पूरा कारवां उत्तर की ओर चल पड़ा।

लघु नदी किनारे टीन शेड वाली बड़ी-सी फॉरेस्ट चौकी; हॉलनुमा चार बड़े-बड़े कमरे! दरवाजे-खिड़कियां बंद करने लायक नहीं थे; स्वाभाविक

ही कमरे हवादार थे। देखकर सभी के मन गद्‌गद हो उठे, आज फैलकर जी भरकर सोएंगे। देखते-ही-देखते पूरा समूह तीन कमरों में सिमट गया। चौथे कमरे का दरवाजा लगभग बंद होकर अंगद के पैर की भांति फर्श पर अड़ा-खड़ा था, न आगे, न पीछे; अंदर से कुछ अजीब-सी गंध भी आ रही थी। बिस्तर बिछाने की देर भर थी; सब-के-सब नदी की गोद में जा गिरे, घुटनेभर वाली जलधारा में दंडवत डूबते हुए। नदी की तरफ बढ़ते हुए रामू की नजर नदी किनारे लगे-सजे शिलान्यास-लोकार्पण के पत्थरों पर पड़ गई; एक नहीं कई-कई पत्थर कई-कई उद्‌घाटन के गवाह! उन पत्थरों में खुदी लिखावट को एक-एक कर पढ़ते हुए वह आगे बढ़ता गया...सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 5 जून, 2017 को माननीय मंत्री... कुल 5551 पौध..., ...सामाजिक वानिकी कार्यक्रम का उद्‌घाटन दिनांक 5 जून, 2013 को माननीय सांसद..., कुल 2001 फलदार वृक्ष का रोपण..., ...वृहद पर्णी पौध रोपण अभियान का शुभारंभ 5 जून, 2015 को माननीय एमएलए के कर कमलों..., ...दुधारू पशु चारागाह संरक्षण योजना का शिलान्यास दिनांक 14 नवंबर, 2016 को माननीय मुख्यमंत्री..., ...संपूर्ण हरियाली मिशन के तहत 10 करोड़ वृक्षारोपण योजना का शुभारंभ 5 जून, 2019 को माननीय..., ...हरित पट्‌टी विकास कार्य योजना का लोक-समर्पण दिनांक 15 अगस्त, 2011 को माननीय..., हरित वसुंधरा लक्ष्य योजना का आरंभ दिनांक 5 जून, 2007 को प्रमुख वन संरक्षक श्री..., ...सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम दिनांक 5 जून, 2018 का उद्‌घाटन माननीय..., ...नदी तट दलदल वृक्ष संवर्धन मिशन का आरंभ दिनांक 25 दिसंबर, 2019 को माननीय...; रामू, पत्थर पर खुदे कार्यक्रमों पर सरसरी निगाह डालकर आगे बढ़ता गया; उसे मंत्रियों-नेताओं के नाम पढ़ने में कभी रुचि नहीं रही थी। पांच-सात मिनट में उसने दस-बारह पत्थरों को पढ़ डाला। आगे दूर तक और भी कई पत्थर नजर आ रहे थे; उसे महसूस हुआ अब पत्थरों पर नजर पड़ते ही उसे चक्कर आने लगा है! वह एक पत्थर के ऊपर उछलकर बैठ गया। चारों तरफ दूर तक नजर दौड़ाई; वृक्ष तो दूर, ढंग का कोई पौधा भी नजर नहीं आ रहा था दूर तक! हां, प्राकृतिक रूप से उगे जंगली बबूल हवा में झूमते हुए कुछ गाते लग रहे थे; शायद वृक्षारोपण योजना की अकाल मृत्यु का शोक गीत। सबसे अंत में वह नहाने के लिए नदी में उतरा, डर-डराकर; हो ना हो वन अधिकारियों-ठेकेदारों-मंत्रियों द्वारा हजम किए बजट की विष्ठा जहर बनकर नदी के पानी में भी घुली हो!

नहाकर वह चौकी की ओर बढ़ चला, मुंह लटकाए।

नदी से लौटते हुए भुवन ने उसे टोक दिया, "सभी तो नदी से नया जीवन लेकर लौट रहे हैं, तुम तो किसी की मृत्यु सभा से लौटते जान पड़ रहे हो!"

"हां वैसा ही समझो, लाखों-करोड़ों पौध के कब्रगाह से नजर चुराकर भाग आया हूं; इस फॉरेस्ट चौकी की दीवारों पर अपने आप उग आए पौध के अलावे लगाया गया कोई पौधा तुम्हें दूर तक नजर आ रहा है क्या?" बिना किसी प्रयास के रामू के मुंह से शब्द निकलते गए।

"इन दीवारों पर उगे पौधों की जड़ें जमीन तक लंबी हैं, इन्हें ही हम बड़ी उपलब्धि मान सकते हैं रामू भैया!" पीछे से आ पहुँचे रामना ने उसे सांत्वना देने की शैली में कहा।

"ये तो ऐसे लग रहे हैं जैसे संसद और विधान भवन में भ्रष्टाचार के अदृश्य वट-वृक्ष अपने आप फलते-फैलते हों!" रामू के स्वर कोड़े बरसते-सहते दिल-देह से निकली आवाज-सी थी।

"अरे यार, तुम जैसे नौजवानों के कारण ही रामघाट पूरे देश में बदनाम हो रहा है; लोग सच ही कहते हैं सोचने की बीमारी रामघाट को ले डूबेगी!" बोलते-बोलते भुवन चौकी के बरामदे पर चढ़ चुका था।

दरियादिली दिखाते हुए गांववालों ने दो बड़ी-बड़ी हांडी भिजवा दी थीं। भात और भुरता; इसमें खाना बनाने जैसा होता ही क्या है! रामना और इसरार ने बिखरी ईंटें जोड़कर चूल्हा-रूप दे दिया; प्रकाश और अभिषेक ने यहां-वहां से लकड़ी इकट्ठा कर लीं। माताजी ने चुटकी बजाकर हांडी चढ़वा ही दी; समूह के साथ चल रही पांचों महिलाओं को पुचकारते हुए, दो युवतियों को कामचोरनी होने की फटकार लगाते हुए; असामान्य दिखने वाली अंकिता को उसी के हाल में छोड़ते हुए। भात-भुरता बनाने में जब देर नहीं लगती तो उसे खाने में भला क्या देर लगनी थी! दिनभर तेज धूप का मारा और शाम को शीतल जल का सहारा पाया कारवां! नौ बजते-बजते घनघोर नींद वाली लंबी सांस लेने लगा था; फॉरेस्ट चौकी के अस्तित्व को पहली बार सार्थक करते हुए।

रामू अकेला था जिसे नींद अपने वश में नहीं कर पा रही थी। रात्रिकालीन अटूट सन्नाटे में नदी की मंद कल-कल! स्वाभाविक ही कानों के रास्ते उसके मन को झंकृत करने लगी। प्रकृति की मूल अवस्था के सान्निध्य में आते ही मंजरी उसके मन-मस्तिष्क में मुस्कुरा उठती थी! वह कमरे से निकल लिया;

पदचाप को नियंत्रण में करके, तीनों कमरों से आ रहे खर्राटों का सम्मान करते हुए। चौकी के पीछे उद्घाटन पत्थर पर बैठकर वह नदी के शांतिदायिनी दृश्य में खो गया। उसकी उंगली कब-कैसे मंजरी के नंबर पर चली गई खुद उसे पता न चला। वह चौंक पड़ा, मंजरी का व्हाट्सएप मैसेज कब से अनरीड पड़ा है! वह खुद पर खीझ उठा, वह कभी भी एक मॉडर्न लवर नहीं बन पाएगा। "...मैंने दिन में भी तुम्हें दो-तीन मैसेज किया है; मुझे पता है चार दिनों से पैदल चल रहे हो, शरीर और मन दोनों थक चुका होगा, कोई बात नहीं; आज का पड़ाव कहां है? कैसा है!" सवा नौ बजे भेजे गए इस मैसेज के ऊपर भी मंजरी के मैसेज पढ़कर उसका मन जागने लगा; देखते-देखते उसकी उंगलियों ने मनोभाव को स्क्रीन में जीवंत कर दिया, "...इटावा और ओरैय्या जिले के बीच एक गांव के बाहर उजड़ी फॉरेस्ट चौकी में आज का ठहराव है; गांववालों ने जीने लायक बनाए रखने में मदद की है।"

'...मैंने तुम्हारी नींद खराब तो नहीं कर दी!' मंजरी का रिप्लाई द्रुतगति से आया; पढ़कर रामू को लगा जैसे वह माफीनामे की मुद्रा में सामने आ खड़ी हुई हो।

'...नहीं! अभी नींद नहीं आ रही है; पूरा पैदल-परिवार तो सो चुका है, पर मैं चौकी के पीछे उद्घाटन पत्थर पर बैठा हूं,' उसने साधारण शब्दों में टाइप कर भेज दिया।

'...उद्घाटन पत्थर पर बैठे हो! यह क्या मजाक है, किस चीज का उद्घाटन करा रहे हो वहां?' मैसेज से लगा मंजरी उस जगह से रूबरू होना चाह रही है, जहां उसका रामू आधी रात को बेचैन हो रहा है।

'...अरे क्या बताऊं; यहां उद्घाटन के एक नहीं कई-कई पत्थर लगे हैं, पर काम तो धेले भर का भी नहीं दिख रहा है! इस पत्थर पर बैठे-बैठे मुझे लग रहा है जैसे संसद भवन के ऊपर कोई उल्लू बैठा हो,' टाइप कर सेंट करते उसे देर नहीं लगी।

'...इतनी रात गए भी पॉलिटिक्स की बातें करोगे! फिर तो मैं ऑफलाइन हो रही हूं,' मैसेज के साथ गुस्से से लाल चेहरे वाले ईमोजी ने रामू को आतंकित कर दिया।

'...सॉरी बाबा!' कान पकड़े ईमोजी के साथ उसने भेज दिया।

'...सच-सच बताओ चौकी के पीछे इतने अंधेरे में अकेले क्यों बैठे हो?'

'...चौकी के पीछे बह रही प्यारी-सी छोटी नदी ऐसी लग रही है जैसे तुम

नदी बनकर मुझे पुकार रही हो! इसलिए किनारे आ बैठा हूं,' बढ़ती धड़कनों को काबू में रखकर रामू ने सेंट कर दिया।

'...तो मजनूं रेगिस्तान में नहीं नदी के किनारे तड़प रहा है।'

'...मेरी प्यारी नन्ही मंजरी, सच कहूं तो नदी के किनारे इस वक्त मुझे उस नदी के किनारे वाली पहली मुलाकात याद आ रही है।'

'...अच्छा! यदि मैं वहां होती फिर तो तुम...' आगे के शब्द मंजरी ने छोड़ दिए।

'...यस! तुम यहां होती तो इस नदी के किनारे मैं तुम्हें...' रामू ने भी आगे के शब्द छोड़ दिए।

'...अपनी दीवानगी को दरिंदगी में मत बदलने देना; कहीं ऐसा ना हो कि साथ चल रही किसी बहन-भाभी के साथ ही...' मंजरी के मैसेज के साथ चेतावनी का टैग लगा था।

'...अरे हां! तुम्हें तो बताना भूल ही गया, वह लड़की है न अंकिता, उसकी आंखें अजीब-सी हुई जा रही हैं!'

'...तुम अभी तो युवक हो मर्द नहीं, तुम्हें भला क्या पता जवान लड़कियों की आंखें कैसे अपने मन का दर्पण बन पड़ती हैं; वैसे तुम होशियार रहना, कहीं वह तुम्हारे साथ ही...' मैसेज के साथ मंजरी ने संदेह वाला बड़ा-सा ईमोजी लगा दिया।

'...चलो रहने भी दो; गुड नाइट, लव यू!...' सेंट करते ही रामू पत्थर से उठकर चौकी की तरफ बढ़ने लगा; उसे महसूस हुआ नदी की कलकल धारा ने उसके अंदर के काम को जगा दिया है।

'...गुड नाइट, लव यू; वेट फॉर नेक्स्ट!...' मंजरी का मैसेज पढ़कर उसका मन और भी चंचल हो उठा।

"...के छिनभतार छि रेऐए...? गे माआय!..." अंकिता की चीख चौकी के अंदर-बाहर चस्पां हो गई। उस कमरे में सोए सभी हड़बड़ाकर नींद से बाहर आ गए। सभी ने सोचा शायद कोई बुरा सपना देख रही होगी। ठीक उसी क्षण माताजी चिल्ला उठी, "अरे, कोय लौंडा छियौ रौ!" फिर पागल जैसी छाती पीटने लगी, "आग लैग जेतो तोअर जवानीइ में...!" सभी महिलाएं उसी कमरे में सोई थीं, सब ने अंकिता को कंधे से संभाला; दूसरे कमरों से आए पुरुषों ने माताजी को सहारा दिया। महिलाओं ने अंकिता से पूछा, "कोई बुरा सपना देख गई क्या!" अंकिता गूंगी बनी रही। सत्तन ने माँ से पूछा, "तुम भी

सपने में भटकने लगी थी क्या माँ!"

"सपना नहीं रे बेटा, सच्ची में एक छौड़ा आया था! मैंने उसे कमरे से भागते देखा है यहां!" कांपते शरीर को संभालती हुई माताजी के बोल भी थरथरा रहे थे।

"तुम क्यों चिल्ला रही थी अंकिता?" सत्तन ने बड़े लाड़ से भतीजी से पूछा। अंकिता सिर झुकाए फर्श पर गड़ी रही।

"प्रणव आया था क्या!" दरवाजे पर आकर खड़े हुए अभिषेक ने पूछा।

"अरे भाई, फालतू बहस क्यों करते हो; प्रणव तो मेरे बगल में अभी तक सोया पड़ा था!" इसरार ने मन में उठे तकरार को दबाते हुए कहा।

"कोई आकर मुझे हौले से जगा रहा था, मैं नींद में थी; नींद खुलते ही चीख निकल गई, पहचान नहीं पाई कौन था।" अंकिता ने अब मुंह खोलना उचित समझा, नामों को लेकर कयास लगाने के विवाद को विराम देने खातिर।

"रामू कहां है जरा पता तो करो; वह आधे घंटे तक कमरे से बाहर कहां था? क्या कर रहा था!" भुवन की आवाज रात्रि के सन्नाटे पर भारी पड़ने लगी।

"भुवन भैया, सच में आप लोगों को अपने विरोधियों को निशाने पर लेते रहने की आदत पड़ी हुई है क्या?" रामना से रहा न गया।

"इतनी ऊंची आवाज में बोलोगे? फिर तो इस गांव के पंच-प्रधान पंचायत करने दौड़े आएंगे!" गरम होते माहौल को नरम करने की गरज से भुवन ने पते की बात की; आगे अपनी आवाज के चढ़ाव को रोक लिया, "पर रामू सामने क्यों नहीं आ रहा है? पीछे कहीं दुबके रहने के क्या मायने हैं!"

"भुवन भैया आप कहना क्या चाह रहे हैं? रामू के मन में अंकिता के लिए बदनीयती है!" अचंभित अंकित रोक ना पाया अपने को, अर्धरात्रि में दिन-जैसा माहौल होता देखकर।

"यदि ऐसा है तो हमारे टीम लीडर के नाम पर कलंक है वह!" भुवन रुके नहीं रुक रहा था।

"भुवन भैया, अपने-आप कुछ भी बोले जा रहे हो!" रामना उत्तेजित होने लगा।

"इसलिए बोले जा रहा हूं, क्योंकि रामू ने मुँह सिल रखा है!" भुवन चढ़ाई के आवेश में आने लगा।

"चुप तो मैं भी हूं भैयाजी!" दरवाजे के बाहर कब से खड़े इसरार की

चुप्पी अपने आप टूट गई; वह शुरू से ही भुवन की वाक्पटुता और रामू की मौन कातरता का मिलान करता आ रहा था, जैसे कोई मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कर रहा हो।

"हमारी भतीजी सही-सलामत है; हमें मामला नहीं बढ़ाना है, आगे जाकर तय करेंगे क्या करना है?" सत्तन पटाक्षेप करते हुए बोला।

"हम लोग इसी गांव में पड़े नहीं रह सकते हैं न! कल के सफर के लिए जरूरी है सभी अपनी-अपनी नींद पूरी कर लें।" पूर्णिया वाले बुजुर्ग रामश्री की आवाज में कल की चिंता थी।

फॉरेस्ट चौकी में सुबह तक शांति बनी रही, खांस-खराश के साथ।

6

सूरज उगने से पहले सभी नदी के शांत-शीतल जल में पुनः समर्पित दिख रहे थे। कल शाम के उमंग-स्नान से बिल्कुल विपरीत फिजां में; दैहिक श्रम-संवर्ग के वे सभी थे भी तो उसी विश्वास के परंपरा-पुरुष, कि सुबह-सुबह नदी के शीतल जल में स्नान लाभ से शरीर और मन दोनों ऊर्जावान हो उठते हैं। आगे बिना देर किए सामान समेटकर कमरों से सभी बाहर आ खड़े हुए। फॉरेस्ट चौकी से ही सभी ने उस गांव की तरफ शीश नवाया, जैसे कोई बड़े देवता हों; हां, आश्रय देनेवाले देवतुल्य ही तो होते हैं! सभी जीटी रोड़ की ओर जाने वाली सड़क पर चलने लगे। बीते चार दिनों में सुबह की तेज चाल के मुकाबले आज सभी के कदम धीमे पड़ रहे थे, जैसे गंभीरता की गठरी ढो रहे हों! यह अंदाज लगाना मुश्किल था, कि आज सभी के पैरों की मंद चाल शीतल-स्नान का परिणाम था या फिर व्यथित कर देने वाले रात्रि-दृष्टांत के परिणामस्वरूप! जीटी रोड़ पर चढ़ते ही सूरज का लालवर्णी गोला कारवां के सम्मुख हो आया। सुबह वाले सूरज का शीतल गोला भी आज उनके कदमों को स्पंदित नहीं कर पा रहा था। आज की दशा और दिशा पर रामू के मन में एक बड़ा-सा प्रश्न उग आया; उमंग-उत्साह के वशीभूत दिल्ली से रामघाट और आगे पूर्णिया तक पैदल चलने का दुस्साहस कहीं आत्मघाती कदम तो नहीं बन पड़ा है?

अभी चले हुए आधा घंटा भी नहीं हुए थे; धनिक लाल के नौ वर्षीय बेटे श्यामू के तलवे को जीटी रोड़ ने जैसे नीचे से पकड़ लिया। कारवां बढ़ता रहा पर वह जस का तस खड़ा रहा। धनिक लाल और उसकी पत्नी

को अचानक भान हुआ, श्यामू ने तो साथ छोड़ दिया? मुड़कर देखा, वह तो बीस-तीस गज पीछे ही रह गया था; मूर्ति जैसा एक ही जगह खड़ा? स्वाभाविक ही पूरा कारवां ठिठक गया। कुछ लोग श्यामू की तरफ बढ़ चले, उसके माँ-पिता के पीछे-पीछे। माँ-पिता के पास आने पर वह रुआंसा हो उठा, "अब मुझे नहीं जाना!" बोलकर वह उकड़ूँ होकर बैठ गया, वहीं! वहां तक आ पहुंचे लोगों को लगा यह तो सामान्य बाल हठ है। उसका माथा सहलाते हुए धनिक लाल ने समझाया, "बेटा अभी काफी दूर जाना है, वह देखो आगे कितने लोग हमारा इंतजार कर रहे हैं!" श्यामू झुंझला उठा, "कहां जा रहे हैं? किस गांव में भोज है!"

"भोज?" श्यामू के पास पहुंचकर रामू ने मुस्कुराकर पूछा।

"हां!" श्यामू अब उत्साहित होकर खड़ा हो गया, बोला, "किसी गांव में जब भोज होता है तब हम लोग पैदल चलकर भोज खाते हैं; चार-पांच दिन से चल रहा हूं, किसी गांव में कोई भोज तो दिखा नहीं?" रामू के पास आकर खड़ा भुवन धीरे से बोला, "किसको-किसको कब तक भ्रम में डाले रखोगे रामू! मैं तो कहता हूं आगे एक बड़ा शहर आने वाला है कानपुर, वहीं पार्टी वालों को बोलकर प्रशासन से चौदह अप्रैल तक का इंतजाम करवा लेंगे।" भुवन की हर बात में पार्टी का नाम आते ही रामू को पॉलिटिक्स की बू आने लगती थी; वह श्यामू पर ही केंद्रित रहा, "तुम चलो तो सही छोटे श्याम! आगे जरूर भोज होगा।" रामू ने श्यामू का माथा सहलाते हुए कहा।

"अंकिता दीदी की शादी का भोज होगा न!" श्यामू की आंखों में शरारत भरी उमंग दिखने लगी, जैसे कहना चाहता हो मैं तो सब कुछ जानता-समझता हूं! सभी एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। अब तक पूरा कारवां पीछे मुड़कर वहां आ खड़ा हुआ। श्यामू की बाल सुलभ निर्मल-निष्कपट बातें सुनकर सभी के चेहरे पर हँसी तैर गई; सुबह से अभी तक प्रतीक्षित मुस्कान की पहली खेप जैसी! जनाकांक्षा और सर्वसम्मति को भांपते हुए रामू को अंदर कुछ उद्‌भव होने-सा अनुभव हुआ; उसके मुंह से स्वतः निकल पड़ा, "हां-हां, अंकिता दीदी की शादी का भोज!" इतना सुनते ही श्यामू अपनी जगह पर उछल पड़ा, "याआआ अंकिता दीदी की शादी होगी और भोज भी!" फिर तो बिना रुके वह चल पड़ा; कारवां के आगे-आगे, अपनी दुलकी चाल से। अब तो कारवां के पैरों में भी जैसे पंख लग गए; मनभावन की प्रतीक्षा भले किसे नहीं गुदगुदाती है!

समूह में भुवन ही ऐसा था जिसकी चाल भारी हो चली थी। रामू के पास सरकते हुए उसने कहा, "देखो रामू, सबको साथ लेकर निकले हो तो नीति और नीयत भी सही होनी चाहिए।"

"यह तुम बोल रहे हो या तुम्हारी पार्टी?" भुवन पर गड़ते हुए रामू ने कहा।

"जब पार्टी से जुड़ा हूं तो पार्टी का प्रभाव ही समझ लो!" चलते हुए में भी भुवन की गर्दन तन गई, जैसे अंदर कोई शक्ति जाग रही हो।

"पार्टियों के नीति-नीयत से मेरा कोई लेना-देना नहीं, अभी हमारा टारगेट है हर हाल में रामघाट पहुंचना, फिर वहां फैल रहे करोना को रोकना; और बिहार की तरफ जाने वाले भाई लोगों को घर तक पहुंचने का उत्साह बनाए रखना..." चलते-चलते रामू बोलता भी जा रहा था, सांस को रास्ता देने के लिए स्वर रुका; भुवन बोल पड़ा, "मैं तो अभी भी कहता हूं आज के बाद आगे मत बढ़ो; किसी अच्छे ठिकाने पर चलकर दो-चार दिन इंतजार करते हैं बस-ट्रेन खुलने का।"

"आपको किसने बताया बस-ट्रेन खुल रही है?" रामू खिन्न होकर बोला।

"अरे भई, मैं दिनभर सोशल मीडिया से जुड़ा रहता हूँ, शाहदरा पार्टी ग्रुप में मैसेज आते रहते हैं; पार्टी मुख्यालय ने सभी पार्टी वर्कर से कह रखा है लोगों को पैदल मत चलने दो, जो जहां हैं वहीं रोको।"

"समूह सैंतालिस को तुम यमुना घाट से ही हर दिन रोकते आ रहे हो; रुका क्या!" रामू ने रुककर कहा; हर दिन भुवन की असंगत बातें सुन-सुनकर वह खिन्न हो उठा था।

"इसलिए आज सुबह मैंने पार्टी कार्यालय को समूह सैंतालिस के चलते रहने के बारे में सूचना दे दी है!" भुवन ने कहा तो रामू सन्न रह गया; लगा जैसे आसमान में बादलों में छिपी बिजली को पकड़कर जबरदस्ती धरती पर गिरा दिया हो!

"आई हेट पॉलिटिक्स भुवन भैया!" रामू ने भुवन की ओर देखते हुए कहा, भुवन सहम उठा; रामू उसकी आंखों को इस कदर घूरते हुए कभी नहीं बोला था। वह मंथन करने को मजबूर हो गया; क्या यह सिर्फ रामू की अप्रसन्नता है या देश में फैलते जा रहे असंतोष की लहर बिंदु?

"...अरे वाह! ...हा-हा-हा-हा-हा...!" पूरा कारवां एकबारगी खिलखिला उठा। खुशी और हँसी, मिश्रित होकर जीटी रोड़ और आसपास के खुले खेत में तरंग बनकर तैरने लगी। सभी जीटी रोड़ के ऊपर लगे होर्डिंग पर नजर

गड़ाए पढ़े जा रहे थे... कानपुर 28 किलोमीटर, प्रयागराज... फिर तो सभी के कदम विश्व-विजेता सेना के सिपाही की भांति चलने लगे!

दोपहर होते-होते आज सूरज काफी क्रुद्ध नजर आने लगा। नीचे जीटी रोड़ भी तपकर कल से ज्यादा प्रतिशोध पर उतर आया, जैसे सभी को चेता रहा हो... 'तुम सिर्फ गिनती के सैंतालिस हो, मैं हूँ सन् सैंतालिस की असली संतान! मेरे ऊपर चलते-चलते ट्रक-बस भी थककर सुस्ताने लगती हैं, जब तब कट-फटकर हार मान लेती हैं, फिर तुम तो खून-पानी वाले शरीरधारी हो!...'

अचानक सभी ने अपने को कस्बेनुमा शहर में पाया। एक बड़े कारवां को गुजरते देखकर पीत वस्त्रधारी पांच पुरुषों ने उन सभी से विश्राम स्थल चलने का आग्रह किया। अभी एक घंटे पहले उन लोगों ने भुवन की बातों पर ध्यान नहीं दिया था, अब याद आया भुवन ने मोबाइल मैसेज देखकर कहा था पार्टी प्रकोष्ठ ने आगे हेल्प मिलने का संदेश भेजा है। उन सभी को एक बड़ी हवेली के पीछे बड़े टीन शेड में ससम्मान लाया गया। विश्राम व्यवस्था देखकर सभी दंग रह गए; सामाजिक दूरी का ख्याल रखते हुए सभी के बैठने-लेटने की व्यवस्था की हुई थी। बिना देर किए सभी के हाथों में भोजन के पैकेट आ गए। ताजे भोजन की गंध-सुगंध भूखे मनुष्य के नथुने से होकर मन-मस्तिष्क में वह असर करती है जो पेट में जाकर भी नहीं कर सकती! आतिथ्य देनेवालों का समूह भुवन के प्रति आभार व्यक्त कर रहा था, "पार्टी के आप-जैसे निष्ठावान कार्यकर्ता के एक संदेश पर ही जरूरतमंदों की सूचना हम तक पहुंचा दी गई थी, पार्टी हित में बड़ा अच्छा काम किया आपने!" उन सभी की ओर भुवन ने धन्यवाद की मुद्रा में हाथ जोड़ा; गद्‌गद होकर अपने लोगों की तरफ नजरें घुमाईं, जैसे कहना चाह रहे हों समझदारी हो तो सब कुछ मुमकिन है! भुवन रामू के करीब जाकर खड़ा हुआ, रामू के मुंह से निकल गया, "याद आया एक-दो बार परवेज को बोलते सुना है, लोकतंत्र में जन ही प्रधान होता है, अब लोकतंत्र की परिभाषा बदल रही है जन की जगह पार्टी ही प्रधान होती गई है!" सभी थके मुसाफिर झपकी लेने लगे; रामू के पास जाकर भुवन धीरे से बोला, "तुम्हें अब यह कहना बंद कर देना चाहिए कि तुम्हें पार्टी-फार्टी से मतलब नहीं है; मुझे तो लग रहा है तुम राजनीति में आ जाओगे तो खतरनाक किस्म का तूफान खड़ा कर दोगे!"

"तुम्हारे प्रभु लोग हर महीने देश में नया तूफान खड़ा करते रहते हैं, कोई महीना खाली जाएगा तो मुझे याद दिलाना।" बोलकर रामू भी झपकी लेने

लगा। भुवन को समझ में नहीं आ रहा था, इतने बड़े संकट का सामना करते हुए भी पूरा कारवां, खासकर रामू, कभी दुखी क्यों नहीं दिखता!

7

"हम लोग इसी घर में क्यों नहीं रुक जाते बापू?" विश्राम के बाद कारवां के जीटी रोड़ पर आते ही बकेंद्र ने मासूमियत से पूछा।

"यह घर हम लोगों का नहीं है इसीलिए," पिता गणेश लाल ने सरल-स्वाभाविक उत्तर दिया।

"यह घर हम लोगों का क्यों नहीं है बापू!" उसकी जिज्ञासा जाग उठी, अगला प्रश्न छोड़ दिया। गणेश लाल के माथे पर बल पड़ गए; पांच दिन से कितना अच्छा-भला चुप था, आज खुलने का मतलब है जल्दी बंद नहीं होना! उसे पता है बकेंद्र भले ही नौ साल का हो गया है, चौथी में चला गया है, बकबक करने की आदत तो उसे बचपन से ही पड़ी है; तभी तो सभी ने उसका नाम ही बकेंद्र रख दिया था! वैसे परिवार को इस नाम पर कोई आपत्ति भी नहीं थी; सुरेंद्र-नरेंद्र-हरेंद्र-महेंद्र-जितेंद्र जैसे सैकड़ों नामों के बीच बकेंद्र जैसे नए नाम में उन्हें कोई बुराई नजर नहीं आई थी। वैसे यह बच्चा जब-तब बकबक करना शुरू नहीं करता था; दिमाग में किसी बात या घटना की प्रतिक्रिया-प्रतिध्वनि होने पर ही घंटा-दो घंटा तक वाचाल बन पड़ता। चार साल पहले पूर्णिया में डॉक्टर केशव प्रसाद को दिखाया था, उसने अंग्रेजी में किसी अजीब-से मस्तिष्क रोग का नाम बताया था। उसे याद आया इसके प्रश्न का कुछ भी जवाब नहीं देगा तो आगे सौ प्रश्नों की झड़ी लगा देगा; तो उसने सच ही बोल दिया, "क्योंकि हम लोग गरीब हैं।"

"हम लोग गरीब क्यों हैं?" बकेंद्र की आवाज इस बार थोड़ी ऊंची हो चली थी, जैसे अंदर कुछ जाग रहा हो। बढ़ते जा रहे कारवां में जिनके भी कानों में–"हम लोग गरीब क्यों हैं," की आवाज पड़ी तो दंग रह गए, छोटा बच्चा बड़ा सवाल कर रहा है! जवाब धनिक लाल ने दिया, ऊबते हुए, "क्योंकि भगवान ने हमें गरीब बनाया है।"

"अरे नहीं वाकेन्द्र, भगवान ने नहीं सरकार ने हम लोगों को गरीब बनाया है!" थोड़ा पीछे चल रहा रामू, बकेंद्र के पास आकर बोला।

"मेरा नाम बकेंद्र है रामू भैया!"

"बकेंद्र का मतलब निकलेगा फालतू बातें करने वालों का सरदार और

वाकेंद्र का मतलब होता है अच्छी बातें करने वालों का अगुआ!" रामू ने उसका माथा सहलाते हुए कहा। इस पर उसने खुद ही ताली बजाई जैसे उसे वाकेंद्र नाम ही पसंद है।

"लेकिन सरकार ने हम लोगों को गरीब क्यों बनाया?" वह फिर चालू हो गया था।

"यह तो सरकार ही जाने।" रामू को तुरंत कोई जवाब सूझ नहीं रहा था, इतने भर से काम चलाया। रामू का अनमना-सा जवाब सुनकर बकेंद्र चुप्पी के मोटे आवरण में सिमट गया। उसकी चुप्पी रामू को खटकने लगी, सोचा कोई नया प्रसंग शुरू किया जाए, "दिल्ली में तुम कहां रहते थे बकेंद्र।"

"वो है न इंडियाना हाइट! उसी के बाउंड्री के टीन घर में।"

"इंडियाना हाइट?" रामू ने कुछ ज्यादा ही अनजान बनते हुए कहा, बकेंद्र की मासूमियत का आनंद लेते रहने की खातिर।

"आप भी कमाल करते हो रामू भैया! आप तो राजा हो और इंडियाना हाइट नहीं जानते?" उसने रामू का मजाक उड़ाते हुए कहा। बेटे की वाचालता रोकने की खातिर गणेश लाल ने स्पष्ट किया, "दिलशाद गार्डन इलाके के जंगल में एक नया अपार्टमेंट खड़ा हो रहा है इंडियाना हाइट; हम लोग ठेकेदार के साथ वहीं लगे हैं, उसी की बाउंड्री में टिन शेड डालकर रहते हैं।"

इतना कुछ जानने के बाद बकेंद्र पर रामू की रुचि बढ़ गई, उसने वार्ता जारी रखी, "तुम्हारे पिताजी लोग वहां काम करते हैं; और तुम क्या करते हो दिनभर?"

"रामू भैया, आप मुझे बुद्धू मत समझना! झिलमिल बस्ती के झोपड़ी वाले बच्चों के स्कूल में मेरा नाम भी लिखा दिया है बापू ने; अभी करोना में ही मेरा नाम भी क्लास फोर में चढ़ गया तो!" अपनी पहचान बताते हुए बकेंद्र का मुख-मंडल गौरवान्वित हो उठा।

"स्कूल जाते हो? भेरी गुड! और क्या-क्या करते हो!"

"जब स्कूल से वापस आता हूं तो माँ-बापू के पास चला जाता हूं," अब वह उन्मुक्त जीटी रोड़ पर मचलते हुए चलकर जवाब देने लगा, जैसे सच में अभी-अभी स्कूल से वापस आकर अपनी मनमर्जी की दिशा में चला जा रहा हो। बकेंद्र की बाल-सुलभ चपलता देखकर आसपास चलनेवाले लोगों के चेहरे पर मुस्कुराहट की रेखाएं खिंच आईं; पैदल चलते रहने की थकावट और मन की पीड़ा दोनों जैसे तत्क्षण दूर होती गई हों।

"माँ-बापू के पास जाकर क्या करते हो," चलते हुए भी रामू को कुछ न कुछ पूछना ही था।

"माँ ईंटा-बालू देती रहती है सलीम मिस्त्री को; बापू बढ़ई का काम करता है," बोलते-बोलते वह माँ की तरफ खिसक गया। अब वार्तालाप की शृंखला रामू से हटकर माँ पर केंद्रित हो गई, "माँ तुम इतने ईंटें और कितने तो गमले भर-भरकर मशाला दिए सलीम चाचा को; इतना बड़ा! ऊंचा, और ऊंचा!!..." बोलने के दरमियान वह अपना दाहिना हाथ ऊपर आसमान की ओर उठाता ही जा रहा था, फिर बोलता गया, "बिल्डिंग तो बन गया है; हम लोग उसमें कब रहेंगे?"

"हम लोग उसमें क्यों रहेंगे? वह हमारा थोड़ी न है!" माँ ने बिना कोई रुचि दिखाए जवाब दे दिया।

"वह हमारा कब होगा?" बकेंद्र भला कब रुकने वाला था।

"चल हट मेरे बगल से, बापू के पास जा; मेरा दिमाग मत खा, सर चकरा रहा है धूप में चलते हुए," माँ ने बेरुखी से जवाब दिया। माँ के हाथों जब-तब पिटाई उसे बखूबी याद थी, वह धीरे से बापू के पास पहुंच गया, लंबा मुँह लिए; जैसे मन में प्रश्नों की भारी गठरी ढो रहा हो। कहीं दूर कुछ खोजती आंखें लिए उसने बापू से पूछा, "छेनी-रंदा से आप इतना अच्छा-अच्छा फर्नीचर कैसे बना लेते हो बापू! इंडियाना में कितने अच्छे अलमारी और पलंग बनाए हैं आपने," बाल मुख से ही सही पहली बार अपने काम की तारीफ सुनकर उसने जवाब दिया, "हां बेटा एक से बढ़कर एक अच्छा आइटम बनाता हूं मैं; तुम जब बड़ा होगा कुछ करने लगेगा तब तुम्हारे लिए भी बनाऊंगा।"

"इंडियाना में आपने जो बनाया है वह आपका है! इसीलिए मेरे लिए दूसरा बनाएंगे?" पूछकर और तेजी से उछलने लगा, बनाए गए ढेर सारे फर्नीचर बापू के होने की उमंग में।

"पगला! वह सब अपना थोड़ी न है।"

"तो किसका है?"

"जिसने फ्लैट बुक कराया है।"

"कमल भैया ने वहां के बाथरूम में इतना सुंदर-सुंदर टाइल लगाया है तो वहां पखाना नहीं करेगा कमल भैया?" बकेंद्र की वाचालता बढ़ती ही जा रही थी, बाल-सुलभ जिज्ञासा अब कारवां के लोगों को मानसिक थकावट

देने लगी। उसका भतीजा कमल वहां पखाना करेगा या नहीं करेगा गणेश लाल इसका भला क्या जवाब देता; टालने के गरज से कह दिया, "कमल भैया से ही पूछ लो।"

वह कारवां के अग्रिम पंक्ति में चल रहे कमल के पास जा पहुंचा और अंदर से तीर जैसा प्रश्न बाहर आया, "कमल भैया आपने इंडियाना में जो अच्छे-अच्छे बाथरूम बनाए हो उसमें आप भी लैट्रिन करोगे न!" उसके प्रश्न पूछने की निश्छलता से कमल को अपने नन्हे भाई पर हास्यपूर्ण प्यार आया; उसका माथा सहलाते हुए बोला, "नहीं रे पगले! वह बाथरूम अपने थोड़े न हैं।"

"फिर किसका है?" अबूझ बकेंद्र ने खिन्न होकर पूछा।

"जिसने इंडियाना के मालिक को पैसे दिए हैं उसके हैं," कमल का सच-सहज सा जवाब था।

"किसने पैसे दिए हैं इंडियाना को?" बकेंद्र ने कठोर मुद्रा बनाकर पूछा, एकाएक रुकते हुए।

"नेता और अफसर ने," सामान्य प्रश्न का सरल-सा जवाब दिया कमल ने। पीछे से आकर उसकी पीठ में एक थाप लगाते हुए माँ भनभना उठी, "सबका दिमाग खाना बंद नहीं किया तो चार तेज-तेज थाप दूंगी अभी दोनों गालों में!"

"अरे चाची, बच्चा है मन बहलाने के लिए ही तो बोल रहा है," कमल ने नन्हे भाई का बचाव किया। उसका सहारा पाकर माँ की थाप से अंदर को जा दुबकी हिम्मत फिर से बाहर आने लगी, "कमल भैया; आप नेता-अफसर क्यों नहीं हो?" बकेंद्र का आसान प्रश्न बड़ा जटिल बन गया कमल के लिए; नेता-अफसर नहीं बन पाने के लिए भला क्या-क्या व्याख्या पेश करता वह। उसे तो ठीक से पता भी नहीं है कि किसी के नेता-अफसर बनने के पीछे क्या-क्या कारक हैं! चाचा और रामू द्वारा कुछ देर पहले बकेंद्र को दिए उत्तर उसे याद आए; वही आसान-सा उत्तर मुंह से निकल गया, "सरकार जाने।"

नेता-अफसर वाला बक-खेल बकेंद्र को रुचिपूर्ण नहीं लगा। मुंह खुलने का मुहूर्त शुरू हो चुका था तो इतनी जल्दी भला बंद कैसे हो; वह फिर से बापू की कमर पकड़कर चलने लगा, और धीरे से चालू हो गया, "हम लोग घर क्यों जा रहे हैं बापू?"

"क्योंकि दिल्ली में काम-धंधा बंद हो गया है," गणेश लाल ने जीटी रोड़

को दूर तक देखते हुए कहा।

"काम-धंधा क्यों बंद हो गया है?" बकेंद्र ने माथा खुजलाते हुए पूछा।

"कोरोना आ गया है इसलिए," मामला कोरोना पर आकर अटकने से गणेश लाल ने चैन की सांस ली, अब बकेंद्र की बकबकी बंद हो जाएगी।

"करोना किसने लाया है?" पूरी देह में ऐंठन-सा लाते हुए बकेंद्र ने पूछा।

"सरकार के लोगों ने!" जवाब पीछे से कमल ने दिया।

"आप तो कमल भैया हो, आप सरकार हो! आप बात को टालिए मत ठीक-ठीक उत्तर दीजिए, करोना किसने लाया?" बकेंद्र झुंझला उठा।

"अरे तुम क्यों मेरे पीछे पड़े हो, मैं सरकार थोड़े न हूं," कमल ने पल्ला झाड़ना चाहा।

"पर सब तो कहते हैं कमल ही सरकार होती है!" बोलकर वह कमल की ओर टकटकी लगाए देखने लगा।

"हां रे बाबू, जिसकी सरकार बनती है वही सरकार चलाता है," कमल ने अपने ज्ञान भर बताया।

"सरकार क्यों बनती है बापू?" पूछते हुए वह बापू के सामने खड़ा हो गया, जैसे पूरे भारत देश का हिसाब माँग रहा हो उनसे। बढ़ती जा रही गर्मी में गणेश लाल को भला क्या जवाब सूझता! उसका पारा एकाएक चढ़ गया; उसकी जोरदार लात अपने आप बकेंद्र की छाती पर जा लगी। चौड़े-चिकने जीटी रोड़ पर वह जा गिरा। एक बच्चे के गिरते ही सारे लोग उसकी तरफ दौड़ पड़े। सड़क पर गिरा-पड़ा बकेंद्र रोने के बजाए हँसने लगा, सोचकर कि यह लात बापू की नहीं सरकार की है! उन्मुक्त हँसी धीरे-धीरे खौफनाक हँसी में बदलने लगी। गणेश लाल सिहर उठा। गोल घेरे में खड़े लोग चौंक उठे, लगा यह ललकारपूर्ण हँसी बकेंद्र के मुंह से नहीं भारत की मिट्टी से निकल रही है। रामना ने आगे बढ़कर बकेंद्र का हाथ थामकर खड़ा किया। क्षणभर पहले खौफनाक अट्टहास वाला बालक अब पस्त पड़ चुका था, अंतहीन मौन की छोर थामकर। उसके डरावने मौन को देखकर लग रहा था जैसे पूरे देश के मौन का प्रतिनिधि हो। कौतूहलपूर्ण प्रश्न करनेवाले चंचल बच्चे को पस्त पड़ता देख स्वाभाविक ही कारवां की चाल भी सुस्त पड़ गई। वैसे भी सामने का बोर्ड कानपुर को मात्र बारह किलोमीटर बता रहा था।

...हुईईइइ...हुईईइइइइ...अचानक पुलिस की गाड़ियां सायरन बजाती हुईं कारवां की तरफ आने लगीं। पूरी सड़क पर छितरकर चल रहे सभी लोग

स्वभावत: किनारे हो लिए; पुलिस की गाड़ी जितनी तेजी से निकल जाए उतना अच्छा! ...सुईइइ...सुईइसुईइ... यह क्या! पुलिस की कई गाड़ियाँ कारवां के पास आकर धीमे से रुक गईं; पीछे से एक खाली बस भी। गाड़ी से उतरकर पुलिसवालों ने देखते-ही-देखते पूरे कारवां को घेर लिया। कुछ लोग सड़क की रेलिंग फांदकर नीचे भागने लगे। भरपेट खाने वाले की चुस्त-दौड़ के सामने खाली पेट वालों का सुस्त भागम-भाग भला कहां टिक पाता। हर चेहरे में खौफ उतर आया। सिर्फ भुवन बीच सड़क पर तनकर खड़ा था, जैसे किसी मजबूत स्तंभ पर टिका हो।

"साहब हमलोग चोर-मवाली नहीं हैं; अपने-अपने घर के लिए पैदल ही निकल पड़े हैं, मजबूरी में," आगे बढ़कर पुलिस के सामने हाथ जोड़ते हुए रामू ने कहा।

"आप कहां से आ रहे हो?" इंस्पेक्टर ने भले मानुष जैसा कहा।

"दिल्ली से आ रहे हैं हुजूर," रामू का हाथ मजबूत करने की खातिर रामना आगे आकर बोला।

"दिल्ली में तो काफी कोरोना है जी!" एक स्टारवाले दरोगा ने आंखें टेढ़ी कीं।

"साहब हम लोगों के पास कोई कोरोना-सरोना नहीं है।" अंकित ने रामू का साथ नहीं छोड़ा था।

सड़क के बिल्कुल किनारे दूसरा दरोगा इसरार को नीचे से ऊपर गौर से देखे जा रहा था; उसने कान पकड़ते हुए कहा, "हुजूर मैं जमाती नहीं हूं! तीन-चार महीने से तो मस्जिद भी नहीं गया हूं!"

"मस्जिद जाने के लिए किसने मना किया है!" एक सिपाही ने चिढ़ते हुए कहा "साहब पेट देखें कि मस्जिद जावें।" इसरार चिरौरी करने लगा। तभी इंस्पेक्टर की दोस्ताना आवाज पूरे कारवां के ऊपर उड़ चली, "सभी लोग कृपया बस में बैठ जाएं।"

"हां बेटा, सूरज भगवान तेरा भला करे; हमरार के अपन घर पुरैनिया छोड़ देहि बेटा।" सत्तन की माँ आंचल उठाकर सूरज को नमन करने लगी।

"माँजी हम आपको पूर्णिया नहीं छोड़नेवाले!" दरोगा ने स्पष्ट कर दिया।

"फिर कहां ले जा रहे हैं? हमारा अपराध तो बताइए!" रामू परेशान हो उठा था फरमान सुनकर।

"आप बहुत ज्यादा बहस कर रहे हैं; कानून जहां कहेगा हम आपको वहीं

ले जाएंगे न!" इंस्पेक्टर की आवाज में सख्ती आ गई। पुलिसवालों की सख्ती देखकर सभी को अपने कार्य क्षेत्र और विगत में वहां घटित घटनाएं स्मृति में उभरने लगीं। गणेश लाल पुलिसवालों के पैर छूने जैसा करते हुए बोला, "साहब मैं मानता हूं इंडियाना के मालिकों ने कस्टमर का बड़ा-बड़ा अमाउंट ठग लिया है; और एक-दो फ्लैट तैयार दिखाकर पजेशन देने का फर्जीवाड़ा चल रहा है, पर मैं तो वहां का एक मामूली बढ़ई हूं।"

"साहब हमारे झोंपड़पट्टी से एक नाबालिग को मार्च में गायब कराया गया था; उन सभी ने उसकी इज्जत बिगाड़कर उसे हिंडन में दफना दिया था, पर मैं उस दिन वहां नहीं था!" अजहर माथा पकड़कर जमीन पर बैठते हुए अपने-आप बकने लगा।

"क्या बताऊं साहब! दिल्ली दंगा के वक्त नेताजी ने हम लोगों पर काफी दबाव बनाया पत्थर-लाठी लेकर तैयार रहने के लिए, पर हम लोग तैयार नहीं हुए थे।" प्रकाश दिल्ली दंगे पर प्रकाश डालने लगा।

"सच-सच बता रहा हूं साहब," मुजीब कान पकड़कर उठ-बैठ करते हुए बोलने लगा, "मैं मात्र एक दिन शाहिनबाग गया था, दोबारा फिर कभी नहीं गया; घर में मेरी बेटी टीबी से बेदम पड़ी है, मैं भला मजदूरी नगा कैसे कर सकता था!"

"..."

"..."

इतने सारे कबूलनामे के बावजूद पुलिस का घेरा टूटता नहीं दिख रहा था। आत्मसमर्पण की मुद्रा में हाथ ऊपर उठाते हुए रामू ने कहा, अंतिम आजमाइश के तौर पर, "यह सच है कि मैं पार्लियामेंट में पर्ची बम फेंकने वाला था, पर वह देश को करोना से बचाने की खातिर एक जरूरी एक्शन था।"

"अरे नेताजी आजकल ऐसे-वैसे भगत सिंह भरे पड़े हैं! पुलिसवालों को फुर्सत है मशरूम जैसे जन्मने-पनपने वाले भगत सिंह को गिनने की! तुम फेंको बम संसद में, जी भरकर फेंको; किसने रोका है तुम्हें!" रामू के कंधे पर उत्साहपूर्ण थपकी बजाते हुए इंस्पेक्टर बोला। रामना की नजर एकाएक भुवन पर पड़ी; एक किनारे खड़ा वह मोबाइल में कुछ टाइप करने में मशगूल था, मुस्कान के साथ। रामना के दिमाग में बिजली-सी चमक उठी; सामूहिक माफीनामे भांति बोला, "हुजूर हम लोगों में से कुछ लोगों ने भले ही पार्टी को वोट ना दिया हो, लेकिन हम सभी शपथपूर्वक वचन देते हैं आगे हम

लोग पार्टी के पीछे खड़े रहेंगे।"

"नो पॉलिटिक्स प्लीज!" इंस्पेक्टर भन्ना उठा।

"इसका मतलब!" झुंड के बीच से आवाज आई।

"मतलब यह कि चुपचाप बस में बैठिए!" पीछे खड़े दरोगा ने चेतावनीपूर्ण सख्ती दिखाई।

"लेकिन हम लोगों को किस कानून के तहत बस में जबरदस्ती बैठाया जा रहा है!" रामू ने पूछने का साहस किया; इंस्पेक्टर को लगा यह लौंडा तो उसके एकाधिकार को चुनौती दे रहा है! उसने ऊंची आवाज में कहा, पूरी भीड़ को सुनाते हुए, "इपिडेमिक एक्ट!"

फिर तो भीड़ बस की तरफ बढ़ती गई; भय और आश्चर्य से बड़ी आंखें लिए हुए, भुनभुनाते बुदबदाते हुए...एपिडेमिक एक्ट...? एक्ट...? एपिडेमिक...?? एपिडेमिक एक्ट!

अध्याय दो

1

शाम चार बजे बस एल आकार में बने भवन के विशाल परिसर में आकर रुकी, सैंतालिस प्रवासियों को लिए। पुलिस की गाड़ियां कब कहां किधर मुड़ गईं बस में बैठे प्रवासियों को पता ना चला; पुलिस वाली एक जिप्सी जरूर आ गई थी पीछे से। सभी प्रवासी बस से उतरकर खुले प्रांगण में जी भर कर सांस लेने लगे, जैसे अंतहीन नरक के खुले मैदान में आ गए हों। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मानिकपुर कानपुर देहात... पढ़कर सभी एक-दूसरे को देखने लगे; जैसे सब गूंगे एक-दूसरे से प्रश्न कर रहे हों, आखिर यह कैसा विद्यालय है जहां बच्चे-बूढ़े, औरत-मर्द सभी को एक साथ पढ़ाया जाएगा! दो मंजिले भवन में एल की पड़ी भुजा में नीचे चार कमरे थे, ऊपर भी उतने ही; खड़ी भुजा में नीचे छह कमरे तो ऊपर भी उतने ही। बस के आते ही सिर से पैर तक आवरण में ढके तीन-चार आदमी कार्यालय से बाहर आए। वे धीरे-धीरे बस की तरफ बढ़ने लगे जैसे कवचधारी अंतरिक्ष वैज्ञानिक वायु शून्य अंतरिक्ष में स्पेस वॉक् कर रहे हों। कवचधारियों ने संकेत से सभी प्रवासियों को दो लाइन में लगाया, जनाना और मर्दाना अलग-अलग। तीन फीट की दूरी पर खड़े होने का उंगली से संकेत किया, नाक से आवाज निकालकर। सभी को मास्क पहनने का तरीका बताया गया, बिना यह पता किए कि उनके पास मास्क है भी या नहीं! तब दोनों पंक्तियों को आजू-बाजू के तीन कमरों में जाने का ससम्मान इशारा किया, जैसे भोज की पांत में बैठने का आमंत्रण हो। भोज की पांत ना सही, आधे घंटे के अंदर सभी को पूड़ी और सूखी सब्जी का पैकेट वितरित हुआ।

पैकेट बंटने तक सभी का चिंतन पेट में ही चित्त पड़ा था, भोजनोपरांत

सभी नई-नई चिंता से घिरते गए ...यहां क्यों लाया गया है? ...यहां कब तक रहना पड़ेगा? ...खाना सुबह-शाम मिलेगा या सिर्फ एक टाइम! ...आगे घर जाने के लिए बस-ट्रेन कब मिलेगी?... मर्द प्रवासी अब अपने कमरे में दो-तीन झुंड बनाकर तर्क-वितर्क करने लगे। औरतें एक-दूसरे से सटकर कानाफूसी किस्म की बातों में मशगूल होती गईं। एक कवचधारी की नजर कमरे की तरफ गई, उसने बरामदे में जाकर लाल-पीला होने जैसा हाव-भाव बनाया। जनाना कमरे से आवाज आई ...गूंगा है क्या! बोलकर वे सभी कवचधारी पर खिलखिलाकर हँस पड़े। उपहास के प्रतिउत्तर में कवचधारी ने फेस शील्ड और मास्क हटा डाला, भारी आवाज में बोला, "आप सभी को कोरोना प्रोटोकॉल के दायरे में रहना है।"

"कोरोना प्रोटोकॉल! सो क्यों? हम लोगों में किसी को भी कोरोना नहीं हुआ है।" बोलकर रामना ने अपनी जीभ आगे निकाल दी, हथेली भी फैला दी। सभी ने उसकी नकल करते हुए बड़ी-बड़ी जीभ निकाल ली और अपनी हथेलियां भी बढ़ा दीं। दूसरे कमरे के औरत-बच्चे बाहर बरामदे में जमने लगे। अजीब तमाशा देखकर कार्यालय से दो-तीन कवचधारी तेजी से दौड़े आए, जैसे कहीं लगी आग बुझाने दौड़ रहे हों। कवचधारी बारी-बारी से उद्घोषणा के अंदाज में बोलते गए ...सभी लोग अपना-अपना मास्क तुरंत पहन लें, ...सभी लोग तीन फीट की दूरी बनाए रखें, ...माता-बहनें गांव घर जैसा एक-दूसरे से मुंह सटाकर बात ना किया करें, ...स्कूल के बाथरूम में घंटे-दो घंटे में साबुन से बीस सेकंड तक हाथ जरूर धोएं, ...जब भी कोई चीज छुएं तो हथेलियों में सैनिटाइजर मसलें... कवचधारियों की मास्क के अंदर से एकसुरा उद्घोषणा जारी थी कि सत्तन की माँ का धैर्य जवाब दे गया, वह उफन पड़ी, "वह सब तो ठीक है बाबू लोगन, पर यह सब क्या तमाशा है?"

"माँ जी आप सभी दो सप्ताह के लिए क्वारंटाइन सेंटर में लाए गए हैं।" सभी कवचधारियों के मुंह से कोरस-सा निकला।

"क्वारंटीन?... क्वारंटीइईन?... गारंटीन?... वारंटीन?..." तीनों कमरों से विविध उच्चारण वाले कोरस से स्कूल प्रांगण तरंगित हो उठा।

रात्रि आठ बजे तीन-चार लोग बरामदे में भोजन के पैकेट चुपके से रखकर वापस जाने लगे, तेजी से। परिसर में फैले अंधेरे में तीन-चार चलायमान सायों पर रामना की नजर पड़ी; उसने आवाज लगाई, "कौन हो भैया, क्यों भाग रहे हो!"

"हम ठेकेदार के आदमी हैं, मेरा काम है जिले के हर क्वारंटन सेंटर पर खाने का थैला थमा देना।" बिना मुड़े ही एक साए ने जवाब दिया।

"क्वारंटीन सेंटर कहां से टपक गया," अंकित ने अचंभित होकर पूछा।

"टपक नहीं गया, सरकार ने जिले भर में बना रखे हैं कई क्वारंटन सेंटर," अंधेरे में स्थिर हो चुके साए में से आवाज आई।

"उतनी दूर से आपकी बात ठीक-ठीक समझ में नहीं आ रही है, जरा सामने आ कर बात तो करो।" अंकित ने गुजारिश की।

"माफ करना भैया! हम लोगों को कोरोना का ट्रेनिंग दिया गया है, कोरोना वायरस से दूरी बनाए रखनी है।" साए से आवाज आई; हाथ जोड़ने का रेखाचित्र भी बनता दिखाई दिया अंधेरे में।

"सुनो भाई साहब, हम सब पर जरा तरस खाओ, अनजान-सुनसान जगह में रात को भला कैसे रहेंगे! ऑफिस वाले भी तो हम सभी को छोड़ कर चले गए हैं।" सत्तन ने हाथ जोड़ा।

"कौन कहता है यह सुनसान जगह है, दोनों तरफ बड़ी-बड़ी बस्ती हैं!" एक साए से उपहासभरी आवाज निकली।

"मालूम तो नहीं पड़ रहा है नजदीक में कोई बस्ती है?" बरामदे से दाएं-बाएं झांकते हुए इसरार ने कहा।

"अरे भाई! कोरोना का कहर चारों तरफ फैला हुआ है, सभी लोग अपने-अपने घरों में दुबके पड़े हैं; प्रधानमंत्रीजी मूर्ख थोड़े न हैं जो लॉकडॉन लगाया है।" अंधेरे में सबसे आगे खड़ा साया बोला, अपने को सबसे समझदार साबित करते हुए। सभी साए गेट की ओर बढ़ गए।

"लेकिन उन बस्तियों में घरों के बाहर कोई लाइट नहीं जल रही है!" उन बस्तियों में लाइट न देखकर रामू ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

"इस कोरोना सेंटर में भी तो बाहर कोई बल्ब नहीं है!" एक साए ने तरीके से कहा; सभी साए खिलखिलाकर हँस पड़े। अंधेरे से आई भुतहा बातें सुनकर कमरे में दुबके लोगों के चेहरे पर आतंक पसरने लगा।

बाहर फैले डरावने अंधेरे और प्रवासियों के बीच दीवार बनाने की खातिर रामू ने कई साहसिक उपाख्यान सुनाए; सभी सोने की स्थिति में चले गए। पर वह स्वयं सन्नाटे में सुन्न पड़ता गया; उसे महसूस होने लगा जैसे यह विद्यालय पूरी दुनिया में फैले अंधेरे का केंद्र बिंदु हो! परिसर के अंदर-बाहर किसी आदमी की पदचाप तक नहीं! दूर-दूर तक उम्मीद की किरण-सी

कोई बिजली-बत्ती नहीं! अभी तक समूह सैंतालिस एक शक्ति समूह जैसा दिख रहा था, अपनी लंबाई पर इठलाते जीटी रोड़ के गुमान को रौंद कर आगे बढ़ता शक्तिपुंज-सा; आज पहली बार लगा अब तो इसमें सात जनों के बराबर भी ताकत नहीं रह गई है! इसकी मुख्य वजह या मनोविज्ञान क्या हो सकता है? कहीं सबके अंदर कोरोना से बचाव ना होने की असुरक्षा की भावना तो नहीं पनप उठी है!...

"...बाप रे बाप! आज ग्यारह अप्रैल को कोरोना का आंकड़ा दो हजार पार कर गया!..." बरामदे में लेटे-लेटे मोबाइल स्क्रीन में गड़ा अभिषेक एकाएक चिल्ला उठा, फिर कमरे के अंदर जाकर दुबक लिया।

"अभिषेक सही बोल रहा है; आज एक दिन में रिकॉर्ड दो हजार केस सामने आया है," अभिषेक की सूचना को पुख्ता करते हुए शंकर की डरावनी आवाज आई। मोबाइल में कोरोना वायरस के कांटेदार स्पाइक देखकर उसके हाथ कांपने लगे, डर के मारे हाथ का मोबाइल ढीला पड़कर नीचे गिर पड़ा। अभिषेक और शंकर के मुंह से अपशकुन सुनकर दोनों कमरों में अर्ध-निद्रा तक पहुंचे लोग घबराकर कमरे में खड़े होने लगे; जैसे कोरोना अदृश्य पैरों से चलकर आता हुआ कोई जीव-जंतु हो और सोए हुए मनुष्यों को सीधे रौंद डालेगा!

"हम लोग अपनी बेवकूफी से मारे जाएंगे; करोना तो आदमी को अंधेरे में भी देख लेता है, मनुष्य पर नजर पड़ते ही करोना की स्पीड बढ़ जाती है! रात को कमरे में सो जाने में ही बुद्धिमानी है।" रामू ने रहस्यमयी आवाज में कहा; सभी सोने की स्थिति में जाने लगे, धीरे-धीरे ही सही। कोरोना अपडेट चेक करने को रामू ने मोबाइल स्क्रीन पर नजर डाली; मंजरी का मैसेज देखकर चेहरे में मंद मुस्कान तैर गई '...आज साढ़े नौ बजे वीसी है, नीचे लिंक भेज रही हूं...। उसने घड़ी देखी, मन में स्व-वार्ता हुई ...अरे वीसी में तो बस दो मिनट ही बचे हैं!

"...सभी साथियों को जय हिंद, खासकर रामू उर्फ भगत सिंह का विशेष रूप से स्वागत है! बिचारे गए थे संसद में बम फेंकने और अब सजा के तौर पर आधे हिंदुस्तान की पदयात्रा करनी पड़ रही है; क्यों हमारे सबके प्रभु राम! चले थे जगत का कल्याण करने लेकिन फंस गए वनवास में, वो भी बिना मंजरी के! अब तो पहले अपना ख्याल रखिए और अपने कारवां का कल्याण कीजिए..." शुरू करते ही सहज ने सबके मन के द्वार खोल दिए।

"आज तुम्हारी पदयात्रा का चौथा दिन है, सभी सही-सलामत तो हो..." पूछते हुए शायनी की आवाज में चिंता झलक रही थी।

"अरे रामू तुम इतने गुमसुम क्यों हो? तुम्हारे बैकग्राउंड में काफी अंधेरा दिख रहा है! कहीं मन में ख्वाब तो नहीं पल रहा है कि काश अंधेरे में वहां मंजरी होती! पर वह तो यहां भीसी में मुस्कुराती दिख रही है!..." परवेज ने रामू को छेड़ा; वीसी से जुड़े सभी साथी खिलखिला पड़े।

"हम दोनों तो उजाले में मिल चुके हैं! अंधेरे की अब जरूरत नहीं रही; दोनों अभी तो काफी दूर हैं एक-दूसरे से, फिर भी छेड़ने के लिए हम दोनों ही मिले थे तुम्हें, क्यों परवेज! सहज और शायनी दोनों वहीं हैं, पहले उन दोनों का इंतजाम तो कराओ..." रामू की रूमानियत बाहर आने लगी।

"इंतजाम! कैसो इंतजाम?..." सहज तरंगित हो उठा।

"अरे भाई, इतने लंबे लॉकडाउन में तुम दोनों कहीं एक जगह लॉक कर लेते अपने को! फिर तो लॉकडाउन फेस्टिवल इंजॉय करते रहते लंबे समय तक..." बोलने के दौरान रामू की भाव-भंगिमा रोमाँटिक हो चली।

"अब चुप भी करो यार; हम अभी बीस-बाईस के हैं तो इसका मतलब क्या है कि कोरोना टाइम में जरूरी काम की बात करें ही नहीं!..." शायनी को ये सब सुनना अटपटा लग रहा था।

"काम की बात के लिए ही तो चार दिन पैदल चल चुका हूं, आगे ना जाने और कितने दिन चलने पड़ेंगे! तुम सभी को क्या लगता है मंजरी से शादी रचाने के लिए मैं लॉकडाउन में उतावला हो उठा हूं! इसलिए पैदल निकल पड़ा हूं?..." रामू बोला तो लगा रोमाँस एक झटके में कहीं अंदर दुबक गया हो।

"...नो रामू, प्लीज डोंट टेक इट अदरवाइज; यह तो बताओ अब तक का सफर कैसे रहा है? तुम्हारी लंबी पैदल मार्च के बारे में सुनकर मुझे तो इतिहास में पढ़ी आचार्य विनोबा भावे की भूदान यात्रा की याद आ रही है. .." अलग-अलग शब्दों में अलग-अलग दबाव बनाकर बोलते हुए अहम ने दार्शनिक अंदाज में कहा।

"कानपुर पुलिस ने आज हम लोगों को बीच रास्ते से उठाकर एक सुनसान स्कूल में डंप कर दिया है, प्रवासियों के अलावे सरकार का कोई आदमी नहीं दिख रहा है इस भयावह सन्नाटे में; अहम, परवेज, शायनी और सहज! मैं तो तुम लोगों जैसी बड़ी पढ़ाई नहीं कर पाया, पर ठीक-ठीक देख पा रहा हूँ ऐसे

विकट समय में राजा राजगद्दी में बैठा है और प्रजा पैदल हो चली है! और तुम चारों विद्वान रामघाट में ज्ञान की गठरी लेकर बैठे हो! इस कोरोना का देश-काल में क्या दूरगमी प्रभाव पड़ेगा इसका सही आकलन तो तुम लोग ही कर सकते हो! तुम चारों से मैं तो यही उम्मीद रखता हूं अपने-अपने फील्ड में एक नई दृष्टि की रोशनी से जरूर देखना देश-दुनिया को; सच कहूं तो पैदल चलने की ताकत हमें यहां कई किनारों से मिल रही है; साथ चलने वाले जन-जन से, रामघाट में मंजरी का साथ पाने की ख्वाहिश से और तुम चारों की नव दृष्टि के प्रकाश-पुंज से!..." वीसी के आरंभ में गुमसुम दिखने वाला रामू क्रियाशील तत्व-सा दमकने लगा।

'...जन-जन की सामूहिक शक्ति मनोविज्ञान के साथ-साथ मानव जीवन का एक बड़ा दर्शन भी है!' रामू की बातों में गूढ़ तत्व को पकड़ते हुए अहम ने कहा।

'...मनोविज्ञान और दर्शन तो किताबों में लिखा ही है, यहां ग्राउंड जीरो से हकीकत बयां करूं तो हमलोग सिर्फ पैदल नहीं चल रहे हैं, जिंदगी के हर रंग को जिंदादिली से जीते भी आ रहे हैं!' रामू की आवाज से लग रहा था सच में वह जीवन के विविध रंग की गहराई से बोल रहा है, आगे उसी लय में बोलता गया, 'यदि सारा ध्यान सिर्फ पैरों में होता तो कोई भी एक-दो दिन से आगे चल नहीं पाता! सच में अहम भैया, सात रंग वाला सफरनामा हर मुश्किल को पीछे छोड़ देता है!'

"रामू, हम सभी तुम्हारी भावना का दिल से सम्मान करते हैं और तुम्हारे विचारों-ख्यालों से इत्तेफाक रखते हैं," शायनी उसके व्यावहारिक दर्शन का कायल होते हुए बोली।

"करोना पर तुम्हारा रिसर्च आगे बढ़ रहा है?" रामू तो जैसे कोरोना के कांटे से बिद्ध पड़ा था, शाश्वत रूप से।

"पिछली वीसी में बताना भूल गई थी, जेड सर की बदौलत हमें गांधी इंटर कॉलेज की लैब में कोरोना वायरस पर रिसर्च करने की अनुमति मिल गई है," शायनी की आवाज में परम संतोष झलक रहा था; आगे बोली, "देश के अलग-अलग हिस्सों में मिले कोरोना वायरस के कई स्ट्रेन पूणे लैब में प्रिजर्वड हैं, मुझे दो स्ट्रेन का एक्सेस यहीं ऑनलाइन मिल चुका है, इस वायरस के फ्यूचर ट्रेंड पर फोकस किया है मैंने अपने रिसर्च को..." शायनी के बोलने के बीच अहम रोक नहीं पाया अपने को "...हां शायनी, परसों

बातों-बातों में सर ने संकेत दिया था मुझे, पर डिटेल में नहीं पता था कि एक्चुअली तुम्हारे रिसर्च का डायरेक्शन क्या होगा; हां तो तुम बता रही थी कोरोना वायरस का फ्यूचर ट्रेंड, इट मींस?..."

"देखो अहम, मेडिकल साइंस किसी भी वायरस को कंपलीटली इरेडिकेट नहीं कर पाया है, वे सब पृथ्वी के जीवन में जीवित रहते हैं; अब देखने वाली बात यह है कि आखिर कोरोना वायरस यानी कोविड-नाइनटीन फ्यूचर में कैसा विहेव करेगा और हमारे लिए कितना खतरा बना रहेगा..." बोलकर शायनी ने लंबी सांस ली।

"ओके, तो परवेज अब यह बताओ रामघाट में कोरोना की क्या स्थिति है? हमारी बस्ती का कोई माई-बाप है कि नहीं!..." रामू की चिंता आवाज में तैरती दिख रही थी।

"...रामघाट में कोरोना केश बढ़कर दस हो गया है; मस्जिद के पीछे वाली गली में तीन नए केश मिले हैं, पंडित के संपर्क में आने वाले पांच लोग पॉजिटिव मिले हैं; पूरे शहर में अपने-आप कर्फ्यू-सा लग गया है, बस्ती में पुलिस बेरहमी से पेश आ रही है..." परवेज विस्तृत विवरण पेश करने लगा तो मंजरी सीधे मुद्दे पर आ गई "...दरअसल प्रशासन को लग रहा है बस्ती की घनी आबादी में कोरोना वायरस तेजी से फैलेगा; दूसरी बात लोगों के हाथ खाली हो चुके हैं, हंगामा बढ़ता जा रहा है, शासन सख्ती के मूड में आ गई है..."

"...कोरोना का संक्रमण और आगे न बढ़े इस पर क्या सोचा है तुम लोगों ने?" बोलते हुए वह अपने निजी दुखों से पार पा लिया हुआ लग रहा था; रामघाट तो सच ही उसकी आत्मा में झूलती रहती थी।

"...पूरे शहर में आतंक का साया उतर आया है, ऐसे में अपनी मंडली किधर निकलेगा क्या करेगा!" बोलते हुए लगा सहज किसी अंधेरी गली के अंतिम छोर से बोल रहा हो।

"...कोरोना कितना फैलेगा यह तो भविष्य बताएगा, जो दस कैसे अस्पताल में भर्ती हैं उनका कोई माई-बाप नहीं है, डॉक्टर और पैरा मेडिकल स्टाफ समझो दूर से संकेत-सेवा मात्र दे रहे हैं!" बोलते-बोलते शायनी सहम उठी।

"...अरे शंकराचार्य जी के वो नाटे कद वाले भक्त पंडित हैं न, उसको वेंटिलेटर की जरूरत पड़ गई है आज, पर सुनने में आया है जो वेंटिलेटर रिपेयर करके लाया गया था वह चालू ही नहीं हो पा रहा है!..." बोलकर

अहम ने लंबी सांस छोड़ी।

"...ओके फ्रेंड्स, दस बजने वाले हैं; एक साथ जुड़े रहने और शेयर करने के लिए ही आज की वीसी रखी गई थी; रामू प्लीज टेक केयर डियर, तुम्हें शायद क्वारंटाइन सेंटर में लंबा रहना पड़े! एक-दो दिन बाद फिर मिलते हैं, जय हिंद..." समापन करते हुए सहज ने कहा। अगले ही क्षण स्क्रीन से सभी के चेहरे गायब हो गए। रामू के मन में कसक रह गई, अंत में मंजरी को आंखों से प्रणय-प्रेषण भी ना कर पाया। समूह वार्ता के दौरान अदृश्य भाव-भंगिमा से रूमानी संकेत देने का अंदाज ही जुदा होता है! मिनट भर में ही मोबाइल में मंजरी का मैसेज चमक उठा, लगा जैसे उसकी मधुर ध्वनि सुन रहा हो ...डोंट मेक योर लुक सो ग्लूमी; गुड नाईट, लव यू...

...स्मार्ट लुक रखने लगूं तो शायद रात को तुम्हें परेशानी हो; गुड नाईट, लव यू रानी... सेंट करते ही वह कोरोना-कानपुर-क्वारंटाइन सब कुछ भूल चुका था। चंद मिनटों में ही वह सांसों की तेज गति वाले कारवां का अटूट हिस्सा बन गया।

2

मध्य रात्रि में सभी की नींद अचानक खुल गई; स्त्रियों-बच्चों के रोने-चिल्लाने से तो धरती तक कांप उठती है, वे सभी तो दिल-दिमाग वाले प्राणी थे! कमरे से बरामदे में कदम रखते ही सभी की नजर सामने खड़ी दो बसों पर पड़ी; बसों से औरत-मर्द-बच्चे चीख-पुकार के साथ उतर रहे थे '...हमें अपना घर जाने दो ...हमारे पास खाने को कुछ नहीं है ...हम लोग परदेश में नहीं मरना चाहते हैं ...घर में मेरी बूढ़ी माँ है, चावल-आटा-आलू सब समाप्त हो गया है वहां, बिचारी भूखे मर जाएगी...' दोनों बसों को चारों ओर से घेरे मास्कधारी पुलिस वाले मूर्तिवत खड़े थे, मुसाफिरों की गुहार-पुकार से बिलकुल बेखबर। बस के पास डटे आवरणधारी उतर रहे लोगों को अलग-अलग कमरों की ओर संकेत करते जा रहे थे। हाथों में गठरी-पोटली उठाए कमरे की ओर पंक्ति में बढ़ते जाते लोग! लग रहा था जैसे इतिहास के पन्नों में दर्ज जुल्म की दास्तां का नाट्य मंचन शुरू हो रहा हो। रामू-रामना-इसरार-अंकित को समझते देर नहीं लगी, पैदल चल पड़े निरीह मजदूर-मुसाफिरों पर सरकार ने सत्ता की सख्ती शुरू हो गई है। रामना को याद आया तीन दिन से मोबाइल में ब्रेकिंग न्यूज आ रही है ...केंद्र और राज्य सरकारों की बार-बार अपील के बावजूद

प्रवासी मजदूरों के पैदल पलायन का सिलसिला थम नहीं रहा है ...संक्रमण को फैलने से रोकने की खातिर सरकार का देशहित-जनहित में कड़ा फैसला... पैदल भाग रहे लोगों को रास्ते में ही क्वारंटाइन सेंटर में रखा जाएगा...। लोगों को बस में जानवर भांति ठेलकर लाया जाना, फिर कमरों में भेड़ जैसा ठूँसकर रखा जाना देखकर रामना के अंदर स्व-वार्ता होने लगी ...क्या सरकार को समझ नहीं है? क्वारंटीन सेंटर में बेतरतीब ढंग से रखे गए सभी लोग कोरोना से एक साथ मारे जाएंगे! देश बचाने का दिखावा करने की खातिर सरकार बेसहारा मजदूरों को कहीं बलि का बकरा तो नहीं बना रही है?. .. अभी आधे घंटे पहले तक विद्यालय परिसर में पसरे सन्नाटे से वातावरण डरावना था, अब अंदर-बाहर मचे चीख-पुकार-गुहार से वातावरण एकाएक भयावह हो उठा। कई-कई कंठों से निकलती आवाज आपस में टकरा रही थी; सुबह होने से बहुत पहले से ही अंधेरे का एहसास सिमटने लगा था।

सवेरा होने का किसी को कोई एहसास ही नहीं हुआ; परिसर में भीड़-भाड़ होने, कोहराम मचने से अंधेरा और सवेरे का भेद कब का मिट चुका था। समूह सैंतालिस के लिए दोबारा नींद में जाने का कोई मतलब नहीं रह गया था; आधी रात को बस में भरकर लाए गए लोगों के लिए सोने कोई मायने नहीं रह गए थे। बाकी कसर अभी-अभी आई एक और बस ने पूरी कर दी! बस से उतर रहे युवकगण पुलिसवालों पर बरसने लगे '...अरे सरकार, हमलोग मुंबई से पैदल चले हैं, यहां घर के नजदीक पहुंच जाने पर आपलोगों ने तमाशा खड़ा कर दिया!' '...वारंटिन सेंटर के नाम पर तानाशाही बंद कीजिए, आप के मंत्री-मुख्यमंत्री-प्रधानमंत्री इतने बड़े ज्ञानी हैं तो हमारे लिए बस-ट्रेन की व्यवस्था कर देते!' '...वैसे हम क्वॉरेंटेन सेंटर में रहें ही क्यों? पहले हमारा कोरोनावायरस तो कराओ' '...साला यह भी कोई क्वारंटान सेंटर है? यहां तो लोग एक-दूसरे पर चढ़े जा रहे हैं!...' काफी संख्या में होने के बावजूद पुलिसवाले गूंगे बने खड़े थे; सच में, पुलिसवालों को "कुछ नहीं बोलना है," की ट्रेनिंग देने वालों को बड़ी मशक्कत करनी पड़ी होगी! पानी सिर से ऊपर बहता देख दो स्टार वाला वर्दीधारी उबल पड़ा आवरणधारी पर, "तुम लोगों का काम हम कर दें का! सोशल डिस्टेंसिंग भी हम समझाएं! मास्क-गमछा लगाने के लिए हम बोलें! तो स्वास्थ्य कर्मी की ड्यूटी क्यों लगी है सेंटर पर?" दरोगा जी की घुड़की सुनकर दो-तीन आवरणधारी दाएं-बाएं दौड़ पड़े; लोगों को संकेतों से कुछ-कुछ समझाने लगे, समझ में

नहीं आने पर संक्षिप्त शब्दों का सहारा लेने लगे '...सोशल डिस्टेंसिंग प्लीज ...मास्क प्लीज ...गमछा प्लीज...'। यहां-वहां आ-जा रहे लोगों, धमाचौकड़ी में लगे बच्चों पर उन संकेतों, शक्तिहीन शब्दों का कोई असर पड़ता नहीं दिख रहा था। दरोगा जी उबल पड़े, "अरे भई, प्रवचन से साधु सीधा होता है समधी नहीं! तहसीलदार साहब से बोलकर लाउडस्पीकर लगवाओ।"

दोपहर दो बजते-बजते साउंड सिस्टम लग गया विद्यालय परिसर में। ठीक तभी प्रवासी मजदूरों से लकदक भरे दो और बस आ खड़ी हुई स्कूल में। बस से बड़ी संख्या में मजदूरों के उतरते ही दशहरा-दीवाली मेला-सा दिखने लगा पूरा कैंपस। बस के पीछे से आई पुलिस जिप्सी से उतरकर एक स्टार वाले दरोगा ने पूछा, "एक ही बस में इतने को ठूँस दिया!"

"अरे सरजी! पूरा एनएच मुंबई-नागपुर-अहमदाबाद दिल्ली-पंजाब से चले मजदूरों से भरा पड़ा है, ऊपर से हुक्म आया है सभी पद चालक को उठाना है; और भी कई बसों में भरकर दूसरे सेंटरों में ले जाया जा रहा है..." बस ड्राइवर ब्यौरा देता जा रहा था; साउंड सिस्टम में मधुर आवाज गूंज उठी "...प्यारे भाइयों एवं बहनों, कोरोना एक खतरनाक बीमारी है, बचाव ही उसका उपाय है, कृपया तीन-तीन फीट की दूरी बनाए रखें, बाथरूम में साबुन से हाथ धोएं, सैनिटाइजर लगाएं, हमेशा मास्क पहने रखें..."

...मास्क दोओओ... साबुन दोओओ... लोगों की भीड़ से जोरदार माँग उठी, इतनी ऊंची आवाज में कि साउंड सिस्टम से आ रही आवाज अश्रव्य हो गई, लगा जैसे प्रजा की ललकार से सरकार की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई हो। रामू वाले कमरे-बरामदे से लोग हाथ हिला-हिला कर आवाज बुलंद करने लगे ...खाना दो...खाना दोओओ... पानी दो...पानी दोओओ... स्कूल परिसर में अफरा-तफरी, हो-हल्ला बढ़ता ही गया।

भोजन-पानी की माँग उठते ही विद्यालय परिसर के माहौल में उबाल-सा आ गया। चारों तरफ गुस्सा-गुबार, हँसी-ठहाका आपस में टकराने लगे। क्वारंटीन में रखे लोग अब तो दुनिया के सारे दुखों से निवृत्त लग रहे थे। कोरोना का खौफ तो न जाने कहां गायब-सा हो गया! कुछ शरारती बच्चों ने कमरों से लाइम चॉक ढूंढ़ निकाला; छज्जे पर चढ़कर कमरे की बाहरी दीवार में बड़े-बड़े अक्षरों में लिख डाला-'कोरोना मेला।' फिर तो कुछ नटखट नवयुवकों ने गेट पर टंगे 'क्वारंटाइन सेंटर' लिखे बैनर को नोच डाला। पुलिस टीम को हाथ में हाथ धरे रहने में शर्म महसूस होने लगी; देहावरणधारी

कर्मियों पर दो स्टार वाला उबल पड़ा, "आप हेल्थ वाले तो हम पुलिस वालों की नाक तक कटवा दोगे!"

"सर आप भी तो कुछ बोला करो; प्रधानमंत्री ने सिर्फ हमें नहीं आपको भी कोरोना वॉरियर्स की उपाधि दी है।" बॉडी कवर पहनने से छूट प्राप्त पास खड़ी एक महिला कर्मी ने मोर्चा संभाला।

"मैडमजी मेरे-तेरे से शासन-सरकार की बदनामी होगी; कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करवाना तो हेल्थ डिपार्टमेंट का काम है, आप क्यों नहीं कराती हैं? खुद तो बॉडी कवर मास्क पहनी नहीं है तो दूसरों से क्या पालन करवाएंगे!" एक स्टार वाले वर्दीधारी ने अपनी जुबान में जवाब दिया। तभी दो स्टार वाले के पास आकर ठेकेदार का आदमी बोला, "हुजूर भोजन के पैकेट कब से आई हुई हैं, मेला जैसे माहौल में कैसे बंट पाएगी?" पास खड़े आवरणधारी ने सुना तो फिर से माइक थाम लिया; साउंड सिस्टम में फिर से उद्घोषणा चल पड़ी '...प्लीज दूर-दूर रहिएएए ...प्लीज लाइन में लगेंऐंए...' पर साउंड सिस्टम से निकली आवाज बेजान बनी रही। रामू और रामना पुलिस वाले और स्वास्थ्य कर्मी के मशक्कत पर कब से गौर कर रहे थे, बरामदे से ही। दोनों ने एक-दूसरे को देखा; तेज चाल से साउंड सिस्टम के पास पहुंचकर रामू ने माइक थाम ली, "...अपने दो पैरों की सवारी के सहारे अपने-अपने घरों के लिए निकले सभी भाई-बहनों एवं माताओं..." रामू की ऊंची पर मित्रवत आवाज ने पूरे परिसर में तरंग-सा असर किया। हो-हल्ला में मजे लूट रहे सभी लोग एकाएक जड़वत हो गए! रामू की उद्घोषणा जारी थी–"...अब भोजन वितरण आरंभ हो रहा है, जो लोग यहां-वहां भटक रहे हैं, टल्ली मार रहे हैं, उन्हें पैकेट पकड़ाना मुमकिन नहीं है, जो लोग लाइन में आएंगे उन्हें ही पैकेट मिलेगा!" उसने आगे पुकार लगाई, "...रामना, अंकित, मुजीब, इसरार, अभिषेक आपलोग कृपया स्त्री और पुरुष की अलग-अलग लाइन लगवाने में मदद करें; श्रीमान भुवन से रिक्वेस्ट है वितरण-व्यवस्था की पारदर्शिता पर नजर रखें..."

आगे जो कुछ हुआ वह किसी फिल्म के जादुई दृश्य से कम न था! स्त्री और पुरुष, तथा बच्चों की भी अलग-अलग लाइन लगती गई। पांच मिनट के अंदर ही लाइन मुख्य द्वार तक बढ़ती गई! बड़े भान में रखे पैकेट उतरते गए, पंक्तियों में आगे बढ़े हाथों में समाते गए। लग रहा था जैसे अब तक के सबसे बड़े डॉन का जन्म हो चुका है देश में और सौ करोड़ गुलामों को

जीवनदान मिलते रहने का एहसास दिलाने का परीक्षण करा रहा है! आधे घंटे में भोजन संपन्न होने के बाद भी परिसर में शांति पसरी थी। पुलिस वालों ने और हेल्थ टीम ने राहत की सांस ली। दो स्टार वाले दरोगा ने रामू और उसके साथियों को पास बुलाया, सम्मान के साथ। रामू से अनुग्रहित भाव-भाषा में कहा, "आपमें तो जनता के नब्ज की गजब पकड़ है! आपने जिस तरह से भीड़ को नियंत्रित कर शांत कराया है हम सभी आपके आभारी हैं; हमलोग आपकी टीम से आगे भी सहयोग की अपेक्षा रखते हैं।"

"देखिए साहब, तकलीफ में फंसे लोगों पर कोई भी सरकार शासन नहीं कर सकती! बस-ट्रेन बंद है, फिर भी सभी को घर जाने की मजबूरी है," इतना बोलकर रामू ने चारों ओर देखा, अधिकांश लोग कमरों में जाकर लेटने लगे थे; उसने आगे कहा, "सरकार-शासन से इन्हें कोई उम्मीद दिख नहीं रही है, ऐसे में यह आपकी सरकारी भाषा भला क्यों सुनेंगे-मानेंगे!"

"मैं दिल से बोलता हूं, जनता का लीडर आप जैसे लोगों को ही होना चाहिए!" एक स्टार वाले ने कहा, रामू की ओर सलाम करने जैसा हाथ उठाते हुए। तब रामू को अपने अंदर कुछ टिमटिमाता हुआ महसूस हुआ; जन-जन की तकलीफ से जुड़कर उनकी आवाज बनने की दूरस्थ पुकार-सी!

शाम होते-होते वहां सिर्फ दो पुलिसवाले ही बचे थे, डंडाधारी सिपाही के रूप में। संध्याकालीन भोजन वितरण को लेकर स्वास्थ्य कर्मियों के हाथ-पांव फिर से फूलने लगे, इतने बड़े जमावड़े को कैसे नियंत्रित किया जाए? उन्हें फिर रामू याद आया। अनुरोध संवाद पाते ही रामू सहर्ष तैयार हो गया, फिर से। आते ही माइक में मुंह सटाकर बोल पड़ा, जननायक भांति "...संकट का सामना कर रहे सारे साथियों से अनुरोध है दोपहर जैसा ही तीन पंक्तियों में लग जाएं; दोपहर की पंक्तियों में करोना के नियम का ठीक से पालन नहीं हो पाया था, अभी वाली पंक्तियों में कृपया एक-दूसरे से तीन फीट की दूरी बनाए रखें; तीन फीट वाले नियम का पालन करने पर सरकार हम सभी को कल मास्क वितरण करेगी।" परिसर में रामू की आवाज गूंजते ही पदचाप तेज हो गई। कमरों-बरामदों में जमे और उमसभरी गर्मी से परिसर में यहां-वहां छितराए लोग अपनी परिचित पंक्तियों में लगने लगे, सोशल डिस्टेंसिंग का स्वत: पालन करते हुए। दोपहर को खाते वक्त भोजन के बारे में चारों तरफ क्रिया-प्रतिक्रिया होती रही थी; अभी वाले पैकेट में गरम-गरम चपाती-चावल दाल-सब्जी पाकर सभी प्रवासियों के चेहरे खिल उठे। उनके चेहरे में भले

ही फूल से खिल रहे हों, स्वास्थ्य कर्मियों के चेहरे में हवाइयां उड़ रही थीं! वरिष्ठ मैडम रामू के पास आकर विनम्र होकर बोली, "छोटे भाई साहब, हम लोगों का हेल्प करते-करते आपने तो ब्लंडर कर डाला!"

"सो क्या कर डाला मैंने?" रामू अचंभित था, उससे अनजाने में हो गए किसी अनिष्ट को लेकर।

"आपने घोषणा कर दी है कि कल सरकार मास्क वितरित करा देगी!" बोलते हुए मैडम ने डरावने अन्दाज में सिर हिलाया; जैसे रामू ने प्रलय को दावत दे रखी हो।

"हां, करोना रोकने के लिए मास्क वितरण तो अनिवार्य है।" किसी स्थापित प्रक्रिया के विशेषज्ञ भाँति रामू ने कहा।

"लेकिन हमारे पास कोई मास्क तो है नहीं! फिर तो कल मास्क नहीं मिलने पर सारे प्रवासी हंगामा बरपा देंगे यहां?" बोलते हुए मैडम का कलेजा मुंह को आ गया।

"आप अभी पता कर लीजिए मैडम, सरकार के पास लाखों-करोड़ों मास्क हैं, मोबाइल में मैंने भी सरकार का सर्कुलर देखा है; अभी आप आराम से घर जाइए, तहसीलदार, एसडीएम, डीएम साहब को सिर्फ मैसेज छोड़ दीजिए कि प्रवासी लोग ऐसा कानून बघार रहा है।" रामू ने मैडम की तरफ देख मुस्कुरा कर बोला। उसका आत्मविश्वास देखकर मैडम का भी आत्मबल दुगुना हो गया; चलते-चलते कई जगह मैसेज फॉरवर्ड करने लगी थी।

भोजन का पैकेट, यानी जब मर्जी तब खाओ। बहुत सारे प्रवासी मजदूरों के लिए पैकेट तो चटनी जैसा ही था, नियमित खुराक के मुकाबले काफी कम; वितरित होते ही गरमा गरम भोजन तुरंत चट कर दिया, हवा-डकार-गुड़गुड़ी की परेशानी वाले पेट और चित्त शांत होने पर ही खाते; देर से खाने की आदत वाले अपने समय से खाते। गप्प-ठहाके के अड्डे में जमे युवजन कब खाते पता नहीं।

देश की अलग-अलग दिशाओं से आए दिल-दिमाग में दर्ज सीमाओं से अनजान बच्चे! स्कूल परिसर को निर्मल-निष्पाप भारतवर्ष में बदल डाला था, इस किनारे से उस किनारे तक निर्बाध धमाचौकड़ी करते हुए, जैसे भविष्य के भारत में मतभेद निर्मूलन की नींव रख रहे हों! बच्चों ने दोपहर में भले ही चिढ़कर-कुढ़कर दीवारों पर कोरोना मेला लिख दिया हो, अब तो सच में विद्यालय परिसर मेलामय हो चला; मनभावन गप्पबाजी-गतिविधियों में

मशगूल धूल-धूसरित कपड़ों वाले प्रवासियों-बच्चों का जीवंत मेला!

अलग-अलग झुंडों के साथ वाली महिलाएं-युवतियां शुरू के तीन-चार घंटे तक एक-दूसरे को तिरछी नजर से देखते रहे थे, बाद के दो-तीन घंटे सहेली सरीखे मुख-मुद्रा से देख भर लेते थे; रात्रि भोजन के बाद संगी-सहेली बनकर एक-दूसरे के सामने हो लिए थे। बड़े-बुजुर्ग-बच्चे भले ही नींद की राह चल पड़े थे, युवा प्रवासियों ने पूरे परिसर को जैसे सर पर उठा रखा था; स्वाभाविक ही उनकी रात्रि आरंभ होने का समय तय नहीं था।

संध्याकालीन भोजन वितरण के बाद रामना जा बैठा, राजा के पास। पटना का रहने वाला रामप्रवेश उर्फ राजा पांच साल से मुंबई में जमा था; फिल्म शूटिंग का सेट तैयार करने वाली कंपनी में लेबरी करते रहने में मजा आने लगा था उसे। बिहार के और कई लड़के उस कंपनी में लगे थे, अलग-अलग काम-पदनाम के साथ। दोपहर को भोजन वितरण व्यवस्था में लगे रामना की ओर राजा ने अनजाने में ही दोस्ताना अन्दाज में आंखें मिचकाई थीं। रामना को लगा ये भैया तो किसी नई दुनिया के जान पड़ रहे हैं! बातों ही बातों में परिचय बढ़ा तो बात मुंबई में जा अटकी। रामना ने कहा रात को मुंबई का हालचाल बताना; फिल्म शूटिंग का नाम सुनकर भला किसके अंदर रोमाँच नहीं पैदा होगा! राजा अपने कई साथियों संग बैठा था। रामना के आते ही सभी ने उसका जोरदार स्वागत किया; सेंटर में अपनी काबिलियत से वह जन-जन की आंखों में बसा चेहरा तो बन ही चुका था।

"राजा भैया असली छप्पन इंच कलेजे वाले तो आप लोग हो; मुंबई से पटना पैदल निकल पड़ना किसी ऐरे-गैरे के बस की बात नहीं है!" बैठते ही रामना उनलोगों पर मर-मिटने सा बोला, जैसे किसी विरल प्रजाति वाले प्राणी को देख रहे हों।

"अरे भाई आपलोग भी तो देश के दिल से पैदल निकल पड़े हो! फिर तो आपलोग भी छप्पन इंच से कम थोड़े न हो।" अपने झुंड में आए बाहरी नौजवान के लिए राजा ने स्वागत वक्तव्य-सा दिया।

"दिल्ली का दूसरा नाम ही है दूर रहो; बड़े-बड़े राजा-महाराजा-बादशाह-मंत्री-प्रधानमंत्री को दिल्ली ने दुर्दिन दिखाए हैं, मुंबई तो हर पल पुकारता है मेरे पास रहो, तभी तो देश के कोने-कोने से गए हीरो-हीरोइन हों या पूंजीपति, सभी मुंबई के सीने से चिपके हैं!" सरल-सहज ढंग से बोलकर रामना आगे गंभीर हो उठा, "इसीलिए हमें तो दिल्ली से भागना ही

था, लेकिन मुंबई से भला कोई भागता है?"

"अरे रामना अभी तुम्हारी उम्र ही क्या हुई है; कोरोना के कारण दिल्ली बदनाम हो गया है तो समझो मुंबई बेदर्द हो चला है!" आवाज जैसे राजा के अंदर दबी पीड़ा को पार कर आई।

"बेदर्द! वह कैसे?" रामना की आंखें छोटी हो चलीं।

"तुम लोग भी क्या बेमेल-सी बात करते हो जी, जिस मुंबई में एक से एक दर्द भरी फिल्में बनती हैं वह भला बेदर्द कैसे हो सकता है?" पीछे आ खड़े हुए रामू की आवाज आई, जैसे आकाशवाणी हुई हो; फिर रामना को उठने का संकेत करते हुए कहा, "माताजी काफी बिगड़ रही हैं, तुम्हारे बारे में कह रही हैं कोरोना में बच्चा बिगड़ रहा है।"

रामना और रामू तो तत्क्षण वहां से चले गए, अपने कमरे की ओर; रामना और रामू की टिप्पणी-फगड़ा से मुंबई-मंडली के मुंह में जैसे ताले पड़ गए। राजा के साथीगण धीरे-धीरे कमरे की ओर बढ़ते गए। मन में जोर लगाने के बाद भी राजा वहां से उठ नहीं पा रहा था; उसे लगने लगा जैसे मिट्टी के एक छोटे घेरे में रेंगता रहने वाला कोई कीड़ा मात्र है वह। उसे बिल्कुल याद न रहा कैसे वह अपने कमरे तक पहुंचा। हां, इतना भर याद रहा एक बड़ा प्रश्न उसके मन में सवार होकर बिस्तर तक आ पहुंचा था।

रामप्रवेश वाले कमरे में सभी सो चुके थे। वह अकेला था जिसे लग रहा था जैसे वह सोकर जाग गया हो! फिल्मी सेट पर उसने ना जाने कितनी फिल्मों की सेटिंग-शूटिंग देखी है; मुंबई में बिताए पांच साल अब उसकी असली फिल्म जैसे उनके सामने से सरकने लगे; बतौर मजदूर क्या-क्या काम नहीं किए हैं उसने फिल्मवालों के लिए ...पूरे सेट में झाड़ू लगाने से लेकर शौचालय साफ करने तक! कचरा-कुंडी साफ करने से लेकर सेट के लिए बांस-बल्ली-कार्ड बोर्ड खड़ा करने और कारपेट बिछाने तक। हीरोइन के सेंडल साफ करने से लेकर मेकअप रबिस फेंकने और पैसा-पेटी उठाने तक! हां, वो पैसा-पेटी ही तो होता था! उसने कई बार भारी-भारी थैले को हीरो-हीरोइन की चमचमाती गाड़ी की डिग्गी में धरा है। फिल्म निर्माता के इशारे पर कभी-कभी उसे कुछ हीरो, एक-दो बार तो हीरोइन के साथ भी, उनकी गाड़ी में बैठने का अवसर प्राप्त हुआ था। फिर डिग्गी से उन भारी पेटियों को निकालकर उनकी आलीशान कोठियों की ऊपरी मंजिल पर पहुंचाया था; सात समुंदर पार जैसी अदृश्य जगह तक! आखिर वो भारी-भारी

पेटियां पत्थर से भरी नहीं हो सकती थीं न! यदि वो पैसे की पेटियां नहीं थीं तो उसके सेट में बनी फिल्मों के बारे में खबरें क्यों आती थीं ...सौ करोड़-दो सौ करोड़ के क्लब में शामिल! इन पांच सालों में उसने और उसके साथियों ने क्या कुछ सेवा नहीं दी फिल्मवालों और उनकी स्वर्गमयी दुनिया को! तो क्या उन सौ करोड़, दो सौ करोड़वालों को कोरोना ने कंगाल कर डाला! इतना कंगाल कि एक अदना बस करके अपने अधीनस्थ प्रवासियों को पटना तक नहीं छोड़ पाए?

कमरे की खिड़की से प्रवेश करते गोल सूरज को सबसे पहले उसी ने देखा। मुंबई में सोचते-विचरते द्वंद्व से लड़ते-छिपते उसे कब नींद आई या नहीं आई उसे ना तो पता चले ना याद आ रहा! सूरज का इतना बड़ा लाल गोला देखकर उसे लगा आज से सूरज भी उसका न रहा। वह कमरे से बाहर आ गया, जहां से सूरज न दिखता हो! पर ये क्या, अब तो सूरज स्कूल की छत से झांकने लगा! उसने देखा सूरज अभी भी रामू वाले कमरे के पीछे अटका पड़ा है; वह उस कमरे के आगे पसरे साए की तरफ बढ़ चला, डरा हुआ-सा चेहरा लिए। नीम की दातुन करते हुए बगलवाली गली से निकल रहे रामू और रामना से टकरा गया वह। रामप्रवेश को देखते ही रामू के चेहरे असमंजस की रेखाएं उग आईं, उसने पूछ लिया, "फिल्म जगत से जुड़े लोगों का मुखड़ा तो हमेशा खिला-खिला रहता है, पर तुम्हारा चेहरा आज इतना कुम्हलाया क्यों लग रहा है!"

"हां रामू, हम जैसे हजारों लोगों का दुर्भाग्य है कि हमारे बूते फिल्मवाले सौ-दो सौ-पाँच सौ करोड़ के क्लब में खेलते हैं," बोलकर उसने ऊपर की ओर देखा, कहीं सूरज यहां भी तो नहीं आ पहुंचा है; फिर आगे कहा, "पर इस कोरोना कहर में हमें घर छोड़ने के लिए बस का भी इंतजाम करने में नानी मर गई उन लोगों की!"

"यह आप लोगों का दुर्भाग्य नहीं है राजा भैया, यह तो उन फिल्मवालों का दुर्भाग्य है!" मुंह से दातुन निकाले बगैर ही रामू ने कहा, जैसे रहस्य अंदर ही हो।

"उनका दुर्भाग्य! वह भला कैसे?" रामना ने मुंह से दातुन निकाल ली।

"बहुत सीधा-सरल-सा लॉजिक है; कोरोना तो एक बड़ा मौका था फिल्म निर्माता-निर्देशक-हीरो-हीरोइन के लिए; हां, एक दुर्लभ अवसर! उनके लिए कुछ करने का, जिनके दम पर वे लोग करोड़ों कमाते हैं!" रामू ने दातुन

रोककर कहा, अब दातुन को जोर से दबाते हुए बोला, "मन पर पत्थर रखकर ही सही, काश वे सौ-दो सौ बसों का इंतजाम कर देते मुंबई से यूपी-बिहार पैदल भाग रहे प्रवासियों के लिए, तो समझो उनका मनुष्य योनि में जन्म लेना सफल हो जाता! अब तो तुमलोग पैदल निकल ही लिए हो, समझो अपने महल में कैद फिल्मवालों की औकात दातुन की थूक के बराबर भी नहीं है!" बोलकर उसने जमीन पर बड़ा-सा थूक दिया; फिर राजा के कंधे पर हाथ धरते हुए कहा, "अब बताओ राजा भैया! तुमलोगों का मुंबई से पैदल चल पड़ना तुम्हारा दुर्भाग्य है या सौ-दो सौ करोड़ क्लबवालों का दुर्भाग्य?" राजा ने आंखें ऊपर उठाईं, सूरज नाक की सीध में आ चुका था। सूरज अब उसे अपना पुराना साथी-सा लगा, गांव की गलियों-खेतों में हमेशा साथ चलता रहनेवाला; लगा सूरज के साथ पटना तक पैदल चलते रहने में हर्ज ही क्या है!

3

13 अप्रैल; सूरज आज सबको देख लेने की ठानकर निकला जान पड़ रहा था। आज वाली बैशाखी-बिस्वा प्रवासियों के मन में अटकी पड़ी थी। अचानक आग की तरह खबर सारे कमरों में फैल गई, आज भोजन के समय मास्क भी वितरित होगा! दोपहर होते-होते क्वारंटाइन सेंटर को जैसे पंख लग गए! मास्क मिलने की बात सुनते ही पूरे परिसर में प्रसन्नता का प्रदर्शन होने लगा; बच्चे-युवा कौतूहलपूर्ण उमंग लिए, तो बड़े-बुजुर्ग दमित मुस्कान के साथ। सभी के दिल से रामू के लिए दुआ की बरसात होने लगी; रामू ही तो है जिसने वाजिब बात के लिए शासन-सत्ता को भी झुका दिया! रामू का कद आज और बढ़ गया; उसके माइक थामते ही फटाफट तीन कतारें लगती गईं, एक-दूसरे से तीन फीट की दूरी लिए। भोजन पैकेट के साथ मास्क भी वितरित होने लगा, सभी उचक-उचककर आगे देखने लगे। कतार में उमंग उछाल मारने लगी ...अरे वाह! हरा-उजला-लाल! तीन रंग के मास्क! बच्चों-महिलाओं के मन में मनचाहा रंगवाला मास्क पाने की लालसा जाग पड़ी। आज तो जैसे भोजन वाली भूख ही मिट गई थी! किसी को जानने की जरा भी जिज्ञासा नहीं रह गई थी आज पैकेट में क्या-क्या है। कोरोना मेला में फैली उमंग-उत्साह में खोते हुए रामू भाव-विभोर हो उठा, कब से हाथ में लिए माइक से बेखबर! उसके अंदर से आवाज आई ...आखिर हिंदुस्तान

की अलग-अलग मन-मंसूबे वाली सरकारें एक मामूली ज्ञान क्यों नहीं हासिल कर पाती हैं, कि जन-जन की मन-भावन भी पूरी हो जाए तो देश के किसी भी कोने में शायद ही कभी विरोध-विद्रोह की स्थिति आवे!

दोपहर में गर्मी ने भले ही अपनी रफ्तार से सभी को कमरों में बंद कर दिया हो, महिलाओं की खिलखिलाहट कमरों की कैद से आजाद होकर पूरे परिसर में गर्मी को चिढ़ा रही थी। भोजन के बाद जब कोई महिला अपना मास्क पहनकर आजमा रही होती तो शेष महिलाएं उसे देखकर खिलखिला पड़तीं; बंद मुँह-नाक में सामने वाले की बदली शक्ल-सूरत दिखते ही किसी की भी हँसी रोके नहीं रुक रही थी। घंटेभर बाद माताजी को महिलाओं को छोटा सा प्रवचन बांचना ही पड़ा, "हिनहिनाने से मन का भारीपन भले ही भाग जाए कोरना नहीं भाग सकती! एक भी आदमी को कोरना हो गया तो मास्क पहनकर हँसी नहीं, मास्क के अंदर ही रोना आएगा।" फिर तो कमरे के अंदर उमस भरी गर्मी भी महिलाओं को लंबी सांस वाली नींद में जाने से रोक नहीं पाई; मास्क पाकर कोरोना से निजात पा लेने की बेफिक्री महिलाओं के मन-मस्तिष्क को अगाध तृप्ति जो दे गई थी! महिलाएं भले ही मास्क-निद्रा में चली गई हों, मास्क पहने बच्चे बरामदे में राम-रावण-अंगद लक्ष्मण-मेघनाथ सीता-सूर्पनखा मंत्री-मुख्यमंत्री से प्रधानमंत्री तक खेलने में मशगूल रहे। उधर से कई बार गुजरने के बावजूद भी रामना या रामू ने उन्हें रोकना मुनासिब नहीं समझा; उन्हें पूरी आजादी दे दी मास्क पहनकर इस जमाने वाले दैत्यों की परख करने के लिए।

संध्या-भोजन वाली गाड़ी गेट के अंदर आते ही कमरे-बरामदे दाएं-बाएं से लोग बीच मैदान की ओर आने लगे। रामू ने माइक हाथ में ले लिया। देखते ही देखते मास्कधारियों की तीन कतारें सजती गईं। तीन रंग वाले मास्कधारियों से बनी-गुंथी चितकबरा कतारें! जैसे किसी शैतान दर्जी ने विशाल तिरंगे झंडे के सैकड़ों टुकड़े करके अपनी गठरी-कथरी को पैबंद से सजा दिए हो। सभी कतारें बिल्कुल सीधी। सभी मुंड तीन फीट की अनुशासित दूरी पर एकदम तनी हुईं, जैसे जनता की सेना देश के अंदर की सबसे बड़ी लड़ाई के लिए कूच कर रही हो; गरीबी-भुखमरी जेब-खाली की ना खत्म होने वाली लड़ाई! भोजन के पैकेट बढ़ते गए; रामू माइक थामे मास्कधारियों के बीच कहीं खो गया, निःशब्द ...स्कूल की किताबों में सच ही पढ़ा था, गौतम बुद्ध, महावीर जैन, महात्मा गांधी इसी भारत भूमि में पैदा हुए थे, तभी तो यहां की बड़ी

आबादी उनके असली वंशज जैसे आज भी लाइन में खड़े हैं, सीधे सज्जन बनकर! इनकी जेब में पैसे नहीं, पेट में दाना नहीं, घर जाने के लिए साधन नहीं, फिर भी साधु-संत जैसे यहां खड़े-पड़े हैं, बिल्कुल मौन जैसे रामराज की असली प्रजा हों; कोई शिकायत नहीं, कोई माँग नहीं, कोई हंगामा नहीं, कोई क्रांति नहीं, बड़ी शक्ति के संकेत पर चलते जाने वाले स्वचालित खिलौने की जैविक नस्ल मात्र!...' तीनों कतारों में भोजन के पैकेट बंट चुके थे, पर सभी की आंखें रामू पर ही गड़ी थीं; रामू किसी अलौकिक जीव भांति कहीं दूर किसी बड़े दृश्य पर खोया हुआ जान पड़ रहा था। बगल में खड़े रामना ने खंखारने की आवाज निकालकर रामू की चेतना को टटोला। रामू चौंक पड़ा जैसे सदियों पीछे से एकाएक वर्तमान में आ गिरा हो। सामने भोजन के पैकेट थामे सीधी खड़ी कतारों को देखकर वह अवाक रह गया, क्या भारत के जन-जन का यह असीम धैर्य है या फिर इनके अंदर स्पंदित होने लायक कुछ शेष नहीं रहा! उसने इस दृश्य को कैद कर लेना चाहा, सामने खड़े स्वास्थ्य कर्मियों से उसने पूछा, "सरकार ने क्वारंटीन सेंटर का वीडियोग्राफी के लिए भी तो कहा होगा?"

"हां, सर्कुलर तो है।" आवरण के अंदर से वरिष्ठ मैडम हामी भरते हुए बोली।

"सोशल डिस्टेंसिंग और मास्क धारण करते रहने का इससे अच्छा दृश्य कहां देखने को मिलेगा! जब से लॉकडाउन हुआ है सैकड़ों नफरत भरे वीडियो की मोबाइल में बाढ़-सी आ गई है; आप लोग एक असली वीडियो तो भेजिए सरकार को, मीडिया को!" रामू का स्वर आग्रह-अनुग्रह से हल्का हो चला।

"आज तो वीडियोग्राफी का इंतजाम है नहीं।" आवरणधारी पुरुष की धीमी आवाज आई थी, जैसे आवाज किसी की कैद में रहती हो।

"आजकल तो लोगबाग अपने मोबाइल से भी वीडियो बना लेते हैं; यदि करोना का डर हो तो रहने दीजिए।" फिर उसने रामना से कहा, "मेरे छोटे भाई, हम लोगों ने तो करोना-कुंड में कब से पैर धरा हुआ है; यह लो मंजरी का दिया मोबाइल, आज इसका सबसे सटीक इस्तेमाल होने दो, इन तीनों जन-कतारों का एक अच्छा-सा वीडियो बनाकर सोशल मीडिया में घुमा दो।"

"हां डालना ही पड़ेगा, दूसरा कोई उपाय भी तो नहीं है; अभी-अभी सरकार ने घोषणा किया है लॉकडाउन को आगे तीन मई तक बढ़ाने का!" देश के कर्ता-धर्ता की भांति वहां पर आ खड़े हुए भुवन ने सूचना दी।

"...अरे यह क्या कह रहे हो?"

"...फिर से लॉकडाउन!"

"...हमलोग तो इस उम्मीद में थे परसों लॉकडाउन खत्म होगा और हमें घर जाने को मिलेगा..."

"...क्या हमें यहीं सड़ना-मरना पड़ेगा?"

"...हमें जानवर जैसा सरकार के बाड़े में रहना पड़ेगा!"

सामने कतारों से सुगबुगाहट-भुनभुनाहना-झल्लाहट बढ़ती जा रही थी। भोजन के पैकेट थामे बरामदे-कमरे की ओर जाते लोगों को लगा जैसे पैकेट में भोजन नहीं बातों की पुड़िया भरी हो।

4

कल से आज तक अपने पूर्णिया कमिश्नरी के कई प्रवासी मजदूरों से रामना का परिचय बढ़ चुका था। कई तो अपने बगल के गांव के थे! पूर्णिया अररिया, कटिहार, किशनगंज, मधेपुरा, सहरसा, सुपौल, दरभंगा, मधुबनी, भागलपुर और आसपास के जिलों के प्रवासी मजदूर! कई-कई झुंडों में, कई-कई शहरों से चले थे; सदियों से स्वाधीन मन-मस्तिष्क जन-मन यहां आकर शासन के चंगुल में फंसे पड़े थे। वे कल से ही रामना की वाक्पटुता और क्रियाशीलता के कायल होते गए थे। शाम को बंटे भोजन समापन के बाद उसके अंदर गांव-घर जागने लगा! गांव के आसपास के दस-पंद्रह लोगों के साथ झंडोत्तोलन चबूतरे के पास चौकड़ी जम गई। फिर तो उन इलाकों के सैकड़ों प्रवासी मजदूर गोल घेरे में जमने लगे। झंडोत्तोलन चबूतरे के चारों ओर जमा-बैठा एक बड़ा झुंड, जैसे तिरंगे की अनुपस्थिति में ही तिरंगे से हिसाब माँग रहा हो; आजादी के बाद से आज तक कुल खाए-पिए का हिसाब!

"अपने इलाके के इतने सारे प्रवासी मजदूर यहां हैं; फिर तो बिहार से बाहर जाकर लेबरी करने वाले लाखों लोग होंगे!" बात शुरू करने के लिए रामना ने यूं ही बोल दिया।

"मेरे हिसाब से सिर्फ सीमाँचल के पच्चीस लाख मजदूर दिल्ली, मुंबई, सूरत और ऐसे ही बड़े शहरों में खपे होंगे!" सूरत में टेक्सटाइल फैक्ट्री छोड़कर भागे रामजतन ने जोड़ा।

"मेरे अंदाज से तो पूरे बिहार के दो-तीन करोड़ अभागे बाहर मजदूरी करने के लिए मजबूर हैं!"

"बाहर मजदूरी नहीं करोगे तो वहां गांव में क्या खाओगे! सुथनी आलू?"

"अगर बिहार में ही हमें ठीक-ठाक मजदूरी मिल जाए तो बीवी-बच्चे बूढ़े माँ-बाप को छोड़कर कौन जाएगा भला परदेश, चूतड़ घिसने!"

"कल-कारखाने लगें बाढ़-पानी से खेती-बाड़ी बचे तभी तो मजदूरी बनेगी गांव-घर में रे बाबू!"

"तुम्हारे जिलों में कल-कारखाने लग जाएंगे, बाढ़-सुखाड़ का उपाय हो जाएगा फिर तो पूरे हिंदुस्तान में समझो अकाल पड़ जाएगा!" अभी-अभी वहां आकर खड़े हुए रामू ने कहा; रामना को एक बड़े झुंड का मुखिया बने बैठा देखकर रामू भी उधर ही चला आया।

"हिंदुस्तान में अकाल पड़ जाएगा! मतलब? रामू की बातें रामना के अंदर में गोली जैसी धंस गईं।

"अरे महात्मा बुद्ध वाले बिहार के बुद्धू भैयालोग, तुमलोगों की बदौलत ही हिंदुस्तान के बड़े शहरों में दिन चढ़ती है और रात उतरती है! तुमलोग यदि एक साल सांस थामकर बिहार बैठ गए तो समझो हिंदुस्तान का टट्टी-पेशाब बंद हो जाएगा!" बोलकर रामू ने दोनों हाथ ऐसे फैलाए जैसे कोई जरूरी चीज फट गई हो।

"लेकिन हम सब एक साल तक क्या अपने गांव-घर में बैठे रह पाएंगे; परिवार कैसे चलेगा भला?" आँखों की गोलाई समायोजित करते हुए रामना ने कहा, लगा जैसे कोई जरूरी सुराग खोज रहा हो।

"अमेरिका-यूरोप के परोपकारी सोच वाले बड़े-बड़े धन्ना सेठों को पकड़ो, और पटाओ तुम्हारे लिए कुछ करें; वो है ना एक बिल्ला गेट्स!" बोलकर रामू ने आसमान की तरफ तिरछी नजर फेंकी जैसे दूर देश में किसी को पुकार भेज रहा हो; अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "उनको मनाओ सभी के लिए सिर्फ एक साल का इंतजाम कर दें, तब देखो असली तमाशा! नौ महीने में ही हिंदुस्तान का नया जन्म हो जाएगा! बौने बच्चे के रूप में, पहाड़ से नीचे तलहटी में कराहते हुए!" बोलकर रामू ने चुटकी बजाई, फिर बोला "ज्यादा भाषण अच्छा नहीं होता है; अब अंदर चलो आज सो जाएं, कल की कल सोचेंगे।"

धीरे-धीरे सारे प्रवासी अपने कमरे की ओर चल पड़े।

महिलाएं सोने को हो रही थीं। अंकिता का मुँह आज खुला; अचानक, "अब तो चाची-मामी-फूफी-दीदी सब लोग घोड़ा बेचकर सोओ!"

"मेरे घर घोड़ा नहीं है, तो बेचुं कहां से?" सरिता चाची ने जवाब दिया; पूरा कमरा हँसी-ठहाकों से हिलने-सा हुआ।

"मेरे घर एक गैय्या है, लेकिन उसे क्यों बेचुं!" मनकी चाची बोली तो हँसी की लड़ियां लंबी हो गईं।

"मेरे कहने का मतलब वो नहीं है!" अंकिता भी बिना हँसे नहीं रह सकी।

"तो क्या मतलब है? 'वो'!" मंजु भाभी प्रणव वाले कमरे की तरफ इशारा करके बोली; कमरे में हँसी की दूसरी लहर फैल गई, पहले से भी बड़ी।

"अरे भाभी स्क्रीन वाला मोबाइल सिर्फ खरीदने की चीज नहीं है, उसमें देखा भी करो; लॉकडाउन तीन मई तक बढ़ा दिया है सरकार ने!" सिर में उल्लासपूर्ण लचक देते हुए अंकिता बोली; सच ही तो उसके दिन तो यहीं पर अच्छे कट रहे थे!

"...हाय गे दय्या! क्या बोल रही है!... ...मुंहझौंसी... ...मुंह में कीड़े पड़ें तेरे... ...सत्यानाश हो सरकार का... लॉकडाउन बढ़ने की बात सुनते ही महिलाओं के बीच कोहराम मच गया। चिंताग्रस्त महिलाओं ने माथा पकड़ लिए, मुंहफट के मुंह से अपशब्द-अभिशाप की बरसात होने लगी। माताजी उठ बैठी, "अरी अंकिता, खबर तो पूरी पढ़ा कर; सरकार समझदार होती है, पैदल भागते मजदूरों-महिलाओं के लिए ट्रेन-बस की सुविधा जरूर दी होगी! देखना कल सुबह स्कूल के बाहर बस खड़ी होगी हमारे लिए!" बोलकर माताजी जिस रास्ते दिल्ली से आई थी उसी दिशा में हाथ जोड़ लिए, जैसे दिल्ली के किसी बड़े भगवान को प्रणाम कर रही हो।

"मेरे मोबाइल में ब्रेकिंग न्यूज भर है, इसमें बस-ट्रेन चलने वाली बात तो है नहीं।" स्क्रीन को स्क्रोल करते हुए अंकिता बोली।

"कथि ला माथापच्ची क रहल छी, रामू बच्चा से पूछ लै छियै।" बोलकर माताजी बरामदे की ओर निकल पड़ीं; उसके पीछे-पीछे कई महिलाएं भी।

"रौ रामू!" माताजी ने बरामदे से ही ऊंची आवाज लगाई; वेदना भरी ऊंची आवाज, जैसे मुसीबत में फंसी करोड़ों महिलाओं का संयुक्त स्वर निकला हो! रामू रामना भुवन डरा-सा चेहरा लिए कमरे से बाहर आया।

"क्या हुआ माताजी! तबीयत तो ठीक है न!" रामू ने माताजी के कंधे-हाथ टटोलते हुए पूछा।

"अंकिता बोल रही है लोकढान बढ़ गया है..." माताजी की बात पूरी भी नहीं हुई थी कि भुवन का उत्साह बेकाबू हो उठा, "माताजी सरकार ने

लॉकडाउन तीन मई तक के लिए बढ़ा दिया है; बहुत बड़ी सरकार है यह! बड़े दिमाग वाले लोग हैं सरकार में!"

"बड़े दिमाग वाले हैं तो तुम रखो अपने पास; हमें सिर्फ इतना बताओ हमें घर भेजने के लिए बस-ट्रेन का इंतजाम है कि नहीं?" भुवन के पास झटक कर आते हुए माताजी बोली, उसकी आंखों में गड़ते हुए। भुवन एक कदम पीछे हट गया, अपने आप! लगा जैसे बड़ा जनसैलाब एक बड़े प्रश्न के साथ उसकी ओर बढ़ रहा हो।

"बड़की माँ, बस-ट्रेन की बंदी चलती रहेगी लॉकडाउन के साथ!" चाची को प्यार से बांहों के घेरे में लेते हुए रामना ने कहा, जैसे उन्हें अवलंबन दे रहा हो।

"तो तुमलोग सरकार को बोलते क्यों नहीं हो?" माताजी कातर हो उठी।

"माताजी, सरकार सुन नहीं सकती, उसके कान पत्थर के होते हैं, जैसे भगवान की मूर्ति होती है!" रामू के मुंह से स्वत: स्फूर्त रूप से निकल गया।

"भगवान तो भक्तों की सुनता है बेटा!" माताजी दयानिधान सी बोली।

"भगवान का तो कह नहीं सकते, पर भगवान की मूर्ति कभी सुन नहीं सकती!" माताजी को और स्पष्ट करते हुए रामू बोला।

"तो क्या भगवान राम की जो मूर्ति विराजमान होनेवाली है वह भी नहीं सुनेगा!" बोलकर माताजी का मुंह खुला रह गया, बड़ा-सा खुला मुंह! जैसे दुनिया के सबसे बड़े प्रश्न के उत्तर की लघुता को ललकार रहा हो।

"भगवान राम की मूर्ति किसकी सुनेगी किसकी नहीं यह तो भक्त लोग ही तय करेंगे।" बोलकर रामू ने भुवन की तरफ हाथ जोड़ लेने सी देह-दशा बनाई, जैसे उसे आईना दिखा रहा हो।

"रामू, तुम हम लोगों के हँसमुख मित्र हो, हम सब तुम्हारी इज्जत करते हैं; तुम्हें एक जरूरी सलाह देता हूं, तुम बात-बात में भगवान राम और मूर्ति का मजाक मत बनाया करो, ऊपर बैठे लोगों को चप्पे-चप्पे की खबर रहती है, कहीं ऐसा न हो रामघाट में तुम्हारे साथ भविष्य में कोई अनहोनी घटित हो जाए..." उनका भाषण बढ़ता ही जा रहा था; माताजी टपक पड़ी, "अरे बेटा हमें तो मतलब है बस-ट्रेन से; घर नहीं पहुंचा सकते हो तो भाषण-प्रवचन सुनकर नींद क्यों खराब करें?" बोलकर माताजी अपने कमरे की ओर चल दीं; पीछे खड़ी महिलाएं भी। माताजी की गूढ़ बातें सुनकर किसी के पास कुछ नहीं बचा था बोलने के लिए; सभी सोने के लिए अपने-अपने बिस्तर

की ओर बढ़ चले।

कमरे में सभी सो गए थे। रामना की बंद आंखें दिल्ली से पूर्णिया तक की दौड़ लगा रही थीं, मन में उमड़ते-घुमड़ते प्रश्नों-प्रतिप्रश्नों के साथ ...आखिर क्या कारण है कि हम गरीबों की आवाज सरकार सुन नहीं पाती है? लाखों-करोड़ों प्रवासी मजदूर भूखे-प्यासे पैदल ही चले जा रहे हैं, पर सरकार के चेहरे, वचन-वाणी में कोई शिकन तक नहीं दिख रही है! माना कि सरकार के कान पत्थर की मूर्ति के कान जैसे होते हैं, पर काफी लोगों के एक साथ चिल्लाने पर तो भगवान भी जाग जाते हैं! रामू भैया सच ही कह रहे हैं बिहार के करोड़ों प्रवासी मजदूर एक साल के लिए घर बैठ जाएं तो हिंदुस्तान का टट्टी-पेशाब ही बंद हो जाए; हां, दो करोड़ मजदूरों के एक साल तक मौन साध लेने भर से ही सरकार के पत्थर वाले कान उठ खड़े होंगे...। रामना को बार-बार करवट बदलते देख रामू माजरा समझ गया; धीमी आवाज में उसका ध्यान खींचा, "अनुज रामना, बिहार के प्रवासी मजदूरों के बारे में ज्यादा मत सोचो, पटना से दिल्ली-मुंबई तक सैकड़ों सरदार उनकी सोच को पकड़े बैठे हैं! उनके बारे में कोई कुछ सोच सकता है तो दो-चार बिल्ला गेट्स ही सोच सकते हैं, कुछ कर सकते हैं!" बोलकर रामू नींद वाली धीमी सांस लेने लगा। रामना को लगा, बिहार के करोड़ों प्रवासी मजदूरों के बारे में अकेला सोचते-सोचते कहीं वह खुद न पागल हो जाए! नींद आते-आते उसके ख्यालों में आने लगा ...काश कुछ बिल्ला गेट्स का बिहार में अवतार हो जाए, सारे प्रवासी बिहारियों का उनके घर पर ही कमाने-खाने का उपाय हो जाए; फिर तो हमें पैदल चलाने का मजा चखा देंगे दिल्ली वालों को!

5

क्वारंटाइन सेंटर में अंकिता एक नई दुनिया में सांस लेती महसूस कर रही थी। पिछले दो दिन तो ऐसे बीते जैसे एक नई जिंदगी जी रही हो; प्रणव से हिलने-मिलने में ना तो कोई रुकावट रही और ना ही किसी किस्म का प्रतिरोध! मेला सरीखे माहौल में सामाजिक लोक-लिहाज तो जैसे कहीं दुबक सी गई थी। परसों दोनों बरामदे के अंतिम खंभे की आड़ में मिले थे; तब से झिझक तो कपूर जैसी उड़ती गई थी। तभी दोनों के हाथ पहली बार मिले थे; अगाध स्पर्श-सुख का जैसे सोता-सा फूट पड़ा था। अंकिता के शरीर

में एक सिहरन-सी दौड़ गई थी, जैसे हाथ ने बिजली के कम बोल्ट वाले नग्न तार को छू लिया हो। सिर से पैर तक शरीर में हजारों कांटे उग आए; अपनी जड़ों में अरमानों के रंग-बिरंगे फूल खिलाते कांटे! पहली बार एक मौन संकल्प अपने-आप उदघोषित हो उठा था; आजीवन साथ निभाने का संकल्प! दोपहर तक दोनों दो बार मिल चुके थे। ऊधम मचा रहे पूर्णिया क्षेत्र के बच्चों को वह शांत कराने गई, स्वयंसेवक जैसी; प्रणव भी बड़े बच्चों को समझाने आ पहुंचा। तब पहली बार दोनों की पूर्ण रूप से खिली मुस्कान में एक नया आत्मविश्वास झलक रहा था। असह्य दोपहर में भी स्कूल भवन के पिछवाड़े में दोनों एक-दूसरे की आंखों से तभी अलग हुए जब खाने वाली गाड़ी ने तेज हॉर्न बजाया। दोपहर बाद दहकती गर्मी में सभी प्रवासी, यहां तक कि बच्चे भी कमरे के अंदर सांस थामकर शाम के इंतजार में सुस्त पड़े थे। शौचालय वाले खुले कारीडोर में पहली बार दोनों काया के बीच इंचभर से भी कम दूरी रह गई थी। तब लू जैसी हवा के थपेड़े को भी चुनौती देती लंबी सांसों को काबू में रखना मुश्किल हो चला था; दोनों के लिए। शाम के गहराते अंधेरे ने तो दोनों के अंदर आग ही लगा दी थी; तब स्कूल स्टोर के कॉर्नर में परतों में पसरे अंधेरे में अल्प मिलन से आग शांत होने के बजाय भड़क उठी। खाने की गाड़ी आने तक दोनों बमुश्किल सोने लायक शांत हो पाए थे, आंखों की भाषा के हस्तक्षेप से।

कल का दिन परसों वाले दिन की पुनरावृति थी, नई भाव-भंगिमा-भाषा के साथ। लेकिन शाम होते ही प्रणय तरंग में अचानक विक्षोभ-सा आ टपका; प्रणय-प्रवाह में धीरे-धीरे बांध-बंधन जैसी अवरोधक दिखने लगी। अंतरंग भावना की उर्वर भूमि में उगे प्रणय-पौध मौन भाषा से सिंचित हो पल्लवित-पुष्पित होता रहता है; पर प्रणय लीला के सार्वजनिक होते ही नए-नए विक्षोभ उत्पन्न होने लगते हैं। क्वारंटाइन सेंटर के नवयुवकों के लिए प्रणव और अंकिता कल शाम होते-होते चटपटी चर्चा बन गई। धीरे-धीरे घूरने-ताड़ने का वातावरण बनता गया। भोजन वितरण तक अजीब आमंत्रण से लेकर अनर्गल आरोप-अवरोध अंकिता के लिए असहनीय होते गए।

हवा का रूप भांपकर दोनों ने आज कैद रहने में ही भलाई समझी, अपने कमरे में। किंतु अंकिता को अब तो कोई बंधन कबूल नहीं था; मोबाइल में उसकी उंगलियां एक नए संकल्प से संचालित होने लगीं–'...सात दिन में हम दोनों मोबाइल से सात जन्म के बराबर मैसेज भेज चुके हैं, एक-दूसरे को

अब अंतिम मैसेज डालने का वक्त आ गया है...'

'...क्या?' अगले मिनट ही उसके स्क्रीन पर प्रणव का भेजा एकल शब्द फड़फड़ा रहा था, छटपटाते इमोजी के साथ।

'...फांसी!' अंकिता ने सेंट कर दिया; वह समझ गई उसकी उंगली अंदर उठे चीत्कार के इशारे पर की बोर्ड पर खुद ही शब्द चुन रही है।

'...पागल हो गई हो क्या!' प्रणव के मैसेज के साथ पागल-सा दिखता हुआ इमोजी था।

'...जब दुनिया पागलों की तरह पीछे लगी हो, फिर तो एक ही रास्ता बचता है ना; लुच्चों-लफंगों के डंक से मरने से अच्छा है शांति से मर लें।' उंगलियों ने तेजी से लिख दिया, अंकिता ने बेझिझक सेंट कर दिया।

'...हमें शांति से जीना है अंकिता।'

'...तुम कहना क्या चाह रहे हो? यहां पर उन टुच्चों के तीर जैसी आंखों से लहूलुहान होती रहूं? अनर्गल अपशब्द सुनकर धरती में सीता मैया जैसी समा जाना ही तो विकल्प बचा है, इस कलयुग में भी!' अंकिता ने रुआंसा मुद्रा वाले इमोजी के साथ सेंट कर दिया।

'...शांति से जीने का मतलब है अंतिम उपाय' प्रणव के मैसेज के साथ हंसमुख इमोजी भी लटक रहा था, जैसे हँसते-हँसते फांसी पर चढ़ रहा हो।

'...फांसी ही न?' अंकिता ने प्रतिप्रश्न सेंट कर दिया, गंभीर मुखड़े वाले इमोजी के साथ।

'...हां-हां; शादी वाली फांसी!' जलते अनार की फुलझड़ियों वाली इमोजी के साथ प्रणव ने भेजा था।

'...क्या! सच कह रहे हो? तुममें इतनी हिम्मत आ गई है!...' अंकिता पढ़ भी नहीं पाई उसने क्या सेंट किया है।

'...सच्ची में; प्रॉमिस!' कंठ पकड़कर कसम खाते इमोजी के साथ प्रणव का मैसेज था, बिल्कुल पैर पकड़ लेने-सा।

'...कब! कहां?' अंकिता बेकाबू हो उठी।

'...यहां से निकलकर बाहर कहीं भी!' प्रणव का निश्चय भरा मैसेज था।

'...पर करंटइन सेंटर से निकलना आसान है क्या!' अंकिता अनिश्चय के भंवर में गोता लगाने लगी।

'...रामू अभी-अभी नहाकर निकला है, मूड पूरा फ्रेश होगा उसका; मैं उसको लेकर सेंटर कार्यालय के पीछे वाले पेड़ के नीचे आता हूं, तुम भी

पहुंचो...' विजेता होने का संकेत करती दो उठी उंगलियों के साथ प्रणव का मैसेज भी मुस्कुरा रहा था।

"तुम दोनों यहां ऐसे गुमसुम क्यों खड़े हो? भागने का प्लान तो नहीं बना रखा है तुम दोनों ने!" क्वारंटाइन कार्यालय के पीछे अंकिता और प्रणव को कदम पेड़ के सहारे मुंह लटकाए खड़े देखकर रामू ने पूछा, उलाहनेभरे स्वर में।

"यह तो फांसी लगाने को तैयार बैठी है!" अंकिता की ओर देखकर प्रणव ने रामू से कहा; फिर रामू पर नजर टिकाए हुए निश्चय के साथ बोला, "पर मेरा विचार हो रहा है यहां से निकल लें!"

"प्रणव भैया आप मुझसे बड़े हो, कहते नहीं बन रहा है; क्या आप दोनों का प्यार इतना परवान चढ़ गया है कि..." रामू बोल ही रहा था कि प्रणव ने रोका, "अरे रामू प्यार परवान की बात छोड़ो, तुम्हें कुछ पता है! मुंबई-सूरत से आए लफंगों ने अंकिता को परेशान कर रखा है!"

"पर यहां से निकलकर बाहर क्या करोगे! कहां जाओगे?" बोलते हुए रामू किसी बीहड़ में खो गया जान पड़ा।

"हम दोनों ने सहमति से शादी करने का निर्णय लिया है।" प्रणव ने अंकिता के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा; अंकिता की सांस तेज हो चली।

"तो शादी की तैयारी शुरू कर देते हैं!" रामू उत्साहित हो उठा।

"पर कहां!" प्रणव अधीर हो उठा।

"यहीं पर, इसी करोना मेला में; उन लफंदरों-बंदरों को प्रेम की शक्ति का पता होना चाहिए न!" रामू ने धरती की तरफ उंगली दिखाते हुए कहा जैसे सच में कोई अटल स्तंभ गाड़ रहा हो।

"पर करंटइन सेंटर में शादी कैसे हो सकती है?" अब जाकर अंकिता का मुंह खुल पाया था; कौतूहलपूर्ण उमंग से लालवर्णी मुखमंडल!

"जिसने भी पहली बार कहा होगा गलत नहीं कहा होगा, शुभ कार्य में देरी कैसी! जब सरकार ने यहां मेला लगा ही रखा है फिर तो मेले में उमंग-उत्साह तो होना ही चाहिए!" रामू के पीछे कब से खड़ा रामना ढोल-मृदंग बजाने जैसा झूम उठा।

"मेरे माँ-पिताजी तो यहीं हैं; उनसे पूछे बगैर..." अंकिता आगे बोल ना पाई।

"हां तो मैं और इसरार चलते हैं अभी चाचा-चाची के पास! उनकी

सहमति लेनी जरूरी है।" बोलकर रामू ने इसरार को आंखों से चलने का इशारा किया।

सत्तन का चचेरा भाई है महेश लाल विश्वास, उम्र में उससे कुछ ही साल का बड़ा। आठ अप्रैल को आरंभ हुई पदयात्रा के साथ अंकुरित प्रेम-यात्रा को दो-तीन दिन में ही भांप लिया था सत्तन ने। उसने भाई महेश लाल को आगाह भी कर दिया था, दूसरे दिन ही। बाद में इसके परिणाम-समाधान पर भी सोचता आ रहा था। रामू ने महेश लाल को स्कूल भवन के किनारे आग्रहपूर्वक बुलाया, तेज धूप में ही! उसे समझते देर नहीं लगी, पानी सिर से ऊपर बहने लगा है। हाथ जोड़ते हुए रामू के पास आते ही बोला, "इस लड़की को लेकर हम बड़े शर्मिंदा हैं; कुछ ऊपर-नीचे हो जाए तो जरा संभाल लेना बेटा।" कमरे में आते ही अंकिता ने संस्कारवश माँ को बता दी थी, 'रामू पिताजी से बाहर कुछ चर्चा कर रहे हैं।' पति के पास पहुंचते ही बात उसकी पकड़ में आ गई थी; पति की बात में उसने जोड़ा, "अरे बेटा हमने तो इसे बताया था बेटी को हाई स्कूल से आगे न पढ़ाए, पर इसने हमारी एक न सुनी!"

"अरी अंकिता की माँ, समय के बारे में भी तो सोचो; हमारे बाप-दादा भी मजदूरी करते थे और हमें भी वही करना पड़ रहा है, भले ही परदेश में। अब तो मजदूर क्लास के लोग भी बच्चे को बीए, एमए, आईटी करा रहे हैं!" बोलते-बोलते महेश लाल की आवाज में पश्चाताप की आहट आने लगी।

"कुछ अच्छा सोचकर ही तो आपने हमें और अंकिता को गांव से दिल्ली बुलाया था; हमें क्या पता शहर में करौना के साथ-साथ आंख लड़ौना बीमारी भी फैली है!" बोलकर अंकिता की माँ ने मुंह का आंचल और नीचे सरका लिया।

"चाचाजी, अब तो बात पूरी तरह फैल चुकी है यहां! न जाने आगे कितना दिन रहना पड़े; यदि लड़का-लड़की राजी हैं तो शादी निपटा दीजिए!" सीधे विषय पर आने में रामू ने देर नहीं की।

"लड़का तो तुम्हारे रामघाट का है; हमलोग पूर्णिया पहुंचें तभी तो खर्चा-पानी का इंतजाम हो पावे।" महेश लाल सोच में पड़ गया।

"रामघाट और पूर्णिया को छोड़िए, शादी यहीं पर निपटा दीजिए; बल्कि आज ही!" मामले के और करीब पहुंचते हुए रामू ने कहा।

"लेकिन यहां पर भोज-भात कैसे हो पाएगा?" माँ ने वाजिब चिंता

जाहिर की।

"यहां तो हर रोज सैकड़ों लोग खा रहे हैं; हमलोग गांव में इतना बड़ा भोज खिला पाएंगे भला!" भोज की बात करते हुए ही महेश लाल ने बेटी की शादी के लिए हामी भर दी।

"गे माय! एक सब्जी दो रोटी और तनिक चावल! यही भोज?" माँ रुआंसा हो उठी।

"चाची, चिंता काहे करते हैं; आज रात का आइटम बढ़वा देते हैं न!" अंदर उठ रही खुशी की लहर को स्वर में आने से रोकते हुए रामू ने कहा। तभी भोज वाहन ने गेट के अंदर आकर हॉर्न बजाया। रामू सीधे उधर ही चल पड़ा।

"भाइयों-बहनों-माताओं, आज तेरह अप्रैल है! हम सभी का बैसाखी-सिरवा-बिसवा-पड़वा और भी ढेर सारे पर्व हैं आज और कल; ऐसे पावन अवसर पर आज शाम इस प्रांगण में पुण्य का एक बड़ा काम होने जा रहा है!" माइक थामते ही रामू के जोश में जोर दिखने लगा आज।

"...कौन सा काम!... ...कौन सा काम?..." सामने आते लोगों का जोश दुगुना हो उठा।

"हम लोगों के साथ दिल्ली से पैदल आ रही लड़की अंकिता और लड़का प्रणव की शादी आज शाम हमलोग यही सेंटर में संपन्न कराएंगे! अलग-अलग शहरों से पैदल आए सभी प्रवासी भाई-बंधु-बहन अपने-अपने विवेक-विचार से बराती या घराती पक्ष की तरफ हो सकते हैं।" अपनी आवाज में गंभीरता लाते हुए रामू ने सभी को आमंत्रित किया। भीड़ से जोरदार माँग उठी ...शादी का भोज?...

"बरात-विवाह है तो भोज भी होना चाहिए!" बोलने के बाद रामू के चेहरे में चिंतन-चिह्न दिखने लगे।

"...लेकिन भोज होगा कैसे?..." सामने से सबसे बड़ा प्रश्न उछल ही पड़ा।

"करोना सरकार का, कवारंटीन सेंटर सरकार का! प्रवासी किसका?" रामू ने भीड़ से ही प्रश्न किया, हँसते हुए।

"...भगवान का!..." सामने सभी ने ऊपर हाथ उठा दिए।

"तो भोज कौन कराएगा? भगवान या सरकार!" रामू ने संकेत-सा दिया।

"...सरकार? सरकार!..." प्रवासियों की पुकार से पूरा परिसर तरंगित हो उठा।

"ऐसे दुखभरे समय में हो रही शादी में सरकार यदि एक साधारण भोज भी नहीं दे सके तो काहे का प्रजातंत्र, काहे की सरकार!" बोलते-बोलते रामू की आवाज ललकारपूर्ण होती गई। सामने भोजन के पैकेट बंटने लगे। अब लोगों में भोजन पाने के लिए कल जैसी बेसब्री नहीं रही; सबको भरोसा था, रामू अपनी कलाकारी से भोज का इंतजाम करवा ही लेगा!

क्वारंटाइन कार्यालय में बैठे मेडिकल टीम और पुलिस वाले ने शादी के ऐलान को साधारण ढंग से ही लिया था। पर रामू द्वारा भोज की उद्घोषणा से वे सकते में आ गए। रामू को वे सभी अब तक अपना मददगार मानते आ रहे थे, अब वह एकाएक मुसीबत नजर आने लगा। सेंटर में बैठे दरोगा ने रामू को बुलवा लिया। वह साधु भाव ओढ़े सामने आ खड़ा हुआ। उसकी नकली भंगिमा पर सीनियर मैडम भड़क उठी, "तुम इतने भोले नहीं हो जितने बन रहे हो!"

"अभी तो ठीक से जवान भी नहीं हुए हो; और चले हो दुनिया को चलाने!" दरोगा बोलते हुए उठ खड़ा हुआ; रामू के कंधे पर अपनी मजबूत हथेली थपकाते हुए कहा, "कोरोना महामारी के समय सारा शहर बंद है, शादी-भोज का ऐलान तो कर दिया तूने पर पूरा कैसे करोगे गुरु!" रामू निरुत्तर खड़ा रहा, दरोगा जी ने जबरदस्त अंदाज में चढ़ाई कर दी, "ज्ञान-विवेक-बुद्धि के मामले में तुम भले ही बच्चे-बुद्धू हो पर उम्र से बालिग हो, इसलिए कानून की गिरफ्त में आने से बच नहीं सकते बच्चू!"

"कानून की गिरफ्त!" रामू अचकचा गया।

"महामारी के समय जन भावना भड़काने के आरोप में धरे जाओगे; यदि देशद्रोह की धारा जुड़ गई फिर तो गए काम से!" दरोगा के चेहरे में मंद पर अजीब मुस्कान तैर गई; ऐसी मुस्कान रामू ने टीवी में एक-दो श्रेष्ठ नेता-वक्ता के चेहरे में देखी थी।

"सर मैं छोटा आदमी हूं छोटी बात ही बोलूंगा; देश में कोरोना वायरस किसने लाया! मजदूरों ने? बस-ट्रेन किसने रुकवाया! प्रवासी मजदूरों ने? रोजगार-पानी किसने छीना! प्रभु रामचंद्रजी ने? यहां कवारंटीन सेंटर में सबको डंप किसने किया! भगवान कृष्ण ने?..." रामू बोलता ही जा रहा था; दरोगा झल्ला उठा, "अरे भाई वो बात तो बोलो जो कहना चाह रहे हो?"

"पते की ही बात तो बताना चाहता हूं; सरकार ने सब कुछ बंद कर रखा है, तो प्रेम में भी पाबंदी लगा रखी है क्या! दो प्रेमी दिलों को हमेशा के

लिए मिला देना यदि देशद्रोह है फिर तो मुझे अभी ही अंदर करवा दीजिए।" बोलकर रामू दरोगा की ओर बढ़ चला, अपने दोनों हाथ गिरफ्तारी के अंदाज में उठाते हुए।

"चलो देशद्रोह का मुकदमा तुम पर नहीं चलाएंगे, पर तुम्हारे कारण लड़का-लड़की तो अंदर चले जाएंगे!" छोटा दरोगा ने आंखें बड़ी करते हुए कहा।

"वह भला क्यों?" रामू ने आंखें छोटी करते हुए कहा।

"महामारी एक्ट?

"सो भला कैसे!" रामू के लिए पहेली बन पड़ी महामारी एक्ट।

"महामारी एक्ट में सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना होता है! लड़का-लड़की ब्याह करेंगे तब समझो महामारी एक्ट की तो धज्जियां उड़ जाएंगी; सुहागरात ही सबसे बड़ा सबूत बन जाएगा दोनों को जेल में डालने के लिए!" पीछे आ खड़ा हुआ भुवन टपक पड़ा।

"यह आप बोल रहे हैं या आपकी सोच?" गुस्से को नियंत्रण में करते हुए रामू ने कहा।

"दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं," भुवन ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा।

"तो तुम्हारी विचारधारा के हिसाब से प्रेम की परिभाषा यही है कि प्रेमी जोड़े मिलते हैं तो 'वो' सब होना ही होना है!" बोलकर रामू ने भुवन पर नजरें गड़ा दीं, भुवन चुप ही रहा; दरोगा जी से मुखातिब होकर बोला, "आपने महामारी एक्ट की बात छेड़ दी है तो उसके एक-दो प्रावधान पर प्रकाश डालना चाहता हूं।"

"हां-हां, क्यों नहीं, शौक से प्रकाश डालिए; प्रकाश के बाद अंधकार भी आप ही को करना है, सुहागरात कराने का ठेका जो ले रखा है आपने!" दरोगा ने उपहास उड़ाते हुए कहा।

"मैं सिर्फ महामारी एक्ट की ही बात करूंगा, लंपटता एक्ट पर चलना मेरी आदत नहीं है," रामू ने दरोगा से कहा; फिर सीनियर मैडम की तरफ मुड़ कर बोला, "महामारी एक्ट में सरकारों ने मार्च महीने से ही सैकड़ों सर्कुलर जारी किया है, सर्कुलर के हिसाब से कवारंटीन सेंटर में रखे गए हर आदमी को सरकार मुफ्त में भोजन-भात, मास्क, साबुन, सैनिटाइजर देगी; आपलोगों ने मास्क दे दिए इसके लिए धन्यवाद, पर साबुन और सैनिटाइजर

अभी तक किस मंत्री-अफसर के गोदाम में दबा पड़ा है?" बोलते-बोलते रामू में सनक-सी सवार होने लगी।

"..." मैडम और दरोगा की चुप्पी बढ़ती गई; रामू ने पेशकश की, "अरे सरजी! इस लड़की को सेंटर के कुछ लड़कों ने कल से ही परेशान कर रखा है! दोनों शादी के लिए सहमत हैं तो क्यों न होने दें शादी?" इतना बोलकर उसने अब तक चारों ओर आकर खड़े हुए लोगों की तरफ देखकर कहा, "इसलिए न होने दें कि एक शाम के भोजन में आपलोग एक एक्स्ट्रा सब्जी और एक सलाद नहीं बढ़ा सकते? जबकि यहां फंसे सैकड़ों लोगों का साबुन-सैनिटाइजर मार कर रखे हुए हैं आपके ऊपर के अफसरान!"

"ठीक है ठीक है, रामू भैया; इस सेंटर की इंचार्ज होने के नाते मैं बात करती हूं अभी जिला मुख्यालय में, आज शाम ठीक-ठाक भोजन की व्यवस्था के बारे में।" मैडम ने कहा तो खुद उसके होठों पर अदृश्य मुस्कान तैर गई; शायद अपनी शादी के दिन याद आने लगे थे उसे।

क्वारंटीन और कोरोना का खौफ मानिकपुर विद्यालय परिसर से गायब होने लगा, दोपहर से ही! अंकिता और प्रणव की शादी की खबर से समूह सैंतालिस के लोगों ने राहत की सांस ली, अटके कार्य के समापन से प्राप्त असीम संतुष्टि की भांति। दूसरे शहरों से आए प्रवासियों के लिए तो यह कौतूहलपूर्ण उत्सव था! कल तक अंकिता को तिरछी नजर से देखते आ रहे नवयुवकों के मन में अब अचानक उसके लिए बहन सी ममता उपजने लगी। कुछ भावुक किस्म के नवयुवकों के मन से ममता उमड़कर आंखों में छलक आई थी, क्वारंटाइन सेंटर में ही बिचारी की शादी-विदाई की बात सोचकर। अंकिता को भेदक दृष्टि से देखते आ रहे कुछ नवयुवकों की लालसा अभी तक तृप्त नहीं हो पाई थी; ऐसे नवयुवकों ने अभी से अपनी अलग मंडली बना ली थी, अपने को बराती पक्ष बताते हुए।

पुलिस और मेडिकल वालों ने ऐसे शुभ अवसर पर सहृदयता दिखाई; कार्यालय में पड़े तख्त को बाहर निकालकर विवाह मंडप अनुकूल सजा दिया गया, प्रवासी मजदूरों के कलापूर्ण हाथों से। चट मंगनी पट बिहा वाली बात बगल के मोहल्लों तक दोपहर को ही पहुंच चुकी थी; सभी ने अपने-अपने घरों से कुर्सियां भिजवा दीं। मोहल्ले के मंदिर में मूर्छित अवस्था में जाते पुष्प-पौध की कतारें; कोरोना के दंश से भगवान की सेवा में चढ़ाए जाने से कब से वंचित! घोर पतझड़ में भी पत्तियों के सहारे कुछ पुष्प सांसें थामे

अभी तक खिले थे; शायद वर-वधू के मंडप में मुस्कुराने की खातिर ही! विवाह के लिए एक असली पंडित का होना दोपहर से ही एक खोज थी। मंडप सजते ही समाधान निकल आया; सूरत से साथ चल रहे दरभंगा वाले अज्ञात-अनाम मंगल मिश्र को लोगों ने अज्ञातवास से ढूंढ़ ही निकाला। आज के विवाह के लिए मंगल मिश्र का अचानक प्रकट होना जनसमूह के लिए सुकूनदायी था। उसका प्रकट होना सजग लोगों के लिए कष्टदायी भी था; नई अर्थव्यवस्था ने अब तो हर जाति-धर्म के लोगों को परदेश में छिपकर मजदूरी के लिए मजबूर कर दिया है!

मिथिलांचल की महिलाओं ने पूरे परिसर को मंगल परिसर में बदल डाला। बेटे की बारात निकलने के वक्त माँ के अंदर उपजते खालीपन को उजागर करते गीत से पूरे परिसर में सन्नाटा पसरता गया...

छोटै से पोस्लहुन रे नुनु दूध भात खिलायी रे
आजु से जै छअ नुनु जोगनी के राज रे
मायां कअ तजी रे नुनु जै छअ जोगनी के राज रे
तोअर मायां केकरा लइगे संतोष करतौ रे
आअपन घर गे मायां चंदन सण बेटा गे
ओकरे लइगे संतोष करिहेन गे...

मंगल गीत की शृंखला बढ़ती गई, समय और मनोभाव के अनुकूल; कड़ी दर कड़ी...

बोली जे गेलअ रे प्रणव पाँच सौ बरयाती
एक्को टा बरयाती नै देखलौ रे प्रणव
मार गोली सट
बापक नाम हसैले रे प्रणव
मार गोली सट...

अगले मंगल गीत की बारी आते ही परिसर की फिजा में मौसम की मार दिखने लगती...

चौतअ बैशाखअक झिलमारी रौदअ हे
धूपक जड़अल धिया थाड़ी हे...

स्कूल परिसर धीरे-धीरे एक नई दुनिया में अवतरित होता गया, लोक जीवन के आनंद रस में डूबा हुआ!

केहो से देलकै गे मइया चांगेर चांगरिया गे

केहो पठैला फुलवारी
भइया से देलकौ गे अंकिता चांगेर चांगरिया गे
भौजी पठैलग फुलवारी गे...
...
बाबा से करिहेन विचार गे मायां हमरा की देवे दान
बाबा से कैलियो विचार गे अंकिता महिष देवो दान
महिष जे देवे गे मायां मरी हरी जैतो
कनबाली रैहतो निशान गे
हमरा की देवे दान...

मिथिला के मधुर कंठ से निकल रहे मंगल गीत औरत-मर्द सभी के मर्म स्थल को जागृत करने लगे...

सोनाअ सण बेटी बीहौलेन हे बाबा घरअ भेलौऔन सुनाअ हे
अणअ धनअ सबै रहीइ गेलहौन हे बाबा
दुलारी बेटी भेलहौन चोरिइ हे...

फिर बेटी के मन की संवेदना को स्वर देती तान...

अगना बोड़ते बोलल छैलेए गे मायां
बेटी छै जानग जंजाल गे...
आजु हम्मे जैछन गे मायां लछुवाग संगे गे...

अगले गीत में तान और ऊँची होती गई...

झिलमिल बाड़ी रिमझिम बिहा है छौन हे बाबा
बिहा देलहेन मूरखा लड़काग हाथै हो बाबा...

मिथिला के रंग-विरंग मंगल गीत से परिसर में संपूर्ण लोक जीवन उतर आया; एक ऐसा लोक जीवन जहां कोरोना एक विस्मृत घटना के रूप में भी अस्तित्व में नहीं था; था तो सिर्फ जीवन, हर क्रियाकलापों से जीवंत! अंकिता और प्रणव के सपने पूर्ण होने की घड़ी आ ही गई, धीरे-धीरे! आठ अप्रैल को दोनों के दिलों में एक लम्हे का बिजारोपण हुआ था, एक साथ! वह पल्लवित-पुष्पित होकर आज विहँस रहा था।

जय माला से ठीक पहले जिला कलेक्टर और स्थानीय विधायक का वहां प्रकट होना किसी चमत्कार से कम ना था! तब जनसमूह का कलेजा पिघल उठा ...कौन कहता है कि कोरोना के समय सरकार ने गरीबों का साथ छोड़ दिया है! वर-वधू के एक-दूसरे के गले में जयमाला डालते ही पूरा परिसर

और उन्मुक्त आकाश करतल ध्वनि से गूंज उठा। विकट समय की शादी मानकर पंडित जी ने अग्नि फेरे भी जल्दी ही निपटा दिए। आगे सिंदूरदान की रस्म पूरी होते ही प्रवासी मजदूरों के पोर-पोर सुखताल में नहा उठे। वर-वधू के अंतस में पुष्पित हो उठे सम्मोहन को बयां करने के लिए शब्द ही कहां थे! परिसर में मौजूद प्रवासी जनों के अंदर जीवन की सार्थकता हिलोरें मारने लगी ...ऐसे पुण्य काम में सम्मिलित होने के सुख के सम्मुख तो जीवन के हर दुख बौने हैं! आगे बिना देर किए ही भोज्य वाहन से रात्रि भोजन उतरता गया। आज पैकेट के रूप में नहीं, दो सब्जी पूड़ी चावल रायता और एमएलए साहब के सौजन्य से उपलब्ध रसगुल्ले के साथ संपूर्ण भोज के रूप में; प्लास्टिक की थालियों में सम्मान के साथ सजे व्यंजन दर व्यंजन! कलेक्टर और एमएलए साहब की गरिमामयी उपस्थिति में ही प्रीतिभोज आरंभ हुआ, सोशल डिस्टेंसिंग का सौ फीसदी पालन करते हुए; नियम पालक प्रवासी साबित करने का ऐसा अवसर बार-बार भला कहां आ पाता!

स्कूल भवन की ऊपरी मंजिल पर एक कमरे को महिलाओं ने सुहाग कक्ष में बदल डाला था, शाम को ही! भोज-भात खत्म होते-होते वर-वधू को महिलाएं सुहाग कक्ष में छोड़ आईं। कोरोना काल की झटपट शादी होने का दृष्टांत सभी के मन में एक बड़ी उपलब्धि के रूप में अमिट होता गया। गरीब की बेटी के हाथ पीले होने का दृश्य! बड़े-बुजुर्ग तो क्या, युवकगण भी भावना के ज्वार में बहने लगे! कल तक अंकिता को कुटिल आंखों से भेद रहे लड़कों के मन में भी जीवन-सार के भाव आने-जाने लगे थे; सुहागरात को लेकर कदाचित् पनप रहे कुविचार-कूटभाषा न जाने मन की किस गली में बिला गए! सारे सो चुके; रामू ने अपने कमरे से ही क्वारंटाइन कार्यालय की तरफ हाथ जोड़कर सिर झुकाया; एक गरीब के नेक काम में सहयोग के लिए, खास करके कपट बुद्धि वाली व्यवस्था में बैठे लोगों के मन में समय पर सद् बुद्धि आने के लिए!

6

14 अप्रैल; आखिरी नींद के आगोश से प्रवासीगण बाहर नहीं आए थे, सुबह वाली शीतलता में। क्वारंटाइन सेंटर का सन्नाटा अंबेडकर जयंती का मौन उत्सव मनाता जान पड़ रहा था। सुबह का तापमान अभी चढ़ना शुरू नहीं हुआ था; परिसर का वातावरण एकाएक गर्म हो उठा, "एक उदंड-उजड्ड

ग्वाला से तुमलोग निपट नहीं पाए, भूसा खाकर पढ़ाई किए हो का!" क्वारंटीन कार्यालय से गरजने की आवाज आई। स्वर के चढ़ाव और शब्दों में चढ़े ज्वार से लगा ठीक-ठाक दर्जे का सरकारी अधिकारी होगा। तहसीलदार और डिप्टी सीएमओ की गाड़ी आकर लगी थी अभी-अभी, दोनों में से कोई एक होंगे; संभवत: तहसीलदार महोदय ही, शुरुआती मित्रवत वार्तालाप के बाद तहसील ताकत जाग उठी होगी अंदर से!

"सर भीड़ को अनुशासित करने में वह तो पहले दिन से ही मदद करता आ रहा है।" सेंटर की सीनियर मैडम बोल रही थी।

"अरे मैडम जी कोई हमारा हेल्प करेगा तो क्या बदले में हमारा थैला हथिया लेगा!" रौब वाली आवाज थोड़ी नरम पड़ती दिखी, शायद महिला सम्मान का ख्याल आते ही; आगे आवाज धिक्कारने जैसी होती गई, "दूसरे दिन तुमलोगों ने पूरे हजार मास्क बंटवा दिए! तभी मुझे शक हुआ तुम लोग किसी भारी बैल से डर गए हो!"

"अरे सर! बाकी सेंटर के वनस्पत इस सेंटर को काबू में रखना बड़ा मुश्किल काम है!" दरोगा जी बराबरी के दर्जे की आवाज बनाते हुए बोला।

"अरे दरोगाजी! आपके डिपार्टमेंट के लिए तो बारहों महीने सदाबहार होता है न! कई विभागों के लिए यह कोरोना अल्पकालीन अवसर लेकर आया है।" सौम्य भाषा वाली आवाज डिप्टी सीएमओ की थी।

"तो फिर यहां हंगामा होने देते का!"

"दरोगाजी, बात को समझा करो! जैसे तुम्हारे इंस्पेक्टर और सीओ साहब को हर चीज का हिसाब ऊपर पहुंचाना होता है वैसे ही हमारा भी तो ऊपर..." बोलकर तहसीलदार क्षणभर के लिए रुका, फिर बोला, "कायदे से फिफ्टी परसेन्ट मास्क ही बंटना था; बाकी फिफ्टी का हिसाब तो हमें और डिप्टी साहब दोनों को देना ही पड़ेगा ऊपर! चलो मास्क वितरण को मैनेज नहीं कर पाए, साबुन और सैनिटाइजर नहीं बांटने से हिसाब ठीक हो गया था; पर अब तो वो सब शादी-बरात में फूंका गया!" बोलने के बाद थोड़ी देर चुप्पी छाई रही। डिप्टी सीएमओ को चुप्पी तोड़नी पड़ी, खिन्न होकर बोला, "उन्हें माल भी चाहिए और ऊपर से माहौल मैनेज करने का फरमान भी; साला मुफ्त के क्रीम से ही चेहरा चमकाएँगे!" डिप्टी सीएमओ प्लास्टिक सर्जन रहे होंगे शायद।

"हिसाब से सेंटर नहीं चला पा रहे हैं ये लोग! तो आगे जब भी कोई

मौका मिलेगा प्रशासन इस सेंटर को उठवा देगा।" कार्यालय से बाहर आकर तहसीलदार ने कहा, गाड़ी की ओर बढ़ते हुए। धन्यवाद ज्ञापन के लिए रामू के साथ आए नौजवानों की टीम ने बाहर ही रहना बेहतर समझा, अंदर का गर्म माहौल देखकर; बाहर की चढ़ती गर्मी में भी ठंडक महसूस करते हुए! गाड़ी में बैठ चुके तहसीलदार की नजर सामने खड़े लोगों की तरफ गई, रामू पर क्षणभर के लिए अपने आप टिक गई; भाव-भंगिमा से वह कुछ भी हासिल करने वाला जैसा दिख भी रहा था!

सुबह तहसीलदार जितना गर्म था दोपहर को मिले खाने के पैकेट उसी अनुपात में नरम था; पहले से मिलते आ रहे सब्जी-पूड़ी और चावल में से चावल नदारद थे। किसी ने कोई आपत्ति नहीं उठाई; रात को ठीक-ठाक खाए-पचाए लोगों की आंखों में एहसान का पानी बरकरार था। दरोगा जी की हिदायत पर एक आवरणधारी ने माइक को शुरू से ही अपने कब्जे में ले रखा था; कहीं रामू विद्रोह का बिगुल ना बजा दे। खाने को लेकर कोई शिकायत दर्ज नहीं होने के बावजूद सीनियर मैडम ने माइक थाम लिया, "अब मेनू बदल गया है; डब्ल्यूएचओ ने चावल से परहेज करने को कहा है।"

"जय श्रीराम! अब भरपाई हो जाएगी।" पीछे खड़ा आज पहली बार दिख रहा बिना आवरण वाला व्यक्ति बुदबुदाया, राहत की सांस लेने जैसा।

शाम हो गई। स्कूल परिसर से पहले वाली हलचल गायब थी, जैसे मेला अब टूटने वाला हो! रात नौ बज गए; शाम सात-साढ़े सात तक आने वाले भोज्य वाहन का कोई अता-पता नहीं था! थक-हार कर रामू ने क्वारंटाइन कार्यालय में झांककर देखा; उसके बिना कुछ पूछे ही अंदर से जवाब आया, "ठेकेदार के किचन में गैस खत्म हो गया है, खाना पहुंचने में देरी होगी; हो ना हो कल सुबह हो जाए!" रामू को समझते देर नहीं लगी, सरकार ने संकेत दे दिए हैं! वहां खड़े प्रवासियों को उसने इशारों में बताया, "सरकार की हालत भी प्रवासी मजदूरों जैसी हो गई है; देश में इतना दम कहां जो आधे देश को आधा महीना भी ठीक से खिला सके!" सांस छोड़ते हुए आगे कहा, "सभी कमरों में खबर करवा दो जिसके पास मुढ़ी-भूंजा-बिस्किट जो भी बचा हो आपस में बांटकर रात निकाल ले।"

7

शनिचरा वर्षों से डायबिटीज का पेशेंट था, फिर भी यमुना घाट से पैदल चलने

के एलान पर पीछे नहीं रहा था। रामू को रामघाट की मिट्टी पर भरोसा था; अंदर से संदेह भी, मिट्टी चाहे रामघाट की हो या कहीं की जब उसकी नमी ही सूख जाए तो पौध भला कैसे बचेगा! रात ग्यारह बजे शनिचरा ने प्राण त्याग दिए। मौत की खबर ने रामू के कमरे से सारे कमरों में खुद ही दौड़ लगा दी। बिना भोजन के ना सोने के आदी लोग अभी भी परिसर में टहलकर भोज्य पाने का भ्रम पाल रहे थे। मौत की वजह यानी शनिचरा की डायबिटीज वाली बात भी धीरे-धीरे सार्वजनिक हो चुकी थी। प्रवासी मजदूरों में मंगल मिश्र का शुगर पर भी खासा दखल था; शनिचरा के पीले-पीले मृत शरीर को देखते ही उसके मुंह से निकला, "हाइपोग्लाइसीमिया।" सुनने वाले सभी दंग रह गए, पिछले जन्म में पंडित जी जरूर डॉक्टर रहे होंगे पटना-दिल्ली में!

प्रवासी मजदूर की मौत की खबर भी क्वारंटाइन कार्यालय में कोई असर नहीं पैदा कर पाई। सभी सोया स्टाफ जागकर भी उसी अवस्था में पड़े रहे; सिवाय छोटे दरोगा के, धीरे-धीरे ही सही वह डेड बॉडी वाले कमरे की ओर चल पड़ा। कमरे में पड़ी लाश तक आने के बजाय उसने बरामदे में खड़े-खड़े प्रभु को याद करना जरूरी समझा, "प्रभु की जैसी मर्जी, मौत को किसने देखा है!" क्वारंटाइन कार्यालय से जूनियर मैडम ने आवाज लगाई "डीएम साहब, एसपी साहब और सीएमओ साहब को सूचना भेज दी गई है; रात ग्यारह बजे वाली हाई लेवल की मीटिंग खत्म हुई है, वहां से जैसा निर्देश मिलेगा वैसा किया जाएगा, सभी लोग शांत ही रहें।" शनिचरा की मृत्यु से क्वारंटाइन सेंटर भले ही सामान्य दिख रहा था, खौफ प्रवासियों के अंदर उतरने लगा; डर वाली सीढ़ी से। रामू चिंतनशील चाल में चहलकदमी किए जा रहा था, बरामदे में इस किनारे से उस किनारे तक। रामू को चिंतामग्न पाकर प्रवासियों की धड़कनें तेज हुई जा रही थीं।

मौत का मातम आधे घंटे से ज्यादा टिक ना पाया।

...कोरोना है?...

...कोरोना है!...

...कोरोना...

क्वारंटाइन कार्यालय से अचानक डरावनी चीख निकली। वह सिर्फ चीख भर नहीं थी, चीख से निकली कोरोना की तेज लपटें थीं, जल्द ही पूरे परिसर को अपने लपेटे में ले लिया। रामू को अपनी बस्ती में बरसों पहले लगे सर्कस की याद आ गई; बाजीगर! कैसे मुंह से पेट्रोल के एक कुल्ले

मात्र से फव्वारा बनाकर दर्शकों के सामने आग लहका देता था, डरावनी आग! रामू को समझते देर नहीं लगी; मृत्यु के आधे घंटे तक कोरोना का नामोनिशान तक नहीं था, अब अचानक कोरोना का हाहाकार क्यों मचाया गया है! उसे परवेज की आज फिर याद आई; यदि वह यहां होता तो जरूर कहता, 'देश के कुछ नामचीन कलाकारों ने अपने नफा-नुकसान के हिसाब से कोरोना का नाट्य मंचन शुरू कर दिया है!' पर रामू के वश में आज सिर्फ सोचना भर रह गया था। अब उसने भी अपने को हकीकत के करीब पाया, 'वह भी तो देश की लाचार जनता ही है, जिसके वश में सोचने के सिवाय और कुछ नहीं है!'

क्वारंटाइन कार्यालय के चीख से कोरोना का उत्पादन-लक्ष्य पूरा हो चुका था, पलभर में ही। दैत्याकार कोरोना! उसके डरावने पंजे ने योजनाबद्ध कमाल कर दिखाया; प्रवासियों की आंखें मृत्यु पूर्व जैसी बड़ी होने लगीं ...मौत तो बस अब घंटे-दिन की दूरी पर खड़ी है! पूरे परिसर में चीख-पुकार मच गई

...रौ बाउ कोरोना धैर लेलक!...

...करोना आया? भागो!...

...इस कमरे में भी करोना है...

...दरवाजे पर कोरोना आ गया!...

...अरे! वह देखो, गेट पर बड़ा कोरना खड़ा है...

...मेरी माँ के मुंह में करोणा घुस गया बाप रे...

...मेरी बेटी को पैर नहीं उठ रहा है! करोना पैर जाम कर दिया है?...

...बाप रे बाप, मेरा बेटा का जुबान नहीं खुल रहा है! कोई जरा देखो तो, कहीं पूरा मुंह कोरोना से तो नहीं भर गया है?...

कलयुग में कष्ट में पड़े लोग पहले भगवान नहीं सरकार को याद करते हैं। कोरोना के डंक से बदहवास प्रवासियों की नजर स्कूल के मुख्य द्वार पर पड़ी; अन्य दिनों के बजाय आज पूरा गेट खुला हुआ! प्रवासियों के मन में सरकार के लिए अगाध श्रद्धा उमड़ आई, मौत के कुएं से निकल जाने का मुक्ति द्वार देखकर। पलक झपकते ही लोगों के कंधे थैले-झोले से समर्थवान होते गए, गठरी से माथे सजते गए। देखते ही देखते मुख्य द्वार से बाहर निकल जाने की होड़ मच गई। क्वारंटाइन कार्यालय में बैठे लोगों की आंखें इस मनोहारी दृश्य से तृप्त हो उठीं। रामना अभी भी कमरे से बरामदे के बीच आगे-पीछे हो रहा था, कंधे में थैला-झोला लटकाए बिना ही। बड़ा

बैग लटकाए सत्तन रामना का इंतजार कर रहा था, बीच मैदान में। माताजी रामना के आने की आस में थी, बरामदे के नीचे गठरी उठाए। धनिक लाल के साथ पूर्णिया के लोग मुख्य द्वार के पास अटक गए। रामू को समझते देर नहीं लगी रामना के मन में असमंजस चल रहा होगा, पूर्णिया वालों के साथ निकल ले या रामू भैया का साथ निभाए। कशमकश की ऐसी घड़ी में रामना की उधेड़बुन रामू के लिए कष्टदायी होने लगी। अंदर-बाहर हो रहे रामना को रोकते हुए पूछा, "किस उलझन में डुबकी लगा रहे हो रामना?"

"आपके साथ ही..." रामना आधा ही बोल पाया।

"मेरे साथ डेड बॉडी भी तो है!" रामू ने कहा; परिसर में मची आपाधापी से बेपरवाह बोलते हुए वह शांत-चित्त दिख रहा था, आगे सलाह देते हुए कहा, "सभी का टारगेट घर पहुंचना ही है; सरकार के कारिंदों ने अपनी भलाई के लिए करोना का करिश्मा दिखा दिया है, आगे यहां भोजन पानी के लिए भीख ही माँगना पड़ता; सभी प्रवासियों के लिए अच्छा ही है अंधेरे में अपना रास्ता पकड़ लें, पूर्णिया की ओर जानेवाले सैकड़ों लोगों के साथ हो जाना ही बेहतर है तुम लोगों के लिए।"

"लेकिन मैं तो आपके साथ रहकर कुछ और जानना-सीखना चाहता हूं!" रामना परिसर की अफरा-तफरी से बेपरवाह था।

"जानकर-सीखकर क्या करोगे; बिहार के बेचारे मजदूर लोग पेट भरने की चिंता के सिवाय और कर ही क्या सकते हैं!" बोलने के बाद रामू के होंठों पर गूढ़ मुस्कान तैर गई, जैसे भविष्य के लिए कोई तरंगदैर्ध्य छोड़ रहा हो।

"उसी टॉपिक पर तो मैं सोच रहा हूं; हम करोड़ों मजदूर अपनी हथेली और कंधों से दिन-रात हिंदुस्तान को उठाए जा रहे हैं, पर पटना-दिल्ली की सत्ता की नजर में हमारी औकात आदमी से नीचे जानवर की हो गई है!" बोलते-बोलते रामना की सांस तेज हो गई।

"तो?" मूर्तिवत रामू के मुंह से निकला, जैसे कोई महामानव किसी मानव की शक्ति परीक्षा ले रहा हो।

"मैं वह काम करना चाहता हूं जिससे हमारे राज्य के मजदूरों की हैसियत जानवर से ऊपर उठकर फिर से आदमी की हो सके।" रामना की आवाज से ज्यादा उसकी आंखों में संकल्प दिखने लगा।

"वह भला कैसे करोगे?" रामू ने पूछा; लगा जैसे किसी मुकम्मल रास्ते की तरफ इशारा कर रहा हो।

"परसों आपने किसी बिल्ला के बारे में बताया था न?" बोलते हुए में रामना की आंखों में किसी युगपुरुष-सी चमक दिखने लगी। तभी सायरन बजाती कोई गाड़ी स्कूल की तरफ आती जान पड़ी। स्कूल के मैदान में खड़ा सत्तन चिल्लाया, "रामना जल्दी करो; पूर्णिया वाले लोग गेट से बाहर निकल पड़े हैं, हमलोग फिर अकेले पड़ जाएंगे!" रामना ने बरामदे में रखा अपना बैग कंधे पर लटकाया; रामू के चरण छूते हुए बोला, "आपका नंबर है मेरे मोबाइल में, वापस जाकर उसी स्कीम पर सोचना शुरू करता हूं, कैसे हमारे भैया लोगों को घर पर ही रोटी मिलती रहे!" बोलते-बोलते वह बरामदे से नीचे उतरने लगा; उसके कान ने रामू को बोलते हुए सुना, "ज्यादा कुछ नहीं, बस तुम्हारे पटना वाले मालिक भैया लोगों को दो साल घर बिठाकर खिला दें तो समझो भारत महान को नानी याद आ जाएगी!"

रामना की जुदाई का गम अभी रामू के मन-मस्तिष्क से उतर ही रहा था; स्कूल परिसर में अब तक का सबसे बड़ा सरकारी अमला आ धमका। जूतों की तेज टप-टप से रामू को सामाजिक विज्ञान का वो अध्याय याद आया, आजादी के समय की परिस्थितिवाला संक्षिप्त अध्याय ...आजादी के दशक में सत्ता हथियाने की होड़-सी मच गई थी दोनों पार्टियों में...! डिप्टी सीएमओ, एसडीएम, तहसीलदार, इंस्पेक्टर, सिस्टर सभी तेज कदमों से सीधे उसी कमरे में प्रवेश कर गए; जैसे सरकार ने सेटेलाइट से हर लाश तक पहुंच बनाने की क्षमता हासिल कर ली हो। लाश के करीब जाकर एसडीएम ने कमरे में खड़े लोगों की तरफ देखकर पूछा, लाश की तरफ बिना देखे, "इस डेड बॉडी का कस्टडियन कौन है जी!"

"मुझे ही मान लीजिए।" रामू ने सामान्य बनते हुए जवाब दिया।

"सभी प्रवासी तो यहां से भग लिए, तुम्हें कोरोना से डर नहीं लगता है जी!" तहसीलदार डरा हुआ जैसा दिखते हुए बोला।

"हम लोग रामघाट वाले हैं, कारनामों से नहीं डरते!" रामू ने मुस्कुराते हुए कहा; सुबह से अभी देर रात तक में पहली बार रामू के होंठ खिले।

"तो तुम कोरोना को कारनामा समझते हो?" रामू की मूढ़ता पर एसडीएम ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

"समझना क्या है! करोना तो खैर चीन का कारनामा है ही, लेकिन हम लोग तो इंडिया में इसे और भी बड़ा कारनामा बनाने में लगे हैं, दिन रात!" अंदर उठ रही चिढ़ को आवाज में चढ़ने से रोकते हुए रामू ने कहा।

"तुम तो कोरोना वाली डेड बॉडी के पास बेखौफ होकर बोले जा रहे हो जी," इंस्पेक्टर ने रामू को रास्ते पर लाने की गरज से कहा।

"यह करोना नहीं, डायबिटीज का पेशेंट था!" रामू रुकने का नाम नहीं ले रहा था।

"तुम्हें चुप रहने के लिए किसी ने सिखाया नहीं क्या जी?" अब तहसीलदार शुरू था।

"सर, यह वही लड़का है जिसने क्वारंटाइन सेंटर का माहौल बिगाड़ रखा था।" बिना आवरण के पहली बार दिख रही सिस्टर बोली, अपनी खूबसूरत उपस्थिति जताते हुए।

"अच्छा तुम्हारा नाम रामू है! शादी वाले दिन कलेक्टर साहब ने रामघाट के कलेक्टर से तुम्हारे बारे में सब कुछ पता कर लिया है!" रहस्यमयी तरीके से सिर हिलाते हुए एसडीएम ने कहा, फिर रामू की तरफ नजर टेढ़ी करके बोला, "तुम्हें शासन की शक्ति का जरा भी ज्ञान-भान नहीं है क्या जी?" एसडीएम को इस प्रकार रौब से बात करते हुए देखकर रामू को अपनी धारणा में थोड़ा सुधार होने का एहसास हुआ; इस अनुपात में डीएम-सीएम-पीएम में थोड़ा और ऐंठ-अहंकार होना चाहिए! सोचने के दौरान शब्द नहीं निकल सकते; रामू की चुप्पी को उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाना मानकर एसडीएम और भारी पड़ते हुए बोला, "हां, तो तुमलोग भागे क्यों नहीं जी?"

"अपनी बस्ती की लाश छोड़कर भाग जाएं? फिर तो रामघाट पहुंचने पर लोग हमें भी सरकार कहने लगेंगे! तब क्या जवाब देंगे हम? अल्लाह तला के सामने भी हम बेनकाब हो जाएंगे।" रामू का हाथ मजबूत करने की खातिर इसरार बोला, पीछे खड़े रहते हुए ही।

"कोरोना वाली लाश तो मिलती नहीं है!" डिप्टी सीएमओ ने तकनीकी हस्तक्षेप किया।

"लेकिन यह तो डायबिटीज पेशेंट की डेड बॉडी है; आप भी देखिए, चेहरा कितना पीला पड़ा है!" अंकित डरते-डरते बोला।

"डायबिटीज वाली डेड बॉडी है! फिर तो लाश इतनी आसानी से कहां मिलेगी? पहले पोस्टमार्टम होगा, फिर थाने से पंचनामा बनेगा; कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करते हुए यहीं श्मशान घाट में शवदाह करना पड़ेगा, उसका भी परमिशन लेना पड़ेगा निगम से...!" इंस्पेक्टर बोलता ही जा रहा था, जैसे उसके अंदर पहले से सब रिकॉर्ड किया हुआ हो।

"तो अब तय होगा कि डेड बॉडी कोरोना पेशेंट का है या दूसरे बीमारी का?" रामू लंबे समय तक चुप नहीं बैठ सकता था।

"तय होना लाजिमी है; अभी हम डीएम साहब से बात करते हैं आगे करना क्या है; तब तक प्लीज बैठिये-सोइए, जो मर्जी हो कीजिए, पर शांति से!" अब एसडीएम के होंठों पर लघु मुस्कान आई; जैसे कब कहां हँसना है की दी हुई ट्रेनिंग की याद आई हो।

बाहर बरामदे के एक किनारे जाकर मोबाइल में बात करते हुए एसडीएम के मुंह से सिर्फ जी-जी जी-जी... ही निकल रहा था। कमरे के अंदर अभी तक एसडीएम का दिख रहा चौड़ा मुखड़ा बरामदे में जाकर धीरे-धीरे सिकुड़ता गया। शौर्यपूर्ण सपाट ललाट में न जाने कहां से गहरी रेखाएं टपक पड़ीं थीं; स्वाभाविक ही छोटे होते गए मुंह से निकल रहे जी-जी जी-जी वाला स्वर बेसुरा हो चला था। बरामदे से कमरे के दरवाजे तक आते-आते उसका मुंह धरती से बात करने लगा था या धरती में गड़ जाना चाह रहा था, वही जाने। कमरे के अंदर आने से पहले उसने तहसीलदार से गुफ्त-गू कर अपने माथे का वजन हल्का किया। कमरे के अंदर आते ही उसके चेहरे में हँसी की कोंपलें फूटीं; रामू से मित्रवत होते हुए बोला, "देखो छोटे भाई!" इतना भर बोलकर दयानिधान जैसे दिखने लगे, फिर बोले, "एक बड़े भाई जैसा तुम्हें छोटी सलाह दूं?" क्षणिक विराम के बाद बोले, "नियम के हिसाब से तुम्हें यहां और एक सप्ताह रोका जा सकता है, लेकिन हमलोग तुम पर तुम्हारे लोगों पर अपनी मर्जी नहीं थोपना चाहते; अगर अभी अंधेरे में निकलना चाहते हो तो हमलोग आंखें बंद कर लेंगे!" बोलकर उसने सच में आंखें बंद भी कर ली थी, प्रमाण प्रदर्शन के तौर पर।

"पर लाश के दाह-संस्कार के बाद ही तो?" इसरार अड़ता हुए-सा बोला।

"कोरोना काल में लाश के दाह-संस्कार की जिम्मेदारी सरकार ने अपने ऊपर स्वीकार की है।" डिप्टी सीएमओ ने जोड़ा; लगा जैसे कहना चाहता हो लाश को निपटाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है!

"लेकिन सर डेड बॉडी के बारे में लिखा-पढ़ी प्रमाण-पत्र..." वाजिब बात मानकर अंकित ने बोलना शुरू किया; उसे दबोचने की मुद्रा में इंस्पेक्टर उबल पड़ा, "अबे! अब जल्दी से भग जा या फिर..." आगे शब्द के बजाय उसने बाएं हाथ की तर्जनी से काम लिया, जहन्नुम-जेल जैसा कुछ सजीव संकेत करते हुए।

इंस्पेक्टर के आपा खोने के बावजूद रामू और उसके साथ वाले प्रवासी मजदूर सुविधाजनक ढंग से ही कमरे से बाहर निकल रहे थे, बचे सामान को इत्मीनान से सहेजते हुए। फर्श पर अब तक सोया या सब कुछ सुन रहा भुवन अब जाकर दो पैरों पर खड़ा होने जैसा हो रहा था; स्वाभाविक ही खुद के बजाय सरकार के लिए हर पल चिंतित रहता आया था।

गेट से बाहर सुनसान रास्ते में सभी बढ़ते गए। रामू के पास आकर कृष्णा ने धीमी आवाज में कहा, जैसे अंधेरे में रहस्य की गठरी खोल रहा हो, "मुझे तो थाना-पुलिस से बड़ा डर लगता है, कमरे के अंदर शुरू से ही खिड़की से सटकर बैठा था; दोनों दबंग साहब खिड़की से बाहर बरामदे में फुसफुसा रहे थे, कि कलेक्टर साहब ने कहा है ऊपर से आदेश है कोरोना मृत्यु का आंकड़ा कंट्रोल में रखना है, प्रवासी मजदूरों की मौत रिकॉर्ड में नहीं लेनी है!" कृष्णा की बात सुनते ही रामू ठिठक गया, पूछा, "क्या तुमने ऐसा सुना?" कृष्णा की मुख-मुद्रा रहस्यमयी बन पड़ी, बोला, "खिड़की के पास सटकर बैठा था, बाहर से तो लंबी सांस की भी आवाज अंदर सुनाई पड़ती थी; और यह भी तो कह रहा था कि कलेक्टर साहब बहुत नाराज हो रहे थे कि जनता को अपने वचन-वाणी के जादू से जीतो!" रामू को याद आया पूरी बात-बहस के दौरान एसडीएम या किसी ने भी मृतक शनिचरा का नाम तक पूछा नहीं? चलते हुए भी उसके अंदर उच्चारित हो रहा था ...कोरोना मृत्यु का आंकड़ा कंट्रोल में रखना... प्रवासी मजदूरों की मौत रिकॉर्ड में मत लेना... अंधेरे में उसकी आंखें रोशनी का कोई निशान खोजने में लगी थीं, दूर तलक।

अध्याय तीन

1

इलाहाबाद बाईपास पर पैर धरते ही रामू को याद आया, अब तो समूह सैंतालिस घटकर अंकिता को जोड़कर समूह उन्नीस मात्र रह गया है! न जाने क्यों उसे आजादी की तारीख सन् उन्नीस सौ सैंतालिस याद आने लगी, फिर से। अब तो मन में अजीब-सा गुणा-भाग होने लगा; साल सैंतालिस समाप्त, शेष रह गया सिर्फ सन उन्नीस! अंधेरे में बढ़ते हुए उसके अंदर का खालीपन बढ़ता गया; समूह के बंटवारे से मन का भारीपन भी। उसे याद आया स्कूल में उसने भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बारे में पढ़ा था; तब सच्चे देशभक्तों के कलेजे पर कितने हथौड़े पड़े होंगे! ...समूह का बंटवारा ...भारत-पाकिस्तान बंटवारा... सोच-सोच कर उसे इलाहाबाद बाईपास पर पसरा अंधेरा और घना होता महसूस हुआ। सामने रास्ते का अंधेरा घना हो जाए तो अंदर की दृष्टि और दीप्त हो उठती है; घनघोर अंधेरे में बढ़ते हुए उसकी अंतर्दृष्टि में कोई बड़ी दरार सी दिखने लगी। उसने दिमाग पर जोर लगाया, इतनी बड़ी दरार भला क्या चीज हो सकती है? भारत-पाकिस्तान का बंटवारा तो हो गया! अब भविष्य के लिए कोई दरार तैयार हो रही है क्या? उसके अंदर से जवाब आता महसूस हुआ ...यह करोना की दरार है! करोना दरार? मतलब!... उसकी चिंतन शृंखला सुलझने के बजाय और उलझती गई।

"रामू?" आगे-आगे चल रहे भुवन ने आवाज दी। अरे यह क्या; वह तो सबसे पीछे हुआ जा रहा है! ऐसे में तो समूह बिखर सकता है, भटक सकता है। सोचने की बीमारी से फिलहाल छुटकारा पा लेना ही उसे उचित जान पड़ा। उसने भी चाल तेज कर दी; अंधेरा रहते कानपुर जिले की सीमा

लांघ लेने में ही भलाई है।

पूरब दिशा में अंधेरा छंटता दिखाई दिया। रामू ने मोबाइल में समय देखा, पौने पांच बज रहे थे। उसकी जान में जान आई, अंधेरे में रास्ता भटक जाने से बच तो गया! क्वारंटीन सेंटर में सरकार के माथे खाते-खाते जीटी रोड़ भी तो दिमाग से ना जाने कब-किधर मुड़ चला था। अंधेरे में चलते हुए मन किस्म-किस्म के भय से भरा था; सुबह का सूरज पाकर मन के सारे भय जैसे अपने रास्ते वापस चल दिए, शायद पीछे अंधेरे वाले रास्ते की ओर ही। सुबह की शीतल हवा में सभी की चाल तेज हो चली। फतेहपुर पार कर एक-दो दिन में इलाहाबाद के जितना करीब पहुंच जाए उतना ही अच्छा; आगे रामघाट वाली एनएच पर चढ़ जाएंगे, फिर किसकी मजाल जो उन सबों को रामघाट जाने से रोक ले! रामघाट! अरे हां, अब तो पैदल मुसाफिर के समूह में सिर्फ रामघाट के ही साथी लोग साथ हैं; पटना-दरभंगा-पूर्णिया के साथी का साथ तो छूट गया। चलते-चलते सोचते हुए रामू का मन उचट गया ...अलग-अलग शहरों-प्रदेशों के लोगों का समूह कितना तो शक्तिदायी होता है! अब तो सिर्फ रामघाट को अकेले बढ़ना पड़ रहा है; सभी के साथ बढ़ते चलना कितनी तो मनोहारी यात्रा थी! उसे रामना की बड़ी याद आई, कितनी तीक्ष्ण बुद्धि-विवेक वाला बालक है वो! अंदर में आह-सी उठी, न जाने रामना के साथ फिर कब मिलना-चलना हो पाएगा? उसे महसूस होने लगा एक शहर या एक प्रदेश अकेला बड़ी मंजिल की ओर बढ़ नहीं सकता; तभी तो रामघाट 'मिनी इंडिया' है, इंडिया नहीं! अगले ही क्षण अंदर के किसी कोने से प्रतिउत्तर-सा आया, तुम तो पूरे इंडिया को करोनामुक्त रखने के उच्च विचार से निकले थे, इसलिए तुम्हारे अंदर पूरी इंडिया की सोच है!

दिन के उजाले में चले हुए अभी दो घंटे भी नहीं हुए थे; मंजू भाभी, उसकी नौ वर्षीया बेटी नन्ही, मुजीब, पंकज और भुवन ने नदी के ऊपर बने पुल पर चलने से इंकार कर दिया। फिर तो सभी के कदम पुल से पहले ही थम गए। तीन-चार लोगों के पैर पुल पर पड़ चुके थे; उन्होंने भी हार मान ली, पैर पीछे कर लिए। रामू को समझते देर नहीं लगी, लंबी सांस ली ...अंधेरे में मन का डर पैर को आगे भगा रहा था, अब आगे बिना भोजन के चलना मुश्किल होगा; सवेरा होने से भय भले ही भाग खड़ा हुआ हो, पेट की भूख तो जाग पड़ी है! समूह के मौन को तोड़ते हुए कुछ लोग नीचे नदी की तरफ उतरने लगे। रामू को याद आया, कल सुबह से ही खाना न

मिलने से कुछ लोगों ने पुराने बचे भूंजा दालमोठ से काम चलाया होगा, अब तो शायद वह भी न हो!

"नदी के किनारे सुनसान जगह पर रुकने से क्या फायदा?" बिना किसी की तरफ देखे रामू बोला, सबको सुनाते हुए।

"यहां नदी का पानी तो पेट भर पी सकते हैं!" नदी की धारा पर नजर गड़ाए अभिषेक ने कहा।

"हां-हां, हमारी सरकार ने नदी के जल को भी पेयजल बना दिया है!" अपने बोलने के अनुकूल प्रसंग देखकर भुवन ने कहा।

"भुवन भैया, हर बात में आप सरकार का झंडा मत फहराया करो।" 'सरकार' शब्द कान में पड़ते ही रामू चिढ़ उठा।

"सरकार की उपलब्धि वाली बात आएगी तो मुझे बोलना ही चाहिए।" भुवन ने तर्क का दबाव बढ़ाया।

"नदी का जल सरकार नहीं प्रकृति की देन है; सरकार की सौगात तो मंजू भाभी, नन्ही गुड़िया और सभी लोगों के पेट में उठ रही भूख का तूफान है!" बोलते हुए रामू की मुद्रा कठोर हो चली।

"अब तुम मेरे मित्र जैसे बन गए हो रामू, तुम्हें एक जरूरी सलाह देता हूं।" भुवन सिर हिलाते हुए बोलता गया, "सरकार के खिलाफ जब-तब उल्टी बातें बोलना बंद कर देना चाहिए तुम्हें!"

"अन्यथा?" आपत्ति अंकित ने उठाई।

"अन्यथा रामघाट पहुंचने के बाद पार्टी वाले रामू की ढंग से खोज-खबर लेंगे!" भुवन चेताने के अंदाज में बोला।

"भगवान की खोज से पेट नहीं भरा है! इसलिए भूखे-नंगे की खोज-खबर लेंगे अब पार्टी वाले!" रामू ने भुवन पर नजरें गड़ा दीं, जैसे उसके माथे से लेकर धरती के अंदर तक लंबी कील ठोक रहा हो।

"बहस-बकवास से तौबा करो, आगे की बताओ क्या करना है?" इसरार बीच-बचाव में उतरा।

"आगे भी पैदल प्रवासियों के लिए सरकार सख्त होगी, मेरे विचार से इस नदी के किनारे एक दिन रुकने का जुगाड़ करना चाहिए; यहां स्वच्छ जल उपलब्ध है, सरकार तक बात पहुंचाता हूं, हो सके खाने का इंतजाम हो जाए।" सबका मन जीतने की खातिर भुवन मित्रवत अंदाज में बोला।

"कोरोना महासंकट के समय सरकार सारी सड़कों से चुपके से सरक

ली है, इस नदी के किनारे तो कोई नाम लेवा भी नहीं है; हां, किसी की लाश जलानी हो तो रुक सकते हो!" रामू ने बहस का अंत करते हुए कहा।

"नदी का जल पीकर मेरा जिंदा रहना मुश्किल है; मुझे जल्दी से कुछ खाने को चाहिए, अन्यथा मेरे प्राण..." बोलते-बोलते कृष्णा ने आंखें बंद कर लीं। सभी की नजरें उस पर गड़ गईं, कहीं सचमुच बेहोश न हो जाए! थोड़ी देर में उसकी आंखें खुलीं; उसके पैर अजीब चाल से चल पड़े जैसे किसी भूत-बेताल के पैर हों। आगे किसी के पास तर्क-वितर्क की कोई गुंजाइश नहीं बची थी। सबके कदम ऊंचे पुल की तरफ बढ़ चले।

पुल पार करके सभी ने सुकून महसूस किया; लगा कोरोना की एक और नदी पार कर ली है। पैरों ने रफ्तार पकड़ी ही थी कि पुल के ढलान पर रखे केबिन से छह पुलिस वाले सामने आ डटे; दो राइफलधारी, तीन डंडाधारी और एक सिंगल स्टारधारी।

"आगे कहां जाना है?" स्टारधारी की अधिकारी होने जैसी आवाज थी।

"इलाहाबाद जाना है हुजूर।" इसरार सबसे आगे-आगे चल रहा था, उसे ही बोलना पड़ा।

"साल्ला! तुमलोग झूठ बोलना कब छोड़ेगा जी!" इसरार को घूरते हुए स्टारधारी ने कहा; उसकी दाढ़ी पर उसने नजरें जमा दीं, जैसे उसकी जड़ खोज रहा हो।

"नहीं साहब, मैं झूठ क्यों बोलूंगा, हमें इलाहाबाद जाना है।" बोलते हुए इसरार का हुलिया माफीनामे जैसा बन आया। लंबे कद वाला डंडाधारी गुर्रा उठा, पीछे से उसकी जांघ पर जोर से डंडा जमाते हुए, "एक तो तुमलोगों ने करोना की खेती कर डाली है पूरे इंडिया में और ऊपर से कसम भी खा रखी है जुबान नहीं बदलेंगे!"

"सुनिए तो साहब लोग, इसरार सच बोल रहा है।" अदब से पेश आते हुए रामू ने कहा।

"अरे यंग ब्रदर, जब इलाहाबाद कोई जगह है ही नहीं भारतवर्ष में तो वहां जाना कैसे होगा?" स्टारधारी ने तर्जनी को हवा में घुमाते हुए कहा; बोलने की भाव-भंगिमा से लगा जैसे वह उंगली पर ग्लोब को मनमर्जी से नचा रहा हो।

"जहां संगम है हमें वही वाला इलाहाबाद जाना है।" पुलिस वालों की समझ को समझाते हुए रामू ने कहा।

"संगम है, जरूर है! पर इलाहाबाद नहीं है!" राइफलधारी ने कहा।

"आप शायद समझे नहीं, जहां लेटे हनुमान जी हैं हमें वही इलाहाबाद जाना है!" रामू ने और स्पष्ट किया।

"लेटे वाले हनुमानजी हैं, बड़े आराम से लेटे हैं! पर इलाहाबाद नहीं है।" दूसरा राइफलधारी ने राइफल सहित आधा झुककर लेटने की भंगिमा बनाते हुए कहा, जैसे अपने अंदर हनुमानजी के बराबर शक्ति आ जाने का प्रदर्शन कर रहा हो।

"मेरे कहने का मतलब है हमें वही इलाहाबाद जाना है जहां बच्चन और निराला जैसे धुरंधर कवि हुए।" रामू अपने ज्ञान का दायरा बढ़ाते हुए बोला।

"हुए होंगे, अब नहीं हैं! उनके होने, ना होने से कोई फर्क नहीं पड़ता, पर इलाहाबाद है ही नहीं!" स्टारधारी ने आंखों को लघु कटोरे में बंद-सा कर लिया; इस कदर कि जैसे अपने अस्तित्व के सिवाय कुछ भी देखना उसे पसंद ही ना हो!

"साहब जी, फिर आप ही बता दीजिए हमें जहां जाना है वो कौन-सी जगह है?" प्रणव आगे आकर विनम्र बनते हुए बोला।

"अरे मूर्खो! तुमलोग प्रयागराज जा रहे हो!" स्टारधारी ने भेद खोला; उसके होंठों पर दुनिया की सबसे अजीब किस्म की मुस्कान टिमटिमाने लगी।

"वह तो आपकी मर्जी है, इलाहाबाद को प्रयागराज और जरूरत पड़े तो उसे रामराज कह दें!" सत्ता की शक्ति को शब्दों से नापते हुए रामू का स्वर व्यंग्यात्मक हो चला। डंडाधारी के हाथ से डंडा लेकर स्टारधारी ने रामू के माथे पर टिका दिया; आंखों की गोलाई बड़ी करते हुए कहा, "प्रधानमंत्रीजी ने हम पुलिसवालों की प्रशंसा ना की होती तो आज डंडे की कीमत तुमसे वसूल कर लेता!"

"अच्छा साहब अब रहने भी दीजिए; प्रयागराज से काफी आगे रामघाट तक की लंबी यात्रा पर हैं हमलोग।" पीछे कब से मंद-मंद मुस्कुरा रहे भुवन ने ऊंची आवाज में कहा, अपने अस्तित्व को परखने हेतु।

"आप भला कौन?" स्टारधारी ने पूछा। अपना परिचय शब्दों में देने के बजाय भुवन ने उंगली से कुछ संकेत-सा किया। स्टारधारी को भुवन का संकेत समझते देर नहीं लगी; विनम्र बनते हुए कहा, "हम आपकी बात का मान रखते हैं, रामघाट का सम्मान भी करते हैं," फिर गहरी सांस लेकर कहा, "दरअसल सरकार से सख्त आदेश है परवासियों को पैदल जाने मत दो, लेकिन यहां तो दिन-रात पैदल परवासियों का मेला लगा है! एक

रामघाट वाले को रोकने से क्या फायदा; शांतिपूर्वक निकल जाइए।" इतना बोलकर स्टारधारी अपने केबिन की तरफ बढ़ चला; पीछे से राइफलधारी और डंडाधारी भी, पूर्ण अनुशासित। सभी प्रवासियों के पैर खुली सड़क पर यंत्र भांति तेज चलने लगे, जैसे भूल से जेल का दरवाजा खुला देखकर कैदी फरार हो रहे हों।

भूखे पेट तो भजन भी नहीं होता, चलना तो दूर की कौड़ी है। रामघाट वालों ने इस कहावत को उलट डाला। चौबीस घंटे से पेट में एक दाना नहीं जाने के बावजूद उनके पैरों को फर्क नहीं पड़ रहा था, तेजी से धरती माता के चरण चूमते जा रहे थे; जैसे खाली हो चले पेट से पैर का संपर्क कट चुका हो। रामू को लगा, हो न हो प्रयागराज के डर से सभी की भूख मिट गई हो, और चाल तेज हो गई हो कि कहीं आगे रामराज-यमराज जैसा कुछ न मिल जाए! रामू गहरी सोच में पड़ गया ...प्रयागराज प्रकट हो चुका है, एक बड़े विस्फोट से रामराज का उद्‌भव कभी भी हो सकता है! लेकिन भूखे को भोजन देने का कार्य कब होगा? रामू ने पूरे समूह पर गौर किया ...सभी के पैर तीव्र गति से खाली सड़क लांघते जा रहे हैं, जैसे मानव नहीं महामानव के पैर हों! पर चेहरों में मुर्दा-सी मायूसी; होंठ पूर्णतः निशब्द! तो क्या मस्तिष्क की सारी स्नायु पैरों पर केंद्रित हो चली है? सिर्फ इसलिए कि जल्दी से रास्ता नापकर भोजन के करीब पहुंचा जाए! समूह की लंबी चुप्पी डरावनी होने लगी; उसने भुवन से यूं ही बात छेड़ दी, "भूखी जनता का उद्‌देश्य क्या होना चाहिए? भोजन के करीब पहुंचना या फिर सत्ता के ऊंचे पहाड़ की तलहटी में चिड़िया जैसा चोंच फैलाए रखना!"

"मैं समझा नहीं?" बात भुवन के पल्ले नहीं पड़ी।

"मेरे मुंह से क्या निकला मैं खुद नहीं समझ पाया।" रामू ने कनपटी में ठोकर मारी।

"भूख एक ऐसी चीज है जो सभी बंधनों से परे है; अब तो मुझे भी भूख से आगे कुछ नहीं सूझ रहां" बुझती आंखों से भुवन बोलता जा रहा था, "कैसी पार्टी? कैसी सत्ता! पहले पेट में अन्न जाए तब फिर सोचेंगे...।" भुवन के शब्द कंठ में ही कहीं अटके जा रहे थे।

"..."

"..."

कारवाँ के साथ-साथ बात-बतंगड़ का कारवाँ भी बढ़ता जा रहा था;

अचानक कृष्णा सड़क के किनारे मूर्छित होकर गिर पड़ा, शायद सड़क के किनारे को जिंदगी का किनारा समझकर! तपती गर्मी में गर्म हो चुके बोतल के पानी से इसरार ने उसके मुंह में छींटे मारे; देह में कहीं कोई हरकत नहीं हुई। मुजीब को नब्ज की अच्छी पकड़ थी, नब्ज के हर कयाम को टटोला; उसने भी हार मान ली। कृष्णा की पैदल यात्रा अंतिम मंजिल के रास्ते मुड़ चली थी। बाकी अठारह लोगों के पास एक-दूसरे का चेहरा देखने के अलावा कोई उपाय न था। अब भूख सभी पर भारी पड़ने लगी। लाश का एहसास धुंधला पड़ने लगा। सभी सड़क किनारे हो लिए, झाड़ियों के पत्ते से मृग-मरीचिका भांति दोहरी आशा लिए; भूखे पेट के लिए हरे पत्ते से पेट को तसल्ली देने, चढ़ते सूरज के प्रकोप से आशियाना ढूंढ़ने।

मरणासन्न समूह में भुवन की उंगली सौ प्रतिशत सचेत थी; उसकी उंगलियाँ मोबाइल पर बैटरीचालित अंगुरे जैसी चलने लगीं, जैसे इंटरनेट वाले बाजीगर के जमुरे हों। इस बार उसकी उंगलियों की करामात काम ना आई; प्रयागराज एनएच पर लाश पड़ी होने की सूचना दूसरे छोर पर कहीं भी ठीक से स्वीकार्य होती नहीं दिख रही थी। संगठन के सारे तार सुन्न पड़ गए लग रहे थे। वह संगठन की वेबसाइट खंगालने लगा; हो न हो पार्टी ने प्रवासी मजदूरों की मृत्यु के बारे में कोई खास दिशा-निर्देश दिए हों! उसको काफी देर तक स्क्रीन में गड़ा देखकर रामू से रहा न गया; शिथिल पड़ चुके शरीर और मस्तिष्क की ऊर्जा को संग्रहित किया, धीमे स्वर में टोका, "आलाकमान वाले सोशल मीडिया के मार्फत जन-जन तक पैठ बना चुके हैं, पर जीवित रहने तक ही, मृत्यु हो जाने पर नहीं; उनके लिए मनुष्य की मृत्यु का मूल्य मिट्टी के बराबर है!"

"पॉलिटिक्स से तुम चाहे जितनी नफरत कर लो, परंतु पॉलिटिक्स और पॉलिटिकल पार्टी के बगैर देश नहीं चल सकता है न! तुम्हें भी आज न कल किसी न किसी पार्टी से जुड़ना ही पड़ेगा।" मुश्किल समय में भी बोलते हुए भुवन के होंठों पर मुस्कान उग आई।

"पॉलिटिकल पार्टी के बजाय देश में हर सरकार की नीतियों के शिकार लोगों से आजीवन जुड़े रहना पसंद करूंगा।" रामू फिलहाल मुद्दे पर ही केंद्रित रहना चाहता था।

"आजीवन तो बहुत लंबी चीज है, फिलहाल जो सामने पड़ी है उसके बारे में क्या सोचा है?" भुवन भी जिम्मेदार दिखना चाहता था।

"लाश के मामले में सरकारों की दो ही नीतियां होती हैं; या तो लाश के पास सरकार फटकती नहीं है या फिर लाश पर झपटती है, और चील जैसे लेकर उड़ लेती है।" रामू ने बड़े इत्मीनान से कहा, जैसे विश्वविद्यालय में राजनीतिक शास्त्र की कक्षा ले रहा हो; आगे कहा, "करोना काल में सरकारें अपने हिसाब-किताब में व्यस्त हैं, इसलिए कृष्णा की लाश के साथ दोनों में पहली वाली नीति स्वतः लागू हो गई है।"

"फिर?" भुवन बोला, जैसे बंद सुरंग में कहीं अटक गया हो।

"फिर क्या? लाश को दफन करो, आगे का रास्ता नापो!" रामू ने लंबी सोचकर कहा।

"दफन करोगे? तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या!" भुवन बोलते हुए उछलकर खड़ा हो गया, लगा जैसे अंदर पड़ी कोई विशेष बैटरी सक्रिय हो गई हो।

"तुम कहो तो सड़क किनारे ऐसे ही छोड़ देते हैं, सरकार जब इधर से गुजरेगी तो रोने का एक बहाना तो मिल जाएगा!" रामू के पास आते हुए अंकित ने कहा।

"अरे भैया, यदि लाश को दफन कर दोगे तो हमारे रामघाट पहुंचने से पहले ही वहां दंगा-फसाद हो जाएगा!" आतंकित कर देने वाले अंदाज में भुवन बोला।

"मेरा मानना है धार्मिक रीति-रिवाज के हिसाब से कृष्णा की लाश का दाह-संस्कार ही होना चाहिए।" अब इसरार ने हस्तक्षेप किया।

"फिर तो ठीक है।" राहत की सांस लेने जैसा करते हुए रामू ने कहा, फिर भुवन से बोला, "आप सरकार को फोन लगाओ लोहा-लकड़ी लेकर यहां पहुंच जाएं, घंटा दो घंटा, दो दिन, पांच दिन में, तब तक और भी लाशें पड़ी मिलेंगी, सबको इकट्ठे आग लगा देगी सरकार।"

"अरे छोड़ो यार, संकट के समय लाश को दफन करना धर्म में भी जायज है।" अभिषेक ने जमीन छोड़कर उठते हुए कहा, जैसे आगे बढ़ जाने के लिए खड़ा हुआ हो।

"तुम्हारे मुंह से भी आज बिगड़े बोल निकल रहे हैं; संकट के समय लाश को दफन करना वेद-पुराण में लिखा है क्या!" तीर छोड़ने जैसी भंगिमा बनाते हुए भुवन ने कहा।

"हां, अब तो वह समय आ गया है कि आपकी वचन-वाणी से जो

निकले वही धर्म-पुराण है!" उनके सामने नतमस्तक हो जाने जैसा करते हुए अभिषेक ने कहा; जैसे कोई पुराना भक्त अपने स्वामी के सामने अड़ गया हो।

"फिर तो जैसी मर्जी।" समर्पण करने जैसी मुद्रा बनाते हुए भुवन ने कहा, फिर पेट पकड़कर जमीन पर बैठ गया; भूख तो पद और प्रभाव से परे सभी को पटक देती है!

छह गुणा तीन फीट गड्डा खोदते वक्त रामघाट की भुजाओं में कोई दैवीय शक्ति आ गई जान पड़ रही थी; आधे घंटे में ही कृष्णा के लिए सुविधाजनक संसार तैयार कर डाला साथियों ने। उसे उसके संसार में सम्मानपूर्वक रखते हुए साथियों की आंखों से आंसू टपक पड़े; लगा जैसे इन आंसुओं से सारे बनावटी बांध-बंधन टूट जाएंगे। भावना के ज्वार से भुवन अलग हो चला, जैसे अपने रहनुमा के संकेत पर बनावटी बांध-बंधन को जिंदा रखना चाहते हो।

2

साथी खोने के बाद किसी के लिए भी शेष यात्रा बोझ बन पड़ती है। भूख के मारे सभी के पैर तो पहले से ही सुन्न पड़े थे, अब मस्तिष्क भी शून्य हो चला। घंटों अन्न से अछूते पेट ने अब पानी ग्रहण करने से साफ मना कर दिया। जिंदा रहने के लिए जरूरी था कैसे भी भोजन तक पहुंचा जाए। मुख्य सड़क पर आकर धरती माता को नमन कर समूह अठारह ने फिर से पैर आगे बढ़ा दिए। अशक्त पैरों में बमुश्किल हरकत हो पाई। वे दिमाग की सारी ताकत पैरों की ओर धकेलने लगे; तब जाकर पैरों में थोड़ी गति बन पाई। चले हुए अभी आधे घंटे ही हुए थे; सभी के पैर लड़खड़ाने लगे। अपने लड़खड़ाते पैरों को रामू ने अंदर की अंतिम शक्ति से संभाला। बेहोशी की स्थिति में भी उसकी चेतना सजीव थी; यदि सभी एक बार धरती पकड़ लेंगे फिर तो आगे मृत्यु के मुंह में एक-एक करके जाना तय है। उसे अपने अंदर से आती आवाज सुनाई दी ...हां, भूख से होनेवाली मौतें जिसका कोई लेखा-जोखा नहीं रखा जाता है इस देश में! बिना किसी सोच-विचार के ही उसने अपने कंधे के बैग सड़क किनारे धर दिए; शरीर हल्का महसूस होते ही उसके पैरों का भारीपन घटा हुआ महसूस हुआ। उसने गति बढ़ा कर देखा ...हां, पैर की रफ्तार थोड़ी तो बढ़ी है! बोलने लायक शक्ति वह अंदर से ऊपर कंठ तक लाया, सभी को सुनाने लायक आवाज में बोला, "जिंदा बच गए तो सामान फिर आ जाएंगे; सामान के साथ शरीर को ढोना

मुश्किल है!" रामू के वचन ने मंत्र-सा प्रभाव उत्पन्न किया। सभी ने अपने सामान-असबाब सड़क के किनारे इज्जत से रख दिए, जैसे सरकार के लिए उपहार छोड़ रहे हों।

15 अप्रैल की धूप उत्तरी भारत में कुछ ज्यादा ही क्रूर हो चली थी। बारह बजते-बजते सभी के शरीर पसीने से लथपथ होने लगे। सामने दिखते सभी गांव-कस्बे-ढाबे उनके लिए मृत हो गए दिख रहे थे। उनकी उम्मीद जिंदा थी, आगे कोई दानवीर जरूर मिलेगा। पसीने से भीगे कपड़े में चलना दुष्कर होता जा रहा था। अंकित ने शरीर के सारे कपड़े उतार फेंके, कंधे का गमछा कमर पर लपेट लिया। फिर तो बाकी लोगों ने भी कमर में गमछा लपेटकर पसीने से भीगे कपड़े उतार फेंके। कपड़े फेंकते हुए में भी इसरार मजे लेने से नहीं चुकना चाहता था, "कोरोना के आका! हमारी तरफ से तुम्हें यह रहा उपहार!" तपती गर्मी में रामू भी धधक पड़ा, "हमारे आका! नंग-धड़ंग हिंदुस्तान देखने की तुम्हारी इच्छा हम लोगों ने आज पूरी कर दी!" समूह के पुरुष सदस्यों को कपड़े उतारकर चलते देखकर औरतें मायूस हो गईं। अंकित ने मीना भाभी के सामने आकर हाथ जोड़ लिए, "भाभीजी, हम सभी लड़के और दो मर्द भी आपके देवर जैसे हैं, तीसरा तो आपके पति ही हैं; हम लोगों द्वारा वस्त्र दान कर देने से आप लजाना मत," फिर चुहलबाजी करते हुए बोला, "हम आपको कपड़े उतारने को तो नहीं कह सकते..." इतना सुनते ही भाभी ने अंकित की पीठ पर एक धौल जमा दी, मधुर मुस्कान वाले उपहार के साथ। उपहार से उपकृत होकर अंकित ने उसके हाथ से थैले अपने कंधे पर ले लिए। हाथों का वजन हटते ही अंकिता सहित समूह की महिलाएं पसीने से सने कपड़े में भी अब थोड़ी सहूलियत से चल पा रही थीं। समूह के दोनों बच्चों का उत्साह अभी तक बरकरार था, कि कोरोना वाली सरकार ने आगे हमारे लिए बड़े भोज का इंतजाम कर रखा होगा। समूह में भुवन अकेला मोबाइल स्क्रीन पर मुस्तैद दिख रहा था, पसीने से भीगे वस्त्रों से बेखबर; जैसे आकाओं ने हुक्म दे रखा हो कुछ भी हो जाए मोबाइल को मजबूती से थामे रखना! उसकी मोबाइल ममता को भंग करने की गरज से रामू ने छेड़ा, "सभी ने पसीने भीगे कपड़े उतार फेंके हैं, शरीर हल्का करके चल रहे हैं; कपड़े उतार भी दोगे फिर भी तुम्हारा शरीर हल्का नहीं हो सकता, तुम्हारे शरीर में तो पार्टी का वजन मिला है न!" रामू की बातों का अर्थ भले ही भुवन की समझ में न आया हो, उसने धीमी आवाज

में अपनी वाक्पटुता जरूर दिखाई, "मेरे नंग-धड़ंग हो जाने का मतलब होगा देश का नंगा होने का प्रमाण देना!"

"तुम और तुम्हारे आका लोग फकीरों का चीर हरण करके अपने को सजाकर मुस्कुराते रहो, तुमलोगों की मर्जी।" रामू ने कहा तो वार्तालाप का सिलसिला बंद हो गया; पैरों के बीच बढ़ती जाती वार्ता और स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी थी।

आगे मुड़ती हुई सड़क पर कुछ भी नहीं दिखाई पड़ रहा था। अचानक पुलिस की गाड़ियां प्रवासियों के सामने आ खड़ी हुईं। पुलिस से पुनः वास्ता पड़ते ही सभी के हौसले पस्त पड़ गए। भुवन के अलावा सभी जमीन पर लेट गए, जैसे खोखले हो चुके जड़ वाले पेड़ हवा के एहसास भर से ही धरती पर गिर पड़े हों। पुलिस वाले और साथ आए मेडिकल टीम वालों ने सभी अठारह को सहारा देना चाहा; सभी के सभी लाशवत हो चले थे। लग रहा था जान तो कब की निकल चुकी है, सिर्फ प्राण सांसें गिन रहे थे! दो स्टार वाले ने संभलकर खड़े भुवन को आवाज दी, "आप श्रीमान! इनके साथ हैं?" भुवन ने शक्ति सहेजकर कहा, "हां, इनके साथ तो हूं, दरअसल मैं सरकार के साथ हूं! मैंने ही तो संगठन सेल में सतरह लोगों के भूख से मरने की आशंका भिजवाई थी।"

"अच्छा! अच्छा; तो आपका नाम ही भुवन बाबू है!" मेडिकल टीम में से एक ने बॉडी कवर के अंदर से हर्ष व्यक्त किया, टीम का वरिष्ठतम सदस्य होने का हाव-भाव प्रदर्शित करते हुए।

"जी-जी, मेरा नाम भुवन है।"

"इन लोगों को कब से भोजन नहीं मिला है?"

"तीस घंटे से ऊपर होने को हैं, अन्न के दाने पेट में..." अब भुवन की जुबान भी जवाब देने लगी।

"घबराइए मत, पीछे से भोजन भान आने ही वाली है," एक स्टार वाले दरोगा ने ढांढ़स बंधाई, फिर विस्मयपूर्ण मुद्रा में पूछा "आप यह बताइए, आपके साथी लोग भूख के मारे अधमरे से होकर जमीन पर पड़े हैं, आप अब तक सही-सलामत खड़े हैं!"

"जी, जो सरकार के साथ होते हैं उसे हमेशा सही-सलामत दिखते रहना होता है!" जमीन से उठते हुए जवाब रामू ने दिया। अब भुवन के गिरने की बारी थी; संभलते-संभलते भी वह जमीन पर गिर पड़ा, सभी अठारह के

उलट बिल्कुल चित्त!

भोजन भान आ पहुंची। भोजन के पैकेट उतरते ही लेटे-बैठे प्रवासियों की सांसें तेज हो चलीं। सूखे मसाले में भुनी गई सब्जी की सुगंध पूरे वातावरण को अन्न-धनपूर्ण बना रही थी। सभी के हाथों में दो-दो पॉकेट थमाए गए, एक खाने को एक ले जाने को। भोजन संपन्न होते-होते वहां पर एसडीएम भी आ पहुंचा, अठारह लोगों के भूख से मर जाने के राष्ट्रीय कलंक टालने के प्रवक्ता के तौर पर; उन अठारह को भूख से मरने से बचाकर आजादी के बाद की सबसे बड़ी उपलब्धि के बतौर गवाह भी! भोजन करने के बाद सभी ने सरकार को दिल से याद किया; कोरोना की परवाह ना करते हुए उनके पेट का ख्याल रखने के लिए। भरपेट भोजन के बाद सभी फिर से सड़क किनारे बैठ गए। भोजन से सभी के चेहरे में हरियाली आ गई थी; भले ही माथा चकराने लगा था। रामू मन ही मन सोचने लगा ...देश भी तो एक विराट शरीर-सा है, करोना काल के बाद कहीं देश को भी जोर का चक्कर न आने लगे?

"यस सर, कुल अठारह हैं; सभी बच तो गए हैं।" एसडीएम झाड़ी की आड़ में अपने से बड़े से वार्ता में व्यस्त थे, बेफिक्री से। झाड़ी के सबसे नजदीक बैठे रामू के बारे में एसडीएम की राय बिल्कुल स्पष्ट थी, इस उजड्ड की समझ ही कितनी होगी।

'...खा...जा...पा...' उधर वाली आवाज अस्पष्ट थी।

"लेकिन सर क्वॉरेंटीन सेंटर की हालत भी तो..." पूरी बात बोलने से पहले ही एसडीएम को मुंह बंद करना पड़ा।

'...त...म...ग...ट...'

"इन्हें शायद रामघाट जाना है; अगर जाने को बोलेंगे तो पैदल ही चलना पड़ेगा!" एसडीएम की आवाज उलझन से लदी लग रही थी।

'...ख...प...भ...'

"यू आर अब्सोल्युटली राइट सर, रामघाट तक पैदल चलते रहने से मृत्यु का खतरा फिर से मंडरा..." एसडीएम को फिर से बात पूरी करने से पहले चुप होना पड़ा। '...ड...झ...ह...'

"अंडरस्टूड सर, अंडरस्टूड; आई विल," एसडीएम के चेहरे में चमक आ गई, शायद बॉस से कोई बड़ा सूत्र हाथ लग गया था।

झाड़ी की आड़ से बाहर आते हुए एसडीएम के चेहरे पर प्रसन्नता की

परत उभर आई। उनका प्रसन्न चेहरा देखकर भोजन प्राप्त प्रवासियों के चेहरे में लौट रही प्रसन्नता दुगुनी हो गई, सोचकर कि अब आगे का भी उपाय निकल आएगा। सभी की आंखें एसडीएम पर गड़ गईं, उसके मुख से शुभ शब्द सुनने को।

"इस ग्रुप का अगुआ कौन है?" एसडीएम ने विनयपूर्वक पूछा।

"..." सभी एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। प्रश्न रामू की पकड़ से बाहर जा रहा था; अगुवा! मतलब? सामूहिक मौन की कूट भाषा समझते हुए एसडीएम ने भुवन से कहा "इन सभी में अगुआ तो आप ही ठहरे?"

"नहीं सर, मैं तो सरकार के साथ हूं!" भुवन ने सकुचाते हुए कहा।

"सरकार के साथ होने का क्या मतलब होता है? जनता के साथ नहीं होना!" दो स्टारधारी ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

"मेरा कहने का मतलब है मैं तो प्रधानमंत्री की घोषणा अनुसार सभी को दिल्ली में ही रोक रहा था।" भुवन ने सिर झुकाकर कहा, जैसे वह सच में सरकार के चरणों का दास हो; आगे उसकी आवाज में लांछन सवार होती गई, "पर ये जो रामू है यानी जो भगवान राम के बिल्कुल उलट है, वही बहुत बड़े ग्रुप को लीड करते हुए आ रहा है दिल्ली से!"

"ठीक है, रामू ही सही" एसडीएम ने भुवन की तरफ उंगली से चुप हो जाने का इशारा किया, फिर रामू से सम्मुख होते हुए कहा, "देखो बेटा, अभी का भोजन हमने आप सभी को दे दिया, शाम के लिए भी पैकेट दे दिए हैं; पर कोरोना संभले नहीं संभल रही है, बाढ़ जैसी बढ़ती ही जा रही है; अब आगे क्या करना है यह तुम लोग खुद तय कर लो।"

"सर दिल्ली में रहने लायक स्थिति नहीं थी; हिंदुस्तान में हर तरफ लाखों मजदूर पैदल ही अपने गांव-घर की ओर भागे जा रहे हैं।" बोलते-बोलते रामू की आवाज अंदर से कमजोर पड़ने लगी, "अब मेरी अक्ल जवाब देने लगी है सर।" पहली बार उसकी आवाज हिम्मत हारने जैसी थी; फिर रुआंसा होकर बोला, "आप जैसा कहेंगे वैसा करेंगे।"

"बेटा, कोरोना कानून तो कहता है किसी को घर से बाहर नहीं निकलने देना है, सरकार की सख्ती है, प्रवासियों को जिले की सीमा पर रोके रखो।" एसडीएम की भाषा अब अबूझ जैसी होने लगी; रामू ने देर करना उचित नहीं समझा, "भूखे भागने से अच्छा है आपके जिले में रुक जाना।"

"रुकने के लिए शासन मना नहीं करेगा; लेकिन मैं व्यक्तिगत तौर पर

बताना चाहता हूं।" अब एसडीएम, रामू के और करीब आकर फुसफुसाते हुए सा बोला, "जिले की क्वारंटाइन सेंटर की हालत अब पूछो मत!"

"फिर दूसरा उपाय क्या है? पैदल चलते चलना ही तो!" रामू ने गहरी सांस ली, जैसे देश में हवा का भी अकाल पड़ गया हो।

"हां, पैदल ही तो!" दो स्टार वाले ने रास्ता दिखाने की भाव-भंगिमा बनाते हुए कहा।

"लेकिन सर, अब तो हम सभी की एड़ी, घुटने, जांघ के जॉइंट जवाब देने लगे हैं!" कमर के पीछे हथेली रखते हुए अंकित ने कहा, जैसे पैदल यात्रा की बात सुनते ही दर्द ने आगाह करना शुरू कर दिया हो।

"अब यहां खड़े-खड़े मैं क्या कह सकता हूं," आगे एसडीएम किसी निरंकारी बाबा की भांति बोलने लगे, "तुमलोग हिम्मत के साथ आगे बढ़ो तो! प्रभु राम ने जिस प्रकार देश का भला किया है उसी प्रकार अपने भक्त रामू के भक्तों का भी करेंगे!"

"लेकिन मेरा तो सिर्फ नाम है रामचंद्र।"

"भगवान राम सबके हैं; प्रभु राम का सुमिरन करो सब ठीक हो जाएगा!" बोलकर एसडीएम ने ऊपर की ओर हाथ जोड़ लिए, जैसे अपने भर का प्रचार कार्य पूरा कर लिया हो।

शासन से साहस मिलते ही सभी के पैर प्रयागराज एनएच पर नई इच्छा-शक्ति के साथ चंचल हो उठे। प्रशासन की टीम उन सभी को जाते हुए देखते रहे। दस-पंद्रह मिनट बाद एक मिनी ट्रक सरकारी महकमे के पास आकर रुकी। एसडीएम ने ट्रक ड्राइवर को समझाया, "आगे अठारह प्रवासी पैदल चले जा रहे हैं; उनके पास ट्रक धीमी कर लेना, वे खुद तुम्हारी खुशामद करेंगे; उन्हें आगे रामघाट एनएच तक छोड़ देना, बारह-पंद्रह घंटे जो भी लगें।" अब उंगली दिखाते हुए कहा, "पैसे के लिए किच-किच मत करना, यदि दें तो ठीक ना दें तो ठीक; यहां शहर में चंदा इकट्ठा करवाया जा रहा हैं, तुम्हारे मालिक को डीजल-पानी का खर्चा मिल जाएगा।" फिर ड्राइवर विंडो के पास जाकर रहस्यमयी तरीके से कहा, "पूरी ट्रक तिरपाल से ढक लेना, रास्ते में कोई पूछताछ हो तो बताना कि कोरोना मटेरियल का सप्लाई है!" सहमति में सिर हिलाते हुए ड्राइवर ने ट्रक का गियर बढ़ा दिया। ट्रक के चले जाने के बाद तहसीलदार ने एसडीएम से कहा, "सर अठारह लोगों के लिए यह मिनी ट्रक छोटा पड़ेगा, सभी को जानवर जैसा लदकर

जाना पड़ेगा!"

"अरे तहसीलदार साहब, कोरोना काल में जनता-जानवर में भेद-मतभेद करना संभव है क्या? चलो, अब अगले की फिक्र करो।"

3

पीछे से किसी वाहन के आने की आवाज सुनकर सभी एक तरफ हो लिए। किनारे से निकल जाने के बजाय ट्रक करीब आकर धीमी हो गई; सभी की मुंडी ड्राइवर की तरफ मुड़ गई। अब ट्रक जीरो स्पीड पर रेंगने लगी। सभी अठारह के पैर ट्रक की चाल से तेज चलने लगे, ट्रक पर टकटकी लगाए। रामू ने भुवन की ओर आंखें उठाईं, भुवन ने सिर हिलाया। रामू फुर्ती से ट्रक के पास दौड़ा आया; ट्रक को रोकने का इशारा करते हुए ड्राइवर से कहा "हम अठारह लोग हैं, आठ तारीख को ही दिल्ली से निकले हैं, आगे रामघाट जाना है।" फिर हाथ जोड़ते हुए कहा, "हमारे साथ बच्चे और महिलाएं भी हैं; प्लीज हमारी मदद कीजिए, ट्रक से रामघाट तक छोड़ दीजिए।"

"प्रयागराज से आगे रामघाट की तरफ जाने वाला एनएच काफी खराब हालत में है, प्रयागराज से रामघाट एनएच तक ही सात-आठ घंटे से ऊपर लग जाएंगे! रामघाट तक नहीं जा पाऊंगा, रात-रात में ही रामघाट एनएच मोड़ तक छोड़ सकता हूं।" बोलकर ड्राइवर ने पूरा ब्रेक लगा दिया। उतरकर पीछे का डाला गिरा दिया, पीछे रखे तिरपाल नीचे उतार लिए। आगे किसी को कुछ बोलने की जरूरत नहीं पड़ी; सभी अठारह एक-एक करके मिनी ट्रक में सवार होते गए।

"देखा रामू, मैं कहता हूं न सरकार ही सब कुछ है! आखिर सरकार ने ही कुछ ट्रकों को सामान ढोने की छूट दे रखी है, तभी तो हम सभी की जान बच रही है!" पालनहार जैसी मुद्रा बनाते हुए भुवन ने कहा; जवाब देने के बजाय रामू चढ़ते हुए साथी को देखते रहे। अठारह लोग बमुश्किल अट पाए ट्रक में। ड्राइवर ने सभी को हिदायत दी, "कोई भी पैसेंजर खड़े मत रहिए, सभी सटकर बैठ जाइए, जरकिन में एक-दूसरे की देह का सपोर्ट मिल जाएगा।" बोलकर ड्राइवर ने पीछे का डाला बंद कर दिया। सभी के चेहरे में मुस्कान तैर गई ...रामघाट अब तो ट्रक स्टार्ट करने भर का मामला रह गया है!

खैनी बनाने-दबाने में ड्राइवर ने मात्र पाँच मिनट लिया; ट्रक का खलासी उसे, बल्कि उसकी खैनी को टकटकी लगाए देखता रहा। सड़क पर पड़े

तिरपाल को उसने खलासी के साथ मिलकर ट्रक के ऊपर फैलाना शुरू किया। अपने ऊपर तिरपाल पड़ते देख अंदर अठारह की सांसें अटक गईं! रामू उठ खड़ा हुआ; ऊंची आवाज लगाई, "हो ड्राइवर भैया, यह क्या जुल्म कर रहे हो?"

"अरे भैया जुल्म नहीं जरूरी काम कर रहा हूं; कोरोना कहर में बिना ढके ले जाऊंगा तो यूपी बॉर्डर में ही धरा जाएंगे! आप तो क्वारंटाइन सेंटर में मजे काटेंगे, पर हमें जेल की हवा खानी पड़ेगी; हमारी ट्रक थाने में कबाड़ की शोभा बढ़ाएगी।" बोलते-बोलते ड्राइवर ने तिरपाल को चारों किनारे से कसकर बांध दिया; किसी के बाहर झांकने-निकलने-फटकने की कोई गुंजाइश नहीं। अपनी सीट पर बैठते ही ड्राइवर ने गियर पर गियर चढ़ाना शुरू कर दिया।

मिनी ट्रक चली जा रही थी; अपने पेट में अठारह लोगों वाला एक मिनी संसार समाए। ट्रक बाहर की खुली हवा से होड़ ले रही थी, अंदर की दुनिया वायु-अवरुद्ध; जैसे किसी नई खोज का मानवीय-परीक्षण चल रहा हो। आधे घंटे में ही अंदर की हवा दमघोंटू हो चली; एक की छोड़ी सांस दूसरे की सांस बन पड़ती थी। कोई किसी को देख नहीं सकता था। किसी से बात करने की गुंजाइश नहीं, सिर्फ सामने वाले की सांस महसूस कर सकता था। बिना चाहे भी दूसरे की सांस पुनर्प्रयोग में ला सकता था, जैसे कोरोना काल में देश को किसी परम पुरुष ने तोहफा दिया हो, एक नए विधान-विज्ञान का। रामू मन ही मन मिलान करने लगा ...धर्म में कौन-सी मौत अच्छी मानी गई है? भूखे पेट चलते-चलते मरना या यहां दम घुटने से मरना! तभी अंकित ने सांस जोड़कर कहा, "ऐसे में तो हमारी लाश ही रामघाट जा पाएगी!"

"प्रधानमंत्रीजी की बात नहीं मानने का यही परिणाम निकलेगा न!" मालिकाना आवाज से लगा जवाब भुवन के मुंह से निकला था।

कोने में बैठा अभिषेक चिढ़ उठा, "भैया, मैं भी प्रधानमंत्री भक्त रहा हूं, प्रधानमंत्री-प्रधानमंत्री सुनते-सुनते अब कान पक गए हैं; अब कोई नया सुनाओ, ताकि हमारी सांस को ऑक्सिजन मिल पाए।"

पश्चिम दिशा में सूरज ढलान पर आ गया था; पूरब दिशा में दौड़ती ट्रक के पीछे अपनी ऊष्णता का प्रचंड प्रहार करने लगा। अंदर पसीने की धार फूट पड़ी। सभी के तौलिए-गमछे पसीने से लड़ते-लड़ते खुद पस्त पड़ने लगे। रामू को यकीन हो चला, अंकित सही बोल रहा है, ऐसे में रामघाट हम सभी की लाश ही पहुंचेगी। उसने मन ही मन हिसाब लगाया ...सभी के पास

अभी एक-एक पैकेट भोजन है, रात तक पैदल चलकर कहीं रात्रि विश्राम करके आगे दो दिन पैदल चलने का उपाय करना मरने से बेहतर है। उसने ड्राइवर के पीछे वाली दीवार में थाप देना शुरू किया। ना तो ड्राइवर ने कोई प्रतिक्रिया दी ना ही ट्रक की रफ्तार धीमी हुई; रफ्तार वाली ट्रक में शायद एक हाथ की थाप ड्राइवर के कानों तक नहीं पहुंच पाई हो। फिर तो कई हाथों की थाप से ट्रक कंपित हो उठा। ट्रक में ब्रेक लगना ही था; ड्राइवर ने अपनी सीट के पीछे वाला माइक्रो विंडो खोला, खिन्न होकर उबल पड़ा "अरे भैया! रामघाट ही जा रहे हैं, जहन्नुम नहीं!"

"जहन्नुम जाने की जरूरत नहीं है, जहन्नुम तो खुद तिरपाल के अंदर घुस पड़ा है!" रामू झल्ला उठा।

"फिर?" माइक्रो विंडो के अंदर आधा मुंह डालते हुए ड्राइवर बोला, निर्णायक अंदाज में।

"ट्रक रोकिए, अंदर सांस नहीं लिया जा रहा है; हम पैदल ही चलेंगे।" अंकित उबलते हुए बोला।

"मेरे मालिक! आधा किलोमीटर आगे पुलिस चौकी है, यहां गाड़ी रोकना खतरनाक है!" बोलकर ड्राइवर ने गियर चढ़ा दी, ट्रक ने रफ्तार पकड़ ली।

सच में थोड़ी ही देर में ट्रक में ब्रेक लग गया। बाहर एक कड़क आवाज गरज उठी, "ट्रक के अंदर क्या है?"

"साहब जी! अंदर कोरोना सेंटर का मटेरियल है!" ड्राइवर ने डरावने अंदाज में कहा।

"फिर तो ट्रक तेजी से निकाल ले! आगे बॉर्डर से पहले कहीं रुकना मत, करोना फैलाना मत!" बाहर अधिकारपूर्ण आवाज गूंज उठी। ट्रक के अंदर सभी सहमे बैठे रहे। जीवित प्राणी की सामान्य हरकत तक समाप्त-सुन्न पड़ चुकी थी। अब ट्रक ने रफ्तार पकड़ ली। अंदर सभी मौन बैठे रहे, मृत से; तेज सांस की डरावनी आवाज से जूझते हुए।

पुलिस चौकी में मिले जीवनदान का भरपूर फायदा उठाया ड्राइवर ने; मिनी ट्रक तेज गति से दौड़ती रही, घंटों-घंटों! दिन में ट्रक के अंदर की दुनिया रात सी थी तो रात को घनघोर रात्रि जैसी! दिन में तिरपाल के किनारे से आ रही रोशनी से लोगों की उम्मीद जिंदा रही, कि अभी जिंदा हैं दुनिया में; रात को भोजन के एक्स्ट्रा पॉकेट ने यकीन दिलाया कि जिंदा रह लेंगे। बोतल में बचे पानी ने कंठ के काम करते रहने का एहसास कराया। एक्स्ट्रा पॉकेट देने के

लिए भुवन ने 'सरकार' और 'श्रीराम' बोलकर धन्यवाद किया। बढ़ते अंधेरे में अंदर का तापमान घटता गया; पेट में भोजन पड़ते ही शरीर में शिथिलता आती गई। धीरे-धीरे सभी निद्रा-अर्धनिद्रा की शरण में जाने लगे, एक-दूसरे की देह का सहारा पाए हुए।

समूह को सोने वाली स्थिति में देखकर रामू ने राहत की सांस ली; दिन वाली तपती गर्मी, पसीने की धार और उखड़ती सांसों से छुटकारा तो मिला, कुछ घंटों के लिए ही सही। मानिकपुर क्वारंटीन सेंटर के बाद मोबाइल चार्ज करने का मौका नहीं मिला था किसी को। रामू अपना मोबाइल बंद रखा करता था; जरूरी काम के लिए बैटरी बचाए रखना जरूरी था। मंजरी से बात किए हुए 48 घंटे से ऊपर हो चुके थे। मंजरी की याद आते ही उसे अनुभव हुआ, प्यार सचमुच शाश्वत होता है; तभी तो जहन्नुम जैसी जगह में भी सहारा देता है! उसने मोबाइल ऑन किया; अरे, मंजरी के मैसेज भरे पड़े हैं! मैसेज की शुरुआत ...कहां हो कैसे हो... वाले डर-आशंका-उलाहना से, बीच में रामघाट में कोरोना के अपडेट से तो अंत में ...लव यू मिस यू...।

अंतिम से पहले वाले मैसेज में लिखी थी ...आज रात नौ बजे भीसी है, लिंक नीचे है... उसने घड़ी देखी; नौ बजने में अभी दस मिनट बाकी थे। तब तक वह मंजरी को बंद आंखों में दिल की गहराई से देख लेना चाहता था; उसे अपने मन-मस्तिष्क में महसूस कर और ऊर्जावान हो जाना चाहता था।

"...कोरोना की दहशत में जी रहे सभी साथियों का आज की वीसी में स्वागत है; सबसे पहले रामू की शेष यात्रा के लिए हम सभी की शुभकामनाएं, हम सभी को पता है करोड़ों प्रवासी मजदूरों के साथ रामू भी ऐतिहासिक पल का गवाह बना हुआ है, वह पल जो भारत के इतिहास में एक बड़ी त्रासदी के रूप में दर्ज होने जा रहा है..." नौ बजे वीसी की शुरुआत करते हुए सहज शुरू से ही गंभीर बना हुआ था।

"...सिर्फ एक त्रासदी ही नहीं एक बड़ी मानवीय त्रुटि भी कहो सहज..." अहम ने हस्तक्षेप किया।

"...आज मैं एक अविश्वास प्रस्ताव पेश करना चाहती हूं; आज के बाद सहज को कोरोना-कैबिनेट की वीसी की अध्यक्षता करने से पदच्युत किया जाए, क्योंकि वह हालात की गंभीरता को हल्के में ले रहा है..." शायनी मजाकिया अंदाज में बोली।

"...हां पदच्युत करके उसे शायनी के बगल में दूल्हे राजा वाला सिंहासन

डालकर बिठा दो..." बोलकर परवेज ने जोरदार ठहाका लगाया।

"...अच्छा तो शायनी के अविश्वास प्रस्ताव का असली मकसद यही है!" अहम ने बिना ठहाका लगाए कहा।

"...मंजरी रानी तुम भी मुझ पर हँस लो।" मंजरी की चुप्पी भांपकर शायनी ने उसे उकसाया।

"...अरे हां, रामू इतने अंधेरे में क्या कर रहा है!" रामू का चेहरा अंधेरे में छिपा देखकर सहज ने कहा।

"...तुम लोग जी भर कर हँसो, हँसी-ठठ्ठा-मजाक शादी-बारात कर लो, मैं तो जहन्नुम के अंदर पड़ा हूं।" रामू की मर-मरी सी आवाज आई थी।

"...क्या बात हो गई? भारत सरकार ने तुम्हारे रुकने के लिए आज जहन्नुम ही मुकर्रर किया है क्या!" परवेज के माथे पर बल पड़ गए।

"...हां यार जहन्नुम ही समझो! रामघाट पहुंचकर ही पूरी कहानी बता पाऊंगा, बस इतना समझ लो हम सभी पांच घंटे से एक मिनी ट्रक में चले जा रहे हैं, जानवर जैसा ठूंसकर भरे हुए; अभी तो सभी एक-दूसरे का सहारा लेकर सो रहे हैं, पर कौन जिंदा है कौन मरा है कह नहीं सकते..." स्क्रीन में बिना चेहरा के रामू बोले जा रहा था।

"...मैं माफी माँगती हूं रामू, तुम्हारे पैदल ही चल पड़ने के फैसले पर मैं भी मौन रह गई थी।" मंजरी की मायूसी भरी आवाज थी।

"...तुम्हें मेरे लिए माफी माँगने की जरूरत नहीं है मंजरी, माफी तो उस महापुरुष को माँगनी चाहिए जिसने करोड़ों मजदूरों के पैरों को बस-ट्रेन के पहिए में बदल डाला है।" मंजरी से बोलते हुए रामू की आवाज में जीवंतता आ गई।

"...डोंट वरी रामू, इतिहास ऐसे महापुरुष को सबसे बड़े उपनाम से नवाजेगा," अहम ने कहा, लगा वह हर पल दर्शन-कुंड में ही डूबा रहता था।

"...हमें सरकार की आलोचना करने से बचना चाहिए; भैया बता रहे थे, सरकार के खिलाफ सोशल मीडिया में सख्त शब्दों का इस्तेमाल करने के कारण रामघाट के भी चार एक्टिविस्ट अरेस्ट हुए हैं!" मंजूरी ने सभी को सावधान किया।

"...ओके! ठीक है, हमें रामू की तकलीफदेह यात्रा का ख्याल रखना चाहिए, आज की बात यहीं समाप्त करते हैं; जय हिंद जय भारत।" सहज ने वीसी समाप्त कर दी।

रामू ने देखा मोबाइल स्क्रीन काला पड़ चुका है। मोबाइल बंद करने से पहले वह मंजरी के मैसेज का इंतजार करने लगा। सच में मंजरी ने उसे निराश नहीं किया; अभी-अभी आया मैसेज स्क्रीन पर जैसे तड़प रहा था, "...आई एम सॉरी यार, लव यू; भेरी बैड नाइट...।" रामू ने हँसते हुआ इमोजी के साथ मैसेज भेज दिया, "...लव यू, इट इज ए वेरी मेमोरेबल नाइट..."

वीसी के बाद रामू की भी चेतना जाती रही। ट्रक सरपट भागती रही; घंटों। उसकी तंद्रा तब टूटी जब ट्रक के बाहर शोर-शराबा हो रहा था। उसे ज्ञान-भान न था वीसी की समाप्ति से अब तक कितने घंटे ट्रक चल चुकी है?

"ट्रक के अंदर क्या है जी?" बाहर किसी ने ड्राइवर पर रौब झाड़ा, ट्रक में डंडा फटकारते हुए। डंडा फटकारने के लय-ताल से रामू को लगा पुलिस वाला ही होगा। "कोरोना मटेरियल है हुजूर!" ड्राइवर ने संभलकर जवाब दिया।

"करोना मटरियल? कौन-सा करोना मटरियल है जी!" पूछने वाला खिन्न हो उठा।

"हुजूर, जो कोरोना से भागता है!" सटीक उत्तर ना पाकर ड्राइवर के मुंह से सच ही निकल गया।

"चुपचाप तिरपाल हटाओ और मटरियल दिखाओ।" बोलकर रौबदार पुरुष ने खुद ही तिरपाल के किनारे से डंडा घुसेड़ना शुरू कर दिया।

"दय्या गे दय्या!" भाभी के देह में डंडा चुभते ही वह चिल्ला उठी। अंदर से आई चीत्कार से बाहर खलबली-सी मच गई। ड्राइवर अपनी सीट से कूदकर भाग खड़ा हुआ। देखते ही देखते चारों ओर से तिरपाल उठ चुका। अब सभी अठारह गुप्त संसार से मुक्त संसार में आ गए। रामू ने देखा बाहर दसियों पुलिस वाले ट्रक को चारों ओर से घेरे खड़े हैं। ट्रक के अंदर सभी बेहोशी की स्थिति में अधलेटे से पड़े थे, एक-दूसरे का सहारा लिए। अंदर का खौफनाक मंजर देखकर पुलिस वालों की आंखें फटी रह गईं! एक पुलिस वाला भागते हुए ड्राइवर को घसीटकर लाने लगा। ट्रक के पास आते ही दो स्टारधारी बिगड़ते हुए बोला, "साला झूठ बोलता है रे! चारों तरफ करोना का कोलाहल मचा है और तू परवासियों को ढोकर पैसा बना रहा है!" फिर ड्राइवर का कान ऐंठते हुए गुर्रा उठा, "ये कैसा करोना मटरियल है जी! स्टेट बॉर्डर पर तुम जैसे ड्राइवर हमें धोखा देकर नहीं निकल सकते जी!" निर्दोष

ड्राइवर को पिटता देख रामू ट्रक से नीचे कूद पड़ा, अपनी शारीरिक अशक्तता छुपाते हुए। दो स्टार वाले के पास जाकर हाथ जोड़ा, "हुजूर करोना मटेरियल का मतलब है दिल्ली में करोना का कहर चल रहा है और हम लोग वहीं से भागे आ रहे हैं!"

"आप कितने लोग हो?" ऊंची आवाज पीछे से आई थी, स्वाभाविक ही दो स्टार वाले से बड़ा अधिकारी था।

"हम लोग कुल अठारह हैं सर।" रामू की डूबती आवाज थी।

"सबसे पहले सारे आदमी नीचे उतरिए।" अधिकारीनुमा आवाज थी।

एक-एक करके सभी नीचे उतरने लगे। अधिकारी ने एक सिपाही को गिनती करने को कहा ...एक-दो-तीन-चार...सतरह?... "हुजूर कुल सतरह प्रवासी मजदूर हैं!" सिपाही ने सतरह ऐसे बोला जैसे किसी सरकार के अल्पमत में हो जाने की घोषणा की जा रही हो।

"अठारहवां कहां है जी?" दो स्टार वाले ने रामू की तरफ आंखें तिरछी करके पूछा।

"सभी के सभी कल से ही सुस्त पड़े हैं सर; वह बेचारा कुछ ज्यादा पस्त पड़ गया होगा, खुलकर सांस लेते ही नीचे उतर आएगा।" खुली हवा में सांस लेने के बाद अंकित भी बोलने की स्थिति में आ गया था।

"सुस्त पड़ा है या हमेशा के लिए..." पीछे खड़े अधिकारी ने वाक्य पूरा करने की बजाय आंखें भगवान के घर की तरफ तिरछी कर दीं।

"अरे मेडिकल वाले कहां गए जी! जरा अंदर जाकर देखो तो सही, अठारहवां सुस्त पड़ा है या मामला कुछ और है?" दो स्टार वाले की आवाज शंकालु हो चली।

मेडिकल टीम में से एक आवरणधारी लपककर ट्रक के ऊपर चढ़ गया। ड्राइवर के पीछे वाली दीवार के सहारे टिके व्यक्ति को उलट-पलट कर देखा। कोई हरकत नहीं हुई; साहस बटोरकर उसकी नब्ज टटोली; "बाप रे बाप! ड्राइवर सच बोल रहा था यह तो सही में कोरोना मटेरियल है!" नब्ज ना मिलता देख उसकी चीख निकल गई!

वह एक झटके में ही ट्रक से नीचे कूद पड़ा।

"मतलब?" अधिकारी की गर्दन ट्रक की ओर ऊंची होने लगी।

"हुजूर यह तो कोरोना से मरा पड़ा है!" बोलकर वह पीछे की ओर सरकने लगा।

"करोना से मरा पड़ा है!" सुनते ही पुलिस वाले और मेडिकल टीम के लोग दूर-दूर हटने लगे। सभी सतरह के चेहरे सुन्न पड़ने लगे, सच में राजन की मृत्यु कोरोना से तो नहीं हो गई है?

भुवन अधिकारी के पास गया, सत्ता-साहस का प्रयोग करते हुए। अधिकारी बिगड़ पड़ा, "दूर रहो! मैं यहां स्टेट बॉर्डर पर तैनात कोरोना ड्यूटी स्पेशल मजिस्ट्रेट हूं, कोरोना फैलाने के जुर्म में तुम्हें अरेस्ट करवा सकता हूं!"

"सर मैं प्रवासी मजदूर जरूर हूं, पर सरकार के साथ वाला हूं!" भुवन ने साधिकार कहा।

"सरकार के साथ वाले हैं तब तो सरकार की इज्जत का भी ख्याल रखिए; आप लोग कोरोना फैलाते चलिएगा ऐसे में सरकार की सांस फुलेगी या नहीं?" मजिस्ट्रेट ने उलाहनाभरे शब्दों में कहा।

"कोई उपाय निकालिए सर।" अपनी अधिकारपूर्ण स्थिति से नीचे आकर भुवन ने कहा।

"कोरोना सर्कुलर तो कहता है आप लोगों को राज्य की सीमा के अंदर ही कहीं आइसोलेशन में रखना पड़ेगा!" मजिस्ट्रेट अब मित्रवत हो चला।

"ग्यारह तारीख से हम लोग कानपुर जिले के क्वारंटाइन सेंटर में ही थे, तीन-चार दिनों के लिए; सेंटर में सोशल डिस्टेंसिंग का कोई मायने नहीं रह पाता है।" भुवन ने मानिकपुर क्वारंटाइन सेंटर का अनुभव बताया।

"अरे भैया, अब तो क्वारंटाइन सेंटर की जगह थ्री स्टार, फोर स्टार, फाइव स्टार होटल में रखा जाता है; समझो गवर्नर जैसी ठाठ-बाट!" मजिस्ट्रेट ने आंखों में मदहोशी लाते हुए कहा।

"सरकार इतना तो खर्च कर रही है, कितना लाख करोड़ तो झोंक दिए हैं अब तक।" भुवन आश्चर्य व्यक्त करते हुए बोले जा रहा था, "फिर भी सरकार की जय-जयकार अभी तक शुरू नहीं हुई है?"

"अरे भाई साहब, किस दुनिया में रहते हैं आप! होटल में आइसोलेशन में रहने का खर्चा आपको खुद वहन करना पड़ेगा!" मजिस्ट्रेट ने सब कुछ स्पष्ट कर देने की भाव-भंगिमा बनाई।

"लेकिन हम लोग आइसोलेशन में जाएं ही क्यों? हम में से किसी को भी करोना नहीं है!" कब से दोनों की वार्ता सुन रहे रामू का मुंह खुला।

"अरे छोटे भाई, दिनदहाड़े झूठ बोलने से भी नहीं डरते हो! मेरे सामने कोरोना से मरा आदमी पड़ा है; आप लोग उसी के साथ कई दिनों से हो,

फिर तो आप लोग भी कोरोना पॉजिटिव हुए न!" मेडिकल टीम के बिना आवरण वाले व्यक्ति ने अपना मास्क ठीक करते हुए कहा। उसके हाव-भाव से लगा वह अधिकार प्राप्त दर्जे का अधिकारी था।

"राजन हमारे रामघाट का है, मुझे पता है वह कई सालों से दिल का मरीज है; एक साल पहले ही तो दिल्ली में दिल का दौरा पड़ा था।" इसरार आगे आकर बोला।

"तो अभिये कोरोना टेस्ट करवा देते हैं, आप सभी का झूठ-सच सब सामने आ जाएगा!" मेडिकल अधिकारी ने भय दिखाने जैसी भंगिमा बनाते हुए कहा।

"हां-हां, एक बार टेस्ट हो जाना ठीक ही रहेगा!" रामू ने उत्साह दिखाया।

"डिप्टी साहब, यदि सभी का टेस्ट रिपोर्ट पॉजिटिव आया तो चेन लंबा होता जाएगा! दिल्ली से चलने से लेकर आज तक इन सभी के संपर्क में आए लोगों को ट्रेस करके टेस्ट कराने में ही हमारी जिंदगी बीत जाएगी!" मजिस्ट्रेट ने अधिकारीनुमा व्यक्ति से गुप्त मंत्रणा जैसे स्वर में कहा।

"फिर?" डिप्टी साहब सोच में पड़ गए।

"अभी तो रात बाकी है; अंधेरे-अंधेरे में ये निकल लें तो हमें क्या आपत्ति हो सकती है? करोड़ों लोग तो भाग रहे हैं चारों तरफ! सरकार के लिए कहां संभव है सब को रोकना-खिलाना-टेस्ट कराना।" मजिस्ट्रेट ने कोई चीज माथे से नीचे पटक देने के अंदाज में कहा। उसने भुवन को संकेत से सामने आने को कहा; आ जाने पर रामघाट जाने वाले रास्ते की ओर उंगली दिखाई। रामू ने लाश की तरफ उंगली से इशारा किया, कि लाश का क्या होगा? मजिस्ट्रेट ने डांट लगा दी, "पहले अपनी जान का परवाह तो करो! कोरोना टाइम में ऐसे लाश का कोई माई-बाप नहीं होता! कोई रिकॉर्ड भी नहीं रखा जाता; फिर भी हम तुम्हें वचन देते हैं इस लाश को जला वुलाकर राख डीएम रामघाट के पास भेज देंगे।" बोलकर मजिस्ट्रेट ने पिंड छूटने जैसी मुद्रा बनाई; मेडिकल टीम में सबसे पीछे खड़े आवरणधारियों को लाश उठाने का संकेत करते हुए अपनी गाड़ी की ओर बढ़ चले। गाड़ी में बैठते-बैठते उसने डिप्टी साहब की ओर मुंह में कौर डालने-सा संकेत किया, प्रवासियों की ओर आंखें फेंकते हुए। डिप्टी ने दूर खड़े भोजन भान को संकेत किया। भोजन के पैकेट झटपट सभी प्रवासियों के हाथों में पड़ने लगे, जैसे सच में सरकारी प्रक्रिया

गतिमान अवस्था में ही रहती हो, हर वक्त! रामू ने साथ के लोगों से आंखों से मौन संवाद किया। सभी के पैर रामघाट के रास्ते की ओर अपूर्व गति से बढ़ चले; अंधेरे को अपने पैरों से पीछे धकेलते हुए।

4

घंटेभर की यात्रा के बाद उन्हें लोक निर्माण विभाग का बोर्ड दिख गया, अंधेरे में भी; सच में घर की ओर जाने वाले रास्ते कभी अंधकार मय नहीं होते! रामघाट इंगित करता दिशा-सूचक बोर्ड! 'रामघाट' शब्द पर नजर पड़ते ही सभी का मन बोर्ड के चरण चूमने को किया। रामघाट एनएच पर पैर पड़ते ही उन्हें रामघाट मार्ग प्रकाशमय लगा, घनघोर अंधकारमय मन-मार्ग में भी; रामघाट तक की दूरी ठीक-ठाक किसी को भले पता न हो, मन से दूरी मिट चुकी थी। मन में दूरी का जोड़-घटाव का योग शून्य हो जाए तब पैर रुकते नहीं, थकते नहीं! मन की भाषा पकड़ में आते ही रामू रुककर बोला, "मुझे तो लग रहा है हम लोग इधर से रामघाट की ओर बढ़े जा रहे हैं, तो उधर से रामघाट भी हमारी ओर चला आ रहा है!"

"हां-हां, अब तो समझो रामघाट पहुंच ही गए हैं!" एक साथ कोरस-लहरी तैर गई, दूरी को मात देने वाला स्वर-संगीत सा!

"वैसे रामघाट पैदल पहुंचने में दस-बारह घंटे लग सकते हैं, एक रात कहीं विश्राम करना पड़ सकता है।" रामू ने आगे की यात्रा की रूपरेखा बताई।

"अभी तो हमारे हाथों में भोजन के एक-एक पैकेट हैं, आगे कहीं कुछ मिले न मिले? बुद्धिमानी तो इसी में है कि हम लोग चलते रहें; अब तो थकावट भी भाग गई लग रही है!" अंकित ने जोश दिखाते हुए कहा।

"हां-हां, हमें रामघाट से पहले रुकना नहीं है!" सभी के स्वर गूंज उठे; भाभी के स्वर की तरंग सबसे तीव्र थी तो मुन्नी के स्वर की तान। सामूहिक संकल्प के बाद तो सभी के शरीर में पूरा देश लांघने-सी शक्ति जाग गई। अब सभी के पैर दूर आसमान में खोए सूरज से होड़ लेते दिख रहे थे ...सूरज की प्रथम किरण धरती पर पहले पड़ती है या फिर उनके कदम रामघाट जिले की सीमा पर!

"एनएच पर रामघाट में कोरोना का स्टेटस चेक किया है मैंने, कोरोना के मामले अब तो बढ़कर पचास हो चुके हैं।" लंबी चुप्पी तोड़ते हुए भुवन ने कहा।

"करोना के मामले पचास हों या पचास हजार हमें तो हर हाल में घरर्र पहुंचना है।" भाभी ने कहा; घर शब्द पर उसके ठहराव से सभी ने महसूस किया कोरोना चाहे लाख डराए या आसमान से बिजली गिरा दे, ऐसे वक्त में घर ही सबसे बड़ा धाम होता है।

"भुवन भैया, करोना के आंकड़े तो आपके वश में नहीं रहा; आप लोगों ने जिसे फरवरी-मार्च में साधारण कीड़ा समझ रखा था उसका खूनी पंजा तो अब पूरे पावन भारत भूमि में फैला जा रहा है!" रामू ने नाक फैलाते हुए कहा; लगा उसके अंदर किसी के लिए भरी घृणा-वायु बाहर आई हो।

"तुम्हारे हिसाब से कोरोना जब इतनी तेजी से फैलता ही जा रहा है फिर रामघाट जाने के लिए इतनी तेजी क्यों दिखा रहे हो!" भुवन ने रामू की बोलती बंद करने की खातिर कहा।

"सरकार भले ही देश में करोना को पांच-पचास-सौ-पांच सौ पर ना रोक पाई हो, मुझे तो अपनी कोरोना-मंडली के साथ मिलकर रामघाट में इसके प्रसार को खतरनाक बनने से रोकना है!" अंधेरे में बोलते हुए रामू का चेहरा धुंधला दिख रहा था; संकल्प प्रकाश जैसा प्रकट हो रहा था।

"तुम तो हमें ऐसे डरा रहे हो जैसे देश में कोरोना के आज का पंद्रह हजार का आंकड़ा भविष्य में पचास लाख हो जाएगा!" भुवन ने चुटकी ली।

"भुवन भैया, हँसो मत आज का पंद्रह हजार का आंकड़ा भविष्य में पचास लाख क्या सौ-दो सौ लाख भी लांघ सकता है!" रामू भविष्यवाणी माफिक बोला।

"तुम दोनों बातों की लड़ाई अब बंद करो, घर के नजदीक पहुंचकर शुभ-शुभ बोलो!" भाभी ने हस्तक्षेप किया; दोनों चुप हो गए।

बची हुई बैटरी का थोड़ा इस्तेमाल करके वह कोरोना अपडेट खुद देखना चाहता था; मुंह से कई बार करोना-करोना निकलते-निकलते उसके दिमाग में कोरोना ने जैसे कब्जा ही कर लिया था। मोबाइल खोलते ही बॉक्स में मैसेज की धारा फूट पड़ी; मंजरी-सहज-शायनी-परवेज-अहम-रामना के नाम ऊपर से उगते हुए तेजी से नीचे विलीन होने लगे। मैसेज की धारा बंद हुई तो मंजरी से पहले उसने रामना का हाल-समाचार लेना जरूरी समझा; घर में लोग जैसे भी होंगे घर पर तो होंगे, बेचारा रामना और उसके परिवार के लोग न जाने कैसे होंगे? कहां तक पहुंचे होंगे!

'...रामू भैया प्रणाम! आपका मोबाइल हमेशा बंद बता रहा है; आप

लोग कैसे हैं! उम्मीद है रामघाट के करीब पहुंच रहे होंगे? हम लोग यहां यूपी-बिहार बॉर्डर में फंसे पड़े हैं, कल से ही! समय मिलेगा तो बात कीजिएगा...' रामना का मैसेज कल पंद्रह अप्रैल से ही बॉक्स में अनरीड पड़ा था। मैसेज पढ़कर रामू अफसोस में पड़ गया ...यूपी-बिहार बॉर्डर में फंसा है! मतलब? अंदर से उसकी छटपटाहट बढ़ती गई। उसने पूरब दिशा की ओर नजर उठाई; सूरज की लालिमा दूर कहीं पाताल से जैसे अपनी जीभ बाहर प्रकट कर रही थी। उसे लगा रामना लोग जहां भी रात्रि विश्राम कर रहे होंगे अब तो जागने ही वाले होंगे; उसने उसका नंबर रिंग कर दिया।

"...भैया प्रणाम! आप सभी लोग कैसे हैं! कहां तक पहुंचे हैं अभी?..." दो रिंग के बाद ही उधर से रामना की आत्मीय आवाज निकल पड़ी। उसके स्वर तरंग से जान पड़ा रामू से बात करने के लिए वह बेचैन था।

"हम लोग रामघाट एनएच पर चल रहे हैं, फिर से पैदल ही; परसों भूख से कृष्णा की मौत हो गई, प्रयागराज के रास्ते में; भुवन तो कह रहा है प्रयागराज के करीब मरा है सो स्वर्ग में उच्च आसन पर बैठेगा; अगली दुखदायी खबर है कि हम अठारह लोग एक मिनी ट्रक में तिरपाल के अंदर पैक होकर चले जा रहे थे, बीच रास्ते में ही कहीं राजन ने दम तोड़ दिया!" बोलते-बोलते रामू की आवाज भर्राने लगी।

"...भैया मरना-हरना मनुष्य के वश में रहा कहां! चारों तरफ हालात ऐसे बनते जा रहे हैं कि अब साधारण जन को मृत्यु से भगवान भी ना बचा पाएं!" रामना की आवाज में आक्रोश छिपा था, रामू को लगा यह लड़का तो आगे न जाने क्या कर डाले; उसकी आवाज आती रही–"...क्वारंटाइन सेंटर से भागते ही बड़की माँ चल बसी; पैदल चलते-चलते ही कल रात को यूपी बॉर्डर में दरभंगा वाले मिश्रा जी को हार्ट अटैक पड़ा, स्वर्ग सिधार गए!..." बोलकर रामना एकाएक चुप हो गया, शायद रुआंसा हो उठा होगा; हिचकी लेते हुए फिर बोलने लगा, "...एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही है भैया, पैदल चलते जा रहे प्रवासी मजदूरों की चारों तरफ मृत्यु हो रही है, लेकिन किसी भी न्यूज चैनल में इस बारे में कोई न्यूज नहीं दिख रहा है!..." रामना ऐसे बोल रहा था जैसे वह किसी अजूबे देश-दुनिया से होकर गुजर रहा हो।

"इसके पीछे बहुत सीधा समीकरण है रामना, सत्ता में ही दुनिया की सारी शक्ति सन्निहित होती जा रही है! पैसा, प्रलोभन और प्रताड़ना इन तीन फेक्टर के दम पर सभी चैनल के रिमोट गिरवी रखे पड़े हैं, चैनल में वही

न्यूज चल रहे हैं जिससे सिंहासन में विराजमान पुरुषगण देव-तुल्य दिखें!"

"...करोड़ों मजदूर देश के कोने-कोने में पैदल-पैदल मारे फिर रहे हैं और चैनल वाले अपने आका को देव-तुल्य साबित करने में लगे हैं? इन सभी के विनाशकारी घालमेल को सीधे स्वाहा कर देने की योजना पर काम होना चाहिए!..." उसके अंदर ज्वाला-सी उफनने लगी; रामू ने नियंत्रित करना चाहा, "अरे रामना, इस उम्र में हर जुर्म के खिलाफ आग लगा देने की इच्छा होती है; पर जब शासक-सत्ता निरंकुश हो जाए तो सबसे जरूरी है अपने को नियंत्रित करना, अपनी ऊर्जा को अनावश्यक क्षति से बचाना और भविष्य के लिए किसी योजना पर कार्य करते रहना!"

"...अभी तो यूपी बॉर्डर पर फंसे पड़े हैं, जल्दी से पूर्णिया पहुंचकर बिहारी मजदूरों के बिहार में ही टिके रहने की बड़ी योजना पर विचार करना पड़ेगा, करोड़ों मजदूरों के लिए कोई-न-कोई बिल्ला गेट्स मिल ही जाएगा..." रामना की आवाज में गंभीरता परिपक्व होती जान पड़ी; रामू को लगा भविष्य में बिहार से जरूर कोई बड़ी खबर सुनने को मिलेगी।

"पर यूपी बॉर्डर में क्यों फंसे पड़े हो!" रामू को याद आया, रामना ने मैसेज में भी लिखा था—रात से ही बॉर्डर में फंसे हैं।

"...क्या बताएं भैया! यहां तो ऐसा लग रहा है जैसे सरदार पटेल ने जिस देश को एकीकृत कर भारत देश बनाया था आने वाले समय में वह फिर से कहीं कितने ही देश बनने की राह पर न चल पड़े!"

"सो ऐसा क्या हो रहा है वहां जो तुम ऐसा बोल रहे हो?" रामू विस्मय से बाहर नहीं आ पा रहा था।

"...बॉर्डर पर यूपी पुलिस और मेडिकल टीम की गहरी छानबीन-पूछताछ से हम लोग तो पांच-छह घंटे में निजात पा गए, पर सामने खड़े बिहार पुलिस के पंजे में फंसे पड़े हैं! वह हम लोगों को बिहार की धरती पर पैर तक नहीं धरने दे रही है; कह रही है यूपी पुलिस अपना काम नहीं कर रही है तो न करे वे अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाएंगे!..."

"अरे! यह तो अजीब तमाशा है? देश में सभी राज्यों की पुलिस को ऐसे संकट के समय एक मत से काम करना चाहिए।" रामू विस्मय के भंवर में डूबता गया।

"...बिहार पुलिस का एक सिपाही कह रहा था, दोनों राज्यों में अलग-अलग दलों की सरकार है, इसलिए मतभेद बना रहता है..." रामना की आवाज में

व्यंग की झलक आ रही थी।

"अलग-अलग दलों की सरकार? दोनों राज्यों में पार्टी की सरकार है!" अब रामू घोर विस्मय में पड़ गया।

"...मैंने भी यही कहा तो सिपाहीजी बोला, हमारे यहां पार्टी की सरकार नहीं है, सरकार में शामिल भर है! इसलिए सीमा पर तनातनी बनी रहती है।" बोलने के साथ ही रामना के मुंह से नफरत भरी हँसी निकल पड़ी।

"...फिर?" रामना से अधिक रामू उलझन में पड़ गया।

"...पटना में हाई लेवल मीटिंग चल रही है, बिहार में प्रवेश करने वाले प्रवासी मजदूरों से वहां के अफसर लोग प्रमाण-पत्र चाह रहे हैं कि बिहार में कोरोना का केस नहीं बढ़ने देंगे!" बोलकर रामना की हँसी छूट गई फोन पर।

"...प्रमाण-पत्र देने में देर मत करो तुम लोग; प्रवासियों द्वारा प्रमाण-पत्र देने, ना देने के बावजूद भी जहां जो दुर्दशा होनी है वह तो होकर रहेगी! तुम लोग प्रमाण-पत्र दे भी दिया तो क्या सरकार तुम्हें फांसी दे देगी?" बोलते-बोलते रामू के मुंह से हँसी की धार फूट पड़ी, बेतुके फरमान पर।

'...कोई न कोई उपाय कर हम लोग बॉर्डर पार कर ही लेंगे।'

'...मेरे मोबाइल में सहज का कॉल आ रहा है काफी देर से; ठीक है रामना, घर पहुंचकर बात करते रहना।' रामू ने आशीर्वाद देने के भाव से कहा।

'...सहज कौन है भैया?' रामना की जिज्ञासा जाग उठी सहज नाम सुनकर।

'...हम लोगों का बहुत खास मित्र है, अर्थशास्त्र में गहरी पकड़ है उसकी!' सहज के बारे में बताते हुए रामू को अंदर से मजबूती-सी महसूस हुई।

'...फिर तो उनसे कहना अर्थशास्त्र में कोई आसान फार्मूला बनाए जिससे सरकार की आमदनी का वाजिब हिस्सा हम मजदूरों तक पहुंच पाए' रामना हुलसकर बोला; उसकी आवाज में बड़ी उम्मीद जाग गई जान पड़ी।

'...मुझे पता है वह ऐसे ही किसी शोध की दिशा में बढ़ रहा है,' रामू की आवाज में संभावना भरी थी।

'...ठीक है भैया, सत्तन चाचा आवाज दे रहे हैं, शायद मामला कुछ बन गया हो; प्रणाम भैया।' रामना की आवाज माफीनामे जैसी हो गई।

'...हां-हां, फिर बात होगी!' बोलकर रामू भावना में बहता दिखा।

रामना का कॉल कटते ही सहज का कॉल तेजी से बजने लगा, जैसे गुस्से में कब से लाल-पीला हो रहा हो। "...हाय, कैसे हो तुम लोग! शायनी कैसी

है!" कॉल रिसीव करते ही रामू को माथे का वजन समाप्त होता महसूस हुआ।

'...ऑल वेल; तुम्हारी टोली अब तक कहां पहुंची है?' सहज की आवाज में बेसब्री बढ़ती जान पड़ी।

"अब उजाला होने वाला है; इस हाईवे पर तो पहले भी आया हूं? यह तो रामघाट रोड़ जान पड़ रहा है! आधे घंटे में शायद रामघाट राष्ट्रीय राजमार्ग के पहले वाले टोल प्लाजा पहुंच जाऊंगा!" रामू की आवाज में अचानक आए हर्ष-तरंग से लग रहा था जैसे किसी गहरी घाटी से बचकर बाहर आ गया हो। '...तुम्हारा मोबाइल तो लगातार स्विच ऑफ चल रहा था? पापा ने तुम लोगों के लिए एक बस भेज रखी है, रामघाट एनएच के दूसरे टोल प्लाजा में खड़ी है, रात से ही; आगे पैदल चलने की जरूरत नहीं है।' सहयोग की बात भी सहज को सकुचाते हुए बोलनी पड़ रही थी; रामू और उसके साथी लोगों द्वारा सही गई ऐतिहासिक त्रासदी के सामने यह सहयोग सहज को तुच्छ जान पड़ रहा था शायद।

"क्या, अंकल ने हम लोगों के लिए बस भेजी है!" आगे रामू रुआँसा हो उठा, काश ईश्वर इस देश में ऐसे हजारों दानवीर पहले से पैदा किए होते!

'...पहले यहां पहुंच तो जाओ, फिर मालूम पड़ेगा कोरोना महामारी के समय पापा जरूरतमंदों के लिए क्या-क्या कर रहे हैं।' शेखी बघारना सहज के संस्कार में शामिल नहीं रहा है।

"सच में यार!" रामू को लगा खुशी के मारे वह उछल पड़ेगा।

'...बस यूं समझ लो कोरोना ने पापा के अंदर करुणा की गंगा बहा दी है; वह तो कह रहे हैं मुझे सब कुछ बेचकर भी भूखों की मदद करनी पड़ी तो करूंगा!' सहज के स्वर के संकल्प से लगा सच में दुनिया में परोपकारी विरले पैदा होते हैं।

"थैंक यू डियर, समझो रामघाट पहुंच ही गया हूँ; अब तो करोना और कारनामा करते रहने वालों से सीधी लड़ाई होगी।" रामू ने पाया बोलते-बोलते उसकी मुट्ठी हवा में इंकलाब भांति उठी हुई है।

थोड़ी ही देर में पूर्व दिशा में सूरज का लाल गोला दिखा; रामघाट के ऊपर आसमान में, मंद हवा के साथ मुस्कुराता हुआ! रामघाट के नए सवेरे की ओर बढ़ते हुए रामू ने मुड़कर दिल्ली की तरफ देखा, स्मृति को अमिट करने; पीछे छूटते जा रहे चौड़े-चमकते राष्ट्रीय राजमार्ग दूर कहीं विलीन होता दिख रहा था, जैसे प्रवासियों के हौसले के सामने पस्त पड़ गया हो! बिना

ओर-छोर वाले अनगिनत राष्ट्रीय राजमार्ग! जिन्ह पर चलते-चलते दैत्याकार ट्रक-ट्रौले भी नतमस्तक हो जाते हैं, जिन्हें गुमान था अपनी अंतहीन लंबाई पर उन्हें हजारों-लाखों रामुओं ने लांघ डाला था! दिल्ली की दिशा में देखते हुए रामू विहँस पड़ा, अंत:वार्ता करते हुए, '...प्रवासियों ने जितनी पैदल यात्रा की हैं उतनी तो किताबी भगत-भगवान ने भी न की होगी!'

5

टोल प्लाजा में बस रात रहते ही आ गई थी, स्वाभाविक ही किनारे खड़ी थी। प्लाजा के पास पहुंचकर रामू ने चारों दिशाओं में नजर दौड़ाई; उसे उन सबों के लायक कोई बस दिखाई नहीं पड़ी। सहज ने बस ड्राइवर को मोबाइल में रामू का फोटो भेज रखा था। हकीकत में अब रामू वैसा तगड़ा नहीं दिख रहा था जैसा रामघाट में रहते था। रामू पर नजर पड़ते ही ड्राइवर को उसका हुलिया सहज द्वारा भेजे फोटो से मिलता दिखा। वह बारी-बारी से रामू और मोबाइल में रामू का फोटो मिलान कर रहा था। शक निवारण हेतु रामू के पास आकर पूछा, "आप रामचंद्रजी हैं?" रामू ने मुस्कुरा दिया, "जी।" आगे किसी को कुछ बोलने की जरूरत नहीं पड़ी; सभी इत्मीनान से बस में बैठ गए। झेंपते हुए रामू ने कनपटी में ठोकर मारी ...धत तेरे की! इतनी सुंदर साफ-सुथरी बस देखकर तो विश्वास ही नहीं हुआ, दिल्ली से पैदल आए लोगों को इतनी चमचमाती बस में सफर करना नसीब होगा!

गाड़ी के अंदर आते ही सभी की आंखें चौंधिया गईं ...पुशबैक वाली हर सीट के आगे पारदर्शी प्लेट में बंद कई व्यंजन वाली भोजन की थाली! हर सीट के बाजू में मिनरल वाटर की दो-दो बोतल! सबसे आश्चर्यजनक, दस मिनट में ही गाड़ी के अंदर का तापमान दिसंबर-जनवरी के माफिक! सीट पर बैठ चुके प्रवासियों के लिए रामघाट में अपने घर और बस में घर जैसा होने के एहसास में फर्क करना मुश्किल था; गाड़ी में इत्मीनान से बैठते ही सभी ने महसूस किया यह रामघाट ही तो है! टोल प्लाजा से रामघाट तक का सफर बड़ा अद्‌भुत था, किसी को यह पता नहीं चल पा रहा था कि वह सोया है या जगा हुआ! भुवन अकेला चिंतन-लीन था ...आखिर सरकार ने प्रवासी मजदूरों के लिए बस का इंतजाम क्यों नहीं किया?

रामघाट मुफस्सिल थाना के चेक पोस्ट के पास बस धीमी हो गई। अचानक ट्रेन की सीटी सुनकर सभी प्रवासी चौंक पड़े। खिड़की से बाहर

झांकते ही सभी दंग रह गए; एनएच के समानांतर चलने वाली रामघाट मेन लाइन में पीछे से ट्रेन का इंजन आगे निकलता जा रहा था! रामू को लगा रामघाट यार्ड में महीनेभर से खड़ी ट्रेनें जंग खा रही होंगी, हो न हो जंग भगाने का ट्रायल चल रहा हो? इंजन की लाट साहबी रफ्तार से लगा जैसे पैदल चल पड़े प्रवासी को ठेंगा दिखा रहा हो। उसकी आंखें बगल वाली सीट पर बैठे भुवन की तरफ तिरछी हो गईं, पूछताछ करने जैसी। बोलने के बजाय भुवन ने अपने मोबाइल में आई ब्रेकिंग न्यूज को रामू की तरफ बढ़ा दिया, उतरते हुए चेहरे के साथ ...सरकार ने आश्वासन दिया है कि देश के बड़े-बड़े शहरों से श्रमिकों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए श्रमिक स्पेशल ट्रेन चालू करने पर विचार किया जा रहा है, सरकार ने स्पष्ट किया है वह हमेशा श्रमिकों के साथ है...। ब्रेकिंग न्यूज पढ़कर रामू सन्न रह गया, जैसे काटो तो खून नहीं! उसे लगने लगा या तो पैदल प्रवासी हिंदुस्तान के सबसे बड़े मूरख हैं या फिर सरकार सबसे बड़ा ठग! उसने भुवन से ही पूछ लिया, "भुवन भैया, ट्रेन चालू होने की चर्चा वाली सूचना तो पहले ही मिल गई होगी आपके पार्टी वाले ग्रुप में! हमें बताया क्यों नहीं?"

"पार्टी ग्रुप में हर सूचना प्रसारित होती है, पता नहीं ट्रेन चलने वाली बात क्यों नहीं डाली गई?" भुवन ठगा हुआ-सा बोला।

"शायद यह वाली सूचना सेंड करने का समय नहीं मिला होगा आलाकमान ऑफिस को!" रामू ने हिकारत के साथ कहा; भुवन को ऊपर से नीचे तौलते हुए घृणापूर्ण चेहरा लिए आगे बोला, "जिन्हें आदत पड़ी हो भगवान जैसा हठात वरदान-सा देते रहने का वो बेचारे सोचने-विचारने का संयम भला कहां से लाएं!"

"..." कुछ बोलने की बजाय भुवन ने कान पकड़ लिए। रामू समझ ना पाया, भुवन पार्टी पॉलिटिक्स से तौबा कर रहा है या उससे? आगे निकल चुकी ट्रेन की आवाज धीमी होती गई; दिल्ली से रामघाट पैदल आने की प्रवासियों की पीड़ा अब और तीव्र होती गई।

रामू ने खिड़की की तरफ मुंह फेर लिया। उसकी नजर गेहूं से खाली हुए एक खेत पर अटक गई, क्षणभर के लिए; खेत में डंडे से खड़ा किया गया बिजूका अभी भी वहीं पड़ा था, पर खोपड़ी उल्टी हो पड़ी थी। आगमन स्थल पर पहुंच जाने पर रामू की स्मृति में सबकुछ फिर से नाचने लगा, एक बड़े संशय के साथ ...कहीं बिजूका का सरदार वहीं कहीं बड़े खंभे पर से

करतब-करिश्मा तो नहीं करता रहता है? उसे अचानक अपना मूर्तिकार साथी अंकुर याद आया ...इन पुतलों से अंकुर की वो अनोखी मूर्ति लाख भली; उस मूर्ति में प्राण चाहे आए या न आए, भारत को श्रेष्ठ पुरुष देने की उसकी कल्पना तो निर्मल-निष्पाप है! रामघाट के नजदीक आते जाने पर उसके मस्तिष्क में मंथन तेज हो चला ...रामघाट पहुँचकर सबसे पहले बिजूका बनाने वाले को खोपड़ी सीधी रखने की सलाह दी जाए, या बिजूका के सरदार की उल्टी खोपड़ी हमेशा के लिए सीधी करने की योजना पर काम किया जाए; या पहले कोरोना सेवा शुरू की जाए?

अध्याय चार

1

गांव की तरफ जाने वाले प्रवासी अंतिम टोल प्लाजा में उतर लिए, सभी से दुआ-सलाम करते हुए। शेष प्रवासी को लेकर बस जैसे ही रामघाट शहर के आउटर में पहुंची पुलिस और मेडिकल की गाड़ियां बस की तरफ बढ़ती आईं, सायरन बजाती हुईं। सभी को आइसोलेशन सेंटर वाले एंबुलेंस में बिठाया गया। सतरह प्रवासी मजदूर होने की सूचना थी; आइसोलेशन सेंटर में एंबुलेंस से सिर्फ बारह ही उतरे! उन सभी का आनन-फानन में एंटीजन टेस्ट किया गया। सभी की रिपोर्ट नेगेटिव थी। एहतियातन सभी को दो सप्ताह के लिए आइसोलेशन सेंटर में रखा गया; कोरोना प्रोटोकॉल जैसा बोलता था। चार प्रवासी का लोकेशन रामघाट ग्रामीण में दर्ज हो चुका था, ग्राम पंचायत मदनपुर और धर्मगंज के स्कूल वाले प्रवासी-केंद्र में। तेरहवें प्रवासी के गुम होने की सूचना जिला कोरोना नियंत्रण केंद्र में भेज दी गई। दिल्ली से आए एक प्रवासी मजदूर के गायब होने की सूचना पूरे शहर में जंगल की आग की तरह फैल गई; दिल्ली से आए व्यक्ति का गायब होना मतलब कोरोना पॉजिटिव होना! स्थानीय न्यूज चैनल के स्क्रीन पर हेडलाइन ...एक प्रवासी मजदूर के छिप जाने से पूरे शहर के कोरोना की जद में आ जाने का खतरा... बीच-बीच में फुदक पड़ते थे। तेरहवें प्रवासी की खोज के लिए पूरे शहर में पुलिस की गाड़ियां पागलों-जैसी भागती फिर रही थीं; घरों में दुबके लोगों में कोरोना का खौफ दुगुना होता गया। जिला प्रशासन ने कई एंबुलेंस दौड़ा रखी थीं शहर के सभी मार्गों पर। तेरहवें की खोज में एंबुलेंस उन गलियों में भी पहुंच रही थी जहां उसके चरण-चक्का कभी नहीं पड़े थे। एंबुलेंस के हूटर लोगों की धड़कनें बढ़ा रहे थे। दिन में भी चक्राकार जलती रहती नीली बत्तियां कोरोना के कहीं

भी होने के संकेत दे रही थीं!

कलेक्टर रामघाट तेरहवें के खोज अभियान की समीक्षा दो बार कर चुके थे। जिला अस्पताल के सभी डॉक्टरों-नर्सों की सांसें अटकी पड़ी थीं, पिछले चौबीस घंटे में उस तेरहवें ने न जाने कितनों को संक्रमित कर दिया होगा! सीएमओ रामघाट बेचैनी में अब तो हकलाकर बोलने लगे थे। कलेक्टर की समीक्षा बैठक में सीएमओ ने असहाय मुद्रा में खोज अभियान की सीमा बताई, "रामघाट पहुंचे बारह प्रवासियों में से कोई भी तेरहवें के बारे में मेडिकल टीम को पुख्ता जानकारी नहीं दे रहा है," आगे अपने को रुआँसा होने से रोकते हुए बताया, "यदि तेरहवें को जल्दी ही आईसोलेट नहीं किया गया शहर को कोरोना के भयानक चपेट में आने से रोकना मुश्किल होगा।" "यदि डीएम साहब कहें तो उन बारहवें से हम तेरहवें का लोकेशन उगलवा लेंगे!" बैठक में चुप बैठ एसपी निशांत कुमार ने कहा, गर्दन टेढ़ी करके। बिना देर किए डीएम ने सहमति दे दी। बैठक से निकलकर एसपी ने जिले की सबसे सख्त पुलिस टीम को आइसोलेशन सेंटर में भेजा, प्रवासियों से जिरह-जुल्म करने। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए भी हिम्मत तोड़ पूछताछ से पुलिस वालों ने प्रवासियों के पसीने छुड़ा दिए, पर नाम तो अनाम ही बना रहा। बारहवां प्रवासी मुन्नी थी; पुलिस वाले उसके पसीने तो नहीं छुड़ा पाए, उसके साथ बाल सुलभ वार्ता का फायदा उठाते हुए तेरहवें का नाम उगलवा लिया, छलपूर्वक।

पुलिस की दो जिप्सी और एंबुलेंस बस्ती में तेजी से घुस आई, सायरन-स्वर में डरावनी आवृत्ति देती हुईं। झोपड़ों से निकलकर लोग सड़क पर जमा होने लगे; कोई भी कोरोना के प्रथम दर्शन से चूकना नहीं चाहता था। एंबुलेंस रामू के शेड के पास रुककर जोरदार सायरन बजाने लगी, लगा कोरोना की सुरंग मिल गई है। सुभाष मार्ग पर जमे लोगों के मुंह से विस्मय की धार फट पड़ी "...रामू? रामू! रामू आ गया! कब आया?..." देखते ही देखते पुलिस वाले ने शेड को चारों ओर से घेरे में ले लिया; जैसे किसी दुश्मन देश के बंकर को ध्वस्त करने की कार्रवाई को अंजाम दिया जा रहा हो! मेडिकल टीम के आवरणधारी नपे-तुले कदमों से शेड की तरफ बढ़ने लगे, जैसे किसी जंगली शिकार को घेर रहे हों। करीब आ चुके बस्ती के लोग अवाक रह गए ...सच में कोरोना इतना बड़ा कीड़ा है!

"हमारा गाय-भैंस बेमानी के पैसे का नहीं है बेटा, ऐसे मुंह ढँककर क्यों

चोरी करने आए हो!" सायरन की आवाज सुनकर अपने कोठरे से बाहर आती हुई रामू की माँ बोली।

"माँजी अभी गाय-भैंस चुराने का नहीं कोरोना को दबोचने का समय है!" शेड के किनारे पोजीशन लिए हुआ दरोगा ने परिहास किया।

"कुरौना वाला तो दिल्ली में राजपाट चला रहा है, यहां क्या ढूंढ़ रहे हो?" माँ भला कहां मानने वाली थी।

"लेकिन आपका बेटा तो दिल्ली से कोरोना भरकर रामघाट में बोने आ पहुंचा है! उसे घर से बाहर निकालिए।" जिप्सी के पायदान पर एक पैर धरे इंस्पेक्टर ने कड़क आवाज में कहा।

"वह तो अभी घर पर ठीक से पैर धरा भी नहीं है! चाहो तो झोपड़े की तलाशी ले लो।" बोलकर माँ ने पुलिसवालों को अनुत्तरित कर दिया।

रामू के घर में नहीं होने की बात सुनते ही मेडिकल टीम की मुस्तैदी फुर्र हो गई। पुलिसवालों का पोजीशन सुस्त पड़ गया। दो आवरणधारी शेड और झोपड़े में भली-भांति झांक आए; बूढ़ी माँ और मौनी मामा के अलावा कोई तीसरा न दिखा। मेडिकल टीम की गाड़ी में बैठे कोरोना मजिस्ट्रेट के माथे में बल पड़ गए, दिल्ली वाला भगोड़ा यदि घर में नहीं है तो फिर कहां खोजा जाए? इंस्पेक्टर को एक तरकीब सूझी; आइसोलेशन सेंटर में मुन्नी से निश्छल वार्ता के क्रम में तेरहवें प्रवासी की खोज रामू के रूप में हुई, यहां बुजुर्ग माँ से उसका ठिकाना ही मालूम कर लिया जाए!

"माताजी, आपका बेटा तो कल ही रामघाट आ पहुंचा है! आजकल के बच्चों में बुजुर्ग माँ-बाप के लिए भी मोह-माया नहीं रह गया है! पहले आपसे मिलने के बजाय वह अपनी मनमर्जी वाली जगह पर ऐश कर रहा होगा?" इंस्पेक्टर ने माँ के मातृत्व को जैसे तराजू पर रखते हुए कहा।

"मेरा रामू रामघाट आया भी और मुझसे आशीर्वाद लेकर किसी बड़े काम में लगने की बात कहकर निकल भी गया; कहां है मुझे नहीं पता, यदि मुझ बुढ़िया की बात पर विश्वास ना हो फिर तो भगवान राम पर भी विश्वास करना बंद करो आपलोग!" बोलते हुए माँ का चेहरा रामू को याद कर गर्व से दीप्त हो उठा। माँ की बात सुनकर मेडिकल टीम जाने को हुई। इंस्पेक्टर ने उन्हें हाथ से रोकते हुए किसी को कॉल लगाया; कॉल रिसीव होते ही उधर से सख्त आवाज में दिशा-निर्देश की बरसात होने लगी। इधर से ...सर... सर... छोड़कर दूसरा कोई शब्द निकलने की गुंजाइश नहीं लग रही थी। कॉल

समाप्त होते ही इंस्पेक्टर ने दरोगा को कहा, "इस बुढ़िया को एपिडेमिक एक्ट में उठाओ।" रामू की माँ को अरेस्ट करने की बात सुनते ही पूरी बस्ती में लहर दौड़ गई। उसकी झोपड़ी के आगे लोगों की भीड़ बढ़ने लगी; भीड़ से विरोध की हंगामेदार आवाज आने लगी ...माँ अरेस्ट क्यों होगी...? इंस्पेक्टर ने कहा, "इसके बेटे से संक्रमण माँ पर आ गया होगा!" भीड़ में सामने खड़े लोगों ने कहा, "...फिर तो सारे शहर को अरेस्ट कर लीजिए!' भीड़ का उग्र रूप देखकर इंस्पेक्टर के हौसले टूटने लगे। दोनों टीमों के पास वापस जाने के सिवाय दूसरा उपाय न था; जाते-जाते लोगों को जरूर समझाते गए, "सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते रहिए, प्लीज!"

बस्ती की फिजा में उल्लासमय कोलाहल मच गया ...रामू आ गया है! काम में लग गया है? ...कोई बड़ा काम कर रहा है!...

कोरोना आने से पहले तक रामू बस्ती का एक उजड्ड-मुंहफट ग्वाला मात्र था। कोरोना के दस्तक देते ही उसके अंदर कोरोना नियंत्रण के लिए देश के प्रवक्ता जैसी प्रवृत्ति जाग उठी थी। कोरोना की बढ़ती रफ्तार से वह रामघाट के वक्ता के रूप में जाना जाने लगा। उसके अचानक गुम हो जाने से वह बस्ती का नायक बन गया था, कोई बड़ा काम करनेवाला नायक! यह बात दीगर है कि पुलिस-प्रशासन-पार्टी उसे शहर का दुश्मन बना देने में भिड़-सी गई थी। चैनलों से लेकर शहर की गलियों तक लोगों की जुबान में वह अब 'वही रामू दूधवाला' के रूप में उच्चारित होने लगा।

दिल्ली से रामघाट तक पूरे रास्ते रामू के अंदर पार्टी विरोधी प्रवृत्ति दिन-ब-दिन प्रखर होती गई थी। बावजूद इसके भुवन ने आइसोलेशन सेंटर में पुलिसवालों को तेरहवें प्रवासी की पहचान यानी 'बस्ती का रामू' नहीं बताई थी; तब उसके अंदर लंबे दिनों तक साथ रहने की मानवीय संवेदना पार्टी पर भारी पड़ गई थी। पूरे शहर में रामू ग्वाले की चर्चा से पार्टी कार्यालय भला कैसे अछूता रह सकता था! दिल्ली से लौटे प्रवासी मजदूरों में से भुवन की पहचान पार्टी के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में होते ही उसे पार्टी कार्यालय बुलाया गया, आइसोलेशन सेंटर से ही। पार्टी अध्यक्ष हरेन्द्र ठाकुर ने उससे दिल्ली से रामघाट तक की यात्रा की पूरी विवरणी प्राप्त की; खासकर इस बिंदु पर संक्षिप्त चर्चा हुई कि रामू के अंदर देश, सरकार और पार्टी के लिए क्या सोच है? संक्षिप्त चर्चा के बाद एक तस्वीर पार्टी के 'माइंड' में दर्ज की गई, 'बस्ती निवासी रामू ग्वाला नाम का युवक पार्टी के लिए एक बड़ा

खतरा बनकर उभर सकता है।' रामू ग्वाला की तस्वीर पार्टी के माइंड में छप जाने के बाद वह पार्टी पदाधिकारियों की जुबान पर आ गया।

रामू का नाम राम नरेश की जुबान में रफ्तार पकड़ता गया। रामू के साथ नरेश का बस्ती के स्तर का वैचारिक मतभेद ही था अब तक; रामू के मन में पार्टी के लिए दुर्भावना वाली बात प्रकट होते ही नरेश के अंदर मतभेद की उर्वर भूमि में 'कुछ भी' कर डालने की फसल उग आई। रामू को हर हाल में जनता के सामने साबुत खड़ा करना पार्टी में अपना कद बढ़ाने के अवसर के रूप में दिखा उसे। बिना देर किए उसने युवा प्रकोष्ठ स्तर पर हर सूत्र को सक्रिय कर दिया। उसकी सलाहकार मंडली का सुझाव आया, 'गर्लफ्रेंड के इर्द-गिर्द नहीं तो उसके संपर्क में जरूर होगा वह!' इस बात पर भी गौर किया गया कि रामू ग्वाला नवगठित कोरोना-मंडली के साथ संवाद में अवश्य रहता होगा। मंजरी की खोज करने की जरूरत नहीं पड़ी नरेश को; उसके भैया का झोपड़ा रेलवे के दक्षिण केबिन से थोड़ा ही आगे था। नरेश द्वारा प्रतिनियुक्त गुप्त दूत को उदय ने बेहिचक बता दिया, कोरोना-मंडली के सहयोग प्रस्ताव का सम्मान करते हुए सीएमओ साहब ने मंडली से तीन स्वयंसेवक माँग लिए थे और बिना किसी किंतु-परंतु के ही मंडली से मनोज और इरफान के साथ ही मंजरी ने अपना नाम भी भिजवा दिया था। उदय राजनीति में भी परिपक्व हो चला था; दूत द्वारा मंजरी के कार्यस्थल के बारे में पूछे जाने पर उसने प्रतिप्रश्न कर डाला, "तुम तो पार्टी के वर्कर लग रहे हो!" जब दूत ने दम साधकर पूछा, "वह कैसे?" तो उदय ने बेलाग बोल दिया, "महिलाओं के कार्यस्थल के डेटा-भंडारण में तुम्हारी पार्टी तो अब्बल रही है!"

मंजरी के कार्य स्थल के बारे में सटीक जानकारी ना होने के बावजूद नरेश के लिए इतना जान लेना ही काफी था, कि सीएमओ ने उसे स्वयंसेवक के तौर पर स्वीकार कर लिया है। आगे तो बस उसे सीएमओ का नंबर डायल करना भर था! सच में सीएमओ ने बिना देर किए बता दिया, "कोरोना ड्यूटी के लिए मेडिकल स्टाफ कम पड़ रहे थे, जाहिर-सी बात है कोरोना-मंडली के सदस्य ही तो कोरोना ड्यूटी के लिए उपलब्ध हैं!" इतना सुनते ही नरेश के अंदर अंत:प्रतिक्रिया हुई, 'हमारी बस्ती की एक साधारण लड़की बिना डरे इतना जोखिमभरा काम कर रही है, वह भी निस्वार्थ भाव से! बिना किसी पूछ-प्रचार के?' उसके अंदर का स्व-धिक्कार मस्तिष्क तक तरंगित हो उठा; सीएमओ को धन्यवाद बोले बिना ही उसके हाथ ने कॉल काट दिया।

उस दिन भीमरवा सुबह से रात तक बस्ती में शोर मचा रहा था ...कायर ...कपटी ...कापुरुष ...कलुषित ...कुत्सित...

2

25 अप्रैल आते-आते पूरे देश में कोरोना कहर ने रफ्तार पकड़ ली थी; रामघाट में भी इसका डंक तीखा होता गया था। कई दिनों तक पर्दे से प्रधानमंत्रीजी के गायब हो जाने से लोगों को मौत का भय कुछ ज्यादा ही सताने लगा था; सत्ता-च्युत नेताओं के रात-दिन के खटराग से जनता का दर्द घट रहा था या बढ़ रहा था, ये ऊपर वाले भी नहीं बता सकते थे। पूरे देश में कोरोना संक्रमितों के आंकड़े चालीस हजार के सापेक्ष अपने शहर में चार सौ के आंकड़े से रामघाट वासी हलकान हो रहे थे। हर वर्ष की भाँति इस बार की दिन ब दिन बढ़ती गर्मी लोगों की जुबान से गायब थी। सिर्फ दूध-दवाई-सब्जी के लिए लोग बाहर निकल रहे थे; घंटे-आध घंटे के लिए, जान हथेली पर रखकर। घर के अंदर आती चीजों की कौन कहे, खिड़की से आती गर्म हवा भी लोगों को कोरोना का डंक मारती लगती थी। हाथ धोते रहने से घर-घर में पानी की टंकी दिन में दो बार रूठ जाती थी। पत्नी को छूने पर भी लोग चुपके से सैनिटाइजर लगाने लगे थे। ज्यादा सावधान लोग ज्यादा सैनिटाइजर लगा लेने से अपने रुखड़े हथेलियों को लेकर परेशान नजर आ रहे थे। मास्क लगाए लोगों को पहचानने के लिए आँखों को गुप्त घूर्णन देना पड़ रहा था।

ऐसे बेगाने समय में कोरोना ड्यूटी में लगे स्टाफ, वह भी लड़की का पता लगाने के लिए भला कौन हामी भरता! पर नरेश को पता था पॉलिटिक्स में ऊंचे पायदान पर पहुंचना है तो पार्टी की नजर में कर्मठ कार्यकर्ता बनना ही पड़ता है। उसे जानकारी थी कोरोना-मंडली का अगुआ लाट साहब सहज हर दूसरे-तीसरे दिन अपने साथियों के साथ वीसी चैट करता है; बल्कि उसे लगता था वीसी के बहाने वह लॉकडाउन में घर में पड़ी गर्लफ्रेंड को पब्लिकली इंटरटेन करता है! नरेश के शातिर दिमाग में बिजली-सी कौंध गई, रामू तो वीसी में जरूर दिखेगा! इस वक्त लोग कोरोना से बचने के लिए किसी भी विश्वसनीय स्कीम-उपाय-इलाज के लिए कुछ भी दांव में लगा सकते थे। आफत की इस घड़ी में नरेश ने राम अवतार के साथी कोरोना-मंडली वाले रूपेश को बड़ी आसानी से पटा लिया; विश्वास में लेकर

कि यदि वह आगामी वीसी में रामू को गौर से देखकर उसका ठिकाना पता कर लेगा, तो उसके परिवार में किसी को कोरोना होने पर जिला अस्पताल के दो वेंटीलेटर में से एक उसे उपलब्ध करा देगा, पार्टी कोटे से। दो दिन बाद ही राम अवतार दौड़ा-दौड़ा नरेश के पास आया। कोरोना से सुरक्षा सुनिश्चित करने की खातिर नरेश से वचन लेना चाहा, "कल रात वाली भीसी में रूपेश ने रामू पर गौर किया था, पता चल गया है कहां से भीसी अटेंड कर रहा है वह! लेकिन पहले तुम यह वचन दो रूपेश के मम्मी-पापा को कोरोना होने पर जिला अस्पताल में एक वेंटीलेटर समय पर मिल जाएगा।" नरेश ने बिना देर किए कंठ का उभार कसकर पकड़ लिया; विश्वसनीय कसम खाने की भाव-भंगिमा में कहा, "भगवान ना करे उसके मम्मी-पापा तक कोरोना पहुंचे, फिर भी यदि रामजी रूठ गए और ऐसा-वैसा सीन आता है तो उन्हें बचाने की खातिर वेंटिलेटर के लिए जान लड़ा दूंगा; मम्मी की कसम, इसके लिए प्रधानमंत्री तक गुहार क्यों न लगानी पड़े!" इतना सुनकर राम अवतार गद्‌गद हो उठा; बिना देर किए उसने उगल दिया, "कल वाली भीसी में रामू के किसी घर में या कहीं और होने के बारे में पता तो नहीं चल पा रहा था, पर उसके शरीर में कोरोना-कवच लपेटा रहता है!" रामनरेश को समझते देर नहीं लगी, कि रामू भी निश्चित रूप से कहीं कोरोना ड्यूटी ही कर रहा होगा; उसने तुरंत गुणा-भाग भी कर लिया, मंजरी के आसपास ही!

अपनी बस्ती की रहने वाली नलनी जाटव जिला अस्पताल में काम पर लगी थी, सेनेटरी सर्विस वाले कांट्रैक्टर के अधीन। नलनी जाटव को चाची बनाते-पुकारते उसे देर नहीं लगी; निर्मल नलनी को हामी भरते देर नहीं लगी, "जिला अस्पताल तो किया कोरना वार्ड तक में लगे हर महिला के बारे में चुटकी बजाते पता कर लूंगी! लेकिन मर्दों के बारे में मुझसे कुछ ना पूछना, मरदूद जनानी के पीछे पड़ जाते हैं!" नलनी चाची के मुंह से इतना सुनते ही वह उसके चरण छूने झुक गया, यह विस्मृत करते हुए कि इससे पहले किसी जाटव महिला के पैर उसकी बिरादरी के किसी ने ना छुए होंगे! समाज में समभाव लाने के लिए उसने राजनीति को धन्यवाद दिया; मन-ही-मन।

"अरे आंटी! इस डेस्क के उस तरफ मत जाना! सिर्फ मेडिकल स्टाफ को ही इस पॉइंट से आगे जाने की इजाजत है, वो भी पीपीई किट और फेस शील्ड वाले को ही!" काउंटर पर बैठी सिस्टर ने नलनी की ओर हाथ से रुकने का संकेत करते हुए कहा। उसकी मीठी बोली पर मुग्ध हो गई

वह; सिर से पैर तक बॉडी कवर के अंदर होने के बावजूद कंठ से कोयल जैसी आवाज!

"ठीक है बेटी यहां से आगे नहीं जाऊंगी; आगे भी पूरा बरामदा गंदा दिख गया तो सोची साफ कर देती हूं।" नलनी की आवाज में मातृत्व घुली थी।

"कोई बात नहीं यहां वाली आंटी आती ही होगी; जब से मैं कोरोना वार्ड का रिसेप्शन अटेंड कर रही हूं आपको तो सिर्फ वार्ड के बाहर ही झाड़ू करते देखती हूं, आज इधर कैसे!" काउंटर वाली सिस्टर की मधुर आवाज निकली, उसके ऊपर वाले चार दांत दिख गए; नलनी ने महसूस किया हँसी सिस्टर के दिल से निकली है।

"हा री नटखट बिटिया! पहले दिन से ही तुम्हें देख रही हूं, कितनी तो निडर होकर कोरोना पेशेंट की हेल्प करती फिरती हो, आज तुम्हारे पास आने को जी किया तो बुहारते हुए यहां तक आ गई!" सिस्टर पर वह सम्मोहित हुई जा रही थी।

"हां आंटी, निडर होकर सेवा-भाव एक बार मन में आ जाए फिर तो मौत से भी डर भाग खड़ा होता है!" बोलते हुए उसके दांत फिर दिख गए, आगे बोली, "आप एक बार मेरी सीट पर बैठिये तो सही, आपका भी डर जाता रहेगा!"

"मैं तो झाड़ू वाली हूं, सिस्टर वाली कुर्सी पर भला कैसे बैठ सकती हूं? तिस पर खाली सलवार-सूट में!" नलनी ने दांत तले जीभ दबा ली।

"सिस्टर भी तो आप ही के पेट से निकलती हैं; बाबा साहेब तो बोलकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए कि जब तक देश में गंदगी साफ करनेवालों को सम्मान नहीं मिलेगा देश गर्त में ही बैठा रहेगा!" बोलते हुए उसका सिर लयबद्ध होकर डोलने लगा; आगे बोली, "यहां दराज में एक्स्ट्रा बॉडी कवर और फेश शील्ड रखे हैं, आप पीछे चेंज रूम में पहन लो, फिर आकर डेस्क संभालो तो सही! तब तक मैं कोरोना पेशेंट को नाश्ता और दवाई की मॉर्निंग डोज सर्व कर देती हूं।" बोलते-बोलते ही उसने दराज से बॉडी कवर और शील्ड निकालकर नलनी को दे दिए। सिस्टर वाला सामान हाथ में आते ही नलनी ने सम्मान महसूस किया। उसकी आंखें छलछला आईं; आंसू को अंदर ही रोकने का प्रयास करते हुए बोली, "इतनी अच्छी बिटिया का घर कहां है?"

"अरे आंटी, मैं भी उधर की हूं!" सिस्टर ने हाथ जोड़ लिए।

"तुमने मुझे पहचान ली!" वह विस्मित होकर बोली।

"हां आँटी, मैंने तो बस्ती में आपको कई बार देखा है!" बोलते हुए सिस्टर सर्विस टेबुल की तरफ जाने लगी। नलनी ने पूछना चाहा बस्ती में किधर घर है, किसकी बेटी हो? पर पूछ न पाई; जरूरी सेवा के लिए जा रही सिस्टर को पीछे से नाम-काम पूछना उसे अशिष्टता लगी।

सर्विस टेबुल से सिस्टर ने बेड नंबर लिखे दवाई वाले लिफाफे ट्रे में रख लिए; बरामदे के किनारे जाकर इंतजार करने सी खड़ी हो गई। सिर से पैर तक आवरण से ढका व्यक्ति नाश्ते का थैला थामे बरामदे के किनारे आ खड़ा हुआ। आवरण के अंदर भी लंबी-छरहरी सुडौल दिख रही सिस्टर के कदमों में बिजली सी तेजी आ गई। उसने उस आदमी के हाथ से थैले थाम लिए; कुछ सेकेंड मूर्तिवत खड़ी रही, फिर धीमे कदमों से वार्ड की तरफ बढ़ चली। महिला वार्ड नंबर एक में कोरोना संक्रमित कुल पंद्रह मरीज थीं। दरवाजे के अंदर रखे बड़े टेबल पर उसने दवाई के लिफाफे बेड नंबर के हिसाब से सजा दिए; दूसरे बड़े टेबल में नाश्ते के पैकेट रख दिए। मनभावन सिस्टर को देखते ही बेड में बैठी-लेटी महिलाओं के शरीर में बिजली-सी दौड़ गई, लगा कोरोना की कैद से आजाद हो गई हों। पांचों बुजुर्ग मरीज दूर से ही सिस्टर बिटिया को आशीष देने लगीं, अपने हाथ आसमान की ओर अधिकतम उठाकर। वार्ड के बीच आ चुकी सभी छह अधेड़वय मरीजों के मुख-मंडल खुशी से दीप्त हो उठे। चारों युवा मरीज टेबुल के करीब आकर सिस्टर पर गड़ गईं, अपनी चहेती नायिका को आज फिर से वार्ड में पाकर। मिनटभर आनंदपूर्ण स्थितिप्रज्ञता बनी रही। सिस्टर ने सभी को टेबल की ओर बढ़ने का संकेत किया; कोई भी अपने स्थान से टस से मस नहीं हुई। सिस्टर ने दोबारा संकेत किया; सबसे दूर बेड में बैठी बुजुर्ग महिला ममतामयी हो उठी, "करोणा से डरो बेटी, तुम बाहर जाओगी तभी हम नाश्ता और दवाई लेने आएंगे; हम अपनी प्यारी बिटिया को करोणा से कोसों दूर रखना चाहते हैं।"

"माँ-बहना सामने हों फिर तो कोरोना हो या काला नाग मुझे डरा नहीं सकते!" सिस्टर बोली; बॉडी कवर के अंदर से उसके चारों दांत चमक उठे, लगा जैसे बॉडी कवर के अंदर हँसी की फसल लहलहा उठी हो! तब बीच वार्ड में खड़ी सबसे हँसमुख मरीज प्यार से बोली, "मेरी प्यारी ननदिया! हम सभी के प्रति आपके लगाव का सम्मान करते हैं, लेकिन अब तो जाइए, हमें भूख लगी है।" पूरा वार्ड ठहाके से जैसे कंपित हो उठा; उसे दबी हँसी के

साथ दरवाजे के बाहर आना पड़ा। उसके निकलते ही मरीज टेबुल से अपने बेड नंबर वाले दवाई के लिफाफे और नाश्ते की एक-एक पैकेट उठाने लगे।

डॉक्टर भार्गव के राउंड का समय हो चला था। महिला वार्ड नंबर एक के दरवाजे पर आकर वे खड़े हुए, सिर को अंदर की ओर अधिकतम ले जाते हुए। दोनों दिशाओं में सरसरी निगाह डाली; मरीज नाश्ता कर रहे थे, जिसने नाश्ता कर लिया था वे प्रसन्न मुद्रा में दवाई हथेली में रखे थे। डॉ भार्गव काफी प्रसन्न हुए; अंगूठा ऊपर उठाकर सभी पेशेंट को 'वेरी गुड' का संकेत किया। कोरोना डेस्क के पास आकर सिस्टर से पूछा, "यू हैव सर्व्ड द ब्रेकफास्ट एंड मेडिसिन!"

"यस सर," सिस्टर ने अनुशासित ढंग से कहा।

"बट व्हेयर इज द नर्सेज हू आर सप्पोज टू सर्व द ब्रेकफास्ट एंड प्रोवाइड द मेडिसिन?" डॉक्टर भार्गव की त्योरी चढ़ती दिखी।

"सर, दे आर नॉट अटेंडिंग वार्ड सीन्स टू डेज; सिस्टर निशा में कोविड के सिम्टम्स दिख रहे हैं और सिस्टर महक का हस्बैंड के साथ कोई प्रॉब्लम क्रिएट हो गया है, दोनों एक सप्ताह तक नहीं आ सकतीं; मेरे पास सीएमओ ऑफिस से खबर भिजवाई गई है।" सिस्टर ने संक्षिप्त में स्थिति बता दी।

"एंड व्हाट अबाउट इवनिंग ड्यूटी एंड नाइट ड्यूटी? आई थिंक दोज सिस्टर्स मस्ट बी कमिंग?" डॉ भार्गव चिंतित हो उठे।

"सर इवनिंग और नाइट शिफ्ट में डेस्क पर अस्पताल की स्टॉफ बैठती हैं; आई थिंक दोनों शिफ्ट में सिस्टर्स आती होंगी।" सिस्टर के स्वर में सकारात्मकता तैर रही थी।

"बट हाउ यू आर सर्विंग मेडिसिन? डू यू हैव नॉलेज, किस पेशेंट को एचक्यूसी देनी है और किसे आइवरमेक्टिन देनी है?" डॉ भार्गव ने सिस्टर पर शंकापूर्ण निगाहें डाल दीं।

"सर आई हैव डन प्लस टू इन बायो स्ट्रीम; इट्स सो सिंपल, फार्मा डेस्क वाले से मैंने रिक्वेस्ट किया है महिला वार्ड नंबर एक में भर्ती सभी पेशेंट की दवाइयां अलग-अलग लिफाफे में करके उस पर नंबर डाल दें।" जवाब देकर सिस्टर गंभीर बनी खड़ी रही।

"इट मीन्स यू आर डूइंग मोर देन अ सिस्टर! यू आर ऑन कॉन्ट्रैक्ट?" डॉ भार्गव की उत्सुकता बढ़ती गई।

"नो सर; आई एम सर्विंग वोलन्टरिली फ्रॉम कोरोना-मंडली ऑफ

रामघाट।" उसने गर्व से कहा।

"या आई डू हैव हर्ड अबाउट वेल डूइंग बाय कोरोना-मंडली; तभी तो सोच रहा हूं वार्ड नंबर एक में पेशेंट का हंगामा क्यों नहीं है! पहले तो खाना को लेकर मारामारी होती थी तो दवाई खाने के नाम पर दंगे पर उतर आते थे!" बोलते हुए डॉ भार्गव सिस्टर को देखे जा रहे थे, विस्मित होकर।

"सात-आठ महिलाओं के पास एंड्रॉयड मोबाइल है, वे दिनभर सोशल मीडिया से जुड़ी रहती हैं, एचसीक्यू और इवरमेक्टिन के बारे में तरह-तरह की खबरें पढ़कर-देखकर दवाई नहीं खाने के लिए सिस्टर से झगड़ते रहती थीं।" सिस्टर ने सिर में हल्के झटके देते हुए कहा, फिर सिर को आत्मविश्वासपूर्ण ढंग से हिलाती हुई बोली, "फूड और मेडिसिन दोनों मामले में मैंने सभी पेशेंट के माइंड को डाउट फ्री कर दिया है।" सिस्टर ने मरीज प्रबंधन का संक्षिप्त खाका पेश किया।

"आइवरमेक्टिन लेने से कुछ पेशेंट को कोई एलेर्जी?" डॉ भार्गव चिंतित दिखे।

"इस वार्ड में अब वोमीटिंग के सिम्टम्स गायब हो गए हैं!" सिस्टर की रहस्यमयी आवाज थी।

"वह कैसे?" डॉ भार्गव आश्चर्यचकित थे।

"सर एक बार आप पेशेंट के मन में विश्वास पैदा कर देते हैं फिर तो बनावटी सिम्टम्स अपने आप गायब हो जाते हैं!" सिस्टर ने कहा तो लगा बॉडी कवर के अंदर से उसने धीरे से चुटकी भी बजाई होगी।

"एंड हू इज दिस लेडी इन द डेस्क? सि इज आल्सो फ्रॉम योर मंडली!"

"नो सर, शि इज स्वीपिंग स्टाफ ऑन कॉन्ट्रैक्ट।"

"बट शी इज सिटिंग इन द डेस्क?"

"सर इसने अपने काम पूरे कर लिए हैं, जब भी मैं पेशेंट की तरफ होती हूं वह डेस्क संभाल लेती है; यहां पर तो दिनभर कॉल भी अटेंड करने होते हैं न।" सिस्टर के हँसमुख होकर बोलने से लगा सच में वह कार्य के दबाव का आनंद ले रही है।

"बट शी इज नॉट अफ्रेड ऑफ कोरोना?" डॉ भार्गव की आंखें बड़ी होकर डेस्क के अंदर खड़ी नलनी पड़ गड़ गईं।

"नो सर, शि इज आल्सो फ्रॉम बस्ती एंड सो भेरी बोल्ड।" बोलने के साथ फेसकवर के अंदर से हँसी की धारा फूट पड़ी।

"व्हेरी स्मार्ट गर्ल! शे माय रेगाड्र्स टू योर मंडली एंड टेक केयर; कोविड नाइनटीन इज वेरी डेंजरस वायरस!" अंगूठा ऊपर उठाकर डॉ भार्गव जाने लगे, वेल डन का संकेत बनाते हुए। सिस्टर ने तपाक से कहा, "श्योर सर, थैंक यू सर।"

डॉक्टर भार्गव के जाते ही नलनी झट से डेस्क से बाहर आ गई, आंखें बड़ी होकर सिस्टर पर गड़ गईं; उसे ऊपर से नीचे तक निहारकर बोली "तुमलोग अंग्रेजी में बतिया रहे थे, अपनी समझ में सिर्फ बस्ती सुनाई पड़ी; तू बस्ती की बिटिया हाउ का री!" नलनी की आंखें सिस्टर से हट नहीं रही थीं।

"हां आँटी! मैं उदय भैया की बहन हूं, मंजरी!" बोलकर सिस्टर ने बॉडी कवर उतार दी, थोड़ी देर के लिए। मंजरी को देखते ही खुशी के मारे नलनी चाची के रोंगटे खड़े हो गए; उसके मुंह से पुकार सी निकल पड़ी "मंजरीईईइइइ..." उसने मंजरी को अपनी बाँहों में भर लिया। वार्ड के अंदर पेशेंट को लगा यह वाली सिस्टर तो देवी रूप है!

मंजरी के घर आते-आते अंधेरा घिरने लगा था। बस्ती के अम्बेडकर चौक पर भीमरवा की तान आज कुछ ज्यादा ऊँची हो चली थी ...सुपुत्र ...सुकर्म ...सुमार्ग ...सुराज

3

अप्रैल अंतिम सांसें गिन रहा था, मई आने को बेताब लग रहा था। लॉकडाउन टू अंतिम पड़ाव की ओर बढ़ा जा रहा था, आधे सम्मान के साथ। रामघाट वासी के मन की आंखें 3 मई पर टिकी थीं; शायद लॉकडाउन खत्म होते ही कोरोना भी खत्म हो जाए! पार्टी जिला अध्यक्ष हरेन्द्र ठाकुर को चक्कर-सा आने लगा था; सही और गलत के बीच की रेखाएं उसे धुंधली दिखने लगी थीं। चक्कर आने की मुख्य वजह रामघाट में जारी कोरोना कहर नहीं, दिल्ली में पार्टी मुख्यालय में उठ रहे नित नए लहर थी। लॉकडाउन की उम्र एक महीने से भी लंबी हो चली थी। उन तक डरावनी खबरें पहुंच रही थीं, रामघाट में गरीबों और साधारण जनों की जमा-पूंजी तवे में पानी के छींटे वाली भाप जैसी उड़ चुकी है। शायद रामघाट जैसी स्थिति पूरे देश की हो चली थी; तभी तो पार्टी मुख्यालय से आने वाले निर्देश के शब्दों में वजन बढ़ता जा रहा था। अब तो बात उनकी समझ से बाहर जाने लगी; जब जनता को पेट की आन पड़ी है, तो ऐसे में जनमानस को पार्टी से जोड़े

रखने का कोई भी नव प्रयोग भला कैसे आजमाया जा सकता है? रामघाट में उसके लिए कुल मिलाकर राहत की बात यही थी जनता 3 मई के बाद लॉकडाउन खुल जाने की आस लगाए बैठी थी। हालांकि पार्टी मुख्यालय ने देश में सभी जिला अध्यक्ष को हकीकत से अवगत करा रखा था, ताकि ऐन वक्त पर जिला अध्यक्ष ही न बिफर पड़े। चालू पखवाड़े में देश के सभी विभागों में वीडियो कांफ्रेंसिंग की बाढ़ सी आई हुई थी। पार्टी पदाधिकारियों, कर्मठ कार्यकर्ताओं को वीसी के जरिये ही पार्टी मुख्यालय के नए रुख से रूबरू कराना जरूरी समझा उसने। वीसी करके डिजिटल इंडिया अभियान की सफलता का प्रमाण भी प्रकट हो जाता; डिजिटल इंडिया के प्रमाण की स्वत: प्रस्तुति का ख्याल आते ही उसके अंदर भी वीसी कर डालने का जोश जोर मारने लगा। '...कल सुबह ग्यारह बजे? हां, बिल्कुल ठीक!...' उसके अंदर से स्वर-अंकुरण सा हुआ। बिना देर किए उसने वीसी का लिंक पार्टी के जिला ग्रुप 'भारत उदय' में शेयर कर दिया।

कोरोना काल में हर जिले में बड़े-बड़े साइज वाले दस-दस एलईडी टीवी बँटने शुरू हो गए थे, पार्टी मुख्यालय के निर्देश पर। अध्यक्ष महोदय के कार्यालय में लगाए गए 56 इंच के टीवी के तो क्या कहने! ग्यारह बजे जिला कार्यकारिणी के सभी सदस्यों के अलावा कई कर्मठ कार्यकर्ताओं के चेहरे स्क्रीन पर आराम से उग आए; ढेर सारे हँसते हुए चेहरे, जैसे कई कलाकार स्क्रीन पर एक साथ आ बैठे हों! मुस्कान बिखेरते इतने चेहरे को अध्यक्ष ने स्क्रीन पर एक साथ पहली बार देखा था। माहौल खुशनुमा हो उठा, इतना कि वह शुरुआती संबोधन ही भूल बैठे! पार्टी के एक तपे कार्यकर्ता वक्ता को सभा की शुरुआत करने के लिए सोचना नहीं पड़ता है; उसने बोलना शुरू कर ही दिया, '...आज आप सभी का मुस्कुराता हुआ चेहरा देखकर विश्वास हो चला है भारतवर्ष में डिजिटल इंडिया अपनी सफलता का परचम लहरा रहा है! आज जिस प्रकार आप यहां दिख रहे हैं ऐसा ही प्रसन्न चेहरा लिए पार्टी की बात जनता के बीच पहुंचाएं।'

'...चारों ओर तो कोरोना का हाहाकार मचा हुआ है सर; ऐसे में जनता के बीच पार्टी की बात प्रसन्न चेहरा लेकर जाने का कोई मुद्दा तो होना चाहिए?' बोलकर पार्टी युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष रवि मोहन ने वीसी को गंभीर बना दिया। सभी चेहरे अब आसानी से पहचान में आने लगे; हँसमुख, चौड़े चेहरे सिकुड़ जाने से।

'...पार्टी मुख्यालय से तो सिर्फ संकेत मिलते हैं, जनता को बताने के

लिए; उन्हीं संकेतों से कई अच्छे मुद्दे निकल आते हैं; अब सब कुछ निर्भर करता है हमारी वाक् कला पर! शब्दों के जोड़-घटाव पर! वाक्य दर वाक्य को जोड़ते जाने की कलाकारी पर!' अध्यक्ष ने कहा तो उसके चेहरे में मुस्कान की कोपलें कायम थीं।

'...कोरोना की कोई कारगर दवाई आ गई होगी!' स्क्रीन पर बीच वाले चेहरे ने उत्सुकता जताई।

'...कोरोना वैक्सीन की खोज में भारतवर्ष ने बाजी मार ली होगी!' किनारे वाले चेहरे में जिज्ञासा जगी।

'...पार्टी अपने वर्कर्स को वर्षों से स्पष्ट संदेश देती आई है, बार-बार आपलोगों को क्यों याद दिलाना पड़ रहा है? उस दिशा में अपना दिमाग मत खपाओ जिसका समाधान अपने हाथ में ना हो, जनता को उन मामलों में विश्वास दिलाओ जिसका कोई आंकड़ा न हो!' अध्यक्ष ने कहा; उसके होंठों पर रहस्यमयी मुस्कान तैर गई।

'...पूरे देश में कोरोना तेजी से फैलता जा रहा है, इसका आंकड़ा तो दिन-रात जिंदा जीव-जैसा दिखता रहता है!' पार्टी युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष रवि मोहन ने चेताया।

'...अपनी सरकार की सतर्कता से कितने लोगों की जान बच गई है? यह आंकड़ा है किसी के पास?' मंथन-मंच के शीर्ष पुरुष काशीनाथ जी के चेहरे पर उत्सुकतापूर्ण गंभीरता आ बैठी।

'...' स्क्रीन पर दिख रहे किसी भी चेहरे में कोई हलचल नहीं!

'...अरे भई, करोड़ों! सही समय पर सटीक फैसले से एक सौ तीस करोड़ लोगों को कोरोना के कहर से बचा लिया है सरकार ने! बस, जन-जन तक यही बात तो पहुंचानी है, कि अगर पहले वाली सरकार होती तो आप स्वर्ग में होते!' काशीनाथ जी का ऐसा डरावना अंदाज पहले किसी ने न देखा था, न सुना था।

'...हम सभी को जन-जन तक यह बात पहुँचानी चाहिए कि अभी देश को जैसा नेतृत्व मिला है वो हर युग में बार-बार नहीं आता! एक सत्य वचन बताऊँ, इतिहास में कोई भी बिना महिमामंडन के महापुरुष बना है क्या! आखिर प्रचार ही तो आधुनिक लोकतंत्र की रीढ़ है; प्रचार-दौड़ में जो आगे निकल गया वही तो प्रजा के दिमाग पर राज करेगा!' मंथन-मंच के द्वितीय वरिष्ठ पुरुष रामनाथ आलोक बोलने लगे तो उनका विहँसता चेहरा स्क्रीन में

बड़ा होता गया; आगे निस्पृह भाव से कहा, 'हमारे-आपके हाथ-पैर मारने से कोरोना भागने से रहा! वह तो अपना पूरा भाग्य भोगकर ही विदा लेगा! हर व्यक्ति अपने-अपने कर्म का अधिकारी है, हमारा काम है पार्टी को नित नई ऊंचाई की ओर ले जाना; सब कुछ समझ का फेर है, बस हम-आप यह समझ लीजिए कोरोना होगी बीमारी सारे जहान के लिए, हमारे लिए तो जमा-पूंजी साबित हो सकती है!' उसके लंबे वक्तव्य के दौरान पूरे स्क्रीन पर उसका ही चेहरा फैला रहा, जैसे पूरे भारतवर्ष में उसकी कही बात फैल गई हो।

'...लेकिन लोगों का रोजगार-पानी बंद होने से परिवार का पेट भरना एक बड़ी मुसीबत बन पड़ी है।' बोलने वाले का चेहरा स्क्रीन में नहीं दिख रहा था।

'...जान है तो जहान है! यही तो समझाना है उन्हें; यही तो हमारी जिम्मेदारी और वफादारी है पार्टी के प्रति!' अध्यक्ष ने पुचकारने वाले अंदाज में कहा।

'...करोड़ों अदृश्य आंकड़े की तरफ लोगों का ध्यान टिकाना मुश्किल होगा।' एक और छिपे चेहरे से आवाज आई।

'...तो उसकी काट है लाखों का असली आंकड़ा!' अध्यक्ष की आंखों में चमक आ गई, अचानक।

'...वह क्या?'

'...करोड़ों दीन-दुखियों के लिए लाखों के पैकेज की घोषणा की तैयारी चल रही है; बस सही वक्त का इंतजार है, जब लोहा गर्म हो तभी चोट करनी चाहिए!' बोलते-बोलते अध्यक्ष का चेहरा फिर से पूरे स्क्रीन पर छा गया; उसने अपनी आंखों को ऊपर की तरफ खींचा और गालों को धीरे से फुलाया, जैसे अपने चेहरे में ही भारतवर्ष का नक्शा उभारकर देश भक्ति का भाव प्रदर्शित करना चाहता हो।

'...एक बात जनता के बीच जरूर स्पष्ट करते चलें अभी से ही; सरकार ने लॉकडाउन की सख्ती कम कर दी है, सो अब जीना-मरना जनता खुद तय करे!' मंथन-मंच के शीर्ष-पुरुष योग-मुद्रा बनाकर बोले; आगे निर्विकार भाव से कहा, 'भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र है, जैसे सभी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्राप्त है, वैसे ही जीने-मरने की आजादी भी सभी को हासिल है; सरकार बीच में कहीं नहीं है!'

'...सर, कोरोना कहर में भी बस्ती एरिया में उबाल सा आया हुआ है,

लोगों का पार्टी के ऐतिहासिक कार्यों की तरफ ध्यान खींचना मुश्किल होगा।' स्क्रीन के कोने में दिख रहा राम नरेश का चेहरा थोड़ा बड़ा हो आया।

'...सो कौन-सा भूत आ बैठा है वहां।' अध्यक्ष ने अनमने ढंग से कहा।

'वही रामू ग्वाला! कोरोना का भूत अभी तक उतरा नहीं है उनके दिमाग से; दिल्ली से कोरोना लेकर लौटा है, पर कहीं छुपकर बैठा है।' बोलते-बोलते राम नरेश की आवाज में गुस्से की धार चढ़ने लगी, युवा स्वभाव अनुरूप।

'...तो उसे छिपे रहने दो।'

'लेकिन सर, छिप-छिपकर वह पार्टी के खिलाफ बन रही हवा को फूंक मार सकता है!'

'...लेकिन वह तो विरोधी पार्टी में है नहीं?'

'...सर, रामघाट के उत्तरी नहर के पार धर्मपुरा गांव का मेरा दोस्त है भुवन; दिल्ली से उसके साथ ही आया है, कह रहा है कोरोना को लेकर उसके अंदर सरकार के खिलाफ ऐसे-ऐसे तर्क हैं कि समझिए अपनी पार्टी को कटघरे में खड़ा कर देगा! भुवन? बताओ तो सही।' स्क्रीन पर दिख रहे रामनरेश के चेहरे की आंखें किसी को ढूंढ़ने जैसी हो चलीं।

'...यस सर! मैं दिल्ली में पार्टी की शाहदरा इकाई से जुड़ा था; वहां से पूरे रास्ते उनके साथ ही रामघाट आया हूं, पैदल-पैदल ही! रामू ग्वाला की बातों से तो मुझे लग रहा है उसके अंदर तो कलयुग के कृष्ण जैसी शक्ति संचित हो रही है!' भुवन भय को दबाकर बोलता हुआ दिखा; पूरे स्क्रीन में फैले उसके चेहरे और चिपके होंठों में कंपन-सा दिखने लगा।

'...तुम भी क्या बात करते हो जी भुवन, बस्ती के एक व्यक्ति की समझ ही कितनी होगी! कलयुग का कृष्ण तो दूर की कौड़ी है! उससे तो तुम दोनों ही बखूबी निपट सकते हो।' बोलकर अध्यक्ष ने बायें पंजे को बेढंग अंदाज में मोड़ा-फैलाया, लगा जैसे आसानी से मारी गई किसी मक्खी को बाहर फेंक रहा हो।

'...लेकिन वो छोकरा हम दोनों से तो क्या आपके स्तर से भी नहीं साधा जा सकता है!'

'...घबराने की कोई बात नहीं है; पार्टी मुख्यालय ऐसे एलिमेंट से बखूबी निपटना जानती है, हमें तो गुप्त सूचना भेज देनी भर है!' अध्यक्ष की आंखें कहीं दूर टिकती हुईं जान पड़ीं।

'...अभी तो वह ऐसे गायब है जैसे गधे के सिर से सिंग!'

'युवा गधा दिनभर में एक दो-बार अपनी गधी को... समझे कि नहीं! उसका लोकेशन पता करो गुप्त रूप से, आगे का पार्टी देखेगी,' रामनाथ आलोक ने रामू कथा में पूर्ण विराम लगाते हुए कहा।

'...गुप्त सूत्र से मुझे ज्ञात हुआ है कि पार्टी मुख्यालय ने मंथन-मंच के रामघाट इकाई को एक बड़ी जिम्मेदारी दी है, कोरोना के विकट समय में जनमानस के मिजाज को राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी अनुकूल यथावत रखने हेतु सुझाव-सूत्र तैयार करने के लिए?' युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष रवि मोहन ने भेद खोल देने की मुद्रा में कहा; स्क्रीन में दिख रहे चेहरों में हर्ष-रेखाएं उगने लगीं।

'...श्रीमान रवि! पार्टी कार्यशाला में भी कई बार मैंने आपको टोका है, अपनी भाषा में सही शब्दों का प्रयोग करने के लिए; मिजाज के स्थान पर आपको मन-दृष्टि शब्द उच्चारित करना चाहिए था!' मंथन-मंच पुरुष काशीनाथ जी ने तुनककर कहा, आगे चेहरे में रहस्य का आवरण लाते हुए बोले, 'ऐनीवे, सुझाव-सूत्र तैयार करने का कार्य मेरे और रामनाथ जी के बीच है; आपको गुप्त सूत्र से ज्ञात हुआ है तो कृपया इसे गुप्त ही रहने दें, क्योंकि राष्ट्रीय स्तर के लिए प्रस्तावित वो सुझाव सीधे मुख्यालय को भेजे जाने हैं, उसपर रामघाट स्तर पर विमर्श नहीं होना है!'

"..." रवि मोहन का मुँह खुला ही था कि अध्यक्ष टपक पड़े, "...तो आज के लिए इतना ही, अगले वीसी की सूचना शीघ्र ही मिलेगी आपलोगों को; भारत माता की जय।" बिना किसी औपचारिकता के ही अध्यक्ष ने वीसी का समापन कर दिया; युवा प्रकोष्ठ और मंथन-मंच के बीच कब से पनप रहे मतभेद को यहां सार्वजनिक होते जाने की आशंका भांपकर।

4

पार्टी कार्यालय के नैऋत्य कोण वाले गुप्त कक्ष में आज तीन कुर्सियां सुशोभित थीं। बायीं ओर मंथन-मंच के युवा विचारक रामनाथ आलोक जी आसनमान थे, दायीं ओर मंच के प्रबुद्ध पुरुष काशीनाथ जी विराजमान थे; ऊपर से पधारे दिव्य पुरुष बीच वाली ऊंची कुर्सी में विराजमान हुए, अभी-अभी।

"तो आप लोगों ने अपने विचार प्रवाह को कोरोना पर ही केंद्रित कर रखा है! अभी तक?" बीच वाली कुर्सी में विराजे पुरुष ने आते ही प्रश्न

छोड़ दिया; तीर-सा वेधक प्रश्न। उनकी भाषा-भंगिमा से परास्त काशीनाथ जी सकपका से गए।

"सर, कोरोना से निपटने के लिए कोरोना पर ही तो केंद्रित होना पड़ेगा?" रामनाथ ने साहस करके कहा।

"पार्टी मुख्यालय ने कोरोना काल की विषम परिस्थिति के संदर्भ में केंद्रीय मंथन-मंच से प्रभावोत्पादक परामर्श की अपेक्षा की है," उच्च आसनस्थ विराट पुरुष-सा हाव-भाव बनाते हुए वे बोलते गए, "इस बारे में सटीक सलाह के लिए सभी जिला मंच को पिछले महीने से ही कहा जा रहा है; लगता है आप लोगों ने न तो गूढ़ मंत्रणा की है, न ही भविष्य की दिशा में मनन किया है!"

"नहीं सर! रामघाट मंथन-मंच तो कोरोना पर लगातार चिंतन-मनन करता आ रहा है..." काशीनाथ जी आत्मविश्वास के साथ बोलने लगे; विराट पुरुष बीच में ही खिन्न हो उठे–'फिर वही कोरोना!' विराट पुरुष का रौद्र रूप देखकर दोनों विचार पुरुष सावधान की मुद्रा में आ गए; विराट पुरुष बोलते रहे, दीवार पर टंगे भारत के नक्शे पर आंखें फिराते हुए, "सबसे महत्वपूर्ण मंत्र नोट कर लीजिए; हमें अपने वचन-वाणी से कोरोना की विदाई कर देनी है, और उसकी जगह प्रतिकोरोना का प्रतिस्थापन्न कर देना है।"

"प्रतिकोरोना का प्रतिस्थापन्न?" दोनों विचार पुरुष के होंठ एक साथ खुले।

"मतलब अत्यंत ही स्पष्ट है, मंथन-मंच में आए नवागंतुक भी बिना समय लिए समझ जाएंगे; आप दोनों तो पर्याप्त अनुभवी हैं!" बोलने के बाद विराट पुरुष के होंठों में मुस्कान का टुकड़ा चमक उठा, आगे बोलते रहे, "देश के दिमाग से कोरोना का भूत हटाए बगैर अपने वर्चस्व पर मंडरा रहे प्रश्न चिह्न को हम लोग विलोपित नहीं कर पाएंगे!"

"परंतु सर कोरोना तो इस समय का शाश्वत सत्य है?" युवा विचारक रामनाथ ने तर्क प्रस्तुत करना चाहा, अति विनम्र बनते हुए।

"कोरोना के अतिरिक्त और भी कई शाश्वत सत्य हैं।" विराट पुरुष ने चहकते हुए कहा, फिर आंखें बड़ी करके उच्चारित किया, "सैकड़ों!" अब आगे की ओर झुकते हुए धीरे-धीरे बोलने लगे, "पार्टी के नेता-कार्यकर्ता-प्रवक्ता-जन प्रतिनिधि-मंत्री, सभी को शिक्षित करें कि वह अपने वचन-वाणी-वक्तव्य-पीसी में कोरोना के बजाय कार्य की बात करते रहें, चाहे कार्य हुआ हो या ना हुआ

हो; यदि कोई कार्य ना हुआ हो तो उसे निकट भविष्य में हो जाना बताते चलें..." विराट पुरुष के बोलने के बीच ही काशीनाथ जी हाथ जोड़ते हुए बोले, हस्तक्षेप के लिए क्षमा प्रार्थी वाली मुद्रा में, "लेकिन चैनलों के डिबेट में विपक्षी दलों के लोग तो कोरोना महामारी से उपजे चिंताजनक हालात पर हमारे प्रतिभागी पर चढ़ बैठते हैं?"

"इससे घबराने की कतई जरूरत नहीं है; विरोधी दलों के लोग क-क-ख -ख करते रहें तो आप ग-ग घ-घ च-च करते चलें!" बोलकर विराट पुरुष ने चुटकी बजाई।

"लेकिन सर, जब चैनल वाले कोरोना पर डिबेट रखे हों फिर हमारे प्रतिभागी किसी अन्य मुद्दे को कैसे बीच में टपका सकते हैं?" युवा विचारक रामनाथ ने संशय सामने रखा।

"इसका भी आसान समाधान है; अपने शुरुआती संबोधन में कोरोना से उपजी विकट परिस्थिति पर सहानुभूति जता दें, फिर पूरी बहस को चालाकी से दूसरे मुद्दे की ओर शिफ्ट करवाते चलें!" विराट पुरुष ने फिर चुटकी बजाई।

"लेकिन सबसे बड़ी बाधा है कोरोना से हुई मृत्यु और आगे संभावित मृत्यु के आंकड़े!" चिंतामग्न काशीनाथ जी ने लाचारी व्यक्त करते हुए कहा।

"हमें अपने को मृत्यु के महाजाल से निकालना पड़ेगा!" अब विराट पुरुष गंभीर हो उठे।

"वो भला कैसे!" रामनाथ ने नया सूत्र लपकने की मुख मुद्रा बनाई।

"जितनी मौतें होनी हैं वो तो होकर रहेंगी, ब्रह्मा की लकीर को देवो भी ना मिटा सकता है! हां, चतुराई में ही भलाई है; मौत के असली आंकड़ों को किसने देखा है भला!" बोलते जा रहे विराट पुरुष के चेहरे में विजयी भाव तैरने लगे–"आंकड़े की परिभाषा में, यदि कोरोना पॉजिटिव की मृत्यु किसी अस्पताल में हुई है वही तो मृत्यु कहलाएगी! और सबसे बड़ी बात, देश में अस्पताल हैं ही कितने मरने के लिए!" बोलकर विराट मुद्रा में शांति छा गई, आगे चेहरे में परम शांति-सी पसरती गई, "इस दौर में जो लोग गली-गली गांव-गांव में मर रहे हैं या मृत्यु के आगोश में आने वाले हैं, वो आंकड़ा भला कौन जुटा पाएगा? न तो हम और न ही कांव-कांव करते रहते विपक्षी कौवे!" अमृत-वचन सुनकर दोनों विचार पुरुष एक-दूसरे को देखने लगे, प्रच्छन्न हँसी के साथ; विराट पुरुष बोलते रहे, "हां, विपक्षी दलों का कोई चंड-प्रचंड यदि किसी स्रोत से सही आंकड़े ले भी आता है तो उसे राजनीति

से प्रेरित आंकड़ा बताकर उसके मुंह पर दे मारिए!"

"पर सुना है अमेरिका-यूरोप की कुछ प्रतिष्ठित एजेंसी इंडिया में कोरोना से हुई मौतों पर सटीक आंकड़ा जुटाने पर लगातार काम कर रही हैं?" रामनाथ ने शंका समाधान करना चाहा।

"अमेरिकी और यूरोपीय एजेंसियों द्वारा जारी किए जाने वाले आंकड़ों को लेकर अपना केंद्रीय मंच चिंतित है, दूतावास स्तर से इसके शमन-समाधान पर कड़ी मेहनत चल रही है, इसके अतिरिक्त इसकी काट के लिए किसी सटीक सूत्र के अन्वेषण पर दिन-रात काम चल रहा है; यदि इस बीच पश्चिमी जगत से ऐसा कोई डरावना आंकड़ा जारी हो जाता है, तो हम उसे सीधे-सीधे देश विरोधी शक्तियों की साजिश बताने में देर न करें!" बोलकर विराट पुरुष ने दोनों पंजों से मेज थपथपाई, आज के विमर्श सत्र के समापन का संकेत देते हुए।

"जाते-जाते एक और समाधान सूत्र पर मंत्रणा करना चाहता हूं।" रामनाथ ने जिज्ञासा प्रकट की, प्रदर्शित करते हुए कि उनके जैसे युवा विचारक लंबी रेस के घोड़े हैं।

"लंबी यात्रा करके मैं यहां इसलिए तो आया हूं कि रणक्षेत्र में शंका-संशय जैसी कोई चीज रह न जाए।" विराट पुरुष ने उत्साहवर्धन किया।

"विरोधी दलों के कुछ नेता किसी-न-किसी मुद्दे की पूँछ पकड़कर सरकार पर बेलगाम हमले किए जा रहे हैं, इससे हमारे शीर्ष समूह द्वारा कहे जा रहे अमिट वचन से जनता का ध्यान भटका जा रहा है! इस समस्या का जोड़-तोड़ खोजना ही पड़ेगा?" युवा विचारक रामनाथ ने कहा, तो लगा जैसे रणभूमि में रथ फंसा जा रहा हो।

"खोजना पड़ेगा नहीं, खोज लिया गया है! और धीरे-धीरे कार्यान्वित भी किया जा रहा है।" विराट पुरुष ने गुप्त-मंत्रणा के स्वर में कहा, जैसे गुप्त कक्ष की दीवार में भी कान हों।

"वह क्या!" विचारक-द्वय का कौतूहल चरम पर आ गया।

"विपक्षी दलों के ऐसे बेलगाम नेताओं को एक-एक करके अपंग किया जा रहा है!" बोलने के दौरान विराट पुरुष की आंखें छोटी होती गईं।

"अपंग?" दोनों विचार पुरुष एक साथ सिहर उठे।

"अरे भई! अपंग मतलब हाथ-पैर काटना नहीं; उनकी राजनीतिक-आर्थिक-सामाजिक-वैचारिक-नैतिक-आपराधिक परिस्थिति-परिवेश ऐसा बना देना कि

उन्हें बाध्य होकर छिपने के लिए कंदरा-गुफा ढूंढ़नी पड़े!" बोलकर विराट पुरुष ने आंखें बंद कर लीं, जैसे ऐसी सभी गुफाओं-कंदराओं पर तैनात पहरेदारों को अदृश्य आंख से सचेत कर रहे हों।

"पर इससे तो देश की राजनीति में प्रतिशोध-प्रतिशोध-पौध की जड़ें जमती जाएंगी?" रामनाथ ने डर-डरकर कहा; उसकी आंखों में खौफ की परत झलकने लगी, जैसे अंदर अपने भविष्य को लेकर उथल-पुथल मची हो।

"आपने यह समझने की भूल कैसे कर ली कि प्रतिशोध की राजनीति से देश मुक्त हो जाएगा, बल्कि मुझे तो स्पष्ट दिख रहा है पूरी शताब्दी में वही दल सत्ता के करीब दौड़ लगा पाएगा जो प्रतिशोध को प्रभावपूर्ण ढंग से कार्यान्वित कर पाएगा!" बोलते-बोलते विराट पुरुष कुर्सी से उठने को हुए।

"पर इससे तो देश की राजनीति प्राचीन कालीन, मध्यकालीन भारतीय राजनीति जैसी होती जाएगी?" काफी देर बाद काशीनाथ जी ने कुछ कहा।

"आपने तो इतिहास का भरपूर अध्ययन किया है काशीनाथ जी! विश्व के जिस किसी भी दार्शनिक या विचारक ने कहा है वह सच ही कहा है कि एक निश्चित कालावधि के बाद सभ्यताएं अपनी पूर्व स्थिति की ओर लौटने लगती हैं," बोलते-बोलते वे कुर्सी से उठ खड़े हुए, "अब जाने की अनुमति दें; मध्य रात्रि से पहले शीर्ष-समूह से अंतिम दौर का मंत्रणा सत्र प्रस्तावित है।" दरवाजे के पास रुककर बोले, "आपने प्राचीन काल, मध्यकाल की बात छेड़ दी है, तो याद दिला दूं मध्यकाल में गए बगैर आधुनिक काल भला कैसे आएगा!"

5

मंजरी की आंखें ही बातें करती थीं; फेस शील्ड के अंदर बिजली-सी छिटकती आंखें! पूरे आठ घंटे की लंबी शिफ्ट! बमुश्किल एक-दो बार ही आमने-सामने हो जाने का अवसर मिलता था। मंजरी की ड्यूटी होती थी 'कोविड-19 महिला वार्ड में' तो उसकी 'कोविड-19 पुरुष ओपीडी' में; दोनों की ड्यूटी ओपीडी में या फिर वार्ड में ही होती फिर तो अगल-बगल में होते! कदाचित चलते-फिरते, आते-जाते एक बार क्या दसियों बार आंखें टकरा जातीं; आंखों की मौन भाषा से दोनों की धड़कनें बोल उठता थीं। कोरोना के आंकड़े दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे थे; जिला अस्पताल में एक विंग से दूसरे में जाने पर सख्त पाबंदी थी। आठ घंटे में ऐसे अवसर एक-दो

बार जरूर आ जाते जब फार्मा विंग वाले भैया उसकी मदद माँग लेते, 'अभी ओपीडी थोड़ी नरम पड़ी है, आप जरा दौड़कर दवाई की खेप महिला वार्ड तक छोड़ आइए' या फिर कैंटीन वाले मैनेजर गुहार लगा उठते, 'कोरोना के डर से सालों की आज तो टट्टी-पेशाब हो रखी है, तुम जरा महिला वार्ड में नाश्ते के पैकेट छोड़ आओ डियर।' फार्मा या कैंटीन वालों को भला क्या पता महिला वार्ड तक जाने के लिए कितना तो लालायित रहता है वह! जब भी उसे महिला वार्ड जाने का अवसर मिलता उसकी आंखें, आंखों से ज्यादा धड़कनें तृप्त होकर लौटतीं!

थोड़ी देर के लिए ही सही आज दोनों का एक साथ कार्य से मुक्त होना सुखद पल था। महिला वार्ड के पीछे ओल्ड कैंटीन का दृष्टि ओझल बरामदा; दोनों मिले तो सुखद आश्चर्य स्वर्णिम संयोग में बदलने लगा। कोरोना का डरावना समय! महीनों से प्यासे दिलों का मिलन एक दुर्लभ क्षण से कम न था! कोविड अस्पताल में कर्मशील जोड़े का चिर-प्रतीक्षित मिलन स्वप्न में स्वर्ग पा लेने जैसा ही तो था! तभी तो पुराने कैंटीन में आवेग सी फूट पड़ी थी, दो प्यासे दिलों से।

"लगता है प्रेमी दिलों की कड़ी पहरेदारी के लिए ही करोना पैदा किया गया है!" फेस शील्ड और मास्क उतारते हुए वह मास्क वाली मंजरी पर गड़ गया। मास्कधारी मंजरी! आधे छिपे चेहरे में सुंदरता के नए रूप-स्वरूप पर वह मुग्ध होता गया; नख से शिख तक उसकी सारी खूबसूरती आंखों के रास्ते बाहर आने के लिए बेताब जान पड़ रही थी! गर्दन के सहारे अटके बॉडी कवर को मंजरी ने उतार लिया, बोली "पैदा किया गया है? किसने पैदा किया है!"

"चीन ने, और किसने!" उसने दृढ़तापूर्वक कहा।

"वो भला क्यों?" मंजरी ने अविश्वासपूर्ण ढंग से कहा।

"क्योंकि सुना है चीन में प्यार करने वालों की तादाद बढ़ती जा रही है, फिर तो वहां के सत्ता पुरुषों के लिए खतरे की घंटी है!" दिल में खंजर घोंपते हुए जैसा हाथ बनाकर उसने कहा।

"चीन वालों की प्यार-पहरेदारी छोड़ो, जनाब को जिला अस्पताल में आए हुए दस दिन हो गए, पर ठीक से हुलिया दिखाने की फुर्सत आज मिली है! क्या सोचा कि मोबाइल-मैसेज ही जिंदगी की मंजिल है?" मंजरी की आंखें चंचल हो उठीं।

"अरी मंजरी! तुम्हारे मुंह से ही मैंने पहली बार करोना शब्द सुना था, सुनते ही मेरे अंदर तूफान-सा खड़ा हो गया था; करोना का प्रवेश रोकने की खातिर पागल हो उठा था मैं! देश में करोना का प्रवेश रुक तो ना सका, पर मन में उम्मीद बची थी अपना प्यारा शहर रामघाट करोना से अछूता रह जाए, पर वह भी ना हो सका! तो ऐसे में कोविड सेंटर में स्वैच्छिक सेवा भी नहीं देता तो अपने आप को दुनिया के सबसे बड़े पाखंडी पुरुष के रूप में पाता जीवनभर..." वह बोलता जा रहा था; उसकी आंखों में आंखें गड़ाए मंजरी सम्मोहित होती जा रही थी। अब मंजरी के करीब आते हुए बोला, 'लेकिन करोना वार्ड में स्वयंसेवक बनने के पीछे एक वजह तुम भी हो; आखिर आगे और कितने दिनों तक तुमसे दूर रहने की बेताबी सहता रहता मैं!" मंजरी ने आंखें झुका लीं; जैसे मन में कब से जमी ढेर सारी बातें गले में आकर होड़ सी मचा रही हों, 'पहले आप पहले आप वाली' स्थिति-सी। मंजरी की व्यक्त ना हो सकनेवाली मन:स्थिति भांपकर उसने पूछा, "पर जिला अस्पताल में स्वैच्छिक सेवा देने का ख्याल तुम्हारे मन में आया कैसे!"

"हिंदुस्तान में कोरोना के आगमन काल से ही मैं व्यथित हूं, कोरोना वार्ड में स्वैच्छिक सेवा देकर सुकून महसूस हो रहा है मुझे; वैसे भी रामघाट में तुम्हारे नहीं होने से मैं अंदर से परेशान रहने लगी थी।" अपनी बड़ी-बड़ी आँखों के पूर्णाकार में मंजरी बोली, आंखों में कोई विशाल समंदर समाये।

"लेकिन तुम्हारे यहां आने से दोनों घर बेहाल हो रहे होंगे?"

"मेरे अंदर की ऊर्जा का सही अंदाजा शायद तुम्हें न हो; एक घर के काम सुबह निपटा आती हूं, शाम को वापस जाकर दूसरे की संभाल जाती हूं," आगे बोलते हुए मंजरी की आंखें छोटी होती गईं "पर माँ को अकेला छोड़ देने के लिए तुम्हें ग्लानि नहीं हो रही है?"

"दिल्ली से वापस आते ही हुलिया बदलकर मैं सबसे पहले माँ से मिला था; करोना केंद्र में सेवा देने की भावना से मैं भाग नहीं सकता था; माँ से अपनी इच्छा जताई, वह गर्व से फूले नहीं समा रही थी; जानती हो उसने क्या कहा? वह बोली, 'ऐसे संकट के समय में पैसेवालों को अपनी जान की पड़ी है, करोना सेवा तो गरीबों के भरोसे है या फिर भगवान भरोसे!' माँ के आशीर्वाद से ही तो यहां डटा हूं!" बोलकर उसका चेहरा गर्व से दीप्त हो उठा।

"लेकिन ड्यूटी के बाद तुम घर क्यों नहीं जाते! कहां सोते-खाते हो?"

"माँ से मिलने के बाद मैं सीधे सीएमओ साहब से मिला, वह देखते ही मुझे पहचान गए, मेरी स्वैच्छिक सेवा की भावना में वह भी बह गए; कोरोना वॉरियर्स के रुकने-खाने-सोने की व्यवस्था हो रखी है यहां! रही बात घर जाने की तो इस वक्त बस्ती में मेरा रहना बड़ा विस्फोट कर सकता है! विस्फोट वाली ऊर्जा को यहां अस्पताल में रहकर बचाए रखता हूं।" बोलकर वह परित्यक्त कैंटीन की छत पर गड़ गया, लगा कुछ साल पहले ही बने अब जर्जर पड़े भवन को अंदर की ऊर्जा से उड़ा देना चाह रहा हो।

"विस्फोट?" बोलकर मंजरी ने थूंक गटक लिया।

"हां मंजरी, करोना देश के आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक-पारिवारिक जीवन पर गहरा प्रभाव छोड़ जाएगा; आर्थिक रूप से देश तो वर्षों-दशकों पिछड़ जाएगा! मुझे तो लग रहा है करोना के मामले में शीर्ष पर बैठे कुछ लोगों से बड़ी चूक हो गई!" बोलकर उसने लंबी सांस ली, फिर बोला, "तुम्हें तो पता है ऊपरवाले ने चुप रहने का गुण-दुर्गुण मुझमें डाला ही नहीं है! यदि इस वक्त बस्ती में होता तो मेरे आवाज उठाने से बस्ती में, शहर में सीन जरूर क्रिएट हो जाता! पहले तो बम विस्फोट करने वालों की धरपकड़ होती थी, अब तो मुंह से भी वचन-विस्फोट करने वालों की शामत आई हुई है!" उसके बोलते जाने के दौरान मंजरी की नजर बरामदे के किनारे की तरफ चली गई; एक औरत थोड़े अंतराल पर दो बार ओल्ड कैंटीन के आगे-पीछे चक्कर काट चुकी थी; उसने बात समाप्त की-"कोई हम दोनों पर नजर रख रहा है, अभी हमें चलना चाहिए; आज थोड़ा फ्री हूं, संभव हो तो दोपहर में फिर आना, मैसेज भेज दूंगी; बाय!"

"हां छप्पन दिन से मैसेज और मोबाइल तरंग से ही तो जुड़े हैं! मुझे तो लग रहा है इस जमाने में मोबाइल के सहारे सांस ले रहे मोहब्बत के रिश्ते धीर-धीरे तरंग जैसे ही विलीन होते जाएंगे!" बोलकर वह मुड़ चला; उसे जाते हुए मंजरी एकटक देखने लगी, जैसे अभी कोई बात हुई ही ना हो।

कोरोना ओपीडी में आज तीन स्टाफ की ड्यूटी थी; वह बेफिक्र-सा यहां-वहां घूमता रहा, उसे बेकाम पाकर कैंटीन मैनेजर ने बेहिचक आवाज दे दी-"बिजी ना हो तो आज मेल वार्ड में लंच प्लेट थोड़ा जल्दी ही पहुंचा दो।" उसके अंदर से आवाज आई ...उसे भी तो मंजरी के पास जाने की जल्दी है! मैनेजर को मक्खन लगाते हुए उसने कहा, "आज खाली हूं, मेल-फीमेल दोनों वार्ड में लंच छोड़ आऊंगा।" इतनी देर में उसकी उंगलियां

मोबाइल में मोर्चा संभाल चुकी थीं..."बस पांच मिनट में आ रहा हूं, उसी डरावने कैंटीन में!" दोनों वार्ड में लंच प्लेट पहुंचाकर वह तेज कदमों से ओल्ड कैंटीन में दाखिल हुआ। पहले से ही इंतजार कर रही मंजरी मुस्कुरा उठी; बिना बॉडी कवर के सिर्फ मास्क लगाए मंजरी के अंग-अंग खिलते दिख रहे थे! उसने भी फेस शील्ड हटाया; उसे बाँहों के घेरे में ले लिया, बुदबुदाते हुए "नो करोना नो सोशल डिस्टेंसिंग!"

"अच्छा! तुमने एमबीबीएस की पढ़ाई कर रखी है क्या!" उसकी बाँहों के कसाव में अपने को समर्पित करते हुए वह बोली।

"मेरा चाहे कोई भी टेस्ट करा लो मैं कभी करोना पॉजिटिव नहीं हो सकता!" मंजरी के होंठों को चूमने से अपने को रोकते हुए उसने कहा।

"इतने यकीन के साथ कैसे कह सकते हो?" मंजरी की आंखों में आशिकी उतर आई।

"अरे पगली! सीधा-सा फंडा है, दो-ढाई महीने से करोना के खिलाफ युद्ध छेड़ रखा है मैंने, तो वह भला मुझसे नहीं डरेगा!" उसके बोलते ही परित्यक्त कैंटीन दो रंग-रस वाली खिलखिलाहट से नहा उठा।

"अरे बाबा, इतनी जोरदार ठहाके से तो वार्ड के कोरोना पेशेंट भी यहां दौड़ पड़ेंगे!" बाँहों के कसाव से अपने को मुक्त करते हुए वह बोली।

"हम यहां हँसे नहीं, बोलें नहीं तो क्या गूंगे बनकर एक-दूसरे को देखते रहें!" नकली कानाफूसी-सा करते हुए कहा उसने, मंजरी के कान के पास मुंह ले जाकर।

"तो क्या चिल्ला-चिल्लाकर सबको बताएं कि हम दोनों पागल प्रेमी हैं!" बोलते हुए उसने आंखें नचाईं, जैसे कह रही हो हां हम पागल प्रेमी ही तो हैं!

"इस एकांत कैंटीन में धीमे से बात करने से अच्छा है अंधेरे में ही कभी-कभी मिल लेना।" उसकी आंखों में शरारत भर आई।

"हां यार ठीक कह रहे हो! इस वीक में मेरी इवनिंग शिफ्ट वेडनेसडे को होगी।"

"मैं भी अपनी नाइट शिफ्ट वेडनेसडे को करा लेता हूं।" काम-भाषी जीभ दिखाते हुए उसने कहा।

"तब नदी के किनारे झुरमुट में तुम्हारे अंदर आंधी-सी आ गई थी, दिन के उजाले में ही; यहां अंधेरे में तूफान ही ला दोगे!" मंजरी थप्पड़ दिखाते हुए बोली।

"हां मंजरी, जीवन के प्रणय-पथ में तूफान का इंतजार भला किसे नहीं होता!" उसने धीरे से कहा, आंखों की तीव्र भाषा में।

"उस तूफान से अगर तीसरे के आगमन का मार्ग निकल आया तो फिर क्या होगा!" मंजरी के चेहरे में स्त्री-जन्य ममता पसर गई।

"अरे हमारी शादी तो हो रखी है!"

"तय हुई है बाबा, हुई नहीं है! यदि कोरोना काल लंबा खिंचा फिर तो तुम्हारे तूफान से सीधे मेहमान ही आएंगे हमारे घर!" बोलते हुए मंजरी की बिंदास हँसी फुलझड़ी-सी बाहर आई।

"देखो यार करोना को देश में आने से हम रोक न पाए, तो क्या अपने मन को रोककर रखें करोना की विदाई तक?"

"इसका मतलब है जनाब ने तय कर लिया है बिना नाव के ही नदी पार कर लेने का!" उसकी आंखों में आमंत्रणपूर्ण मुस्कान तैर गई।

"देखो मंजरी, पैसे वाले लोग शादी में लंबे-चौड़े आयोजन करते हैं; तिलक-रिंग सेरेमनी-महिला संगीत-जय माल-फेरे-रिसेप्शन-एट होम और न जाने क्या-क्या।" अब वह धीमी चाल से टहलते हुए बोलने लगा, "पर इन आयोजनों के दौरान वर-वधू के चेहरे में जो खुशी उभर आती है और होंठों में हँसी की जो युगल फुलझड़ियां फूट पड़ती हैं क्या वह बाद के वर्षों में कायम रह पाती हैं?"

"तो मेरे श्रीमान का क्या विचार है!"

"मेरे विचार में जब दो दिलों की जड़ें गहराई तक जुड़ी हों तो घंटों-दिनों तक लंबी शादी के बजाय शादी की शपथ मिनटों में ही संपन्न होनी चाहिए; पर ईमानदारीपूर्वक, प्रण के साथ!" मंजरी की ठुड्डी ऊपर-नीचे करते हुए उसकी आंखों में कोई संकल्प-सा उतरता दिखा।

"तो अब तुम मिनटों वाली शादी की तैयारी करोगे!" मंजरी के होठों पर व्यंग्य तैर गया।

"मिनटों वाली शादी की तैयारी भला क्या होती है, वेडनेसडे को इवनिंग शिफ्ट के बाद यहीं मिलेंगे; आकाशीय परमशक्ति को साक्षी मानकर हमेशा के लिए एक हो जाने का प्रण लेंगे; आगे दोनों दिल जैसा चाहेंगे वैसा खुद-ब-खुद होता जाएगा!" बोलते-बोलते मंजरी के होंठों पर उसकी निगाहें जमने लगीं।

"यस, आई एम इन एग्रीमेंट बट फोर वेडनेसडे!" तर्जनी के इशारे से उसे

रोकते हुए वह बोली।

"आई एम ओनली फॉर यू मंजरी, फॉरएवर!" बोलते हुए उसने आँखें बंद कर खोल लीं, लगा जैसे प्रेम के अगाध सागर में डुबकी लगाकर निकला हो।

'...मंजरी ...मंजरी...' बाहर किसी महिला ने पुकार लगाई; दोनों तेजी से विलग होकर अलग-अलग दरवाजे से बाहर निकल पड़े।

शाम को घर की ओर बढ़ती मंजरी के कानों में आज भीमरवा की खुशमिजाज वाली आवाज पड़ रही थी ...बेशक ...बेमिसाल ...बेजोड़ ...बेपनाह।

6

लॉक-थ्री लागू होते ही पुरानी पार्टी के अध्यक्ष जयपाल मंडल की परेशानी बढ़ने लगी। घर के बाहर बढ़ रही गर्मी से नहीं, मन के अंदर बढ़ती जाती बेचैनी से। लॉक-वन के दिनों में हाईकमान वाले खुद मोर्चा संभाल रखे थे; जिला अध्यक्ष लोगों के दिन मजे से कट रहे थे, गुप्तवास में। लॉक-टू में सप्ताह में एक-दो बार दिशा-निर्देश जरूर आ जाते थे; कोरोना को लेकर सरकार की कार्यप्रणाली पर तीखे सवाल दागते रहने की हिदायत के तौर पर। लॉक-थ्री शुरू होते ही अध्यक्ष की तो जैसे शामत ही आ गई थी; दिशा-निर्देश की जगह टारगेट का झरना-सा फूट पड़ा था, पार्टी अध्यक्ष वाले व्हाट्सएप ग्रुप में! सरकार को कटघरे में खड़े करते रहने के नित नए टारगेट! जैसे आलाकमान को सपना आया हो कि इस सरकार को वोट से नहीं कोरोना की चोट से ही धूल चटाई जा सकती है। सरकार कोरोना संकट के समय जनता-कार्यकर्ता से संवाद स्थापित करना बच्चों का खेल थोड़े न था! सत्तारूढ़ पार्टी तो दुनिया के पांच सबसे अमीर पार्टी के आसन के करीब थी; सूचना प्रौद्योगिकी की बदौलत जनता और कार्यकर्ता से संवाद स्थापित करने में महारत हासिल कर ली थी। उद्योगपतियों-पूंजीपतियों ने पुरानी पार्टी के केंद्रीय खातों में भी चंदा देने से मुंह फेर लिया था; यहां रामघाट में भला कौन कारोबारी मेहरबानी करता बीते दिनों की पार्टी पर। कल शाम आलाकमान ने सरकार के खिलाफ शृंखलाबद्ध आरोपों से बम विस्फोट-सा कर डाला था। पार्टी पदाधिकारियों के लिए हिदायत भी जारी कर दी थी; धन की कमी आड़े आए तो पार्टी पदाधिकारियों के साथ वीसी वेबिनार के माध्यम से संवाद करते रहो, मोबाइल में ही सही। हाल ही में सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा संपन्न सफलतम वेबिनार की सूचना अध्यक्ष तक बिना विलंब के पहुंच चुकी थी।

डिजिटल पॉलिटिक्स में भी सत्तारूढ़ पार्टी से लगातार पिछड़ते जाने के कारण उसकी परेशानी की प्रकृति भी बदलने लगी थी। ऐसे में वीसी वेबिनार टालना उसे आत्मघाती लगा। रात को सोने से पहले उसने जिला व्हाट्सएप ग्रुप में मैसेज डाल दिया था–"...कल सुबह दस बजे जिला कार्यकारिणी से भीसी के माध्यम से संवाद सत्र संपन्न होगा, लिंक कल सुबह सेंड किया जाएगा..."

लॉक-टू के थ्री में प्रवेश करते ही उसकी परेशानी भले ही दुनी-तिगुनी होती गई हो, आज दस बजते-बजते वह अति ऊर्जावान हो उठे। सुबह ब्रह्म मुहूर्त्त में योग-ध्यान की मुद्रा में उसे सरकार की सनक में कई-कई सुराख दिखने लगे। उसे लगा आलाकमान से मिली हिदायत को उस सुराखनुमा 'होल' से गुजार दिया जाए तो सत्तारूढ़ पार्टी का ठीक-ठाक घेराव हो सकता है।

"...वीसी के माध्यम से पहली बार जुड़ने पर मैं पार्टी के सभी पदाधिकारियों -कार्यकर्ताओं का स्वागत करता हूं..." दस बजे तक स्क्रीन पर कई चेहरों को मुस्कुराते देखकर अध्यक्ष ने देर करना उचित नहीं समझा।

"...जी...जी..., सर का भी स्वागत है; और धन्यवाद भी..." स्क्रीन में मुस्कुराते चेहरों में मुस्कान और फैलती गई।

"...आप सभी के मुस्कुराते चेहरे देखकर विश्वास हो रहा है अपनी ऐतिहासिक पार्टी की जड़ें काफी गहरी हैं, और इसीलिए बखूबी जिंदा हैं! सभी के चेहरों में मुस्कान तो दिख रही है, पर मन से मायूसी को भगा नहीं पा रहे हैं? ऐसे में सत्ता सुख भोग रही झूठाचार पार्टी को पछाड़ना मुश्किल होगा..." मन में उमंग उत्पन्न होने की भाव-भंगिमा में अध्यक्ष ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

"...ऐसी बात नहीं है अध्यक्ष महोदय, पार्टी के सभी पदाधिकारी और कार्यकर्ता इस हालत में भी जनता के संपर्क में हैं; हां, थोड़ी-सी उदासी जरूर है कि सत्ताधारी पार्टी के बनिस्पत हम टेक्नोलॉजी के मामले में भी पिछड़ते जा रहे हैं, उस पार्टी ने अभी तक कई-कई वीसी वैवनार कर डाले हैं, बड़े-बड़े एलईडी स्क्रीन खरीदे जाने की सूचना है..." शहर अध्यक्ष नरोत्तम हरि बोलने लगे तो स्क्रीन में भी उसके चेहरे में अंधेरा-सा पसरता दिखने लगा।

"...आखिर हमारी पार्टी हर फील्ड में क्यों पिछड़ती जा रही है?" स्क्रीन में एक चेहरे से आवाज आई।

"...जो काम दाम से होगा वह मुख-चाम नहीं कर सकता न!" बोलने के

बाद अध्यक्ष की आंखें बंद हो गईं, जैसे मीठे सुनहरे दिनों को याद कर रहे हों।

"...तो क्या हम जनता को यह भी बताते चलें कि हमारी पार्टी का खजाना खाली हो चुका है!" ग्रामीण प्रकोष्ठ अध्यक्ष जमील अहमद की मायूसीभरी आवाज स्क्रीन में फैल गई।

"...जी! बिल्कुल! मैं तो भूल ही गया था, जनता को बताने का बहुत बड़ा मुद्दा है यह! जनता को पता होना चाहिए अब तो देश के बड़े उद्योग घराने वाले सिर्फ एक ही पार्टी को चंदा दे रहे हैं, कोई कारोबारी हमें चवन्नी भी नहीं डालता! लेकिन हम जनता की सेवा में डटे रहेंगे।" सत्र की शुरुआत निराशा से करने वाले अध्यक्ष अब उत्साहवर्धन करते दिखे।

"...ऐसे में तो आगे कोई भी रैली कार्यक्रम यहां तक कि सोशल मीडिया के खर्च का इंतजाम भी मुश्किल होगा?"

"...होगा? हो रहा है भई! संकट तो कब से आ खड़ा है; अभी जिला स्तर पर छोटा-मोटा जो कुछ भी हो रहा है समझिए मैं अपनी बची-खुची पूंजी से करता आ रहा हूं; पार्टी मुख्यालय से फूटी कौड़ी नहीं मिल रही है!" अध्यक्ष की भाव-भाषा पार्टी विरोधी जैसी होने लगी। चिंतक मंडली के मण्डन ओझा ने सीधे विषय पर वार्ता करना जरूरी समझा, "...तो आगे सभी पदाधिकारी-कार्यकर्ता के लिए क्या निर्देश है?"

"...उसी पर बात करने के लिए तो आज पहली बार वीसी रखी गई है; कल शाम हाईकमान वाले ग्रुप में क्लियर मार्गदर्शन मिला है, सबसे पहला तो यह कि ये जो सरकार है इसे दिन के उजाले में ही नहीं रात के अंधेरे में भी अपनी पार्टी ही दिखती है, जनता तो दूर-दूर तक दिखती ही नहीं है इन्हें! सरकार के लोग देश को मजबूत करने के बजाय दिन-रात पार्टी को मजबूत करने में लगे हैं!" अध्यक्ष के मुंह से पार्टी भागे नहीं भाग रही थी।

चिंतक मंडली के आत्मा प्रसाद ने स्पष्ट करने की खातिर पूछा, "...अब हम लोगों को आप स्पष्ट निर्देश दें लॉकडाउन थ्री में हमें जनता को क्या बताना है?"

"...जनता को बस यही बताना है इस सरकार को कोरोना की नहीं सिर्फ पार्टी की चिंता है!" बोलते हुए अध्यक्ष ने भगवान श्रीकृष्ण-सी मुद्रा बना ली, जैसे लोकतंत्र के महाभारत में अपने अर्जुनों को गीता उपदेश दे रहे हों! फिर चिंतक मंडली के वरिष्ठ चिंतक मण्डन ओझा की ओर देखते हुए बोले, "अंत में आप कुछ सूत्र-वाक्य बताएं जिसे सीधे जनता के माइंड में

रोपित किया जा सके।" बोलने के बाद उसके चेहरे में बगुला चिंतन-जैसी गंभीरता उतर आई। मण्डन ओझा जी भी कुछ पल के लिए चिंतनशील हो गए, आँखें बंद किए हुए।

"...यह बात सच है कोरोना शुरू से ही सरकार की पहली प्राथमिकता नहीं रही है, लॉक थ्री शुरू होते ही कोरोना शब्द भी सरकार के मुंह से गायब-सा हो गया है! हमें जनता के बीच यह बात पहुंचानी चाहिए कि यह सरकार कोरोना को जन-जन तक पहुंचाकर ही दम लेगी!" मण्डन ओझा ने कहा तो स्क्रीन में भी उसके चेहरे में क्रोध उतर आया दिखने लगा, आगे बोलते रहे, "कुछ तर्क-तथ्य जनता के कान में ही नहीं दिमाग में रोपित करना जरुरी है; मैं पूछता हूँ आखिर जनता ने अपना कीमती वोट देकर आपको सत्ता में क्यों बिठाया है? इसलिए न कि आप देश के लिए, जनता के लिए काम करें, लेकिन आप तो अपनी पार्टी के लिए ही दिन-रात हँसते-हांफते रहते हो..."

"तो ओझा सर ने जो सूत्र वाक्य दिया है हमें उसे गली-गली गांव-गांव पहुंचाना चाहिए; ऐसी सरकार को हम कतई नहीं बख्शेंगे जो कोरोणा के बहाने पार्टी को दिन-रात मजबूत करने में लगी पड़ी है! अंत में मैं यही कहूंगा हम होंगे कामयाब एक दिन... जय हिंद जय भारत! अगली भीसी में मिलने तक के लिए धन्यवाद।" 'धन्यवाद' शब्द के साथ ही स्क्रीन भी साफ नजर आने लगी; शायद अध्यक्ष ने भी डिजिटल गुरु बनने का गुर सीख लिया था।

7

बीती वीसी में कोरोना-मंडली ने रामघाट में फंसे पड़े प्रवासी मजदूरों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने का निर्णय लिया था; चंदा इकट्ठा कर उन्हें मंजिल तक छोड़ने के महान संकल्प-सा! दिन-प्रतिदिन देश के राजमार्गों पर पैदल चले जा रहे हजारों-लाखों मजदूर! अनंत सड़कों को रौंदते हुए, चढ़ती गर्मी को पछाड़ते हुए। न्यूज चैनल में, सोशल मीडिया में उनकी दुर्दशा देख-देखकर मंडली के सदस्य द्रवित हो उठते; दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के मालिक महलों में और मजदूर लंबे-लंबे मार्गों-महामार्गों के पैदल-पैमाइश में! विरोधी दलों के अजीबोगरीब आख्यानों से मंडली के सदस्य सर पकड़ लेते थे; कदाचित संविधान-सभा के सदस्यों की मृतात्मा भी स्वर्ग में माथा पीट रही होती। ऐसे सहज-स्वाभाविक मनोभावों को अंदर ही पचाकर सहज ने सोशल

मीडिया में 'प्रवासी पुकारे रामघाट में' नाम से एक पोर्टल लांच कर रखा था। शायनी और परवेज के नाम से खुले संयुक्त खाता को भी शेयर कर दिया था; प्रवासी मजदूरों के लिए बस के इंतजाम हेतु राशि डालने की गुहार के साथ। हृदय परिवर्तन कर देनेवाले कई श्लोक-स्लोगन; भूखे-प्यासे पैदल चले जा रहे मजदूरों की हृदय विदारक तस्वीरों वाला पोर्टल! शुरू के तीन-चार दिनों तक पोर्टल में परोपकार्थ प्रतिक्रिया संतोषजनक थी; कोरोना-मंडली के सदस्यों की सहयोग राशि मिलाकर पांचवें दिन पांच बसों का इंतजाम हो गया था। रामघाट बाईपास पर बिहार-बंगाल-झारखंड-छत्तीसगढ़ की तरफ जानेवाले हजारों लोगों को प्रशासन ने कई दिनों से रोक रखा था। डीएम रामघाट ने पांच बसों को आगे जाने की अनुमति दे दी। बसों के बाईपास पर उतरते ही हजारों लोग उमड़ पड़े! भगदड़ की बात कहकर एसपी निशांत कुमार ने पांचों बसों की चाबी अपने पास मंगा ली। सहज ने उनसे बात की; उसने अजीब-सी शर्त रख दी, "जितने लोग फंसे पड़े हैं उन सभी के लिए बसों का इंतजाम करो तभी बसों की चाबी मिलेगी!" साथ में चेतावनी भी दे दी–"कोरोना की आड़ में राजनीति करनेवालों के लिए कानून के हाथ लंबे होते हैं!"

फंसे पड़े सभी मजदूरों के लिए पच्चीस-तीस बसों का इंतजाम करना कोई मामूली काम नहीं था। फिर भी मंडली ने हार नहीं मानी! आगे तीन-चार दिनों तक मंडली के सदस्यों ने सोशल मीडिया पर, फोन-फान से भी, जी-तोड़ मेहनत की। गुहार दर गुहार लगाई। पोर्टल में हाथ में भीख का कटोरा लिए फोटो भी शेयर किए। पर नतीजा सिफर रहा; तीन दिनों में एक बस के लायक ही पैसा जमा हो पाया संयुक्त खाते में, बस! मंडली के सदस्यों के चेहरे पर दिन-ब-दिन हवाइयां उड़ने लगीं, होंठों पर पपड़ी पड़ने लगी। कोरोना-कैबिनेट की जोरदार चर्चा हो रखी थी रामघाट में, थोड़ा-बहुत पूरे प्रदेश में भी! अभी तक एक भी बस से प्रवासी मजदूरों को बाहर नहीं भिजवाने का मतलब था मंडली की नाक कट जाना! घोर हताशा की स्थिति में सहज ने आज रात नौ बजे वीसी रख दी।

"...सबसे पहले मैं सभी साथियों से माफी चाहता हूं; हमारे द्वारा लांच 'प्रवासी पुकारे' पोर्टल के धमाकेदार प्रचार-प्रसार के बावजूद पिछले चार दिनों में एक बस के लायक भी पैसा ठीक से नहीं जमा हो पाया है।" वीसी की शुरुआत करते हुए सहज की मायूसीभरी अवाज थी; स्क्रीन पर उसका चेहरा दिख रहा था, आंखें नहीं! जिंदगी में शायद ही कभी उसने अपनी

आंखें इतनी नीचे की हों।

"...बात मेरी समझ में नहीं आ रही है; शुरुआती तीन-चार दिनों में शानदार रिस्पांस देने वाला पोर्टल अचानक मर-मरा क्यों गया?" मास्कधारी की आवाज से ही पहचान में आया कि रामू बोल रहा है।

"...सोशल मीडिया में लांच प्रवासी पोर्टल के विरुद्ध किसी ने दुष्प्रचार तो नहीं कर रखा है?" अहम की आवाज स्क्रीन की तलहटी से आती जान पड़ी।

"...जहां तक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की मुझे जानकारी है..." शायनी बोल रही थी–'...गूगल, यू-ट्यूब, व्हाट्सएप ऑर व्हाटसोएवर, दे आर वेरी पर्टिकुलर अबाउट देयर साइट! अपने साइट में लांच किसी प्रोग्राम का सीधा विरोध करने वाले मटेरियल को अलाउ नहीं करते!' आईटी में शायनी की पकड़ प्रकट हुई।

"...लेकिन तीन-चार दिनों से सोशल मीडिया पर एक साइट वायरल हो रखा है! इसमें कहा जा रहा है प्रवासी मजदूरों के नाम पर ठगी करने वाले गिरोह से सावधान।" परवेज ने भेद खोलने के अंदाज में कहा, आगे चेहरे में घृणा टपकाते हुए बोला, "...इस साइट की बनावट-बुनावट जमीं-जुबान से जान पड़ रहा है इसे धनबल से संपन्न कोई संगठन-शूरमा ने ही लांच कर रखा है! पर यह पता करना मुश्किल है कि आखिर ऐसा नेगेटिव एप्रोच किसका हो सकता है?" बोलकर परवेज ने माथा पकड़ लिया।

"...इसमें पता करने की भला क्या बात है, यह तो जगजाहिर है उल्टी गंगा बहाने में कौन लोग लगे हैं!" रामू की उत्तेजक आवाज थी।

"...ऐसे लोग या ग्रुप या संगठन या फिर सरकार का नाम लेने से तुम डर क्यों रहे हो?" अहम आश्चर्यचकित होकर बोला।

"...संभावित नाम या संगठन उजागर कर देने पर सरकार के लोग मेरे पीछे पड़ जाएंगे! मैं अपनी संतुष्टि के लिए करोना मरीजों की स्वैच्छिक सेवा में लगा हूं; ऐसे लोग मुझे अस्पताल से घसीटकर गांधी चौक पर खड़ा कर देंगे, करोना-कारक का इल्जाम लगाते हुए!" रामू की गंभीर आवाज थी।

"...मुझे तो लग रहा है अभी या कभी तुम्हें जेल नसीब होना ही है।" अहम ने आंखें बंद करते हुए कहा, जैसे समय के आर-पार देख रहा हो।

"...सो कौन-सा जुर्म ढा रहा है रामू?" स्क्रीन पर शुरू से ही निस्तेज दिख रही मंजरी के चेहरे में उत्तेजना की लालिमा छा गई।

"...जन-जन की बात उठाने वालों को जेल की कालकोठरी में जाना

पड़ा है हर युग में!" लंबी सांस लेते हुए अहम ने कहा, जैसे संकल्प संचय कर रहा हो।

"...सामंत-सत्ता किसी के शरीर को कैद में रख सकती है, विचारों को कतई नहीं!" स्क्रीन में परवेज का चेहरा हुंकार भरता दिखा।

"...चर्चा-चिंतन को फिलहाल विराम दीजिए, प्रवासी मजदूरों को घर पहुंचाने के अटके काम को कैसे आगे बढ़ाया जाए इस पर विचार कीजिए।" शायनी ने विषयांतरण किया।

"...जब हमारा पोर्टल शुरुआती रिस्पांस के बाद ठंडा पड़ा है फिर तो हमें खुद आगे आना पड़ेगा; अपनी एक गाय बेचकर जो पैसा होगा वह मैं प्रवासी फंड में डाल दूंगा!" रामू ने दरियादिली दिखाते हुए कहा; आगे अपने को रोक न पाया, "वैसे भी मैं किसी पार्टी में नहीं हूं, गाय को आगे रखकर वोट बटोरने की मजबूरी नहीं है मेरे साथ।"

"...अरे रामचंद्र प्रभु, मामला इतना भर नहीं है! पांच बसें एसपी ने थाने में खड़ी करवा दी हैं, पच्चीस बसों का इंतजाम करने को बोल रहा है वह!" स्क्रीन में सहज की आंखें छोटी होती गईं।

"...तो फिर क्या किया जाए?" अहम उत्तेजित होने लगा, अपने स्वभाव के विपरीत।

"...मैं दुनिया की बात नहीं बता सकता, पर अपने पापा को तो जानता हूं; हमारे कारखाने में फंसे मजदूरों को घर भेजने में उसने काफी मदद की थी, उनसे इस मसले पर बात करता हूं," सहज ने कहा, फिर किसी अज्ञात बिंदु को ढूंढ़ने-जैसा दिखते हुए बोला, "मेरे नजरिए से जिंदगी की जंग में फंसे प्रवासी मजदूरों के लिए पच्चीस बस देना सौ करोड़ की संपत्ति होने से भी बड़ा होना है!" बोलते हुए उसके चेहरे में विश्वासपूर्ण चमक दिखने लगी।

"...यदि ऐसा हो गया तो रामघाट में उसकी कृति अजर-अमर हो जाएगी!..." मंजरी आगे बोल न पाई, स्क्रीन में उसकी आंखें छलछला आईं दिखने लगीं।

"...लेकिन अंकल को अपनी आंखें खोलकर रखनी पड़ेंगी; कहीं वे किसी की आंखों की किरकिरी न बन जाएं!" अहम ने कहा, लगा किसी दूरस्थ चिंगारी को देखकर बोल रहा हो।

"...इस मामले में पापा की पकड़ अच्छी है, सरकार के लोगों का उनसे काफी सरोकार रहा है।" आशंका को छिपाते हुए अहम ने कहां

'.....'

वीसी में आए क्षणिक व्यवधान दूर होते ही देर से चिंतन में पड़ी शायनी बोलने लगी, '...कोरोना के बारे में अपने स्टडी के बेसिस पर फ्यूचर में इसके विहेवियर पर मुझे काफी डाउट हो रहा है, स्पेशली इसके स्ट्रेन में तेजी से हो रहे म्यूटेशन से कुछ अपरिहेन्सन सा हो रहा है; इंडियन सबकनटीनेंट में यह लंबे समय तक कभी जीवित तो कभी सुसुप्त अवस्था में पड़े रह सकता है, जब-तब तबाही ला सकता है!'

'...इस पर अपना कोरोना-कैबिनेट या भारत के कैबिनेट को क्या करना चाहिए?' कब से चुप बैठे मनोज ने समाधानमूलक सवाल पूछा।

'...इसका समाधान तो वैज्ञानिक के हाथों ही है, पर अपने देश के स्तर पर जो सम्भव हो हमें वो करना चाहिए।' बोलकर शायनी ने आँखें बंद कर लीं, जैसे समाधान पर ध्यान केंद्रित कर रही हो।'

'...वो क्या?'

'...अभी भी देश के काफी जिले और कुछ प्रदेश कोरोना से अछूते हैं, हमारी कोशिश होनी चाहिए कि भारत के कुछ भूखंड को हम कोरोना के प्रसार से बिल्कुल बचाए रखें, क्योंकि तब स्ट्रेन के जिनोम सिक्वेनसिंग के रिसर्च में ऐसे क्षेत्र काफी हेल्पफुल हो सकते हैं!' गंभीर बनी हुई शायनी बोली।

'...पर यह तो सरकार के बूते ही संभव है?' अहम ने कोरोना-कैबिनेट की सीमा बताई।

'...कोई बात नहीं, हमलोग असली कैबिनेट को पकड़ेंगे न!' रामू ने तपाक से कहा तो स्क्रीन में बॉडी कवर के अंदर भी उसकी देह में उत्साह-उत्तेजना उठती दिखी।

'...रामू की बात से मैं सहमत हूँ; अपने कोरोना-कैबिनेट की तरफ से सरकार को एक सुझाव हम भेज सकते हैं,' अहम ने रास्ता दिखते हुए-सा कहा।

'...फिर तो कल ही इस आशय का एक पत्र कोरोना-कैबिनेट के बिहाफ में सरकार को मेल कर दूँगा मैं।' परवेज ने समाधान का समापन करते हुए कहा।

'...आज की वीसी में मैं भी कुछ शेयर करना चाहता हूँ; दरअसल बस्ती के इंडिया वाले इलाके को प्रशासन ने कंटेनमेंट जोन घोषित कर दिया है और अंकुर के मूर्ति चबूतरे को तो सील ही कर दिया है!' दिनेश के इतना

बोलते ही वीसी में भागीदार सभी के मुख से चीख-सी निकल पड़ी, '...क्या! ...कब?...क्यों?।'

'...मौके पर आए एसडीएम बोल रहे थे ऐसे वक्त में मूर्ति बनाना बेवकूफी है, दिनभर कोरोना वाले बच्चों की भीड़ जमी रहती है; अंकुर ने पैर पकड़ा, गिड़गिड़ाया पर एसडीएम अड़ा रहा, जाते-जाते अंकुर को धमका भी गया कि मूर्ति में प्राण फूंकने की अफवाह पर तुम्हारे खिलाफ देशद्रोह की धारा लग सकती है!' बोलते-बोलते दिनेश के चेहरे में भय पसर आया दिखने लगा।

'...परम पुरुष की कल्पना वाली मूर्ति का बनना बंद होने का मतलब है देश का भविष्य कैद हो जाना! यह तो सबसे बड़ा अनर्थ है! अंकुर से पूरी जानकारी लेकर हमें डीएम से बात करनी पड़ेगी।' अहम ने कहा तो उसकी बेकरारी पूरे स्क्रीन पर फैलती महसूस हुई।

'...इस बारे में मेरी अंकुर से बात हो चुकी है; कुछ बातें सार्वजनिक न ही हों तो अच्छा है!' मनोज ने कोई गुप्त सूचना देने की मुद्रा बनाकर कहा; किसी नए रहस्य को और गहरा बनाते हुए।

"...तो आज की वीसी यहीं खत्म करते हैं, जय हिंद, गुड नाइट।" सहज ने वीसी समाप्त की। स्क्रीन में अंधेरे की चादर गिर पड़ी।

उस रात भीमरवा देर रात तक किसी अनजान ताकत को धिक्कारता रहा ...हठ ...लट्ठ ...शठ ...मठ; बीच-बीच में ऊँची पुकार देते हुए ...अग्रिम ...अगुआ ...आगाज ...अंजाम...

8

5 मई; सूरज की पहली किरण के साथ ही मध्य रात्रि से चली आ रही शांतिदायिनी शीतलता जैसे कहीं छिप गई थी। घर के बाहर गर्मी ने अपने पंख फैलाने शुरू कर दिए थे; जैसे चेतावनी दे रहा हो कि थोड़ी ही देर में हम आपके घरों में भी घुस आएंगे! सुबह-सुबह सामने वाले चौराहे पर किसी पुलिस वाले को न देखकर जेड सर को कोई आश्चर्य न हुआ, लगा शायद किसी जरूरी जगह पर कोरोना-ड्यूटी लग गई होगी। दोपहर बीत गई, शाम हो गई, रात आ गई; पुलिस वाले नदारद ही रहे। पुलिस पिकेट नहीं दिखने पर सड़कों पर लगे बैरियर भी किनारे खड़े-गिरे-पड़े थे; किसी अराजक व्यक्ति ने पुलिस ना देखकर अपनी भड़ास निकाल ली होगी। जनता कर्फ्यू के दिन 22

मार्च को सुबह चार बजे से ही चौराहे पर पुलिस पिकेट बिठाई गई थी। तब से कल तक यहां पर पुलिस की तैनाती जेड सर को परम तुष्टि देती आ रही थी; शहर-प्रदेश-देश में चुस्त-दुरुस्त शासन-प्रशासन होने का एहसास वाली तुष्टि! लॉक-टू के दिनों में पुलिस वाले भले ही ढीले पड़ गए दिख रहे थे, पर लॉक-वन के दिनों में क्या गजब की फुर्ती-सख्ती दिख रही थी! आदमी तो क्या एक अदना परिंदा भी पर न मार सकता था बैरियर पर! तब सर के मन में समाया कोरोना का डर भी निकल भागा था, बच्चे सरीखे कौतूहल-सा ...पुलिस की सख्ती से कोरोना के पैर तो न जाने कब के टूट-फूट चुके होंगे, कट-फट गए होंगे। उन दिनों कोरोना की कड़ी पहरेदारी देख सर के मन में प्रधानमंत्री जी के लिए अगाध श्रद्धा उमड़ आई थी ...उनके एक आह्वान ने पूरे पुलिस महकमे पर कितना कारगर असर दिखाया है! जेड सर के मन में संविधान निर्माता डॉ. अंबेडकर के लिए सर्वोपरि सम्मान-भाव रहा है, वे उन्हें संविधान के कारीगर मानते आ रहे थे; आह्वान-ऐलान के जनता में दिखे जादुई प्रभाव की कई-कई झलक का आनंद पाकर अब प्रधानमंत्री उन्हें सत्ता-संविधान में गजब कारगर लगने लगे। लॉक टू के दिनों में जनता में उनके जादू का असर भले ही कम हो गया हो, लोग-बाग सैर-सपाटे चौक-चौराहे के लिए निकलने लगे थे, पर सर का विश्वास कायम था कि आने वाले दिनों में कुछ नया कथा-करिश्मा फिर देखने को मिलेगा।

सुबह से ही सड़क पर पुलिस वालों को न देखकर उनकी आँखें दिल्ली की ओर उठ गईं; हो न हो पाकिस्तान कोई बड़ी गड़बड़ी कर रहा हो, पुलिस वालों को भी पाकिस्तान की दिशा में लगा दिया हो? रात को नींद की जगह बेचैनी ने ले ली ...अपना एरिया अच्छा-खासा ग्रीन जोन में था, लॉक-टू में दिखी ढिलाई से ऑरेंज जोन में आकर अटका था; अब तो शायद रेड जोन में जाने से प्रधानमंत्री भी न बचा पाएं! उन्हें लगा आज रात तो नींद कोसों दूर खड़ी है, इतनी दूर कि शायद दूरबीन से भी पकड़ में न आवे। नींद आने-लाने की क्या तरकीब हो सकती है भला? अंदर से आवाज-सी आई ...प्रधानमंत्री और कोरोना को मारो गोली, दिमाग में नींद के लिए जगह अपने आप बन जाएगी... सच में, मन की आवाज का अनुसरण करते ही नींद कब आई इसकी आहट भी उन्हें महसूस नहीं हुई।

सुबह सामान्य तरीके से नींद खुलना सर को नसीब न हुआ, तड़के तीन बजे ही घर के सामने मचे कोलाहल ने नींद के सारे तंतु को तहस-नहस

कर डाला था; अचकचाकर उठ बैठे। बाहर धुएं जैसे ऊपर की ओर उठ रहे शोरगुल को सुनकर बालकनी की ओर दौड़े। सड़क पर नजर पड़ते ही चैक पड़े; घर के सामने सड़क पर लंबी लाइन लगी थी, अभूतपूर्व मानव शृंखला-सी! तत्क्षण मन हर्षित हो उठा-हो न हो कोरोना को पटकनी देने का विजय जुलूस निकल रहा हो। सुबह-सुबह उन्हें प्रधानमंत्री फिर याद आए; जनता कर्फ्यू के दिन ताली-थाली, लॉक-वन की पूर्व संध्या पर राष्ट्र के नाम ऐतिहासिक संबोधन, 5 अप्रैल वाले मनोहारी दीप उत्सव के बाद अब जरूर कोई अजूबा आनंद-उत्सव की सौगात आई होगी! उन्होंने टीवी में समाचार देखना लगभग बंद कर रखा था; पैदल चलते प्रवासी मजदूरों के हृदय विदारक दृश्य देखते रहना असहनीय हो गया था उनके लिए। अब सामने सड़क पर मानव शृंखला देखकर उन्हें अपनी मूढ़ता पर अफसोस हुआ ...देश में इतने बड़े आनंद-उत्सव की तैयारी होती रही और उसमें शरीक होना तो दूर, आनंदपूर्ण समाचार तक न सुन पाया! पुलिस और प्रधानमंत्रीजी के लिए कल से ही मन में आई कलुषता के लिए उसने मन-ही-मन माफी माँगी। उन्होंने टीवी चालू कर दिया; एक सप्ताह तक समाचार न सुन पाने के संताप को सहन करते हुए।

...आज अर्धरात्रि से ही प्रदेश के शहरों-कस्बों में शराब की दुकानों के सामने मदिरा सेवन करने वालों की लंबी, पर अनुशासित कतारें लगी हुई हैं ... कल शराब की दुकानें खुलते ही कई शहरों में दुकानों के आगे शराब खरीदने वालों की अनियंत्रित भीड़ उमड़ आई थी, कई जगह तो स्थिति नियंत्रण से बाहर हो गई थी, पुलिस बल के भारी बंदोबस्त के बाद ही स्थिति पर नियंत्रण पाया जा सका था ...कल देर रात सरकार ने पुलिस अधिकारियों को सख्त हिदायत दी है कि शराब की दुकानों पर भीड़ को नियंत्रित करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दें ...हमारे संवाददाता ने मौका मुआयना कर रिपोर्ट दी है कि मदिरा सेवकों की अनुशासित कतारें रात दो बजे से ही लगनी शुरू हो चुकी हैं, हर दुकानों के आगे पुलिस का पर्याप्त बंदोबस्त है ...अभी सुबह के चार बजे हैं, आइए आपको कुछ शहरों की लाइव टेलीकास्ट दिखाते हैं ...ये है रामघाट के सुभाष मार्ग में शॉप नंबर नौ ...आप देख सकते हैं इस दुकान से शुरू होकर शराब खरीददारों की लंबी लाइन आगे एक किलोमीटर दूर गांधी चौक तक चली गई है! ...मैं धीरे-धीरे गांधी चौक की तरफ चहलकदमी करती हुई बढ़ रही हूं... महिला रिपोर्टर की मोहक आवाज में मदिरा वाली

खबर मनोहारी होती जा रही थी।

सर ने स्क्रीन पर गौर से देखा ...यह तो सुभाष चौक के कॉर्नर वाली शराब की दुकान है? और हलचल हंड्रेड का माइक थामे महिला रिपोर्टर तो उसके घर की तरफ ही बढ़ रही है! 6 मई वाली सुबह की शीतल बयार में भी रिपोर्टर की स्कर्ट पसीने से तर-बतर हो रही थी। मौके पर उसका वक्ष स्थल शायद अर्ध पारदर्शी हो चुका था, तभी तो स्क्रीन पर पारदर्शी हो चला था। सर को न तो टीवी में उस महिला के पारदर्शी हो चुके अंग-प्रत्यंग देखना उचित लगा, न ही बाहर बालकनी में जाकर साक्षात परखना। उसने टीवी बंद कर दिया, बालकनी से बाहर झांकती खिड़की भी ...मंत्री-प्रधानमंत्री का काम हम भला क्या जानें क्या समझें, हम तो गुरुगिरी करके जिंदगी जिए हैं, ऐसे ही जीते रहेंगे।

साढ़े पांच बज चुके थे; उसकी नींद भी नशेड़ियों की तरफ चल पड़ी थी, सोने का उपक्रम करना व्यर्थ था। भले लोगों के लिए लॉक-थ्री का लोक लाज भागा नहीं था, स्वाभाविक ही भगत सिंह पार्क का रास्ता उसके लिए भूला हुआ ही था अभी तक। वह घर के अंदर ही डोलने लगे, अन्यमनस्क स्थिति में। शराब और शराबियों की बातें उनके जेहन से निकल नहीं रही थीं; याद आया, पीछे ताड़ी मोहल्ले के पवन की तड़प किस कदर बढ़ती गई थी दारू के लिए! लॉक वन से ही दारू के लिए उसकी छटपटाहट देखने लायक थी, दिन-रात उसकी चीख-पुकार सुनकर महात्मा-धर्मात्मा का भी कलेजा कांप उठता! फिर एकाएक उसकी चीख-पुकार शांत पड़ने लगी; पता चला वह पेट्रोल पीकर अपनी प्यास बुझाने लगा है। पवन के बारे में सोचकर उसे घिन्न आने लगी; उसे तो किसी अच्छे आदमी के बारे में सोचना चाहिए। अच्छे आदमी? हां, उसके कितने शिष्य तो श्रेष्ठ नागरिक बनने की राह पर हैं; कोरोना-मंडली और उसका कोरोना-कैबिनेट किसी देश की सरकार से क्या कम सोच रखते हैं! फिर तो उन्हीं के बारे में सोचना चाहिए। सोचना क्यों चाहिए, दारू सेवा के फौरी तौर पर शुरू हो जाने के टॉपिक पर बात ही कर लेनी चाहिए। पर अभी छह बजे तक तो अहम सोया होगा; सहज भी समय पर भला क्या जागता होगा! परवेज का कहीं नमाज पढ़ने का वक्त न हुआ हो; मंजरी बेचारी कोरोना स्वैच्छिक सेवा से थक कर आती होगी तो देर से जागती होगी, रामू तो राम जैसा सिर्फ नाम का है। हां, शायनी शायद फ्रेश हो गई होगी, ब्रह्म बेला में विज्ञान विषय में उतर जाना शायद अभी तक

उसकी हैबिट हो; विश्वास के साथ उसने शायनी का नंबर डायल कर दिया।

"...गुड मॉर्निंग सर! सब ठीक है न?" शायनी की आवाज में घबराहट तैर आई; इतनी सुबह सर का फोन देखकर शक-सुबहा के घेरे में जा बैठी थी।

"...यस-यस, एवरीथिंग इज ऑलराइट; बात ये है अभी सुबह-सवेरे मेरे घर के सामने दारूबाजों की लंबी लाइन लगी है, सोचा तुम्हारे कोरोना-कैबिनेट को सूचना तो दे दूं।" सर ने झेंपते हुए कहा; सुबह-सवेरे जीभ पर दारू की बात लाते हुए सर को ग्लानि हो रही थी।

"...हां सर, सरकार ने लिकर शॉप खोलने का फैसला लिया है; यह तो परसों रात का ही न्यूज है!"

"...आई एम सो सरप्राइज्ड! अस्पताल ठीक से चालू नहीं, दवाई की दुकान पूरी तरह खुली नहीं, दारू की किस्मत तो देखो; खुली तो पूरे आनंद-उल्लास-उत्सव के रूप में, पुलिस दलबल के साथ!" सर ने कहा, जैसे किसी नई दुनिया में पैर रखते ही पहली प्रतिक्रिया निकल रही हो।

"...यस सर, क्या बंद रखना है, क्या खोलना है यह सब तो गवर्मेंट के राइट्स हैं।"

"...बट आई डिमाँड स्कैनिंग ऑफ सच डिसीजन," सर की आवाज सख्त हो चली।

"...बट व्हेर यू विल सैंड योर डिमाँड सर?"

"...एटलीस्ट आई कैन फाइल प्रोटेस्ट पिटिशन बिफोर द कोरोना-कैबिनेट; यू पीपुल आर क्वाइट कैपेबल टू फाइंड आउट व्हाट इज राइट एंड व्हाट इज रॉन्ग इन द इंटरेस्ट ऑफ द नेशन!" बोलते-बोलते उसकी आवाज उपदेशात्मक होती गई, जैसे महाभारत के भीष्म पितामह शर-शैया पर पड़े-पड़े बोल रहे हों।

"...यस सर, आई विल टैल सहज टू डिसकस दिस ईशू टुडे ओनली।"

"...एंड हाउ यू बॉथ आर गोइंग ऑन! भोज-भात कब खिला रही हो ...हा-हा-हा" बोलकर सर की मीठी हँसी विहँस पड़ी, जैसे आशीर्वाद की फुलझड़ियां निकल रही हों।

"...जी..." वह आगे कुछ बोल न पाई, शादी की बात से झेंपकर।

"...साथियों, आज दो घंटे की सूचना मात्र पर हमें सुबह-सुबह वीसी करनी पड़ रही है, इसके लिए खेद है।" सहज ने वीसी की शुरुआत करते हुए कहा।

"...वीसी तो तुम्हारे जैसा ही सहज-सरल है, जब चाहो जहां चाहो चेहरा सामने कर दो!" बॉडी कवर पहनकर फेस शील्ड लगा चेहरा दिखाते हुए रामू ने कहा, आगे आवाज में मसखरापन लाते हुए बोला, "तुम वीसी का एडमिन हो, समझो हमारे कैबिनेट का प्रधानमंत्री हो तुम, जब चाहो मीटिंग करो तुम्हारी मर्जी!"

'...आज की चर्चा का एकमात्र परंतु ज्वलंत प्रसंग है लॉकडाउन के चालू रहते कल से दारू की दुकानों का अचानक खुल जाना!' सहज सीधे विषय पर खुल पड़ा।

'जेड सर के प्रोटेस्ट पिटिशन पर फोकस करना आज की मीटिंग का एजेंडा है; सर ने सुबह-सुबह फोन किया था, लिकर खरीदने वालों की लंबी लाइन गांधी चौक तक आ पहुंची है, पूरे प्रदेश में यही हालात हैं।' शायनी विषय-वस्तु की प्रस्तुति जैसी बोलने लगी।

"हां यार; चारों तरफ लॉकडाउन चल रहा है, स्कूल-कॉलेज बंद हैं, अस्पताल बेदम हो रहे हैं! लेकिन दारू की दुकानों में उत्सव दिखने लगा है!" परवेज की आधी आवाज नाक से निकल रही थी, घृणापूर्ण तरंग में तब्दील होते हुए।

"...भैया बता रहे थे सरकार को पैसे की किल्लत हो रही है, बस्ती में आगे से चावल-गेहूं शायद ही बंट पावे!" मंजरी बोली, स्क्रीन में उसकी सूरत मातमी बन पड़ी।

"...बस्ती तो चावल-आटा के बिना हवा पीकर भी रह लेगा, लेकिन सरकार के घर चूल्हे बंद हो जाएंगे! उसका क्या होगा? ऐन वक्त पर दारू की आमद के अलावा दूसरा उपाय ही क्या है?" अहम बोला, उसकी आंखों की दिशा से जान पड़ा जैसे सरकार के खाली खजाने से परावर्तित होकर लौटी हों।

"...हां दो-तीन दिन पहले पापा भी बता रहे थे, कई सीएम ने प्रधानमंत्री को त्राहिमाम संदेश तक भेजा है, यदि सरकार के राजस्व बहाल करने की अनुमति नहीं दी गई तो..." सहज ने कुछ याद करते हुए सा कहा।

"...यह तो सरकार के अधिकार क्षेत्र में है; कहां से पैसे बनाए कहां भुनाए!" परवेज बोला, जैसे कह रहा हो लानत है ऐसी सरकार पर।

"...अभी तो भारत के अंदरूनी हालात का ट्रेलर चालू हुआ है, असली पिक्चर आना बाकी है! समझो देश की बहुत बड़ी आबादी गरीबी में ही जीते रहकर साधनहीन होकर भी आनंदलीन रहती है, इसलिए भारत महान है,

अन्यथा फटा-नंगा जहान है!" अपनी सामान्य शैली से अलग अंदाज में बोला अहम; बोलते-बोलते उसने आंखें बंद कर लीं, जैसे बंद आंखों में कश्मीर से कन्याकुमारी तक की तस्वीर उतर रही हो।

"...मेरे विचार से दारू वाला मुद्दा सरकार के राजस्व से जुड़ा हुआ मसला है, इस पर तुरंत तर्कसंगत धारणा बनाना जल्दीबाजी होगी; इस मुद्दे पर कोरोना-कैबिनेट में कभी खुलकर चर्चा होनी चाहिए; आज सभी को अपने रूटीन पर काम करना है, इसलिए आज की वीसी यहीं समाप्त की जाती है, जय हिंद, जय भारत।" सहज ने मुस्कुराते हुए बात समाप्त की।

आज भीमरवा सुबह से ही चालू हो गया था ...खस्ताहाल ...बेहाल ...बेदम ...बेजान ...बेदिमाग ...

9

सरकार की तरफ से लॉक-थ्री की घोषणा हो रखी थी; 4 मई से। हकीकत में सड़कों-गलियों-बाजारों पर से लॉकडाउन उठ चुका था; सरकार द्वारा लॉकडाउन वापस लेने की किसी औपचारिक घोषणा के बगैर ही। लॉक-टू के दौरान सरकारी ही नहीं, निजी वाहनों को भी रेवड़ी की तरह ई-पास जारी किए गए थे। लॉक-थ्री में बिना पास के भी सड़कों पर वाहनों की भेड़चाल शुरू हो गई थी, कोरोना-पूर्व स्थिति जैसी ही। सड़कों-गलियों में बाइक वगैरह तो जैसे आजादी के बिगुल बजा रहे थे। कंधों पर थैला लटकाए लोग जरूरी काम के नाम पर बाजारों में बेखौफ घूम रहे थे, जैसे कोरोना की खोज में निकले हों! जनता का बहुमत मास्क धारण कर निकलना अपनी शान के खिलाफ समझ रहे थे; अल्पमत नाक के नीचे तक ही मास्क लगाना अपनी अक्लमंदी समझने लगे थे। मास्क लगाकर युवा दिखने का क्रेज अधेड़ महिलाओं में बढ़ रहा था; युवतियां मास्क लगाकर चलना सौंदर्य का शोषण समझने लगी थीं। नवयुवकों के बहुमत ने तो पहले से ही मास्क लगाना बंद कर रखा था; जैसे डार्विन की थ्योरी को नकारने की सामूहिक घोषणा करते फिर रहे हों, कि उनके पूर्वज पहले कभी बंदर थी। मोबाइल के रिंग टोन से मास्क लगाकर चलने की उद्घोषणा जारी था; लोग इसे समुद्री तूफान आने की पूर्व सूचना जैसे सुन मात्र रहे थे, जहां तूफान आना है वहां के लोग जानें हमें क्या! स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा रोज-रोज जारी होते सर्कुलर कबाड़ में पड़े कागज जैसे हो चले थे, छोटे कबाड़ से बड़े कबाड़ में चलायमान मात्र।

सोशल मीडिया में सिने कलाकारों के गंभीर स्वर में शूट किए एंटी कोरोना क्लिप कभी-कभी ही वायरल होते; उनकी अब तक की सबसे कमजोर कलाकारी जैसे। प्रधानमंत्रीजी द्वारा मास्क लगाने की अपील कई दिनों से पर्दे में न दिखने से लोग-बाग बेफिक्र हो चले थे, जैसे कोरोना को बढ़ाने-घटाने का कंट्रोल-पैनल प्रधानमंत्री आवास में लगा हो। प्रधानमंत्री को रहने दीजिए एक देश हजार काम, निठल्ले बैठे विरोधी दलों के नेताओं के मुँह से भी जन-अपील की एक पंक्ति नहीं निकल पा रही थी जैसे कोरोना उनके बगल में ही बैठा हो और मुँह खोलते ही अंदर समा जाएगा!

ऐसे निराशाभरे समय में भी रामघाट जिला प्रशासन ने हार नहीं मानी थी। पिछले एक महीने से वीसी वेबिनार से कामकाज संभाल रहे डीएम-एसपी पर कुछ प्रभावकारी करने का दबाव बढ़ चला था। चहुँ ओर लोग बाग पहले-जैसे ही आ-जा रहे थे; पिछले साल-जैसी ही जानलेवा गर्मी को इस बार कोरोना की दवा मानते हुए। जिला सभागार में सोशल डिस्टेंसिंग के साथ बैठक बुलाना कोरोना प्रोटोकॉल का उल्लंघन नहीं जान पड़ा डीएम को; पचास दिन बाद आज जिला शांति समिति की बैठक रख ही ली। हालांकि बैठक रख लेने के बाद डीएम को पछतावा भी होने लगा था, जिला शांति समिति की बैठक में पहुंचे लोग कहीं इस बैठक को कल घोषित बीस लाख करोड़ पैकेज की प्रचार बैठक न समझ लें!

"घर से सांस थामकर यहां तक पहुंचे सभी सज्जनों का मैं स्वागत करता हूं, साथ ही रामघाट में लॉकडाउन को लागू कराने और कोरोना प्रोटोकॉल का पालन कराने में दिए सहयोग के लिए धन्यवाद करता हूं।" कुर्सी में आकर बैठे डीएम ने बिना किसी की तरफ देखे शुरुआत की; रामघाट के अपने पूरे कार्यकाल में चुस्त रहे डीएम आज सुस्त दिख रहे थे; आगे बोले, "लॉकडाउन वन और टू में देश का लक्ष्य था—जान है तो जहान है, थ्री में लक्ष्य एक कदम बढ़कर हो गया है—जान भी है जहान भी! लॉक-थ्री में सरकार ने बंद अर्थव्यवस्था के कुछ द्वार खोलने की अनुमति दी है, साथ ही कई तरह की समस्याएं भी प्रकट हो आई हैं; हमें पूरी उम्मीद है रामघाट की महान जनता से हमें आगे भी सहयोग मिलता रहेगा।" अब मुंह से मास्क उतारते हुए हॉल में बैठे नागरिकों की तरफ पूरी आंख उठाकर कहा, "सबसे पहले आप लोगों से शहर की समस्या के बारे में फीडबैक लेना जरूरी है; उत्तर पश्चिम साइड में बैठे सज्जन से शुरू करते हैं, आप तो रामघाट के परिचित चेहरे लग रहे

हैं, हंसामल जी के बेटे हैं आप शायद!" अब डीएम के चेहरे में बदलाव की रेखाएं उभर आईं।

"सर इन माय ऑपनियन आज के डेट में देश के साथ-साथ रामघाट की भी एक बड़ी समस्या है सड़कों पर जमे प्रवासी मजदूरों का खौफनाक दृश्य! घर जाने के लिए व्याकुल बैठे लोगों का दर्द हमें महसूस करना होगा, उन्हें घर तक छोड़ने के लिए आपसी सहयोग से बसों का इंतजाम करना हम सब का दायित्व बनता है।" सहज ने किसी संत भांति कहा।

"बस के बारे में ज्यादा नहीं बोलने का! आपकी पांच बसें कोतवाली में सही-सलामत खड़ी हैं; और पच्चीस बसों का इंतजाम कर दीजिए, सभी प्रवासी मजदूरों को बसों में भरकर उनके घरों तक छोड़ आइए और कोरोना हीरो का तमगा पाइए।" बिना मास्क के ही बैठक में आए निशांत कुमार एसपी का चेहरा तमतमा उठा, लगा जैसे सभागार में बैठे सज्जनों पर चढ़ बैठने के इरादे से आया हो। एसपी साहब का 'अंदाज' देखकर सभागार में सन्नाटा पसर गया; सभी तिरछी नजर से बगल वाले को देखने लगे, कि अब आगे कौन बोलेगा! लंबी चुप्पी को सामान्य शिष्टाचार के खिलाफ जाता महसूस कर जेड सर गला खखारकर बोले, "डीएम साहब आज की बैठक आपने रखी है, शहर के अलग-अलग हिस्से से आए नागरिक यहां आपकी बात सुनने आए हैं," फिर उसने बैठे नागरिकों की तरफ नजर उठाकर कहा जैसे सबकी सहमति से बोल रहा हो, "आपने लॉक-थ्री में शहर में नई समस्याओं का जिक्र किया है, आप आगे बताएं हम सभी पूर्व भांति पूर्ण सहयोग करेंगे।"

"मैं वही सब सामने रखना चाहता हूं जो आप सभी के सामने दृश्यमान हैं; बड़ी आबादी के लिए घर बैठे घर चलाना मुश्किल-सा होता गया है, लॉक-टू के समय सीएम साहब की मीटिंग में मैंने सुझाव दिया था इतनी बड़ी आबादी को एक महीना भी मुफ्त में खिलाना मुश्किल होगा देश-प्रदेश के लिए! आपलोग साक्षात देख रहे हैं शहर में हर जगह लोगों की आवाजाही पूर्व भांति चालू हो गई है, ऐसा लग रहा है जैसे लॉकडाउन वापस ले लिया गया हो! रामघाट में पूरे देश में कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है, पर यहां तो जनता लोग कोरोना से बेखौफ हो चले हैं, बिना काम के भी सरेआम सड़कों-गलियों-बाजारों में निकल आए हैं!" आगे उसने सिर को डरावने अंदाज में हिलाते हुए कहा, "यह स्थिति रामघाट के

लिए जानलेवा हो सकती है! बस अब हम जनता-जनार्दन की शरण में हैं, आपलोग ही सुझाव दीजिए हालात को कैसे संभाला जाए।" डीएम ने सामने हाथ जोड़ लिए; देर तक जोड़े ही रहे।

"ऐसे में तो पुलिस को ही सख्ती करनी पड़ेगी।" एक कोने में दुबके अहम ने कहा, बिना चेहरा दिखाए।

"हद हो गई! भाई साहब, पुलिस बेचारे तो पचास दिन से पिसे हुए हैं, दो महीने होने जा रहे हैं पुलिस बल ने ठीक से सांस नहीं लिया है! चौक-चौराहों-सड़कों-गलियों पर अभी तक दिन-रात डटे हैं, कोरोना के घातक डंक झेलते हुए।" एसपी निशांत कुमार ने हड़काने के अंदाज में कहा; आगे मुद्रा को साधुमय बनाते हुए बोला, "अब वे सुस्त पड़ने लगे हैं, आखिर वे भी तो जीव हैं!"

"सर उन्हें थोड़ा और धैर्य रखने को बोलिए, आगे लॉकडाउन खत्म होते ही वैसे भी वे फिर से चुस्त हो जाएंगे!" कोने से आवाज आई।

"कौन मुंह छुपाकर बोल रहा है जी! सामने तो दिखो।" एसपी निशांत का चेतावनीभरा स्वर था; डीएम की तरफ देखकर वह झुंझला उठा, "शांति समिति की बैठक में ऐसे मुंहफट लोग बैठे हैं तो मेरा यहां होने का कोई मतलब नहीं है!" बोलकर वह जाने के लिए कुर्सी से उठ खड़े हुए। डीएम ने चेहरे की याचनापूर्ण भाव-भाषा से उन्हें बैठने का अनुरोध किया; वह कुर्सी पर वापस बैठ गए, उस कोने की तरफ घूरते हुए।

"अलग-अलग लोग यहां पर भिन्न-भिन्न बातें करेंगे; यहां पर शहर के सम्मानित नागरिक जेड सर भी बैठे हैं, मैं उनका हार्दिक आभार प्रकट करता हूं, हमारे आमंत्रण पर वे शांति समिति की बैठक में हमेशा शिरकत करते आए हैं, आज हमें फिर से उनके गंभीर सुझावों की जरूरत है, आप कृपया हमारा मार्गदर्शन करें।" बोलकर डीएम, जेड सर की तरफ सिर झुकाने-सा झुके।

"मैं सीधा-सपाट बोलूंगा; आज के दिन स्थिति ऐसी बन गई है कि हमारे-आपके किसी के कहने-सुनने, विनती करने से जनता पर कोई असर नहीं पड़ने वाला!" जेड सर ने कहा तो उसका सिर देर तक तरंगित होता रहा, लगा जैसे सामने दुर्दिन जैसे दृश्य दिख रहे हों।

"फिर किसकी सुनेंगे?" एसपी ने तुनककर कहा, जैसे किसी ने अनजाने में उसकी सत्ता को चुनौती दे दी हो।

"यह सवाल अब सिर्फ रामघाट का नहीं है, बल्कि पूरे देश का है कि

किसकी सुनेंगे? जनता कर्फ्यू की करिश्मा वाली बात जनता ने माननीय प्रधानमंत्रीजी के मुंह से सुनी, मन-मस्तिष्क में गुदगुदी का आनंद लेते हुए; लॉकडाउन की विराट घोषणा देश ने प्रधानमंत्री के मुंह से ही सुना; दीप-दीए का नुस्खा पूरे देश में आजमाया गया, प्रधानमंत्री के कहने पर ही!" अब आगे बोलते हुए जेड सर की सूरत डरावनी हो चली, "अब जबकि कोरोना के पद चरण शहर-शहर गांव-गांव में पड़ चुके हैं ऐसे में सत्ता का मौन-मुख भांपकर लोग बाग बेखौफ होकर सड़कों पर निकल पड़े हैं, अब जनता भला कहां रुकने वाली है!"

"लेकिन लॉकडाउन तो चल रहा है।" डीएम ने नीतिगत बातें कीं।

"आप चलाते रहिए लॉकडाउन कागजों पर, जनता ने खुद ही लॉकडाउन उठा लिया है!" सर ने कहा; उसकी भाव-भंगिमा ऐसी बन आई जैसे किसी राजा को उंगली पकड़ाकर राजगद्दी से नीचे उतार रहे हों।

"आपके विचार से सरकार को अब क्या करना चाहिए?" पार्टी के शहर प्रकोष्ठ अध्यक्ष हरदेव शाह ने जेड सर को खा जाने वाली आंखों से देखते हुए कहा।

"प्रधानमंत्रीजी के मुंह से निकले हर एक वचन-वाणी का जनता अनुसरण करती आई है, मेरे विचार से सड़कों-बाजारों में बिना मास्क-बिना सोशल डिस्टेंसिंग के बेवजह घूम रहे लोगों के लिए प्रधानमंत्रीजी की तरफ से एक राष्ट्रीय प्रवचन होना चाहिए!" जेड सर ने हर्षित होकर कहा। सर के सामने पार्टी मंथन-मंच के विचार-पुरुष काशीनाथ बैठे थे; उसके मस्तिष्क का संवेदी सूचकांक फड़फड़ा उठा ...'प्रवचन' शब्द के उच्चारण में जेड के चेहरे में व्यंग की अदृश्य रेखाएँ उभर आईं थीं? उसे लगा अंदर कोई बड़ा विस्फोट-सा हो गया है; जेड सर पर उबल पड़े, "क्या कहा आपने मास्टर साहब? प्रवचन! तो क्या माननीय प्रधानमंत्रीजी द्वारा समय-समय पर कही गई ऐतिहासिक बातों को आप प्रवचन कहते हैं! आपलोग ने उन्हें साधु-संत समझ रखा है क्या?" उसकी आवाज और ऊंची होती गई; सभागार में क्रांति-सी आ गई जान पड़ी।

"साधु-संत बनने की राह पर निकल पड़े को कोई रोक पाया है आज तक!" सभागार के बीच से आवाज आई।

"कौन बोल रहा है? अपना नाम बताइए जरा।" पार्टी के जिला महासचिव ने खड़े होकर कहा, ललकारने के अंदाज में; फिर रुक-रुककर बोले, "अरे

भाई पूरी दुनिया में भारत का डंका बज रहा है! भारत ने अमेरिका, ब्राजील समेत दुनिया के कई देशों को हाइड्रोक्लोरोक्वीन भेजी है, सभी देश भारत का धन्यवाद कर रहे हैं! और आपको प्रवचन दिख रहा है?"

"सभी देश हमारा धन्यवाद कर रहे हैं तो यह कौन-सी नई बात है! जब हम किसी को कुछ देते हैं तब सामने वाले का धन्यवाद बोलना तो सामान्य शिष्टाचार की बात है, यह भला ढोल बजाने की बात है!" सभागार के बीच से किसी की भेदक आवाज आई।

"मैं माफी चाहता हूं; अपना शब्द ज्ञान ठीक करते हुए कह रहा हूं प्रवचन नहीं सुवचन!" जेड सर ने हाथ जोड़ लिए।

"डीएम साहब, गुरुजी शब्द में चाहे जो तब्दीली कर लें हमें तो लग रहा है वह पुरानी पार्टी का छद्म प्रचारक है!" जेड सर की ओर उंगली दिखाते हुए रामनरेश मैदान में कूद पड़ा, बांह से पंजे तक हाथ सीध में रखते हुए; भंगिमा ऐसी कि सीमा पार के दुश्मनों को भी यहीं बैठे-बैठे नेस्तनाबूद कर देगा।

"सलाह देने वालों को आपलोग विरोधी पार्टी का एजेंट करार देते हो, सही बात बोलने वालों को राष्ट्र विरोधी का तमगा देते हो! ऐसे में मीटिंग में आने से क्या फायदा?" बोलकर परवेज जाने को हुआ; सहज-शायनी भी उठ खड़े हुए।

"जब शहर में मतभेद इतने गहरे हों, जनता से सहयोग की उम्मीद करना बेमानी है, जनता जिए-मरे खुद तय करें।" डीएम ने लाचारी व्यक्त की।

"आपकी सरकार भी तो यही चाहती है!" कोलाहल के बीच से आवाज आई।

"अब हम अपने ढंग से निपटेंगे।" एसपी का जोश बरकरार था। शुरू से अंत तक चुप बैठे सीएमओ ने भयातुर-सा सिर हिलाया। औपचारिक समापन के बिना ही शांति समिति की बैठक शांत पड़ गई।

10

25 मई आते-आते रामघाट जिले में कोरोना संक्रमितों की संख्या दस हजार पार कर गई थी। अकेले रामघाट शहर में यह आंकड़ा आठ हजार पार कर चुका था। जिला अस्पताल में कोरोना मरीजों की आवक बेतहाशा बढ़ने लगी। नई-पुरानी सभी पार्टी के नेता-कार्यकर्ता भूमिगत से हो गए थे; जैसे 'सबसे पहले अपनी जान' के मुद्दे पर उनके बीच कोई मतभेद नहीं हो, या ऐसा

कोई मतभेद उनमें कभी रहा ही न हो। जनता से चुनाव के समय ही पार पा लेने का सिद्धांत कोरोना-काल में शाश्वत होता दिख रहा था। शहर के पांच बड़े प्राइवेट अस्पतालों ने अखबारों में नाम कमाने का अवसर हाथ से न जाने दिया; प्रशासन ने उनके पचास प्रतिशत बेड कोरोना पेशेंट के लिए आरक्षित कर दिए तो उन सभी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। प्रशासन द्वारा बेड आरक्षित किया जाना और अखबारों में उन अस्पतालों के नाम आना कागज के खेल जैसा था, तो हकीकत में मरीज का भर्ती न हो पाना असली खेल! कोरोना अस्पताल होने का एक बार ठप्पा लगने का मतलब था कारोबार पर हमेशा के लिए काला साया पड़ना। रामघाट सुपर सेवन हॉस्पिटल ने भली-भांति हिसाब-किताब मिला लिया, अपने हॉस्पिटल में कोरोना पेशेंट को ना लेने के एवज में पितर-प्रशासन को पटाने में जितना खर्च आया उससे ज्यादा लॉस कोरोना अस्पताल का लेवल लग जाने पर होता। गुडविल हॉस्पिटल वालों ने तो मेडिकल माइंड से काम लिया। शुरू के पांच-सात कोरोना मरीजों के लंबे-चौड़े बिल की लंबी खबरें अखबारों के छोटे-छोटे कॉलम में आने लगी थीं; कोरोना पेशेंट का उधर का रुख करना स्वतः ही मंद-बंद पड़ गया। अधिक वसूली वाले मामले में प्रशासन द्वारा शुरू की गई कार्रवाई के मुंह को ही बंद करवा दिया था हॉस्पिटल मैनेजिंग कमिटी ने, मुंह के साइज का थैला फेंककर। बाकी तीन अस्पतालों ने इन दोनों से पूछकर, सीखकर मिला-जुला मेथड अपनाकर कोरोना मरीजों को टरकाने में लग गए थे।

महिला वार्ड नंबर एक और दो चार-पांच दिनों से भरा रहने लगा था। आईसीयू वार्ड में कल से रोटेशन शुरू कर देना पड़ा था। मंजरी का महिला वार्ड से आगे आईसीयू वार्ड तक जाना नहीं होता था। सिस्टर मारथा से एक-दो बार बातचीत हो जाती थी; केरल के सिस्टर लोगों की हँसी कितनी निश्चल-निर्मल होती है! कल शाम को ऑक्सीजन सिलेंडर का स्लिप लिए वह स्टोर की तरफ उड़ी जा रही थी; बरामदे में मंजरी से सामना हुआ तो बोलते हुए भागी थी, "आईसीयू का कंडीशन क्रिटिकल हो जाने का!" उसने पहली बार मारथा दीदी के चेहरे से हँसी गायब देखी। मारथा के लौटते हुए में वह घबराहटभरा चेहरा लिए पूछी थी, "आईसीयू में क्या चल रहा है दीदी?" अपनी चाल धीमी करते हुए वह बोलती गई, "कल से क्रिटिकल पेशेंट काफी बढ़ जाने का, टुडे मॉर्निंग तुम्हारे वार्ड से ही तीन आने का; आईसीयू में ओणली टेन बेड होने का, पेशेंट होने का चौदह; करेगा तो क्या करेगा! थ्री-फोर

आवर्स में क्रिटिकल पेशेंट को हटाते रहने का, मोस्ट क्रिटिकल को लिटाते रहने का," फिर चलते-चलते बोली, पलकें झपकाते हुए, "क्रिटिकल पेशेंट टु-थ्री आवर्स में मोस्ट क्रिटिकल बन जाने का!" तब मंजरी को मार्च महीने में डीएम की मीटिंग में शायनी द्वारा दिए सुझाव याद आने लगे; फिर सीएमओ साहब द्वारा कोरोना-मंडली के समक्ष आईसीयू की हालत पर व्यक्त की गई लाचारगी की याद आई। बरामदे में खड़े-खड़े उसने पूरे अस्पताल परिसर पर नजर दौड़ाई; सभी डॉक्टरों-नर्सों को मन-ही-मन नमन किया ...आप आज के सच्चे देवता हो! कोरोना संक्रमण से बेखौफ होकर कोरोना पीड़ितों को जीवन दान दे रहे हो, अपने खुद के घर-परिवार पर आसन्न खतरों से समझौता करते हुए...। उसके वार्ड में दो महिला मरीज की छाती धौंकनी जैसी फूलने लगी थी, वह उधर ही दौड़ पड़ी; यह सोच न पाई, अस्पताल की अव्यवस्था के लिए आखिर कौन जिम्मेदार है?

स्वयंसेवक के तौर पर मंजरी महिला वार्ड के रिसेप्शन में सेवा देती आ रही थी। वहां से आगे की ड्यूटी उससे लिया जाना तकनीकी रूप से निषिद्ध था, भले ही खुद की पहल से महिला वार्ड के दरवाजे तक जाकर कोरोना मरीजों की मदद कर आती थी। वार्ड में भर्ती महिलाओं को अपनी सेवा से प्रफुल्लित होते देखकर उसके अंदर उत्सुकता जगने लगी, आईसीयू वार्ड में भर्ती मरीजों को सेवा देने की अदृश्य लालसा सी। अभी ड्यूटी सुपरवाइजर खुद उसके डेस्क तक आया। उसने जो सूचना दी सुनकर पहले तो वह अचंभित हुई, फिर मन-ही-मन हर्षित; आईसीयू की कौन पूछे सीएमओ लेवल से उसकी ड्यूटी सीधे वेंटिलेटर यूनिट में लगा दी गई थी! उसे तो विश्वास ही नहीं हुआ, इंटेंसिव केयर में बिना औपचारिक प्रशिक्षण पाए उसकी ड्यूटी वेंटिलेटर केबिन में लग सकती है! मंजरी बायोलॉजी स्ट्रीम में 12वीं पास थी; स्वाभाविक ही मेडिकल सर्विसेस में अपनी अनभिज्ञता से वाकिफ थी।

सांस थामकर उसने यूनिट में प्रवेश किया। एक सज्जन वेंटिलेटर पर चढ़ा हुआ था। वेंटिलेटर के असेंबलिंग को वह गौर से देखने लगी। हर पाइप ट्यूब पर नजर टिकाती गई; एक्जॉस्ट फैन, कंप्रेसर पंप, इन्सपायरेटरी लिंब, एक्सपायरेटरी लिंब, ऑक्सीजन सेंसर, फ्लो सेंसर, मिक्सर ब्लॉक, ब्लेंडर, कंट्रोलर बोर्ड.. कुछ भी उसकी पकड़ में न आ पाए। स्क्रीन पर उगते-बुझते टेढ़ी-मेढ़ी कई लाइनें और 0 से 200 के बीच आती-जाती-भागती संख्या!

देखते रहने के सिवाय कुछ भी उसकी समझ में न आ पा रहा था। हर सेकेंड पर बदलती आवाज ..पीप-पीप.. सीप-सीप.. टीप-टीप.. ने उसकी धड़कनें बढ़ा दीं, पेशेंट कहीं खतरे में तो नहीं है? बेड पर लेटे पेशेंट पर उसने नजरें गड़ाईं; अरे, पेशेंट तो आंखें फाड़कर उसे ही घूरे जा रहा है! उसने सुन रखा था जिंदगी और मौत से जूझ रहे मरीज को ही वेंटिलेटर सपोर्ट दिया जाता है। उसे ताज्जुब हुआ, वेंटिलेटर पर रखा मरीज इतने होश-हवास में होता है कि सामने खड़ी लड़की को टकटकी लगाए देखता रहे? अरे! मरीज अब तो मुस्कुराने भी लगा! वह असहज महसूस करने लगी। यूनिट में उसके करने लायक कुछ भी नहीं था; वह बाहर निकल आई। बाहर आकर पारदर्शी केबिन की तरफ मुड़कर देखा, उसके निकल जाने से मरीज की बेचैनी कहीं बढ़ तो नहीं गई है; पर मरीज की आंखें तो पहले से भी बड़ी हो गई थीं, उसी की ओर टकटकी लगाए! उसने आँखें बायीं ओर फेर लीं; केबिन के दरवाजे पर लिखे 'वीआईपी' पर उसकी नजर अटक गई।

"वेलकम यंग लेडी!" बायीं ओर वाले वेंटिलेटर यूनिट टू का दरवाजा खुलते ही किसी पुरुष की आवाज आई। मंजरी ने आवाज की तरफ आंखें उठाईं; पीपी किट के अंदर सिर्फ आंखें दिख रही थीं, पर होंठों की हँसी आंखों तक फैल गई लग रही थी।

"थैंक यू सर।" बोलकर वह दीवार के किनारे हो ली।

"सो यू हैव रिप्लेस्ड सिस्टर मिताली?" उसने सिर हिलाते हुए कहा, लगा जैसे अंदर उपजी तरंग से सिर हिला हो।

"बट सर आई एम ऑनली अ वोलंटियर फ्रॉम कोरोना-मंडली, आई डोंट नो एनीथिंग अबाउट वेंटिलेटर!" अब उसकी घबराहट जाती रही।

"नाइस टू सी अ वॉलंटियर फ्रॉम कोरोना-मंडली ऑफ रामघाट! फॉर एन अटेंडेंट देयर इज नथिंग टू डू सो मच इन वेंटिलेटर यूनिट, यू हैव टू जस्ट कीप वॉचिंग द वेंटिलेटर एंड ब्रीदिंग ऑफ द पेशेंट।" उसने वीआईपी यूनिट के अंदर झांकते हुए कहा।

"बट नॉट टू कीप वॉचिंग द आई ऑफ द पेशेंट!" मंजरी बोली तो मास्क के अंदर से मुस्कान छनकर बाहर आती प्रतीत हुई।

"हा-हा-हा स्मार्ट लेडी! वण वीआईपी इज रेस्टिंग इन यूनिट वन, आई कांट कमेंट अबाउट वीआईपी कल्चर।" बोलकर वह आगे बढ़ने को हुए।

"आई विल ट्राई माय बेस्ट सर"

"डोंट वरी, आई एम डॉक्टर रामा कृष्णा एमडी इन इंटेंसिव केयर; आई विल बी कमिंग ऑन रेगुलर इंटरवल्स; ड्यूटी ऑफ अटेंडेंट इन वेंटिलेटर यूनिट मे बि बोरिंग, बट यू मे हैव गुड गॉशिप विद सिस्टर दीपिका ऑफ यूनिट टू।" बोलकर डॉ रामाकृष्णा यूनिट से बाहर जाने लगे, बायां हाथ पीछे लहराकर बाय-बाय करते हुए। मंजरी को याद आया डॉक्टर साहब ने यूनिट वन के पेशेंट को तो देखा ही नहीं! उसने पीछे से आवाज दी, "सॉरी टू बॉदर यू सर, आपने यूनिट वन वाले पेशेंट को देखा ही नहीं!"

"नॉट टू वरी, ही इज ऑलवेज ऑलराइट!" बिना मुड़े ही उसने कहा, हाथ को ऊपर आसमान की तरफ ना-ना के संकेत-सा लहराते हुए। केबिन के बाहर रखी कुर्सी पर बैठने के सिवाय फिलहाल कोई और काम ना दिख रहा था मंजरी को; वह बैठ गई।

"अरी बिटिया, तोहार ड्यूटी इहां लागो हो।" पीछे से एक औरत मंजरी के कंधे पर हाथ रखते हुए बोली।

"हाय आंटी! मैं मंजरी, पहले महिला वार्ड रिसेप्शन संभाल रही थी।" कुर्सी छोड़ते हुए मंजरी ने जवाब दिया।

"सुना है तुम कोरोना-मंडली से हो! मेरा नाम दीपिका है, इंडियाना एनक्लेव में अपने प्रोफेसर पति के साथ रहती हूं।" होंठों पर छोटी मुस्कान के साथ वह बोली, आगे विस्मयपूर्ण ढंग से कहा, "मेरा बेटा इस बार यूजी कोर्स में दाखिला लेनेवाला है, अखबारों में कोरोना-मंडली के बारे में खबरें पढ़ा करता है; वह भी मंडली ज्वॉइन करने की जिद करने लगा है, पर कोरोना के इस माहौल में हस्बैंड ने मना कर दिया।"

"कोरोना-मंडली तो बनी थी इंडिया में कोरोना की नो एंट्री के लिए, कोरोना को रामघाट में रोकने के लिए; वह तो ना हो सका, लेकिन हमलोग अपने स्तर से कुछ-न-कुछ करते रहते हैं।" मंजरी बोली, होंठों पर आशापूर्ण हँसी लहराते हुए।

"यहां तुम एज ए वॉलिंटियर सेवा दे रही हो, फिर तो तुम बड़े घर की होगी!" सिस्टर ने आश्चर्य प्रकट किया।

"नहीं आंटी, हम तो साधारण में भी साधारण घर से हैं; मेरे भैया का झोपड़ा बस्ती में रेलवे केबिन के पास है।" आगे चेहरे में गौरवपूर्ण दोलन लाते हुए बोली, "हिंदुस्तान में बड़े घर के लोग सेवा-संगठन चलाते हैं, सेवा तो साधारण लोगों से ही संभव है!"

"लेकिन तुम्हें सरकार से या किसी संगठन से महीना तो मिलता होगा!"

"आंटी इन फेक्ट हमलोग स्वैच्छिक सेवा दे रहे हैं, आउट ऑफ आवर सेन्स ऑफ सर्विस टू ह्यूमैनिटी," उसने कहा तो उसकी आंखों में संतुष्टि सागर झलक रहा था, आगे बोली, "वैसे जिन तीन-चार लोगों ने जिला अस्पताल में स्वैच्छिक सेवा देना स्वीकार किया है उन्हें कोरोना-मंडली के अंशदान फंड से कुछ सहयोग राशि दिया जाएगा।" बोलकर मंजरी ने आंखें बाहर की तरफ मिचकाईं, जैसे कह रही हो सेवा के बदले में मेवा की चिंता नहीं करनी चाहिए।

"महिला वार्ड वाली तुम्हारी ड्यूटी ठीक थी, वेंटिलेटर यूनिट में तो बहुत घिच-पिच है!" बोलकर वह चेहरे की माँसपेशी को ऊपर-नीचे खींचने-तानने लगी, जैसे किसी चीज से घिन्न आ गई हो।

"सो ऐसी क्या बात है?" मंजरी का चेहरा अबुझ-सा बन पड़ा।

"कोरोना में भी पॉलटिक्स कम होने का नाम नहीं ले रहा है रामघाट में!" सिस्टर दीपिका फुसफुसाकर बोली।

"कोरोना पॉलिटिक्स तो मकड़ी के जाल जैसा धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है, दिल्ली से शुरू होकर देश के कोने-कोने तक!" मायूसीभरी आवाज थी मंजरी की; फिर चिंतित स्वर में उसने पूछा, "सो यहां क्या घिच-पिच है?"

"अरी बिटिया, का बतावें! यूनिट नंबर वन में तुम्हारे बस्ती का ही कोई सीरियस पेशेंट था दो दिन से, उसकी हालत में सुधार आने लगा था, उसे एक दिन और वेंटिलेटर सपोर्ट चाहिए था..." आगे बोलते-बोलते रुक गई वह।

"मिलना चाहिए था! मतलब? मिला नहीं क्या!" मंजूरी विस्मित होकर बोली।

"अरे कल रात यूनिट वन खाली करा लिया गया, इन महाशय के लिए!" आंखों से यूनिट वन की ओर इशारा करके सिस्टर बोली, मंजरी के कान के पास मुंह सटाकर; नाक पर हथेली धरकर, स्वर-सुरक्षा का ख्याल रखते हुए।

"कौन हैं यह महाशय?"

"अरे? तुम्हें नहीं पता! पार्टी के दबंग लीडर हैं, रामघाट आउटर के विधायक यही तो हैं; रमदरस बाबु!" सिस्टर ने आवाज में चढ़ाव-उतार लाते हुए परिचय पूरा किया; जैसे ग्राम-देवता की स्तुति का मुखड़ा गद्य शैली में सुना रही हो।

"अच्छा! अच्छा वो, जेड सर बातचीत में कभी बता रहे थे; ये वाले एमएलए साहब ने तो कोरोना से बचाव के लिए अपने महल की जबरदस्त

किलेबंदी कर रखी है, फिर भी कोरोना के शिकार हो गए!" फेश शील्ड के अंदर आंखों में हुई हलचल से जान पड़ा मंजरी मुँह बिचकाई होगी।

"अरी बिटिया इनको कोरोना जो क्या हुआ है, एंटीजन टेस्ट में पॉजिटिव रिपोर्ट आते ही वेंटिलेटर की शरण में आ गए हैं; अरे महाशय आरटी पीसीआर टेस्ट रिपोर्ट का इंतजार तो कर लेते!"

"नेता लोग स्वास्थ्य के मामले में भी बड़े सुरक्षा कवच में रहते हैं, फिर भी ये हालत है!"

"मंजरी बिटिया, मैं तो रामजी की भक्त हूं, रामजी जो चाहेंगे वही होगा!"

"यह तो सबसे बड़े राम भक्त हैं, इन्हें तो नहीं होना चाहिए था कोरोना?" मंजरी के होंठों में फैला व्यंग्य आंखों में भी उतर आया।

"जैसी करनी वैसी भरनी।" सिस्टर ने दोनों हाथ ऊपर की ओर उठा दिए।

"और इधर यूनिट टू वाले पेशेंट की क्या हालत है?" मंजरी को एकाएक ध्यान आया यूनिट टू में भी मरीज लेटा हुआ है।

"आईसीयू से आज ही शिफ्ट करना पड़ा है; हर कंडीशन इज इंप्रूविंग, एक-दो दिनों में आईसीयू वार्ड में शिफ्ट किया जा सकेगा।" लंबी सांस लेते हुए सिस्टर संतुष्ट नजर आई।

"अगर शाम तक कोई और वीआईपी आ धमका तो बिचारी का रामजी ही मालिक होगा।" मास्क के अंदर से मंजरी की अनचाही हँसी निकली, फिर चौंकते हुए पूछा, जैसे अचानक कुछ याद आया हो, "बस्ती वाले उस पेशेंट की क्या हालत है अभी?"

"मैं तो आईसीयू में जाती नहीं हूं, सिस्टर मेघा बता रही थी यदि फिर से वेंटिलेटर सपोर्ट नहीं मिला तो..." सिस्टर मुंह से अशुभ नहीं बोलना चाह रही थी।

"यदि कुछ अनहोनी हो गई तो बस्ती वाले पूरे शहर को माथे पर उठा लेंगे! मेरे भैया उदय तो उबल ही पड़ेंगे।" मंजरी का स्वर सख्त हो चला।

"अच्छा! तो तुम उदय जी की बहन हो!" मंजरी पर प्यार बरसाते हुए सिस्टर ने कहा; आगे बड़ा दिल रखने जैसी बोली, "रामजी सबका भला करें; और वह लड़का कौन है जो कभी-कभी तुम्हारी तरफ आता है!" बोलने के बाद उसकी आंखों में शरारत तैरने लगी।

"अरे वो!..." मंजरी आगे बोल ना पाई; आंखें झुक गईं। सिस्टर सब कुछ समझते हुए बोली, "अरे छोरी! कोरोना-मंडली स्वैच्छिक सेवा-मेवा अपनी

जगह है, अभी तो तुमलोगों की उम्र है जीने-खाने की! उस लड़के की चाल से ही लग रहा है बड़ा दिल वाला ही नहीं फौलादी इरादे वाला भी है! उसके साथ तो तुम्हें बड़ा...।" आगे के शब्द उसकी तिरछी आंखों ने पूरे किए; फिर यूनिट की ओर बढ़ चली, आंखें बड़ी कर बोलते हुए, "चेस्ट स्पेशलिस्ट के राउंड का समय हो चला है, फिर आती हूं।"

11

1 जून; आज से अनलॉक-वन चालू हो गया था, बड़ी उद्घोषणा के साथ; भवसागर में तैर रही एक सौ तीस करोड़ आत्मा को किनारे लगाने के बड़े मिशन जैसा! अनलॉक का फलाफल क्या होने वाला है इसका अंदाजा लगाना भले ही मुश्किल था, अनलॉक शब्द का उच्चारण और ध्वनि जन-जन को बड़ी भा रही थी। दोनों पार्टी के अधिकारियों-कार्यकर्ताओं की बाँछें खिल आईं थीं, अनलॉक को एक और बड़े राजनीतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने का पुलाव पकाते हुए। सत्ताधारी नेता-कार्यकर्ता देश को बचा लेने का गुमान पाले मस्त हो चले थे, तो बाकी पार्टियों के वक्ता-प्रवक्ता देश का बेड़ा गर्क हो जाने की जुबान चलाने में व्यस्त। बस्ती में लोग-बाग रात को ही सड़कों पर निकल आए थे; मध्य जून तक आने वाले मॉनसून से पूर्व जीवन के मॉनसून का आगमन समझकर। लोगों के मन और बस्ती के सुभाष मार्ग को छोड़ दें तो बाकी रामघाट शहर में आज कुछ भी नया नहीं था; कल 31 मई को बीते दिन और आज चालू हुए दिन में कोई फर्क नजर नहीं आ रहा था। शहर की सड़कों पर दौड़ रही गाड़ियों की तादाद और बाजार में चलायमान भीड़ वैसी ही थी जैसी बीते सप्ताह से हुआ करती थी। हां, कोरोना का खौफ जरूर कम हो गया था; लोगों के मन-मस्तिष्क में कोरोना की जगह अब कारोबार ने ले ली।

अनलॉक-वन के पदार्पण से रामघाट में जिसकी छटपटाहट सबसे ज्यादा बढ़ गई थी वह थे पार्टी के जिला अध्यक्ष हरेन्द्र ठाकुर। पार्टी मुख्यालय से उसे कल शाम से ही मैसेज पर मैसेज मिल रहे थे, जिला कार्यकारिणी की वीसी मासिक-पाक्षिक की बजाय साप्ताहिक रूप से करते रहने के लिए। देश-दुनिया में संभावित उथल-पुथल चमत्कार-चीत्कार के ख्याल आने लगे उसे; आज सुबह साढ़े ग्यारह बजे वीसी कर डालने की सूचना सेंट कर दी 'भारत उदय' ग्रुप में। वीसी आरंभ होने से पहले वह पार्टी मुख्यालय से मिले

दिशा-निर्देश को बार-बार पढ़-गढ़ रहे थे।

'..भारत राष्ट्र के नए युग में आप सभी का स्वागत है; आप सभी के सहयोग-समर्पण के बल पर ही हमारी पार्टी कोरोना जैसे महासंकट के समय और मजबूत होकर उभरी है, इसके लिए आप सभी का धन्यवाद।' अध्यक्ष ने बोलना शुरू किया, कार्यकारिणी सदस्यों के चेहरों से भरा स्क्रीन देखकर गदगद मुख-मुद्रा में; आगे दबाव के साथ सिर हिलाते हुए कहा, "मुख्यालय से मिले मार्गदर्शन पर हम बाद में चर्चा करेंगे, सबसे पहले अनलॉक के बारे में आप में से जो भी अपना बहुमूल्य मंतव्य देना चाहें, दे सकते हैं।"

'अब तो कोरोना के चरण हर प्रदेश, हर शहर से होते हुए हर गांव-गली में पहुंच चुके हैं, ऐसे में लॉक-अनलॉक हमारे पल्ले नहीं पड़ रही है!' जिला युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष रवि मोहन ने नीति-नीयत से इत्तेफाक नहीं रखने-सा हुलिया बनाते हुए कहा।

'जब कोरोना का आंकड़ा पांच-छः सौ था तब हमने लॉकडाउन शुरू किया था, अब तो यह आंकड़ा आज पाँच लाख पर पहुंच गया है! ऐसे में अनलॉक ले आना बेहद खतरनाक हो सकता है!' नीचे दायें किनारे वाले चेहरे के होंठ हिले थे।

'यह वाला मामला तो पार्टी के लिए उल्टा पड़ सकता है, जनता को समझाना मुश्किल हो जाएगा।' बीच वाले चेहरे से मंद स्वर निकला।

'मैं तथ्यपरक राय रखता हूं; हम-आप कोरोना विशेषज्ञ तो नहीं हैं न? एक से एक एक्सपर्ट सरकार के साथ दिन-रात बैठे हैं! हमें सरकार पर भरोसा रखना चाहिए, वह जो भी फैसला लेती है देश हित में ही तो लेती है; साथ ही पार्टी हित का भी ख्याल रखना होता है!' मंथन मंच के रामनाथ आलोक ने हस्तक्षेप-सा करते हुए कहा, व्यक्त की जा रही राय को पार्टी लाइन से बाहर जाता भांपकर।

'कृपया इस बिंदु पर सभी का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं,' अध्यक्ष ने ऊंची आवाज में कहा, स्क्रीन पर मायूस दिख रहे चेहरे सचेत हो उठे; आंखें छोटी करते हुए अध्यक्ष ने आगे कहा, "जनता को विश्वास में कैसे लेना है इस विधा के बारे में मैं आपको कई बार बता चुका हूं, जिला ग्रुप में कितनी बार तो मैंने सूत्र वाक्य दिए हैं!"

"जी सर, आपके मार्गदर्शन पर ही तो हम लोग जनता के बीच डटे हैं,"

"तो फिर आज की भीसी में जनता को ना समझा पाने की बात कैसे

टपक गई? लाखों-करोड़ों का पैकेज पंद्रह दिन में ही पंद्रह साल के बराबर असर कर गया है! आप लोग खुद गवाह हैं, लोग-बाग अभी भी दिन-रात न्यूज से चिपके हैं, कि न जाने पैकेज का कौन-सा अंश कब छिटककर उनकी झोली में आ टपके! पंद्रह दिनों में कितने ही स्लोगन-सूत्र हमने आपके साथ शेयर किए हैं, विश्व के सबसे बड़े पैकेज के बारे में; पैकेज के प्रारूप को आप लोगों ने जिस प्रकार जन-जन में पहुंचाया है हम आपका धन्यवाद करते हैं.."

"हां सर, अब आगे बताएं अनलॉक के बारे में क्या दिशा-निर्देश हैं?"

"कुछ बातें ऐसी हैं जिस पर मैं खुलकर चर्चा नहीं कर सकता, इतना भर जानना काफी है अनलॉक से पहले पार्टी मुख्यालय में इस पर काफी मंथन हो चुका है।" अध्यक्ष ने हर शब्द पर जोर डालकर कहा, आगे दाएं हाथ की उंगलियों का गुच्छा बनाते हुए बोलने लगे, "मंथन का निचोड़ यही है कि कोरोना अपने रास्ते अपनी रफ्तार से चलता ही चलता रहेगा, इस पर हमारा-आपका बहुत ज्यादा बस चलने वाला नहीं है, जैसा आंधी-अंधड़ के मामले में होता है; आंधी-तूफान चक्रवात में क्या होता है? क्या हम उसे रोकने का प्रयास करते हैं!" अध्यक्ष ने आंखें बड़ी करके स्क्रीन के चेहरों पर गड़ा दीं।

"वो भला रुकने की चीज है! हम तो बस क्षति कम करने के कदम उठाते हैं।"

"बिल्कुल सही पकड़ा आपने! हमने कोरोना को भी उसी रूप में लिया है; देश के कोने-कोने में अस्पताल हैं, दवाई है, इलाज चलता रहेगा! कोरोना से जितनी मौतें होनी हैं वह प्रभु ने तय कर रखी हैं! उस पर हमारा-आपका कुछ नहीं चलनेवाला है!" अध्यक्ष ने किसी निरंकारी बाबा भांति कहा; कुछ पल की चुप्पी के बाद बोले, जैसे किसी गुप्त ठिकाने से निकलकर बोल रहे हों, "यह सच है कि अनलॉक आ जाने से मृत्यु का आंकड़ा ऊपर की ओर बढ़ेगा, बट उससे अपन उतना लॉस नहीं होगा जितना लॉकडाउन चालू रहते होता!" बोलकर उसने दोनों हाथ दोनों दिशाओं में लहरा दिए, जैसे चारों किला फतह हो गई हों।

"लेकिन सर लॉकडाउन में सरकार की तरफ से चावल-गेहूं लगातार मिलता रहा जनता को, इससे तो हमारी जय-जयकार हो ही रही थी, लेकिन अब तो उल्टा पड़ सकता है!"

"एक सूचना मैं आपको दे दूं, चावल-गेहूं तो आगे भी बंटता ही रहेगा, पर चावल-दाल वाली जनता से आगे भी तो देश में नागरिक हैं भई! आप लोगों ने कभी गौर किया उनकी क्या राय है लॉकडाउन के बारे में?" अध्यक्ष ने चुप्पी साध ली; स्क्रीन के चेहरों में भी चुप्पी छाई रही।

"क्या राय है?" किस चेहरे के होंठ हिले, पता नहीं चला।

"देखो भई, देश के उद्योगपतियों, बड़े कारोबारियों-पूंजीपतियों का भारी दबाव था अर्थव्यवस्था खोजने के लिए, यदि लॉकडाउन आगे पंद्रह दिन भी बढ़ाया जाता तो हजारों कल-कारखाने हमेशा के लिए बंद हो जाते! करोड़ों-करोड़ों डूब जाते इन्वेस्टर्स के.."

"इससे तो देश तबाह हो जाता!" किसी ने अध्यक्ष के बोलने के बीच कहा।

"देश तो तबाह होता ही, साथ ही हम भी तबाह हो जाते!" अध्यक्ष ने कहा तो उसकी आंखें किसी खास बिंदु पर अटक गईं जान पड़ीं; स्क्रीन के चेहरे कांप उठे, लगा जैसे पूरी दुनिया में भूकंप आते-आते रह गया हो, थोड़ी देर बाद उसके होंठ खुले जैसे बोले या न बोले का युद्ध जीतकर आया हो, "यहां रामघाट में बैठकर हमें पता नहीं चलता है न! इतनी बड़ी पार्टी के नेटवर्क को विशाल देश में जन-जन तक कैसे जीवित रखना है दशकों-सदियों तक! यह भी कोई बताने की बात है पार्टी संचालित कैसे होती है; ये उद्योगपति-कारोबारी अगर बैठ गए तो समझिए पार्टी तो दफन ही हो जाएगी! अपनी पार्टी ही क्यों, सभी पार्टियों का यही हाल रहा है.."

"लोकतंत्र में यह तो स्वाभाविक ही है," स्क्रीन के तहखाने से आवाज आई।

"हां भई, कोई भी पार्टी हो वो उनके पदाधिकारी-कार्यकर्ता की जेब से नहीं चल सकती है न!" बोलते-बोलते उसने मोबाइल पर नजरें गड़ा दीं, आगे बोले, "पार्टी मुख्यालय से मैसेज है, आज साढ़े बारह बजे सभी जिला अध्यक्षों की वर्चुअल मीटिंग रखी गई है, मुझे अब उसकी भी तैयारी करनी है; अंत में एक बात बोलना चाहूंगा, यह अनलॉक देश के लिए, पार्टी के लिए एक ऐतिहासिक कदम है! आप सभी इसे 'अर्थव्यवस्था का अमृत' के रूप में जोर-शोर से जनता के बीच ले जाएं! जय हिंद-जय भारत!" मोबाइल में फिर से आए मैसेज देखते-देखते उसने कहा।

उस रात को पुकार-गुहार लगाते-लगाते भीमरवा का स्वर कुत्ता-सियार जैसा हो चला था...जोड़-तोड़...होड़-फोड़...

12

पुरानी पार्टी वाले छतरी लेकर निकल पड़े थे, शोर मचाने; तेरह मई से जारी लाखों करोड़ के पैकेज की भारी बरसात में। झमाझम बारिश में भला कौन किसकी पुकार सुन पाता है! घनघोर बारिश के दिनों में छतरी थाम कर '...आओ ...सुनो ...समझो...' की नीरस, पर अनवरत पुकार लगाना कोई आसान काम था क्या! पैर सुन्न-सा पड़ने लगे थे, हाथों से संकेत भी करना मुश्किल हो रहा था; मुंह की आवाज अंदर की ओर ही जाती जान पड़ रही थी। ऐसे 'सैंया भए बैरी' समय में पुरानी पार्टी को अनलॉक के धुंध में आगे कहीं अपना मुक्ति द्वार दिखने लगा था। पार्टी में भले ही अभी तक तय नहीं हो पाया था कि अनलॉक उसके लिए जनता के बीच जमने का एक और मौका है या फिर जोखिम? फिर भी पुरानी पार्टी को अनलॉक में एक नया स्वाद-सा महसूस हुआ, कब से खुले मुंह में अचानक आ टपके लड्डू-सा!

पुरानी पार्टी डिजिटल दुनिया में भी पिछड़ती गई थी, तेजी से। कारण चाहे पैसे का अभाव रहा हो या हुनर का, पिछड़ने-डूबने का मतलब यह कतई नहीं होता है कि संभलने-उबरने के लिए हाथ-पैर ही ना मारा जाए। वीसी करना अब तो सुबह-शाम वाली चाय के समान हो चला था। कल से ही अनलॉक जैसा महापर्व शुरू हो चुका था। नई पार्टी का अनलॉक आधारित वीसी का पहला चरण कल ही प्रचारित हो चुका था; ऐसे में पुरानी पार्टी द्वारा वीसी को एक दिन भी टालना अनलॉक की आनंदमयी बरसात में खुद डूबकर मर जाने के समान होता! पुरानी पार्टी के अध्यक्ष जयपाल मंडल ने आज सुबह ग्यारह बजे पार्टी कार्यकारिणी के साथ-साथ कार्यकर्ताओं की भी वीसी रख ली; वीसी का लिंक आम कार्यकर्ताओं तक तरंगित कर दिया, व्यापक जनाधार वाली पार्टी होने के तिलस्मी दिनों को याद कर।

"अब तक की सबसे बड़ी वीसी में आप सभी का स्वागत है।" शुरुआत करते हुई अध्यक्ष जयपाल मंडल ने कहा; उसके चेहरे में विश्वसनीय गंभीरता छाई हुई थी, पूर्व में हुई अनगिनत बैठक-वीसी के बिल्कुल विपरीत। आज ही लगे बड़े स्क्रीन में दिखने के लिए पार्टी पदाधिकारियों-कार्यकर्ताओं के चेहरों में होड़-सी मची थी। क्षणिक चुप्पी के बाद उसने बोलना शुरू किया "साथियों अब हमें कोई शक नहीं होना चाहिए, यह जो सरकार है वह

इस महान देश को समस्याओं के जंगल में भटकती अवस्था में छोड़कर ही भागेगी।" बोलकर उसकी आंखें बड़ी हो गईं, आगे कहते गए, "कितना बड़ा मजाक है यह देशवासियों के साथ! जब कोरोना के मामले पांच सौ थे तब लोगों को घरों में कैद कर रखा, अब जब आंकड़ा पांच लाख के पार चला गया है तो जनता से कहा जा रहा है बाहर आकर नाचो-गाओ झूमो-खेलो और सरकार की जय-जय करो!..." दोनों हाथ ऊपर उठाकर बोलते रहे, "मैं पूछता हूं किस बात की जय-जय? कोरोना के नाम पर कारनामे-कलाकारी-करतब-जादूगरी कर अपनी गलती छिपाने को?" अध्यक्ष के इतना बोलते ही लिंक से जुड़े लोगों ने माइक अनम्यूट किया और ताली बजाने लगे, लगा बड़े स्क्रीन के अंदर कोई रैली उमड़ आई हो।

"कल से ही सरकार ने अनलॉक वन की घोषणा कर रखी है, देश की जनता के लिए बड़ा जोखिम आ खड़ा हुआ है, ऐसे में हमारे लिए क्या निर्देश है?" चिंतक मंडली के आत्मा प्रसाद ने अध्यक्ष को सीधे विषय पर बोलने का संकेत किया।

"हां-हां, मैं वहीं पर आ रहा हूं।" बोलकर अध्यक्ष नीचे की ओर देखने लगे जैसे नीचे पड़ा कोई अनमोल सूत्र ढूंढ़ रहे हों, फिर बोले, "फरवरी-मार्च में कोरोना कुछ ही शहरों में मुंडी उठाकर ताक-झांक कर रहा था, तब सरकार के शिखर पुरुषगण अपने दिव्य चश्मे से भी कोरोना को न तो देख पाए, न ही मन की आंखों से भाँप सके; आज साधारण आंखों से भी हर कोई कोरोना का हाल देख सकता है, अब तो कोरोना देश के सभी शहरों की हर गलियों के मोड़ पर और हर गांव के चौराहे पर आगे की दौड़ के लिए डटा खड़ा है, बस रेफरी द्वारा एक-दो-तीन की सीटी बजाते ही हर गली, हर गांव में पिल पड़ेगा कोरोना!" बोलकर उसके होंठों में मुस्कान की टेढ़ी रेखाएं उग आईं, आगे बोलते रहे, "तो समझिए सरकार के पुरुषगण ने अनलॉक का जो पासा फेंका है वह कोरोना को आगे बढ़ाने की हरी झंडी है, सबसे बड़े रेफरी द्वारा दिखाई गई हरी झंडी!"

"तो अनलॉक के बारे में हमें जनता को क्या बताना चाहिए?" शहर अध्यक्ष नरोत्तम हरि ने पते की बात पूछ ली।

"यही तो बताना है अनलॉक लाकर सरकार ने साबित कर दिया है कि वह कोरोना को पहचान नहीं पाई, वे इसे गर्मी में मर जाने वाला कीड़ा समझकर अपने बेसुरे लय-ताल में लगे रहे! समझो सरकार ने साक्षात प्रमाण दे दिया है

कि लोगों को कोरोना-मृत्यु से बचाया नहीं जा सकता; बहुत जल्दी ही वे यह भी कहने से परहेज नहीं करेंगे कि जीना-मरना तो प्रभु की कृपा मात्र है!.."

"सर, जनता में अनलॉक के खिलाफ बोलने के लिए हमारे पास वैज्ञानिक तथ्य और तर्क भी तो होना चाहिए।" स्क्रीन से तर्कपूर्ण आवाज आई।

"हां जी! तर्क होना क्यों चाहिए, तर्क तो लाना पड़ता है!" चिंतक मंडली के सर्वमान्य-मुखड़ा मण्डन ओझा ने मोर्चा संभाला, बोलते रहे, "दुनिया के किसी भी देश में लॉकडाउन हटा है तो किस फेज में हटा है? जब कोरोना का ग्राफ या तो फ्लैट हो चुका है या फिर नीचे की ओर आ रहा हो; आज दो जून है, मैं पूछता हूं पच्चीस मार्च से लेकर आज तक एक भी दिन ऐसा हुआ है जब किसी दिन का आंकड़ा पिछले दिन से कम का रहा हो?" इतना सुनते ही स्क्रीन पर दिख रहे सभी चेहरों में रहस्यमयी दोलन दिखने लगा, जैसे अंधेरे में कोई प्रकाशमय सुराग दिख गया हो; आगे कहा, "अनलॉक को तो देश को मिला अजूबा सौगात समझो, जो आंकड़ा आज पांच लाख है पांच महीने बाद पांच करोड़ तक जा सकता है!"

"और मौत का आंकड़ा?"

"मौत का आंकड़ा जितना बताना चाहो बताओ, आपकी मर्जी! इस पार्टी में कार्यकर्ताओं को भी तो अभिव्यक्ति की आजादी हासिल है!" वीसी की दिशा-दर्शन अध्यक्ष के बजाय मण्डन ओझा के हाथ में आती गई।

"एक दिशा-निर्देश और चाहिए।"

"बताइए।"

"पिछली वीसी में लाखों करोड़ के पैकेज की असलियत जनता को बताने का निर्देश था, वह तो हम बता चुके हैं, क्या आगे भी इस ईसू पर बोलते रहना है?" ग्रामीण प्रकोष्ठ अध्यक्ष जमील अहमद ने पूछ लिया, पार्टी के प्रति अपनी वफादारी सामने रखते हुए।

"मैं तो कहता हूं यही असली समय है राहत पैकेज की परत उघाड़ने का; हम सभी को हर किसान-मजदूर-रिक्शा-ठेला-कारीगर-कामगार हाट-घाट-बाट पर दस्तक देनी चाहिए और उन सभी से पूछना चाहिए राहत पैकेज का कोई हिस्सा उनके भाग्य में आया क्या!"

"अगर वे बोले चावल-गेहूं तो मिल ही रहा है, बाकी पैकेज का हिस्सा मिले न मिले प्रभु राम की कृपा! तब?"

"तब उनका ज्ञान-चक्षु खोलना! जिस प्रकार गौशाला में गायों को बांधकर

खिलाया जाता है वैसे ही आगे सरकार सौ करोड़ जनता को मानुषशाला में पालेंगे, पांच-दस किलो दाना फेंक-फेंक कर, आहिस्ता-आहिस्ता!"

"हां इतना भय तो दिखाना ही पड़ेगा।"

"यह सिर्फ भय नहीं है जी, निकट भविष्य की सच्चाई भी है!"

"उसके कार्यकर्ता तो शोर मचा रहे हैं, कि अभी देश को बड़े-बड़े काम करने वाले विरल नेतृत्व का वरदान मिला है जो सदियों में कभी अवतार लेते हैं!"

"तो उसका भी कारगर काट है; हमेशा नजदीक देखते रहने वाले व्यक्तियों को धीरे-धीरे दूर का दिखना बंद हो जाता है, उन्हें बताओ बड़े पॉवर का चश्मा लगाएं!"

"....."

"....."

कार्यकर्ताओं के साथ मण्डन ओझा का वार्तालाप बढ़ता ही जा रहा था। अध्यक्ष को अपने पद का ख्याल आया, "बस हमें ध्यान रखना चाहिए जनता के सामने जो कुछ बोलें तर्क के साथ बोलें, और संयमित भाषा में ही बोलें; अब तो वो पार्टी कोरोना की पीठ पर जा बैठा है, बस इतना याद रखिए रूलिंग पार्टी कोरोना की पीठ पर बैठकर कोरोना को अपने हिसाब से हांक रही है तो हम लोग कोरोना की पूँछ मरोड़कर उसे इतना बिदका दें कि वे सभी पीठ से गिरकर सीधे चित हो जाएं! आज के लिए इतना ही; जय हिंद!" अध्यक्ष के कोरोना की पीठ और पूँछ वाली बात पर स्क्रीन में उठी हँसी की फुलझड़ियों से वीसी का समापन हो गया।

पार्टी वीसी से लौटते हुए में दुर्गेश जाटव ने देखा भीमरवा बस्ती के इंडिया एरिया में चक्कर-सा लगा रहा है, लंबी तान में उलाहना देते हुए ...बात-बतंगड़-बकवास-बेकार...

13

मंजरी ने कोरोना वार्ड में स्वैच्छिक सेवा का संकल्प लिया था, कोरोना विभीषिका की चुनौती स्वीकार करके ही तो। पर तब उसने कल्पना भी न की होगी उसे कभी मोर्चरी में भी ड्यूटी देनी पड़ेगी। कल वार्ड छोड़ते समय उसके डेस्क में भी नई ड्यूटी स्लिप पहुंची थी...कल से एक सप्ताह तक आप मोर्चरी में मृतक पंजी के रखरखाव का कार्यभार संभालेंगे। मोर्चरी में

ड्यूटी की बात पढ़कर उसे बुरा नहीं लगा, बल्कि मन में जिज्ञासा ही जगी थी ...कोरोना से काल कवलित हुए लोगों की लाश को इज्जतपूर्वक उनके गंतव्य तक पहुंचाना ही तो जीवन के अमूल्य कार्य हैं! आज वह आठ बजे से पहले ही मोर्चरी के पूछताछ काउंटर में पहुंच गई। नाइट ड्यूटी वाले भैया भागने के लिए बेताब खड़े थे, बाइक को कार्यालय की सीढ़ी से सटाकर लगाए हुए। मंजरी के पहुंचते ही वह पहचान गया, कोरोना वार्ड वाली लड़की है; पिछले एक महीने में वह बीस-पच्चीस लाशें महिला वार्ड से निकाल चुका था। पूर्व परिचित जैसा अनौपचारिक नमस्कार-सा हाथ उठाते हुए उसने हाथ में रखी पंजी टेबल में पटक दी, झल्लाकर बोला, "पहली वाली तो गई, अब तू संभाल पोथी-पंजी, पहुँचा लोगों को स्वर्ग धाम और कमा ले जन्म-जन्म का पुण्य!" बोलकर वह बाइक में फुर्र हो लिया, जैसे मोर्चरी का यमदूत उसके पीछे लगा हो।

"डेड बॉडी लोड करवाइए।" खिड़की के पास आकर एक आदमी ने बेफिक्री से आवाज लगाई, जैसे कोर्ट रूम के बाहर अर्दली लगाते हैं।

"किसकी डेड बॉडी?" बिना नाम के लाश के बारे में पूछे जाने पर मंजरी के मुंह से निकला, इज्जतपूर्वक।

"आप नई आई हो सिस्टर?" खिड़की के अंदर मंजरी को गौर से देखते हुए उसने कहा।

"आठ से चार बजे की ड्यूटी मैं ही करूंगी; आज से एक सप्ताह तक।"

"तभी तो!" उसने सिर हिलाते हुए कहा, फिर ऊपरवालों को सुनाने जैसा बोला, "देखिए सिस्टर, यहां पर आधे से अधिक डेड बॉडी का क्रीमेशन हमारे स्वर्गधाम संस्था वाले ही करते हैं।"

"ऐसा भी?"

"हां री बहना! जमाना हो गया है बेगाना, इस दुनिया में ना होता कोई अपना!" वह किसी निरंकारी भाँति बोले जा रहा था, "कोरोना वाले लाश का कोई माय-बाप नहीं है इस दुनिया में! बेटा को माँ-बाप की लाश नहीं चाहिए, माँ-बाप को बेटा की लाश नहीं चाहिए, बस हम ही इनके माँ-बाप, बेटा-बेटी हैं।"

"पंजी के हिसाब से अंदर कुल नौ लाशें पड़ी हैं; कौन-सी लाश चाहिए?" मंजरी की समझ में कुछ न आया।

"ओह! नौ बजे, नौ मिनट! और अब नौ लाशें?" वह किसी नेता की

नकल करते हुए बोला, आगे संभलते हुए कहा "सो सॉरी, क्या संयोग है; पंजी मिला लीजिए सिस्टर, जिस लाश को बहत्तर घंटे तक कोई लेने वाला न आया हो उन्हें हमें दे दीजिए; आज ही दाह-संस्कार निपटा दें, नहीं तो भले-मानुष की देह में भी कीड़े पड़ जाएंगे।"

"ओके!" अब बात मंजरी की पकड़ में आ पाई। मंजरी पंजी लेकर तुरंत बाहर आई। उसे पंजी दिखाते हुए बोली, "पंजी के हिसाब से श्री रामचरण दास, श्री अटल अनजान और मोहम्मद इदरीश की लाशें यहां आए हुए बहत्तर घंटे से ऊपर हो चुके हैं।"

"ओके! इट मिन्स एक जनाजे को कब्रगाह भिजवाना पड़ेगा!" उसने संतोष की सांस लेते हुए कहा, फिर नम्रतापूर्वक बोला, "ओके, तीन डेड बॉडी हमें निकलवा दीजिए।" उसके बोलने के हाव-भाव से लगा वह सच्चे सोशल सर्विस वाले भैया हैं। उसके साथ आए भैया लोगों ने मोर्चरी से तीन लाशें नाम पुकारकर उठा लीं। शव वाहन में डेड बॉडी रखी गई। वाहन आहिस्ता-आहिस्ता चल पड़ा; मंजरी को लगा जैसे वे तीनों मोर्चरी को नहीं मानवता को अलविदा कहकर चल पड़े हों। मोर्चरी के बरामदे में खड़ी मंजरी वाहन को देखती रही; लाशों के बाप-माई, भाई-बहन-पत्नी जैसी आंखें लिए।

बहत्तर घंटे वाली नियमावली से अवगत होते ही मंजरी का कर्तव्य बोध क्रियाशील हो उठा; बाकी छह लाशों की आमद से मिलान करके देख लें किसके कितने घंटे हो चुके हैं। मोहन चंद्र, परसो नौ बजे सुबह की इंट्री है, मतलब अब तक उनचास घंटे; प्रवीण शेखर, पैंसठ घंटे; अजहर चौवन घंटे; मानचंद, सत्तर घंटे... मानचंद? उसकी नजर पता वाले कॉलम पर गड़ गई, निवासी एक बटा एक इंडियाना एनक्लेव, रामघाट? मानचंद नाम से उसे याद आया यह तो एयरपोर्ट के केटरिंग किंग श्यामचंद के बड़े भाई हैं! पूरा कारोबार तो इन्हीं के जिम्मे था; शायद इनके कोई बच्चे नहीं थे। तो क्या इनके भाई-भतीजे ने इनकी लाश को लावारिस हालत में छोड़ रखा है! हे कोरोना तूने ये क्या किया... मंजरी मन-ही-मन बुदबुदाई।

"हाय मंजरी!" काउंटर पर किसी ने आवाज दी। मंजरी ने झांककर देखा, रामू पर नजर पड़ते ही उसका रोम-रोम पुलकित हो उठा।

"हाय! इधर कैसे!" मंजरी की खुशी का ठिकाना न रहा।

"तुम आज सुबह माँ के पास नहीं गई थी, मुझे चिंता होने लगी; करोना वार्ड में गया, पता चला तुम्हारी ड्यूटी मोर्चरी में लग गई है!" रामू एक

ही साँस में बोल गया, लगा अब उसकी जान में जान आई है; आगे नाक सिकोड़ते हुए कहा, "यह सब क्या है! मोर्चरी में ड्यूटी?"

"अरे कल अचानक मुझे ड्यूटी स्लिप मिला, मोर्चरी में ड्यूटी का; यहां वाली सिस्टर एबसेंट चल रही है।" मंजरी इत्मीनान से बोली, जैसे यहां-वहां कहीं भी ड्यूटी मिले उसके लिए सब काम बराबर है; आगे माफीनामे-सा बोली, "सॉरी डियर, तुम्हें मैसेज करना भूल गई थी; सुबह आठ बजे यहां आना था, इसलिए गौशाल भी नहीं जा पाई; वैसे एक दिन तो मामा भी निपटा ही लेंगे।"

"हां, वहां की कोई चिंता नहीं है मुझे; तुम्हारी चिंता हो रही थी, आखिर अचानक अबसेंट का क्या कारण हो सकता है?" राहत पाने जैसी सांस छोड़ते हुए रामू ने कहा; उसके करीब जाकर धीमे स्वर में बोला, "डार्लिंग आज इतनी उदास क्यों है!"

"अरे क्या बताऊं, ये कोरोना समझो इंसानियत को तार-तार करके ही मानेगा!" अंदर पड़ी डेड बॉडी की तरफ देखती हुई वह बोली। उसकी संवेदनशीलता के सामने रामू ने अपने को कमतर पाया, कुछ बोल न पाया। मन-ही-मन सोचने लगा, जरूर किसी मानवीय पक्ष ने मंजरी को आघात पहुंचाया है। "कुछ घर वाले तो यहां पड़ी लाशों को लेने नहीं आते हैं, उन लाशों का अंतिम संस्कार नगर निगम के साथ कार्य कर रहा कोई एनजीओ निपटाता है।" मंजरी अफसोस के साथ बोलती रही, "अभी शव वाहन में ऐसी तीन लाशें लदकर गईं जिनका बहत्तर घंटे तक कोई दावेदार नहीं आया; बाकी बची छह लाशों का डिटेल देख रही थी, एक लाश है मानचंद की, मेरी जानकारी में एयरपोर्ट के बड़े ठेकेदार हैं श्यामचंद, उसी के बड़े भाई हैं; सत्तर घंटे हो गए हैं, अभी तक कोई नहीं आया है!" बोलते हुए मंजूरी की आँखें छलछला आईं, उसने पलकें बंद कर लीं।

"हां मंजरी, इस कोरोना वायरस को किसी भी प्रकार से भारत में आने से रोकना था; अब मुझे महसूस हो रहा है फरवरी महीने से ही मैं क्यों इसके पीछे पड़ा था।" बोलते हुए रामू की मुद्रा दर्शनमय दिखने लगी, आगे कहा, "जिन देशों में सामाजिक-पारिवारिक-मानवीय रिश्तों के आयाम गहरे नहीं हैं वहां करोना के कोप से मानवीय संबंधों में उतना फर्क नहीं पड़ना है, पर भारत-जैसा देश जहां मानवीय संबंधों की सतरंगी छटा है वहां तो रिश्तों की बुनियाद हिला देगा यह कोरोना!" बोलकर रामू ने झरोखे से मोर्चरी में पड़ी

लाशों को देखा, जैसे उसकी आत्मा चीत्कार कर उठी हो, '..इस दुनिया में अब बचा ही क्या है!'

"काउंटर में कोई है?" खिड़की के बाहर किसी ने दबी-मरी आवाज में गुहार लगाई।

"जी-जी," रामू के मुंह से ही निकल गया, अपने को यहां पर अनधिकृत आगंतुक होने की झेंप मिटाते हुए।

"मानचंद जी की डेड बॉडी लेने आया हूं।" आगंतुक ने याचनापूर्ण स्वर में कहा।

"थैंक्स गॉड, आप आ गए; वरना दो घंटे बाद निगम वाले लावारिस मानकर कभी भी शव वाहन में डाल देते!" पंजी पलटते हुए मंजरी ने राहत की सांस ली।

"अरी बिटिया, जब से रामघाट में एयरपोर्ट बना है इस नेक बंदे ने हजारों बच्चों को रोजगार-पानी दिया है!" उसने मोर्चरी की तरफ नमन करते हुए कहा।

"नेक इंसान! मतलब?" लाश से सिर्फ नेक इंसान जैसा रिश्ता बतलाने पर मंजरी को कुछ समझ में न आया, आखिर लाश का इस आदमी से क्या संबंध है?

"दरअसल रिश्ते में मैं इनका कोई नहीं लगता हूं," उस आदमी ने हाथ जोड़ लिए, आगे बताया, "मानचंदजी ने एयरपोर्ट में अपनी कंपनी में मुझे नौकरी दी, मेरा परिवार संभल गया वरना.." उसने फिर मोर्चरी की तरफ हाथ जोड़ लिए, "जब कोरोना से इनकी मृत्यु का समाचार सुना तो दौड़े-दौड़े इनके घर गया; इनकी कोई संतान है नहीं, इनके भाई श्यामचंद के सामने मेरी तो रुलाई फूट पड़ी, पर क्या बताऊं बेटा उनके घरवाले कोरोना से इतना डरे हुए हैं कि पूछो मत! उन लोगों ने तय कर लिया है कि डेड बॉडी नहीं लाना है, लानत है ऐसे करोड़पति और अरबपति पर।" बोलकर उसने थूक दिया।

"तो लाश लेने आप आए हैं! दाहसंस्कार आप करेंगे?" मंजरी के आश्चर्य का ठिकाना न था।

"हां बेटा, यह हमारे पालक थे।"

"जी-जी, मेरे भी पालक थे; पर इनके छोटे भाई ने मुझे नौकरी से निकाल दिया था, पिछले साल फरवरी की बात है।" मंजरी ने नेक इंसान के लिए क्रॉस बनाते हुए कहा।

"तुम मंजरी बिटिया हो!" उसने ऐसे कहा जैसे उसे अभी गोद में उठा

लेगा।

"हां, आप?" उसे नहीं पहचान पाने के कारण मंजरी को ग्लानि-सी हुई।

"मैं किशन काका।" उसकी आंखें नम हो गईं, बोलते रहे, "तुम्हारे निकाले जाने के बाद हम सभी को बड़ा दुख हुआ था; सच में बेटा अगर उसी समय तुम्हारे द्वारा उठाई जायज बात सरकार तक पहुंच गई होती तो आज देश की इतनी दुर्दशा नहीं होती।"

"किशन काका उस बात को याद करने से अब क्या फायदा; हम तो धरती में सेवा करने आए हैं और करते रहेंगे।" मंजरी की मोहक मुस्कान उसके चेहरे से बाहर जैसे पूरी मोर्चरी में फैल गई।

"तुम जैसी बिटिया के एयरपोर्ट से निकाले जाने पर वहां के एंपलाई ने खूब हंगामा किया था बेटा।" वह अपने को बोलने से रोक न पाया।

"माय गॉड!" अनकही खुशी मंजरी को छू गई; सिर झटक कर पिछली बातों से निकलते हुए मोर्चरी मसले पर लौट आई, "बट किशन काका, डेड बॉडी लेने के लिए आपको मानचंदजी के परिवार से सहमति-पत्र लाना होगा।"

"अरे बिटिया मुझे कानून पता है, इसलिए तो सहमति पत्र परिवार वालों से लिखा लाया हूं!" उसने जेब से आधे पेज की लिखावट वाला टुकड़ा बढ़ाते हुए कहा।

किशन काका ने सड़क पर खड़ी प्राइवेट एंबुलेंस को अंदर आने का संकेत किया। लाश को गाड़ी में सम्मानपूर्वक रखने में मंजरी और रामू ने मदद की। गाड़ी जाने के बाद रामू ने कहा, "सपोज दैट मंजरी मेरी या तुम्हारी ऐसे ही हालात में मृत्यु हो जाती है," बोलकर वह मंजरी की आंखों में गड़कर चुप हो गया, जैसे सच में अभी ही मरने वाला हो; क्षणिक विराम के बाद बोला, "तो क्या हमारी लाश भी..." वह आगे बोल न पाया। मंजरी ने उसके होठों पर उंगली रख दी; रामू की आंखों में डूबती हुई बोली, "ऐसी सौ मौतों को हम दोनों एक सौ एक जिंदगी में बदल देंगे!" बोलकर वह रामू से लिपट गई। तब उस निर्जन मोर्चरी में जीवन के रंग जीवंत हो उठे थे।

अध्याय पांच

1

आज सीएमओ की सिर्फ सांस नहीं फूल रही थी धड़कनें भी तेज हो चली थीं। पिछले रविवार को सीएम की कोरोना ब्रीफिंग में उसने बड़ी आसानी से कह तो दिया था, 'यस सर आई विल डू इट' पर हकीकत में उसे असली जामा पहनाना आसान है क्या? अब उसे लगने लगा ब्रीफिंग में उसने 'हां' कह दिया, इस जोश में कि प्रदेश में प्लाज्मा थेरेपी का यह पहला केस् होगा, तो इसे कर दिखाने का स्वर्णिम अवसर हाथ से क्यों जाने दे। अब उसके माथे पर बल पड़ गये, कि प्लाज्मा थेरेपी का केस् टेक अप करने के क्या-क्या प्रोसेस होंगे, इसका आकलन किए बिना ही उसने हड़बड़ी में हां कह दिया सीएम की ब्रीफिंग में। अशांत चित्त की दशा में उसे अपने बेदाग-बेताज करियर के एक-एक दिन-साल याद आने लगे ...गाँव-गरीबी के बावजूद चार-पांच साल का एमबीबीएस कोर्स उसने बिना किसी बड़ी बाधा के पूरा कर लिया था, दिन-रात एक करके गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज में ही एमडी में दाखिला पा लिया था; दो साल यहां-वहां प्रैक्टिस करने के बाद राज्य चिकित्सा सेवा में एंट्री मारते हुए जिला अस्पताल में तैनाती भी मिल गई थी, पन्द्रह साल पहले; कहने को रामजी की कृपा से, हकीकत में अपनी काबिलियत से। इन सालों में छोटे-बड़े कितने पे-प्रमोशन होते रहे अब तो ठीक से याद नहीं; एक साल पहले सीएमओ के पद पर प्रमोशन मिलते ही उसकी प्रतिभा को पंख लग गए थे...। प्रकृति के प्रकोप के खैर क्या कहने, कोरोना ने अब वैश्विक महामारी का दर्जा भी हासिल कर लिया था; चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े रक्त-पिपासुगण इसे भले ही मन का मुकाम हासिल करने का एक 'बड़ा मौका' के रूप में ले रहे थे, उनके-जैसे समर्पित सेवक

के लिए अपने को साबित करने का एक बड़ा अवसर था। पर यह प्लाज्मा थेरेपी तो सीएमओ की पिछले एक साल की सारी मेहनत पर जैसे पानी ही फेर देगी! रामघाट की अवस्था और जिला अस्पताल की विवशता वह भला किसे समझाएं; आखिर कोई प्लाज्मा डोनेट करने के लिए आगे आए तभी तो प्लाज्मा थेरेपी सेंटर का उद्घाटन हो सकेगा?

मामला अब सिर्फ प्रदेश की पहली प्लाज्मा थेरेपी यूनिट के उद्घाटन भर का नहीं रहा, प्रसंग तो दिल्ली में पार्टी हाईकमान तक पहुंच चुका था। तीन दिन पहले एमएलए रामदरश मिश्र को प्लाज्मा थेरेपी देने पर राय-मशविरा भर हो रहा था रामघाट में, अब तो बिना विलंब के इस कार्य को पूरा करने का निर्देश पार्टी मुख्यालय से जारी हो गया। दरअसल पार्टी रामदरश मिश्र को लेकर कोई रिस्क नहीं लेना चाह रही थी; वे प्रदेश में पार्टी के प्रभारी खजांची हैं, उसके पास भी पार्टी फंड का तगड़ा लेखा-जोखा है, आगामी चुनावी समर में फंड ही सबसे कारगर हथियार साबित होना है! व्यक्तिगत तौर पर रामदरश मिश्र खुद भी मृत्यु के साथ कोई जुआ-जुगाड़ नहीं खेलना चाहते होंगे; पिछले कारोबार-कारनामों से अर्जित बेशुमार संपत्ति अपनी जगह है, बेटे-पोते-पड़पोते तक भोगेंगे-जोगेंगे, पर कोरोना काल में सैनिटाइजर और डिसइनफेक्टर के लगे नए-नए प्लांटों से हुई अकथनीय आमदनी का कमाल वह आगे देखना चाहते हैं! कोरोना काल में वे और उनका पूरा परिवार किलेनुमा घर में कैद रहे, कोरोना से कोसों दूर। उसका कोविड-19 रिपोर्ट भले ही पॉजिटिव आ गया हो पर वायरल लोड तो ज्यादा नहीं दिख रहा था। सीएमओ ने उन्हें सलाह दी थी होम आइसोलेशन में रहना ही पर्याप्त होगा। जी घबराया तो उसी रात सीधे आईसीयू में आ टपके। वहां तसल्ली महसूस नहीं हुई तो चार दिन से वेंटिलेटर में कब्जा जमाए रहे। पर प्लाज्मा थेरेपी ही तो वह चीज है जहां उसे जान की गारंटी दिखने लगी थी! एमएलए साहब की मनोकामना और पार्टी का दबाव अपनी जगह तो था ही, प्रदेश में प्लाज्मा थेरेपी का पहला केस रामघाट में ही होने का जो जन दबाव तैयार हुआ तीन-चार दिनों से मीडिया में, उसको भी झेलना-टालना-टरकाना आसान था क्या!

परसों की ही तो बात है, सीएमओ कार्यालय से प्लाज्मा डोनेट करने के लिए नोटिस जारी हुआ था; कोरोना संक्रमितों को प्लाज्मा थेरेपी देकर मरीज को चंगा करने वाला प्रदेश का पहला जिला अस्पताल बनाने का गौरव सीएमओ के चेहरे में दीप्त हो उठा था। ऐसे आनंदपूर्ण अवसर पर कौन भला

अपना उत्साह काबू में रख पाता! जिला अस्पताल के सीएमओ हैं, गंभीरता वाला पद-कद है, खुद खुलकर खुशी का इजहार नहीं कर सकते थे; पर रामघाट वासी को खुलेआम बांग देने से कौन रोक सकता था भला! प्लाज्मा डोनेट करने वाला नोटिस अखबारों में न्यूज चैनलों में लहराते ही रामघाट के जन-जन का जलवा देखने लायक था। प्लाज्मा थेरेपी से कोरोना कंट्रोल होने का नायाब नुस्खा रामघाट की सरजमीं पर उतरने की खुशी तो थी ही, ऐसा करने वाला प्रदेश का पहला शहर होने का तमगा हासिल होने से खुशी तो जैसे दोगुनी हुई जा रही थी। लेकिन सीएमओ और सारे शहर की खुशी शाम तक धड़ाम हो गई; तय समय सीमा तक किसी डोनेटर का सामने आकर प्लाज्मा डोनेट करने की इच्छा जाहिर करना तो दूर किसी डोनेटर की आहट तक नहीं सुनाई पड़ रही थी!

किसी डोनेटर के आगे ना आने से सीएमओ को अपमानित होना सन्निकट जान पड़ा। इतना बड़ा जिला अस्पताल है, अब तक तीन हजार से ऊपर मरीजों को कोरोना संक्रमण से मुक्त कराकर छुट्टी करा चुके हैं वे, पर आज जरूरत पड़ी तो उनमें से किसी को भी तैयार नहीं करा पा रहे हैं प्लाज्मा डोनेट करने के लिए! इतना बड़ा चिकित्सा अधिकारी और एक प्लाज्मा डोनेटर को तैयार नहीं करा पाए?

डोनेटर न मिलने से सीएमओ परेशान थे, पार्टी पदाधिकारीगण हलकान; अगर बात पार्टी मुख्यालय दिल्ली तक पहुंच गई तो रामघाट में पार्टी की किरकिरी होनी तय है, कई के पत्ते कटेंगे सो अलग! आनन-फानन में पार्टी अध्यक्ष ने एक छोटी वीसी भी कर डाली; पार्टी पदाधिकारियों-कार्यकर्ताओं को समझाया-चेताया कि कोरोना से ठीक हो चुके लोगों से प्लाज्मा डोनेट करने के लिए प्रेमपूर्वक निवेदन किया जाए। सोशल मीडिया में ताबड़तोड़ क्लिप डाले गए; वेंटिलेटर यूनिट में आंख मूंदकर मरणासन्न दिखते एमएलए के कई-कई फोटो के साथ। फोटोशूट करते वक्त मरणासन्न दिखने से मना करने के बावजूद पार्टी पदाधिकारियों की बात उन्हें माननी ही पड़ी थी, कि जीवन में एक-आध बार मृत्यु के मुंह में समाया हुआ का नाटक करना राजनीतिक भविष्य के लिए अच्छा ही रहता है! हर तरह से हाथ-पैर मार लेने के बावजूद रात तक किसी का सामने ना आना रामघाट के लिए आघात था तो पार्टी के लिए किसी संघात से कम न था!

2

...देर रात गए एक नवयुवक प्लाज्मा डोनेट करने के लिए सामने आया।... स्वास्थ्य विभाग ने राहत की सांस ली ...पार्टी में खुशी की लहर! ...सीएमओ ने बताया डोनेटर के शरीर में एंटीबॉडी टेस्ट करने के बाद आगे की प्रक्रिया अपनाई जाएगी ...वीआईपी को प्लाज्मा देने का मामला होने के कारण डोनेटर का नाम गुप्त रखा गया है... सुबह के अखबारों में छपी हेडलाइंस और न्यूज चैनलों में आ रही ब्रेकिंग न्यूज से पूरे रामघाट ने एक बड़ा संकट टलने-सा महसूस किया। दस बजते-बजते एमएलए डॉ रामदरश मिश्र का पहला वक्तव्य न्यूज स्क्रीन पर दमकने लगा ...उस नौजवान का मैं शुक्रगुजार रहूंगा जो प्लाज्मा देकर राष्ट्र निर्माण में योगदान दे रहे हैं...। बिना देर किए जिला पार्टी इकाई ने निर्णय लिया, ऐसे महान देशभक्त को जनहित में देशहित में सार्वजनिक रूप से सम्मानित किया जाएगा। दिन चढ़ते-चढ़ते वह अज्ञात नवयुवक रामघाट का नायक बन चुका था।

नौ दिन पहले प्लाज्मा थेरेपी यूनिट के संबंध में स्टेट नोटिफिकेशन जारी हुआ था; रामघाट जिले का प्लाज्मा प्रभारी डिप्टी सीएमओ डॉ रामाशीष राय को बनाया गया था। कोरोना वायरस से गंभीर रूप से संक्रमित रोगियों को प्लाज्मा देने के संबंध में सभी टेक्निकल फॉर्मेलिटीज उसे ही देखनी थी। इस हेतु बनाए गए रामघाट प्लाज्मा बोर्ड के वे खुद चेयरपर्सन भी थे। जारी दिशा-निर्देश के अनुपालनार्थ प्लाज्मा डोनेट करनेवाले व्यक्ति से जरूरी पूछताछ वह बोर्ड के समक्ष ही कर लेना चाहते थे। मामला वीआईपी से जुड़ा होने के कारण देरी नहीं कर सकते थे; आज दोपहर साढ़े बारह बजे ही डोनेटर को बोर्ड के समक्ष बुलवा लिया।

"तुम्हारा नाम क्या है!" चेयरपर्सन ने पूछा, सामने बैठे डोनेटर के प्रति अगाध सम्मान प्रकट करते हुए।

"जी, मैं अज्ञात अनाम ही रहना चाहता हूं; काम भर के लिए चाहे तो मेरा नाम कोरोना हंता लिख दीजिए।" डोनेटर ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

"तुम्हें कितने दिन पहले कोरोना संक्रमण हुआ था?" प्लाज्मा बोर्ड की डॉ. तापसी ने पूछा।

"ठीक-ठीक बताना मुश्किल है।" उसने पलकों को दो-तीन बार झुकाते हुए कहा, जैसे कुछ गड्डमड्ड हो रहा हो।

"कोविड हॉस्पिटल में कितने दिन एडमिट रहे!" बोर्ड के तीसरे सदस्य डॉ रामजस ने पूछा।

"एक महीने से ऊपर हो गए, अभी भी कोविड वार्ड में करोना पेशेंट को एडमिट करवा रहा हूं।" उसने गर्वोक्ति भाव से कहा।

"अरे भई, हम लोग जो पूछते हैं उसका सीधा-सपाट जवाब क्यों नहीं देते हो! प्लीज टेल अस क्लीयरली तुम्हारी कोविड रिपोर्ट निगेटिव आ गई है?" चेयरपर्सन ने उखड़ते हुए कहा; चेहरे में डोनेटर के लिए सम्मान भाव की जगह झुंझलाहट ने ले ली।

"रिपोर्ट पॉजिटिव थी ही नहीं तो नेगेटिव कहां से हो जाएगी!" उसने संभलकर जवाब दिया।

"फिर उल्टी खोपड़ी वाली बात! देखो बेटा यह मामला जरा भीभीआईपी वाला है, हम लोगों का दिमाग ज्यादा मत चाटो" डॉ रामजस ने पुचकारना चाहा।

"समय खराब करने से कोई फायदा नहीं है, सीधे-सीधे बताओ तुम संक्रमित थे या नहीं; यदि थे तो तुम्हारा ट्रीटमेंट कहां हुआ था?" चेयर पर्सन डॉ. रामाशीष ने कुर्सी छोड़ने जैसा दिखते हुए कहा।

"सर मुझे करोना संक्रमण हुआ या नहीं मैं नहीं कह सकता, पर छह महीनों से करोना से ही लड़ रहा हूं! करोना का करिश्मा करने वालों की तो पूरी कुंडली है मेरे पास! अब तो चालीस दिनों से करोना हो रखे लोगों के बीच और करोना का ट्रीटमेंट करने वाले लोगों के साथ ही रह रहा हूं।"

"कहां!"

"इसी अस्पताल के कोविड वार्ड में।"

"कहीं तुम कोरोना-मंडली से तो नहीं हो!"

"जी।"

"तो तुम्हारा नाम रामू ग्वाला तो नहीं है?"

"माफ कीजिएगा मैं गुप्त सेवा दे रहा हूं।" उसने फिर हाथ जोड़ लिए।

"अरे तुम्हारा कोरोना-मंडली जितना कार्य किया है तुम उतना ही अकार्य भी कर रहे हो; आखिर ये नौटंकी करने की क्या जरूरत आ पड़ी?" डॉ तापसी मृदु स्वर में बोली।

"यदि इस नौटंकी की बात एसपी तक पहुंच गई तो अंदर हो जाओगे।"

चेयरपर्सन ने चेताया।

"तो वहां भी सेवा करता रहूंगा!" उसने अब गर्दन तान ली।

"तुम्हें पता है प्लाज्मा डोनेट कौन कर सकता है?"

"जिनके शरीर में करोना वायरस का एंटीबॉडी बन गया हो।" उसने गंभीर होकर कहा।

"जब तुम्हें संक्रमण हुआ ही नहीं तो एंटीबॉडी कैसे बन जाएगा तुम्हारे अंदर भई!" अब डॉ. रामजस भी उखड़ने लगे।

"सर मुझे पूरा यकीन है मेरे अंदर एंटीबॉडी बन गया है, भरपूर!" उसने लंबी सांस लेकर कहा, विश्वासपूर्वक।

"वह भला कैसे?"

"सर प्रधानमंत्री के मुंह से लोगों ने उन्नीस मार्च को पहली बार कोरोना शब्द सुना था, लेकिन मेरे मुंह से करोना शब्द की धार तो फरवरी महीने से ही फूटने लगी थी!" सिर हिला-हिला कर वह बोले जा रहा था, बोर्ड के तीनों सदस्यों को बारी-बारी से देखते हुए। "मुझे लग रहा है तब से हर दिन चौबीस घंटे करोना से मेरी भिड़ंत जारी है; फिर तो मुझसे ज्यादा किसके शरीर में करोना का एंटीबॉडी बना होगा!" बोलते-बोलते उसने दोनों हाथ दाएं-बाएं फैला दिए, जैसे कोरोना को खुली चुनौती दे रहा हो।

"दिस इज टू मच! आपने हम सभी का समय खराब किया है; आप जा सकते हैं।" झल्लाकर बोलते हुए चेयरपर्सन खड़े हो लिए। प्लाज्मा बोर्ड के दोनों डॉक्टर भी निकल गए, रामू की तरफ तिरछी नजर डालते हुए।

रामू वहां अकेला बैठा रहा, एंटीबॉडी के बारे में देर तक सोचते हुए। उसकी तंद्रा तब टूटी जब सिक्योरिटी वालों ने उसे एक लिफाफा थमाया। उसने लिफाफा खोला; सीएमओ कार्यालय से निर्गत दो पंक्तियों वाला पत्र था ...कोरोना वार्ड में स्वैच्छिक सेवा से आपको विरत किया जाता है, कोरोना संक्रमितों को आपके द्वारा दी गई सेवा के लिए बहुत धन्यवाद। उसने वह पत्र वहीं छोड़ दिया। जिला अस्पताल चौराहे पर आकर बस्ती जाने वाले सुभाष मार्ग की तरफ बढ़ चला। अपनी झोपड़ी में जाकर उसने माँ के चरण छुए। अपने कमरे में आकर निढाल हो गया; नींद का पिछला सभी बकाया वह कल तक पूरा कर लेना चाहता था। नींद आते-आते कानों में कहीं दूर से आ रहा भीमरवा का आह्वान उसे सुकून देता रहा ...कर्म ...धर्म ...मर्म ...शर्म...।

3

..प्लाज्मा डोनेट करने चले युवक का फर्जीवाड़ा पकड़ा गया, उसके शरीर में एंटीबॉडी बनने के उसके दावे का कोई पुख्ता आधार नहीं ...उसके पास कोविड-19 की ना तो पॉजिटिव रिपोर्ट ना नेगेटिव! ...प्लाज्मा थेरेपी यूनिट को गुमराह करने के कारण कोरोना-मंडली के सदस्य बस्ती के बाशिंदे रामू ग्वाला को अस्पताल प्रशासन ने स्वैच्छिक सेवा से हटाया... आज सुबह अखबारों की हेडलाइंस कल वाले अखबारों से मोटी और ध्यान आकृष्ट करने वाली थीं। एक अखबार के मुख्य पृष्ठ की टेढ़ी-मेढ़ी पंक्तियों में खबर थी ...बस्ती ने एक बार फिर अपनी विश्वसनीयता खोई, प्रशासन के सख्त होने से इनकार नहीं! उसी अखबार के बॉक्स में रामनरेश का वक्तव्य रंगीन शब्दों में छपा था ...बस्ती को लगातार बदनाम करने वाले तत्वों से कानून सख्ती से निपटेगा, इस मामले में पार्टी सही समय पर सही निर्णय लेगी...। रामघाट शहर के सिटी न्यूज चैनल को छोड़कर देश-प्रदेश स्तर के किसी भी न्यूज चैनल ने इसे खबर नहीं बनने दिया, एक उत्साही युवा के मनोभाव का मान रखते हुए।

आज के अखबारों में रामू वाली खबर पूरी बस्ती में लहर जैसी फैल गई। बच्चों को यह रामू भैया का अपमान लगा, बड़ों को बस्ती का। बस्ती की युवा-मंडली तथ्यों की तह में पहुंचे बगैर अंतिम निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहती थी। कोरोना-मंडली इस मुद्दे को कोरोना-कैबिनेट में चर्चा करना जरूरी समझ रहे थे। अलग-अलग वय-वर्ग का सोचना-विचारना रफ्तार पकड़ चुका था। सुबह के नौ बजते-बजते बच्चे-युवा-बड़ों की भीड़ रामू के झोपड़े के आगे जमने लगी; महीनों बाद रामू का पता-ठिकाना ज्ञात होने पर भला कौन उस तरफ जाने से रोक सकता था अपने को! ...रामू-रामू... की शोरगुल सुनकर उसे अपनी बकाया नींद को रात के लिए तिलांजलि देनी पड़ी। झोपड़ी से बाहर आते ही उसके चेहरे में चहुंमुखी मुस्कान चमकने लगी; चार महीने बाद वह अपनी असली दुनिया के सम्मुख था; हां, बस्ती रामघाट; उसकी असली दुनिया!

"रामू भैया! आप करोना को स्वैच्छिक सेवा दे रहे थे!" सबसे आगे रामू के पास आकर मंटू ने उत्साह की धार छोड़ते हुए कहा।

"रामू भैया, क्या आप सचमुच करुणा से भिड़ गए थे?" छोटू ने किनारे से आगे आते हुए कहा, मुंडी आगे निकालकर।

"तुम्हारे अंदर कोरोना का मरा हुआ कीड़ा अभी भी पड़ा है क्या!" उत्साह, आश्चर्य और भय से सना चेहरा लिए जितू ने कहा।

"अभी अखबारों में निकला है फर्जीवाड़ा किया है आपने! करोना चुराकर भाग आए हो क्या?" मुंहफट मिजाज के शंकरा ने बोलकर हँस दिया।

"अखबार में निकला है कि आपने फर्जीवाड़ा किया है! क्या आपने कोरोना दवाई की चोरी की है?" देवा की जिज्ञासा शांत नहीं हो रही थी।

"अरे समझ गया! लगता है आपने ऑक्सीजन की चोरी की होगी?" फट्टे ने अंधेरे में तीर छोड़ते हुए कहा।

"अरे मूरख ऑक्सीजन चोरी करके हाथ में नहीं आ सकता है न, रास्ते में ही हवा हो जाएगा!" अमन ने अपने ज्ञान भंडार का मुँह खोला।

"मुझे तो लग रहा है रामू भैया ने मास्क और सैनिटाइजर उड़ाए होंगे!" जहीर भी अनुमान-अंदाज से चूकना नहीं चाहता था।

"मास्क और सैनिटाइजर उड़ाए होंगे, फिर तो हम लोगों को जरूर बाँटेंगे, या या या.." बोलकर मरखा ने बच्चों की भीड़ में जोश भर दिया।

"....."

"....."

बच्चों के अनेकानेक प्रश्नों के जवाब देने के बजाय रामू उनके निश्चल भाव-भाषा पर सम्मोहित हुआ जा रहा था; बस्ती के बच्चे हैं भी तो उसके लिए दुनिया में सबसे प्यारे!

"चलो बच्चों पीछे हट जाओ, इतने महीने बाद जरा हमें भी रामू से बात करने दो।" धरम चाचा आगे आते हुए बोले; रामू के नजदीक आकर पूछा, "क्या तुम सचमुच कोविड वार्ड में सेवा दे रहे थे? सुना है हंसामल बाबू के बेटे ने करोना-मंडली की तरफ से तुम्हें वहां भेजा था!"

"हां बस्ती को बिना बताए मैं करोना मरीजों की सेवा में लगा था।" अपने अज्ञातवास को उजागर करने जैसा बोलते हुए रामू ने कहा।

"स्वैच्छिक सेवा दे रहे थे तो अखबारों में कभी नाम नहीं आया?" बच्चों के बीच से किसी की आवाज आई।

"सेवा देने वालों का नाम अखबारों में नहीं आता है।" रामू ने सफाई देने जैसा कहा।

"लेकिन प्रधानमंत्री की खबर तो हर दिन छपती है?" जितू ने तर्क किया।

"चुप बे, प्रधानमंत्री स्वैच्छिक सेवा थोड़ी न दे रहे हैं, वे तो ऐच्छिक सेवा

दे रहे हैं!" शंकरा ने साथी बच्चों को चुप करा दिया।

"इन गप्पबाजी को अब यहीं विराम दो, असली मुद्दे पर आओ।" धरम चाचा गंभीरतापूर्वक बोलने लगे, "प्लाज्मा डोनेशन के मामले में तुम पर फर्जीवाड़े के आरोप लगे हैं, इससे बस्ती की बदनामी तो हुई ही है रामघाट शहर में भी तुम अब रामू फर्जीवाड़े वाले के नाम से जाने जाओगे!"

"मुझ पर लगा इल्जाम बेबुनियाद है, मेरा दावा बिल्कुल सही है।" रामू बोलने लगा तो उसका चेहरा तमतमा उठा, आंखें छोटी करते हुए कहा, "मुझे तो पक्का यकीन है मेरे अंदर करोना मारक कीटाणु बन चुका है!"

"तुम्हारे बोलने से नहीं होगा न, साबित भी तो होना चाहिए..." भीड़ से किसी ने कहा; आवाज से रामू को लगा भीड़ में किसी कोने में रामनरेश भी खड़ा है, छोटे कद का रामनरेश।

"जी, साबित करना चाहिए।" आंखें नीची किए सिर हिलाते हुए रामू ने कहा, फिर संकल्प जैसा सिर ऊपर उठाते हुए बोला, "हां साबित करना पड़ेगा।" फिर बच्चों से कहा, "मेरे सारे लिटिल फ्रेंड आज घर जाइए, आगे का प्लान कल बताएंगे; अभी करोना काफी जोर पकड़ रखा है, सभी अपने-अपने घरों में ही रहना।" बोलकर वह झोपड़े की ओर बढ़ चला, मंडली के साथी लोगों को याद करते हुए।

"हाय माय डियर रामुउउउ..." कमरे में दुबारा लेटते ही रामू के कान में आवाज पड़ी, वह चौक पड़ा; परवेज की आवाज! कमरे से बाहर आया, खुले शेड में सहज, शायनी, अहम, परवेज, दिनेश, मनोज खड़े थे! उन सभी की मुस्कान से लगा शायद बस्ती की भीड़ छंटने का देर से इंतजार कर रहे थे, भीड़ के बिखरते ही शेड में दाखिल हुए हैं।

"तो आज हमें हमारा मित्र वापस मिल गया है, सशरीर!" रामू की तरफ बाँह फैलाते हुए सहज ने स्वागत शब्द छोड़ा।

"अरे तुम भी न यार, साला हर दूसरे दिन भीसी पेलता रहता है, घंटा-आधा घंटा तक एक-दूसरे का थोबड़ा देखते रहते हैं और आज भाषण पेल रहा है सशरीर!" रामू ने माहौल को मित्रवत बनाते हुए कहा, सभी को बांस-बल्ली से बने मचान में बैठने का संकेत करते हुए।

"मंजरी को भी न बुला लें!" शायनी बोली; इतने दिनों बाद रामू से मिल रहे थे सभी, बात-बतंगड़ बढ़नी ही थी, लड़कों के बीच एक से भले दो लड़की की जरूरत महसूस की उसने।

"वह तो वार्ड के लिए निकल रही होगी।" रामू ने समय देखते हुए कहा।

"अब कितनी सेवा देगी बेचारी, स्वैच्छिक सेवा का फल तो तुम चख ही चुके हो।" परवेज ने कहा, नाक से किसी अज्ञात के लिए घृणा तरंग छोड़ते हुए।

"वह पूर्ण रूप से स्वतंत्र है अपना निर्णय लेने के लिए, मैं भला अपनी मर्जी क्यों थोपुं उस पर।" रामू ने निरपेक्ष भाव से कहा।

"मैं मंजरी को बोलती हूं, जब सरकार ने कोरोना की तेज रफ्तार में भी अनलॉक कर दिया है तो बेचारी क्यों बेवजह अपने को लॉक करके रखे कोविड वार्ड में।" बोलकर शायनी नंबर मिलाने लगी।

"मुझे तो लग रहा है मंजरी से रामू दूर ही रहना चाहता है, डर के मारे कि कहीं मंजरी ही न कोरोना पॉजिटिव हो गई हो," बोलकर परवेज ने रामू की तरफ बाँहें फैला दीं "चल मंजरी के बदले में मुझसे गले मिल ले, मैं इत्तेफाक नहीं रखता कि तुम कोरोना पॉजिटिव हो या नेगेटिव।"

"इस साल ईद को करोना निगल गया, चलो ईद मिलन ही कर लें; बाय दि वेय मुझे करोना हो नहीं सकता!" परवेज से गले मिलते हुए रामू बोलता गया, बेफिक्री से।

"तुम्हें यकीन है तुम्हें कोरोना हो नहीं सकता! फिर प्लाज्मा डोनेट करने क्यों चल पड़े थे? कोरोना संक्रमण के बिना एंटीबॉडी बन सकता है भला!" स्वभाव अनुकूल अहम गंभीर आवाज में बोला, आगे नाराजगी जाहिर करते हुए कहा, "तुम्हारे इस दावे के कारण रामघाट में कोरोना-मंडली को अपना बचाव करना मुश्किल हो जाएगा।"

"रामू, इनफैक्ट हम लोग आज इसी मुद्दे पर बात करने यहां आए हैं; अब तो अनलॉक हो चुका है, वीसी के बजाय अब आमन-सामने बैठना ही ठीक रहेगा।" बतकही को वार्ता वाली पटरी पर लाने की खातिर सहज ने कहा।

"अपनी बॉडी में एंटीबॉडी होने का दावा तुम्हें नहीं करना चाहिए था रामू।" अफसोस जताने-जैसी आवाज थी शायनी की, जैसे कोई बड़ी चूक हो गई हो रामू से।

"मैं तो अभी भी कह रहा हूं मेरे शरीर में करोना का प्रतिकीटाणु, जिसे दुनिया एंटीबॉडी कहती है, बन चुका है।" अपनी छाती पर हथेली फैलाते हुए रामू ने कहा।

"तो तुम्हारे लिए साइंस नहीं तुम्हारी धारणा सच है?" शायनी रामू पर

बिगड़-सी पड़ी।

"तुम इतने यकीन के साथ कैसे कह सकते हो?" रामू पर गड़ते हुए अहम ने कहा, जैसे उसे रामू के अंदर सच में एंटीबॉडी दिख गया हो।

"देखो यार साइंस तो दुनिया का सच है ही, यकीन के साथ उपजा एहसास भी साइंस ही है।" अहम की ओर बोलते हुए रामू ने कहा, फिर शायनी की तरफ होकर बोला, "मेरे अंदर करोना के विरुद्ध लंबे समय से जंग छिड़ी हुई है, तो निश्चित रूप से मेरे खून के कतरे-कतरे में करोना के बाप जैसा कीटाणु तैयार हो चुका होगा।"

"कभी-कभी यकीन की भी परख होनी चाहिए।" परवेज बोला, फिर सहज से कहा, "रामू का एंटीबॉडी टेस्ट कराने में क्या हर्ज है?"

"हां-हां क्यों नहीं! पापा के मित्र हैं रामानुज डायग्नोस्टिक लैब वाले, वो एंटीबॉडी टेस्ट करा देंगे फटाफट!" सहज ने देर नहीं की।

"रिपोर्ट कब तक आ जाएंगे?"

"शाम तक!"

"फिर तो शाम को हम सभी यहीं पर फिर मिलते हैं।" अहम ने लंबी सांस छोड़ते हुए कहा; लगा भविष्य के लिए कोई बड़ा निर्णय होनेवाला हो।

शाम पांच बजे रिपोर्ट सहज के मेल में प्राप्त हो गई थी; उसने मोबाइल में ही रिपोर्ट शायनी को दिखाई। रिपोर्ट देखकर वह चौक पड़ी ...एंटीबॉडी टेस्ट पॉजिटिव? पूरे 256! रिपोर्ट के ऊपर नाम देखा ...रामू ग्वाला, रेफर्ड बाय... सेल्फ। उसने दांतों तले उंगली दबा ली ...रामू ने तो कभी कोरोना होने या फिर कोरोना के सिम्टम्स दिखने का जिक्र नहीं किया किसी वीसी में! वह तो निर्मल मन वाला लड़का है, अपने दोस्तों से कभी कुछ छिपाता नहीं है; चलो सभी को नहीं बताता कोरोना हो जाने के बारे में, ग्लानि हो रही होगी, पर मंजरी को जरूर बताता, मंजरी भला मुझे नहीं बताती... मोबाइल स्क्रीन पर गड़े-गड़े शायनी सोच में पड़ गई।

"किस दुनिया में खो गए; रामू बंदा जो बोलता है ताल ठोककर बोलता है!" शायनी को गहन चिंतन में पड़ी देखकर सहज ने कहा, उसे नॉर्मल करने के ख्याल से।

"आगे क्या करना है?" नॉर्मल होने के बजाय शायनी और गंभीर हो उठी।

"क्या करना है?" खुद सहज को भी समझ में नहीं आ रहा था अब क्या करना है।

"चलो रामू के पास चलते हैं, सभी को वहीं पहुंचने का मैसेज फॉरवर्ड करो; मंजरी तो दोपहर से वहीं चौका-बर्तन कर रही है।" माथे का वजन हल्का हो जाने जैसी बोलती रही, "अच्छा हुआ जो उसने कोरोना वार्ड की स्वैच्छिक सेवा त्याग दी है; कैसे संभाल रही थी दोनों घरों को बेचारी अकेली!"

शाम छह बजे मंडली के साथीगण रामू के शेड में हाजिर थे, जैसे किसी के पास कोरोना के सिवाय कोई काम न हो। हकीकत में ऐसा ही था, कोरोना काल में लोगों के हाथ और दिमाग की व्यस्तता आधी रह गई थी, मन की व्यस्तता भले ही बढ़ गई हो।

"रामू की एंटीबॉडी रिपोर्ट पॉजिटिव है, विद् हायर क्वांटिटी! आईएम सो सरप्राइज्ड!" शायनी कब से उतावली थी, सीधे टॉपिक पर आ गई।

"मुझे कोई आश्चर्य नहीं हो रहा है, एक यकीन के साथ जो बोल दिया तो बोल दिया।" सबके सामने भुने मखाने रखते हुए रामू ने कहा, पर्वत जैसे आत्मविश्वास के साथ।

"डार्विन ने इस धरती पर विभिन्न प्रजाति के सतत विकास का प्रामाणिक थ्योरी दिया है," बोलकर अहम ने अपने होंठों की गोलाई बना ली, फिर कहा, "यदि मानव-मस्तिष्क की बात करूं तो मनुष्य की अंतःचेतना में जो सोच या चीज घूर्णन करती रहती है उसकी क्रिया-प्रतिक्रिया से उसके सेल में उस सोच को मजबूती देने वाले फैक्टर डेवलप हो जाते हैं..." आगे कुछ तर्कपूर्ण तथ्य रखने के लिए वह रुका; अहम के वाक्यों के विराम के बीच शायनी बोल पड़ी, साइंस को सच बताते हुए "कोरोना एंटीबॉडी डेवलप होने का डायरेक्ट कनेक्शन है कोरोना इनफैक्शन से; एज पर माय ऑब्जर्वेशन रामू के दिल्ली जाने से लेकर कोरोना वार्ड में सेवारत रहने के दरम्यान उसे कोरोना इनफैक्शन हुआ होगा।" फिर अहम के तर्क के समानांतर जाती हुई बोली, "बट सीन्स विल पावर ऑफ रामू इज बियॉन्ड एनीथिंग द कोरोना वायरस कुड नॉट गेट इट एक्सपोज्ड इन हिज बॉडी; और इसीलिए रामू को जरा भी पता नहीं चला होगा कि कोरोना वायरस उसके शरीर में कब आया कब गया! ओके?" बोलकर उसने सभी पर शिक्षिका-जैसी नजर फिराई, जैसे किसी को कोई शक तो नहीं है।

"जब रिपोर्ट पॉजिटिव आ ही गई है तो उसका कुछ पॉजिटिव रिजल्ट भी निकलना चाहिए।" परवेज ने बांस के मचान से नीचे उतरते हुए कहा, जैसे जंग के लिए निकलना चाह रहा हो।

"अब क्या पॉजिटिव रिजल्ट चाहिए, कोई पुरस्कार-अवॉर्ड मिलना हो तो उसका मुंडन कराकर पूरे रामघाट में रामरथ में बिठाकर घुमा लाओ!" रामू की ओर अपने होंठों में अंत:खिंचाव लाते हुए मंजरी बोली; अपनी भाव-भंगिमा से उसने जतला दिया, उन दोनों के बीच पति-पत्नी जैसा होने में कोई दुराव-छिपाव नहीं है।

"घुमाना ही है तो मुंडन कराके क्यों घुमाएंगे, पगड़ी बांधकर सरदार बना कर घुमाएंगे!" परवेज ने एक कदम आगे बढ़ते हुए कहा।

"इससे क्या हासिल होगा?"

"अरे भई, कल के अखबारों ने तो रामू को रामघाट का विलेन बना डाला है!" परवेज तैश में आते हुए बोला, फिर शब्दों को चबा-चबाकर कहा, "अब तो बेटा एमएलए को रामू का प्लाज्मा लेना ही पड़ेगा! तभी तो रामू का नाम फिर से अखबारों में आएगा, रामघाट के हीरो के तौर!"

"परवेज की बात तर्कसंगत है, अब तो प्लाज्मा डोनेशन की प्रक्रिया आरंभ करनी ही पड़ेगी।" दिनेश ने ठनते हुए कहा, फिर बोला, "रामनरेश को पकड़ता हूं, वह अपने पार्टी फोरम में बात कर प्लाज्मा थेरेपी संपन्न कराएगा; बस्ती का नेता इतना भी नहीं करेगा तो हम लोग उसे नेताजी कहना बंद कर देंगे।"

"पॉजिटिव रिपोर्ट को कल के अखबारों का हेड लाइन बनाता हूं, न्यूज चैनल वालों को भी पकड़ता हूं।" सहज ने इशू को जिंदा रखने का संकेत दिया।

"अपन पॉलटिक्स में नहीं पड़ने का," ऊँची आवाज में चेताने-सा बोलते हुए रॉबर्ट शेड में प्रवेश किया, अचानक; आगे व्यंग्यात्मक भाव-भंगिमा बनाते हुए कहा, "मारथा बोलते रहने का इंटर्नल इंवायरन्मेंट ऑफ हेल्थ डिपार्टमेंट इज वहेरी डॉर्टी; डॉक्टर-नर्स डे-नाइट कोरोना ड्यूटी करते रहने का, बट पॉलटिसियन क्रो माफिक व्होल डे काउ-काउ करते रहने का; इन माई ऑपनियन कोरोना इज नथिंग बट इलीगल बट वांटेड चाइल्ड ऑफ पॉलटिसियंस!"

"शो यू आर ऑलवेयज लेट?" सहज ने नाराज होने के संकेत में कहा।

"नो डियर, इनफैक्ट अपन ओर्गेनाइजेसन रूरल रामघाट में कोरोना के माफिक पब्लिक अवेयरनेस प्रोग्राम चलाते रहने का, अपन डेली उधर जाना माँगता।" रॉबर्ट ने माफी माँगने की मुद्रा बनाकर कहा।

"ओके!"

"....."

"....."

बातों-बातों में मखाने के साथ चाय कब खत्म हो गई किसी को पता ही न चला; मंजरी जब प्याला समेटने लगी तब सभी को लगा चाय-पानी तो हो चुका, अब घर चलना चाहिए।

4

...प्लाज्मा डोनेट करने के इच्छुक रामू ग्वाला का दावा सही; एंटीबॉडी रिपोर्ट पॉजिटिव आई! ...प्लाज्मा डोनेट करने के लिए अड़ा ...देर रात तक सीएमओ से संपर्क नहीं हो पाया ...जिला अस्पताल के सूत्रों ने बताया रिपोर्ट प्राइवेट लैब की है, उस पर अभी कोई प्रतिक्रिया देना उचित नहीं है ...रिपोर्ट पॉजिटिव आने पर रामघाट में हर्ष की लहर ...यदि प्लाज्मा थेरेपी सफल रही तो कोरोना संक्रमण से गंभीर रूप से पीड़ित मरीजों को जीवन दान मिलने की उम्मीदों को पंख लगेंगे... आज सुबह अखबारों के प्रथम पृष्ठ का आधा और द्वितीय पृष्ठ का एक तिहाई भाग रामू की पॉजिटिव रिपोर्ट वाली खबरों से अटा पड़ा था। रामघाट सिटी चैनल और प्रदेश स्तरीय हलचल हंड्रेड टीवी में भी ब्रेकिंग न्यूज चल रहे थे ...इतिहास बनाने से रामघाट बस एक कदम दूर ...रामू ग्वाला ने संकल्प जताया, जरूरत पड़ी तो एक क्या कई लोगों को प्लाज्मा देने को तैयार...

समाचारों की लहर में सवार कोरोना-मंडली के सदस्य रामू के शेड पर सुबह नौ बजे ही आ जमे; जून महीने में सुबह नौ के बाद घर से बाहर निकलने में तो लगता है जैसे सूरज जला-पका ही डालेगा।

"हां दिनेश, तुम्हारी बात हुई रामनरेश से? एमएलए साहब का प्लाज्मा थेरेपी कब होना है!" दिनेश के पहुंचते ही सहज उसी पर केंद्रित हो गया।

"रात आठ बजे मिला था, पॉजिटिव रिपोर्ट वाली बात सुनकर खुशी के मारे पागल हुआ जा रहा था; रामदरश एमएलए का तो पकिया चेला है वह! लेकिन..." इतना बोलकर दिनेश चुप्पी मार गया।

"लेकिन क्या? गुरु घंटाल!" परवेज उतावला हो उठा।

"अभी सुबह-सुबह मेरे घर पर आया था; बोला, प्लाज्मा थेरेपी मामले में अंतिम निर्णय पार्टी के प्रदेश मुख्यालय स्तर पर लिया जाएगा; फिर सॉरी

बोलते हुए बोला, रामू पर पूरी बस्ती को गर्व है, मेरी तरफ से रामू से क्षमा माँग लेना; जाते-जाते बड़ा बनते हुए कहा, हम बस्ती वालों को आपस में बैर नहीं करना चाहिए; इसलिए तो, मुझे नेता लोगों की वचन-वाणी पर कभी भरोसा नहीं होता है।" बोलकर दिनेश थूंकना चाह रहा था, पर मुंह फेरकर ही संतुष्ट हो लिया।

"इसका मतलब? अब आगे क्या होगा!" परवेज परिणाम तक पहुंचना चाहता था।

"आगे का मैं बताती हूं।" अपने घर की तरफ से अभी-अभी पहुंची मंजरी बोली, "यह देखो असली राम कथा! रामघाट पायनियर में लिखा है. .." अखबार सहज की तरफ बढ़ाते हुए बोलती रही, रामघाट पायनियर के दूसरे पृष्ठ के एक बॉक्स पर उंगली धरते हुए, "हद हो गई, कोरोना ट्रीटमेंट में भी पॉलिटिक्स घुस गया।" बोलकर वह कमरे के अंदर दाखिल हो गई।

सहज के हाथ में रखे पायनियर का बॉक्स परवेज पढ़ने लगा, दूर से ही '...प्रदेश के पहले प्लाज्मा थेरेपी में पेंच फंसा, डॉ रामदरश मिश्र माननीय एमएलए प्लाज्मा थेरेपी लेने से पीछे हटे; उन्होंने कहा ऐसे डावांडोल और अविश्वसनीय व्यक्ति का प्लाज्मा लेना जनहित के प्रतिकूल होगा। यह भी कहा कि युवा मंडली से जुड़े-भटके हुए नौजवानों से अनुरोध है कि राष्ट्र निर्माण की मुख्यधारा से जुड़ जाएं... प्रदेश में प्लाज्मा थेरेपी को लागू करने के बारे में प्रदेश पार्टी कार्यालय ने कहा कि एक-दो भटके हुए लोगों के कारण प्लाज्मा थेरेपी का पहला शहर बनने से रामघाट का वंचित होना दुर्भाग्यपूर्ण है; सीएम सचिवालय के हवाले से कहा गया है कि दो दिन के अंदर प्रदेश के किसी अन्य शहर में प्लाज्मा थेरेपी का उद्घाटन किया जाएगा...'

"परवेज भाई, जान छोड़ो भी; लग रहा है कोरोना के कारण देश में-प्रदेश में पॉलिटिक्स कुछ ज्यादा ही बदरंग हो रहे हैं, अब हम लोग प्लाज्मा थेरेपी को उसकी किस्मत पर छोड़ दो।" सभी को नींबू-पानी थमाती हुई मंजरी बोली।

"मैं मंजरी की बात से सहमत हूं; आज के बाद हम लोगों को कोरोना माइनस पर विचार करना चाहिए" शेड की छत पर नजरें गड़ाते हुए अहम ने कहा।

"कोरोना माइनस?" शायनी चौंक पड़ी; उसने विज्ञान में ऐसी कोई टर्म पढ़ी नहीं थी अभी तक।

"हां; अब आगे कोरोना माइनस पर बात होगी।" बोलकर अहम जाने के लिए उठ खड़ा हुआ; सूरज चढ़ने से पहले सभी अपने-अपने घरों के लिए निकल जाना चाहते थे। कोरोना माइनस वाली बात सुनकर रामू को अंदर कुछ नया अंकुरण सा महसूस हुआ, बोला "फिर तो कल से मैं करोना प्लस के लिए काम शुरू करूंगा! इसे कोरोना-कैबिनेट में नहीं रखा जाएगा, बल्कि कोरोना-कैबिनेट खुद इसमें शामिल होगी!" रामू ने कहा तो सभी के मुंह की हँसी छूट पड़ी; बात की गंभीरता पकड़ में आने पर सभी चिंतन मुद्रा लिए सड़क की ओर बढ़ चले, कि कोरोना प्लस मतलब रामू के पास जरूर कोई नया आइडिया है। सहज की कार में बैठते-बैठते शायनी रामू की तरफ दो उंगलियों से 'विजयी भव' का चिह्न बनाते हुए बोलती गई, "कोरोना प्लस वाले मामले में मैं तुम्हारे साथ हूं!"

रामू के शेड से घर पहुंचने के बाद अहम के अंदर चिंतनशृंखला चलती रही ...कोरोना की कमान थामे रथी-महारथी अब तो कोरोना चौराहे से आगे निकल चुके हैं, कोरोना से इतर अलग-अलग दिशाओं में! ..कोरोना को चौराहे पर ही बाय-बाय करते हुए कि हम तो चले अपनी मंजिल की ओर, बाकी तुम्हारी मर्जी चौराहे पर अटके रहो या फिर चहुँ ओर फलते रहो, पूरी आजादी के साथ..। उसने आंखें बंद कर लीं...हां, स्पष्ट दिख तो रहा है; भारत भाग्य विधाता ने देश के दिमाग की लगाम अपने हाथों में थाम रखी है, मजबूती से; कोरोना चौराहे से आगे अब कोरोना माइनस वाली यात्रा आरंभ हो चुकी है, भव्य शोभा-यात्रा के रूप में, रंग-बिरंगी नाट्यावली के साथ। नाट्यावली के निर्देशक मंडली को नाट्य मंचन में महारत हासिल हुई जान पड़ रही है। कोरोना चौराहे से नव रूप-रंग वाली विविध नाट्यावली के पीछे जन-जन को सम्मोहित कर तेजी से यात्रा आगे बढ़ाई जा रही है, जन-जन की आंखों को रंग-बिरंगे लेजर किरणों से चौंधियाते हुए; मौन संकल्प के साथ कि पीछे कोरोना चौराहे की तरफ देखना मना है। ...ओ माय गॉड... अहम का कलेजा धड़क उठा, ऐसे में कहीं अनर्गल अनिष्टकारी नाट्यावली का मंचन रफ्तार न पकड़ ले और फिर पूरा जनमानस रंगमंच पर चालू हुए ऐसे मंचन में अपनी चेतना और विवेक ही न खो बैठे! नहीं! नहीं; कुछ तो सोचना पड़ेगा, कुछ तो करना पड़ेगा! देर रात गए उसने सहज को मैसेज भेजा ...कोरोना-कैबिनेट का एक अति आवश्यक विमर्श सत्र जल्दी रखा जाए...। उसने पहली बार सहज को कोरोना-कैबिनेट की बैठक के लिए अनुरोध किया था। अपनी

ओर से बैठक की सूचना भेजकर उसे काफी तसल्ली महसूस हुई; तभी तो विस्फोटक चिंतन शृंखला से उसकी नींद निर्विघ्न रह पाई।

5

शायनी और रामू ग्यारह बजे ही माँग-पत्र लेकर कलेक्टर कार्यालय पहुंच गए, बस्ती से बुलाए गए ग्यारह बच्चों के साथ; रॉबर्ट के आने का इंतजार करना उन्हें फिजूल जान पड़ा। मास्क लगाए किशोरवय बच्चे; सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए, हाथों में माँग वाली तख्तियां उठाए ...हम कुपोषण के शिकार बच्चे ...कुरौना हम पर करता हमला ...कुरौना तुम्हारा इम्यूनिटी हमारा... इम्यूनिटी की दरकार जीने का अधिकार ...विदेशी कंपनियों वाले इम्यूनिटी बूस्टर ना सही, दे दो हमें देसी जड़ी-बूटी ही सही ...तुलसी-मुलेठी नहीं तो सरकार नहीं ...गिलोय-गोली का सहारा जन्मसिद्ध अधिकार हमारा ...चावल आटा वाली बात तुलसी-मुलेठी के साथ ...बस्ती की जान हिंदुस्तान की पहचान ..हमारी माँगें पूरी करो पूरी करो...।

कलेक्टर साहब को देखते ही बच्चे पुलकित हो उठे थे। बच्चों के हाथों में मनोहारी तख्तियां देखकर डी एम साहब विहँस पड़े, मुंह का मास्क ठीक करते हुए। उसने शायनी के हाथ से माँग-पत्र लिया, बोले, "बच्चों की तख्तियां पढ़कर मूल माँग समझ चुका हूं, मुख्यमंत्री महोदय के संज्ञान में लाता हूं।"

"मुख्यमंत्री महोदय के वश की बात नहीं है, देश में प्रधानमंत्री के बिना पत्ता भी नहीं हिलता है! करोना की बात हम उन तक नहीं पहुंचा पाए, कृपया आप करोना प्लस वाली बात दिल्ली तक तो पहुंचाइए।" बोलकर रामू देर तक हाथ जोड़े रहा।

"कोरोना प्लस! मतलब?" रामू की बात कलेक्टर की समझ में न आई।

"कोरोना के खिलाफ जंग में असली हथियार है इम्यूनिटी! जब तक देश की बड़ी आबादी की प्रतिरोधक क्षमता नहीं बढ़ेगी तो कोरोना बढ़ती ही जाएगी।" शायनी व्याख्या करके बताने लगी, आगे और तर्कपूर्ण होती गई "कोरोना ही क्यों, वर्तमान समय की अनगिनत बीमारियों और आने वाले दिनों में पैदा होने वाली अनाम बीमारियों से आम जनता पिस्ती रहेगी बरसों-दशकों तक, यदि आम जनता की इम्यूनिटी नहीं बढ़ाई गई तो!"

"यू आर अब्सोल्युटली राइट, आई विल टेक अप द मैटर विद द गवमेंट

शार्टली," कलेक्टर के शब्दों में संकल्प दिखा, फिर प्रसन्न होकर बोले, "थैंक यू मिस शायनी एंड मिस्टर रामचंद्र, स्पेशली ऑल यंग बॉयज! यहां आकर एक जरूरी मुद्दा सामने रखने के लिए।" फिर शायनी की ओर छोटी मुस्कान डालते हुए बोले, "ओके देन, लेट मी डू शो मएनी अदर इंर्पोटेंट टास्क, प्लीज!" कहकर कलेक्टर अपने चेंबर की तरफ मुड़ चले। शायनी और रामू के चेहरे भाव निरपेक्ष बने रहे। कलेक्टर से मिलकर बच्चों के अंदर उफन रहे उत्साह-उमंग के बिंब-प्रतिबिंब उनके चेहरों और आंखों में झलकने लगे। शायनी ने आंखों से बच्चों की ओर इशारा किया, कलेक्टर कार्यालय से बाहर जाने के लिए।

"आगे क्या करना है?" बाहर सड़क पर आकर रामू ने पूछा।

"डरने का नहीं सब करने का, अपन फ्री मास्क डिस्ट्रिब्यूशन प्रोग्राम में लग जाने का, डिले माफ करने का", बाइक से उतरते ही रॉबर्ट किसी क्रियाशील तत्व-सा सक्रिय हो उठा, रामू और शायनी के बीच आकर उत्साहित दिखते हुए।

"अरे गुरु, तुम्हारे वश का नहीं, सरकार को करने का!" रामू ने नाराज होकर कहा, उसके देर से आने पर खिन्न होते हुए।

"अपन कलेक्टर साहब से मिलने का, बात सरकार तक पहुँचाने का।" रॉबर्ट ने उम्मीद जताते हुए कहा।

"कलेक्टर साहब ने तो बात ऊपर पहुंचाने का भरोसा दिया है, एक-दो दिन देख लेते हैं।" शायनी समझदारी दिखाते हुए बोली।

"कोई बात नहीं, हम लोग करोना को लेकर महीनों से संघर्ष कर रहे हैं, करोना प्लस के लिए दो-चार दिन इंतजार करना ही पड़ेगा।" रामू के मन में भी व्यवस्था के प्रति आस्था जगी।

"अहम ने कोरोना माइनस का प्रसंग छेड़ रखा है, तब तक हम वो भी समझते हैं आखिर कोरोना माइनस है क्या!" शायनी के बोलते-बोलते बच्चों को रामू चार ऑटो रिक्शा में बैठा चुका था, सोशल डिस्टेंसिंग का मास्टर बनते हुए।

रामघाट संध्या अखबार में जोरदार खबर छपी थी ...रामघाट बस्ती के एक साधारण आदमी और विश्वविद्यालय की एमएससी की एक छात्रा ने सरकार का सिर झुकाया ...कोरोना प्लस के लिए जो बात सरकार के धुरंधर और एक्सपर्ट नहीं समझ पाए उसे इन दोनों ने उठाकर सबको चौंकाया...। खबर

पढ़कर कोरोना-मंडली आश्वस्त हो गई; अब तो पूरे देश में चावल-गेहूं के साथ गिलोय-तुलसी की डिब्बी भी बंटने लगेगी, फिर तो कोरोना-मृत्यु के ग्राफ को नीचे खुद की मौत की तरफ भागना ही भागना है!

6

सुबह के अखबारों में शायनी का परचम लहराता देख कोरोना-मंडली शायनी के घर में ही जुट गई, पहली बार। परवेज, रामू, अहम, सहज, दिनेश, मनोज, मंजरी सभी एक साथ पहुंचकर कोरस-सी तान छेड़ दी ...दबंग लड़की खोल दी सरकार की खिड़की... कोरस का सुरताल एक नहीं हो पाया, उनकी आवाज आगे-पीछे थोड़ी ऊपर-नीचे हो गई; सुर-स्वर पहचानकर शायनी कैजुअल में ही बाहर आई, दौड़ी हुई। सहज की आंखों का सामना होते ही उसे भान हुआ, वह तो नाइट वाली मिनी स्कर्ट और स्लीवलेस टॉप में ही दौड़ पड़ी है! सामने यथास्थापित वजनी वक्षद्वय; बिंदास, बेखौफ! जैसे शायनी के सौंदर्य का प्रतिनिधि हो! वह उल्टे पांव अंदर को गई; इस हाल में तो सहज ने भी न देखा है उसे आज तक! उसके वापस आने तक मंडली में चुप्पी छाई रही; शायद उसके वापस आने के बाद ही औपचारिक वार्ता शुरू करने के सामान्य शिष्टाचार के कारण या फिर शायनी के बिंदास बेलौस रूप-रंग की परछाई के वशीभूत!

"वेल्कम बैक प्रिंसेस ऑफ रामघाट!" सलीकेदार कपड़े में शायनी के लौटते ही मंजरी ने कहा; सभी ने उठकर ताली बजाई, पहले वाले कोरस के विपरीत तालबद्ध ताली!

"अरे काहे की प्रिंसेस! प्रिंसेस क्वीन होगी नेता-अफसर-पूंजीपति की बेटी-बहू।" बोलकर शायनी ने दोनों होंठों को दायीं ओर दूर तक खींच दिया, जैसे कह रही हो बड़े लोगों के घर की बहू-बेटियों के लिए उपार्जित उपाधि की ऐसी की तैसी।

"चलो प्रिंसेस ना सही कोरोना प्लस की ध्वजवाहक लेडी तो बन ही गई हो!" वार्ता को पटरी पर डालते हुए अहम ने कहा।

"कोरोना प्लस का काम हो न हो लेकिन राजकुमारी जी ने अपने कपड़े जरूर माइनस कर ली हैं!" मंजरी ने बोलकर अपनी हँसी हथेली से ढक ली, आगे धीमे स्वर में बोली, "अहम भैया के कोरोना माइनस वाली बात में बाकी रह ही क्या गया है, अब तो सहज और शायनी मिलकर माइनस-प्लस

करते रहेंगे!"

"अरे बेशर्म कहीं की!" मंजरी की तरफ मुक्का दिखाती हुई शायनी शर्म के मारे लाल हो उठी; कनखियों से सहज को देखा, शायद दिल से कहना चाह रही हो 'सॉरी यार'।

"मंजरी बहना, जून की इस भीषण गर्मी में सभी को अपने सुकून के हिसाब से नाईट ड्रेस में रहने की आजादी है।" शायनी का बचाव करते हुए सहज ने कहा, अपने विचारों में खुलापन होने की अभिव्यक्ति देते हुए; आगे शायनी से कहा, "ड्रेस वाली बात को रहने दो; अब तुम और रामू यह बताओ कोरोना प्लस वाले मुद्दे में आगे क्या करना है?"

"कलेक्टर साहब ने आश्वासन दिया है कि वे मामले को सरकार के विचारार्थ प्रेषित करेंगे।" शायनी ने प्रशासन की भाषा में ही बताया।

"आश्वासन!" बोलकर मनोज ने अपना मुंह बड़ा-सा खोलते हुए आसमान की तरफ उठा दिया, जैसे कहना चाह रहा हो मुंह बाये रहो कुछ हासिल नहीं होने वाला!

"अरे भई करना क्या है, यदि पांच दिन के अंदर चावल-गेहूं के साथ गिलोय-बूटी नहीं बंटी तो बीस जून से बस्ती रामघाट का नजारा देखना!" हवा में इंकलाबी हाथ लहराते हुए रामू गरज उठा, जैसे सचमुच कुछ बड़ा करने की सोच रहा हो।

"इतना उतावला होने की जरूरत नहीं है, कलेक्टर साहब ने कहा है तो हमें इंतजार करना चाहिए।" सहज ने कहा, रामू की उत्तेजना को थामने खातिर; फिर अहम की तरफ देखकर बोला, "आज की बैठक को हम बेकार नहीं होने देना चाहते, आज कोरोना माइनस की व्याख्या समझाओ हम सभी को।"

"कोरोना माइनस? जरा मैं भी तो सुनूं क्या बला है यह!" सभी के सामने नींबू-पानी और बिस्किट रखते हुए शायनी की माँ बोली।

"आंटी आप तो साइंस की टीचर हैं, यह बला तो आर्ट स्ट्रीम में नाचता फिरता है।" अहम ने मुस्कुराते हुए कहा; आगे मुस्कान गायब हो गई, "काश यह देश कोरोना को विज्ञान के नजरिये से ही देखता तो स्थिति इतनी खराब नहीं होती।"

"केन आई ऐड समथिंग?" परवेज ने हाथ उठाकर अनुमति माँगी।

"यस प्लीज," अहम ने कहा, सोचते रहने की भंगिमा बनाते हुए।

"हमारे देश के राजनेतालोग कोरोना को साइंस के घोल में भिगोकर आर्ट

की धूप में सुखाकर मीठी गोली बनाने में लग गए हैं, और लचकदार सीढ़ी में चढ़-उतरकर उसी गोली से करतब दिखा रहे हैं..." परवेज उंगलियों को नचाकर-घुमाकर बोलने लगा।

"लचकदार सीढ़ी?" मंजरी ने नाक-मुंह सिकोड़ ली।

"यस माय डिअर बहना," परवेज किसी विदेशी राजनेता का पोज बनाकर बोलने लगा, "लचकदार सीढ़ी! जिस पर दो कदम ऊपर, एक कदम नीचे करते हुए हर पार्टी अपने भविष्य की सीढ़ी मजबूत करने में पिल गई हैं।"

"हां अहम भैया, आप आगे बताइए कोरोना माइनस के बारे में; परवेज को तो बीच में राजनीति झाड़ने की आदत-सी पड़ गई है।" शायनी ने हस्तक्षेप किया।

"कोरोना का दंश तो जनता झेल रही है, पर कोरोना का डंक राजनेताओं को चुभ रहा है! जनता के रंगमंच पर कोरोना तेजी से काबिज हुआ जा रहा है; पर पार्टी के लोगो ने रंगमंच से कोरोना को धकेलकर अलग-अलग रंग रूप वाले पर्दे गिराना शुरू कर दिया है, रंगमंच के मध्य में गिरते-उठते पर्दे जिस पर रंगीन लेजर किरणों से विविध रूपांकन-छायांकन-नाट्य मंचन शुरू हो चुका है जो धीरे-धीरे मनभावन से लेकर सम्मोहक होता जाएगा!" अहम बोलता गया।

"साइंस की बात तो सीधे मेरी पकड़ में आती है, पर आर्ट, उस पर भी पॉलटिक्स मेरे पल्ले नहीं पड़ती; कोरोना माइनस को सरल शब्दों में बताओ।" शायनी की माँ ने अहम की तरफ टीचर की भांति उंगली दिखाई।

"कोरोना माइनस का सीधा-सपाट मतलब कहे तो, अब देश-प्रदेश की सत्ता में बैठे लोग देश की फिजां में हर प्रकार की बहस-मुबाहिसों-आजमाइशों को दावत देंगे, बट माइनस कोरोना! विशेष तौर पर गद्दी पर बैठे लोग अब कोरोना को नेपथ्य में धकेलकर रखने के लिए रंगमंच पर नित नए प्रयोग-प्रयोजन लाते रहेंगे!" बोलते-बोलते अहम की आंखों की पुतली स्थिर हो चली, जैसे सामने सरक रहे समय का एक्स-रे ले रहा हो।

"तो तुम्हें इसकी भनक कब और कैसे लगी?"

"पिछले एक-डेढ़ महीने से देश में एक अजूबा-सा वातावरण बनते देख रहा हूं मैं; न्यूज चैनलों में लगातार दिखने वाले राजनेताओं के चेहरे पर मैंने पैनी नजर रखी हुई है।" बोलकर अहम ने आंखें बंद कर लीं; फिर थोड़ी-सी खोलकर ऊपर कहीं टिकाकर बोलने लगा, "वैसे देखने में यह

टॉपिक मनोविज्ञान का लगता है, पर हकीकत में इसके पीछे बड़ा दर्शन छिपा है, राजनीतिक दर्शन! राजनेताओं की भाव-भंगिमा, वचन-वाणी से स्पष्ट हो रहा है कोरोना की फसल बढ़ते जाने पर उसके ऊपर रंग-बिरंगे झालर-कॉलर लगाना आरंभ कर दिया है जिसे मैंने कोरोना माइनस नाम दिया है; महत्त्वाकांक्षी राजनेतागण अब कोरोना माइनस की सवारी कर लंबी रेस जितने की योजना पर चल पड़े हैं; और जो पार्टी सिंहासन पर नहीं है वह तो मदारी बनकर कोरोना का अधिकतम दोहन-शोषण करने पर तुली है! वे इसे उखाड़-पछाड़कर वीभत्स बनाकर जनता के सामने कोरोना की परेड़ जिंदा रखना चाह रहे हैं, ताकि जनता कोरोना से ही चिपकी रहे, सत्तासीन राजनेताओं से नहीं।" लंबे वक्तव्य के बाद अहम ने लंबी सांस ली।

"कहने का तात्पर्य?"

"तात्पर्य यह कि देश में और हर प्रदेशों में भी, राजनीतिक दल चाहे सत्ता में हों या सत्ता से बाहर असली फोकस अब कोरोना नहीं रहा! उन सभी का साध्य कोरोना से इतर होता जा रहा है।" साथियों की ओर देखकर अहम बोलता गया, "मार्च-अप्रैल में कोरोना एक संज्ञा हुआ करता था, अब राजनीतिक दलों ने इसे सर्वनाम बनाकर दोहन-शोषण करना शुरू कर दिया है; देश में पनपती जा रही इस प्रवृत्ति को कोरोना माइनस टर्म से बखूबी समझा जा सकता है।"

"तो इस मसले को भी कोरोना-कैबिनेट में भेजा जाए?" सहज ने प्रक्रिया को आगे बढ़ाया।

"निश्चित रूप से! कोरोना-कैबिनेट में पेश होने वाला यह सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव होगा।" परवेज ने मुठ्ठी भींचते हुए कहा, जैसे किसी बड़े राजवंश की नींव हिला देगा।

"नींबू-पानी के लिए शायनी का शुक्रिया; सरकार के कागजों में अभी भी धारा एक सौ चौवालीस लगी हुई है, इतने लोगों को देर तक यहां नहीं टिकना चाहिए।" बोलकर सहज उठने लगा। आंटी को अंदर जा चुकी देखकर परवेज ने कहा, "यार सहज तुम तो जरा और ठहर जा, दो लोगों के ठहराव-जमाव पर धारा चौवालीस लागू नहीं होता है न!" परवेज के मसखरेपन पर सभी ने ठहाके लगा दिए, सिवाय शायनी के। ठहाकों की गूंज में ही सभी अपने घरों की ओर चल पड़े।

घर को जाते हुए दिनेश को बड़ा आश्चर्य हुआ, आज तो भीमरवा ने

दिन में ही बस्ती को सर पर उठा रखा था ...डरो मत ...डिगो मत ...रुको मत ...झुको मत...

7

16 जून; दोपहर ढलते परवेज अकुलाहट में किसी भी साथी का नंबर खोजने लगा। मोबाइल स्क्रीन में अहम का नंबर पहले दिख गया; आवाज में घबराहट का तूफान लादे बोला, "तुमने सुना? गजब हो गया यार!"

'...इतना घबराए क्यों लग रहे हो? आकाश फट पड़ा या पहाड़ टूट गया!' दुनिया के सारे दुखों से निस्पृह आवाज मोबाइल से बाहर आई।

"हां यार, समझो हिमालय में लहू की धार फट पड़ी है!" परवेज अब और बेचैन हो उठा।

"अरे मौलाना टूट गया फट गया को मारो गोली, यह तो बताओ हुआ क्या? कोरोना माइनस का कोई नया वर्जन आया है क्या।" अहम अभी भी वार्ता निरपेक्ष बना रहा।

"बीबीसी में द टाइम्स के हवाले से बैड न्यूज चल रहा है..." बोलते-बोलते परवेज को लगा जैसे उसकी स्वर ग्रंथि मुंह को आ गई है, अपने को संभालते हुए कहा, "लद्दाख के गलवां घाटी में चीनी सैनिकों ने सुनियोजित तरीके से हमारी सेना के बीस जवानों की जान ले ली है!"

"जान ले ली है या हमारे जवान शहीद हुए हैं?" 'जान' और 'शहीद' शब्द पर अहम की आवाज में ठहराव आ गया था।

"बात तो एक ही हुई न?"

"नहीं, दोनों स्थिति में फर्क है; अपने देश के लिए बड़ी दुख की घड़ी है यह!" बोलने के बाद अहम के लंबी सांस छोड़ने की आवाज आई; आगे वार्ता समाप्त करते हुए बोला, "हम सभी को कहीं बैठना चाहिए; मैं सहज को बोलता हूं जगह निश्चित कर ग्रुप में डाल दें, शाम पांच बजे के लिए।"

शाम होते-होते गलवां की घटना हर भारतवासी के चेहरे में मायूसी बनकर चस्पा होती गई। हर कोई किसी-न-किसी से बात करने के लिए उतावला होने लगा। कोरोना-मंडली के सदस्य तेजी से सहज के घर की तरफ चल पड़े; अब चीन ही सबसे बड़ा मुद्दा बनता गया।

"अपने घर पर बैठक रख ली इसके लिए धन्यवाद; लेकिन तुम भी कमाल करते हो सहज, बाहर लॉन या खुले बरामदे के बजाय यहां किलेनुमा

एसी कॉन्फ्रेंस में बैठा लिया हम सभी को?" एसी हाल में कदम रखते ही प्रायः चुप रहने वाला अहम भी खुल पड़ा।

"यहां एसी हॉल में मुझे तो लग रहा है जैसे चीनी सैनिक रामघाट तक घुस आया हो और हम लोग किसी किले में छिप लिए हैं!" दिनेश भी एसी हॉल में असहज महसूस करने लगा।

"अगर अपने मन की ही माननी हो तो कुछ पॉजिटीव मान लेना चाहिए; कल रात अपने सैनिकों के साथ जो घटना घटी है वहां का तापमान शून्य से नीचे माइनस में रहता है, यहां एसी हॉल में हम लोग उसी स्थिति को करीब से अनुभव कर चर्चा कर सकते हैं।" शायनी ने बतकही समाप्त की।

सभी मायूसी के साथ बैठ गए, गमगीन चेहरा लिए; गलवां घाटी की घटना से सभी की चेतना विघटित थी। दिनेश की आंखों में आंसू की बूंदें छलकने लगीं; मंजरी ने शब्दों का सहारा दिया, "दिनेश भैया, अपने जवानों के जान गँवाने पर हम सभी शोक में हैं; आपकी भावना का हम सभी कद्र करते हैं।"

"मंजरी दीदी, मरने वाले उन सैनिकों के लिए मेरे लगाव का खास कारण है; पिछले साल सेना में भर्ती होने के लिए रामघाट से सैंकड़ों किलोमीटर चलकर मैं दानापुर कैंट गया था, बिहार रेजीमेंट में भर्ती होने..." बोलते-बोलते उसकी हिचकी छूट गई; मंजरी ने उसकी पीठ में मित्रवत थपकी दी, उसने आगे कहा, "मेरा सिलेक्शन भले ही बिहार रेजिमेंट के लिए ना हुआ हो पर मुझे लगाव तो हो ही गया था बिहार रेजिमेंट से! गलवां में मरने वाले सैनिक बिहार रेजिमेंट के ही थे..." अब वह सिसकने लगा; उठकर सहज ने उसे अपनी बांहों के घेरे में लिया, वह आंसू पोंछते हुए बोला, "काश मैं भी वहां होता तो मैं भी कई चीनी सैनिकों को मार गिराता!" बोलकर दिनेश छाती में हवा भरने लगा। हॉल में मिनट भर मौन छाया रहा, दिनेश के आंसू के सम्मान में।

"क्या इस घटना को भी आप करोना माइनस कहेंगे अहम भैया?" रामू ने चुप्पी तोड़ी।

"फटाफट जवाब चाहोगे तो यह चीन की तरफ से माइनस कोरोना है; पूरी दुनिया चीन पर कोरोना फैलाने का इल्जाम लगा रहा है," सिर हिलाते हुए अहम ने कहा। आगे बोलते हुए उसका चेहरा सख्त हो चला, "ऐसे में चतुर चीन मुद्दे से भटकाव के लिए कोई भी हथकंडा अपना सकता है,

किसी भी हद तक की क्रूरता को अंजाम दे सकता है!"

"क्या भारत की तरफ से भी यह कोरोना माइनस का मामला दिखता है?" बोलते हुए परवेज ने अपनी आंखें लघुतम आकार में कर लीं, अपने सामान्य स्वभाव के बिल्कुल विपरीत।

"वि नो, भारत देश में राजनीति की खेती होती है, राजनीतिक स्वार्थ की बंपर फसल भी काटी जाती है; लेकिन सत्ता शीर्ष पर बैठे लोग चाहे किसी भी पार्टी के हों कभी भी जान-बूझकर अपने सैनिकों का बलिदान नहीं करवाएंगे; यदि मान भी लो कोई पापी-पुरुष ऐसा सोच भी ले, पर हमें अपने जनरलों पर पूरा विश्वास है, वह ऐसे निकृष्ट राजनेताओं की ख्वाहिशें शायद कभी नहीं पूरी होने देना चाहेंगे।" बोलने के बाद अहम का चेहरा आत्मविश्वास से दमकने लगा।

"मुझे तो सबसे बुरा लग रहा है कि हमारे जो जवान मारे गए हैं वे सभी गरीब और साधारण घर के हैं, पीछे उनके परिवार को कितने कष्ट उठाने पड़ेंगे!" अब रामू की आंखों में आंसू की बूंदें तैरने लगीं, वह आगे बोला, "यदि वे जवान अमीर घरों के होते तो मुझे..." दिनेश ने रामू का उपहास उड़ाते हुए उसे रोका, "तुमको मान गए गुरु, मित्र लोग सही कहते हैं तुम्हारा नाम रामचंद्र नहीं मारचंद्र होना चाहिए था।" आगे उपदेशात्मक अंदाज में बोला "अरे बाबा, सभी मनुष्य की जान बराबर होती है! मरने वाले चाहे गरीब घर से हों या अमीर घर से, हमें मौत में फर्क नहीं करना चाहिए!"

"मेरा कहने का मतलब है यदि मरने वाले सैनिक अमीर घरों के होते तो उनके पीछे उनके परिवार को इतनी तकलीफ नहीं उठानी पड़ती, जितनी गरीब परिवारों को उठानी पड़ती हैं।" रामू ने शब्दों के सहयोग से समझाया, अपने खिलाफ बन रही धारणा की धार कम करने की खातिर।

"रामू भले ही अपनी कही बात छील-माठ ले, मेरा मानना है अभी तक गरीब घरों के बच्चे ही फौज में भर्ती होकर सीमा पर खून-पसीने बहा रहे हैं।" परवेज ने कहा तो उसके चेहरे में लालिमा उग आई, अब बोलते हुए उग्र हो उठा, "अब देश में एक आवाज बुलंद होनी चाहिए, आगे से गरीब घरों के बच्चे फौज में नहीं जाएंगे, अब अमीरों के बच्चों को मरने की जिम्मेदारी लेनी होगी!"

"डियर परवेज! अच्छा होगा तुम अपनी बात को इसी हॉल में दफन कर दो! अपनी धारणा यदि तुमने सार्वजनिक तौर पर बाहर कहीं प्रकट कर दी

तो..." बोलकर अहम ने दोनों होंठों को जोर से भिड़ा दिया।

"तो?" परवेज उग्र बना रहा।

"तो समझो तुम्हारी शामत आ जाएगी; तुम्हारे मुंह से ऐसी आवाज बुलंद होना खतरे से खाली नहीं है!" बोलकर अहम ने दाहिने हाथ से ठुड्डी के नीचे दाढ़ी बनाने-सा रेखाचित्र बनाया, फिर दोनों हाथों से कान छूकर, 'तौबा तौबा'-सा करते हुए बोला, "तुम पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा लग सकता है; इससे भी आगे विदेशी ताकतों के हाथों खेलने का भारी-भरकम दफा ढोना पड़ सकता है तुम्हें, आजीवन अंधेरी कोठरी में!"

"इन माय ऑपनियन रामू एंड परवेज बॉथ सिम एक्सट्रीमिस्ट इन देयर स्टैंड; एक आइडियल सिचुएशन क्या हो सकता है वह बताता हूं।" सहज ने सिर हिलाते हुए कहा, फिर दृढ़ होकर बोला, "आर्म्ड फोर्सेस में रिक्रूटमेंट के लिए गवर्नमेंट ऑफ इंडिया को संसद से न्यू एक्ट पारित कराना चाहिए, जिसमें निर्धारित किया रहेगा कि हिंदुस्तान के हर परिवार के बच्चों को फौज में सेवा देनी पड़ेगी।" आगे उसने अर्थशास्त्रीय भाव-भाषा में कहा, "हां, फेमिली के एनुअल इनकम के बेसिस पर दो साल से पच्चीस साल तक की अनिवार्य सेवा देनी होगी; ऑफकोर्स जिन्हें देश सेवा ही सच्ची सेवा लगे उन्हें सेना में कार्यकाल पूरा करने की छूट होगी, चाहे वो कितना ही अमीर क्यों न हो।"

"और छूट वाली श्रेणी क्या होगी?"

"आमदनी चाहे करोड़ों में क्यों न हो किसी को कोई छूट नहीं दी जाएगी कंपलसरी सर्विस से!" हर सीमा समाप्त करने का हवा में संकेत बनाते हुए सहज ने कहा, अपनी थ्योरी की सार्थकता सिद्ध करने की खातिर।

"सुबह बात करते हुए अहम भारतीय सैनिकों की जान लिए जाने या शहीद होने में फर्क बता रहा था।" परवेज को सुबह वाली वार्ता याद आ गई, बोलता गया, "तो क्या इनकम ग्रुप के आधार पर कहा जाएगा...?" परवेज के बोलने के बीच ही सहज बोल पड़ा, "कुछ दिन अखबारों-न्यूज चैनलों पर नजर रखो, दोनों में फर्क समझ जाओगे...।" आगे चुप रहने जैसी मुख-मुद्रा बन आई सहज की, अंदर कुछ उमड़ते-घुमड़ते हुए-सा महसूस होते ही बोल ही दिया, "यदि हमारे सैनिक एलएसी पार कर चीनी क्षेत्र में घुस गए थे तो चीन कहेंगे कि उसने भारतीय सैनिकों को ढेर कर दिया है, यदि चीनी सैनिक एलएसी क्रॉस करके भारतीय क्षेत्र में घुस गए थे और हमारे सैनिक लड़ते हुए

मारे गए हैं तो हम कहेंगे हमारे सैनिक मातृभूमि के लिए शहीद हो गए हैं!"

"अहम भैया, अखबार वाले-चैनल वाले गलवां मामले को गोल-गोल घुमा रहे हैं, और अब तो आप भी गोली दिए जा रहे हो; यानी ये हत्या होने का ही मामला है?" मंजरी विचलित हो उठी।

"अभी तक का न्यूज यही है कि हमारे निहत्थे वीर जवानों ने धोखेबाज चीनी सैनिकों का मरते दम तक मुकाबला किया था और कई चीनी सैनिकों को मौत के घाट उतारते हुए प्राण न्योछावर किए हैं!" अहम ने गर्व से कहा।

"अहम भैया, अभी दो दिन पहले आपने कहा था देश में कोरोना माइनस वाला फेज शुरू हो चुका है, गलवां की घटना से तो लग रहा है कोरोना माइनस भारत से छिटककर चीन की तरफ चला गया है!" रामू ने कहा; लगा उसके अंदर कोरोना तो ज्वालामुखी जैसा सतत सक्रिय रहता है।

"मेरे नजरिए से कोरोना माइनस को अब वैश्विक संदर्भ में समझने की जरूरत है," रामू के कौतूहल का निवारण परवेज ने करना चाहा, "इस सदी में विश्व की राजनीति को करीब से समझने की जरूरत है; विश्व के ताकतवर देशों के सत्ता पुरुषों की प्रकृति और प्रवृत्ति की स्केनिंग रिपोर्ट निकालो तो तुम्हें स्पष्ट दिखेगा वे अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति की खातिर कोई भी जोड़-तोड़-गठजोड़ जंग-जोड़-होड़ ले सकते हैं!"

"चलो अपनी बात को यहीं विराम दो, आगे यह कहने की भूल मत करना कि हमारे और उनके बीच हाल तक याराना चला आ रहा था..." हस्तक्षेप करते हुए आगे सहज भी सहम उठा, "...और अब गलवां में गले मिल लिए?"

"एक मिनट के लिए मान लो यदि ऐसा है तो?" अहम के कहने के अंदाज से लगा जैसे कहना चाह रहा हो, ऐसा ही है!

"यदि-जदि पर अभी चर्चा नहीं कर सकते, बेहतर होगा इस मामले को भी कोरोना-कैबिनेट में रख देते हैं।" सहज को पता होता है कोरोना-कैबिनेट के हवाले कर देने से किसी मुद्दे को तत्काल विराम दिया जा सकता है।

पूरी बातचीत के दरम्यान महाराज जी कॉंफ्रेंस हॉल का दरवाजा उठाकर कई बार अंदर झांक चुके थे; घर में बिना 'ओके' हुए बैरा लोग कुछ भी सर्व नहीं करते। सहज को अचानक याद आया, आधे घंटे की चर्चा में न चाय, न स्नैक्स सर्व हुआ है अभी तक! उसकी बायीं आंख किचन की तरफ उठते ही बाहर से दो-तीन बैरा ट्रे में भरकर चाय-स्नेक्स जुटाने लगे। कुछ

मिनटों तक हाल में चाय की चुस्की का ही बोलबाला रहा। सहज को ऐसा वातावरण असहज लगा, छेड़ने की मुद्रा में बोल पड़ा, "और रामू, कोरोना माइनस की बात तो कैबिनेट में जा चुकी, कोरोना प्लस का क्या हुआ? इसे भी कैबिनेट के हवाले कर देने की मंशा तो नहीं है तुम दोनों की!"

"बिल्कुल नहीं, इस पर तो डायरेक्ट एक्शन होना माँगता है!" चाय का प्याला टेबल पर पटकते हुए रामू उतावला हो उठा।

"देखो अभी पूरे देश में गलवां वाली घटना को लेकर उबाल है, अभी कुछ ऐसा-वैसा करना मत।" अहम ने चेताया।

"तो क्या अपनी आवाज को अपने अंदर दफन हो जाने दें?" सहज के घर में शायनी पहली बार मुखर हुई थी।

"नहीं मैं ऐसा नहीं कह रहा हूं, जब समय अनुकूल देखो कोरोना प्लस वाले इश्यूज पर आगे बढ़ सकते हो," अहम ने रास्ता दिया।

"साथ ही तुम्हें छूट भी है, तुम दोनों के एक्शन को यह कोरोना-मंडली कार्रवाई से पूर्व ही सहमति देती है; पर..." 'पर' शब्द पर सहज अटका रहा, फिर शायनी की तरफ तिरछी नजर से देखकर बोला, "मेरी व्यक्तिगत शर्त के साथ कि कोरोना प्लस की कार्यवाही में शायनी के साथ रहते-रहते कहीं तुम उसे ही न..." सहज के इतना बोलते ही पूरा हॉल ठहाकों से तरंगित हो उठा। पीछे खड़े महाराज जी पीछे हटने लगे। सभी बाहर जाने को उठ खड़े हुए। पर मंजरी ने गले में हाथ डालकर फांसी पर झूल जाने का स्वांग रचा; अब ठहाकों की गूंज दोगुनी हो गई। हॉल का दरवाजा खुलने के बाद हँसी की अनुगूंज बाहर तक फैल गयी।

घर आते में रामू जब अंबेडकर चौराहे के करीब पहुँचा तो भिमरवा क्रंदन-शोर सा किए जा रहा था, अपने स्वभाव के विपरीत ...गरीब मरेंगे ...अमीर बनेंगे ...नेता बकेंगे...

8

1 जुलाई; रामघाट में मॉनसून जवां हो चुका था, हवा में शीतलता तैर रही थी, चारों ओर हरियाली की कोपलें खिल उठी थीं। इतने परिवर्तनों-बदलावों से बेखबर रामू का धैर्य जवाब देने लगा। बस्ती में कोरोना के केस बढ़कर 47 हो गए थे। दूर-दूर तक कोई खेवनहार नजर नहीं आ रहा था। मंगल चाचा बता रहे थे, '..जब रामघाट में कोरोना की संख्या 510 हुआ करती थी और

बस्ती में मात्र एक, तब मेडिकल वाले बड़े-बड़े एंबुलेंस लेकर गली-गली मोहल्ले-मोहल्ले मधुमक्खी जैसे भिनभिनाया करते थे; बस्ती में पहला केस एक मई को निकला था, तब क्या नजारा था; जैसे किसी बड़ी फिल्म की शूटिंग हो रही हो! उस दिन बस्ती वाले अंबेडकर प्रतिमा के बगल में रखे गए कार्ल मार्क्स के पास सुबह इकट्ठे हो रहे थे, मजदूर दिवस को मृत होने से बचाने के लिए। तभी पुलिस और मेडिकल की कई गाड़ियां अचानक बस्ती में घुस आईं; देखते-ही-देखते पुलिसवालों ने बस्ती की सभी सड़कों-गलियों में मोर्चा संभाल लिया, लगा जैसे किताबों में दुबके नारे–'दुनिया के मजदूरों एक हो,' से खफा होकर सरकार ने पूरी बस्ती को फांसी का फरमान सुना दिया हो! आगे-आगे अंतरिक्ष यात्री जैसी ड्रेस में मेडिकल वाले और पीछे-पीछे राइफल ताने पुलिसवाले हरिया काका वाली गली में बढ़ते गए; कोई आधे घंटे बाद अबरार मिस्त्री को कब्जे में लिया गया था, जाले में लपेटकर!'

बात रामू की समझ से परे जा रही थी ...जब एक मई को कोरोना का पहला केस पकड़ने के लिए सरकार इतनी चुस्त थी, आज एक जुलाई को बस्ती में कोरोना केस बढ़कर सैंतालिस हो गई है, फिर भी न कोई एंबुलेंस, न कोई टेस्ट, न पुलिसवाले! ऐसे में तो आनेवाले महीनों में बस्ती बचेगी ही नहीं! पंद्रह दिनों से पूरे रामघाट में गलवां घाटी की तेज हवा चल पड़ी थी, बस्ती में तो 'गलवां दी गल' सी; तब लोग-बाग जैसे गलवां घाटी में ही खाते और वहीं पर सो जाते! पूरा शहर तो जैसे हिंदुस्तानी फौज की रिजर्व कोर बना बैठा था; बस युद्ध छिड़ने की देर भर थी, मोर्चा संभालने दौड़ पड़ता! वह खुद भी तो तैयार बैठा था, खुदा न खास्ता यदि चीन ने हमला कर दिया तो देश की पुकार पर एलएसी पहुंचनेवालों में पहला नवयुवक बनने का सपना वह भी तो पाले बैठा था! पर इसका मतलब यह तो नहीं होना चाहिए था कि कोरोना का कहीं कोई नामलेवा ही न हो, जैसे कोरोना कोई फुदकी चिड़िया थी जो किसी दूसरे देश की तरफ उड़ गई हो! अखबारवालों ने तो कोरोना के आंकड़ों को अंदर के पृष्ठों में समेटकर जैसे 'राम नाम सत्य' बोलकर छुट्टी कर ली थी! चैनलों से कोरोना तो ऐसे विलुप्त हो गया जैसे किसी मंजे हुए जादूगर ने मंत्र फूंक कर मंच से गायब करा दिया हो!

रामू की चिंतन शृंखला भंग होने का नाम नहीं ले रही थी, '..हकीकत में कोरोना तो बाढ़ के पानी की तरह बढ़ता जा रहा है! पैसे वाले प्रभाव वाले तो आईसीयू से वेंटिलेटर से बच जाएंगे, पर बस्ती वालों का क्या होगा..?

कोरोना प्लस? हां-हां, कोरोना प्लस ही अंतिम सहारा है बस्ती के बाशिंदों का; बस्ती ही क्यों पूरे देश में कोरोना के खिलाफ जंग में शरीर का उच्च प्रतिरोधक क्षमता ही गरीबों का सच्चा साथी हो सकता है। चीन के खिलाफ जंग छिड़ने से पहले ही बस्ती वालों के लिए कोरोना प्लस का टारगेट पूरा करना पड़ेगा! कलेक्टर साहब के आश्वासन दिए आज पन्द्रह दिन तो हो गए, आज तक कहीं कोई खोज-खबर नहीं? बस्ती में कोरोना प्लस अभियान को अंजाम तक पहुंचाने के लिए फिलहाल कोरोना-मंडली के माध्यम से भी कुछ सहयोग किया जा सकता है; हंसामल अंकल के पैर पकड़ेंगे तो बस्ती के पांच सौ परिवारों में तुलसी-गिलोय बूटी बांटना उनके लिए तो बाएं हाथ का खेल है! लेकिन यह मामला तो पूरे देश के गरीबों के सरोकार से जुड़ा है। ऐसे सार्वजनिक कार्यों के मामले में रामघाट की तो पूरे देश में पहचान रही है। फिर तो कोरोना प्लस पाने के लिए जन-आंदोलन की शुरुआत भी रामघाट से होनी चाहिए..'

"हाय रामू इतने मगन होकर क्या सोच रहे हो!" शायनी की आवाज से रामू की चिंतन श्रृंखला भंग हुई।

"हाय रे मेरा करोना प्लस!" शायनी को देखते ही रामू चिंतन-श्रृंखला से बाहर आते हुए बोल पड़ा, औरत की तरह छाती पीटने जैसा करते हुए।

"मैं भी वही सोचकर तो आई हूं; कलेक्टर साहब से कोई मैसेज मिला तुम्हें?" अपनी प्रकृति अनुकूल शायनी सीधे विषय पर आ गई।

"सरकार इतनी चुस्त होती तो करोना हम तक पहुंचता ही नहीं," सरकार को गाली देने जैसा मुँह बनाते हुए रामू बोला।

"आगे क्या सोचा है?" बोलने के अंदाज से लगा वह कुछ सोचकर ही आई थी।

"अब आगे इंतजार करना बेकार है, सीधी कार्यवाही के लिए कमर कस लिया है मैंने!" रामू ने कहा तो उसके अंदर का आत्मविश्वास छोटी मुस्कान के रूप में प्रकट हुआ।

"कब? कहां!" शायनी की उत्सुकता बाहर आई।

"कल से? यहीं बस्ती में!" 'बस्ती' शब्द पर रामू के जोर डालने से लगा जैसे बस्ती इस दुनिया में सबसे ताकतवर जगह हो।

"मुझे क्या करना है?" शायनी बच्ची-जैसी चहक उठी।

"कल सुबह नौ बजे अंबेडकर चौराहे पर आ जाना; रॉबर्ट को जरूर लाना

साथ में, समय पर।" रामू ने कहा, आंखों की भाषा से लगा वह लक्ष्य को लेकर दृढ़ संकल्पित है।

"तो अपने साथ मंजरी को भी ले आऊं?" शायनी ने रामू से अनुमति माँगी या चुहलबाजी की, उसे खुद पता नहीं था।

"मंजरी पर पहला अधिकार तुम्हारा है, पहले से ही; मेरे घर का निपटारा निशा कर देगी एक दिन के लिए, दिनेश काफी दिनों से बोल भी रहा था।"

9

सुबह नौ बजे तक अंबेडकर चौक पर ठीक-ठाक भीड़ इकट्ठी हो चुकी थी। बच्चे कोरोना काल में भी रामू भैया का डंका बजता देख बाबा साहब की जयघोष करने में भिड़े थे, सुबह से ही। महिलाएं भी चौका-बर्तन जल्दी निपटाकर बाबा साहब की शरण में आ गई थीं, घर पर दिन-प्रतिदिन झेल रही बेरहम गर्मी से निजात पाने का अवसर जानकर। रामू सभी को तीन फीट की दूरी पर ही बैठने-खड़े रहने की हिदायत दे रहा था। शायनी-मंजरी के आते ही रामू ने माउथ स्पीकर मुंह से सटाया '...साथियों आज से पंद्रह दिन पहले गलवां घाटी में चीनी सैनिकों ने हमारे बीस सैनिकों की जान साजिश रचकर ले ली थी, हम सभी एक मिनट का मौन रखकर उन वीर शहीदों को श्रद्धांजलि देंगे।' अंबेडकर चौराहे के चारों तरफ एक मिनट तक मौन खड़ा रहा; लगा जैसे गलवां घाटी का सन्नाटा बस्ती तक खिंच आया हो। श्रद्धांजलि के बाद रामू फिर से माउथ स्पीकर में बोलने लगा, स्वर की आवृत्ति बढ़ाते हुए '...माताओं-बहनों एवं भाइयों; आज चारों तरफ करोना का जबरदस्त कहर जारी है, लेकिन रामघाट से लेकर दिल्ली तक राजनेतागण करोना छोड़कर बाकी हर मुद्दे पर मुंह फाड़े जा रहे हैं; यदि करोना का प्रकोप ऐसे ही जारी रहा तो हमारी बस्ती का कोई माई-बाप नहीं होगा,' लंबा बोलकर रामू ने माउथ स्पीकर शायनी को पकड़ा दिया। शायनी की मधुर आवाज बस्ती में दूर तक फैलने लगी, '...हमें कोई बचाएगा तो हमारा निरोगी शरीर! शरीर निरोगी तभी होगा जब शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में बढ़ोतरी होगी, प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए बाजार में एक से एक महंगे इम्यूनिटी बूस्टर मौजूद हैं तो सस्ती जड़ी-बूटियां भी; अभी हर मजदूर-कारीगर-ठेला -रिक्शे वाले की जेब खाली पड़ी है...' बोलते-बोलते शायनी के स्वर में विभ्रम आने लगा, उसने माउथ स्पीकर रामू की ओर बढ़ा दिया; '...तो भाइयों हमने कलेक्टर साहब

को माँग-पत्र सौंपा था, कि गरीब और साधारण परिवारों में चावल-गेहूं के साथ तुलसी-गिलोय-मुलेठी की बूटी भी बांटी जाए, ताकि गरीबों के शरीर की इम्यूनिटी भी अमीरों जैसी ही बढ़ती रहे; आज सोलह दिन हो गए हैं, इस बेहतरीन आइडिया को लागू करने के लिए सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया है आज तक!'..

अंबेडकर चौक पर सहज का आगमन हुआ। उसने रामू से नम्रतापूर्वक माउथ स्पीकर माँग लिया, फिर अपनी बात रखी, '...तुलसी-गिलोय-मुलेठी की बूटी बांटने के लिए लाखों-करोड़ों के पैकेज की जरूरत नहीं पड़ेगी! बस सरकार सिर्फ दस करोड़ ही खर्च करे तो हर घर में बूटी के दो-चार डिब्बे आराम से बंट जाएंगे...' सहज बोल ही रहा था कि भीड़ से शोर उठने लगा ...लाखों-करोड़ों पैकेज का क्या हुआ? ...कुछ ही लोगों के खाते में अभी सिर्फ एक हजार आया है, बाकी का हिसाब कौन देगा, कब देगा...

"हम लोगों को उस मुद्दे में नहीं भटकना है, आज हमारी माँग सिर्फ जड़ी-बूटी को जन वितरण की दुकानों के मार्फत बंटवाने की है।" भीड़ को शांत रहने का इशारा करते हुए रामू बोलता गया, "तो आज हमारे कुछ साथी दो दिवसीय उपवास पर बैठेंगे, हर दूसरे दिन नए साथी उपवास पर बैठेंगे; बस्ती की महिलाएं और पुरुष भी स्वतंत्र हैं इस उपवास में शरीक होने के लिए..' रामू बोलता जा रहा था, आगे उसकी आवाज भीड़ के शोरगुल में दब गई, '... हम लोग भी बारी-बारी से उपवास में बैठेंगे! पूरी बस्ती में उपवास का कार्यक्रम अनवरत चलता रहेगा जब तक कि सरकार हमारी माँगें मान नहीं लेती...' बड़ों की जोरदार आवाज सुनकर बच्चों का उत्साह सातवें आसमान पर जा पहुंचा; उस दिन कलेक्टर के सामने तख्तियों पर लिखे स्लोगन को वे सभी अपनी आवाज से आसमान तक उठाने लगे ...इम्यूनिटी की दरकार-जीने का अधिकार ...तुलसी-मुलेठी नहीं तो सरकार नहीं ...गिलोय की गोली का सहारा जन्मसिद्ध अधिकार हमारा ...चावल-आटा वाली बात तुलसी-मुलेठी-गिलोय के साथ ...बस्ती की जान हिंदुस्तान की पहचान ...हम कुपोषण के शिकार बच्चे, हमें जड़ी-बूटी दो जड़ी-बूटी दो!...

बूटी की माँग के लिए बस्ती रामघाट में अनवरत उपवास दोपहर तक प्रदेश भर की न्यूज बन गई। प्रदेश स्तरीय चैनलों ने ब्रेकिंग न्यूज दिखाना शुरू कर दिया ...एक अद्भुत आंदोलन का गवाह बन रहा है रामघाट ...पीडीसी के तहत आयुर्वेदिक बूटी वितरण की माँग ...पहली बार हिंदुस्तान में उठी

ऐसी माँग ...महामारी विशेषज्ञ इसे बता रहे हैं एक जरूरी पहल ...कुपोषण के शिकार परिवारों को हर्बल इम्यूनिटी देने से कोरोना संक्रमण की दर नीचे गिरना तय...। रामघाट सिटी चैनल ने तो एक कदम आगे बढ़ते हुए अंबेडकर चौक से लाइव टेलीकास्ट शुरू कर दिया।

दो दिन में ही रामघाट के कई हिस्सों में बस्ती में शुरू हुए उपवास के पक्ष में जन समर्थन की आवाज आने लगी; लगने लगा जल्द ही यह माँग पूरे प्रदेश में फैलने लगेगी। प्लाज्मा डोनेशन वाले प्रसंग में रामू भले ही नायक-खलनायक के खेल में फंसता पिसता रहा, बूटी वितरण मुद्दे पर वह रामघाट के निर्विवाद नायक के तौर पर उभरने लगा। प्रदेश आलाकमान के निर्देश पर शाम पांच बजे एसडीएम रामघाट अंबेडकर चौराहे पर पहुंचे, उपवास व्रतियों के समक्ष विनम्रता से झुकते हुए। जन आंदोलन का सम्मान करते हुए उसने अपने सिक्योरिटी गार्ड को अंबेडकर चबूतरे से दूर ही रहने को कहा। वह तीन-चार मिनट तक रामू के बगल में बैठे रहे, चुपचाप! रामू सर्वथा निशब्द ही रहा; दो दिन से आगे बढ़ते हुए उसने तीसरे दिन भी उपवास चालू रखा था।

"आपसे कुछ जरूरी गुजारिश करना चाहता हूं।" अपने सेवाकाल के विनम्रतम आवाज में एसडीएम ने कहा, रामू के कान के पास बिल्कुल मंद स्वर में।

"एसडीएम साहब आप खाए-पिए लोग हैं, प्लीज जोर से बोलिए सब सुनेंगे; क्या कलेक्टर साहब ने बूटी बांटने के लिए 'हां' कह दिया है?" रामू बमुश्किल बोल पाया।

"उस पर सरकार में अभी कोई निर्णय नहीं हुआ है।" एसडीएम ने ईमानदारी दिखाते हुए कहा। रामू ने परवेज के कान में धीरे से कहा जिसे उसने ऊंची आवाज में दुहराया, जन-जन को सुनाते हुए '...फिर क्या गुजारिश करना है...'

"अभी पूरे देश का ध्यान चीन बॉर्डर पर है, ऐसे में देश के अंदर कोई आंदोलन-उपवास उचित नहीं प्रतीत होता है।" एसडीएम का स्वर अब थोड़ा सख्त होने लगा। परवेज के कान में रामू देर तक फुसफुसाया; परवेज ने संक्षिप्त में सुनाया, '...यदि चीन के साथ युद्ध छिड़ जाता है फिर तो देश के नौजवानों को युद्ध भूमि में जाने की जरूरत पड़ सकती है; अमीर घर के युवक तो फौजी ड्यूटी करने से रहे, गरीबों के बच्चे ही बॉर्डर की तरफ कूच

करेंगे! इसीलिए यह तो और भी जरूरी है कि गरीब परिवारों की प्रतिरोधक क्षमता आयुर्वेदिक बूटी से बढ़ाई जाए...'

"बूटी बांटने के मुद्दे पर सरकार आप लोगों से जल्द ही बात करेगी।" एसडीएम ने कूटनीतिक भाव-भंगिमा में कहा।

"हम लोगों से कौन बात करने आएंगे? कलेक्टर!" रामू के बोलने से असमर्थता व्यक्त करने पर अब परवेज ने अपने तई ही बोल दिया।

"उम्मीद है कोरोना से बचते हुए कोई मंत्री जल्दी ही रामघाट पधारेंगे, आप लोगों से वार्ता करेंगे; तब तक जिला प्रशासन का आपसे अनुरोध है इस उपवास को यहीं खत्म कर दें।"

"हमें यह शर्त मंजूर नहीं है, मंत्री जी के आने तक हमारा क्रमिक उपवास जारी रहेगा।" अब शायनी संकल्प व्यक्त करती हुई बोली। एसडीएम किसी फिल्म के एक्शन सीन जैसे स्लो मोशन में उठे; आगे बढ़ते हुए दोनों हाथ पीछे की ओर जोड़ते हुए निकल लिए, जैसे संकेत देते गए हों–'आपकी मर्जी बैठे रहो जन्मभर के लिए।'

आगे एक सप्ताह तक क्रमिक उपवास चलता रहा। कोरोना-मंडली के युवागण, बस्ती के औरत-मर्द बारी-बारी से अनशन स्थल पर आ डटते। पर किसी मंत्री का कोई अता-पता नहीं था। सातवें दिन रॉबर्ट का भी आगमन हुआ अनशन स्थल पर, अपने स्वभाव के विपरीत सिर झुकाते हुए। बिना कुछ बोले वह भी उपवास पर बैठ गया। शाम तक वह मौन साधे रहा। अंधेरा होते ही उसका मुँह खुला, "गवमेंट में बिग माइंड वाले भरे होने का, यंग जेनरेशन के एडवाइस को इमपोर्टेन्स नहीं देने का, कोरोना ग्रुप को अपन टाईम खराब नहीं करने का; बिग वर्क के लिए एनर्जी सेव रखने का।" बोलकर वह अपनी बाइक की ओर बढ़ चला; जमीन की ओर सिर झुकाकर कुछ बुदबुदाते हुए, जैसे किसी को अंग्रेजी में भद्दी-भद्दी गाली देता जा रहा हो।

आठवें दिन जेड सर अनशन स्थल पर आए; साथ में कई बैग में भरकर तुलसी-गिलोय-मुलेठी बूटी की डिब्बी भी लेकर आए। उसने सारी बस्ती में बूटी का शांतिपूर्ण वितरण करवाया। फिर चालीस डिग्री सेल्सियस तापमान वाले दोपहर में क्रमिक अनशन का अंत करवाया, अपने झुर्रीदार हाथों से उपवास व्रतियों को नींबू पानी पिलाकर। किसी को यह पूछने का ख्याल न रहा, आखिर बूटी बंटवाने का खर्च किसने वहन किया है। अंबेडकर चबूतरे से नीचे उतरते वक्त अहम को अंदर से आवाज आती सुनाई पड़ी ...ऐसे में

तो पूरी सदी में हिंदुस्तान की बदरंग फिजां में राजनीति के रंग-विरंग-फसलें पैदा होती रहेंगी, क्रांति की फसल छोड़कर।

10

जुलाई महीने में कोरोना का ग्राफ तेजी से ऊपर की ओर बढ़ता गया; पर यह अब एक आंकड़ा भर रहा गया था। आसन-गण की जुबान पर दिनभर रंग-बिरंगे वाक् पताका फहराते रहते, जैसे हिंदुस्तान को उड़नखटोला में बिठाकर चांद-सितारों से आगे ले जाने के मुख-मिसाइल छूट रहे हों। कोरोना और कोरोना मृत्यु पूर्णत: जनता के खाते में हस्तांतरित कर दी गई, जैसे संविधान के सत्तर साल बाद प्रदत्त सातवाँ मौलिक अधिकार हो। जनता को पूरी आजादी दे दी गई थी, कोरोना में जीना-मरना खुद तय करना! उच्चासन-वृंद अखबारों में, चैनलों में राष्ट्र निर्माण के विविध कार्यों में अति व्यस्त दिखने शुरू हो चुके थे; वाजिब ही कोरोना को कौड़ी के भाव देने वाला नहीं बचा था कोई। गलवां घाटी की घटना ने तो कोरोना को एक तरह से नेपथ्य में ही भेज दिया; पर्दे के पीछे जितनी मर्जी उछल-कूद करते रहो।

गलवां की घटना ने पूरे देश को झकझोर करके रख दिया था। भारतीय जवानों की नृशंस हत्या से कोरोना-मंडली के अंदर उबाल-सा था। कोरोना के मामले में मंडली का शुरू से ही सटीक मत था; पूरी दुनिया में कोरोना का कहर चीन ने जान-बूझकर फैलाया है, दुनिया को तड़पते देखने की अपनी ऐतिहासिक अतृप्त लिप्सा के वशीभूत। मंडली के मन में रह-रहकर टीस-सी उठती थी; चीनी संपेरे द्वारा छोड़े गए कोरोना सांप को पैर से हटाने के लिए झुके थे तो उसने पीछे से छुरा घोंप दिया!

एलएसी पर दिन-ब-दिन बिगड़ते हालात ने परवेज को तो जैसे उद्विग्न ही कर रखा था; उसके अंदर वैश्विक चिंतन की शृंखला जागृत होने लगी ...अमेरिका -इंडिया-यूरोप-नाटो-ऑस्ट्रेलिया-जापान ...न्यू चाइना-साउथ चाइना-एशिया पेसिफिक रीजन ...कोरोना ...गलवां-एलएसी ...एलओसी-पीओके-कश्मीर... उसके अंदर सब कुछ गड्डमड्ड हो उठता। अंदर उमड़ते विचारों का विश्लेषण करना अकेले अपने वश में नहीं जान पड़ता उसे। ...क्यों न इस मसले को कोरोना-कैबिनेट के समक्ष रखा जाए? हां-हां, रखना ही पड़ेगा; अन्यथा चिंतन के बीहड़ में वह अकेले गुम न हो जाएं!... चिंतन-शृंखला को विराम देने की खातिर उसने ग्रुप में मैसेज डाल दिया, सहज को बताए

बगैर ही! ...दुनिया के सबसे बड़े मसले पर एक अहम बैठक कल मेरे घर पर रखी गई है, दोपहर को लंच के बाद; उससे पहले सभी लंच के लिए तशरीफ रखें। मीटिंग की सूचना पर किसी ने पहली बार दोस्ताना अंदाज में आपत्ति उठाई थी; सहज का कमेंट था ...लंच के साथ मीटिंग? वह रे कबाब वाले मियां, लाजवाब! पर लंच रखकर कहीं तू मेरा तौहीन तो नहीं कर रहा? माफ करना साथियों, कातिल कोरोना के कारण लंच-डिनर का प्लान मैंने कब से स्थगित कर रखा था।

आज की बैठक में कोरोना-कैबिनेट के सभी 25 सदस्यों की भागीदारी थी। परवेज ने सभी को इज्जतपूर्वक डायनिंग टेबल पर बिठाया। बिना देर किए भोजन परोसा जाने लगा।

"आज तक हम लोग सिर्फ धर्म में पाखंड की बात सुनते आए थे, पर आज पता चला कि विज्ञान में भी पाखंड का बोलबाला है!" डाइनिंग टेबल पर सहज की आवाज निकली, चबाते कबाब के बीच से; हँसी छुपाने की पुरजोर कोशिश करते हुए, किसी की तरफ देखे बिना।

"वह भला कैसे?" किसी ने टोका, कौर के नीचे दबे अचिन्हित स्वर में।

"जूलॉजी लैब में वह तो न जाने कितने फ्रॉग-काकरोच और भी बहुतेरे जीव की चीर-फाड़ कर चुकी होगी पांच वर्षों में, और खाने के मामले में शाकाहारी बनी फिरती है; क्या इसे विज्ञान में पाखंड नहीं कहेंगे!" सहज ने मजा लूटते हुए कहा, शायनी को कनखियों से देखते हुए।

"सेवा में श्रीमान मंडली के अध्यक्ष महोदय! चीर-फाड़ से ही तो जान पाई जीव-हत्या कितना क्रूरतम कृत्य है।" सभी के मुंह बंद कर देने वाले अंदाज में शायनी बोली। फिर तो सभी वेज और नॉनवेज डिश से सजे लंच का लुत्फ उठाते रहे।

"यार परवेज, बिजली खपत में कटौती करने का कोई अभियान शुरू हो रखा है क्या? मेरी छोड़ो शायनी और मंजरी का तो ख्याल कर लेते।" दोनों लड़कियों को हाथ में रखी पत्रिका से हवा करते हुए देखकर अहम ने कहा।

"सो क्या हो गया?" सहज समझ नहीं पाया।

"अंदर एसी कमरा छोड़कर इस उबलती गर्मी में खुले बरामदे में सीटिंग अरेंजमेंट करवा दिया!" खुले बरामदे से तीन तरफ दिख रहे लॉन और गार्डन पर नजर फिराते हुए अहम ने कहा।

"यह क्वेश्चन तो जेनविन है परवेज।" सहज ने समर्थन दिया।

"ईमानदारीपूर्वक कहूं तो आज मशवरे का मसला ऐसा है जिसे बंद कमरे में नहीं बाहर खुले में दूर तक देखकर ही समझा-परखा जा सकता है।" परवेज ने कहा तो उसका सिर जरा भी नहीं हिला, जैसे अंदर कोई बड़ी धारणा अपनी नींव रख रही हो।

"तो सीधे उसी मशवरे पर ही मुंह खोला जाए हुजूरे आली।" रामू भी उतावला हो उठा। सभी की नजरें परवेज पर टिक गईं; पल-भर चुप्पी छाई रही।

"गलवां घाटी में पंद्रह जून की रात को खूनी झड़प के फुटप्रिंट को चाइना लंबा खींचता जा रहा है; हम सभी यहां बैठे-बैठे चीन की नीयत को भली-भांति भांप सकते हैं।" मसला पेश करते हुए परवेज ने चुप्पी तोड़ी, बोलता गया, "सोलह जून से आज तक हर हिंदुस्तानी के दिमाग में एक ही करंट दौड़ लगा रहा है कि चीन से युद्ध अब हुआ कि तब हुआ? साथ ही करोड़ों लोगों के मन में संशय भी चलता रहता है, कि यदि चीन के साथ जंग छिड़ गई तो किसका पलड़ा भारी रहेगा?" बोलकर परवेज ने खुले लॉन में नजरें टिका दीं, जैसे जंग के मैदान का मुआवना कर रहा हो।

"इसमें किसी को कोई शक नहीं, हमारे सैनिक जांबाज हैं, भारत माता के लिए जान लड़ा देंगे!" दिनेश उत्साहित होकर बोला।

"इसमें भी हमें शक नहीं होना चाहिए चीन की जंगी ताकत हमसे बीस दिखती है!" दिनेश पर नजरें तरेरते हुए मनोज ने कहा।

"इसके साथ जुड़ी एक सच्चाई और भी है..." मंजरी भी मैदान में आती हुई बोली।

"वह क्या?" संक्षिप्त रूप में शायनी भी जुड़ गई।

"यदि चीन के साथ युद्ध छिड़ जाता है तब पश्चिमी सीमा से पाकिस्तान भी हमारी पीठ में छुरा घोंप सकता है! और तब युद्ध में हमें भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है?" बोलकर मंजरी अंतर्मुखी-सी दिखने लगी; रामू उसे गौर से देखने लगा, क्या सचमुच मंजरी के मुंह से निकला है? तो क्या मंजरी का दिमाग भी विश्व भ्रमण करता रहता है!

"गल द गलवां से आज तक एलएसी पर चीन की चाल पर मेरी पैनी नजर है; मेरी अर्थशास्त्रीय दृष्टि कहती है चीन तो एक तरह से युद्ध जीत चुका है।" बोलकर सहज ने हाथों की दसों उंगलियों को बेतरतीब ढंग से नचाया-फंसाया; जैसे कहना चाह रहा हो सब कुछ तो लुट-पिट चुका है।

"जीत चुका है?" शायनी की आंखें छोटी हो गईं, जैसे माइक्रोस्कोप में

आंखें सटाकर कोई नया वायरस ढूंढ़ रही हो।

"जी मोहतरमा; अरुणाचल प्रदेश से कश्मीर तक पिछले एक महीने में एलएसी पर हमारा रोजाना खर्च कई गुना बढ़कर करोड़ों रुपये का हो चुका है; चीन यही तो चाहता है, कि हमारा खजाना बिना जंग के ही खाली होता रहे! और इस प्रकार हम बड़े आराम से ट्रैप हो गए!" सहज ने दाएं हाथ की उंगलियों का घेरा बनाकर कहा, जैसे किसी की गर्दन हौले-हौले दबा रहा हो।

"बातें बहुत लंबी हो रही हैं; चूंकि यह एजेंडा परवेज द्वारा लाया गया है इसलिए वह खुद इस पर प्रकाश डालें; राजनीतिक शास्त्र की उसे गहरी समझ है, एमए में उसका स्पेशल पेपर भी रहा है फॉरेन डिप्लोमेसी, मसले की उसे बेहतर समझ होगी; मिस्टर परवेज, प्लीज!" अहम ने एजेंडे को पटल पर ला खड़ा किया।

"मैं पहले साध्य पर आता हूं, साधन अपने आप निकल आएंगे।" परवेज ने कहा, सभी ने धीमे से ताली बजाई; आगे बोलता गया, "यह सबसे मुफीद वक्त है चीन को घेरने-मरोड़ने-तोड़ने का; लगभग पूरा विश्व मान चुका है कि पूरी दुनिया को कोरोना के महाजाल में फंसाने की करतूत चीन ने ही की है! इस वक्त विश्व के हर कोने से चीन के खिलाफ आवाज उठनी शुरू हो चुकी है, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, इंग्लैंड, कनाडा के राष्ट्राध्यक्ष प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तौर पर चीन के प्रति अपनी नाराजगी जता चुके हैं; अमेरिकी प्रेसिडेंट तो चीन पर लगातार हमलावर हो रहे हैं! गलवां और उसके बाद चीन द्वारा एलएसी पर पैदा किए गए हालात के कारण दुनियाभर में एक हमलावर के रूप में उसकी पहचान और पुख्ता होती गई है।" इतना बोलकर परवेज बारी-बारी से सभी की आंखों में झांकने लगा; थोड़ी देर के लिए लगा जैसे वह परवेज नहीं, कोई विश्व पुरुष हो, आगे कहा, "हिंदुस्तान में एक देसी कहावत है, जब लोहा गरम हो तब चोट करनी चाहिए।" बोलकर सभी की तरफ देखने लगा, जैसे कही गई बातों पर आपत्ति आमंत्रित कर रहा हो।

"बिल्कुल लोहा गरम है; किस-किस साइज के हथौड़े से कैसे-कैसे प्रहार करने हैं?" रामू ने कहा, जैसे युद्ध के मोर्चे पर निकलना चाह रहा हो।

"अब वो समय आ गया है जब हमें बैक फुट से नहीं फ्रंट फुट पर आकर खेलना चाहिए; मैं चंद इसूज गिनाता हूं, इन इसूज पर हमें पूरी दुनिया, पूरी दुनिया संभव ना हो तो ताकतवर और प्रभावशाली मुल्कों को गोलबंद करना चाहिए।" बोलकर परवेज ने सोचने का समय लिया, फिर बोला, "इन इसूज

पर अभी थोड़ा-थोड़ा बोलता हूं, बाद में चाहे तो इन्हें कोरोना-कैबिनेट की पटल पर लाया जा सकता है।"

"गलवां और एलएसी में खतरनाक होते जा रहे हालात में चाइना की घेराबंदी फौरी मसले हैं..." सहज बोलने लगा तो बीच में रामू ने जोड़ा, 'और करोना भी'; रामू के टपकने से आए अल्पविराम के बाद सहज स्वतः बोलता रहा, "क्यों न हम कोरोना-कैबिनेट की बैठक अभी ही कर लें?"

"परंतु कैबिनेट की बैठक के लिए तो पहले से ही कुछ एजेंडे पेंडिंग पड़े हैं जिस पर अंतिम निष्कर्ष या निर्णय होना है?" शायनी ने प्रक्रिया की बात उठाई।

"पहले से पेंडिंग आ रहे एजेंडे को हम लोग कैबिनेट की औपचारिक बैठक में रख सकते हैं, चाइना वाला इसूज तो अर्जेंट नेचर का है, इस पर आज ही मुहर लगनी चाहिए!" अहम ने अपनी प्रकृति के विपरीत टेबल पर हौले से मुक्का मारते हुए कहा, जैसे फैसले पर मुहर लगा रहा हो।

"कैबिनेट की बैठक तो बंद कमरे में ही होती है।" सहज ने सकुचाते हुए कहा।

"ठीक बोल रहे हो, अब बाहर गर्मी बर्दाश्त होना मुश्किल है, खासकर शायनी को।" परवेज ने चुटकी लेते हुए कहा।

"तू चुप कर।" शायनी ने परवेज को आंख दिखाई, आगे बोली, "जब मैं अपने घर पर मीटिंग रखूंगी तो बाहर खुली धूप में रखूंगी!" सभी ने कुर्सी छोड़ दी, कान छूते हुए।

"डिअर परवेज एसी मत चलाना, पंखा चलाकर सारी खिड़की खोलकर बैठने से ही व्यावहारिक वार्ता हो पाएगी; वैसे भी यह बैठक सरकारी कैबिनेट की नहीं, नवयुवकों के कैबिनेट की है।" कमरे के अंदर आते ही अहम ने बैठक को विस्तार दिया। डाइनिंग हॉल से कमरे में लाई गई कुर्सियों में सभी बैठते गए। बीच वाली कुर्सी खाली थी; परवेज ने सहज से कहा, "माननीय अध्यक्ष महोदय, कृपया कोरोना-कैबिनेट की पहली बैठक की अध्यक्षीय कुर्सी पर विराजमान होइए।"

"मेरे नजरिए से इस बैठक की अध्यक्षता परवेज को करनी चाहिए।" सहज ने संकोच व्यक्त किया।

"कैबिनेट की बैठक की अध्यक्षता प्रधानमंत्रीजी करते हैं, पर हमारा तो कोरोना-कैबिनेट है, इसकी अलग-अलग बैठक की अध्यक्षता एजेंडे से जुड़े

साथी ही करेंगे।" अहम ने व्यवस्था दी, फिर लंबी सांस छोड़कर बोलने लगा, "यदि थोड़ा खुलकर बोलूं तो यह भी कि परवेज की जमात के किसी व्यक्ति को सरकार के कैबिनेट की अध्यक्षता करने का मौका नहीं मिला है आज तक, इसीलिए जनाब परवेज का कोरोना-कैबिनेट की पहली बैठक की अध्यक्षता करना हमारे लिए गौरव का क्षण है; तो मिस्टर परवेज, प्लीज!" अब परवेज के लिए टालना मुश्किल था। बीच वाली कुर्सी में उसके बैठते ही सभी ने ताली बजाकर उसका स्वागत किया।

"कोरोना-मंडली के सभी साथियों का मैं आभारी हूं जो इस नाचीज को इस लायक समझा; एनीहाउ मैं जिस बिंदु को पटल पर रख रहा हूं वह सदी में और आनेवाली सदी में हिंदुस्तान को पूरी दुनिया में वाजिब जगह और हक दिलाने के लिए बेहद जरूरी है।" बोलकर उसने छाती में भरपूर हवा जाने दी, जैसे जरूरी ऊर्जा जुटा रहा हो, फिर बोला, "मैं उन इशूज को एक-एक करके गिनाता हूं जिससे हम चाइना यानी गरम लोहा पर चोट कर सकते हैं, इससे चोट तो चाइना पर पड़ेगी पर चमकेगा हिंदुस्तान!" आगे बोलते हुए उसके चेहरे में कूटनीतिक आभा झलकने लगी, "तो पहला इशू है भारत को यूनाइटेड नेशन सिक्योरिटी काउंसिल की परमानेंट मेंबरशिप हासिल करना; मेरे विचार से इंडिया को परमानेंट मेंबरशिप के लिए आगे और इंतजार नहीं करना चाहिए, बल्कि इसे अपने दमखम पर साल-दो साल के अंदर हथिया लेना चाहिए; अब समय आ गया है इंडिया को ऐलान कर देना चाहिए कि हमें तुरंत स्थाई सदस्यता दें अन्यथा सारी वैश्विक संस्थाओं से हम अलग हो जाएंगे, कई और देशों को साथ लेते हुए।" पहला इशू रखने के बाद लंबी सांस लेकर परवेज ने सभी की ओर देखा, फिर आगे बोलता रहा, "दूसरा इशू है तिब्बत की आजादी; आज तक हमने तिब्बत की अदृश्य सरकार को भयातुर-सा समर्थन दे रखा है, पर अब वक्त हो गया है हमें आगामी पंद्रह अगस्त को लाल किले से घोषणा कर देनी चाहिए कि ऐतिहासिक काल से तिब्बत एक पृथक भौगोलिक-सांस्कृतिक-धार्मिक भू-भाग रहा है और इसीलिए हम इसे एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता देते हैं; साथ ही यह भी संकल्प व्यक्त करना चाहिए कि दुनिया को अन्य देशों से सहयोग हासिल कर शांति से या अशांति से तिब्बत को आजाद कराकर रहेंगे; इस घोषणा को धारदार बनाने के लिए हमारी मंडली रामघाट में घर-घर, गली-गली, सड़क-सड़क पर लोगों को एक दिन का उपवास रखने को कहेंगे, फिर तो

एक दिन पूरा हिंदुस्तान अपने आप गांधीजी के बताए रास्ते में चलते हुए तिब्बत के समर्थन में उपवास रखेंगे।" दोनों इशू को पटल पर रखने के बाद परवेज ने पानी पिया। आंखें उठाकर सभी की ओर सरसरी निगाह से देखा, किसी की ओर से तात्कालिक प्रतिक्रिया पाने की खातिर; सभी अपने आप में केंद्रित दिखे, जैसे चीन की घेराबंदी वाले पिंजरे का आकार-प्रकार माप रहा हो। किसी के भी होंठ नहीं खुले; परवेज ने अपनी बात आगे बढ़ाई, "तीसरा इशु है नाटो में भारत को शामिल होने का; दशकों से एलएसी पर चीन की दादागिरी से हम वाकिफ हैं, भविष्य में चीन से विनाशकारी भिड़ंत तय है, लेकिन उस भिड़ंत का परिणाम अपने पक्ष में करने के लिए हिंदुस्तान अकेले सक्षम नहीं होगा, इसलिए जितनी जल्दी हो सके हिंदुस्तान को नाटो की सदस्यता लेनी चाहिए; मुझे तो पूरा यकीन है यदि इंडिया इसकी सदस्यता के लिए आगे बढ़ेगा तो यूरोपीय देश शायद मना नहीं करेंगे; मेरा दावा है नाटो की सदस्यता मिलते ही चीन की सारी हेकड़ी रातों-रात उड़ जाएगी और तब युद्ध होने की स्थिति में परिणाम हम अपनी मनमर्जी से लिख सकते हैं!" तीसरे इशु को पटल पर रखने के बाद परवेज ने क्षणभर के लिए आंखें बंद कर लीं, आगे बोला, "चीन के खिलाफ मेरी तरफ से ये तीन इशु हैं; यदि आप लोगों की तरफ से कोई इशु ऐड होना है तो प्लीज कम ऑन।" बोलकर परवेज ने सभी की ओर आमंत्रणपूर्ण निगाह से देखा।

"मेरा तो स्पष्ट मत है करोना को किसी राक्षस बाप ने बिना माँ के ही चीन में जन्म दिया है, इसका शुक्राणु और अंडाणु दोनों उसी शैतान पुरुष के दिमाग में पनपे हैं जो करोना के रूप में जन्म लिया है; इसी संदर्भ में मैं एक एजेंडा रखना चाहता हूं।" अपना विचार रखते हुए रामू खड़ा हो गया, फिर बोलता गया, "मेरा इशु है इस दुनिया को करोना का नापाक तोहफा देने वाले चीन को मुकम्मल सजा दिलाना! दुनिया के बड़े और ताकतवर मुल्क धीरे-धीरे चीन के खिलाफ मुखर हो रहे हैं, हमारा मानना है कि हिंदुस्तान को इस मामले में विश्व-गुरु बनना चाहिए, क्योंकि करोना से हमारे देश में विपत्ति-सी ला दी है; यह करोना हमारे मुल्क को वर्षों पीछे धकेल रहा है, इसलिए करोना के मुद्दे पर हिंदुस्तान को मुखर होकर पूरी दुनिया में आवाज उठानी चाहिए कि चीन को इसकी वाजिब सजा देनी है; सजा की पहली किस्त के तौर पर उनसे लाखों-करोड़ों डॉलर का जुर्माना वसूला जाए!" कोरोना मामले को लेकर महीनों की बेचैनी रामू के लालवर्णी हो चुके चेहरे में झलकने लगी।

"मेरे अंदर भी एक इशु कब से मेरी जान खाए जा रहा है, यदि अध्यक्ष महोदय की अनुमति हो तो मैं पेश करूं?" मनोज ने अपने स्थान पर खड़े होकर कहा।

"यस, प्लीज।" परवेज ने कहा।

"हम सभी जान रहे हैं मुंबई हमले का सबसे बड़ा मास्टरमाइंड अभी तक पाकिस्तान में बैठा है और बादशाह की जिंदगी जी रहा है! जिस प्रकार अमेरिका ने आकाश से जमीन पर उतरकर ओसामा बिन लादेन को धर दबोचा था हमें भी उसी स्टाइल में मुंबई हमले के गुनाहगार को आकाश के रास्ते उठा लेना चाहिए! जब तक हम उस गुनाहगार को नहीं उठाते हैं हिंदुस्तान को तसल्ली नहीं मिल सकती, चाहे आप दिन-रात एलओसी पर लाखों गोला-बारूद दागते-छोड़ते रहें या फिर कई-कई सर्जिकल स्ट्राइक करते रहें," बोलकर मनोज ने संकेत कर दिया असली बहादुरी का काम किए बगैर समस्या का समाधान नहीं हो सकता है, फिर बैठते हुए बोला, "यदि सभी को स्वीकार्य हो तो इसे पांचवें ईशु के रूप में लिया जा सकता है।"

"मैं भी चीन के बारे में कुछ बोलना चाहता हूं, यह छठा एजेंडा हो सकता है या नहीं अध्यक्ष महोदय ही तय करेंगे," अपनी जगह पर ही खड़े होकर अहम ने बोलना शुरू किया, "मानव जाति, मानवता और मानवाधिकार के बारे में चीन की धारणा पर मैं संक्षिप्त प्रकाश डालना चाहता हूं; सीधे शब्दों में कहें तो इस धरती में मानवता का सबसे बड़ा दुश्मन है चीन! आने वाले समय में मानवता पर जो सबसे ज्यादा चोट पहुंचाएगा वह है चीन!" बोलते-बोलते अहम के चेहरे में आक्रामकता झलकने लगी, उसकी प्रकृति के विपरीत; आगे वह बोलता गया, "यही नहीं उसकी विस्तारवादी प्रवृत्ति विश्व को विनाश की ओर धकेल देगी! हम सभी गवाह हैं दक्षिणी चीन सागर का मामला हो या एशिया प्रशांत क्षेत्र में वर्चस्व स्थापित करने की उसकी ललक, यूएसए, जापान, ताइवान, सिंगापुर जैसे देशों के साथ वह लड़ने-भिड़ने, मारने-मरने के लिए तैयार रहता है! चीन के अंदर मानवाधिकार की क्या स्थिति है, किसी से छिपी नहीं है; मानवता के प्रति चीन का नजरिया कितना संकीर्ण है यह जगजाहिर है, इसकी एक बानगी भर है कि चीन के सत्ता शीर्ष में बैठे लोग मानव को या तो मशीन समझते हैं या फिर कीड़े! इसलिए धरती में मानवता के संरक्षण के लिए चीन को नाथना बेहद जरूरी है; मेरा तो मत है विश्व के सभी जिम्मेदार मुल्कों को चीन की घेराबंदी करके सबसे पहले वहां की

जनता को अघोषित कैद से मुक्ति दिलानी होगी, ऐसा करने के लिए यदि जरूरी हुआ तो चीन को चारों तरफ से घेरकर वहां के सत्ता पुरुष को शीर्ष पदों से बेदखल कर दिया जाए और वहां जनता की सत्ता स्थापित की जाए; चीन में मानवता की रक्षा किए बगैर इस पृथ्वी में मानवता के दीर्घायु होने की बात करना बेमानी होगी..." लगातार बोलते रहने से अहम की आवाज बिखरने लगी; उसने दो घूँट पानी पिया, फिर कहा, "आप लोगों की नजर में मेरे द्वारा रखी बात यदि तर्कपूर्ण है; इसमें दम है तो इसे छठे इशु के रूप में शामिल किया जा सकता है।"

"अहम भैया, अभी तक मैं रामघाट और हिंदुस्तान के बारे में ही सोचता था, अब जाकर पता चला दर्शनशास्त्र तो सचमुच मानव और विश्व का सच्चा दर्शन कराता है!" अहम के चुप होते ही रामू बोल पड़ा, शायद बातें कब से उसके अंदर कुलबुला रही थीं, आगे कहा, "अब तो मुझे लगने लगा है हमें तो मानवता और संपूर्ण मानव जाति की लड़ाई लड़नी पड़ेगी, इसके लिए मैं आजीवन अपने आप को समर्पित करता हूं।"

"मानवता की लड़ाई के लिए मैं भी अपने आप को समर्पित करती हूं।" मंजरी संकल्प के साथ बोली।

"मैं भी... मैं भी... मैं भी... मैं भी..." शायनी, सहज, अहम, दिनेश, मनोज, ने बारी-बारी से संकल्प लिया। चाय पेश होते ही सभी सामान्य बातचीत में मशगूल हो गए।

"कोरोना-कैबिनेट के निर्णय हेतु अब हर इशु को एक-एक पंक्ति में दोहराता हूं, सभी सदस्य हां या ना में मत देंगे।" चाय समाप्त होते ही अध्यक्षीय कुर्सी पर बैठकर परवेज ने बोलना शुरू किया, पूरे रौ में आते हुए, "इशु नंबर एक! क्या सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता के लिए भारत को अंतिम चेतावनी देते हुए इसे हर हाल में हासिल करना चाहिए?"

"..हां- हां- हां- हां- हां-..." एक किनारे से रामू, सहज, अहम, शायनी, मंजरी, दिनेश, मनोज और उपस्थित सदस्यों ने प्रस्ताव का समर्थन किया।

"इशु नंबर दो!" परवेज गरजने जैसी आवाज में बोला, "क्या तिब्बत की स्वतंत्रता का भारत को ऐलान कर देना चाहिए?"

"हां- हां- हां- हां-..."

"इशु नंबर तीन!" तीसरा इशु रखते हुए परवेज आक्रामक हो उठा, "क्या इंडिया को नाटो की सदस्यता लेनी चाहिए? और फिर चीन से

मुकाबले के लिए तैयार रहने की घोषणा कर देनी चाहिए! पर अपनी ऐतिहासिक-अहिंसावादी नीति पर कायम रहते हुए कि भारत किसी मुल्क पर पहला आक्रमण नहीं करेगा।"

"हां- हां- हां- हां..."

"इशु नंबर चार; कोरोना की उत्पत्ति को अंजाम देकर इसे पूरे दुनिया में फैला देने के लिए क्या चीन से उचित मुआवजा वसूला जाना चाहिए?"

"हां- हां- हां- हां-..."

"इशु नंबर पांच; क्या मुंबई आक्रमण के मास्टरमाइंड को पाकिस्तान से खींच निकालने के लिए इंडिया को आकाश से पाकिस्तान की धरती पर उतरना चाहिए कि नहीं!"

"हां- हां- हां-..."

"इशु नंबर छह" बोलते हुए परवेज का उत्साह चरम पर पहुंचने लगा, "क्या वैश्विक स्तर पर यह घोषणा होनी चाहिए कि चीन मानव जाति और मानवता का दुश्मन है और क्या पूरी दुनिया को चीन में सत्ता शीर्ष को बेदखल कर वहां पर जनता का शासन स्थापित कर देना चाहिए?"

"हां- हां- हां- हां-..."

"अब आगे हमें क्या कदम उठाना है!" रामू आगे की रणनीति के लिए सक्रिय हो उठा।

"आगे का कदम उठाने से पहले हमें कैबिनेट के निर्णय को फॉर्मली रिकॉर्ड में रख लेना चाहिए।" सहज ने कहा, फिर परवेज से बोला, "अपने स्टडी रूम से एक ब्लैंक रजिस्टर उठा लाओ, इसमें अपने कैबिनेट के डिसीजन को लिखा जाएगा।" अब उसने शायनी से कहा, "तुम्हारी या मंजरी की तरफ से कोई इशु नहीं आया है, इसलिए दोनों मिलकर आज का प्रोसिडिंग नोट करो और सभी के हस्ताक्षर कराओ।"

"मेरी ओर से सातवां इशु अभी तो पटल पर रखा ही नहीं गया है! तुमलोग क्या सोच रहे हो, लड़कियों को राजनीति-कूटनीति की समझ नहीं होती है?" मंद मुस्कान के साथ मंजरी बोली, जैसे किसी भारी मुद्दे का संकेत कर रही हो।

"मेरी ओर से भी विज्ञान-विषयक एजेंडा रखा जाना है।" वंचित कर दी गई-सी भाव-भाषा में शायनी बोली।

"प्लीज, आप दोनों अपना एजेंडा रखें।" सहज ने खेद जताने के अंदाज

में कहा।

"अभी एजेंडा रखने की कोई हड़बड़ी नहीं है हमें, पूर्ण और सटीक तथ्य के साथ हम दोनों अगली बैठक में रखेंगे।" शायनी चुप हो जाने जैसी बोली, संशय को और सजीव करते हुए।

मिनट के अंदर ही परवेज, लाल गत्ते वाला रजिस्टर ले आया। रजिस्टर लाकर परवेज ने शायनी की तरफ बढ़ा दिया। बिना देर किए वह मंजरी को लिखाने लगी, उसकी मुस्कुराती हस्तलिपि पर मोहित होते हुए। लिखने के दौरान परवेज इशु वाइज सहयोग देने लगा। चाय की चुस्की थमते-थमते कोरोना-कैबिनेट का बैठक-वृत्त पंजी में जीवित हो उठा। परवेज से शुरू होकर दिनेश तक सभी ने क्रम से अपने हस्ताक्षर कर दिए।

"लिए गए निर्णय पर आगे की जाने वाली कार्रवाई तय कर लेनी चाहिए?" सहज अपनी भूमिका में आते हुए कहा।

"आगे की कार्रवाई पर निर्णय लिया जाना सर्वथा उचित और उपयुक्त होगा!" बैठक वृत्त लिख चुकी मंजरी को भी मजा आने लगा, वैश्विक संदर्भ वाले वृहद निर्णय पर।

"लोकतांत्रिक प्रक्रिया का सम्मान करते हुए हमें इन बिंदुओं को सबसे पहले महामहिम राष्ट्रपति, माननीय प्रधानमंत्री, माननीय रक्षा मंत्री, माननीय विदेश मंत्री और सभी संबंधित पदधारियों के साथ कलेक्टर और एसपी रामघाट को प्रेषित कर देना चाहिए।" मनोज ने शालीनतापूर्वक कहा।

"उसमें क्या माँग रखी जाएगी!" दिनेश की जिज्ञासा जाग उठी, आखिर इन बिंदुओं को लागू कैसे कराया जाएगा।

"पत्र प्रारूप में सारे बिंदुओं को सुझाव और माँग मिश्रित फॉर्मेट में प्रेषित किया जाएगा; अंत में चेतावनी देने वाली भाषा में लिखा जाएगा, यदि सरकार इन बिंदुओं पर कार्यवाही आरंभ नहीं करती है तो समझा जाएगा कि ऊपर बैठे लोग कांचा जैसे मामूली खेलों में माहिर मात्र हैं! और क्रांतिकारी कदम उठाने में उनकी नानी मर जाती है?" परवेज एक सांस में बोल गया।

"कोरोना के बारे में सरकार को पहले भी पत्र देने से कोई परिणाम नहीं निकल पाया था।" मंजरी शंकित होकर बोली।

"मैं मंजरी की बात से सहमत हूं; पिछली दफा पत्र का पीछा दिल्ली तक करने के कारण मैं कई दिनों तक घिसता-मरता रहा, पत्र डालना प्रक्रिया का मामला जरूर है पर अब मैं किसी की खुशामद करने दिल्ली नहीं जाऊंगा!"

रामू उत्तेजित हो उठा।

"तो तुम्हारे विचार से क्या होना चाहिए?"

"सीधी कार्रवाई!" हवा में मुठ्ठी लहराते हुए रामू बोला, आगे गर्दन तानते हुए कहा, "यदि सरकार हमारे सुझावों-माँगों पर सोई रही फिर तो करोना कम होने के बाद हम लोग रामघाट में इन बिंदुओं पर जनमत तैयार करेंगे; फिर प्रदेश और देश के हर कॉलेज-विश्वविद्यालय में स्टूडेंट्स को जाग्रत करेंगे कि स्वर्णिम भविष्य के लिए हिंदुस्तान को अब लंबी छलांग लगानी ही पड़ेगी!"

"सरकार को पत्र प्रेषित करने के बाद मीडिया-सोशल मीडिया में जरूर डालना है, सरकार की मीडिया से ही बनती-बिगड़ती है!" मनोज ने अपने अनुभव से कहा।

"ठीक है।" समापन की ओर बढ़ते हुए सहज ने कहा, फिर परवेज से बोला, "तुम डिमाँड लेटर तैयार कर कल तक सभी के हस्ताक्षर लेकर हर माननीय को प्रेषित कर दो, और फिर समय के साथ आगे बढ़ते जाएंगे; आज की बैठक को यहीं खत्म समझा जाए।" सधे कदमों से सभी कमरे से बाहर आने लगे। सड़क की ओर बढ़ते हुए सभी ऐसे लग रहे थे जैसे नई सदी में बड़े डग भर रहे हों।

उस रात को रामू देर तक जागता रहा, भीमरवा की उत्साहपूर्ण पुकार के अर्थ पर मनन करते हुए ...भूत पर झूमो मत ...वर्तमान पर थिरको मत ...भविष्य से भटको मत...

11

कोरोना-कैबिनेट द्वारा दिए गए सुझावों की खबरें पिछले दो-तीन दिनों से अखबारों-चैनलों में लगातार आ रही थीं; एक क्रांतिकारी कदम के रूप में शृंखलाबद्ध रंग-रूप में पेश करते हुए, सभी छह बिंदुओं पर सिलसिलेवार ढंग से। रामघाट के लोग फूले नहीं समा रहे थे, अपनी धरती में ऐसे क्रांतिकारी विचारों का उद्‌भव देखकर! स्थानीय अखबारों में रोज-रोज मुख्य पृष्ठों के मोटे-मोटे अक्षर और चैनलों की हेडलाइंस भला किस बुद्धिजीवी-विचारवान को उद्वेलित नहीं करतीं! ...रामघाट बनने जा रहा है क्रांतिकारी विचारों की जननी! ...भारतवर्ष को भूतकाल से खींचकर वर्तमान के ऊपर से उठाते हुए भविष्य में स्थापित करने वाले ऐतिहासिक कदम! ...दशकों से धूल-गर्द के शिकार जिन मुद्‌दों पर भारत के दिग्गज प्रधानमंत्रियों ने भी ढंग से मुंह नहीं

खोला उनके लिए युवा-मंडली ने कमर कस ली है ...कोरोना-कैबिनेट के विचार भले ही अव्यावहारिक प्रतीत होते हों, उसे व्यावहारिक धरातल पर उतारना समय की माँग।...भारत सरकार के इन सुझावों पर एक कदम भी आगे बढ़ते ही दुनिया की दिशा बदलनी तय है...।

इन सुझावों के विरोध में पहली प्रतिक्रिया पार्टी की ओर से ही आई थी; कल के दो अखबारों में और कल शाम प्रदेश स्तरीय दो-तीन न्यूज चैनलों में। अध्यक्ष शहर प्रकोष्ठ हरदेव शाह के हवाले से कहा गया था ..भारतीय विदेश नीति बच्चों का खेल नहीं है! इसे चलाने के लिए काफी सूझ-बूझ और मानसिक परिपक्वता की जरूरत पड़ती है; उन सुझावों पर अमल करना तो दूर, चर्चा करना भी भारत के दूरगामी हितों के विपरीत होगा! ...ऐसे अपरिपक्व सुझाव बच्चों के मस्तिष्क को अनर्गल गतिविधियों की ओर ले जाएंगे...।

पार्टी प्रवक्ता के बयानों को प्रमुखता से कवर करने वाले चैनलों के प्रतिस्पर्धी स्थानीय चैनल रामघाट सिटी ऐसे स्वर्णिम अवसर को हाथ से भला क्यों जाने देते! लगे हाथ चैनल में परवेज, रामू, मनोज, शायनी और अहम की एक लाइव परिचर्चा 'सदी की सनसनी' सुबह से ही चल पड़ी; स्क्रीन में वे बड़े इत्मीनान से जवाब देते नजर आ रहे थे, अपने घरों में बैठे।

'...मिस्टर परवेज, आपकी कोरोना-कैबिनेट ने जो प्रस्ताव पारित किया है क्या वह आपको अतिवादी सुझाव नहीं लग रहे हैं?' शो संचालित कर रही एंकर ने बड़ा प्रश्न रखते हुए शुरुआत की, हौसला अफजाई के अंदाज में।

'...बिल्कुल नहीं मैडम! सभी छह प्रस्ताव वस्तुतः प्रयोगवादी हैं, इन पर दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ा जा सकता है," परवेज ने इत्मीनान से बोलना शुरू किया, "मसलन सिक्योरिटी काउंसिल में परमानेंट मेंबरशिप के मसले को ही लीजिए, हम लोगों ने जब से होश संभाला है सुनते आ रहे हैं कि भारत स्थायी सदस्यता का दावा जताता आ रहा है! पांच में से कभी दो तो कभी तीन स्थाई सदस्यों के समर्थन के तुड़े-बुझे से तीर तरकस से निकलते रहते हैं जब-तब; अब तो सुन-सुनकर कान पक गए हैं! मैं कह रहा हूं भारत स्थायी सदस्यता के लिए दो साल का अल्टीमेटम देकर तो देखें! सारे वैश्विक संगठनों का एक साल तक बहिष्कार का नुस्खा तो परखें! दुनिया के कोने-कोने में भेजे गए शांति सैनिकों की टुकड़ी वापस बुला लेने का अंजाम तो आजमाएं! भारत द्वारा ऐसे कदम उठाने से क्या

हमारे ऊपर कयामत आ जाएगी? क्या दुनिया के बड़े मुल्क हम पर परमाणु बम गिरा देंगे? चूड़ी पहनकर बैठे रहने के देसी मुहावरे को सार्थक करते रहना है तो करते रहिए अपनी बला से; ख्वाब पालना बंद कीजिए कि चीन के साथ दोस्ती का झूला तेज चलने लगेगा तो वह हमारी स्थायी सदस्यता का समर्थन करेगा! ऐसा सोचते रहना राष्ट्रीय मूढ़ता के सिवा कुछ नहीं है...' कूटनीतिक बिंदुओं पर नॉनस्टॉप बोलते जाने से परवेज के चेहरे पर कूटनीतिक परिपक्वता झलकने लगी थी।

'...चलिए सिक्योरिटी काउंसिल में परमानेंट मेंबरशिप का मुद्दा काफी पुराना है, आपके अगले प्रस्ताव पर बात करते हैं; आपके कैबिनेट ने प्रस्ताव दिया है कि तिब्बत को स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर देना चाहिए; क्या आपको नहीं लगता है ऐसा करना बेवजह पंगा लेना है?...'

'...मैडम, आपने कहा कि परमानेंट मेंबरशिप का मुद्दा काफी पुराना है, मैं जरा सुधार करना चाहता हूं; तिब्बत का मसला उससे भी पुराना है! तिब्बत को स्वतंत्र राष्ट्र घोषित करना बेवजह पंगा लेना नहीं है, बल्कि ड्रैगन को नाथने की सबसे मजबूत रस्सी है! मैं कहता हूं जब आप ने दलाई लामा के धार्मिक नेतृत्व वाली निर्वासित सरकार को मैकडॉनल्डगंज में स्थापित कर रखा है तो चूहे-बिल्ली के ऐसे खेल से अच्छा है चुहे को उसकी सीमा में समर्थवान बना दें! मैं पूछता हूं यदि हम तिब्बत को आजाद मुल्क ऐलान कर देते हैं तो क्या चीन हम पर बम बरसा देगा? अरे भई दुनिया के बहुतेरे राष्ट्र तिब्बत के समर्थक हैं, इस दिशा में हम एक कदम आगे बढ़कर तो देखें; आखिर एक बुद्धिष्ट नेशन को दुनिया के नक्शे पर लाने की अपनी जिम्मेदारी से हम कैसे भाग सकते हैं? यह भी तो सोचिए यदि तिब्बत के लिए हम सीना सामने नहीं करेंगे तो कौन करेगा? ब्राजील! मेक्सिको! नाइजीरिया! थाईलैंड? अभी कोरोना को लेकर ड्रैगन दुनिया के निशाने पर हैं, यदि तिब्बत को लेकर हम अभी हमलावर नहीं होंगे तो फिर कभी नहीं हो पाएंगे!...' बोलकर परवेज की आंखें कहीं टंग गई दिखने लगीं, जैसे सुदूर उत्तर में ल्हासा पर गढ़ गई हों।

'...आपका तीसरा प्रस्ताव तो बेहद जोखिमभरा है! नाटो की सदस्यता लेने का सुझाव एक प्रकार का मीनिया नहीं है? क्या आप पावन भारत भूमि को जंग के मैदान में तब्दील हुआ देखना चाहते हैं! मिस्टर परवेज?...'

'...आपने मीनिया लफ्ज इस्तेमाल किया है, पहले तो आप यह बताइए क्या उन सारे यूरोपियन कंट्रीज में मीनिया सवार है जो नाटो में शामिल है?

मैं आपसे एक छोटा-सा सवाल पूछता हूं मैडम, आज की डेट में दुनिया का सबसे पीसफुल कॉन्टिनेंट कौन-सा है?...' प्रश्न पूछते हुए परवेज की आंखें छोटी हो गईं।

'...जी, बेशक यूरोप...'

'...तो फिर? यदि हमें नाटो की सदस्यता मिल जाती है तो हमारा देश अशांत हो जाएगा? या फिर शांति की परिधि खिंचती चली जाएगी अपने आप?' एंकर को निरुत्तर करते हुए परवेज क्षणभर के लिए चुप हो गया, आगे बोला, '...मेरे नजरिए से आधुनिक समय में मानवतावाद और मानवीय मूल्यों की धुरी तो यूरोप ही है; अब पते की बात बताता हूं, आखिर नाटो में शामिल होने की क्या जरूरत आन पड़ी? मैं पूछता हूं चीन और पाकिस्तान जैसे उन्मादी देश से आप एक साथ अकेले निपट लेंगे? बिल्कुल नहीं! हम-आप सभी जानते हैं नाटो अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के निमित्त ही है; फिर हम ऐसे शक्तिशाली संगठन के समीप क्यों न आएं!' बोलकर परवेज ने बंद मुट्ठी वाला पंजा नीचे की ओर गिराया, जैसे जमीन में कोई जरूरी खंभा गाड़ना चाह रहा हो।

'...कोरोना-कैबिनेट के इन मुद्दों पर सरकार और समाज का क्या रुख होगा यह तो समय बताएगा; चौथे, पांचवें और छठे मुद्दे पर इनके प्रस्तावक श्री रामचंद्र ग्वाला, श्री मनोज और मिस्टर अहम से छोटे से ब्रेक के बाद चर्चा करेंगे।'

'...ब्रेक के बाद आप सभी का इस चर्चा में फिर से स्वागत है; अब तक हम तीन प्रस्तावों पर चर्चा कर चुके हैं, अब चौथे प्रस्ताव पर हम श्री रामचंद्रजी से बात करेंगे; हमने सुना है कोरोना के खिलाफ लड़ाई में आप शुरू से ही काफी मुखर रहे हैं, भारत में कोरोना की इंट्री रुकवाने के लिए आपने दिल्ली की दौड़ भी लगा दी थी! फिर लॉकडाउन होने पर पैदल ही रामघाट आए हैं? यहां जिला अस्पताल में आपने कोरोना-मंडली की तरफ से स्वैच्छिक सेवा भी दी है महीने-डेढ़ महीने तक! हम आपके इस जज्बे को सलाम करते हैं; यहां बात करेंगे आपके उस प्रस्ताव की जिसमें कहा गया है कि पूरी दुनिया को कोरोना की जंग में झोंकने के लिए चीन से वाजिब मुआवजा वसूला जाए? तो आप हमें यह बताएं रामचंद्रजी क्या चीन इस बात को मानेगा कि कोरोना को उसने जन्म दिया है? और यदि यह साबित भी हो जाए कि चीन की लैब में इसे पैदा किया गया है तो क्या वह जुर्माना भरने

के लिए तैयार हो जाएगा?...'

'...मैडम जी, इसमें अब कोई शक नहीं रह गया है कि पूरी दुनिया में कोरोना का जाल चीन का ही फैलाया हुआ है; आप खुद सोचिए वहां सिर्फ एक शहर वुहान ही कोरोना की जद में आया! जरा सोचिए, भारत जैसा ही चीन के हर भाग में कोरोना का प्रसार क्यों नहीं हुआ है अबतक? इसलिए कि उसे पता है इसे कैसे फैलाना है और कब कैसे रोकना है! रही बात जुर्माना वसूलने की वह तो उसे भरना ही पड़ेगा!' 'भरना ही पड़ेगा', बोलने पर रामू ने स्वर में वजन बढ़ाया जैसे चीन की गर्दन दबाकर वसूली कर लेगा।

'...वह तो कहेगा किस बात का जुर्माना! और फिर इसका आकलन कैसे हो पाएगा? क्या इतनी बड़ी राशि वह दे पाएगा!'

'...इसका जवाब मैं देता हूं मैडम,' काफी देर से धैर्यपूर्वक चर्चा सुनते आ रहे सहज ने कहा, 'जुर्माना इस बात का कि उसकी गैर जिम्मेदाराना हरकत के कारण पूरी दुनिया में कोरोना फैला है और सभी देशों की अर्थव्यवस्था को गहरी चोट पहुंची है, तो उसे भरना ही पड़ेगा! मुआवजे के आकलन के कई तरीके अपनाए जा सकते हैं; चलिए मानते हैं मुआवजा भारी-भरकम होगा, तो उसे पचीस-पचास परसेंट तक की छूट देकर राहत दी जा सकती है...' उंगलियों को अर्थशास्त्रीय गणना-सा आपस में फंसाते हुए सहज ने समझाया।

"पाँचवें प्रस्ताव के बारे में हम मनोजजी से जानेंगे कि आखिर इस प्रस्ताव से हम कौन-सा लक्ष्य हासिल करना चाहते हैं; मनोजजी, यूं तो आप रिपोर्टर हैं और बस्ती बैक ग्राउंड से आते हैं, आपके दिमाग में यह बातें कैसे आईं कि मुंबई हमले के मास्टरमाइंड को सर्जिकल स्ट्राइक द्वारा हमें पाकिस्तान से उठा लेना चाहिए?'

'...जी मैडम, कई दशकों से वह पाकिस्तान में छिपा बैठा है, हम जानते हैं पाकिस्तान खुद उस गुनाहगार को हमें नहीं सौंपेगा; अब यह जरूरी हो गया है कि हम सर्जिकल स्ट्राइक करके आकाश मार्ग से ही उसे पाकिस्तान से उठा लें जैसा कि अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन को उठा लिया था।'

'...क्या आपको लगता है यह काम इतना आसान है?'

'...मेरे नजरिए में यह काम अब आसान है, क्योंकि सरकार ने कई मौकों पर यह संकल्प लिया है कि पाकिस्तान के मामले में हम किसी भी हद तक जा सकते हैं, रही बात सरकार के दावे की विश्वसनीयता की तो न्यायपालिका जैसा ही सरकार पर भी हमें पूर्ण विश्वास है; और हम मानते हैं सरकार जो

कहती है सच कहती है! इसीलिए हमें देश के सबसे बड़े गुनाहगार को बिना देर किए पाकिस्तान से सर्जिकल स्ट्राइक करके उठा लेना चाहिए, फिर उसे अपने कानून के हिसाब से वाजिब सजा देनी चाहिए।'

'...छठे प्रस्ताव पर मिस्टर अहम से आमना-सामना होने से पहले हम इस चर्चा में आमंत्रित वक्ता से बात करेंगे; रामघाट विश्वविद्यालय में साइंस स्ट्रीम की टॉपर मिस शायनी और समाज के शोषित तबके से ताल्लुकात रखने वाली मिस मंजरी इस चर्चा में विशेष रूप से आमंत्रित हैं, आइए हम उनकी तरफ रुख करते हैं; हां तो मिस मंजरी आपसे जानना चाहती हूँ, कोरोना-कैबिनेट में आप दोनों को जोड़ कर मात्र चार महिलाएं हैं, पर आप दोनों की तरफ से कोई प्रस्ताव या सुझाव नहीं आने के क्या मायने हैं? क्या आज के युवा सोच भी लिंग-भेद का शिकार हैं या अभी भी महिलाएं साहस-संघर्ष के रास्ते पर बढ़ना नहीं पसंद करतीं?' महिला एंकर महिला वक्ता को घेरने के लिए तैयार दिखी, स्वभावत:।

"...देखिए मैडम, हम दोनों अभी इतना ही बोलकर बात समाप्त करना चाहेंगे, कि हमने अपने-अपने प्रस्ताव सुझाव-पत्र के रूप में सरकार को भेज दिए हैं, फिलवक्त इस पर कुछ भी बोलने से परहेज ही करेंगे हम दोनों।" ज्यादा समय लिए बिना मंजरी ने अपनी बात समाप्त कर दी।

'...अब हम मिस शायनी से रू-ब-रू होते हैं; आपके प्रस्ताव के बारे में मिस मंजरी के मुँह से सुन चुकी हूँ, इस चर्चा से थोड़ा अलग हटकर हम कुछ जरूरी जानकारी मिस शायनी से जानना चाहेंगे; आप शायद कोविड-नाइनटीन पर पार्ट टाइम रिसर्च कर रही हैं गांधी हाई स्कूल में, हमने सुना है कोरोना वायरस पर आपकी रिसर्च से काफी कुछ निकलकर आ रहा है, विशेष तौर पर यह कि इस वायरस की उत्पत्ति चीन की लैब में हुई जान पड़ रही है?' वायरस पर बात आरंभ करते ही एंकर के चेहरे की भाव-भाषा बदलती दिखी, वह आगे गंभीर होती गई '...मिस शायनी आप यह कैसे साबित कर सकती हैं कि कोरोना वायरस यानी कोविड-नाइनटीन को चीन ने ही पैदा किया है?

'...मैडम वर्ल्ड की कई बड़ें लैब में कोरोना वायरस के डिफरेंट स्ट्रेन पर लगातार रिसर्च जारी है; अभी तक जो फाइंडिंग्स मिल रहे हैं वह संकेत कर रहे हैं कि इस वायरस की उत्पत्ति लैब में ही हुई है...' बोलकर शायनी ने दांत से नीचे का होंठ दबा लिया, सोचकर बोली 'चीन पर शक इसीलिए

गहरा रहा है कि पिछले वर्ष नवंबर-दिसंबर में वुहान में फैले कोरोना वायरस के कई स्ट्रेन के जो सैंपल वहां की लैब में थे उसे चीन ने चुपचाप नष्ट कर दिया है! मुझे तो पक्का यकीन है आज या कल यह साबित होकर ही रहेगा कि दुनिया में अपना वर्चस्व स्थापित करने की खातिर चीन ने इस वायरस को जन्म दिया है!'

'...इस चर्चा से अलग हटकर क्या दर्शकों को यह बताएंगे आपके रिसर्च में अभी तक क्या कुछ निकला है? आपके रिसर्च का रिजल्ट क्या चौंकाने वाला हो सकता है!'

'...सॉरी मैडम, रिसर्च के बीच में अपने फाइंडिंग्स हम शेयर नहीं कर सकते; हां इतना कह सकती हूं कोरोना स्ट्रेन का डायनामिक्स फिलहाल मुझे तो चौंका ही रहा है!' बोलकर शायनी ने आंखें बंद कर लीं, जैसे आंखों के सामने कोई अनिष्ट आ टपका हो।

'...अब हम कोरोना-कैबिनेट के छठे और अंतिम प्रस्ताव पर मिस्टर अहम से चर्चा करेंगे; अहम रामघाट ही नहीं पूरे प्रदेश में फिलॉसफी के फील्ड में एक उभरता सितारा माने जाते हैं, आपकी पहचान एक बेहद गंभीर किस्म के इंसान की है; मैं आपसे जानना चाहती हूं आपने प्रस्ताव दिया है कि चीन को मानव, मानवतावाद और मानवीय मूल्य का दुश्मन घोषित किया जाए और साथ ही मानव सभ्यता के हक में वहां जनतंत्रवादी सत्ता लागू कराने के लिए पूरे विश्व को उसकी घेराबंदी करनी चाहिए; इस पर मैं खुद प्रश्न बनाने या पूछने से परहेज करना चाहती हूं, कृपया आप अपने स्तर से इसे स्पष्ट करें।'

'...देखिए मैडम पहली बात तो दर्शनशास्त्र का कोई सितारा नहीं होता है, जो कुछ है वह जीवन दर्शन ही है! बस अपने प्रस्ताव के बारे में मैं संक्षिप्त में टिप्पणी करना चाहता हूं, क्योंकि आप लोगों के पास अंत में समय बहुत ही कम बचता है!' अहम ने चुटकी लेने के अंदाज में चर्चा आरंभ की, आगे बोलता गया, 'मानव के प्रति चीन का दृष्टिकोण अमानवीय रहा है, अपने अमानवीय कृत्य का खुला प्रदर्शन वह दशकों से लगातार करता आ रहा है, मानवीय संवेदना और मानवीय मूल्य उसके लिए कोई मायने नहीं रखते; सच कहें तो एक तरह से उसने मानव को मशीन मात्र मान रखा है! इस धरती में मानव जाति का अंतिम लक्ष्य क्या है? यही न मानव सभ्यता को और उत्कृष्ट बनाते चलना, सदियों-सदियों के लिए! तो मानव जाति के इस सामूहिक लक्ष्य के मार्ग में चीन एक बड़ा अवरोधक है, वहां के नागरिकों

को मानवीय संवेदना, मानवीय मूल्य और मानवता के साथ जीने की मनाही है, फिर तो वह पूरी दुनिया के साथ कदमताल करते हुए नहीं बढ़ सकता न? इसीलिए इस धरती में मानव सभ्यता के समरूप विकास को आगे बढ़ाते रहने के लिए आवश्यक है कि विशाल चीनी भूभाग में इंसानी हरकतों को मानवता की पटरी पर लाया जाए; आप चैनल वाले खुद देख सकते हैं दुनिया के हर हिस्से में चीन अपनी विस्तारवादी नीति से बाज नहीं आ रहा है, इसलिए अब समय आ गया है कि हम उसे असभ्य और बर्बर राष्ट्र घोषित कर दें और फिर दुनिया के बड़े मुल्कों को साथ लेकर चीन को चारों ओर से घेरकर वहां जनसत्ता स्थापित कर मानवतावाद की लहर जगा दें; जय हिंद, जय मानव!' अपनी बात रखकर अहम ने हाथ जोड़ लिए; थोड़ी देर के लिए पलकें बंद कर लीं, जैसे मानवता के किसी भगवान का सुमिरन कर रहा हो।

'...आपका बहुत-बहुत धन्यवाद मिस्टर अहम, आपने मानवतावाद के दर्शन पर हमारा भी ज्ञानवर्धन किया है; तो ये थे कोरोना-कैबिनेट के छह प्रस्ताव जो सुझाव के तौर पर भारत सरकार को कोरोना-मंडली द्वारा प्रेषित हैं, आगे देखनेवाली बात यह होगी क्या भारत सरकार इन सुझावों पर ध्यान देगी या फिर रोज आ रहे माँगों जैसे इन्हें भी कूड़ेदान में फैंक देगी?...' एंकर ऐसे बोली जैसे सचमुच कोरोना-कैबिनेट के प्रस्ताव का अंत हो चुका है; वह आगे बोली, 'जाते-जाते मैं आप लोगों में से किसी एक का जवाब चाहूंगी कि जब सरकार खुद ही कई बड़े-बड़े काम करती आ रही है तो ऐसे में इन एजेंडे को पेश करने की क्या सूझी है आप लोगों को!'

'...जी मैडम इसका जवाब मैं देता हूं।' रामू ने उंगली उठाते हुए कहा।

'...जी प्लीज रामचंद्रजी।'

'...देखिए मैडम! पूरे देश में कोरोना जिस कदर फैलता गया है उससे हर भारतीय अंदर से आहत है! दूसरी ओर पूरी दुनिया में कोरोना फैलाकर चीन ने बड़ा पाप किया है, तो क्या उसे उसकी सजा से मुक्त रहने देना चाहिए? बात रही सरकार द्वारा बड़े-बड़े काम करने के दावे की, तो मैं पूछता हूं देश में ऐसी कौन-सी सरकार है जिसने बड़े काम करने के दावे ना किए हों! इसलिए हमने छह बड़े और सटीक कामों की सूची भेज दी है सरकार को, ताकि इस सदी में भारत पूरी दुनिया में सत्य, अहिंसा, भाईचारा, मानवतावाद का नायक बनकर उभरे; जय हिंद; मर जा करोना!' बोलकर रामू ने भी अपनी मुख मुद्रा दार्शनिक-सी बना ली।

"...आज की परिचर्चा 'सदी की सनसनी' को हम यही समाप्त करते हैं; इसमें भाग लेने के लिए और मुद्दे के सटीक विश्लेषण के लिए आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।" एंकर ने अपनी मुस्कान से समापन, किया शो के सफल संचालन का संकेत करती हुई।

कोरोना-कैबिनेट के प्रस्ताव को लेकर अखबारों-चैनलों में तीन दिनों से आ रही खबरों से रामघाट के जन-जन में तरंग तो पैदा हो ही गई थी, आज प्रसारित परिचर्चा 'सदी की सनसनी' ने तो रामघाट के युवाओं में उमंग-सा ला दी। देखते-ही-देखते सोशल मीडिया के अनेकानेक नामी-बेनामी ग्रुप में कोरोना-कैबिनेट के क्रांतिकारी कदमों के क्लिप की बाढ़-सी आ गई, वायरल होने से भी आगे। शाम होते-होते यह सिर्फ रामघाट ही नहीं, पूरे प्रदेश की खबर बन गई; बल्कि तरंग माध्यम से देश में करोड़ों लोगों तक पहुंचने लगी। संध्या समय रामघाट के चौक-चौराहों-चौपालों, चाय की दुकानों में यह परिचर्चा चर्चित होती रही, इस कदर कि लगने लगा जैसे उन मुद्दों पर कहीं देश के अंदर एक बड़ी क्रांति न हो जाए।

12

कोरोना काल में महीनों बाद मंथन सभागार में पार्टी कार्यकारिणी की बैठक रखी गई थी, अचानक! बैठक होने की सूचना पार्टी पदाधिकारियों तक भेज दी गई, आनन-फानन में। दरअसल सोशल मीडिया में चल रहे कोरोना-कैबिनेट के ऊटपटांग सुझाव, बल्कि माँग को पार्टी मुख्यालय ने गंभीरतापूर्वक लिया था; इतना ही नहीं रामघाट पार्टी इकाई से नाराजगी व्यक्त की थी कि ऐसे तत्वों से स्थानीय तौर पर ही निपट लिया जाए, समय रहते ही।

"जल्दीबाजी में बुलाई गई बैठक में आप सभी का स्वागत है।" ठीक साढ़े दस बजे अपनी कुर्सी में विराजते ही अध्यक्ष श्री हरेन्द्र ठाकुर ने देर नहीं की, आगे बोलते गए, "महीनों बाद हो रहे ऑफलाइन मीटिंग में आज भाग लेकर हम लोगों को हर्ष होना चाहिए; सीधे विषय पर आता हूँ, आप सभी को पता ही होगा कोरोना-मंडली के छोकरों की नेतागिरी दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है" बोलते-बोलते अध्यक्ष के चेहरे में घृणा की परत तैरने लगी; आगे चेताने के अंदाज में बोले, "पार्टी मुख्यालय से स्पष्ट निर्देश है, कोरोना-मंडली के बच्चों के कपोल-कल्पित प्रस्ताव से रामघाट में, प्रदेश में

उमंग-तरंग पैदा हो सकती है! समय रहते उसका काट ढूंढ़ लिया जाए और तदनुरूप कार्यान्वित किया जाए।"

"इन छोकरों ने अपनी माँगों से जो सनसनी पैदा की है उसका तोड़ कोई जादुई उड़ान ही हो सकती है।" शहर अध्यक्ष हरदेव शाह ने कहा।

"सर मेरी नजर में उन प्रस्तावों से अपनी सेहत में भला क्या फर्क पड़ना है! उदाहरण के लिए भारत यदि नाटो का सदस्य बन जाए तो हमारा क्या नफा-नुकसान?" पार्टी के अंदर भी स्वतंत्र सोच रखनेवाला युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष रवि मोहन बेलाग बोल गया।

"सावधान!" मंथन मंच के रामनाथ आलोक ने चिल्लाते हुए कहा, "अरे भई, अपने पड़ोसियों से छोटे-मोटे युद्ध करते रहने से जन-जन में उमंग बनी रहती है; नाटो का सदस्य बनते ही पूरे भारतीय उपमहाद्वीप क्षेत्र में स्वतः शांति आ जाएगी! ये हमारी सेहत के विपरीत होगा।"

"सर बिल्कुल सही कह रहे हैं, मंच के विचारक की बात को हम नजरअंदाज नहीं कर सकते! बाद में बतानेवाली बात मैं पहले ही बता देता हूं; ऊपर से यह भी कहा गया है कि यदि रामघाट स्तर से मामले से निपटना संभव नहीं हो पा रहा है फिर तो शीर्ष नेतृत्व विशेष उपाय तलाश करेगी!" अध्यक्ष ने धीमे से कहा, जैसे बात सभागार के बाहर जनता के कानों में न चली जाए।

"हर काम शीर्ष नेतृत्व को ही करना पड़ेगा, फिर तो स्थानीय स्तर पर पार्टी संगठन के लिए शर्म की बात होगी यह! मेरे विचार से हमें इसका निदान ढूंढ़ना ही चाहिए।" शहर युवा-प्रकोष्ठ उपाध्यक्ष रामनरेश ने बड़ी जिम्मेदारी लेने के लिए तत्पर दिखते हुए कहा।

"सबसे बड़ा सवाल है तथाकथित कोरोना-कैबिनेट ने जो प्रस्ताव पारित कर ऊपर भेजे हैं वे सभी बड़े मुद्दे हैं, फिर तो हमें उससे बड़े मुद्दे उठाने पड़ेंगे जो उन लोगों द्वारा उत्पन्न तरंग को विलोपित कर उसके स्थान में नव तरंग पैदा करेंगे!" विषयगत जड़ता में सुई से सुराख बनाते हुए मंथन मंच के विचार पुरुष काशीनाथ जी ने कहा।

"मेरा तो मानना है हमें पार्टी मुख्यालय को सुझाव देना चाहिए कि भूमि पूजन की तिथि में टालमटोल ना करें! यही एक ऐसा मुद्दा है जो बाकी सारे मुद्दों को धोने की क्षमता रखता है।" जिला कोषाध्यक्ष हरिराम गुप्ता ने

हनुमान के अंदाज में कहा।

"लेकिन उन छोकरों वाले मुद्दे तो वैश्विक स्तर के हैं।"

"अरे भई, उनके मुद्दे वैश्विक स्तर के ही हैं न, भगवान राम तो भगवान विष्णु के अवतार हैं जो धरती से आगे आकाश व पाताल तक में समाए हैं, बल्कि उससे भी आगे पूरे ब्रह्मांड तक में फैले हैं! फिर भगवान राम व विष्णु के आगे उनके प्रस्ताव तो पॉलिटिक्स के कच्चे अंडे जैसे हैं।" हरिराम गुप्ता मुख-मंडल में अलौकिक भक्ति-भाव लाते हुए बोले।

"लेकिन शिलान्यास की तिथि तो निश्चित नहीं हो पा रही है, कहा जा रहा है अभी शुभ मुहूर्त नहीं है?"

"अरे नहीं, मुहूर्त का मामला सुलझ गया है; नई गणना पद्धति से अगस्त वाला मुहूर्त पूरी सदी का सबसे शुभ मुहूर्त माना गया है!"

"परंतु मेरा मानना है अभी कोरोना काल में रामजन्म भूमि का भूमि पूजन करने में मजा नहीं आएगा; कोरोना संकट खत्म होने के बाद अगले साल हो तो पूरे देश में जश्न का माहौल बनेगा।"

"मुझे तो लग रहा है पार्टी नेतृत्व शायद ही इस साल भूमि पूजन हेतु सहमति दें, क्योंकि बिना आनंद-उत्सव वाला भूमि पूजन शायद ही किसी को रास आए।"

"तो हम राम मंदिर की बात यहां रामघाट में करें ही क्यों! हमें तो विकल्प पर विचार करना चाहिए जिसे हम रामघाट में कार्यान्वित कर सकते हैं।"

"फिर तो हम लोग यहां रामघाट तिरे में क्यों न एक बड़ा मंदिर बनाने की घोषणा कर दें!"

"आइडिया तो बिल्कुल सही है; इतना बड़ा आयोजन करेंगे कि रामघाट वाले दो-चार दिन में ही छोकरों का सारे जहां वाला प्रस्ताव भूल जाएंगे!"

"फिर तो हम लोग रामघाट तिरे वृहदाकार मंदिर की तैयारी शुरू कर दें?"

"यदि मंदिर बनाने की घोषणा से भी कोरोना-कैबिनेट की तरंग लहरी नहीं थमती है फिर तो पार्टी मुख्यालय से विनती करनी पड़ेगी इनकी स्वास नाली को ही खंडित-विखंडित किया जाए।" अध्यक्ष ने जाते-जाते कहा तो सभी को खुश होने का अवसर मिल गया; सभी के चेहरे में फैली मुस्कान से दुगुनी मुस्कान अवतरित करते हुए अध्यक्ष ने कहा, "धन्यवाद; जय माँ भारती!"

13

5 अगस्त, 2020। रामघाट में लोग सुबह से ही टीवी से चिपके हुए थे; अयोध्या में हो रहे भूमि पूजन के लाइव टेलीकास्ट जैसे दुर्लभ क्षण से भला कौन वंचित रहना चाहता! नेतागण और संत समाज सामाजिक दूरी धारित आसन में विराजमान थे; मुंह में मास्क लगाए, प्रभु की लीला अंत: स्मरण करते हुए। भूमि पूजन संपन्न हुआ; जन-जन की दशकों की लिप्सा-लालसा तृप्त होती जान पड़ी। अयोध्या से दूर रामघाट में लोगों को कुछ भी नयापन नहीं अनुभव हो रहा था। दिनभर के लाइव प्रसारण की आभा शाम होते-होते तिरोहित हो चली, सूरज के साथ ही; शाम होते ही कोरोना का साया फिर से भयावह हो उठा।

रामू भी भूमि पूजन वाले सीधे प्रसारण से चूकना नहीं चाहता था, अपने नाम का मान रखने हेतु। पर ज्यादा देर तक चिपका न रह पाया; मंजरी आ गई थी, माँ का हाथ बंटाने। मंजरी को राम नाम में शुरू से ही रुचि नहीं थी; वो तो रामू का बेबाकीपन था कि उसे दिल दे बैठी तो दे बैठी। रामू को भान हुआ आज तो बाहर निकलने से कोई फायदा नहीं, मित्र लोग लाइव टेलीकास्ट में ही फंसे पड़े होंगे; उसने घर में ही रहना पसंद किया, मंजरी के साथ छोटा-बड़ा कोई खुशनुमा एकांत पल ही मिल जाए! एकांत पल मिला भी; रामू के होंठ खुले, पर मंजरी का मुंह खुल पड़ा, "कोरोना तो नटराज जैसा नाच ही रहा है कि बीच में रामलीला टपक पड़ा है, ऐसे में रासलीला में क्या मजा आएगा?"

अंदर की ओर जाती मंजरी को देखते हुए रामू के अंदर स्व-संवाद होने लगा ...कोरोना ने तो प्यार में पाबंदी लगा ही रखी थी, यह राम-श्याम कहीं सभी को बैरागी ही न बना दें! घर संभालकर मंजरी जा चुकी थी। रामू के लिए घर में घंटों रहना मुश्किल था। गाय-भैंस का पानी-सानी करके वह निकल पड़ा औघड़नाथ मंदिर की तरफ, जरा देख तो आए चार-पांच महीने में क्या कुछ बदला है उस तरफ।

औघड़नाथ मंदिर की तरफ जाते हुए रामू को सब कुछ यथावत लगा; वही सुभाष मार्ग, सुभाष मार्ग से मंदिर तक जाता औघड़ मार्ग, पूर्व की भांति ऊबड़-खाबड़; सड़कों के किनारे गली के अंदर बने कच्चे-पक्के झाप-झोपड़ियां, बस्ती में यहां-वहां खड़े पेड़, बाबा अंबेडकर की मूर्ति... सब कुछ तो वैसा ही है! हां, नाक-मुँह सिकोड़ने का एक नया कारक जरूर उभर

आया था; बिना नाली के सड़कों-गलियों के किनारे बहते पानी कुछ ज्यादा ही बजबजा रहे थे, कोरोना के मारे लगातार हाथ धोते रहने के कारण।

"आओ जी रामू आओ; अब तो तुम बड़े आदमी बन गए हो!" किसी ने उसका नाम पुकारा; वह चौंक पड़ा, अरे सोचते-सोचते वह औघड़नाथ मंदिर के चौबारे तक पहुंच भी गया!

"काहे का बड़ा आदमी? सरकार ने हमारे खाते में किसी बड़े आदमी का मोटा माल ट्रांसफर कर दिया है क्या? मैंने तो देखा ही नहीं!" चेहरे में विद्रूप हँसी लाते हुए रामू ने कहा, जैसे बड़ा आदमी होने का तमगा उसे कतई मंजूर नहीं है।

"अरे रामू नाराज मत होवो; कुछ महीने से तुम औघड़ मंडली में शरीक नहीं हो पाए थे, हमें पता है कोरोना-मंडली के साथ तुम बड़े काम करने में लगे हो, फिर तुम बड़े आदमी हुए न!" गांधी हाई स्कूल में उसके सीनियर रहे जयनाथ ने बड़ा बनते हुए कहा।

"और हमारी बस्ती को तुम पर गर्व है!" मंदिर में झाड़ू-बुहार करने वाले हरिहर काका ने कहा।

"अयोध्या में राम मंदिर का भूमि पूजन भी हो ही गया हरिहर काका; अपने मंदिर में रखी राम-सीता-हनुमान की मूर्तियों की सफाई-धुलाई हुई कि नहीं?" चेहरे में भक्ति भाव लाते हुए रामू बोला।

"अरे बेटवा, मैं अकेला क्या-क्या करूंगा? मैं तो दिनभर औघड़नाथजी में ही लगा रहता हूँ, राम-लक्ष्मण गृह के लिए भी कोई दानी आगे आए तब तो!" हरिहर काका ने हताश स्वर में कहा।

"सारे दानवीर-शूरवीर दिल्ली-अयोध्या की दौड़ लगा रहे हैं, बस्ती के मंदिर को कौन पूछेगा भला?" विषय में अरुचि दिखाते हुए जयनाथ ने कहा।

"हरिहर चाचा, रामजी की मूर्ति की धुलाई-सफाई का मन न हो तो मत करो, पर यह तो देख लो यहां वाली मूर्ति में भी प्राण आ गए कि नहीं!" बिना विचार किए ही रामू के मुंह से निकल गया; किसी को भी समझ में नहीं आया कि बड़े काम में लगा हुआ रामू आखिर कहना क्या चाह रहा है।

"अरे बेटवा, हमारी मूर्तियों में भी प्राण आ जाते तो बस्ती का भी उद्धार हो जाता।" हरिहर काका ने उदास होकर कहा।

"अब मारो गोली बहस-बकवास को, मेरे घर में भगवान राम का फोटो धरा है इज्जत से, मेरे लिए वही काशी मथुरा अयोध्या है; अगर पते की

बात बता सकते हो तो बताओ, बस्ती में कोरोना के मामले कब तक थमेंगे? कल पांच अगस्त तक रामघाट का आंकड़ा पच्चीस हजार टच करने वाला है, बस्ती में ही हजार-डेढ़ हजार केस हो चले हैं..." बोलते-बोलते रामू की नजर मोबाइल स्क्रीन में जम गई; अभी-अभी आया मैसेज वह मन-ही-मन पढ़ने लगा ...सभी साथियों को सूचित करना है जेड सर ने शाम साढ़े छह बजे घर पर याद किया है। वह सोच में पड़ गया, सर को अचानक कुछ हो तो नहीं गया? सभी से माफी माँगने के अंदाज में बोलते हुए वह बाहर की ओर जाने लगा, "आज के लिए माफी चाहता हूं, मुझे अब अपनी गौ-गृह ठीक करने हैं।"

14

जेड सर आज सुबह से ही मन में उदासी महसूस कर रहे थे। कारण पकड़ में नहीं आ पा रहा था ...कोरोना? पर कोरोना तो कई महीनों से जान खाए है, भला आज अनायास उसे इतनी मायूसी क्यों दे जाएगा? अयोध्या में भूमि पूजन संपन्न हो रहा है तो होवे, उसे क्या पड़ी है खुश-नाखुश होने की, वे तो वैसे भी धर्म-कर्म, पाप-पाखंड से दूर भागते रहे हैं। कोरोना-कैबिनेट के प्रस्ताव? वो भला उसे क्यों परेशान करेगा; वह तो उन बच्चों के विजन हैं, अपने एजेंडे पर बच्चे कैसे आगे बढ़ेंगे, कितना बढ़ा पाएंगे यह सब सोचने में उनके छात्र स्वयं सक्षम हैं। फिर यह जानलेवा उदासी? जीवन में पहली बार उदासी की अंधड़-सी टूट पड़ी थी उसके मन-मस्तिष्क में। यह अखंड उदासी कहीं उसके लिए प्राणघातक न हो जाए! पांच बजते-बजते उसकी घबराहट बढ़ने लगी। कुछ समझ में ना आया तो उसने अहम से बात की, 'क्या तुम या मेरे कुछ छात्र आज मुझसे मिल सकते हो।' अहम से बात करते हुए उन्हें महसूस हुआ उसके गले से स्वर ऐसे निकल रहे हैं जैसे मृत्यु बेला में कोई बोलता है! अहम ने सेकंड का समय लिए बिना कहा, 'हमारे सभी साथी रामघाट में ही हैं, सबको संदेश भेजता हूं जल्दी आने के लिए।' अहम से बात होते ही उसका अशांत मन कितना तो शांत लगने लगा था!

"आओ-आओ, सभी आराम से आओ, यहीं छत पर आ जाओ; दुनिया में सूरज कैसे डूब रहा है देखो तो सही!" अपने गेट पर कोरोना-मंडली को आया देखकर जेड सर ने छत से ही आवाज दी। 'सूरज कैसे डूब रहा है,' से सभी को आज की चर्चा का भान होने लगा। सीढ़ी चढ़कर सभी छत पर

ही आ गए। सभी ने एक-एक करके उनके पैर छुए। उसने 'दीर्घ कार्य-लब्ध भव यशस्वी भव' उच्चारित कर आशीर्वाद दिया।

"अगस्त की गर्मी में छत काफी तपी हुई है, मैं गर्मी के दिनों में आठ-नौ बजे के बाद ही छत पर आता हूं; सादा ने अभी थोड़ी देर पहले छत को गीला कर दिया है, पर अंदर की गर्मी अब उल्टे बाहर तपिश पैदा कर रही है।" उसने वातावरण को भी वातानुकूल बनाने की खातिर कहा।

"सर, इस वक्त छत पर बैठने का कुछ निमित्त तो होगा?" सहज ने टॉपिक के अनुकूल कहा।

"प्रकट तौर पर तो आज छत से डूबते सूरज को देख रहा हूं दस-पंद्रह मिनट से, वह देखो अब तो लाल गोले का अवशेष ही बचा है!" सर ने डरावने अंदाज में कहा।

"और अप्रकट और पर?" रामू बात को पकड़ने में होशियार रहा है।

"....." सर ने सांस मात्र छोड़ी।

"सर, आप कुछ बड़ा घटित होते हुए तो नहीं देख रहे हैं!" परवेज घबरा उठा।

"दोनों ही बड़ी बातें हैं।" सर ने कहा तो उसके सिर में कंपन-सा हुआ।

"दोनों मतलब?" शायनी सर के चेहरे पर गड़ गई।

"पहला तो कोरोना-कैबिनेट के प्रस्ताव का भविष्य, दूसरा राम मंदिर का निर्माण।" बोलने के दरम्यान सर के चेहरे में हँसी थी, बोलने के बाद उदासी छा गई।

"इन दोनों का आपस में क्या संबंध है!" मंजरी भी चुप न रह पाई।

"दोनों ही भारत का भविष्य तय करेगा; तुम लोगों का सामूहिक विजन हिंदुस्तान को एक वैचारिक जंप दे सकता है तो दूसरा वाला, यानी धर्म-धाम से वैचारिक निष्क्रियता बनी रह सकती है या फिर यथावत जारी रह सकती है!" दूर आकाश में देखते हुए सर ने कहा, फिर डूब चुके सूरज से नजर हटाते हुए बोले, "पहला वाला प्रगतिशीलता का पैमाना होगा तो दूसरे वाले से जड़ता जारी रह सकती है।"

"सर, राम तो सदियों से जन-जन में घर-घर में बसे हैं; वहां राम मंदिर का भूमि पूजन हुआ है तो हमें इसे उसी कड़ी में देखना चाहिए।" शायनी भक्तिमय चेहरा लिए बोली, आगे संभलकर कहा, "बट आई वांट टू क्लेरिफाइ आल्सो दैट आई हैव नथिंग टू शे अबाउट डिमोलिशन ऑफ ओल्ड

स्ट्रक्चर व्हेदर शच एक्ट वाज राइट ओर रॉन्ग।"

"यू मिस्टर परवेज! व्हाट वुड बि योर कमेंट ऑन द वर्जन ऑफ शायनी।" सर ने टोह लेनी चाही।

"सर, बाबरी मस्जिद जमींदोज मामले में तीस साल की उम्र तक मुंह बंद रखने की कसम खाई है मैंने, सो अभी मुंह नहीं खोलूंगा; वैसे यदि इस विषय में तर्कपूर्ण बात रखूं तो ये लोग मुझे मुल्क का दुश्मन के तमगे से नवाजेंगे; और न जाने जन्नत-जहन्नम कहां-कहां की सैर करा देंगे!" अपना मत रखने से परवेज ने कन्नी काट ली।

"मैं कह रहा हूं हमारा देश वैचारिक रूप से इतना परिपक्व कब होगा कि जब किसी धर्म में सुधार की बात उठे तो दूसरे धर्म के लोग तटस्थ रहें, न कि नाचें-गाएं!" सहज ने अपनी चुप्पी तोड़ते हुए कहा, आगे तर्कपूर्ण होकर बोला, "यहां तो उल्टा तमाशा चल रहा है, परवेज की जमात के बारे में सरकार कोई भी कायदे-कानून बनाती है तो हमारे समाज के लोग उछल-कूद मचाने लगते हैं, ढोल पीटते हुए! यह कौन-सी संस्कृति का जन्म हो रहा है हिंदुस्तान में?"

"परवेज की तरफ से बात मैं रखता हूं; जिस जगह पर आज भूमि पूजन हुआ है वहां पर भगवान राम का जन्म होने के क्या प्रमाण हैं? हम राम का जन्म त्रेता युग में मानते हैं, तो दसियों हजार-लाख साल पुराने किसी मंदिर या घर या वसाहत का कोई अवशेष अयोध्या तो क्या दुनिया के किसी भी हिस्से में नहीं मिला है आज तक?" अहम अगुवा बनते हुए बोलता रहा "यदि उस स्थल के नीचे मिले पुरातात्विक साक्ष्य की बात करें तो निर्माण ग्यारहवीं से चौदहवीं सदी के बीच के हैं; चलो मान लो पहली-दूसरी सदी के भी हों तो तर्क करने वाली बात है जिन लोगों ने वहां जैन मंदिर या राम मंदिर बनाया तो क्या उन्हें पता था कि दसियों हजार साल पहले तीस बाय तीस के ठीक उसी भूखंड में राम जी का जन्म हुआ था?" बोलकर उसने पश्चिम दिशा में अंधकारमय हो रही लालिमा से मुंह फेर लिया।

"मैं बताता हूं भगवान राम का जन्म कहां हुआ था।" रामू किसी बल्ब जैसा भुकभुका उठा।

"कहां हुआ था!" मंजरी चिंतित हो उठी, न जाने कौन-सा पंगा लेने वाला है।

"जहां आज भूमि पूजन हुआ है वहां नहीं, वहां से चालीस फीट उत्तर!"

नाप-तोल कर उंगली से संकेत करते हुए रामू ने कहा।

"जन्म के समय तुम अयोध्या के अंत:पुर में दासी थे क्या!" परवेज ने टोका, प्रश्न को अपने कसम के करीब का जानकर।

"सर, आई स्वेर," रामू ने कंठ का उभार पकड़कर जेड सर की ओर कसम खाते हुए बोलता गया, "कल रात को मेरे स्वप्न में भगवान राम के समय के एक तपस्वी दिखे, बोलने लगे, तुम तो राम नाम वाले हो तुमसे क्या छुपाना, जिस जगह पर तुम लोग भूमि पूजन कर रहे हो वह सही नहीं है; मैंने कहा सही जगह कहां है तो वे बोले वहां से चालीस फीट उत्तर!" अब वह छाती पर हाथ रखकर बोलने लगा, "फिर पीछे खड़े प्रभु राम मुझसे बोले दसियों साल से मैं चुप था पर आज बोल रहा हूं। मेरा मंदिर बनाना है तो सही जगह पर बनाओ गलत जगह पर मत बनाओ; बोलकर तपस्वी के साथ प्रभु राम भी चले गए।" आगे बोलते हुए रामू की आंखें छलछला आईं, "भोर वाले स्वप्न में मैंने देखा भूमि पूजन चालू है और प्रभु रामभूमि पूजन स्थल से चालीस फुट उत्तर में आसमान से प्रकट होकर जमीन के नीचे अंतर्धान हो गए हैं! इसके क्या मायने हैं, यह तो कोई शंकराचार्य-ज्योतिषाचार्य ही बता सकते हैं।"

"रामू, तुम जो कह रहे हो वह वैचारिक और मानसिक रूप से परिपक्व भारत में ही विमर्श का एक सकारात्मक प्रसंग हो सकता है।" रामू को चेताने के अंदाज में परवेज बोलता गया, "पर ऐसे माहौल में ऐसी बातें करना अपने आप को जोखिम में डालना है!"

"तुम्हारी सलाह बिल्कुल जायज है परवेज।" काफी देर से शांत-गंभीर बैठे सर ने कहा।

"सर एक बात मेरी समझ में नहीं आई, आज भूमि पूजन हुआ ही क्यों? पहले तो खबर आई थी कि साल बीस में शुभ मुहूर्त है ही नहीं!" शायनी आश्चर्य पीड़ित मुद्रा में बोलती रही, "फिर अचानक खबर आई पांच अगस्त को जो मुहूर्त है वह इस सदी का सबसे शुभ मुहूर्त है! ऐसे मुहूर्त ड्रॉ से निकाले जाते हैं क्या?"

"एक बात मेरी समझ में भी नहीं आ रही है, यह काम अभी ही होना क्यों जरूरी था?" मंजूरी मुखर होकर बोलने लगी, "कोरोना की विदाई के बाद भूमि पूजन होता तो मन के अंदर और घर के बाहर उमंग-उल्लास का मेला-सा होता!"

"मुझे तो लग रहा है इन कामों से जुड़े लोगों को कुछ बुरा-सा आभास हो रहा है।" सहज ने गणितीय भाव-भाषा में कहा।

"क्या?"

"यही कि काल-खंड को किसने देखा है!" सहज ऐसे बोला जैसे दुनिया तो बस अब विलीन होने वाली हो।

"तुम लोगों द्वारा भूमि पूजन वाला प्रसंग छेड़ने से अब मुझे सुबह से चली आ रही व्याकुलता पकड़ में आने लगी है!" बोलकर सर छत से नीचे उतरने लगे; पीछे से सभी एक कतार में।

बाहर खुले बरामदे में पंखे के नीचे बैठते ही बोले, "पूरे प्रकरण में एक संवैधानिक सत्य ने मुझे परेशान कर रखा है; संविधान की प्रस्तावना में भारत एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य है..."

"जी सर, ऐसा ही कहा गया है" मनोज ने मुँह खोला।

"कहा नहीं गया है गुरु! प्रस्तावना में ऐसा ही है।" परवेज चिढ़ गया।

"धर्मनिरपेक्ष का मतलब क्या होता है?" सर बोलते गए, "यही न कि सरकार धर्म के मामलों, धार्मिक कार्यकलापों से निरपेक्ष रहेगी, यानी सरकार किसी धर्म विशेष के लिए खुद ही कार्य नहीं करने लगेगी!"

"फिर तो यह संवैधानिक बलात्कार है!" शायनी विज्ञान की भाषा छोड़ कर बोली।

"सुबह से ही मुझे घबराहट हो रही है, कारण पकड़ में नहीं आ रहा था तो तुम लोगों को कष्ट दिया; यह संवैधानिक कदाचार ही मेरी अकुलाहट की जड़ है, इस कृत्य से संविधान के ऊपर धर्म की मोटी चादर बिछ जाएगी।" बोलकर सर चुप हो गए; मौन भय में बदलने लगा तो बोले, "क्या अच्छा होता सर्व-धर्म-समभाव को परिपक्व करते हुए हम आगामी सदी में सार्वजनिक तौर पर धर्मरहित समाज की दिशा में कदम बढ़ाते; यानी धर्म सिर्फ घर के अंदर की चीज होती, बाहर सार्वजनिक स्वरूप नहीं प्राप्त करता! आजादी की लड़ाई के दौरान उस दिशा में हम थोड़ा-बहुत जो भी चल पाए थे, अब उन पदचिन्हों को भी आने वाले समय में हम मिटते हुए देखेंगे।"

"सर एक बात मैं बोलना चाहता हूं; तुम लोग माफ करना, यह मेरे बोलने का क्षेत्र नहीं है, फिर भी; मैं भी भारत माँ का लाल हूं, बचपन से आज तक आप लोगों के साथ ही रहा हूं, दिन-रात," बोलकर परवेज चुप हो गया, कि आगे बोलूं या ना बोलूं; सभी की ओर देखा, साहस कर बोला, "मुझे पता

है जब आप कोई शुभ कार्य करते हैं, चाहे वह गृह निर्माण का भूमि पूजन हो या गृह प्रवेश या किसी बड़े मंदिर में पूजन करना हो, तो आप हमेशा अपनी धर्म पत्नी के साथ ही पूजा में बैठते हैं, लेकिन आज अयोध्या में जो हुआ मैं दंग रह गया।" बोलकर उसने दांत तले जीभ दबा ली, जैसे दूसरे धर्म की अनहोनी से भी वह विचलित हो उठा हो, फिर कहा, "मैंने यह भी सुना है कि भगवान राम अयोध्या में जब यज्ञ कर रहे थे तो माँ सीता के नहीं होने पर स्वर्ण सीता को बगल में बिठाया था, उनके स्थान पर!"

"परवेज बिल्कुल सही कह रहा है।" अहम जोर देकर बोला, फिर उदाहरण के साथ समझाने लगा, "उपनिषद् में कहा गया है ...कृयाणाम खलु धर्मयानाम सत्पत्नयो मूलसाधनाम...यानी धर्मपत्नी हर प्रकार के सामाजिक और कल्याणकारी कार्यों का मूल है। रामायण और महाभारत के कई प्रसंगों में भी पत्नी सह-धर्मकारिनी के रूप में उद्धृत है। एक अन्य धर्मग्रंथ में भी कहा गया है "...इयान कोर्वसी यावद आयुस त्व सह-धर्म-कारिनी भवंतु!" बोलकर अहम ने आँखें बंद कर लीं, जैसे वेद-उपनिषद-रामायण-महाभारत के रचयिता से आत्म-संवाद कर रहा हो; आँखें खोलकर चेताने वाली मुद्रा में बोला, "यदि वेद-उपनिषद में कही गई बातों में सच्चाई है तब तो सिर्फ पुरुष मात्र द्वारा महत्तापूर्ण मंदिर का भूमिपूजन होना आने वाले दशकों-सदियों में अनिष्टकारी हो सकता है!" फिर व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा, "यदि अपने कृत्य को जायज ठहराना हो तब यह कहते भी देर नहीं लगेगी कि वेद-उपनिषद तो बीते दिनों की बात है, अब उसे भूलो और आगे बढ़ते चलो।"

"अहम की बातें काफी तर्कपूर्ण हैं! मुझे तो दिखने लगा है अहम द्वारा उठाया गया प्रश्न एक बड़ी ऐतिहासिक सच्चाई के रूप में दर्ज रहेगा, सदियों तक!" आँखें बंद करके सर ने कहा, जैसे सदियों के समय को देख पा रहे हों; पलभर बाद आँखें खोलकर बोले, आशीष भरी मुस्कान के साथ, "चलो आज अच्छी चर्चा हो गई, तुम सभी के आने से और स्वस्थपरक तर्क-वितर्क से मेरी घबराहट दूर हो गई, इसके लिए तुम सभी का धन्यवाद मेरे प्यारे बच्चों; सादा चाय और पकौड़ी ले आया है, तो सेवन करके मुझे उपकृत करें!" चाय-पकौड़े के बीच सर को कुछ याद-सा आया, अहम से बोले, "तुम्हें तो मैं दर्शनशास्त्र का शंकराचार्य, नीत्से, हीगल, कांट सब कुछ मानता हूं; यह जो राम मंदिर बनने जा रहा है उसके बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? आने वाली सदियों में उसका क्या होगा!"

"सर, किसी भी धर्म के सर्व प्रमुख देवता के पूज्य स्थल के बारे में कोई भी भविष्यवाणी करने से पूर्व मुझे दुनिया के सभी बड़े दार्शनिकों के दर्शन का विशद अध्ययन करना पड़ेगा या फिर हमें इंतजार ही करना पड़ेगा।" अहम ने आंखें छोटी करके कहा, आगे बोला, "मानव और मानव समाज, धर्म और मानव जीवन में उनकी भूमिका के सटीक विश्लेषण के उपरांत ही हम आने वाली सदियों में रामजन्म भूमि की स्थिति व पारिस्थितिकी का आकलन कर पाएंगे; तो मैं धीरे-धीरे महात्मा बुद्ध, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू से शुरू करते हुए कांट, सार्त्र, डेविड ह्यूम, हिगल, मार्क्स, नीत्से, शंकराचार्य, विवेकानंद और महात्मा गांधी तक के दर्शन की गहराई में एक बार फिर से उतरता हूं, राम जन्मभूमि के एंगल से; चाहे राम जन्मभूमि हो या कोई भी भूमि इन सभी दर्शन के दायरे से अलग अस्तित्व नहीं हो सकता है न, वह भी तब जब खुद प्रभु राम पर दर्शन की कोई शाखा ही न हो!"

"आई होप यू मस्ट बि एबल टू फोरकास्ट करेक्टली अबाउट राम जन्मभूमि।" बरामदे से नीचे उतरते हुए सर ने सभी की ओर आशीर्वाद मुद्रा में हाथ उठाए। अचानक सामने सड़क पर से गोली चलने की आवाज आई; उनमें से कोई भी समझ नहीं पाया, निशाने पर कौन था या निशाना किधर था।

लंबे लॉकडाउन के महीनों बाद आज रामघाट तिरे मानस पाठ पुनः जाग्रत हो उठा ...होइ बुद्धि जौं परम सयानी, तिन्ह तन चितव न अनहित जानी...

15

उदय चाहता था कोरोना त्रासदी में भी 15 अगस्त को हरिजन बस्ती वाले चबूतरे में झंडात्तोलन अटल रहे; अबकी बार किसी नेता के कर कमलों द्वारा नहीं किसी जीवट आत्मा के साधारण हाथ से ही। मंजरी ने जेड सर का सुझाव दिया। कोरोना-मंडली के आग्रह को सर टाल न सके; वैसे कोरोना संकट के दौरान बस्ती की स्थिति से वे रूबरू होना भी चाहते थे। चबूतरे पर झंडात्तोलन का संक्षिप्त समारोह रखा था उदय ने; अपने काडर के चुनिंदा युवकों के अलावा सिर्फ कोरोना-मंडली को ही आने का आमंत्रण था। तिरंगा ऊपर चढ़ाते हुए सर को गांधीजी काफी याद आए; इस दौर के राजनीतिज्ञों ने उनके मन को कड़वाहट से भर दिया, '...सभी वाचाल! सिर्फ अपनी गाथा ही गाते रहते हैं!'

खड़े-खड़े नींबू पानी पीकर वह बस्ती की ओर निकल पड़े, अपने प्रिय

शिष्यों के साथ। वे पहले भी बस्ती में बराबर आते रहे हैं; कोरोना काल में दूसरी बार उनका इधर आना हुआ था। बस्ती की कई बातें उन्हें लुभाती थीं; उनके हिसाब से बस्ती की जान है इसकी जीवंतता और इसकी अक्षय विरासत है मन की निर्मलता व हृदय की निश्छलता! सुभाष मार्ग से होते हुए वह ज्योति बा गली में हो लिए, झोपड़ा दर झोपड़ा झांकते हुए। घरों के सामने खड़े लोग बड़े आदर से सर के सामने हाथ जोड़ देते थे; लगभग हर घर के युवा या बड़े को वे अपने गांधी स्कूल के गुरुजी के रूप में याद हैं! औरत, मर्द, बच्चे हर चेहरे में खुशियों की लड़ियां देखकर गद्‌गद हो उठते; उन्हें पता था कोरोना काल में कई घरों में ठीक से चूल्हे भी नहीं जल पा रहे हैं, फिर भी बस्ती वालों के अंदर और बाहर जीवन के चिह्न जीवंत दिखते हैं। आज भीमरवा तो दिन में ही गाली देने के लहजे में गरजने लगा था, भाषण सा देते हुए... जनता की बारी बाद में नेता की पहले, देश की पारी पीछे पार्टी की पहले, सत्तर साल की आजादी सौ करोड़ की गुलामी...

पटेल मार्ग के मोड़ पर पहुँचते ही सर ने मंडली को लौट जाने को कहा; काफी दिनों से उन्होंने रामघाट में चहलकदमी नहीं की थी, बस्ती से बाहर आकर वे अपने घर की ओर पैदल ही चल पड़े। पैदल चलते उन्हें गांधीजी बड़े याद आए, '..कितना तो पैदल चला करता था बंदा! गरीबों-शोषितों -वंचितों की तकलीफों से कितना द्रवित हो उठते थे!' अनायास मन में आया मित्रों-पड़ोसियों से गांधीजी के बारे में जी भरकर चर्चा करने के बाद ही घर चला जाए। सुभाष चौक से वर्मा जी वाली गली की तरफ मुड़ लिए। उसका घर पहले पड़ता है, पहले उसके साथ हाल समाचार गपशप हो जाए; अब तक तो वह आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी में पारंगत हो गए होंगे!

किलेनुमा चहारदीवारी का बादशाही दरवाजा नए युवा नौकर ने खोला। उन्हें ना पहचाना; मालिकाना अंदाज में पूछा, "किनसे मिलना है?"

"वर्मा जी से!" सर ने हक जताते हुए-सा जवाब दिया।

"उनकी तबीयत बिगड़ी पड़ी है।" नौकर ने टके-सा जवाब दिया।

"अरे, क्या हो गया? कब हुआ!" सर की अकुलाहट भांपकर वह समझ गया मालिक के मिलने वाले हैं; अंदर आने देने के लिए छोटा ग्रिल फैला दिया। बिना किसी हिचक के वे बरामदे की ओर बढ़ चले। सामने से आती श्रीमती वर्मा हाथ जोड़कर उन्हें अंदर ले गईं। "वर्मा जी नहीं दिख रहे हैं!" वे हठात नहीं पूछना चाहते थे कि क्या बीमारी आन पड़ी। "अंदर है।" श्रीमती

वर्मा बुझी आवाज में बोलीं। थोड़ी देर की चुप्पी के बाद उसी स्वर में बोलीं, "तब तक आप बैठिए, आपके लिए चाय-बिस्किट भिजवाती हूं।"

"जी भाभीजी धन्यवाद, वैसे भी मैं बस्ती का राउंड लेकर पैदल ही चला आ रहा हूं, चाय की सख्त जरूरत है मुझे इस वक्त।" शुक्रिया अदा करने के हाव-भाव से कहा।

वे बड़े आराम से चाय पीते रहे, इंतजार में कि शायद अंदर से वर्माजी चाय का प्याला थामे ही बाहर आएं! उसकी चाय खत्म हो गई; अब जीभ से चाय का स्वाद भी विस्मृत होने लगा, वर्माजी नहीं आए। दस-पंद्रह मिनट के बाद भाभीजी आईं, सलवार-समीज की जगह साड़ी में सजकर।

"वह तो अभी तक वॉश रूम में बैठे हैं, निकलें तभी तो बोलूं; वैसे मैंने लाउंज में आपके नाम की आवाज तो दी थी।" पहले वाली कुर्सी के बजाय बेंत वाली कुर्सी में साड़ी सहेजकर बैठती हुई बोलीं। प्रतीक्षा करते रहना सर को परेशान करने लगा; उनके कान अंदर की ओर ही लगे रहे, कब आने की आहट हो!

अं-अं-आं-आं-एं-एं-ईं-ईं...उनके कानों में अजीब ढंग की सिसकारी-सांसझारी आने लगी; उन्हें याद आया कभी-कभार कब्जियत होने पर टॉयलेट के समय ऐसी आवाज निकल पड़ती है। अब स्पष्ट स्वर-तरंग वर्माजी के कंठ से निकली जान पड़ने लगी; श्रीमती वर्मा की आंखें झुक गईं। चुप्पी को चालू रहने देना श्रीमती वर्मा को शिष्टाचार के खिलाफ जान पड़ा; कुछ भी बोलने के लिए बोल पड़ी, "भाई साहब क्या बताएं, आजकल घंटों टॉयलेट में बैठे रहते हैं।"

"....." सर के चेहरे में बड़ा-सा प्रश्न तैरने लगा।

"अरे क्या कहें, वही कब्जियत!" माथा पकड़ते हुए वह बोलीं।

"अप्रैल वाले लॉकडाउन में आया था तो देखा था कि इसने तो जड़ी-बूटी का साम्राज्य फैला रखा है; यह कब्जियत कहां से आ टपका!" सर घोर आश्चर्य में पड़ गए।

"जड़ी-बूटी का तो लाख-लाख शुक्रिया, कोरोना से तो बच गए; अब ये कब्जियत न जाने किधर से इनके पीछे पड़ा है, मुझे तो कभी-कभी शक होता है कहीं इनकी अंतड़ी का मसल वगैरह मर तो नहीं गया है! और शायद इसलिए टॉयलेट..." आगे उसे चुप हो जाना पड़ा। सर खुद जीव विज्ञान के शिक्षक रहे थे; भोजन नली से लेकर ड्यूडोनम, अमाशय, बड़ी आंत, छोटी आंत, मलद्वार तक का एनाटॉमी और फिजियोलॉजी भला इस संभ्रांत महिला को कैसे समझाते।

"चिंता की कोई बात नहीं है, मोशन ठीक होने में समय लगेगा।" इतना बोलकर उसने जाने की इजाजत चाही। उसके अहाते से निकलते हुए उनके अंदर से आवाज आई '...अति सर्वत्र वर्जते।'

वर्मा वाली गली के मोड़ पर आते ही सर को डॉ. रामाशीष चंद्रा की सुध आई; महापुरुषों के बारे में उसके ख्यालात सकारात्मक तो होते ही हैं, कोरोना वायरस के बारे में भी कुछ नया क्लु मिल सकता है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ है कि महीनों तक उसके घर न गए हों! सोचते-सोचते वे उसकी तरफ चल पड़े। उन्हें ताज्जुब हुआ ...मेन गेट आज पूरा खुला हुआ है; घर के आगे कई कारें खड़ी हैं! क्या डॉक्टर साहब कोरोना पर कोई सेमिनार करवा रहे हैं? वह बैठक खाने की तरफ बढ़ चले। अरे, जिस बैठक खाने में बीसियों बार बैठ कर गप्पें हांक चुके हैं वहां तो छोटा-मोटा अस्पताल खुल गया है! आंखों को भाने वाली लंबी-छरहरी रिसेप्शनिस्ट उसे पहचान गई, उसने सर को इज्जत के साथ बिठाया। थोड़ी ही देर में डॉ. चंद्रा दाखिल हुए, पीछे से ही आवाज दी, "हाय सर! गुड मॉर्निंग, गुड आफ्टरनून; आज अचानक! इतने दिनों बाद?"

"हां बस्ती से झंडात्तोलन करके आ रहा था, सोचा आज के पावन दिन मैं जरा आपके साथ बैठकर याद उन्हें तो कर लूं जिन्होंने जिंदगी कुर्बान कर दी थी तिरंगे के लिए!" बोलते-बोलते सर कहीं खो गए जान पड़े।

"यस-यस, टुडे इज द ग्रेट डे, बट यहां के बजाय अंदर लाउंज में क्यों न बैठ लें?" बोलकर वे सर को लेकर अंदर की ओर बढ़ चले।

"आपने अपना क्लीनिक घर पर ही शिफ्ट कर दिया है क्या!" कॉरिडोर में बढ़ते हुए सर ने जिज्ञासा प्रकट की।

"नहीं तो? अरे सर, वो कोरोना के हार्ड टाइम में क्लीनिक खोलना खतरे से खाली नहीं था, मरीजों को घर पर देखना शुरू करना पड़ा था, अप्रैल से ही; एक बार पार्ट टाइम ओपीडी यहां खुल गया तो बंद ही नहीं हुआ है।" डॉक्टर ने बेफिक्री से कहा।

"बाकी लोग कैसे हैं, मेरा स्टूडेंट का क्या चल रहा है आजकल!" बैठते ही सर ने हालचाल पूछा।

"हां बेटा का तो अभी तक ऑनलाइन क्लासेस ही चल रहा है; पर मुझे लग रहा है यह ऑनलाइन क्लासेस बच्चों को मेंटली मजबूत नहीं बना पाएंगे!" डॉक्टर ने होंठों को एक-दूसरे से दबाते हुए कहा।

"पापा आई हैव टोल्ड यू सो मेनी टाइम!" फैस शील्ड और मास्क लगाए

एक नौजवान गरज उठा, ड्राइंग रूम का खुला दरवाजा जोर से बंद करते हुए; फिर सर के पास आकर सैनिटाइजर की शीशी बढ़ाते हुए बोला, "प्लीज यूज सैनिटाइजर फर्स्ट टू प्रोटेक्ट योरसेल्फ एंड अस टू।" उस नौजवान की दाढ़ी बढ़ी हुई थी; नजदीक से देखने पर पहचान गए, अरे ये तो डॉक्टर साहब का पुत्र है! युवा पीढ़ी से तर्क-वितर्क के बजाय कभी-कभी उनकी बात मान लेनी चाहिए; उसने अपनी हथेली में सैनिटाइजर की धार टपकने दी, फिर दोनों हथेलियों में ऊपर-नीचे मसल दिया। ऊपरी तल में जाने के लिए सीढ़ी पर बढ़ते हुए उसकी आदेशात्मक आवाज नीचे आई, "डोंट फॉरगेट टु वाश योर हैंड।" उसके चिल्लाने की आवाज सुनकर उसकी माँ दौड़ी आईं। सर को देखकर शरमा गई; अपने को सामान्य स्थिति में लाकर हाथ जोड़ती हुई बोलीं, "सर प्लीज बच्चों का बुरा मत मानिएगा, जैसे-जैसे देश में कोरोना का आंकड़ा बढ़ रहा है उसके अंदर कोरोना का डर दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा है; दिन में दस बार हाथ धोता है, सैनिटाइजर तो हर पांच-दस मिनट में मलते रहता है, घर का दरवाजा खिड़की कभी खुला नहीं रहने देता है, घर आनेवाले को जबरदस्ती हाथ धुलवाता है; वह तो आपको पहचान लिया कि पुराने सर हैं, इसलिए सैनिटाइजर पर ही मान गया, वरना आपको बेसिन तक ले जाता!" फिर माथा पकड़ते हुए बोलीं, "जान-पहचान नाते-रिश्तेदार का भी लिहाज नहीं करता है, किसी भी आदमी को देखकर इसे लगता है कि साथ में कोरोना लेकर आया है।" बोलते-बोलते मिसेज चंद्रा रुआंसा हो गईं।

"चिंता की कोई बात नहीं है, धीरे-धीरे सब कुछ वापस पटरी पर आ जाएगा" सर के पास सांत्वना देने के लिए कुछ न था। नम हो चली आंखों को दुपट्टे से पोंछती हुई वह किचन की ओर वे चली गईं।

"जेड सर, आई एम वेरी अपसेट ड्युटु दिस बॉय; इवन बिंग अ डॉक्टर आई कुड नॉट अंडरस्टैंड हाउ टु गेट हिम रिकवर्ड?" बेबस बाप के विदेशज शब्दों वाले उद्‌गार थे।

"आपने किसी सेक्याट्रिस्ट साईकोलॉजिस्ट को दिखाया कि नहीं!"

"अरे सर, यह पूछिए किस-किस से नहीं दिखाया!" बोलकर उन्होंने आंखें बंद कर लीं जैसे हर रास्ते बंद हो चुके हों, बोलते रहे, "इन फैक्ट ही इज कॉट विद कोरोना सिंड्रोम; इससे पीड़ित व्यक्ति को हर पल डर सताता है कि कोरोना वायरस उसके पास अब आया, तब आया!" अब उनकी आंखें खुलीं; पथराई सी आँखें; लगा सब कुछ दिखता हुआ भी उसे कुछ भी न दिखता हो!

मिसेज कब चाय रख गई उसने कब पी ली, पता ही न चला। उनकी चेतना तब जागी जब डॉक्टर उन्हें गेट से बाहर तक छोड़ने आए, और सड़क में तेज गति से आ-जा रहे दुपहिया से बचने की जरूरत जान पड़ी।

वह वर्माजी के घर हो लिए, डॉक्टर से मिल लिए; गांधीजी जैसे स्वतंत्रता सेनानी पर चर्चा करके मन हल्का करने के बजाय मन विषाद से भर गया। उन्हें लगने लगा किसी से भी गांधीजी का जिक्र किए बगैर आज का दिन उसके लिए अंधकारमय ही रह जाएगा। गांधीजी की चर्चा किसके साथ हो सकती है? सोचते हुए वह चलते रहे; अपने घर वाली सड़क के मोड़ पर आते ही उसके दिमाग में नाम उछला, '...एमएलए साहब, डॉ. रामदरश मिश्र? ...मानसरोवर लेन सामने ही तो है!' तेज कदमों से वह एमएलए साहब की हवेली की तरफ बढ़ चले, उनके बहुमंजिले भवन पर आंखें टिकाए। भवन के ऊपर लहरा रहा विशाल तिरंगा देखकर वह गद्‌गद हो उठे; गांधीजी के बारे में स्वस्थपरक चर्चा करने के लिए एमएलए साहब से बढ़कर दूसरा कौन सुपात्र हो सकता है!

उनके मुख्य द्वार के पास आकर वे ठिठक गए; विशाल अहाते की चहारदीवारी अब काफी ऊंची हो गई थी, अविश्वसनीय रूप से। पहले भी दस-बारह फीट से कम न थी, अब तो अठारह-बीस फीट ऊंची जान पड़ रही थी! पहले गेट में साधारण चौकीदार दिखता था; अब तगड़ा-सा रिटायर्ड फौजी तैनात था, जैसे इसकी मरोड़ी हुई मूँछ से ही कोरोना दूर भाग जाता होगा। सर ने फौजी को अपना नाम बताया। उसने लॉन में बैठे साहब की तरफ ऊँची आवाज लगाई, "राम-राम साहब! कोई मिस्टर जेट पधारे हैं; जय हिंद साहब।" द्वार खोलने का संकेत हुआ। वह अहाते के अंदर दाखिल हुए। एमएलए साहब लॉन वाले एसी रिजॉर्ट में लेटे थे, डबल साइज के मास्क से पूरा चेहरा ढके हुए; इससे पहले वे अप्रैल माह में इनसे मिलकर गए थे, तब पीपीई पहनकर ड्राइंग रूम में मिलने पधारे थे। सर के आते ही उठ बैठे, बोले, "आइए-आइए, पधारिए! मैं आपको याद ही करने वाला था... किस बात के लिए? धत तरे की, याददाश्त से निकल गई!"

"मेरे लायक कोई बात हो तो चौबीस घंटे हाजिर हूं" सर ने विनम्रता दिखाई।

"अरे हां याद आया," उसने चुटकी बजाते हुए कहा "वो आपके पढ़ाए बच्चे हैं न कोरोना-मंडली वाले! जरा उन्हें समझाइए संभलकर रहें, ऊटपटाँग हरकतें मत किया करें।"

"जरूर-जरूर; यह तो उम्र की शैतानी है, शौक पूरा हो जाएगा तो शांत भी

हो जाएगा।" सर ने बात का मान रख लिया; वार्ता जारी रखने के ख्याल से आगे बोले, "लगता है यह चहारदीवारी आपने और ऊंची कर ली है!"

"अरे मेरा बेटा है न, अमेरिका से जो लौट आया है!" गर्वोन्नत ग्रीवा लिए वे बोलते गए, "उसी ने और ऊंची करवा दी; बड़े पते की बात बताई उसने, कोरोना हवा में बीस फीट की ऊंचाई तक छलांग लगा सकता है!"

"हां, मैंने कई बार उसे देखा है; वह तो दुनिया का सबसे हँसमुख लड़का जान पड़ता है मुझे; कहां है आजकल!" सर ने अपनत्व जताते हुए कहा।

"अरे क्या बताएं, मैं तो अपनी राजनीतिक विरासत धीरे-धीरे उसे सौंपना चाहता हूं; उसकी हँसी में वह जादू था कि पूछिए मत, दुनिया उससे सम्मोहित हुए बगैर रह नहीं सकती थी!" बोलते-बोलते उसकी आवाज गुम-सी होती गई, जैसे सामने अंधेरा आ टपका हो।

"था! मतलब?" सर तो जैसे किसी बीहड़ में खो गए।

"राजनीतिक जमीन से रूबरू कराने की खातिर मई महीने में मैं उसे बस्ती एरिया में ले गया था, भोजन के पैकेट वितरण का कार्यक्रम था।" इतना बोल कर उसने आंखें बड़ी कर लीं जैसे आंखें अभी के अभी कटोरे से बाहर कर देना चाहते हों, "बस्ती के फटेहाल लोगों को कोरोना के खतरे से बेपरवाह मस्ती के आलम में झूमता देखकर उसे तो जैसे शॉक-सा लग गया! तब से शॉक में ही है; उसकी हँसी तो जैसे सात समंदर पार अमेरिका में कहीं गुम हो गई है।" बोलकर उसने सर के सामने मुंह आगे कर लिया, जैसे उसके बेटे का उपचार सर के पास हो।

"बट ऐसा क्यों? शॉक किस बात का?" सर उधेड़बुन में पड़ते गए।

"वह तो कोई मनोवैज्ञानिक ही बता सकते हैं; दरअसल कोरोना पीरियड में इसने पूरे घर को एंटी कोरोना पैलेस में बदल डाला था, सुबह से शाम तक जैसे कोरोना की पहरेदारी में लगा रहता था; उस दिन बस्ती में भूखे-नंगे लोगों को कोरोना से बेखौफ आनंदलीन देखा!" बोलकर एमएलए साहब के मुंह में तालू जिह्वा से चिपका रह गया, तालू से जिह्वा को बलपूर्वक आजाद करते हुए कहा, "तभी से उसके मन में गांठ पड़ गई है, इस तरह से साधनसंपन्न होने के बावजूद हम लोग कोरोना के आतंक में जी रहे हैं और एक वे लोग हैं जो फाकाकशी की जिंदगी जीते हुए भी कोरोना पर विजय पताका फहरता हुआ मजे से जी रहे हैं!"

"गरीबों की बस्ती में खुश रहने के सिवाय दूसरा कुछ बचा ही क्या है।"

सर के मुंह से यूं ही निकल गया।

"लेकिन मिस्टर जेड इस तुलनात्मक द्वंद्व से तो मेरे पुत्र की जिंदगी तबाह हुई जा रही है न?" उसने समर्पण करते हुए कहा, लगा सामने किसी बड़े गढ्ढे में गिरनेवाले हों।

"आप अपने को मजबूत रखें तभी तो सुपुत्र को संभाल पाएंगे," सर ने सहारा देना चाहा।

"प्रभु राम मुझे किसी का सहारा बनने लायक छोड़ें तभी तो; मैं भी तो..." बोलते हुए उनकी आंखें झुक गईं, आगे बोल न पाए।

"क्यों? आप तो अभी तंदुरुस्त और जवां-जवां सा हैं, ऊपर से हर तरह से सक्षम भी हैं!" सर ने कसीदे गढ़ने की शैली में कहा।

"अरे जेड सर किस जमाने की बात कर रहे हो! एक बड़ी खराब बीमारी से मेरा संघर्ष शुरू हो गया है, सभी को बताई भी नहीं जा सकती है।" बोलकर वह शरमाने जैसे हुए।

"....." सर के लिए अबूझ पहेली थी; कुछ बोल न पाए, आंखों से विस्मय की धार-सी फूट पड़ी।

"आप तो सभी के गुरु ठहरे, आपसे क्या छुपाना; आपसे शेयर करने से हो न हो कोई बेहतर विकल्प ही निकल आए," सर की तरफ झुकते हुए वे पलकें नीची करके बोलने लगे, "दरअसल इस कोरोना पीरियड में मेरा पुराना पाइल्स फिर से निकल आया है, वॉशरूम में बड़ी तकलीफ होती है; अंग्रेजी वाले डॉक्टर लोग तो पहले से ही फेल हो चुके हैं, अब इस कोरोना काल में जाऊं तो कहां जाऊं? किसी ढंग के जड़ी-बूटी वाले के बारे में पता चले तब तो।"

"ये तो जितना पुराना होता जाएगा बीमारी का मर्ज उतना बढ़ता जाएगा; मेरे हिसाब से तो ऑपरेट ही करवाना पड़ेगा।" सर ने सामान्य ज्ञान भर बताया।

"अरे भाई साहब, एक बार ऑपरेशन तो करवा चुका हूं दो साल पहले; कोरोना टाइम में न जाने दोबारा कहां से निकल आया! अभी पंद्रह दिन से तो इतना तकलीफ दे रहा है कि पुछो मत।" इतना बोलकर वह अंदर जाने के लिए उठ खड़े हुए, "ठीक है मास्टर साहब, यदि किसी ढंग के जड़ी-बूटी वाले के बारे में पता चले तो बताना।" सर भी चलते बने; पाइल्स बाथरूम पर बात करने से अच्छा है घर का ही रास्ता नाप लें। मानसरोवर लेने में डग भरते हुए भी सोचने लगे, '...चले थे गांधीजी के दर्शन पर चर्चा करने यहां तो आधुनिक गांधियों की गंध फैली हुई है...'

घरवाले कॉर्नर पर आते ही शर्मा ठेकेदार की ऊंची बिल्डिंग दिख गई; मन में ख्याल आया '...दीप तले अंधेरा! शर्मा जी सबसे नजदीकी पड़ोसी हैं, लॉकडाउन के दिनों में भले ही दुबारा न जा पाए हों, अनलॉक में भी तो उसकी सुध न ली? वैसे तो वह हैं ठेकेदार, पर भारतीय इतिहास पर बात चले तो किसी पर भी भारी पड़ते हैं! उसके घर पर जाने से वहां से अपने घर के पीछे वाले दरवाजे खिड़कियों का भी मुआयना हो जाएगा, कहीं बरसात में कोई टूट-फूट चटक-फटक तो नहीं हुई है...' सोचते-सोचते वह घर के पीछे वाली छोटी गली में पहुंच चुके थे, शर्माजी के घर तक। शर्माजी के पीछे वाले गेट पर नजर पड़ी तो आंखों पर विश्वास न हुआ! गेट के बाहर गली में आटे की फटी बोरियां यहां-वहां बिखरी पड़ी थीं, जैसे नगर निगम वाले गली में मन लगाकर चूने का छिड़काव कर गए हों। नाना प्रकार के दाल छितरे पड़े थे, रेंगते कीड़े को अभय आश्रय दिए हुए। बड़ी-बड़ी चार बोरियां अपनी पूरी छाती फैलाए औंधे पड़ी थीं, नजदीक जाकर सर ने तस्दीक करना चाहा; नाक में गंध का भभका भर आया, सर समझ गए पुराने पड़ गए आलू और प्याज को फैंका गया है। एक कार्टन आसमान की ओर मुँह बाए पड़ा था; झांककर देखा, दवाइयों के कई रैपर्स-बोतलें सामयिक मृत्यु की सूचना के साथ कब्र में पड़े से थे। दीवार किनारे पड़े केक और ब्रेड के कई पॉकेट में कौवें चोंच मारकर आजमा रहे थे। बिल्कुल किनारे कई प्रकार की सड़ी सब्जियां एक के ऊपर एक पड़ी थीं, जैसे चील चिड़ियों के लिए मिक्स वेज बनाकर रखा गया हो। उसे याद आया, लॉकडाउन के दिनों में एक बार शर्माजी के घर आना हुआ था; हर प्रकार के सामान इकट्ठा करने की होड़-सी मची थी उसके घर में! संकरी गली में उत्तर दिशा से हवा चली, उन्हें गंध के सागर में डुबकी लगाने जैसा लगा। वह तुरंत मुख्य मार्ग की तरफ मुड़ लिए; मन ही मन शर्माजी को कोसते हुए, '...जो व्यक्ति इतना भीरू और आत्मकेंद्रित हो उससे गांधीजी और स्वतंत्रता संग्राम पर चर्चा करना ही बेमानी है!'

घर के लिए मुड़ते ही रामघाट तिरे से मानस पाठ की आवाज तेज हो गई, हवा की दिशा में ...इरिषा परुषाअच्छर लोलुपता, भरि पूरी रही समता बिगता, सब लोग वियोग बिसोक हए...

16

सितंबर समाप्त होते-होते रामघाट की सड़कों-गलियों से कोरोना क्रमशः

विदा होता गया, लोगों के मन-मस्तिष्क से भी। सत्ताच्युत नेताओं की जुबान पर कोरोना जरूर जब-तब जिंदा हो उठता था, पर सत्तानसीं नेताओं के मुँह से दिन-रात झरते रहते रंग-बिरंगे फूलों में कोरोना के कण-पराग कण के चिह्न तक न दिखते। हां, अस्पतालों और श्मशान घाटों को कोरोना ने अपना पैतृक चारागाह जरूर बना डाला था। मीडिया का बहुमत सत्ता-संगीत केंद्र में नित-नए बनते रस-राग में मदमस्त था; कुछेक चैनल समय-शासन के हथौड़े से ध्वस्त होकर भी कोरोना-राग निकाले जा रहे थे, अपनी फटी डफली से ही। स्वाभाविक ही राह चलते या घरों में मजे से बैठे लोगों की नग्न आँखें भी अस्पतालों और श्मशान घाटों का मंजर नहीं देख पा रही थीं। ऐसे में दिन-सप्ताह बेरुखी दिखाते हुए निकल जाते थे; विवेक-बुद्धि वाले को भी बेबसी के बिस्तर में अलसाया हुआ-सा छोड़ते हुए।

आज 2 अक्तूबर का दिन यूं ही निकल गया। सर को पता भी नहीं चला कि गांधी जयंती थी आज; बल्कि यूं कहिए कि गांधीजी थे कोई। सुबह से ही सर को लगने लगा जैसे कुछ बड़ा करने के लिए बहुत कम समय रह गया हो। 'कुछ बड़ा...?' वह लाख कोशिश करते पर वह 'बड़ा' तैलीय पदार्थ जैसा पिघलकर निकल जाता। वह मन ही मन कुढ़ उठते '...यह कोरोना आदमी को निस्सहाय बनाकर न जाने किस गड्ढे में पटक दे'। मन में कोरोना की बात आते ही उस 'बड़ा' की पूंछ पकड़ में आने जैसा कुछ लगा, '...हां -हां कोरोना, फिर कोरोना के भाई-बहन, उसके बाद कोरोना के बाल-बच्चे, उससे भी आगे कोरोना के पोता-पोती...' पूंछ पकड़कर उसने आंखें मूंद लीं '...अभी तो कोरोना ने अकेले ही इतनी तबाही मचा रखी है, लोगों का रोजगार-पानी अस्त-व्यस्त है, अस्पताल पस्त हैं; भविष्य में यदि कोरोना की फौज समय-समय पर तांडव करती रहेगी तो धरती में मानव सभ्यता का क्या होगा! अभी तो दो महीने के लॉकडाउन में सौ करोड़ लोगों के घरों में चूल्हे ने दम तोड़ दिया। हमारे शीर्ष पुरुषों की चेतना उस स्तर तक नहीं पहुंच पाती है कि बड़ी घटना का समय पर भान हो। राजनीति के पिरामिड के शिखर पर बैठे लोगों का बहुमूल्य समय पिरामिड के शिखर पर बने रहने में ही बीता जाता है, ऐसे में उनकी अंतर्दृष्टि तो सीमित होनी ही होनी है...' सोचते-सोचते सर को सामने अंधेरी सुरंग दिखने लगी; लगा अब वह उम्र नहीं रही कि अंधेरी सुरंग में प्रकाश-पुँज ढूंढ़ सकें। 'फिर...?' जब उसकी दृष्टि कहीं अंधेरे में ओझल हो जाती वह अहम को याद करने लगते; मानसिक अस्थिरता की

स्थिति में अन्य पूर्व शिष्यों को भी। अब तक उसकी उंगलियों ने अहम को मैसेज डाल दिया था '...अब तो चारों ओर अनलॉक का उत्सव चरम पर पहुंच चुका है, तुम लोगों का चरम कहां है! क्या हो रहा है? समय निकाल सको तो मंडली के साथ आना...'। कुछ ही देर में वे अहम का मैसेज पढ़ रहे थे '...सर हम लोग आज ही शाम पाँच बजे आएंगे'।

शाम पाँच बजे अस्तगामी सूरज की भी धूप काफी चटख थी। सर के संकेत पर बाहर लॉन में लगी एक-एक कुर्सी उठाकर वे सभी खुले बरामदे में बैठते गए, आधी गति से चल रहे पंखे के नीचे। सभी की आंखें सर पर टिकी थीं; कौतूहलपूर्ण आंखें, कि आज सर से जरूर कुछ नया सुनने-सीखने को मिलेगा।

"शायनी बेटा आई एम सो सॉरी," बैठते ही सर ने कहा; उनकी भाव-भाषा से वहां के खुशनुमा माहौल में एकाएक गंभीरता पसर गई, वह बोलते गए, "कोरोना पर तुम्हारी रिसर्च का कोई भी फाइंडिंग्स पब्लिक डोमेन में नहीं आना चाहिए था; वह एक कहावत है न खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे, प्रशासन को बल्कि प्रशासन के पापा को तुम्हारे रिसर्च के कुछ फैक्ट्स रास नहीं आए; ऐनी हाउ, आखिर सरकार को यह फाइंडिंग्स क्यों कबूल होगी कि हिंदुस्तान में कोरोना को ऊर्वर भूमि सुलभ ढंग से उपलब्ध हो गई?" आगे उन्होंने अफसोस जताते हुए कहा, "इसी खुन्नस में प्रशासन ने गांधी स्कूल पर दबाव डालकर लैब ही बंद करवा दिया?" फिर सशंकित होकर पूछा, "अब आगे कैसे-क्या होगा?"

"सर जो भी होता है अच्छा ही होता है; गांधी स्कूल द्वारा प्रतिबंध लगाते ही मैंने ठान लिया है अपने कोरोना रिसर्च को आगे बढ़ाना है," बोलकर शायनी चहक उठी, "अब तक के फाइंडिंग्स मैंने कई लैब में भेजे थे, हैदराबाद वायरोलॉजीकल लैब से मुझे रिसर्च जॉइन करने का ऑफर मिल चुका है, इट इज गुड वह सरकारी लैब नहीं है; शायद अगले महीने ज्वॉइन करने को बोलें।" बोलकर शायनी मंद मुस्कान में डूब गई।

"वैसे अब तक के फाइंडिंग्स के आधार पर कोरोना के भविष्य के बारे में तुम्हारी क्या ऑपनियन बनती है।" सर ने कौतूहलपूर्वक पूछा।

"कोरोना में रोज-रोज म्यूटेशन हो रहे हैं, नए-नए स्ट्रेन पैदा होते जा रहे हैं; जिनोम सीक्वेंसिंग पर मैंने जितना काम किया है मुझे लगता है कोरोना के कुछ स्ट्रेन हाइबरनेशन स्टेज में पड़े रह सकते हैं, भविष्य में यह मोस्ट डेंजरस

स्ट्रेन के रूप में दुनिया में भारी तबाही मचा सकते हैं!" बोलते-बोलते शायनी की आंखों में खौफ की परत दिखने लगी, "एक स्ट्रेन में मुझे यूनिक बिहेवियर देखने को मिला है, अपने येलोईस कलर को बीच-बीच में यह ब्लैकिस कलर कर लेता है, शायद इसलिए कि इसके म्यूटेशन के फीचर्स पकड़ में न आएं! इसे मैंने ब्लैक कोरोना नाम दिया है।" अब वह सड़क पर खेल रहे बच्चों को देखकर बोलने लगी, "यदि सचमुच वह बहुरूपिया स्ट्रेन धरती में बच गया, फिर तो भविष्य में मानव जीवन के लिए तबाही ला सकता है।" बोलने के बाद उसकी आंखों में खौफ की परत स्पष्ट दिखने लगी।

"व्हाट मेय बि द वेआउट?"

"ऐसे स्ट्रेंज स्ट्रेन का पीछा अभी से ही करना पड़ेगा; जब यह अंतिम रूप से म्यूटेशन कंप्लीट कर लेगा तभी उसके कारगर ट्रीटमेंट और वैक्सीन पर रिसर्च स्टार्ट कर देना पड़ेगा," शायनी वजन ढोती हुई-सी बोली।

"आई होप योर रिसर्च विल सर्टेनली हेल्प द ह्यूमन बिंग," सर ने आशीर्वाद देते हुए सा कहा।

"सर विद योर ब्लेसिंग आई विल डू माय बेस्ट फॉर द इरिडिकेसन ऑफ वायरल डिजीज" शायनी भाव विह्वल हो उठी।

"एंड सहज, व्हाट इज योर फाइनल टारगेट ऑफ योर करियर, आईएएस ओर इल्स?" बोलकर सर ने सहज पर नजर गड़ा दी, जैसे उस पर कोई जुआ धर रहे हों।

"नो सर, नॉट आईएएस; जब शायनी इतना बड़ा काम कर सकती है तो मुझे भी उसी अनुपात का काम करना पड़ेगा।" सहज ने झेंपते हुए कहा।

"वेरी स्मार्ट गॉय! यू नो वेल, अदरवाइज यू मेय लूज हर!" सर ने दबी मुस्कान के साथ कहा। मंजरी, रामू, परवेज, अहम, दिनेश, मनोज सभी के ठहाके बेकाबू हो उठे; शायनी और सहज ने अपने चेहरे को हथेली से छुपा लिया। सर ने वार्ता की कड़ी फिर जोड़ दी, "बाय दि वे उसी अनुपात का काम क्या होता है?"

"इकोनॉमिक्स के फील्ड में कुछ नया करूंगा।"

"यस आई थिंक शो; अभी कोरोना काल में गरीब और साधारण लोगों ने परिवार के साथ कैसे-कैसे कष्ट झेले हैं! महीनों तक उनके घरों में ठीक से चूल्हा नहीं जल पाना हमारे लोकतंत्र के माथे में सबसे बड़ा कलंक है।" बोलते हुए सर की आवाज भर्रा उठी, जैसे सौ करोड़ साधनहीन जन की पीड़ा

से कराह उठे हों, आगे सामान्य होकर बोले, "इन माय ऑपनियन इकोनॉमिक्स के फील्ड में ऐसे थ्योरी पर काम करो कि देश के संसाधन पर सभी का समतुल्य हक हो और फिर एक निश्चित समयावधि में सौ करोड़ की सुविधाविहीन आबादी साधन संपन्न होकर सुलभ जीवन जी सके।"

"सर मुझे लग रहा है आपने मेरा मन पढ़ लिया है, इस कोरोना पीरियड में मेरा इकोनॉमिक्स विजन कुछ उसी दिशा में दौड़ लगा रहा है," बोलकर उसने सर की तरफ सिर झुका दिया।

'आई एम प्राउड ऑफ यू सहज, एक बात नोट कर लो," सर की आवाज किसी दैवीय चरित्र जैसी निकल रही थी, "जिस दिन सौ करोड़ की साधारण आबादी अपने पैरों पर चलना सीख लिया इस देश में नकली सरकारें बननी बंद हो जाएंगी!" बोलकर उसने परवेज की ओर उंगली उठाई, "एंड यू मियां, पॉलेटिकल फील्ड में क्या कुछ नया जोड़ पाओगे?"

"सर आपके आशीर्वाद से एक नए शोध पर काम शुरू कर दिया है।" बोलकर परवेज की आंखें दिल्ली की दिशा में उठ गईं।

"मुझे पता है तुम्हारे अंदर वह शोले हैं कि हिंदुस्तान में क्रांति की लौ जला सकते हो, उस ऊर्जा का इस्तेमाल अपने शोध में करो," फिर दिल्ली की दिशा में उंगली दिखाते हुए बोलते रहे, "विशेष रूप से यदि यह साबित कर पाओ कि सरकार बनने-बनाने की वर्तमान व्यवस्था और परिपाटी से हिंदुस्तान पांच-दस साल क्या आने वाले पचास साल में भी सौ करोड़ जनता के लिए बाजीगर ही बना रहेगा!"

"सर मैं बिल्कुल उसी दिशा में सोच रहा हूं; चुनाव प्रक्रिया और सरकार गठन की बेमिसाल प्रणाली पर काम कर रहा हूं!" परवेज ने कहा तो उसके बाएं हाथ की तर्जनी चुनौती देने के अंदाज में तरंगित होती रही।

"और हमारे सब के प्रभु राम! अब आगे क्या कुछ करनेवाले हो!" सर ने ऐसे कहा जैसे उन्हें तो सब कुछ पता है।

"सर जो समय के अनुकूल नहीं होगा उसके खिलाफ मैं प्रश्नचिह्न वाला झंडा बुलंद करता रहूंगा, चाहे चीन के खिलाफ हो या भारत के खिलाफ।" बोलकर रामू ने मुट्ठी बंद कर हवा में लहरा दी।

"तुम्हारे इसी जज्बे के कारण तुम्हें देखकर मेरे अंदर भी ऊर्जा-तरंग उठने लगती है।" रामू पर स्नेहभरी नजरें डालते हुए सर बोलने लगे, "मुझे पता है तुम्हारे अंदर वो ऊर्जा है जो बड़े-बड़े लौह पुरुष को लोहे की भांति

पिघलाकर लघु बना दे," फिर मंजरी की तरफ देखकर पूछा, "और मंजरी बिटिया का क्या ख्याल है?"

"सर, रामू के पीछे साए जैसी खड़ी रहूंगी।" मंजरी भाव-विभोर होकर बोली।

"सर मैं भी रामू के कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा रहूंगा।" दिनेश सैनिक दल के नायक की भाँति बोला।

"सर मैं रामू का साथ नहीं छोड़ूंगा।" मनोज की ललकार थी।

"अब अहम की बारी है, वह तो मुझसे शुरू से ही शेयर करता आया है," सर ने अहम की तरफ मुस्कुराते हुए कहा, "सब ने अपना बेस्ट करने का सामने रखा है तो तुम भी सभी के साथ पब्लिकली शेयर करो।"

"पीएचडी के लिए मेरा पंजीयन पिछले साल ही हो गया था; मेरा टॉपिक 'गीता और भारतवर्ष' अप्रूव भी हो रखा था, लेकिन..." अहम धीरे-धीरे बोलने लगा जैसे जीवन के रहस्य की परत खोल रहा हो, आगे कहा, "अभी कोरोना काल को सभी अपने-अपने ढंग से झेल रहे हैं, भोग रहे हैं, इससे एक चीज स्पष्ट रूप से निकलकर आती है, कि भविष्य में भारत जैसे महाद्वीपीय देश को चलानेवालों का वैचारिक संसार कैसा होना चाहिए? उनका विजन कैसा होना चाहिए? उसका एक मॉडल रेखांकित कर सामने लाया जा सकता है; यूनिवर्सिटी खुलते ही टॉपिक चेंज करने के लिए मैं आवेदन दे दूंगा; मुझे तो स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है, भविष्य में भारत देश की चुनौती से निपटने के लिए भजन-भगत से भी आगे निकलना पड़ेगा हमें"

"हां अहम, मुझे पूरा यकीन है देश के संचालक मंडल के मस्तिष्क और विजन का एक स्पष्ट मॉडल तुम एक दिन जरूर देश के सामने लाओगे।" बोलकर जेड सर अहम को गौर से देखने लगे, जैसे किसी विराट पुरुष के दर्शन कर रहे हों; क्षणिक विराम के बाद फिर बोलने लगे, "गांधी जी को गुजरे सत्तर-पचहत्तर साल हो गए, उनके विचार और कृत्य आज देव तुल्य लगते हैं; सच कहो तो आज यकीन नहीं हो रहा कि उन जैसा कोई आदमी पैदा भी हुआ था कभी! उनके द्वारा चलाए गए लंबे संघर्ष और जीवन के विविध पक्ष के लिए प्रतिपादित उनके जीवन दर्शन पर गौर करने से लगता है कोई मानव भला ऐसा हो सकता है!" बोलकर सर का मुंह खुला रह गया, फिर सभी की तरफ देखते हुए कहा, "यही चीज तो गांधी को देव श्रेणी में ला खड़ा करती है; और यही तो मैं कह रहा हूं कि भारत के भविष्य को

संवारने के लिए देवतुल्य पुरुषों की जरूरत होगी।" अब सर की उत्सुकता जाग उठी, एकाएक, "और यह तो बताओ तुम्हारे मूर्तिकार साथी की मूर्ति को सरकार ने चबूतरा सहित सील कर रखा है, तो उस विलक्षण मूर्ति के आजाद हुए बगैर उसकी परिकल्पना कैसे साकार होगी?"

"सर, सरकार-शासन को मुगालते में रहने दीजिए, किसी को नहीं पता सील होने से पहले अंकुर वो मूर्ति चबूतरे से ले उड़ा था, न जाने किस करतब से; वह तो तब से दिन-रात उस अद्‌भुत मूर्ति में प्राण डालने के पीछे पागल बना पड़ा है।" रामू ने आँखें बंद करते हुए कहा, अपने स्वभाव के प्रतिकूल जाकर; शायद भारत भूमि में किसी विराट पुरुष के पैदा होने की बेचैनी उसके अंदर भी बढ़ने लगी थी। उसने आगे याचना भाव में कहा, "बट साथियों यह रहस्य एक-दो को ही पता है, ये रहस्य ही रहे तभी अंकुर की परिकल्पना साकार हो पाएगी!"

"मूर्ति में प्राण डालने की उसकी तमन्ना भले ही उसकी एक परिकल्पना हो, पर एक विराट पुरुष पाने का जो विश्वास इसके साथ जुड़ा है वह गौर करने लायक है; काश ईश्वर जन-जन की यह ख्वाहिश जितनी जल्दी पूरी कर दें उतना अच्छा।" बोलकर सर ने सबकी ओर आशाभरी निगाहें डाल दीं।

"सर आज गांधी जयंती के दिन हम आपसे प्रॉमिस करते हैं हम सभी देश और मानव समाज को अपना बेस्ट देंगे।" सर की ओर सम्मानपूर्वक देखते हुए परवेज ने कहां "यस बरखुरदार" परवेज की ओर धीरे से फुँफकारते हुए सर ने कहा, फिर सभी की ओर देखकर बोले, "तुम में से कोई भी इस भ्रम में मत रहना मैं चुप बैठने वाला हूं! तुम लोग भविष्य के लिए क्या-क्या कर रहे हो, मैं समय-समय पर मॉनिटरिंग करता रहूंगा।" सर ने सिर हिला-हिलाकर कहा, एक अमर्त्य गुरु भांति; फिर कुर्सी से खड़े होकर बोले, "छह बजे के बाद धारा एक सौ चौवालीस लागू है, तुम लोगों का समय पर घर पहुंच जाना ठीक रहेगा।"

शायनी को छोड़ने सहज अंबेडकर चौराहा पार कर रहा था; भीमरवा क्रंदन-सा करता जा रहा था ...यहां सोचना मना, बोलना मना, करना मना... वर्ना जहन्नुम...

17

सुबह सादा ने चाय लेकर काफी देर तक इंतजार किया। न तो सर का कमरा

खुला, न किसी के होने की कोई खांस-खराश! उसने दरवाजा खटखटाया, बल्कि हौले-हौले पीटने-जैसा करता जा रहा था। आठ बज गए, अभी तक अंदर से कहीं कोई आहट नहीं? उसने पीछे वाली गली के शर्माजी को आवाज लगाई। शर्माजी भागे-भागे आए। उसने भी दरवाजा खटखटाया; फिर जोर से ठकठकाया। जेड सर का बेडरूम था, पीटना उसे पाप जैसा लगा; पाप से बचने के लिए पुलिस को सूचना दी गई। तुरंत पहुंच चुकी कोरोना-मंडली के युवा अंदर प्रवेश करने की तरकीब आजमाते रहे। अड़ोस-पड़ोस की भीड़ जमा होती गई। पाँच मिनट के फासले से भी पुलिस को पहुंचते-पहुंचते साढ़े नौ बज गए। आते ही पुलिस ने दरवाजा तोड़ दिया, किसी से कुछ पूछे बिना; जैसे अंदर कोई आदमी नहीं संदेहास्पद वस्तु होने की पक्की सूचना हो। अंदर पलंग पर जेड सर औंधे पड़े थे, दोनों हाथों को सीने से दबाए हुए; देखने वालों की जान में जान आई '...हार्ट अटैक-सा कुछ पड़ा होगा, बेहोश पड़ गए होंगे, सही समय पर दरवाजा खुल गया वरना!' अचानक घर के बाहर एंबुलेंस आ खड़ी हुई। बढ़ती जा रही भीड़ को थानेदार ने फटकार लगाई, "आप लोग काहे इतना घबराते हैं, उम्रदराज आदमी हैं, कार्डिक अरेस्ट-सा कुछ आया होगा, सुपर सेवन वालों के पास हर प्रकार की सुपर स्पेशलिटी है! अभी का अभी ठीक कर देंगे।"

सर का शरीर रखकर एंबुलेंस सुपर सेवन की तरफ चल पड़ी, लोगों की आंखों में शक-सुबहा के डरावने चित्र छोड़ते हुए। अस्पताल के रास्ते सहज पच्चीस युवाओं के नाम अस्पताल को फॉरवर्ड कर चुका था, जरूरत पड़ने पर ब्लड बैंक का चक्कर काटने से बचने की खातिर।

अस्पताल में सर के बच्चे, यानी कोरोना-मंडली डटी रही; उन्हें सूचना देने डायरेक्टर सुपर सेवन खुद पांचवें तल से नीचे आए, "आई एम शो सॉरी! पेशेंट नेमली जेड इज नो मोर!" बोलकर वह अतिव्यस्त-सा दिखते हुए चलते बने, आगे के प्रश्न-प्रतिप्रश्न, हल्ला-हुज्जत से किनारा करते हुए।

कोरोना के समय किसी की भी मृत्यु कोई बड़ी घटना नहीं बन पाती थी। पिछले महीने प्रदेश में एक मंत्री और एक एमएलए की कोरोना से मृत्यु हुई थी, किसी को कोई फर्क नहीं पड़ा था। कोरोना ने मृत्यु को सच में सामान्य दिनचर्या-सा बना डाला था। हां, दोपहर होते-होते दिवा रामघाट वाले पुकार-पुकार कर जरूर अखबार बेच रहे थे, दूसरे पृष्ठ के कोने में जेड सर की मृत्यु को बॉक्स में छापकर ...रामघाट के जाने-माने बुद्धिजीवी जेड सर भी

कोरोना की भेंट चढ़ गए...। दूसरे दिन लगभग सभी अखबारों ने अपने रामघाट पेज में तीन-चार पंक्ति की खबर देने की मेहरबानी की थी ...जाने-माने शिक्षाविद जेड सर हमारे बीच नहीं रहे ...हृदय गति रुकने से प्रबुद्ध शिक्षक का देहांत...। एक मामूली अखबार ने जरूर अलग नजरिए से खबर छापी थी ...जेड की मृत्यु की संदेहास्पद परिस्थिति से उनके शिष्यगण हैरान!...। कुल जमा तीन, जेड का गुजरना रामघाट के कानों के लिए 'कोरोना और मृत्यु: एक कठोर सच्चाई' के समतुल्य ही आई-गई जैसी रह गई। जेड सर की मृत्यु कोरोना-मंडली के लिए अबतक के जीवन का सबसे बड़ा व्याघात था; अब उन सभी को लगने लगा जैसे उनके शरीर मस्तिष्क-विहीन हो गए हों! सोते वक्त उन्हें लगता सच में वस्तु के समान ही वे भी निस्पंद होते जा रहे हैं, बिना किसी अस्तित्व के। अब तो उन सभी को अपने अंदर अपनी निजी जिंदगी और कोरोना-कैबिनेट के संकल्प डोलते नजर आते; आमने-सामने लगे दो पेंडुलम की भाँति, अलग-अलग दिशाओं में लोलक लुढ़काते हुए।

बस्ती इलाके में छेनी-हथौड़े से ठक-ठक कट-कट टुक-टुक की अदृश्य आवाज आती रही, कई दिनों-सप्ताहों तक रात-रातभर; किसी गुप्त संकल्प सा! भीमरवा का क्रंदन शोर तो बढ़ता ही गया, रात्रिकालीन आलाप-विलाप की भाँति ...शेर घटेंगे सियार लोमड़ी बढ़ेंगे ...कौवा पपीहा गाएँगे...

अध्याय छह

1

"आज अचानक उजड़ा महल का ख्याल आया मेरे हीरो को! महीनों बाद?" स्टीयरिंग थामे सिंगल रोड़ पर गाड़ी बढ़ाते जा रहे सहज को शायनी ने छेड़ दिया। सहज की नजरें ऊबड़-खाबड़ सड़क पर टिकी रहीं, बोला कुछ नहीं। शायनी को ही बोलना पड़ा, "इन महीनों में तुम्हारे अंदर किसी महात्मा का अंतरण तो नहीं हो गया है!"

"कोरोना ने किसे महात्मा बनाकर नहीं छोड़ा है डार्लिंग; लेकिन आज तो पक्का इरादा करके निकला हूं, अब मुझे प्रमाण देना ही पड़ेगा कि अब बहुत हो गया साधुगिरी।" शायनी के रूप-सौंदर्य पर नजर डालते हुए उसने कहा।

"पहले भी कई बार प्लानिंग करके नहीं निकले थे हम दोनों? मोहब्बत के सुहाने सफर पर!" पिछले दो साल के दसियों अधूरे मिलन को याद कर शायनी ने कटाक्ष किया; उजड़े महल के टूटे बेगम महल के एक-दो अंतरंग पल, भले ही आधे-अधूरे रहे हों, को शिद्दत से याद करते हुए।

"पर उस दिन सुबह-सुबह तुम्हारे मिनी स्कर्ट और स्लीवलैस में होने की तस्वीर मुझे हर दिन बेचैन किए रहती है; मस्तिष्क में कैद वह चलचित्र आज न जाने किस रूप में आकार ग्रहण करेगा उजड़े महल में।" उसके होंठों में शरारत फिसलती गई।

"फिर तो तुम यहीं गाड़ी रोको, अभी! मुझे नहीं जाना तुम्हारे साथ।"

"यहाँ बीच रास्ते में?"

"हां, मुझे ऊपर वाले ने दो पैर दिए हैं मिस्टर सहज!" वह रूठती हुई बोली।

"सॉरी बाबा; बट यू नो उस दिन तुम्हारा वो रूप-रंग देखकर हमारे सभी

साथी लोग का मन क्या कह रहा होगा? यही न कि सहज न जाने...!" बोलते-बोलते वह रुक गया; कार धीमी कर दी जैसे कार में ही कुछ कर डालेगा, फिर कहा, "पर हम दोनों ऐसे बुद्धू हैं कि पूछो मत!"

"अभी चुपचाप गाड़ी चलाते रहो, सावधानी हटी दुर्घटना घटी!"

"सही बोल रही हो, जो होना है बेगम महल में होना है।"

"मेरी मर्जी के बगैर? मैं नवाबों के जमाने के हरम की केप्ट हूं क्या! नवाब का जब जी में आया अपनी बाजू में दबा लिया और..." बोलते-बोलते शायनी चुप हो गई; लड़कियां जिन पलों से नहीं गुजरी हैं उसका जिक्र करने से परहेज ही करती हैं।

"अरे वाह, अपनी मंजिल पर पहुंच भी गए! आज कुछ जल्दी नहीं पहुंच गए?" कार को झाड़ी की ओट में लगाते हुए सहज ने कहा, उतावलापन छिपाते हुए।

"तुम जैसे बुद्धू को हड़बड़ी के सिवाय कुछ सूझता है क्या?" वह बेरुखी से बोली।

"सच बताना तुम्हें हड़बड़ी नहीं है क्या?"

"पहले जी भर कर बातें करूंगी तब बताऊंगी; अभी तो पिछले पांच महीने का कोटा पूरा करना है।" बरामदे में मचलते हुए वह बोली।

"हां पंद्रह अगस्त तो ऐसे ही बीत गया, आजादी का भरपूर इस्तेमाल किए बगैर ही।" सहज को याद आया 15 अगस्त को चौक पर झंडात्तोलन का साधारण समारोह मात्र हुआ था, जेड सर की उपस्थिति में।

"उसके ऐवज में हम दोनों को आज आजादी हासिल कर लेनी चाहिए!" शायनी की आँखों में चमक-सी उभर आई।

"ये काला कोरोना जो न कराए।" टूटी खिड़की पर बैठते हुए वह बोला।

"पूरा देश ही कोरोना तले पीसा जा रहा है, रस्सी चाहे जितनी खींच लो तिरंगा भला कितना ऊंचा उठ पाता।" लंबी सांस लेते हुए वह बोली।

"लेकिन बुड्ढे से बुड्ढे नेता भी तो तिरंगे को पोल के ऊपर तक खींच ही डालते हैं!" उसने सच्ची बात बताई।

"अरे बाबा तिरंगा ऊपर उठने का मतलब है देश की जनता का इंटीग्रेटेड स्ट्रेंथ! तिरंगा ऊपर उठाने के मायने हैं हकीकत में तिरंगा के सम्मान को बढ़ाने के लिए अपना योगदान देना! पर कोरोना ने तो आमजनों को आर्थिक, शारीरिक, सामाजिक हर प्रकार से शक्तिहीन कर रखा है! ऐसे में पेट-परिवार

में जूझ रही जनता के मन में उत्साह भला कहा आ पाएगा तिरंगे के प्रति या अपने किसी सतरंगी सपने के प्रति?" शायनी के चेहरे में मायूसी की परत दिखने लगी।

"तुम सही बोल रही हो; तुम्हें शायद पता हो पापा ने हमारी फैक्ट्रियों के मजदूरों को अपने खर्चे पर उनके घरों तक भिजवाया था, कुछ मजदूरों को उन्होंने हवाई जहाज से भी घर भिजवाया था।" आगे बोलते हुए सहज की आंखों में विस्मय की परत फैल गई "वे मजदूर अब वापस आना चाह रहे हैं, क्योंकि उनके गांव में रोजगार पानी की कोई व्यवस्था नहीं है, उनके परिवार भुखमरी की स्थिति में पहुंच गए हैं!"

"यार, अंकल को बोलो उन बेचारे मजदूरों को वापस बुला लें।" उसका मन अनजान मजदूरों के लिए पसीजने लगा।

"शायनी तुम्हें बताना नहीं चाह रहा था, मेरे पापा के साथ एक अलग मुसीबत आ पड़ी है।" आगे बोलते हुए सहज के चेहरे में परेशानी की रेखाएं दिखने लगीं। "दोनों में से कोई भी फैक्ट्री चालू नहीं हो पा रही है; स्टील फैक्ट्री के पीछे एनजीटी वाले पड़े हैं तो डिस्टलरी फैक्ट्री के पीछे जीएसटी वाले हाथ धोकर पड़े हैं; जब तक अज्ञात अलिखित पेंच खत्म नहीं हो जाता प्राधिकरण वाले फैक्ट्री खुलने देंगे नहीं! मुझे तो लग रहा है पार्टी के लोग पीछे पड़े हैं।"

"इसकी वजह क्या हो सकती है?"

"अभी निश्चित रूप से कुछ भी बताना मुश्किल है; तुम तो जानती ही हो प्रवासी मजदूरों के लिए पापा ने बीस बसों के इंतजाम किए थे, लग रहा है प्रवासी मजदूरों को घर भेजने के लिए पापा के प्रोएक्टिव होने को अदरवाइज लिया गया है।" बोलकर उसने शायनी पर नजरें टिका दीं, फिर बोला, "बल्कि अब तो मुझे लगने लगा है मेरा कोरोना-मंडली से जुड़ा होना और कोरोना-कैबिनेट का संचालन करना भी पार्टी को नहीं भा रहा है।"

"लेकिन अपनी मंडली ने तो जनहित में अच्छा काम ही किया है, पार्टी वालों को तो खुश होना चाहिए हमने एक तरह से उनके लिए ही कार्य किया है।" वह खिन्न होकर बोली।

"अरे शायनी तुम्हें शायद नहीं पता, हम बड़े कारोबार वालों के लिए सबसे बड़ा मेंटल ट्रॉमा क्या होता है?" कुछ उद्‌भेदन करने-सा भाव चेहरे में लाते हुए उसने कहा।

"कुछ ऐसा भी होता है क्या!" वह विस्मित होकर बोली।

"जी मैडमजी ऐसा ही होता है!" वह अजीब ढंग से सिर हिलाकर बोलने लगा, जैसे अंदर कोई स्प्रिंग किसी के नियंत्रण में हो "और वह है शासन-सत्ता की तमन्ना कि हम अपना कारोबार तो करें, साथ ही उनके प्रति भक्ति भाव भी रखा करें!"

"फिर तो पूरे देश के बड़े कारोबारियों के लिए मेंटल ट्रॉमा है यह!" वह आश्चर्यचकित थी।

"बिल्कुल है! यह पैबोस प्रथा तो कई दशक पहले से ही जन्मती-पनपती रही है, तभी तो आजादी के सत्तर-पचहत्तर साल बाद भी उद्योग-धंधे विदेश-व्यापार जैसे क्षेत्र में अपना देश फिसड्डी बना हुआ है।" वह खिन्न होकर बोला जैसे उसका पढ़ा सारा अर्थशास्त्र गुड़-गोबर नजर आ रहा हो।

"फिर तो देश में कौन सुखी है? कोरोना ने पिछले पांच महीने में साधारण और गरीब लोगों की तो गत बना दी है।" रामघाट शहर की ओर देखते हुए वह बोलने लगी "तुम बस्ती को ही ले लो, वहां के अंदरूनी हालात भयावह हैं! किसी की मजदूरी लग नहीं रही है, रिक्शा-ठेला ठप्प पड़ा है, सड़क-पटरी दुकानदारों की हवा निकली है अभी तक।"

"बस्ती वाले तो जैसे-तैसे पेट चला पा रहे हैं।" वह द्रवित होकर बोला।

"अपने बूते नहीं, सरकार से मिल रहे चावल-गेहूं से उनकी सांसें खिंच रही हैं, बस!" वह दुखी होकर बोली, आगे ग्लानि से बोली, "रामू हम सभी का मित्र है, पर हममें से कितने को पता है अब उसकी माँ किसी घर में पार्ट टाईम घरेलू काम पकड़ने की सोच रही है।"

"वह तो रामू अंदर से इतना जीवट है कि हम लोगों के साथ बना हुआ है! कोई और होता तो घर में बैठकर साबुन से शाम तक हाथ धो-धोकर दिन काटता।" वह बोलने लगा तो उसके मुख मंडल में रामू के लिए सम्मान दीप्त दिखने लगा; आगे खुलासा करते हुए कहा, "दिस इज अ फैक्ट, इंडिया में कभी क्रांति होगी तो इसी बैकग्राउंड के जीवट लोग लीड करेंगे, वेल ऑफ फैमिली के लोग नहीं! ना ही मिड्ल क्लास के करियर एंड प्रोग्रेस ओरिएंटेड लोग।"

"अभी तो पूरे देश में निराशा का माहौल है।" वह सामान्य होती हुई बोली।

"निराशा का माहौल ऐसा है कि कोई भी कुछ नया या बड़ा करने की स्थिति में नहीं है।" सिर नकारते हुए सहज बोला।

"इसका अर्थ हुआ हमलोग भी..." आगे कुछ न बोलकर उसने तिरछी नजर सहज पर गड़ा दी; आगे के शब्द उसकी आंखें बयां कर रही थीं।

"हताशा भरे ऐसे समय में सुहाग दिन तो क्या सुहागरात भी ना मनाऊं मैं।" बोलकर सहज ने शहर में उठ रहे धुएँ पर नजरें गड़ा दीं जैसे निराशा के गर्त में डूबा जा रहा हो।

"ऐसे मेल-मिलाप में भला कैसे..." आगे के शब्द कंठ से बाहर नहीं आ पाए; दूर जंगल की तरफ देखती हुई बोली, "हां, जो लड़का अपने को कंट्रोल नहीं कर पाएगा वह तो रेप क्या गैंगरेप तक पर उतर आएगा!" बोलकर उसने नजरें झुका लीं, मनोभाव व्यक्त करते हुए कि मेरा सहज तो सात जन्म में भी ऐसा नहीं करेगा।

"रेप गैंगरेप करेगा? हो तो रहा है चारों ओर!" उसकी नजरें शायनी से हटकर कहीं दूर टिक गईं। शायनी को महसूस हुआ वह तो सच में किसी मजबूत स्तंभ के आलिंगन में है; उसने अपने को सहज के सहारे टिका दिया। बाँहों के घेरे में सहज ने होंठों से उसके होंठों को सहारा दिया। शायनी की चेतना जागी, शरीर में हरकत हुई; वह सहज की बाँहों में ही पड़े रहना चाहती थी। होंठों को अलग कर सहज ने उसके गालों को चूमते हुए कहा, "आई लव यू टू मच शायनी! बट वि हैव टू वेट फॉर एं एक्सलेंट टाइम।"

"अरे जरा उधर तो देखो, किनारे में कितने अच्छे बरसाती फूल खिले हैं! चलो उधर वाले पत्थर में बैठकर कुछ अच्छी बातें करते हैं, खिले फूल के नीचे खुशनुमा पलकों में!" बाँहों के घेरे से अपने को मुक्त करते हुए वह बोली। पीले रंग वाले फूल तोड़ते हुए उसके मुंह से निकला, इस किस्म के फूल को पहली बार देखकर, "वाउ!..." फिर शांत-चित्त होकर बोली "चलो कुछ और सुनाओ"

"मुझे तो कुछ भी अच्छा दिख नहीं रहा है," कहीं खो जाने-सा उसने कहा, फिर कुछ याद करते हुए बोला, "तुम्हारे उस रिसर्च का क्या हुआ?"

"अरे हां, तुम्हें बताना भूल ही गई!" वह माथा पीटने सा करती हुई बोली, "परसों ममा के पास गांधी स्कूल वालों का फोन आया था; उन लोगों ने फाइनली बता दिया है शायनी आगे से यहां रिसर्च नहीं कर पाएगी।"

"शिट! तभी तो! मुझे पता चला है पार्टी वाले कोरोना-मंडली से नाराज

चल रहे हैं, पता नहीं क्यों?" बोलते हुए वह सहम उठा, आगे कहा "अहम बता रहा था आने वाले दिनों में हम सभी को सावधान रहना पड़ेगा, कह रहा था उस दिन शाम को सर के घर के सामने सड़क पर जो गोली चली थी वह हम सभी को सावधान करने की चेतावनी के तौर पर थी!"

"कहीं ऐसा तो नहीं है कि सर की स्वाभाविक मृत्यु नहीं थी? कोरोना-कैबिनेट वाले स्टूडेंट से जुड़े रहने के कारण ही सर की हत्या की गई हो?" शायनी के चेहरे में भय की रेखाएं उभर आईं।

"तुम्हारे शक में दम नजर आ रहा है! अदर वाइज उन जैसे बुजुर्ग के पीछे कोई क्यों पड़ेगा?" बोलते हुए सहज गंभीर हो गया।

"इस देश में किसी ऊर्जावान और विजनरी मैन या मंडली के गाइड या मेंटर की जिंदगी हमेशा खतरे में रही है, सोचने वाले लोग सत्ता-सामंत को कभी नहीं सुहाते।" समय की नब्ज पर अपनी पकड़ जाहिर करती हुई वह बोलती गई, "फिर तो आने वाले दिनों में हमारी मंडली के सदस्यों पर भी खतरा मंडराने लगेगा?" बोलकर वह सावधान हो जाने जैसी मुद्रा में खड़ी रही।

"आने वाले दिनों में! मैंने तुम्हें बताया न वे लोग पिताजी के पीछे पागल कुत्ते जैसे पड़े हुए हैं।" बोलते हुए सहज के चेहरे में घृणा की अदृश्य रेखा उगने लगी, आगे कहा, "अरे काहे का डरना, जो होगा देखा जाएगा! तुम यह तो बताओ यदि गांधी स्कूल वाले मना कर देंगे फिर तुम रिसर्च कैसे कंटिन्यू करोगी?"

"इस विषय में मैं तुमसे डिस्कस करने ही वाली थी; इंडिया में गवर्मेंट लैब में रिसर्च करने में काफी तानाशाही है! प्राइवेट लैब में भी कोरोना वायरस पर रिसर्च की सुविधा उपलब्ध है; अभी तक की रिसर्च में मिले फाइंडिंग्स के बेसिस पर मुझे किसी भी अच्छी प्राइवेट लैब में इंट्री मिल सकती है।" बोलकर वह सहज की आंखों में गड़ गई, फिर बोली, "तुम्हारी सहमति हो तो..." आगे शब्द उसके मुंह से न निकल पाए, शायद सोचकर कि उससे दूर जाने की बात पर कहीं सहज नाराज न जाए।

"आय डू एग्रि विद यु; किसी अच्छी लैब में कोरोना वायरस पर रिसर्च की अपॉर्चुनिटी तुम्हें हरगिज नहीं गंवानी चाहिए डार्लिंग!" शायनी के कंधे सहलाते हुए उसने सहमति-सी दी, आगे पूछा, "पर यह तो बताओ अब तक की रिसर्च पर तुमने क्या देखा-पाया है?"

"मोस्ट इंपोर्टेंट फैक्ट वुहान से कोविड-नाईनटीन के जो स्ट्रेन दुनिया के देशों में फैले वह अब तक दसियों स्ट्रेन में म्यूटेट हो चुके हैं! इंडिया में जो स्ट्रेन मिला है उनमें से ए.टू.ए. और ए.थ्री.आई. पर मैंने अपने रिसर्च को फोकस किया है, आगे जो भी नया स्ट्रेन मिलेगा उसे भी अपने रिसर्च में एड्ड करती चलूँगी।" छोटी साँस लेते हुए उसने कहा, आगे बोलते हुए उसकी आंखें सिकुड़ती गईं जैसे लैब में दूरबीन पर बैठी हो, "अभी तक के रिसर्च से मैं कहने की स्थिति में आ गई हूं कि यह मैन मेड वायरस है! बिकाऊज यदि यह नेचुरल वायरस होता तो इतनी तेजी से म्यूटेट नहीं करता! परहेप्स बायोलॉजीकल वीपन्स के तौर पर उपयोग के लिए इसका प्रोडक्शन शुरू किया गया होगा चीन में! यू नो बायोलॉजिकल वीपन्स का परपज ही होता है दुश्मन देश पर ऐसा वायरस या बैक्टीरिया छोड़ना जो समय के साथ बहुरूपी बनता जाए! सीन्स यह तेजी से नए फॉर्म में कन्वर्ट होते जा रहे हैं, इसकी इंटेंसिटी कभी वीक पड़ जाती तो कभी डेंजरअस हुई जा रही है! संक्रमितों की संख्या तेजी से बढ़ रही है, लोग ठीक भी हो रहे हैं; और एवेंचुअली डेथ रेट क्या रहेगा यह कहना मुश्किल है अभी।" बोलते-बोलते उसकी आवाज रिसर्च पेपर पढ़ने जैसी होती गई।

"इट मींस इन फ्यूचर इंडिया के लिए खतरे की कोई बात नहीं है!" सहज राहत पा लेने जैसा बोला।

"एट दिस स्टेज नो वडी कुड गेश हाउ इट विल गेट एन एंड?" बोलते हुए शायनी की आंखें छोटी थीं, आगे बोलते हुए में बड़ी होती गईं, "फाइंडिंग्स ऑफ माय रिसर्च एज ऑन डेट सेएज इफ म्यूटेशन कंटीन्यूज इन फ्यूचर इट्स सम स्ट्रेन मे वि वेरी फैटल टू ह्यूमन लाइफ! हो न हो वर्षों तक यह वायरस साइलेंटली इंतजार करता रहेगा और अचानक नए फॉर्म में म्यूटेट करके मास पॉपुलेशन को तबाह करता रहेगा; यदि फ्यूचर में ऐसा हुआ तो समझो सबसे पहले गरीब और साधारण लोग धरती से विदा ले लेंगे!" वह किसी वैज्ञानिक वक्ता जैसी बोलती गई।

"पन्द्रह अगस्त को भारत में संक्रमितों का कुल आंकड़ा पच्चीईइस लाख पार कर गया था, इसकी रफ्तार को देखते हुए लग रहा है पूरी आजादी के साथ यह शहर-शहर, कस्बा-कस्बा, गांव-गांव में फैलकर कुछ ही महीने में करोड़ों में पहुंच जाएगा!" उसने प्रश्नवाचक नजरें गड़ा दीं शायनी पर।

"अगले कुछ महीनों में बेशक करोड़ का आंकड़ा पार कर जाएगा," वह तकनीकी विशेषज्ञ भांति बोली, आगे कहा, "कोरोना के बढ़ते जा रहे संक्रमण

पर दुनिया में काफी रिसर्च और एनालिसिस हो रहे हैं; उन रिसर्च के फाइंडिंग्स और एनालिसिस पर गौर करें तो यह इंडिकेशन दिखता है यदि लॉकडाउन दस दिन पहले किया होता, तो आजादी का जो जश्न पन्द्रह लाख के आंकड़े की भेंट चढ़ गया वह महज दो-ढाई लाख के आंकड़े के साथ मना सकते थे।"

"लेकिन पन्द्रह मार्च के आसपास किसी स्टेट में शायद कोई उठापटक चल रहा था, कहीं उसी कारण..?" आगे बोलने के बजाय सहज की आंखें छोटी होती गईं।

"आई वोंट लाइक टू इंवॉल्व माय सेल्फ इन पॉलीटिकल इश्यूज, आई जस्ट कीप मैसेल्फ फोकस्ड ऑन रिसर्च वर्क ऑनली।" बोलती हुई वह उजड़े महल की सीढ़ी से नीचे उतरने लगी।

"बट आंकड़ों में फासले वाली बात तुमने किसी से शेयर नहीं की है न?" बोलते हुए उसका दायां पैर नीचे की सीढ़ी में और बायां पैर ऊपर की सीढ़ी में ही रुक गए।

"कोरोना संक्रमण के आंकड़ों पर आ रहे अलग-अलग रिसर्च और एनालिसिस को मैं कभी-कभी मंजरी के साथ शेयर कर लेती हूं," फिर मुड़कर उसकी आंखों में गड़ते हुए चौंक पड़ी, "सो व्हाट?"

"शिट यार! यदि उसने रामू से शेयर कर दिया तो कहीं नया हंगामा न खड़ा हो जाए!" बोलकर वह रामू का नंबर खोजते हुए बोला, "उसे मना करना होगा; ओ माई गॉड! उसका नंबर स्विच ऑफ बता रहा है? पता नहीं कहां क्या कर रहा है वह?"

"अरे मंजरी का नंबर तो आउट ऑफ रिच हो रखा है?" वह कान से मोबाइल हटाती हुई बोली।

"इसका मतलब है दोनों कहीं आजादी का जश्न..." सहज ने मुस्कुरा दिया।

"तुम भी बड़े वो हो यार, आखिर वे भी तो...!" वह उलाहना देती हुई बोली।

रामघाट तिरे से आ रहे मानस पाठ आज उनके अंदर गहराई में उतर रहे थे, पर मन की मंजिल को ओझल करते हुए ...नर तन सम नहिं कवनिउ देही, जीव चराचर जाचत तेही...

2

बेर के झुरमुट में आए दो मिनट हो चुके थे; रामू था कि मंजरी की आंखों में गड़े जा रहा था।

"पागल हो गए हो क्या, इस तरह क्यों घूरे जा रहे हो मुझे? क्या जो मुझे पहली बार देख रहे हो!" मास्क के अंदर से मंजरी की बेचैनी बाहर आई। पांच महीने बाद दोनों अपनी पहली, और पसंदीदा, मिलन स्थली पर आए थे। दोनों को कोविड अस्पताल में सेवा देने का अनुभव था; कोरोना के चढ़ते ग्राफ के महीनों में दोनों मास्क धारण कर ही बाहर निकले थे।

"माशा अल्लाह!" पिंक मास्क वाली मंजरी को जी भर देख लेने के बाद रामू के मुंह से निकला, उसकी आंखों में टकटकी लगाए ही।

"क्यों? माँ बनने वाली हूं क्या!" मंजरी शरारत पर उतर आई।

"लड़की ही तो माँ बनती है," उसके चेहरे से विस्मय विस्थापित होकर मुस्कान आ गई।

"तुम्हें मेरी कसम, सच-सच बताओ मुझे इस तरह क्यों देख रहे हो? मुझे डर लग रहा है कहीं तुम्हारी नजर न लग जाए!" वह मनुहार करने लगी।

"तुझे मेरी नजर नहीं लग रही है, तुम्हारी आंखों से मेरी आंखें हट नहीं पा रही हैं!" बोलकर उसने पलकें झपकाईं, परीक्षण करने कि कहीं उसकी पलकें ही न जड़ हो गई हों।

"क्यों, मेरी आंखों में कोई खोट आ गई है क्या!" उसकी आवाज में संशय सवार हो गया; बार-बार आंखें बंद करती खोलती हुई बेचैन हो उठी।

"ओ माय डियर मंजरी, तुम समझ नहीं पाओगी!" बोलकर वह मंजरी की आंखों में फिर से गड़ गया, "स्कूल के जमाने से ही मैं तुम्हें देखता आ रहा हूं, सच कह रहा हूं आज तुम्हारे सौंदर्य में समझो सितारे उग आए हैं! इस वक्त तुम दुनिया की सबसे खूबसूरत लड़की लग रही हो, बेशक!" मंजरी पर मर मिटने-सा होते हुए उसने कहा।

"सो मुझमें आज तुम्हें क्या कुछ नया दिख रहा है?" वह कुछ भी नहीं समझ पा रही थी।

"मास्क से तुम्हारा पूरा फेस ढका हुआ है, सिर्फ आंखें दिख रही हैं; सच में तुम्हारी सारी सुंदरता आज आंखों में ही उमड़ आई है!" मंजरी की आंखों में सम्मोहित होते हुए उसने कहा, अब आसमान की ओर सिर उठाकर बोलने लगा, "मेरी तो इच्छा हो रही है आज सारी दुनिया के लिए घोषणा कर ही दूं कि लड़कियों के सौंदर्य का मूल तब प्रकट होता है जब सिर्फ उसकी आंखें दिखती हों।"

"कोरोना वार्ड में भी तो तुम मुझे मास्क में ही देखा करते थे?" मंजरी

ने याद दिलाई।

"बट वहां तो तुम बॉडी कवर और फेस शील्ड में होती थी, एक-दो बार सिर्फ मास्क में आई थी; पर तब करोना के सिवाय दिखता ही क्या था? लेकिन आज तुम्हारी खूबसूरती तो पूरे शबाब पर है!" वह बोलते रहना चाहता था, मंजरी के सौंदर्य-सम्मोहन में पड़े-पड़े।

"अच्छा! एक ही लड़की के मास्क वाले चेहरे और फेस शील्ड वाले चेहरे में भी फर्क नजर आता है लड़कों को!" वह मुग्ध होकर बोली।

"अरी पगली, मास्क लगे चेहरे में लड़की की सुंदरता नए रंग-रूप में निखर आती है," सौंदर्य विशेषज्ञ भांति वह बोलता गया, "और तूने आज पिंक कलर के चेक वाला मास्क लगा रखा है, ऐसी खूबसूरत मास्क वाली लड़की पर कौन नहीं मार मिटेगा डियर!"

"इसलिए तो! पिछले एक महीने से देख रही हूं शहर में लड़कियां धारीदार चेक वाले रंग-बिरंगे मास्क धारण कर निकलने लगी हैं," वह आश्चर्यपूरित मुस्कान के साथ बोल रही थी, "अच्छा, तो अब जान पाई मास्क की दुकानों में लड़कियों की भीड़ क्यों लगी रहती है!"

"तो अपनी बस्ती के लिए हम लोग एक बड़ा काम कर सकते हैं; बेकारी के दिनों में बस्ती की महिलाओं-लड़कियों को क्यों न रंग-बिरंगे खूबसूरत मास्क बनाने की ट्रेनिंग दी जाए, शहर में बेचकर उन्हें थोड़ी-बहुत आमदनी का सहारा मिल जाया करेगा।" बोलते हुए उसके चेहरे में चमक आ गई।

"मैं कल से ही लड़कियों का ग्रुप बनाती हूं।" आंखों को चारों तरफ नचाती हुई वह बोली। चंचला आंखें; दुनिया को ईश्वर का सबसे खूबसूरत तोहफा! उसकी चंचल आंखों में रामू फिर से खो गया। रामू को फिर से आंखों में डूबा हुआ पाकर वह रहस्यमयी मुस्कान में बोली, "अच्छा है आज तुम मेरी आंखों से ही तृप्त हो जाओ, तुम्हारी मनमानी से छुटकारा तो मिले!"

"मनमानी?" रामू अबूझ बना रहा।

"अरे केंटीन कांड तुम भूल गए? सिर्फ वही क्यों, इस बेरी के झुरमुट में भी तो, दो साल पहले!" वह लजाती हुई बोली।

"मंजरी," उसे भरपूर नजरों से देखते हुए वह बोलता गया, "कोरोना काल में यह जगह अब तो कुछ ज्यादा ही शांत-निर्जन जान पड़ रही है! हम दोनों आज वैसी ही कोई चाहत लिए आए हैं न?"

"यह जगह तो सचमुच लाजवाब मिलन-स्थली बन पड़ी है, बिल्कुल

आजाद!" वह शरमाकर बोली।

"हां मंजरी, मेरे सामने तुम्हारी आंखें अभी वैसी की वैसी हैं, दुनिया की सबसे खूबसूरत मंजिल सी!" रामू के मुख-मंडल में सदियों से संपृक्त रूमानियत आ टपकी; आगे प्रेम दर्शन में भींगता गया, "ऐ कोरोना तुझे सलाम! इस दुनिया में मोहब्बत का नया नजरिया पेश करने के लिए; सच में लड़कियों की असली खूबसूरती तब जाहिर होती है जब उसकी सिर्फ आंखें दिखती हों! हां आंखें, यही तो है सच्चा प्रेम पथ! इसमें उतरकर ही मोहब्बत की दुनिया में बादशाहत हासिल हो सकती है; आमीन!" उसने दोनों हाथ आसमान की ओर फैला दिए; जैसे नदी किनारे श्मशान घाट की दूसरी दिशा में कोई सूफी प्रकट हुआ हो, मृत्यु के विपरीत जिंदगी की नई राह दिखाने।

उमंग में उतरने का मन बना रही मंजरी के मोबाइल में मैसेज मिलने का स्वर फूटा। उसने मैसेज बॉक्स देखा; शायनी का मैसेज था ...सहज कब से रामू का नंबर मिला रहा है, स्विच ऑफ बता रहा है? और राजकुमारी जी तुम्हारा मोबाइल भी तो आउट ऑफ रीच दिखा रहा है! इतने दिनों बाद आज पूरी कीमत ही वसूल लेनी है क्या! समथिंग अर्जेंट प्लीज कॉल...।

वह शायनी का नंबर मिलाने लगी। स्क्रीन पर अचानक शायनी की जगह परवेज चमकने लगा, परवेज का कॉल था, '...अरे मंजरी! जनाब मोबाइल बंद कर किस दुनिया में पड़े हैं! सोशल मीडिया में किसी ने एटम बम छोड़ रखा है, हर जगह वायरल हो रहा है; शक की सुई तो कोरोना-मंडली के मत्थे ही मढ़ेगी? यह खुराफात बड़ी महंगी पड़ेगी हम सभी को।'

"बट ऐसा किस बुद्धू ने किया है?" वह अवाक थी।

"...अरे समझो किसी ने हैवी एटम बम छोड़ दिया है; लिखा है वैज्ञानिक शोध में सामने आया है यदि लॉकडाउन दस-पंद्रह दिन पहले होता तो कोरोना संक्रमितों की संख्या आज के पचास लाख के आंकड़े का एक चौथाई ही होती! और मौत का आंकड़ा भी बहुत कम होता; आगे यह भी लिख मारा है एक सौ पैंतीस करोड़ लोग अभी भी करोना की जद से बाहर हैं और यह किसी की मेहरबानी की बदौलत नहीं हिंदुस्तानी खान-पान कर्म-धर्म के बूते हैं; अंत में तो बड़ा-सा बम पटक दिया है कि भोपाल कांड के कारण ही लॉकडाउन दस-पंद्रह मार्च से टालकर पच्चीस मार्च किया गया" आगे बोलते हुए परवेज की आवाज में घबराहट सनी हुई थी "मंजरी बहन, रामू को मैसेज करो घर से बाहर ना निकले; फिलहाल शक तो उसी पर

जाएगा, उसके पीछे लोग पड़ चुके होंगे!" बोलते-बोलते परवेज का कॉल कट हो गया, लगा वह खुद किसी मुसीबत में फंस गया हो। वे दोनों बाइक की तरफ बढ़ चले, तेजी से।

"रामू!" बाइक के पास आकर उसके मुंह से निकला; आगे के शब्द ना निकल पाए जैसे हलक में कुछ अटक गया हो। वह एकटक उसे देखे जा रही थी, बोल पड़ी, "क्या जरूरत थी सोशल मीडिया में खेल खेलने की? हम तुम उस दुनिया के खिलाड़ी नहीं हैं न! किस वैज्ञानिक ने तुम्हें बताया है यह सब! और यह भोपाल कांड क्या है? वही जो सोशल साइंस में कहीं पढ़ा था हम लोगों ने, सन् उन्नीस सौ चौरासी में यूनियन कार्बाइड वाली भोपाल गैस त्रासदी?" बोलते-बोलते उसने उसके दोनों हाथ थाम लिए; जैसे कहना चाहती हो वह उसके साथ मजबूती से खड़ी है।

"भोपाल गैस कांड नहीं मंजरी!" मंजरी को बाँहों के घेरे में लेते हुए उसने कहा, "अभी मार्च महीने में भोपाल में सरकार पलट की जो घटना घटी थी उसे मैंने भोपाल कांड का नाम दिया है; मेरा मानना है यदि वह दुर्घटना नहीं घटती तो अभी कोरोना का विस्तार इतना तीखा नहीं होता..." उसके बोलने के बीच में ही वह भयातुर होकर बोली, "बाइक स्टार्ट करो, हमें तुरंत घर चलना चाहिए!" वह हड़बड़ा उठी; कहीं अपनी नई दुनिया सँवरने से पहले ही उजड़ न जाए।

थोड़ी ही दूर स्थित रामागमन कुटीर से मानस पाठ मंजरी के कानों में तेज पड़ रहे थे; मानस के दोहे आज उसे पहली बार सार्थक प्रतीत हो रहे थे, रामू के संदर्भ में ...जानइ ब्रह्म सो बिप्रबर...।

3

"भोपाल: कोरोना" इस शीर्षक से सोशल मीडिया में पोस्ट डाला गया था। आगे एक लंबे पैरा में विज्ञान सम्मत और गणितीय पद्धति से विश्लेषण करते हुए लिखा था ...यदि 10-15 मार्च तक लॉकडाउन होता तो कोरोना को कुछ ही शहरों में घेरकर एनकाउंटर किया जा सकता था, स्वत: वह दूसरे देशों के लॉकडाउन के सापेक्ष कम कालावधि का होता और तब यहां 80 करोड़ लोगों की आजीविका लंबे समय तक औंधे मुंह नहीं पड़ी रहती... कल चार बजे किया गया वह पोस्ट शाम होते-होते वायरल हो चुका था; इतना कि रामघाट से दिल्ली तक के कई नेताओं के चेहरे में घनघोर अंधेरा उतरने लगा, उजाले

में ही। पोस्ट डालने वाले का कोई ठौर-ठिकाना नहीं पता चल पा रहा था। जिस नंबर से पोस्ट डाला गया था वह भी गुमसुम पड़ा था। पार्टी वालों ने पकड़ बनाने में देरी करना ठीक नहीं समझा; रात दस बजे मंथन-मंच के परम पुरुष श्री काशीनाथ ने पार्टी अध्यक्ष को सूत्र पकड़ा दिया, "यह भयादोहन कोरोना-मंडली से इतर किसी का हो नहीं सकता!" इस पोस्ट के वायरल होने से पार्टी अध्यक्ष हरेन्द्र ठाकुर शाम से ही परेशान थे। मंथन पुरुष के रहस्योद्घाटन से वह बेचैन थे ही, रात्रि साढ़े ग्यारह बजे पार्टी आलाकमान के 'त्वरित कार्रवाई' के आदेश के बाद निद्राहरण का शिकार भी हो गए। रात्रि बारह बजे ही उसने 'भारत उदय' ग्रुप में मैसेज डाल दिया ...कल सुबह साढ़े दस बजे कार्यकारिणी की बैठक मंथन सभागार में होगी, सोशल मीडिया में वायरल हो रहे पोस्ट 'भोपाल कांड' का तोड़ खोजने को।

"....." अपनी कुर्सी पर कब के बैठ चुके पार्टी अध्यक्ष निशब्द ही रहे; क्रोधमय लालवर्णी मुखमंडल स्वयं शब्दमान दिख रहा था।

"भोपाल टाइटल से पोस्ट डालने वाले व्यक्ति की सटीक पहचान का कार्य पूरा हुआ कि नहीं?" शहर अध्यक्ष हरदेव शाह तमतमा उठे, अपनी असीमित ताकत में उफान महसूस करते हुए।

"साइबर क्राइम टीम कल से ही भिड़ी हुई है," बोलते हुए अध्यक्ष महोदय नॉर्मल दिखे, "पहचान तो आज दोपहर तक उजागर हो ही जाएगी; इस पोस्ट को डालने वाला शख्स चाहे जो भी हो, भोपाल में लोकतंत्र की जीत को भोपाल कांड कहने का दुस्साहस कैसे कर सकता है! इतनी बड़ी हरकत?" बोलते-बोलते वह फिर क्रोधमय हो उठे।

"मेरा तो मानना है भोपाल में यदि लोकतंत्र की जीत नहीं हुई होती तो देश में कोरोना का रौद्र रूप होता," जिला सचिव भी पीछे नहीं रहना चाहते थे।

"आलाकमान से हमें दो निर्देश मिले हैं; इस वायरल पोस्ट का तोड़ तैयार करना और यह देखना कि ऐसे लोगों का क्या किया जाना चाहिए?" धीमी आवाज में आरंभ करते हुए अंतिम वाक्य में अध्यक्ष की आवाज ऊंची होती गई; मंथन सभागार में लंबा मौन पसरा रहा, अध्यक्ष ने पुचकारने-ललकारने की भाव-भाषा में कहा, "बोलिए, बोलिए! कुछ तो सोचिए; हमारी कार्यकारिणी सूझ-बूझ वाले लोगों से समृद्ध है!"

"सीधा-सपाट बोलूं तो यह सब पुरानी पार्टी वालों की कारस्तानी है; वहीं से ऐसा बेनामी पोस्ट डाला जा रहा है!" कोषाध्यक्ष हरिराम गुप्ता ने उबलते

हुए कहा।

"भोपाल में लोकतंत्र की जीत तेईस-चौबीस मार्च की मध्यरात्रि तक हो ही गई थी, उसके बाद तो लॉकडाउन लगा ही दिया था?" मंथन-मंच के विचारक रामनाथ आलोक तर्क में सवार दिख रहे थे, "मेरे हिसाब से लॉकडाउन में यदि दस-बीस दिन की देरी हुई भी है तो उसके लिए पुरानी पार्टी ही जिम्मेदार है।"

"वह कैसे?" युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष रवि मोहन ने आँखें तिरछी करके पूछा।

"वह ऐसे कि जब पुरानी पार्टी को पता था उसके काफी एमएलए बगावत पर उतर आए हैं तो उसे अपनी नैया बचाने का असफल प्रयास नहीं करना चाहिए था!" मंथन-मंच के शिखर पुरुष काशीनाथ जी ने कहा तो उसके चेहरे में व्यंग की रेखाएं उग आईं, आगे बोलते गए, "वे लोग पंद्रह-बीस मार्च तक अपनी सरकार बचाने के बेतुके प्रयास में लगे रहे; आदरवाइज वाजिब समय पर लॉकडाउन लग ही जाता!" आगे वीरोचित भाव प्रदर्शित करते हुए कहा, "फिर तो हम कोरोना के बच्चे को ही दबोच देते, उसे जवान होने का समय ही नहीं मिलता!"

"....." काशीनाथ जी के तर्क पर सभागार में सभी एक-दूसरे को देखने लगे, अभूतपूर्व शांति के साथ।

"उस बेहुदे-बेतुके-बेढंग-बेगैरत-बददिमाग पोस्ट की काट हमारे मंथन मंच द्वारा आज शाम तक खोज लिया जाएगा; कृपया इस पर कोई सुझाव यहा न दें।" मंथन मंच के शिखर पुरुष काशीनाथ ने अप्रसन्नता जाहिर की, आगे बोलते रहे, "पोस्ट डालने वाले लंपटों के खिलाफ विधिसम्मत कार्रवाई के अतिरिक्त भी कार्रवाई होना माँगता है इस केस में!" शिखर पुरुष ने 'भी' शब्द पर जोर डालते हुए कहा। तभी सभागार में प्रभारी मंत्री रामजी राम का आगमन हुआ। पूरी कार्यकारिणी सम्मान में उठ खड़ी हुई, चेहरे में प्रफुल्लता-उत्सुकता के पुष्प गुच्छ-सा लहराते हुए। अध्यक्ष के बगल में उससे ऊंची कुर्सी लगाई गई। मंत्रीजी कठोर मुद्रा के साथ विराजमान हुए।

"मैं दो ही बातें बोलने आया हूं; इस लंपट पोस्ट की काट-मार के तौर पर कई-कई पोस्ट शाम तक सोशल मीडिया में झंडा फहराने लगेगा, बस आप सभी से रिक्वेस्ट है उसे देश के कोने-कोने तक फॉरवर्ड करने में लग जाइए, मॉनसून की बरसात होने जैसा!" बोलकर मंत्रीजी ने सभी की तरफ हाथ जोड़े, कि आप सभी की बदौलत ही पार्टी का प्रचंड जनाधार हो पाया है, फिर

हाथ नीचे करके बोले "बात रही उस गैंग के खिलाफ सख्त कार्रवाई की, तो कान खोलकर सुन लीजिए रामघाट जल्द ही गवाह बनेगा कि अभिव्यक्ति की अति आजादी का क्या अंजाम होता है!" अब अध्यक्ष के आसन की तरफ झुककर बोले "अध्यक्ष महोदय अन्यथा मत लीजिएगा, देश में हर सेक्टर में तीव्र गति से काम हो रहा है; आप भी शीघ्रता करें, नित-नई बात लेकर जनता के बीच जाइए, तभी हम जनता के मन-मस्तिष्क-मुख से कोरोना का काँटा निकाल फेंक पाएँगे, अन्यथा पार्टी के चढ़ते ग्राफ को नीचे आते देर नहीं लगेगी! फिलहाल जाने की अनुमति चाहूंगा, सावरकर चौक पर निःशुल्क मास्क वितरण का शुभारंभ होना है, अभी ग्यारह बजे।" मंत्रीजी के प्रस्थान करते ही अध्यक्ष ने जय हिंद, जय भारत बोलकर बैठक समाप्त कर दिया।

रामघाट तिरे से आ रहे मानस पाठ पर मंत्रीजी ने बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया...सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाषंड, मान मोह मारादि मद ब्यापि रहे ब्रह्मांड...।

4

रामघाट में समय जैसे सांस लेता था, थोड़ी देर ठहरकर निकल जाता। दिन चुपके से आता धीमे से प्रस्थान कर जाता; सप्ताह सब छोड़कर निकलता जाता। कुछ ठहर-सा गया था तो कोरोना! देश के कोने-कोने में राजनेताओं के मुंह की चौड़ाई बढ़ती गई थी, सुबह से रात तक डकारते-रंभाते। सत्ता से बाहर हो चुके नेताओं के मुंह भी थकने का नाम नहीं ले रहे थे; वे ऐसे वचन-बोली बोलते जो किसी भी जीव-जंतु से मेल नहीं खाते। देश के कोने-कोने में रंग-बिरंगे पर्व-त्यौहार उमंग के साथ आते और उदासी छोड़कर चले जाते। देश के कुछ हिस्से में वर्चुअल रैली के सफल प्रयोग के बाद उसका भौतिक प्रयोग शुरू हो चुका था। नेताओं-प्रतिनेताओं की अपनी डफली अपने राग होते। संसद का मॉनसून सत्र भी बहुमत के मॉनसून में झमाझम बरसकर निकल गया, चंद दिनों में ही देश में कई नियमों-अधिनियमों की बरसात करते हुए। कृषि कानून भी संसद में अपना चेहरा दिखाकर फुंफकार उठा था, किसानों की किस्मत बदल डालने के लिए।

देश के आकाश से मॉनसून के बादल छँट चुके थे, चहुं ओर हरियाली की चादर बिखरी पड़ी थी। हां, देश की बड़ी आबादी के मन की हरियाली महीनों से गायब थी। कोरोना वैक्सीन नाम से हरियाली का टुकड़ा भी कहीं दूर झिलमिलाता दिख रहा था। वैक्सीन बनाने में लगे वैज्ञानिक चाहे जिस मिट्टी या

देश या धर्म के हों राजनेतागण इसे अपनी ओर से भविष्य में दिए जाने वाला सबसे बड़ा उपहार बता रहे थे, कुछ-कुछ भगवान द्वारा वरदान दिए जाने की मुद्रा और हस्त-तरंग बनाते हुए। देश के हर मुद्दे ने कहीं-न-कहीं शरण ले रखी थी, चाहे राजनेताओं की शेखी में या फिर प्रतिनेताओं की हेठी में; हर प्रश्न, हर प्रसंग, भरे-पूरे परिवार जैसे अठखेली कर रहे थे, कश्मीर से कन्याकुमारी तक। कोई अनाथ अनजान हो चुका था तो वह था कोरोना! कोरोना को अनाथ होता देखकर कोरोना-मंडली भी अदृश्य-सा बैठ लिया, बिना किसी बड़ी बहस के।

देश-प्रदेश में चाहे जो हवा चलती रहे, रामघाट की अपनी हवा होती है, बात-बतंगड़ की प्रदूषित हवा से मुक्त। खुद के बनाए रास्ते पर अपनी गति से बढ़ता रामघाट! पर 15 अगस्त के बाद सितंबर-अक्तूबर महीने में रामघाट की अपनी हवा भी जैसे ठहर-सी गई; सार्वजनिक जीवन की जीवंतता जैसे स्वयं ही वनवास के रास्ते चल पड़ी थी। रामघाट की गलियों-सड़कों, हाट-बाजारों में भीड़ बढ़ती गई, और बढ़ता गया था हर चेहरे का मौन। सड़कों-गलियों में चलते मूक-मौन जन! जैसे उनका जीव तत्व किसी दूरस्थ यमदूत ने दूर से ही सोख लिया हो। कोरोना-मंडली के सदस्य ऐसे जीवनहीन समय में तरंग संवाद के सहारे ही जीने को मजबूर थे। यदा-कदा वे आशंकित हो उठते, ऐसे में तो रामघाट कहीं मरघट में न तब्दील हो जाए!

15 अक्तूबर, शांत-शीतल दिन; गांधी चौक की फिजां बदल गई एकाएक। राह चलते लोग एंबुलेंस पर टूट पड़े, लगा कोरोना वैक्सीन बंट रही हो। रामघाट का मिजाज तो ऐसा हुड़दंग वाला कभी नहीं रहा; कोरोना के लंबे दौर ने रामघाट के भी जिनोम में कहीं परिवर्तन तो नहीं ला दिया?

"अरे भई मैं बार-बार कह रहा हूं मुझे सर्दी-जुकाम-बुखार कुछ भी नहीं है! फिर क्यों मेरा कोरोना टेस्ट कराने पर तुले हो?" एंबुलेंस के पास खड़ा एक नौजवान गर्म हो चला, फिर गरज उठा, "मैं नहीं देता अपना सैंपल; किस बेढब ने भेजा है तुम्हें!"

"अरे मेरी तो इसने एक नहीं मानी, सैंपल ले ही लिया, जबकि मेरा पॉजिटिव होने का दूर-दूर तक कोई चांस है नहीं!" बिल्कुल स्वस्थ दिख रहा एक अधेड़ व्यक्ति बिफर पड़ा।

"मैं भी तो बिल्कुल भला-चंगा हूं! मुझे देखकर कोई कह सकता है मुझे कभी कुछ हो सकता है? पर इसने कम्यूनिटी सैम्प्लिंग की बात करके मेरा भी सैंपल ले लिया है!" एक तगड़ा-छरहरा नौजवान आपा खो बैठा तो अपनी

बनियान तक उतारने लगा।

"इन मेडिकल वालों को आज अचानक क्या हो गया है? चौक-चौराहों पर एंबुलेंस खड़ी करके धड़ाधड़ सैंपल इकठ्ठे किए जा रहे हैं!" स्कूटी से जा रहा एक बुजुर्ग रुकते हुए बोला, फिर चलते-चलते बोला, "विवेकानंद कॉलोनी में तो लोगों ने एंबुलेंस को बैरंग लौटा दिया!" "उधर बस्ती में तो अभी-अभी बड़ा हंगामा खड़ा हो गया है मेडिकल टीम के साथ!" एक कार वाला रुकते हुए सूचना देता गया, "बस्ती वाले कह रहे हैं जब टेस्टिंग की जरूरत थी तब तो जिला अस्पताल दौड़-दौड़ कर पैर टूट गए, अब आए हो अंबेडकर चौक में अपना संविधान बघारने।"

"समझो लोग मेडिकल वालों का लिहाज कर रहे हैं, क्योंकि डॉक्टर-नर्सेस ने छह महीने में कोरोना की लड़ाई में दिन-रात एक कर दिए हैं, इसलिए इस ऊटपटाँग हरकत पर तोड़-फोड़ नहीं कर रहे हैं! अदरवाइज..." गांधी गार्मेंट्स वाले भी बाहर निकलकर आपत्ति जताने के अंदाज में बोले।

"....."

"....."

देखते-ही-देखते गांधी चौक पर हंगामा बढ़ता गया। लाचार होकर एंबुलेंस टीम को पीछे हटना पड़ा। एंबुलेंस के मुड़ते ही कई लड़के उस पर सवार हो लिए, चिल्लाते हुए, "साले यह तो बताओ सैंपलिंग के लिए तुम्हें भेजा किसने है?" दो लड़के ने बॉडी कवरधारी की बांह पकड़ ली, "सही-सही बताओ ये सब क्या चल रहा है!" तब तक एंबुलेंस जिला अस्पताल के गेट तक पहुंच चुकी थी। वहा पर तो एक बड़ी भीड़ पहले से ही हंगामा बरपा रही थी ...सही-सही बताइए यह फर्जी सैंपलिंग क्यों हो रही है...। मुख्य द्वार पर तैनात पुलिस वालों के वश में नहीं था इतनी बड़ी भीड़ को रोकना। कुछ नौजवानों ने मुख्य द्वार की दोनों ग्रिल खोल दीं। पाँच मिनट के अंदर सड़क की भीड़ अस्पताल के अंदर दाखिल हो गई।

वार्ड के आगे अचानक इतनी भीड़ देखकर अस्पताल के डॉक्टर-नर्स कंपाउंडर सभी सकते में आ गए; तेजी से आगे-पीछे, दाएं-बाएं सरकने लगे। सफाई कर्मचारियों-संविदा कर्मियों ने अपनी जगह से ना हिलने की हिम्मत दिखाई। इस संवर्ग के कुछ उत्साही कर्मचारी सामने आ गए; सरकारी सेवा में सीखे शिष्टाचार और निज लोकाचार को आजमाते हुए हाथ जोड़कर पूछने लगे, "इतनी भीड़ क्यों लगा रहे हैं? हंगामा क्यों किए जा रहे हैं! नाराजगी का कारण

तो बताइए।"

"भाई साहब हम लोग आप लोगों से भिड़ने नहीं आए हैं, हमें तो सीएमओ साहब से बात करनी है" भीड़ से आवाज आई।

"या तो हमें उसके चेंबर में जाने दीजिए या फिर उन्हें बाहर आने को बोलिए," भीड़ से दूसरी आवाज थी, जोरदार!

"बाहर आते हैं जरूर आते हैं, आने लायक कारण होगा तो आज भी आएंगे," अधेड़ उम्र के एक कर्मचारी ने कहा।

"मेरे पापा में कोरोना के सभी सिम्प्टम्स दिख रहे हैं, कल से ही टेस्टिंग सेंटर के चक्कर काट रहा हूं; आज हमारे मोहल्ले में एंबुलेंस वाले पहुंचे टेस्टिंग किट लेकर, हमने पापा के लक्षण बताते हुए टेस्ट के लिए प्रार्थना की तो उन लोगों ने मना कर दिया, कहा ये रैंडम टेस्ट टीम है, अपने पापा का बाद में करा लेना।" भीड़ से आगे आकर एक गोरा-चिट्टा लड़का आग-बबूला हो उठा, फिर रहस्य खोला, "मुझे पता चला कि हमारे पीछे वाली गली में भी ऐसी ही एंबुलेंस आई थी, पूछताछ करने वहा गया तो मेरा ही सैंपल ले लिया, जबरदस्ती!"

"जुलाई की बात है मम्मी का टेस्ट कराने में मेरे तो पसीने छूट गए थे; अभी भतीजी को लेकर कल से अस्पताल के चक्कर काट रहा हूं, कोई माई-बाप नहीं है और वहां पटेल स्क्वायर पर धड़ल्ले से किसी का भी सैंपलिंग हुए जा रहा है?" भीड़ के पीछे से किसी ने चिल्लाकर कहा। "यह क्या तमाशा है? भले-चंगे लोगों का सैंपल लेकर टेस्ट किट खराब किया जा रहा है!" भीड़ के बीच से गुस्से का गुबार फट पड़ा।

"अरे भई सरकार की किट है, सरकार जहां चाहेगी वहीं तो इस्तेमाल होगी," कर्मियों के बीच से रौबदार आवाज टपक पड़ी।

...यह मनमानी नहीं चलेगी, नहीं चलेगी... भीड़ उत्तेजित होने लगी। पीछे से गमले टूटने और गार्डन के कमजोर ग्रिल उखाड़ने-पटकने की आवाज आने लगी। कर्मियों ने भी धीरे-धीरे मैदान छोड़ दिया। अफरा-तफरी मच गई। बरामदे से झांकते एक डॉक्टर मोबाइल में किसी से बात करते-करते तेजी से वापस हो लिए, "कुछ भी हो सकता है! हां हां, आगजनी भी कर सकती है बेकाबू भीड़!"

भीड़ में कोलाहल चरम पर पहुंचने लगी। भीड़ को चीरते हुए यानी भीड़ से बचते हुए एसपी अचानक बरामदे में पहुंच गए; 'निशांत कुमार आईपीएस' के चमचमाते अक्षरों से टकराकर सूरज की किरणें भीड़ की ओर अठखेली करने लगीं। नाम के ऊपर लगा पुलिस पदक बिल्कुल नया लग रहा था। भीड़ में

लोग आपस में बुदबुदाए ...इस बार पंद्रह अगस्त को राष्ट्रपति महोदय ने दिया होगा कोरोना को हराने के लिए...। पलक झपकते ही भीड़ के चारों ओर पुलिस टुकड़ी तैनात हो गई।

"कोरोना का आंकड़ा एक लाख पर डे के करीब पहुंच गया है! और यहां रामघाट के लोग हैं कि एक-दूसरे पर चढ़े जा रहे हैं; आप लोगों को एपिडेमिक एक्ट में अरेस्ट किया जा सकता है!" एसपी की कड़क आवाज भीड़ के पीछे तक पहुंच गई। एपिडेमिक एक्ट की बात सुनते ही भीड़ में हलचल हुई। सभी एक-दूसरे से तीन-तीन फीट की दूरी पर खड़े होने लगे। बात एसपी की समझ में आ गई, एपिडेमिक एक्ट और अरेस्ट का इन लोगों पर कोई असर नहीं पड़ने वाला है। अस्पताल के अंदर से आए डीएसपी ने एक स्लिप एसपी को थमाई; एसपी को माजरा कुछ-कुछ समझ में आने लगा। वह सीएमओ चेंबर की तरफ बढ़ चले।

"सीएमओ साहब! आप लोगों की कार्यशैली का खामियाजा पुलिस विभाग क्यों उठाए?" सीएमओ के चेंबर में बैठते ही एसपी नाराज हो उठे।

"एसपी साहब, आप नाराज हो जाएंगे तो कैसे चलेगा?" सीएमओ शुरू से ही विनयशील थे।

"हेल्थ डिपार्टमेंट की अकर्मण्यता का बर्डन पुलिस डिपार्टमेंट क्यों ढोए?" एसपी की नाराजगी बरकरार थी, आगे आवाज धीमी करके कहा, "आइ कूड नॉट अंडरस्टैंड व्हाय यू आर डूइंग सैम्प्लिंग रैंडमली एंड सडेंलि?"

"वी आर जस्ट कंप्लाइंग द हुक्म ऑफ..." बोलकर सीएमओ ने पहले प्रदेश फिर देश की राजधानी की तरफ आखें घुमाईं; बारी-बारी से दो बार, तीस डिग्री का कोण बनाते हुए।

"राजधानी से क्या हुक्म है सिमटम्स वालों को छोड़कर हेल्थी लोगों का टेस्ट करो?" एसपी की आवाज में खीज थी।

"कुछ ऐसा ही समझ लीजिए।" सीएमओ ने कहा तो होंठों में दबी-सी मुस्कान झांकने लगी।

"बट व्हाई?" एसपी के लिए पहेली अबुझ होती गई।

"पहले बात को समझिए एसपी साहब! एज आई कुड गेस..." एसपी की ओर झुकते हुए सीएमओ बोलने लगे, "पिछले दो दिन से आंकड़ा अठानबे हजार से आगे जाने को बेताब है; मुझे लग रहा है," बोलकर सीएमओ ने फिर पश्चिम दिशा में आंखों की पुतली मटकाई, फिर बोले, "वहां तय हुआ होगा पर डे का

आंकड़ा किसी भी सूरत में एक लाख टच नहीं होने देना है!"

"बट यहां जनता को कैसे कनविंस करेंगे!" अब एसपी की मुख-मुद्रा सामान्य होती गई।

"आप आ गए हैं फिर तो आपके सामने समझाना आसान होगा।" सीएमओ का आत्मविश्वास जाग उठा। चेंबर से निकलकर दोनों भीड़ की ओर बढ़ चले।

"आप लोग शांत हो जाइए, प्लीज!" एसपी ने नम्रतापूर्वक कहा; उनके कड़कपन के विपरीत भाव-भंगिमा देखकर भीड़ में मचा कोलाहल थम गया।

"देखिए सबसे पहले तो हाथ जोड़कर मेरी विनती है जनता में भ्रम मत फैलाइए" सीएमओ ने हाथ जोड़ लिए, आगे बोले, "पहली बात तो यह कि जगह-जगह जो सैंपल लिए जा रहे हैं उसे कम्युनिटी सेंपलिंग कह सकते हैं," आगे सीएमओ की आवाज वैज्ञानिक लहजे वाली होती गई, "इससे कोरोना को बेहतर ढंग से समझने और कंट्रोल करने में एक नई दिशा मिलेगी; रही बात कोरोना सिम्टम्स वालों की तो मैं खुशखबरी देना चाहता हूं, यहां कोरोना वार्ड की संख्या में इजाफा किया जा रहा है, टेस्ट के बगैर ही ऐसे लोगों को आइसोलेशन वार्ड में भर्ती कराया जा सकता है!" बोलते-बोलते सीएमओ को आभास हुआ सामने भीड़ तो ऐसे मंत्रमुग्ध खड़ी है जैसे अपने प्रिय नेता को सुन रहे हो! सीएमओ के पास बोलने को कुछ और नहीं बचा था, उसने एसपी की तरफ देखा। एसपी ने भीड़ की तरफ हाथ लहरा दिया जैसे कह रहे हों चिंता मत कीजिए सबका भला होगा। चंद मिनट के अंदर अस्पताल में सब कुछ सामान्य हो चला; रामघाट में भी।

मानस पाठ में लगे भक्तगण मग्न हो पाठ किए जा रहे थे, समय-संदर्भ के सापेक्ष दोहे के अर्थ से अनजान बने हुए ...नर पीड़ित रोग न भोग कहीं, अभिमान विरोध अकार नहीं...।

5

दर्द और दवा की यात्रा आगे-पीछे ही चलती है; आगे चलकर दर्द थक जाता है या दवा से उसकी यात्रा थम जाती है। कोरोना वायरस की उत्पत्ति के साथ ही इसकी वैक्सीन की खोज के लिए मानव मस्तिष्क भिड़-सा गया था। कई देशों की लेबोरेटरी में वैक्सीन की खोज में वैज्ञानिकों ने अपने को दिन-रात झोंक दिया था, मानव जाति को इस अजीब दुश्मन से मुक्ति दिलाने को। कोरोना के चढ़ते ग्राफ के दिनों में लोगों की आंखें अखबारों-चैनलों पर गड़ी

रहती थीं, टीके की खोज वाली खबरों पर। कई देशों के वैज्ञानिक टीके की खोज में पसीने बहा रहे थे; स्वाभाविक ही वहां के लोगों को अपने विज्ञान पुरुषों पर फख्र था। भारतवर्ष में लोगबाग अपने धरती पुत्रों को दिन-रात जरूरी कामों में व्यस्त पाकर गर्व करते अघाते नहीं थे, शो उन वैज्ञानिकों पर बात करने का वक्त नहीं निकाल पाते! फिर भी देश में 'वसुधैव कुटुंबकम' का नारा जोरों पर होता। टीके की खोज में जी जान से लगी कंपनियों के शेयर भले ही डावांडोल होते रहते, टीके के भंडारण में लगी कंपनियों के शेयर ऊपर चढ़ते जा रहे थे; जाहिर है भारतीय कंपनियां टीके की खोज की अनिश्चितता के भंवर में फंसने के बजाय उसके उत्पादन और वितरण में ही अपना भविष्य संवारने लगी थीं। टीके की खोज में दूर देश के वैज्ञानिक जुटे थे, हिंदुस्तान में राजनेता उसका श्रेय लूटने में भिड़े थे; इस कदर कि सुबह उनकी जुबान में वैक्सीन शब्द चढ़ता तो शाम को ही उतरता। लोगों के कान में दिनभर में वैक्सीन शब्द कई-कई बार पड़ने लगे थे, इतना कि बीते फरवरी-मार्च के महीने में कोरोना शब्द भी उनके कान के पास फटक न पाए होंगे! प्रधानमंत्री के मुंह से जब-तब निकलते वैक्सीन शब्द से सत्ता-च्युत नेताओं को खुजली होने लगती; अपनी खुजली मिटाने की खातिर ऐसे नेतागण जनता को भ्रम में डाले रखने को ही अपनी जीत मानने लगते।

उन्हीं दिनों की बात है जब भारत में कोरोना एक लाख प्रतिदिन का आंकड़ा छू लेने से चूक गया था। जो एक बार चूक जाते हैं फिर इतनी जल्दी उठ नहीं पाते; कोरोना का आंकड़ा सतानबे-अठानबे से नीचे आना शुरू हो गया। तब लगने लगा जैसे लेबोरेटरी के गर्भ में पल रहे वैक्सीन की आहट से ही कोरोना ने पैर पीछे खींच लिए हैं! कोरोना के गिरते ग्राफ के दिनों में रामघाट में अभी भी रोज-रोज नए मामले आ रहे थे। झुकते ग्राफ के तीर नीचे शून्य की तरफ ही संकेत करते हैं; स्वाभाविक ही रामघाट में लोगों ने कोरोना का खात्मा मान लिया, टीका टाँकने से काफी पहले ही। ऐसे बेजान समय में घर से बाहर निकलते में भी लोगों ने मास्क से छुटकारा पाना शुरू कर दिया, बिना किसी बाहरी सलाह साक्षात्कार के ही। चूँकि तब मास्क मुक्ति का कोई ऐलान नहीं हुआ था, लोगबाग मास्क को मुंह से नीचे ठुड्डी में अटका भर देते थे। ऐसे मन-मोदक दिनों में पार्टी कार्यालय के मंथन-मंच के पुरू-गण ऊपरी कक्ष में कोरोना-विजय वाले स्लोगन-सूत्र गढ़ने में भिड़े रहते थे, विश्व-विजय प्राप्त कर लेने का आनंद-पान करते हुए।

पूरे रामघाट में सीएमओ और डिप्टी सीएमओ ही दो ऐसे व्यक्ति थे जो शांत-शीतल रामघाट में भी अशांत चित्त थे, पिछले दो-तीन दिनों से। यूं तो कोरोना महासंकट के चरण हिंदुस्तान में पड़ते ही सीएमओ खासे चल-चंचल प्राणी लगने लगे थे; दिन में कई-कई मीटिंग, शहर और देहात में अनेकानेक दौरों में व्यस्त रहते। परंतु दो दिनों से दोनों अधिकारियों के होश उड़ से गए थे। मामला रहस्यपूर्ण नहीं तो गुप्त किस्म का जरूर था; दोनों अपने तक ही सीमित रखने के लिए विवश थे। पूरा रामघाट विश्राम अवस्था में आराम फरमाने लगा था, उन दोनों को फिर से कठोर परिश्रम आरंभ करना पड़ रहा था। कठिन श्रम के सिवाय कोई उपाय भी तो ना था! दोनों अपने मन को आगे बढ़ने के लिए समझाने में लगे थे, अनिच्छापूर्वक ही सही; मन था कि अंदर से सुस्पष्ट अभिव्यक्ति दे रहा था ...किसी भी गीली वस्तु को उतना ही निचोड़ो जब तक तरल द्रव्य निकले, उससे आगे वस्तु-भंजन तय है!

"लेकिन सर यह तो ऑलमोस्ट इंपॉसिबल टारगेट है!" डिप्टी सीएमओ ने लंबी सांस लेकर कहा; काफी देर से माथापच्ची करने के बावजूद उसकी समझ में नहीं आ रहा था, आखिर इस अव्यावहारिक निर्देश का पालन कैसे कराया जाए।

"यस, इट इज क्वाइट इंपासिबल; अभी दिसंबर में तेरह दिन बाकी हैं, साल बीस में आंकड़े को करोड़ के नीचे रखना इतना आसान है क्या!" सीएमओ ने डिप्टी से सहमति जताई, आगे समर्पण करने की भाव-भंगिमा में बोले, "बट वि हैव टू रेस्पेक्ट द टारगेट।"

"देन हाउ वी विल प्लान टू गो अहिड?" डिप्टी शुरू से ही असमंजस में थे। "इंडिया का आंकड़ा तो कल रात तक सतानबे लाख पार कर चुका है, अभी भी तीस-पैंतीस हजार पर डे चल रहा है; इस रफ्तार से तो सप्ताह-दस दिन में ही देश का आंकड़ा करोड़ के पार होगा!" बोलकर सीएमओ अपना माथा सहलाने लगे, जैसे कोरोना उसके माथे पर रेंगता कोई कीड़ा हो। "सर मेरी समझ में नहीं आ रही है आखिर हमारा काम क्या है? कोरोना को मिनिमाइज करना या आंकड़े को!" डिप्टी अंदर से उबल पड़े दिखे। "कोरोना वॉरियर्स की बदौलत ही तो एक लाख पर डे वाला आंकड़ा आज तीस हजार से नीचे आने पर है!" सीएमओ शाबासी देने के अंदाज में बोले।

"आखिर सन् बीस में आंकड़े को जोड़-तोड़ कर करोड़ से नीचे रखने के पीछे क्या उद्देश्य है?" डिप्टी अबूझ जान पड़ा। "किसी ज्योतिषाचार्य ने ऊपर

बैठे 'बड़ों' को बहका दिया होगा, सन् बीस में कोरोना का आंकड़ा करोड़ पार करना अशुभ हो सकता है" बोलते हुए सीएमओ के होंठों में व्यंग्यात्मक हँसी तैर गई; गंभीर होकर बोले, "व्हाटशोइवर मेय बि द रिजन वी हैव टू कंपलाय द इंस्ट्रक्शन," "बट सर? सिम्टम्स वाले लोगों को छोड़कर फिर से विदाउट सिम्टम्स वाले का सैंपल लेने में कम झंझट है क्या!" बोलकर डिप्टी की पलकें ऊपर-नीचे फड़कने लगीं, जैसे कोई सच में उसका कचूमर ही निकाल देगा।

"पिछली बार भी फिगर को पर डे लाख से नीचे रखने के चक्कर में हेल्दी मास की सैंपलिंग कराई थी हम लोगों ने! तब कितना हंगामा झेलना पड़ा था।" सीएमओ ने कहा तो उसकी आंखों में भय की परछाई तैर गई, "वह तो एसपी साहब की कृपा कहिए जो भीड़ को समझा पाए; खैर तब आंकड़े को लाख से नीचे रखने में पूरा देश सफल भी रहा था।" बोलकर उसने हाथ जोड़कर ऊपर वालों की तरफ उठाया।

"पिछली बार तो दो-तीन दिन ही होल्ड करना था, सो कर दिया था, पर अभी तेरह-चौदह दिन आर्टिफिशियल सैंपलिंग करते रहना इतना आसान है क्या!" डिप्टी ने लगभग आत्मसमर्पण करते हुए कहा।

"इस बार तो एसपी भी बीच-बचाव के लिए नहीं आएगा।" कहते हुए सीएमओ चिंतित दिखने लगे।

"सर एक बार सीएमओ वाला ग्रुप चेक कीजिए, प्लीज; जरा पता तो चले बाकी जिलों में वे लोग कैसे हैंडल कर रहे हैं इस फरमान को?" डिप्टी ऐसे बोला जैसे कोई टिमटिमाती रोशनी देख पाने का प्रयास कर रहा हो, किसी अंधेरी सुरंग के दूसरी तरफ।

"ऐसे मामलों में सीएमओ ग्रुप कौन-सा तीर मार लेगा।" सीएमओ ने ग्रुप मैसेज चेक करते हुए कहा; आगे बुदबुदाते हुए मैसेज पढ़ने लगे ...चीयर्स अप फ्रेंड्स! ऊपर से क्लेरिफिकेशन आ गया है, एक्कतीस दिसंबर तक कोरोना का आंकड़ा एक करोड़ के नीचे रखने की कोई बाध्यता नहीं है... पढ़ते-पढ़ते उसकी बांछें खिल गईं, बोले, "अरे यार! ये तो कमाल हो गया!" फिर पढ़ने लगा ...कई प्रदेशों में हमारे साथियों का दबाव काम आया; जहां से एक करोड़ वाला हुकुम आया था वहीं से वापस भी हो गया है, इतना ही नहीं हम सभी के लिए राहत की बात यह भी है कि सरकार ने सफाई दी है कि ऐसे बेतुके लक्ष्य सरकार की ओर से नहीं दिए गए थे; संघर्ष और साथ देने के लिए सभी साथियों का धन्यवाद, कृपया इसे किसी और ग्रुप में फॉरवर्ड ना करें...।

मैसेज पढ़ना खत्म होते ही सीएमओ के चेहरे पर मुस्कान की फुलझड़ियां उगने लगीं, लगा पिछले दो-तीन दिनों की मायूसी और मनहूसपना को मुस्कान की धार से काट डालना चाह रहे हों। डिप्टी की तरफ देखते हुए उसकी आंखें छलछला आईं, अंदर उठे भावना के ज्वार को रोकते हुए बोले, "जिसका कोई नहीं रखवाला उसका ऊपरवाला!" सिर दर्दी वाले काम से मुक्ति पाया देखकर डिप्टी की भी आंखों में आंसू झिलमिलाने लगे; वह तत्काल जाने को हुए। उसके उठते ही सीएमओ ने हिदायत दी, "यह बात हम दोनों के बीच का है यार, प्लीज डोंट शेयर विद एनी ब्डी।"

दूर से आ रहे मानस के दोहे आज सीएमओ को काफी सुकून देते महसूस हुए ...कबहुँ कि दुख सब कर हित तार्कें...।

6

पर्व-त्योहार वाले अक्तूबर-नवंबर के रंग-बिरंगे महीने बेरंग ही छिप लिए थे, सालाना सुरंग में; दिसंबर भी बेगाने-सा बीता जा रहा था। कई दिनों से अंतरा दीदी घर नहीं आ रही थीं; वह अपने को स्लम एरिया वाले शिक्षा शाला में कैद सी कर ली थीं। अहम का अनुमान था एक-दो दिन स्कूल में रुक लेंगी तो दिसंबर की बढ़ती सर्दी में दीदी की बाल-सनक दूर हो जाएगी, फिर घर को लौट भी आएंगी। पर अब तो सप्ताह भर होने जा रहा था, और वह शाला से विमुख होने का नाम ही नहीं ले रही थीं! अब उसे दीदी पर खीज सी आने लगी ...जब सरकार ने विद्यालय खोलने की अनुमति नहीं दी है तो वह स्कूल में रुककर कौन-सा सतयुग ला रही है?

"दीदी, यहां तो कोई बच्चा है नहीं?" शाला में आते ही अहम चौंक पड़ा।

"तुम तो बड़े ज्ञानी हो! तुम्हें पता होना चाहिए अभी तक सारे स्कूल बंद ही हैं।" अंतरा ने छोटे भाई का मजाक बनाते हुए कहा, बड़े लाड़ से।

"वही तो! फिर तुम यहां क्या कर रही हो; अकेली-अकेली?" उसके मुंह से उत्तर समाहित प्रश्न निकल पड़ा; वह दीदी के चेहरे पर गड़ता गया, किसी अंदरूनी रहस्य की परत पकड़ने की कोशिश में; हो न हो दीदी किसी शुभ मंगल की दिशा में बढ़ रही हों।

"समझो स्कूल की आत्मा को जी रही हूं!"

"यह क्या पागलपन है!"

"सच में अहम तुम अपनी दीदी से बहुत प्यार करते हो न? तभी तो

मेरी यह दिनचर्या तुम्हें पागलपन लग रहा है!" उसकी आंखों में आंसू का फैलाव दिखने लगा।

"सच में दीदी तुम्हारी ऐसी गतिविधि से मुझे डर होने लगा है, कहीं तुम्हें किसी..." वह आगे बोल ना पाया।

"यही कहना चाह रहे हो न कहीं मुझे मनोचिकित्सक से न दिखलाना पड़ जाए? तुम तो दर्शन के ज्ञाता हो, पर फिलहाल दर्शन भूलकर मनोविज्ञान पर आ जाओ।" बरामदे से कमरे की ओर आती हुई वह बोलती जा रही थीं, "मेरी दृष्टि कह रही है यदि कोरोना पर जल्दी काबू न पाया गया तो देश को लाखों मनोचिकित्सक-मनोविश्लेषक की जरूरत पड़ने वाली है!" फिर कमरे में बेंच पर बैठकर आंखें लघुत्तम आकार में लाती हुई बोलीं, जैसे सच में कहीं दूर दृष्टिपात कर रही हों, "यदि कोरोना के लंबे-लंबे दौर पर काबू पाने में देश विफल रहता है, फिर तो समझो उच्च आसन पर जमे समूह का भी मनोविश्लेषक की टीम द्वारा मनोविश्लेषण कराना पड़ सकता है!"

"हर शहर में है तो मनोचिकित्सक-मनोविश्लेषक; पर लाखों की जरूरत पड़ेगी यह मेरी समझ से बाहर है?" अहम ने कहा; उसके चेहरे से विस्मय की परत हटती नहीं दिख रही थी।

"नौ महीने में तो बच्चे माँ के गर्भ से बाहर निकल आते हैं, नौ माह से अधिक होने पर बाहर आने को छटपटाने भी लगते हैं।" वह भाई से विमुख होकर बोली, स्वाभाविक ही; फिर उसकी ओर देखकर बोलती गईं, "देश में स्कूलों को बंद हुए नौ माह से ज्यादा होने चला है; बड़े बच्चों को कदाचित स्कूल की याद सताने लगी है, परंतु छोटे बच्चे तो जैसे गृह-गर्भ में मगन होते जा रहे हैं!"

"इतनी सारी स्टडी तुमने कैसे कर ली!" अहम आश्चर्य में पड़ गया।

"देखो अहम, प्राइवेट स्कूल वालों ने तो ऑनलाइन क्लासेस चला रखी हैं, पर सरकारी स्कूलों के और हमारे जैसे बस्ती-स्लम एरिया के चैरिटी स्कूलों के गरीब बच्चे ऑनलाइन की सुविधा भला कहां से ला पाएंगे?" स्लम एरिया की ओर खिड़की से झांकती हुई वह बोलती जा रही थीं, "इसलिए मैंने चार-चार बच्चों के समूह को बारी-बारी से स्लम एरिया वाले पीपल के पेड़ के नीचे ही पढ़ाना आरंभ कर दिया है; हमारे सहयोगी जतिन सर, मार्टिन सर, अखलाक सर, जगबिंदर सर ने भी घर-घर मोर्चा संभाल रखा है; रॉबर्ट भी बीच-बीच में आकर सहयोग कर जा रहा है।"

"फिर तो तुम लोग सच में 'स्कूल हमारे द्वारे' वाले नारे को चरितार्थ कर रहे हो; पर लाखों मनोविश्लेषक वाली बात..." बोलते-बोलते अहम चुप हो गया, अबुझ-सा।

"जिन बच्चों ने स्कूल में कुछ साल पढ़ लिए हैं चाहे वह सरकारी स्कूल हों या बड़े-बड़े प्राइवेट स्कूल" वह सिर हिला-हिला कर बोल रही थीं, "मसलन कक्षा एक-दो से ऊपर की कक्षा के बच्चों में कई तरह के मनोविकार पैदा होने शुरू हो गए हैं, ऐसे विकार आगे क्या रूप लेंगे मैं नहीं जानती" आगे गंभीर हो उठीं, "परंतु मेरी चिंता उन बच्चों को लेकर ज्यादा है जिन्हें स्कूल में आए एक-डेढ़ साल ही हुए थे, और खासकर वे बच्चे जिनका स्कूलिंग इसी वर्ष शुरू होने वाला था!"

"ऐसे छोटे बच्चों के साथ क्या-क्या समस्याएं सामने आ रही हैं?" अहम की जिज्ञासा बढ़ने लगी।

"अभी मैं एरिया की तरफ निकलने ही वाली थी कि तुम्हारा कॉल आ गया; ऐसे छोटे बच्चों में क्या-कुछ सिम्टम्स उभर रहा है तुम मौके पर ही समझ पाओगे।" बोलकर वह कमरे से निकल पड़ी, स्लम एरिया की तरफ।

अहम को साथ लेकर वह सीधे पीपल के पेड़ के पास पहुंच गईं। मार्टिन सर किशोर वय वाले चार-चार बच्चों के तीन समूह को होमवर्क दिए जा रहे थे, दूर-दूर बिठा कर।

"छोटे बच्चे आज भी नहीं आए?" पहुंचते ही अंतरा ने हैरानी से पूछा।

"बच्चों को मनाना बहुत मुश्किल होने का दीदी; वो पढ़ने को तैयार नहीं होने का!" मार्टिन सर ने अभिवादन करते हुए जवाब दिया।

"आज मैं एक बार और खुद से प्रयास करती हूं।" बोलकर वह सामने वाली संकरी गली में घुस गईं; अहम और मार्टिन सर भी पीछे-पीछे चल पड़े।

"जीतू!" एक झुके झोपड़े के आगे रुककर अंतरा ने आवाज लगाई।

"नो दीदी!" झोपड़े से निकलकर नाटे कद के एक बच्चे ने गली में दौड़ लगा दी, चिल्लाते हुए, "मेले को नहीं जाना स्कूल, मेले को बगीचे में खेलना।" अंतरा ने माथा पकड़ लिया, "बीते जनवरी में इसने शाला में आना शुरू किया था, दो-ढाई महीने ही आया था कि लॉकडाउन लग गया; अब तो स्कूल का नाम सुनकर ही दाएं-बाएं दौड़ लगा देता है!" बोलकर वह अगले झोपड़े की ओर बढ़ चलीं।

"रवि!" सुनसान टीन शेड के आगे अंतरा ने ऊंची आवाज दी। अंदर से

एक महिला ने अपना चेहरा दिखाया; पीछे से पांच-छह वर्षीय लड़का भी, माँ के आंचल में छुपे हुए। माँ ने बच्चे को आगे करना चाहा, "दीदी दोबारा आई हैं बेटा, तुम्हें स्कूल ले जाने के लिए!" अपने शरीर में माँ के आंचल के दो-तीन लपेटे बनाता हुआ वह कसमसा उठा, "स्कूल में क्या होगा?" अंतरा हतप्रभ थीं; अहम से बोली, "इस बच्चे की स्कूलिंग इस बार शुरू हो जानी थी; तीन-चार दफा प्रयास कर चुकी हूं, बच्चों के साथ बैठने-पढ़ने के लिए कतई तैयार नहीं हो रहा है! इसे लगता है स्कूल कोई अजूबा जगह है!" बोलते-बोलते वह एक निर्माणाधीन अर्ध-पक्के घर के पास पहुंच गईं। घर के बरामदे पर चढ़कर प्यारी-सी पुकार लगाई, "नीली दीदी!" अंदर से एक पाँच-छह वर्षीय परी-सी बच्ची बाहर आई, फुदकते हुए। अंतरा को देखकर मुंह बना लिया, "दीदी स्कूल क्या होता है? मम्मी का घर छोड़कर मैं नहीं जाती स्कूल!" बोलकर वह फुर्र हो गई, अंदर की ओर। आटा सने हाथ से उसकी माँ बरामदे की तरफ आती हुई बोली, "अरे अंतरा बहना, मैं समझा-समझा कर थक गई हूँ, वह तो मानने को तैयार ही नहीं है कि स्कूल जरूरी जगह है!" बोलकर उसकी माँ ने सर पीटने-सी मुद्रा बना ली।

"अगली दफा मैं कई लड़कियों को लेकर आऊंगी, तब समूह में शायद समझ जाए।" बोलते हुए वह बस्ती की ओर जाने वाली गली में घुस गईं।

बस्ती एरिया में हर गली में हर तीसरे-चौथे घर से बच्चे शाला में आते थे। पहली गली में आते ही अंतरा अटक गईं, कि किस बच्चे को आवाज दूं। बायें वाले टीन शेड की ओर मुंह करके उसने पुकार लगाई, "मंदार!"

"इस्कूल में कोलना है," खिड़की में झांककर चेहरा छिपाते हुए बच्चे का डरावना स्वर बाहर आया। "पड़ेगा तो कोलना से मलेगा!" शेड के बगल वाले झोंपड़े से एक पिलपिला बच्चा बाहर बोलकर अंदर को भगा, जैसे सच में कोरोना का डंक लग गया हो।

"माय गे! कोलना वाला इस्कूल की दीदी आई, इस्कूल नहीं जाऊंगी, कबि नहीं!" पीछे वाले घर से एक लड़की की आवाज आई; कोरोना के भय से भरी आवाज! गली में तेज चलते हुए वह भगत गली में आ गई।

"सारस्वत!" कच्चे-पक्के घर के दरवाजे पर उसने प्यारी-सी आवाज दी। अंदर से एक बारह-तेरह वर्षीय लड़का बाहर आया; घर का खंभा पकड़ते हुए अंतरा की आँखों में गड़ गया, निःशब्द! उसने पुचकारा, "सारस्वत, कुछ तो बोलो।" वह चुप ही रहा; अब आँखें भी बंद कर लीं उसने। अंतरा की आँखें

छलछला आईं; वह मुड़कर बायीं ओर वाली बंद गली में बढ़ चलीं। आंसू पोंछते हुए वह बोलती जा रही थीं, "ये लड़का सारस्वत, कितना तो इंटेलिजेंट है; गणित के सवाल ऐसे सॉल्व करता है जैसे आइंस्टाइन का पुनर्जन्म हुआ हो! परंतु लंबे समय तक स्कूल बंद होने से इस कदर अवसाद में चला गया है, जैसे कोरोना कंस ने इसकी आवाज ही हर लिया हो।" बोलते-बोलते वह एक घर के पास रुक गईं। "वीर सिंह?" अंतरा ने आवाज दी, किसी को पुचकारने की भाव-भाषा में। खपरैल छत वाले कमरे से एक नौ-दस वर्षीय बालक मुंह बाहर को किया, मक्के के पुराने ठूंठ को मुंह में माइक सा सटाते हुए। घर के चौखट पर खड़ा होकर वह बोलने लगा, माइक में बोलने जैसा करते हुए, "मुझे स्कूल नहीं जाना, मुझे दिल्ली वाला प्रधानमंत्री बनना है!" बोलकर वह अंदर की ओर विलीन हो गया; माइक में अलग-अलग भाव-भंगिमा में बोलने-सा अभिनय करते हुए। अंतरा मुख्य गली की ओर मुड़ चलीं; माथा पीट लेने-सी बोलती गईं, "यह वीर बालक क्या खूब कक्षा दो में पढ़ रहा था; अब तो इस बच्चे को स्कूल से विमुख हुआ ही समझो।" बस्ती से निकलते हुए मार्टिन को अनायास याद आया, बोलने लगा, "मेरे को और रॉबर्ट को समझ में नहीं आने का; मेरे नेबर सिकंदर के सन का फेबरुआरी में टेन्थ का एग्जाम का शेड्यूल रहने का, बट लास्ट विक गवमेंट बोलने का शेड्यूल ऑफ एग्जाम इक्स्टेंड करने का, ओर एग्जाम मे बि कैन्सेल्ड; सिंस देन वो बॉय हॉपलेस हो जाने का, लंच-डिनर तक छोड़ देने का! मेरे फ्रंट वाले कृसना का सन क्लास में जिरो आने का, एग्जाम कैन्सेल का न्यूज सुनकर मॉर्निंग-एवनिंग मोर एंड मोर मस्ती मारते रहने का, लाइक अ मैड!..." मार्टिन की लंबी बातों में ही वे सभी पीपल के पेड़ के पास पहुँच गए; टेन्थ एग्जाम वाली बात भूलकर उसका ध्यान अपने बच्चों पर टिक गया।

पीपल के पेड़ के नीचे आकर अंतरा, मार्टिन और अहम भी चटाई पर बैठ गए। दोनों समूह के दो-दो बच्चे न जाने कब वहां से खिसक लिए। अंतरा बोलने लगीं, पीपल के पेड़ से ऊपर आसमान में कुछ ढूंढ़ते हुए-सा, "कोरोना के कारण देश की दुर्गति तो हो ही रही है, बच्चे स्कूल से जिस कदर विमुख हो रहे हैं न जाने कौन-सा डॉक्टर-साइकोलॉजिस्ट समझा पाएंगे!"

"इसका असर कितने वर्षों-दशकों तक रहेगा इसका आकलन आने वाला समय ही कर सकता है दीदी।" पश्चिम दिशा में देखते हुए अहम ने कहा, चेहरे में चिंतन की परत बिछाते हुए।

दीदी और मार्टिन सर शेष बच्चों के बीच हो लिए। बैठे-बैठे अहम अंत:वार्ता में लीन हो गया ...काश! देश के रथी-महारथी मनभावन कृत्य में रमे रहने के बजाय कोरोना के खतरे को सही समय पर सूंघने की शक्ति का संधान कर पाते, तो करोड़ों नैनिहाल बेपटरी होने से कदाचित बच जाते...

7

रामघाट में लॉकडाउन की चाल भले ही टेढ़ी-मेढ़ी रही हो, मार्च-अप्रैल वाले शुरुआती एक-डेढ़ महीने तक रामघाट भी खांटी लॉकडाउन का गवाह रहा था; मेन मार्केट से लेकर गली-कूचे तक का नजारा बता रहा था जैसे जीव-जंतुओं-पक्षियों ने मनुष्य से धरती छीन ली है, किसी छद्म युद्ध से। उन दिनों शहर के मजदूरों-कामगारों-रेहड़ी-पटरी-रिक्शे-ठेलेवालों ने घर बैठे पेट तो पकड़ ही लिया था, छोटे दुकानदारों ने भी खटिया धर लिया था; गांव-गरीबों का हाल बयां करने वाले सूत्रों-माध्यमों के पैर ही नहीं पूंछ भी गायब हो गए थे। पेटमारी के वैसे घनघोर दिनों में सहज ने दिनेश की यथोचित मदद की थी; पच्चीस हजार मामूली रकम हो सकती है सक्षम-संपन्न के लिए, जीवन-मरण की उस घड़ी में वो पच्चीस हजार जीवनदान से कम न था दिनेश के परिवार के लिए! हंसामल का परिवार परोपकार में कभी पीछे नहीं रहा, लेकिन उधार की श्रेणी वाले रकम की वापसी पर उसका लेखा कार्यालय सजग रहता था। कल सहज के साथ चर्चा करने को कुछ नहीं सूझ रहा था दीवान जी को; उसने दिनेश को दी उधारी की ही याद दिला दी उसे, अदब के साथ कि मित्र हैं चाहे पैसे वापस लो या ना लो पर माँगने-सी मुख-मुद्रा जरूर बना लेनी चाहिए, कभी-कभी। सदी जैसी लंबी पसरी उदासी वाले इस दिसंबर में भी सहज किसी-न-किसी मित्र से घंटे-दो घंटे मिल लेता, इधर-उधर की बातों से मन बहला लिया करता; आज उसने बस्ती की तरफ जाने का मन बना ही लिया।

"अरे सहज! चढ़ती सर्दी में आज सूरज पश्चिम में उग आया है क्या!" सहज को अपनी दुकान के सामने एकाएक खड़ा देखकर दिनेश विस्मित था; कोरोना-कैबिनेट वाले उसके भाव-भंगिमा से उसे बिल्कुल अलग पाकर।

"क्यों, मैं अपने मित्र की दुकान पर आ भी नहीं सकता?" सहज ने आंखें झुकाकर कहा; दिनेश के चेहरे में विस्मय का वितान देखकर वह झेंप गया।

"डोंट वरी यार, दुकान के दोबारा रफ्तार पकड़ते ही पहले तुम्हारा वाला

पच्चीस लौटाने हैं मुझे।" सहज का हाथ पकड़कर दुकान के अंदर ले लाते हुए दिनेश बोला।

"तुम्हें क्या लगता है मैं अपने पैसे माँगने आया हूं?"

"तुम्हारे चेहरे से तो ऐसा कुछ नहीं लग रहा है; शायद मन के किसी कोने में कुलमुला रहा हो, ये मैं नहीं जानता।" नस के नीचे नब्ज को पकड़ लेने की भंगिमा में उसने कहा।

"अबे रहने भी दो लेन-देन की बात को, मुझे पैसे का ही कारोबार करना होता तो माथे पर कोरोना-कैबिनेट लिए क्यों भटकता रहता।" दिनेश को आलिंगन में लेते हुए उसने कहा, अंदर से पिघलते हुए; दिनेश की आंखों में नमी महसूस कर उसकी पीठ में धौल जमाते हुए बोला, "और बता क्या कुछ चल रहा है चारों तरफ?"

"बहुत कुछ चल रहा है, तू बता किस बारे में क्या सुनना चाह रहा है?" दुकान पर आई छोटी-सी लड़की की ओर साबुन की टिकिया बढ़ाते हुए उसने कहा।

"देश-दुनिया में जो चल रहा है वही बताओ।"

"आजकल तो पेट-पैकेट की चिंता ज्यादा सता रही है बस्ती के लोगों को; शायद पूरे हिंदुस्तान को भी।" दिनेश ने आंखें बड़ी करते हुए कहा, जैसे सच में सारा हिंदुस्तान देख पा रहा हो।

"पेट-पैकेट! मतलब मेरे सब्जेक्ट पर तुम भी शोध करने चले हो?" उसने आश्चर्य वाली हँसी के साथ कहा।

"सरकार, उसके साथियों और करीबी अर्थशास्त्रियों की नजर किधर है क्या कुछ देख पा रही है मुझे नहीं पता..." आँखों में पड़ते सूरज से बचाव की खातिर तिरपाल नीचे सरकाते हुए वह बोलता गया, वापस बैठते हुए लंबी सांस लेकर कहा, "तुम्हें आए हुए दस-पंद्रह मिनट हो चले हैं, एक नन्ही बच्ची छोड़कर मेरी दुकान में कितने ग्राहक आए? कोई नहीं!"

"हां, ऐसा ही दिख रहा है।"

"घंटेभर में इक्का-दुक्का ग्राहक आता है सिर्फ यही सच नहीं है, असली सच तो बेहद खतरनाक है!" दिनेश ने माथा खुजलाते हुए कहा।

"असली सच भी कुछ है क्या!" सहज आश्चर्य में पड़ गया।

"अरे यार, तुम इकोनॉमिक्स वाले को तो सब पता होना चाहिए!"

"हम लोगों को काफी कुछ पता रहता है, पर हो सकता है तुम जो

अनुभव कर रहे हो वह ज्यादा रियलिस्टिक हो।" उसने दिनेश के प्रति सम्मान दिखाते हुए कहा।

"ज्यादा रियलिस्टिक होने का दावा तो नहीं कर सकता, हां हम जैसे लोग जमीन पर बैठे हैं इसीलिए इकोनॉमिक्स का एबीसीडी साफ दिखता है।" उसने आंखें छोटी करते हुए कहा, अब उसकी आंखें बंद-सी हो गईं जैसे अंदर दबी पीड़ा जाग उठी हो, "सिर्फ साफ दिखता ही नहीं है सबसे ज्यादा भुक्तभोगी भी हम जैसे लोग ही हो रहे हैं!"

"तुम्हारे ऑब्जरवेशन माइक्रो लेवल के हैं, यह तो मेरे ऑनगोइंग थीसिस के काम आएंगे! अपना ऑब्जर्वेशन संक्षिप्त में मुझे बताओ तो सही।" उसने विनम्र बनते हुए कहा।

"आइडिया ऑब्जरवेशन बताने-शेयर करने में भला कौन-सा पैसा खर्च होता है।" मीठी मुस्कान के साथ दिनेश ने कहा, आगे आंखें सूनी सड़क पर टिकाते हुए बोलने लगा, "यहा बैठे-बैठे देख पा रहा हूं पैसे का पहिया कोरोना के जबड़े में फंसा पड़ा है!"

"हां, इकोनॉमिस्ट भी तो यही कह रहे हैं कि इंडियन इकोनॉमी दलदल में फंसता जा रहा है।" उसने सुधार करने की मुद्रा बनाकर कहा।

"दलदल नहीं जबड़ा कहो, इसलिए यह क्रेन से नहीं कुशल कारीगरी से बाहर आएगा!" दिनेश गंभीर ज्ञानी होने के अंदाज में बोला।

"जबड़ा?" उसने नाक-मुंह सिकोड़ लिया; इकोनॉमी के किसी के जबड़े में फंसे होने वाला टर्म उसने पूरे अर्थशास्त्र में कहीं नहीं पढ़ा था।

"समझो मार्केट में पैसे के पैर बिल्कुल थम से गए हैं; तुम्हें शायद ज्यादा महसूस हो रहा होगा।" अब सहज की आंखों में गड़कर कहा, "पूरे हिंदुस्तान की छोड़ो रामघाट को ही ले लो, मेडिकल सेक्टर को छोड़कर बाकी सेक्टर में कारोबार मरणासन्न-सा पड़ा है, इससे पैसे का अंतर प्रवाह बिल्कुल थम गया है, जिसे तुम लोग अर्थव्यवस्था का चक्र थम जाना कहते हो।"

"तुम्हारे ऑब्जरवेशन के हिसाब से इसकी वजह क्या है?" दुकान के खाली पड़े रैक में चुपके से नजर फिराते हुए सहज बोला।

"पहली वजह तो है कोरोना का खौफ! हिंदुस्तान के हर आदमी को कोरोना का भय सता रहा है।" बोलते-बोलते दिनेश के होंठों पर व्यंग्य की रेखा बनती गई, "भला कौन कोरोना से प्राण गँवाना चाहेगा! इसीलिए हर आदमी अपने बटुवे में कोरोना के जबड़े से बच निकलने की बूटी बचाकर

रखना चाहता है।" अब सामने सड़क में सिर पर बोरे ढो रहे मजदूरों की तरफ देखकर बोलने लगा, "यू नो इंडिया की साठ-सत्तर प्रतिशत आबादी औसत से काफी कम आमदनी वाले हैं, और यही आबादी मार्केट का मेन कंजूमर है, इतनी बड़ी आबादी ही मार्केट से गायब हो तो मार्केट में पैसे का प्रवाह बने तो कैसे बने? ये बेचारे करें भी तो क्या करें, अभी तो इन्हें परिवार का पेट पालने के लाले पड़े हैं, पेट के बाद किसी के पास कुछ बचता होगा तो कोरोना के जबड़े से निकलने के लिए थोड़ा-बहुत गुल्लक में डालकर रखते होंगे!"

"सच यार तुम्हारा इंसाइड स्टडी मार्केबल है!" सहज उसकी ओर देखकर अवाक रह गया।

"यह सिर्फ इनसाइड स्टडी भर नहीं है, यहा बैठे-बैठे मुझे सब कुछ दिख रहा है!" गुरु बन जाने की मुद्रा बनाते हुए दिनेश बोलने लगा, "वह देखो सामने कपड़े की छोटी-सी दुकान है, अरशद के बड़े भाई की; कल मेरे पास बैठकर रोना रो रहा था, कह रहा था यह बस्ती रिक्शा-ठेला मजदूरों की है, यहा के लोगों की जेब में पैसे आएं तभी तो उसकी दुकान की बिक्री शुरू हो; फिर मुझ पर तरस खाकर बोला, क्या बताऊं दिनेश इसलिए तुम्हारी दुकान से मैं महीने का गल्ला नहीं उठा पा रहा हूं।" बोलकर उसने नजरें नीचे कर लीं, जैसे नंगा हो जाने से लजा गया हो। सहज को साहस नहीं हुआ सांत्वना देने का भी। मिनटभर की चुप्पी छाई रही। चुप्पी तोड़ते हुए दिनेश उसी लय में बोलता रहा, "उससे दो दुकान आगे रामराजा मिष्ठान भंडार है, छोटी पूंजी का कारोबार है बेचारे का; कल शाम को मेरे पास आकर दुखड़ा सुना रहा था; सामने वाली गली में राममूर्ति की रंग-पेंट की साधारण दुकान है, परसों यहीं सड़क पर मिल गया था, मुंह में मरघट की मायूसी छाई थी, कह रहा था लोगों का घर-बार बनना शुरू हो तब तो लक्ष्मी के पैर उसकी तरफ भी चलें; घंटाघर वाले गोयनका संस के भांजे ने पीछे वाली गली में मोबाइल और कंप्यूटर की ठीक-ठाक दुकान खोली है दो साल पहले, बस्ती एरिया में मोबाइल और टैब की बढ़ रही बिक्री भांपकर; खाली समय में मेरे पास आता रहता था, कल घंटाघर पर मिल गया था, कह रहा था यार दिनेश पाँच-सात दिन दुकान खोलकर देख लिया बिजली-एसी का खर्चा निकालना भी मुश्किल लग रहा है, उससे अच्छा है फिलहाल कंपनी का रोमिंग सेल्समैन वाला काम कर रहा हूं।" देर तक बोलते रहने के बाद वह सहज के चेहरे पर

गड़ गया, जैसे ऑब्जेक्टिव क्वेश्चन के बाद सब्जेक्टिव क्वेश्चन हल करके थोड़ा विश्राम पा रहा हो।

"तुम जो फीडबैक दे रहे हो उसे इकोनॉमिक्स में बेसिक डाटा कहा जाता है, ऐसे ही बेसिक डाटा से तो इकोनॉमिक्स में कई-कई थ्योरी बनी हैं; तुम सही फरमा रहे हो, जब तक मार्केट का मनी फ्लो पटरी पर नहीं लौटेगा इकोनॉमी की साइकिल जाम ही रहेगी।" उसने संक्षिप्त में सार बताते हुए कहा।

"यही तो!" दिनेश के मुंह से मंत्रोच्चारण-सा निकला, आगे राजनेता की भाव-भंगिमा में बोलता गया, "जनता की जेब की हालत सुधरे बगैर मार्केट में मनी लाने की बात करना बेमानी है! अरे भई मैं पूछता हूं वोट के लिए आप दिन-रात जनता का मूड भांपने में लगे रहते हो, इस वक्त वोट भांपना छोड़कर जेब को तो भांप लो कुछ महीने के लिए!" बोलकर दिनेश ने शटर थोड़ा नीचे सरका दिया, दिसंबर वाली धुंध उमड़ती देखकर; जैसे आगे सच में बहुत सारा शटर बंद होने वाला हो।

"देश की अर्थव्यवस्था के लिए हर सरकार की अपनी सोच होती है और उसी हिसाब से फैसले भी लेती है।" अर्थव्यवस्था के तकनीकी पहलुओं में जाने से बचते हुए सहज ने कहा, मित्रवत वार्तालाप का ख्याल रखते हुए।

"वह तो सभी को पता है; कुछ महीने पहले सरकार ने लाखों-करोड़ों के पैकेज का बूस्टर डोज दिया है इकोनामी को, और वह डोज अपनी-अपनी जगह एक्टिव दिख भी रहे हैं।" उच्चारण के दरमियान अर्थशास्त्रीय शब्दों में दबाव बनाते हुए दिनेश ने कहा, आगे पश्चिम दिशा में उंगली दिखाते हुए बोला, "पर ग्राउंड जीरो में आकर पालथी मारकर देखना-सुनना-सूंघना पड़ेगा कि इकोनामी की साइकिल में जंग कहां-कहां लगी है।"

"जंग लगने के और भी अदृश्य कारण हैं; अप्लाइड इकोनॉमिक्स में हम लोगों ने पढ़ा है ब्लैक मनी इकोनॉमी के लिए टॉनिक का काम करता है, क्योंकि इस वक्त कॉन्ट्रैक्ट, कंस्ट्रक्शन वर्क, इलीगल लेन-देन बंद है, इससे भी इकोनॉमी में सुस्ती आ गई है।" सहज ने सामान्य भाषा में कहा, जैसे मृत्यु के समान ही एक और अमिट सच्चाई बयां कर रहा हो।

"बंद है! क्या बकवास कर रहे हो।" दिनेश ने लगभग उछलते हुए कहा, फिर आश्चर्यमय मुस्कान के साथ बोलने लगा, "कंस्ट्रक्शन वर्क भले ही पूरी तरह से स्टार्ट ना हुआ हो, पर बाजीगरों ने इसका भी तोड़ निकाल लिया

है, कट परसेंटेज को ड्योढ़ा-दुगुना करके!" दिनेश ने आंखें बड़ी करते हुए कहा, जैसे हकीकत बयां करते हुए आंखें फट पड़ी हों; आगे उदाहरण देकर बताने लगा, "पटेल मोड़ वाले कृष्णमोहन को जानते हो न, नगर निगम में गली-नाली बनाता है; तीन-चार दिन पहले अपनी व्यथा सुना रहा था कि निगम में पीसीसी सड़क और नाली का काम तो चालू हो गया है पर काम करना मुश्किल हो रहा है, क्योंकि डिपार्टमेंट ने कोरोना कट के नाम पर परसेंटेज पहले से बढ़ा दिया है, एक तरह से ऊपरी आमद की क्षतिपूर्ति के लिए कोरोना कट लागू कर दिया है!" फिर दक्षिण दिशा में बड़े पेड़ को उंगली से इंगित करके बोला, "उस इमली के पेड़ के बगल में किशन हवेली वाले फैमिली को जानते ही हो, हम लोगों से तीन साल सीनियर रहे श्यामल पेय जल विभाग में ठेकेदारी शुरू कर दिया था कोरोना से पहले, कल शाम को गांधी चौक पर टकरा गया था, गपशप में अपना रोना रोने लगा कि उसके डिपार्टमेंट में तो कट पहुंच गया है पचास तक!" बोलकर दिनेश बेतरतीब तरीके से सिर हिलाने लगा, जैसे दिमाग बाहर निकला जा रहा हो।

"हां, ठेकेदारी वगैरह में कट परसेंटेज तो देश को दीमक की तरह चाट ही रहा है।" रोने-गाने वाले अंदाज से बचते हुए सहज ने कहा।

"ठेकेदारी की छोड़ो, लेन-देन का हिसाब-किताब भला किस डिपार्टमेंट में नहीं बढ़ा है?" बाजी लगाने की भंगिमा बनाकर दिनेश बोला, आगे विद्रूप हँसी के साथ कहा, "पुलिस वालों ने हमारी बस्ती के तीन-चार लोगों को दस दिन पहले अरेस्ट कर लिया था, एक छेड़खानी वाले केस में; बीते शनिवार को गांधी गली के संत कुमार को भी बिठा लिया था थाने पर, संत कुमार का नाम एफआईआर में जबरदस्ती डलवा दिया था, कोतवाल के कहने पर; उसका नाम हटाने के लिए कोतवाल ने पचास हजार लिए, बहू का जेवर बेचकर दिया बेचारा; मुझे पता है कोरोना से पहले बेगुनाहों का नाम कटवाने वाले मैटर में पुलिस वाले बीस-पचीस ही लेते थे, पर कोरोना-कड़की के नाम पर लेनदेन का रेट दुगुना हो चला है हर जगह।"

"और उन तीन-चार लोगों का क्या हुआ जो अरेस्ट हुए थे?" सहज की जिज्ञासा जीवंत हो उठी।

"होना क्या था चालान हुआ, खड़े-खड़े बेल हो गया; कोर्ट-कचहरी में भी हर कानून का रेट दोगुना-तिगुना हो चला है, पहले टेढ़े से टेढ़े बेल में भी कोर्ट भगवान पचीस-पचास में मान जाते थे, अब तो साधारण बेल का ही

रेट पचास पहुंच गया है! बेल कराने वाले वकील साहब कोर्ट के बरामदे में ही पान खाते हुए बोले जा रहे थे, कि कोरोना के कारण कोर्ट में पेशी कम हो गई है इसीलिए जज लोगों का पारा चढ़ा हुआ रहता है।"

"पर दिनेश, मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं जब लेनदेन का कारोबार चढ़ता गया है फिर मार्केट में सुस्ती क्यों है?" सहज ने कहा तो लगा जैसे उसका इकोनॉमिक्स जवाब दे गया हो।

"लैंड और प्रॉपर्टी!" दिनेश ने कहा, चुटकी बजाते हुए।

"मतलब?"

"मतलब यह कि नेता हों या मंत्री-अफसर-ठेकेदार, दवाई फैक्ट्री के मालिक हों या सप्लायर या फिर कोरोना कारोबार से जुड़े मालदार सभी के पास माल आने का मॉनसून रुका नहीं है! पर अब वे अपना माल जमीन-जायदाद खरीदने में ही लगाने लगे हैं!" बोलते-बोलते दिनेश की आवाज धीमी होती गई; साधारण लोग स्वाभाविक ही दूसरे के पैसों की बात दबी जुबान में ही करते हैं। उसका स्वर रहस्यमयी होने से दुकान में क्षणभर की चुप्पी छा गई; अब सामने की ओर आंखें बड़ी करके कहा, राज को राज बने रहने देने की मुख-मुद्रा लिए, "विद्यासागर गली में सुभाष चाचा रहते हैं; कोरोना के कारण घर की माली हालत खस्ता हो चली है, घर बेचना पड़ा आधी कीमत में! बस्ती ही क्यों, कोरोना ने शहर में भी काफी लोगों को औने-पौने दाम पर मकान बेचने के लिए मजबूर कर दिया है..." वह बोलता रहा, सहज अपलक सुनता रहा, सहज को मूर्तिवत देखकर वह खीज उठा, "तुम तो ऐसे गूंगे-बहरे बने बैठे हो जैसे तुम्हें दुनियादारी का कुछ भी पता ना हो; तुम्हारी डिस्टलरी फैक्ट्री के पीछे किसान लोगों का प्लॉट किस रेट में बिक रहा है तुम्हें तो पता होगा ही?" उसने सहज के चेहरे पर गड़ते हुए पूछा; उसे चुप देखकर कंठ तक आई ध्वनि को बाहर आने दिया, "महज दो हजार रुपये स्क्वायर फीट!" सहज के कान की तरफ मुंह करके धीमे स्वर में वह बोला, जैसे किसी गुप्त लूट की सूचना दे रहा हो; फिर सामान्य स्वर में कहा, "जबकि कोरोना से पहले उस इलाके में जमीन का रेट चार हजार से कम न था!" शटर गिराते हुए वह बोलता जा रहा था। सहज के मन में स्व-वार्ता-सी होने लगी, '...साधारण और गरीब लोग अपने पास पैसे नहीं होने की भरपाई शायद गप्प की फसल से कर लेते हैं...'।

"चल यार आज कहीं चौक-चौराहे पर चाय पिया जाए।" उसने याराना

दिखाते हुए कहा; हल्की-फुल्की बातें करने के ख्याल से आए सहज का मन शायद अभी भरा नहीं था।

"तो चलो भरत चाचा के टी-कॉर्नर में ही चलते हैं।"

उसकी बाइक की तरफ बढ़ते हुए दिनेश ने कहा।

"यार दिनेश, समझ में नहीं आ रहा है देश-दुनिया से यह साला कोरोना कब विदा होगा!" उसने गप्प छेड़ने की गरज से कहा, चाय की दो-तीन चुस्की के बाद भारी पड़ते सन्नाटे को तोड़ने की खातिर।

"हां, कोरोना की विदाई हो तभी तो लोगों के किचन में सुबह-शाम रौनक लौटे।" चुस्की के बीच दिनेश बोलता रहा, "शायनी शायद सही बोल रही है, धरती में हर दशक में कोई-न-कोई बड़ी बीमारी-महामारी आती रहेगी।"

"दुनिया को इसका उपाय भी तो ढूंढ़ना पड़ेगा।" कप टेबुल में रखते हुए सहज ने चिंता प्रकट की।

"कोरोना हो या कोई और महामारी-बीमारी यह हमारे देश को कुछ ज्यादा ही परेशान करती रहेगी; अहम सही कह रहा है, ऐसे आपदा के समय देश की दृष्टि अबाधित होनी चाहिए और नीयत भी नेक होनी चाहिएं" बोलकर दिनेश ने भी कप टेबुल पर रख दिया, पूरब दिशा की तरफ नजर उठाते हुए बोलने लगा, "परवेज सही कह रहा है देश में होते रहने वाला चुनाव लाइलाज कैंसर बनता जा रहा है, सभी पार्टियों का पूरा दिमाग तो चुनाव में ही भिड़ा रहता है हर वक्त, तभी तो महामारी-बीमारी भी चुनावी तराजू में ऊपर-नीचे डोलते रहते हैं!"

"कोरोना और गरीबों की बदहाली का कोई समाधान तो फिलहाल दिखता नहीं।" सहज ने गपशप खत्म होने का संकेत दिया।

"समाधान होता नहीं है निकालना पड़ता है।" कप हाथ में लेकर फिर से चुस्की लेते हुए दिनेश ने कहा, अब उंगलियों से कोई कांटा निकालने जैसा दिखाते हुए बोला, "कोरोना या किसी भी बड़े संकट का समाधान होता है ऐसी दृष्टि से जो निष्पक्ष और परिपक्व हो, तभी तो भविष्य के संभावित संकट को वर्तमान में ही आर-पार देख पाने की शक्ति शीर्ष में बैठे लोगों में आ पाएगी।" अब कप को दूर खिसकाते हुए कहा, जैसे चाय ही समस्या की जड़ हो, "और गरीबों की बदहाली खत्म होने का फौरी उपाय है पार्टी फंड।"

"पार्टी फंड?" सहज की आंखें छोटी होती गईं।

"हां पार्टी फंड!" शब्दों को चबाकर दिनेश इस तरह बोला जैसे कोई

गड़ा खजाना निकालना चाह रहा हो, आगे इत्मीनान से बोला, "सुना है देश में पार्टियों के पास अकूत पैसा है; यदि मैं किसी पार्टी का मालिक होता तो कोरोना के मारे गरीबों को पेट पकड़कर रोने-सोने नहीं देता, पार्टी फंड से पचीस-पचास जिलों में भोजन-पानी की व्यवस्था करा देता!"

"अरे तुम्हारे कहने से थोड़ी न ऐसा हो जाएगा; पार्टी फंड पार्टियों के अपने काम के लिए होते हैं।" उसने होंठों को एक ओर खींचते हुए कहा, जैसे दिनेश को जतलाना चाह रहा हो कि उसे कुछ नहीं पता।

"अपने काम का मतलब चुनाव ही न?" पूरब दिशा की ओर नजर उठाते हुए दिनेश बोलता गया, "उधर हो रहे चुनाव में करोड़ों-करोड़ों बहाया जा रहा है पानी की तरह; मैं सुप्रीम कोर्ट का जज होता तो दस-बीस साल तक चुनाव में खर्च करना बंद करवा देता!" बोलते-बोलते वह उत्तेजित होने लगा, "परवेज सही कहता है, हिंदुस्तान के चुनाव में सिर्फ नॉमिनेशन होना चाहिए और इलेक्शन कमिशन कैंडिडेट का डिटेल चौक-चौराहे पर लगा दें; फिर वोट के दिन वोट हो जाए, बस!"

"परवेज का आइडिया और तुम्हारी सोच तो लाजवाब है, लेकिन पार्टियों के फंड में दिन-रात पैसे झरते रहते हैं वह भला रुके!" बोलने के दौरान सहज की मुद्रा ऐसी बन आई जैसे देश में हर अच्छी संभावनाओं का मृत्यु-शोक मना रहा हो।

"फिर तो मैं स्टांप पेपर पर लिखकर दे सकता हूं, इस देश में पार्टियों का फंड जितना मजबूत होता जाएगा गरीबी दूर करने का टारगेट उतना ही कमजोर पड़ता जाएगा!" व्यंगपूर्ण हँसी के साथ दिनेश बोलता रहा, "बल्कि मैं तो कल ही कचहरी जाकर इस भविष्यवाणी का शपथ-पत्र लिखकर महामहिम के पास भेज दूंगा!"

"अरे वो देखो, लग रहा है धुंध की परत आने वाली है!" सहज ने दक्षिण दिशा की ओर आंख उठाकर कहा; फिर कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"ऐसी धुंध को तो हम लोग अपनी आंखों से देख लेते हैं," कुर्सी से उठते हुए दिनेश बोलता गया, "पर जब धुंध मोटी पड़ती जाएगी जिसे आंखों से नहीं अंतर्दृष्टि से देखा जा सकता है तब क्या होगा? अहम सही कह रहा है, देश में दृष्टि की कंगाली पसरती जा रही है!" बोलते-बोलते दिनेश बाइक में सहज के पीछे बैठ गया, दक्षिण दिशा से अनायास उमड़ आई धुंध की श्वेत-श्याम परतों को घूरते हुए।

8

इस वाले सुस्त-सुनसान दिसंबर में परवेज सात दिनों तक बाहर नहीं निकला था; जिंदगी में शायद ही कभी उसने इतने लंबे समय तक घर में नजरबंद रखा हो अपने को। वह अपनी स्टडी में प्रायः किताबों में खोया रहता; वैश्विक संदर्भों वाली राजनीतिक पुस्तकों में। मन करता तो छत पर चला जाता; ठिठुरन की राह पर चल पड़े जाड़े की ऊष्णता-प्रदायी धूप में। हर तरफ से मन उचट जाता तो भाभीजान के पास जाकर सारा जहान भूल जाता। मित्रों के आते कॉल को हूँ-हां से निपटाता; ग्रुप में आ रहे मैसेज को मैसेज से सलटाता। शुरू में उसके अब्बा ने ध्यान नहीं दिया; कल से उसकी परेशानी पर उसकी अम्मी से गुफ्तगू करने लगे थे। कुल मिलाकर मामला कुछ पकड़ में नहीं आ रहा था।

वैसे तो परवेज के अकेलेपन में वह कभी घुसपैठ नहीं करते; आज अपने को रोक न पाए, छत पर गुमसुम बैठे परवेज को पकड़ लेना जरूरी समझा।

"हेलो मियां, क्या चल रहा है? छत पर से ही यूरोप-अरब की छलांग लगाने की तो नहीं सोच रहे!" हौले से छत पर आकर उसने धीमे से कहा।

"ऐसा कुछ तो नहीं है अब्बू, बस यूं ही।" अब्बू को छत पर पाकर वह खिल उठा।

"औलाद की तासीर बाप से छुप नहीं सकती; तुम्हारे दमाग का तूफान चेहरे पर बखूबी पढ़ा जा सकता है।" अब्बा ने उसकी आँखों में गड़ते हुए कहा; फिर दोनों कंधों पर हाथ धरते हुए छेड़ा, "कहीं तुम घटते-बढ़ते रहते कोरोना से खासे डरे हुए तो नहीं हो!"

"कोरोना तो नहीं अब्बू, कोरोना-कौवा जरूर परेशान करने लगा है मुझे।" बगल वाले बरगद में कांव-कांव कर रहे कौवे की ओर देखते हुए उसने कहा।

"दुनिया में कोरोना फैला पड़ा है और सामने पेड़ में कौवा बैठा है, पर दोनों मिलकर कोरोना-कौवा कैसे हो गया?" अब्बा अचरज में पड़ गए।

"यूं समझ लीजिए अब्बू, कोरोना-कौवा किस्म की एक नई प्रजाति का जन्म हो रहा है इंडिया में!" बोलकर परवेज ने आँखें बंद कर लीं, जैसे नई प्रजाति की पहचान पकड़ में ला रहा हो।

"नई प्रजाति!" अब्बू के चेहरे में हैरानी पसर गई।

"कोरोना काल में सभी पॉलिटिकल पार्टी ने एक-दूसरे के खिलाफ लड़ाई छेड़ रखी है, लफ्जों की लड़ाई; अपनी-अपनी पार्टी की तारीफ करते वे थकते

नहीं।" चेहरे में विद्रूप हँसी लिए परवेज ने कहा; अब सामने चौराहे पर लगे पार्टियों के बड़े-बड़े होर्डिंग्स में नजर गड़ाए बोलने लगा, "सभी पार्टियों के बड़े पॉलीटिशियन्स दिन की शुरुआत अपनी पार्टी के गुणगान से करते हैं और दिनभर खुद की पीठ थपथपाने के बाद ही उन्हें रात को नींद आती है।"

"यानी.., यानी वे दिनभर कौवे जैसा ही कांव-कांव करते रहते हैं?" बात पकड़ में आ जाने के विस्मय से बचते हुए अब्बू ने कहा।

"मामला सिर्फ कांव-कांव करने भर का होता तो लोगबाग सुन लेते।" आंखें बड़ी करते हुए परवेज बोलने लगा, "पर मुशीबत की जड़ ये है कि वे दिन-रात झूठ की रट लगाए रहते हैं!" 'झूठ की रट' बोलते हुए आंखें छोटी हो गईं, जैसे सूक्ष्म झूठ में छिपे रहस्य को पकड़ने का प्रयास कर रहा हो।

"कौवे तो झूठे होते हैं; लोग कहते भी हैं, जब कौवा खूब कांव-कांव करे तो समझो किसी के आने का झूठा संदेश दे रहा है।" अब्बा ने बात खत्म मानते हुए-सा मुंह बनाकर कहा।

"अब ऐसा नहीं है अब्बू; अब तो कौवे कम ही दिखते हैं, दिखते भी हैं तो कांव-कांव करना दुर्लभ-सा हो गया है।" परवेज ने फिक्र जाहिर करते हुए कहा, होंठों को आपस में भिड़ाते हुए।

"हां पर्यावरण बिगड़ने का पक्षियों पर तो जबरदस्त असर पड़ा है।" अब्बा मसले को सामान्य करते हुए बोले।

"आप इसे यूं भी कह सकते हैं कौवे का दिन-रात झूठ का कांव-कांव करना अब पॉलीटिशियन्स में शिफ्ट कर गया है, जिसे कई धर्मों में आत्मा का अंतरण कहते हैं।" परवेज ने कहा; उसके होंठों के दोनों ओर व्यंग के त्रिभुज उभर आए। भाभी जान चाय लेकर छत पर आ गई। उसे देखते ही दोनों बा-होशियार वाली पोजीशन में आ गए। बरगद पर बैठे कौवे वैसे ही बैठे थे; अब तक कांव-कांव किए बिना, सिर्फ पूँछ को दाएं-बाएं हिलाते हुए।

"मेरी चिंता करते हुए आप छत पर आ गए अब्बू, पर आप भी तो आजकल काफी फिक्रमंद दिख रहे हो?" भाभीजान के नीचे उतरते ही परवेज ने कहा, चाय कप हाथ में लेते ही।

"कुछ खास नहीं; पर समझ लो मेरी दिलदारी अब देनदारी का गंभीर मामला बनता जा रहा है।" अब्बू ने हैरानी जाहिर करते हुए कहा; अदब से चाय पीने के आदी अब्बू की चुस्की आज गर्जना-सी कर रही थी, जैसे उसके अंदर का कोलाहल चाय में समा हो गया हो।

"दिलदारी! देनदारी?" परवेज अब्बा की आंखों में गड़ गया।

"यू नो अबाउट जकात; वी आर डोनेटिंग सो मच टू वेरियस नीडी पीपुल, बट..." बोलकर वे पीछे वाली कॉलोनी की तरफ देखने लगे; पलभर के बाद बोले, "बट यू डोंट नो, ऑफकोर्स योर अम्मी नोज दैट हमने अपनी बचत का अ लिट्ल बिट अपने कुछ जरूरतमंद साथियों के साथ इन्वेस्ट कर रखा है।"

"इन्वेस्ट! ईट मींस महाजनी? इज इट नॉट अगेंस्ट द डायरेक्टिव्स ऑफ जकात?" चाय कप टेबुल पर रखते हुए परवेज हकलाकर बोला, जैसे कोई चीज उसे न पच रही हो।

"इन्वेस्टमेंट मींस दो-तीन नजदीकी साथियों के कारोबार में हमने कुछ शेयरदारी कर रखी है, और उससे जो कुछ भी अरनिंग आता है उससे जकात के रूप में जरूरतमंदों की मदद करते रहते हैं, खासकर रमजान के महीने में।" अब्बा ने कहा, फख्र से उनकी गर्दन तन गई।

"देन इट्स ओके।" बोलकर परवेज ने चाय कप फिर से उठा लिया।

"बट इट्स नॉट ओके; प्रॉब्लम्स स्टार्ट नाउ!" अब्बा ने चाय कप टेबल पर रखते हुए कहा, आगे लंबी सांस लेकर बोले, "गुडफेथ में जिनके बिजनेस में शेयर कर रखा है उनमें से हर आदमी अब पकड़ से बाहर होता जा रहा है!"

"पकड़ से बाहर! मतलब?" परवेज चौंक पड़ा।

"इन्वेस्टमेंट से जो प्रॉफिट होना था उसे तो भूल ही जाओ, मेरा जो मूल पैसा है उसकी वापसी पर भी आफत है!" घोर निराशा में डूबे चेहरा लिए अब्बा ने कहा, उसका मुंह देर तक खुला रह गया। परवेज ने अब्बू को इतना लाचार पहले कभी नहीं देखा था। वह उसके चेहरे पर उगे उभारों के मर्म को पढ़ने-गढ़ने लगे। बेटे को अचंभित देख वे आगे बोलने लगे, "अरे छोड़ो भी परवेज; मेरी सोच थी कि कोरोना टाइम में भूखे-फटेहालों की कुछ मदद की जाए जकात के तौर पर, पर खुदा की जो मर्जी; मुझे तो शर्मिंदगी हो रही है, उस वक्त जब तुम्हारी मंडली प्रवासी मजदूरों की खातिर बसों के इंतजाम के लिए हाथ-पैर मार रही थी मैं कोई खास मदद नहीं कर पाया, क्योंकि उस वक्त कोई भी जनाब फोन पिकअप नहीं कर रहा था, न तो सालाना प्रॉफिट बताने के लिए, न ही मूल वापसी के लिए!" बोलने के बाद उसका सिर देर तक अजीब ढंग से हिलता रहा, जैसे कयामत आने ही वाली हो।

"वाय दि वे मैं जान सकता हूं वे कौन-कौन लोग हैं?" परवेज उत्तेजित-सा दिखने लगा। "वो तुम्हारी दुनिया नहीं है बेटा, तुम अपने रास्ते पर

चलते रहो।" अब्बा ने उन सभी के गुनाह माफ कर देने के स्वर में कहा।

"डोंट वरी अब्बू, मैं अभी का अभी जाकर उन लोगों के हाथ-पैर नहीं तोड़ने वाला; जस्ट वांट टू नो शो दैट मेरे या सहज के रिसर्च में कुछ न्यू ऐड हो पाए।" परवेज ने इत्मीनान से कहा उसके चेहरे में उगी परिपक्वता देखकर अब्बा की फिक्र जाती रही; राज फाश कर देने के अंदाज में बोले "घंटाघर के श्याम अग्रवाल को जानते हो? अरे, पैराडाइज इन वाले को! उसने मुझसे बीस लाख लिए थे, होटल में लगा देने के नाम पर; शुरू-शुरू में कुछ प्रॉफिट तो दिया पर छह-सात महीने से रोना-गाना-बहाना शुरू हो गया है; गिन्नी मार्केट वाले दीप रस्तोगी को जानते होगे, अपने घर पर भी आया है कई बार! उसने मुझे विश्वास दिलाकर सात लाख लिए थे, भरोसा दिलाकर कि दस-बारह पर्सेंट तक का रिटर्न मिलेगा खुदरा सर्राफ में, कोरोना आने के बाद से फोन ही नहीं उठा रहा है! अगस्त महीने में एक बार मानसरोवर मार्केट में दिख गया था, गिड़गिड़ाने लगा कि कोरोना के कारण उसका सारा पैसा डूब गया है, सुनकर मैं तो जैसे आसमान से जमीन पर गिर पड़ा।" बोलकर अब्बा सामने सड़क की ओर देखने लगे जैसे आते-जाते लोगों में भले-बुरे की पहचान कर रहे हों। मिनटभर की चुप्पी के बाद पूर्व लय में बोलते गए, "और एक है धन्ना साहू! सर्राफ मार्केट के आभूषण ज्वेलर्स वाला, उसके पास तो कई साल से बारह लाख का इन्वेस्टमेंट हो रखा है, एक-दो साल तक फायदा देता रहा, उसी से तो मैं गरीब स्टूडेंट्स की मदद करता आया हूँ, दो महीना पहले बात किया तो कहने लगा सोने का भाव काफी चढ़ गया है, आपके प्रॉफिट में मेरा भी शेयर होना चाहिए?" बोलते-बोलते अब्बा की आंखें बड़ी हो गईं, आगे बोले, "कमीना गिरी की हद हो गई! सोने का भाव चढ़ गया तो मेरा प्रॉफिट खत्म?"

"अब्बू, आपके पैसे वापस नहीं हो पा रहे हैं, इससे जाहिर है कोरोना की आड़ में लोग एक-दूसरे को लूटने-हड़पने में लगे हैं; मुझे तो लग रहा है यह कोरोना मनुष्य बिरादरी के सारे वेल्यूज को एक-एक करके बर्बाद कर रहा है, इससे सोसाइटी के स्ट्रक्चर में अंदर-ही-अंदर बड़ी-बड़ी दरारें बनने लगी हैं!" परवेज की बातें गंभीर किस्म की होने लगीं; अब्बा ने विषयांतर करना जरूरी समझा, बोले, "अब रहने भी दो लेन-देन की बात को, तुम्हारी कोरोना-कौवा वाली बात ही मजेदार थी; लेकिन कौवे वाली बात से तुम इतने परेशान क्यों दिख रहे थे, भरी दुपहरिया में? अकेले इस छत पर!"

"अब्बू, मामला सिर्फ पॉलिटिशियंस के कौवे जैसा कांव-कांव कर दिन भर झूठ बोलने-बकने भर का नहीं है, मसला बेहद खतरनाक होता जा रहा है!" अब्बा की आंखों में गड़ कर परवेज ने कहा।

"खतरनाक?" अब्बा सहम उठे।

"यूं तो झूठ बोलना इंडियन पॉलिटिशियंस में एक आम चलन रहा है, लेकिन कोरोना काल में पॉलिटिशियंस में झूठ बोलने का रंग गहरा होता जा रहा है; झूठ बोलते रहने की यह कला इंडियन पॉलिटिक्स में धीरे-धीरे एक परमानेंट टेंडेंसी के रूप में डिपलि रूटेड होता जाएगा!" बोलकर परवेज चौराहे के होल्डिंग्स में गड़ गया, बोलता गया, "दिल्ली से लेकर दूर प्रांतों में सत्तासीन लोग अपने फेल्योर को अचीवमेंट रूप में प्रचारित कर रहे हैं, उनसे एक कदम आगे विपक्षी दलों के लोग सरकारों की वाजिब मेहनत को जनता के सामने जुबान की लाठी से पीट रहे हैं, झूठ के तेल से मालिश कर-करके! तो एक तरह से झूठ बोलने की गला काट प्रतियोगिता शुरू हो चुकी है!" अब्बा के चेहरे पर नजर टिकाकर उसने बात खत्म की।

"जो कुछ हो रहा है चल रहा है इस पर हमारा-तुम्हारा कोई वश नहीं चलने वाला! इस झूठ प्रतियोगिता से हम अपना टाइम क्यों खराब करें?" नीचे चलने का संकेत देते हुए अब्बा ने कहा।

"सवाल टाइम खराब करने का नहीं है अब्बू,, हम नवयुवकों को ताउम्र जो इन्वायरमेंट मिलने वाला है जिसमें हमें जीना है उसकी दुर्गंध परेशान करने लगी है हमें।" अब वह चहलकदमी करते हुए बोलने लगा, "संस्कृत की एक पंक्ति में पते की बात कही गई है ...'महाजनो येन गताः सः पांथाः' यानी बड़े जो करते हैं वही मार्ग बन जाता है और पीछे वाले उन्हीं का अनुसरण करते हैं; इंडियन पॉलिटिक्स में झूठ बोलने की प्रैक्टिस कोरोना काल में चरम पर पहुंच चुकी है! अब तो हर पॉलिटिशियंस झूठ बोलने के मामले में बड़े पॉलिटिशियंस को फॉलो करने लगे हैं! रियली इट इज पेनफुल दैट आगे हिंदुस्तान को झूठ के धुंध में ही जीना-मरना पड़ेगा!" बोलकर वह चौराहे वाले होर्डिंग्स पर गड़ गया, फिर से; होर्डिंग्स में कई पार्टियों के बड़े-बड़े नेताओं के हाथ आसमान की ओर इंगित कर रहे थे, जैसे चांद-सूरज पर छलांग लगाने से बस एक ही कदम दूर हों। बेटे को विमुख देखकर अब्बा बोल पड़े, "पर नेताओं को झूठ बोलने के लिए क्यों मजबूर होना पड़ रहा है? तुम्हारा पॉलिटिकल एनालिसिस क्या कहता है?"

"ऐतिहासिक काल से सत्ता ही पॉलिटिक्स की धुरी रही है, वहां तक पहुंचने के लिए हर काल में अलग-अलग हथकंडे सफल रहे हैं; इक्कीसवीं सदी में इंडियन पॉलीटिशियंस को लगने लगा है झूठ की सीढ़ी के सहारे ही सत्ता की मंजिल तक पहुंचा जा सकता है, और आगे झूठ की खुराक से ही उस पर काबिज रहा जा सकता है," उसने लंबी सांस लेकर कहा, अब होंठों में व्यंग मुस्कान लाते हुए बोला, "और जो लोग सत्ता से बाहर हैं वे तो झूठ का बाजा-गाजा जोर-शोर से बजाते दिख रहे हैं, क्योंकि उनका यकीन और मजबूत हो चला है कि झूठ के बगैर तो उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा!" बोलकर उसने क्षितिज की ओर नजरें उठा दीं; सुखद सर्दी वाले साफ आसमान में श्वेत बादल के झुंड यहां-वहां छितराए पड़े थे, जैसे बरसने के लिए सफेद झूठ की खेती कर रहे हों।

"पर इससे निजी तौर पर तुम इतने फिक्रमंद क्यों हो?" अब्बा अंदर से परेशान हो उठे।

"यह मामला सिर्फ निजी तौर पर फिक्रमंद होने भर का नहीं है, हमारी पीढ़ी को पूरा जीवन ऐसे ही विष-आवरण में जीने के लिए मजबूर होना पड़ेगा!" गम पचा जाने जैसी मुस्कान के साथ उसने कहा, फिर पश्चिम दिशा की तरफ मुंह करके बोला, "सिर्फ मैं ही नहीं हमारी कोरोना-कैबिनेट इस प्रकार के कई मुद्दों पर बेहद चिंतित है, और सुलभ-सुगम-स्वच्छ भविष्य का लक्ष्य पाने के लिए लगातार चर्चाएं हो रही हैं हमारे बीच; कोरोना-कैबिनेट को आप इक्कीसवीं सदी की पीढ़ी की अभिव्यक्ति कह सकते हैं।" बात खत्म होते-होते परवेज की चेहरे में उम्मीदों की मुस्कान उगती दिखी। अब्बा भी मुस्कुराए बिना न रह सके; परवेज के पीठ पर थपकी देते हुए बोले, "शाबाश! गो अहिड।" दोनों छत से नीचे उतरने लगे; निःशब्द, जैसे कोई बात हुई ही न हो।

9

अंजनी अंकल के बारे में पिछले दस दिनों से शायनी सोचती ही जा रही थी। अब तो उसे चक्कर-सा आने लगा था उसके बारे में सोच-सोचकर ...नाते-रिश्तेदारों-परिचितों के प्रति अड़ोस-पड़ोस-समाज की इतनी बेरुखी? अंजनी आंटी कोरोना से चल बसी, तो क्या उसका परिवार अभिशप्त हो गया! अपनों के लिए भी? कल वह मिस्टी से फिर मिल आई थी; स्कूल में उससे

एक दर्जे नीचे पढ़ने वाली मिस्टी कितनी तो मनमोहिनी हुआ करती थी उन दिनों! शायनी शायद अकेली थी जो इस हादसे के हर दूसरे-तीसरे दिन उसके घर हो आती; अंकल का हाल-चाल पूछ लेती, मिस्टी के मुखड़े में मुस्कान उगा आती। मिस्टी की बातें सुनकर वह अंदर से दहल उठी थी; मिस्टी बता रही थी– '...पापा से मिलते रहने वाले इतने सारे लोग न जाने अचानक कहां गायब हो गए? अब तो लोगों के फोन भी आने बंद हो गए हैं! पापा कहते हैं दुनिया तो सच में बेगानी होती है; उसे दुनिया भुतहा-सी लगने लगी है, कहते हैं संसार में रहने का क्या फायदा; अब तो मुझे भी डर लगने लगा है शायनी दीदी! मैं एक कंप्यूटर शोरूम में लगी हुई थी, मेरा काम छूट गया है, मेरे साथी-सहेली लोग भी धीरे-धीरे किनारा करने लगे हैं, पता नहीं दीदी यह दुनिया अचानक इतनी कैसे बदल गई है!...'

अपने पड़ोसी अंजनी अंकल और मिस्टी की दयनीय दशा ने उसे मजबूर कर दिया, कोरोना के कुप्रभाव पर स्टडी के लिए। वैसे भी एक महीने से शायनी को कोरोना वायरस के किसी नए स्ट्रेन के फीचर्स उपलब्ध नहीं हो पा रहे थे; उसका रिसर्च वर्क पुराने स्ट्रेन के इर्द-गिर्द ही चक्कर-सा काट रहा था। उसने सही सोचा, जब तक फिर कोई नया म्यूटेटेड वेरिएंट नहीं मिल जाता है तब तक क्यों न कोरोना के मानव जाति व समाज पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव-दुष्प्रभाव का छोटा-मोटा ग्राउंड स्टडी ही कर लिया जाए। इस प्रकार के सोशियो-साइको स्टडी शायद भविष्य में कोरोना वायरस के फ्यूचर ट्रेंड को समझने में मदद करें। स्टडी के लिए वह रामघाट में हर तबके के लोगों के बारे में आंकड़े इकट्ठे करना चाहती थी; स्वाभाविक ही सहज के बजाय मनोज का सहयोग लेना उसे उचित लगा। उसका मीडिया से जुड़ा होना भी ऐसे काम के अनुकूल था। उसने मनोज को अपने आने का मैसेज भेज दिया। कोई आधे घंटे में ही उसके घर की तरफ स्कूटी से चल भी दी, बिना किसी शाक-सज्जा के।

"अकेली? सहज को क्या हो गया!" बरामदे में खड़े मनोज के मुंह से स्वत: निकल पड़ा; शायनी को सहज के बगैर आई देखकर।

"क्यों! हम दोनों पति-पत्नी हैं जो हमेशा साथ घूमते रहें?" गुदगुदी वाली नाखुशी प्रकट करती हुई वह बोली।

"पति-पत्नी ना सही, रामघाट के हिट पेयर तो हो ही; तुम दोनों को साथ-साथ देखना भला किसे अच्छा नहीं लगेगा!" मनोज ने कहा; उसके

चेहरे में मन की निर्मलता झलकने लगी।

"हमेशा उसी के साथ रहूंगी तो साथियों का साथ छूट न जाएगा!" मनोज पर मोहित होकर वह बोली।

"तो तशरीफ लाइए साहिबा!" उसने दाहिने हाथ से सलाम-सा करते हुए कहा, बैठकखाने की तरफ चलने का इशारा करते हुए। उसके बैठते ही होंठों को मुस्कान में डुबोते हुए कहा, "आज सुबह-सवेरे घर से निकल पड़ी! अचानक?" मुस्कान के ऊपर संशय फैलाते हुए पूछा, "सब ठीक-ठाक तो है!"

"हां, सब कुछ भला-चंगा है।" होंठों में मुस्कान लाती हुई वह बोली, आगे चेहरे में तनाव की रेखा उभर आई, "बट कुछ दिनों से मन में एक अजीब किस्म का खालीपन उभरता जा रहा है; आई फील कोरोना के कारण रामघाट में लोगों के बीच संपर्क-संवाद कमजोर पड़ता जा रहा है!"

"तुम्हें सही एहसास हो रहा है; मैं भी कैमरामैन के साथ रिपोर्टिंग को निकलता रहता हूं, एक-दो महीने से महसूस कर रहा हूं लोगों के भाषा-भाव में कंजूसी आती जा रही है?" होंठों को निराशाजनक स्वरूप तक सिकोड़ते हुए उसने कहा।

"विकसित हो रहे ऐसे मानवीय स्वभाव-स्वरूप पर मैं एक स्टडी करना चाहती हूं, लोगों के बीच जाकर।" दरवाजे के बाहर झांकती हुई वह बोली जैसे दुनिया के भीतर झांकने का प्रयास कर रही हो, फिर मनोज की तरफ देखकर पूछा, "तुम्हें तो शहर के चप्पे-चप्पे की जानकारी है, मुझे लेकर कहां-कहां जा सकते हो?"

"कोरोना के कारण ह्यूमन बिहेवियर में आ रहे चेंजेज को नोटिस करने के लिए तो रंडेमलि जाना पड़ेगा; वैसे भी जिन्हें मैं जानता हूं वही चलना ठीक रहेगा, पर कैमरामैन के बिना अदरवाइज सामने वाले में कृत्रिमता आने लगेगी।" बोलकर वह कमरे की ओर बढ़ चला, कहते हुए, "बस अभी आया पाँच मिनट में तैयार होकर।" उसके बाहर आते ही दोनों बाइक से निकल पड़े, स्कूटी को घर के कोने में विश्राम देकर।

"नमस्कार दीक्षित साहब; कैसे हैं, क्या चल रहा है आजकल!" सतपुड़ा कॉलोनी से गुजरते हुए मनोज को अक्षय दीक्षित दिख गए, बालकनी में; उसने बाइक रोककर हाल-चाल पूछ लेना जरूरी समझा।

"कहने को तो ठीक ही हूं, घर बैठे ऑनलाइन कुछ-कुछ चल तो रहा है, पर कंपनी में काफी छँटनी हो रखी है।" चेहरे में बिना कोई परिवर्तन

लाए उसने कहा, लगा जवाब अक्षय ने नहीं किसी जीवित जीव ने दिया हो।

"कई महीने हो गए आपकी ओर से कोई फोन-फान न आया? आपके मित्र लोगों में से भी कोई संपर्क में नहीं रहा!" उसके चेहरे में नजर टिकाए मनोज ने कहा, विस्मयपूर्ण मुद्रा लिए; फिर होंठों को जीवंत-सा बनाते हुए बोला, "हां, फिलहाल तो कोरोना का डर भी..." वह बोल ही रहा था कि वह चिढ़ उठा, "अरे नहीं यार, कोरोना से कौन डरता है, बस समझो मन कुछ वैसा ही हो रखा है।" चेहरे में निराशा का आवरण डाले उसने कहा। बाइक स्टार्ट कर मनोज बोलता गया, "डोंट वरी दीक्षित साहब, ऊपर वाला सबका भला करेगा," थोड़ी दूर निकल जाने पर बाइक चलाते हुए ही शायनी को बताने लगा, "यह बंदा एक बड़ी आईटी कंपनी के ऑफिस में सेल्स मैनेजर है, इसके साथी लोग भी अच्छे पैकेज वाले हैं; जब भी इसके ऑफिस में किसी नए प्रोडक्ट पर न्यूज के लिए गया सभी मुझ पर फिदा हो जाते थे, और आज का दृश्य तुमने देख ही लिया, जैसे मरघट में दो अजनबी में बातें हो रही हों!"

"कभी-कभी सोचती हूं कि ह्यूमन बिंग के डीएनए के तेईस पेयर में से कोई ऐसा पेयर है जो उसे कभी-कभी एकाएक निराशा के गर्त में ला खड़ा करता है?" बोलते हुए पीछे बैठी शायनी सहम उठी।

"हाय शर्मा साहब कैसे हैं! कॉरपोरेशन में क्या कुछ नया चल रहा है?" शहीद पथ के कॉर्नर वाले भव्य भवन के सामने बाइक रोकते हुए मनोज ने पूछ लिया, विशाल लॉन में सिर झुकाए टहल रहे मोटे थुलथुले व्यक्ति से।

"अरे पत्रकार महोदय कॉरपोरेशन ऑफिस तो अपनी जगह पर है, थोड़े न मेरे घर पर शिफ्ट हो गया है!" उस व्यक्ति ने टका-सा जवाब दिया।

"दैट आई नो, फिर भी हाल-चाल के लिए पूछ लिया; और! वर्क कमेटी के चेयरमैन का क्या हाल-समाचार है?" मनोज बोल पड़ा, उस तरफ के शुष्क संवाद को नजरअंदाज करते हुए।

"अरे भैया मैं छह महीने से मेडिकल लिव में हूं, मुझे दूसरे के बारे में कुछ भी नहीं पता।" उसने ऊंची आवाज में कहा।

"और आपके साथ चलने वाले वर्मा जी इंजीनियर का?" मनोज तो जैसे अड़ गया था उसकी पूरी बिरादरी की खबर-खैरियत निकालने के लिए।

"अरे भई, मैंने अपना मोबाइल कई महीने से बंद कर रखा है!" हाथ जोड़कर माथे पर ले जाते हुए उसने कहा। इतना कुछ सुनने के बाद बाइक

स्टार्ट करने के अलावा कोई उपाय ना था मनोज के पास।

"अरे यह तो बड़ा अजीब आदमी है!" बाइक स्टार्ट होने की आवाज को परास्त करने वाले स्वर में वह बोली; भव्य भवन वाले चिड़चिड़े आदमी को सुनाने की गरज से।

"अरे शायनी जानती हो, यह श्रीमान रामघाट नगर निगम में ऊंचे ओहदे वाला इंजीनियर है, एग्जीक्यूटिव इंजीनियर!" बाइक धीमी करते हुए मनोज बोलता जा रहा था, "निगम कार्यालय में हमेशा हँसमुख दिखता था, वर्क कमेटी के चेयरमैन के साथ इसकी खूब पटती थी; अपने मातहत इंजीनियरों के साथ शहर में कुछ-न-कुछ नया निर्माण करता रहता था, और इन लोगों ने बेशुमार पैसे भी कमाए हैं; लेकिन अब इसकी दशा तो देखो, सीधे मुंह सरल उत्तर देते भी नानी मरी जा रही है!" बोलते-बोलते उसका बाइक इंडियाना कॉलोनी में प्रवेश कर गया।

"अस्सलाम वलेकुम जुबेर साहब!" इंडियाना सोसायटी के गेट पर पहले मकान के बाहर चहलकदमी कर रहे कुर्ता-पजामा धारी से मनोज ने पूछा, चेहरे में गुलदस्ता-सा मुस्कान लाकर।

"राम-राम," चहलकदमी रोकते हुए उस आदमी ने जवाब दिया।

"सब कुशल तो हैं? और व्यापार मंडल का क्या हाल-चाल हैं!" पूछते हुए में दिनेश का उत्साह बरकरार था।

"अरे मीडिया वाले भाई साहब, किसे फुर्सत है व्यापार मंडल की खबर-खैरियत लेने की, ऐसी शामत आन पड़ी है धरती में कि पूछो मत, समझ लो जहन्नुम सामने दिख रहा है! अल्लाह तला जाने यह मुसीबत कब टलेगी," उसने खिन्न होकर कहा।

"ऐसे संकट साल में व्यापार मंडल वाले कुछ तो कर सकते हैं शहर के लिए? मीटिंग सिटिंग तो होनी चाहिए!" उसने जुबेर साहब को जगाना चाहा।

"मीटिंग तो दूर की बात है, हमारी तो व्यापार मंडल के ऑफिस बियरर से भी बात नहीं हो पाई है; अल्लाह तला जाने मन में खुशहाली क्यों नहीं आ रही है!" सिर नीचे झुकाए उसने कहा, मुंडी को अजीब ढंग से नकारते हुए जैसे धरती के नीचे कोई मुफीद जगह खोजना चाह रहा हो।

"और हैंडलूम कारखाने वाले आपके भाई साहब..." उसकी बात पूरी नहीं हो पाई थी कि वह उबल-सा पड़ा, "अरे जनाब हमारे भाई बगल वाली इमारत में होंगे, जाकर पता कर लीजिए।" बोलकर हाथ जोड़ते हुए वह अंदर

की ओर चल पड़ा, जैसे दूसरे मनुष्य से बात करने से सच में जहन्नुम का दरवाजा दिखता हो। मनोज ने शायनी की ओर देखा। उसने आंखों से आगे बढ़ जाने का संकेत किया; बाइक के चलते ही बोल पड़ी, नाराज होकर, "मनोज, मैं तो निकली थी कोरोना की दुनिया की सोशियो-साइको स्टडी के लिए, और कहां तुम मोहल्ला दर मोहल्ला मीडिया जैसा इंटरव्यू करते फिर रहे हो!"

"अभी तक हम लोगों ने जो देखा-सुना उससे अलग सोशियो-साइको स्टडी क्या होता है?" बाइक में ब्रेक लगाते हुए मनोज ने कहा, आगे चिढ़ कर बोला, "यदि स्टडी इससे कुछ अलग होती है तो दिल्ली जाकर मंत्री-प्रधानमंत्री से पूछो, वह तो बिना देर किए बोल पड़ेंगे इससे बेहतर दुनिया धरती में पहले कभी थी ही नहीं!"

"ऐसा करते हैं बस्ती में चलकर कुछ लोगों के मनोभाव को पढ़ते हैं, तभी कुछ कनक्लूसिव फाइंडिंग्स निकाला जा सकता है।" शायनी माफीनामे वाली मुद्रा में बोली। मनोज ने बाइक स्टार्ट कर दिया।

"बाय दी वे बस्ती में किधर को चलना है?" इंडियाना कॉलोनी के मोड़ पर पहुंचते ही मनोज ने पूछ लेना जरूरी समझा।

"कहां चलें?" वह सोच में पड़ गई; मनोज से ही पूछ लिया, "तुम तो बस्ती के हो; उन्हीं लोगों के पास चलते हैं जो जिंदगी को करीब से समझते हैं और जीवन-रस में रमे रहते हैं।"

"जिंदगी को करीब से जानने वाले को तो मैं नहीं जानता, पर बस्ती का हर बाशिंदा जीवन रस में जरूर डूबा रहता है, दिन-रात!" मनोज ने बेबाकी से कहा। पटेल मार्ग पर आते ही मनोज सूत्र पा लेने के स्वर में बोला, "याद आया, एक वो हैं न रामसखा?" फिर गर्दन पीछे शायनी की ओर तान कर कहा, "अरे वही जो रामघाट के मशहूर रामलीला में रामजी का रोल करते हैं; वे तो सच में धर्मशास्त्र के ज्ञाता और मानव जीवन के मर्मज्ञ हैं! हमारी बस्ती के कॉर्नर में ही तो है उनका घर; वह तो सचमुच लाजवाब इंसान हैं, हर वक्त हँसते मुस्कुराते जीवन के गीत गाते-सुनाते रहते हैं।" बातों-बातों में ही बाइक राजा हरी मार्ग में मुड़ गई।

मिनटभर में बाइक गली के अंतिम घर के सामने रुकी। बरामदे में धोती -कुर्ते में दीप्त ललाट वाले पुरुष सजकर बैठे थे। "प्रणाम गुरुदेव" उसके सामने मनोज ने हाथ जोड़कर कहा, दंडवत होने-सा झुकते हुए। वह भी हाथ जोड़कर थोड़ी-सी झुक ली। दीप्त ललाट वाले के मुख मंडल का निर्विकार

भाव अखंडित रहा। क्षणभर की चुप्पी के बाद दीप्त पुरुष के हाथ इंच भर उठे, आशीर्वाद संकेत-सा। मनोज को याद आया, पहले जब भी उसने गुरुदेव को प्रणाम किया है हमेशा उद्घोषणापूर्ण स्वर में 'यशस्वी भव, चिरंजीवी भव' कहते रहे हैं। देर तक चुप्पी साधे रहना मनोज को माथे पर वजन-सा लगने लगा; मुंह से निकल पड़ा, "आप कैसे हैं गुरुदेव?" कुछ बोलने के बजाय पुरुष ने अब जाकर दोनों की तरफ नजर भर उठाया, असीम कृपा करने जैसा। "रामलीला मंडली के और कलाकार लोग कैसे हैं?" अब शायनी बोल पड़ी; कुछ साल पहले देखा गया रामलीला मंचन उसकी स्मृति में जीवित हो उठा।

"कौन लोग? किस लोग की बात करती हो बालिके!" पुरुष के मुंह से निकला, फिर आँखें बंद कर बोले, "मुझे तो दुनिया में कोई दूसरा मानव नहीं दिखता!" लगा बोलते हुए में उन्हें कुछ अपराध बोध हो रहा हो; शायद रामलीला मंचन में सीता के प्रति प्रदर्शित कतिपय निष्ठुर प्रसंगों की ग्लानि महसूस करके।

"बगल वाले घर में रहने वाले आपके छोटे भाई राम तीरथ के परिवार वाले कैसे हैं? उसका बेटा हम लोगों के साथ स्कूल में था!" बहाल हुई वार्ता जारी रखने का अवसर गंवाना नहीं चाहता था मनोज।

"दूर वाले हों या बगल वाले, किसी से मेरी बात नहीं हुई है कई महीनों से।" बोलकर पुरुष ने दोनों पर नजरें गड़ा दीं, जैसे पूछना चाह रहा हो कि क्या उन लोगों की बातचीत हो रही है अपने परिवार-पड़ोस से।

"इस दुनिया में अचानक ऐसा क्या हो गया है गुरुदेव कि लोगों का मिलना-जुलना आपसी बातचीत भी बंद-सा होता जा रहा है!" अपनी स्टडी के इश्यूज याद आते ही वह बोली।

"देखो बालिके, अपने मन के विरुद्ध कुछ भी नहीं किया जा सकता! गूढ़ ज्ञानी वाली मुद्रा बनाकर वह बोलते रहे, "जब मन कह रहा है अपने आप को देखो-संभालो, तो इच्छा विरुद्ध किसी से न मिला जा सकता है और न ही फोन-मोबाइल से वार्तालाप ही की जा सकती है।" अब वह कुर्सी से उठते हुए बोले, "एकांत में चिंतन-मनन का वक्त हो चला मेरा, कृपया आज्ञा लें।" बोलकर उसने आंखें बंद कर लीं, खड़े-खड़े; जैसे सीधे परम ब्रह्म से संपर्क स्थापित हो गया हो। शीश नवाते हुए दोनों राजा हरी मार्ग पर आ खड़े हुए। वह बोली, "तुमने ऐसे-ऐसे लोगों से मिलवा दिया कि माथा भारी हो चला है, कहीं चलकर चाय पिलाओ।" बाइक स्टार्ट करते हुए वह बोला, "भरत

काका के टी कॉर्नर पर ही चलते हैं।"

टी कॉर्नर पहुंचकर शायनी ने काउंटर पर संकेत से तीन कॉफी का आर्डर दिया। पीछे वाली खुली जगह में कुर्सी खींचकर दोनों बैठ गए, गुनगुनी धूप में; चुपचाप-गुमसुम, जैसे मानव के मन में आ रहे बड़े बदलाव की आंधी में बहकर दोनों बमुश्किल किनारे लग पाए हों। तभी अचानक सहज वहां आ धमका। आते ही मनोज की गर्दन दबाते हुए बोला, चीखते हुए-सा मुंह बनाकर, "नीच कमीने! मेरी गर्लफ्रेंड के साथ..." आगे उसकी आंखों में गड़ गया; गर्दन पर कसाव में बिना ढील दिए धीमी आवाज में कहा, "तुम्हारी इस नीच हरकत के लिए मैं तुम्हें जिंदा दफन कर दूंगा!" तभी एकाएक ठहाका मारकर उसे गले लगा लिया, शायनी को आंख मारते हुए। शर्म के मारे शायनी ने अपना चेहरा दोनों हथेली में छुपा लिया। कॉफी आ गई; लघु नाटिका का अंत हो गया।

"दरअसल शायनी ने दस मिनट पहले ही मैसेज भेजा था, टी कॉर्नर में आने के लिए।" मनोज की ओर माफीनामे के अंदाज में वह बोला; फिर कॉफी मग हाथ में लिए शायनी पर गौर करते हुए पूछा, "तो कोरोना का मानव समाज-स्वभाव पर सोशियो-साइको इफैक्ट पर तुम्हारा प्रिलिमनरी फाइंडिंग क्या कह रहा है?"

"इन सिंपल वर्ड कोरोना के कारण मनुष्य मनुष्य के बीच संपर्क टूटता गया है, फिर धीरे-धीरे संवाद भी कमजोर पड़ता जा रहा है, सभी अपने-अपने में सिमटे जा रहे हैं।" कॉफी सिप करती हुई वह बोलती जा रही थी, अब उसकी आंखें छोटी हो गईं जैसे समय को दूर तक देख पा रही हो, "बहुत बड़ी आबादी में यह ख्याल पनपता जा रहा है कि जिंदगी जीने के लिए पड़ोसियों-परिचितों-रिश्तेदारों से पहले जैसी निकटता जरूरी नहीं है।"

"इस प्रकार का परसेप्शन डेवलप होने के पीछे मुख्य वजह क्या हो सकती है?" सहज भी शायनी जैसा गंभीर हो उठा।

"जिन लोगों ने, जिन परिवारों ने कोरोना को रियली झेला है उनके ट्रॉमा को हम समझ सकते हैं; पर लॉकडाउन के दिनों में और अनलॉक के दौर में भी, बल्कि अभी तक, कोरोना की दहशत को पूरी आबादी जिस प्रकार झेल रही है वह इस पृथ्वी में एक अभूतपूर्व घटना है! एक और बड़ी सच्चाई, पूरे जनमानस को अपने अंदर इस भय को अकेले-अकेले झेलना पड़ रहा है! इंसान के अंदर विष वृक्ष जैसे फैले इस भयावह परिवेश की आंधी में

हर इंसान अकेला खड़ा है।" अब वह सड़क की ओर देखकर बोलने लगी, "सच कहूं तो इंसान के अंदर पनप रहे ऐसे भयावह परिवेश में कोई किसी को हाथ पकड़कर बाहर निकाल भी नहीं सकता; तो समझो हर मनुष्य उस परिवेश में अंदर-ही-अंदर छटपटा रहा है और वह छटपटाहट अब उसके रूटीन का मुख्य हिस्सा बनता गया है, ऐसे में बाहरी संपर्क-संवाद तो कमजोर पड़ना ही पड़ना है?" बोलकर उसने आंखें बंद कर लीं; शायद अपने अंदर में झांकने के लिए या शायद सामने बैठे सहज के अंदर झांकने के लिए।

"परंतु एक आदमी मोबाइल उठाकर अपने मित्रों-परिचितों से पहले जैसा ही संपर्क बनाए तो रख सकता है!" मनोज ने आशापूर्ण चेहरा लिए हुए कहा।

"ऐसा नहीं है कि अपनों से संपर्क बनाए रखने के लिए मनुष्य प्रयास नहीं कर रहा है, प्रयास तो कर ही रहा है, मोबाइल वगैरह से लोग संपर्क में रहते भी हैं, काफी हद तक संपर्क बहाल भी हुआ है।" शायनी आंखें खोलती हुई बोली, अब आंखें बड़ी हो गईं, "पर पहले जैसा सच्चा संपर्क बनाए रखने का जज्बा मन के अंदर मिटता जा रहा है; हाउइवर इट इज द कोर सब्जेक्ट ऑफ अहम बट इन सिंपल वर्ड कोरोना त्रासदी से मानव के मन के पैर सुस्त से पड़ते जा रहे हैं!"

"इस प्रकार की स्टडी तुम्हारे कोरोना वायरस के रिसर्च में क्या हेल्प करेगा?" सहज ने पूछ लिया, अधिकारपूर्ण भाव-भंगिमा के बिना।

"मेरा रिसर्च कोरोना वायरस के म्यूटेशन पर केंद्रित है जिसे हम उसके बिहेवियर से ट्रैक करते हैं, कोरोना टाइम में ह्यूमन विंग के बिहेवियर में आ रहे अमेजिंग चेंजेज मुझे कोरोना के बिहेवियर को ट्रैक करने के लिए बूस्ट अप करते रहेंगे; इससे कोरोना पर रिसर्च को कंटिन्यू करने के लिए मेरे अंदर का मोराल भी अलाइव रहेगा, और मुझे उस वैरीअंट तक पहुंचने में मदद करेगा जो आने वाले वर्षों में मानव जाति के लिए मोस्ट फेटल हो सकता है!" बोलते-बोलते शायनी की आंखें छोटी पड़ती गईं; फिर बंद हो गईं। कुर्सी में बैठे-बैठे सहज सहम उठा, बोला, "अरे मनोज अब चलना चाहिए, कहीं यह लड़की साइंस छोड़कर साइकोलॉजी-फिलासफी की राह न पकड़ ले!"

"राह पकड़ना-छोड़ना अपनी जगह है, अभी तुम इसे लेकर निकल जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम दोनों के बीच का संवाद संपर्क भी खतरे में पड़ जाए!" कुर्सी छोड़ते हुए मनोज ने कहा। कार की ओर बढ़ने में सहज ने देर नहीं की; उसकी कनिष्ठा उंगली पकड़कर।

"डोंट वरी मनोज," एकाएक आंखें खोलती हुई वह बोली, आगे स्वर जैसे चमकती आंखों से निकलने लगे, "कोरोना वायरस मनुष्य के अंदर चाहे कितना ही बदलाव ला दे, हम दोनों के बीच उसकी दाल नहीं गलने वाली!" कार में बैठते-बैठते बोली, "प्लीज, मेरी स्कूटी मेरे घर भिजवा देना।"

अध्याय सात

1

पहली जनवरी, साल का पहला दिन; सुबह कुछ भी नया नहीं था, लोगों ने अपने अंदर नएपन का एहसास जरूर ओढ़ लिया। पिछली सुबह जैसा ही कोहरे ने चारों तरफ की दुनिया को घेर रखा था। पिछले साल पहली जनवरी को धुंध के बीच ही रामू और मंजरी ने बेरी पेड़ के नीचे आशियाना बनाया था, घंटेभर का! इस बार बेरी पेड़ का ख्याल भी न आया; कोरोना की कहानी ने कितना तो बदल दिया था दोनों को! कल शाम जिला अस्पताल के कोरोना वॉरियर्स संघ का आमंत्रण आया था, दोनों को 'हां' कहते देर नहीं लगी।

मंजरी को बाइक में बिठाकर घूमना रामू का जुनून नहीं रहा कभी। कोरोना के घटते आँकड़े ने आज पहली जनवरी को उसके अंदर पसंद-नापसंद का भेद मिटा दिया; मंजरी को बाइक में बिठाकर आज उसकी भी बाइक रामघाट की सड़कों पर उड़ी जी रही थी। ग्यारह बजे दोनों जिला अस्पताल के लॉन में लगे पंडाल में पीछे जा बैठे, चुपचाप। सिस्टर्स यूनियन वाली सिस्टर जायसी की नजर मंजरी पर पड़ी; उसने माइक में रोमाँटिक आवाज लगाई, "तो हमारे बीच शहर के मशहूर पेयर पधार चुके हैं...मंजरी एंड रामू! प्लीज कम फॉरवर्ड!" दोनों को सामने आना ही पड़ा; सामने वाले सोफे पर बिठाया गया। लाउडस्पीकर में दोनों की तारीफ में कसीदे गढ़े गए।

"...साथियों, आप जानते हैं इस शहर में कुछ प्रतिभावान छात्र-छात्राओं ने कोरोना से जंग के दौरान कोरोना-मंडली खड़ी कर रखी है; उसी मंडली से रामू और मंजरी ने हमारे कोरोना वार्ड में भरपूर सेवा दी है, इससे हमारे कोरोना वॉरियर्स को काफी सपोर्ट मिला; हमारा पूरा संगठन इन दोनों का आभारी है और आज एक जनवरी को हम इन दोनों का सम्मान करते हैं!"

तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा पंडाल गूंज उठा। मंजरी और रामू ने एक-दूसरे को देखा; आत्म तुष्टि के आनंद में नहाते हुए, कि कर्म कभी निष्फल नहीं जाता। कोरोना वॉरियर्स के सम्मान में रखा गया दो घंटे का कार्यक्रम बहुरंगी था, हौसला बढ़ाने वाले फोक सांग से लेकर कोरोना को मात देने वाली नाट्यावली तक। सभी ने जी भरकर लुत्फ उठाया। दो बजे लंच संपन्न होने के बाद दोनों वहां से निकल पड़े।

दोनों जैसे ही पंडाल से निकले रहमान काका बिल्कुल सामने खड़े थे। बस्ती के धुनिया मोहल्ला वाले रहमान काका; जाड़े में किसने उनके यहां रजाई ना भराई हो! उन्हें देखते ही दोनों सकपका गए, रंगे हाथ पकड़ में आने जैसा कुछ। रहमान काका मुस्कुरा उठे, "तुम दोनों युग-युग जियो बिटवा! तुम दोनों के नाम की पुकार लगी तब तसल्ली हुई सही में इधर ही आए हो।" क्षणिक विराम के बाद बोले, "मैंने तो उदय से कहा था अस्पताल चलकर मेरा मामला देख लें; लेकिन आज आदिवासी टोला में हो रहे कार्यक्रम में उन्हें जाना था, उन्होंने बताया मंजरी अस्पताल ही गई है।"

"हां काका, मैं भैया से बोलकर आई हूं कि अस्पताल में कोरोना स्टाफ ने कार्यक्रम रखा है।" फिर काका पर गौर करते हुए बोली, "पर भैया ने आपके लिए कुछ बताया नहीं! मैसेज भी नहीं किया कि क्या बात है?"

"अरी बिटिया, उदय बिटवा घर से निकलकर चल पड़ा था, यात्रा के बखत काम का जिक्र भला मैं कैसे करता!"

"अस्पताल में कहीं कोई दिक्कत है?" रामू ने बोलना जरूरी समझा।

"अरे बिटवा का बताएं! हमार बिटिया का पथरी का ऑपरेशन होना है, दो महीने से दौड़ रहे हैं," बोलकर उसने माथा पकड़ लिया, फिर बोले,

"जुलाई-अगस्त-सितंबर में अस्पताल में कोरोना के अलावा कुछ था ही नहीं, मरीज भले ही घर में मर जाएं अस्पताल वाले ऑपरेशन नहीं लेते थे!"

"अब तो हो रहा है।" मंजरी को पता था, बोल पड़ी।

"हां बेटा ऑक्टोबर से हो रहा है, लेकिन..." इतना बोलते ही काका की आँखें भर आईं; रामू ने सहारा दिया, तब वह बोल पाए, "चौदह नवंबर को ऑपरेशन का डेट तय था; करोना टेस्ट भी हो गया, पर उस दिन डॉक्टर ही न आया! आगे छह दिसंबर का डेट दिया, फिर से करोना टेस्ट हुआ, पर बेहोशी वाला डॉक्टर छुट्टी चला गया; अब पाँच जनवरी का डेट दिया है ऑपरेशन का..." अब वह रुआंसा हो उठे, "अब फिर से करोना टेस्ट कराने

बोल रहा है।" मंजरी ने उसके कंधे को सहलाया; रुलाई अंदर रोकते हुए वह बोला, "मेरे पास चार हजार ही थे, बाहर से दो बार करोना टेस्ट कराने में तीन तो निकल गया और अब एक हजार कहां से लाऊँ? पाँच सौ में हो पाता तो मैं अभी निकाल देता हूं।" बोलकर वह अपने बटुए से तुड़े-मुड़े नोट निकालने लगे। रामू और मंजरी एक-दूसरे को देखने लगे ...इसका भला क्या उपाय होगा? मंजरी धीरे से बोली, "एक उपाय हो सकता है, मैं कोरोना वार्ड में मारथा दीदी को बोलती हूं, यदि वो चाहेगी तो ऊपर-नीचे करके कोरोना का फ्री टेस्ट करवा सकती है।"

"वि मस्ट ट्राय" रामू ने कहा, फिर रहमान काका से बोला "काका आप छोटी को लेकर करोना वार्ड की तरफ बढ़ो, हम दोनों बाइक से अभी आए।"

"मेरी तो समझ में नहीं आ रहा है, सरकार ने लाखों-करोड़ों का पैकेज दिया है, पर रहमान काका जैसों के लिए करोना का फ्री टेस्ट करवाने की व्यवस्था नहीं हो पाई!" अपनी उबाल बाहर आने से रोकते हुए रामू बोला।

"शुरू के तीन-चार महीने तक फ्री टेस्टिंग था जिला अस्पताल में, पर अब शायद बाहर से कराने का बोला जा रहा है।" बाइक में बैठते हुए मंजरी ने अपनी अनभिज्ञता प्रकट की; बाइक चल पड़ी तो बोली, "सहज भैया ने जेड सर को मृत्यु से पूर्व आश्वासन दिया था इकोनॉमिक्स में ऐसी थ्योरी लाने की जिससे गरीबों की दुर्दशा खत्म हो दुनिया में।"

"हां, सहज लगा तो है; न्यू इकोनॉमिक्स मॉडल पर काम कर रहा है।"

"यार, मैं कभी-कभी सोचती हूं दुनिया में ठीक-ठाक पैसा होना कितना जरूरी है परिवार चलाने के लिए।" रामू के कमर में हाथ रखती हुई वह बोली।

"इतना मत सोचा कर यार, फिर तो हम दोनों कुंवारे ही रह जाएंगे!" रामू ने गर्दन पीछे की ओर झुकाते हुए कहा; उसने उसे जोर से अपने कसाव में ले लिया, बोली, "पहले काका का काम तो करवा दें; अपनी घरबार की बारी जब आएगी तब देखी जाएगी, वैसे जहां चाह वहां राह; मुझे तो अपने पर यकीन है, जिस दिन जो भी करना चाहूंगी कर लूंगी।" फिर रामू की पीठ से सटते हुए बोल पड़ी, "बस तुम्हारा साथ चाहिए; तुम अपने सोचे रास्ते से डिगना मत, बाकी मैं देख लूंगी।"

रामघाट तिरे से कानों में पड़ रहे मानस दोहे ...नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं... तुलसीदास द्वारा दिया गया सबसे बड़ा दर्शन जान पड़ा दोनों को।

2

जनता को वैक्सीन की सौगात शीघ्र ही मिलने की घोषणा-सूचना सुनी-सुनाई जाने लगी थी, पिछले कुछ सप्ताह से ही। प्रधानमंत्रीजी के मुँह से वैक्सीन शब्द बार-बार निकलते रहने से विरोधी दलों को लाइलाज खुजली होने लगी थी; इसका कोई काट मिलता न देखकर कुछ विरोधी नेता वैक्सीन को प्रधानमंत्री का निजी प्रॉडक्ट बताने पर तुले थे। कारण-कारक चाहे जो भी रहे हों, नए साल में लोगों के मन से कोरोना का खौफ खत्म सा होने लगा; पहले दिन से ही। बीते साल को जी भर कर कोसने के बाद नया साल वैसे भी शुभ-शुभ-सा लग रहा था, हर प्रकार के कष्ट का तारणहार-सा। नए साल में मीडिया की मर्जी में एक बड़ा बदलाव आ गया; बीते साल में कोरोना का पच्चीस हजार से एक लाख प्रतिदिन की ओर चढ़ता आंकड़ा जून-जुलाई के बाद मीडिया से लगभग गायब ही हो गया था, नए साल में प्रति-दिन का आंकड़ा पच्चीस से दस हजार प्रतिदिन की ओर नीचे गिरता जा रहा था, पर मीडिया में कोरोना ने फिर से उछल-कूद मचाना शुरू कर दिया। मनोज शुरू से ही मीडिया से जुड़ा था; बारहवीं के बाद वह मीडिया हाउस में लग गया था, बतौर ऑफिस बॉय। वैसे तो उस वक्त के कई रिपोर्टर को वह जानता था, पर शंकर भैया ही तो थे जो उसका ज्यादा ख्याल रखते थे। शंकर भैया हैं भी तो दबंग रिपोर्टर; सच को सामने लाने में कभी नहीं हिचकते! आज मनोज की किस्मत अच्छी थी, कड़ाके की ठंड में साढ़े छह बजे पहुंचा तो शंकर भैया मंगल टीका केंद्रों की लाइव रिपोर्टिंग खत्म कर मीडिया हाउस आ चुके थे। उस पर नजर पड़ते ही मनोज खिल उठा; लंबे अरसे बाद वह शंकर भैया को मीडिया हाउस में देख रहा था। छोटे भाई भांति उसके कंधे में हाथ डालकर शंकर उसे कैफे ले गया। उसकी पसंद वाली कॉफी का ऑर्डर दिया; मनोज का कलेजा तरल हो उठा '...अभी भी शंकर भैया उसका कितना तो ख्याल रखते हैं!'

"और मनोज; जो ठान लेते हो वह तुम कर ही लेते हो! बस्ती के बारे में गलत न्यूज दिखाने पर तुमने रामघाट सिटी चैनल के ऑफिस को बाय बाय कर दिया था; मानना पड़ेगा छोटू वहां के लोगों में अपनी बस्ती के प्रति जुनून तो है!" खाली टेबल देखकर बैठते हुए शंकर ने कहा।

"हां भैया, तभी तो बस्ती को दुनिया इंडिया के नाम से जानती है।" उसने फख्र से कहा।

"अब तो तुम कई अखबारों के लिए रिपोर्टिंग कर रहे हो? कैसी चल रही है!"

"दैनिक अखबार हैं सभी; रिपोर्टर मतलब सेल्समैन टाइप का जॉब! सुबह से शाम तक बोलती खबरें खोजते फिरो!" उसने उत्साह के साथ कहा, फिर लाचारी व्यक्त करते हुए बोला, "कोरोना के कारण अखबार भी तो बैठा जा रहा है; जब पूरी इकोनोमी ही धड़ाम है तो ऐसे में कौन भला विज्ञापन देगा, अब तो समझिए सरकारी विज्ञापन से ही अखबारों की सांसें चालू हैं!"

"अरे कोरोना ने आदमी पर कम कारोबार पर ज्यादा कहर ढाया है; कितनों की नौकरी छूटी है कितना कारोबार डूबा है इसका आंकड़ा कोई नहीं दिखाना चाहता है!" शंकर ने कहा तो उसकी आंखें फैल गईं।

"सही कह रहे हैं भैया, अखबारों के दफ्तरों में मैक्सिमम वर्कर को मालिक लोगों ने अभी तक वापस बुलाया ही नहीं है!" बोलकर उसने ऊपर वाले की ओर हाथ जोड़ते हुए कहा, "मुझ पर प्रभु की कृपा ही कहिए जो दस दिन की बंदी के बाद खुलते ही सेठजी ने वापस बुला लिया।" बोलकर उसने पलकें बंद कर लीं जैसे प्रभु को याद कर रहा हो।

"आजकल तुम लोगों की कोरोना-मंडली खूब चल रही है रामघाट में! वैसे तुम समय कैसे निकाल लेते हो मंडली के लिए?" शंकर विस्मित होकर बोला।

"कोरोना काल में शुरू के तीन-चार महीना अखबारबाजी तो मंदा ही रहा, तब मंडली के लिए समय निकल आया था; अब कभी सुबह, कभी शाम मंडली के साथ बैठ लेता हूं।" उसने संतोषपूर्वक कहा; आगे हाव-भाव में नाराजगी लाते हुए बोला, "भैया यह तो बताओ कोरोना-मंडली के सकारात्मक कार्यों को सामने लाने के लिए मीडिया वाले इतना कंजूसी क्यों करते हैं!"

"लोकल लेवल में अपने बूते जितना संभव है उतना तो दिखा ही रहे हैं एक-दो चैनल; शेष तो तुम्हें भी पता होगा, अब तो अधिकांश चैनलों का रिमोट कहां चला गया है!" शंकर ने पश्चिम दिशा में आँखें घुमाते हुए कहा।

"बाय दि वेय एक बात मेरी समझ में नहीं आ रही है।" बोलते हुए मनोज की मुद्रा गंभीर हो उठी, "मार्च-अप्रैल-मई में कोरोना के आंकड़े ने न्यूज चैनलों में स्वाभाविक रूप से सर्व प्रमुख जगह बनाई थी, पर जब आंकड़ा तेजी से ऊपर भागने लगा तो अगले तीन-चार-पांच महीने आंकड़ा तो जैसे मीडिया से गायब ही हो गया!..." उसके बोलते रहने के बीच ही शंकर ने

जोड़ा, "हां तो?", जैसे यह सब सामान्य बातें थीं; मनोज ने अपनी बात जारी रखी, "लेकिन अब इस जनवरी में जब कोरोना के आंकड़े नीचे दस हजार की तरफ लुढ़क गया है, यह आंकड़ा फिर से मीडिया में जोर-शोर से उछल रहा है!" बोलते-बोलते उसकी आँखें बाहर निकल आने सी हो गईं, जैसे सच में मीडिया किसी बड़े पाप में संलिप्त हो।

"भाई मनोज! मीडिया जगत में कोई कायदे-कानून नहीं हैं कि कब क्या न्यूज चलाना है, जनता को कब क्या दिखाना बताना हजम कराना है; इसके लिए रिमोट धारी ने बजाप्ता एक मीडिया मंडली बैठा रखी है, मीडिया की दिशा और दृष्टि वहीं से तय होती है।" शंकर के लिए यह सब सामान्य दिनचर्या वाली बातें थीं।

"वह तो मैं मानता हूं; जो सबका मालिक है उसका हक बनता है सब कुछ तय करने का..." वह बोलता ही जा रहा था, बीच में शंकर ने पूछ लिया "फिर तुम जानना क्या चाहते हो?"

"आखिर इस उल्टी गंगा के पीछे का लॉजिक क्या है? जून-जुलाई-अगस्त से दिसंबर तक जब कोरोना तेज रफ्तार से बढ़ रहा था तो आंकड़े जानने के लिए लोगों को न्यूज चैनलों में घंटों आँखें गड़ाए रखनी पड़ती थीं।" इतना बोलने के बाद उसके होठों में व्यंग वाली मुस्कान छा गई, "पर अब जब कोरोना के आंकड़े तेजी से लुढ़क रहे हैं तो चैनलों में हर घंटे आंकड़े ही आंकड़े दिखाए जा रहे हैं!"

"बहुत सीधा-सा फॉर्मूला है भाई मेरे!" शंकर सहज भाव से बोलता गया, "पहले आंकड़ों का सिर्फ झरोखा दर्शन कराया जाता था, ताकि लोग डरें नहीं, और अब आंकड़ों की समझो प्रदर्शनी-सी लगा दी गई है, ताकि लोग कोरोना से डरते रहें; इट इज सो सिंपल लॉजिक माय डियर छोटू!"

"पर इसके पीछे जिसका भी माइंड काम कर रहा है वह पहले ऐसा क्यों चाहता था कि लोग कोरोना से डरें नहीं? और अब ऐसा क्यों चाहता है कि लोग अब कोरोना से डरें?" वह सच में बहुत ही असमंजस में पड़ा था; आगे बैल जैसा सिर हिलाकर बोला, "बात मेरी समझ में ठीक से आ नहीं रही?" उसने जैसे सर पीट लिया।

"तुम इतने बड़े बुद्धू तो नहीं थे मनोज? हां तुम तो बस्ती वाली जनता हो न!" शंकर ने ऐसे कहा जैसे उसके सामने सच में बड़ा बुद्धू बैठा हो; फिर कुर्सी से उठते हुए बोला, "अब छोड़ो भी; फिर कभी आना, न्यूज रूम

में एडिटिंग का समय हो चला है।"

मीडिया हाउस से निकलकर मनोज का मिजाज हल्का होने के बजाय और भारी हो गया। घर की तरफ बढ़ते हुए वह सोचता जा रहा था, '...यह सब बातें सहज या किसी अन्य साथी से शेयर करे या न करे?' वह वापस बस्ती पहुँचा तो भीमरवा अपना आलाप-प्रलाप कब का चालू कर रखा था ...हेर-फेर ..घाल-मेल ..ठेल-पेल ..सेटिंग-गेटिंग...

3

कोरोना के पीछे हटते जाने के दिनों में रामघाट में अजीब-सी शांति पसरने लगी। दशहरा-दीवाली-जैसा ही क्रिसमस भी चुपके से निकल लिया था, कुछ घरों के मुंडेर पर इक्के-दुक्के फुलझड़ियां मात्र छोड़ जाते हुए। कोरोना काल के पिछले नौ महीनों में लोगों के हॉर्ट को तेजी से पंप करने की आदत-सी पड़ गई थी; एकाएक आ पसरी शांति से लोगों को बेचैनी-सी महसूस होने लगी। देश में किसान आंदोलन की एक लहर जरूर उठी थी, पर अंततः दिल्ली के चारों ओर कुंडली मारकर बैठ गई थी। रामघाट में कोई कंपन तक नहीं थी इसकी। आंदोलन के सिलसिले में दिन-ब-दिन कई-कई किसान भले ही मर-मरा रहे थे, मीडिया को उनकी मृत्यु-भोज में कोई स्वाद नहीं आ रहा था। बेदिलों के लिए यह आग से खेलने के शौकीन कीट-पतंगे की मौत-जैसी थी।

राजनेतागण के मुख से देश-प्रदेश की राजधानियों में चाहे जो वचनामृत निकल रहे हों, रामघाट की जमीं पर कुछ भी बड़ा ना होता देख लोगों के अंदर संशयपूर्ण शून्य बनने लगा था। हां, दिनचर्या से हटकर एक सकारात्मक प्रगति हुई थी, शायनी का सिलेक्शन हैदराबाद के वायरोलॉजी इंस्टीट्यूट में कोरोना पर फरदर रिसर्च के लिए हो गया था। यह सिर्फ सिलेक्शन भर नहीं गवर्नमेंट स्कॉलरशिप वाला सिलेक्शन था, यानी सरकार ने मान लिया था शायनी का अनुसंधान भविष्य में देश हित के काम आएगा।

ऐसे बेगाने समय में कोरोना-मंडली को हमेशा के लिए गुमनामी में खो जाने का खतरा दिखने लगा; ऑब्जेक्ट मात्र बनकर रह जाने के असहनीय संशय-सा। कोरोना-कैबिनेट के प्रस्तावों पर सरकार की प्रतिक्रिया का कोई अता-पता नहीं था। छोटी कक्षाओं के बच्चे अभी भी घर के आगे-पीछे खेल-रेल में व्यस्त थे, बड़ी कक्षाओं के बच्चे स्कूल अब खुलने तब खुलने

की आस में स्कूल बैग तैयार किए बैठे थे तो कॉलेज-यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स भविष्य की अनिश्चितता के भंवर में गोता लगाने-सा फिर रहे थे। सुस्त पड़ गए ऐसे दिनों में कोरोना-कैबिनेट के प्रस्ताव के पक्ष में कितने नौजवान आगे आ पाते खुद कोरोना-मंडली के पास अंदाजा-आकलन नहीं था। ऐसे निस्पंद समय में उन प्रस्ताव के पक्ष में सीधी कार्रवाई की बात भला कौन करता! उन प्रस्तावों को ठंडे बस्ते में डाल देना कोरोना-मंडली को आजीवन शीत-शांत कर सकता था; तब रामू ने कोरोना-कैबिनेट की औपचारिक बैठक कर डालने की सही सलाह दी थी सहज को।

आज कोरोना-कैबिनेट की नौंवी औपचारिक बैठक थी। बैठक का प्रस्ताव रामू ने दिया था; रामू के खुले शेड में ही बैठक रखी गई।

"साथियों आज से नौ-दस महीने पहले हम लोगों ने कोरोना-कैबिनेट बनाई, यह नाम हम लोगों के अंदर कोरोना के खिलाफ संघर्ष का जज्बा भरता रहा; उम्मीद है यह जज्बा आगे भी बना रहेगा।" शेड में सभी के जमते ही रामू ने बिना किसी औपचारिकता के बैठक की शुरुआत कर दी; उसी के घर बैठक थी, उसे ही अध्यक्षता करनी थी, वह आगे बोलता गया, "कोरोना-कैबिनेट की पूर्व बैठक में हमने वैश्विक मुद्दों वाले छह प्रस्ताव पास किए थे, आज हमारी कैबिनेट की पूर्ण बैठक है; इसमें हमें यह तय करना है कि पिछली आकस्मिक बैठक में पास प्रस्तावों का भविष्य क्या होगा? इन प्रस्तावों पर सुझाव हमने सरकार को भेज दिए थे, परंतु आज तक सरकार की तरफ से पत्र की पावती भी नहीं आई है, निर्णय तो दूर की कौड़ी है! इसीलिए अब हमें खुद निर्णय लेना है कि आगे हम अपने प्रस्ताव पर क्या कार्रवाई करें?" पहली बार मित्रों के बीच लंबा वक्तव्य दिया था रामू ने; बोलकर उसने मौन में जाने जैसी सूरत बना ली।

"तुम कैबिनेट की अध्यक्षता कर रहे हो, तुम्हारा क्या सुझाव है?" मंडली की प्राय: हर बैठक की अध्यक्षता करते आ रहे सहज ने सुलभ प्रश्न किया।

"मेरा मानना है हमें अपना कदम हमेशा आगे ही बढ़ाते रहना चाहिए; अहम तो पहले ही हमें अपने अस्तित्व को बचाने-बनाने के बारे में विस्तार से बता चुका है! साफ-साफ कहूँ तो हमें संघर्ष के रास्ते पर चलने से रुकना नहीं चाहिए।" रामू ने कहा तो उसके चेहरे में व्यग्रता आने लगी, आगे कहा, "हम सबों को देश में पिछली दो-तीन सदियों में चले लंबे-लंबे संघर्ष से सीख लेनी चाहिए, हम नवयुवकों को स्तंभित-मूकदर्शक और ऑब्जेक्ट मात्र

नहीं बने रहना है; अभी हाल का एक छोटा उदाहरण लीजिए, दिल्ली के चारों ओर हजारों किसान पिछले तीस दिनों से अपनी माँगों को लेकर खड़े हैं, उन किसानों के साथ बड़े-बुजुर्ग-बच्चे-औरतें सभी डटे हैं! संघर्ष ही सर्वोत्तम मार्ग है, यह भी पूछने की बात है!" आगे तर्क-वितर्क की संभावना को खारिज करते हुए-सा रामू ने कहा।

"कैबिनेट की बैठक में व्यवस्था की बात करूं तो जिसका-जिसका प्रस्ताव था वही संकल्प भी लाए।" सहज ने प्रक्रिया को पटरी पर लाने की गरज से कहा।

"तो ठीक है मैं अपने प्रस्ताव पर अंत में संकल्प लाऊंगा, परवेज तुम अपने तीनों प्रस्ताव पर अपना संकल्प रखो।" कार्यवाही आगे बढ़ाते हुए रामू ने कहा।

"मेरा पहला प्रस्ताव था संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद में भारत को स्थायी सदस्यता तुरंत प्रदान किया जाना और इसके लिए भारत को आक्रामक रुख अख्तियार करना," बोलने के दौरान परवेज पहले कभी इतना गंभीर नहीं रहा था, आगे बोला, "भारत को सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता दिए बगैर विश्व शांति का स्थायी लक्ष्य प्राप्त होना नामुमकिन है, इसीलिए शांतिपूर्ण विश्व व्यवस्था के हक में भारत को तुरंत स्थायी सदस्यता दिया जाना परम आवश्यक है; अभी यूएसए में राष्ट्रपति चुनाव का विवाद चरम पर है, पराजित राष्ट्रपति कई न्यायालयों में चित् होने के बावजूद विजेता को आसानी से सत्ता सौंपने के लिए तैयार नहीं है, ऐसे में स्थायी सदस्यता के लिए अल्टीमेटम दिया जाना अकलमंदी भरा कदम होगा; इसके लिए अपनी सरकार पर दबाव बनाने के लिए क्या आंदोलन की राह पर जाना होगा?" बोलकर परवेज ने सभी की तरफ देखा, प्रत्यक्ष मतदान के लिए आंखों से ही बटन ऑन करते हुए।

"हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ," सभी 25 सदस्यों ने समर्थन किया और संकल्प पास हो गया।

"मेरा दूसरा संकल्प है तिब्बत को आजाद मुल्क घोषित कर देना।" अपना दूसरा प्रस्ताव रखते हुए परवेज बोलने लगा, "इस प्रस्ताव के दो पहलू हैं, पहला यह कि धर्मशाला में तिब्बत की निर्वासित सरकार अभी कुछ समय से स्वयं ही बहुत सक्रिय नहीं दिख रही है, दूसरा कि अभी एलएसी पर स्थिति असामान्य बनी पड़ी है, ऐसे में हमें तिब्बत को पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा दे

देना चाहिए; इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपनी सरकार पर दबाव बनाने के लिए हम क्या आंदोलन का रास्ता पकड़ सकते हैं?" बोलकर परवेज ने आंखों की भाषा से सभी से मत देने का आग्रह किया।

"हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ," सभी ने संकल्प के पक्ष में मतदान किया।

"मेरा तीसरा प्रस्ताव है भारत को फौरी तौर पर नाटो की सदस्यता लेना; इस पर फिलहाल मेरा ख्याल यही है कि वर्तमान हालात में यूरोपीय राष्ट्र खुद ही झंझावात से गुजर रहे हैं, कोरोना के नए-नए स्ट्रेन के कारण उन सभी की, खासकर यूके की स्थिति काफी डावांडोल है, फ्रांस में एक साल के दरम्यान कई आतंकवादी हमले हो रखे हैं, ऐसे हालात में अपनी सरकार पर नाटो की सदस्यता का दबाव बनाने के लिए क्या हमें तुरंत आंदोलन का रुख पकड़ना चाहिए?" सभी की ओर देखते हुए परवेज ने दोनों हाथ फैला दिए; सभी को मत-मंतव्य देने के लिए, एक नए रूप में आमंत्रित करते हुए।

"नहीं नहीं नहीं नहीं नहीं!" कैबिनेट की अध्यक्षता कर रहे रामू को छोड़कर सभी ने संकल्प को सामूहिक रूप से गिरा दिया। रामू ने परवेज पर नजरें टिकाकर कहा, "तीसरे प्रस्ताव से क्यों पीछे हटना?" फिर मुस्कुराकर कहा, "क्यों मियां, कहीं देश में चल रहे धर-पकड़ से..." परंतु रामू के आगे बोलने से पहले ही परवेज भभक उठा, "अपनी ईमान और अपने जहान के लिए तो मैं अपनी गर्दन वाले फंदे की नाप भी एडवांस में दे दूंगा, पकड़-धकड़ जेल-ज्वाली की भला क्या बिसात!" बोलकर उसने अल्लाह तला को याद कर हाथ उठा दिए, फिर बोलता गया, "बस समय को ठीक से थोड़ा सरकने दो, अपने तीनों संकल्प को अमल में लाने के लिए मैं खुद तुम सभी के पैर पकड़ लूंगा।" तभी नींबू पानी लेकर मौनी मामा आ गए; शेड में फैल रही सनसनी शांत हो गई। नींबू पानी लेते हुए सभी मंजरी को धन्यवाद दिए जा रहे थे, आँखों से ही।

"मैं अपना प्रस्ताव अंत में रखूँगा, पहले मनोज अपने पांचवें प्रस्ताव पर अपना संकल्प रखें।" नींबू पानी खत्म होते ही रामू ने कहा, मनोज की तरफ इशारा करते हुए।

"मेरा प्रस्ताव बहुत ही सहज है; मुंबई हमले का मास्टरमाइंड पाकिस्तान में कहीं छुपा है, उसे सर्जिकल स्ट्राइक करके आसमान से स्टेल्थ हेलीकॉप्टर द्वारा उठा लेना चाहिए जैसा कि ओसामा बिन लादेन को अमेरिका ने उठाया था; पर हम सभी यह तय कर लें कि इस वक्त जब हम कई सीमाओं पर

अपने पड़ोसियों से उलझे हैं तो क्या सर्जिकल स्ट्राइक द्वारा पाकिस्तान में छिपे उस मास्टरमाइंड को उठा लेना कहीं किसी नई समस्या को जन्म तो नहीं देगा! क्या हमें ऐसा करना चाहिए?"

"हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ," बहुमत से मनोज का प्रस्ताव पास हो गया।

"छठा प्रस्ताव अहम का है; कृपया अपना संकल्प रखें।" रामू ने कार्यवाही आगे बढ़ाई।

"एक बात मैं शुरू में ही स्पष्ट कर दूँ, उस बैठक से अब तक मेरे अंदर एक और प्रस्ताव की व्यापक पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी है जिसका जिक्र बाद में करूँगा, यदि सभी सहमत होंगे तो इसे सातवें प्रस्ताव के रूप में लिया जा सकेगा।" किसी बड़ी बात का संकेत देता हुआ-सा अहम ने कहा, फिर उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बोलता गया, "मेरे प्रस्ताव के बारे में सभी भली-भांति अवगत हैं; चीन एक क्रूर राष्ट्र है, समझिए धरती में मानवता का सबसे बड़ा दुश्मन! आज ही का न्यूज देख लो, चीन के सबसे बड़े उद्योग समूह के मालिक को कई दिनों से अज्ञातवास में रखा गया है, सिर्फ इसीलिए कि उसने चीन की अर्थनीति पर मुँह खोला भर था! चीन को मानव सभ्यता का दुश्मन करार देना बेहद जरूरी है, इसके लिए अपने देश को पहल करनी चाहिए," बोलते हुए में उसकी आंखों की गोलाई दूर भविष्य में टिकी जान पड़ रही थी, आगे कहा, "हम लोगों ने सरकार को प्रस्ताव पर सुझाव भेजे थे, पर कहीं कोई हरकत होती दिख नहीं रही है, सरकार पर दबाव बनाने और इस मुद्दे पर समाज को जगाने के लिए हमें आंदोलन के रास्ते पर चलना पड़ेगा; इस पर सभी अपना अपना मत दीजिए।"

"यस यस यस यस यस यस" सभी ने संकल्प पर मुहर लगाई; रामू की 'यस' सबसे ऊंची थी।

"मेरा नया प्रस्ताव भारतीय संविधान में एक व्यापक संशोधन की माँग करता है..." अहम बोलता जा रहा था कि मनोज टपक पड़ा, "अब तो तुम भी ऐसे बोल रहे हो जैसे संसद में कोई धाकड़ लीडर बोल रहा हो!" रामू ने हस्तक्षेप किया, "डोंट डिस्टर्ब हिम, नो नॉइज प्लीज!"

"तो इस प्रस्ताव का सारांश यह है कि..." अहम फिर से बोलने लगा, "भारत देश की प्रायः हर कैबिनेट का फोकस देश से ज्यादा पार्टी पर रहता है; पुनः चुनाव जीतकर सत्ता पर काबिज बने रहने पर दिन-रात मंथन चलता रहता है इनके गुप्त कक्ष में! मेरे नजरिए से हिंदुस्तान की बदहाली बरकरार

रहने की मुख्य वजह यही है!" बोलकर वह अजीब ढंग से नाक-भौंह सिकोड़ने लगा, जैसे वर्तमान व्यवस्था की बदबू बर्दाश्त से बाहर हो चली हो; आगे चेहरे में गंभीरता लाते हुए बोलता गया, किसी संविधान विशेषज्ञ भाँति, "बेमिसाल हिंदुस्तान बनाने के लिए यह बेहद जरूरी है कि कैबिनेट में शामिल नेताओं का उनकी पार्टी से कोई रिश्ता न हो, तभी तो वे पार्टी के बजाय देश और देश की जनता के लिए पूर्ण रूप से समर्पित हो पाएँगे! अगर इससे भी उत्कृष्ट व्यवस्था की बात करें तो सभी दलों के सांसदों से कैबिनेट का गठन होना चाहिए।" बोलकर उसने लंबी सांस ली, आगे दिल्ली की ओर देखकर बोलता गया, "सीधे शब्दों में कहें तो जितनी भी सरकारें हैं वो अपनी पार्टी के लिए कोई काम न करें, अपना पूरा समय सिर्फ सरकार के काम के लिए दें, ताकि जनता की वास्तविक समस्या कभी नेपथ्य में ना पड़ी रह जाए; हम सभी देख रहे हैं जब भी कहीं कोई चुनाव होता है पूरा कैबिनेट उठकर वहां पड़ाव डाल देता है! हम सभी गवाह हैं अभी कोरोना काल में कुछ प्रांतों में हुए चुनाव में राजनेतागण पार्टी-मोह से बाज नहीं आए, सामने खड़ी भीड़ से गद्‌गद होकर मंच से गरजने लगते थे, कोरोना को पैरों से कीड़ा जैसा झिड़कते हुए! रंगमंच पर पॉलिटिकल कारनामे-करतब का अनवरत शो लगातार चल रहा है, फिर तो ज्वलंत समस्याओं को नेपथ्य में ऊधम मचाने की आजादी मिलती रहती है; कोरोना को शुरुआत में ही सर्वोच्च प्राथमिकता पर नहीं लिया जाना इसका एक हालिया उदाहरण है!" अब वह खड़ा होकर बोलने लगा, खुलकर, "अब तो हमें स्पष्ट माँग करनी चाहिए कि संविधान में एक आवश्यक अनुच्छेद जोड़ा जाए कि सरकार बन जाने के बाद कैबिनेट का कोई भी सदस्य पार्टी के लिए काम नहीं करेगा, अन्यथा महामहिम उसे कैबिनेट से स्वतः संज्ञान लेकर भी हटा सकेंगे! मेरा तो स्पष्ट मत है, भले ही दुनिया के किसी प्रजातंत्र में ऐसा उपबंध न हो, किंतु भारत भूमि की समस्याओं की विकरालता को देखते हुए इस देश में ऐसी व्यवस्था होना अनिवार्य है।" अब संकल्पूर्ण मुद्रा में ऐलान करते हुए सा बोला, "इसके लिए पूरे देश के नौजवानों को संसद पर संविधान में उचित संशोधन के लिए दबाव बनाना पड़ेगा!"

"अहम का नया प्रस्ताव सच में सबसे जरूरी मुद्दा है देश के लिए, इसलिए सातवाँ प्रस्ताव होने के बावजूद इसको सबसे आगे रखना चाहिए।" रामू ने खड़े होकर जोश में कहा, ताली बजाते हुए।

"हां-हां-हां-हां-हां-हां" सभी ने खड़े होकर सातवें प्रस्ताव का जोरदार समर्थन किया, देर तक ताली बजाते हुए; जैसे सच में वर्तमान व्यवस्था को एक सिरे से खारिज करने का हुंकार भर रहे हों! ताली बंद होने के बाद सभी के चेहरे प्रदीप्त दिख रहे थे, किसी संभावित अच्छे दिन की खोज में निकल पड़ने सा। शेड में कुछ देर तक आनंदपूर्ण चुप्पी छाई रही।

"अब श्रीरामचंद्रजी खुद अपने प्रस्ताव का संकल्प रखेंगे।" खड़ा होकर रामू की ओर सम्मान संप्रेषित करते हुए सहज ने कहा।

"मेरा प्रस्ताव सामूहिक किस्म का और बहुत ही समीचीन है; इसमें कोई शक नहीं कोविड-नाइनटीन नाम का वायरस प्राकृतिक नहीं है, बल्कि इसे चीन ने अपने लैब में पैदा किया है; अपने दिमाग में पनपते रहते कुंठा और क्रूरता के शुक्राणु-अंडाणु से! इसने पूरी दुनिया को तबाह कर डाला है, इस करोना के कारण मानव सभ्यता में क्या-क्या अतिक्रमण हो रहा है और आगे क्या-क्या होता रहेगा यह अभी स्पष्ट नहीं है! परंतु यह तय है इसके नकारात्मक परिणाम ही ज्यादा होंगे! पर जो तथ्य स्पष्ट है वह है इसने विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था को जो क्षति पहुंचाई है वह एक त्रासदपूर्ण ऐतिहासिक सच्चाई है! ऐसे सभी देश चीन से हर्जाने की रकम मांगें और यदि वह ना दें तो अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में वसूली हेतु सामूहिक मुकदमा दायर किया जाए! मेरा मंतव्य है भारत को इसकी अगुवाई करनी चाहिए; परंतु सरकार ने हमारे प्रस्ताव पर कोई प्रतिक्रिया या वक्तव्य तक देना जरूरी नहीं समझा है, इसलिए हमें सीधी कार्यवाही करते हुए आंदोलन की राह पकड़नी चाहिए; इसके लिए जनमत बनाकर पूरे देश में चीन के खिलाफ हम लोग मानव शृंखला बनाएँगे, इस पर मंडली मित्रों का क्या विचार है?" रामू के बोलने की भाव-भंगिमा ऐसी थी जैसे सभी की ओर से वह खुद ही हां कह रहा हो।

"हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ," सभी के अंदर का जोश हवा में तैरने लगा, रामू के जोश से गले मिलते हुए।

सभी संकल्प पारित होते-होते छोटी-सी रसोई से पकौड़े और चाय बाहर आई, मौनी मामा के मुस्कान भरे आतिथ्य में। स्व-रुचिपूर्ण पकौड़े का स्वाद लेते हुए परवेज का ध्यान मंजरी की ओर गया; याद आया बीच में एक-दो बार वह रसोई में गई थी। उसे लगा महिलाओं को रसोई के अलावा उनकी योग्यता के अन्य कामों में भी आगे बढ़ना होगा, अन्यथा देश को मुकम्मल मंजिल हासिल करने में सदियों लग जाएँगी। समय रहते उसने मंजरी और

शायनी को याद दिलाना जरूरी समझा, "कोरोना-कैबिनेट की पिछली बैठक में मंजरी और शायनी ने बात रखी थी, उनके भी कुछ जरूरी एजेंडे हैं; मेरे विचार से तुम दोनों को देर नहीं करनी चाहिए।"

"रसोई से पकौड़े और चाय बनाकर लाई हूँ, इसका मतलब ये मत समझना देश-समाज के बारे में सोचना लड़कियों के वश में नहीं है; तुम्हें पता होना चाहिए महिलाएँ पहले करके दिखाती हैं फिर जुबान में लाती हैं!" परवेज की ओर एक छोटा पकौड़ा दिखाते हुए मंजरी मुखर हो उठी, जैसे संकेत देना चाह रही हो रसोई अब तो मामूली काम भर है महिलाओं के लिए।

"सो कौन सा कमाल कर चुकी हैं दोनों मोहतरमा ने!" चाय की चुस्की लेते हुए ही सहज ने कहा।

"दरअसल मैं और मंजरी अपने-अपने एजेंडे पर समय-समय पर आपस में चर्चा करते रहे हैं, पिछले दो-तीन महीनों से।" बड़बोलेपन से कोसों दूर दिखते हुए शायनी बोलती ही गई, "अपने सुझावों को अलग-अलग पत्र द्वारा हमने प्रधानमंत्री कार्यालय को भेज दिया है, साथ ही अपने मुख्यमंत्री, रामघाट के एमपी, प्रभारी मंत्री, एमएलए और डीएम को भी भेज दिया है, और अभी भी उत्तर या उन सुझावों को अमल में आने का इंतजार कर रहे हैं।"

"तो क्या हम लड़कों को हक नहीं है लड़कियों के मुद्दों के बारे में जानने का? कहीं तुम दोनों के एजेंडे बेहद गोपनीय किस्म के तो नहीं हैं!" पूरी विवरणी सामने रखने की गरज से मनोज ने शायनी को छेड़ा।

"सार्वजनिक कार्यों में गोपनीयता कैसी!" शायनी बोलने लगी तो उसके ललाट पर दिव्य आभा दिखने लगी, "मैंने अपने पत्र में तो विस्तार से लिखा है, संक्षिप्त में बताती हूँ; समय-समय पर आ धमकते अनजान-अजनबी महामारी के मद्देनजर देश में हेल्थ इंफ्रा की काफी कमी है, वाजिब ही देश को हजारों अस्पताल, लाखों आईसीयू बेड, वेंटिलेटर, सैंकड़ों ऑक्सीजन प्लांट के साथ-साथ लाखों डॉक्टर्स-नर्सेज की जरूरत रहेगी हमेशा, ताकि किसी भी प्रकार के राष्ट्र-व्यापी हेल्थ इशूज आने पर हम निपटने में अपंग न बने रहें।" बोलकर शायनी की नजर सुभाष मार्ग में ऊधम मचाते बच्चों की तरफ चली गई, बच्चों पर नजर टिकाए ही बोलती रही, "मैंने ये भी सुझाव दिया है, कि हेल्थ सेक्टर पर बढ़ते जा रहे लोड को रोकने का विज्ञान-सम्मत उपाय है स्टूडेंट्स को प्राइमरी सेक्सन से ही अप्पलायड हेल्थ के बारे में पढ़ाया जाए; इसके लिए सिलेबस में सभी जरूरी चैप्टर जोड़ा जाए, बल्कि सेकेंडरी और

हायर सेकेंडरी में हेल्थ पर एक कंपलसरी सब्जेक्ट लाया जाए, शो दैट बॉडी के वेरियस फंकसन्स और पॉसिबल काउज ऑफ डीफेक्ट्स के बारे में अर्ली एज में ही बच्चे जान जाए, इससे काफी बीमारियों को वे अपने पास फटकने ही नहीं देंगे, आजीवन! यदि सभी एग्री करें तो इसे आठवें प्रस्ताव के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।" बोलकर वह सभी की तरफ मुस्कुरा दी, जैसे उसके सामने सभी स्वस्थ बच्चे बैठे हों। फिर संकल्प के पक्ष में मत देने के लिए आँखों से संकेत किया।

"यस यस यस यस यस यस," बिना देर किए सभी ने प्रस्ताव को हाथों हाथ लिया। सहज की 'यस' वाली आवाज सबसे ऊंची थी।

"और मंजरी ने अपने पत्र में क्या सुझाव दिए हैं?" अहम की उत्सुकता बाहर आई।

"कोविड वार्ड में ड्यूटी कर चुकी है तो वहीं के बारे में लिखी होगी।" दिनेश ने अनुमान लगाया।

"सिर्फ वार्ड नहीं, कोरोना की विकट चुनौती से जो अनुभूति हुई है, उसके आधार पर एक दृष्टिकोण प्रस्तुत भर किया है मैंने; अब यह एक नग्न सच्चाई है कि कोरोना किसी भी सरकार के लिए प्रथम वरीयता का मसला नहीं रहा है, कोरोना-काल में भी सरकारें अपनी वरीयता वाले एजेंडे पर सवारी करती दिख रही हैं; जबकि शायनी बता रही है अभी तो कोरोना का वायरस इंडिया में बखूबी जिंदा है और नए-नए रंग-रूप गढ़ने में मगन है!" बोलते-बोलते मंजरी के चेहरे में भय की परत चढ़ आई; रामू ने टोका "रानीजी, ये तो बताइए पत्र में सुझाव क्या दिया है सरकार को?"

"अब मेरी भी दृष्टि कह रही है किसी मसले को देखने-परखने में नारी और पुरुष के नजरिए में फर्क हो सकता है, सच में! यह संभव है कि किसी समस्या के समाधान पर एक विवेकवान महिला की समझ पुरुष से बेहतर हो, खासकर एक बाल-बच्चेदार महिला की।" मंजरी आँखें छोटी करके बोलती जा रही थी, जैसे समस्याओं के मूल से सीधा संवाद भी कर रही हो, "अस्तु देश का नेतृत्व एक नियत अंतराल पर किसी महिला के हाथ में होना अनिवार्य बना देना चाहिए, संविधान में जरुरी तब्दीली लाकर; मैंने अपने पत्र में पीएमओ को इस बाबत एक प्रस्ताव संसद के विचारार्थ लाने का आग्रह किया है।" मंजरी ने अपनी बात समाप्त की तो सभी ने खड़े होकर ताली बजाई, देर तक। अहम की आँखें बारी-बारी से मंजरी और शायनी पर गड़ी

जा रही थीं, जैसे बेहतर भविष्य के लिए संभावनाओं को स्कैन कर रहे हों। परवेज की ओर मुस्कुराते हुए कहा, "घोर आश्चर्य! राजनीतिक विज्ञान का विद्वान किताबों में खोया रह गया और एक क्रांति-बाला संविधान की नींव हिला डालने निकल पड़ी, वो भी अकेली!"

"अरे अहम भैया, पत्र लिखने से पहले मैं परवेज के साथ इस पर कई बार चर्चा कर चुकी हूँ।" परवेज की ओर सम्मानपूर्ण नजर फेरते हुए मंजरी बोलती गई, "वे स्वयं भी तो 'भविष्य में भारत के लिए एक नई राजनीतिक व्यवस्था' के प्रारूप पर काम भी कर रहे हैं! कृपया अब आप सभी इस नौवें प्रस्ताव पर अपना बहुमूल्य मत दें।"

"हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ हाँ" समर्थन का सम्मानपूर्ण स्वर सभी के अंदर से निकलकर बस्ती की ओर तरंगित होने लगी।; ताली की करतल ध्वनि बंद होती नहीं दिख रही थी, जैसे नौवें प्रस्ताव पर नौ मिनट तक ताली बजाकर ही मानेगी।

चाय-पकौड़े के बाद शेड में शांति पसरने लगी; आगे की रणनीति तय कर डालने की खातिर परवेज ने पूछा, सभी पर सरसरी निगाह डालते हुए, "और आंदोलन की रूपरेखा क्या होगी?"

"तुम्हारे इस प्रश्न से यह नहीं जाहिर हो रहा है कि तुम आंदोलन की बात से उत्साहित हो या भयातुर?" दर्शक भांति कब से चुप बैठे अहम ने कहा।

"पिछले कुछ सालों में हुए आंदोलनों में सरकार की सख्ती से तुम परेशान तो नहीं हो!" दिनेश भी चुप न बैठ सका।

"मैंने तो बहुत पहले स्पष्ट कर दिया है, देश के लिए कुर्बानी देने वालों में मैं सबसे पहला व्यक्ति होऊंगा!" इंकलाबी अंदाज में मुट्ठी ऊपर उठाते हुए परवेज ने कहा, फिर रामू की ओर दोनों हाथ फैलाते हुए बोला, "हुक्म फरमाइए अध्यक्ष महोदय!"

"इस आंदोलन की शुरुआत हम लोग बस्ती के अंबेडकर चौक से करेंगे, तीस जनवरी शहीद दिवस के दिन धरना से; साप्ताहिक धरना के बाद भी सरकार की तरफ से कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाया जाएगा तो आगे धरना को उपवास में बदला जाएगा, उससे भी आगे आमरण अनशन के रास्ते पर जाने से नहीं डरेंगे; इसी बीच चीन के खिलाफ दुनिया को जगाने के लिए प्रथम चरण में पूरे प्रदेश में मानव श्रृंखला बनाई जाएगी!" आंदोलन की

रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए रामू सभी के चेहरे पर गौर करने लगा, कि किसी के चेहरे में पीछे हटने के संकेत तो नहीं हैं! सभी के दीप्त चेहरे देखकर उत्साहित हो उसने आगे बताया, "पंद्रह जनवरी मकर संक्रांति के दिन से हम लोग गांधी चौक-सुभाष चौक, पटेल चौक, अंबेडकर चौक, नेहरू चौक, शहीद चौक में अपने संकल्प और धरने का बैनर-पोस्टर लगाना शुरू कर देंगे, देश में सदी की संक्रांति लाने की शुरुआत करते हुए।"

"तो गांधीजी की शहादत दिवस से आंदोलन की शुरुआत होगी और गांधी जी के विचारों की पटरी को और चौड़ी करके नव-दृष्टि के साथ दौड़ते हुए देश के भविष्य का लक्ष्य हासिल करेंगे!" अहम ने अपने दर्शन को सामने लाते हुए कहा।

"फिर तो मैं कल ही अखबारों में, चैनलों में और सोशल मीडिया में इन संकल्पों की खबर प्रेषित कर देता हूँ।" कदम आगे बढ़ाते हुए सहज ने कहा।

"बिल्कुल! जय हिंद, जय भारत!" सभी के समवेत स्वर थे; एक सुर एक लय वाले समवेत स्वर शक्तिपुंज जैसे शेड के बाहर हवा में तैर गए।

भीमरवा ने तो आज दिन से ही बस्ती में नया तरंग-सा छेड़ रखा था, उत्तेजक स्वर में ...कुचल डालो ..मसल डालो ..बदल डालो..

4

सुबह रामघाटवासी की आंखें अखबारों के प्रथम पृष्ठ के बॉक्स में गड़ गईं ...नौ बजे नौ मिनट के बाद अब नौ प्रस्ताव! ...अल्टीमेटम ...धरना...मानव शृंखला..। कोरना-कैबिनेट के संकल्पों पर धरना दिए जाने की खबरें अखबारों में प्रमुखता से छपी थीं; सनसनी पैदा कर देने वाली हेडलाइंस के साथ ...तीस जनवरी से रामघाट बनेगा सबसे बड़े आंदोलन का गवाह ...भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थायी सदस्यता दिलाने, तिब्बत को आजाद मुल्क घोषित करने, चीन को मानवता का दुश्मन घोषित करने, संविधान संशोधन द्वारा कैबिनेट को पार्टी से स्वतंत्र अस्तित्व दिलाने ...मुंबई हमले के मास्टर माइंड को आसमान के रास्ते उठाने और कोरोना महामारी फैलाने के एवज में मुआवजा वसूली हेतु कोरोना-कैबिनेट आगे आया... ...कोरोना के अवसान के साथ ही धरना, प्रदर्शन-आंदोलन का नया दौर चालू... ...कोरोना-कैबिनेट ने शहीद दिवस के दिन से गांधी के रास्ते पर चलने का संकल्प लिया... ...वैश्विक समस्या पर आंदोलन से देश-दुनिया में रामघाट को मिलेगी नई पहचान! रामघाट सिटी

चैनल में तो दिनभर ब्रेकिंग न्यूज की बरसात होती रही, मोटी-मोटी बूँद सरीखे शब्दों के तेजी से दिखने-भागने की बरसात से ...रामघाट के युवा विश्व कूटनीति में भी दिखाएंगे अपना दमखम ...गांधी जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी कोरोना-कैबिनेट का धरना। प्रदेश के हलचल हंड्रेड चैनल में भी न्यूज अपडेट आ-जा रहे थे ...रामघाट फिर से बनेगा प्रयोगवादी आंदोलन का केंद्र ...यदि सरकार ने कोरोना-कैबिनेट के सलाह-संकल्प मान लिए तो भारत का विश्व शक्ति बनने की राह होगा आसान। सोशल मीडिया में दौड़-भाग रहे क्लिप्स में तो शब्दों की कोई सीमा ही नहीं थी! मूल से फॉरवर्ड होने के बाद कुछ क्लिप में लोगों ने उत्साहपूर्ण भविष्यवाणी के साथ टैग कर दिया था ...कोरोना-कैबिनेट हो सकता है भविष्य में भारत का असली कैबिनेट!

सोशल मीडिया, अखबारों, न्यूज चैनलों में चल रही खबरों से रामघाट में उबाल आ गया। शहर तो शहर, रामघाट जिले के सुदूरवर्ती गांवों में भी जन जन आंदोलित-आवेशित अनुभव करने लगे, देश-प्रदेश में रामघाट के अव्वल बने रहने के आइडिया पर। रामघाट के बच्चे-बड़े-बुजुर्ग सभी अपने शहर पर कायम फख्र में इजाफा महसूस करने लगे। कोरना के अवसान प्रतीत होते बेला में रामघाट में वीरानगी-सा शून्य पसरता जा रहा था, अब वह शून्य क्रांति की फूटती कोंपलों से सजती-भरती दिखने लगीं। रामघाट के कान पक गए थे राजनेताओं-प्रतिनेताओं के प्रवचन-प्रपंच सुन-सुनकर, अब उन कानों को क्रांति की किलकारी भाने लगी। रामघाट को अपने बच्चों पर दशकों से गर्व रहा है, हर साल डॉक्टर-इंजीनियर-आईएएस बनते जा रहे अपने असंख्य मेधावी बच्चों पर; अब रामघाट का सीना और चौड़ा होने लगा अपने बच्चों के गांधी, सुभाष, भगत, आजाद, मंडेला, लिंकन के रास्ते चल पड़ने पर। जिस रामघाट में लोग कोरोना के चढ़ाव-उतार और आंकड़ों की जादूगरी पर दबी जुबान से सिर्फ व्यंजन-अक्षर वाले शब्द मात्र से चर्चा करते आ रहे थे, वे अब पूर्ण स्वर, पूर्ण व्यंजन के साथ क्रांति गाथा बखान करने लगे। जिस रामघाट में लोग गाहे-बगाहे दिल्ली के चारों ओर फैले किसान आंदोलन का जिक्र भर कर लेते थे, अब चौक-चौराहों पर चाय की चुस्कियों के बीच आंदोलन में फूंक मारने की बातें करने लगे।

वैश्विक मुद्दों पर आंदोलन शुरू होने से रामघाट की फिजां में तरंग तैर गई; ऊर्जा से भरपूर तरंग जिससे पार्टी कार्यालय में लहर-सी आ गई। तीस जनवरी से शुरू होने वाला धरना भले ही नौसिखिए नौजवानों द्वारा आयोजित

हो, पार्टी ने इसे अपनी नीतियों पर हमला माना। शहीद दिवस से आहूत धरना से लोगों के मन में उमंग-उत्साह संचारित होने लगा था तो पार्टी पदाधिकारियों के मन में आग-सी लहक। पुरानी पार्टी की स्थिति तो अजीब-सी हो गई थी, उसे तो अजगर जैसा न तो खाते बन रहा था, न उगलते! धरने का समर्थन ना करने की स्थिति में गांधी के विचारों को त्याग देने का आरोप झेलने का डर सता रहा था तो साथ देने की स्थिति में मौकापरस्त का ठप्पा लग जाने का शाश्वत भय! इससे अच्छी स्थिति में तो पार्टी ही थी; ताल ठोककर किसी से भी निपटने में सक्षम होने का उसका गरूर बाहर छलकने को बेताब हो उठा था।

5

जनवरी के पहले सप्ताह में कोहरे से अठखेली करती धुंध और घनी हो चली थी; लग रहा था जैसे रामघाट के माथे का आश्रय बन बैठी हो, हर किसी के अंदर चल रही सोच को समय देते हुए। पार्टी कार्यकारिणी की बैठक पिछले पाँच दिन से टाली जा रही थी। कोरोना-कैबिनेट के हमलावर रूप-लीला जैसे गंभीर मामलों में बैठक टलने से पार्टी अध्यक्ष परेशान हो उठे; निर्णय में देरी कई दिक्कतों को जन्म दे सकती थी। रामघाट के मिजाज में दिन-ब-दिन कोरोना-कैबिनेट का नशा छाने लगा था; किसी भी प्रकार की ढिलाई या चूक पार्टी के लिए महंगी पड़ सकती थी। दशकों लगे थे पार्टी को पानी-कीचड़ से निकालकर हवा में पुष्पित करने में! अब तो छोटे-बड़े हर प्रकार के झटकों से बचाते हुए फुलवारी सजाने का समय आ गया था; ऐसे में छोटे-छोटे फूँकमार को भी फुँफकार कर भगाना जरूरी हो गया।

कार्यकारिणी की बैठक को लेकर भारी असमंजस की स्थिति पैदा हो गई थी; आलाकमान का आदेश था इस बैठक को पार्टी के प्रदेश प्रभारी रामानंद सिंह और रामघाट जिले के प्रभारी मंत्री रामजी राज मॉनिटर करेंगे। आखिर बैठक हो तो कैसे हो; तय तिथि पाँच जनवरी को प्रदेश प्रभारी पधार चुके थे, प्रभारी मंत्री राजधानी से आते वक्त रास्ते में कहीं अटक गए! तीसरे-चौथे दिन प्रभारी मंत्री शहर में थे; प्रदेश प्रभारी को पार्टी अधिवेशन के लिए भागना पड़ा। पांचवें दिन यानी कल प्रदेश प्रभारी पुनः रामघाट में पधार चुके, तो मंत्रीजी को एक ना टाले जा सकने वाले मृत्यु भोज में जाना पड़ गया; अपने विधानसभा क्षेत्र में, नदी के पार सुदूरवर्ती गांव में।

आखिरकार आज वह घड़ी आ पाई जब दोनों महानुभाव एक साथ मंथन सभागार की शोभा बढ़ा रहे थे, दो ऊंची कुर्सियों में विराजमान मूर्तिवत मुख मुद्रा लिए! प्रदेश प्रभारी के बीच वाली कुर्सी में विराजमान होने से स्पष्ट था वही बैठक की अध्यक्षता कर रहे हैं; और कोरोना-कैबिनेट वाले मामले हाथ से न निकलने देने की आपात स्थिति तक पहुंच चुकी है!

"रिपु दमनम... अर्थात शत्रु का संघार जितना जल्दी हो कर देना चाहिए! बिना कोई भूमिका बांधे मैं सीधे बिंदु पर दृष्टिपात करता हूं; ये गली के लौंडे आखिर हैं कौन!" बीच वाली कुर्सी में सीना तानते ही प्रदेश प्रभारी ने समां बांध दिया, आगे बोले, "आप लोग कृपया बुरा न मानें, मैं मूल रूप से राजस्थान से आता हूं, हमारे प्रदेश में भी आपके रामघाट का बड़ा नाम है, पर उतना ही बदनाम भी! आप लोगों को नहीं लगता प्रभु राम ने रामघाट को जरूरत से ज्यादा ज्ञान दे दिया है?" बोलकर उसने उंगली से कुछ छिड़काव करने का संकेत किया, जैसे एक बड़ा-सा प्रश्न चिह्न सभागार में उपस्थित सभी के माथे पर छींट रहे हों; आगे चेहरे में विस्मय लाते हुए बोले, "एक बात और, मैं आज तक समझ नहीं पाया आखिर रामघाट वाले, खास करके यहां के कॉलेज-यूनिवर्सिटी वाले अपने को विचारोत्तम पुरुष क्यों मानने लगे हैं? वे क्या सोचते हैं कि ईश्वर ने सोचने-विचारने की सारी शक्ति सिर्फ उनके अंदर ही डाल दी है!" बोलने के बाद उसके होंठों में व्यंग्यपूर्ण मुस्कान छा गई, मुख मुद्रा ऐसी बन पड़ी जैसे रामघाट के लक्षित नवयुवकों को अभी का अभी निगल लेंगे।

"महाशय मैं थोड़ा-सा हस्तक्षेप करना चाहता हूं।" प्रभारी मंत्री ने नम्रतापूर्वक कहा, आगे तर्कपूर्ण भाव-भंगिमा में बोले, "इसमें रामघाट का दोष नहीं है, दरअसल कोरोना के दीर्घ अवधि में खाली दिमाग शैतान का घर वाली कहावत चरितार्थ हो उठी है।"

"माननीय मंत्रीजी," मंत्रीजी की तरफ देखते हुए मंथन मंच के युवा विचारक प्रबोध प्रखर सम्मानपूर्वक बोले, "वैश्विक व्यवस्था से जुड़े भारी भरकम प्रसंग को हाथ में लेना खाली दिमाग की उपज मात्र नहीं हो सकती! तथाकथित कोरोना-कैबिनेट के प्रस्तावों के बारे में मैं पिछले एक महीने से सुनता आ रहा हूं; वैसे उन प्रस्तावों में बड़ा दम नजर आता है मुझे।" बोलकर उसने लंबी सांस ली, फिर सांस छोड़ते हुए आंखें छोटी करके बोले, "बीच में मेरी राय बनी थी पार्टी मुख्यालय को सुझाव दूँ इन प्रस्तावों पर आक्रामक होने के लिए, इससे यह पार्टी का फ्लैप प्रोग्राम बन जाता..."

"मैंने आपके बारे में सुन रखा है, आप पार्टी के मंथन मंच से युवावस्था से ही जुड़े हैं, मैं आपका सम्मान करता हूं।" प्रदेश प्रभारी ने उनकी तरफ हाथ जोड़ते हुए कहा, "पर छमा चाहता हूं, विषयगत प्रस्तावों को अपने वचन वाणी में लाना गंभीर संकट को आमंत्रण दे सकता है!"

"पर यदि हम साहस करके इन प्रसंगों को अपना ध्येय बना लेते हैं, तो इससे पूरे देश में हम स्थाई रूप से स्थापित हो सकते हैं?" युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष रवि मोहन ने भी तर्क दिया। प्रभारी मंत्री ने मंथन मंच के शिखर पुरुष काशीनाथ जी की ओर याचक दृष्टि डाली; उसने आँखें नीचे कर लीं, स्पष्ट संकेत करते हुए कि ये युवा विचारक ने तो पार्टी प्रोटोकॉल तोड़कर स्वतंत्र विचारों का पोषण करना आरंभ कर दिया है। अब प्रभारी मंत्री को और अधिक देर तक चुप रहना असह्य होने लगा, बोले, "पर ये मुद्दे ऐसे नहीं हैं जिन पर हम सिर्फ अपनी वचन-वाणी से जनता को बांधे रख सकते हैं! यदि इन प्रसंगों को छेड़ेंगे तो कुछ परिणाम भी तो दिखना चाहिए?"

"जब मुद्दे हाथ में लेंगे फिर कुछ-न-कुछ परिणाम जरूर निकलेगा," प्रबोध के सहचर दिव्य प्रकाश ने दृढ़ संकल्पित होकर कहा।

"मुद्दे की बात बताऊं तो आप माथा पकड़ लेंगे, उस ग्रुप की दो लड़कियों ने तो सरकार को औचित्यहीन पत्र प्रेषित किए हैं; मंजरी नाम की कोई लड़की है उस ग्रुप में?" उपहासपूर्ण भाव-भंगिमा से प्रदेश प्रभारी ने सभी की ओर देखा जैसे संदेश दे रहे हों लड़कियों की भला क्या औकात, आगे बोले, "उस लड़की ने तो पत्र में खुलेआम आरोप लगा दिया है कि सरकार ने जान-बूझकर कोरोना को नेपथ्य में डाल दिया है!" फिर सिर हिलाकर स्मित मुस्कान में कहा, "अरे उस लड़की को कोई तो समझाओ, जब कोरोना की कुश्ती हम जीत चुके हैं तो किसे रंगमंच पर होना चाहिए और किसे नेपथ्य में ये हम नहीं तो क्या कोई बाहरी व्यक्ति तय करेगा? और, इस धरती का सबसे बड़ा यथार्थ भला किस बुद्धू को पता नहीं है कि श्मशान घाट के लिए निकल पड़ी लाश क्या जिंदा होकर वापस घर आ सकती है!"

"उस लड़की ने यह भी माँग रखी है कि देश के कैबिनेट को पार्टी निरपेक्ष होना चाहिए!" प्रभारी मंत्री ने विस्मयपूर्ण मुद्रा बनाकर कहा, आगे व्यंग्यपूर्ण मुस्कान में बोले, "अरे भई! जो व्यवस्था दुनिया के किसी संविधान में है ही नहीं उसे भला हम कैसे आजमा सकते हैं?"

"वैसे भी कोरोना के मामले में जनता का भ्रम दूर करने में हम लोग सफल

रहे हैं रामघाट में; हमने लोगों में विश्वास जगा दिया है कि कोरोना तो अब सिर्फ विपक्षी पार्टी के मुँह से निकलते रहते कीड़े मात्र हैं! मेरे हिसाब से ऐसे बेतुके नौ प्रस्ताव को हमें विपक्ष की साजिश बताने में देर नहीं करनी चाहिए!" बोलते हुए पार्टी अध्यक्ष का सीना गर्व से फूला जा रहा था।

"दूसरी लड़की है कोई साइंस वाली शायनी, विज्ञान की मास्टरनी बनते हुए उसने बड़ी-बड़ी सलाह दे डाली हैं!" प्रदेश प्रभारी बोलने लगे तो उनकी आँखें एकाएक बड़ी हो गयीं; आँखों के फैलाव से बेखबर वे बिना रुके बोलते रहे, "पत्र में उसने लिखा है कि मानव शरीर और उसमें पैदा हो सकने वाली बीमारियों के बारे में क्रियात्मक अध्याय स्कूलों के सिलेबस में डाला जाए, और उसने तो ऊँची कक्षाओं में हेल्थ साइंस पर एक अनिवार्य विषय लाने की भारी-भरकम सलाह दे डाली है; अरे महाशय स्कूल-कॉलेज के पाठ्यक्रम हम ऐसे-वैसे के कहने पर तय कर दें? फिर तो सिलेबस में हमारे संगठन की विचारधारा से जुड़े महापुरुषों के लिए पृष्ठ बचेंगे भला? क्या उन विचार पुरुषों को हम पूर्व की भाँति अपने पुस्तकालय की आलमारियों में धूल फाँकने के लिए छोड़ दें?" बोलते-बोलते उनके नाक से उपहासपूरित वायु निकली, आगे बोलते रहे, "वो लड़की तो यहीं पर नहीं रुकी है, आगे अपने किसी पिद्दी-सी रिसर्च का हवाला देकर लिखा है कि कोरोना तो भारत भूमि में कायम रहने वाला है! आगे पत्र में उसने तो सलाह का पुलिंदा ही थमा दिया है, जैसे संसद में नेता प्रतिपक्ष का पॉलिटिकल लेटर हो।" बोलकर वह नकारते हुए सिर हिलाने लगे, जैसे कह रहे हों मन में उपजे विश्वास के सामने विज्ञान तो बकवास ही है।

"सर, मैं विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूँ आखिर सरकार ऐसे उत्पाती मानसिकता वाले स्टूडेंट्स को रिसर्च करने से रोकती क्यों नहीं है? इस टाइप की लड़कियाँ तो रिसर्च के नाम पर सरकार के खिलाफ हवा बनाती फिरती हैं!" युवा प्रकोष्ठ उपाध्यक्ष रामनरेश ने उस लड़की को देख लेने की भंगिमा बनाते हुए कहा।

"मैं अपना स्पष्ट मंतव्य देना चाहता हूँ; देश में सरकार सिर्फ वैसे ही रिसर्च को बढ़ावा दें जिनके परिणाम पार्टी को सूट करें।" काशीनाथ जी ने आँखें बंद करके कहा, जैसे अच्छे-बुरे रिसर्च की सूची को मन की आँखों से देख रहे हों।

"सरकार ऐसी अनिष्टकारी प्रवृत्ति पर जितनी जल्दी काबू पा ले पार्टी की सेहत के लिए उतना ही अच्छा होगा; कोरोना-कैबिनेट के उन प्रस्तावों से हमें

भला क्या हासिल होने वाला हैं? तो ऐसे प्रस्तावों को हम राष्ट्र-विरोधी क्यों नहीं घोषित कर दें?" प्रभारी मंत्री आग-बबूला होते-होते बचे।

"माननीय मंत्रीजी, अब आप ही बताइए भारत को सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता दिलाने के लिए पुरानी पार्टी ने दशकों तक नाक रगड़ा, क्या हासिल हो गई? नहीं न! अरे भई, अभी तक तो तीनों समर्थक स्थायी सदस्य भी सीधे मुंह से हमारी दावेदारी का समर्थन नहीं कर रहे हैं!" बोलते-बोलते प्रदेश प्रभारी के चेहरे में चिड़चिड़ापन की परत जमने लगी "धर्मशाला में तिब्बत की निर्वासित सरकार को बिठाकर हमने एक तरह से अपने माथे पर भारी टोकरी रख ली है, और ये लौंडे चले हैं तिब्बत को स्वतंत्र कराने! वैदेशिक कूटनीति से जुड़े जटिल मुद्दे हैं ये, बच्चों के गुल्ली-डंडे का खेल नहीं; और ऊपर से नाटो की सदस्यता! हूंउं..." बोलते-बोलते उनके नाक से हिकारत भरी हवा निकली, फिर बोले, "चलो मान लिया हम नाटो में शामिल हो गए, अंजाम पता है इसका? ये दु मुँहे नाटो राष्ट्र भारतवर्ष को स्थाई संग्राम स्थली बना डालेंगे!" इतना बोलकर वह आरामदायक कुर्सी में धंस से गए, आगे और बोलना समय की बर्बादी होने जैसी मुख-मुद्रा बनाते हुए। उनके मौन की प्रकृति भांपकर सभागार में मिनटों तक सन्नाटा पसरा रहा।

"लेकिन कोरोना वायरस फैलाने के एवज में चीन से हर्जाने की माँग तो कर ही सकता है अपना देश।" पार्टी युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष रवि मोहन ने मौन भंग किया, आगे बेलाग बोलते रहे, "यह भी सच है चीन तो मानव सभ्यता के लिए खतरा है, उसकी लंपटता के खिलाफ भारत को चाहिए कि दुनिया के देशों को एकजुट करे; चीन के खिलाफ पूरे देश में मानवश्रृंखला से तो राष्ट्र-भक्ति की धारा फूट पड़ेगी जिस पर शुरू से ही हमारी पकड़ रही हैं।"

"अरे भई, आप लोगों को हर बात क्या खुलकर बतानी पड़ेगी!" प्रदेश प्रभारी बिगड़ उठे, आगे अस्पष्ट शब्दों में बोले, ताकि बमुश्किल प्रभारी मंत्री और पार्टी अध्यक्ष सुन पाएं, "भई बात पाकिस्तान के संदर्भ में नहीं है! चीन के खिलाफ आवाज उठाने का अंजाम आप बखूबी समझते होंगे, हम-आप अबोध बच्चे नहीं हैं जो ना समझ पाएं।" बोलते हुए उनके मुंह से समर्पण सदृश्य हँसी निकली, आगे आवाज फिर से ऊंची करते हुए बोले, "अब मैं सीधे काम की बात पर आता हूं; पार्टी अध्यक्ष और शहर प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों की यह जिम्मेदारी है, वे संयुक्त प्रयास के तहत उन छात्रों को कुमार्ग में जाने से रोकें, चीन के खिलाफ मानवश्रृंखला तो हरगिज नहीं होनी चाहिए!" आगे आंखों

की गोलाई छोटी करके कहा, "यदि फिर भी वे सभी अपने संकल्प के पीछे पागल बने फिरेंगे तब तो राजधानी स्तर से जो उचित होगा किया जाएगा!" अब प्रभारी मंत्री को धीमे, पर स्पष्ट स्वर में कहा, "फिलहाल आप इन छात्रों का पूरा डिटेल हमें एक सप्ताह में उपलब्ध करा दें, आगे क्या करना होगा वह सिर्फ आपसे शेयर करूंगा।" फिर सभागार में बैठे पदाधिकारियों की तरफ ऊंची आवाज में कहा, चेहरे में आकस्मिक मुस्कुराहट लाते हुए, "आप सभी को कष्ट देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।" बोलकर कुर्सी छोड़ने को हुए तो याद आया, "अरे हां, एक बात तो भूल ही गया! एक सप्ताह के बाद आगामी शनिवार को मंगल टीका अभियान की शुरुआत हो रही है; हम सभी को इसे सफल बनाने में लगना पड़ेगा।"

"मंगल टीका?" सभागार में पीछे बैठे किसी की आवाज थी।

"अरे भई, कोरोना टीके का उत्पादन आवश्यकता अनुरूप समय-समय पर होता रहेगा, पर विश्व के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान का शुभारंभ सोलह जनवरी से हो रहा है देश में! माननीय प्रधानमंत्रीजी इसका वर्चुअल इनॉग्रेशन करेंगे; अरे किस दुनिया में रहते हैं आप लोग?" सभागार से बाहर आते हुए उसने किसी से आंखें नहीं मिलाईं, जैसे आंखों को उन छोकरों की दिशा में टिका दिया हो।

मंथन सभागार से निकलते हुए कानों में पड़ रहे मानस पाठ से प्रदेश प्रभारी भाव-विभोर हो उठे, सोचकर कि जैसे ये पंक्तियाँ तुलसीदास जी ने उनके विरोधियों के लिए ही लिख छोड़ी हों ...निराचार जो श्रुति पथ त्यागी, कलियुग सोइ ग्यानी सो बिरागी...

6

सहज के मोबाइल में दोपहर दो बजे शायनी का मैसेज आया, साढ़े चार बजे उजड़े महल में जरूरी विमर्श हेतु; कड़कती ठंड के दिनों में स्वाभाविक ही अंधेरा होने से पहले ही। मैसेज पाते ही उसके अंदर उत्सुकता आती-जाती रही, संशय उगते-बुझते रहे, आशा जागती-डूबती रही... जरूरी विमर्श? कोरोना-कैबिनेट के प्रस्ताव पर आगे की कार्रवाई तो तय है! तो क्या शायनी की अपनी कुछ अलग राय बन रही है? पर जरूरी विमर्श के लिए उजड़ा महल क्यों? ...या हो सके उसका मन चंचल हो उठा हो... उसका चिंतन किसी अंधेरी सुरंग में अटक-सा गया। वह खुद ही हँस पड़ा ...हो न हो 'वैसा कुछ' के

बारे में कुछ लिखने में शर्म आ रही हो उसे और संकेत के तौर पर 'विमर्श' टाइप कर दिया हो!

सवा चार बजे ही दोनों उजड़े महल के खुले प्रांगण में पहुंच गए थे। खंडहरों में अंधेरे ने पैर पसारना शुरू कर दिया था, प्रांगण में बचे उजाले को अपने आगोश में दबोचने के लिए बेताब-सा। वातावरण में फैले रूमानियत सहज के स्वर में फूट पड़ा, "रामघाट में कड़ाके की ठंड तो यहां पर बड़ा ही दिलकश हो उठा है! जी कर रहा है धरती के सबसे खुशनुमा 'पल' को आज ही जी लूं।" फिर खंडहर के बड़े पत्थर पर बैठकर शायनी की आँखों में गड़ते हुए बोला, "जरूरी विमर्श में 'वो' भी तो आता होगा!"

"धत् पगले, उसके लिए विमर्श क्या करना होता है भला!" सहज के गाल में चपत लगाते हुए वह बोली जैसे किसी बुद्धू बैल से पाला पड़ा हो, आंखों में गड़ते हुए बोली, "कब के मिल चुके दो दिलों में जब जिस दिन शोले भड़क उठें दो बदन एक हो जाते हैं! वो घड़ी तो अभी तक हमारे वेटिंग में ही चल रही है; ब्लडी कोरोना ने क्या-क्या नहीं छीना है मानव जाति से।"

"क्या जीवन लंबे समय तक इतना रसविहीन होना चाहिए? इससे तो मानव के अंदर की प्रणय संवेदना ही न मर जाएं कहीं!" सहज ने कहा, लगा आवाज उसके होंठों की लालिमा से छनकर बाहर आई हो।

"रस विहीन क्यों माय डियर! प्रणयपूर्ण होना चाहिए..." बोलते-बोलते शायनी ने अपने होंठों को उसके होंठों में विलीन हो जाने दिया। मिनटभर बाद शायनी के होंठ मुक्त होकर कंपित हो उठे, "अब बस भी करो, ऐसा मत करना कि इस ठंड में ही अंदर लपटें उठ पड़ें!"

"फिर तो विमर्श पर बात किया जाए।" बोलते हुए सहज के होंठ मुस्कुरा उठे, जैसे पूर्णानंद के नशे में हों।

"जस्ट आई वांट टू शेयर वन इंपोर्टेंट डेवलपमेंट अबाउट माई रिसर्च," शायनी ने स्पष्ट उच्चारण के साथ कहा, फिर आंखों में शरारत लाती हुई बोली, "यूँ तो इस विषय में रामघाट में भी डिस्कस किया जा सकता था, पर कई महीनों तक यहां नहीं आने से मन खाली-खाली-सा लग रहा था।"

"व्हाट काइंड ऑफ डेवलपमेंट?" सहज की आवाज में कौतूहल सवार हो चला।

"फर्स्ट ऑफ ऑल प्लीज प्रॉमिस, तुम मेरा साथ नहीं छोड़ोगे न?" शायनी की आंखें छलछला आईं।

"नॉट ओनली इन दिस बर्थ, इन नेक्स्ट बर्थ टू!" शायनी के दोनों गालों को हथेलियों में लेते हुए वह भाव विह्वल हो उठा।

"आज मेरे पास स्वीडन के वायरोलॉजी इंस्टीट्यूट से मेल आया है, वहां के लैब में मुझे रिसर्च का ऑफर मिला है, विद फुल स्कॉलरशिप!" वह बोलती गई, चेहरे में संतुष्टि की परतें फैलने लगीं, "गांधी स्कूल की लैब में कोरोना पर पाए गए न्यू फैक्ट्ज को मैंने एक महीना पहले ही कोपनहेगन फॉरवर्ड किया था, कुल दो सौ पेज के ब्राउचर के रूप में"

"वाउ! रियली सरप्राइज!" वह खिल उठा; आगे गंभीर होकर बोला, "बट हैदराबाद इंस्टीट्यूट से भी तो रिसर्च का ऑफर था?"

"सहज, नाउ आई एम क्वाइट मच्योर टू अंडरस्टैंड द ब्लैक फेस ऑफ इंडियन सिस्टम!" डूब चुके सूरज के लालिमा अवशेष पर गड़ते हुए वह बोली, "इंडिया का एनवायरनमेंट फंडामेंटल रिसर्च करने का है ही नहीं! यू नो वेरी वेल, पहले तो मुझे यूनिवर्सिटी का लैब उपलब्ध नहीं हो पाया, सर की कृपा से गांधी स्कूल का लैब मिला, बट मेरे रिसर्च में कुछ ऑरिजिनल फाइंडिंग्स पकड़ में आते ही वहां के लैब में भी मेरे लिए ताले पड़ गए; रही बात हैदराबाद इंस्टिच्यूट की तो वहां भविष्य में क्या-क्या पंगा होना है यह हमें-तुम्हें अभी नहीं पता न!" फिर गहराते अंधेरे में झांकती हुई बोली, "यहां इंडिया में साल-दो साल बर्बाद करने से अच्छा है फॉरेन जाकर ह्यूमन वेलफेयर के लिए कोई बड़ा काम किया जाए।"

"इन माय ऑपनियन हैदराबाद तो प्राइवेट लैब है, वहां तो तुम फ्रीली रिसर्च कर सकती थी?"

"माय डियर सहज" उसकी ठुड्डी को पांचों उंगलियों से पकड़कर नाराजगी व्यक्त करती हुई बोलने लगी, "हम लोग एक साल से कोरोना से जंग लड़ रहे हैं, सिस्टम में समाए पॉलिटिक्स के रग-रग से वाकिफ हो चली हूं; हो न हो रिसर्च के क्षेत्र में भी ऊपर वाले को कोई क्रांतिकारी पर अरुचिकर शोध पसंद ना हो, यहां पर किसी भी फील्ड में कोई वही काम कर सकता है जो ऊपर वाले को सूट करता हो;" आगे चेहरे में घृणा की चादर फैलाकर सहज को घूरते हुए बोली, जैसे किसी पुरुष संवर्ग के सम्मुख हो, "जो व्यक्ति या कर्म ऊपर वाले को पसंद नहीं है उनकी सृजनशीलता के मार्ग में रोड़े अटकाए जाते हैं, परोक्ष और प्रत्यक्ष दोनों रूपों में।"

"तुम्हारे अब तक के फाइंडिंग्स में ऐसा क्या दिखा है जो सरकार सिस्टम

को रुष्ट करें?" सहज सोच में पड़ गया।

"आई गॉट वन थिंग वेरी क्लीयरली, कोरोना वायरस यानी सार्स टू भले ही समाप्त हो गया-सा दिखेगा पर इसके बचे सेल्स लगातार म्यूटेट करता रहेगा।" उसके चेहरे पर नजर गड़ाकर वह बोलती रही, जैसे उसके अंदर कोई वायरस ढूंढ़ रही हो, "आई मीन टू शे यह अजर-अमर किस्म का वायरस है, सालों बाद इसका वह प्रतिरूप सामने आ सकता है जो मानव जाति के अस्तित्व के लिए एक बड़ा खतरा लेकर आएगा!"

"अपने रिसर्च में तुम क्या कॉनसेंट्रेट करोगी?" उसने अनाड़ी-सा पूछा।

"किसी भी वायरस पर रिसर्च का कोर वर्क होता है जिनोम सीक्वेंसिंग और उसके नए-नए वेरिएंट को स्प्लिट करना, इसके हाइबरनेशन में जाने से पहले जिनोम सीक्वेंसिंग के जरिए उस जीन को ढूंढ़ना जरूरी है जो भविष्य में मोस्ट फेटल हो सकता है।" बोलकर शायनी रामघाट की दिशा में देखने लगी, अपने दोनों हाथों को सीने के नीचे आपस में फंसाकर रखते हुए। प्रांगण में पसर चुके अंधेरे में भी उसके वक्ष से सहज की आंखें टकरा गईं; उसे अपने अंदर एक तरंग मचलती महसूस हुई, दोनों के बीच दौड़ती कोई करंट-सी। शायनी ने नजरें झुका लीं, बोली, "डोंट वरी तुम्हारी सहमति होगी तभी जाऊंगी; एंड जस्ट बिलीव अपन मि वहां जाकर किसी फोरनर के संग कोई अफेयर नहीं पालूंगी।"

"आई एम प्राउड ऑफ यू शायनी।" शायनी को बाँहों के घेरे में लेते हुए उसने कहा, फिर उसकी पीठ पर थपकी देते हुए बोला, "ह्यूमन विंग के इग्जिस्टेंस के लिए तुम एक बड़ा रिसर्च सामने लाओगी इससे बड़ा पल और क्या हो सकता है हम सभी के लिए, रामघाट के लिए एंड ऐवेंचुअली फॉर ऑल कंट्रीज!"

"इट मिंस योर कन्सेंट इज विद माय रिसर्च वर्क एट कोपनहेगन!" वह खिल उठी, मीठी मुस्कान लिए बोलती गई, "थैंक्स टू ममा, दो साल पहले ही पासपोर्ट बनवा ली थी; आज रात वीजा के लिए ऑनलाइन अप्लाई कर देती हूं, ओके होते ही एक-दो दिन में दिल्ली जाना पड़ेगा, स्वीडन एंबेसी में वेरिफिकेशन के लिए, जस्ट फॉर वन डे!" बोलकर उसकी आंखें चंचल हो उठीं, "आई थिंक इट वोंट बि अ बैड आइडिया इफ यू अकम्पनी मि फोर देल्ही एंड..." उसकी नजरें झुक गईं, आगे बोल न पाई।

"एंड!" सहज की सांसें तेज हो गईं।

"वि विल डिसाइड देयर ऑनली!" अपने को सहज के आगोश में जाने देती हुई वह शरमा उठी।

"आई लव यू शायनी फॉर एवर।"

"आय टू सहज!" उजड़े महल से कार रामघाट की तरफ सरकने लगी, धीरे-धीरे। दोनों चुप थे; दिलों में वार्तालाप जारी था। बस्ती एरिया से गुजरते हुए शायनी के कानों में भीमरवा की आवाज टकरा रही थी, तेज चलती कार में भी ...उत्साह-उमंग-उफान-उड़ान-उज्ज्वल...

7

शायनी रामघाट एयरपोर्ट पर थी, दिल्ली जाने के लिए; स्वीडन एंबेसी ने वेरिफिकेशन के लिए आज का समय तय किया था। वह तो सहज को बोल चुकी थी दिल्ली साथ जाने के लिए, पर जाना पड़ रहा था मम्मी के साथ। सुबह वाली फ्लाइट से जाकर शाम वाली से लौटने का टिकट था। चेक इन हो जाने के बाद उसने सहज को मैसेज भेज दिया, "सॉरी सहज; तुम्हारे साथ दिल्ली जाकर एक दिन रुकने का प्लान छोड़ना पड़ा, ममा के साथ ही जा रही हूं; ममा कह रही है रामघाट अभी मुंबई-दिल्ली जैसा बड़ा शहर नहीं है, जहां कोई किसी के साथ कहीं जाएं-रुके-रहें कोई नोटिस नहीं करता; हैव फेथ ऑन गॉड, आवर बेस्ट टाइम विल कम सून।"

चेक-इन से पहले कोरोना का नामोनिशान नहीं था कहीं। यात्रियों के बीच भौतिक दूरी भूतकाल की बात रह गई थी; यात्रियों के मास्क नाक-मुंह को आजाद करते हुए नीचे ठुड्डी के सहारे टिके थे, दोनों छोर वाले धागे दोनों कान को संवाद-सूत्र-सा जोड़ते हुए! चेक-इन के बाद हर चेहरा मास्क से ढका दिखने लगा; भौतिक-सामाजिक सभी किस्म की दूरी का एकाएक भरपूर पालन होता नजर आने लगा, जैसे कोरोना भदभदा कर जिंदा हो उठा हो। हां, मास्क से मुंह ढक लेने पर लोग खुद ही शर्माने लगते। बोर्डिंग गेट पर तो कोरोना जैसे साक्षात दैत्य रूप में खड़ा था, अदृश्य; हर यात्री को फेस शील्ड लगाना अनिवार्य था, बी और ई सीटधारी व्यक्तियों को बजाप्ता फुल बॉडी कवर पहनाया जा रहा था। शायनी को याद आया, बीते फरवरी-मार्च में रामू सही कह रहा था फ्लाइट ही तो कोरोना की सवारी है; तभी तो अभी भी फ्लाइट में कोरोना ज्यादा ही चिपका हुआ जान पड़ रहा है! फेस शील्ड, मास्क, बॉडी कवरधारी यात्रीगण अपनी सीट ढूंढ़ते हुए सावधानीपूर्वक आगे

बढ़ रहे थे, जैसे कोरोना होने-न-होने की तहकीकात कर रहे हों। उद्घोषक ने अन्य कई उद्घोषणा के साथ यह जोर देकर कहा ...सभी यात्रियों से अनुरोध है कृपया अपना मास्क फेस शील्ड, बॉडी कवर पूरी यात्रा के दौरान पहने रखें...। प्लेन ने टेकअप किया; शायनी को लगा जैसे अब तो वह कोरोना-कंट्री से काफी दूर अंतरिक्ष में जा रही है। उसकी कल्पना सार्थक होने लगी; धीरे-धीरे यात्रियों ने अपने फेस शील्ड मास्क उतारकर किनारे रख दिए, जैसे सचमुच टेक-ऑफ होते ही कोरोना ने किनारा कर लिया हो! बीच वाली सीट पर बैठे यात्रियों के लिए बॉडी कवर निकालना भला कहां संभव था; अपने सामने बीच वाली सीट पर बैठे कवचधारी यात्री की कसमसाहट से शायनी ने अनुभव किया जैसे वह बेचारा लंबा-तगड़ा जवान कोरोना के कांटे में फंसा हो!

प्लेन लैंड किया। बाहर आने की उद्घोषणा हुई, साथ में सभी यात्रियों से अनुरोध भी कि अपना मास्क, फेस शील्ड, बॉडी कवर पहने ही प्रस्थान करें। कुछ यात्रियों ने जान-बूझकर फेस शील्ड सीट पर ही छोड़ दिए तो कुछ लाना भूल बैठे। निकासी द्वार पर धन्यवाद ज्ञापन के लिए हाथ जोड़े खड़ी परिचारिका की जोड़ी ने ऐसे यात्रियों को याद दिलाई, "प्लीज फेस शील्ड लगाकर ही बाहर निकलें।" अपने को प्रतिभाशाली मानने वाले यात्री ने तर्क पेश कर दिया, "अब कोरोना है कहां!" काकपिट की तरफ से बाहर आते पायलट ने सुना तो झुंझला उठा, "कोरोना इज देयर ऑर नॉट बट प्रोटोकॉल इज देयर माय डियर!" एरोब्रिज से बाहर आते ही शायनी की आंखें फटी रह गईं; सामने चारों तरफ बॉडी कवर फेस शील्ड बिखरे पड़े थे, उसके आगे-पीछे चल रहे यात्री समूह भी ढेर को समृद्ध करते हुए आगे बढ़ रहे थे। रामू जैसी नहीं थी शायनी, सो प्रधानमंत्री शब्द मुंह पर न आया, पर गंदगी के बीच से निकलते हुए मन में प्रधानमंत्री की याद आई; अराइवल के बाहर आते-आते उसका मन खट्टा हो चला, स्वच्छता अभियान के इतने सालों बाद भी देश कूड़े के किनारे ही बैठा है। तब उन्हें लगा कुछ लोग सच ही कहते हैं भारत तो कचरे का ढेर-जैसा दिखता है।

स्वीडन एंबेसी का कार्य-व्यवहार देखकर शायनी दंग रह गई; महज एक घंटे में वीजा उसके हाथ में था, जैसे किसी ने जादुई छड़ी घुमाकर काम करा दिया हो। तब उसे अपने यूनिवर्सिटी ऑफिस की याद आई, एक-एक काम के लिए कैसे दौड़ना पड़ता है स्टूडेंट्स को! पिछले एक साल के कोरोना

काल के दौरान विभिन्न सरकारी महकमों के साथ कोरोना-मंडली के कड़वे अनुभव को याद कर वह क्षणभर के लिए तो सिहर ही उठी।

वापसी फ्लाइट के दौरान वह भी कोरोना के प्रति अनजान ही बनी रही, बस प्रोटोकॉल का पालन भर करती आई। रामघाट एयरपोर्ट के अराइवल की दुर्गति तो देखने लायक थी! बाहर आते-आते उसे सहज की बहुत याद आई, पर मन में संतोष हुआ...अच्छा हुआ जो उसके साथ दिल्ली नहीं गई, पूरी यात्रा कोरोना प्लस कोरोना माइनस में ही कट जाती; ऐसे में दो दिलों के लिए दो पल भला कहां से निकल पाते, उसका अर्थशास्त्र संसाधन की बर्बादी का रोना रोता सो अलग। रात को घर की ओर जाते में अंबेडकर चौराहे पर उसे भीमरवा दिख गया, पुकार-सी लगाते हुए ...यहां न माया न राम कर अपना काम...। टैक्सी में बैठी माँ का कलेजा पसीज गया, बोली, "यह बालक अपने अंदर न जाने किस संसार का निर्माण कर बैठा है!"

8

14 जनवरी, 2021; मकर संक्रांति के दिन कोरोना-कैबिनेट वालों को सलाह देने वालों की संख्या एकाएक बढ़ गई। पिछले कुछ दिनों से उन सभी के पास किसी-न-किसी परिचित के कॉल जरूर आने लगे। कॉल में शुरुआती कुशल-क्षेम के बाद घोषित धरने पर उत्साह व्यक्त किया जाता, तदंतर नफा-नुकसान की चर्चा और अंत में इस प्रकार की फालतूगिरी से बचने की सलाह! समझाने-बुझाने का खेल सहज और रामू पर कुछ ज्यादा ही केंद्रित था। रामू को जानने वाले लोग प्रायः बस्ती तक ही सीमित थे, सीधे और निर्मल हृदय वाले लोग। मनाने-पटाने के पीछे की कूट मंशा रामू के पल्ले पड़ नहीं रही थी; अंततः रामनरेश ने ही एक बार कोशिश करके देख ली। बिदके-बेगाने को विश्वास में लेने या प्रभावित कर सकने की कला अभी परिपक्व नहीं हुई थी उसमें; रामू के शेड पर चाची का हाल-चाल पूछ लेने के बाद उसने रामू को सपाट शब्दों में बोल दिया, "रातो-रात बड़ा नेता बनने का ख्वाब नहीं देखना चाहिए!" उत्तर में रामू के पास फीकी मुस्कान ही थी। दूसरे दिन रामू उसे सुभाष मार्ग के तिराहे वाली चाय दुकान पर दिख गया। बिना ज्यादा समय लिए उसने रामू को नोंक पर ले लिया, "अभी तो शांति से समझ जाने का वक्त है, तुम्हें दोबारा समझा रहा हूं, एक बार अजगर के घेरे में आ जाओगे फिर तो बाहर निकलना मुश्किल होगा।" चाय दुकान में

जमे लोगों की परवाह न करते हुए रामू ने उसे ही सीख दे डाली, "तुम लोग सीधे-सीधे बात करना कब सीखोगे!" फिर तो रामनरेश मन-ही-मन बुदबुदा कर रह गया ...ऐसे लोग ऊपर से ही सीधे होंगे!

सहज को पकड़ने से अच्छा था उसके पिता को साधना। हंसामल के मित्र कामता काले के मार्फत उस तक बात पहुंचाई गई 'इस उम्र में ऊटपटांग करते रहने की भी सीमा होती है, बेतुका धरना-प्रदर्शन आपकी प्रतिष्ठा पर प्रहार ही करेगा।' पर हंसामल जी ने नम्रतापूर्वक हाथ जोड़ लिए, 'आज की पीढ़ी के पूर्व निर्धारित कार्यक्रम में हस्तक्षेप करना समझदार अभिभावक का काम नहीं है।' हित बिरादरी से बात नहीं बनी तो डीएम के मार्फत संदेश भिजवाया गया। उसने कौशलपूर्वक हंसामल जी से आग्रह किया, 'अभी तो पूरे देश में विश्व का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान शुरू होने जा रहा है, उन बच्चों को चाहिए कि इसमें प्रतिभाग करें और इस अभूतपूर्व अभियान का गवाह बनें! धरना-प्रदर्शन तो किसी भी दिन की जा सकती है।' डीएम की बातों में दम देखकर उसने कह भी दिया, 'मंगल टीका की ऐतिहासिक घड़ी में सभी को देश के साथ खड़ा होना चाहिए।' कॉल में ही डीएम की हँसी बाहर आई थी, 'यस-यस; और मुझे तो पूरा विश्वास है टीकाकरण अभियान की भव्यता और उपादेयता भाँपकर सभी नौजवान अनावश्यक धरना को हमेशा के लिए धर देंगे!' हंसामल ने उन बच्चों तक बात पहुंचा दी। मंडली के सदस्यों ने भी माना टीकाकरण अभियान में शामिल होना राष्ट्रीय गर्व का विषय है। एक कदम आगे बढ़कर रामू ने सभी साथियों को मना लिया था कि टीकाकरण के दौरान मूकदर्शक मात्र बने रहना राष्ट्र-हित के विरुद्ध होगा, हर किसी को किसी-न-किसी टीकाकरण केंद्र में हाथ बंटाना चाहिए।

प्रथम चरण में 16 जनवरी को सिर्फ कोरोना वॉरियर्स और कोरोना सेवा से जुड़े लोगों को ही टीका दिया जाना था। टीकाकरण की शुरुआत हेतु रामघाट में कुल तीन केंद्र बने थे। जिला अस्पताल केंद्र में कुल 109 लोग टीका के लिए पंजीकृत थे, गांधी हाई स्कूल वाले केंद्र में 95 और बस्ती के अंबेडकर चौक वाले केंद्र में 84। ऐतिहासिक टीकाकरण का गवाह बनने का सुअवसर था, स्वाभाविक ही मंजरी जिला अस्पताल केंद्र चली गई; शायनी भी साथ हो ली थी। केंद्र में स्वयंसेवकों के लिए करने का कुछ खास नहीं था; वे दोनों टीका टीम के साथ मौजूद रहीं, पूर्व परिचितों से कोरोनोत्तर वार्ता में समय निकालते हुए। पंजीकृत लोगों में से कई लोग पहले और दूसरे किस्म

की वैक्सीन पर पूछताछ करते रहते। पूछताछ के दौरान कई पंजीकृत व्यक्ति अमुक-अमुक टीके की वृहद् विवरणी पेश करते दिखे, वैक्सीन बनाने वाले वैज्ञानिक के दादा-परदादा जैसी भाव-भाषा में। कुछ लोगों ने तो टीका बनाने वाली हैदराबाद और पुणे की कंपनी की कुंडली ही खोलकर रख दी! समय खत्म होने तक पंजीकृत 101 में से मात्र 65 व्यक्तियों ने ही टिका लगवाया।

अहम, परवेज और सहज टीकाकरण अभियान में हाथ बंटाने की सोच कर गांधी हाई स्कूल केंद्र चले आए थे; अपनी पसंदीदा जगह! टीकाकरण के लिए टीम जिला अस्पताल से आई थी। अपने लिए कोई काम ना देख वे तीनों आगंतुकों को स्वयं-सेवा देने लगते, स्कूल के दिनों में किए जाने वाले विविध उत्सवों को याद करके। स्कूल में कक्षाएं तो पिछले 25 मार्च से ही स्थगित थीं, पर दीवाली के बाद शिक्षकों की हाजिरी लगने लगी थी। टीकाकरण के दौरान बेकाम बैठे बुद्धिजीवी किस्म के शिक्षकों को वैक्सीन पर वार्तालाप करने से कौन रोक सकता था भला! ...वैक्सिंग को कुछ नेताओं ने मंगल टीका के बजाय मीडिया टीका बना डाला है ...प्रथम चरण में उन्हीं शहरों-कस्बों को फोकस करना चाहिए जहां कोरोना के मामले अभी भी निकल रहे हैं ...सच बोलूं तो जिस गांव-कस्बा-शहर में कोरोना का कोई केस नहीं है वहां प्रथम चरण में टीकाकरण चलाना प्रभावित क्षेत्रों के साथ नाइंसाफी है, साथ ही समय, ऊर्जा और धन की बर्बादी है ...तुम्हारी नजर में धन की बर्बादी हो सकती है; पर वैक्सीन कंपनी के लिए यह तो लक्ष्मी का आगमन है! दिनभर बात-बतंगड़ पूछताछ चलती रही। समय खत्म होने के बाद टीका टीम चलती बनी, 95 पंजीकृत के विरुद्ध 57 टीके लगने की रिपोर्ट ऊपर भेजते हुए।

बस्ती वाले अंबेडकर चौक केंद्र का अजीब दृश्य था। रामू, दिनेश और मनोज साथियों के साथ वहां पहुंचे तो लोगों की भीड़ टीका टीम को घेरे खड़ी थी। लोग वैक्सीन देखे बिना हटने को तैयार नहीं थे; पुलिस लाठी फटकार कर खुद पीछे हट चुकी थी। आइस बॉक्स से जैसे ही वैक्सीन की शीशी निकाली गई लोग एक-दूसरे पर चढ़ बैठे! रामू के समझाने पर लोग पीछे हटते गए; धीरे-धीरे छोटे-छोटे झुंड में बैठते हुए। पंजीकृत लोग थोड़े-थोड़े अंतराल पर आते रहे, टीका लगवाकर टेंट में आराम फरमाते रहे। झुंड में बैठे लोग गप्प-ठहाकों में मजा लूटते रहे ...बस्ती की बारी आएगी या नहीं? ...मैं तो कहता हूं बस्तीवालों को टीके के बजाय एक-एक डिब्बा जूस

ही दे दिया जाए फिलहाल, सेहत तो थोड़ी-बहुत बन जाएगी ...अरे नेताओं के रंग-ढंग से हमें लग रहा सरकार का यह काम भी टिम-टाम चलता रहेगा ...जब तक बस्ती की बारी आएगी करोना सात पीढ़ी के साथ अपने ससुराल में जम चुकी होगी, मंगल-सुहाग गाने के लिए...

"ससुराल मतलब?" भीड़ में किसी की जिज्ञासा जगी।

"ससुराल बोले तो हिंदुस्तान, जहां कोरोना दुल्हन बनकर आई है, कई-कई मायके से; हवाई जहाज में बैठकर!" झुंड के पीछे आ खड़ा हुआ रामू ने जवाब दिया।

"चीन का भेजा यह दुल्हनिया तो चुड़ैल बूढ़िया बनती जा रही है इंडिया में।" बोलते हुए दिनेश की आँखों में भय की परत उग आई, जैसे सच में कोई चुड़ैल दिख गई हो।

"चुड़ैल आगे कब दुल्हनिया बन जाए पता नहीं।"

"मतलब?"

"बस समझ लो अब इंडिया में नई-नई दुल्हनियां तो छम-छम करेंगी ही, चीन में भी दूसरी नई-नवेली दुल्हनियां तैयार बैठी होंगी परदेस में पैर धरने के लिए!"

"पर अभी तो जहाज बंद है?"

"जहाज बंद है, पक्षी के पर तो चालू है न!"

"फिर तो चीन का ही इलाज कर देना चाहिए।"

"वही तो करने जा रहे हैं हम लोग।" रामू ने उत्तर दिशा की ओर उंगली उठाते हुए कहा।

'.....'

'.....'

टीकाकरण धीमी गति से चल रहा था तो गप्पें तीव्र गति से; रामू और उसके साथियों की कड़ी चौकीदारी से टीकाकरण अभियान को गप्प के गंध से निरापद रखा जा सका। टीका टीम के भरपूर प्रयास के बावजूद पंजीकृत 84 में से सिर्फ 55 ने ही टीका के लिए हाथ आगे बढ़ाए। केंद्र प्रभारी खुद सोच में डूब गए ...बस्ती तो सफाई कर्मियों की मुख्य वसाहत है, इन लोगों को भी प्रथम चरण के टीकाकरण में शामिल किया जाता तो हमारा आँकड़ा सम्मानजनक हो जाता! उसकी मायूस मुद्रा भांपकर रामू ने कहा, आवाज में आत्मीयता लाते हुए, "टीका के लिए बस्ती के लोगों में उत्साह कम नहीं है;

बस्ती तो मिनी इंडिया है सर, और इंडिया तो सिर्फ पॉलिटिक्स से नहीं मन से भी चलता है न! नीयत सही रहेगी तो आगे नतीजे जरूर अच्छे आएंगे।" एंबुलेंस में सामान समेटकर टीका टीम जाने लगी। साथियों सहित रामू सुभाष मार्ग की तरफ चल पड़ा, मोबाइल में अभी-अभी आए सहज का मैसेज पढ़ते हुए ...कल सुबह दस बजे मेरे घर पर कोरोना-कैबिनेट की बैठक होगी...।

आज भीमरवा के शब्द-शोर रामू की पकड़ में बखूबी आ पा रही थी ...सुबह बीत गई-दिन बीत गया-संध्या बीती-बीत गई रात-होगा कब तेरा सवेरा...। रामघाट तिरे से आती आवाज आज ऊपर-नीचे हो रही थी...हरइ सिष्य धन सोक न हरई, सो गुर घोर नरक महुँ परई...

9

17 जनवरी, रविवारीय अवकाश का दिन। सहज के साथियों को लॉन में बैठे देख हंसामल उधर ही चले आए, सुबह दस बजे वाली गुनगुनी धूप में। वे पहली बार कोरोना-कैबिनेट के बीच तशरीफ लाए थे। उनके सम्मान में सभी उठ खड़े हुए। खाली कुर्सी में बैठते ही वे माफीनामे के अंदाज में बोले, "नई पीढ़ी के काम में हस्तक्षेप के सख्त खिलाफ हूं, मेरा मानना है देश के युवाओं को अपनी स्वतंत्र सोच के साथ आगे बढ़ने देना चाहिए।"

"बट अंकल," रामू बोल पड़ा, "क्या पुरानी पीढ़ी का यह दायित्व नहीं है कि वह अपने अनुभव से नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करे!"

"उसी दायित्व बोध से तो अभी तुम्हारे बीच आया हूं।" हंसामल मुस्कुरा उठे।

"जेड सर के स्वर्ग सिधारने के बाद मार्गदर्शन के मामले में हम लोग तो अनाथ से हो गए हैं।" बोलते हुए अहम की आंखें नम हो गईं।

"वे महापुरुष स्वर्ग सिधारे नहीं स्वर्गलोक भेज दिए गए; तुम लोगों को अंदरूनी बातें कितना पता है मुझे नहीं मालूम, पर हकीकत यही है।" हंसामल की आंखों में डर उतर आया।

"यह हम लोग क्या सुन रहे हैं अंकल!" परवेज घबरा उठा।

"अभी तुम लोग उन ताकतों से अनभिज्ञ हो," हंसामल ने लंबी सांस लेकर कहा।

"कौन-सी ताकत?" बोलकर शायनी, मंजरी की ओर खिसक गई।

"वही ताकत जो चाहती है कि तुम लोग धरना-मरना के रास्ते पर ना

चलो, ये वो ताकतें हैं जो सोचते हैं सोचना सिर्फ उन्हीं का काम है!" हंसामल ने कहा तो उसके होंठों पर रहस्यमयी मुस्कान तैर गई।

"हम सभी को भी अलग-अलग लोगों ने सलाह दिया है ऐसा-वैसा कुछ नहीं करने के लिए।" मसले की पूंछ पकड़ते हुए परवेज ने कहा।

"समझो ऐसे लोग उन ताकतों के प्रवक्ता हैं जो अलग-अलग स्तरों में जाल जैसे फैले हुए हैं!" बोलकर हंसामल अपनी ऊंची हवेली पर नजरें टिकाकर बोले, "मुझे तो चेतावनी भरे शब्दों में कहा गया है उन बच्चों को बांधकर रखना आपका राष्ट्रीय कर्तव्य है।"

"फिर आगे हम लोगों को क्या करना चाहिए?" शायनी हिम्मत करके बोली।

"तुम सभी अपने भविष्य के साथ-साथ समाज और देश के भविष्य के लिए भी चिंतनशील रहे हो, मेरे हिसाब से स्वस्थपरक और दूरगामी निर्णय लेने में तुम लोग सक्षम हो," आँखों में चमक लिए हंसामल ने कहा; मुस्कान बंद होंठ लांघकर दोनों गालों तक छितरा आई, जैसे उसने नई पीढ़ी पर विश्वास जताया हो। हंसामल किनारे वाले छोटे लॉन की तरफ जाने लगे; काढ़ा लेकर पत्नी कब से प्रतीक्षा कर रही थी। उनको जाते हुए वे सभी ऐसे देख रहे थे जैसे वे अपने पीछे ऊर्जा की धार छोड़ दिए हों; ऊर्जा की धार जो आंखों के रास्ते उन सभी को अंदरूनी ताकत दे रही थी।

"आज के सत्र में हम लोग टीकाकरण अभियान की अनिवार्यता और इससे क्या सीख मिलती है इस पर चर्चा करेंगे, और तीस जनवरी की रणनीति पर भी अंतिम निर्णय होगा।" पिताजी के जाने के बाद सहज सुलग उठा।

"टीकाकरण के बारे में लोगों की क्या राय है यह सामने लाना जरूरी है।" चर्चा को धरातल पर उतारने की खातिर अहम ने कहा।

"जिला अस्पताल केंद्र में लोग पहले और दूसरे वैक्सीन की चर्चा करते रहे, लगा जैसे वैक्सीन का मोल-भाव चल रहा हो!" शायनी ने अफसोस जताते हुए कहा।

"अहम और सहज तुम दोनों भी तो गांधी हाई स्कूल केंद्र में मेरे साथ ही थे; हमारे गुरुजी लोग तो खुलेआम बोल रहे थे नेताओं ने मंगल टीका को मीडिया टीका बना दिया है!" परवेज ने टीकाकरण अभियान में सुराख दिखाते हुए-सा बोला।

"कल शाम डिनर के समय पिताजी बता रहे थे उनके बचपन के दिनों में हैजा-चेचक और बाद में डीपीटी-बीसीजी-पोलियो जैसे वैक्सीन का

लंबा-लंबा कार्यक्रम चलता आया है, पर टीकाकरण अभियान को राजनेताओं ने वाहवाही लूटने के अवसर के रूप में नहीं लिया!" बोलने के बाद सहज की आँखें छोटी हो गईं, जैसे किसी के छोटेपन पर वह तरस खा रहा हो।

"यहां रामघाट में बैठकर पूरे हिंदुस्तान पर आरोप मढ़ना अपना मन बहलाने जैसा है, यह बात हर नागरिक को याद रखनी चाहिए कि अब कोरोना से बचाव का एकमात्र उपाय है वैक्सिन! अब आगे हमें असली मुद्दे पर बात करनी चाहिए।" रामू बोलता गया "बस्ती में भी लोगों ने माना है कि करोना दुल्हनियाँ चीन से आया है जहाज में बैठकर; कोरोना के खात्मा के बाद चीन फिर कोई नई दुल्हनियाँ पैदा करेगा और तुरंत डायन बनाकर विदा भी कर देगा हमारी तरफ!"

"यदि भविष्य में हर साल चीन ऐसे ही नई-नई दुल्हन को भेजता रहा हमारी तरफ फिर तो हमारे देश को चाइनीज डायन जोगिन खाती ही रहेगी!" मंजरी घबरा उठी।

"इसका समाधान क्या है?" शायनी अपने रिसर्च को याद करने लगी।

"हम लोग प्रस्ताव तो पारित कर चुके हैं; इसका एकमात्र उपचार है पूरी दुनिया को चीन के खिलाफ एकजुट कर उसे धरती में मानव के अनुकूल बनाना।" रामू ने दृढ़ निश्चय के साथ कहा।

"प्रस्ताव तो हम पारित कर चुके हैं, पर सरकार इसकी अगुवाई करे तभी तो?" सहज ने लाचारी व्यक्त की।

"अगुवाई करने की बजाय सरकार के लोग हमें पाठ पेल रहे हैं!" अहम ने अफसोस जताया।

"हमें ऐसे लोगों की सलाह-सद्भाव के झांसे में नहीं आना! और यदि सरकार हमारे खिलाफ कोई सख्त कदम उठाए तो भी हमें अपने धरना अभियान से पीछे नहीं हटना है!" रामू ने अंतिम लड़ाई वाली हुंकार भरते हुए कहा।

"यह एक बड़ी सच्चाई है कि भविष्य में चीन से नित नये खतरे हमारी तरफ आते रहेंगे, पर सरकार तो बड़े काम के बजाय छोटे-छोटे काम को तवज्जो दे रही है।" अहम ने आगाह किया।

"इसलिए हम चीन के खिलाफ मशाल उठाएंगे; पहले रामघाट में, फिर पूरे प्रदेश में और धीरे-धीरे देश के कोने-कोने में चीन के खिलाफ मानव शृंखला बनाएँगे!" उमंग में सराबोर परवेज बोलता गया, "यदि सरकार के

लोग इसे सरकार के खिलाफ मोर्चा मानेंगे फिर तो यह उनके सोच का दिवालियापन होगा, हमें इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए अन्यथा हम सजीव मानव नहीं वस्तु-सा निर्जीव मानव ही बने रहेंगे!"

"तो धरना कार्यक्रम तीस जनवरी का तय रहा?" सहज ने सहमति के लिए पूछा।

"हां-हां, तीस जनवरी से सटीक दिन और भला क्या हो सकता है! गांधीजी के शहादत के दिन हम लोग भी अपनी निजी जिंदगी को सार्वजनिक हित में सौंप देंगे।" अहम ने बड़ा रास्ता दिखाते हुए कहा।

"तब तो कल से पहले वाले पोस्टर के बगल में कुछ नए पोस्टर लगाने होंगे, बेवजह पंचायत करने वालों को साफ संदेश देने के लिए।" बोलते हुए में सहज का जोश सातवें आसमान पर जा पहुँचा। सभी के अंदर जोश उफान मारने लगा। बरामदे में खड़े महाराज जी मिल्क शेक लेकर लॉन की तरफ बढ़ आए।

"जिन मुद्दों के खिलाफ हम लोग धरना देने जा रहे हैं उस पर मैं पुनर्विचार प्रस्ताव रखना चाहता हूँ।" शेक पीना रोककर मनोज ने कहा, लंबी सांस लेकर।

"बेशक; कोरोना-कैबिनेट के हर सदस्य को यह अधिकार प्राप्त है!" अहम ने मनोज का उत्साह बढ़ाते हुए कहा।

"प्रथम चरण में तीस जनवरी को हमें कुछ सिलेक्टेड इश्युज पर ही धरना कार्यक्रम रखना चाहिए, फिर सफलता-असफलता का आकलन कर बाकी मुद्दों को दूसरे चरण में अमल में लाना चाहिए?" बोलने के दौरान मनोज के चेहरे में गंभीरता और कूटनीतिक परिपक्वता झलक रही थी।

"चरणबद्ध ढंग से आंदोलन चलाना भी एक अच्छी रणनीति मानी जाती है; चूँकि मुद्दों को अलग-अलग चरणों में रखने का ख्याल मनोज के मन में आया है, तो पहले वही अपना मंतव्य दे, किन मुद्दों को किन चरणों में रखना समयानुकूल रहेगा।" मनोज पर विश्वास जताते हुए सहज ने कहा।

"कोरोना के मामले में चीन की चतुराई अभी के ज्वलंत वैश्विक मुद्दे हैं, कोरोना फैलाने के अपराध में चीन को दुनिया के सामने नंगा करना समय की माँग है; यदि भारत इस मुद्दे को वैश्विक स्तर पर उठाएगा तो विश्व बिरादरी में भारत की पहचान मानवता के लिए समर्पित एक निडर राष्ट्र के रूप में स्थापित होगी!" मनोज ने कूटनीतिक लय में कहा; उसकी आँखों में

उभर आई चमक से लगा हिंदुस्तान के हक में कोई बड़ा झंडा गाड़ रहा हो।

"हाँ-हाँ-हाँ-हाँ-हाँ-हाँ," सभी ने हाथ लहराकर हामी भरी।

"प्रथम चरण में हमें और किन मुद्दों को रखना चाहिए?" सभी की ओर बारी-बारी से देखते हुए सहज ने पूछा।

"मेरे हिसाब से अहम के प्रस्ताव को हमें प्रथम चरण में ही टेक अप करना चाहिए?" परवेज ने सबकी सहमति माँगने के अंदाज में कहा।

"ऐब्सलूट्ली राईट; कैबिनेट जितनी जल्दी पार्टी निरपेक्ष हो जाए देश हित के लिए उतना ही अच्छा होगा!" अहम ने कहा तो लगा जैसे पार्टी और कैबिनेट के घालमेल से उपज रहे अनिष्ट से वह सहम उठा है।

"हाँ-हाँ-हाँ-हाँ-हाँ-हाँ," सभी ने ऊँची आवाज में सहमति दी, नारेबाजी जैसा करते हुए।

"तो यह तय रहा अभी तीस जनवरी को सिर्फ दो मुद्दों पर सरकार को जगाने के लिए धरना दिया जाएगा, बाकी मुद्दों को आगामी पंद्रह अगस्त या दो ऑक्टोबर से दूसरे चरण में उठाया जाएगा; जय हिंद!" सहज ने बात खत्म की।

सहज की माँ ने शायनी को संकेत से अपनी तरफ बुला लिया, महीनों की बेचैनी मिटाने की खातिर।

10

हर चौक-चौराहों पर पहले वाले होर्डिंग पोस्टर के बगल में नए-नए पोस्टर लग गए, पुराने पोस्टर की नई संतति-जैसे। इस बार पोस्टर के नारे रामू और दिनेश ने तय किए थे; कांटेदार कोरोना के फोटो वाले बोलते पोस्टरें ...हमें डराओ मत, हमें सताओ मत ...हम डरेंगे नहीं ...आपस में लड़ेंगे नहीं, हारेंगे नहीं ...शहीद दिवस को हमने ठाना है देश को आगे बढ़ाना है ...गूंगा रहना हमें मंजूर नहीं ...हम भी कीचड़ से निकलेंगे भारत को पूरी दुनिया का सरताज बनाएंगे ...भारत को बचाना है चीन को धूल चटाना है...

सोया हुआ रामघाट सुबह जागा तो मन जाग उठा, चारों ओर लगे नए-नए पोस्टर देखकर! लग रहा था जैसे चारों ओर क्रांति की लपटें उठ रही हैं! सजग लोगों के अंदर से आवाज उठने लगी ...रामघाट कुछ करेगा तो बिल्कुल नया ही तो करेगा! ...चीन को धूल चटाने की बात कोई माई का लाल ही तो करेगा,

रामघाट के युवा हैं भी तो माई के लाल! कोरोना के जनक जननी को सबक सिखाने की ललकार उठते ही रामघाट में उबाल आ गया। युवाओं के अंदर तो उमंग हिलोरें मारने लगीं ...अब तो रामघाट को दुनिया के नक्शे पर लाना ही लाना है। कॉलेज-यूनिवर्सिटी में आंशिक तौर पर ही कक्षाएं चालू हुई थीं, क्रांतिकारी पोस्टर-बैनर लगते ही कॉलेज कैंपस तरंगित हो उठा। युवा दिलों में जोश उफान मारने लगा ...अब हमारे कैंपस से वैश्विक मुद्दे की मशाल जलेगी, उसकी लपटें चीन को लहकाते हुए पूरी दुनिया को आलोकित करेंगी! कैंपस के झुंड में पुरानी कहावत कोरस रूप में उच्चारित होने लगी ...सौ चोट सुनार का एक चोट लोहार का; साथ में नया नारा जोड़ते हुए ...काम करो पक्का चीन को दो धक्का!

चीन के खिलाफ जोरदार आवाज पूरे रामघाट में तरंग-जैसी फैलती जा रही थी; पार्टी कार्यालय पधारने वाले पदाधिकारियों के चेहरे की रंगत उड़ गई सी जान पड़ती। चुनिंदा पदाधिकारियों की गुप्त बैठक में बात एक ही बिंदु पर आकर सिमट जाती '...ये युवा लोग पढ़ाई-लिखाई करियर छोड़कर असफल, अनावश्यक छलांग क्यों लगाना चाह रहे हैं! आखिर वे हमारे बताए रास्ते पर शांतिपूर्वक चलते रहने के बजाय हमें ही रास्ता बताने पर क्यों तुले हैं?' इस बिंदु पर आकर वे और भी निरुत्तर हो जाते '...यदि देश के युवा लोगों के दिलों में विश्वस्तरीय मुद्दे की आग भड़क उठेगी फिर तो पार्टी और सरकार द्वारा चलाए जा रहे सैकड़ों प्रादेशिक-देशिक-वैश्विक मुद्दों का क्या होगा?' गुप्त बैठक में सभी ने हाथ खड़े कर दिए; तय हुआ कि पार्टी मुख्यालय अपने स्तर से अंतिम उपाय कर ले। विचारोपरांत अंतिम रूप से हंसामल और रामू के नाम पर सहमति बनी, आसमान से जमीन पर पटक देने के लिए!

उस रात भीमरवा पहली बार बस्ती के बाहर भी शोर मचाता रहा; चौकीदार जैसा चेताने-जगाने के अंदाज में ...बरखुरदार ...बाखबर ...बाअदब ...बाहोशियार...

11

हंसामल को गुप्त स्थान पर बुलवा लिया गया था; शक्ति सामंतों द्वारा। उस कमरे में सिर्फ एक कुर्सी लगी थी; एक बड़े स्क्रीन के सामने। उसे बताया गया किसी शक्ति पुरुष के सामने उसकी पेशी होनी है; फिलहाल वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए ही। कान में बात डाल दी गई, ऊपर से कोई संदेश है उसके लिए। उसका मन सशंकित था, '...किसका संदेश हो सकता है! किसके मार्फत संदेश

दिया जाएगा; क्या संदेश होगा?' उसे कमरे तक छोड़ आने वाले अनजान व्यक्ति ने उसे बता दिया, 'दो-चार मिनट में ऊपर से सिग्नल मिलते ही आपकी वीसी शुरू हो जाएगी।' उसने स्क्रीन पर आँखें गड़ाए रखीं, मन में धुक-धुकी लिए, '..एक सेकंड का भी आगे-पीछे होने पर कहीं सत्ता शक्ति रूठ न जाए।'

स्क्रीन अचानक प्रकाशमान हो उठा; दो कुर्सी नजर आईं। क्षणभर के लिए वह भयभीत हुआ '..इधर वह अकेला उधर दो-दो, उसे तो चित्त होना ही है।' कुर्सी में दो साए बैठ गए, मानव काया-सी रूपरेखा में। बात हंसामल को समझ में आ गई, मामला गंभीर किस्म का हो सकता है। दोनों साए के हाथों की रेखा चित्र ने हाथ जोड़ लिया, "नमस्कार हंसामल जी; आप अपने कौशल और उद्यमिता से देश की अर्थव्यवस्था में यथा योगदान देते आ रहे हैं, सरकार की ओर से हम आपका आभार प्रकट करते हैं।"

"जी आप सभी का भी धन्यवाद, हमारे योगदान को आंकने के लिए।" हंसामल गद्‌गद हो उठे।

"आज और कई-कई लोगों से संवाद होनी है, हम सीधे विषय पर आते हैं।" दूसरे साए के अंदर से आवाज आने लगी, "देश के चप्पे-चप्पे पर मुख्यालय की पैनी नजर रहती है, हर कोने की सूचना समय पर पहुंचती रहती है हमारे मुख्यालय में! प्रवासी मजदूरों के लिए आपने पच्चीस बसों का इंतजाम किया था; आपका वह अपकृत्य कोरोना प्रसंग में आलाकमान की रणनीति के विरुद्ध था, परंतु उसे आपकी पहली त्रुटि मानते हुए आलाकमान ने अपने स्तर से क्षमा प्रदान कर दी थी।" बोलने के बाद साए में नाराजगी जैसा चित्रांकन उभर आया, आगे शब्द सख्त होते गए, "परंतु इस बार आपके बच्चे लोग जो करने जा रहे हैं उसका क्षमादान संभव नहीं है; सजा ही मिल सकती है!" मिनटभर का मौन छाया रहा। बोलने का साहस जुटाकर हंसामल ने कहा, "वे सभी पढ़े-लिखे विवेकवान युवा हैं, उनके विचार श्रृंखला में बंधन लगाना उन पर जुल्म करने जैसा होगा।"

"आप एक तरह से देश में अराजकता को बढ़ावा देना चाह रहे हैं?"

"युवाओं को विजनरी होना ही चाहिए, उनकी अभिव्यक्ति में पाबंदी लगाने से देश तो दुनिया में पिछड़ता ही जाएगा।"

"कुछ अति उत्साही बच्चों ने कोरोना-कैबिनेट नाम से संगठन बना लिया है, विधिक पहलू पर विचार किए बगैर? और आपसे बल-मनोबल प्राप्त करके सरकार के लिए संकट खड़ा करना चाहता है!"

"उन लोगों की गतिविधियों से मैं इत्तफाक नहीं रखता; फिर भी जहां तक मुझे जानकारी है वे सभी चीन के खिलाफ मोर्चा खोलना चाह रहे हैं, भारत या भारत सरकार के खिलाफ नहीं।" हंसामल का सुसुप्त आत्मविश्वास जागृत होने लगा।

"चीन के खिलाफ मोर्चा खोलने का अंजाम आप समझते हैं?" साया झुंझला उठा, आगे सौम्य भाषा में बोलने लगा, "कोरोना फैलाने की क्षतिपूर्ति की माँग और उसे मानव सभ्यता का शत्रु बताने वाली घोषणा से चीन तिलमिला उठेगा! विश्व कूटनीति में बवंडर खड़ा होगा, हालात संभालना अपने देश के लिए आसान न होगा; बात रही सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता की तो उसके लिए हम हर वैश्विक मंच पर बात रख ही रहे हैं! और कैबिनेट को पार्टी से बेदखल करने का आइडिया किस बेवकूफ ने दिया है?" वाक्य के अंत में साए का स्वर सख्त हो गया।

"युवाओं का अपना नजरिया है सदी के लिए भारत की तस्वीर गढ़ने की; वैसे उनके द्वारा ऐसे मसले उठाने से देश की सेहत पर कोई विपरीत असर तो पड़ना नहीं है।" हंसामल ने अति विनम्र होकर कहा।

"देश की सेहत पर क्या फर्क पड़ेगा, कैसे पड़ेगा, इसका आकलन करना आप-जैसे लोगों के वश में नहीं है न!" साए की आवाज उपहास उड़ाने के अंदाज में थी, आगे सूत्र खोलने-सा स्वर निकला, "पड़ोसी देश के विरुद्ध कदम उठते ही देश की भावना भड़क उठती है, जो देश के लिए और कई मौके पर सरकार की सेहत के लिए भी फायदेमंद साबित हुआ है!" आगे कुछ बोले या ना बोले जैसी स्थिति से उबरते हुए साए ने कहा, "पड़ोसी देशों के खिलाफ आवाज मात्र उठते ही लोगबाग, खासकर युवा, सड़कों पर उतर सकते हैं; पर चीन एक शक्तिशाली राष्ट्र है, ऐसी परिस्थिति में बेमतलब की हंगामेबाजी आलाकमान को पसंद नहीं है।" बोलते-बोलते पहले साए का मुंड झुकता दिखा।

"आप जान ही रहे हैं अभी तक अनगिनत अंदरूनी हालात से देश अभी तक उबर नहीं पाया है, किसान आंदोलन भी अनसुलझा पड़ा है, ऐसे में किसी वैश्विक मुद्दे में उलझना हमें महंगा पड़ सकता है!" दूसरे साए से काफी देर बाद आवाज निकली।

"कोरोना-मंडली के युवागण तो पूर्ण रूप से अपने स्वतंत्र विचारों से आगे बढ़ रहे हैं, कहीं से गाइडेड हुए बिना," साए को समझाने की गरज से हंसामल ने कहा, फिर बोले, "व्यक्तिगत तौर पर मेरी आत्मा गवाही नहीं देती उनके

मार्ग से उन्हें विलग करने के लिए मैं कोई अनुचित दबाव इस्तेमाल करूं।"

"आप अपने लड़के को इस समूह से अलग कर लीजिए, बाकी सब कुछ हमारे लोग संभाल लेंगे।" साए से याचनापूर्ण स्वर निकला।

"यह तो और भी नीचता होगी!" हंसामल का स्वाभिमान जाग उठा।

"आपको पता है इस ढीटता की आपको बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ सकती है?" दूसरा साया क्रोधित हो उठा।

"मुझे अपने उसूलों के साथ मरना पसंद है।" हंसामल ने सिर सामने कर दिया। अगले ही क्षण पर्दे से प्रकाश तिरोहित हो गया। वह सधे कदमों से बाहर आने लगे, होंठों में अदृश्य मुस्कान समेटे '...बड़े काम के लिए किसी को तो कलेजा बड़ा करना पड़ेगा।'

घर लौटते में हंसामल के कानों में मानस पाठ स्पष्ट रूप से पड़ रहे थे, पर अर्थ उनकी पकड़ में न आ पाया ...दम दान दया नहिं जानपनी, जड़ता परबंचनताति घनी..

अध्याय आठ

1

पार्टी कार्यालय के ऊपरी तल में गुप्त कक्ष है, दक्षिण-पश्चिम नैऋत्य कोण में। उसमें मात्र ग्यारह कुर्सियां लगी रहती हैं; जिले के पाँच विधायक, सांसद लोकसभा, सांसद राज्यसभा, प्रभारी मंत्री, जिला अध्यक्ष, मंथन मंच के शिखर पुरुष और आपात स्थिति में ऊपर से आए एक-दो गणमान्य के अलावा किसी अन्य के भाग्य में नहीं है वहां बैठना। ऐसा नहीं है कि गुप्त मंत्रणा में हमेशा ग्यारह बुलाए ही जाते हैं; मुद्दे की गोपनीयता के हिसाब से उपस्थिति ग्यारह से घटकर दो तक भी आ जाती है। आज की बैठक में इस कक्ष में आठ कुर्सियां खाली थीं।

"नमस्कार, मुझे तीन बजे वाली फ्लाइट से वापस लौटना है, मेरे पास मात्र आधा घंटे का ही वक्त है; आपको सिर्फ यह बताने आया हूं मुख्यालय इस प्रकार की धरनेबाजी को हर हाल में रोकना चाहती है।" कुर्सी नंबर एक पर काबिज आगंतुक बोला।

"सर इस बारे में एक तथ्यपरक बात रखना चाहता हूं..." तीन नंबर वाले कुर्सी पर विराजमान पुरुष बोलने लगे; एक नंबर धारी आगंतुक ने हस्तक्षेप किया, "आलाकमान के पास पूरे देश की सूचना अपडेट रहती है; आप से भी सुनना जरूरी है, बताइए।"

"रामघाट में ऐसे-वैसे धरने से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला!" नंबर तीन ने सीधे-सरल शब्दों में अपनी राय रखी।

"लोकल लेवल में पार्टी यहीं पर आकर मार खा जाती है; मान्यवर, रामघाट में फर्क पड़ने ना पड़ने से हम धरने के दुष्परिणाम का आकलन नहीं कर सकते! सीधे-सपाट शब्दों में कहा जाए तो यह देखना बेहद जरूरी होता

है कि देश के किसी भी कोने में उठी आवाज का प्रभाव राष्ट्रीय स्तर पर क्या हो सकता है?" नंबर एक ने दोनों को स्कूली छात्र भांति समझाया, आगे आवाज में रहस्य का आवरण चढ़ाते हुए बोला, "किसी भी शहर में हो रहा धरना चाहे वह छोटा हो या बड़ा, के मामले में हमेशा पैनी नजर रखी जाती है कि आगे उसकी क्या दिशा हो सकती है? भविष्य में वह कैसा स्वरूप और रंग-रूप ग्रहण कर सकता है!"

"मुख्यालय स्तर पर जो मंथन मंच है यह उसके चिंतन क्षेत्र में आता होगा?" देर तक मौन रहना नंबर पाँच को कुर्सी की हैसियत के खिलाफ जान पड़ा।

"तभी तो मैं यहां आया हूं जी!" नंबर एक की आवाज फिर सामान्य हो चली, "आप दोनों को सीधे-सीधे बता देना ही उचित होगा; सौ बात की एक बात यह है कि शिखर स्तर पर यह संकल्प लिया गया है कि देश के युवा सही दिशा में आगे बढ़ें और अपना करियर छोड़कर धरना-प्रदर्शन-आंदोलन की राह न पकड़ें!" बोलकर नंबर एक ने दोनों हथेली दोनों की तरफ फैला दीं, जैसे कह दिया हो कि यह सब बर्दाश्त नहीं होगा।

"पर धरना-प्रदर्शन को रोकने से अभिव्यक्ति की आजादी को खत्म करने का आरोप लगेगा हम पर!"

"अरे श्रीमान, आजकल कॉलेज-यूनिवर्सिटी में स्टूडेंट्स लोग किताब-कॉपी छोड़कर बाकी सब कुछ कर रहे हैं! अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का यही अर्थ है क्या? क्या इससे राष्ट्र निर्माण का लक्ष्य पूरा होगा! सरल शब्दों में कहें तो इससे डिजिटल इंडिया को सपोर्ट मिल सकता है, मेक इन इंडिया को नहीं!"

"...." बात दोनों के अंदर गहराई तक उतरने लगी।

"हमारे कोर ग्रुप की स्पष्ट धारणा है देश के किसी भी हिस्से में किसी भी प्रकार की आवाज, चाहे वह जायज हो या नाजायज, उठना देश की प्रगति में बाधक है; कोर कमेटी में इस बात पर सहमति बनी है कि सैकड़ों-हजारों लाखों-करोड़ों जनता का बोलना निहायत गैर जरूरी है, देश में कुछ ही लोग बोलें तो जन-जन में असर दिखेगा; और तभी हमारे वक्तव्य की बेहतर प्रस्तुति भी हो सकती है!"

"सर आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, इससे कौन इनकार कर सकता है!"

"श्रीमान द्वय, सौ बात की एक बात! यदि सभी बोलने ही लगेंगे तो हमारे शिखर पुरुषों को कौन सुनेगा!" आगंतुक ने 'बोलने ही लगेंगे' पर जोर

लगाया था, फिर रुककर 'तो' पर हल्की ताली बजाकर हथेली दिखाते हुए आगे बोला था।

"सर आप आदेश दें, हम इस धरने वाले लौंडे की ऐसी की तैसी करवा देंगे!" दोनों ने लगभग एक साथ कहा।

"इस विषय में सही व्यक्ति को समय-समय पर जरूरी मैसेज मिलता रहेगा, तद्नुरूप कार्य अंजाम भी दिया जाएगा, यहीं रामघाट में! हां हमारा संस्कार है पहले शांति-सुलह अन्यथा..." वह रुके, फिर बोले, "आप समझते ही हैं शासन करना कोई हमें न सिखाए! बस मैं तो सिर्फ यह बताने आया हूं रामघाट में पार्टी स्तर पर मतैक्य की स्थिति बनी रहनी चाहिए।"

"सर, हम दोनों इसकी पूरी गारंटी देते हैं!" नंबर तीन ने अपनी हैसियत दिखाते हुए कहा।

"बस, अब हमें एयरपोर्ट निकलने दीजिए।" अदृश्य आगंतुक ने सामने कब से रखी चाय का एक घूंट लिया, भुने काजू-बादाम आदि रखी प्लेट को हाथ से स्पर्श मात्र देकर सम्मान दिया; कुर्सी से उठकर बोले, "बस ध्यान रखिएगा मेरा रामघाट दौरा गुप्त ही रहे!" गुप्त कक्ष से वे बाहर की ओर चल पड़े, पूरे चेहरे को मास्क से ढककर।

2

पूरे देश में नेताजी सुभाषचंद्र बोस का 125वां जन्म दिवस धूमधाम से मनाया जा रहा था; रामघाट में भी चहल-पहल थी। डीएम, एसपी सहित पूरा प्रशासनिक महकमा सुभाष चौक पर आ डटा। प्रशासन की सक्रियता से काफी संख्या में नागरिक भी नेताजी की मूर्ति के सामने नतमस्तक थे। सरकार के संकल्प के अनुरूप नेताजी वाले आयोजन को भव्यता प्रदान की गई; तब शायद यहां-वहां चल रहे चलने वाले सरकारेत्तर कार्यक्रम नेपथ्य में चले गए जान पड़े। आयोजन की सफलता पर डीएम उत्साहित नजर आ रहे थे ...नियमित अखबार तो कल आएंगे, दिवा रामघाट में आयोजन ही तो मुखपृष्ठ पर होगा! दोपहर ढलते-ढलते दिवा रामघाट जोश-खरोश के साथ बेची जा रही थी, पर कुछ अलग सुर्खियों के साथ ...हंसामल के ठिकानों पर इनकम टैक्स का छापा, दोनों फैक्ट्री और शोरूम सील, हंसामल के लिए मुसीबत, अपनी बेहिसाब संपत्ति का हिसाब देना भारी पड़ेगा!...

सुबह नौ बजे सुभाष चौक में रामघाट चमक रहा था, सीबीआई और

आयकर विभाग का संयुक्त मिशन हंसामल के बंगले हिंद-लोक में धमक चुका था। उनकी तीन अन्य टीमें दोनों फैक्ट्रियों और शोरूम को घेरे खड़ी थीं। एक टीम को रिजर्व रखा गया था, यदि कहीं किसी गुप्त ठिकाने का भेद खुला तो उसकी भी किलेबंदी कर लेनी है। संयुक्त टीम में शामिल अधिकारीगण अवगत थे आज नेताजी का जन्मदिन है। टीम तड़के नौ बजे हंसामल के बंगले में मुस्तैद हो गई; नेताजी के 'बढ़े चलो' नारे की नकल करते हुए, नेताजी की सच्ची संतति जैसी! टीम के अपने अहाते में फिर भवन के अंदर प्रवेश पर कोई आपत्ति नहीं उठाई हंसामल ने। एसपी, सीबीआई और ज्वॉइंट कमिश्नर इनकम टैक्स दोनों ने उसे रेड के बारे में बताया। हंसामल के चेहरे में किसी प्रकार की कोई शिकन नहीं आई, क्षणभर के लिए भी। शक्ति सामंतों के साथ परसों संपन्न असफल मोलभाव के बाद ऐसा ही कुछ होने का अंदेशा उसे हो चला था। एक कदम आगे बढ़ते हुए उसने संयुक्त टीम को पूर्ण सहयोग करने का ऑफर दिया, मुस्कान के साथ। उसके चेहरे में आत्मविश्वास ताड़ कर उल्टे दोनों अधिकारियों के चेहरे पर दबाव के चिन्ह बनते दिखे। माँगे जाने पर हंसामल ने सभी बंद कमरों, अलमारियों, तिजोरियों की चाबियां टीम के हवाले कर दीं।

संख्या बल से समृद्ध टीम महलनुमा भवन में छितरा गई, बिना किसी हड़बड़ी के। अलमारियों से निकलते जाते कागजात बोलने के लिए बेताब दिखने लगे। तिजोरियों से निकल रहे जेवरात और नगदी उजाले में आकर चमक बिखेरने लगीं। स्टील की बड़ी-बड़ी अलमारियों से निकलती जा रही फाइलें हंसामल परिवार के कारोबार का इतिहास बखान करती दिख रही थीं। सहज के कमरे से निकले शायनी के कुछेक बिंदास फोटो से टीम की आंखों में चमक आ गई '...तो इस फैमिली को उस फन में भी महारत हासिल है, फिर तो धाराएं बढ़ने से मुकदमे में समझो जान आ जाएगी!...' हंसामल और सहज को बंगले से बाहर नहीं निकलने की हिदायत नहीं देना पड़ा; पिता-पुत्र जाते हुए जाड़े की धूप का आनंद लेने लॉन में जम से गए थे, कुर्सी लगाकर। टीम के सदस्यों के साथ अंदर-बाहर, ऊपर-नीचे कर रही धर्मपत्नी को हंसामल ने वैसा करते रहने से नहीं रोका। टीम के अधिकारी -कर्मचारीगण ईमानदारी का टीका लगवाया जान पड़ रहे थे; अतिथियों के लिए चाय-स्नेक्स का ऑर्डर लेने कब से खड़े महाराज जी और उसकी टीम को हंसामल ने आज वैसा ही खड़ा रहने दिया।

सुबह साढ़े नौ बजे से शाम पाँच बजे तक संयुक्त टीम के सदस्य काम संपन्न करते रहे, आराम तलब ढंग से; जैसे रविवारीय अवकाश के दिन अपने घर के काम निपटा रहे हों। अंधेरा होते-होते सीजर की सूची तैयार हो गई। सूची में हंसामल, उनकी पत्नी और सहज के साइन लेते वक्त तक टीम ईमानदारी पर अड़ी रही; एसपी, सीबीआई ने अपने मोबाइल में टॉर्च बटन दबाकर ही उनके साइन लिए। घिरते अंधेरे में पूरी टीम अहाते से बाहर निकल गई, जैसे कहीं अंधेरे से ही निकलकर आई हो! दोनों फैक्ट्री और शोरूम में तैनात टीम अपना काम थोड़ा पहले ही निपटा चुकी थी। पूर्ण छानबीन के बाद तीनों प्रतिष्ठानों को सील कर दिया गया। चारों टीम जिला सर्किट हाउस पहुंचकर किलाबंद हो गईं। चारों ओर रामघाट की जुबान तेज चलने लगी; इतना बड़ा रेड पहले कभी इस शहर में सुना भी था किसी ने!

24 जनवरी, सुबह वाली ठंड का वजूद अभी कायम था। अन्य दिनों की भांति आज लोगों की जुबान ठंड के मारे अंदर ही दुबकी नहीं रह पा रही थी; अखबारों के मुखपृष्ठ के साथ अंदर के भी पृष्ठों में रेड वाली खबरें वे आज उच्चारित करके पढ़ने लगे, डरावनी गुदगुदी पैदा करने वाली चटकदार हेडलाइंस वाली खबरें ...सरकार ने किया अनाचार पर प्रहार ...हंसामल के महल में अघोषित आय का जखीरा बरामद ...कमाई का बड़ा भाग विदेश भेजे जाने का शक ...दोनों फैक्ट्री और शोरूम सील, हिंद-लोक के कई कमरों में ताले जड़े ...हंसामल ने कहा समय आने पर दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा...। एक अखबार ने हिम्मत करके अपने रामघाट पृष्ठ के अदृश्य बॉक्स में स्वतंत्र दिशा वाली खबर छाप दी थी, जैसे जादू की कोई डिब्बी कहीं चुपके से डाल गया हो ...कहीं इस रेड का कनेक्शन कोरोना-कैबिनेट के प्रस्तावित धरना से तो नहीं? ...अंदरूनी सूत्रों से पता चला है कि...। बॉक्स में छपी खबर की अंतिम पंक्ति थी ...ऐसे में देखना दिलचस्प होगा कि क्या सहज के नेतृत्व में गठित कोरोना-कैबिनेट अपना धरना कार्यक्रम कायम रख पाएगा?

3

हंसामल के घर और तीनों प्रतिष्ठानों से जब्त कागजात का कोई अंत नहीं था। तीनों टीम ने सर्किट हाउस के चारों कमरों में इसे छितरा दिया। पूरे रामघाट की नजर संयुक्त टीम की अगली कार्रवाई पर टिकी थी, '..हंसामल

और परिवार के सदस्य क्या गिरफ्तार होंगे!' सनसनीखेज खबरों की मियाद दो दिन से ज्यादा नहीं रही। रामघाट में सनसनी की जगह धीरे-धीरे शोक और अफसोस ने ले ली '...यदि हंसामल अरेस्ट हुए और उनके प्रतिष्ठान लंबे समय तक सील रहे फिर तो रामघाट में कारोबार की कमर ही टूट जाएगी! दबी जुबान से लोग चर्चा भी कर रहे थे '...ऐसा वाला रेड तो डराने के लिए होता है दबोचने के लिए नहीं।'

सर्किट हाउस से कोई भी खबर रिस कर बाहर आना मुश्किल था, कि हकीकत में क्या-क्या आपत्तिजनक मिला? कितनी अघोषित आय है? आयकर विभाग कितने की पेनल्टी डालेगा? क्या-क्या आपराधिक धाराएं जुड़ेंगी! सर्किट हाउस के चारों कमरों में संयुक्त टीम के पैर निस्तेज थे; हाथ तेजी से चल रहे थे, दिमाग तीव्र गति से। पच्चीस जनवरी की शाम होते-होते टीम के हाथ और दिमाग का पहिया धीरे-धीरे थमने लगा; अंधेरे के साथ ही सर्किट हाउस के कमरों में घनघोर चुप्पी छा गई, जैसे ध्वजारोहण की पूर्व संध्या पर पूरे देश में असीम शांति पसर जाती है।

26 जनवरी। सुबह की शीतल मंद हवा में नई खबर पूरे रामघाट जिले में लहर की तरह फैल गई, तिरंगा लहराते ही; कुछ अखबारों ने मुखबिरी करके मुखपृष्ठ पर ही बॉक्स डाल दिए थे ...सीबीआई और इनकम टैक्स के बैरंग लौटने की तैयारी! ...तीन दिन तक चली गहन छानबीन से कोई बड़ा सुराग हाथ न आया ...अपुष्ट खबरों के अनुसार हंसामल के पास आय से कम संपत्ति मिली! ...टीम हैरान, आखिर अर्जित आय का बड़ा हिस्सा कहां खर्च हुआ? ..टीम को शक किसी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में खर्च तो नहीं हुआ! यदि ऐसा हुआ तो हंसामल परिवार का मुसीबत में पड़ना तय...। चार पृष्ठीय रामघाट पायनियर कम बिकने वाला अखबार होता है। सामान्य दिनों के विपरीत आज इसमें पृष्ठों की संख्या असामान्य रूप से आठ हो गई थी; हंसामल जी के पिछले पच्चीस सालों में आय व व्यय और अर्जित संपत्ति को वर्षवार सिलसिलेवार ढंग से सामने लाया गया था। तीनों सदस्यों के हर साल दाखिल किए गए आयकर रिटर्न को सूचीवार प्रस्तुत किया गया था। एक पृष्ठ तो चेक नंबर सहित विवरण से भरा पड़ा था; पिछले दस सालों में हंसामल परिवार ने किन-किन विधवा आश्रमों, कुष्ठ निवारण केंद्रों, वृद्ध आश्रमों, बालिका शिक्षण संस्थानों, आर्थिक रूप से कमजोर मेधावी छात्रों, कोचिंग संस्थानों, साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों में दान दिए हैं। एक पूरे

पृष्ठ में हंसामल 'आपके सामने' शीर्षक से हंसामल का साक्षात्कार छपा था। इसी पृष्ठ में हंसामल के फोटो के नीचे बड़े अक्षरों में लिखा था ..मेरे पास एक-एक पाई का हिसाब, किसी भी जांच एजेंसी का सामना करने को तैयार; अपनी आय का पांचवां हिस्सा परोपकार में खर्च करना हमारी जिंदगी का बड़ा मकसद! मैं गांधीजी के ट्रस्टीशिप थ्योरी का सच्चा सिपाही, मुझको देखकर किसी की आंखों में कांटे गड़ें तो वह उसका प्रॉब्लम, मेरा नहीं।

सर्किट हाउस में संपन्न ध्वजारोहण के सादे समारोह में शिरकत करके ही संयुक्त टीम को संतोष करना पड़ा, अपने मुख्य कार्यालय में संपन्न होने वाले भव्य कार्यक्रम से दूर रहने की आह भरते हुए। एक बजे के करीब उन सभी की जान में जान आई। एयरपोर्ट पर अचानक एक लघु विमान उतरा। सर्किट हाउस में सिर्फ चौकीदार ने ही देखा, बिल्कुल भिन्न पोशाक पहने दस लोगों की टीम सर्किट हाउस के ऊपरी तल में बने वीआईपी कमरों की तरफ बढ़ चले थे। हंसामल वाले रेड के सारे कागजात को वे दो घंटे तक खंगालते रहे। अंततः अजनबी टीम ने भी पुष्टि की, इस केस में कुछ खास निकलकर नहीं आने वाला! टीम लीडर ने दिल्ली की दिशा में उंगली दिखाते हुए कहा, "वैसे भी हिदायत है देश के उद्यमियों पर बेवजह मुकदमा लादते रहने से अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।" उसने आगे सख्त लहजे में कहा "पर मंडली से किसी-न-किसी की गर्दन पकड़नी ही पड़ेगी!" आधे घंटे तक वे कोरोना-मंडली के सभी सदस्यों की कुंडली की स्कैनिंग करते रहे, अपने मेधापूर्ण मस्तिष्क से। टीम लीडर की आंखें एकाएक चमक उठीं; आंखें उठाकर उत्तर दिशा की तरफ देर तक उठाए रखीं।

...जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ.. रामघाट तिरे से आ रही मानस पाठ वाली ध्वनि आज चारों तरफ फैलती जान पड़ रही थी; नई सदी के दर्शन का प्रवचन बाचने सदृश्य।

4

एक बड़ी टीम ने रामू के शेड के चारों तरफ जबरदस्त घेराबंदी कर ली, ठीक चार बजे; आज ही पधारे अजनबी टीम के साथ उत्साहपूर्ण मोर्चाबंदी करते हुए। अजनबी टीम के लीडर ने साथ लाए माउथ स्पीकर से उद्घोषणा की, "झोपड़ी से कुछ भी बाहर नहीं जाएगा, एक-एक तिनके का हिसाब नोट किया जाएगा!" उस वक्त रामू, परवेज, शायनी, सहज, अहम, मंजरी, दिनेश, मनोज

आदि मंजरी के झोपड़े के बगल वाले खुले मैदान पर गुनगुनी धूप में चर्चा में भिड़े थे, 30 जनवरी वाले धरने की तैयारी की बाबत। रामू के झोपड़े में रेड पड़ने की खबर से वे सभी पैदल ही दौड़ पड़े। आते ही रामू ने पाया उसके झोपड़े की जबरदस्त किलेबंदी हो रखी है। वह सीधे लीडरनुमा अधिकारी के पास पहुंचा; हांफते हुए ही पूछा, "गण पर हमला करने के लिए आपने गणतंत्र दिवस का दिन ही चुना?"

"गण को गंदगी की ओर बढ़ने से रोकने के लिए इससे अच्छा दिन भला क्या हो सकता है!"

"सर आप किस गंदगी की बात कर रहे हैं?" उधेड़बुन में पड़ा रामू ने कहा।

"फिलहाल तो यही गंदगी जो तुम्हारे गोशाले में पड़ी है।"

"मतलब," रामू अकबका गया।

"मतलब यह कि तुम्हारे गोशाले में इतना गोबर कहां से आया?" लीडर की कड़क आवाज थी।

"मेरे पास दो गाय, एक बछड़ा और एक भैंस हैं! चार पशुओं से इतना गोबर तो आएगा ही।" बोलते हुए रामू के होंठों में आत्मविश्वास की रेखा बन आई।

"उसी का तो हिसाब तुम्हें देना पड़ेगा!" लीडर ने आंखें नचाते हुए कहा।

"गाय-भैंस का भला क्या हिसाब-किताब होता है? बड़ी मुश्किल से मेरे और मम्मी के दिन कट रहे हैं।" रामू ने हाथ जोड़ लिए।

"बड़ी मुश्किल से नहीं बड़े मजे से दिन कट रहे हैं जी; मंत्री-मुख्यमंत्री से होते हुए प्रधानमंत्री बनने के सपने पाल रहे हो बच्चू!" लीडर ने सिर हिलाते हुए कहा, अब रामू की तरफ एक कदम बढ़ते हुए चेताने के अंदाज में बोला, "अब तो देश के हर व्यक्ति की आय-व्यय और संपत्ति का विवरण हमारे सिस्टम में जनरेट हो रखा है; सबकी कुंडली ठहरी हमारे पास!"

"मेरी आय क्या, मेरी संपत्ति क्या!" बोलकर रामू ने दोनों हाथ दाएं-बाएं फैला दिए, सिर को आसमान की ओर उठाते हुए; जैसे कह रहे हों ये जमीं-आसमान ही मेरी संपत्ति हैं।

"तुम्हारी आमदनी के जोड़-घटाव गुणा-भाग से यह निकलकर आया है कि तुम्हारे पास एक गाय तुम्हारी आय से अधिक साबित हो रही है!"

"सर गाय पर इतना बवाल क्यों मचाते हैं आप लोग!" रामू ने विनम्र बनते हुए पूछा।

"क्योंकि वैदिक काल से ही गायों की चोरी होती आई है।" रामू के गोशाल पर बंधे गाय की ओर शीश नवाते हुए उसने कहा, आगे बोला, "और यह बात साबित होने जा रहा है कि यह अतिरिक्त गाय तुमने गौ तस्करी से हासिल की है!" फिर रामू की आंखों में गड़ते हुए कहा, "किस गौ तस्कर गिरोह से तुम्हारे तार जुड़े हैं इसका भंडाफोड़ तो करना ही पड़ेगा; तुम्हें शायद पता न हो कितना कठोर दंड है गाय तस्करी के अपराध में!"

"सर आप सीधे-सीधे क्यों नहीं बोलते हैं कि हमें तीस जनवरी वाला धरना नहीं करना चाहिए।" मुख-मुद्रा में निरपेक्षता पसारते हुए रामू बोला।

"यू नॉनसेंस बॉय डोंट टॉक आउट ऑफ कांटेक्स्ट!" रामू पर थूकने जैसा मुंह बनाते हुए लीडर ने कहा। स्थिति बिगड़ती भांपकर मंजरी आगे बढ़ी; लीडर से बोली, "सर आप प्लीज इसकी बात का बुरा मत मानिए, आप लोग अपना काम करते रहिए।" बोलकर वह रामू को किनारे की ओर ले गई। लीडर ने टीम को चलने का संकेत किया, चारों तरफ हाथ घुमाकर। टीम के सदस्य वाहन की ओर बढ़ने लगे। जाते हुए में लीडर ने मुड़कर रामू की ओर आंखें कड़ी करके देखा, बोलता गया, "दिस गॉय विल बी इन प्रॉब्लम!"

आज दिन में ही शुरू होकर भीमरवा तीसरे पहर रात्रि तक चीत्कार करता रहा ...दुर्जन-दुष्ट-दुर्दांत-दुरभिसंधि...

5

यह इलाका रामघाट ग्रामीण कहलाता है। ये वाली जगह रामघाट शहर से लगी हुई ही है, कुछ-कुछ गुप्त ठिकाने सी! डीएम ऑफिस में ध्वजारोहण के बाद रामनरेश सीधे यहीं आ पहुंचा। सभी मामू कुंडली मारे बैठे थे जैसे ड्रग्स लेने वाले गिरोह बैठे हों, गोल घेरा बनाकर। हालांकि उनमें से शायद ही कोई ड्रग्स का आदी हो। हां, उन्हें शराब और सिगरेट की बुरी लत जरूर थी; लड़कियों, खासकर कमसिन का सामूहिक शील हरण करना तो उनका जैसे पैदाइशी पेशा था। पर्दे पर महाभारत की कथा देखकर इनमें से कुछ को चीर-स्पर्श का शुरुआती ज्ञान हुआ था। बाद में इनके समूह का विस्तार होता गया और वे चीर-भंजन से लेकर शील हरण में सिद्धहस्त बनते गए।

"मामू, अब तो तुम भी ठीक-ठाक जगह पर पहुंच ही गए हो।" रामनरेश के बैठते ही क्लीन शेव वाला बोल पड़ा; एक-दूसरे को मामू कहने की स्थापित परंपरा होती है गिरोह में।

"अभी तो रामघाट युवा प्रकोष्ठ का उपाध्यक्ष हूं; कोरोना के कारण संगठन के चुनाव स्थगित हैं, इस बार के चुनाव में जिला कार्यकारिणी में जाना समझो तय है।" रामनरेश ने बड़ा बनते हुए कहा, फिर दोस्ताना दर्जे पर आते हुए कहा, "वैसे मेरे लायक कोई काम हो तो कभी भी करवा सकता हूं।"

"कोई खास बात है तभी तो हम लोगों ने अपने सीनियर मामू को यहां आने का कष्ट दिया है।" दूसरे मामू ने कहा।

"मामू तुम्हें वह वाला मैच तो याद होगा," तीसरे मामू ने रामनरेश से कहा, "महेशी वाला! भूल गए? सरदार पटेल स्कूल के गेट से एक मसालेदार को उठा लाए थे न!"

"हां यार; याद है साला तुम लोगों ने मुझे पांचवें नंबर पर भेजा था।" रामनरेश ने सिसकारी भरते हुए कहा, लगा जैसे बरसों से अंदर पड़ा गुबार निकाल रहा हो।

"अरे गुरु, उस समय तुम्हारी उम्र पत्थर तोड़ने की नहीं थी!" किनारे बैठा मामू बोलकर खिलखिला पड़ा।

"अब तो मेरा ट्रेक ही बदल गया है; चलो काम की बात बताओ।" रामनरेश को शायद जल्दी थी।

"दो साल पहले की रामपुरा वाली घटना तो याद होगी न? वही कॉलेज वाली लड़की, साली सात को तो झेल गई थी, पर घर जाकर फंदे में झूल गई!" गोल घेरे में सर्व प्रमुख स्थिति वाला मामू बोला, फिर कान खुजाते हुए कहा, "उस केस का ट्रायल शुरू हो गया है; सभी गवाह को सेट तो कर दिया है पर वह लौंडा है न उसका बॉयफ्रेंड! उस हरामजादे को नई गर्लफ्रेंड बना देने का भी ऑफर दिया है, पर साले पर तो जैसे मजनूं का जिन्न सवार है।"

"करना क्या चाहते हो।" रामू समझ चुका था योजना क्या हो सकती है, कहानी को लंबा होने से रोकने के लिए बोल पड़ा।

"धन्ना मामू के ट्रक का पहिया एक साल से लाल नहीं हुआ है।"

"मुझे क्या करना है यह बताओ," रामनरेश सच में हड़बड़ी में था।

"उस मजनूं की लक्ष्मणपुरा जिले में नौकरी लगी है, वहीं कहीं रहता है; ट्रक का ब्रेक फेल होने वाली सड़क तय हो चुकी है, बस उस दिन उस सड़क वाली पुलिस पिकेट कहीं और चली जाए!"

"शहीद दिवस के दिन हर जिला मुख्यालय में त्रिशूल अखाड़ा की बड़ी

रैली निकलवाने की योजना है," रामनरेश बोलता जा रहा था कि बीच में बैठे मामू ने टोक दिया, "यह योजना कब बनी?" रामनरेश ने उपहास के स्वर में कहा, "बड़े मामू साहब, आप भी तो जिला संगठन में हो! कल शाम प्रदेश अध्यक्ष ने जल्दीबाजी में फरमान सुनाया है, हर जिला मुख्यालय में त्रिशूल भंजन रैली होगी, करना ही पड़ेगा नहीं तो पिद्दी-सा कोरोना-मंडली वाले... हां, तो मैं कह रहा था," कोरोना-मंडली वालों को बीच बहस में लाने से रोकते हुए रामनरेश बोलता गया, "एसपी लक्ष्मणपुरा को कहलवा दूंगा, त्रिशूल रैली के दौरान सुरक्षा-व्यवस्था में कोई चूक नहीं होनी चाहिए; अचूक सुरक्षा-व्यवस्था के लिए पुलिस पिकेट को इधर से उधर तो करना ही पड़ेगा न।"

"बस मामू के ट्रक को बेधड़क सड़क चाहिए और कुछ नहीं!"

"इतना तो मैं देख लूंगा; और कुछ!" रामनरेश जाने को हुआ।

"छह महीने से ढंग की कोई द्रोपदी हाथ नहीं आ रही है, मंडली वाली का बैटिंग कर दें? एक पंथ दो काज!"

"अरे नहीं! इसमें एक तो उदय की बहन है, ऐसा-वैसा कुछ होगा तो प्रदेश क्या पूरे देश में राजनीति गरमा जाएगी।" रामनरेश ने उंगली से चेताते हुए कहा।

"अरे वो श्यामली नहीं, दूसरी वाली जिसकी छाती झुकने का नाम नहीं ले रही है!"

"बैटिंग से सब कुछ जगह पर आ जाएगा।"

"रामनरेश मामू आएंगे तो उसे ओपनिंग ऑर्डर मिल सकता है।"

"उसका मजनूं तो बड़े घर का है, मामले को लंबा नहीं खींचना चाहेगा।"

"तीस जनवरी तक रुक जाओ।" बोलकर रामनरेश ठिकाने से बाहर आने लगा।

6

कोरोना काल में सत्ताधारी पार्टी के खिलाफ पुरानी पार्टी की सारी हवाई किलेबंदी जनवरी आते-आते धूल चाटने लगी। बेगाने की शादी में अब्दुल्ला दीवाना वाली बात इस पार्टी के लिए सटीक बैठती थी; दूसरों द्वारा बनाए मार्ग पर पताका फहराने से अब भी चूकना नहीं चाहती थी। कोरोना-कैबिनेट द्वारा तीस जनवरी को प्रस्तावित धरना पर उसकी चुप्पी आगे चलकर आत्मघाती

हो सकती थी। जनवरी आते-आते अध्यक्ष की हैसियत में अब तक की सबसे बड़ी गिरावट आ चुकी थी; बावजूद इसके उसने आज ग्यारह बजे जिला कार्यकारिणी की बैठक रख ली।

"आज की बैठक तीस जनवरी को कोरोना-मंडली के प्रस्तावित धरने के बारे में अपना रुख स्पष्ट करने के लिए रखी गई है," अध्यक्षीय आसन पर बैठते ही जयपाल मंडल ने कहा।

"दूसरे के जुते खेत में फसल बोने से हम कब बाज आएंगे!" सभा भवन में पीछे बैठे किसी व्यक्ति ने ऊंची आवाज लगाई।

"कृपया शांति से अपनी बात रखिए," अध्यक्ष ने गुहार लगाई।

"मैं बिल्कुल शांति से अपनी बात रखना चाहता हूं," ग्रामीण प्रकोष्ठ अध्यक्ष जमील अहमद हाथ ऊपर उठाते हुए बोलने लगे, "जिला कार्यकारिणी का चुनाव क्यों लंबित रखा जा रहा है?"

"हकीकत से रूबरू होते हुए भी आप यह सवाल उठा रहे हैं; पिछले दस महीने से तो कोरोना की मार झेल रहे हैं हम सभी!" सीमा से अधिक नम्र बनते हुए अध्यक्ष ने कहा।

"कोरना तो अभी आया है, संगठन के चुनाव तो सालों से ठंडे बस्ते में है?" पीछे की पंक्ति से आवाज आई।

"यदि संगठन के चुनाव नहीं हो पाए हैं तो क्या पार्टी को हाथ में हाथ धरे बैठे रहना चाहिए?" अध्यक्ष रुष्ट होने जैसी भाव-भाषा में बोले।

"आप सभी कृपया पार्टी अनुशासन का ख्याल रखें, अध्यक्ष की कुर्सी की कुछ तो गरिमा रखिए आप लोग!" शहर अध्यक्ष नरोत्तम हरि को हस्तक्षेप करना पड़ा।

"धन्यवाद नरोत्तम भाई!" अपने कार्यकाल में शहर अध्यक्ष को कभी भाव ना देने वाले अध्यक्ष आज उसके प्रति कृतज्ञ दिखे, आगे कहा, "मंडली द्वारा आयोजित धरने की सूचना आलाकमान तक नहीं पहुंची है अभी, यह हमारा दायित्व है इसकी विस्तृत जानकारी दिल्ली मुख्यालय को बता दें; हो न हो मंडली द्वारा उठाए मुद्दों पर आगे चलकर देश के शहरों में जन भावना सड़कों पर फूट पड़े।" बोलकर वह रुक गए जैसे आंखों में उभर आई चमक से चौंधिया गए हों, चुप्पी के बाद बोले, "समय पर सही जानकारी मुख्यालय तक पहुंचा देने पर ही तो हमें आगे के लिए दिशा-निर्देश मिल पाएंगे!" फिर सभी की ओर नजरें फिराकर बोले, "वैसे आप लोगों की क्या राय है, चीन

को लेकर किए जाने वाले इस धरना के बारे में?"

"चीन को लेकर हमारा सबसे बड़ा नासूर है सन् बासठ का युद्ध; यदि हम धरने का समर्थन करेंगे तो बासठ का जिन्न बाहर निकल आएगा!"

"अभी चार दिन पहले ही तो हंसामल के ठिकानों पर छापे पड़े हैं; इस धरने की अगुवाई उसी के सुपुत्र द्वारा की जा रही है, धरने का समर्थन करने पर हम पर भ्रष्टाचार और काला धन को बढ़ावा देने का गंभीर आरोप लग सकता है।"

"रामू ग्वाला के घर पर भी तो रेड हुई; वह बेचारा तो निहायत गरीब है, धरने का समर्थन नहीं करने पर हम पर आरोप लगना तय है कि गरीबों के खिलाफ हो रहे अत्याचार पर हम चुप ही रहते हैं।"

"मेरे नजरिए में यह धरना तो अभिव्यक्ति की आजादी का एक उच्च दृष्टांत है," अब तक शांत-गंभीर बैठे चिंतक-मंडली के वरिष्ठतम मंडन ओझा ने चुप्पी तोड़ी, आगे बोले, "अभिव्यक्ति की आजादी वाला मुद्दा तो हमारा पैतृक हथियार है।"

"अप्रैल में हुई बैठक का हवाला देकर मैं कुछ बोलना चाहता हूं।" जिला महासचिव युवा प्रकोष्ठ प्रशांत धीर अपनी चुप्पी तोड़कर बोलते रहे, "तब मैंने मुद्दा उठाया था भोपाल सत्ता कांड के कारण ही लॉकडाउन में देरी हुई थी, और तब तक कोरोना रफ्तार पकड़ चुकी थी! ठीक उसी समय मरकज मुद्दे को मीडिया में तेज रफ्तार देकर भोपाल कांड को दबा दिया गया..." उसकी बात लंबी होने लगी तो अध्यक्ष ने टोका, "आप कहना क्या चाहते हैं?"

"यही कि उस मीटिंग में आपने कहा था भोपाल कांड को जिला स्तर पर नहीं उठाया जाना है, इस मुद्दे को पार्टी मुख्यालय स्तर से जोर-शोर से उठाया जाएगा?"

"हां! तो?" अध्यक्ष अशांत हो उठे।

"आठ महीने बीत गए हैं, अभी तक इस मुद्दे पर मुंह तक नहीं खुला है पार्टी मुख्यालय का!" प्रशांत धीर ने उत्तेजित होकर कहा।

"मैं युवा शक्ति का सम्मान करता हूं; आपकी जानकारी के लिए बता दूं सही वक्त पर इसे देशव्यापी मुद्दा बनाने की तैयारी हो चुकी है!" अध्यक्ष ने धीमे से कहा, जैसे कोई गोपनीय सूचना लीक कर रहा हो।

"तो अभी रामघाट में हमारी पार्टी के जिम्मे करने के लिए क्या बचा है?"

"पार्टी बचेगी तो काम भी बचा ही होगा!" अध्यक्ष आशा के सागर में

सैर करते दिखे।

"फिर तो काम बताया जाए।" जमील अहमद ने जाने की हड़बड़ी दिखाते हुए कहा।

"हमें आज रातभर का वक्त दीजिए, कल सुबह तक कुछ-न-कुछ सोच ही लेंगे करने लायक!" अध्यक्ष दाएं-बाएं डोलते हुए बोले, आगे कहा, "फिलहाल यह तय मानिए कल ग्यारह बजे गांधी चौक से हम एक छोटी रैली निकालेंगे..." अध्यक्ष के बोलने के बीच नरोत्तम हरि ने टोका, "अचानक यह रैली क्यों?" अध्यक्ष ने अपनी बात पूरी की, "क्योंकि यह रैली हमें राजनीतिक बढ़त देगी; बात रही रैली के मुद्दे की, तो वह मैं रातभर में सोच ही लूंगा!"

"रैली हमें राजनीतिक बढ़त देगी? वह भला कैसे!" नरोत्तम हरि चिंतित दिखे।

"वह ऐसे कि..." नरोत्तम हरि की तरफ देखकर मंडन ओझा हेड मास्टर भांति बोलने लगे, "समझो चित भी अपना और पट भी अपना! मतलब यह कि अगर कोरोना-मंडली का धरना निष्प्रभावी रह जाता है तो नवयुवकों को गुमराह करने के आरोप से अपनी पार्टी बची रहेगी और यदि धरना आगे पूरे प्रदेश में, देश में विकराल रूप धारण करता है फिर तो इसका श्रेय अपने आप हमारे खाते में आ जाएगा!"

"आई होप अब बात सबकी समझ में आ गई होगी?" चिंतक-मंडली द्वारा जिम्मेदारी का भरपूर निर्वाह करने से गद्गद अध्यक्ष ने प्रफुल्लित होकर कहा; फिर बैठक समाप्त करते हुए बोले, "आज की बैठक में शामिल होने के लिए सभी का धन्यवाद; एक बार फिर दोहराता हूँ कल सुबह ग्यारह बजे गांधी चौक! और हां, अपने साथ पांच-पांच लोगों को लाना भूलिएगा मत; जय हिंद, जय भारत।"

सुबह साढ़े दस बजे तक गांधी चौक पर पुरानी पार्टी के गिने-चुने कार्यकर्ता मात्र दिख रहे थे, मुंडी हिलाते हुए। रैली के लिए निर्धारित समय ग्यारह बजे तक अध्यक्ष को मिलाकर महज पच्चीस लोग ही जुट पाए। अध्यक्ष ने सभी को तसल्ली दी, "हमारी पार्टी बहुत पुरानी है, इसकी जड़ें गहरी हैं! हमारे लोगों को अपने घरों से निकलकर आने में देरी स्वाभाविक है, बस आधा घंटा और इंतजार कर लें; वैसे भी हमने इंस्पेक्टर को साढ़े ग्यारह का ही समय बता रखा है।" पौने बारह बजे जैसे-तैसे रैली निकाल दी गई। दाएं-बाएं चल रहे लोगों को जोड़कर बमुश्किल पैंतीस लोगों की रैली! रातभर

सोच-विचार कर सुबह अध्यक्ष ने तख्तियां बनवा ली थीं...नवयुवक ही राष्ट्र की शान, है हमारी जान, ...भ्रष्टाचार मिटाना है देश बचाना है, ...कोरोना के कायर सामने आओ सामने आओ, ...काले धन का हिसाब दो हिसाब दो, ...छप्पन इंच फैलाना है चीन को हिलाना है, ...किसानों की सुनो देश का बनो...। गांधी चौक से महज आधे किलोमीटर का फासला तय करके इंदिरा चौक आते-आते रैली बिखर गई। तख्तियां उठाए आधे लोग बीच में कहां गायब हो गए किसी ने सुध ही नहीं ली। अध्यक्ष और कार्यकारिणी के मात्र सात सदस्य ही गांधी चौक पर नजर आ रहे थे। सभी ने आपसी सहमति से निर्णय लिया रैली का समापन कर दिया जाए, बिना किसी भाषण के ही।

रामघाट तिरे से आ रहे सुस्पष्ट मानस पाठ ...कबि बृंद उदार दुनी न सुनी, गुन दूषक ब्रात न कोपि गुनी... को गौर से सुनते हुए जयपाल मंडल निवास की ओर बढ़ चले।

7

शायनी को 1 फरवरी, 2021 को वायरोलॉजीकल इंस्टीट्यूट कोपेनहेगन में रिपोर्ट करनी थी। 30 जनवरी को धरना में शामिल होकर ही वह इंडिया छोड़ना चाहती थी। उसी हिसाब से रात वाली फ्लाइट से दिल्ली, फिर सुबह को वहां से कनेक्टिंग फ्लाइट से कोपेनहेगन के लिए टिकट बुक कर रखी थी। आरंभिक तौर पर कोपेनहेगन में उसका शोध कार्य दो साल का था; बीच में छह महीने या सालभर में एक बार इंडिया आना होगा या नहीं अभी कहा नहीं जा सकता था। स्वाभाविक ही जाने से पहले वह सहज से उजड़े महल में एक शाम मिल लेना चाहती थी; मिलना ही नहीं हर तरह से उसका होकर ही फॉरेन जाने की अदम्य चाह जाग गई थी उसके अंदर! वह अपने नारीत्व को संपूर्णता प्रदान कर लंबी यात्रा में निकलना चाहती थी, एक यकीन के साथ।

इस जमाने में भी लड़कियों के लिए मौसी-मामा-बुआ की वरीयता बॉयफ्रेंड से कम नहीं होती है। 27 जनवरी को वह मौसी के घर चली गई, रामघाट से साठ किलोमीटर दूर उसके शहर में। अट्ठाईस जनवरी को वह रामघाट में मामा के घर हो आई; उसके प्रति मामी का प्यार शुरू से ही इस कदर था कि अंधेरा होने तक बच्ची जैसी लाड़-प्यार-दुलार भोजन-भात कराती रही, '...ना जाने फूल-जैसी बच्ची फिर कब लौटेगी सात समंदर पार से!' घिरते अंधेरे में घर पहुंचकर वह बेचैन हो उठी, '...आज शाम भी गया;

कल शाम तो मम्मी ने घर पर गेट-टुगेदर रख ली है!' फिर मन को तसल्ली दिया '...कोई बात नहीं उजड़े महल में भी तो सवेरा होता होगा!' उसने तत्काल ही सहज को मैसेज डाल दिया '...सॉरी यार दो दिन से मौसी-मामी के घर खीर-पूड़ी खा रही हूं; कल सुबह 8 बजे उजड़े महल की सैर कैसी रहेगी!'

उजड़े महल में सुबह-सुबह वह पहली बार आई थी। उनतीस जनवरी की सुबह वाली हवा पेड़-पौधों से रोमाँस करती प्रतीत हो रही थी। पूरब दिशा में सूरज का गोला जैसे अपनी लालिमा में उन दोनों के मिलन को कैद कर लेना चाहता था। सहज की आंखों की भाषा आज बदली हुई जान पड़ रही थी। वह उसकी आंखों में डूब-सी गई। उसने क्षणभर के लिए आंखें बंद कर लीं; लगा जैसे सहज मदमस्त हवा हो और वह मदहोश पत्तियाँ!

"जिंदगी भी क्या फलसफा है सहज!" हँसी का एक टुकड़ा उसके मुंह से बाहर निकला, "आदमी क्या सोचता है और क्या हो जाता है; कहां तो हम दोनों दिल्ली जाकर सिविल सर्विसेज की कोचिंग करने वाले थे और कहां अब मैं कोरोना का पीछा करने जा रही हूं।" फिर माफीनामे वाली भाषा में बोली, "सॉरी सहज हम दोनों दिल्ली जाकर लिव-इन में नहीं रह सके।"

"शायनी तुम तो अभी बाईस साल की ही हो और मैं चौबीस साल का; शारीरिक रूप से युवा होने के साथ-साथ मानसिक रूप से भी तो जवां हो जाएं हम दोनों।" उसे अपने आगोश में लेकर उसने कहा; उसकी ठुड्डी उठाते हुए आगे बोला, "आई मिन मानवता के प्रति कुछ करने का हमने जो बीड़ा उठाया है उसमें कुछ हासिल कर लें तभी तो अंदर से युवा शक्ति का सच्चा एहसास हो।" बोलते हुए में उसके चेहरे की गंभीरता परिपक्व होती दिख रही थी।

"अदरवाइज आई वुड शे फ्रेंकली आई एम नॉट डिफॉल्टर; याद करो कोरोना से पहले उस वाली मुलाकात में मैंने अपने को मुक्त कर दिया था तुम्हारे लिए!"

"यस, आई नो शायनी।" बोलकर सहज ने उसके गालों को सहलाया, बोला, "आई एम प्राउड ऑफ हैविंग मेच्योर्ड गर्लफ्रेंड," फिर बाँहों के कसाव में ढील देते हुए कहा, "बट तुम्हारी बातों में मुझे दम दिखता है; मुझे याद है तुम्हीं तो कभी बोली थी शरीर की वासना मिटाने के लिए फिजिकल होने का मतलब है बड़े काम के लिए संकेंद्रित ऊर्जा का विकेंद्रित होना!" अपनी

कही बात को सहज के मुँह से सुनकर वह उस पर सम्मोहित होती गई। उसने अपने को फिर से सहज के आगोश में समा जाने दिया। आज उसकी बाँहों में वह सहज की काबिलियत पर मन-मंथन करने लगी।

"सहज, करोड़ों गरीबों को धनाभाव से मुक्ति दिलाने वाली अपनी थ्योरी को अवश्य पूरा करना डियर।" सहज के आलिंगन से मुक्त होकर वह बोलने लगी, "मैं लौटकर देखना चाहती हूं तुमने इस धरती में मानव के लिए कुछ नया किया है।"

"यस शायनी आई विल! तुम तो मानवता के लिए एक बड़ी यात्रा पर निकल रही हो, ऑल दी बेस्ट यार।" फिर रामघट शहर पर नजर टिकाते हुए कहा, "आई होप कोरोना के म्यूटेटेड वर्जन दैट इज ब्लैक कोरोना पर तुम्हारा रिसर्च भविष्य में वायरस के किसी भी खतरनाक आक्रमण से दुनिया का बचाव करेगा।"

"तुम मुझे समझ पाए सहज, बस इतना ही काफी है मेरे लिए।" बोलते हुए उसने खुद अपने होंठ ऊपर उठा दिए; आज उसने सहज के झुकने का इंतजार नहीं किया। आबद्ध होंठ वाले दो प्रेमी ऐसे लग रहे थे जैसे पृथ्वी में नव मानव की उत्पत्ति हो रही हो। तभी चारों ओर पेड़ों में बैठे पक्षियों ने किसी नये लय में चहचहाना शुरू कर दिया।

8

30 जनवरी, 2021, महात्मा गांधी की शहादत का ऐतिहासिक दिन; बस्ती में महात्मा गांधी फिर से जीवित हो उठे, अंबेडकर चौक पर बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर से जुगलबंदी करते हुए! धरना स्थल पर बच्चों का हुजूम सुबह से ही उमड़ पड़ा। बच्चों के शोरगुल-कोलाहल से धरना तो बिना आरंभ हुए ही सफल नजर आने लगा! तीस जनवरी का दिन बस्ती के लिए ऐतिहासिक होता दिखने लगा; बस्ती एरिया से 'दुनिया एक हो' का नारा जो उठ रहा था! अंबेडकर चौक के चारों ओर जोशीले बैनर लगे थे ...चीन को रास्ते पर लाना है दुनिया को बचाना है, ...चीन का मन मैला है उसी ने कोरोना फैलाया है, ...तूने सब के पेट को नकारा है पूरी दुनिया तुम्हारा मारा है, ...चीन तुम होश में आओ होश में आओ, ...दुनिया को जगाना है भारत को महान बनाना है, ...गरीब पेट का मारा है देश की संपत्ति हमारा है, ...एक धड़ दो मुंडी वाली व्यवस्था ध्वस्त करो ध्वस्त करो ...कैबिनेट को कीचड़

से अलग करो, अलग करो...

दिनेश ने रात में ही चौक पर लाउडस्पीकर लगवा दिया था। बच्चों ने सुबह से ही माइक थामकर नारा लगाना शुरू कर दिया, पोस्टर में लिखी पंक्तियों को बारी-बारी से दोहराते हुए ...चीन तुम होश में आओ होश में आओ ...चीन को रास्ते पर लाना है दुनिया को बचाना है ...गरीब पेट का मारा है देश की संपत्ति हमारा है ...कैबिनेट को कीचड़ से अलग करो, अलग करो... लाउडस्पीकर से नारेबाजी निकलते ही पूरी बस्ती में उमंग तैर गई; औरत -मर्द-बच्चे सभी के अंदर उत्साह हिलोरें मारने लगा। सभी के मन-मस्तिष्क में बस्ती की गौरव गाथा विशाल स्वरूप ग्रहण करने लगी ...अब हमारी बस्ती को पूरी दुनिया में जाना जाएगा! आज का धरना सभी के मन में कौतूहल दर कौतूहल पैदा करता गया ...आगे और क्या-क्या होगा! उत्साह से बेकाबू लोग चौक की तरफ चलकर भीड़ का भाग बनते गए। आठ बजते-बजते चौक पर भीड़ इकट्ठी होने लगी। चौक पर से रामघाट सिटी की लाइव टेलीकास्ट की तैयारी भी पूरी हो चुकी। उनके चार बड़े कैमरे चौक के चारों ओर पोल पर पोजिशन लिए थे। उसके चैनल पर ब्रेकिंग न्यूज तो चलने भी लगे ...अंबेडकर चौक पर आज कोरोना-मंडली का विशाल धरना ...सुबह से ही लोगों की भीड़ उमड़नी शुरू ...चीन के खिलाफ जबरदस्त नारेबाजी ...कैबिनेट को दल-निरपेक्ष बनाने की माँग पहली बार उठी, यदि भविष्य में कभी ऐसा हुआ तो भारतीय प्रजातांत्रिक व्यवस्था में मील का पत्थर साबित होगा ...तब पार्टी फंड की आड़ में पनप रहे अदृश्य-अकल्पनीय भ्रष्टाचार की विदाई तय ...हर वर्ष चुनाव के दलदल में कराहते देश को निजात दिलाने की खातिर नवयुवकों की नई सोच की सर्वत्र सराहना ...सरकार या प्रशासन की तरफ से अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं!

घर से निकलने से पहले सहज चैनलों में समाचार देखना नहीं भूलता। नाश्ता करते-करते उसकी नजर टीवी पर पड़ी, चौंक पड़ा ...रामघाट में एक सौ एक औघड़ बाबाओं की पवित्र यात्रा! स्क्रीन पर ब्रेकिंग न्यूज तड़फड़ाती मछली जैसी टपक रही थीं। चैनलों पर दिखाये जा रहे लाइव टेलीकास्ट पर सहज की नजर अटक गई ...महात्मा गांधी चौक से जटाधारी बाबाओं का जत्था निकल रहा है; तांडव नृत्य का अभ्यास-सा करते हुए? हाथों में थामे त्रिशूल को अजीब ढंग से लहरा रहे हैं? क्या इस जत्थे के बाबाओं का तांडव-प्रशिक्षण अभी पूरा नहीं हुआ है! स्क्रीन पर फिर से ब्रेकिंग न्यूज

...औघड़ अखाड़ा परिषद ने कहा 30 जनवरी, माघ कृष्ण पक्ष द्वितीया इस दशक का सबसे शुभ शनिवार है! आज के दिन राहु और केतु की दिशा विपरीत मार्गी होकर देश को नई ऊंचाई की ओर ले जाएगी; औघड़ परिषद ने कहा यह एक गुप्त मुहूर्त है इसको आज से पहले प्रकट करना अशुभ फल दे सकता था, शहर शंकराचार्य ने कहा ऐसे विरल अवसर पर औघड़ बाबाओं की नगर यात्रा रामघाट के लिए अति फलदायी, प्रभारी मंत्री ने कहा बापू के बलिदान दिवस पर बाबाओं की पवित्र यात्रा राजनीति और धर्म के आपसी सामंजस्य का उज्ज्वल उदाहरण...। स्क्रीन पर अवतरित होकर एंकर ने बताया, 'बाबाओं की यात्रा तो गांधी चौक से आरंभ हो चुकी है, पर रूट पहले से तय नहीं है; औघड़ आचार्य शंकरानंदजी ने बताया है बाबाओं का जत्था नगर के पवित्र मार्गों पर स्वयं चलते चलेंगे, उन्हें जिस मार्ग में देश का कल्याण नजर आएगा उधर ही उनके पद चरण पड़ते जाएंगे...। घंटे-दो घंटे तक न्यूज देखते रहने पर भी सहज को पहले कभी ऊब तक नहीं होती थी, आज पाँच मिनट के ब्रेकिंग न्यूज में ही उसे चक्कर आने लगा ...बाबाओं वाली योजना आज ही लाई जानी थी? उसने तुरंत ग्रुप में मैसेज डाल दिया ...हमारे आज के धरना को महत्वहीन करने और उसमें विघ्न उत्पन्न होने की आशंका, दस बजे धरना आरंभ होने से पहले नौ बजे विमर्श के लिए सभी रामू के शेड पर एकत्रित होवें।

सोशल मीडिया में औघड़-यात्रा का क्लिप तेजी से फैलने लगा। शहर की सड़कों पर लाउडस्पीकर गरजने लगे ...औघड़ बाबाओं की ऐतिहासिक यात्राआआअअ ...रामघाट में और पूरे देश में करेगा शुभ फल की बरसाआआअत ...शहर के नागरिकों को सजग किया जाता है, वे आज औघड़ यात्रा के अतिरिक्त अपना चित्त कहीं और ना धरेऐऐएएं ...औघड़ बाबाओं के पुण्य से कोरोना का दाह-संस्कार करेंएँएए...। लाउडस्पीकर की पुकार सुनकर कोरोना-मंडली के सदस्य रामू के शेड के लिए तेजी से निकल पड़े, मन में धरना को एकाग्र किए हुए। सभी नौ बजे से पहले ही शेड पर हाजिर हो गए, मन में समाधान तलाशते। रामू को छोड़कर सभी के चेहरे में चिंता की लकीरें खिंची थीं। रामू की मुद्रा में उत्तेजना की परत चढ़ आई; शेड में सभी के बैठते ही उसने कहा, "चैनल वाले दिखा रहे हैं औघड़ बाबाओं का जत्था अपने ज्ञान के आधार पर पुण्य मार्ग पर बढ़ते जाएंगे।" फिर गांधी चौक की तरफ आंख उठाकर बोला, "उन बाबाओं की नजर में सबसे पुण्य

मार्ग अचानक बस्ती होकर ही गुजरेगी, इसीलिए बस्ती से होकर अंबेडकर चौक की तरफ जरूर बढ़ेगा!"

"फिर?" सहज सबसे अधिक फिक्रमंद था।

"हम उन्हें बस्ती के रास्ते पर बढ़ने ही नहीं देंगे! पटेल चौक से उनके इस ओर मुड़ते ही हम उन्हें वहीं से किसी अन्य पुण्यगामी मार्ग की ओर प्रस्थान करने की प्रार्थना करेंगे।" बाबाओं वाली बात का ध्यान रखते हुए रामू ने शालीनता से कहा।

"पर हम उन्हें कैसे मना पाएंगे! सुना है औघड़ बाबा लोग तो बड़े उग्र होते हैं?" परवेज ने अपनी जानकारी भर कहा।

"हम उनसे प्रार्थना करेंगे बस्ती एरिया तो इतिहास में हमेशा से अपवित्र रहा है। भला अब पवित्र कैसे हो सकता है!" अहम ने दर्शन के आईने में झांकते हुए कहा।

"फिर भी वह नहीं माने तो?" मंजरी चिंतित हो उठी।

"मानेंगे कैसे नहीं! यदि नहीं मानेंगे तो पूरी बस्ती लाठी-डंडों के साथ उन्हें सुभाष मार्ग के शुरुआत में ही रोकेंगे।" शेड से नीचे उतरकर दिनेश ललकारने के अंदाज में बोला, जैसे सभी को तैयार रहने का फरमान सुनाने जा रहा हो।

"सुलह-शांति का एक विकल्प यह भी हो सकता है कि उन्हें यहां से शांतिपूर्वक गुजरने देना चाहिए।" मीडिया में अपने अनुभव के आधार पर मनोज ने कहा।

"व्हाट इज दिस? शिट यार!" रॉबर्ट लगभग चिल्लाते हुए शेड में आया; बैठते-बैठते बोला "सच वल्गर फोर्म ऑफ रेलिजियस प्रोसेशन इज स्पॉलिंग इंडिया सिंस डिकेड्स!"

"मिस्टर रॉबर्ट यू आर टू लेट; वि नो यू इंगेज्ड इन सो मेनी पब्लिक वेलफेयर वर्क," रॉबर्ट की ओर देखकर सहज ने मित्रवत् मुद्रा लिए बोला; फिर सभी की ओर देखकर सोच-समझकर कहा, "एक बेहतर विकल्प यह भी हो सकता है कि हम लोग अपना धरना उन बाबाओं के निकल जाने के बाद आरंभ करें?"

"मेरी राय में यह एक अच्छा विकल्प है; इक्कीसवीं सदी में युवाओं को भी धैर्यवान होना चाहिए।" अहम ने सलाह दी। अहम के विचारों से सभी सहमत हुए। तय हुआ बाबाओं का जत्था यदि बस्ती एरिया से होकर गुजरेगा

तो उनके निकल जाने के बाद ही धरना आरंभ होगा। जन उमंग बनाए रखने के लिए यह भी तय हुआ कि धरने का समय आगे करने का अभी ऐलान ना किया जाए, क्योंकि बाबाओं का बस्ती आना अभी तय नहीं है।

औघड़ यात्रा पटेल चौक के बाद अचानक बस्ती की ओर मुड़ गई, सच में! पुलिस वाले हाथ खड़े कर देने जैसा हाव-भाव प्रदर्शित करने लगे। बस्ती के कुछ बुजुर्गों ने शांति-व्यवस्था की दुहाई दी; डीएसपी ने यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि शेर-साधु-स्वामी के आगे किसी की नहीं चली है! एक घंटा पहले गांधी चौक में शुरू हुआ अधूरा त्रिशूल तांडव सुभाष मार्ग पर बढ़ते हुए पूर्णता प्राप्त कर चुका था। अब सभी औघड़ बाबा तांडव में प्रवीणता प्राप्त किए हुए लगने लगे। बाबाओं की यात्रा बस्ती होकर शांतिपूर्वक आगे बढ़ने लगी; बस्ती वालों ने राहत की सांस ली, हाथ जोड़कर प्रभु को याद करते हुए ...हे प्रभु अपने भक्तों को जल्दी से सद्बुद्धि दें! कोरोना-मंडली के सदस्यों ने आंख मूंदकर परम शक्ति को याद किया ...इस असामयिक यात्रा को दस-पंद्रह मिनट में अंबेडकर चौक पार करा दें! बाबाओं की शांतिपूर्ण यात्रा को मंगलकारी मानते हुए बस्ती की महिलाएं उन्हें अन्न दान देने आगे बढ़ीं; प्रसन्न होने के बजाय बाबा मंडली क्रुद्ध हो उठी, "अपनी सीमा में ही रुकी रहो नारीगण! अभी यह भूमि अन्नदान के स्तर तक शुभ नहीं हो पाई है, इसे पहले शुभदायिनी हो जाने दे; तुम्हारी बस्ती के अशुभ ग्रह के विनष्ट होने के पश्चात ही हम यहां का अन्न ग्रहण कर पाएंगे!" अपना अन्न अपने-अपने सूप में समेटते हुए महिलाएं सहम उठीं। भीरू किस्म की महिलाएं कांप उठीं ...कहीं बाबाओं ने और कई सदियों के लिए उन्हें शापित तो नहीं कर दिया? ज्ञानवान महिलाएं अपने सीने में हाथ रखकर अपने ईश को याद करने लगीं ...हे सर्वे सर्वा! अब हमें इनसे कोई वरदान नहीं चाहिए, बस इन्हें शांतिपूर्वक निकल जाने दें!

अंबेडकर चौक पर आकर बाबाओं की यात्रा ठहर-सी गई; आगे बढ़ते जाने की आशा के विपरीत। सभी एक सौ एक औघड़ चौक के चारों ओर छितरा गए, किसी मोर्चे पर मुस्तैद होने जैसा। अंबेडकर चबूतरे पर नारेबाजी कर रहे बच्चों को त्रिशूल तांडव से चुप कराते हुए वे खुद गाने लगे ...ये बच्चे अक्ल के कच्चे ...इनसे भला क्या आस, करेंगे देश का सत्यानाश...। त्रिशूल तांडव से बच्चों के सामने डरावना दृश्य उत्पन्न हो गया। कोरोना-मंडली के युवा हाथ जोड़ते हुए चबूतरे पर आ खड़े हुए।

"आवर रेस्पेक्टेड सेंट, न्यू जेनरेशन नीड अ हारमोनियल इंडिया एंड दे आर ऑन द वे टू मेक अ..." रॉबर्ट बोल ही रहा था कि एक बलिष्ठ बाबा गरज उठा, "रे कुटिल तुमलोगों ने ही भारत भूमि को ज्यादा नष्ट-भ्रष्ट किया है, अब आगे यहां अंग्रेज धर्म की जड़ हम जमने नहीं देंगे!"

"हे औघड़ प्रमुख, बस्ती के बच्चों के लिए उमंग-उत्साह का अवसर विरले ही आता है; आज के आयोजन को कोरोना काल के बाद पहला उल्लास पर्व पाकर यह बच्चे खुद ही नारेबाजी में उतर आए हैं।" मनोज ने हाथ जोड़े कहा।

"बच्चों को उत्साह-उमंग से विरत करने से इनके बाल मस्तिष्क में कुप्रभाव पड़ सकता है, इसीलिए हमने इन्हें चबूतरे पर इकट्ठा होने दिया है।" दिनेश ने दंडवत होकर कहा।

"आप विश्वास रखें गुरुवर! ये बच्चे कल को देश के काम आएंगे, फौज का सिपाही बनकर और खेत-खलिहान, चौक-चौराहे का मजदूर बनकर।" सहज ने बाबाओं की आँखें खोलने की खातिर कहा।

"ये बच्चे पहले से ही कुपोषण के शिकार हैं, त्रिशूल देखकर इनका तो खून ही सूख जाएगा!" बोलते हुए शायनी भी सहम उठी।

"यदि इन बच्चों ने बाबाओं को कोई ठेस पहुंचाई हो तो हम लोग इन्हें अभी घर भेज देते हैं?" दुपट्टे को पूरा फैलाकर अपने शरीर को ढकते हुए मंजरी बोली।

"हे औघड़नाथ! इन बच्चों का कोई कसूर नहीं, इस चबूतरे पर धरना का आयोजन हमारी मंडली ने रखा है।" बाबाओं की ओर श्रद्धापूर्वक सिर झुकाते हुए अहम ने विनती की, हाथ जोड़े अवस्था में ही।

"मैं मानता हूँ धरना रखना तुम्हारा मौलिक अधिकार है, पर इसमें बच्चों का इस्तेमाल करना तुम्हारा भौतिक अपराध है!" बाबा प्रमुख क्रोधित हो उठे।

"यदि हमारी भूल है तो हम क्षमा प्रार्थी हैं।" आंखें मूंदकर सिर को आसमान की तरफ करते हुए परवेज ने कहा, दोनों हाथों को भी आसमान की ओर जोड़े हुए। उसे हाथ जोड़े देखकर जत्थे में स्थितिप्रज्ञता उत्पन्न हो गई।

तभी औघड़ प्रमुख को कुछ खटका; परवेज को आसमान की तरफ सिर उठाया हुआ पाकर उसका चेहरा क्रोध से लालवर्णी हो उठा, लगा वह अभी ही उसका त्रिशूल से वध कर देगा। क्रोध को काबू में रखते हुए उसने परवेज से कहा, "यहां पर तेरा चेहरा सबसे ज्यादा अपवित्र है! हम यहां से आगे नहीं

बढ़ सकते; अब हमें इस चबूतरे को पवित्र करना ही पड़ेगा।"

"तो आप किसी और दिन आकर इसे पवित्र कर जाइएगा; आज हमारा धरना है, कृपया आप लोग बस्ती एरिया से शांतिपूर्वक निकलकर किसी और जगह को पवित्र कीजिए तब तक।" अब तक अपने को नियंत्रण में रखे हुआ रामू चुप न रह सका।

"वचन-वाणी से तू सबसे बड़ा अशांतिकारक लगता है रे! तेरा ही गर्म मिजाज ठंडा करना सही रहेगा।" युवा औघड़ ने अपना त्रिशूल नचाते हुए कहा; औघड़ प्रमुख ने उन्हें रोका, "शांत वत्स शांत; प्रभु के दिखाए सन्मार्ग से विमुख ना हो!" औघड़ प्रमुख की मधुर वाणी सुनकर बस्ती के लोगों को कर्ण सुख मिला।

"हे महाराज, आपकी नजर में यदि बाबा साहब अंबेडकर का यह चबूतरा अपवित्र है तो इसे जल्दी से पवित्र करके कृपया घंटा-दो घंटा में यहां से निकल लीजिए, हमारे भी कुछ अरमान हैं।" शायनी विनतीपूर्वक बोली।

"हे कुटिल बाला, अरमान को मन में ही पालना चाहिए आसमान तक नहीं उठाना चाहिए!" औघड़ प्रमुख का सहयोगी बाबा जाग उठा, अब तक बंद आंखों को सब कुछ भस्म कर देने जैसा खोलते हुए।

"हे औघड़ महाराज! आप लोग चाहे तो आज दिनभर का समय ले लें इसे पवित्र करने के लिए, हम लोग अपना धरना कल से चालू कर लेंगे।" आज के दिन को बाबाओं को समर्पित करती हुई मंजरी बोली।

"हे बालिके, नारी को पुरुषों के कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए; यदि ऐसा होगा तो पवित्र करने के अनुष्ठान में कई दिन लग सकते हैं!" सहयोगी ने कहा।

"लेकिन प्रभु शास्त्रों में तो लिखा है '...यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता!' फिर इस जगह को पवित्र करने में इतने दिन क्यों लगेंगे?" मन मंथन में लीन अहम ने आगे आते हुए कहा, दोनों हाथों को छाती में सम्मान भाव-सा रखते हुए।

"दुनिया का हर करम प्रभु राम की कृपा से संचालित है पुत्र! उसकी जैसी मर्जी हमसे वही कराएंगे।" बोलकर औघड़ प्रमुख ने आंखें बंद कर लीं।

"प्रभु राम की मर्जी से आप संचालित हैं या फिर आपकी मर्जी से प्रभु राम संचालित हैं?" आँखों को लघुत्तम करते हुए अहम ने पूछा, जैसे भारत भूमि में सबसे बड़ा प्रतिप्रश्न छेड़ दिया हो। उसके प्रतिप्रश्न पर सभी एक

सौ एक औघड़ बाबाओं के त्रिशूल हवा में लहरा उठे। औघड़ प्रमुख ने हाथ से उन्हें रोकने का संकेत किया; तनी हुई मुख-मुद्रा में अहम से कहा, जैसे उसे अपने वचन से ही वेध डालेगा, "मुझे लग रहा है तुमने अपने मन में प्रभु राम के लिए घृणा पाल रखी है; सबसे पहले तू अपने मन को दोष रहित कर पुत्र!"

"प्रभु राम के प्रति मुझे न तो आसक्ति है, न घृणा, मैं तो राम निरपेक्ष हूं!" चेहरे में निस्पृहता लाते हुए अहम ने कहा।

"राम निरपेक्ष नहीं राम सापेक्ष बनना होगा!" औघड़ प्रमुख की भृकुटि तन गई।

"जो आनेवाली सदियों में खुद विलुप्त होनेवाला हो उसके प्रति क्या सापेक्ष होना!" अहम के चेहरे में परम शांति पसरने लगी।

"तो तू भी उसी मत का है कि भारत भूमि में विधर्मी का कब्जा होगा?" औघड़ प्रमुख अब और कठोर हो उठे।

"भारत भूमि ही क्यों आनेवाली सदियों में पूरी दुनिया में हर धर्म के परिकल्पित प्रभु का अंत निश्चित है!" गर्दन ऊपर की ओर तानते हुए अहम ने कहा।

"ऐसी भविष्यवाणी करने वाला तू किस देवता का दूत है?" औघड़ प्रमुख की आंखों में क्रोध नाचने लगा।

"दूत नहीं यह मेरा दावा है; आनेवाली सदियों में किसी भी धर्म का कोई भी ईश्वर-अल्लाह मानव जाति के सामने आ चुकी चुनौतियों का समाधान नहीं कर पाएगा!" बोलते-बोलते अहम ने आंखें बंद कर लीं, लगा जैसे बंद आंखों से कई सदियों के समय को आर-पार देख रहा हो।

"तेरा ऐसा कहने का आधार क्या है?" औघड़ सहयोगी अकड़कर बोला।

"ज्यादा दूर जाने की जरूरत नहीं है, अभी चीन ने हमारे पवित्र भारत भूमि में कोरोना फैला दिया, पर किसी भी धर्म का प्रभु-पैगंबर कुछ ना कर पाया।" अहम ने आंखें खोलकर कहीं दूर गड़ा दीं।

"तो तू प्रभु राम को इतना छोटा मानता है!" अपना आपा खोते हुए औघड़ प्रमुख ने दाँत पर दाँत रगड़ते हुए कहा।

"किसी भी धर्म के प्रभु, पैंगबर, मसीहा, को मैंने जब बड़ा माना ही नहीं तो भला छोटा क्यों मानूं!" दूर अंतरिक्ष में कहीं आंखें गड़ाते हुए अहम ने कहा, जैसे कोई निराकार जीवात्मा बोल रहा हो। इतना सुनते ही कई

त्रिशूल एकसाथ हवा में लहरा उठे; सेकेंड भर के फासले पर कई-कई का शिरोच्छेदन अवश्यंभावी दिखने लगा!

चारों ओर का दृश्य अचानक आसमानी बिजली जैसे प्रकाश से चौंधिया उठा। प्रकाश का तेज ऐसा जैसे पृथ्वी में एक और सूरज का जन्म हो गया हो! अभी-अभी! प्रखर प्रकाश में बाबाओं की आँखें अंधों जैसी हो गईं। त्रिशूल थामे उनके हाथ कांपने लगे; पलभर में ही कई त्रिशूल पृथ्वी में शरणागत हो चले। उस प्रथम पल में अहम और परवेज जैसे एक-दो की आँखें ही देख पाई थीं...चबूतरे पर अकस्मात अंकुर आ खड़ा हुआ था, हाथों में एक रहस्यपूर्ण मूर्ति को गोल-गोल घुमाते हुए! दिखने में वो चतुर्मुखी मूर्ति थी, पर घूमते हुए में सहस्रमुखी हो उठती थी! महात्मा बुद्ध से लेकर महात्मा गांधी तक अनेकानेक इतिहास-पुरुषों की आभा-प्रभा बिखेरते हुए! उन विराट पुरुषों के मुख-मंडल से निःसृत तेज चारों दिशाओं में दिव्य-दुर्लभ प्रकाश पुंज उत्पन्न कर रहे थे। धरना के निमित्त आए जन-जन उस अलौकिक प्रकाश में आत्मविभोर हो अपने-अपने स्थान पर अडिग-अटल रहे; पर आत्मा और आँखों से अशक्त हो चुके सारे बाबा अचेत होने लगे! तभी औघड़ प्रमुख की चीत्कार सुनाई पड़ी, "यहां टिके रहना आत्मघाती हो सकता है, दक्षिण दिशा की ओर दौड़ लगा दो!" औघड़ प्रमुख अचानक याद आ जाने जैसे स्वर में चिल्ला उठे, भागते-हांफते हुए भी, "भक्त रामवीर! डोंट फोरगेट टु किल दिस माइंड टू!" लगा आवाज किसी ऊँचे आसन से आई हो।

अगले ही क्षण एक त्रिशूल अहम की गर्दन के ऊपर फंसा पड़ा था! रक्त की धार से बाबा अंबेडकर की प्रतिमा रक्तरंजित हो गई। एक सौ एक औघड़ बाबा का जत्था अंबेडकर चौक से भाग खड़ा हुआ; चबूतरे को अपवित्र करके। अभी क्षणभर पहले बेखौफ त्रिशूल तांडव ने सभी को बेसुध सा कर रखा था, अब भागते हुए में भी औघड़ों का पीछा करने, उनसे भिड़ने-लड़ने की सुध किसी में नहीं थी। औघड़ बाबाओं के पीछे लगी पुलिस वालों से एक-दो बुजुर्गों ने विनती की, "उस त्रिशूलधारी हत्यारे को पकड़िये, प्लीज!" इंस्पेक्टर ने धर्म और सत्ता का वास्ता देते हुए कहा, "बाबा की गिरफ्तारी अनर्थकारी हो सकती है; बल्कि अब तो मामला उल्टा भी पड़ सकता है, साधुओं को डराने-धमकाने-अपमानित करने के आरोप में संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज हो सकता है! पूरी बस्ती कानून का सामना करने के लिए तैयार रहिए!" चंद मिनटों में ही चबूतरे के चारों ओर पूर्व स्थिति लौट आई।

अंकुर कब-कैसे-किधर निकल गया कोई देख न पाया। अलौकिक मूर्ति को वह श्वेत वस्त्र में लपेटकर लाया था, वैसा ही लौट भी गया। हां, जाते में वह मंजरी के कान में बोलता गया था, '..अभी तो सिर्फ परीक्षण किया है, प्राण डालना तो बाकी है!" अहम को रक्तरंजित स्थिति में पाकर पूरी बस्ती में सन्नाटा पसरा गया। कोरोना-मंडली सकते में थी। थोड़ी ही देर में एक एंबुलेंस चबूतरे के पास आकर रुकी; किसने किस अस्पताल को लहूलुहान मरीज पड़े होने की सूचना दी, पता नहीं।

सुपर सेवन अस्पताल में अहम की नब्ज बड़ी मुश्किल से डॉक्टरों की पकड़ में आ पाई। आरंभिक जांच में डॉक्टरों ने पाया जिस हथियार से हमला हुआ उससे अहम के शरीर में जहर फैल चुका है। जहर वाली बात ओटी के अंदर से बाहर पब्लिक में आना चिकित्सा सेवा के विरुद्ध माना गया। प्रशासन को सूचना मिलते ही पुलिस टीम हरकत में आ गई। हमलावरों को पकड़ने में भले ही चुस्ती ना दिखाई हो, खून से सने त्रिशूल की फॉरेंसिक जांच कराने में सुस्ती दिखाई पुलिस टीम ने। फॉरेंसिक लैब की प्रिलिमनरी रिपोर्ट में उल्लेखित किया गया, 'त्रिशूल के सिर पर किसी प्रकार का कोई विष नहीं पाया गया है।' पर सच्चाई छिप न सकी; विष बुझे त्रिशूल से हमले की बात धीरे-धीरे बाहर आने लगी। शक के आधार पर चिकित्सा दल के एक डॉक्टर को कारण बताओ नोटिस थमा दिया गया, बिना विलंब के '..चिकित्सा सेवा संहिता की गोपनीयता भंग करने के आरोप में आपको क्यों नहीं सेवा से बर्खास्त किया जाए तथा मरीज के इलाज से जुड़ी गोपनीय जानकारी सार्वजनिक करके जन भावना भड़काने, सरकार के खिलाफ दुर्भावना फैलाने और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में शामिल होने संबंधी धाराओं में क्यों नहीं आप पर आपराधिक मुकदमा दर्ज किया जाए...।' भारी उठा-पटक से बेखबर चिकित्सकगण यह जानने में जुट गए कि मरीज के मस्तिष्क-मज्जा को कितनी क्षति पहुंची है।

... ...रामघाट तिरे से आ रहा मानस पाठ आज अश्रव्य-सा शोर करता जान पड़ रहा था; पर अंधेरा होते-होते भीमरवा की ललकार पाठ पर भारी पड़ने लगी ...छप्पन-छलिया-छद्मवेशी..

9

रामू, परवेज, मनोज और रॉबर्ट को 30 जनवरी को ही गिरफ्तार कर लिया

गया; शाम छह बजे, जब वे सभी सुपर सेवन के लोअर ग्राउंड फ्लोर में अहम की क्रिटिकल कंडीशन पर माथापच्ची कर रहे थे। तब वे अस्पताल की लॉबी के एकांत कॉर्नर में गोल टेबुल के चारों ओर बैठे चर्चा कर रहे थे; गिरफ्तारी टीम का नेतृत्व कर रहे डीएसपी की आंखों में तब चमक आ गई थी, देशद्रोह की साजिश रचने और जन भावना भड़काने के पूर्व निर्धारित आरोपों को घटना स्थल पर साक्षात सजीव पाकर। सहज उस वक्त न्यूरो सर्जन से अहम के लाइन ऑफ ट्रीटमेंट पर चर्चा कर रहा था, पांचवीं तल पर; रात के आठ बजे के आसपास ही उसे अरेस्ट किया जा सका। वैसे भी सहज की गिरफ्तारी से पहले हंसामल जी को विश्वास में लेना पड़ा, एसपी और प्रभारी मंत्री द्वारा; कि सिर्फ साधारण घरों के युवकों की गिरफ्तारी से एक नया पॉलिटिकल एंगल क्रिएट हो सकता है प्रदेश में; कोई भरोसा नहीं धीरे-धीरे देश में भी। पांचों को रात नौ बजे ही सीजेएम रामघाट के कैंप कोर्ट में पेश कर दिया गया, फटाफट। आरोपों पर नजर डालने मात्र से ही सीजेएम ने आंखें बड़ी कर लीं। उन्होंने सभी को सात दिन की पुलिस रिमाँड में दे दिया; प्रपोज्ड चार्जेज को प्राइमा फेसी ग्रिवीयस मानते हुए।

दिनेश गिरफ्तारी से बच गया; भविष्य में उसके गिरफ्तार होने की हलचल भी नहीं मालूम पड़ रही थी। उसकी विपन्नता पर तरस खाकर उसे छोड़ दिया गया था या जातीय समीकरण का वरदान मिला था, कयास लगाना मुश्किल था। शायनी और मंजरी को अज्ञात सूत्रों से संदेश संप्रेषित करा दिया गया, कि उन्हें अरेस्ट होने की आशंका नहीं पालनी चाहिए। मंजरी को समझने में ज्यादा माथापच्ची नहीं करनी पड़ी; दलित लड़की की गिरफ्तारी वह भी बिना अपराध के क्या-क्या भूचाल ला सकती थी। शायनी का ध्यान कोपेनहेगन में ही केंद्रित था। उसे कभी ख्याल ही न आया, कि एक प्रतिभावान छात्रा को देश का भविष्य समझकर या फिर उसके अनुपम रूप-सौंदर्य को किसी की संपत्ति समझकर उसे कैद खाने में नहीं डाला गया था। साथियों की गिरफ्तारी से शायनी सहम उठी। वह बड़ी असमंजस में पड़ गई थी; रात ग्यारह बजे उसकी फ्लाइट थी। ऐसे वक्त में फॉरेन फ्लाई करना उसका दिल कबूल नहीं कर रहा था। मम्मी ने उसे उधेड़बुन से निकलने में मदद की। उसने सलाह दी, साथियों के हवालात में होते शहर से बाहर जाना उचित नहीं होगा। मम्मी का यह भी अनुमान था कि वायरोलॉजिकल इंस्टीट्यूट कोपेनहेगन सप्ताह-दस दिन की देरी को अदरवाइज नहीं लेगी। शायनी की सहमति होते ही मम्मी

ने फटाफट टिकट कैंसिल करा ली थी, मात्र फिफ्टी परसेन्ट रिफंड से ही संतोष पाकर। देर रात गए मामाजी ने शायनी को मैसेज भेज दिया, '..सुकून के साथ ही विदेश जाना अच्छा रहेगा; आगे जब भी जाओगी टिकट मैं लेकर आऊंगा, डोंट वरी!'

एक-दो स्थानीय अखबारों को छोड़कर कोरोना-कैबिनेट के पांच युवकों की गिरफ्तारी की खबर किसी चैनल या बड़े अखबारों में नहीं दिखी। कल तक जिन मीडिया वालों को कोरोना-कैबिनेट में देश का भविष्य नजर आ रहा था, उनकी नजर में उसकी हैसियत रातों-रात एक लंपट नुक्कड़ मंडली की-सी हो गई। स्वाभाविक ही टीआरपी के फॉर्मेट में फिट नहीं बैठने के कारण अखबारों चैनलों ने बात आई-गई मानकर हाथ झाड़ लिए। वैसे भी कोरोना पर विजय पा लेने का लंबा उत्सव शुरू हो चुका था; इस उत्सव में प्रतिदिन शरीक होने से मीडिया जगत चुकना नहीं चाहता था, अपने फुल साइज-सामर्थ्य के साथ।

दो दिन बाद मंजरी के नंबर पर अंकिता का मैसेज आया। दिल्ली से रामघाट प्रयाण के दौरान रामू ने अंकिता और प्रणव का कई बार जिक्र किया था, उसकी अनोखी शादी की भी चर्चा के साथ। अंकिता नाम से मैसेज आया देखकर वह संशय में पड़ गई '..ऐसे बेगाने समय में अंकिता भला क्या कहना चाह रही होगी?' मैसेज दो पार्ट में सेंट किए गए थे; वह पढ़ने लगी '..मंजरी दीदी प्रणाम; मैं और मेरे पति प्रणव, रामू भैया का एहसान कभी नहीं भूल सकते, हम लोग रामघाट आउटर में किराए के मकान में रहते हैं, दिल्ली से यहां आने के बाद आप लोगों से मिलने की बेताबी कब से है मन में, पर कोरोना के कारण हर बार टलता रहा; रामू भैया और उनके साथियों की गिरफ्तारी के बारे में कल पता चला, धैर्य रखना ऊपर वाला हमेशा सच के साथ रहता है! ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ वे लोग जल्द ही बाहर आएंगे और सत्य के रास्ते पर बढ़ते रहेंगे...।' मैसेज पढ़कर मंजरी को काफी तसल्ली हुई ...चलो, बुरे वक्त में शुभचिंतक लोग सामने तो आ रहे हैं..। उसने लम्बी सांस ली, फिर दूसरा मैसेज पढ़ने लगी '...हम दोनों ने सोच-समझकर प्रण लिया है, भविष्य में कोरोना-कैबिनेट के संकल्प को आगे बढ़ाने में हम दोनों की भी भागीदारी रहेगी। रामू भैया ने हमारे प्यार को वक्त-बेवक्त छाँव दिया था; अब मुहब्बत ने हम दोनों को काफी ताकत दे दी है, उसका सदुपयोग तो होना चाहिए न!' पढ़कर मंजरी ने आँखें बंद कर लीं, एक सुकूनदायक एहसास के साथ; उसे महसूस होने लगा, उसके

अंदर ऊर्जा का प्रवाह मजबूत होता जा रहा है।

उसी दिन शाम को उसके नंबर पर एक अनजान नंबर से मैसेज आया था; वह अनमने ढंग से पढ़ने लगी '...भाभी प्रणाम!...' पढ़ते-पढ़ते रुक गई, होंठों में मधुर मुस्कान तैर गयी...भाभी! आगे बड़े इत्मीनान से पढ़ने लगी '...समझिए मैं रामू भैया का छोटा भाई हूँ, बिल्कुल सगा! वैसे अंकिता मेरी दीदी हैं, उनसे रामू भैया लोगों की गिरफ्तारी के बारे में अभी-अभी पता चला; मेरा तो खून खौल रहा है, जी कर रहा है पूर्णिया से अभी का अभी निकल पड़ूँ। माँ काली की कसम! आप कहेंगे तो अपने साथियों के साथ कल ही रामघाट कूच कर जाऊँगा; बाबू जयप्रकाश नारायण के बारे में सुना ही होगा आपने, समझिए हमारे साथी लोग उनके साथ जेल में रहे क्रांतिकारियों के पोते-पड़पोते हैं! हमें आपका सेण्ट्रल जेल फांदते देर नहीं लगेगी! रामू भैया की कसम मैं आने के लिए बेताब बैठा हूँ, प्लीज मैसेज करके बताइगा'। मैसेज को मंजरी ने चाहे जितनी गंभीरता से लिया हो, उसमें निहित भावना से वह पसीज गई ...सच में दुनिया अभी भी वीर पुरुषों से खाली नहीं है! तब पीछे वाले हवादार बरामदे में बैठकर रामू को याद करते हुए उसने आँखें बंद कर लीं '...अपने क्रियाकलापों-सत्य-सार्थक वचनों से रामू ने कितने तो जाँबाज तैयार कर रखे हैं!

रामू की यादों में खोई मंजरी को भान हुआ जैसे बगल में कोई आ खड़ा हुआ हो। उसने आँखें खोलीं; भीमरवा खड़ा था, आँखों में अभूतपूर्व तेज लिए। वह बेहद डर गई ...यदि इसका दिमाग और अधिक बेकाबू हो गया तो कहीं उसका गला ही न घोंट दे? मंजरी का डरा हुआ चेहरा देखकर भीमरवा चुप न रह पाया, बोला, "मंजरी, मेरे पिताजी पंद्रह दिन पहले चल बसे हैं, मैं कई दिनों से कुछ नहीं खाया हूँ, प्लीज...।" वह घोर आश्चर्य में पड़ गई...बावला जैसा चिल्लाते फिरते रहने वाला अचानक इतना नॉर्मल कैसे हो गया! और इसके पिताजी को मरे तो वर्षों हो गए, यह पंद्रह दिन पहले मरा हुआ क्यों बता रहा है; कल रात से इसकी पुकार भी तो सुनाई नहीं पड़ी है?... उसे काटो तो खून नहीं; अंदर को भागी, खाने को कुछ लाने के लिए। दोपहर को बचे रोटी में लौकी की सब्जी लपेटकर उसकी ओर बढ़ा दी। वह लपलप खाने लगा, जैसे वर्षों बाद खाने का अभ्यास कर रहा हो! मंजरी की हिम्मत नहीं पड़ रही थी कुछ बोलने की। रोटी खत्म कर भीमरवा ने बढ़ते अंधेरे के सन्नाटे को रोका, "बात मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आ

रही है मंजरी, आज दिनभर मैं जहां-जहां रुका हूँ, लोग अजीब-अजीब बातें कर रहे हैं! क्या मेरे पिताजी को मरे कई साल हो गए? मैं पागल हो गया हूँ क्या? देश में कोरोना नाम की कोई बीमारी फैली है क्या? अपने साथियों ने कोरोना-कैबिनेट बनाया है क्या! रामू, मनोज, रॉबर्ट, परवेज और सहज को जेल में किसने डाला?" जेल वाली बात बोलते-बोलते उसकी आवाज में गुस्सा सवार होता गया। मंजरी के होंठों में खुशी के कोंपलें उग आए... भीमरवा अपनी सामान्य अवस्था में वापस लौट आया है! आँखों में नमी लिए वह बोली, "कौन कहता है कि आप पागल हो गए हो, आपके जैसा दुनिया में दूसरा हो नहीं सकता भैया भीम राव!" वह मंजरी के करीब आकर बोला, "यदि मैं सच में पागल हो गया था तो दुनिया की नजर में मुझे अभी पागल ही रहना है, साथियों की गिरफ्तारी को हम बर्दाश्त नहीं कर सकते; कानून को तर्जनी में गाड़ी की चाभी भाँति नचाते रहने वालों के उंगली-नस को नेस्तनाबूत करना ही पड़ेगा।" गुस्से में बोलकर वह सड़क की ओर मुड़ गया; हर्षपूर्ण हँसी में गाते हुए ...नव मस्तिष्क ...नव दृष्टि ...नव संसार ...नव सवेरा ...नव भारत... फिर पागलों की भाषा-भंगिमा में शोर मचाते हुए ...भूतकाल सोएगा ...वर्तमान रोएगा ...भविष्य गाएगा..

10

9 फरवरी को उन पांचों को रामघाट सेंट्रल जेल भेज दिया गया, पुलिस रिमाँड खत्म होते ही। गिरफ्तारी के एक महीने बाद बेल पिटीशन दाखिल होनी थी। उनके बाहर आने के बाद ही शायनी कोपेनहेगन जाना चाहती थी, हल्का मन लिए। वैसे भी दिल में असहनीय भार लिए वह लैब में कोरोना की पूँछ कहां पकड़ पाती भला। पर अनहोनी पूछकर तो आती नहीं! 14 फरवरी को शायनी को उठवा लिया गया, 'वैलेंटाइन डे' के दिन ही; जब वह उजड़े महल में भयवश अकेले ना जाकर रास्ते वाले पीपल के नीचे बैठी थी, सहज के साथ बिताए पिछले दो-तीन 'वैलेंटाइन डे' की यादों में खोई हुई। उसने जीवन में कभी कल्पना भी ना की होगी, यौन-पिपासु गिरोह कभी उसके साथ भी...।

दो मुस्टंडों ने उसे सीधे-सीधे उठाकर कार में पटक दिया, आंखों में तत्क्षण ही उजली पट्टी डालकर। उसके लिए पूरी दुनिया अंधकारमय हो चली। कार के दाएं-बाएं मुड़ते जाने में भी दिशा ज्ञान की कड़ी जोड़ती रही वह; अंततः किस दिशा में कितनी दूर कार चली उसके लिए अंधा कुआं

ही बनता गया। बिना घड़ी देखे समय के सटीक अंदाज की मेधा थी उसके अंदर; कोई आधे घंटे के बाद उसे कहीं कार से उतारकर बिस्तर पर लिटा दिया गया।

"पट्टी खोल दो!" पहचानी हुई-सी आवाज पड़ी शायनी के कानों में; बोलने वाले ने नाटकीय अंदाज में आवाज को नाक से निकाला था, सो आवाज का मूल पकड़ में नहीं आ पाया। आंखों की पट्टी खोल दी गई। डर और कौतूहल की संधि में फंसी वह पहचानी-सी आवाज वाले से रूबरू होना चाहती थी, आखिर इस गुस्ताखी के पीछे मंशा क्या है? पट्टी खुलने के बाद उसकी आंखों के आगे अंधेरा ही छाया रहा। अंधेरा छंटने का इंतजार करती रही; विज्ञान के तर्क को याद करते हुए कि देर तक आंखें बंद रहने के बाद खुलते ही पहले अंधेरा ही आता है, तब धीरे-धीरे प्रकाश। मिनट-भर बाद भी आंखों के आगे अंधेरा यथावत रहा। दो दरवाजे और एक खिड़की से बाहर का उजाला अंधेरे में सुराग बनाते हुए कमरे के अंदर अदृश्य-सा दृश्य उत्पन्न कर रहा था। जहां उसे लिटाया गया था वह डबल बेड था, सुसज्जित; दो-तीन तकिए की मौजूदगी भी। उसने चेहरा दाएं-बाएं घुमाया। अंधेरे कमरे में कुछ और नजर नहीं आया। वह समझ नहीं पा रही थी आखिर 'पट्टी खोल दो' बोलने वाला आदमी कब किधर खिसक गया? चेहरे को 270 डिग्री के कोण से घुमाकर देखा; कमरे के कॉर्नर में एक पुरुष-सी आकृति खड़ी नजर आई। आकृति का शारीरिक रेखाचित्र बता रहा था आज उसका सर्वस्व लुटना तय है। वह अपने कुलदेवता के चरणों में झुकने सी हो गई, सिर को बिस्तर में नतमस्तक सा करते हुए।

"मंगा टंगा जग्गा गम्बा सम्बा, पांचों आ जाओ!" क्षणभर की शांति के बाद कॉर्नर वाले पुरुष आकृति का नख-स्वर निकला। दाएं हाथ में दरवाजा खुला। मुस्टंडे सा पांच पुरुष उजाले को बाहर रोकने की कलाकारी दिखाते हुए अंदर आ गए, जल्दी-जल्दी। उनके अंदर आने के दरमियान पीछे से झांकती रोशनी में काफी कुछ दिख पड़ा; उन सभी के शरीर में सिर्फ कमर के नीचे संकेत मात्र का लघुत्तम अंग वस्त्र सा था। दरवाजे में डबल कुंडी चढ़ा दी गई, संकेत देते हुए कि तुम्हारा यहां से बाहर जाना नामुमकिन है।

"मैं यहीं बैठे-बैठे फील्डिंग करूंगा; तुम लोग अब बैटिंग शुरू कर सकते हो, लेकिन अपने-अपने बैटिंग ऑर्डर के हिसाब से!" कॉर्नर वाला प्रधान पुरुष रेफरी की भूमिका में आ गया, शब्दों की सीटी बजाते हुए।

"मुझे फांसी पर लटका दो, मेरे दो टुकड़े कर डालो, पर मेरे साथ खिलवाड़ मत करो!" वह गिड़गिड़ा उठी।

"फांसी पर भी लटकाएंगे, लेकिन गेम ओवर होने के बाद ही न!" एक पुरुष उसके करीब आते हुए बोला, उसके गालों को छूने के लिए हाथ बढ़ाने जैसा करते हुए।

"मैं किसी की हो चुकी हूं; प्लीज मुझे छोड़ दीजिए!" वह रुआँसा हो उठी।

"किसकी हो चुकी हो मुझे सब पता है, नाम लेने में शर्म आती है क्या; सहज के साथ होटलों में, जंगलों में मस्ती उतरवाती हो, दुनिया से छिपी है क्या!" कॉर्नर वाले प्रधान पुरुष के नाक से नफरत भरी आवाज आई, सांसों की अटूट धार रूप में। 'मस्ती उतरवाती हो' जैसी अभद्र-असहनीय गाली को वह नकारना चाहती थी; शब्द ढूंढ़ते-ढूंढ़ते रुक भी गई, उसका कुंवारी होना उन सभी को वहशी बना सकता था। वह चुप ही रही; निकलती सिसकारी से अंदर का दर्द रिसता रहा।

"अभी तक तो तुम एक के साथ मजे कर चुकी हो न! आज पांच के साथ हो जाने में क्या हर्ज है?" प्रधान पुरुष के नाक से उपहासमय स्वर निकला।

"यह इंसानियत नहीं! अमानवीय है, प्लीज!" उसकी रुलाई फूट पड़ी।

"चलो तुम्हारी बात मान लेते हैं, पांच पुरुष के साथ अमानवीय है, लेकिन एक के साथ सहमत होना मानवीय है न!" प्रधान पुरुष दो कदम आगे आकर बोला। अभी भी उसकी मुखाकृति अंधेरे के धुंध में स्पष्ट नहीं थी। उसके तर्क पर शायनी निरुत्तर हो गई। उसकी चुप्पी उसकी मौन सहमति-सी लगने लगी; वह जार-जार रोने लगी, अब तो शायद परम शक्ति भी न बचा पाएं!

"रोने से क्या फायदा, यह जगह बिल्कुल निर्जन है!" प्रधान पुरुष की नाक वाली आवाज में हँसी का लंपटनुमा टुकड़ा सवार था; अब नाक पूरा फैलाकर लयपूर्ण आवाज में कहा, "आज तुम्हारे सामने दो ऑप्शन हैं, पांच के साथ मंजूर है या फिर मेरे साथ कबूल है!" अब न तो उसकी रुलाई फूट रही थी, न ही सिसकी छूट रही थी; वह सांस रोके प्राण त्यागने का अभ्यास करने लगी। दो मिनट के मौन के बाद प्रधान पुरुष ने लाड़-प्यार से कहा, नाक से ही, "चलो ऐसा करते हैं हम तुम्हें थर्ड ऑप्शन भी देते हैं; तुम स्वेच्छा से मेरे साथ शादी करना स्वीकारो!" शायनी ने एक झटके में उस पुरुष की ओर नजर उठाई; आखिर यह शातिर है कौन, स्कूल-कॉलेज से ही

पीछा करता आ रहा कोई पागल-दीवाना तो नहीं है? प्रधान पुरुष की पहचान उजागर नहीं हो पाई; पहचानने के लिए उसके नजदीक जाना खतरनाक हो सकता था, कहीं...। शायनी के पास लंबी सांस लेते रहने के सिवाय दूसरा कोई उपाय न था। पंच पुरुष अब डबल बेड के पास आ गए; उनके चेहरे स्पष्ट दिख रहे थे, पर वह किसी को पहचान नहीं पा रही थी। उसे लगा प्रधान पुरुष के एक इशारे पर सभी उस पर टूट पड़ सकते हैं।

"मैं तुम्हें एक सप्ताह का वक्त देता हूं, रजामंदी बनाने के लिए।" नाक वाली आवाज आगे चेताने जैसी हो गई, "एक सप्ताह बाद किसी भी दिन तुम्हें यहीं लाया जाएगा, तीनों विकल्पों में से एक विकल्प को अमल में लाने के लिए; यदि तीसरे विकल्प के लिए तुम्हारी रजामंदी नहीं बन पाती है तो? तो पहले या दूसरे विकल्प को उसी दिन अंजाम दिया जा सकता है!" आगे नाक वाली आवाज में प्रणय-बोधन लाते हुए कहा, "ऑफ कोर्स शादी होनी है तो यहां नहीं होगी, बारात लेकर तुम्हारे दरवाजे पर आएंगे, धूमधाम से!" बोलकर प्रधान पुरुष ने चुटकी बजाई; चार पुरुष आगमन वाले दरवाजे से प्रस्थान कर गए।

"जग्गा कार बुलाओ, इसकी आंखों में पट्टी बांधो।" प्रधान पुरुष की आवाज अब जाकर नाक के बजाय मुंह से निकली। अब वह ईश्वर को शुक्रिया अदा कर पाई; इससे पहले की आवाज उसकी स्मृति की पकड़ में आती, आवाज का स्वर-मूल हवा में विलीन हो चुका था।

"छोटे मामू, आगे इस लड़की ने यदि शादी के लिए हां नहीं कहा तो?" दूसरे पुरुष ने प्रधान पुरुष के पास जाकर कहा, फुसफुसाते हुए।

"जब इंकार करेगी तब देखेंगे।" प्रधान पुरुष ने वार्ता बंद रखने जैसी भाव-भाषा में कहा, आवाज को अश्रव्य बनाए रखते हुए। उसकी धीमी आवाज भी अब शायनी की समझ में आने लगी।

"मैं तो कहता हूँ तब तो अगली बार आप इसको अच्छी तरह से आजमा लेना, अकेले!" दूसरे पुरुष ने मुँह में लार टपकने से रोकते हुए कहा।

"मुझे ज्यादा पढ़ाओ मत; मंथन पाठशाला में हमें नारियों का सम्मान करना सिखाया गया है!" प्रधान पुरुष ने धर्म-पुरुष की भाव-भाषा में कहा।

"मैं तो कहता हूं कल या परसों मंजरी को भी लाकर क्यों न आजमा लिया जाए?" दूसरे पुरुष फिर फुसफुसाया।

"नहीं, बिल्कुल नहीं!" प्रधान पुरुष आग-बबूला होते-होते रह गया।

"क्यों? वह काली-श्यामली है इसीलिए!" दूसरा पुरुष रुकने का नाम नहीं ले रहा था।

"तुम नहीं समझोगे मूरख; मंथन मंच में हमें शिक्षा दी गई है काली और गोरी लड़कियों में कोई भेद नहीं करना है!" प्रधान पुरुष ने परम ज्ञानी भाँति कहा, नाक और मुंह दोनों से समानुपातिक आवाज निकालते हुए।

"फिर मंजरी को उठाने से क्यों पीछे हटते हो?" दूसरा पुरुष तर्क पर उतर आया।

"अरे मूरख, वह दलित है! उसके साथ ऐसा-वैसा कुछ होगा तो बवंडर उठ सकता है देश-प्रदेश में!" प्रधान पुरुष ने दूसरे के कान में बुदबुदाते हुए कहा; आगे आवाज को स्पष्ट बनाते हुए बोला, "अरे जग्गा, जरा यह भी तो सोचो मेरी जाति मंजरी की जाति से तीन-चार पायदान ऊपर है! शायनी की तो हमसे एक पायदान ही नीचे है, रूप-यौवन को मिला दो तो बराबरी से भी ऊपर बैठती है!" शायनी को बाहर ले जाया जाने लगा। प्रधान पुरुष ने पीछे से कहा, "बाहर जाकर यह वाकया किसी से शेयर नहीं करोगी, रामघाट से लेकर दिल्ली तक कोई तुम्हारी मदद को ना आएगा!" फिर आवाज में मधु खोलते हुए-सा बोला, "लेकिन शादी के बाद हम दोनों रामघाट से दिल्ली तक फैले राजपाट का पार्ट बनकर सुख-संपदा जरूर भोगेंगे!"

शायनी दस बजे घर से निकली थी। एक बजे वापस आ गई, अपनी स्कूटी से ही। चेहरे में फैले सारे अवसादों को पीछे हवा में छोड़ते हुए, आंखों के खौफ को अंदर दबाकर। दो घंटे बाहर रहने को माँ ने जरा भी नोटिस नहीं किया; सोचकर कि मंजरी या किसी के पास गई होगी, 'वैलेंटाइन डे' में मन हल्का करना हक बनता है आजकल की लड़कियों का। सच में उसने वो लोमहर्षक घटना किसी से शेयर नहीं की; उस प्रधान पुरुष के डर से नहीं, अपने स्वविवेक से। दो दिन तक वह चिंतामग्न रही। माँ नोटिस करके भी चुप रह लेती थी, मानकर कि सहज के जेल में होने से सोच शून्य पड़ गई होगी। इस बीच उसने प्रधान पुरुष के तीन विकल्पों से आगे चौथे विकल्प को विचारोपरांत मन से निकाल दिया; आत्महत्या करना भी कोई समाधान हो सकता है भला! वो भी तब जब ब्लैक कोरोना की खोज जैसी महती जिम्मेदारी महसूस करती आ रही है, लंबे समय से। प्रधान पुरुष द्वारा रचे गए चक्रव्यूह से निकलने का वह जितना भी प्रयास करती उतनी ही उलझती जाती।

"ममा, आई हैव टू लीव डे आफ्टर टुमारो फॉर कोपेनहेगन।" किचन में खाना बना रही माँ को पीछे से आलिंगन में लेती हुई वह बोली, चेहरे में एक नई चमक लिए।

"सडेनली!" मुड़कर माँ चौंक पड़ी; शायनी की आंखों में झांकने लगीं, आंखों में कुछ नया ढूंढ़ने का प्रयास करते हुए।

'ममा, अभी-अभी इंस्टीट्यूट से मेल आया है! लिखा है ...जॉइन इमीडीएटली, दुनिया में कोरोना वायरस के खतरे को देखते हुए रिसर्च को स्पीड अप करना है।" खिड़की से बाहर झांकती हुई वह बोली, जैसे आंखें कोपेनहेगन में जा टिकी हों।

"ओह! ऑलमोस्ट नो टाइम!" माँ तड़प उठीं; फिर मुस्कुराकर बोली, "भैया को बताती हूं टिकट बुक करने को।"

जाने से पहले वह सेंट्रल जेल जाकर सहज और सभी साथियों से मिल लेना चाहती थी। वहां जाने पर पता चला गंभीर आरोपों वाले विचाराधीन कैदियों से सिर्फ परिवार के लोग ही मिल सकते हैं। कलेजे में पत्थर लिए वह वापस लौट आई। घर आकर सहज के नाम एक संक्षिप्त पत्र पोस्ट कर आई, सेंट्रल जेल के पते पर। पत्र में लिखा था, 'डियर सहज, तुमसे मिलने जेल गेट तक गई थी, मिलने नहीं दिया गया, क्योंकि मैं अभी तक तुम्हारे परिवार का अंग नहीं बन पाई हूं; वैसे भी तुमसे मिलकर शायद मेरी मनोदशा और बिगड़ जाती; मैं 19 फरवरी को कोपेनहेगन जा रही हूं, रिसर्च को और डिले करना अनिष्टकारी हो सकता है देश-दुनिया के लिए; और शायद मेरे लिए भी! ज्यादा लिख नहीं सकती; मुझ पर यकीन रखना, मैं तुम्हारी बनकर ही जा रही हूं और तुम्हारी रहकर वापस भी आऊंगी; जब भी आऊंगी परिवार का अंग बनाने की तैयारी करके रखना, सेंट्रल जेल वालों ने मुझे गैर बना दिया, आई कांट टॉलरेट एनी मोर; लव यू।'

19 फरवरी, रात नौ बजे शायनी डिपार्चर के अंदर दाखिल हो गई; बाहर खड़ी ममा, मामी, मामा, मौसा, मौसी, मंजरी और दिनेश को मुस्कान के साथ बाय-बाय करते हुए। उसके एक-एक कदम आगे बढ़ते जाने से मंजरी को लगा था जैसे वह ब्लैक कोरोना को मसल रही है; अंदर का यकीन भी मजबूत होता जा रहा था, यहां रामघाट में साथी लोग इंडिया को ब्लैक एरा से आगे ले जाने पर काम करते रहेंगे।

अध्याय नौ

1

मार्च आते-आते कोरोना का ग्राफ फिर से ऊर्ध्वगामी होने लगा, जैसे भरपूर नींद लेकर जाग पड़ा हो। जनवरी-फरवरी में कोरोना के कल्पित मृत्यु-उत्सव की मदहोशी में सोया हिंदुस्तान अभी भी अलसाया पड़ा था, कोरोना की दूसरी लहर के कंपन से बेखबर! समाचारों में स्क्रीन के नीचे फौज सी तेज चाल भाँति चलता कोरोना अपडेट लोगों का ध्यान अपनी ओर नहीं खींच पा रहा था; ऐसे में सरकारी अमले को भला क्या पड़ी थी कोरोना में बेवजह माथा खपाते रहने की। मध्य मार्च आते-आते कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा एक लाख प्रतिदिन के आसपास चील भाँति मंडराने लगा। लोगों के कान खड़े होने लगे; सरकारी पूँछ थोड़ी-सी हिलती-डुलती दिखी। पांच राज्यों में अप्रैल में होने जा रहे चुनाव की चर्चा जोर पकड़ चुकी थी। भारतवासी की जुबां पर 'अबकी बार' का मल-युद्ध आरंभ हो चला था। चैनलों के समाचार शृंखला में चुनावी चर्चा दिनभर छाई रहती, फुल स्क्रीन में; ऐसे में स्क्रीन के नीचे दौड़ रहे कोरोना के आंकड़े किसी बुढ़िया के रोने-गाने-से जान पड़ते। एक महीने तक चलनेवाली लम्बी चुनावी जंग को देश के लिए एक बड़ा ऐतिहासिक लक्ष्य-सा प्रस्तुत किया जा रहा था; स्वाभाविक ही चुनावी समर में सत्ता लूटने में भिड़े महारथियों को कोरोना एक लंपट बंदर मात्र दिख रहा था।

पिछले वर्ष कोरोना की पहली लहर के लंबे दौर में शहरी नागरिकों के अल्पमत और ग्रामीण जनों के बहुमत को मास्क लगाना भले ही मजाक लगता हो, अब सर्वजन मास्क को चेहरे में डाले रखते थे, अंडर गारमेंट जैसा आत्मीय समझकर। ऐसे लोगों की कमी नहीं थी जो डबल मास्क लगाने के बाद भी मौत के खौफ से बाहर नहीं आ पा रहे थे। समय सच में डरावना

होता गया था; बीवी-बॉयफ्रेंड के सामने भी लोग मास्क उतारने की जहमत नहीं उठाना चाहते थे। मजबूत बटुआ वाले घरों में दुबक लेने में ही अपनी भलाई समझने लगे थे; दिन कमाने रात खाने वाले श्रेणी के लोग भी भूखे पेट रहकर भगवान को प्यारे होने से बचना चाहते थे। चमक-दमक वाले मार्केट में सन्नाटा पसरने लगा था, गुदड़ी बाजारों में भीड़ छंटने लगी थी। एक तरह से जनता ने खुद ही लॉकडाउन लगाना शुरू कर दिया था। कर संग्रह वाले बाजारों-प्रतिष्ठानों से कर वसूली स्वत: फीकी पड़ती गई थी, ऐसे में सरकारों के लिए लॉकडाउन लगाने का निर्णय लेने में दुविधा कम रह गई थी। स्वाभाविक ही लॉकडाउन के लिए माकूल माहौल देखकर राज्य सरकारें लॉकडाउन लगाने लगी थीं, भले ही उंगलियों में दिन गिन-गिन कर। लॉकडाउन के झंझट से मुक्ति पाकर सर्वोच्च सरकार के चेहरे में सुकून साफ झलक रही थी।

पिछले वर्ष कोरोना संक्रमितों को हासिल वीआईपी का दर्जा इस वर्ष छीन लिया गया था। दर्जा छीना ही नहीं गया था, बल्कि उनकी हैसियत गली के कुत्ते से भी गई-बीती हो गई थी। बीते वर्ष कोरोना संक्रमित कहीं भी पाए जाने की सूचना मिलते ही डीएम और सीएमओ ऑफिस का एंटीना नाच उठता था, उसकी खोज-खबर-खातिरदारी के लिए सरकार-शासन-सायरन की नजरें इनायत रहती थीं; अब खोज-खातिरदारी की छोड़िए संक्रमितों का नामलेवा तक नहीं था। कोरोना कंट्रोल केंद्र में फोन मिलाने पर ...मास्क पहनें सुरक्षित रहें...हाथ धोते रहें कोरोना भगाते रहें... का मनभावन संदेश मिनटों तक सुनाई पड़ता रहता, मधुर संगीत के साथ। जब किसी संक्रमित या उसके परिजन का कॉल रिसीव हो जाता था तो यह उन्हें किसी पूर्व जन्म की कमाई का फल जान पड़ता। संक्रमित के यह कहते ही कि मैं कोरोना पॉजिटिव हूँ, तो जवाब मिलता कि, 'पहले यह बताइए कौन पॉजिटिव नहीं है!' तब उन्हें कदाचित संतोष होता कि यह आम बीमारी है, इसमें अब घबराने जैसी कोई बात नहीं रही।

पिछले साल के एकमात्र केंद्र के विपरीत अब हर प्रांत की राजधानियों में लॉकडाउन घोषणा-केंद्रों का प्रादुर्भाव हो चुका था। बीते साल की उद्घोषक मंडली थककर चुप हो गई थी; शायद भविष्य में अन्य बड़े कार्यों के लिए ऊर्जा संग्रहित करने में मग्न हो गई हो। देश के कोने-कोने में ऑक्सीजन के अभाव में लाखों मरीजों की सांसें अटकी पड़ी थीं; पर हर

सरकारें इस अभाव को झुठलाने, गर्दन ताने भिड़े रहती थीं, अपनी सरकार के सही-सलामत सांसों के अटक जाने के भय से। बाहरी मुल्कों की मदद के बगैर ही कोरोना को पटकनी देने का संकल्प-संकेत दिया जा रहा था; यह बात दीगर है कि कालांतर में विदेशी सहायता की सुखद आमद पाकर अटकी सांसें चालू होने की खुशी साफ नजर आने लगी थी, देश के मुकुटधारी मस्तक पर। पिछले वर्ष ग्रामीण जन कोरोना को शहरी लोगों का शिगूफा कहते नहीं अघाते थे, अब वे सरकार-शासन की बाट जोहते नजर आते थे; थक-हारकर घाट-बाट नदी-नाला-कब्र किनारे 'राम नाम सत्य है' 'अल्लाह तेरी मर्जी' बोलकर परिजनों से छुट्टी पाने लगे थे। कारोबार-व्यवहार बंद होने से बुजुर्गों की जमात देश के भविष्य पर माथापच्ची करने लगते, अधेड़ दारू-पानी की जुगाड़ में भिड़े रहते तो छोकरा किस्म वाले चौक-चौराहों पर सुबह-शाम कोरोना फैलाने वाले चीन को टोकरी भर गाली देकर चैन की नींद सो जाते।

अप्रैल आते-आते श्मशान घाटों में दिन-रात जलती चिताओं ने चुनावी चर्चा को चित कर दिया। टीवी स्क्रीन में चिताओं से उठती लपटों से देशवासी की तंद्रा धीरे-धीरे टूटने लगी। अस्पतालों, शमशान घाटों, कब्रगाहों की वीभत्स तस्वीरें हर किसी को विचलित किए जा रही थीं। कोरोना के जानलेवा आक्रमण की तस्वीरें देखकर लोगों को लगा जैसे बीते वर्ष छीना-झपटी करने वाला चोर समूह, इस बार डाकू गिरोह बनकर टूट पड़ा है। देखते-ही-देखते अस्पताल दर अस्पताल कोरोना संक्रमितों से भरने लगे। अस्पतालों में ऑक्सीजन बेड के लिए मारामारी होने लगी। अस्पतालों के सामने ऑक्सीजन के लिए तड़पते लोगों की कतारें बढ़ती गईं। देश में ऑक्सीजन की भारी किल्लत जैसी खबरें चैनलों में चलते ही पूरा देश स्तब्ध था...'क्या आर्थिक महाशक्ति वाले आसन से फिसलते हुए हम मध्य अफ्रीकी देशों के दर्जे पर आ गए हैं?' देश के उच्च न्यायालयों, और सर्वोच्च न्यायालय में भी, ऑक्सीजन की उपलब्धता सुनिश्चित कराने की खातिर आरंभ हुई सुनवाई-शृंखला भगवान विष्णु के अवतार सदृश्य प्रकट होने लगी; तब जन-जन में विश्वास जगा शायद कोर्ट-कचहरी के कठघरे से ही ऑक्सीजन के पाईप लाईन का प्रादुर्भाव हो!

अस्पतालों के आगे ऑक्सीजन के लिए तड़पते मरीजों की कतारें, अस्पतालों के रियर गेट से निकलती लाशें, शमशान घाटों पर सामूहिक शवदाह की लपटें, कब्रगाहों में अनवरत चलते फावड़े की तस्वीरों से पूरी

दुनिया ने दांतों तले उंगली दबा ली...'रियली इज इट इंडिया?' विदेशी सोशल मीडिया में एक्टिविस्ट गैंग ने भारत का नया नामकरण भी कर दिया था, 'बातों का बादशाह!' भारत का विश्व गुरु वाला दर्जा हमारे ख्यालों में बरकरार था, पर विशेषज्ञों की नजरों में भारत का बिना मुखौटे वाला चेहरा सामने आने लगा; पर्दे पर किसी नायक-खलनायक का चेहरा स्लो मोशन में प्रकट होने की भाँति।

प्रांतीय-राष्ट्रीय स्तर के राजनीतिक दलों के शीर्ष राजनेताओं के वचन-वाणी और उनके चेहरों की भाव-भंगिमा के बीच का सर्वकालिक श्रेष्ठ तारतम्य उनके नियंत्रण से बाहर होता जा रहा था, कुछ-कुछ कोरोना जैसा ही; जैसा कि जब उनके वक्तव्यों-संबोधनों-उद्गारों में कोरोना वाला दर्द-ए-दिल बयां किया जा रहा होता तब उन चेहरों में आगामी चुनावों में बढ़त बचाने-बनाने की अंदरूनी बेचैनी स्वत: प्रकट हो उठती, भले ही तारतम्य बिगड़ जाने का उन्हें भान तक न हो।

2

किसी भी बिगड़ते हालात में कोई भी राजनीतिक दल सोया हुआ नहीं दिखना चाहता है; समस्या सामने हो तो सजग और कर्मठ दिखना राजनीतिक दलों की सेहत के लिए लाभप्रद माना गया है। राजनीतिक दलों को जनता के लिए समर्पित मुद्रा बनाकर सिर्फ बकना ही नहीं होता है, दुख की घड़ी में उसके साथ टिकना भी पड़ता है। बिगड़ते हालात का सम्मान करते हुए आज 5 अप्रैल को पार्टी ने अपनी कार्यकारिणी की बैठक मंथन सभागार में रख दी, सुबह दस बजे।

"मंथन सभागार में आप सभी पार्टी पदाधिकारियों का एक बार फिर से स्वागत है।" आसन ग्रहण करते ही पार्टी अध्यक्ष हरेंद्र ठाकुर ने सभी की ओर देखते हुए कहा, चेहरे में मुस्कान के किसी चिह्न के बगैर ही; आगे आंखें नीचे किए बोलते रहे, "जिस कोरोना को हम लोगों ने अपनी काबिलियत से दफन कर दिया था उसका जिन्न फिर से बाहर निकल आया है, अब आंखें सामने कहीं टिकाते हुए कहा, "हमें कभी-कभी सच्चाई भी स्वीकार करनी चाहिए; कोरोना सिर्फ वापस ही नहीं लौटा है, अपने कांटेदार पंजे को और खतरनाक बना डाला है इस बार!"

"हमें भी जानने का अधिकार है आखिर कोरोना के इस कदर भयानक

विस्तार के पीछे वजह क्या है! इसके लिए कौन लोग जिम्मेदार हैं?" युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष रवि मोहन ने कहा; उसके चेहरे में प्रतिरोध की परत उगती दिखी।

"देखो रवि कई मौकों पर मैंने तुम्हें सलाह दी है, पार्टी लाइन से हटकर ऐसा तर्क मत दो जिसकी कोई काट पार्टी के पास ना हो," रवि मोहन से नाराजगी व्यक्त करते हुए अध्यक्ष ने कहा, आगे बोले, "कोरोना के मामले में 'जिम्मेदार' शब्द का प्रयोग होते ही हम आरोपों से इस कदर घिर जाएंगे कि बाहर निकलना मुश्किल हो जाएगा!"

"मैं रवि को संतुष्ट करता हूं," मंथन मंच के काशीनाथ जी आंखें बड़ी करके बोलने लगे, "हर अकार्य की जिम्मेदारी किसी-न-किसी को लेनी पड़ती है या किसी पर डालनी पड़ती है; कोरोना को लेकर हमारा शीर्ष नेतृत्व शुरू से ही जनता को आगाह करता रहा है 'दो गज की दूरी मास्क जरूरी'! अब बताओ रवि, कोरोना के विस्तार की जिम्मेदारी किसकी हुई?" अब वह सिर हिलाकर-घुमाकर बोलने लगे, जैसे राजनीति का रामबाण मिल गया हो, "लेकिन जनता को सीधे-सीधे जिम्मेदार ठहराने के बजाय हमें गोल-गोल शब्दों का सहारा लेना चाहिए!"

"जिम्मेदारी वाली बात तो अमूर्त है, पर जो मूर्त है साक्षात सामने दिख रहा है उसका उपाय ढूंढ़ना पड़ेगा; रामघाट के अस्पतालों में ऑक्सीजन के टोटे पड़ गए हैं, श्मशान घाटों में चिता लगाने की जगह कम पड़ रही है!" शहर अध्यक्ष हरदेव शाह बोलने लगे तो लगा दुनिया का अंत अभी इसी मंथन सभागार में हो जाएगा; आगे कनपटी को दोनों हथेली से थामते हुए बोलते रहे, "यह हाल सिर्फ रामघाट का नहीं है, चैनलों में तो दिख रहा है देश के हर कोने से ऐसी ही तस्वीरें आ रही हैं!"

"हां, इस प्रकार के दृश्यों से निपटने की रणनीति हेतु कल पार्टी मुख्यालय से सुझाव भी माँगे गए हैं।" बोलते हुए अध्यक्ष बेबस दिखे, जैसे अब कहीं कोई उपाय बचा ही ना हो।

"संकट के समय संगठन को सटीक सलाह देना हमारा परम दायित्व है।" एक कोने में चुप बैठे मंथन मंच के रामनाथ आलोक ने धीमे से कहा, फिर मुखर हो उठे, "मीडिया में अस्पताल के आगे ऑक्सीजन के लिए हांफते मरीजों की जो तस्वीरें दिखाई जा रही हैं हमें उसे रोकना होगा!"

"चैनलों में चल रहे समाचारों को रोकने का कोई उपाय?" युवा रामनरेश

की जिज्ञासा जाग उठी।

"तुम्हें अभी जिला कार्यकारिणी में ज्यादा समय नहीं हुआ है, धीरे-धीरे सब जान जाओगे।" अध्यक्ष ने रामनरेश की तरफ तर्जनी से 'नो' का संकेत करते हुए कहा।

"पर ऑक्सीजन की किल्लत वाली बात तो पूरी दुनिया देख रही है।" रवि मोहन रोक ना पाया अपने को।

"ऑक्सीजन की किल्लत वाली बात सिरे से खारिज करते रहना चाहिए हमें, पार्टी प्रवक्ता के प्रेस नोट से और मंत्री-मुख्यमंत्री-शीर्ष नेतृत्व के दैनिक वक्तव्य के माध्यम से भी।" काशीनाथ जी ने गूढ़ सूत्र देने की मुद्रा बनाते हुए कहा; आगे परम ज्ञानी भाँति बोले, "कोरोना का जो स्वरूप अब दिख रहा है उसे आप पागल हाथी कह सकते हैं, हमारे-आपके रोकने से रुकने वाला नहीं है ये पागल कोरोना! मंथन सभागार से आज आप यह नोट करके ही जाएं कि कोरोना की आव भगत आपके आसन-स्थापना को पक्की नहीं कर सकती, आसन के स्थायित्व के लिए हमें सूत्र और मंत्र गढ़ने ही पड़ेंगे!"

"लेकिन चैनलों में श्मशान घाटों की जो भयावह तस्वीरें आ रही हैं क्या हम उसे छिपा पाएंगे।" अब रवि मोहन ने उखड़ते हुए कहा।

"रवि मोहनजी, आपको पार्टी के पक्ष में बात करनी चाहिए न कि घाव को नासूर बनाना चाहिए; श्मशान घाट में जलती चिताएं भी एक-दो दिन में बुझ जाएंगी।" रामनाथ आलोक ने रहस्यमयी आवाज में कहा।

"तो क्या कोरोना एक-दो दिन का मेहमान मात्र है!" रामनरेश उछल पड़ने को हुआ।

"मैं कोरोना की नहीं चिता से उठती लपटों की बात कर रहा हूं; चैनलों में दिखाई जा रही चिताओं की तस्वीरों का प्रसारण बंद करवाना पड़ेगा हमें!" रामनाथ आलोक ने काशीनाथ जी की ओर कनखियों से देखते हुए कहा।

"क्या हम चैनलों पर सेंसर लगाने जा रहे हैं?" अब रवि मोहन उत्तेजित हो उठा।

"मिस्टर रवि मोहन! पार्टी लाइन से हटकर बोलने की प्रकृति पनपती जा रही है आप में, मैं आपको चेतावनी देता हूं आप इस कार्यकारिणी की आज की बैठक से निकाले जा सकते हैं; और आगे पार्टी..." आगे बोलने से अध्यक्ष ने रोका अपने को।

"रवि मोहनजी आपको धैर्यपूर्वक सोचना चाहिए, यह पार्टी गहन चिंतन के

लंबे दौर के बाद ही आज शिखर पर विराजमान है; मैं सीधा सूत्र बताता हूं।" देदीप्यमान मुख-मुद्रा बनाकर काशीनाथ जी बोलने लगे, "सभी चैनलवालों के लिए एडवाइजरी तो हम जारी कर ही सकते हैं, कि ऐसा कोई विजुअल ना दिखाएं जिससे जनता में घबराहट फैले और देशभर में अफरा-तफरी का माहौल बने!" फिर चेहरे में कठोरता लाकर बोले, "यदि फिर भी मीडिया वाले नहीं मानेंगे तो हमें साम-दाम-दंड-भेद की नीति पर चलना ही पड़ेगा!"

"लेकिन देश के नौजवान तो सोशल मीडिया से चिपके रहते हैं दिन-रात! वहां चल रहे विजुअल्स को सरकार कैसे कंट्रोल कर पाएगी भला?" रामनरेश ने सरकार की सर्वव्यापी समस्या सामने रखी।

"ऐसे विजुअल्स के भ्रूण को ही नेस्तनाबूद कर देने के उपाय पर भी काम चल रहा है!" काशीनाथ जी उंगली से कोड-वर्ड-सा कुछ संकेत करते हुए बोले।

"मेरी दृष्टि साफ-साफ देख पा रही है, भविष्य का भारत सूत्र-संकेत गुप्त-मुफ्त से चलायमान नहीं हो सकता; पिछले वर्ष कोरोना से निपटने के लिए हम भगवान की भूमिका में दिख रहे थे, इस बार भगवान की कोई भूमिका नहीं दिख रही, मेरे विचार से हम सभी को भगवान के बजाय भक्त की भूमिका में आ जाना चाहिए..." बोलते-बोलते वह कुर्सी छोड़कर दरवाजे की ओर बढ़ता गया।

रवि मोहन के सभागार से निकल जाने के बाद वहां अनामंत्रित सन्नाटा छा गया। सन्नाटे पर विजय प्राप्ति हेतु अध्यक्ष को खुद पहल करनी पड़ी, "गुरुदेव, मुझे भी जरा मार्गदर्शन चाहिए; कोरोना की विकराल स्थिति के बीच बंगाल चुनाव अभियान में अपने कई-कई मंत्री-मुख्यमंत्री से लेकर शीर्ष नेतृत्व के कई दिग्गज तक वहां डटे पड़े हैं, इसके औचित्य के बारे में प्रेस में बोलने के क्रम में कहीं मैं खुद न अटक जाऊं!" अध्यक्ष ने कहा तो लगा पार्टी स्टैंड को लेकर वह खुद संशय में पड़े हुए हैं।

"बहुत सीधा और सरल उत्तर होना चाहिए।" चेहरे में मुस्कान का अंकुरण उगाते हुए काशीनाथजी ने कहा, फिर संपृक्त भाव से बोलते गए, "लोकसभा और विधानसभा के चुनाव तो सबसे बड़ा संवैधानिक दायित्व है, बल्कि शांतिपूर्ण चुनाव कराना तो और भी महती जिम्मेदारी है; आगे बोलने के लिए यह भी जोड़ सकते हैं महामारी और संविधान दोनों अलग-अलग चीजें हैं! दोनों की बात एक साथ मत उठने दीजिए।"

"मैं तो पार्टी का एक अदना जिला कोषाध्यक्ष हूं, यदि अनुमति हो तो पार्टी फंड से हटकर एक अलग मुद्दे पर अपनी बात रखना चाहता हूं।" कोषाध्यक्ष हरिराम गुप्ता ने अध्यक्ष की तरफ हाथ जोड़ते हुए कहा; अध्यक्ष का सिर कंपित होते ही बोलने लगे, "इस बार कोरोना वायरस रौद्र रूप धारण करता जा रहा है, इस सच्चाई से हम आंखें नहीं मूँद सकते; मेरी व्यक्तिगत राय है, इससे निपटने के लिए हमें बिना देर किए अंतरराष्ट्रीय मदद माँगनी चाहिए!"

"गुप्ताजी की बात से मैं भी सहमत हूं, यदि समय रहते हमें अंतरराष्ट्रीय मदद नहीं मिली तो पूरा देश कोरोना के चंगुल में बुरी तरह जकड़ जाएगा!" बोलते-बोलते अध्यक्ष के चेहरे में कोरोना का भय प्रकट होने लगा।

"यह सब तो विदेश नीति संबंधी मसले हैं, फिर भी मैं अंदर की कुछ बातें शेयर कर सकता हूं।" काशीनाथजी आंखें छोटी करके बोलने लगे, "इसमें कोई शक नहीं, स्थिति सचमुच नियंत्रण से बाहर होती जा रही है, बड़े देशों से ऑक्सीजन-दवाई-वेंटिलेटर की तत्काल मदद के बगैर स्थिति से निपटना मुश्किल होगा; पर अभी तक हमने खुलकर किसी देश से मदद माँगी नहीं है, जानते हैं क्यों?" काशीनाथजी ने सभी पदाधिकारियों की तरफ एक-एक करके देखते हुए कहा, जैसे गुरु द्रोणाचार्य अपने शिष्यों को कोई महत्वपूर्ण पाठ पढ़ा रहा हो।

"....." बड़ा रहस्य सुनने से वंचित रहने से बचने की खातिर सभी ने कान पूरे खोल लिए, होंठ स्वत: चिपक गए; सभागार में घनघोर चुप्पी छा गई।

"इसके पीछे एक गंभीर कूटनीतिक कारण है; हमने इंडिया को पूरी दुनिया के सामने एक महाशक्ति के रूप में प्रचारित कर रखा है, यदि हम खुद मदद की भीख माँगेंगे तो हमारी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी!" काशीनाथ जी मुंडी हिलाकर बोलने लगे, जैसे कोई पुराना राजा-रजवाड़ा बोल रहा हो; आगे आवाज को रहस्यपूर्ण बनाते हुए धीमे स्वर में बोले, "इसका मतलब यह नहीं है कि हमारी कूटनीतिक टीम शांत बैठी है, वे तो दिन-रात मेहनत कर रहे हैं कि सांप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे!" बोलकर काशीनाथ जी ने रामनाथ आलोक की ओर देखकर मुस्कुरा दिया, फिर सभी की ओर देखकर कहा, "बहुत जल्दी आप सभी चैनलों में कर्ण-सुख प्राप्त कर पाएंगे कि दुनिया के कई देश इंडिया की मदद के लिए खुद-ब-खुद आगे आ रहे हैं!" अब अध्यक्ष से मुखातिब होकर बोले, "तो अध्यक्ष महोदय, कोरोना काल में अब हम अनुमति चाहेंगे; आज की बैठक में उठे बिंदुओं पर हुए विमर्श

और निष्कर्ष का सार-सलाह पार्टी मुख्यालय को भेज दें।"

"अभी-अभी एसपी निशांत कुमार का मैसेज आया है।" मोबाइल स्क्रीन में आँखें गड़ाए अध्यक्ष ने कहा, फिर मैसेज पढ़ने लगे "...सर आपको और मंत्रीजी को बिना बताए मैंने खुद निर्णय लेकर पार्टी लाइन के हिसाब से एक बड़ा काम कर दिया है; श्मशान घाटों पर जलती चिताओं का फोटो लेने वाले पत्रकारों, स्वतंत्र मीडिया मैनों को हमने धारा 144 के तहत खदेड़ना शुरू कर दिया है, आगे आदेश होगा तो अस्पतालों के आगे-पीछे मंडराते मीडिया कर्मियों को भी चिकित्सा व्यवस्था में व्यवधान पहुंचाने की धारा में उठवा लूंगा!"

"यस, इसे कहते हैं काबिल ऑफिसर!" शहर अध्यक्ष हरदेव शाह बोलने लगे, जैसे यहीं बैठे-बैठे एसपी की पीठ ठोक रहे हों, "पिछले साल भी उसे राष्ट्रपति मेडल मिला था, कोरोना से जंग जीतने के लिए; इस बार भी मुख्यमंत्री से अनुरोध कर उसका नाम पद्म पुरस्कार के लिए आगे भेजना चाहिए।"

"समय आने पर इस विषय में मैं खुद मुख्यमंत्रीजी से बात कर लूंगा।" अध्यक्ष ने शहर अध्यक्ष की ओर हथेली दिखाते हुए कहा, फिर हड़बड़ी दिखाते हुए बोले, "चूँकि कोरोना का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है, फिलहाल आज की बैठक यहीं खत्म की जाए; कोरोना का रूप देखकर मुझे नहीं लग रहा कार्यकारिणी की बैठक इतनी जल्दी फिर हो पाएगी; अंत में एक बात नोट करके जाएं, अपने कार्यकर्ताओं का यह दायित्व है कि वे जनता में विश्वास जगाए रखें कि ऐसी महामारी हर शताब्दी में एक बार आती ही आती है, इसमें सरकार का कोई कसूर नहीं है, जो है वह प्राकृतिक है! जय हिंद, जय भारत!" अध्यक्ष द्वारा बैठक का समापन करते ही सभी अधिकारियों के चेहरे में संतोष की रेखाएं उग आईं; जैसे कोरोना सरकार के लिए, और पार्टी के लिए भी कोई बड़ा संकट नहीं है।

3

मंथन सभागार में पार्टी की आहूत बैठक की खबर पुरानी पार्टी के अध्यक्ष तक पहुँच चुकी थी, कल ही। बिना समय गवाएं उसने रात में ही अपने पदाधिकारियों को मैसेज फॉरवर्ड कर दिया, कार्यालय में ग्यारह बजे पधारने के लिए।

"आज की आपातकालीन बैठक में कम ही पदाधिकारी दिख रहे हैं; जितने भी आ सके हैं सभी का स्वागत है।" अध्यक्ष जयपाल मंडल ने बैठक

की औपचारिक शुरुआत करते हुए कहा। बोलकर कुछ देर चुप रहे, शायद आगे बोलने के लिए पहले से सोच कर न आए हों। कम उपस्थिति वाला बड़ा हॉल घनघोर चुप्पी से और भी डरावना हो उठा, लगा जैसे इतनी पुरानी पार्टी कहीं आज इसी हॉल में न दफन हो जाए! अध्यक्ष का मौन मुख खुला, "उन लोगों ने 'आपदा एक अवसर' का नारा कई महीनों से बुलंद कर रखा है; मेरा ख्याल है आपदा एक अवसर सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए नहीं हो सकता न! हमें भी तो इसे एक बड़े अवसर के रूप में देखना चाहिए।" अंतिम वाक्य बोलते-बोलते अध्यक्ष के चेहरे में मुस्कान की रेखाएं उगती दिखीं, आगे चेताने की मुद्रा में बोले, "याद रखिए, यदि अगले चुनाव में भी हमारी वापसी नहीं हुई फिर तो हमारी जगह सिर्फ इतिहास के पन्ने में रह जाएगी; किसी चैप्टर के एक-आध पेज में, वो भी उपहासपूर्ण शब्दों वाले सम्मान के साथ!"

"माफी चाहूंगा अध्यक्ष महोदय।" चेहरे में पसर चुके व्यंगपूर्ण मुस्कान को रोकते हुए शहर अध्यक्ष नरोत्तम हरि बोलने लगे, "अभी पूरा देश कोरोना के भयानक चंगुल में फंसता जा रहा है; ऐसे प्रतिकूल समय में अवसर की बात करना इस पार्टी के राजनीतिक सिद्धांत के अनुरूप नहीं है!"

"नरोत्तमजी, कभी-कभी मैं खुद भटक जाता हूं कि आप पार्टी के अंदर हैं या बाहर? राजनीति का एक सीधा और सरल-सा फॉर्मूला है हर पार्टी को हमेशा अवसर की तलाश रहती है, खास करके सत्ता से बाहर हो चुकी पार्टी को; अदर वाइज वह फिर से सत्ता में वापस आ नहीं पाएगी कभी!"

"तो क्या कोरोना महामारी की इस सुनामी में हम हाथ में हाथ धरे बैठे रहें? सत्ता से बाहर हो जाने का क्या मतलब है कि इस भयानक संकट के समय भी हम जनता के लिए कुछ करें ही नहीं!" युवा प्रकोष्ठ महासचिव प्रशांत धीर ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा; अब तक की संक्षिप्त चर्चा की दिशा से शायद उसे घुटन होने लगी थी।

"जनता हेतु कुछ करने के लिए किसने-किसको रोका है!" जयपाल मंडल की स्वर ग्रंथि से उपहास मिश्रित वायु निकली, आगे स्वर और व्यंग्यमय होता गया, "जीवन-मरण की इस बेला में हर कोई पहले खुद को, खुद के परिवार को बचाने में व्यस्त है; समय निकल पाए तो पड़ोसी को भी देख सकते हैं, यदि आपके पास बेजा पैसा है तो गांव-गली-मोहल्ला क्या पूरे शहर को बचाने का बीड़ा उठा सकते हैं!"

"यानी कि पार्टी के स्तर से कोरोना संक्रमितों की मदद के लिए कुछ

नहीं किया जा सकता है?" प्रशांत धीर अधैर्य हो उठा।

"तुम युवा हो, समझने का प्रयास करो; पार्टी फंड की हालत शायद तुम्हें पता ना हो, पार्टी कोष की स्थिति में इतनी कसावट आ गई है कि खुद कोषाध्यक्ष आज की बैठक में भी नहीं पहुंच पाए हैं!" जयपाल मंडल ने सिर पटक लेने जैसा हाव-भाव बनाते हुए कहा।

"फिर तो इस पार्टी में रहकर जनता के लिए कुछ करने का अवसर ही कहां बचा है! अब..." प्रशांत धीर कुछ और बोलना चाह रहे थे, पर इतना बोलकर ही रोक लिया अपने को।

"स्पीकिंग वेरी फ्रेंकली, यह पार्टी अब उस स्थिति में नहीं है कि किसी को पार्टी से निष्कासित कर दे; अपने पोजीशन को देखते हुए किसी सहयोगी को मैं यह सलाह भी नहीं दे सकता कि पार्टी से निकल जाने में ही भलाई है!" जयपाल मंडल ने लाचारगी व्यक्त करते हुए कहा, कथन में कई झोल डालते हुए।

"अनुज प्रशांत; समझदार के लिए इशारा ही काफी है, समय रहते अपने राजनीतिक भविष्य के सटीक मार्ग पर चल पड़ो!" नरोत्तम हरि ने प्रशांत धीर की ओर आंख मारते हुए कहा।

"नरोत्तमजी, मैं स्पष्टवादी हूं! दो नावों की सवारी करते रहना मानव मात्र का उसूल नहीं है, यहां की बात वहां और वहां की बात कहीं और करना सस्ती राजनीति है; अब आगे जो भी करूंगा जन-जन के लिए करूंगा।" बोलते-बोलते प्रशांत धीर कुर्सी छोड़ चुके थे। उसके हॉल से निकलने के बाद वहां मरघट-सा सन्नाटा पसर गया; लगा पार्टी की लाश खुद चलकर हॉल में आकर बैठ गई हो, प्रशांत धीर वाली खाली कुर्सी पर।

"महामारी का खौफनाक दौर चल रहा है; अध्यक्ष महोदय से गुजारिश है इससे पहले कि हॉल पूरा खाली हो जाए, कृपया बता दीजिए कोरोना की दूसरी लहर के दरमियान पार्टी पदाधिकारियों-कार्यकर्ताओं के लिए क्या निर्देश है?" ग्रामीण प्रकोष्ठ अध्यक्ष जमील अहमद ने चर्चा को पटरी पर लाने की गरज से कहा।

"पार्टी मुख्यालय से कल शाम ही कुछ निर्देश प्राप्त हुए हैं, हमारे वक्ता कार्यकर्ता को उसी अनुरूप बोलना-बढ़ना है।" जयपाल मंडल फिर से अध्यक्ष की मूल भूमिका में दिखते हुए बोलने लगे, "बोलने के दौरान ख्याल रखें कि कम-से-कम शब्दों का प्रयोग करें, क्योंकि लंबे वक्तव्य में फिसलने-भटकने

की पूरी संभावना रहती है।" बैठक समाप्ति की ओर बढ़ने की मुद्रा बनाते हुए अध्यक्ष ने कहा।

"पर यह तो बताइए हमारे बोलने के टारगेट पर कौन होगा! क्या होगा?" असमंजस में पड़े जमील अहमद ने पूछा।

"टारगेट में हमेशा सरकार-सत्ता ही तो होती है!" अध्यक्ष के मुंह से गुरु वचन-सा निकला।

"फिर भी कोई सूत्र-वाक्य?" पीछे गुमसुम बैठे किसी पदाधिकारी की आवाज आई।

"कोरोना की वर्तमान सुनामी को देखते हुए सरकार पर हमला करने के लिए कोई एक सूत्र वाक्य निकालना मुश्किल है; हां, ऐसा वाक्य-वचन ना बोलें जिससे हमारी पार्टी पर गिद्ध-राजनीति या लाशों पर राजनीति करने की तोहमत लगे!" चिंतन प्रकोष्ठ के आत्मा प्रसाद ने मार्गदर्शन किया।

"....." हॉल में बैठे गिने-चुने पदाधिकारी एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

"हमारे युवा चिंतक के बताए मार्गदर्शन पर बोलने, वक्तव्य देने का प्रयास करें।" पदाधिकारियों को उधेड़बुन में पड़ा देखकर चिंतक मंडली के दिग्गज मंडन ओझा ने चुप्पी तोड़ी, आगे संकेत-सूत्र समझाया, "जैसे कि, आप अ क घ ज न म स आदि अक्षरों से शुरू होनेवाले शब्दों का सहारा ले सकते हैं।"

"मसलन?" किसका मुंह खुला पता न चल पाया।

"मसलन बोले तो कोरोना, कुंभकरण! अहंकार! नाकामी! घोर! घमंड! सौदागर! मौत! मिथ्या! जनमन की बात! हालात! लेकिन ध्यान रखें, किसी भी वाक्य में पाँच से ज्यादा शब्दों का प्रयोग कतई न करें, अन्यथा आप पार्टी के लिए मददकारक के बजाय बँटाधारक बन जाएँगे!"

"मेरे हिसाब से हमारे वरिष्ठ चिंतक ने ढेर सारे सूत्र दे दिए हैं।" आवाज में संतोषजनक बैठक संपन्न हो जाने का भाव डालते हुए अध्यक्ष ने कहा; फिर मोबाइल स्क्रीन में गड़ते हुए भयातुर बन आई मुद्रा में बोले, "अभी-अभी सोशल मीडिया में मैसेज चल रहा है कि लांसेट इंस्टीट्यूट्स करके कुछ है, जिसने यह साबित कर दिया है कि कोरोना हवा से फैलता है!" फिर हड़बड़ी में कुर्सी छोड़ते हुए बोलते गए, "जय हिंद, इंकलाब जिंदाबाद।"

सुबह-सबेरे मंजरी के नंबर पर किसी अनजान नंबर से मैसेज आया; तीन शब्द तो स्क्रीन में ही दिख रहे थे '...साथी रवि मोहन...। उसने मैसेज

खोला; तीन बार मैसेज सेंट किया गया था, एक-एक करके पढ़ने लगी '... मेरा नाम रवि मोहन है, आप शायद मुझे नहीं पहचानती होंगी, वैसे मैं आप लोगों से मिल चुका हूँ...' मंजरी के अंदर से आवाज आई '...न जाने नेता लोग जनता की स्मृति को कमजोर क्यों समझते हैं! मुझे याद है, ये श्रीमान पार्टी में युवा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष हैं,' फिर आगे पढ़ती गई '...मुझे याद है पिछले साल अप्रैल में आप लोग पार्टी कार्यालय आए थे, लॉकडाउन से प्रभावित गरीबों की सहायता के लिए; उस वक्त कोई सहायता नहीं दिला सकने के लिए मैं अभी तक शर्मिंदा हूं।' पहला मैसेज पढ़कर मंजरी अचरज में पड़ गई, पॉलीटिशियंस को कब से शर्म आने लगी! सिर झटककर वह दूसरा मैसेज पढ़ने लगी 'सच में कोरोना ने रामघाट का और पूरे देश का जो हाल किया है वह किसी से छिपा नहीं है, कोरोना के बाद भी रामघाट को देश को न जाने कितनी बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा! स्वतंत्र सोच वाले नौजवानों के साथ मिलकर मैं भी देश और समाज की बेहतरी के लिए योगदान देना चाहता हूं, मुझे कोई शक नहीं आप लोगों वाली कोरोना-मंडली से जुड़े नौजवानों की सोच पूरी सदी की सोच है! मैं कोरोना-मंडली के कंधे से कंधे मिलाकर चुनौती का सामना करने में सहयोग देना चाहता हूं; एक बात और बताना चाहता हूं, पुरानी पार्टी में युवा प्रकोष्ठ महासचिव प्रशांत धीर भी कोरोना-मंडली से जुड़ना चाहते हैं, वह खुद भी आपसे आज कल में बात करने की कह रहे थे; पार्टी से जुड़ा हुआ एक और नवयुवक है भुवन, वह रामू से काफी प्रभावित है; हम तीनों की राय है देश-प्रदेश में राजनीतिक पार्टियों के शिखर पुरुषों की सोच पिरामिड के शीर्ष जैसी ही सिकुड़ती जाती है, वह स्व-जन स्व-पार्टी की परिधि से बाहर नहीं आ पाते; ऐसी विकट परिस्थिति में निष्पक्ष और स्वतंत्र सोच वाले नवयुवकों को आगे आकर एक नई राह बनानी पड़ेगी!' दूसरा मैसेज पढ़कर मंजरी को अंदर से मजबूती का एहसास होने लगा; फटाफट तीसरे मैसेज में नजर दौड़ गई 'और हां, कोरोना-मंडली के सदस्यों की गिरफ्तारी प्रकरण में अपनी बेबाक राय मैंने पार्टी पदाधिकारियों को दो टूक बता दी है, कि उन नौजवानों की गिरफ्तारी निश्चित रूप से शक्ति का बेजा दुरुपयोग है; मुझे पूर्ण विश्वास है वे सभी जल्द ही बाहर आएंगे, मैंने एक तरह से पार्टी से खुद ही किनारा कर लिया है, मेरे लायक कोई काम हो तो बेहिचक बताइएगा, प्लीज; साथी रवि मोहन'। मैसेज पढ़कर मंजरी का मस्तिष्क कहीं दूर की दौड़ लगाने

लगा; तर्जनी मोबाइल के की-बोर्ड पर चलने लगी, थैंक यू लिखने और 'रवि भैया रामघाट' सेव करने।

4

अप्रैल के आखिर तक बस्ती एरिया के गंभीर रूप से संक्रमित दस पेशेंट को ही ऑक्सीजन बेड मिल पाया था, जिला अस्पताल में; पंद्रह मरीजों के परिजन ऑक्सीजन बेड पाने के लिए नाक रगड़ रहे थे, अपने पेशेंट को अस्पतालों के आगे हांफते-तड़पते हालत में देखते हुए। उदय के लाख कोशिश के बावजूद हरिजन टोली के मात्र चार पेशेंट को ही ऑक्सीजन सपोर्ट में लिया जा सका था; बाकी छह पेशेंट छाती के बल यहां-वहां लेटे पड़े थे, श्रीराम याद करते हुए। ऐसे लोगों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही गई जो अनाम अनजान आसन आजमाकर कोरोना के काया-प्रवेश को वर्जित कर रहे थे। यूं तो डीएम ने रामघाट के नौ प्राइवेट अस्पतालों को कोविड अस्पताल घोषित कर रखा था, पर उन अस्पतालों में ऑक्सीजन बेड हासिल करने का ख्वाब भी नहीं पाल सकते थे बस्ती एरिया के कोरोना पेशेंट। जरूरतमंदों को बेड उपलब्ध कराने की खातिर उदय सुबह से रात तक यहां-वहां दौड़ता-भागता रहता। रामू, परवेज, शायनी, सहज, अहम के बगैर मंजरी के वश में ज्यादा कुछ नहीं था, सिवाय जरूरतमंदों को समयोचित सलाह देते रहने के।

रामू की माँ की सांस फूलने की बात सुनते ही मंजरी का दम फूलने लगा। वह कल दोपहर ही तो वहां से लौटी थी रसोई पानी निपटाकर; माँ तो भला चंगा थी! अभी सवेरे-सवेरे दिनेश के मैसेज से वह घबरा उठी, '...चाची की सांस काफी तेज चल रही है, अस्पताल ले जाना पड़ सकता है, तुम जल्दी इधर को आओ; वैसे कोरोना का कोई लक्षण तो नहीं दिख रहा है, फिर भी उदय भैया को बताकर रखना; हो न हो कोरोना ही निकल आए और अचानक ऑक्सीजन बेड की जरूरत पड़ जाए।' मंजरी को थोड़ी तसल्ली हुई ...दिनेश सही कह रहा है, कल दोपहर उसके लौटते वक्त तो माँ बिल्कुल ठीक थी; न बुखार, न जुकाम, न कफ, न खांसी? नहीं-नहीं कोरोना होने का तो सवाल ही नहीं है, वह बेचारी तो घर से बाहर कहीं जाती भी नहीं हैं!...' वह झटपट नहा ली; किचन में रखे बेड सॉस खाकर निकल पड़ी। उदय भैया मरीजों की पैरवी में निकल पड़े थे; उसे छोटा मैसेज कर दिया '...माँ की तबीयत भी थोड़ी ढीली लग रही है, वहां पहुंचकर बताती हूं।'

माँ की हालत देखकर मंजरी का कलेजा धक से कर उठा; खटिया के दोनों पाए पकड़कर वह जोर-जोर से सांस लेने का प्रयास कर रही थीं, आंखों में लालिमा चढ़ आई थी। मंजरी ने उसके कपाल में हाथ रखा, कोई ताप महसूस नहीं हुआ। नब्ज टटोलकर देखा, बुखार तो नहीं लग रहा था? घर से थर्मामीटर लेकर चली थी। माँ की काँख के नीचे थर्मामीटर रखा; मिनटभर बाद देखा टेंपरेचर कोई खास नहीं चढ़ा था, बस 98.6 ही था। माँ का माथा सहलाती हुई दुलार से पूछी, "मम्मी, देह में दर्द-जकड़न तो नहीं है?" "बहुत दर्द है बेटा, देह तो जैसे टूटकर चूर हो जाएगा!" बड़ी मुश्किल से वह बोल पाई। उसकी बेवश आवाज सुनकर मंजरी का मन घबरा उठा; माँ की आवाज से सुरीलापन पहली बार उड़ गया-सा महसूस किया उसने।

"आपकी पसंद की खीर बना दूं, ताकत मिलेगी।" उसने लाड़ से पूछा।

"अरे बिटिया, मौनी सुबह-सुबह मेरी पसंद का पापड़ तलकर लाया था।" बायां हाथ कपाल में धरती हुई वह बोलने लगी, "यह मौनी तो जिंदगीभर मूर्ख ही रह गया; न जाने कैसे तला था कोई स्वाद ही नहीं आ रहा था!" बोलते-बोलते उसकी आवाज में पीड़ा सवार होती गई।

बेस्वाद वाली बात से मंजरी का माथा ठनका...'यह सब तो कोरोना के लक्षण हैं!' मोबाइल कांटेक्ट में वह किसी डॉक्टर-नर्स का नंबर ढूंढ़ने लगी; जिला अस्पताल में स्वैच्छिक सेवा के दरम्यान वह शायद किसी डॉक्टर का नंबर नहीं ले पाई थी, कुछ नर्स दीदी का नंबर जरूर ली थी। ...मारथा दीदी जिला अस्पताल... स्क्रीन में उगते ही उसकी जान में जान आई; उसने नंबर रिंग कर दिया। पूरा रिंग जाने के बाद भी कॉल रिसीव नहीं हुआ; शायद उसका नंबर सेव नहीं होगा मारथा के मोबाइल में। बिना देर किए उसने मैसेज सेंड कर दिया 'गुड मॉर्निंग दीदी, मैं मंजरी; यू नो रामू, उसकी माँ का कंडीशन ठीक नहीं है; सांसें फूल रही हैं, बुखार तो अठानबे-निन्यानबे के बीच ही है, पर दर्द से बदन टूट रहा है; और खाने में कोई स्वाद नहीं आ रहा है!' मारथा दीदी का रिप्लाई आने के इंतजार में वह बेचैन रही, शेड से माँ के कमरे तक चहलकदमी करती हुई। आधे घंटे बाद मारथा दीदी का मैसेज आया, 'मंजरी, होप ऑल इज वेल; माँ का सिम्टम्स कोविड लगने का, कोविड का नया वेरिएंट आने का, सिम्टम्स जल्दी नहीं दिखने का, बट आफ्टर वण वीक पेशेंट को सडेनली क्रिटिकल कर डालने का! मैं कोविड मेडिसिन पर्ची सेंड करने का; तेरे को ध्यान देने का, टू आवर आफ्टर

डिनर एवरमेक्टिन 12mg थ्री डेज देने का, एजीथ्रोमाइसिन थ्री डेज देने का, फोर्थ डेज से डोक्सी सिलिन फाइव डेज देने का, विटामिन सी एंड जिंक मल्टीविटामिन डेली देने का; आई होप तुम भी विटामिन सी मल्टीविटामिन स्टार्ट करने का; नो कोविड बेड इन एनि हॉस्पिटल! पहले बेड अरेंज करने का, मिन व्हाईल आंटी को होम ट्रीटमेंट देते रहने का, कंडीशन क्रिटिकल होने का देन मेरे को बताने का...' मारथा दीदी का मैसेज पढ़कर उसने गहरी सांस ली...'कोरोना वार्ड में उसकी आंखों के सामने अधिकांश मरीज तो चंगा होकर घर लौटी थी, वह भला माँ को क्यों नहीं चंगा कर पाएगी; वह भी जब रामू जेल में बंद हो!" उसने दवाई की पर्ची दिनेश के नंबर पर फॉरवर्ड कर दी, 'जितनी जल्दी हो सके कहीं से भी यह वाली दवाइयां लेकर आओ।'

दूसरे-तीसरे दिन तक माँ की तबीयत में सुधार दिखने लगा; कभी मंदिर ना जाने वाली मंजरी कल या परसों मंदिर जाकर भगवान के आगे नतमस्तक हो जाना चाहती थी। भगवान को शायद देरी रास न आती हो; रात को माँ की छाती धौंकनी जैसी चलने लगी। उसे समझते देर नहीं लगी, यह कोरोना का वही वाला वेरिएंट है जो पिछले कुछ दिनों से अखबारों में पढ़ती आ रही है। रात के दो बज रहे थे; उसने उदय भैया को माँ की हालत मैसेज से बता दी। सुबह चार बजे के करीब उदय का मैसेज आ गया... 'सुबह होने ही वाली है, फ्रेश होकर आता हूं; लड़ झगड़कर एक बेड का इंतजाम तो कर ही लूंगा।'

5

माँ को ऑटो में बिठाकर मंजरी अस्पताल के लिए चल पड़ी; अब उसे अंदर की बेचैनी कम होती महसूस हुई...'घर में तो रिस्क था, अब सब ठीक हो जाएगा।' अस्पताल का भव्य मुख्य द्वार दूर से देखते ही उसका मन और हल्का हो गया...'हां, यह तो अपना अस्पताल ही है! कितना सुकून मिला था उसे यहां पर स्वैच्छिक सेवा देकर, बिल्कुल सही जगह पर आई है वह।'

मुख्य द्वार से आगे बिना पास वाली गाड़ी का जाना प्रतिबंधित था। कोविड-19 अस्पताल संकेत चिह्न की दिशा में वह बढ़ गई। वह रोमांचित हो उठी, पिछले वर्ष वह इधर से बेधड़क जाया करती थी! माँ को अपने कंधे का सहारा देकर उसे अधिक दूर नहीं चलना पड़ा। इस वर्ष बड़े एरिया को कनात से घेरकर कोविड-19 सेंटर बनाया गया था, पिछले साल से कई गुना बड़ा! कोविड अस्पताल के बाहर का दृश्य देखकर दंग रह गई; पुराने पीपल

के पेड़ के नीचे कथरी-गठरी पर छह-सात पेशेंट लेटे-बैठे हांफते ही जा रहे थे, बाहर की सारी हवा अंदर खींच लेने का अकल्पनीय प्रयास-प्रदर्शन जारी रखते हुए। परिवारजन उनके छाती-पेट को थामे बैठे थे, जैसे शरीर छोड़कर निकलने को व्याकुल प्राण को रोक रखे हों। एक नौजवान अचानक दौड़ता हुआ वहां आया, कंधे पर ऑक्सीजन का एक छोटा सिलेंडर थामे। मंजरी चौंक पड़ी ...वह जब कोविड वार्ड में थी ऑक्सीजन का एक भी सिलेंडर इधर से उधर हिल नहीं सकता था, और अब तो बाहर भी सिलेंडर सेवा शुरू हो गई है...! उसकी जिज्ञासा शांत नहीं हुई; युवक अपने पिताजी को ऑक्सीजन लगा चुका था, उसने उसके पास जाकर पूछा, "अस्पताल वाले अब बाहर में भी ऑक्सीजन देने लगे हैं क्या?"

"आप मंजरी दीदी हो न, गांधी स्कूल वाली?" युवक ने मंजरी को पहचानते हुए कहा, आगे बोला, "अस्पताल के भरोसे जिंदगी का कोई भरोसा नहीं! यह सिलेंडर तो मैं बड़ी मशक्कत के बाद मार्केट में कहीं से लाया हूं, नाजायज पैसा देकर!"

"मैं भी माँ यानी आंटी को लेकर आई हूं; तुम रामू ग्वाला को जानते होगे? वही स्कूल वाले रामचंद्र को! उसी की माँ को लेकर आई हूं।" वह झटपट बोली। रामू और माँ, फिर आंटी?...सुनते-बुझते वह युवक मुस्कुरा उठा, मंजरी की आंखों में गड़ते हुए। मंजरी झेंप गई...'लगता है इसे मेरा और रामू का अफेयर पता है!' तत्क्षण झेंप मिटाती हुई वह बेधड़क बोली, "हां जी लड़का, रामू की माँ मतलब सब की माँ!"

"मैं पापा को लेकर कल से ही यहां पड़ा हूं, एक बेड के इंतजार में; यदि अभी का अभी ऑक्सीजन नहीं देता तो अनर्थ हो जाता!" उसने निश्चिंत होकर कहा; मास्क के अंदर गहरी सांस ले रहे पिताजी को देखते हुए।

"मेरे भैया एक-डेढ़ घंटा पहले ही निकल चुके थे यहां के लिए, बेड का इंतजाम करने; पता नहीं बेड का जुगाड़ हो पाया कि नहीं?"

"अरे मंजरी दीदी, उदय भैया अपने बूते कितना कर पाएंगे!" युवक ने उदय भैया का नाम लेकर कहा; मंजरी को उसकी आवाज में अपनापन महसूस हुआ।

"पंद्रह-बीस दिन से तो वे दौड़ ही रहे हैं, बस्ती एरिया के पेशेंट को बेड दिलाने।" चेहरे में भैया के लिए गर्व लाती हुई मंजरी बोली।

"उदय भैया दलित संगठन से जुड़े जरूर हैं पर एक बात भूलना मत मंजरी

दीदी, ऑक्सीजन बेड आवंटन में बाबा साहब अंबेडकर का दिया समानता का सिद्धांत लागू नहीं है, यहां तो अलग किस्म का आरक्षण चल रहा है!"

"अलग किस्म का आरक्षण?" मंजरी उधेड़बुन में पड़ गई।

"हां, यहां का काफी सारा बेड मंत्री, एमपी, एमएलए, डीएम, सीएम, वगैरह-वगैरह की सिफारिश पर ही बुक होता है!" आगे बोलते हुए उसकी आंखें बड़ी होती गईं, "मेरे पास पक्की सूचना है, अंदर दो-चार कोविड बेड हमेशा खाली रखा जाता है; ऊपर से कब किसका फोन आ जाए, तब कौन गाली खाना चाहेगा।"

"ओ माय गॉड! यदि भैया यहां बेड का इंतजाम नहीं करा पाएंगे फिर तो कहीं प्राइवेट अस्पताल में देखना पड़ेगा?" वह घबरा उठी।

"प्राइवेट अस्पताल में भी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है; वहां भी चोर बाजारी है, ऊपर से बिल इतना लंबा-चौड़ा कि पूछो मत!" युवक ने पूरी दुनिया का आंखों देखा हाल जैसा बताया।

"रामू तो अभी है भी नहीं, फिर तो बड़ा मुश्किल हो जाएगा!" वह अंदर से अशांत हो उठी।

"मुझे पता है रामू भैया जेल में बंद हैं, सरकार के खिलाफ बोलकर कोई चैन से जी सकता है भला! खैर अभी उस पर बात करने का वक्त नहीं है।" बोलकर वह मंजरी की ओर एक कदम बढ़ आया, गंभीर शुभचिंतक भांति चिंता जताया, "यदि प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराना पड़ेगा, तो..." आगे उसे बोलना उचित नहीं जान पड़ा कि पैसे का इंतजाम कौन करेगा।

"तत्काल मैं सोच रही हूं जब तक कहीं बेड का इंतजाम नहीं हो जाता है, ऐसा वाला एक सिलेंडर मैं भी मंगवा ही लेती हूं।"

"दीदी आप देख ही रही हो यहां पर कितने पेशेंट लेटे हैं? पर सिलेंडर का जुगाड़ कोई नहीं कर पाया है!" बोलकर उसने पलकें झुका लीं, जैसे कह रहा हो न जाने किसकी आंखें कब बंद हो जाएं।

"क्यों?" वह अवाक थी।

"अरे दीदी किस दुनिया में रहती हो, आप कोरोना-मंडली में हो फिर भी बेखबर हो? पिछले पंद्रह दिनों से ऑक्सीजन सिलेंडर की कालाबाजारी जोरों पर है; प्लांट से अस्पतालों के रास्ते दलाल लोग सिलेंडर को उड़ा डालते हैं। हमारे टोले के आगे वाले रामलोक मोहल्ले के सेठ-साहूकार लोगों ने तो कई-कई सिलेंडर खरीदकर अपने-अपने घरों में जमा कर रखे हैं, कोरोना के

डर से! मेरा तो अनुमान है ऐसे हजारों-लाखों लोग हैं जिन्होंने देश के आधे सिलेंडर दबा रखे हैं! ऐसे में सांस के लिए तड़पते लोगों को सिलेंडर मिल पाएगा भला?" अब वह सिर नकारते हुए बोलने लगा, "अब तो लोगों ने हवा को भी अपनी मुट्ठी में कब्जाना शुरू कर दिया है, फिर तो इस देश को भगवान भी ना बचा पाएगा!"

"....."

"....."

मंजरी और युवक की बातचीत हताशापूर्ण होती गई।

एकाएक दो रिपोर्टर वहां पहुंचे, कंधों में कैमरा और तीन टांग वाला स्टैंड लटकाए। उसने बड़े इत्मीनान से कैमरे को हांफते-तड़पते मरीजों के चेहरों पर फोकस कर दिया। तभी न जाने कहां से पुलिस की जिप्सी वहां आ धमकी; दोनों रिपोर्टर का कॉलर पीछे से खींचते हुए दो स्टार वाला गरज उठा, "महामारी में भी तुम लोग सरकार की फजीहत कराने से बाज नहीं आओगे!" बोलकर उसने कैमरे को कसकर पकड़ लिया। रिपोर्टर गिड़गिड़ाने लगा, "सर प्लीज; कैमरा जब्त मत कीजिए, चैनल वाले हमें नौकरी से निकाल देंगे!"

"तो अभी का अभी डिलीट मारो सारा शूट किया हुआ; अरे भई, कोरोना से मरीज तड़प रहा है, मर रहा है तो समाचार में दिखाने से कोरोना भाग जाएगा का?" दो स्टार वाले ने तर्क प्रस्तुत किया, सीधे-सीधे चुप करा देने के अंदाज में। अभी बाहर का ड्रामा शांत भी नहीं हुआ था कि अंदर से उदय के गरजने की आवाज आई, "मैं सीएमओ को देख लूंगा और अस्पताल को भी!" उदय भैया के चिल्लाने की आवाज सुनकर वह उधर को भागी। बरामदे में उदय भैया उत्तेजित हो उठे थे, "मुझे जरूरत पड़ी है तो मुझे ही बेड नहीं दे रहे हैं आप लोग; आप लोगों को अभी पता नहीं है मैं क्या कर सकता हूं!"

"देखिए उदय भाईजी, आपको अपना पोजीशन पता होना चाहिए; माना कि आप दलित हैं, संगठन भी चलाते हैं, लेकिन आप कोई मंत्री या एमएलए वगैरह नहीं है न! अस्पताल वालों की मजबूरी समझिए।" अंदर कमरे से निकला एक आवरणधारी उदय को समझाने लगा, फिर साधिकार बोला, "ऐसा नहीं है कि अस्पताल ने आपको बिल्कुल इग्नोर कर दिया है, पिछले पंद्रह दिन में पांच-सात बेड तो आपकी सिफारिश पर ही निकला है!"

"लेकिन सर यह तो बताइए मैं दो दिन से अपने भैया को लेकर कॉरिडोर में पड़ा हूं, हमें कब मिलेगा बेड?" पार्टी कार्यकर्ता-सा दिखने वाले एक

आदमी ने ताव में आकर पूछा।

"जब भी बेड खाली होगा।" आवरणधारी ने टका-सा जवाब दिया।

"दो दिन से मेरी आंखें यहीं पर टिकी हैं; मैंने किसी भी मरीज को ठीक होकर बाहर जाते नहीं देखा है?" उस आदमी ने पंजा लहराते हुए कहा।

"मरीज ठीक हो ना हो बेड तो खाली होते रहता है न।" आवरणधारी ने इत्मीनान से कहा।

"वह कैसे!" मंजरी के अंदर बेड पाने की बेताबी जाग उठी।

"अरे बिटिया क्या बताएं! यहां तो डेली दस-बारह मरीज..." वह आगे कुछ न बोल पाया; आंखें आसमान में कहीं टिकाते हुए उसने दोनों हाथ ऊपर उठा दिए। वहां पर जम चुकी भीड़ एक-दूसरे को देखने लगी।

"अरे, साले लोगों ने तो अस्पताल को डेथ चेंबर बना डाला है!" लंबी सांस ले रहा उदय एकाएक भड़क उठा।

"गाली नहीं, गाली नहीं! आवाज नीचे रखिए।" पीछे से आ खड़ा हुआ दरोगा ने नियंत्रित स्वर में कहा, सुर को लंबा करते हुए।

"अभी तो गाली ही दे रहा हूं, यदि मनमानी नहीं रुकी तो यहां कुछ भी हो सकता है!" उदय ने सीना ठोकते हुए कहा; संगठन की शक्ति उसके चेहरे पर दीप्त हो उठी।

"कुछ भी क्या हो जाएगा? मारपीट करवाओगे! अस्पताल में आग लगाओगे!" दरोगाजी उदय के करीब आकर अकड़ गया।

"लोग मछली जैसे तड़प-तड़प कर मरेंगे तो वो सब भी होगा!" उदय भला कहां रुकने वाला था।

"आपके पांच-सात लोग तीन-चार महीने से जेल में बंद हैं, आपको होश नहीं आया है क्या?" आगे दरोगाजी की आवाज मित्रवत हो गई, "मैं अंदर की सूचना दे रहा हूं; बस समझिए आप पर रासुका लगते-लगते रह गया है, इस महामारी के चलते! नहीं तो अभी तक..." दरोगाजी ने रामघाट सेंट्रल जेल की तरफ आंखें फेंकते हुए कहा; फिर उदय के कंधे पर हाथ धरते हुए बोला, "छोटे भाई, अभी शांति से काम लीजिए, यदि यहां बेड नहीं है तो कहीं और खोज लीजिए; जाइए, समय मत गवांइए।"

दरोगा के चले जाने के बाद उदय खोया हुआ-सा वहीं खड़ा रहा, अपने अंदर दरोगा का दबदबा सहन करते हुए। उसने मंजरी की ओर कातर दृष्टि से देखा, जैसे कह रहा हो उसकी सीमा यहीं तक थी। उसने सम्मान में सिर

हिलाया, जैसे संप्रेषित कर रही हो...'आप तो दुनिया के लिए दिन-रात एक किए हुए हैं, यही कम है क्या!' उसने आगे बढ़कर भैया का हाथ पकड़ लिया, उसके सम्मान को सहारा देते हुए सा। फिर ढेर सारा सांस लेकर बोली, "बाहर पेड़ के नीचे लेटी है, आप उनको वाच करते रहिए; एक-दो सिस्टर को जानती हूं, कोशिश करने में क्या हर्ज है।" बोलकर वह कनात वाले घेरे की तरफ बढ़ गई। गेट पर तैनात सिपाही ने शालीनतापूर्वक रोका; उसने पिछले साल वाला ड्यूटी पास दिखा दिया '..नाम मंजरी, उम्र 22 वर्ष, पहचान पत्र की वैधता 1 वर्ष...' सरसरी तौर पर पढ़ते ही सिपाही ने आगे बढ़ जाने का संकेत किया। उसे याद आया मारथा दीदी तो आईसीयू वार्ड में ड्यूटी देती है; वह उधर ही बढ़ चली। जींस और स्कर्ट में भी वह दुपट्टे का मोह नहीं छोड़ पाई कभी, आज वह बड़ा काम आया; मास्क के ऊपर फेस और हेड को दुपट्टे से कवर करते हुए वह बेधड़क बढ़ती गई। आईसीयू रिसेप्शन में पूछताछ करने पर पता चला सिस्टर मारथा की ड्यूटी अब महिला कोविड वार्ड एक में लगी है। उसकी स्मृति से आवाज आई... 'वहीं जहां तुम्हारी मुस्कान से महिला मरीजों में जान आ जाती थी!'

वार्ड नंबर एक के बरामदे में दाएं-बाएं झांकती फिर रही थी वह। सिस्टर मारथा ने उसे दूर से ही पहचान लिया; दुपट्टे से ढके चेहरे में भी उसकी चाल और गठी हुई बॉडी की स्मृति से।

"ओए मंजरी!" सिस्टर मारथा ने पीछे से आवाज दी। वह चौंक पड़ी; सामने मारथा दीदी को देखते ही उसकी आंखें छलछला आईं। उसके कंधे में थपकी देते हुए मारथा उसकी आँखों में गड़ गई, मुस्कुराते हुए बोली, "तेरे को यहां होम ड्रेस में देखकर सुपरवाइजर गरम होने का!"

"मेरे पास पिछले साल वाला ड्यूटी पास है?" उसने पास दिखाते हुए कहा।

"वेरी स्मार्ट गर्ल! इट्स ओके, बट तेरे को होम ड्रेस में यहां नहीं आने का।" मारथा ने तर्जनी दिखाते हुए सावधान किया, फिर चौंकते हुए पूछा, ओह, "आई फॉरगॉट! हाउ इज आंटी नाउ?"

"हर कंडीशन इज भेरी क्रिटिकल, बाहर पेड़ के नीचे लेटी है! प्लीज दीदी उसे कोई भी बेड दिलवा दीजिए।" वह व्याकुल होकर बोली; उसके दोनों हाथ अपने आप जुड़ गए, शायद जीवन में पहली बार।

"इधर तो बेड मिलना मुश्किल होने का!" वह लंबी सांस छोड़ती हुई बोली।

"एक बेड भी खाली नहीं है?" बोलते हुए उसका कलेजा मुँह को आ गया।

"मैं तेरे को झूठ नहीं बोलने का; मेरी आंखों में दो-तीन बेड हर दिन वेकेंट दिखता, कभी इस कॉर्नर में तो कभी उस कॉर्नर में।" अब वह मंजरी के कान में रहस्यमयी तरीके से बुदबुदाई, "सुपरवाजर बताता इसमें सीरियस पेशेंट आने का, बोलकर वह तीन-चार बेड हमेशा अनोक्यूपाइड रखने का; मेरे को यहां का पॉलिटिक्स समझ में नहीं आने का, केरल से इधर आकर अपन फस जाने का!" बोलकर उसने दक्षिण दिशा में कहीं नजरें टिका दीं, जैसे दूर दक्षिण में अपने गांव को याद कर रही हो।

"दीदी, आपको तो आइडिया होगा रामघाट में किस अस्पताल में बेड मिल सकता है?" वह डूबती आवाज में बोली।

"दो दिन पहले मंजू सिस्टर अपनी बहन को बेड देने पूरा रामघाट खोज लेने का; ऑल हॉस्पिटल इज लाइक दैट, नो हॉस्पिटल शेज दे हैव बेड! इन सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल यू मे गेट बेड; बट..." आगे वह कुछ बोल न सकी, सिर्फ मंजरी पर ऊपर से नीचे नजर दौड़ा भर दी। वह समझ गई, प्राइवेट हॉस्पिटल के लिए बिल भला कहां से भर पाएगी वह! उसकी आंखों में उम्मीद को जलमग्न होते देख मारथा ने द्रवित होकर कहा, "आई कैन डू वन थिंग..." फिर सोचकर बोली, "आंटी को उधर बरामदे में लिटआने का, इधर ही छोटा सिलेंडर लगा देने का; सुपरवाइजर कुछ बोलेगा तो मेरे को रिस्क लेने का।" सुनते ही वह उसके पैर पर झुकने को हुई; उसने तर्जनी से नो का संकेत किया, बड़े लाड़ से। वह झटपट बाहर की तरफ जाने लगी; मारथा ने पीछे से आवाज देकर बुलाया, बोली, "अपन तेरे को पीपी किट देने का, होम ड्रेस में हंगामा हो जाने का!" तेज कदमों से स्टोर की तरफ जाकर वह वापस भागती आई; उसे किट देते हुए बोली, "इधर चेंज रूम में जाने का।" पीपीई पहनती हुई वह सोचती जा रही थी...'गीता में ठीक ही तो लिखा है–कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन! स्वैच्छिक सेवा देते वक्त उसने सोचा भी नहीं था, उसी कर्म का मान रखते हुए सिस्टर आज माँ को ऑक्सीजन सपोर्ट में ले रही है, अपने रिस्क पर!'

बरामदे के ओझल कोने में माँ को ऑक्सीजन लगा दिया सिस्टर मारथा ने। थोड़ी देर में तीन किस्म की दवाइयां भी लाकर देने को समझा दीं। जाते-जाते उसे ऑक्सीजन मॉनिटर करना भी बता दिया, सिलेंडर से ऑक्सीजन मास्क तक। माँ गहरी सांस लिए जा रही थीं; वह सीने में हाथ रख ईश्वर को धन्यवाद दिए जा रही थी। माँ के चेहरे में सुकून की झपकी पाकर उसकी

आंखें भर आईं...'यदि माँ को ऑक्सीजन सपोर्ट नहीं दिला पाती तो वह रामू के सामने क्या मुंह लेकर जाती!'

घिरते अंधेरे में वार्ड के अंदर से किसी महिला के सिसकने की आवाज आई। उसकी धड़कनें बढ़ गईं...'किसी पेशेंट की मृत्यु तो नहीं हो गई!' वह खिड़की से अंदर झांकने लगी; पीपी किट धारी एक महिला की रुलाई फूट पड़ी थी।

"आई अंडरस्टैंड योर प्रॉब्लम!" आवरण धारी हेल्थी लेडीज उस महिला के कंधे पर थपकी देकर समझा रही थी, "ट्राय टू अंडरस्टैंड हाउ वि विल मैनेज दिस वार्ड इन द नाइट?"

"मैम, मेरी बेटी को दो दिन से फीवर आ रहा है! मैं सुबह आठ बजे से ही ड्यूटी कर रही हूं, नेक्स्ट मॉर्निंग तक कैसे ड्यूटी कर पाऊंगी लगातार अठारह-बीस घंटे!" उसकी हिचकी शुरू हो गई। मंजरी समझ गई, रोने वाली लेडीज कोरोना वार्ड की नर्स है।

"मंजरी, इट्स कोविड वार्ड; डोंट पीप इनटू इनसाइड!" पीछे से आती हुई मारथा सिस्टर बोली, डांट सुनकर वह चौंक पड़ी; सामने आकर प्यार से बोली, "आई एम लिविंग फॉर आवर हॉस्टल, विल कम इन द मॉर्निंग, होप यू विल मैनेज आंटी टुनाइट," सिस्टर मारथा हड़बड़ी में थी।

"सॉरी दीदी, अंदर वाली सिस्टर रोती जा रही है, इसलिए उधर को देखने लगी थी।" वह अपराध कबूल करने जैसी बोली।

"इधर बहुत लफड़ा है! तेरे को नहीं समझ पाने का।" बोलते हुए मारथा ने दोनों हाथों से सर दबा लिया।

"लफड़ा?" मंजरी को लगा मारथा दीदी फिर किसी अजूबे पॉलिटिक्स की बात बताएगी।

"फोर्टी परसेंट डॉक्टर्स एंड नर्सेज आर ऑलरेडी पॉजिटिव! इतने कम डॉक्टर-नर्स में कोविड अस्पताल कैसे चलने का? मेरे को कल डबल ड्यूटी किया; मेरे को बैचलर है तो चल गया, अंदर रोती सिस्टर सबरीना का घर बेटा-बेटी सिक हो जाने का, उसका रोना आता।" बोलते-बोलते सिस्टर मारथा की आंखें छलक आईं; सीने में क्रॉस का निशान बनाते हुए वह मुड़ चली। वह अवाक खड़ी रही; पिछले साल डीएम की मीटिंग में शायनी के सुझाव को याद करते हुए...'वक्त रहते हमें रिजर्व मेडिकल टीम खड़ी करनी चाहिए; अगर जरूरी समझें तो बायो और केमिस्ट्री से बीएससी-एमएससी

पासआउट स्टूडेंट्स को शॉर्ट ट्रेनिंग देकर अस्पतालों में लगाया जा सकता है, साल दो साल के लिए, ट्रायल बेसिस पर ही सही...।' माँ का माथा सहलाती हुई वह खुद से वार्तालाप करने लगी...'आखिर देश चलाने वालों को ईश्वर अक्ल कब देगा!'

अस्पताल के बरामदे में घनघोर रात्रि डरावनी होती गई; वार्ड के अंदर कोरोना मरीजों के सांसों की चढ़ती-उतरती आवाज सन्नाटे की सहचरी-सी लग रही थी। बाहर पेड़ की तरफ से कई महिलाओं के चीखने की आवाज आई; उसने कलेजे में हाथ रख लिए...'तो क्या पीपल के नीचे सांस के लिए तड़प रहे मरीजों में से...' उसके मस्तिष्क ने आगे सोचने से इनकार कर दिया। वह माँ के चेहरे पर झुक गई, उसकी सांस सामान्य गति से चल रही थी; उसने सीने से हाथ हटा लिए। माँ को सुकून में पाकर उसे तसल्ली हुई, पर अंदर की बेचैनी बरकरार थी। कोविड वार्ड के दाएं-बाएं, आगे-पीछे से वह वाकिफ थी। हाई मास्ट के दूरस्थ प्रकाश में चहलकदमी करते-करते उसके कदम धुंधले प्रकाश की ओर बढ़ चले, सोचते-सोचते। मोर्चरी की ओर जाने वाले कॉरिडोर की ओर उसकी नजर ठिठक गई; पिछले साल यह कॉरिडोर तो रात में भी आर-पार दिखता था झिल्लीदार डिजाइन से, अब यहां अंधेरा क्यों है? क्या सारे बल्ब फ्यूज कर गए? या सरकार के स्टॉक में बल्ब खत्म हो गया है! उसके अंदर से आवाज आई...'जब ऑक्सीजन का स्टॉक खत्म हो सकता है तो नामुराद बल्ब क्या चीज है; बल्ब खत्म होना तो सरकार के लिए संतोष की सांस लेने जैसा है, तब अंधेरे में सब कुछ छिप जाता है न!' उसे लगा अंदर के मनोभाव–'अंधेरे में सब कुछ छिप जाता है' उसके कानों ने सुन लिए हैं; पच्चीस कदम आगे बढ़कर वह कॉरिडोर के नजदीक पहुंच गई। उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं; कई स्ट्रेचर एक के पीछे एक मोर्चरी की ओर बढ़ते जा रहे थे, गहरी नींद में लेटे शरीर को ढोते हुए। पीपीई किटधारी स्ट्रेचर बॉय ने जाली से उसकी ओर झांका, बोला कुछ नहीं; अपने को भी पीपीई किट में पाकर मंजरी ने भागने से रोक लिया अपने को। सुन्न कदमों से वह कोविड वार्ड के कोने में वापस आ गई। माँ पर नजर डाली; सांसों की सामान्य गति के साथ वह सुकून वाली नींद में थीं।

जमीन पर चादर मात्र में चैन की नींद लेती रही थी वह जब तब, खासकर स्कूल की एनसीसी टीम वाले टेंट में; आज कोविड वाले बरामदे में नींद उससे कोसों दूर चली गई थी। दीवार का सहारा लिए वह चिंतनशील होती गई, बंद

पलकों के नीचे की दुनिया में विचारते हुए...'मेरे सेंस ने कोरोना को तो सही समय पर सूंघ लिया था, पिछले साल फरवरी में एयरपोर्ट पर ही ...बताने पर इतना तो उखड़ गया था सिक्योरिटी ऑफिसर, विदेशी आगंतुक को बदनाम करने की बात पर किस कदर बिगड़ उठा था मुझ पर! ...और वह एयरपोर्ट डायरेक्टर भी तो बिना रीढ़ वाला निकला, वायरस वाली बात पर उल्टे मुझे ही नौकरी से निकाल दिया!...' माँ के जोर-जोर से सांस लेते ही उसकी पलकें खुलीं; उसने माँ की छाती में हथेली से हौले-हौले थपकी दी, उसकी सांस फिर सामान्य हो गई। दीवाल के सहारे आंखों के पर्दे के पीछे की दुनिया में फिर खो गई...'रामू के जेल हो जाने का आघात बेचारी माँ न जाने कैसे सहन कर रही होगी, कलेजे में पत्थर रखकर ...वह लड़ाकू रामू इंडिया में कोरोना की इंट्री रोकने की खातिर कहां-कहां उत्पात-ऊधम नहीं मचाया! ...हमारी कोरोना-मंडली ने कौन-सा कसरत बाकी रखा था कोरोना को रोकने की खातिर, पर स्कूल में वह एक मुहावरा पढ़ी थी, ढाक के तीन पात...' वार्ड के अंदर कोरोना मरीजों के कराहने से उसकी पलकें फिर खुल गईं, सामने माँ अपार शांति के साथ सांस लिए जा रही थीं; उसकी चिंतन शृंखला फिर शुरू हो गई...'सच में इस देश के पदधारियों में दृष्टि पंगुता बढ़ती जा रही है, शीर्ष में बैठे राजनेतागण तो संकीर्णता के शिकार होते जा रहे हैं! राजनीतिक पार्टियां अपनी-अपनी विचारधारा से इस कदर चिपके हुए हैं कि उनका दृष्टिकोण घोड़ा गाड़ी के घोड़ा जैसा होता गया है ...तभी तो बेचारा अंकुर अपने को खपा दिया है उस अद्‌भूत मूर्ति में, विराट पुरुष की परिकल्पना करते हुए...' अब स्मृति में परवेज का चेहरा चमकते ही उसने अपने शरीर को दीवार के सहारे ढीला हो जाने दिया, परवेज की काबिलियत याद करते हुए...'जब भी परवेज जेल से बाहर आएगा ऊपर बैठे लोगों की वैचारिक अपंगता वाली बात वह जरूर शेयर करेगी उससे, यह भी बताएगी कि इस देश की सबसे बड़ी समस्या शीर्ष में बैठे लोगों की मानसिक अपरिपक्वता ही है; फिर तो वह जरूर कहेगा इसका स्थायी इलाज तो कोई बेमिसाल राजनीतिक विचारधारा ही हो सकती है...' उसकी बंद पलकों ने कब नींद को बुला लिया, उसे पता ही न चला।

मंजरी को नींद देर रात गए ही आ पाई थी; अंतिम अप्रैल वाले सूरज की तेज धूप से भी सुबह उसकी नींद नहीं खुली। वार्ड के अंदर से डांट-फटकार की ऊंची आवाज कानों में पड़ी ...वी ऑल आर डूइंग आवर ड्यूटी डे एंड

नाइट!... नींद के आगोश से वह बाहर आई, आंखें मलते हुए खिड़की के अंदर झांककर देखने लगी; अपने आप से बोलती गई...'अरे यह तो सीएमओ साहब हैं! डॉक्टर प्रकाश पारखी? सुबह-सुबह मोबाइल में किस पर गरम हो रहे हैं?'

"ओनली यू एंड डॉक्टर रामधर आर ऑफ स्पेशल कैटेगरी, डिजाइंड बाय योरसेल्व्स!" सीएमओ साहब थूक देने जैसी सूरत बनाते हुए बिफर पड़े।

'...क...न...त...' उधर से तर्क-वितर्क वाला अस्पष्ट स्वर सुनाई पड़ा।

"ये सब बहानेबाजी के सिवा और कुछ नहीं है मिस्टर; नाउ आई विल नॉट कॉल यू अ डॉक्टर!" सीएमओ ने दांत भींचते हुए कहा; घृणापूर्ण चेहरा लिए वह मोबाइल में कोसते रहे, "मैं पूछता हूं आरटी पीसीआर टेस्ट कराया है आपने? फिर यह कहने का क्या मतलब है कि आप पॉजिटिव हैं! आपको डॉक्टर कहलाने में शर्म आनी चाहिए।" बोलकर वह अचानक चौंक पड़े, शायद कोविड वार्ड का ख्याल आते ही; बोलते हुए ही वे बाहर बरामदे की तरफ आने लगे, "डू यू नो ऑलमोस्ट हाफ ऑफ द डॉक्टर्स एंड नर्सेज आर टेस्टेड पॉजिटिव? आवर फाइव डॉक्टर्स एंड नाइन नर्सेज हैव पास्ड अवे!. .." उधर से आ रही बात को सुन लेने जैसी मुख-मुद्रा बनाते हुए वे रुक गए, फिर बोले, "कैन यू इमेजिन हाउ वी आर रनिंग द कोविड हॉस्पिटल? ओनली बाय हॉफ ऑफ द स्ट्रेंथ! फीमेल वार्ड एक में सिस्टर सबरीना लगातार बीस घंटे से ड्यूटी कर रही हैं, बिल्कुल अकेली! टूडे डॉक्टर आलोक इज इन ड्यूटी इन मेल वार्ड सिंस एटिन आवर! यु वाज सपोज टू ज्वॉइन ड्यूटी स्टरडे नाइट..."

"..." उधर से याचनापूर्ण स्वर सुनाई पड़ा।

"अरे मिस्टर! मैं पूछता हूं किस डॉक्टर-नर्स के घर में फैमिली नहीं है? पांच दिन से मेरा टेंपरेचर हाई चल रहा है, चेस्ट में क्रॉनिक कंजेशन है; पर रिपोर्ट नेगेटिव आया है! तो क्या कोरोना के भय से अस्पताल को भगवान भरोसे छोड़कर घर में बंद कर लूं अपने को!" सीएमओ ने गर्दन तान कर कहा, सीने में दाएं हाथ से मर्द होने जैसा थपकी देते हुए।

"..." उधर से गोगियाने-सी आवाज आने लगी।

"यू नो मेडिकल एथिक्स क्या कहता है? यही न अपनी जान से पहले पेशेंट की जान देखना है!" उसने ग्रीवा सीधी रखते हुए कहा, फिर बरामदे के बाहर थूकते हुए गरज उठे, "हमारा प्रोफेशनल एथिक्स यह नहीं कहता

है अपनी जान के डर से पेशेंट को तड़पने-मरने के लिए छोड़ दो!" बोलकर उसने अंगूठे से मोबाइल स्क्रीन टच किया, मोबाइल के अंदर वाले को नरक में भेज देने-सा मुंह बनाते हुए। जेब में मोबाइल रखते हुए बरामदे से नीचे उतरने लगे; नजर बरामदे के कोने में ऑक्सीजन सपोर्ट में रखे पेशेंट की ओर गई। चेहरे में विस्मय का घना आवरण डाले उधर ही आ गए।

"हु इज दिस पेशेंट! व्हाय सी इज केप्ट आउटसाइड वार्ड?" माँ का ऑक्सीजन मास्क ठीक करते हुए उसने मंजरी से पूछा; फिर ऑक्सीजन सिलेंडर के नीब को ऊपर-नीचे करके ऑक्सीजन को एडजस्ट करने लगे।

"सर माताजी आंटी है।" हड़बड़ी में उसके मुंह से यही जवाब निकला। सीएमओ ने बगल में खड़े सिस्टर मारथा की ओर देखा, कुछ पूछने के बजाय पलकें ऊपर उठाईं।

"सर हर कंडीशन वाज वेरी क्रिटिकल, सो आई थॉट.." लड़खड़ाती आवाज में मारथा के मुंह से निकला।

"सो व्हाट? सो मेनी पेशेंट आर स्टिल वेटिंग आउटसाइड द हॉस्पिटल, बट यू हैव रिजॉर्टेड टू पिक एंड चूज पॉलिसी!" बोलकर सीएमओ ने सिस्टर मारथा पर नजरें गड़ा दीं।

"सर, शि इज कोरोना मडली गर्ल, लास्ट ईयर कोविड वार्ड में सेल्फ सर्विस करने का, सो आई थॉट..." मारथा ने हाथ मलते हुए सच बता दिया। चेहरा घुमाकर सीएमओ ने मंजरी की ओर मुस्कुरा दिए।

"यस सर, आई एम मंजरी।" हाथ जोड़ते हुए उसने कृतज्ञ भाव से कहा।

"यू आर इन पीपी किट सो कुड नॉट रिकॉग्नाइज्ड यू, अदर वाइज यू लुक सिन अरलियर अलसों" सीएमओ डॉ. प्रकाश पारखी ने अपनत्व जताते हुए कहा; फेस शील्ड के अंदर से उसकी निश्छल हँसी बाहर आई। आगे अनौपचारिक हाव-भाव में बोले, "यू सी दिस इज द कंडीशन इन द हॉस्पिटल! तुमने देश सेवा, समाज सेवा के भाव से पिछले साल महीनों तक कोरोना ड्यूटी करी, और अब देखो जरूरत पड़ने पर तुम्हें ही बेड नहीं मिल पाया?" बोलकर उसकी आंखें बड़ी हो गईं; चेहरा घुमाकर ऊंची आवाज लगाई "राम तीरथ।" पीछे खड़ा किट धारी पुरुष सामने आया; सीएमओ ने नम्र फटकार लगाई, "यू आर द सुपरवाइजर ऑफ फीमेल वार्ड; व्हाट इज दिस?" फिर प्रश्नचिह्न वाली मुद्रा में कहा, "अंदर तो कुछ बेड अभी भी खाली हैं?"

"सर, जैसा कि कहा गया था..." सुपरवाइजर डर-डर कर बोलने का प्रयास किया; सीएमओ हाथ के संकेत से रोकते हुए मित्रवत हो उठे, "आई नो पॉलीटिकल प्रेशर है, बट इस लड़की की सेवा का सम्मान हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा!" बोलकर सीएमओ मंजरी की ओर देख मुस्कुरा दिए, माफीनामे वाले अंदाज में। सीएमओ के बरामदे से नीचे उतरते ही सुपरवाइजर ने मारथा से कहा, "सिस्टर, किनारे वाला बेड तैयार करवा दो न, प्लीज।" उसकी स्वर-शैली से लगा वह मंजरी के सामने दोषमुक्त दिखना चाहता था। पलकें झुकाए वह चलते बना; मंजरी के कर्म के आगे शर्म से चित्त होकर।

"दीदी, सीएमओ साहब कितने तो डेडीकेटेड हैं अस्पताल के लिए!" सुपरवाइजर के जाते ही वह खुलकर बोलती गई, "पहले भी एक-दो बार इनसे मिलने का मौका मिला था, पर आज नजदीक से जान पाई पेशेंट के लिए कितना तो परेशान रहते हैं!"

"वेरी हार्ड वर्किंग सीएमओ!" अपने सीएमओ के सम्मान में मारथा गर्व से बोलने लगी, "हिज हेल्थ इज नॉट अलाविंग हिम टू बी प्रेजेंट इन द हॉस्पिटल, बट कोम्प्रोमाइजिंग हिज हेल्थ कंडीशन हि इज डूइंग हिज बेस्ट टू शेव द लाइफ ऑफ कोविड पेशेंट!"

"बट आज सुबह-सवेरे उनका मूड इतना खराब क्यों हो गया?" उसने आंखें छोटी करती हुई पूछा; शायद कुछ बेमेल-सा जान पड़ा था उसे।

"अरे वेंटीलेटर के इशु पर सर का ब्रेन फेल होने का!" उसकी ओर झुकते हुए मारथा ने धीमी आवाज में कहा; चेहरे में किसी के लिए घृणा वाली भंगिमा बनाते हुए बोली, "रामदस मिसर लोकल एमएलए होने का, उसे कोविड नहीं होने का, बट चार दिन से वेंटिलेटर में लेट जाने का।" आगे आँखें झपकाती हुई सहमकर बोली, "उसे क्रॉनिक पाइल्स हो जाने का, एनस से कंटिन्यू ब्लीडिंग होते रहने का! बट इसमें वेंटिलेटर क्या करने का? फॉरसिबली वेंटिलेटर अक्कूपाय रखने का, उधर वार्ड में कोविड पेशेंट की जान जाता रहता वेंटिलेटर के बिना! इसलिए सर का टेंप्रेचर सुबह-सुबह हाई होने का।"

"वो एमएलए साहब तो पिछले साल भी बिना बात का इधर वेंटीलेटर में लेटे रहे थे, एक सप्ताह तक!" पिछले साल वाला वाकया याद करती हुई वह बोली। वार्ड बॉय स्ट्रेचर लेकर वहां पहुंच चुका था। वार्ड बॉय की सहायता से माँ को स्ट्रेचर पर लिटाते हुए मारथा बोली, "आंटी अभी शिफ्ट हो जाने

का।" फिर उसको बाय-बाय करती हुई बोली, "अब तेरे को घर चले जाने का, जब कोई कंडीशन होगा अपन तेरे को मैसेज डाल देने का।" वार्ड बॉय स्ट्रेचर आगे सरकाने लगा; माँ ने हाथ के इशारे से उसे बुलाया, वह स्ट्रेचर के पास गई; उसके माथे पर हाथ धरते हुए माँ का चेहरा मुस्कान से भर उठा। उसे लगा माँ तो जैसे सात जन्मों के बराबर आशीर्वाद दे रही है।

6

तड़के साढ़े चार बजे मंजरी का मोबाइल बज उठा; वह नींद से बाहर आई, चौंकती हुई। मोबाइल का रिंगटोन आज उसे कर्कश जान पड़ा; हरा बटन दबाते ही मारथा की आवाज मोबाइल पर टूट पड़ी, "आंटी का चेस्ट कंजेशन कल से बढ़ता जाता! रात वाली सिस्टर जस्ट फाइव मिनट पहले मेरे को इनफॉर्म करने का, आंटी की हालत क्रिटिकल हो जाने का..." मारथा के बोलते रहने के बीच ही वह तड़प उठी "बट अचानक यह कैसे हो गया?"

"यू नो मंजरी, आंटी फिफ्टिन-ट्वेंटी डेज बैक पॉजिटिव होने का, शच इंफेक्शन इन लंग्स इज वेरी अनकॉमन दैट इज पोस्ट कोविड इफेक्ट।"

"प्लीज डू समथिंग फॉर आंटी।" वह रुआँसा होकर बोली।

"सो दैट अर्ली मॉर्निंग तेरे को जगा डालने का।" मारथा का क्षमा-याचना वाला स्वर था।

"आई विल डू एनीथिंग फॉर आंटी," वह छटपटा उठी।

"शि नीड्स रेमडेसिवीर इंजेक्सन अर्जेंटली!" मारथा की आवाज से लगा वह भी व्याकुल थी।

"रेमडेसिवीर?" अखबार में ऐसा कुछ पढ़ा हुआ याद आया उसे।

"इट्स रूटीन काइंड ऑफ ट्रीटमेंट इन लंग्स इन्फेक्शन," बोलकर मारथा ने लंबी सांस ली; पलभर की चुप्पी के बाद बोली, "बट थिंग इज दैट हॉस्पिटल के स्टॉक में रेमडेसिवीर खत्म हो जाने का, कल शाम से इंतजार करता; और इंतजार करेगा तो डीले हो जाने का, देन आंटी का कंडीशन और क्रिटिकल हो जाने का।"

"देन?" वह कुछ भी करने के लिए तैयार बैठी-सी बोली।

"बट थिंग इज दैट सप्लाई ऑफ रेमडेसिवीर इज अलाउड ओन्ली फॉर द हॉस्पिटल, इफ यू कैन अरेंज इट फ्रॉम सम व्हेयर इट विल सेव हर लाइफ, अप्रोच करने का तो मार्केट में भी अवेलेबल हो जाने का।" मारथा की आवाज

से लगा वह झटपट ब्रश करने लगी थी।

"आई विल अरेंज एंड विल कम सून!" बड़े जंग के लिए निकल पड़ने की भाव-भाषा में वह बोली। मोबाइल बेड पर फेंककर वह झटपट फ्रेश होने लगी।

रेमडेसिवीर वाली बात उसने उदय भैया को बता दी, उसके सोकर उठते ही। उसने दिनेश को भी मैसेज डाल दिया, पता करने को कि किस दुकान में मिल सकता है। दिनेश ने 'येस' मैसेज भेजने में देर नहीं की; आजकल आंशिक लॉकडाउन में उसकी किराना दुकान कुछ ही घंटों के लिए खुलती थी। उदय वाली किताब-कॉपी की दुकान इस वाले लॉकडाउन में भी पूर्ण रूप से बंद थी; वह बाइक से निकल पड़ा, मन में रेमडेसिवीर की पुकार पालते हुए। उसके नहाते, तैयार होते-होते दिनेश बाहर बाइक में बैठा हॉर्न बजा रहा था; दोनों झटपट घंटाघर चौराहे की तरफ निकल पड़े।

घंटाघर के नामी भारत मेडिको के काउंटर में वह धड़कता कलेजा लिए पहुंची; डेबिट कार्ड बढ़ाते हुए बदहवास-सी बोली, "प्लीज रेमडेसिवीर दे दीजिए; डेबिट कार्ड में पच्चीस हजार कब से जमा कर रखे हैं मैंने!"

"मैडम जी डेबिट कार्ड में एक लाख भी हो तब भी नहीं मिल पाएगा; इस वक्त रेमडेसिवीर आउट ऑफ स्टॉक है!" काउंटर वाले बुजुर्ग ने कहा, अंदर कोई दर्द दबाने-सी मुख-मुद्रा में।

"मेरी आंटी का कंडीशन काफी बिगड़ रहा है, उसे रेमडेसिवीर नहीं लग पाएगा तो अनर्थ हो जाएगा!" वह मनुहार करने लगी।

"आपकी आंटी ही खतरे में नहीं है, रामघाट में सैकड़ों लोग जिंदगी और मौत से जूझ रहे हैं! लेकिन करें तो क्या करें? रेमडेसिवीर का स्टॉक ही नहीं आ रहा है किसी अस्पताल में, सप्लाई शुरू हो तभी तो...।" उस पर तरस खाते हुए बुजुर्ग ने समझाया।

"प्लीज कोई आइडिया दीजिए कहां मिल सकता है?" उसने हाथ जोड़ लिए।

"देखो बेटा, जहां तक मुझे आइडिया है इस वक्त रामघाट में किसी भी मेडिकल स्टोर में शायद ही मिले!" बुजुर्ग भी द्रवित हो उठा।

"रेमदेसीविर रेमदेसीविर...एक लाख, एक लाख।" मंजरी के पीछे किसी ने फुसफुसाया।

"कहां-किधर?" पीछे खड़े छोकरे को घूरती हुई वह पूछ बैठी।

"अपना मोबाइल नंबर दो, कॉल आएगा, बताए पते पर पहुंच जाओ," छोकरा कहीं और देखते हुए बुदबुदाया।

"लेकिन मेरे कार्ड में तो सिर्फ पच्चीस हजार हैं?" वह आसमान से गिरती हुई सी बोली।

"चल फुट!" होंठ बिचकाते हुए छोकरा वहां से खिसक लिया।

"अरे बच्चे, अपनी बिटिया के लिए मैं कल से ही रेमडेसिवीर की खोज में लगा हूं; रामघाट का कोना-कोना छान मारा, एक-दो जगह ब्लैक में मिल तो रहा है पर कीमत एक लाख बता रहा है!" काउंटर के बाहर सड़क पर खड़ा एक अधेड़ आपबीती सुनाने लगा, फिर रुआंसा होकर बोला, "मैं ऑटो चलाकर परिवार पालता हूं; बेटी के इलाज में चार लाख निकल चुके, अब मात्र पचास हजार बचे हैं।"

"मेरी जानकारी में रेमडेसिवीर इंजेक्शन की कीमत तीन-चार हजार ही होती है; यह ड्रग कंट्रोल डिपार्टमेंट सोया पड़ा है क्या?" दिनेश ने झल्लाकर कहा।

"अरे बेटा, कायदे से रेमडेसिवीर की सप्लाई सिर्फ अस्पतालों में ही होनी चाहिए, यहां तो जमाखोरों ने मोटी कमाई के चक्कर में लाखों-करोड़ों इंजेक्शन छिपा लिए हैं; पैसे वाले तो कोरोना से इतना डरे हुए हैं कि बेवजह रेमडेसिवीर को लॉकर में बंद कर लिया है, और इधर हजारों लोग रेमडेसीविर के बिना जान गंवा रहे हैं!" उस अधेड़ ने छाती पीटते हुए कहा, फिर दोनों हाथ चारों ओर फैलाते हुए पागल की भांति चीत्कार करने लगा, "यही है इंडिया; मेरा भारत महान!" वह अधेड़ गांधी मार्ग की ओर बढ़ चला, रोता-चिल्लाता।

"मैंने थोड़ी देर पहले रामनरेश को मैसेज किया था, रेमडेसिवीर के लिए; मुझे लगा वह शासन-सत्ता से जुड़ा है, शायद व्यवस्था करा दे।" दिनेश उसके पास आकर बोला, फिर चेहरे में प्रसन्नता लाते हुए कहा, "मेरा अनुमान सही निकला; उसका मैसेज आया है, विवेकानंद कॉलोनी में गली नंबर तीन में शिक्षा निकेतन वाले मकान में आने के लिए!" बोलते-बोलते वह बाइक स्टार्ट कर चुका था।

शिक्षा निकेतन के गेट के अंदर बाएं हाथ वाला कमरा था वह; दरवाजे के ऊपर रसायन विज्ञान प्रयोगशाला लिखा हुआ। दरवाजे के पास पहुंचते ही किसी ने अंदर से दरवाजा खोल दिया। मंजरी बायो स्ट्रीम में थी गांधी स्कूल में, साइंस लैब से बखूबी वाकिफ थी; कमरे में रसायनिक पदार्थ की गंध तो

थी, पर प्रयोगशाला लायक शायद ही कोई उपकरण बचे थे। टेस्ट टेबल के पीछे तीन लोग बैठे थे; दो नवयुवक टाइप और एक बलपूर्वक बुजुर्ग अवस्था में जा चुका अधेड़। बुजुर्ग की आंखें भूरे रंग की थीं; दोनों छोकरों की लाल पड़ती जा रही थीं।

"रेमडेसिवीर यहीं पर मिलेगा न?" कमरे में सरसरी नजर डालते हुए दिनेश ने पूछा, आवाज में आश्चर्य लादे हुए।

"हां जी, यहीं पर मिलता है।" अधेड़ ने बिना आंख उठाए कहा, फिर मंजरी को घूरते हुए गाने के लय में बोला, "पर्दे के पीछे चोली के नीचे!" मंजरी के हाथ में दुपट्टा संभालने जैसी हरकत हुई, पर कंधे पर दुपट्टा था नहीं; निडर होकर बोली, "प्लीज रेमडेसिवीर का एक इंजेक्शन दे दीजिए!" तीनों चेहरे में कोई क्रिया-प्रतिक्रिया नहीं हुई।

"मैं रामनरेश भैया का आदमी हूं!" दिनेश ने स्पष्ट कर देना चाहा।

"मैं भी उन्हीं का आदमी हूं, यह सब उन्हीं की कृपा है!" एक छोकरे ने गर्व से कहा। उसे माजरा कुछ समझ में ना आया, बोली, "पर वह तो युवा प्रकोष्ठ के उपाध्यक्ष हैं? ये सब..." उसकी बात को बीच में काटते हुए अधेड बोल पड़ा, "हां जी उपाध्यक्ष हैं, हमेशा के लिए उपाध्यक्ष बने रहने से नहीं होगा न!"

"हां-हां उसमें अध्यक्ष बनने की काबिलियत है!" वह कसीदे गढ़ने की शैली में बोली।

"अध्यक्ष नहीं जी, अब तो रामघाट आउटर से विधायकी लड़ने की सोच रहे हैं!" छोटे कद वाले छोकरे ने कहा, देह में मर्दाना लचक देते हुए।

"अरे बबुआ, रामदरश मिश्र जी विधायक तो हैं अभी!" बच्चों का सामान्य ज्ञान बढ़ाने के अंदाज में वह बोली।

"मिसरजी विधायक हैं, पर अब आगे रहेंगे नहीं न!" बुजुर्ग ने कहा तो उसकी भूरी आंखें और डरावनी लगने लगीं। बात उसकी पकड़ में नहीं आ पाई, उधेड़बुन में पड़ गई; रेमडेसीविर पर वापस लौटती हुई बोली, "लेकिन रेमडेसीविर के कारोबार से रामनरेश भैया को विधायकी लड़ने में क्या फायदा होगा?"

"अरे भई, इससे फिलहाल विधायकी का दावा ठोकने लायक मालपानी तो निकल आएगा न!" अधेड़ ने बुदबुदाते हुए कहा, फिर सज्जन भांति बोला "पॉलिटिक्स को रहने दीजिए, पहले अपने पेशेंट की जान बचाइए," अब

दराज से इंजेक्शन निकालकर दिखाते हुए बोलने लगा, "वैसे एक इंजेक्शन का रेट बैक डोर मार्केट में पचास हजार से लेकर एक लाख तक चढ़ चुका है, पर जनकल्याण खातिर रामनरेश भैया ने कहा है किसी से भी पचास से ऊपर नहीं लेने के लिए।"

"आप दोनों के नाम से उसने तो पच्चीस ही लिखवाया है!" लंबे वाले छोकरे ने मोबाइल में मैसेज देखते हुए कहा।

"अभी-अभी मेरे मोबाइल में राम भैया का मैसेज आया है, रेमदेसीविर देने की एक शर्त भी रख दी है उसने।" छोटे छोकरे ने मोबाइल में पढ़ते हुए कहा, फिर स्क्रीन से नजर हटाकर उन दोनों को घूरते हुए बोला, "कोरोना-मंडली करके कोई पार्टी है, मंजरी के लिए कहा गया है वह वचन दे आगे से उस बेकार वाली मंडली में नहीं जाएगी।" सुनते ही मंजरी के चेहरे की रंगत बदल गई, उसे लगा कोई उसे जमीन पर पटककर बेआबरू कर रहा है। उसे चक्कर-सा आने लगा; वहीं खाली बेंच पर बैठ गई, माथे को सहारा दिए। एयरपोर्ट में पिछले वर्ष विदेशी पर्यटक प्रकरण से लेकर साथी लोगों को जेल हो जाने तक का घटनाक्रम ऊधम मचाने लगा स्मृति में। अगले ही क्षण बंद आंखों में सांस के लिए तड़पती माँ की तस्वीर सजीव हो उठी; एक चीत्कार-सी उठी उसके अंदर..'माँ!' उसकी माँ बचपन में ही स्वर्ग सिधार गई थी, उसे हर शर्त मंजूर थी; उसने अपना कार्ड आगे बढ़ा दिया।

"अरे मैडम, यह लैब है कोई बैंक नहीं!" छोटे ने कहा, उस्तादी अंदाज में। वह सकपका गई, माफीनामे वाली सूरत लिए बोली, "सॉरी, मैं बाहर किसी एटीएम से कैश निकालकर लाती हूं।" दोनों तेज कदमों से शिक्षा निकेतन के गेट से बाहर की ओर तेजी से भागे। सरदार पटेल मार्ग वाले एटीएम के गेट में 'कैश नॉट अवेलेबल' लिखी पर्ची चिपकी थी; वीर शिवाजी मार्ग की ओर बढ़ चले। रास्ते में विशेष ध्वनि वाला मैसेज आया, वह समझ गई भैया का मैसेज है; स्पीड वाली बाइक में ही उसने मैसेज बॉक्स खोला, '..परेशान होने की जरूरत नहीं है, फिलहाल मैंने रेमडेसिवीर के दो इंजेक्शन उपरा लिए हैं; जल्दी से घर आकर ले जाओ!" तेज हवा से अपनी आवाज को बचाते हुए वह दिनेश के कान में बोली, "भैया ने रेमडेसिवीर हासिल कर लिए हैं; अगले मोड़ से मुड़कर मेरे घर वाला कच्चा रास्ता ले लो!"

"देर मत कर, एक-एक मिनट कीमती है!" उसके घर पहुंचते ही उदय ने इंजेक्शन की डिब्बी उसको थमाते हुए कहा, रेमडेसिवीर आगत-कथा में गए

बगैर। गाली देने के अंदाज में बड़बड़ाते हुए घर के अंदर घुस गया, "क्या गत बना दी है देश की सालों ने; आधी दवाइयां तो लोगों ने लॉकर में बंद कर ली हैं! और सरकार तहखाने में मन-मंथन में मस्त है!"

मारथा बरामदे में ही खड़ी थी; मंजरी को दौड़कर आती देखकर उसकी जान में जान आई, सीने में क्रॉस का निशान बनाते हुए बोली, "अरे बाबा आंटी के व्होल लंग्स में इंफेक्शन फैल जाने का, रेस्पिरेटरी सिस्टम चॉक हो जाने का!" उसके हाथ से इंजेक्शन लेकर वार्ड की ओर लपकी। आधे घंटे बाद बाहर आई; संतोष वाली मुस्कान लिए बोली, "इंजेक्शन लग जाने का, दूसरा वाला शाम को देने का; अदरवाईज कल से हॉस्पिटल में रेमडेसिवीर आ जाने का, आगे का डोज हॉस्पिटल से ही मिल जाने का!" उसके बोलने के बावजूद उसके चेहरे में बेचैनी बरकरार थी; वह लाड़ से बोली, "डोंट वरी छोटी, तेरे को जी करता तो बाहर पेड़ के नीचे वेट करने का; बट इधर कितना बैठने का, अच्छा होता घर जाने का; ओके!" बोलकर वह अंदर की ओर चल दी। देर तक कोविड वार्ड में नजर गड़ाए वह खड़ी रही; बड़ी मुश्किल से अपने कदम बाहर जाते रास्ते पर ला पाई।

7

अस्पताल से निकलकर वह रामू के घर ही चली आई। दिनेश को घर जाने के लिए बोलकर माँ वाली खाट में बैठ गई। मौनी मामा भले कुछ ना बोलता हो, घरेलू काम को निपटाते रहने की आदत-सी थी उनकी। उसने भिंडी का भुजिया और परांठे बना रखे थे; थाली में परोसकर उसके सामने रख आया, पदचाप को भी मौन धारण कराते हुए। आज उसका मन न तो नहाने को कर रहा था, ना खाने को, रसोई में जाकर चाय बना ली; चाय पीकर रामू के कमरे में निढाल हो गई। घंटों बीत गए वह शून्य में ही अटकी रही; उसे बस एहसास होता रहा जैसे वह कोरोना वाले ब्लैक होल में समाती जा रही है। मोबाइल में खास मैसेज आने की चेतावनी वाली ध्वनि से उसकी तंद्रा भंग हुई; मारथा का मैसेज था, '...आंटी का कंडीशन क्रिटिकल होने का! इट वाज टू लेट, यस्टरडे रेमडेसिवीर इंजेक्ट होने का देन टुडे कंडीशन इंप्रूव कर जाने का।' मिनटभर बाद उसका दूसरा मैसेज आ गया '...आईसीयू वेंटीलेटर में इमेडीएट शिफ्टिंग करना माँगता, बट नो वेंटिलेटर वेकेंट हेयर! मेरे को टोटली कंफ्यूज हो जाने का।' मैसेज पढ़कर मंजरी की धड़कनें बढ़ती

गईं; उसने दिनेश को फौरन आने का मैसेज भेज दिया। उसके आते ही अस्पताल की ओर निकल पड़ी, भैया को अर्जेंट मैसेज भेजकर। अज्ञात-अनाम देवी-देवताओं का स्मरण करते हुए अस्पताल पहुंच गई।

आज वह कोविड अस्पताल के गेट से आगे नहीं जा पाई; तीमारदारों के लिए सख्त प्रतिबंध अमल में लाई जा रही थी। बदहवास सी उसने मारथा का नंबर रिंग किया। रिंग जाते ही उधर से कॉल कट हो गया; मैसेज भेज दिया '...अस्पताल के बाहर हूं।' मिनटभर बाद मारथा का रिप्लाई आ गया 'आंटी को वेंटीलेटर नहीं मिलने का तो लाइफ का चांस नहीं होने का!' चारों तरफ नजर फिराकर वह कुछ ढूंढ़ने लगी, नाचती-फिरती हुई-सी; शायद किसी अज्ञात सहारे की उम्मीद लिए। उसकी बदहवासी भांपकर दिनेश की आंखें छलछला आईं, उसकी बांह पकड़कर उसे सहारा देना चाहा; वह जार-जार रोने लगी। उदय आ ही गया; भैया को देखते ही वह उससे लिपटकर बेजान-सी हो गई, बुदबुदाते हुए '..रामू की माँ के लिए दुनिया में एक भी वेंटिलेटर नहीं है!' बहन को बाँहों में निढाल पाकर उदय खुद को असहाय महसूस करने लगा, जीवन में पहली बार। लोगों में जोश भर देनेवाली अपनी दहाड़ आज उसे अपने अंदर दम तोड़ती लगी। उसे महसूस हुआ जैसे कोई दृश्य-अदृश्य दैत्य देश की सारी ऊर्जा को अपने अहंकार-अट्टहास से विनष्ट करने पर तुला है। बहन को बाँहों से संभाले हुए वह वहीं बैठ गया, पीपल के पेड़ का सहारा लिए।

"अरी मंजरी! तुम यहां क्या कर रही हो?" अस्पताल से बाहर की ओर जाती फेस शील्ड लगाए महिला पेड़ के पास ठिठक गई; आधा चेहरा मात्र देखकर भी वह मंजरी को पहचान गई थी। शून्य में खोई मंजरी उसकी ओर टकटकी लगाए देखती रही।

"अरे पगली मैं दीपिका; वेंटीलेटर वाली सिस्टर!" मंजरी को बाँहों में भर लेने का हाव-भाव दिखाती हुई वह बोली।

"दीपिका दीदी!" उसकी सिसकी छूट पड़ी; अपने को संभालकर बोली, "आंटी तीन दिन से कोविड वार्ड में हैं; आज सुबह रेमडेसिवीर भी लगवाया है, पर हालत बिगड़ती ही जा रही है!" फिर खड़ी होकर रुआंसा हो उठी, "मारथा दीदी कह रही है यहां कोई वेंटिलेटर खाली नहीं है! यदि वेंटीलेटर पर नहीं लिया गया तो..." अंदर से आती रुलाई रोकने की खातिर उसने अपने हाथ मुंह में रख लिए।

"मारथा सच ही बोलती है; मेरी ड्यूटी तो वेंटीलेटर यूनिट में ही है, अभी तो इधर सही में कोई यूनिट खाली नहीं है?" दीपिका सिस्टर की आवाज भी निराशा के गर्त में जाती जान पड़ी; फिर चारों दिशाओं में कुछ ढूंढ़ती हुई सी बोली, "रामघाट के एक हॉस्पिटल में एक वेंटीलेटर आज सुबह खाली हुआ है" वह मोबाइल स्क्रीन स्क्रॉल करने लगी; किसी मैसेज पर नजर गड़ा कर बोली, "बट काफी एक्सपेंसिव बता रहा है, एक दिन का पच्चीस हजार! दो-तीन दिन नहीं, कम-से-कम सप्ताह दिन का ईस्टीमेट लेकर चलना पड़ेगा!" सुनकर भाई-बहन एक-दूसरे को देखने लगे; जैसे मौन वार्ता कर रहे हो, कि हम लोगों को गरीब घर में क्यों पैदा किया भगवान ने।

"आप मंजरी के भाई उदय हो न?" उसने उदय की तरफ सम्मानपूर्वक देखते हुए पूछा।

"जी," उदय ने आभार जताया। पेड़ के नीचे आज भी कई मरीजों की सांसें जिंदगी और मौत के बीच अटकी पड़ी थीं, परिजनों की भीड़ खड़ी थी; दीपिका सिस्टर ने उदय को सड़क की तरफ बुलाया, "मैं जानती हूं तुम्हारा भी कम जलवा नहीं है!" दीपिका गंभीरतापूर्वक बोली, किसी और के ना सुन लेने जैसे स्वर में आगे बोली, "वेंटिलेटर यूनिट नंबर एक में अपने एमएलए रामदरश मिश्र का बॉडी पड़ा है! यदि..." सिस्टर की बात के बीच ही उदय चौंक पड़ा, "बॉडी पड़ा है! यहां भिंटीलेटर यूनिट में उनका तो ट्रीटमेंट चल रहा है कई दिनों से?" होंठों में हाथ रखकर सिस्टर ने चुप रहने का इशारा किया, बोली, "फैक्ट सिर्फ सीएमओ और एक-दो डॉक्टरों और पार्टी के कुछ बड़े नेताओं को ही पता है; इनफैक्ट उनका डेथ कल रात में ही हो गया है!" आगे रहस्य उजागर करने की लय में बोली, "तुम तो पॉलिटिशियन हो, तुम्हें ज्यादा पता होगा; वह तो पार्टी के कोषाध्यक्ष भी तो हैं! शायद इसीलिए डेट अनाउंस करने में देरी हो रही है?"

"हां, पार्टी तो फंड के बरगद में ही चमगादड़ जैसा उल्टा लटका रहता है; जब तक फंड ठिकाने न लग जाए, मृत्यु की घोषणा घातक हो सकती है पार्टी के लिए!" चेहरे में घृणा उगाए उदय ने कहा।

"पार्टी फंड से हमें-तुम्हें क्या लेना।" दीपिका बात आई-गई होने के अंदाज में बोलती गई, "जरूरी बात है वेंटिलेटर की; तुम तो काफी संघर्ष करने वाले जाने जाते हो, मृत्यु की घोषणा जितनी जल्दी करवा सकते हो उतनी जल्दी वेंटिलेटर खाली हो जाएगा; बात रही आंटी को आवंटित करने

की तो मारथा मैनेज कर ही लेगी अंदर" बोलकर दीपिका ने लंबी सांस ली, जैसे उसके माथे से पाप की गठरी उतर गई हो। वह किसी उधेड़बुन में खो गया, शायद राजनीति के जटिल बियेबान में। दीपिका ने विदा ली, "ओके देन; मेरे घर पर मेरी माँ को भी कल से फीवर आ रहा है।" बोलकर वह अस्पताल गेट की तरफ बढ़ चली, मुड़कर मंजरी को सांत्वना देने-सा हाथ हिलाते हुए। दीपिका सिस्टर के निकलते ही उसके दिमाग में बिजली-सी दौड़ गई। उसने बाइक स्टार्ट किया, दिनेश और मंजरी को वहीं रुकने का इशारा करते हुए; उंगली से संकेत करता गया कि एक घंटे में वापस आ रहा है।

एक बज चुके थे। अस्पताल के गेट पर हॉकर पुकार गुहार लगाकर दीवा रामघाट बेच रहा था '...जानिए बड़ी मृत्यु की बड़ी खबर! सबसे पहले दिवा रामघाट में! ...एक और बड़े राजनेता का कोरोना से निधन! ...प्रदेश के दिग्गज नेता पार्टी के कोष प्रभारी रामघाट आउटर से लगातार तीन बार विधायक रहे डॉक्टर रामदरश मिश्र हमारे बीच नहीं रहे! ...आज दोपहर को अंतिम सांस ली...। उदय लगभग दो घंटे बाद लौट रहा था; बाइक को अप्रत्याशित गति से अस्पताल के अंदर लाते हुए, जैसे हॉकर की आवाज का समर्थन करने ही आया हो। आते ही करंट से तड़पने जैसी आवाज में मंजरी से बोला, "सिस्टर मरथा को कॉल करो; जल्दी करो!" फिर कोविड अस्पताल की ओर बढ़ते हुए बोलता गया, "मैं सीएमओ से मिलता हूं, मरथा को बोलना माँ को वेंटिलेटर नंबर एक में शिफ्ट करने की तैयारी करके रखें।"

उसने भैया का हाथ पकड़कर रोक लिया; निस्पृह भाव वाली मुस्कान लिए बोली, "वेंटिलेटर की जरूरत अब है नहीं, रामू की माँ इस दुनिया में नहीं रही।" मंजरी की आंखों में कोई आंसू नहीं थे; जब आंखें कहीं दूर टिकी होती हैं तो आंसू नहीं आते। चेहरे में शिकायत-शिकवा का कोई नामोनिशान नहीं; था तो बस कोई अदृश्य संकल्प-सा। मंजरी का रूप देखकर उदय दंग रह गया; जो लड़की अभी दो-तीन घंटे पहले सिसकी भर रही थी, बेजान पड़ी थी बाँहों में, वह अभी चट्टान जैसी खड़ी है!

"सो सॉरी मंजरी, अकॉर्डिंग टू कोरोना प्रोटोकॉल डेड बॉडी थ्री लेयर पैक के बाद ही मिलने का!" बाहर आते ही सिस्टर मारथा ने सूचना दी, पलकें नीचे किए हुए; फिर नजर उठाकर उत्तर दिशा की तरफ देखते हुए बोली, "अदरवाइज क्रीमेशन ग्राउंड में लंबा क्यू लगने का, आजकल क्रीमेशन का टोकन फाइव सिक्स हॉवर्स के बाद का मिलने का; फस्ट ऑफ ऑल

क्रीमेशन ग्राउंड वाला टोकन मैनेज करने का।" बोलकर मारथा वार्ड के लिए मुड़ गई; आज क्रॉस बनाने के बजाय उसने तीनों के सामने हाथ जोड़ लिए, फिर जुड़े हाथ ऊपर उठा दिए। उदय और दिनेश दोनों बाइक को सड़क तक ले जाने लगे; बिना स्टार्ट किए।

8

रामघाट तीरे के दूसरे छोर में श्मशान घाट है, सदियों से; अब कुछ सालों से बैकुंठ धाम नाम से। इस अप्रैल में रामघाट शहर में प्रतिदिन औसतन सौ-सवा सौ मौतें हो रही थीं; तीस-चालीस मौत का सरकारी आंकड़ा चैनलों और अखबारों में मुँह छिपाए बैठा था। बैकुंठ धाम में लाश जलाने के लिए लोगों को लंबा इंतजार करना पड़ रहा था; स्वाभाविक ही नगर निगम को दाह-संस्कार के लिए कूपन जारी करना पड़ गया। रामू की माँ के दाह-संस्कार का कूपन उदय ले आया; चार घंटे के बाद का स्लॉट मिला था, साढ़े पांच बजे के लिए। दहशत के ऐसे वातावरण में दाह संस्कार के लिए दो व्यक्ति को ही रहने की अनुमति थी। दिनेश चाची के दाह संस्कार से चुकना नहीं चाहता था, मंजरी माँ के पास से अंतिम समय तक हटना नहीं चाहती थी। उदय को वापस जाने के लिए राजी होना पड़ा; तब उसे लगा ईश्वर ने राजनीतिज्ञों को शायद लाश के निपटारे के लिए ही बनाया है।

दिनेश और मंजरी बाइक से रामघाट तीरे की ओर बढ़ चले, शव वाहन के पीछे-पीछे। आगे बढ़ते हुए उन्हें दूर से ही आसमान में काला-उजला-भूरा धुआँ उठता दिखा; गगनचुंबी धुआँ! जैसे किसी ने आसमान में भी अश्वमेध यज्ञ पूरा करने की ठान रखी हो। रामघाट तीरे से आधा किलोमीटर पहले ही उन्हें रुक जाना पड़ा; अर्थी लिए लोग लाइन में लगे थे। मंजरी ने दूर नजर दौड़ाई; ऊपर आसमान धुआँ-धुआँ तो हो रहा था, पर जमीन पर कोई लपटें नहीं दिखाई पड़ रही थीं? उसने गौर से देखा; एक-डेढ़ किलोमीटर तक रामघाट तीरे की घेराबंदी कर दी गई थी, टीन की चादरों से। उसे याद आया इसी दिशा में कहीं रामागमन कुटीर भी तो होता है! पर अब शायद चिता वाली टीन-बंदी में छिप गया हो। दोनों अपनी बारी का इंतजार करने लगे, मन-मस्तिष्क में देश-काल प्रदत्त धैर्य का आवरण लादे हुए।

पांच बज चुके थे; पहली मई का सूरज डूबने से पहले तक अपनी प्रभुता छोड़ना नहीं चाहता था। बूढ़े बरगद के नीचे छोटी भीड़ लंबी छाया तले खड़ी

थी, मौन। मंजरी और दिनेश भी उधर ही खिसक लिए। बुजुर्गावस्था की ओर बढ़ रहा एक व्यक्ति दूर क्षितिज में कहीं खोया था, आंखें फैलाए; निर्विकार! दिनेश को लगा यह व्यक्ति किसी गहरी पीड़ा में है, शायद अपने किसी रिश्तेदार-परिजन की मौत से।

"आप भी...?" दिनेश ने शालीनता से पूछना चाहा।

"जी, मेरा पैंतीस साल के बेटे का रात में कोरोना से निधन हो गया है" उस व्यक्ति ने चेहरे को बिना हिलाए-डुलाए कहा; बिल्कुल शांत चित्त से, आवाज में बिना लेश मात्र की पीड़ा के। उसकी पीड़ा रहित मुख मुद्रा देखकर वह हक्का-बक्का रह गया ...जिसका जवान बेटा मर गया हो उसके चेहरे में शिकन तक नहीं!...। अब उस व्यक्ति ने उसकी तरफ मुंह किया, उसके चेहरे में विस्मय का वितान देखकर। उनके होठ विहँस पड़े, परम आनंद में लीन होने-सा; उसकी आंखों में गड़ते हुए कहा, "यह वक्त ऐसा है बेटा किन-किन चीजों पर कितना-कितना रोया जाए!" फिर रामघाट तिरे से उठते धुएं में खोते हुए बोलते गए, "सात दिन पहले मेरे प्यारे सगे चाचा का कोरोना से इंतकाल हो गया, काफी रोना आया था; दो दिन पहले मेरी माताजी कोरोना से चल बसी, रोना तो बनता था; रात में इकलौता पुत्र हमसे बिछड़ गया, अंदर से आंसू नहीं आ रहे हैं तो नहीं आ रहे हैं! बस सोचकर संतोष कर रहा हूं, मेरी किस्मत में इतने ही वर्षों का पितृ-सुख लिखा था।"

"अब तो हर जगह लोग खुद को कोरोना से बचाने में लगे हैं, रोने की फुर्सत भला किसे है!" बगल में खड़ी एक अधेड़ महिला कोरोना-कथा आगे बढ़ाती हुई बोली। दिनेश ने उस महिला की ओर गौर से देखा; महिला की आंखों में सिर्फ कोरोना का खौफ नाचता दिख रहा था। महिला की डरावनी आवाज से वहाँ लंबी चुप्पी छा गई।

"जीना-मरना किसी के बस में नहीं रहा; अब कौन कब मर जाए कोई नहीं कह सकता।" पांच कदम दूर खड़ा नौजवान बोलकर दिनेश की ओर दो कदम बढ़ आया, कहा, "मेरे पिताजी स्कूल टीचर थे, परिवार की सारी जिम्मेदारी उन्हीं के ऊपर थी; आज सुबह कोरोना से चल बसे, घेराबंदी के अंदर उसकी लाश जल रही है, मैं कर ही क्या सकता हूं।" दिनेश आश्चर्यचकित था, उस नौजवान की आंखों में न तो आंसू की कोई झलक दिख रही थी, न आवाज में कोई अफसोस?

"अरे भई, इस कोरोना ने तो सामाजिक रिश्ते को तार-तार कर डाला है;

मेरे पड़ोसी की माँ को कोरोना निगल गया कल रात को" बरगद की जड़ पर बैठे एक बुजुर्ग ने सूचना देने के अंदाज में कहा, आंखें बड़ी करके बोलता गया, "लेकिन बेटे को तो समझिए डंस ही लिया है कोरोना ने! डर के मारे अर्थी को कंधा भी नहीं दिया! थक-हारकर मुझे आना पड़ा है रामघाट तिरे।"

"हम आप जैसे साधारण लोग तो जान हथेली में रखकर अपने परिजनों-पड़ोसियों की लाश लेकर घाट तक आ भी गए हैं, पर यह कोरोना लखपति-करोड़पति को तो खाकपति बनाकर धरती से विदा कर रहा है!" दूर पत्थर पर बैठे एक अधेड़ ने ऊँची आवाज में कहा, जीवन की निस्सारता की घोषणा करता हुआ-सा; फिर हाथों को प्रणाम पेश करने जैसा लहराते हुए बोला, "जसराज एग्रो फूड प्रोसेसिंग के मालिक की लाश लेकर मुझे आना पड़ा है; उनके बेटों ने मुझे कहा, ट्रीटमेंट की पूरी जिम्मेदारी आपने बखूबी निभाई हैं तो दाह-संस्कार भी ईमानदारी से निपटा दीजिए! मैं ठहरा फैक्ट्री का मामूली मुलाजिम, भला कैसे इनकार कर पाता?"

"अरे भाई लोग, यहां रामघाट में तो लाशों को आग नसीब भी हो रही है, यहां से बाहर निकलकर गांवों का हाल देख आइए, समझिए साक्षात नरक उतर आया है धरती पर!" ग्रामीण वेशभूषा वाले एक व्यक्ति ने कहा, किसी अलग देश-दुनिया की तस्वीर पेश करने-सा भाव-भंगिमा बनाते हुए; अब सिर को नटुआ जैसा हिला-हिलाकर बोलने लगा, "शहरों में तो अस्पताल हैं, वहां तो पीएचसी का बुरा हाल है, बनने के दिन से ही गिरने का ख्याल है... डॉक्टर झोलझाल है, कंपाउंडर फटेहाल है, नर्स ढील-ढाल है, नेता गोलमाल हैं!" अब दोनों हाथ छाती पर रखकर सब कुछ लुट जाने-जैसा बयां करने लगा, "गाँव-गाँव में अकाल मृत्यु जोर पकड़ चुकी है, डर के मारे लोग लाशों को घर-आँगन में दबाने लगे हैं, नदी-नाले के किनारे धरती मैया को सौंप रहे हैं; हमारे गाँव की छोटी नदी में लाश बह नहीं पाती है, गंगा किनारे के गांवों में लोग तो गंगा में लाशें बहाकर धरम-करम से एकबारगी छुट्टी कर ले रहे हैं!"

"चारों ओर फैले हाहाकार के लिए कौन जिम्मेदार है ये तो ऊपर वाला ही जाने, लेकिन यह तो मानना पड़ेगा अब इस पावन भूमि में दो चीज ही रह जाएगी एक तो राम नाम दूसरा लाश का काम!..." कुर्ता-बंडीधारी व्यक्ति भाषण देने जैसा बोलता रहा; वहां जमे लोग फिर से दूर-दूर खिसकने लगे। कोई तर्क या दर्शन सूझता न देखकर दिनेश ने धीरे से बगल में थूक दिया;

कोरोना को मन भर गाली देते हुए...'रे पापी, मानवीय गुणों का संहारक! तू दुनिया में करोड़ों लोगों का भक्षण तो करेगा ही, साथ ही मानव प्रजाति की सबसे बड़ी धरोहर आंसुओं की धार को सुखाकर ही दम लेगा...'

'...जब तक सूरज-चांद रहेगा रामदास तेरा नाम रहेगा...' क्यू में खड़ी मंजरी के कानों में नारा लगने-सा सुनाई पड़ा; कुछ ही लोगों के मुंह से निकलता बेजान-सा नारा। पीछे मुड़कर देखा, दाह-संस्कार के क्यू को पीछे छोड़ते हुए सुसज्जित अर्थी आगे बढ़ी जा रही है? अर्थी के ऊपर उचककर देखा, लंबे-तगड़े कद-काठी वाले आदमी की डेड बॉडी थी। मंजरी की नाक नफरत से फैलने लगी '...दाह-संस्कार के इंतजार में पड़ी लाशों को रौंदता हुआ एक डेड बॉडी श्मशान घाट में भी आधिपत्य जमाने जा रहा है...।' उस पॉइन्ट से आगे डेड बॉडी के साथ सिर्फ दो ही व्यक्ति आगे बढ़े; बाकी दो-तीन लोग तेजी से वापस मुड़ गए, छुट्टी पा लेने की अदृश्य खुशी चेहरे में प्रकट करते हुए। उसके साथ वाला एक लंबा-छरहरा अधेड़ मंजरी और दिनेश के पीछे ही खड़ा रहा; अपनी मूंछों को मिनट-मिनट में ऊपर की ओर मरोड़ते हुए।

"आप लाश जलाने नहीं गए?" गप्प शुरू करने के ख्याल से दिनेश ने कहा; उसकी जिज्ञासा बढ़ती गई थी, मूँछ वाले का गर्वोन्नत चेहरा देखकर। वैसे भी रामघाट तीरे में देर तक गूंगा बने खड़ा रहना असहनीय हो गया था उसके लिए।

"मेरा धर्म कहता है इस स्थान से आगे मेरा कोई रोल नहीं है और मेरा कर्म कहता है जब तक मालिक हैं उनके सामने से हटूं नहीं।" ऊपर की ओर मूँछ का पताका बनाते हुए उसने कहा।

"धर्म और कर्म?" वह आश्चर्य में पड़ गया, नम्रतापूर्वक कहा, "जरा हमारा भी ज्ञानवर्धन करें।"

"देखो पुत्तर मैं ठहरा एक सच्चा सेवक, फौज में भर्ती होकर भारत माँ की सेवा की; पिछले साल रिटायरमेंट के बाद पेट-परिवार खातिर एमएलए साहब का दरबान बन गया था, फिर तो मैं स्वामी का सेवक हुआ न!" आगे बढ़ते जा रहे अपने मालिक की डेड बॉडी की ओर सेल्यूट देने-सा हाथ उठाते हुए उसने कहा।

"ये कौन-सा एमएलए साहब हैं?" मंजरी की उत्सुकता बढ़ गई।

"वही अपना रामदरस मिश्रजी," बोलकर फौजी ने आंखें झुका लीं, जैसे

आंखों में कुछ अटक गया हो।

"पर इनके साथ वाले लोग रामदास का नाम लेकर नारा लगा रहे थे?" वह विस्मित होकर बोली।

"हां बेटी, ये वाले एमएलए साहब भी तो रामजी के बड़े भक्त थे! इसलिए 'रामदास अमर रहे' का नारा लगाया गया है।" फौजी ने सरल शब्दों में समझाया।

"हां! ये भी तो काफी दिनों से कोविड वेंटिलेटर में पड़े थे!" वह इत्मीनान से बोली, अधोगामी स्वर से लगा उसकी जिज्ञासा शांत पड़ चुकी है।

"हां भर्ती थे; पर कोरोना से मरे नहीं हैं!" फौजी ने कहा तो उसके सिर में कंपन होने लगा, जैसे गले के नीचे कोई रहस्य कुलबुला रहा हो।

"शायद बवासीर जैसा कुछ था।" वह बेपरवाह होकर बोली।

"तुम तो दूर की खबर रखती हो बेटी; पर मृत्यु पाइल्स से हुई नहीं है!" फौजी का सिर और तेजी से हिलने लगा।

"कोविड से नहीं हुई, पाइल्स से नहीं हुई, फिर किस चीज से हुई है मृत्यु?" कोई गड़ा मुर्दा उखड़ते देखने की लालसा लिए दिनेश ने कहा।

"दरअसल एमएलए साहब को अपने सैनिटाइजर और डिसइनफेक्टर वाली फैक्ट्री से इस कोरोना काल में ठीक-ठाक कमाई हो गई थी, गद्‌गद भी थे; आगे चलकर और किसी बड़े ट्रेड में इंडस्ट्री लगाते, लेकिन..." बोलकर फौजी चुप हो गया, दिनेश और मंजरी की ओर सरसरी निगाह डाली कि न जाने दोनों किस श्रेणी के लोग हैं; दोनों की युवावस्था पर आस्था जताते हुए बोलते गए, "दरअसल इस महामारी में इनके नजदीकी मित्रों को दवाई फैक्ट्री से बेशुमार कमाई हुई है, असली-नकली-रद्‌दी सब किस्म की दवाइयाँ बनाकर; समझिए सात पीढ़ी की कमाई एकमुश्त कर ली इनके साथियों ने!" अब होठों में अबूझ-सी मुस्कान लाते हुए बोला, "एमएलए साहब को इस बात का तगड़ा शॉक लगा कि उसने दवाइयों के सेक्टर में हाथ क्यों नहीं आजमाया? बस समझिए उसी शॉक ने इसे आज रामघाट तिरे पहुंचाकर छोड़ा है!"

मंजरी ने एमएलए की लाश की ओर नजर उठाई। चिता तैयार हो चुकी थी। चिता के पास खड़े एक व्यक्ति ने फौजी की ओर कुछ संकेत-सा किया; फौजी ने हौले से पैर पटककर दाएं हाथ से सैल्यूट दिया। मंजूरी को धक्का लगा...देश सेवक बनने के बजाय इन राजनेताओं ने तो पूरे देश को ही सेवक बना लिया है! एमएलए की चिता देखकर मंजरी को वेंटिलेटर याद

आ गई; लगा जैसे चिता में भयातुर प्रजाति के किसी जंतु की डेड बॉडी पड़ी हो। मोबाइल में उपजे ट्विंग ध्वनि से उसकी चिंतन शृंखला भंग हुई, मारथा दीदी का मैसेज था ...आफ्टर डेथ ऑफ आंटी हॉस्पिटल में डेथ चालू रहने का, अपन सीएमओ साहब का कोविड रिपोर्ट अबी-अबी पॉजीटिव आने का, वायरल लोड काफी हाई होने का, कंडिसन सड्नली क्रिटिकल हो जाने का, पूरे हॉस्पिटल में हॉरर बन जाने का... आगे मारथा का एक और मेसेज था; स्क्रीन से नजर हटाकर वह डूबते सूरज को देखने लगी, होंठों से बुदबुदाते हुए ...ऐसे समर्पित डॉक्टर लोग नहीं बचेंगे तो साधारण लोगों को कौन बचाएगा, हे प्रभु ऐसे कर्मनिष्ठ को बचा ले, चाहे तो इसके बदले में किसी और स्वलिप्त नेता की...।

"अरे ये मीडिया वाले फिर आ गए? भगाओ इनको!" पुलिस जिप्सी में बैठा अधिकारी एक पैर जमीन पर रखते हुए चिल्लाया; उसकी देह में अचानक अप्रत्याशित स्फूर्ति आ गई थी।

"सर दस दिन से भगा रहे हैं, फिर भी लुक-छिप कर कैमराबाजी कर ही लेता है दुष्ट लोग; इतना डंडा मारते हैं तब भी क्लिप बनाने से बाज नहीं आ रहा है!" दो स्टार वाला दरोगा ने बेबसी जाहिर करते हुए कहा।

"हुजूर शुरू-शुरू में चालीस-पचास लाश ही आती थीं, तब तो ये लोग घाटे पर जाकर फोटो उतार लेता था; यह तो डीएम साहब की चतुराई कहिए कि हियाँ से लेकर हुआँ तक टीन पतरा से बंद करवा दिया!" डंडाधारी चौकीदार अपनी मुस्तैदी जतलाते हुए बोला, फिर आसमान की ओर सिर उठाते हुए निरंकारी भांति कहा, "लेकिन परमात्मा की मर्जी के आगे किसी का कुछ चला है भला, अब तो इतनी लाशें आने लगी हैं कि टीन वाले घेराबंदी से भी बाहर तक अटी पड़ी हैं!"

मीडिया और घेराबंदी के मतलब-मायने में उलझने के बजाय मंजरी ने फिर से माँ की अर्थी में केंद्रित कर लिया अपने को। अर्थी आगे सरक रही थी; दोनों और आगे बढ़ गए। माँ की बारी आई, चार वॉलंटियर्स उनकी अर्थी को लेकर बढ़ चले; पीछे-पीछे मंजरी और दिनेश भी। ठीक सामने ही एमएलए साहब की चिता जल रही थी। घेराबंदी के अंदर पैर धरते ही वातावरण में तैर रहे चंदन और घी की सुगंध श्मशान घाट पर आगंतुकों का स्वागत करती महसूस हुई; नाक को क्षणभर के लिए सुकून मिला। बाकी सभी चिताएं थोड़ा हटकर आगे लहक-धधक रही थीं। धुएं में सब कुछ धुंधला

हो चला था। नजदीक जाते ही उनकी आंखें फटी की फटी रह गईं। दूर-दूर तक चिताएं ही चिताएं थीं; जलती हुईं, आगे दूर तक सजी हुई भी। मंजरी ने रामागमन कुटीर वाले किनारे की तरफ नजरें उठाईं, चिताओं की शृंखला उस पार भी बढ़ती गई थी। लंबी कतार में एक रूप-स्वरूप में लगाई गई चिताएं किसी केंद्रीकृत कुशल प्रबंध का परिणाम दिखा रही थीं; जैसे किसी बड़े दिमाग की जादूगरी और कलाकारी से इस वृहद् शव-प्रबंध को अंजाम दिया जा रहा हो। वह रामघाट तीरे पहले भी कई बार आ चुकी थी, बचपन में रामागमन कुटीर में शीश भी झुकाया था; रामघाट तिरे का वर्तमान अपरूप देखकर वह कांप उठी...'कहीं देश-दुनिया की भी यही दशा-दुर्दशा तो नहीं हो जानी है!'

माँ की डेड बॉडी को चिता पर रख दिया गया; मुखाग्नि के इंतजार में वह खड़ी रही, दूर ही। उसके मोबाइल में ट्विंग-सी सुरीली ध्वनि हुई; मैसेज बॉक्स खोला, शायनी का मैसेज था 'अभी लैब से निकलकर लंच कर रही थी तो आंटी के बारे में खबर मिली, इट इज रियली शॉकिंग मंजरी, कितनी अच्छी आंटी थीं, जब भी हम लोग रामू के शेड पर होते थे तो वह मामूली से मामूली खातिरदारी में भी जुड़ जाती थीं! यह तो और भी तकलीफ दे रही है ऐसे वक्त में रामू लोग जेल में बंद हैं; खैर परम शक्ति के आगे किसी की चली है क्या?' आगे उसका एक और मैसेज था 'यहां पर सरकार ने, जनता ने मिलकर कोरोना पर काबू पा लिया है; दूसरी लहर में इंडिया की दुर्दशा देखकर यहां के लोग हँसते हैं इंडिया की मूर्खता पर, यहां के मीडिया की नजर में वहां इंडिया में सरकारें और राजनीतिक पार्टियां कोरोना से नहीं लड़ रहे हैं, बल्कि अपने अहंकार और स्वार्थ को हथियार बनाकर अपने-अपने विरोधियों से लड़ रहे हैं; सच में मंजरी बड़ी तकलीफ होती है कोपेनहेगन में भी अपने देश का मजाक बनते देख कर।' मैसेज पढ़ते-पढ़ते ही शायनी का तीसरा मैसेज आ गया था, '..और हां, यथासंभव घर पर ही रहने की कोशिश करना; कोरोना वायरस में म्यूटेशन की खतरनाक टेंडेंसी कंटिन्यू कर रही है, रिसर्च में कोरोना के प्रोटीन फीचर्स बता रहे हैं भविष्य में और भी खतरनाक वैरीअंट आ सकते हैं; अपने रामघाट और प्रदेश में मौजूदा कॉमन वायरस बी 1.617 और थर्ड म्युटेंट वेरिएंट बी 1.167 से भी आगे बेहद खतरनाक, समझो ब्लैक कोरोना तैयार हो रहा है भविष्य के लिए! टेक केयर; लव यू मिसेज रामू!' मैसेज पढ़कर वह शून्य में पड़ गई। चिता सज गयी थी; दिनेश

ने उसके कंधे में उंगली छुआई, आगे बढ़ने के लिए। आगे बढ़ते हुए उसकी नजर रामघाट तीरे के आर-पार हो गई; वह चिंतन में पड़ गई...'यदि सच में कोरोना ब्लैक कोरोना में बदल लेगा अपने को, फिर तो रामघाट में लाशों का भंडार गृह बनाना पड़ सकता है!' तत् क्षण उसके अंदर से प्रतिउत्तर आया. ..'नहीं रे पगली, तब यह जगह तो राजनेताओं की अर्थी के लिए आरक्षित रहेगी, लाशें घरों में, गलियों में ही पड़ी रहेंगी!'

शवदाह चबूतरे के नजदीक पहुंचते ही दुर्गंध का तेज भभका मंजरी की नाकों से टकराया; कच्चे माँस के जलने की असहनीय दुर्गंध! उसने जल रही चिताओं पर नजर डाली, उनमें लकड़ियां काफी कम थीं। दो-तीन अधेड़ उम्र वाले हाथों में कनस्तर लिए जलती चिताओं में बारी-बारी से कोई द्रव्य डाले जा रहे थे। द्रव्य का छिड़काव होते ही चिताएं दहक उठती थीं; कोई नव-अन्वेषित द्रुत-काष्ठ भांति, जल्दी-जल्दी लाश का निपटारा करते हुए।

"हां मैडम जी, फटाफट ग्यारह हजार निकालिए; जल्दी कीजिए!" एक कनस्तरधारी ने मंजरी के पास आकर कहा, बड़े इत्मीनान से। मंजरी की समझ में कुछ न आया, वह दिनेश की तरफ देखने लगी।

"माता-पिता, सास-ससुर की लाश जलाने की बात भी पति से पूछकर करोगी?" कनस्तर धारी खिन्न होकर बोला।

"ग्यारह हजार?" दिनेश ने संशय दूर करना चाहा।

"हां भैया, खुद जलाओगे तो लकड़ी लेकर आओ बाहर से; रामघाट शहर में लकड़ी का एक टुकड़ा मिलने से रहा! फटाफट जला देने का पुख्ता इंतजाम कर रखा है हमारी स्वर्ग धाम समिति ने, उसी का ग्यारह हजार ले रहे हैं!" उस आदमी ने पारदर्शिता जाहिर करते हुए कहा, फिर झुंझलाकर बोला, "जल्दी कीजिए, इतनी देर करेंगे तो अर्थी की लाइन रामघाट शहर तक पहुंच जाएगी!"

दिनेश को पता था मंजरी के पास शायद ही ग्यारह हजार की नगदी हो; उसने अपने वॉलेट से गिनकर बाईस निकाला, कनस्तर पुरुष की ओर बढ़ा दिया। हाथ में पैसा आते ही कनस्तर धारी ने बगल में जलती चिता से एक जलती लकड़ी उठाई; उसे मंजरी के हाथ से छुआकर लाश की ओर झटके से फेंक दिया, बड़ी कलाकारी से। अगले ही मिनट उसने कमाल दिखाया; कनस्तर से द्रव्य की ऐसी धार बनाई कि पूरी चिता आग के गोले में दहक उठी। रामू की माँ पंचतत्व में विलीन होने लगी। मंजरी वहीं खड़ी रही,

शून्य-सी। मंजरी का मन हल्का करने की खातिर दिनेश ने चर्चा छेड़ दी, "धर्म शास्त्रों में लिखे शवदाह के सारे संस्कार-विधि-विधान भी डीजल-पेट्रोल की दहक में भस्म हुआ जा रहा है!"

"हो जाए तो दुनिया का भला हो!" मंजरी की चेतना लौटी।

"महामारी के बाद लोग तो फिर से विधि-विधान के साथ दाह-संस्कार श्राद्ध-पिंड करने लगेंगे।" दिनेश ने सपाट-शून्य भाव-भाषा में कहा।

"फिर तो समझो मानव जाति में सबसे मूर्ख प्रजाति भारत भूमि में ही बची हुई है! शव के पूर्ण रूप से जल जाने तक उनके सम्मान में यहीं खड़ा रहना ही असली विधि-विधान होगा माँ के लिए, बस।" बोलकर मंजरी ने आंखें बंद कर लीं।

"हटिए यहां से, बाहर जाइए; आपका काम खत्म!" एक आवरणधारी ने हवा में डंडा फटकारते हुए कहा, दिनेश के नजदीक बढ़ते हुए।

"आंटी की लाश अभी तो जल ही रही है?" दिनेश ने याचना भाव से कहा।

"यह नॉर्मल टाइम नहीं है भैया! तुरंत निकलिए।" डंडाधारी उखड़ते हुए बोला।

"अडियो मत, बाहर जैईबे के पड़ी!" कनस्तरधारी ने भी समझाया दिनेश को।

"यह डंडा वाला कौन है?" फेस शील्ड सरकाकर मंजरी ने कनस्तरधारी से पूछा।

"ये शासन-सरकार के लोग हैं!" कनस्तरधारी ने आंखों में डरावनी तस्वीर लिए कहा।

"सरकारी लोग!" दिनेश समझ न पाया, आखिर सरकार यहां क्या कर रही है।

"अरे बाबू लोग, ऊपर से आदेश हैं; एक साथ सैकड़ों जलती चिताओं से जनता को दूर रखना है, नहीं तो जनता में घबराहट फैल जाएगी!" बोलकर कनस्तरधारी ने माँ की चिता में फिर से द्रव्य डालकर और धधका दिया।

"आप लोग कानून के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं?" आगे बढ़ चुके डंडाधारी ने पीछे मुड़कर चेताया। दिनेश ने मंजरी को चलने का इशारा किया। दोनों बाहर की ओर चल पड़े। टीन पतरे वाले घेरे के नजदीक पहुंचते ही मंजरी के मोबाइल में टविंग ध्वनि हुई; मैसेज बॉक्स खोलकर देखी, मारथा का मैसेज था, '...सॉरी फॉर लेट मैसेज; मरने से पहले आंटी तेरे लिए मैसेज देने का,

डिजायर बिफोर डेथ बोलने का; आफ्टर क्रीमेशन बोन्स पाट्र्स कलेक्ट करने का, आंटी बताने का अभी देश में बिग कंस्ट्रक्शन बनने का, उनका बोन्स दो बड़े साइट्स में जमीन के नीचे डाल देने का।' मैसेज पढ़कर मंजरी के शरीर में रोंगटे जागने लगे, पूरा बदन सिहर उठा...'माँ तो कोरोना-कैबिनेट के सदस्यों की सोच से भी आगे सोचती थीं!' उसने मोबाइल स्क्रीन दिनेश की ओर कर दी। मैसेज पढ़कर दिनेश ने लंबी सांस ली; माँ की जलती चिता की ओर मुड़कर बोला, "चाची की अंतिम इच्छा की स्पष्ट व्याख्या कर सकती हो मंजरी?"

"उसकी अंतिम इच्छा सुस्पष्ट है; वह संदेश छोड़ गई हैं दुनिया के लिए, और इतिहास के लिए भी।" धधकती चिता की ओर देखकर मंजरी बोलती गई, सलामी देने जैसा हाथ उठाते हुए, "इतिहास में यह जरूर दर्ज होगा कि जिंदगी और मौत की आसन्न आँधी में भी वैसे कार्यों को अंजाम दिया गया जो पृथ्वी में मानव-अस्तित्व को बचाने की सदियों लंबी जंग में किसी काम का नहीं रह जाएगा; सरल शब्दों में उन कार्यो को अंजाम देने की खातिर जन-जन को अपनी बलि देनी पड़ी थी।"

"बलि बोले तो!" दिनेश और स्पष्ट होना चाहता था।

"यह तथ्य इतिहास में दर्ज होने जा रहा है कोरोना इस सदी का सबसे बड़ा दुश्मन बन कर आया है दुनिया में, और इंडिया में भी," चारों ओर फैले धुएं में खोती हुई वह बोलती गई, "लेकिन यहां कोरोना के खिलाफ जंग छेड़ने की सर्वोच्च प्राथमिकता कई रुचिपूर्ण कार्यों में बंट गई, इसके परिणाम का एक छोटा नजारा यहां रामघाट तिरे हमारी आंखों के सामने है!" बोलने के बाद मंजरी के होंठों में मुस्कान की लघु रेखाएं दिखने लगीं, जैसे किसी को इतिहास के पन्ने में शापित कर रही हो।

"फिर तो हमें चाची की अंतिम इच्छा जरूर पूरी करनी चाहिए!" अवसान की ओर जाती चिता की ओर देखकर दिनेश ने कहा; उसके शरीर में एकाएक अभूतपूर्व स्फूर्ति आ गई, अशांत-चित्त लिए पूछा, "पर अस्थि को उन निर्माण स्थलों के नीचे कैसे दबा पाएंगे!"

"सभी साथियों के रिहा होने के बाद ही यह तय किया जाएगा।" उत्तर दिशा में देखते हुए मंजरी ने कहा, फिर चिता की ओर श्रद्धापूर्वक देखते हुए बोली, "हमें आज माँ की थोड़ी-सी अस्थि अवश्य इकट्ठी कर लेनी चाहिए; पूरी तरह बुझने में अभी थोड़ा और समय लगेगा।"

"चिता ठंडी होने में भी वक्त लगेगा।" चिता की लौ का आकलन करते हुए दिनेश ने कहा।

"तब तक हम कहीं इंतजार कर लेते हैं!" वह संकल्प लेती हुई-सी बोली।

"यहां तो चारों ओर धुआं-धुआं हो रहा है, घेराबंदी के बाहर पुलिसवाले लाश जला चुके लोगों को तो एकदम टिकने नहीं दे रहे हैं।" चारों ओर तेजी से फैलते जाते धुएं से लड़ते हुए दिनेश ने कहा। चारों ओर धुएं की परत और मोटी होती जा रही थी; सांस लेना भी मुश्किल होता गया। दोनों मुड़कर तेज चलने लगे, रामघाट तीरे के दाहिने किनारे की ओर; जैसे देश निष्कासित व्यक्ति-द्वय सुरक्षित भूखंड की तलाश में निकल पड़े हों।

9

भागते हुए में भी दोनों की नजरें चिता स्थली की ओर अटकती-भटकती रहीं, पिछे मुड़-मुड़कर।

"वहां तो सैकड़ों चिताएं जलती हैं बुझती हैं, हम लोग चाची वाली चिता की पहचान केसे कर पाएंगे भला?" घेराबंदी से दूर जाते हुए दिनेश चिंतित हो उठा।

"मेरी आंखों में पहचान कैद है; घेराबंदी के अंदर जाते ही दाहिने हाथ में खड़े बबूल के पेड़ के ठीक सामने वाली चिता!" चिता-स्थल की ओर देखकर मंजरी बोली, स्मृति पर जोर देते हुए। धुएं का असहनीय झोंका सहन करते हुए भी उनके कदम बढ़ते रहे, नाप-तौलकर। दाहिने किनारे पहुँचकर दोनों रुक गए, धुएँ का गुबार झेलते हुए भी। आँखें माँ की चिता पर ही अटकी रहीं। उस किनारे लाशों का कारवां लंबा होता गया था। उस किनारे से इस किनारे तक वातावरण काफी वीभत्स लग रहा था। अर्थी लेकर आए लोग इस दमघुटन से बाहर निकलने के लिए बेचैन दिख रहे थे; छटपटा रहे छोटे-छोटे जीव-जंतु सरीखे।

"चारों ओर फैले दृश्य को देखकर तुम्हारे मस्तिष्क में कोई चित्र उभरता है क्या?" मंजरी की ओर देखते हुए दिनेश ने पूछ लिया; असहनीय पल को सहनीय बनाने के ख्याल से।

"हां, हिंदुस्तान का।" मंजरी सहज-सपाट भाव-भाषा में बोली; तर्क-वितर्क सोच-विचार में कोई समय लिए बगैर।

"हिंदुस्तान?" वह अवाक था।

"जी, हिंदुस्तान में भी तो सौ करोड़ से ज्यादा लोग लाशवत जीते-जलते

रहते हैं, पूरी जिंदगी! भारत भूमि में आम जीवन मुश्किल हालात से घिरा पड़ा है दशकों-सदियों से; आजादी के बाद भी बीस-तीस करोड़ की तरक्की खातिर हमने पूरे हिंदुस्तान का चैन छीन लिया है! तभी तो सहज, परवेज और अहम समानता, समरसता और मानवता की बातें करते रहते हैं।"

"इसलिए तो अहम भैया बोला करते हैं हम नवयुवकों को ऑब्जेक्ट-सा मृत बनकर नहीं रहना!" पिछली किसी बैठक में अहम द्वारा कही गई बात को याद करते हुए दिनेश ने कहा।

"मुझे याद है, पिछले साल मार्च में यहीं कहीं हम सभी के बीच उसने ऑब्जेक्ट और अस्तित्ववाद वाले सूत्र की व्याख्या की थी; सच में ऑब्जेक्ट मात्र बनकर जीने का कोई मतलब नहीं रह गया है! अब मेरी भी धारणा बिल्कुल स्पष्ट है, ऑब्जेक्ट और अर्थी में कोई फर्क नहीं!" बोलकर मंजरी बुझ पड़ी चिता तक पहुँच बनाने का सुराग ढूंढ़ने लगी, मन ही मन। उस पार और दसियों लाशें आई दिख रही थीं; चिता की कतारें दूर तक बढ़ती गयीं। पुराने डेड बॉडी की असहनीय दुर्गंध उस पार तक भी फैलती गई। दोनों ने नाक में रूमाल रख लिये। सामने से आ रहे काले धुएँ से शून्य दृश्यता की स्थिति आने लगी; आँखें अपने होने का अर्थ खोने लगीं। अकथनीय दुर्गंध और घोर दृष्टिहीनता में भी दोनों डटे रहे; आपसी वार्ता को जारी रखते हुए। पर धीरे-धीरे उनके कंठ अवरुद्ध होने लगे; लगा बाहर की काली हवा आवाज को अन्दर की ओर दबाने लगी है। स्वर के सांसत में पड़ते ही दोनों बेचैन हो उठे ...आवाज-अभिव्यक्ति विलुप्त होने से वे कहीं धुएं के काले समन्दर में न समा जायं! उनके पैर स्व-चालित हो उठे, जैसे अब मस्तिष्क शरीर के दोनों छोर से कार्य-संचालन करने लगा हो।

पाँच मिनट तक दोनों बढ़ते-दौड़ते रहे, अज्ञात दिशा में; धुएं के बवंडर को चीरते हुए। अचानक उनकी नाक के सामने कुटीरनुमा मंदिर दिखा। मंजरी चौक पड़ी..'यह तो रामागमन कुटीर है!' दोनों को अपार तसल्ली हुई; ऐसे दुर्काल में रामागमन कुटीर एक सुरक्षित ठिकाना हो सकता है, अस्थि-संग्रहण की प्रतिक्षा के लिए। दोनों तेजी से कुटीर के अहाते में प्रवेश कर गये। अंदर का दृश्य देखकर दोनों ठिठक गए; रामघाट तीरे का सारा धुआं कुटीर के अंदर संघनित होती प्रतीत हो रही थी। दिनेश ने मोबाइल का टॉर्च जलाया। गर्भ गृह का मंजर देख कर उनके पैर कांपने लगे ...अंदर राम-मंडली के दसियों भक्त धुएं में दम घुंटने से अचेत पड़े थे, जैसे कोविड वार्ड में ऑक्सीजन के बिना बेदम पड़े मरीज हों। काले-उजले-भूरे धुएं का गुबार कुटीर की दिशा में और तेजी से बढ़ता दिख रहा था। रामघाट की दिशा में नजर उठ गई, दोनों दंग

रह गए ...शिवालय का शिखर, अकबरी मस्जिद की मीनारें, पंचपीर गुरुद्वारे का कलश और सेंट पीटर चर्च के ऊपर लगे क्रॉस भी धुएं के गुबार में गुम हो गये थे! रामघाट के वो सभी ऊंचे पहचान चिन्ह तो कहीं दूर से भी स्पष्ट दिखाई पड़ जाते थे; तो क्या इन पहचान चिन्हों को भी धुएँ ने पस्त कर डाला है? दोनों उल्टे पांव भाग खड़े हुए, प्रकाश दिखती दिशा में; अंदर उठ रहे चिंतन को साथ लिए ..तो क्या राम-रहीम सभी रुठ गए हैं हमारे करतूत से?

दौड़ते हुए में भी मंजरी बोलने से रोक ना पाई अपने को "रामू जेल में है" हांफते हुए भी वह बोलती रही "पर तुमने रामू की कमी पूरी कर दी दिनेश; सच में दुनिया की एक बड़ी सच्चाई है, सच्चे दोस्त के रहते कोई अकेला नहीं होता!"

"मंजरी तुम्हें तो यही पता है न हम दोनों लंगोटिया यार हैं, परंतु यह नहीं पता होगा हम दोनों के दिल अटूट धागे से जुड़े हैं!" सांस नियंत्रित करते हुए दिनेश ने कहा; फिर पीछे छूटती जा रही मंजरी की अंगुलियों को अपनी अंगुलियों में लिए बढ़ता गया, रामागमन कुटीर से दूर।

दिनेश के मोबाइल में किसी अनजान नंबर से रिंग आने लगा। कॉल रिसीव करते ही उधर से मातमी आवाज आने लगी, 'हेलो, मैं परमजीत बोल रहा हूँ, एडवोकेट हाई कोर्ट; रामू नाम वाले आरोपी के माँ की मृत्यु हो गयी है कोरोना से?' अवाज से लगा वह सचमुच दुखी थे; आगे आवाज प्रोढ़-परिपक्व होती चली गयी 'हंसामल जी ने उसे पैरोल में निकलवाने का अनुरोध किया है, आपका नम्बर उसी ने दिया है; कोरोना पीरियड में एक-दो बेंचें ही बैठ रही हैं, वैसे भी आजकल पैरोल मिलना टाइट हो गया है, लक्किली यदि मिल भी जाती है तो दो-तीन दिन लग जाएँगे, कोरोना वाले डेड बॉडी को तब तक शायद आप रख नहीं पाएँगे!' फिर आवाज संशयपूर्ण हो गयी 'बैड लक यदि पैरोल रिजेक्ट हो जाता है तो रिजेक्सन का ग्राउंड आगे बेल पिटीशन के आर्ग्युमेंट में लीगल बैरियर बन सकता है!' अब स्वर में उत्साह दिखने लगा 'वैसे इस मामले में एक अच्छी प्रगति हुई है, गिरफ्तारी के नब्बे दिन हो चुके हैं, जन भावना भड़काने और देशद्रोह के चार्जेज को कंफर्म करने वाली कमेटी ने रिपोर्ट दे दी है, इसमें बताया गया है इन नौजवानों के खिलाफ देश विरुद्ध कार्य करने और जनता को भड़काने के आरोप कोर्ट ऑफ लॉ में साबित करना संभव नहीं होगा।'

"अब आगे क्या होगा?" दिनेश के साथ-साथ मंजूरी भी बोल पड़ी, युगल स्वर में।

"उम्मीद करनी चाहिए अगली सुनवाई में इनकी जमानत हो जाएगी; चिंता

की कोई बात नहीं है, मिस्टर हंसामल जी-जान से लगे हैं इस केस में।" उनकी आवाज में लेश मात्र भी संशय नहीं था।

पाँच-सात मिनट चलने के बाद सामने बेरी का पेड़ देखकर मंजरी अवाक रह गई..'यह तो अपनी वाली बेरी है!' वह चारों दिशाओं में देखने लगी, घूम-घूम कर; हर तरफ धुआं का साम्राज्य बढ़ता ही जा रहा था, लेकिन बेरी के नीचे धुआं टिक नहीं पा रहा था! उसकी नजर सटे झुरमुट की ओर चली गई..'रामू के साथ प्रथम संसर्ग-सुख स्थली!' उसके अन्दर एक हूक सी उठी..'महीनों हो गए उसके अन्दर प्यार की पत्तियाँ मचलते, तो क्या यह कोरोना इस धरती में प्यार-मुहब्बत को भी निगल लेगा!' वो झुरमुट धुऐं की आंधी से जूझता दिख रहा था; उसे अपना अंतस अचानक शुष्क होता प्रतीत हुआ। अगले ही क्षण उसे याद आया, रामघाट तीरे के सभी पेड़ और यहां-वहां भागते-दौड़ते में मिले-दिखे सारे पेड़-पौधे भी तो मुरझाए खड़े थे, धुऐं की मार से अपनी हरियाली खोकर। ख्यालों में खोई उसका पैर पत्थर से जा टकराया... 'अरे यहीं बैठकर तो रामू उस पर न्योछावर हुआ जाता है!' उसने नजरें ऊपर उठाई ...बेरी के पत्ते सही सलामत है? अपनी हरीतिमा से मुस्कान बिखेरते हुए! मन में आया शायनी से जरुर पूछेगी, क्या बेरी के पेड़ पर शवदाह वाले धुएं का कोई असर नहीं पड़ता है? उसके अंदर से स्वर सा फूटा..'नहीं रे पगली, जहां मुहब्बत पनपता है वहां कयामत भी अपना कहर बरपा नहीं पायेगी!' प्यार की बातें मन में आते ही उसके होठों में मुस्कान तैर गई, अपने आप।

"अचानक यह हँसी! यह क्या रहस्य है मंजरी?" दिनेश ने डरावने स्वर में पूछा।

"डरो मत, बस इतना जान लो इस दुनिया में मोहब्बत से आगे कोई इमारत नहीं कोई इबारत नहीं; धुआं आग हवा अंधी पानी बरसात कुछ भी नहीं!.." मंजरी बोलती जा रही थी, किसी गंभीर दार्शनिक भांति; चेहरा खिल उठा, अलौकिक मुस्कान से।

अंधेरा अपना वितान फैलाने की तैयारी करता दिखने लगा; दोनों के कदम बढ़ते गए, धीरे-धीरे। मंजरी के मोबाइल में मैसेज आने की ध्वनि हुई; समझ गयी माँ के लिए किसी का शोक-संवेदना ही होगा। मैसेज खोलते ही चौंक पड़ी..अहम का मैसेज! दोनों की आँखें एक साथ स्क्रीन पर गड़ गयीं..'बहन मंजरी, दीदी ने चाची की मृत्यु से अवगत कराया, कोरोना ने आखिरकार हम लोगों पर भी झपट्टा मार ही दिया; पूरी जिंदगी वह हर तरह से वंचित ही रही, ब्रह्मांड की परम शक्ति उन्हें पूर्ण शांति अवश्य देंगे; मेरा मैसेज देखकर तुम

विस्मित होगी कि कोमा में गया व्यक्ति मैसेज कैसे कर सकता है? दुनिया की नजरों में मैं अभी भी कोमा में हूँ, पर हकीकत में कोमा से बाहर आ चुका हूँ! डॉक्टर सत्यार्थी का आजीवन आभारी रहूँगा, हमारे साथियों के बाहर आने तक मेरे कोमा में ही दिखते रहने के लिए उसने अपने ऊपर काफी रिस्क लिया है!' पढ़ते-पढ़ते ही उसका दूसरा मैसेज आ गया 'मेरा मन-मस्तिष्क कोरोना पर शुरू से ही केंद्रित रहा है; एक स्थापित सत्य इतिहास में दर्ज होने जा रहा है, किसी भी प्रसंग में हम हिंदुस्तानियों की निजी धारणा और अपनी राजनीतिक विचारधारा को दिन-रात सर्वोच्च प्राथमिकता में रखने की जानलेवा प्रवृति ने भारत की उर्वर भूमि को दशकों से वीभत्स बनाता आ रहा है! मेरी दृष्टि भविष्य को आर-पार देख पा रही है; कोरोना से भी बड़ी चुनौती है हमारी दृष्टि-पंगुता जो समय-समय पर कई-कई कोरोना को जन्म देता रहेगा! वैसे भी वैज्ञानिक बिरादरी पहले से ही चेताते आ रहे हैं, भविष्य में स्वास्थ्य को लेकर मानव को इस धरती में काफी चुनौती का सामना करना पड़ेगा! फिर तो मेरी नजर में भारत देश की एक सौ छत्तीस करोड़ आबादी ही सबसे सच्ची धारणा है, इसलिए इस देश को ऐसा कोई व्यक्ति या व्यक्ति समूह नहीं चला सकता जो खुद की धारणा तले दबा हो; अस्तु युवा कारवां को मानवता और समरसता के मंजिल के लम्बे सफर पर निकलना ही पड़ेगा, उस मंजिल के रास्ते में व्यवधान बनने वाले उन काल्पनिक प्रतीकों और अनर्गल पहचान चिन्हों को एक-एक करके दफन करते रहना पड़ेगा, जिसे हम बिना किसी तर्क-वितर्क के सदियों से सर माथे पर लिए मदहोश फिर रहे हैं! परवेज सही कह रहा है, कोरोना का सगा भाई सा फैलता-सिकुड़ता निस्पंद राजनीतिक ढांचे के शीर्ष पर समग्र दृष्टि-सम्पन्न पुरुषों का प्रादुर्भाव नहीं हो सकता! हमारे मार्ग में लाख बाधा खड़ी किए जाय हम बढ़ते रहेंगे; अपना देश भारत और सम्पूर्ण मानव के लिए...'।

मैसेज पढ़कर मंजरी और दिनेश की आंखों में किसी बड़े कारवां की चमक कौंध उठी, "अब तो आगे हमारी रामघाट-केबिनेट..." कंठ फिर से खुलने लगे, खुली हवा में; प्यार की बगिया की ओर मुड़-मुड़कर, सभी साथियों को यादों में लिए...।

(इति आदि)